जैनाचार्य–जैनधर्मदिवाकर–पूज्यश्री–घासीलालजी–महाराज–

विरचितया अनगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यया व्याख्यया समलङ्कृतं

हिन्दी-गुर्जर-भाषाऽनुवादसहितम्–

श्री-ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रम् ।

SHREE GNĀTĀDHARMA KATHĀNGA SOOTRAM

(तृतीयो भागः)

नियोजकः

संस्कृत–प्राकृतज्ञ–जैनागमनिष्णात–प्रियव्याख्यानि–
पण्डितमुनि-श्रीकन्हैयालालजी-महाराजः

प्रकाशकः

'मद्रासनिवासी—श्रीमान्—शेठ—ताराचंदजी—साहेब
गेलडा' तत्प्रदत्त–द्रव्यसाहाय्येन अ० भा० श्वे०
स्था० जैनशास्त्रोद्धारसमितिप्रमुखः श्रेष्ठि–
श्रीशान्तिलाल–मङ्गलदासभाई–महोदयः
मु० राजकोट

प्रथमा–आवृत्ति	वीर–संवत्	विक्रम–संवत्	ईसवीसन्
प्रति १२००	२४८९	२०२०	१९६३

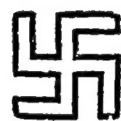
मूल्यम्–रू० ३०-०-०

મળવાનું ઠેકાણું :
શ્રી અ. ભા. શ્વે. સ્થાનકવાસી
જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ,
ઠે. ગરેડિયા કૂવા રોડ, ગ્રીન લૉજ
પાસે, રાજકોટ, (સૌરાષ્ટ્ર).

Published by :
Shri Akhil Bharat S. S.
Jain Shastroddhara Samiti,
Garedia Kuva Road, RAJKOT,
(Saurashtra), W. Ry, India.



ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञां,
जानन्ति ते किमपि तान् प्रति नैष यत्नः।
उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा,
कालो ह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी ॥ १ ॥



हरिगीतच्छन्दः



करते अवज्ञा जो हमारी यत्न ना उनके लिये।
जो जानते हैं तत्त्व कुछ फिर यत्न ना उनके लिये॥
जनमेगा मुझसा व्यक्ति कोई तत्त्व इससे पायगा।
है काल निरवधि विपुल पृथ्वी ध्यान में यह लायगा॥ १ ॥

મૂલ્યઃ રૂ. ૨૫=૦૦

પ્રથમ આવૃત્તિ : પ્રત ૧૨૦૦
વીર સંવત્ : ૨૪૮૯
વિક્રમ સંવત્ ૨૦૧૯
ઇસવીસન્ ૧૯૬૩

મુદ્રક :
મણિલાલ છગનલાલ શાહ
નવપ્રભાત પ્રિન્ટીંગ પ્રેસ,
ઘી કાંટા રોડ, અમદાવાદ.

दक्षिण भारत में जैन समाज के प्रखर नेता दानवीर शेठ स्व० श्रीमान ताराचंदजी साहेब गेलडाकी

जीवनझलक

दक्षिण भारत के प्रवास पर आये हुए किसी भी व्यक्ति के दिलमें, मद्रास जैसे शहर के जैन समाज की शिक्षण और-वैद्यकीय संस्थाओं का सुव्यवस्थित क्रम और प्रबंध देखकर आनंद हुए विना नहीं रह सकता। और स्वतः ही जैन समाज की दान-दिशा को इस ओर ले जाने वाले व्यक्तिके रूपमें दानवीर शेठ स्व० श्रीमान् ताराचंदजी साहेब गेलड़ाका नाम व व्यक्तित्व नजरमें आये विना नहीं रहता। ।

मध्यम कदका इकहटा बदन, खादीकी धोती, खादीका कुरता और खादी की टोपी, पैरमें केन्वासके पादत्राण हाथमें छोटीसी लकडी-चमकती तेज आंखे और ७० वर्ष की अवस्थामें भी-जवानों की तेजी-ये आप के अभिन्न गुणों के सूचक थे। उनके यह सादगी अंत समय तक भी कायम रही थी।

सन १९२७ में आप राजकोट पधारे थे वहां अनेक शिक्षण संस्थाओंको देखकर आपने अपने मनमें तय किया कि मैं मद्रास जाकर शिक्षाकी ऐसीही संस्थाएँ बनाउंगा। उनके विचारों की पुष्टि के रूपमें श्रीमान् बिरदीचंदजी सा. मलेचाने ५००००) रूपया दान दिया और यहांकी श्री एस.एस.जैन एज्युकेशन सोसायटी की स्थापना हुई। इस सोसायटी के विकास के लिये आपने अपने व्यापार से भी-निवृत्ति ले ली और-क्रमशः इसका विकास करते रहे। इस सोसायटी के तत्वावधानमें क्रमशः प्रायमरी स्कूल, बोर्डिंग होम; हाईस्कूल एवं कॉलेज भी-स्थापित हुए और आज भी सुचारु रूपसे चल रहे हैं। जब तक ये संस्थाएँ पूर्णरूपसे आत्म-निर्भर नहीं हुई तबतक आप सोसायटी के प्रारंभ कालसे मंत्री बने रहे। इतनाही नहीं प्रत्येक संस्था के लिये आपने दान दिया था ही-किन्तु ताराचंद गेलडा जैन विद्यालयके लिये ३१०००) रु.का भव्य दान दिया। इसके उपरांत भी २२००० रू. का और दान आपका होनेसे आप

सोसायटी के पेट्रन (संरक्षक) बने। सन १९५६ में अन्यों को भी-कार्य संचालन का अनुभव हो एतर्थ आप निवृत्त हुए, किन्तु अंत समय तक सोसायटी के प्रत्येक कार्य के लिये आप सलाह देते रहे और वह समाज का गौरव था कि आप जैसे कुशल एवं विचक्षण सलाहकार मिले।

दानके प्रवाह को शुभ मार्गमें वहाने का आप का प्रयास अत्यंत अनुकरणीय रहा। और मद्रास के जैन समाजने वैदकीय राहत क्षेत्रमें "जैन मेडिकल रिलीफ सोसायटी" स्थापित की-जिसके तत्त्वावधानमें कई डीसपेंसरियां और एक प्रसूतिगृह चल रहा है। आप उसकी कार्य कारिणी के पदाधिकारी व सदस्य रहे।

इतनाही नहीं आपने अपने व्यापार क्षेत्रको नहीं भूला और सैदापेट (भूदान) में शुद्ध आयुर्वेदिक औपधलय-जिनेश्वर औपधालय खोला जिसके साथ आगे जा कर अपनी पत्नीके नामपर राममुरजबाई गेलडा प्रसूतिगृह भी खोला। एतदर्थ आपने अपने द्वितीय पुत्र स्व. नेमीचंदजी की इच्छाके अनुसार अलग ट्रस्ट बना दिया है।

आपने अपनी जन्मभूमि कुचेरा के लिये भी कुछ करने के विचार से वहां पर भी छात्रालय शुरू १९४२ में करवाया और उसके प्रारम्भकाल से आपकी ओर से २५० मासिक सहायता उसे दी जा रही है-जो अब भी चालू है।

तदुपरांत ताराचंद गेलडा ट्रस्ट भी आपने कायम किया जिससे कई उदीयमान जैन समाज के विद्यार्थिओं की आशाओं को प्रोत्साहन दिया गया और दिया जा रहा है।

उनके अदम्य उत्साह और जोश के साथ उनके दृढ मनोवल का परिचय न दिया जावे तो उनका व्यक्तित्व अधूरा रहेगा। वे अपने आप आगे बढने वाले थे। बहुत ही छोटी उम्र में उन्हों ने व्यापार किया और ताराचंद गेलडा एन्ड सन्स, टी. बी. ज्वेलरीज एवं महेन्द्र स्टोर्स आदि व्यापारिक फर्म चले। सामान्य पूंजीसे लेकर वे लाखोपति बने। सामान्य शिक्षा ज्ञान के बाद भी चार भाषा की जानकारी और प्रबल व्यापारिक ज्ञान आपकी विशेषता थी।

आजीवन खादीव्रत, हाथघंटी का पीसा हुआ धान और गायका दूध-घी कठिन व्रत वे आजीवन निभाते रहे। समाज-सुधारणा भी आपने कई प्रकारसे की।

७८ वर्ष की आयुमें आपका पंडित-मरण हुआ जो आपके यशस्वी जीवन की यशकलगी के समान था। अर्थात् यशस्वी पुरुषों के शिरोमणि थे।

आपके सुपुत्र श्रीमान् भागचंदजी सा. गेलडा भी कर्मठ कार्यकर्ता हैं। जैन एन्ड नेशनल सोसायटी के आप सदस्य एवं पदाधिकारी रह चुके हैं-वर्तमानमें आप सोसायटीके सभापति हैं। गोसेवा और पांजरापोल के कार्यके लिये आप घर २ जाकर चंदा करने में संकोच महसूस नहीं करते और विगत आठेक वर्षों से आप मद्रास पांजरापोलके मंत्री हैं और उसका बहुत ही विकास किया है। द्वितीय पुत्र श्री नेमचंदजी स्वर्गवासी हुए हैं किन्तु आप भी औषधालय निमित्त ट्रस्ट करके गये हैं। तृतीय पुत्र श्री खुशालचंदजी व्यापार-कुशल हैं और कार्य-भार सम्हाले हुए हैं।

इस आगम प्रकाशन के लिये जब आपके पास डेप्युटेशन पहुँचा तब इन सुपुत्रोंने उदारता से ५००१) रु. दिये हैं एतदर्थ धन्यवाद है। अन्य सज्जन भी उनका अनुकरण करें यही अभ्यर्थना है।

सेक्रेटरी
शास्त्रोद्धार समिति

ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र तृतीय भा. की विषयानुक्रमणिका

क्रमाङ्क	विषय	पेज
	चौदहवां अध्ययन	
१	तेतलीपुत्र प्रधानके चारित्रका वर्णन	१–१८
	पंद्रहवां अध्ययन	
२	नदिफलके स्वरूपका निरूपण	११–१३१
	सोलहवां अध्ययन	
३	धर्मरुचि अनगारके चरित्र निरूपण	१३२–१८२
४	सुकुमारिका के चरित्रका वर्णन	१८३–२५१
५	द्रौपदी के चरित्रका निरूपण	२५२–२९६
६	द्रौपदी पूजा चर्चा	२९७–४२६
७	द्रौपदी के चरित्रका वर्णन	४२७–५८५
	सत्रहवां अध्ययन	
८	नावसे व्यापार करने वाले वणिजोंका वर्णन	५८६–५९०
९	नावके निर्यामक का दिङ्मूढ होनेका कथन	५९१–५९५
१०	कालिक द्वीपमें सुवर्ण आदिका वर्णन	५९५–५९६
११	कालिक द्वीपमें हिरण्य आदिसे पोतकाभरना	५९७–६००
१२	कालिक द्वीपमें रहे आकीर्णाश्वों का वर्णन	६०१–६१९
१३	आकीर्णाश्वोंके दृष्टांतको दार्ष्टान्तिक के साथ योजना	६२०–६३७
	अठारहवां अध्ययन	
१४	सुंसमा दारिका के चारित्रका वर्णन	६३८–७०७
	उन्नीसवां अध्ययन	
१५	पुंडरीक–कंडरीक मुनिके चरित्रका वर्णन	७०८–७५२
	द्वितीय श्रुतस्कंध	
१६	द्वितीय श्रुतस्कंध का मङ्गलाचरण	७५३–७६०

१७ द्वितीय श्रुतस्कंधका उपक्रम

प्रथम वर्ग-पहला अध्ययन

१८ कालीदेवीका वर्णन ७६१-८०५

दूसरा अध्ययन

१९ रात्रीदेवीका वर्णन ८०६-८१०

तीसरा अध्ययन

२० रजनी दारिका के चरित्रका निरूपण ८११-८१४

दूसरा वर्ग

२१ शुंभानिशुंभादि देवीयोंके चरित्रका वर्णन ८१५-८१९

तीसरा वर्ग

२२ अलादि देवियोंके चरित्रका वर्णन ८२०-८२५

चौथा वर्ग

२३ रूपादि देवियों के चरित्रका वर्णन ८२५-८२८

पांचवा वर्ग

२४ कमलादि देवियों के चरित्रका वर्णन ८२९-८३३

छट्ठा वर्ग

२५ उत्तरदिशाके इन्द्र महाकाल आदिकोंकी अग्रमहिषियों का वर्णन ८३४-८३५

सातवां वर्ग

२६ सूरप्रभादि देवियों के चारित्रका वर्णन ८३६-८३८

आठवां वर्ग

२७ चन्द्रप्रभादि देवियों के चरित्रका वर्णन ८३९-८४२

नवदा वर्ग

२८ पद्मादिदेवियों के चरित्रका वर्णन ८४२-८४५

दशवां वर्ग

२९ कृष्णादि देवियोंके चरित्रका वर्णन ८४६-८५१

३० शास्त्र प्रशस्ति ८५२

તા. ૧૫-૭-૬૩ ના રોજ ક્લાસવાર

મેમ્બરોની સંખ્યા.

૨૭	આદ્ય મુરબ્બીશ્રી, ૫૦૦૦ થી વધુ રકમ ભરનારા
૩૨	મુરબ્બીશ્રી, ૧૦૦૦ થી વધુ રકમ ભરનારા
૧૩૩	સહાયક મેમ્બરો, ૫૦૦ થી વધુ રકમ ભરનારા
૫૮૬	લાઇફ મેમ્બરો, ૨૫૦ થી વધુ રકમ ભરનારા
૪૯	બીજા નંબરના જુના મેમ્બરો, ૧૫૦ થી વધુ રકમ ભરનારા
૮૨૭	કુલ મેમ્બરો

રૂપિયા બસો પચાસ તથા રૂપિયા પાંચસો વાળા મેમ્બરો લેવાનું હવે બંધ છે. ફક્ત રૂા. ૧૦૦૧ થી મુરબ્બીશ્રી માટે ૭૦ સીતેર જગ્યા ખાલી છે અને આદ્ય મુરબ્બીશ્રી રૂા. ૫૦૦૧ થી દાખલ કરવામાં આવે છે.

મેમ્બરોની સંખ્યા પૂરતાં જ શાસ્ત્રો છપાય છે જેથી પાછળથી દાખલ થનારને સૂત્રો મળવાં મુશ્કેલ છે માટે જીજ્ઞાસુ ભાઇઓ તથા બહેનોને અમારી વિનંતી છે કે તેઓ મુરબ્બીશ્રી અથવા આદ્ય મુરબ્બીશ્રીમાં પોતાનું નામ જલ્દી મોકલી આપે

નમ્ર સેવક,
સાકરચંદ ભાઇચંદ શેઠ
મંત્રી.

રાજકોટ
તા. ૧૫-૭-૬૩

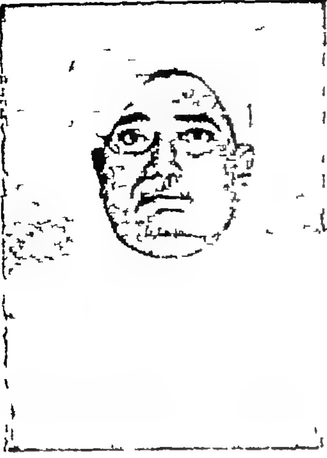
आद्यमुरब्बीश्री



शेठ साहेबश्री ताराचंदजी साहेब, गेलडा

मद्रास

આગ્રમુખ્યશ્રીઓ



(સ્વ.) શેઠશ્રી હરખચંદ કાલીદાસ વારિયા
ભાણવડ.



કોઠારી હરગોવિંદ જેચંદભાઈ
રાજકોટ.



શેઠશ્રી શાંતિલાલ મંગળદાસભાઈ
અમદાવાદ



(સ્વ) શેઠશ્રી ધારશીભાઇ જીવણલાલ
બારસી.



(સ્વ) શેઠશ્રી છગનલાલ શામળદાસ ભાવસાર
અમદાવાદ

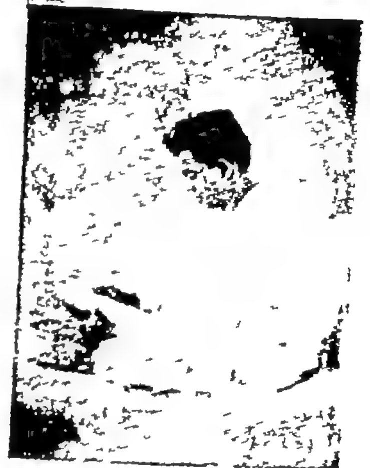
આદ્યમુરબ્બીશ્રીઓ



(સ્વ) શેઠશ્રી શામજીભાઈ વેલજીભાઈ વીરાણી
રાજકોટ.



શેઠશ્રી રામજીભાઈ શામજીભાઈ વીરાણી
રાજકોટ.



(સ્વ) વિનોદકુમાર વીરાણી
રાજકોટ.
(દીક્ષા લીધા પહેલા શાસ્ત્રાભ્યાસ કરતા)



શેઠશ્રી મિશ્રીલાલજી લાલચંદજી સા. લુણિયા
તથા શેઠશ્રી જેવંતરાજજી લાલચંદજી સા

આદ્યમુરબ્બીશ્રીઓ





(સ્વ.) શેઠ રંગજીભાઈ મોહનલાલ શાહ
અમદાવાદ.

સ્વ. શ્રીમાન્ શેઠશ્રી મુકનચંદજી સા.
બાલિયા પાલી મારવાડ.



(સ્વ) શેઠશ્રી દિનેશભાઈ કાંતિલાલ શાહ
અમદાવાદ





શેઠશ્રી જેસિંગભાઈ પોચાભાઈ
અમદાવાદ.

સ્વ. શેઠશ્રી આત્મારામ માણેકલાલ
અમદાવાદ.

આદ્યમુરબ્બીશ્રીઓ



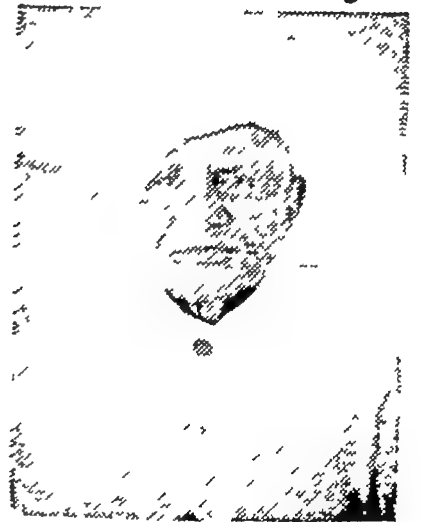
શેઠ સાહેબ શ્રી કીશનચંદજી સાહેબ જોહરી દિલ્હી



સ્વ. શેઠશ્રી હરિલાલ અનોપચંદ શાહ ખંભાત



૧ વચ્ચે બેઠેલા મોટાભાઇ શ્રીમાન મૂલચંદજી જવાહીરલાલજી બરડિયા
૨ બાજુમાં બેઠેલા મિશ્રીલાલજી બરડિયા
૩ ઉભેલા મોથી નાનાભાઈ પૂનમચંદ બરડિયા



શ્રી વૃજલાલ દુર્લભજી પારેખ રાજકોટ.

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

श्रीजैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर–पूज्यश्री–घासीलालव्रतिविरचितया अनगार-धर्मामृतवर्षिण्याख्यया व्याख्यया समलङ्कृतं

श्री-ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रम्

तृतीयो भागः

अथ चतुर्दशाध्ययनं प्रारभ्यते

अस्य व्यख्यायमानचतुर्दशाध्ययनस्य व्याख्यातेन त्रयोदशेनाध्ययनेन सहाय-मभिसम्बन्धः–पूर्वस्मिन् अध्ययने सतां गुणानां गुणाभिवर्द्धकसद्गुरूपदेशरूप-सामग्र्यभावे हानिरुक्ता, इहतु–तथाविधसामग्रीसद्भावे गुणसंपदुपजायते, इत्यभि-धीयते, इत्येवं पूर्वेण सहाभिसंबद्धस्यास्येदमादिसूत्रम्–' जइणं भंते 'इत्यादि ।

मूलम्–जइणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं तेरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चोद्द-समस्स णं भंते ! णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महा-वीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू ! तेणं

चौदहवां अध्ययन प्रारंभः–

इस चौदहवें अध्ययन का तेरहवें अध्ययन के साथ इस प्रकार का संबन्ध है–तेरहवें अध्यन में जो यह बात कही गई है कि आत्मा में सम्यग्दर्शन आदि प्रकट भी हो गये, हों परन्तु यदि उन को बढाने वाली सद्गुरु आदि की उपदेश रूप सामग्री का अभाव रहे तो उन गुणों की हानि हो जाति है । इस अध्ययन में अब सूत्रकार यह स्पष्ट करेंगे कि यदि जीव को तथाविध सामग्री प्राप्त होती रहती है तो गुण संपत्ति भी बढती रहती है:–' जइण भंते ' इत्यादि ।

ચૌદમું અધ્યયન પ્રારંભ—

ચૌદમા અધ્યયનનો તેરમા અધ્યયનની સાથે આ જાતનો સંબંધ છે કે તેરમા અધ્યયનમાં જે આ વાતનું સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવ્યું છે કે આત્મામાં સમ્યગ્દર્શન વગેરે પ્રગટ પણ થઇ ગયાં હોય છતાં જો સદ્ગુરુ વગેરેની ઉપદેશ રૂપ તેમનું વર્ધન કરનાર સામગ્રી હોય નહિ તો તે ગુણોની હાનિ થઈ જાય છે. આ અધ્યયનમાં સૂત્રકાર હવે એ જ વાત સ્પષ્ટ કરવા માગે છે કે જીવને જો તથાવિધ સામગ્રી મળતી રહે છે તો ગુણ સંપત્તિ પણ વધતી રહે છે.

' जइणं भते ' इत्यादि—

कालेणं तेणं समएणं तेयलिपुरं नाम नगरं पमयवणे उज्जाणे कणगरहे राया । तस्स णं कणगरहस्स पउमावई देवी । तस्स णं कणगरहस्स तेयलिपुत्ते णामं अमच्चे सामदंड-दक्खे । तत्थ णं तेयलिपुरे कलादे नामं मूसियारदारए होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए । तस्स णं भद्दा नामं भारिया । तस्स णं कलायस्स मूसियारदारयस्स धूया, भद्दाए अत्तया पोट्टिला नामं दारिया होत्था रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा । तएणं पोट्टिला दारिया अन्नया कयाइ ण्हाया सव्वालंकारविभूसिया चेडियाचक्कवालसंपरिवुडा उप्पिं पासायवरगया आगासतलगंसि कणगमएणं तिंदूसएणं कीलमाणी२ विहरइ ॥ सू० १ ॥

टीका—जम्बूस्वामी पृच्छति–यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्संप्राप्तेन त्रयोदशस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः चतुर्दशस्य खलु भदन्त ! ज्ञाताध्ययनस्य श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः

टीकार्थ–जंबू स्वामी पूछते हैं कि (भंते–जइणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं) हे भदंत! यदि श्रमण भगवान् महावीरने कि जिन्होंने सिद्धिगति नाम का स्थान प्राप्त कर लिया है (तेरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते चोद्दसमस्स णं भंते! णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते) तेरहवें ज्ञाताध्ययन का पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्रज्ञप्त किया है–तो हे भदंत ! चौदहवें ज्ञाताध्ययन का उन्हीं श्रमण भगवान् महावीर ने क्या अर्थ निरूपित किया-

---

ટીકાર્થ—જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે કે (भंते ! जइणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं) હે ભદંત ! જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે–કે જેઓ સિદ્ધ ગતિ સ્થાનને મેળવી ચૂક્યા છે

(तेरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चोद्दसमस्स णं भंते ! णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते)

તેરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો હે ભદંત ! તે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે જ આ ચૌદમા જ્ઞાતાધ્યયનનો શો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ?

प्रश्नः। सुधर्मा स्वामी कथयति-एवं खलु जम्बू!। तस्मिन् काले तस्मिन् समये तेतलिपुरं नाम नगरम् आसीत्। तत्र प्रमदवनं नाम उद्यानमासीत्। तस्य नगरस्य कनकरथो नाम राजाऽसीत्। तस्य खलु कनकरथस्य राज्ञः पद्मावती नाम देवी। तस्य खलु कनकरथस्य राज्ञः तेतलिपुत्रो नाम अमात्यः 'सामदंडदक्खे' सामदण्डदक्षः=अत्र सामदण्डग्रहणाद् दानभेदयोरपि ग्रहणं तेन सामदानभेददण्डात्मकचतुर्विधोपायनिपुण इत्यर्थः आसीत्।

तत्र खलु तेतलिपुरे कलादो नाम 'मूसियारदारए' मूषीकारदारकः=सुवर्णकारदारकः, 'मूषी' इति मूषापर्यायः, गौरादित्वादूङीप् यत्र सुवर्णादि

है? (एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं तेयलिपुरं नाम नगरं पमयवणे उज्जाणे कणगरहे राया, । तस्स णं कणगरहस्स पउमावई देवी) श्री सुधर्मा स्वामी अब श्री जंबू स्वामी के इस प्रश्न का उत्तर देने के अभिप्राय से कहते हैं-जंबू! सुनो-तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार से है-उस काल और उस समय में तेतलिपुर नाम का नगर था। उस में प्रमदवन नाम का उद्यान था। उस नगर के राजा का नाम कनक रथ था। इस कनकरथ राजा की रानी का नाम पद्मावती देवी था। (तस्स णं कणगरहस्स तेयलिपुत्ते णामं अमच्चे सामदंडदक्खे। तत्थ णं तेयलिपुरे कलादे नामं मुसियारदारए होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए) उस कनक रथ राजा का अमात्य था जिस का नाम तेतलि पुत्र था। यह साम, दान, भेद और दंड इन चार प्रकार की राजनीति में विशेष पटु निपुण था। उसी तेतलिपुर में कलाद नाम का

(एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं तेयलिपुरं नाम नगरं पमयवणे उज्जाणे कणगरहे राया। तस्स णं कणगरहस्स पउमावई देवी)

શ્રી સુધર્માસ્વામી હવે શ્રી જંબૂ સ્વામીને આ પ્રશ્નોના જવાબ આપવાની ઈચ્છાથી કહે છે કે હે જંબૂ! સાંભળો તમારા પ્રશ્નનો જવાબ આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે તેતલિપુર નામે નગર હતું. તેમાં પ્રમદવન નામે ઉદ્યાન હતું. તે નગરના રાજાનું નામ કનકરથ હતું. તે કનકરથ રાજાની રાણીનું નામ પદ્માવતી હતું.

(तस्स णं कणगरहस्स तेयलिपुत्ते णामं अमच्चे सामदंडदक्खे। तत्थ णं तेयलिपुरे कलादे नामं मूसियारदारए होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए)

તે કનકરથ રાજાનો એક અમાત્ય (મંત્રી) હતો જેનું નામ તેતલિપુત્ર હતું. તે સામ, દાન, ભેદ અને દંડ એ ચારે પ્રકારની નીતિમાં સવિશેષ નિપુણ-કુશળ હતો. તે તેતલિપુરમાં કલાદ નામે મૂષીકાર દારક (સોનીનો પુત્ર)

गल्यते सा, तां करोति=साधनसामग्रीत्वेन निष्पादयति, इतिव्युत्पत्त्या मूषीकार-इति सुवर्णकारे योगारूढोऽय शब्दः । 'होत्था' आसीत् । यो हि आढयो यावद-परिभूतः । तस्य खलु कलादस्य मूषिकारदारकस्य दुहिता भद्राया आत्मजा पोट्टिला नाम दारिका आसीत्, याहि रूपेण च=आकृत्या, यौवनेन च=तारुण्येन च लावण्येन च=शरीरोत्कृष्टकान्ति विशेषेण उत्कृष्टा अतएव उत्कृष्टशरीराऽसीत् । ततः खलु पोट्टिला दारिका अन्यदा कदाचित् स्नाता सर्वालङ्कारविभूषिता

मूषीकार दारक–सुवर्णकार का पुत्र–रहता था। मूषी शब्द का अर्थ सांचा है। इस में सुवर्णादि द्रव्य पिघलाये जाते है। इस सांचे को जो बनाता है उस का नाम मूषीकार है। इस व्युत्पत्ति के अनुसार यह शब्द सुवर्णकार (सोनार) में योगारूढ हुआ है। यह मूषीकार दारक आढय यावत् अपरिभूत था। (तस्स णं भद्दा नामं भारिया, तस्स णं कलायस्स मूसियारदारयस्स धूया, भद्दाए अत्तया पोट्टिला नामं दारि-या होत्था, रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठ सरीरा) इस मूषिकार दारक कलाद–सौनी की अत्यन्त प्रिय पोट्टिला नाम की लड़की थी जो इस की पत्नी भद्रा की कुक्षि से उत्पन्न हुई थी। यह आकृति से, यौवन से एवं लावण्य से–शारीरिक उत्कृष्ट कांति से–बहुत ही अधिक मनोहर थी–अतः इस का शरीर बहुत अधिक उत्तम था। (तएणं पोट्टिला दारिया अन्नया कयाइं ण्हाया सव्वालंकार-

---

રહેતો હતો 'મૂષી' શબ્દનો અર્થ સાચો (બીબું) છે. તેમાં સોનું વગેરે દ્રવ્યો ઓગાળવામાં આવે છે. આ સાંચાને બનાવનારનું નામ મૂષીકાર છે. આ વ્યુત્પત્તિને લઈને આ શબ્દ સુવર્ણકાર (સોની) માટે યોગારૂઢ થઈ ગયો છે. તે મૂષિકારદારક આઢય (ધનવાન) યાવત્ અપરિભૂત હતો.

(तस्स णं भद्दा नामं भारिया तस्स णं कलायस्स मूसियारदारयस्स धूया भद्दाए अत्तया पोट्टिला नामं दारिया होत्था, रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेणं य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा)

તે મૂષિકારદારક કલાદ સોનીની ખૂબ જ વહાલી પોટ્ટિલા નામે પુત્રી હતી જે તેની પત્ની ભદ્રાના ગર્ભથી ઉત્પન્ન થઈ હતી, તે આકૃતિથી, યૌવનથી, લાવણ્યથી–શરીરની ઉજ્જ્વલ–કાંતિથી બહુ જ મનોહર હતી, એથી તેનું શરીર ખૂબ જ ઉત્તમ હતું.

(तएणं पोट्टिलादारिया अन्नया कयाइं ण्हाया सव्वलंकारविभूसिया चेडिया-चक्कवालसंपरिवुडा उप्पिं पासायवरगया आगासतलगंसि कणगमएणं तिंदुस-एणं कीलमाणी २ विहरइ)

'चेडियाचक्कवालसंपरिवुडा' चेटिकाचक्रवालसंपरिवृता=चेटिकाः=दास्यस्तासां यच्चक्रवालं मण्डलं तेन संपरिवृता=सहिता दासीसमूहपरिवेष्टितेत्यर्थः, उपरिप्रासादवरगता प्रासादोपरिस्थिता—आकाशतले=अनावृतप्रदेशे 'छत्त' इति प्रसिद्धे कनकमयेन=स्वर्णनिर्मितेन 'तिंदूसएणं' तिन्दूसकेन=कन्दुकेन क्रीडन्ती २ विहरति ॥ सू० १ ॥

मूलम्—इमं च णं तेयलिपुत्ते अमच्चे ण्हाए आसखंधवरगए महया भडचडगरवंदपरिक्खित्ते आसवाहणियाए णिज्जायमाणे कलायस्स मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीइवयइ। तएणं से तेयलिपुत्ते मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीइवयमाणे२ पोट्टिलं दारियं उप्पिं पासायवरगयं आगासतलगंसि कणगतिंदूसएणं कीलमाणीं पासइ, पासित्ता पोट्टिलाए दारियाए रूवे य जाव अज्झोववन्ने कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी – एसा णं देवाणुप्पिया ! कस्स दारिया ? किं नामधेज्जा ?। तएणं कोडुंबियपुरिसा तेयलिपुत्तं एवं वयासी—एसा णं सामी ! कलायस्स मूसियारदारगस्स धूया, भद्दाए अत्तया पोट्टिला नामं दारिया रूवेण य जाव उक्किट्ठसरीरा। तएणं से तेयलिपुत्ते आसवाहणियाओ पडिनियत्ते समाणे

विभूसिया चेडियाचक्कवालसंपरिवुडा उप्पिं पासायवरगया आगासतलगंसि कणगमएणं तिंदूसएणं कीलमाणी २ विहरइ) एक दिन की बात है कि यह स्नान कर के तथा समस्त आभरणों से विभूषित हो करके अपनी दासियोंके साथ प्रासाद के ऊपर छत पर सुवर्ण निर्मित कन्दुक (गेंद) से क्रीडा कर रही थी। सूत्र ॥ १ ॥

એક દિવસે તે સ્નાન કર્યા બાદ પોતાના બધા અંગોને ઘરેણાંઓથી શણગારીને પોતાની દાસીઓની સાથે મહેલની ઉપરની અગાશીમાં સોનાથી બનાવડાવેલી દડીથી રમી રહી હતી. ॥ સૂત્ર "૧" ॥

अब्भिंतरट्ठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता, एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! कलादस्स मूसियारदारयस्स धूयं भद्दाए अत्तयं पोट्टिलं दारियं मम भारियत्ताए वरेह। तएणं ते अब्भंतरट्ठाणिज्जा पुरिसा तेतलिणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु तहत्ति किच्चा जेणेव कलायस्स मूसियारस्स गिहे तेणेव उवागया। तएणं से कलाए मूसियारदारए ते पुरिसे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्टतुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता, आसणेणं उवणिमंतेइ उवणिमंतित्ता, आसत्थे वीसत्थे सुहासणवरगए एवं वयासी-संदिसंतु णं देवाणुप्पिया! किमागमणपओयणं ? तएणं ते अब्भिंतरट्ठाणिज्जा पुरिसा कलायं मूसियदारयं एवं वयासी-अम्हे णं देवाणुप्पिया! तव धूयं भद्दाए अत्तयं पोट्टिलं दारियं तेयलिपुत्तस्स भारियत्ताए वरेमो, तं जइ णं जाणासि देवाणुप्पिया! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो संजोगो ता दिज्जउणं पोट्टिला दारिया तेयलिपुत्तस्स, तो भण देवाणुप्पिय! किंदलामो सुक्कं? तएणं कलाए मूसियारदारए ते अब्भिंतरट्ठाणिज्जे पुरिसे एवं वयासी-एस चेव णं देवाणुप्पिया! मम सुक्के, जन्नं तेयलिपुत्ते मम दारिया निमित्तेणं अणुग्गहं करेइ। ते अब्भिंतरठाणिज्जे पुरिसे विपुलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पुप्फवत्थ जाव मल्लालंकारेणं सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ। तएणं ते कलायस्स मूसिया-

रदारयस्स गिहाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता, जेणेव तेयलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता, तेयलिपुत्तस्स अमच्चस्स एयमट्ठं निवेदेंति ॥ सू० २ ॥

टीका—'इमं च णं' इत्यादि । अस्मिंश्च खलु समये तेतलिपुत्रोऽमात्यः स्नातः 'आसखंधवरगए'=अश्वस्कन्धवरगतः=अश्वारूढः 'महया भडचडगरवंदपरिक्खित्ते' महाभटचटकरवृन्दपरिक्षिप्तः महान्तो भटचटकराः=भटसमूहाः तेषां वृन्दैः=समूहैः परिक्षिप्तः=परिवृतः सन् 'आसवाहणियाए' अश्ववाहनिकायै=अश्ववाहनेन क्रीडनार्थं 'णिज्जायमाणे'=निर्यान्=निर्गच्छन् कलादस्य मूषीकारदारकस्य गृहस्य अदूरसामन्तेन पार्श्वभागेन 'वीइवयइ'=व्यतिव्रजति=गच्छति । ततः खलु स तेतलिपुत्रो मूषीकारदारकस्य गृहस्य अदूरसामन्तेन व्यतिव्रजन् पोट्टिलां दारिकाम्

'इमं च णं तेयलि पुत्ते अमच्चे' इत्यादि ।

टीकार्थ—(इमं च णं) इसी समय (तेयलिपुत्ते अमच्चे ण्हाए आसखंधवरगए महया भटचडगरवंदपरिक्खित्ते आसवाहणियाए णिज्जायमाणे कलायस्स मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीइवयइ) तेतलि पुत्र अमात्य स्नान से निपट कर घोड़े पर चढा हुआ बड़े २ भट समूहों के वृन्दों से घिरा होकर अश्वक्रीडा के लिये मूषीकारदारक कलादके (सोनार) मकानके पास से निकला । (तएणं से तेयलिपुत्ते मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीइवयमाणे २ पोट्टिलं दारियं उप्पिं पासायवरगयं आगासतलगंसि कणगतिंदूसएणं कीलमाणी पासइ) मूषीकार दारक कलाद के मकान के पास से होकर जाते हुए

इमं च णं तेयलिपु अमच्चे' इत्यादि—

टीकार्थ—(इमं च णं) ते वखते

(तेयलिपुत्ते अमच्चे ण्हाए आसखंधवरगए महया भटचडगरवंदपरिक्खित्ते आसवाहाणियाए णिज्जायमाणे कलायस्स मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीइवयइ)

तेतलिपुत्र अमात्य स्नानथी परवारीने घोडा उपर सवार थया अने त्यारपछी विशाळ भटो (योद्धाओ) ना समूहोथी वींटळाईने अश्वक्रीडा माटे मूषीकारदारक कलादना घरनी पासे थईने नीकळ्या.

(तएणं से तेयलिपुत्ते मूसियादारगस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीइवयमाणे२ पोट्टिलं दारियं उप्पिं पासायवरगयं आगासतलगंसि कणगतिंदूसएणं कीलमाणी पासइ)

उपरि प्रासादवरगतामाकाशतले कनकतिन्दूसकेन क्रीडन्तीं पश्यति, दृष्ट्वा, पोट्टिलाया दारिकाया रूपे च यौवने च लावण्ये च 'जाव अज्झोववन्ने' यावत्-मूर्च्छितः, गृद्धः, ग्रथितः, अध्युपपन्नः = अत्यन्तसक्तः इत्यर्थः कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा, एवमवदत्-एषा खलु देवानुप्रियाः! कस्य दारिका किं नामधेया ?। ततः खलु कौटुम्बिकपुरुषाः तेतलिपुत्रम् एवमवदन्-एषा खलु स्वामिन्! कलादस्य मूषीकारदारकस्य दुहिता, भद्राया आत्मजा पोट्टिला नाम दारिका रूपेण च

उस तेतलिपुत्र अमात्य ने प्रासाद के ऊपर छत पर सुवर्ण की कन्दुक (गेंद) से क्रीडा करती हुई उस पोट्टिला दारिका को देखा। (पासित्ता पोट्टिलाए दारियाए रूवे य जाव अज्झोववन्ने कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-एसा णं देवाणुप्पिया कस्स दारिया ? किं नामधेज्जा?) देख कर वह उस पोट्टिला दारिका के रूप, यौवन एवं लावण्य में मूर्छित, गृद्ध, ग्रथित बनकर उस पर अत्यन्त आसक्ति से युक्त हो गया। उसी समय उस ने कौटुम्बिकपुरुषों को बुलाया-बुलाकर उन से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियो! कहो यह कन्या किसकी है और इसका नाम क्या है ? (तएणं कोडुंबियपुरिसा तेयलिपुत्तं एवं वयासी-एसा णं सामी! कलायस्स मूसियारदारगस्स धूया भद्दाए अत्तया पोट्टिला नामं दारिया रूवेण य जाव उक्किट्ठसरीरा) उन कौटुम्बिक पुरुषों ने तेतली पुत्र से ऐसा कहा-हे स्वामिन्! यह मूषीकार दारक कलाद की पुत्री है जो भद्रा भार्या की कुक्षि से उत्पन्न हुई है।

મૂષિકારદારક કલાદના ઘરની પાસે થઈને જતા તે તેતલિપુત્ર અમાત્યે મહેલના ઉપરની અગાશી ઉપર સોનાની દડીથી રમતી તે પોટ્ટિલા દારિકાને જોઈ.

(पासित्ता पोट्टिलाए दारिआए रूवे य जाव अज्झोववन्ने कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी एसा णं देवाणुप्पिया कस्स दारिया ? किं नामधेज्जा ?)

તે પોટ્ટિલા દારિકાને જોઈને તે તેના રૂપ, યૌવન અને લાવણ્યમાં મૂર્ચ્છિત ગૃદ્ધ, ગ્રથિત બનીને અત્યંત આસક્ત થઈ ગયો. તરત જ તેણે કૌટુંબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેણે તેઓને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો! બોલો, આ કન્યા કોની છે અને એનું શું નામ છે!

(तएणं कोडुंबियपुरिसा तेयलिपुत्तं एवं वयासी-एसा णं सामी। कलायस्स मूसियारदारगस्स धूया, भद्दाए अत्तया पोट्टिला नामं दारिया रूवेण य जाव उक्किट्ठ सरीरा)

તે કૌટુંબિક પુરૂષોએ તેતલિપુત્રને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સ્વામિન્! તે મૂષિકારદારક કલાદની પુત્રી છે અને ભદ્રાભાર્યાના ગર્ભથી તેનો જન્મ થયો

यावत्-उत्कृष्टशरीरा अस्ति। ततः खलु स तेतलिपुत्र अश्ववाहनिकायाः प्रतिनिवृत्तः=प्रत्यागतः सन् 'अब्भितरट्ठाणिज्जे' अभ्यन्तरस्थानीयान्=अन्तरङ्गप्रेष्य-पुरुषा शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-गच्छत खलु यूयं देवानुप्रियाः! कलादस्य मूषीकारदारकस्य दुहितरं भद्राया आत्मजां पोट्टिलां दारिकां मम भार्यात्वेन वृणुत। हे देवानुप्रियाः यूयं तथा प्रयतध्वम्, यथा स मूषीकारदारकः स्वदुहितरं मम भार्यात्वेन मह्यं दद्यादिति भावः। ततः खलु ते आभ्यन्तरस्थानीयाः पुरुषास्तेतलिना एवमुक्ताः सन्तो हृष्ट तुष्टाः करतलपरिगृहीतं शिर आवर्त्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा, 'तहत्ति' तथेति तथा करिष्यामीति 'किच्चा' कृत्वा=स्वीकृत्य यत्रैव कला-

---

इस का नाम पोट्टिला है। रूप आदि से यह बहुत ही उत्कृष्ट शरीर वाली है। (तएणं से तेयलिपुत्ते आसवाहणिएओ पडिनियत्ते समाणे अब्भितरठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी, गच्छहणं तुब्भे देवाणुप्पिया! कलादस्स मूसियारदारयस्स धूयं भद्दाए अत्तयं पोट्टिलं दारियं मम भारियत्ताए वरेह) इस के बाद वह तेतलि पुत्र अमात्य, अश्ववाहनिका से पीछे जब लौटा तो लौटते ही उसने अपने अन्तरंग प्रेष्य पुरुषों को बुलाया-और बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियों? तुम लोग जाओ-और मूषीकार दारक कलाद की पुत्री जिसका नाम पोट्टिला है, जो भद्रा की कुक्षि से उत्पन्न हुई है उसे मेरी भार्यारूप से वरआओ। तात्पर्य इस का यह है कि तुमलोग वहां जाकर ऐसा प्रयत्न करो कि जिस से वह मूषीकारदारक कलाद अपनी पुत्री को पत्नी के रूप में मुझे दे देवें। (तएणं ते अब्भितरठाणिज्जा पुरिसा तेतलिणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठ तुट्ठा करयल परिग्गहियं सिरसा

છે. તેનું નામ પોટ્ટિલા છે તે રૂપ વગેરેથી ખૂબ જ ઉત્કૃષ્ટ શરીરવાળી છે.

(तएणं से तेयलिपुत्ते आसवाहणियाओ पडिनियत्ते समाणे अब्भितरठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! कलादस्स मूसियारदारयस्स धूयं भद्दाए अत्तय पोट्टिलं दारियं मम भारियत्ताए वरेह)

ત્યારપછી તે તેતલિપુત્ર અમાત્ય અશ્વવાહનિકાથી ઘેર પાછો આવ્યો. ત્યારે આવતાંની સાથે જ તેણે પોતાના-અન્તરંગ પ્રેષ્ય પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે જાઓ અને મૂષીકારદારક કલાદની પુત્રી છે-કે જેનું નામ પોટ્ટિલા છે, અને જે ભદ્રાના ગર્ભથી ઉત્પન્ન થઈ છે-તેને ભાર્યા રૂપમાં મને આપો. તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે તમે લોકો ત્યાં જઈને એવી કોશિશ કરો કે જેથી તે મૂષીકારદારક કલાદ પોતાની પુત્રીને પત્ની રૂપમાં મને આપી દે.

दस्य मूषीकारदारकस्य गृहं तत्रैव उपागताः। ततः खलु स कलादो मूषीकारदारकः तान् अभ्यन्तरस्थानीयान् पुरुषानेजमानान् पश्यति, दृष्ट्वा हृष्टतुष्टोऽतिशयप्रमुदितः आसनात् अभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय तान् सम्मानयितुं तेषामभिमुखं सप्ताष्टपदानि

वत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु तहत्ति किच्चा जेणेव कलायस्स मूसियारस्स गिहे तेणेव उवागया) इस प्रकार तेतलि पुत्र के द्वारा कहे गये वे अन्तरंग प्रेष्य पुरुष हृष्ट तुष्ट होते हुए वहां से निकल कर मूषीकार कलाद का जहां घर था वहां आये। आते समय उन्होंने तेतलि पुत्र को दोनों हाथों की अंजलि बनाकर और उसे मस्तक पर रख कर नमस्कार किया–और हम आपने जैसा कहा है वैसा ही करेंगे इस बात को उसे आश्वासन देकर स्वीकार किया था। (तएणं से कलाए मूसियारदारए ते पुरिसे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठ तुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता आसणेणं उवणिमंतेइ, उवणिमंतित्ता आसत्थे वीसत्थे सुहासणवरगए एवं वयासी संदिसतु णं देवाणुप्पिया! किमागमणपओयणं–तएणं ते अब्भितरठाणिज्जा पुरिसा कलायं मूसियदारय एवं वयासी) जब उस मूषीकार दारककलादने उन पुरुषों को अपने घर की ओर आते हुए देखा–तो वह देखकर हृष्ट तुष्ट हो अपने आसन पर से उठ बैठा–उठ

(तएणं ते अब्भंतरठाणिज्जा पुरिसा तेतलिणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु तहत्ति किच्चा जेणेव कलायस्स मूसियारस्स गिहे तेणेव उवागया)

આ રીતે તેતલિપુત્રે જેઓને આદેશ આપ્યો છે એવા તે અંતરંગ પ્રેષ્ય પુરૂષ હૃષ્ટ તુષ્ટ થતાં ત્યાંથી રવાના થઈને મૂષીકાર કલાદનું જ્યાં ઘર હતું ત્યાં પહોંચ્યા. તેતલિપુત્રની પાસેથી પાછાં ફરતાં તેઓએ બંને હાથોની અંજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કર્યા અને અમે આપે જેમ હુકમ કર્યો છે તેનો યથાવત પાલન કરીશું, આ રીતે તેમની આજ્ઞા તેઓએ સ્વીકારી

(तएणं से कलाए मूसियारदारए ते पुरिसे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता आसणेणं उवणिमंतेइ, उवणिमंतित्ता आसत्थे सुहासणवरगए एवं वयासी संदिसतु णं देवाणुप्पिया! किमागमणपओयणं–तएणं ते अब्भितरठाणिज्जा पुरिसा कलायं मूसियदारयं एवं वयासी)

મૂષીકારદારક કલાદે જ્યારે તે પુરૂષોને પોતાના ઘર તરફ આવતા જોયા ત્યારે તે જોઈને હૃષ્ટ તુષ્ટ થઈને પોતાના આસન ઉપરથી ઊભો થઈ ગયો અને

गत्वा तानग्रे कृत्वा स्वयम् 'अणुगच्छइ' अनुगच्छति, तेषां पृष्ठवर्तीभूत्वा गच्छति, अनुगम्य, आसनेन उपनिमन्त्रयति=आसनदानेन तान् पुरुषानुपवेशयति, उपनिमन्त्र्य, आश्वस्थः, विश्वस्थः एतेषाममात्यपुरुषाणां सत्कारो यथावज्जात इति हेतोः स्वस्थमनाः भूत्वा सुखासनवरगतः=स्वयमपि स्वकीयासने सुखोपविष्टः सन् एवमवदत्-संदिशन्तु खलु हे देवानुप्रियाः! भवतां किमागमनप्रयोजनम् ? ततः खलु ते आभ्यन्तरस्थानीयाः पुरुषाः कलादं मूषीकारदारकम् एवमवदन्-वयं खलु देवानुप्रिय! तव दुहितरं भद्राया आत्मजां पोट्टिलां दारिकां तेतलिपुत्रस्य भार्यात्वेन वृणुमः, तद् यदि खलु त्वं 'जाणसि' जानासि=मन्यसे, हे देवानुप्रिय! यद् अस्माकमेतत्त्वत्कन्याविषयकं याचनं 'जुत्तं वा' युक्तं वा=उचितम् 'पत्तं वा' प्राप्तं वा मनसिसंलग्नं वा 'सलाहणिज्जं वा' श्लाघनीयं वा=प्रशंसनीयं वा अपि च 'सरिसो वा संजोगो' सदृशो वा संयोगः तेतलिपुत्रेण सह तव कन्याया वैवाहिकः

कर फिर वह सात आठ डग प्रमाण आगे उन का सत्कार करने के लिये गया। वहां से उन्हें आगेकर के वह स्वयं उनके पीछे २ आया। आकर के फिर उसने उन्हें आसनों पर बैठाया-बैठा कर आश्वस्त विश्वस्त होकर बाद में वह स्वयं दूसरे अपने आसन पर शान्ति पूर्वक बैठ गया। बैठ जाने के बाद फिर उसने इस प्रकार कहा- हे देवानुप्रियो! कहिये-किस कारण से आप यहां पधारे हैं-आपलोगों के आने का क्या प्रयोजन है-इस प्रकार उसके पूछने पर उन अभ्यन्तर स्थानीय पुरुषों ने उस सुवर्णकार के पुत्र कलाद से इस प्रकार कहा (अम्हे णं देवाणुप्पिया! तव धूयं भद्दाए अत्तयं पोट्टिलं दारियं तेयलिपुत्तस्स भारियत्ताए वरेमो, तं जइणं जाणसि देवाणुप्पिया! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो वा संजोगो ता दिज्जउणं पोट्टिला दारिया तेयलि-

---

ઊભો થઈને તેમના સ્વાગત માટે સાત આઠ પગલાં સામે ગયો. ત્યાંથી તેણે આવનારાઓને આગળ કરીને એટલે કે પોતે તેઓની પાછળ પાછળ ચાલતો ત્યાં આવ્યો અને આવીને તેણે તેઓને આસનો ઉપર બેસાડયા. ત્યારપછી આશ્વસ્ત વિશ્વસ્ત થઈને તે પોતે બીજા આસન ઉપર શાંતિપૂર્વક બેસી ગયો. બેસીને તેણે તેઓએ વિનય પૂર્વક કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો! બોલો, તમે શા કારણથી અહીં આવ્યા છો? તમે શા પ્રયોજનથી આવ્યા છો? આ રીતે કલાદ (સુવર્ણકાર) ની વાત સાંભળીને તે આભ્યંતર સ્થાનીય પુરૂષોએ તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે

(अम्हेणं देवाणुप्पिया! तव धूयं भद्दाए अत्तयं पोट्टिलं दारियं तेयलि पुत्तस्स भारियत्ताए वरेमो, तं जइणं जाणसि देवाणुप्पिय! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं

सम्बन्धो योग्यो भवतीति, यदि जानासि तदा दीयतां खलु पोट्टिला दारिका तेतलिपुत्राय 'तो' तर्हि भण=ब्रूहि, हे देवानुप्रिय! किं दद्मः शुल्कम् सम्मानपुरस्कारं भवते किं समर्पयामः। ततः खलु कलादो मूषीकदारकः अभ्यन्तरस्थानीयान् पुरुषान् एवमवदत्–एतदेव खलु देवानुप्रियाः! मम शुल्कम्, यत्खलु तेतलिपुत्रो मम दारिकानिमित्तेन अनुग्रहं=दयां करोति। इत्युक्त्वाऽसौ तान् अभ्यन्तरस्थानी-

---

पुत्तस्स तो भण देवाणुप्पिया! किं दलामो सुक्कं? तएणं कलाए मूसियार दारए ते अब्भितरठाणिज्जे पुरिसं एवं वयासी) हे देवानुप्रिय हम लोग तुम्हारी पुत्री पोट्टिला दारिका को कि जो भद्राकी कुक्षि से उत्पन्न हुई है तेतली पुत्र अमात्य की वह भार्या बने इस रूप से वरण करने के लिये आये हुए हैं–तो यदि तुम हे देवानुप्रिय! हमारी इस याचना को उचित, प्राप्त, और श्लाघनीय–प्रशंसनीय मानते हो और यह समझते हो कि यह तेतलिपुत्र के साथ तुम्हारी कन्या का वैवाहिक संबंध योग्य है–तो पोट्टिला दारिका तेतलि पुत्र के लिये प्रदान कर दो–और साथ में यह भी कह दो कि हम आपके लिये इस निमित्त क्या सम्मान पुरस्कार देवें। इस प्रकार उन सब की ऐसी बाते सुनकर उस सुवर्ण कार पुत्र कलादने उन आये हुए अभ्यंतर स्थानीय पुरुषों से इस प्रकार कहा–(एस चेव णं देवाणुप्पिया! मम सुक्के जन्नं तेयलिपुत्ते–मम दारिया निमित्तेणं अणुग्गहं करेइ, ते अब्भितरट्ठाणिज्जे पुरिसे

वा सरिसो वा सजोयो ता दिज्जउण पोट्टिला दारिया तेयलिपुत्तस्स तो भण देवाणुप्पिया! किंदलामो सुक्कं तएणं कलाए मूसियारदारए ते अब्भितरठाणिज्जे पुरिसं एवं वयासी)

હે દેવાનુપ્રિય! તમારી ભદ્રા ભાર્યાના ગર્ભથી જન્મ પામેલી તમારી પોટ્ટિલા દારિકા અમાત્ય તેતલીપુત્રની ભાર્યા થાય આ જાતની માંગણી કરવા અમે તમારી પાસે આવ્યા છીએ હે દેવાનુપ્રિય! તમે તેતલિપુત્રની માંગણી ઉચિત, શ્લાઘનીય અને પ્રશંસનીય માનતા હોય તેમજ એમ પણ તમને થતું હોય કે અમાત્ય તેતલિપુત્રની સાથેનો આ લગ્ન સંબંધ યોગ્ય છે તો તમે અમાત્ય તેતલિપુત્રને પોટ્ટિલાદારિકા આપી દો અને એની સાથે તમે અમને એમ પણ જણાવી દો કે તમને અમે એના બદલ સન્માન પુરસ્કારના રૂપમાં શું આપીએ? આ રીતે તેઓ બધાની વાત સાંભળીને તે સુવર્ણકારના પુત્ર કલાદે આભ્યંતર સ્થાનીય પુરૂષોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(एस च्चेव णं देवाणुप्पिया! मम सुक्के जन्नं तेयलिपुत्ते मम दारिया

यान् पुरुषान् विपुलेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन पुष्पवस्त्रगन्धमाल्यालंकारेण च सत्कः रोति, सम्मानयति, सत्कृत्य सम्मान्य, प्रतिविसर्जयति । तत- खलु ते=आभ्यन्तर स्थानीयाः पुरुषाः कलादस्य मूषीकारदारकस्य गृहात् प्रतिनिष्काम्यन्ति,प्रतिष्क्रिम्य यत्रैव तेतलिपुत्रोऽमात्यस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तेतलिपुत्राय अमात्याय ' एय- मट्ठं ' एतमर्थम्=विवाहस्य स्वीकृतिरूपमर्थं निवेदयन्ति ॥ सू० २ ॥

विपुलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पुप्फवत्थ जाव मल्लालंकारेणं सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता, सम्माणित्ता पडि विसज्जेइ । तएणं ते कलायस्स मूसियारदारयस्स गिहाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्ख- मित्ता जेणेव तेयलिपुत्ते अमच्चे, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेयलिपुत्तस्स अमच्चस्स एयमट्ठं निवेदेंति) हे देवानुप्रियो ! मेरा सन्मान पुरस्कार यही है कि जो तेतलि पुत्र दारिका के निमित्त से मेरे ऊपर ऐसी दया कर रहे हैं-अर्थात् मेरी पुत्री को जो वे अपनी पत्नी बनाने की चाहना कर रहे हैं यही सब से बड़ा उन की ओर से मेरे लिये सन्मान पुरस्कार प्रदान किया जा रहा है । इस प्रकार कह कर उस कलाद ने उन अभ्यंतरस्थानीय पुरुषों का विपुल अशन, पान, खाद्य, स्वाद्य से एवं पुष्प, वस्त्र, गंध माला एवं अलंकारों से खूब सत्कार किया-सन्मान किया । सत्कार एवं सन्मान करने के बाद फिर उसने उन्हें विसर्जित कर दिया । वहां से विसर्जित होकर वे अभ्यंतर स्थानीय

निमित्तेणं अणुग्गहं करेइ, ते अब्भितरट्ठाणिज्जे पुरिसे विउलेणं असणपाणखाइम- साइमेणं पुप्फवत्थ जाव मल्लालंकारेणं सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता, सम्मा- णित्ता पडिविसज्जेइ । तएणं ते कलायस्स मूसियारदारयस्स गिहाओ पडिनिक्ख- मंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव तेयलिपुत्ते अमच्चे, तेणेव उवागच्छंति, उवाग-च्छित्ता तेयलिपुत्तस्स अमच्चस्स एयमट्ठं निवेदंति)

હે દેવાનુપ્રિયો ! અમાત્ય તેતલિપુત્ર મારી દારિકાને સ્વીકારવા રૂપ જે મારા ઉપર દયા બતાવી રહ્યા છે તે જ ખરેખર મારા માટે સન્માન અને પુરસ્કારની જ વસ્તુ છે. એટલે કે તેઓ મારી પુત્રીને પોતાની પત્ની પત્ની તરીકે ઇચ્છી રહ્યા છે, એજ તેમના તરફથી મારા માટે સન્માન અને પુરસ્કાર રૂપ છે આ રીતે કહીને તે કલાદે આભ્યંતર સ્થાનીય પુરૂષોનો વિપુલ અશન, પાન, ખાદ્ય, સ્વાદ્યથી અને પુષ્પ, વસ્ત્ર, ગંધ, માળા અને અલંકારોથી ખૂબ જ સરસ રીતે સત્કાર કર્યો અને તેમનું સન્માન કર્યું. સત્કાર અને સન્માન કર્યા પછી તેણે તેમને વિદાય આપી. ત્યારપછી તે આભ્યંતર સ્થાનીય પુરૂષો તે સુવર્ણ-

मूलम्—तएणं कलाए मूसियारदारए अन्नया कयाइं सोहणंसि तिहिनक्खत्तमुहुत्तंसि पोट्टिलं दारयं ण्हायं सव्वालंकारभूसियं सीयं दुरूहइ, दुरूहित्ता मित्तणाइसंपरिवुडे साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सव्विड्ढीए तेयलीपुरं मज्झं मज्झेणं जेणेव तेयलिस्सगिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, पोट्टिलं दारियं तेयलिपुत्तस्स सयमेव भारियत्ताए दलयइ। तएणं तेयलिपुत्तं पोट्टिलं दारियं भारियत्ताए उवणीयं पासइ, पासित्ता पोट्टिलाए सद्धिं पट्टयं दूरूहइ, दूरूहित्ता सेयपीएहिं कलसेहिं अप्पाणं मज्जावेइ, मज्जावित्ता अग्गिहोमं करावेइ, करावित्ता पाणिग्गहणं करेइ, करित्ता पोट्टिलाए भारियाए मित्तणाइ जाव परिजणं विउलेणं असणपाणखाइम साइमेणं पुप्फ जाव पडिविसज्जेइ। तएणं से तेयलिपुत्ते पोट्टिलाए भारियाए अणुरत्ते अविरत्ते उरालाइं जाव विहरेइ॥सू०३॥

टीका-'तएणं' इत्यादि, ततः खलु कलादो मूषीकारदारकः अन्यदा कदाचित् 'सोहणंसि' शोभने=शुभावहे विवाहयोग्ये 'तिहिनक्खत्तमुहुत्तंसि' तिथिनक्षत्रमुहूर्ते

पुरुष उस सुवर्णकार पुत्र कलाद के घर से निकले और निकल कर जहां तेतलि पुत्र अमात्य था वहां आये-वहां आकर उन्हों ने तेतलि पुत्र अमात्य को विवाह स्वीकृति रूप अर्थ की खबर दी। सूत्र॥ २॥

" तएणं कलाए मूसियारदारए " इत्यादि।

टीकार्थ-(तएणं) इस के बाद (मूसियारदारए) मूषीकार दारक ने (अन्नया कयाइं) किसी एक समय (सोहणंसि तिहिनक्खत्तमुहुत्तंसि

કાર પુત્ર કલાદના ઘરથી નીકળ્યા અને ત્યાંથી જ્યાં અમાત્ય તેતલિપુત્ર હતા ત્યાં પહોંચ્યા. અમાત્ય તેતલિપુત્રની પાસે જઈને તેઓએ રકતસંબંધ સ્વીકારવા રૂપ ખબર આપી. ॥ સૂત્ર " ૨ " ॥

' तएण कलाए मूसियारदारए ' इत्यादि—

ટીકાર્થ—(तएणं) ત્યારપછી (मूसियारदारए) મૂષીકાર દારકે (अन्नया कयाइं) કોઈ એક વખતે

पोट्टिलां दारिकां स्नतां सर्वालङ्कारभूषितां 'सीयं' शिबिकां दूरोहयति=आरोहयति, दूरोह्य=आरोह्य'मित्तणाइ संपरिवुडे' मित्रज्ञाति संपरिवृतः=मित्रज्ञाति स्वजनसंबन्धिपरिवेष्टितः, सर्वान् वैवाहिकान् संभारान्=विवाहसंस्कारोचित सामग्रीन् गृहीत्वा स्वकाद् गृहात् प्रतिनिष्क्रामयति, प्रतिनिष्क्रम्य 'सव्विड्ढीए' सर्वर्द्धया=सर्वप्रकारिकया ऋद्धया सह 'तेयलिपुरं' तेतलीपुरस्य मध्यमध्येन निर्गच्छन् यत्रैव तेतलेर्गृहं तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य पोट्टिलां दारिकां तेतलिपुत्राय स्वयमेव भार्यात्वेन ददाति। ततः खलु तेतलिपुत्रोऽमात्यः पोट्टिलां दारिकां स्वभार्यात्वेन 'उवणीयं' उपनी-

---

पोट्टिलं दारियं ण्हायं सव्वालंकारविभूसियं सीयं दुरुहइ) शुभ तिथि नक्षत्र, मुहूर्त्त में पोट्टिला दारिका को स्नान करा कर समस्त अलंकारों से विभूषित किया और विभूषित कर के फिर उसे शिविका पर बैठा दिया-(दुरुहित्ता मित्तणाइ संपरिवुडे साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सव्विड्ढीए तेयली पुरं मज्झं मज्झे णं जेणेव तेयलिस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोट्टिलं दारियं तेयलिपुत्तस्स सयमेव भारियत्ताए दलयइ) बैठा कर फिर वह मित्र, ज्ञाति, स्वजन, संबन्धी परिजनों से परिवेष्टित होकर एवं वैवाहिक समस्त सामग्री को लेकर अपने घर से निकला। निकल कर सर्व प्रकार की अपनी ऋद्धि के साथ २ तेतलि पुर के बीच से होता हुआ जहां तेतलि का घर था वहां पहुँचा। वहां पहुँच कर उसने अपनी पुत्री पोट्टिला दारिका को तेतलि पुत्र को अपने आप से भार्या रूप से प्रदान कर दी। (तएणं

(सोहणंसि तिहिनक्खत्तमुहुत्तंसि पोट्टिलं दारियं ण्हायं सव्वालंकार, भूसियं सीयं दुरुहइ)

શુભ તિથિ નક્ષત્ર, મુહૂર્ત્તમા પોટ્ટિલા દારિકાને સ્નાન કરાવીને બધી જાતના અલંકારોથી શણગારીને તેને પાલખીમાં બેસાડી દીધી

(दुरुहित्ता मित्तणाइसंपरिवुडे साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सव्विड्ढीए तेयलीपुरं मज्झ मज्झेणं जेणेव तेयलिस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोट्टिलं दारियं तेयलिपुत्तस्स सयमेव भारियत्ताए दलयइ)

બેસાડીને તે પોતાના મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન, સંબધી અને પરિજનોની સાથે લગ્નની બધી સાધન સામગ્રી લઈને ઘેરથી નીકળ્યો. નીકળીને તે સર્વ પ્રકારની પોતાની ઋદ્ધિની સાથે તેતલિપુરની વચ્ચે થઈને જ્યાં તેતલિકાનું ઘર હતું ત્યાં પહોંચ્યો ત્યાં પહોંચીને તેણે પોતાની પુત્રી પોટ્ટિલા દારિકાને તેતલી પુત્રને તેની ભાર્યાના રૂપમાં આપી- દીધી.

ताम् उपनयनीकृतां पश्यति, दृष्ट्वा पोट्टिलया सार्द्धं पट्टकं दूरोहति, दूरुह्य 'सेय पीएहिं' श्वेतपीतैः= रजतसुवर्णनिर्मितैः 'कलसेहिं' कलशैः=घटैः आत्मानं 'मज्जावेइ' मज्जति=स्नपयति, मज्जयित्वा अग्निसाक्षिको विवाह इति हेतोः 'अग्गिहोमं करावेइ' अग्निहोमं कारयति, कारयित्वा 'पाणिग्गहणं' पाणिग्रहणं= विवाहं करोति, कृत्वा पोट्टिलाया भार्यायाः 'मित्तणाइ जाव परिजणं' मित्र ज्ञातिस्वजनसम्बन्धिपरिजनम् विपुलेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन चतुर्विधाहारेण

तेयलिपुत्ते पोट्टिलं दारियं भारियत्ताए उवणीयं पासइ, पासित्ता पोट्टिलाए सद्धिं पट्टयं दुरुहइ) तेतलिपुत्र अमात्य ने पोट्टिला दारिका को अपनी भार्या रूप से अपने लिये प्रदान की हुई देखा तो देख कर वह उस पोट्टिला दारिका के साथ पट्टक पर बैठ गया। (दुरुहित्ता सेयपीएहिं कलसेहिं अप्पाणं मज्जावेइ, मज्जावित्ता अग्गिहोमं करावेइ, करावित्ता पाणिग्गहणं करेइ करित्ता पोट्टिलाए भारियाए मित्तणाइ जाव परिजणं विउलेणं असणं पाणं खाइम साइमेणं पुप्फ जाव पडिविसज्जेइ। तएणं से तेयलिपुत्ते पोट्टिलाए भारियाए अणुरत्ते अविरत्ते उरालाइं जाव विहरेइ) बैठ कर फिर उसने रजत एवं सुवर्ण से निर्मित कलशों द्वारा अपना अभिषेक करवाया। अभिषेक करवा कर "अग्नि साक्षिक विवाह होता है" इस ख्याल से फिर उसने अग्नि में होम करवाया। करवा कर बाद में उसने उस पोट्टिला दारिका का पाणि ग्रहण कर लिया। विवाह हो चुकने के अनन्तर फिर उस तेतलि पुत्र अमात्य ने

(तएणं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं दारियं भारियत्ताए उवणीयं पासइ, पासित्ता पोट्टिलाए सद्धिं पट्टयं दुरुहइ)

તેતલિપુત્ર અમાત્યે પોટ્ટિલા દારિકાને તેની ભાર્યા રૂપમાં આપેલી જોઈને તે પોટ્ટિલા દારિકાની સાથે પટ્ટક ઉપર બેસી ગયો.

(दुरुहित्ता सेयपीएहिं कलसेहिं अप्पाणं मज्जावेइ, मज्जावित्ता- अग्गिहोमं करावेइ, करावित्ता पोट्टिलाए भारियाए मित्तणाइ जाव परिजणं विउलेणं असणं पाणं खाइम साइमेण पुप्फ जाव पडिविसज्जेइ। तएणं से तेयलिपुत्ते पोट्टिलाए भारियाए अणुरत्ते अविरत्ते उरालाइं जाव विहरेइ)

બેસીને તેણે ચાંદી અને સોનાના કળશો વડે પોતાનો અભિષેક કરાવડાવ્યો અભિષેક કરાવડાવીને તેણે 'અગ્નિ સાક્ષિક લગ્ન થાય છે' આમ વિચારીને તેણે અગ્નિમાં હવન કરાવડાવ્યો ત્યારપછી તેણે પોટ્ટિલા દારિકાનું પાણિ ગ્રહણ કર્યું. લગ્નની વિધિ પૂરી થયા બાદ તેતલિપુત્ર અમાત્યે

'पुप्फजाव' पुष्पयावत्=पुष्पवस्त्रादिना यावन्माल्यालङ्कारादिना सत्कारयति, सत्कार्य 'पडिविसज्जेइ' प्रति विसर्जयति। ततः खलु स तेतलिपुत्रोऽमात्यः पोट्टिलायां भार्यायाम् 'अणुरत्ते' अनुरक्तः=आसक्तः 'अविरत्ते' अविरक्तः= अत्यन्तानुरक्त इत्यर्थ, 'उरालाइं जाव' उदारान् यावत्=उदारान् भोगभोगान्= विषयभोगान् भुञ्जानो विहरति ॥ सू०३ ॥

मूलम्—तएणं से कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य बले य वाहणे य कोसे य कोट्ठागारे य अंतेउरे य मुच्छिए४ जाए पुत्ते वियंगेइ, अप्पेगइयाणं हत्थंगुलियाओ छिंदइ, अप्पेगइयाणं हत्थंगुट्ठए छिंदइ, एवं पायंगुलियाओ पायंगुट्ठएवि, कन्नसक्कुलीएवि, नासापुडाइं फालेइ, अंगमंगाइं वियंगेइ। तएणं तीसे पउमावईए देवीए अन्नया पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अयमेयारूवे अज्झत्थिए५ समुप्पज्जित्था—एवं खलु कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियंगेइ, जाव अंगमंगाइं वियंगेइ। तं जइ अहं दारयं पयायामि, सेयं खलु ममं तं दारगं कणगरहस्स रहस्सियं चेव सारक्खेमाणीए संगो-

---

पोट्टिला भार्या के मित्र, ज्ञाति, स्वजन संबन्धि परिजनों का अशन, पान, खाद्य एवं स्वाद्य रूप चतुर्विध आहार से तथा पुष्प, वस्त्र यावत् माल्य अलंकार आदि से सत्कार करवाया, सत्कार करवाने के बाद फिर उन सब को वहां से विदा कर दिया। इसके पश्चात् पोट्टिला भार्या में आसक्त एवं अनुरक्त बने हुए इस तेतलि पुत्र अमात्य ने उसके साथ पंचेन्द्रिय संबन्धी सुखों का अनुभव करने लगा। सूत्र ॥ ३ ॥

પોટ્ટિલા ભાર્યાના મિત્ર જ્ઞાતિ, સ્વજન સંબંધી અને પરિજનોનો અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહારથી તેમજ પુષ્પ, વસ્ત્ર યાવત્ માલ્ય અલંકાર વગેરેથી સત્કાર કરાવડાવ્યો અને સત્કાર કરાવડાવ્યા પછી તેણે બધાને પોતાના ઘેરથી વિદાય આપી. ત્યારપછી પોટ્ટિલા ભાર્યામાં આસક્ત અને અનુરક્ત થયેલો તે અમાત્ય તેતલિપુત્ર તેની સાથે પંચેન્દ્રિય સંબંધી સુખોનો ઉપભોગ કરવા લાગ્યો. ॥ સૂત્ર "૩" ॥

वेमाणीए विहरित्तए त्तिकट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता तेयलि-पुत्तं अमच्चं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी एवं खलु देवा-णुप्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियंगेइ, तं जइ णं अहं देवाणुप्पिया ! दारगं पयायामि । तएणं तुमं देवाणु-प्पिया ! कणगरहस्स रहस्सियं चेव अणुपुव्वेणं सारक्खे-माणे संगोवेमाणे संवड्ढेहि । तएणं से दारए उम्मुक्कबाल-भावे जोव्वणगमणुप्पत्ते तव य मम य भिक्खाभायणं भविस्सइ । तएणं से तेयलिपुत्ते पउमावईए एयमट्ठं पडि-सुणेइ, पडिसुणित्ता पडिगए ॥ सू० ४ ॥

टीका—'तएणं से' इत्यादि । ततः खलु स कनकरथो राजा राज्ये च=राष्ट्रे च=देशे बले=सैन्ये च, वाहने=अश्वादिषु च कोशे=भाण्डारे च धान्यादीनां कोष्ठागारे च अन्तः पुरे च, 'मुच्छिए' मूर्च्छितः=मोहं प्राप्तः, गृद्धः=आसक्तः ग्रथितः=विशेषेणासक्तः, अभ्युपपन्नः=सर्वथा तत्परायणः, जाए २=जातान् २= उत्पन्नान् २ पुत्रान् 'वियंगेइ' व्यङ्गयति=विगतानि अङ्गानि येषां तान् व्यङ्गान्

'तएणं से कणगरहे राया' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य बले य वाहणे य कोसे य कोट्ठागारे य अंतेउरे य मुच्छिए ४) वह कनकरथ राजा राज्य में राष्ट्र में सैन्य में अश्वादि वाहन में, धान्यादिकों के कोष्ठागार में एवं अन्तः पुर में मूर्च्छित, गृद्ध अत्यंत अनुरक्त एवं अध्युपपन्न—सर्वथा तत्परायण बन गया । सो (जाए पुत्ते वियंगेइ)

तएणं से कणगरहे राया इत्यादि—

(तएणं) त्यारणाद

टीकार्थ—(से कणगरहे राया रज्जेय रट्ठे य बले य वाहणे य कोट्ठागारे य अंतेउरे य मुच्छिए ४)

તે કનકરથ રાજા રાજ્ય રાજ્યમાં, રાષ્ટ્રમાં, સૈન્યમાં, અશ્વ વગેરે વાહનોમાં, ધાન્ય વગેરેની ભાણતમાં, કોષ્ઠાગારમા અને રણવાસમાં મૂર્છિત, ગૃદ્ધ, ઘણો જ આસક્ત અને અભ્યુપપન્ન સંપૂર્ણપણે તત્પર થઈ ગયો. એથી (जाए पुत्तं वियंगेइ) તે જન્મેલા પોતાના પુત્રોને અંગહીન બનાવી દેતો હતો.

करोतीति व्यङ्गयति=अङ्गहीनान् करोति। 'विइंतेइ' इति पाठे विकर्तयति छिनत्ति इत्यर्थो बोध्यः। तत्प्रकारमाह-अप्येकेषां=केषांचिदुत्पन्नानां पुत्राणां हस्ताङ्गुलीश्छिनत्ति, अप्येकेषां=केषांचित् बालानां हस्ताङ्गुष्ठान् छिनत्ति। एवं पादाङ्गुलिकाः पादाङ्गुष्ठान् अपि, एवं 'कण्णसक्कुलीए त्ति' कर्णशष्कुलीरपि=कर्णानपि तथा नासापुटानि च 'फालेइ' पाटयति=छिनत्ति, इत्यर्थः। अनेन प्रकारेण एव कनकरथो राजा बालानाम् 'अंगमंगाइं' अङ्गानि अंगानि सर्वाण्यङ्गानि व्यङ्ग्यति=छिनत्ति। ततः खलु अनेन प्रकारेण समुत्पन्नानां पुत्राणां विनाशानन्तरम् 'तीसे' तस्याः कनकरथस्य राज्याः पद्मावत्याः देव्या अन्यदा 'पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि' पूर्वरात्रापररात्रकालसमये=रात्रेः पश्चिमे भागे अयमेतद्रूप आध्यात्मिकः=आत्मगतो

उत्पन्न हुए अपने पुत्रों को अंगहीन कर देता। (अप्पेगइयाणं हत्थंगुलियाओ छिंदइ, अप्पेगइयाणं हत्थंगुट्ठए, छिंदइ, एवं पायंगुलियाओ पायंगुट्ठए वि कन्नसक्कुलीए वि, नासापुडाइं फालेइ, अंगमंगाइ वियंगेइ) कितनेक बालकों के वह हाथों की अंगुलियों को छेद देता था, कितनेक बालकों के हाथों के अंगूठों को-काट देता था, इसी तरह वह पैरों की अंगुलियों को पैरों के अंगुठों को, कानों को नासा पुटों को छेद देता था। इस तरह वह कनक रथ राजा बालकों के अंगों का भंगकर देता था। (तएणं तीसे पाउमावईए देवीए अन्नया पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अयमेयारूवे अज्झत्थिए ५ समुप्पज्जित्था) इस प्रकार समुत्पन्न पुत्रों के विनाश के बाद उस कनकरथ राजा की रानी पद्मावती देवी के किसी एक समय रात्रि के पश्चिम भाग में यह इस प्रकार का आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प उत्पन्न

(अप्पेगइयाणं हत्थंगुलियाओ छिंदइ अप्पेगइयाणं हत्थंगुट्ठए छिंदइ, एवं पायंगुलियाओ पायगुट्ठए त्रि कन्नमक्कुलिए त्रि, नासा पुडाइं फालेइ, अंगमंगाइंवियंगेइ)

કેટલાક બાળકોની તે હાથોની આંગળીઓ કપાવી નંખાવતો હતો, કેટલાક બાળકોના હાથોના અંગૂઠાઓ કપાવી નંખાવતો હતો, આ રીતે તે પગોની આગળીઓને, પગોના અંગૂઠાઓને, કાનોને, નાકને કપાવી નંખાવતો હતો. આમ તે કનકરથ રાજા બાળકોના અંગોનું તે છેદન કરાવી નંખાવતો હતો.

(तएणं तीसे पाउमावईए देवीए अन्नया पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अयमेयारूवे अज्जत्थिए ५ समुप्पज्जित्था)

આ પ્રમાણે જન્મેલા પુત્રોના વિનાશ પછી તે કનકરથ રાજાની રાણી પદ્માવતી દેવીને કોઈ એક સમયે રાત્રિના છેલ્લા પહોરમાં આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સંકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે—

विचारो यावत् मनोगतः संकल्पः, 'समुप्पज्जित्था' समुदपद्यत । संकल्पप्रकारमाह-'एवं खलु' इत्यादि-एवं खलु कनकरथो राजा राज्ये च यावत् व्यङ्गयति। यावत् अङ्गानि अङ्गानि व्यङ्गयति अनेन प्रकारेण कुत्सितमारेण मारयति । तद्यदि खलु अहं दारकं 'पयायामि' प्रजनयामि, सेयं खलु ममं तं दारगं कणगरहस्स रहस्सियं चेव सारक्खेमाणीए संगोवेमाणीए विहरित्तए' श्रेयः खलु मम तं दारकं कनकरथस्य 'रहस्सियं चेव' रहस्यिकमेव=गुप्तमेव आपदः संरक्षन्त्या 'संरक्खमाणीए' संरक्षन्त्याः भूपहस्ताद्देः, 'संगोवेमाणीए' संगोपायन्त्या भूपकृतोपद्रवात् विहर्त्तुम्, 'त्तिकट्टु' इति कृत्वा=इति मनसि कृत्वा एवं संप्रेक्षते=एव विचारयति संप्रेक्ष्य=विचार्य तेतलिपुत्रममात्यं प्रधानं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-एवं खलु देवानुप्रिय ! कनकरथो राजा 'रज्जेय जाव वियंगेइ' राज्ये च यावद् व्यङ्गयति=राज्यादिषु च मूर्च्छितो जातान् पुत्रान् विकृताङ्गान् करोति एवं तेषामङ्गोपाङ्गानि खण्डयति। अनया रीत्या पुत्रान्मारयति, तद्यदि खलु अहं देवानुप्रिय ! दारकं प्रजनयामि । ततः खलु त्वं कनकरथस्य रहस्यिकमेव

हुआ-(एवं खलु कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियंगेइ, जाव अङ्ग मंगाइं वियंगेइ) यह कनकरथ राजा राज्य आदिमें मूर्छित गृद्ध, अत्यन्त अनुरक्त एवं अध्युपपन्न अत्यन्त तत्पर बनकर पुत्रों को काट देता हैं-बुरी तरह से उन्हे मार डालता है (तं जइ अहं दारयं पायायामि, सेयं खलु मम तं दारगं कणगरहस्स रहस्सियं चेव सारक्खेमाणीए संगोवेमाणीए विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता, तेयलिपुत्तं अमच्च सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियंगेइ तं जइणं अहं देवाणुप्पिया ! दारगंपयायामि, तएण तुमं देवाणुप्पिया! कणगरहस्स रहस्सियं चेव अणुपुव्वे

(एव खलु कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियंगेइ, जाव अंग मंगाइं वियंगेइ) કનકરથ રાજા રાજ્ય વગેરેની બાબતમા મૂર્છિત ગૃદ્ધ, ખૂબજ આસક્ત અને અધ્યુપપન્ન-અત્યન્ત તત્પર થઈને-પુત્રોને અંગહીન કરાવી નાખે છે યાવત્ તેમના અંગોને કપાવી નંખાવે છે અને ખરાબ હાલતમાં તેઓને મરાવી નંખાવે છે.

(तं जइ अहं दारयं पायायामि. सेयं खलु मम तं दारगं कणगरहस्स रहस्सियं चेव सारक्खेमाणीए संगोवेमाणीए विहरित्तए त्तिकट्टु एव संपेहेइ, संपेहित्ता तेयलिपुत्तं अमच्च सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! कणगरहे, राया रज्जे य जाव वियंगेई तं जइणं अहं देवाणुप्पिया ! दारगं पयायामि, तएणं तुमं देवाणुप्पिया ! कणगरहस्स रहस्सियं चेव अणुपुव्वेणं सारक्खे-

'अणुपुव्वेण' आनुपूर्व्येण=यथाक्रमम् संरक्षन् भूपदृष्ट्यादितः संगोपायन् भूपकृतो पद्रवात् तं दारकं 'संवड्ढेइ' संवर्द्धय, तस्य बालस्य वृद्धिमुपनय । ततः खलु स दारकः 'उम्मुक्कबालभावे' उन्मुक्तबालभावः=उन्मुक्तः परित्यक्तो बालभावो बालत्वं येन सः, 'जोव्वणगमणुप्पत्ते' यौवनकमनुप्राप्त=प्राप्ततारुण्यः तव मम च

णं सारक्खेमाणे संगोवेमाणे संवड्ढेहिं। तएणं से दारए उम्मुक्कबाल भावे जोव्वणगमणुप्पत्ते तव य मम य भिक्खाभायणं भविस्सइ तएणं से तेयलिपुत्ते पउमावइए एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता पडिगए)

तो यदि मेरे यहां पुत्र उत्पन्न होता है-मैं पुत्र को उत्पन्न करती हूँ-तो मुझे यही योग्य है कि मैं राजा कनकरथ को खबर न पडे इस रूप से उसकी रक्षा करूँ-उनकी दृष्टि से -उसे बचाकर रखू-ऐसा उसने मन से विचार किया। विचार कर फिर उसने अमात्य तेतलिपुत्र को बुलाया-बुलाकर उस से ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय! कनकरथ राजा राज्य आदि में इतना अधिक मूर्छित गृद्ध-अत्यंत अनुरक्त एवं अध्यु-पपन्न बना हुआ है जो वह उत्पन्न हुए बालकों को अंग हीन कर देता है-उनके हाथों की अंगुलियों आदि अङ्गों को काट देता है। तो हे देवा नुप्रिय! यदि मैं पुत्र को उत्पन्न करती हूं तो देवानुप्रिय तुम उसे राजा को खबर न पडे इस रूप से रक्षित करते हुए और उनकी दृष्टि से बचाते हुए क्रमशः वृद्धिंगत करो। जब वह बालक-क्रमशः संवर्द्धित होता हुआ बाल्यावस्था से रहित होकर यौवनावस्था वाला बन जायगा

माणे संगोवेमाणे संवड्ढेहिं। तएणं से दारए उम्मुक्क बालभावे जोव्वणगमणु-पत्ते तव य मम य भिक्खाभायणं भविस्सइ तएणं से तेयलिपुत्ते पउमावइए एयमट्ठं पडिसुणेइ पडिसुणित्ता पडिगए)

હવે મને પુત્ર ઉત્પન્ન થવાનો જ છે, તો મને એજ યોગ્ય લાગે છે કે કનકરથ રાજાને ખબર પડે નહિ તે રીતે બાળકની રક્ષા કરૂ. તેમની કુદૃષ્ટિથી તેને બચાવું. આ પ્રમાણે તેણે મનમાં વિચાર કર્યો વિચાર કરીને તેણે અમાત્ય તેતલિપુત્રને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય! રાજા કનકરથ રાજ્ય વગેરેના કામમાં આટલો બધો મૂર્છિત, ગૃદ્ધ-ખૂબજ આસક્ત અને અધ્યુપપન્ન થઈ પડયો છે કે તે જન્મેલા બાળકોના અંગો કપાવી નાખે છે. તેમના હાથોની આંગળીઓ વગેરે અંગોને કપાવી નાખે છે. જો હે દેવા-નુપ્રિય! હું પુત્રને જન્મ આપું તો દેવાનુપ્રિય તમે રાજાને ખબર પડે નહીં તેમ તેમની કુદૃષ્ટિથી બાળકની રક્ષા કરતા તેનું ભરણ-પોષણ કરજો. જો તે

'भिक्खाभायणं' भिक्षाभाजनम्=भिक्षाया आधारभूतो भविष्यति । ततः खलु स तेतलिपुत्रः पद्मावत्याः एकमर्थं प्रतिशृणोति=स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य पद्मावत्याः समीपात् प्रतिगतः स्वगृहे गतवान् ॥सू० ४॥

मूलम्—तएणं पउमावई य देवी पोट्टिला य अमच्ची सयमेव गब्भं गिण्हइ, सयमेव परिवहइ । तएणं सा पउमावई नवण्हं मासाणं जाव पियदंसणं सुरूवं दारगं पयाया, जं रयणिं च णं पउमावई दारयं पयाया तं रयणिं च णं पोट्टिला वि अमच्ची नवण्हं मासाणं विणिहायमावन्नं दारियं पयाया । तएणं सा पउमावई देवी अम्मधाइं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमे अम्मो ! तेतलिगिहे तेतलिपुत्तं अमच्चं रहस्सियं चेव सद्दावेह । तएणं सा अम्मधाई तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता अंतेउरस्स अवद्दारेणं णिग्गच्छइ, णिगच्छित्ता, जेणेव तेतलिस्स गिहे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! पउमावई देवी सद्दावेइ । तएणं तेतलिपुत्ते अम्मधाईए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हट्ठतुट्ठ अम्मधाईए सद्धिं साओ गिहाओ णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता अंतेउरस्स अवद्दारेणं रहस्सियं चेव अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव

तो हमारे तुम्हारे दोनों के लिये भिक्षा पात्र—भिक्षा का आधार भूत—बन जायगा इस-प्रकार पद्मावती के इस कथन रूप अर्थ को उस तेतलिपुत्र अमात्यने स्वीकार कर लिया। और स्वीकार करके फिर वह पद्मावती देवी के पास से अपने घर पर चला आया ॥ सू० ४ ॥

બાળક આખરે મોટો થઈ જશે અને બચપણ વટાવીને જુવાન થઈ જશે તો મારા અને તમારા બંનેને માટે ભિક્ષાપાત્ર ભિક્ષાનો આધારભૂત થઈ જશે. આ રીતે પદ્માવતીના આ કથન રૂપ અર્થને તે તેતલિપુત્ર અમાત્યે સ્વીકાર કરીને તે પદ્માવતી દેવીની પાસેથી વિદાય લઈને પોતાને ઘેર આવી ગયો. સૂ. ૪

उवागए करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी-संदिसतु णं देवाणुप्पिया ! जं मए कायव्वं ? तएणं पउमावई तेतलिपुत्तं एवं वयासी—एवं खलु कणगरहे राया जाव वियंगेइ, अहं च णं देवाणुप्पिया ! दारगं पयाया तं तुमं णं देवाणुप्पिया ! एयं दारगं गेण्हाहि जाव तव मम य भिक्खासायणे भविस्सइ त्तिकट्टु तेतलिपुत्तं दलयइ । तएणं तेतलिपुत्ते पउमावईए हत्थाओ दारगं गेण्हइ गिण्हत्ता उत्तरिज्जेणं पिहेइ, पिहित्ता अंतेउरस्स रहस्सियं अवद्दारेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता, जेणेव सये गिहे जेणेव पोट्टिला भारिया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोट्टिलं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियंगेइ, अयं च णं दारए कणगरहस्सपुत्ते पउमावईए अत्तए, तं णं तुमं देवाणुप्पिया ! इमं दारगं कणगरहस्स रहस्सियं चेव अणुपुव्वेणं सारक्खाहि य संगोवाहि य संवड्ढेहि य। तएणं एस दारए उसुक्कबालभावे तव य मम य पउमावईए य आहारे भविस्सइ त्ति कट्टु पोट्टिलाए पासे णिक्खिवइ, णिक्खिवित्ता, पोट्टिलाओ पासाओ विनिहायमावन्नियं दारियं गेण्हइ, गेण्हित्ता उत्तरिज्जेणं पिहेइ, पिहित्ता अंतेउरस्स अवद्दारेणं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमावईए देवीए पासे ठावेइ, ठावित्ता जाव पडिणिग्गए । तएणं तीसे पउमावईए अंगपरियारियाओ पउमावइं देविं विणिहायमावन्नं च

दारियं पासंति, पासित्ता जेणेव कणगरहे राया तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी एवं खलु सामी! पउमावई देवी मइल्लियं दारियं पयाया। तएणं कणगरहे राया तीसे मइल्लियाए दारियाए नीहरणं करेइ, बहूणि लोइयाइं मयकिच्चाइं करेइ. करित्ता कालेणं विगयसोए जाए। तएणं से तेतलिपुत्ते कोडुंबियपुरिसे सदावेइ, सद्दावित्ता, एवं वयासी–खिप्पामेव चारगसोहणं जाव ठिइवडियं, जम्हाणं अम्हं एस दारए कणगरहस्स रज्जे जाए, तं होउ णं दारए, नामेणं कणगज्झए जाव भोगसमत्थे जाए ॥ सू० ५ ॥

टीका—'तएणं' इत्यादि। ततः खलु पद्मावती च देवी पोट्टिला च अमात्यी सममेव गर्भं गृह्णाति, सममेवगर्भं परिवहति=धारयति। ततः खलु सा पद्मावती 'नवण्हं मासाणं जाव' नवानां मासानां नवसु मासेसु व्यतीतेषु यावत् सत्सु 'पियदंसणं' प्रियदर्शनम्=प्रियं चेतोहरं दर्शनमवलोकनं यस्य तं = दर्शकजनचेतोह्लादजनकं सुरूपं दारकं 'पयाया' प्रजाता=प्रजनितवती। यस्यां रजन्यां च

'तएणं पउमावई य देवी' इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (पउमावई य देवी पोट्टिलाय अमच्ची सयमेव गब्भं गिण्हइ) पद्मावती देवी और पोट्टिला अमात्यी ने साथ ही गर्भ धारण किया। (तएणं सा पउमावई नवण्हं मासाणं जाव पियदंसणं सुरूवं दारगं पयाया) पद्मावती देवी ने जब नौ मास अच्छी तरह गर्भ के समाप्त हो चुके तब दर्शकजन चित्ताह्लाद जनक अच्छे रूपशाली पुत्र को जन्म दिया। (जं रयणिं च णं पउमोवई दारयं पयाया

'तएणं पउमावइ य देवी' इत्यादि—

टीकार्थ–(तएणं) त्यारपछी (पउमावइ य देवी पोट्टिला य अमच्ची सयमेव गब्भं गिण्हइ) पद्मावती देवी अने पोट्टिला अमात्यीओ साथे साथे ज गर्भधारण कर्यो.

(तएणं सा पउमावई नवण्हं मासाणं जाव पियदंसणं सुरूवं दारगं पयाया) ज्यारे नव मास सारी रीते पसार थई गया त्यारे पद्मावती देवीओ जोनाराओ जोईने प्रसन्न थई जाय एवा रूपाळा पुत्रने जन्म आप्यो.

खलु पद्मवती दारकं प्रजाता तस्यां रजन्यां च खलु पोट्टिलापि अमात्यी 'नवण्हं मासाणं' नवानां मासानाम्=नवसु मासेषु व्यतीतेषु 'विणिहायमावन्नं' विनिघातमापन्नाम्=मृताम् दारिकां प्रजाता=जनितवती। 'तएणं' ततः खलु पुत्रजन्मानन्तरं सा पद्मावती देवी अम्बधात्रीं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-गच्छत खलु यूयमम्ब! 'तेतलिगिहे' तेतलिगृहे=तेतलेरमात्यस्य गृहे तेतलिपुत्रममात्यं रहस्यिकम्=अन्यैरपरिज्ञातमेव शब्दयत=आह्वयत। ततः खलु सा अम्बधात्री तथेति प्रतिशृणोति,=अङ्गीकरोति, प्रतिश्रुत्य अन्तः पुरस्य 'अवदारेणं' अपद्वारेण=पृष्ठद्वारेण निर्गच्छति, निर्गत्य, यत्रैव तेतलेर्गृहम्, यत्रैव तेतलिपुत्रस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य करतल यावद् अञ्जलिपुटं कृत्वा एवमवादीत्-एवं खलु हे

तं रयणिं च णं पोट्टिलावि अमच्ची नवण्हं मासाणं विणिहायमावन्नं दारियं पयाया) जिस रात्रि में पद्मावती देवी ने पुत्र को जन्म दिया था उसी रात्रि में पोट्टिला अमात्यी ने भी नौ मास व्यतीत हो जाने पर एक मरी हुई कन्या को जन्म दिया (तएणं सा पउमावई अम्मधायं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुमे अम्मो! तेतलिगिहे तेतलीपुत्तं अमच्चं रहस्सियं चेव सद्दावेह) इस के बाद उस पद्मावती ने अम्बधात्री को बुलवाया और बुलवाकर उससे ऐसा कहा हे अम्म! तुम तेतलि अमात्य के घर पर जाओ। और किसी को पत्ता न पड़े इस रूप से तुम तेतलि पुत्र अमात्य को बुला लाओ। (तएणं सा अम्मधाई तहत्ति पडिसुणेइ. पडिसुणित्ता अंतेउरस्स अवद्दारेणं णिग्गच्छइ णिग्गच्छित्ता जेणेव तेतलिस्सगिहे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया

(जं रयणिं च णं पउमावई दारयं पयाया तं रयणिं च णं पोट्टिला वि अमच्ची नवण्हं मासाणं विणिहायमावन्नं दारियं पयाया)

જે રાત્રિએ પદ્માવતી દેવીએ પુત્રને જન્મ આપ્યો તે જ રાત્રિએ પોટ્ટિલા અમાત્યીએ પણ નવ માસ પૂરા થવાથી એક મરેલી કન્યાને જન્મ આપ્યો.

(तएणं सा पउमावई अम्मधायं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुमे अम्मो! तेतलिगिहे तेतलिपुत्त अमच्च रहस्सियं चेव सद्दावेह)

ત્યારપછી તે પદ્માવતીએ અંબધાત્રીને બોલાવી અને બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે અમ્બ! તમે તેતલિ અમાત્યને ઘેર જાઓ અને કોઈને ખબર પડે નહિ તેમ તેતલિપુત્ર અમાત્યને તમે અહીં બોલાવી લાવો.

(तएणं सा अम्मधाई तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता अंतेउरस्स अवद्दारेणं णिग्गच्छइ णिग्गच्छित्ता जेणेव तेतलिस्स गिहे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवा-

देवानुप्रिय ! पद्मावती देवी भवन्तं शब्दयति । ततः खलु तेतलिपुत्रः ' अंबधाईए-अंतिए ' अम्बधात्र्या अन्तिके=अम्बधात्र्याः सकाशात् एतमर्थं श्रुत्वा हृष्टतुष्टोऽम्बधात्र्याः सार्द्धं स्वकाद् गृहाद् निर्गच्छति, निर्गत्य अन्तपुरस्य अपद्वारेण रहस्यिकमेव=प्रच्छन्नमेव अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य, यत्रैव पद्मावती देवी तत्रैव ' उवागए ' उपागतः=संप्राप्तः करतलपरिगृहीतं दशनखं शिरसावर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवदत्-' संदिसतु ' संदिशतु=आज्ञापयतु खलु हे देवानुप्रिये !

पउमावई देवी सद्दावेइ । तएणं तेतलिपुत्ते अम्मधाईए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हट्ठ तुट्ठे अम्मधाईए सद्धिं साओ गिहाओ णिग्गच्छइ) पद्मावती देवी के इस प्रकार वचन सुनकर उस अम्बधात्री ने तथेति कह कर उसकी आज्ञा को स्वीकार कर लिया । स्वीकार कर के फिर वह अंतः पुर के अपद्वार से-पीछे के दरवाजे से बाहिर निकली-निकल कर जहां तेतलि का घर और उसमें भी जहां तेतलिपुत्र था वहां गई। वहां जाकर पहिले उसने तेतलिपुत्र अमात्य को दोनों हाथ जोड़ कर नमस्कार किया-बाद में बोली-हे देवानुप्रिय ! आपको पद्मावती देवी बुला रही हैं। अम्बधात्री के मुख से इस प्रकार वचन सुन कर व तेतलि पुत्र हर्षित एवं तुष्ट होता हुआ अम्बाधात्री के साथ ही अपने घर से निकला। (णिग्गच्छित्ता अंतेउरस्स अवद्दारेणं रहस्सियं चेव अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागए करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वया-

---

गच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! पउमावई देवी सद्दावेइ । तएणं तेतलिपुत्ते अम्मधाईए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हट्ठतुट्ठे अम्मधाईए सद्धिं साओ गिहाओ णिगच्छइ)

આ રીતે પદ્માવતી દેવીની વાત સાંભળીને અંબધાત્રીએ ' તથેતિ ' (સારૂં) આમ કહીને તેમની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી. સ્વીકારીને તે રણવાસના પાછલા બારણેથી બહાર નીકળી અને નીકળીને જ્યાં તેતલિપુત્રનું ઘર અને તેમાં પણ જ્યાં તેતલિપુત્ર અમાત્ય હતા ત્યાં પહોંચી. ત્યાં પહોંચીને તેણે સૌ પહેલાં બંને હાથ જોડીને તેતલિપુત્રને નમસ્કાર કર્યા અને ત્યારપછી તેણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમને પદ્માવતી દેવી બોલાવે છે. અંબધાત્રીના મુખથી આ જાતની વાત સાંભળીને તેતલિપુત્ર હર્ષિત તેમજ સંતુષ્ટ થતો અંબધાત્રીની સાથે સાથે જ તે પોતાના ઘેરથી રણવાસ તરફ રવાના થયો.

(णिगच्छित्ता अंतेउरस्स अवद्दारेणं रहस्सियं चेव अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागए, करयलपरिग्गहियं दसणहं सिर-

'जं मए कायव्वं' यन्मया कर्तव्यम्, ततः खलु पद्मावती देवी तेतलिपुत्रमेवमवदत् 'एवं खलु कणगरहे राया वियंगेइ' एवं खलु कनकरथो राजा व्यङ्गर्यात= हे देवाणुप्रिय! मया पूर्वमेवकथितं-यत्कनकरथ उत्पन्नान्पुत्रान् विकृताऽङ्गान् कृत्वा मारयति। अहं च खलु देवानुप्रिय! दारकं प्रजाता=प्रजनितवती, 'तं' तस्मात् कारणात् त्वं खलु देवानुप्रिय! एतं दारकं गृहाण यावत् तव च मम च

सी संदिसंतु णं देवाणुप्पिया! जंमए कायव्वं? तएणं पउमावई तेतलि पुत्तं एवं वयासी-एवं खलु कणगरहे राया जाव वियंगेइ, अहं च णं देवाणुप्पिया दारगं पयाया तं तुमं णं देवाणुप्पिया! एयं दारगं गेण्हाहि) चलकर वह अंतः पुर के पृष्ठ भाग के द्वार से किसी को आने का पता न लगे इस रूप से वहां प्रविष्ट हुआ। प्रविष्ट होकर जहां पद्मावती देवी थी वहां गया। वहां जाकर उसने दोनों हाथ जिसमें जुडे हुए हैं और दशोंनख जिसमें हैं ऐसी अंजलिको दक्षिण तरफ से घुमाकर बायें तरफ लेजाकर और मस्तकपर अंजलि को रखकर कहा-अर्थात् नमस्कार कर पूछा हे देवानुप्रिये! जो मुझे करने योग्य कार्य है उस के करने की आप आज्ञा दीजिये। इस के बाद पद्मावती देवी ने तेतलिपुत्र से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय! मैंने तुमसे पहिले ही कह रक्खा है कि कनकरथ उत्पन्न हुए पुत्रों को विकृत अंग बनाकर मार डालता है। और मैंने हे देवानुप्रिय! पुत्र को उत्पन्न किया है। इसलिये तुम हे देवा-

सावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी-संदिसंतु णं देवाणुप्पिया! जंमए करणिज्जं तएणं परमावीइ देवी वयासी-एवं खलु कणगरहे राया जाव वियंगेइ अहं च णं देवानुप्पिया! दारगं पयाया तं तुमं णंदेवाणुप्पिया! एवं दारगं गेण्हाहि)

ત્યાં પહોંચીને રણવાસના પાછલા બારણેથી કોઇને ખબર પડે નહિ તેમ રણવાસમાં પ્રવિષ્ટ થઈ ગયો. પ્રવિષ્ટ થઇને તે જ્યાં પદ્માવતી દેવી હતી ત્યાં પહોંચ્યો. ત્યાં પહોંચીને તેણે દશે નખો જેમાં છે એવા બને હાથ જોડીને અંજલિ બનાવીને તેને જમણી બાજુથી ફેરવીને ડાબી બાજુ તરફ લઇ જઇને મસ્તક ઉપર અંજલિ મૂકીને આ પ્રમાણે કહ્યું-એટલે નમસ્કાર કરીને પૂછયું કે-હે દેવાનુપ્રિયે! મારે લાયક જે કંઈ પણ કામ હોય તે મને કહો ત્યાર પછી પદ્માવતી દેવીએ તેતલિપુત્રને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય! તમને મેં પહેલેથી કહી રાખ્યું છે કે રાજા કનકરથ ઉત્પન્ન થયેલા પુત્રોને અંગહીન કરી નાખે છે. અને હે દેવાનુપ્રિય! મારે પુત્ર થયો છે. હે દેવાનુપ્રિય! એ બાળકને તમે લઇ જાઓ.

भिक्षाभाजनमिव भिक्षाभाजनं, यथा भिक्षाभाजनं जीवनं निर्वाहयति तथाऽयमपि जीवननिर्वाहको भविष्यति 'त्तिकट्टु' इति कृत्वाः इत्युक्त्वा 'तेतलिपुत्तं' तेतलिपुत्राय प्राकृतत्वादत्र द्वितीया ददाति=तेतलिपुत्रस्य हस्ते दारकमर्पयति। ततः खलु तेतलिपुत्रः पद्मावत्या हस्ताभ्यां दारकं गृह्णाति, गृहीत्वा उत्तरीयेण=उत्तरीयवस्त्रेण तं 'पिहेइ' पिदधाति=आच्छादयति, 'पिहित्ता' पिधाय अन्तः-पुरस्य 'रहस्सियं' रहस्यिकं=प्रच्छन्नं यथा स्यात्तथा अपद्वारेण निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव स्वकं गृहं यत्रैव पोट्टिला भार्या तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य पोट्टिलामेवमवादीत्-एवं खलु हे देवानुप्रिये! कनकरथो राजा राज्ये च यावद् व्यङ्गयति स्वपुत्रान् मारयति अयं च खलु मम हस्तस्थितो दारकः कनकरथस्य पुत्रः पद्मावत्या आत्मजो मयाऽत्रानीतः, 'तं' तस्मात् कारणात् खलु हे देवानुप्रिये! इमं दारकं 'कणगरहस्स-

---

नुप्रिय! इस बालक को लेलो (जाव तव मम य भिक्खाभायणे भविस्सइत्ति कट्टु तेतलिपुत्तं दलयइ) यावत् यह हमारे तुम्हारे लिये भिक्षा का भाजन हो जायगा जिस प्रकार भिक्षा भाजन जीवन निर्वाहक होता है-उसी तरह यह भी जीवन निर्वाहक होवेगा-इस प्रकार कहकर उसने तेतलिपुत्र के हाथमें अपने पुत्र को दे दिया। (तएणं तेतलिपुत्ते पउमावईए हत्थाओ दारगं गेण्हइ) तेतलिपुत्र ने भी पद्मावती देवीके हाथसे बालक को ले लिया। (गिण्हित्ता उत्तरिज्जेणं पिहेइ, पिहित्ता अंतेउरस्स रहस्सियं अवद्दारेणं णिग्गच्छइ,णिग्गच्छित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव पोट्टिला भारिया-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता-पोट्टिलं एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियंगेइ, अयं

(जाव तव मम य भिक्खाभायणे भविस्सइत्तिकट्टु तेतलिपुत्तं दलयइ)

એ મારા અને તમારા માટે 'ભિક્ષાભાજન' થશે એટલે કે જેમ ભિક્ષાનું પાત્ર જીવનને ટકાવનાર હોય છે તેમજ આ બાળક પણ જીવન નિર્વાહક થશે. આ પ્રમાણે કહીને તેણે તેતલિપુત્રના હાથમાં પોતાના નવ જાત પુત્રને સોંપી દીધો.

(तएणं तेतलिपुत्ते पउमावईए हत्थाओ दारगं गेण्हइ)

તેતલિપુત્રે પણ પદ્માવતી દેવીના હાથમાથી બાળક લઇ લીધુ.

(गिण्हित्ता उत्तरिज्जेणं पिहेइ पिहित्ता अंतेउरस्स रहस्सियं अवद्दारेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव पोट्टिला भारिया-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, पोट्टिलं एवं वयासी, एवं खलु देवाणुप्पिया! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियंगेइ, अयं च णं दारए कणगरहस्सपुत्ते पउमावईए अत्तए

रहस्सियं चेव ' कनकरथस्य रहस्यिकमेव=कनकरथो यथा न जानीयात्तथैव ' अणुपुव्वेणं' आनुपूर्व्येण=अनुक्रमेण तत्कृतोपद्रवतश्च 'सारक्खाहि य' संरक्ष्य कनकरथनृपदृष्टितः संगोपाय च तत्कृतोपद्रवतः, तथा संवड्ढेहि य ' संवर्धय च=स्तन्यपानादिनाऽस्य बालस्य वृद्धिमुपनय । ततः खलु एष दारकः उन्मुक्तबालभावः तव च मम च पद्मावत्याश्च 'आहारे' आधारः=आधारस्वरूपो भविष्यति ' तिकट्टु ' इतिकृत्वा

च णं दारए कणगरहस्स पुत्ते पउमावईए अत्तए, तं णं तुमं दारगं कणगरहस्स रहस्सियं चेव अणुपुव्वेणं सारक्खाहिं य संगोवाहि य संवड्ढेहि य) लेकर फिर उसे अपने दुपट्टे से ढक लिया और ढककर प्रच्छन्न गुप्तरूप से अंतः पुर के पीछे के दरवाजे से बाहर निकल गया। निकल कर जहां अपना घर और पोट्टिला भार्या थी वहां गया। वहां जाकर उसने पोट्टिला भार्या से इस प्रकार कहा-देवानुप्रिये ! कनक रथ राजा राज्य आदि में इतना अधिक मूर्च्छित हो रहा है कि वह उत्पन्न हुए अपने बालकों को अङ्ग विच्छेद कर मार डालता है। यह जो पुत्र मेरे हाथ में है वह कनक रथ राजा का पुत्र है यह पद्मावती देवी की कुक्षि से उत्पन्न हुआ है। इसलिये हे देवाणुप्रिये ! तुम इस पुत्र को कनक रथ को खबर न पडे इस तरह प्रच्छन्न रूप से क्रमशः रक्षित करती रहो-पालती रहो उसकी दृष्टि से बचाती रहो और स्तन्य पान आदि से बढाती रहो। (तएणं एस दारए उम्मुक्कबालभावे तव य

तं णं तुमं देवाणुप्पिया ! इमं दारगं कणगरहस्स रहस्सियं चेव अणुपुव्वेणं सारक्खाहिं य संगोवाहि य संवड्ढेहि य)

લઇને તેણે ખેસમાં ઢાંકી દીધું, અને ઢાંકીને છુપી રીતે રણવાસના પાછલા બારણેથી બહાર નીકળી ગયો. બહારનીકળીને જ્યાં પોતાનું ઘર અને પોટ્ટિલા ભાર્યા હતી ત્યાં ગયો. ત્યાં પહોંચીને તેણે પોટ્ટિલા ભાર્યાને એમ કહ્યું કે-હે દેવાનુપ્રિયે ! રાજા કનકરથ રાજ્ય વગેરેની બાબતમાં એટલો બધો આસક્ત થઇ ગયો છે કે તે જન્મ પામેલા પોતાના બાળકોના અંગોને કપાવીને મારી નાખે છે. મારા હાથમાં જે બાળક છે તે પણ કનકરથ રાજાનો જ પુત્ર છે. પદ્માવતી દેવીના ગર્ભમાંથી આનો જન્મ થયો છે. એથી હે દેવાનુપ્રિય ! કનકરથ રાજાને જાણ થાય નહિ તે પ્રમાણે તમે છુપી રીતે આ પુત્રનું રક્ષણ કરતા રહો, પોષણ કરતાં રહો, રાજાની કુદૃષ્ટિથી એને દૂર રાખતા રહો અને સ્તન્યપાન એટલે કે દૂધ વગેરે પીવડાવીને એને મોટો કરો.

इत्युक्त्वा पोट्टिलायाः पार्श्वे 'णिक्खिवइ' निक्षिपति=स्थापयति, तथा पोट्टिलायाः पार्श्वात् तां 'विणिहायमावण्णं' विनिघातमापन्नां=मृतां दारिकां गृह्णाति, गृहीत्वा उत्तरीयेण पिदधाति, पिधाय अन्तः पुरस्य अपद्वारेण अनुप्रविशति; अनुप्रविश्य यत्रैव पद्मावती देवी तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य पद्मवत्याः देव्याः पार्श्वे स्थापयति, स्थापयित्वा तावत् 'पडिणिग्गए' प्रतिनिर्गतः प्रतिनिवर्त्य स्वगृहं

मम य पउमावईए य आहारे भविस्सइत्ति कट्टु पोट्टिलाए पासे णिक्खिवइ, णिक्खिवित्ता पोट्टिलाओ पासाओ विनिहायमावन्निय दारियं गेण्हइ, गेण्हित्ता उत्तरिज्जेणं पिहेइ पिहित्ता, अंतेउरस्स अवद्दारेणं अणुप्पविसइ) इस तरह क्रमशः वृद्धिंगत होता हुआ यह बालक जब बाल्यावस्था से रहित हो जावेगा तो हमारा तुम्हारा और पद्मावती देवी का आधार होगा, ऐसा कहकर उस तेतलिपुत्र अमात्य ने उस पुत्र को पोट्टिला के पास रख दिया। और पोट्टिला के पास से मरी हुई कन्या को उठा लिया-उठाकर उसे अपने उत्तरियवस्त्र से ढँक लिया, ढँक कर फिर अंतः पुर के पिछले दरवाजे से वहां आया (अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमावईए देवीए पासे ठावेइ, ठावित्ता जाव पडिनिग्गए) वहां आकर जहां पद्मावती देवी थी वहां पहुँचा, वहां पहुंच कर उसने उस मृत कन्या को पद्मावती देवी के

(तएणं एस दारए उम्मुक्कबालभावे तव य मम य पउमावईए य आहारे भविस्सइ त्ति कट्टु पोट्टिलाए, पासेणिक्खिवइ, णिक्खिवित्ता पोट्टिलाओ पासाओ विनिहायमावन्नियं दारियं गेण्हइ, गेण्हित्ता उत्तरिज्जेणं पिहेइ, पिहित्ता, अंतेउरस्स अवद्दारेणं अणुप्पविसइ)

અને આ રીતે અનુક્રમે મોટો થતો આ બાળક જ્યારે બચપણુ વટાવીને જુવાન થઇ જશે ત્યારે આ મારો, તમારો અને પદ્માવતી દેવીનો આધાર થશે. આ પ્રમાણે કહીને તે તેતલિપુત્ર અમાત્યે તે બાલકને પોટ્ટિલાની પાસે મૂકી દીધો અને પોટ્ટિલાની પાસેથી મરી ગયેલી બાળકીને ઉપાડી લીધી. ઉપાડીને તેને પોતાના ખેસથી ઢાંકી દીધી અને ત્યારપછી તે રણુવાસના પાછલા બારણેથી પદ્માવતી દેવીના મહેલમા ગયો.

(અણુપ્પવિસિત્તા જેણેવ પઉમાવઈ દેવી તેણેવ ઉવાગચ્છઇ, ઉવાગચ્છિત્તા, પઉમાવઈએ દેવીએ પાસે ઠાવેઇ, ઠાવિત્તા જાવ પડિનિગ્ગએ)

ત્યાં જઇને જ્યા પદ્માવતી દેવી હતી ત્યાં ગયો અને ત્યાં પહોંચીને તેણે તે મરી ગયેલી બાળકીને પદ્માવતી દેવીના પડખામાં મૂકી દીધી. અને ત્યાં મૂકીને તે ત્યાંથી પાછો ફર્યો અને ત્યારપછી તે પોતાને ઘેર આવી ગયો.

गतवान्। 'तएणं' ततः खलु तस्याः पद्मावत्याः 'अंगपडियारियाओ' अङ्गपरिचारिकाः=दास्यः पद्मावतीदेवीं विनिघातमापन्नां प्राणरहितां दारिकां च पश्यन्ति, दृष्ट्वा यत्रैव कनकरथो राजा, तत्रैव उपागच्छंति, उपागत्य करतलपरिगृहीतं दशनखं शिर आवर्त्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा 'एवं' = वक्ष्यमाणरीत्या अवदत्—हे स्वामिन्! पद्मावतीदेवी 'मइल्लियां' मृतां दारिकां 'पयाया' प्रजाता=प्रजनितवती। 'तएणं' इति, ततः खलु दासीमुखान्मृतबालिकाजन्मश्रवणानन्तरं कनकरथो राजा तस्या 'मइल्लियाए' मृतायाः दारिकाया 'नीहरणं' निर्हरणं'=निष्काशनं 'करेइ' करोति, कृत्वा बहूनि लौकिकानि मृतकृत्यानि करोति, कृत्वा 'कालेणं'

पास रख दिया। और रखकर फिर वह वहां से चल दिया चलकर अपने घर आ गया। (तएणं तीसे पउमावईए अंगपरियारियाओ पउमावइं देविं विणिहायमावन्नं दारियं पासंति, पासित्ता जेणेव कणगरहे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी एवं खलु सामी पउमावई देवी मइल्लियं दारियं पयाया) इसके बाद पद्मावती देवी की अंगपरिचारिकाओंने पद्मावती देवी को और मरी हुई उस कन्या को देखा देख कर वे सब जहां कनक रथ राजा थे वहां गईं—वहां जाकर उन्होंने दोनों हाथों की अंजलि बना कर और उसे मस्तक पर घुमाकर—अर्थात् नमस्कार कर इस प्रकार कहा हे स्वामिन्! पद्मावती देवी ने मृत कन्या को जन्म दिया है। (तएणं कणगरहे राया तीसे मइल्लियाए दारियाए नीहरणं करेइ, बहूणि लोइयाइं मयकिच्चाइं करेइ करित्ता कालेणं विगयसोए जाए) इस प्रकार उन के मुख से सुनकर कनक रथ राजाने उस मृत

(तएणं तीसे पउमावईए अंगपरियारियाओ पउमावइं देविं विणिहायमावन्नं दारियं पासंति, पासित्ता जेणेव कणगरहे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—एवं खलु सामी पउमावईदेवी मइल्लियं दारियं पयाया)

ત્યારબાદ પદ્માવતી દેવીની અંગ–પરિચારિકાઓએ પદ્માવતી દેવી તેમજ તે મરેલી કન્યાને જોઈ. જોઇને તેઓ બધી જ્યાં કનકરથ રાજા હતા ત્યાં ગઈ અને ત્યાં જઈને તેણે બન્ને હાથોથી અંજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તક ઉપર ફેરવીને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે સ્વામી! દેવી પદ્માવતીએ મરેલી કન્યાને જન્મ આપ્યો છે.

(तएणं कणगरहे राया तीसे मइल्लियाए दारियाए नीहरणं करेइ, बहूणि लोइयाइं मयकिच्चाइं करेइ करित्ता कालेणं विगयसोए जाए)

कालेन समये व्यतीते 'विगयसोए' विगतशोकः=शोकरहितो जातः। ततः खलु स तेतलिपुत्रः कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-'खिप्पामेव' क्षिप्रमेव 'चारगसोहणं' चारकशोधनं=बन्दीजनमोक्षणं यावन्मानोन्मानवर्द्धनम् पुत्रजन्मोत्सवनिमित्तकं राजकर्मचारिणां वेतनवृद्धयादिना सत्कारसम्मानवर्द्धनं कुरुत. इत्येवंरूपामाज्ञां दत्त्वा स्वयं 'ठिइवडियं' स्थितिपतितां कुलमर्यादान्तर्गतां पुत्रजन्मनिदशदिवससाध्यमहोत्सवरूपां प्रक्रियां करोति। पुनश्चाशतादिना मित्र-ज्ञातिप्रमुखान् सत्कृत्य सम्मान्य तत्पुरत एवं कथयति-'जम्हाणं' यस्मात्खलु

कन्या का निर्हरण-श्मशान में ले जाना-किया। निर्हरण कर के फिर अनेक लौकिक मृतकृत्य किये। मृत कृत्य कर चुकने के बाद धीरे २ वे विगत शोक हो गये। (तएणंसे तेतलिपुत्ते कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव चारगसोहणं जाव ठिइवडियं जम्हाणं अम्हं एस दारए कणगरहस्स रज्जे जाए तं होउण दारए नामेणं कणगज्झए जाव भोगसमत्थे जाए) इस के बाद तेतलिपुत्र अमात्यने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा-शीघ्र ही तुम लोग चारक शोधन करो-बन्दीजनों को मुक्त करो यावत् मानोन्मन का वर्द्धन, और पुत्र जन्मोत्सव के निमित्त को लेकर राज कर्म चारियों के वेतन की वृद्धि आदि करके उनके सन्मान का वर्द्धन करो-इस प्रकार आज्ञा देकर स्वयं उस तेतलिपुत्र अमात्यने अपनी कुल मर्यादा के अनुसार पुत्र का जन्म होने के कारण दश दिवस तक बड़ा

આ રીતે તેમનાં મુખથી આ વાત સાંભળીને કનકરથ રાજાએ તે મરેલી કન્યાને શ્મશાનમાં પહોંચાડી અને ત્યારબાદ તેણે મરણ પછીની ઘણી ક્રિયાઓ પૂરી કરી. મરણ ક્રિયાઓને પતાવ્યા પછી રાજા કનકરથ ધીમે ધીમે શોક રહિત થઇ ગયા.

(तएणं से तेतलिपुत्ते कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव चारगसोहणं जाव ठिइवडियं,जम्हाणं अम्हं एस दारए कणगरहस्स रज्जे जाए तं होउणं दारए नामेणं कणगज्झाए जाव भोगसमत्थे जाए)

ત્યારબાદ તેતલી પુત્ર અમાત્યે પોતાના કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે-તમે લોકો સત્વરે ચારક શોધન કરો-એટલે કે જેલખાનામાંથી કેદીઓને છોડી મૂકો યાવત માનોન્માનનું વર્દ્ધન તેમજ પુત્ર જન્મોત્સવ બદલ રાજકર્મચારીઓના પગાર વગેરેની વૃદ્ધિ કરીને તેમના સન્માનનું વર્દ્ધન કરો આ રીતે કૌટુંબિક પુરુષોને આજ્ઞા આપીને તેતલિપુત્રે જાતે પોતાની કુલ મર્યાદા મુજબ પુત્ર જન્મ હોવા બદલ દશ દિવસ

अस्माकमेष दारकः कनकरथस्य राज्ये जातः, 'तं' तस्मात् भवतु खलु दारको नाम्ना 'कनकध्वजः' इति। अनन्तरमसौ दारकः क्रमेण वृद्धिं गच्छन् यावद् 'भोगसमत्थे जाए' भोगसमर्थो जातः=तारुण्यं प्राप्त इत्यर्थः ॥ सू०५ ॥

मूलम्—तएणं सा पोट्टिला अन्नया कयाई तेतलिपुत्तस्स अणिट्ठा ५ जाया यावि होत्था, णेच्छइ य तेतलिपुत्ते पोट्टिलाए नाम गोत्तमवि सवणयाए, किंपुणदरिसणं वा परिभोगं वा ?। तएणं तीसे पोट्टिलाए अन्नया कयाई पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं तेतलिस्स पुव्विं इट्ठा ५ आसिं इयाणिं अणिट्ठा ५ जाया, नेच्छइ य तेतलिपुत्ते मम नाम जाव परिभोगं वा ओहयमणसंकप्पं जाव झियायइ। तएणं तेतलिपुत्ते पोट्टिलं ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणिं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि। तुमं च णं मम महाणसंसि विउलं असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडावेहि, उवक्खडावित्ता बहूणं

भारी उत्सव किया। तथा भोजन आदि द्वारा मित्र ज्ञाति द्वारा प्रमुख जनों का सत्कार सन्मान करके फिर उसने उनके समक्ष इस प्रकार कहा—यह हमारा पुत्र कनक रथ राजा के राज्य में उत्पन्न हुआ है—इस लिये यह "कनकध्वज" इस नामसे प्रसिद्ध होवे। इस के बाद यह पुत्र क्रमशः वृद्धिंगत हुआ यावत्—भोग समर्थ हो गया—अर्थात् जवान युवा-बन गया ॥ सू० ५ ॥

સુધી ભારે ઊત્સવ ઉજવ્યો તેમજ ભોજન વગેરેથી મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે પ્રમુખ લોકોનો સત્કાર અને સન્માન કરીને તેણે તેઓની સમક્ષ આ પ્રમાણે કહ્યું કે આ અમારો પુત્ર રાજા કનકરથના રાજ્યમાં ઉત્પન્ન થયો છે એથી એ "કનકધ્વજ" નામે પ્રસિદ્ધ થાય. ત્યાર પછી તે કનકધ્વજ સમય પસાર થતાં ધીમે ધીમે મોટો થતાં યાવત ભોગ સમર્થ થઈ ગયો એટલે કે જુવાન થઈ ગયો. ॥ સૂ૦ ૫ ॥

समणमाहण जाव वणीमगाणं दयमाणी य दवावेमाणी य विहराहि। तएणं सा पोट्टिला तेतलिपुत्तेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणित्ता, कल्लाकल्लिं महाणसंसि विपुलं असण जाव दवावेमाणी विहरइ ॥सू०६॥

टीका—'तएणं' इत्यादि। ततः खलु सा पोट्टिला अन्यदा कदाचित् केनापि कारणेन तेतलिपुत्रस्य अनिष्टा, अकान्ता, अप्रिया, अमनोज्ञा, अमनोऽमा जाता चाप्यऽभवत्। नेच्छति च तेतलिपुत्रः पोट्टिलाया नाम गोत्रमपि 'सवणयाए' श्रवणतायै=श्रूयतेऽनेनेति श्रवणं कर्णः, तस्य कर्म श्रवणता तस्यै, श्रवणविषयीकर्तुम् इत्यर्थः किं पुन तस्या 'दरिसणं वा' दर्शनं वा तया सहपरिभोगं वा, वाञ्छेत्, अपितु न। ततः खलु तस्याः पोट्टिलाया अन्यदा कदाचित् पुव्वरत्तावर-

तएणं सा पोट्टिला इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (सा पोट्टिला) वह प्रधानकी स्त्री पोट्टिला (अन्नया कयाइं) किसी समय-कोई निमित्त को लेकर-किसी भी कारण से-(तेतलिपुत्तस्स अणिट्ठा जाया यावि होत्था) तेतलिपुत्र के लिये अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अमनोज्ञ एवं अमनोम बन गई। (णेच्छइ तेतलिपुत्ते पोट्टिलाए नाम गोत्तमवि सवणयाए किं पुणदरिसणं वा परिभोगं वा) इस प्रकार वह तेतलिपुत्र उस पोट्टिला के नाम गोत्र तक को भी सुनना पसंद नहीं करता तो फिर उसके देखने और परिभोग पास जाने की तो बात ही क्या है। (तएणं तीसे पोट्टिलाए अन्न-

तएण सा पोट्टिला इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) त्यार पछी (सा पोट्टिला) ते अमात्यनी पत्नी पोट्टिला (अन्नया कयाइ) कोई वखते गमेते कारणे (तेतलिपुत्तस्स अणिट्ठा ५ जाया यावि होत्था) तेतलि पुत्रने माटे अनिष्ट, अकान्त अप्रिय, अमनोज्ञ अने अमनोम थई पडी.

(णेच्छइ तेतलिपुत्ते पोट्टिलाए नाम गोत्तमवि सवणयाए किं पुणदरिसणं वा परिभोगं वा)

एथी तेतलिपुत्र अमात्यने तेनुं नाम गोत्र सुद्धां सांभळवु पण पसंद पडतुं न हतुं त्यारे तेने जोवानी अने तेनी पासे जवानी तो वात ज शी?

(तएणं तीसे पोट्टिलाए अन्नया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे

त्तकालसमए ' पूर्वरात्रापररात्रकालसमये=रात्रेः पश्चिमे भागे ' इमेयारूवे ' अय-मेतद्रूपः=वक्ष्यमाणप्रकारः ' अज्झत्थिए जाव ' आध्यात्मिको यावत् मनोगतः संकल्पः ' समुप्पज्जित्था ' समुदपद्यत, संकल्पप्रकारमाह-एवं खलु अहं ' तेतलिस्स ' तेतलेः=तेतलिपुत्रस्यामात्यस्य पूर्वम् इष्टा, कान्ता, प्रिया, मनोज्ञा, मनोऽमा ' आसि '=आसम् , परन्तु ' इयाणिं ' इदानीम् अनिष्टा यावद्-अमनोऽमा जाता। नेच्छति च तेतलिपुत्रः मम नाम यावत् परिभोगं वा=मम नाम गोत्रमपि श्रोतुं नेच्छति किंपुन मम दर्शनं मया सह परिभोगं वा। इत्थमेषा पोट्टिला ' ओहय-मणसंकप्पा ' अपहतमनः संकल्पा=अपहतो=दुःखावेगवशाद् रुद्धो, मनः संकल्पो= मानसिको विचारो यस्याः सा, ' जावझियायइ ' यावद् ध्यायति=यावदार्त्तध्यानं करोति। ततः खलु तेतलिपुत्रः पोट्टिलामपहतमनः संकल्पां ' जाव झियायमाणिं '

या कयाइं पुव्वावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्प-जित्था) जब पोट्टिलाने अपनी तरफ तेतलि पुत्र अमात्य की इतनी अधिक उपेक्षा-अनादरता देखी तो एक दिन किसी समय उसे रात्रि के मध्यभाग में इस प्रकार का आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ-(एवं खलु अहं तेतलिस्स पुव्विं इट्ठा ५ आसिं, इयाणिं अणिट्ठा ५ जाया नेच्छइ य तेतलिपुत्ते मम नाम जाव परिभोगं वा ओ-हयमणसंकप्पा जाव झियायइ) मैं तेतलि पुत्र अमात्य के लिये पहिले इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ एवं मनोम थी, परन्तु इस समय मैं-उन्हे अनिष्ट यावत् अमनोम बन रही हूँ। वे तेतलि पुत्र अमात्य देखने और परिभोग करने की तो बात कौन कहे मेरे नामगोत्र तक को भी सुनना पसंद नहीं करते हैं। इस तरह वह अपहतमनसंकल्प होकर यावत्

अज्झत्थिए जाव समुप्पजित्था)

જ્યારે અમાત્ય-તેતલિપુત્રને પોટ્ટિલા એ પોતાના પ્રત્યે આટલી બધી ઉપેક્ષા અને અનાદરતા જોઈ ત્યારે કોઈ વખતે એક દિવસ રાત્રિના મધ્યભા-ગમાં તેના મનમાં આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સંકલ્પ ઉત્પન્ન થયા કે

(एवं खलु अहं तेतलिस्स पुव्विं इट्ठा ५ आसिं इयाणिं अणिट्ठा ५ जाया नेच्छइ य तेतलिपुत्ते मम नाम जाव झियायइ)

પહેલાં હું તેતલિપુત્ર અમાત્યને માટે ઈષ્ટ, કાંત, પ્રિય, મનોજ્ઞ અને મનોમ હતી. પણ હમણાં હું તેમના માટેઅનિષ્ટ યાવત અમનોમ થઈ પડી છું. તેતલિ-પુત્ર અમાત્ય જ્યારે મારુ નામ ગોત્ર સુદ્ધાં સાંભળવું ઈચ્છતા નથી ત્યારે મારી સામે જોવાની અને મારી સાથે પરિભોગની તો વાત જ શી કરવી? આ રીતે તે પોટ્ટિલા અપહત મન સંકલ્પ થઈને યાવત આર્તધ્યાન કરતી બેઠી હતી.

यावद् ध्यायन्तीम्=यावदार्तध्यानं कुर्वन्तीं पश्यति, दृष्ट्वा एवमवदत्-मा खलु त्वं हे देवानुप्रिये ! अपहतमनः संकल्पा 'जाव झियाहि' यावद्ध्याय=यावदार्तध्यानं माकुरु। हे देवि। त्वं च खलु मम 'महाणसंसि' महानसे=भोजनशालायाम् विपुलम् 'असण जाव' अशन यावत्=अशनपान खादिम स्वादिमं चतुर्विधमाहारम् 'उवक्खडावेहि' उपस्कारय, 'उवक्खडावित्ता' उपस्कार्य 'वहूणं समण माहण जाव वणीमगाणं' बहुभ्यः श्रमणब्राह्मण यावद् वनीपकेभ्यः=याचकेभ्यः, स्वयं 'देयमाणी' ददती च, अन्यैः 'दवावेमाणी' दापन्ती च विहर। ततः खलु सा

आर्तध्यान कर रही थी-(तएणं तेतलिपुत्ते पोट्टिलं ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणिं पासइ, पासित्ता एवं वयासी माणं तुमं देवाणुप्पिया ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि, तुमं च णं ममं महाणसंसि विउलं असणपाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेहि, उवक्खडावित्ता बहूणं समण माहण जाव वणीपगाणं देयमाणी य दवावेमाणी य विहराहि, तएणं सा पोट्टिला तेतलीपुत्तेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ तुट्ठा तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता कल्लाकल्लिं महाणसंसि विपुलं असण जाव दवावेमाणी विहरइ) इतने में तेतलिपुत्र ने उस अपहतमनः संकल्प होकर आर्तध्यान करती हुई पोट्टिला को देखा-तो देखकर उसने उससे कहा-हे देवानुप्रिये तुम अपहतमनः संकल्प होकर आर्तध्यान मत करो-तुम तो मेरी भोजनशाला में विपुलमात्रा में अशन, पान, खादिम एवं स्वादिम इस तरह चतुर्विध अहार बनवाओ बनवाकर उसे अनेक श्रमण ब्राह्मण यावत् याचकजनों के लिये स्वयं दो और दूसरों

(तएणं तेतलिपुत्ते पोट्टिलं ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणिं पासइ पासित्ता एवं वयासी माणं तुमे देवाणुप्पिया ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि, तुमं च णं ममं महाणसंसि विउलं असणपाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेहि, उवक्खडावित्ता बहूणं समणमाहण जाव वणीपगाणं देयमाणी य दवावेमाणी य विहराहि तएणं सा पोट्टिला तेतलिपुत्तेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठ पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता कल्लाकल्लिं महाणसंसि विपुलं असण जाव दवावेमाणी विहरइ)

આટલામાં અપહતમન સંકલ્પ થઈને આર્તધ્યાન કરતી તે પોટ્ટિલાને અમાત્ય તેતલિપુત્રે જોઈ અને જોઈને તેને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે-હે દેવાનુપ્રિયે! તમે અપહતમનસંકલ્પ થઈને આર્તધ્યાન કરો નહિ-તમે મારી ભોજન શાળામાં જઈને પુષ્કળ પ્રમાણમાં અશન, પાન, ખાદિમ અને સ્વાદિમ આમ ચાર જાતના આહારો બનાવડાવો અને બનાવડાવીને તેને ઘણા શ્રમણ બ્રાહ્મણ

पोट्टिला तेतलिपुत्रेण 'एवं' पूर्वोक्तप्रकारेण उक्ता सती हृष्टतुष्टा तेतलिपुत्रस्य 'एयमट्ठं' एतमर्थम्=अन्नदानरूपमभिप्राय 'पडिसुणइ' प्रतिश्रृणोति=स्वीकरोति, पडिसुणित्ता' प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य, 'कल्लाकल्लिं' कल्याल्यि=प्रतिदिनम्, महानसे विपुलम् 'असण जाव' अशन यावत्=अशनपानखाद्यस्वाद्यं चतुर्विधमाहारमुपस्कार्य ददती च 'दवावेमाणी' दापयन्ती च विहरति ॥ ६ ॥

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं सुव्वयाओ नामं अज्जाओ ईरियासमियाओ जाव गुत्तबंभयारिणीओ बहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्विं०चरमाणागामाणुगामं दुइज्जमाणा जेणामेव तेतलिपुरे णयरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता, अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हंति, उग्गिण्हित्ता, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणिओ विहरंति। तएणं तासिं सुव्वयाणं अज्जाणं एगे संघाडए पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ जाव अडमाणे तेतलिस्स गिहं अणुपविट्ठे। तएणं सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता, हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता, वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता, विउलं असण जाव पडिलाभेइ, पडिलाभित्ता, एवं वयासी—एवं खलु अहं अज्जाओ तेतलिपुत्तस्स पुव्वं

से दिलवाओ। इस तरह तेतलिपुत्र अमात्यने जब उस पोट्टिला से कहा—तो वह बहुत अधिक प्रसन्न एवं संतुष्ट हुई। और उसने तेतलिपुत्रकी इस बातको मान लिया। मान करके वह प्रतिदिन भोजन शाला में चारों प्रकार का आहार बनवा कर उसे श्रमण, माहण आदि जनोंके लिये स्वयं देने लगी और दूसरों से दिलवाने लगी ॥ सू० ६ ॥

યાવત્ યાચકોને પોતે આપો અને બીજાઓને હુકમ કરીને અપાવો. તેતલિપુત્ર અમાત્યે જ્યારે આ પ્રમાણે પોટ્ટિલાને કહ્યું ત્યારે તે ખૂબજ પ્રસન્ન તેમજ સંતુષ્ટ થઇ ગઇ અને તેણે તેતલિપુત્રની આ વાત સ્વીકારી લીધી. અને તે દરરોજ ભોજન શાળામાં ચારે જાતના આહારો બનાવડાવીને શ્રમણ બ્રાહ્મણ વગેરે ને પોતે આહાર આપવાલાગી અને બીજાઓ દ્વારા અપાવવા લાગી સૂ૦૬

इट्ठा ५ आसि, इयाणिं अणिट्ठा५ जाव दंसणं वा परिभोगं वा, तं तुब्भेणं अज्जाओ सिक्खियाओ बहुनायाओ बहुपढियाओ बहूणि गामागर जाव आहिंडह बहूणं राईसर जाव गिहाइं अणुपविसह, तं अत्थि आइं भे अज्जाओ ! केइ कहिंचि चुन्न-जोए वा मंतजोए वा कम्मणजोए वा हिय उड्डावणे वा काउ-ड्डवणे वा आभिओगिए वा वसीकरणे वा कोउयकम्मे वा भूइकम्मे वा मूले कंदे छल्ली वल्ली, सिलिया वा गुलिया वा ओसहे वा भेसज्जे वा उवलद्धपुव्वे वा जेणाहं तेतलिपुत्तस्स पुणरवि इट्ठा ५ भवेज्जामि । तएणं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए एवं वुत्ताओ समाणीओ दो वि हत्थे कन्ने ठवेंति ठवित्ता, पोट्टिलं एवं वयासी–अम्हे णं देवाणुप्पिया ! समणीओ निग्गं-थिओ जाव गुत्तबंभयारिणीओ, नो खलु कप्पइ अम्हं एयप्प-गारं कन्नेहि वि णिसामेत्तए, किमंग पुण उवदिसित्तए वा आयरित्तए वा ? अम्हेणं तव देवाणुप्पिया ! विचित्तं केवलि-पन्नत्तं धम्मं पडिकहिज्जामो। तएणं सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एवं वयासी–इच्छामि णं अज्जाओ! तुम्हं अंतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं निसामेत्तए, तएणं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए विचित्तं धम्मं परिकहेंति । तएणं सा पोट्टिला धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा एवं वयासी–सद्दहामि णं अज्जाओ ! णिग्गंथं पावयणं जाव से जहियं तुब्भे वयह, इच्छामि णं अहं तुब्भं अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं पडिवज्जित्तए, अहासुहं, तएणं

सा पोट्टिला तासिं अज्जाणं अंतिए पंचाणु०वइयं जाव गिहिधम्मं पडिवज्जइ, ताओ अज्जाओ वंदइ णमंसइ, वांदित्ता णमंसित्ता पडिविसज्जेइ। तएणं सा पोट्टिला समणोवासिया जाया जाव पडिलाभेमाणी विहरइ ॥ सू० ७ ॥

टीका—'तेणं कालेणं' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये सुव्रतानाम आर्या ईर्यासमिता यावद् गुप्तब्रह्मचारिण्यो बहुश्रुता बहुपरिवाराः 'पुव्वाणुव्विं' पूर्वानुपूर्व्या=तीर्थङ्करपरम्परया विचरन्त्यः 'जेणामेव' यत्रैव तेतलिपुरं नगरं तत्रैवोपागच्छंति, उपागत्य 'अहापडिरूवं' यथाप्रतिरूपम्=यथाकल्पम् 'उग्गहं' अवग्रहम्=वसत्यर्थमाज्ञाम् 'उग्गिण्हंति' अवगृह्णन्ति=याचन्ते, अवगृह्य 'संजमेण' संयमेन सप्तदशविधेन, 'तवसा' तपसा द्वादशविधेन आत्मानं भावयन्त्यो

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि।

टीकार्थ-(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समयमें (सुव्वयाओ नामं अज्जाओ ईरिया समियाओ जाव गुत्तबंभयारिणीओ बहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्वि० जेणामेव तेयलिपुरे णयरे तेणेव उवागच्छइ) सुव्रता नामकी आर्या तीर्थंकर परंपरा के अनुसार विहार करती हुई उस तेतलिपुर नगर में आई। ये ईर्यासमिति आदि पांच समितियों की पालक थी-गुप्त ब्रह्मचारिणी थीं। बहुश्रुत थी। अनेक परिवार से युक्त थीं। (उवागच्छित्ता अहा पडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हंति, उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणीओ विहरंति तएणं

तेणं कालेणं तेणं समएणं इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) ते કાળે અને તે સમયે (सुव्वयाओ नामं अज्जाओ ईरिया समियाओ जाव गुत्तबंभयारिणीओ बहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्वि० जेणामेव तेतलिपुरे णयरे तेणेव उवागच्छइ)

સુવ્રતા નામની આર્યા તીર્થંકર પરંપરા મુજબ વિહાર કરતી તેતલિપુર નગરમાં આવી તે ઈર્યાસમિતિ વગેરે ૫ (પાંચ) સમિતિઓનું પાલનકરનારી હતી તેમજ ગુપ્ત બ્રહ્મચારિણી હતી તે બહુશ્રુત તેમજ ઘણા પરિવારો થી વીંટળાયેલી હતી

(उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हंति, उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा

विहरन्ति । ततः खलु तासां सुव्रतानामार्याणामेकः संघाटकः प्रथमायां पौरुष्याम् स्वाध्यायं=सूत्रमूलपठनरूपं करोति, 'जाव अडमाणे' यावदटन्त्यः, यावच्छब्दात् 'द्वितीयस्यां पौरुष्यां सूत्रार्थचिन्तनरूपं ध्यानं करोति, तृतीयस्यां पौरुष्यां सुव्रतामार्यामापृच्छ्य उच्चनीचमध्यमकुलेषु गृहसामुदानिकभिक्षार्थमटन्, इत्यर्थो बोध्यः, तेतलेर्गृहमनुप्रविष्टः । ततः खलु सा पोट्टिला ताः संघाटकस्था आर्या एजमानाः पश्यति, दृष्ट्वा, हृष्टतुष्टा आसनात् अभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय वन्दते

तासिं सुव्वयाणं अज्जाणं एगे संघाडए पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, जाव अडमाणे तेतलिस्स गिहं अणुपविट्टे) वहां आ कर उन्होंने यथाकल्प ठहरने की आज्ञा मांगी-मांगकर फिर वे १७ सतरह प्रकारके संयम और १२ बारह प्रकार के तपसे अपने आपको वासित करती हुई ठहर गईं। इन सुव्रता आर्या का एक संघाटक था जो प्रथम पौरुषी में स्वाध्याय करता-द्वितीय पौरुषीमें सूत्रार्थका चिन्तनरूप ध्यान करता और तृतीय पौरुषीमें सुव्रता आर्या की आज्ञासे ऊँच नीच एवं मध्यम कुलोंमें भिक्षा के लिये अटन करता । इस तरह वह संघाटक (संघाडा)तृतीय पौरुषीमें इन उच्चादि घरों में भिक्षार्थ अटन करता हुआ तेतलिपुत्र अमात्य के घर पर आया (तएणं सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ) इतने में उस पोट्टिलाने उन संघाटकस्थ आर्याओं को ज्यों ही अपने घर पर आया हुआ देखा तो (पासित्ता हट्टतुट्टा आसणाओ अ-

---

अप्पाणं भावेमाणीओ विहरंति तएणं तासिं सुव्वयाणं अज्जाणं एगेसंघाडए पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ जाव अडमाणे तेतलिस्स गिहं अणुपविट्टे) त्यां आवीने तेमणे यथाकल्प (साधुकल्प प्रमाणे) रहेवानी आज्ञा मांगी अने त्यारपछी ते १७ जातना संयम अने १२ जातना तप वडे पोतानी जातने वासित करतां ते त्यां रोकाई सुव्रता आर्यानो एक संघाटक हतो जे प्रथम पौरुषीमां स्वाध्याय करतो हतो, द्वितीय पौरुषीमां सूत्रार्थनुं चिंतन रूप ध्यान करतो अने तृतीय पौरुषीमां सुव्रता आर्यानी आज्ञा मेळवीने ऊंचा, नीचा अने मध्यम कुळोमां गोचरी माटे जता हता. आ प्रमाणे ते संघाटक तृतीय पौरुषीमां उपरोक्त ऊंचा वगेरे कुळोना घरोमां गोचरी माटे फरतां फरतां तेतलिपुत्र अमात्यने त्यां आव्यो (तएणं सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एज्ज-माणीओ पासइ) पोट्टिलाए ज्यारे संघाटकस्थ आर्याओने पोताने घेर आवेली जोई त्यारे ते (पासित्ता हट्ठ तुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ) जोईने ते खूब ज प्रसन्न थई अने पोताना आसनथी ऊभी थई

नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा, विपुलमशनपानखाद्यस्वाद्यरूपं चतुर्विधमाहारं 'पडिलाभेइ' प्रतिलम्भयति=ददाति, प्रतिलम्भ्य, एवमवदत्-एवं खलु अहं हे आर्याः! तेतलिपुत्रस्य पूर्वमिष्टा, कान्ता, प्रिया, मनोज्ञा, मनोऽमा, आसम्, परन्तु 'इयाणिं' इदानीम् ' अणिट्ठा५ जाव दंसणं परिभोगं वा' अनिष्टा५ यावत् दर्शनं परिभोगं वा=साम्प्रतं तेतलिपुत्रस्याऽहमनिष्टा अकान्ता, अप्रिया, अमनोज्ञा, अमनोऽमा जाता, तस्मादेष तेतलिपुत्रो मम नामगोत्रमपि श्रोतुं नेच्छति, किं पुनर्हे आर्याः! स मम दर्शनं मया सह परिभोगं वा कथं वाञ्छेत्? । 'तं तुब्भेणं

ब्भुट्ठेइ) देखकर वह बहुत अधिक प्रसन्न हुई, और अपने स्थान से उठी (अब्भुट्ठित्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता, णमंसित्ता विउलं असण जाव पडिलाभित्ता एवं वयासी) उठकर उसने उसको वंदना की-नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार करके फिर उसने उन्हें विपुल मात्रा में अशन पान आदि चतुर्विध आहार दिया-और दे कर वह इस प्रकार कहने लगी-(एवं खलु अहं अज्जाओ! तेतलिपुत्तस्स पुव्वं इट्ठा ५ आसि, इयाणिं अणिट्ठा ५ जाव दंसणं वा परिभोगं वा-तं तुब्भेणं अज्जाओ सिक्खियाओ बहुनायाओ बहुपढियाओ बहूणि गामागार जाव अहिंडइ, बहूणं राईसर जाव गिहाइं अणुपविसइ) हे आर्याओ! पहिले मैं तेतलिपुत्र अमात्य के लिये बहुत ही इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ एवं मनोम थी परन्तु अब इस समय में उनके लिये अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अमनोज्ञ एव अमनोम बन रही हूँ। वे मेरा नाम गोत्र तक भी सुनना पसंद नहीं करते हैं तो फिर मेरे साथ परिभोग करने की

(अब्भुट्ठित्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता, णमंसित्ता विउलं असण जाव पडिलाभेइ पडिलाभित्ता एवं वयासी)

ઊભી થઈને તેણે તેમને નમન કર્યા. વંદન અને નમન કરીને તેણે તેમને પુષ્કળ પ્રમાણમાં અશન, પાન વગેરે ચાર જાતના આહારો આપ્યા અને આપીને તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગી કે—

(एवं खलु अहं अज्जाओ! तेतलिपुत्तस्स पुव्वं इट्ठा ५ आसि, इयाणिं ५ दंसणं वा परिभोगं वा त तुब्भेणं अज्जाओ सिक्खियाओ बहुनायाओ बहुपढियाओ बहूणि गामागर जाव अहिंडइ, बहूणं राईसर जाव गिहाइं अणुपविसइ)

હે આર્યાઓ! હું પહેલા તેતલિપુત્ર અમાત્યના માટે ખૂબ જ ઇષ્ટ, કાંત, પ્રિય, મનોજ્ઞ અને મનોમ હતી પણ હવે હું તેમના માટે અનિષ્ટ, અકાંત, અપ્રિય, અમનોજ્ઞ અને અમનોમ થઈ પડી છું. તેઓ મારાં નામ ગોત્ર સુદ્ધાં સાંભળવા ઇચ્છતા નથી ત્યારે મારી સામે પરિભોગ કરવાની અને મને જોવાની

अज्जाओ ' इति, तत=तस्मात् कारणात् यूयं खलु हे आर्याः ! ' सिक्खियाओ ' शिक्षिताः=शिक्षां प्राप्ता', ' बहुणायाओ ' बहुज्ञाताः=अनेकशास्त्रज्ञाननिपुणाः ' बहुपढियाओ ' बहुपठिताः=नानाविधविद्याकुशलाः स्थः पुनः ' बहूणि गामागर जाव अहिंडह ' बहूनि ग्रामाकर यावत् आहिण्डथ=बहुषु ग्रामाकरनगरादिषु परिभ्रमणं कुरुथ । तथा च ' बहूणं राईसर जाव गिहाइं अणुपविसह ' बहूनां राजेश्वर यावद् गृहाणि अनुप्रविशथ=हे आर्याः ! यूयं बहूनां राजेश्वर तलवरश्रेष्ठि सेनापत्यादीनां गृहे प्रवेशं कुरुथ, ' तं ' तत्=तस्मात् कारणात् 'अत्थि आइं मे अज्जाओ !' अस्ति आइं युष्माकमार्याः ! ' आइं ' इति वाक्यालङ्कारे देशी शब्दः । हे आर्याः ! अस्ति ' केइ कहिं चि ' कोऽपि कुत्रचित्=युष्माकं ज्ञानविषये ' चुन्नजोए वा ' चूर्णयोगो वा=चूर्णानां द्रव्यचूर्णानां योगः, स्तम्भनादिकर्मकारी, ' मंतजोए वा ' मन्त्रयोगो वा=मन्त्राणां योगो व्यापारो वा वशीकरणादि मन्त्रयोगः 'कम्मणजोए

और देखने की उनकी बात ही क्या कहूँ इस लिये हे आर्याओ ! आप सब तो शिक्षित हैं, बहुज्ञाता हैं-अनेक शास्त्रों के ज्ञानसे निपुण हैं-बहुपठित हैं-नाना प्रकार की विद्याओं में कुशल हैं-अनेक ग्राम, आकर आदि स्थानों में विहार करती रहती है, अनेक राजेश्वर आदिकों के घरों में आती जाती रहती हैं (तं अत्थिआइं मे अज्जाओ) तो हे आर्याओ ! (केइ कहिं चि चुन्नज्जोएवा) कहीं कोई चूर्ण योग - द्रव्य चूर्णों का स्तम्भनादि कर्मकारी योग (मंतजोए वा कम्मणजोए वा हिय उड्डावणे वा, काउड्डावणे वा आभिओगिए वा वसीकरणे वा, कोउयकम्मे वा, भूइकम्मे वा मूले कंदे छल्ली, वल्ली, सिलिया, वा, गुलिया वा, ओसहे वा, भेसज्जे वा, उवलद्धपुव्वे वा जेणाहं तेतलिपुत्तस्स पुणरवि इट्ठा ५ भवेज्जामि) मंत्र योग-वशीकरण आदि मंत्रों का

તો વાત જ ક્યાં રહી ? એથી હે આર્યાઓ તમે સૌ શિક્ષિતા છો, બહુજ્ઞાતા છો-એટલે કે ઘણા શાસ્ત્રોના જ્ઞાનથી નિપુણ છો, બહુપંડિતા છો-અનેક જાતની વિદ્યાઓમાં કુશળ છો, ઘણા ગામ, આકર સ્થાનોમાં વિહાર કરતાં રહો છો, અને ઘણા રાજેશ્વર વગેરેના મહેલોમા આવજા કરતા રહો છો. (तं अत्थि-आइं मे अज्जाओ) તો હે આર્યાઓ ! (केइ कहिं चिचुन्नज्जोएवा) ક્યાંક ગમે તે ચૂર્ણ યોગ-દ્રવ્ય ચૂર્ણોનો સ્તંભન વગેરેનો યોગ,

(मंतजोएवा कम्मणजोए वा हिय उड्डावणे वा, काउड्डावणे वा अभिओगिए वा वसीकरणे वा, कोउयकम्मे वा, भूइकम्मे वा मूले कंदे छल्ली वल्ली सिलिया, वा गुलिया वा, ओसहे वा, भेसज्जे वा उवलद्धपुव्वे वा जेणाहं तेतलिपुत्तस्स पुणरवि इट्ठा ५ भवेज्जामि)

वा ' कार्मणयोगो वा=उच्चाटनादिकर्मयोगो वा, ' हिय उड्डावणे वा '=हृदयोड्डायनं वा=चित्ताकर्षकवस्तुविशेषो वा ' काउड्डायने वा ' कायोड्डायनं वा=शरीराकर्षकवस्तुविशेषो वा ' आभिओगिए वा ' आभियोगिको वा,=पराभवकरणयोगो वा, ' वसीकरणे वा ' वशीकरणं वा=वशीकरणयोगो वा, ' कोउयकम्मे वा ' कौतुककर्म वा=सौभाग्यवर्द्धकस्नानादि वा ' भूइकम्मे वा ' भूतिकर्म वा=मन्त्राभिमन्त्रितभस्मप्रक्षेपणं वा तथा-औषधीनां ' मूले ' मूलम् ' कंदे ' कन्दः ' छल्ली ' त्वक् ' वल्ली ' लता ' सिलिया वा ' शिलिका=तृणविशेषः, ' गुलिया ' गुलिका=गुटिका ' ओसहे वा भेसज्जे वा ' औषधं वा भैषज्यं वा, इत्यादिकं वस्तुजातं युष्माभिः 'उवलद्धपुव्वे ' उपलब्धपूर्वम्=प्राप्तपूर्वम्, हे आर्याः! भवत्य एषु किमपि उपलब्धपूर्वा अवश्यं भवेयुः, तत्कृपया मह्यमर्पय, 'जेणाहं' येनाहम् , यत्सेवनादहं तेतलिपुत्रस्य पुनरपि इष्टा कान्ता प्रियामनोज्ञामनोऽमा भवेयम्। ततः खलु ता आर्याः पोट्टिलाया एवमुक्ताः सत्यो द्वावपि हस्तौ कर्णे स्थापयन्ति, स्थापयित्वा

योग कार्मण योग-उच्चाटन आदि मंत्रो का योग हृदयोड्डीयन-चित्ताकर्षक वस्तु विशेष का योग, कायोड्डायन—शरीराकर्षक वस्तु विशेषका योग, आभियोगिक-पराभव करने का योग, वशीकरण-वशीकरण योग, कौतुक कर्म-सौभाग्यवर्द्धक स्नान आदि का योग, भूति कर्म-मंत्रादि से अभिमंत्रित भस्म के प्रक्षेपण करने रूप योग तथा औषधियों के मूल, कंद त्वक-छाल तथा लता, शिलिका-तृण विशेष गोली, औषध-भेषज्य इत्यादि वस्तुओं का योग आपके देखने में अवश्य आया होगा-इस लिये कृपाकर इनमें से कोई न कोई योग आप हमें अवश्य-अवश्य प्रदान करे कि जिससे मैं-जिस के सेवन से मैं-तेतलिपुत्र की पुनरपि इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ एवं मनोम बन जाऊँ (तएणं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए एव वुत्ताओ समाणाओ दोवि हत्थे कन्ने ठवेंति,

---

મંત્રયોગ-વશીકરણ વગેરે મંત્રોનો યોગ-કાર્મણયોગ, ઉચ્ચાટણ વગેરે મંત્રોનો યોગ, હૃદયોડ્ડાવન-ચિત્તાકર્ષક વસ્તુ વિશેષનો યોગ, આભિયોગિક-પરાભવ કરવાનો યોગ, વશીકરણ-વશીકરણ યોગ, કૌતુકકર્મ-સૌભાગ્યવર્દ્ધક સ્નાન વગેરેનો યોગ, ભૂતિકર્મ-મંત્ર વગેરેથી અભિમંત્રિત કરીને ભસ્મ (રાખોડી) નું પ્રક્ષેપણ રૂપ યોગ તેમજ ઔષધીઓના મૂળ, કંદ, ત્વક (છાલ) તેમજ લતા, શિલિકા-તૃણ વિશેષ ગોળી, ઔષધ, ભૈષજ્ય વગેરે વસ્તુઓનો યોગ તમારા જોવામાં ચોક્કસ આવ્યો જ હશે. એટલા માટે તમે કૃપા કરીને એમાંથી ગમે તે યોગ મને ચોક્કસ આપો કે જેના સેવનથી હું ફરી તેતલિપુત્રની ઇષ્ટ, કાંત, પ્રિય, મનોજ્ઞ અને મનોમ થઈ જાઉં.

दिशुः-' अहासुहं ' यथा सुखं, हे देवानुप्रिये ! । तत खलु सा पोट्टिला तासा-मार्याणामन्तिके पञ्चाणुव्रतिक यावद् गृहिधर्मं प्रतिपद्यते, पुनस्ता आर्या वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा प्रतिविसर्जयति । ततः सा पोट्टिलाश्रमणोपासिका जाता, ' जाव पडिलाभेमाणि ' यावत् प्रतिलम्भयन्ती=निर्ग्रन्थेभ्यः श्रमणेभ्यः श्रमणीभ्यश्च चतुर्विधमाहारं ददती विहरति ॥ सू० ७ ॥

जाव गिहिधम्मं पडिवज्जेइ, ताओ अज्जाओ वंदइ, णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता पडिविसज्जेइ) हे आर्याओ ! मैं इस निर्ग्रन्थ प्रवचन पर श्रद्धा करती हूं यावत् ऐसा मानती हूं कि यह निर्ग्रन्थ प्रवचन जैसा आप कहती है वैसा ही है । अतः हे आर्याओ ! अब मैं आपके पास पंचाणु व्रत सात शिक्षाव्रत आदि रूप १२ बारह प्रकार का गृहस्थ धर्म को धारण करना चाहती हूं । इस तरह पोट्टिला की भावना जान कर उन आर्याओं ने उससे कहा-यथा सुखं देवानुप्रिये ! तुझे जिस तरह सुख हो वैसा तू कर-श्रेयस्कर कार्यमें विलम्ब करना योग्य नहीं हैं-इस प्रकार उन आर्याजनोंकी आज्ञा प्राप्त कर उस पोट्टिलाने उन्हीं आर्याओं के पास से श्रावकधर्म पंच अणुव्रत एवं सात शिक्षाव्रतोंको धारण कर लिया । इस प्रकार श्रमणोपासिका बनी हुई उस पोट्टिला ने उन आर्याओं को वन्दना एवं नमस्कार की-वन्दना नमस्कार करके फिर उन्हें विसर्जित कर दिया । (तएणं सा पोट्टिला समणोवासिया जाया जाव पडि-

---

सुहं, तएणं सा पोट्टिला तासिं अज्जाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं पडिवज्जेइ, ताओ अज्जाओ वदइ, णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता पडिविसज्जेइ)

હે આર્યાઓ ! આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન ઉપર હું શ્રદ્ધા કરૂં છું. યાવત આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન જેવુ તમે કહો છો તેવુ જ છે. એથી હે આર્યાઓ ! હવે હું તમારી પાસેથી પાંચ અણુવ્રત વગેરેનો ગૃહસ્થ-ધર્મ ધારણ કરવા ઇચ્છું છું. આ રીતે પોટ્ટિલાના વિચારો જાણીને તે આર્યાઓએ તેને કહ્યું કે 'યથાસુખમ્' એટલે કે હે દેવાનુપ્રિયે ! તને જેમાં સુખ પ્રાપ્ત થાય તેમ તું કર સારા કામમાં વિલંબ કરવો જોઇએ નહિ. આ પ્રમાણે તે આર્યાઓની આજ્ઞા મેળવીને તે પોટ્ટિલાએ તે આર્યાઓની પાસેથી શ્રાવક-ધર્મ-પાંચ અણુવ્રતો અને સાત શિક્ષાવ્રતો-ને ધારણ કરી લીધો. આ રીતે શ્રમણોપાસિકા થઈ ગયેલી તે પોટ્ટિલાએ તે આર્યાઓને વંદન તેમજ નમન કર્યાં અને વંદન તથા નમન કરીને તેમને વિદાય આપી. (तएणं सा पोट्टिला समणोवासिया जाया जाव पडिलाभेमाणी विहरइ) આ રીતે શ્રમણોપાસિકા થઇ ગયેલી તે પોટ્ટિલા

मूलम्—तएणं तीसे पोट्टिलाए अन्नया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पन्ने। एवं खलु अहं तेयलिपुत्तस्स पुव्विं इट्ठा ५ आसि, इयाणिं अणिट्ठा ५ जाव परिभोगं वा, तं सेयं खलु मम सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए पव्वइत्तए, एवं संपेहेइ, संपेहित्ता, कल्लं जाव पाउप्पभायाए जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी — एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव अब्भणुन्नाया पव्वइत्तए। तएणं तेयलिपुत्ते पोट्टिले एवं वयासी-एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए ! मुंडा पव्वइया समाणी कालमासे कालं किच्चा अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जिहिसि, तं जइ णं तुमं देवाणुप्पिए ! ममं ताओ देवलोयाओ आगम्म केवलि पन्नत्ते धम्मे वोहेहि, तोहं विसज्जेमि, अह णं तुमं ममं ण संवोहेसि, तो ते ण विसज्जेमि। तएणं सा पोट्टिला तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ। ततः खलु तेतलिपुत्ते विपुलं असणं४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता, मित्तणाइ जाव आमंतेइ, आमंतित्ता, जाव सम्माणेइ, सम्माणित्ता, पोट्टिलं ण्हायं जाव पुरिससहस्सवाहिणि सीयं दुरूहइ, दुरूहित्ता,

---

लाभेमाणी विहरइ) इस प्रकार श्रमणोपासिका वनी हुई वह पोट्टिला निर्ग्रन्थ श्रमणजनोंकोएवं निर्ग्रन्थ श्रमणियों को दान-चारों प्रकार का आहार देती हुई अपना समय व्यतीत करने लगी ॥ सू० ७ ॥

નિર્ગ્રંથ શ્રમણો અને નિર્ગ્રંથ શ્રમણીઓને દાન-ચારે જાતના આહારો-આપતી પોતાનો વખત પસાર કરવા લાગી. ॥ સૂત્ર "૭" ॥

मित्तणाइ जाव संपरिवुडे सव्विड्डीए जाव रवेणं तेयलिपुरस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव सुव्वयाणं उवस्सए तेणेव उवागच्छइ। पोट्टिला सीयाओ पच्चोरुहइ। तेतलिपुत्ते पोट्टिलं पुरओ कट्टु जेणेव सुव्वया अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! मम पोट्टिला भारिया इट्ठा ४, एसणं संसारभउव्विग्गा जाव पव्वइत्तए, पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया! सिस्सिणीभिक्खं अहा-सुहं मा पडिबंधं करेहि। तएणं सा पोट्टिला सुव्वयाहिं अज्जाहिं एवंवुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता, सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करित्ता, जेणेव सुव्वयाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता. एवं वयासी—आलित्ते णं भंते! लोए एवं जहा देवाणंदा जाव एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ, बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणइ, पाउणेत्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसेत्ता सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता, आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णा ॥सू०८॥

टीका—'तएणं तीसे' इत्यादि। ततः खलु तस्याः पोट्टिलायाः 'पुव्व-रत्तावरत्तकालसमयंसि' पूर्वरात्रापररात्रकालसमये=रात्रेः पश्चिमेभागे 'कुडुंब जाग-

---

तएणं—'तीसे पोट्टिलाए' इत्यादि।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (तीसे पोट्टिलाए) उस पोट्टिला के जब कि वह (अन्नया कयाइं) किसी एक दिन (पुव्वावरत्तकालसम-

---

'तएण-तीसे पोट्टिलालाए' इत्यादि।

टीकार्थ—(तएण) त्यार पछी (तीसे पोट्टिलाए) ते पोट्टिलाने-के ज्यारे ते (अन्नया कयाइं) कोई ओक दिवसे (पुव्वावरत्तकालसमयंसि) रात्रिना

रियं जागरमाणीए ' कुटुम्बजागरिकां जाग्रत्या अयमेतद्रूप ' अज्झत्थिए जाव ' आध्यात्मिको यावत्=आध्यात्मिकः=आतमगतो यावन्मनोगतः संकल्पः समुत्पन्नः। संकल्पप्रकारमाह-एवं खलु अहं तेतलिपुत्रस्य पूर्वम् इष्टा कान्ता प्रिया मनोज्ञा मनोऽमा आसम्, इदानीमनिष्टा, अकान्ता, अप्रिया, अमनोज्ञा, अमनोऽमा यावत् परिभोगं वा । अस्याभिप्रायः-अहो मनुष्याणां मनोवृत्तेरस्थिरता। पूर्वं यस्याहम् इष्टा कान्ता प्रियाऽदिकाऽसम्, सैवाहमस्यानिष्टाऽकान्ताऽप्रियादिका जाताऽस्मि। अयं तेतलिपुत्रो मम नाम गोत्रश्रवणमपि नेच्छति किं पुनर्ममदर्शनं मया सह परिभोगं वाञ्छेत् अपितु नेत्यर्थः। ' तं ' तत्=तस्मात्कारणात् ' सेयं '

यंसि) रात्रि के पिछले भागमें (कुडुंबजागरियं-जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पन्ने) कुटुंब की चिन्ता से जाग रही थी इस प्रकार का आध्यात्मिक यावन्मनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ-(एवं खलु अहं तेयलिपुत्तस्स पुव्विं इट्ठा ५ आसि इयाणिं अणिट्ठा ५ जाव परिभोगं वा, तं सेयं खलु मम सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए पव्वइत्तए) मैं पहिले तेतलिपुत्र को बहुत ही अधिक इष्ट, कान्त प्रिय, मनोज्ञ एवं मनोम थी-परन्तु अब मैं ऐसी नहीं रही हूं—अनिष्ट आदि बन गई हूं। और बातों की बात ही क्या है-वे तो अब मेरा मुख तक नहीं देखना चाहते हैं-देखो मनुष्यों की मनोवृत्ति कितनी अस्थिर है—पूर्व मैं जिसे इष्ट, कान्त, प्रिय, आदि रूप थी-अब वही मैं उसके लिये अनिष्ट अप्रिय आदि बन गई हूं। यह तेतलिपुत्र तो मेरा नाम गोत्र तक भी सुनना नहीं चाहता है तो फिर मेरे साथ रहने की तो चाहना ही

આધ્યાત્મિક યાવત મનોગત સંકલ્પ ઉદ્ભવ્યો કે

(एवं खलु अहं तेयलिपुत्तस्स पुव्विं इट्ठा ५ आसि इयाणिं अणिट्ठा ५ जाव परिभोगं वा तं सेयं खलु मम सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए पव्वइत्तए)

પહેલાં હું તેતલિપુત્રને ખૂબજ ઇષ્ટકાંત, પ્રિય, મનોજ્ઞ અને મનોમ હતી પણ હવે હું તેમના માટે તેવી રહી નથી અનીષ્ટ વગેરે થઇ પડી છું. મારી સાથે વાતચીતની વાત તો દૂર રહી પણ તેઓ મારૂં મોં પણ જોવા માગતા નથી ખેરખર પુરુષોની મનોવૃત્તિ કેટલી બધી ચંચળ હોય છે? જેને પહેલાં જે હું ઇષ્ટ, કાંત, પ્રિય, વગેરેના રૂપમાં હતી, હવે તેને તેજ હું અનિષ્ટ અપ્રિય વગેરે થઈ પડી છું આ તેતલિપુત્ર મારા નામગોત્ર સુદ્ધાં સાભળવા માગતા નથી ત્યારે મને જોવાની અને મારી સાથે રહેવાની તો તેમને પાછલા પહોરમાં (कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुपन्ने) ઘર-ગૃહસ્થીના વિચારકરતી જાગી રહી હતી ત્યારે-આ જાતનો

श्रेयः=उचितं खलु मम सुव्रतानामार्याणामन्तिके प्रव्रजितुम्, एवं संप्रेक्षते=विचारयति, संप्रेक्ष्य=विचार्य 'कल्लं जाव पाउप्पभायाए' कल्यं यावत् प्रादुष्प्रभातायाम्=प्रातः सूर्योदयसमये यत्रैव तेतलिपुत्रस्तत्रैव उपागच्छति उपागत्य 'करयल० परि०' करतलपरिगृहीतं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवदत्–एवं खलु हे देवानुप्रिय! मया सुव्रतानामार्याणामन्तिके धर्मः 'णिसंते' निशान्तः=श्रुतः, 'जाव अब्भणु

उसे कैसे हो सकती है। इस लिये मुझे अब यही उचित है कि मैं सुव्रता आर्यिका के पास प्रव्रजित हो जाऊँ। (एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं जाव पाउप्पभायाए जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ) इस प्रकार जब वह विचार कर चुकी तो विचार करके फिर जब प्रातःकाल हुआ और सूर्य का उदय हो चुका तब जहाँ तेतलिपुत्र था वहाँ पहुंची (उवागच्छित्ता करयल० एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! मए सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव अब्भणुन्नाया पव्वइत्तए, तएणं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं एवं वयासी–एवं खलु–तुमं देवाणुप्पिए! मुंडा पव्वइया समाणी कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जिहिसि, तं जइ णं तुमं देवाणुप्पिए! ममं ताओ देवलोयाओ आगम्म, केवलिपन्नत्ते धम्मे बोहेहि तो हं विसज्जेमि) वहाँ जा कर उसने दोनों हाथ जोड कर उस को नमस्कार किया–बाद में वह इस प्रकार उससे कहने लगी हे देवानुप्रिय! बात ऐसी है कि मैंने

દરકાર જ શી હોય? એથી મને હવે એજ યોગ્ય લાગે છે કે હું સુવ્રતા આર્યિકાઓની પાસે પ્રવ્રજિત થઇ જાઉં.

(एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं जाव पाउप्पभायाए जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ)

આ રીતે જ્યારે તેણે ચોક્કસ વિચાર કરી લીધો ત્યારે તે સવારે સૂર્યોદય થતાં જ્યાં તેતલિપુત્ર અમાત્ય હતો. ત્યાં પહોંચી

(उवागच्छित्ता करयल० एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! मए सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव अब्भणुन्नाया पव्वइत्तए, तएणं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं एवं वयासी–एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए! मुंडा पव्वइया समाणी कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जिहिसि तं जइणं तुमं देवाणुप्पिए! ममं ताओ देवलोयाओ आगम्म, केवलिपन्नत्ते धम्मे बोहेहि तो हं विसज्जेमि)

ત્યાં જઈને તેણે તેમને બન્ને હાથ જોડીને નમસ્કાર કર્યા અને ત્યારપછી તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગી કે હે દેવાનુપ્રિય! મેં સુવ્રતા આર્યાની પાસેથી

ण्णाया पव्वइत्तए ' यावदभ्यनुज्ञाता प्रव्रजितुम्=स धर्मो मम मनसि रुचितः तस्माद् भवताऽभ्यनुज्ञातासती प्रव्रजितुमिच्छामीतिभावः । ततः खलु तेतलिपुत्रः पोट्टिला-मेवमवदत्-एवं खलु त्वं देवानुप्रिये ! मुण्डा प्रव्रजिता सती कालमासे कालं कृत्वाऽन्यतरेषु देवलोकेषु देवतया उपपत्स्यते । ' तं ' तदा यदि खलु त्वं देवानु-प्रिये ! मां ततो देवलोकादागत्य केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं बोधयेः, ' तोहं ' तदाऽहं त्वां ' विसज्जेमि ' प्रव्रजितुमाज्ञापयामि । 'अह णं' अथ खलु यदि खलु त्वं मां 'णं संबो-हेसि ' न संबोधयसि=केवलिप्ररूपितं धर्मं बोधयितुं प्रतिज्ञां न करोषि ' तो ' तदा ' ते ' त्वां न विसृजामि=प्रव्रजितुं नाज्ञापयामि । ' तएणं ' ततः खलु=तेतलिपुत्रस्य एतद्वचनश्रवणानन्तम्, सा पोट्टिला तेतलिपुत्रस्य ' एयमट्ठं ' एतमर्थं=धर्मं प्रति बोधनरूपमर्थं ' पडिसुणेइ ' प्रतिशृणोति=स्वीकरोति । ततः खलु तेतलिपुत्रो विपुलमशनपानखाद्यस्वाद्यं चतुर्विधमाहारम्, ' उवक्खडावेइ ' उपस्कारयति= निष्पादयति, ' उवक्खडावित्ता ' उपस्कार्य ' मित्तणाइ जाव आमंतेइ ' मित्रज्ञाति

सुव्रता आर्यिका के पास धर्म का उपदेश सुना है वह धर्म मुझे बहुत ही अधिक रुचिकर प्रतीत हुआ है । इस लिये मैं आपसे आज्ञा लेकर दीक्षित होना चाहती हूँ । पोट्टिला की ऐसी बात सुन कर तेतलिपुत्रने उससे कहा—देवानुप्रिये ! बात ऐसी है कि तुम दीक्षित हो कर जब काल अवसर काल करोगी (यह निश्चित है) अन्यतर देवलोक में देवता की पर्याय से उत्पन्न होओगी-तब यदि देवानुप्रिय ! मुझे वहां से आ कर तुम केवलिप्रज्ञप्त धर्म समझाओ-तो मैं तुम्हें प्रव्रजित होने के लिये आज्ञा दे सकता हूँ (अहं णं तुमं ममं णं संबोहेसि तो ते ण विस-ज्जेमि तएणं सा पोट्टिला तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, ततः खलु तेयलिपुत्ते विपुलं असणं ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइ जाव

ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળ્યો છે અને તે મને ગમી ગયો છે, એટલા માટે હું તમારી આજ્ઞા મેળવીને દીક્ષા ગ્રહણ કરવા ઇચ્છું છું પોટ્ટિલાની આ જાતની વાત સાંભળીને તેતલિપુત્રે તેને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે દીક્ષિત થઈને જ્યારે કાળના સમયે કાળ કરશો અને અન્યતર દેવલોકમાં દેવતાના પર્યાયથી જન્મ પામશો ત્યારે જો તમે હે દેવાનુપ્રિયે ! ત્યાંથી આવીને મને કેવળિ પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મ સમજાવો તો હું તમને અત્યારે ખુશીથી પ્રવ્રજીત થવાની આજ્ઞા આપી શકું તેમ છું.

(अहं णं तुमं ममं णं संबोहेसि तो ते ण विसज्जेमि तएणं सा पोट्टिला तेयलि-पुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, ततः खलु तेतलिपुत्ते विपुलं असणं ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता, मित्तणाइ जाव आमंतेइ, आमंतित्ता, मित्तणाइ सम्माणित्ता पोट्टिलं

यावदामन्त्रयति, मित्रज्ञातिस्वजनसम्बन्धिपरिजनान् आमन्त्रयति, 'आमंतित्ता' आमन्त्र्य 'जाव संमाणेइ' यावत्-संमानयति=अशनपानादि चतुर्विधाहारेण संमान्य, 'पोट्टिलं ण्हायं जाव पुरिससहस्सवाहिणिं सीअं' पोट्टिलां स्नातां यावत् पुरुषसहस्रवाहिनीं शिबिकाम्, 'दूरोहेइ' दूरोहयति=आरोहयति, 'दुरुहित्ता'

आमंतेइ आमंतित्ता जाव सम्माणेइ, सम्माणित्ता पोट्टिलं ण्हायं जाव पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहइ, दुरूहित्ता मित्तणाइ जाव संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं तेयलिपुरस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव सुव्वयाणं उवस्सए तेणेव उवागच्छइ) यदि तुम मुझे संबोधित नहीं करोगी अर्थात् केवलि प्रज्ञप्त धर्म को मुझे समझाने की प्रतिज्ञा नहीं करोगी तो मैं तुम्हें दीक्षित होने की आज्ञा नहीं दूँगा—इस प्रकार के तेतलिपुत्रके इस कथनको उस पोट्टिलाने स्वीकार कर लिया। अर्थात् मैं देवलोक में जाऊँगी तो वहां से आ कर आप को प्रतिबोध दूँगी इस प्रकार जब पोट्टिला ने स्वीकार कर लिया। इस के बाद तेतलिपुत्र ने विपुल मात्रा अशनादि रूप चारों प्रकार का आहार निष्पन्न करवाया-करवा करके फिर उसने अपने मित्र, ज्ञाति, आदि जनो को आमंत्रित किया। मित्र, ज्ञाति, स्वजन संबन्धी परिजनोंको आमंत्रित करके यावत् अशन पानादिरूप इस चतुर्विध आहार से उनका सन्मान करके उसने पोट्टिलाको स्नान करवा कर यावत् उसे पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिका पर बैठाया,

ण्हायं जाव पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहइ दुरूहित्ता मित्तणाइ जाव संपडिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं तेयलिपुरस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव सुव्वयाणं उवस्सए तेणेव उवागच्छइ)

જો તમે મને સંબોધશો નહિ એટલે કે જો તમે મને કેવળિ પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મને સમજાવવાની પ્રતિજ્ઞા કરશો નહિ તો તમને હું કોઈપણ સંજોગોમાં પણ દીક્ષા સ્વીકારવાની આજ્ઞા આપીશ નહિ. આ રીતે કહેવાથી પોટ્ટિલાએ તેતલિપુત્રના કથનને સ્વીકારી લીધું એટલે કે પોટ્ટિલાએ તેમને આ પ્રમાણે પ્રતિજ્ઞાબદ્ધ થઈને કહ્યું કે હું દેવલોકમાં જઈશ અને ત્યાંથી આવીને તમને ધર્મનો બોધ આપીશ. આમ જ્યારે પોટ્ટિલાએ સ્વીકારી લીધુ ત્યારપછી તેતલિપુત્રે પુષ્કળ પ્રમાણમાં અશન વગેરેના રૂપમાં ચાર જાતના આહારો બનાવડાવ્યા અને ત્યારબાદ તેણે પોતાના મિત્ર, જ્ઞાતિ, વગેરે સ્વજનોને આમંત્રણ આપ્યું. મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન સંબંધી પરિજનોને આમંત્રણ આપીને યાવત્ અશન-પાન વગેરે ચાર જાતના આહારોથી તેમનું સન્માન કરીને તેણે પોટ્ટિલાને સ્નાન કરાવડાવ્યું અને યાવત તેને પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખીમાં બેસાડી.

दूरोह्य=आरोह्य 'मित्तणाइ जाव संपरिवुडे' मित्रज्ञाति यावत् संपरिवृतः=मित्रज्ञातिस्वजनसम्बन्धिपरिजनादिभिर्युक्तः 'सव्विड्ढीए' सर्वद्धर्या 'जाव रवेणं' यावद्रवेण=भेर्यादिनिनादेन सह तेतलिपुरस्य मध्यमध्येन यत्रैव सुव्रतानामुपाश्रयस्तत्रैव उपागच्छति । सा पोट्टिला शिबिकातः 'पच्चोरुहइ' प्रत्यवरोहति=अवतरति। ततः स तेतलिपुत्रः पोट्टिलां पुरतः कृत्वा यत्रैव सुव्रता आर्या तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य, वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवदत्-एवं खलु हे देवानुप्रियाः मम पोट्टिलाभार्या इष्टा कान्ता प्रिया मनोज्ञा मनोऽमा, वर्तते,

---

बैठा कर मित्र, ज्ञाति स्वजन संबन्धी परिजनों से युक्त होकर अपनी समस्त विभूति के अनुसार गाजे बाजेके साथ तेतलिपुर नगर के बीचों-बीच चल कर वह जहां सुव्रता आर्यिका का उपाश्रय था वहां पहुँचा। (पोट्टिला सीयाओ पच्चोरूहइ, तेतलिपुत्ते पोट्टिलं पुरओ कट्टु जेणेव सुव्वया अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी, एवं खलु देवाणुप्पिया! मम पोट्टिला भारिया इट्ठा ५ एसणं संसारभउव्विग्गा जाव पव्वइत्तए पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया! सिस्सिणीभिक्खं अहासुहं मा पडिबंधं करेहि) पोट्टिला शिबिका से उतरी-तेतलिपुत्र पोट्टिलाको आगे करके जहां सुव्रता आर्यिका थीं वहां गया। जा कर उसने उनको वंदनाकी नमस्कार किया। वंदना नमस्कार करके फिर इस प्रकार कहने लगा हे देवानुप्रिये! यह मेरी पोट्टिला नाम की पत्नी है। यह मुझे इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ एवं मनोम है। इसने

પાલખીમાં બેસાડીને મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન સંબંધી પરિજનોને સાથે લઈને તે પોતાની સમસ્ત વિભૂતિ મુજબ ગાજાવાજાની સાથે તેતલિપુર નગરની વચ્ચોવચ્ચ થઈને જ્યાં તે સુવ્રતા આર્યિકાનો ઉપાશ્રય હતો ત્યાં પહોંચ્યો. (पोट्टिला सीयाओ पच्चोरूहइ, तेतलिपुत्ते पोट्टिलं पुरओ कट्टु जेणेव सुव्वया अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया! मम पोट्टिला भारिया इट्ठा ५ एसणं संसारभउव्विग्गा जाव पव्वइत्तए पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया! सिस्सिणीभिक्खं अहासुहं मा पडिबंधं करेहि) પોટ્ટિલા પાલખીમાંથી નીચે ઉતરી પડી, તેતલિપુત્ર અમાત્ય પોટ્ટિલાને આગળ રાખીને જ્યાં સુવ્રતા આર્યિકા હતી ત્યાં ગયો. ત્યાં જઈને તેણે તેમને વંદના તેમજ નમસ્કાર કર્યાં, વંદના અને નમસ્કાર કરીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયે! આ પોટ્ટિલા નામે મારી પત્ની છે. મને એ ઇષ્ટ કાંત, પ્રિય, મનોજ્ઞ અને મનોમ છે. એણે તમારી પાસેથી ધર્મનું શ્રવણ કર્યું છે

एषा खलु भवतीनां समीपे धर्मं श्रुत्वा, धर्मश्रवणजनितवैराग्यवशात् संसारभयो-द्विग्ना 'जाव पव्वइत्तए' यावत् प्रव्रजितुम् भीता जन्म मरणेभ्यो भवतीनामन्तिके प्रव्रज्यां ग्रहीतुमिच्छति, तस्मात् 'पडिच्छंतु' प्रतीच्छन्तु=स्वीकुर्वन्तु खलु देवानु-प्रियाः! इमां शिष्याभिक्षाम्, सुव्रतार्या प्राह-यथासुखम् मा प्रतिबन्धं कुरुष्व। ततः खलु सा पोट्टिला सुव्रताभिरार्याभिरेवमुक्ता सती हृष्टतुष्टा उत्तरपौरस्त्यं दिग्भागम्=ईशानकोणम् अवक्रामयति=गच्छति, अवक्रम्य स्वयमेव आभरणमाल्या-लंकारमवमुञ्चति, अवमुच्य स्वयमेव पञ्चमुष्टिकं लोचं करोति, कृत्वा यत्रैव सुव्रता आर्यास्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमव-दत्-'आलित्तेणं भंते! लोए' आदीप्तः खलु भदन्त! लोकः-हे आर्ये! एष लोको जन्मजरामरणादिभिर्दुःखैः प्रज्वलितः, 'एव' अनेन प्रकारेण 'जहा देवाणंदा' यथा देवानन्दा=देवानन्देव एषाऽपि सुव्रतानामन्तिके प्रव्रजिता, यावत्-एकादश अङ्गानि अधीते, बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयति, पालयित्वा मासिकया

आपके पास धर्म सुना है सो उसके प्रभाव से यह संसार भय से उद्विग्न हो कर जन्म मरण से भीत, त्रस्त हो कर आपके पास दीक्षित होना चाहती है। इसलिये हे देवानुप्रिये! आप मेरे द्वारा दी गई इस शिष्य भिक्षाको अंगीकार कीजिये। तब सुव्रता आर्यिका ने कहा— यथा सुखं मा प्रतिबंधं कुरुष्व—(तएणं सा पोट्टिला-सुव्वयाहिं अज्जाहिं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्क-मित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव, पंच-मुट्ठियं लोयं करेइ, करित्ता जेणेव सुव्वयाओ तेणेव उवागच्छइ, उवा-गच्छित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—अलित्ते णं भंते! लोए एवं जहा देवाणंदा जाव एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ, बहूणि

તેના પ્રભાવથી એ સંસારભયથી વ્યાકુળ થઈને જન્મ-મરણથી ભીત અને ત્રસ્ત થઈને તમારી પાસેથી દીક્ષા ગ્રહણ કરવા ઈચ્છે છે. એટલા માટે હે દેવાનુ-પ્રિયે! મારા વડે અપાતી આ શિષ્યા રૂપી ભિક્ષાનો સ્વીકાર કરો. ત્યારે જવાબમાં સુવ્રતા આર્યિકાએ તેને કહ્યું કે 'यथासुखं मा प्रतिबंधं कुरुष्व' (तएणं सा पोट्टिला सुव्वयाहिं अज्जाहिं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा उत्तर-पुरत्थिमं दिसी भागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरण-मल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव, पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करित्ता जेणेव सुव्वयाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-अलित्तेणं भंते! लोए एवं जहा देवाणंदा जाव एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ, बहूणि

संलेखनया आत्मानं जुष्ट्वा षष्ठिं भक्तानि अनशनेन छित्त्वा, 'आलोइयपडिकंता' आलोचित प्रतिक्रान्ता 'समाहिपत्ता' समाधिप्राप्ता कालमासे कालं कृत्वा अन्य-तरेषु देवलोकेषु देवतया उपपन्ना। सू० ८॥

वासाणि सामन्नपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसेत्ता सट्ठिंभत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता, कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु - देवलोएसु देवत्ताए उववण्णा) इस प्रकार सुव्रता आर्यिका के द्वारा कही गई वह-पोट्टिला बहुत अधिक हृष्टतुष्ट हुई। बाद में वह ईशान कोणमें गई। वहां जाकर उसने अपने हाथों से शरीर पर रहे हुए आभरण, माल्य एवं अलं-कारों को उतार दिया। उतार कर अपने आप पंचमुष्टिक केशों का लुंचन किया-लुंचन कर फिर वह जहां सुव्रता आर्या थीं वहां आई। आते ही उसने उन्हें वन्दना एवं नमस्कार करके फिर वह इस प्रकार बोली — हे भदन्त ! यह लोक जरा मरण आदि दुःखों से प्रज्वलित हो रहा है, इस प्रकार से देवानदा की तरह यह सुव्रता आर्या के पास दीक्षित हो गई। यावत् उसने ११ अंगों का अध्ययन भी कर लिया। बहुत वर्षों तक श्रामण्य पर्याय को पालन किया। प्रीतिपूर्वक अन्त में एक मास की संलेखना धारण कर ६०, भक्तों का अनशन द्वारा छेद

वासाणि सामन्नपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता, कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णा)

આ રીતે સુવ્રતા આર્યિકા વડે આજ્ઞા અપાયેલી પોટ્ટિલા ખૂબ જ હૃષ્ટ-તુષ્ટ થઈ ગઈ ત્યારપછી તે ઇશાન કોણુ તરફ ગઈ અને ત્યાં જઇને તેણે પોતાના હાથથી જ શરીર ઉપરના આભરણો, માળાઓ અને અલંકારો ને ઉતાર્યાં અને ઉતારીને પોતાની મેળે જ પાંચ મુઠી કેશોનું લુચન કર્યું. લુંચન કર્યા પછી તે જ્યાં સુવ્રતા આર્યા હતી ત્યાં આવતી રહી ત્યાં આવીને તેણે તેમને વંદન અને નમસ્કાર કર્યા, વંદના અને નમસ્કાર કરીને તે આ પ્રમાણે વિનંતી કરવા લાગી કે હે ભદન્ત ! આ સંસાર જરા (ઘડપણ) મરણ વગેરે દુઃખોથી સળગી રહ્યો છે. આ રીતે પોટ્ટિલા દેવાનંદાની જેમ સુવ્રતા આર્યાની પાસે દીક્ષિત થઈ ગઇ અને અનુક્રમે તેણે અગિયાર અંગોનું અધ્યયન પણ કરી લીધુ. તેણે ઘણાં વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનું પાલન કર્યું છેવટે પ્રીતિપૂર્વક એક માસની સંલેખના ધારણ કરીને અનશન વડે સાઠ ભક્તોનું છેદન કર્યું

मूलम्—तएणं से कणगरहे राया अन्नया कयाइं कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था। तएणं राईसर जाव णीहरणं करेंति, करित्ता, अन्नमन्नं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए! कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियंगित्था, अम्हेणं देवाणुप्पिया! रायाहीणा रायाहिट्ठिया रायाहीणकज्जा अयं च णं तेतली अमच्चे कणगरहस्स रन्नो सव्वट्ठाणेसु सव्वभूमियासु लद्धपच्चए दिन्नवियारे सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था, तं सेयं खलु अम्हं तेतलिपुत्तं अमच्चं कुमारं जाइत्तएत्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता, जेणेव तेतलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता, तेतलिपुत्तं अमच्चं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य जाव वियंगेइ। अम्हे य णं रायाहीणा जाव रायाहीणकज्जा, तुमं च णं देवाणुप्पिया! कणगरहस्स रण्णो सव्वट्ठाणेसु जाव रज्जधुराचिंतए, तं जइणं देवाणुप्पिया! अत्थि केइ कुमारे रायलक्खणसंपन्ने अभिसेयारिहे, तएणं तुमं अम्हं दलाहि। जाणं अम्हे महया२ रायाभिसेएणं अभिसिंचामो। तएणं तेतलिपुत्ते तेसिं ईसर० एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता, कणगज्झयं कुमारं ण्हायं जाव सस्सिरीयं करेइ, करित्ता तेसिं ईसर

दिया। छेद कर आलोचित प्रतिक्रान्त बनी हुई यह समाधि प्राप्त हो गई और काल अवसर काल कर अन्यतर देवलोकमें देवता की पर्याय से उत्पन्न हो गई॥ सू० ८॥

છેદન કરીને આલોચિત પ્રતિક્રાત બનેલી તે સમાધિ પ્રાપ્ત થઈ ગઈ અને કાળ અવસરે કાળ કરીને અન્યતર દેવલોકમાં દેવતાના પર્યાયથી જન્મ પામી. સૂ. '૮'

जाव उवणेइ, उवणित्ता, एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया! कणगरहस्स रण्णो पुत्ते पउमावईए अत्तए कणगज्झए नामं कुमारे अभिसेयारिहे रायलक्खणसंपन्ने मए कणगरहस्स रन्नो रहस्सियं संवड्ढिए, एयं णं तुब्भे महया२ रायाभिसेएणं अभिसिंचह। सव्वं च से उट्ठाणपरियावणियं परिकहेइ। तएणं ते ईसर० कणगज्झयं कुमारं महया२ रायाभिसेएणं अभिसिंचंति। तएणं से कणगज्झए कुमारे राया जाए, महया हिमवंत मलय० वण्णओ जाव रज्जं पसासेमाणे विहरइ। तएणं सा पउमावई देवी कणगज्झयं रायं सद्दावेइ, सद्दावित्ता, एवं वयासी—एस णं पुत्ता! तव रज्जे य जाव अंतेउरे य० तुमं च तेतलिपुत्तस्स अमच्चस्स पहावेण, तं तुमं णं तेयलिपुत्तं अमच्चं आढाहि परिजाणाहि सक्कारेहि सम्माणेहि इंतं अब्भुट्ठेहि, ठियं पज्जुवासाहि, वयंतं पडिसंसाहेहि, अद्धासणेणं उवणिमंतेहि भोगं च से अणुवड्ढेहि। तएणं से कणगज्झए राया पउमावईए देवीए तहत्ति पडिसुणेइ जाव भोगं च से अणुवड्ढेइ ॥सू० ९॥

टीका—'तएणं से' इत्यादि। ततः खलु स कनकरथो राजा अन्यदा कदाचित्। 'कालधम्मुणा संजुत्ते' कालधर्मेण संयुक्तः= मृतश्चाप्यभवत्। ततः

'तएणं से कणगरहे राया' इत्यादि।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से कणगरहे राया अन्नया कयाइं) वह कनकरथ राजा किसी एक दिन काल कवलित हो गया (तएणं

'तएणं से कणगरहे राया' इत्यादि

ટીકાર્થ–(तएणं) ત્યારપછી (से कणगरहे राया अन्नया कयाई) તે કનકરથ રાજા કોઈ દિવસે કાલકવલિત થઈ ગયો એટલે કે મૃત્યુ પામ્યો.

खलु 'राईसर० जाव '=राजेश्वर० यावत्=राजेश्वरतलवरमाडम्बिककौटुम्बिकादि-सार्थवाहप्रभृतयः तस्य 'णीहरणं' निर्हरणं=मृतककृत्यं कुर्वन्ति, कृत्वा अन्यो-ऽन्यमेवमवदन्—एवं खलु हे देवानुप्रियाः! कनकरथो राजा 'रज्जे य जाव पुत्ते' राज्ये च यावत् पुत्रान्=राज्यादिषु मूर्च्छित उत्पन्नान पुत्रान 'वियंगित्था' अव्यङ्गयत्=विकृताङ्गान् कृतवान मारितवानित्यर्थः। 'अम्हेणं' वयं खलु देवानु-प्रियाः! 'रायाहीणा' राजाधीनाः=राजवशवर्तिनः, 'रायाहिट्ठिया' राजाऽधि-ष्ठिता=राजाश्रिता इत्यर्थः, 'रायाहीणकज्जा' राजाधीनकार्याः, राज्ञामधीनं कार्यं

राईसर जाव णीहरणं करेंति, करित्ता अन्नमन्नं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए! कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियंगित्था) राजेश्वर, तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, सार्थवाह आदि व्यक्तियोंने मिल कर उसका दाह संस्कार किया। दाह संस्काररूप मृतक कृत्य करने के बाद फिर उन लोगों ने परस्पर में इस प्रकार का विचार किया। हे देवानु-प्रियो! देखो कनकरथ राजाने तो राज्य आदि में मूर्च्छित हो कर उत्पन्न हुए समस्त पुत्रों को विकृत अंग करके मार डाला है (अम्हे णं देवाणुप्पिया! राया हीणा रायाहिट्ठिया रायाहीणकज्जा अयं च णं तेत-लीअमच्चे कणगरहस्स रन्नो सव्वट्ठाणेसु—सव्वभूमियासु लद्धपच्चए, दिन्नवियारे—सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था) अब इस समय कोइ राजा है नहीं अतः हमलोगों का क्या होगा क्यों कि हम लोग तो हे देवा-नुप्रियों! राजा वशवर्ती है, राजा के आश्रित ही रहते आये हैं, हमारा

(तएणं राईसर जाव णीहरणं करेंति, करित्ता अन्नमन्नं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए! कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियंगित्था)

રાજેશ્વર, તલવર, માંડબિક કૌટુંબિક, સાર્થવાહ વગેરે લોકોએ મળીને તેનો અગ્નિ-સંસ્કાર કર્યો. અગ્નિ-સંસ્કાર આદિ મૃત્યુ વિધિ પતાવીને તે લોકોએ પરસ્પર મળીને આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો કે હે દેવાનુપ્રિયો! જુઓ, રાજા કનકરથે તો રાજ્ય વગેરેની બાબતમાં લોલુપ તેમજ મોહિત થઈને ઉત્પન્ન થયેલા પોતાના બધા પુત્રોના અંગો કાપીને મારી નાખ્યા છે.

(अम्हेणं देवाणुप्पिया! राया हीणा रायाहिट्ठिया रायाहीणकज्जा, अयं च णं तेतलीअमच्चे कणगरहस्स रन्नो सव्वट्ठाणेसु सव्वभूमियासु लद्धपच्चए, दिन्न-विचारे सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था)

હવે અત્યારે કોઇ રાજા છે જ નહિ તો અમારી શી દશા થશે? હે દેવાનુપ્રિયો! અમે તો રાજાના વશવર્તી છીએ, રાજાને અધીન રહેવામાં જ

येषां ते तथा, सर्वमस्माकं कृत्यं राजाधीनं वर्त्तते इति भावः। अयं च खलु तेतलिरमात्यः कनकरथस्य राज्ञः 'सव्वट्ठाणेसु' सर्वस्थानेषु=संधिविग्रहादिषु सर्वेषु कार्येषु, 'सव्वभूमियासु' सर्वभूमिकासु = स्वाम्यमात्यराष्ट्रदुर्गकोषबलसुहृत्पौरश्रेणिरूपाष्टविधासु 'लद्धपच्चए'=लब्धप्रत्ययः-लब्धः=प्राप्तः प्रत्ययो विश्वासो यस्य सः, सकलजनविश्वासपात्रमित्यर्थः, 'दिन्नवियारे' दत्तविचारः, दत्तः= राज्ञे वितीर्णः, विचार=शोभनो विचारो येन सः, लोकोपकारि विचारदायक इतिभावः, 'सव्वकज्जवड्ढावए' सर्वकार्यवर्द्धकः=राज्ये समस्तकार्यसम्पादकश्चापि 'होत्था' अस्ति। 'तं' तत्=तस्मात् कारणात् 'सेयं' श्रेयः=उचितं खलु अस्माकं तेतलिपुत्रममात्यं कुमारं 'जाइत्तए' याचितुम्, अयमभिप्रायः-यदयममात्यो राज्ञः सकलकार्यनिर्वाहकः, अतस्तत्समीपे गत्वा 'कोऽपि राजलक्षणसंपन्नः कुमारो राजपदे स्थापनीयः' इति वार्तालापमुपक्रम्य, समागते प्रसङ्गे, तत्पुत्रो राजपदे स्थापयितुं याचनीयः, 'त्तिकट्टु' इति कृत्वा=इति मनसि कृत्वा अन्योऽन्यस्य एतमर्थं 'पडिसुणंति' प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति, 'पडिसुणित्ता' प्रतिश्रुत्य, यत्रैव तेतलिपुत्रोऽमात्यस्तत्रैव उपागच्छन्ति, उपागत्य, एवमवदन्-एवं खलु

जितना भी कार्य होता है वह सब राजाधीन ही होता आया है। इस लिये तेतलिपुत्र जो अमात्य है चलो उनके पास चलें क्यों कि वे ही कनकरथ राजाके लिये संधिविग्रह आदि समस्त कार्यों में एवं स्वामी, अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग कोश, बल, सुहृत् और पौरश्रेणीरूप आठ भूमियों में विश्वसनीय थे। राजा के लिये ये ही लोकोपकारी कार्यों में सलाह दिया करते थे और ये ही राज्यमें समस्त कार्यों के संपादक हैं (तं सेयं खलु अम्हं तेतलिपुत्तं अमच्चं कुमारं जाइत्तए त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव तेतलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेतलिपुत्तं अमच्चं एवं वयासी-एवं खलु देवाणु-

---

टेवाई गयेला छीओ. अमारा बधा कामो राजाधीन ज होय छे ओथी चालो आपणे सौ मळीने अमात्य तेतलिपुत्रनी पासे जईओ, केमके तेओ ज राजा कनकरथना संधिविग्रह वगेरे बधा कामोमां अने स्वामी, अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग, कोशबळ, सुहृत अने पौर श्रेणिरूप आठ भूमिओमां ते विश्वसनीय छे. लोकोना हित माटे तेतलिपुत्र अमात्य ज सलाह आपता रहेता हता तेमज राज्यना बधा कामोने पार पाडनारा पण तेओ ज छे.

(तं सेयं खलु अम्हं तेतलिपुत्तं अमच्चं कुमारं जाइत्तए त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव तेतलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेतलिपुत्तं अमच्चं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! कणगरहे

हे देवानुप्रिय ! कनकरथो राजा राज्ये च राष्ट्रे च यावत् व्यङ्गयति, वयं च खलु हे देवानुप्रिय ! राजाधीना यावद् राजाधीनकार्याः, त्वं च खलु हे देवानुप्रिय !

प्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य जाव वियंगेइ, अम्हे य णं राया हीणा जाव रायहीणकज्जा, तुमं च णं देवाणुप्पिया ! कणगरहस्स रण्णो सव्वट्ठाणेसु जाव रज्जधुरा चिंतए—तं जइणं देवाणुप्पिया ! अत्थि केइ कुमारे रायलक्खणसंपन्ने अभिसेयारिहे, तएणं तुमं अम्हं दलाहि) इसलिये हमको उचित है कि हम तेतलिपुत्र अमात्य से कुमार की याचना करें। तात्पर्य इस का यह है कि ये तेतलिपुत्र अमात्य राजा के सकल कार्य निर्वाहक हैं-इसलिये उनके पास चलकर "कोई राज लक्षण संपन्न कुमार राजपद में स्थापनीय है" इस बात की हम चर्चा करें। इस चर्चा के प्रसंग में उनसे यह भी निवेदन करेंगे कि आप अपने पुत्र को ही राज पद में स्थापित कर दीजिये। इस प्रकार का विचार उन्होंने किया। जब विचार स्थिर होचुका-तब सबने इस बात को एक मत से स्वीकार कर लिया। स्वीकार कर के फिर वे सबके सब जहां अमात्य तेतलिपुत्र थे वहां गये। वहां जाकर उन्होंने ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! कनक रथ राजाने राज्य और राष्ट्र आदि में विशेष मूर्च्छित बनकर उत्पन्न हुए अपने समस्त पुत्रों को अंगभंग कर मारडाला

राया रज्जे य रट्ठे य जाव वियंगेइ, अम्हे य णं देवाणुप्पिया ! कणगरहस्स रण्णो सव्वट्ठाणेसु जाव रज्जधुराचिंतए-तं जइणं देवाणुप्पिया ! अत्थि केइ कुमारे रायलक्खणसंपन्ने अभिसेयारिहे, तएणं तुम अम्हं दलाहि)

એથી અમને એ ઉચિત લાગે છે. કે અમે તેતલિપુત્ર અમાત્યની પાસે જઈને રાજકુમારની યાચના કરીએ. કારણ કે તેતલિપુત્ર અમાત્ય રાજાના બધા કામોને સારી રીતે પાર પાડનારા છે, એટલા માટે તેમની પાસે જઈને રાજા થવા યોગ્ય રાજ-લક્ષણ યુક્ત કોઈ કુમાર મળી શકે તેમ છે કે કેમ ? તે વિશે ચર્ચા કરીએ. આ જાતની વિચારણાં કરતાં કરતાં અમે બધા તેમને એવી વિનંતી પણ કરીશું કે તમે પોતાના પુત્રને જ રાજગાદીએ બેસાડી દો. આમ તે લોકોએ મળીને વિચાર કર્યો. આમ વિચાર પાકો થઈ ગયો ત્યારે સૌએ એકમત થઈને તેને સ્વીકારી લીધો સ્વીકાર કરીને તેઓ બધા ત્યાંથી જ્યાં અમાત્ય તેતલિપુત્ર હતો ત્યાં ગયા, ત્યાં જઈને તેમણે તેતલિપુત્રને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! કનકરથ રાજાએ રાજ્ય અને રાષ્ટ્ર વગેરેમાં સવિશેષ મૂર્છિત એટલે કે મોહવશ થઈને જન્મ પામેલા પોતાના બધા જ પુત્રોના અંગો કાપીને તેઓને મારી

कनकरथस्य राज्ञः सर्वस्थानेषु यावत् 'रज्जधुराचिंतए' राज्यस्य धूः राज्यधुरा, तस्याश्चिन्तकः, राज्यभारनिर्वाहकश्चासि, तद् यदि खलु देवानुप्रिय! अस्ति कोऽपि कुमारो राजलक्षणसंपन्नः 'अभिसेयारिहे' अभिषेकार्हो राज्याभिषेकयोग्यः, 'तं णं' तं खलु त्वमस्मभ्यं 'दलाहि' देहि 'जो' यस्मात् 'णं' तं 'अम्हे' वयं महता २ 'रायाभिसेएण' राज्याभिषेकेण=राजयोग्येनाभिषेकेण अभिषिञ्चामः राज्ये स्थापयाम इत्यर्थः। ततः खलु तेतलिपुत्रः तेषाम् 'ईसर०=ईश्वर०=ईश्वरतलवरमाडम्बिकादि सार्थवहप्रभृतीनाम् एतमर्थं 'पडिसुणेइ' प्रतिशृणोति=स्वीकुरोति, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य, कनकध्वजं कुमारं 'ण्हायं सस्सिरीयं' स्नातं यावत् सश्रीकं, स्नातं=कृतस्नानम्, यावत् सश्रीकम्=सर्वालङ्कारविभूषितं शोभासमन्वितं च करोति, कृत्वा तेषाम् 'ईसर जाव' ईश्वर यावत्=ईश्वरादीनां सम्मुखे 'उवणेइ' उपनयति, उपनीय एवमवादीत्-एष खलु हे देवानुप्रियाः!

है। अब इस समय राज पद में कोई नहीं है। हमलोग तो हे देवानुप्रिय! राजाधीन यावत् राजाधीन कार्य वाले हैं। और देवानुप्रिय! कनक रथ राजा के लिये संधि विग्रह आदि समस्त स्थानों में एव स्वामी अमात्य आदि आठ भूमियों में विश्वसनीय रहें हैं। राजा के लिये लोकोपकारी कार्यों में आप सलाह देते रहे हैं। और आप ही राज्य भार के निर्वाहक है। इसलिये हमारी आपसे यह प्रार्थना है कि हे देवानुप्रिय! यदि राज्यलक्षण संपन्न कोई कुमार राज्य पद में अभिषेक करने के योग्य होवे तो उसे आप हमें देवें। (जो णं अम्हे महया२ रायाभिसेएणं अभिसिंचामो। तएणं तेतलिपुत्ते तेसिं ईसरएयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता कणगज्झयं कुमारं ण्हायं जाव सस्सिरीयं करेइ, करित्ता तेसिं ईसर जाव उवणेइ, उवणित्ता एवं वयासी) कि जिससे हम उसे

નાખ્યા છે. હવે અત્યારે રાજપદ માટે કોઈ રહ્યું નથી. હે દેવાનુપ્રિય! અમે લોકો તો રાજાધીન રહીને જ રહેતા આવ્યા છીએ અને હે દેવાનુપ્રિય! તમે રાજા કનકરથના સંધિવિગ્રહ વગેરે બધા કામોમાં એટલે કે સ્વામી અમાત્ય, વિગ્રહ વિગેરે તમામ કામોમાં હંમેશા વિશ્વાસપાત્ર રહ્યા છો, લોકહિતની બાબતમાં તમે રાજાને સલાહ આપતા રહ્યા છો, અને તમેજ રાજ્યના બધા કામોને પાર પાડતા આવ્યા છો. એથી અમે તમને એવી વિનંતિ કરીયે છીએ કે હે દેવાનુપ્રિય! રાજ-લક્ષણોવાળો અને અભિષિક્ત થઈને રાજગાદીએ બેસવા યોગ્ય કોઈ કુમાર હોય તો તેને તમે અમને સોંપો.
(जे णं अम्हे महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचामो। तएणं तेतलिपुत्ते तेसिं ईसर एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता कणगज्झयं कुमारं ण्हायं जाव सस्सिरीयं करेइ, करित्ता तेसिं ईसर जाव उवणेइ, उवणित्ता एवं वयासी)

कनकरथस्य राज्ञः पुत्रः पद्मावत्या देव्या आत्मजः कनकध्वजो नाम कुमारः अभिषेकार्हो राजलक्षणसम्पन्नो मया कनकरथस्य राज्ञो 'रहस्सियं' रहस्यिकं=प्रच्छन्नं यथा स्यात्तथा संवर्द्धितः, एतं खलु यूयं महता २ राजाभिषेकेण अभिषिञ्चत। पुनः सः सर्वं च 'से' तस्य 'उट्ठाणपरियावणियं' उत्थानपरियापनिकम्=

राज योग्य अभिषेक द्वारा अभिषिक्त कर राज्य में स्थापित करें। इस तरह के उन ईश्वर, तलवर, माडम्बिक आदि सार्थवाह वगैरह के इस कथन रूप अर्थ को उस तेतलिपुत्र अमात्य ने स्वीकार कर लिया और स्वीकार करके कनकध्वज कुमार को उसने नहा धुवाकर सर्वालंकारों से विभूषित किया। विभूषिक करके फिर वह उसे उन ईश्वर तलवर आदिकों के समक्ष ले आया। लाकर के उनसे उसने ऐसा कहा-(एस णं देवाणुप्पिया! कणगरहस्स रण्णो पुत्ते पउमावईए अत्तए कणगज्झए णामं कुमारे अभिसेयारिहे रायलक्खणसंपन्ने मए कणगरहस्स रण्णो रहस्सियं संवड्ढिए एयं णं तुब्भे महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचह) हे देवानुप्रियो! यह कनकरथ राजा का पुत्र है जो पद्मावती की कुक्षि से जन्मा है। इसका नाम कनकध्वज कुमार है। अभिषेक के योग्य है और राजलक्षण संपन्न है। मैंने इसको कनकरथ राजा से छिपा कर पालापोषा है और वृद्धिगत किया है। इसे आपलोग बडे भारी राजयोग्य अभिषेक के साथ राज्य में स्थापित कीजिये। (सव्वं च से

કે જેથી અમે તેનો રાજ્યાસને અભિષેક કરી શકીએ. આ રીતે અમાત્ય તેતલિપુત્રે તે ઈશ્વર, તલવર, માંડબિક, સાર્થવાહ વગેરેના કથનને સ્વીકાર્યું અને સ્વીકારીને તેણે કનકધ્વજ કુમારને સ્નાન કરાવ્યું અને ત્યારપછી બધા અલંકારોથી તેને શણગાર્યો. ત્યારબાદ અમાત્ય તેતલિપુત્રે સુસજ્જ થયેલા કુમારને ઈશ્વર, તલવર વગેરેની સામે લાવ્યો અને તેઓને કહ્યું કે—

(एसणं देवाणुप्पिया! कणगरहस्स रण्णो पुत्ते पउमावईए अत्तए कणगज्झए णामं कुमारे अभिसेयारिहे रायलक्खणसंपन्ने मए कणगरहस्स रण्णो रहस्सियं संवड्ढिए एयं णं तुब्भे महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचह)

હે દેવાનુપ્રિયો! આ કનકરથ રાજાનો પુત્ર છે અને પદ્માવતી દેવીના ગર્ભથી આનો જન્મ થયો છે. કનધ્વજ કુમાર આનું નામ છે. આ કુમારે રાજ્યાસને બેસાડવા યોગ્ય તેમજ રાજલક્ષણોથી યુક્ત છે. રાજા કનકરથને આ બાબતની જાણ નથી, મેં આનું પાલન તેમજ રક્ષણ છુપી રીતે કર્યું છે. તમે ભારે મહોત્સવની સાથે આ કુમારને રાજગાદીએ બેસાડો.

उत्थानं=जन्म, परियापनिका=जन्मानन्तरमद्यावधिका संवर्द्धनादिपरिस्थितिः, उत्थानं च परियापनिका च=उत्थानपरियापनिकम्=जीवनचरितं परिकथयति। ततः खलु 'ईसर०' ईसरतलवरमाडम्बिकादयः कनकध्वजं कुमारं महता२ राजाभिषेकेण अभिषिञ्चन्ति। ततः खलु स कनकध्वजः कुमारो राजा जातः, स च कनकध्वजो राजा 'महया हिमवंत०' महाहिमवद्०=महाहिमवन्महामलय मन्दरमहेन्द्रसारः'=महाहिमवन्महामलयमन्दरमहेन्द्राणां सार इव सारो यस्य सः,

---

उट्ठाणपरियावणियं परिकहेइ, तएणं ते ईसर० कणगज्झयं कुमारं महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचंति। तएणं से कणगज्झए कुमारे राया जाए, महया हिमवंत मलय० वण्णओ जाव रज्जं पसासेमाणे विहरइ, तएणं सा पउमावई देवी कणगज्झयं रायं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी) ऐसा कहकर फिर उन तेतलिपुत्र अमात्य ने उस कनकध्वज कुमार का उत्थान-जन्म और परियापनी का-जन्म से लेकर अभी तक की समस्त पालन पोषण संवर्द्धन आदि परिस्थिति रूप-जीवन चरित्र उन्हें कह सुनाया-इस के बाद उन ईश्वर, तलवर, माडंबिक एव कौटुम्बिक आदिकोंने कनकध्वज कुमार का बड़े जोर शोर के साथ राज्याभिषेक किया। राज्य में अभिषिक्त होने के बाद वे कनकध्वज कुमार अब राजा बन गये। इसका सार-बल लोकमर्यादा कारी होने के कारण महा हिमवत् जैसा, यश और कीर्ति के फैलाव के कारण महामलय

(सव्वं च से उट्ठाणपरियावणियं परिकहेइ, तएणं ते ईसर०कणगज्झयं कुमारं महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचंति। तएणं से कणगज्झए कुमारे राया जाए, महया हिमवंता मलय० वण्णओ जाव रज्जं पसासेमाणे विहरइ, तएणं सा पउमावई देवी कणगज्झयं रायं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी)

આ પ્રમાણે કહીને તેતલિપુત્ર અમાત્યે તે કનકધ્વજ કુમારનું ઉત્થાન-જન્મ અને પરિયાપનિકા એટલે કે જન્મથી માંડીને અત્યાર સુધીની પોષણ સંવર્દ્ધન વગેરેની જીવન ચરિત્ર સંબંધી બધી વિગત અથથી ઇતિ સુધી કહી સંભળાવી. ત્યારબાદ તે ઈશ્વર, તલવર, માંડબિક અને કૌટુંબિક વગેરે લોકોએ કનકધ્વજ કુમારનો બહુ જ મોટા પાયા ઉપર ઉત્સવ ઉજવીને રાજ્યાભિષેક કર્યો. અભિષિકત થવા બાદ કનકધ્વજ રાજા થઈ ગયા હતા. તેમનું બળ લોક મર્યાદાને રક્ષનાર હોવા બદલ મહાહિમવંત જેવું હતું. તેમના યશ અને કીર્તિ ચોમેર પ્રસરેલા હતા તેથી તે મહામલય જેવા હતા તેમજ તેઓ દૃઢ અતિ-

लोकमर्यादाकारित्वेन महाहिमवत्सदृशः, प्रसृतयशः कीर्तित्वेन महामलयतुल्यः, दृढप्रतिज्ञत्वेन कर्तव्यदिग्दर्शकत्वेन च मन्दरमहेन्द्रतुल्यः, 'वण्णओ' वर्णकः विशेषरूपेण अन्यतोऽवसेयः, 'जाव रज्जं पसासेमाणे' यावद्राज्यं प्रशासद् विहरति राज्यं कुर्वन्नास्ते। ततः खलु सा पद्मावतीदेवी कनकध्वजं राजानं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-एतत् खलु हे पुत्र! तव 'रज्जे य जाव अंतेउरे य०' राज्यं च यावदन्तः पुरं च एतत्सर्वं तेतलिपुत्रस्य प्रभावेन वर्तते 'तं' तत्=कारणात् त्वं खलु तेतलिपुत्रममात्यं 'आढाहि' आद्रियस्व=आदरं कुरुष्व 'परिजाणाहि' परिजानाहि=अवेक्षस्व तदनुमत्या सर्वं कार्यं सम्पादयेत्यर्थः सत्कारय वस्त्रादिना, सम्मानय माल्यादिना, 'इंतं' यन्तम्=आगच्छन्तमेतं तेतलिपुत्रम् 'अब्भुट्ठेहि' अभ्युत्तिष्ठ=अभ्युत्थानादिना विनयं प्रदर्शयेत्यर्थः 'ठियं पज्जुवासाहि' स्थितं पर्युपास्व=सेवस्व, 'वयंतं' व्रजन्तं=गच्छन्तम् 'पडिसंसाहेहि' प्रतिसंसाधय=अनुगमनादिना प्रसादय, तथा 'अद्धासणेणं उवणिमंतेहि' अर्धासनेन उपनिमन्त्रय=स्वस्यासने तमुपवेशय, भोगं=सुखसामग्रीरूपं च 'से' तस्य अनुवर्द्धय। ततः स कनकध्वजः 'पउमावईए देवीए' पद्मावत्या देव्याः वचनं 'तहत्ति'

के जैसा, दृढप्रतिज्ञा वाले एवं कर्तव्य का दिग्दर्शन कराने वाले होने के कारण मन्दर महेन्द्र-मेरु के जैसा था। और भी इन राजा के विषय का विशेष वर्णन दूसरों शास्त्रों से जान लेना चाहिये। यावत् इस तरह ये कनकध्वज कुमार अपने राज्य के शासन करने में तत्पर बन गये। इसके बाद उस राजमाता पद्मावतीदेवी ने उन कनकध्वज राजाको अपने पास बुलाया-और बुलाकर फिर उनसे उसने इस प्रकार कहा-(तएणं पुत्ता! तव रज्जे य जाव अंतेउरेय० तुमंच तेतलिपुत्तस्स अमच्चस्स पहावेणं, तं तुमं णं तेतलिपुत्तं अमच्चं आढाहि, परिजाणाहि, सक्कारेहि, सम्माणेहि, इंतं अब्भुट्ठेहि ठियं पज्जुवासाहि, वयंतं पडिसंसाहेहि, अद्धासणेणं

જ્ઞાવાળા અને કર્તવ્યને બતાવનાર હોવા બદલ મન્દર મહેન્દ્ર-મેરુ જેવા હતા. રાજા કનકધ્વજ વિશે સવિશેષ વર્ણન બીજા શાસ્ત્રોમાં વર્ણવ્યું છે, જીજ્ઞાસુઓએ ત્યાંથી જાણી લેવું જોઈએ આ પ્રમાણે તે કનકધ્વજ કુમાર પોતાના રાજ્યના વહીવટને સંભાળવા માટે સાવધ થઈ ગયા. ત્યારપછી રાજમાતા પદ્માવતીદેવીએ કનકધ્વજ રાજાને પોતાની પાસે બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે

(तएणं पुत्ता! तव रज्जे य जाव अंतेउरेय० तुमं च तेतलिपुत्तस्स अमच्चस्स पहावेणं, तं तुमं णं तेतलिपुत्तं अमच्चं आढाहि, परिजाणाहि, सक्कारेहि, सम्मा-

तथेति='तथास्तु' इतिकृत्वा प्रतिशृणोति=स्वीकरोति प्रतिश्रुत्य तथैव कुर्वाण यावद् भोगं च तस्य अनुवर्द्धयति ॥ ९ ॥

उवणिमंतेहि, भोगंच से अणुवड्ढेहि। तएणं से कणगज्झए राया पउमावईए देवीए तहत्ति पडिसुणेइ,जाव भोगंचसे अणुवड्ढेइ) हे पुत्र! यह तुम्हारा राज्य और अंतः पुर तथा तुम स्वयं यह जो कुछ है वह सब तेतलिपुत्र अमात्य के प्रभाव से ही है इसलिये तुम तेतलिपुत्र अमात्य का आदर करते रहो, उनकी अनुमति से काम किया करो उनका वस्त्रादि द्वारा समय २ पर सत्कार करते रहो, अभ्युत्थानादि सन्मान करते रहो और जब तेतलिपुत्र तुम्हें आते हुए दिखलाई दे तो तुम उठकर इनके प्रति अपना विनय प्रदर्शित किया करो। जब ये जावे-तब तुम बैठ कर इनकी सेवावृत्ति किया करो, जब ये चलने लगे तो तुम इनके पीछे २ थोड़ी दूर तक अपने महलों में पहुँचाने जाया करो, अपने बैठने के आसन पर इन्हें अर्धभाग में बैठाया करो और जो भी सुख साधनकी सामग्री है वह इनकी बढ़ा दो। इस प्रकार राजमाता पद्मावती देवी के वचनों को "तथास्तु" कहकर कनकध्वज राजाने स्वीकार कर लिया।

णेहि इंत अब्भुट्टेहि ठियं पज्जुवासाहि वयं तं पडिसंसाहेहि, अद्धासणेणं उवणिमंतेहि, भोगं च से अणुवड्ढेहि। तएणं से कणगज्झए राया पउमावईए देवीए तहत्ति पडिसुणेइ, जाव भोगं च से अणुवड्ढेइ)

હે પુત્ર! આ તમારૂં રાજ્ય રણવાસ તેમજ તમે પોતે આ બધું જે કંઇ છે, તે સર્વે તેતલિપુત્ર અમાત્યના પ્રભાવથી જ છે. એથી તમે તેતલિપુત્ર અમાત્યનો સદા આદર કરતા રહો, દરેક કામ તેમની આજ્ઞાથી કરતા રહો, વસ્ત્રો વગેરે આપીને યથા સમય તેમનો સત્કાર કરતા રહો, તેમનું સન્માન કરતા રહો અને અમાત્ય તેતલિપુત્ર તમને આવતા દેખાય ત્યારે તમે ઉભાથઈને તેમના પ્રતિ વિનય યુક્ત થઇને વ્યવહાર કરો. જ્યારે તેઓ જવા તૈયાર થાય ત્યારે તમે બેસીને તેમની સેવા કરતા રહો. અને જ્યારે તેઓ ચાલવા માંડે ત્યારે તમે તેમની પાછળ પાછળ થોડે દૂર સુધી પોતાના મહેલ માંજ વિદાય આપવા માટે તેમનું અનુસરણ કરેતાં જાઓ તમે તેમને પોતાના આસનના અર્ધાભાગ ઉપર બેસાડો અને તેમની બધી સુખસગવડની સામગ્રી માં વધારો કરી આપો. આ રીતે રાજમાતા પદ્માવતી દેવીની આજ્ઞાને કનક ધ્વજ રાજાએ 'તથાસ્તુ' કહીને સ્વીકારી લીધી, સ્વીકાર્યા પછી તેઆએ તે

मूलम्-तएणं से पोट्टिले देवे तेतलिपुत्तं अभिक्खणं२ केवलिपन्नत्ते धम्मे संबोहेइ, नो चेव णं से तेतलिपुत्ते संबुज्झइ। तएणं तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए५ एवं खलु कणगज्झए राया तेतलिपुत्तं अढाइ जाव भोगं च से वड्ढेइ तएणं से तेतलीपुत्ते अभिक्खणं२ संबोहिज्जमाणे वि धम्मे नो संबुज्झइ, तं सेयं खलु मम कणगज्झयं रायं तेतलिपुत्ताओ विप्परिणामेत्तए तिकट्टु एवं संपेहेइ, संपेहिता, कणगज्झयं तेतलिपुत्ताओ विप्परिणामेइ। तएणं तेतलिपुत्ते कल्लं पहाए जाव पायच्छित्ते आसखंधवरगए बहूहिं पुरिसेहिं संपरिवुडे साओ गिहाओ णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव कणगज्झए राया तेणेव पहारेत्थए गमणाए। तएणं० तेतलिपुत्तं अमच्चं जे जहा बहवे राईसरतलवर जाव पभियाओ पासंति, ते तहेव आढायंति, परिजाणंति, अब्भुट्ठेंति, आढाइत्ता, परिजाणित्ता, अब्भुट्ठित्ता, अंजलिपरिग्गहं करेंति, इट्ठाहिं कंताहिं जाव वग्गूहिं आलवेमाणा य संलवेमाणा य पिट्ठओ य पासओ य मग्गओ य समणुगच्छंति तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव कणगज्झए राया तेणेव उवागच्छइ। तएणं से कणगज्झए राया तेतलिपुत्तं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता, नो अढाइ, नो परियाणाइ, नो

स्वीकार करके फिर उन्होंने वैसा ही सब कुछ करते हुए तेतलिपुत्र अमात्य की यावत् सुख साधन सामग्री बढा दी ॥ सू० ९॥

પ્રમાણેજ બધું કરતાં તેતલિપુત્ર અમાત્યની સુખસગવડ વગેરેની સામગ્રીમાં વધારો કરી આપ્યો ॥ સૂ૦ ૯ ॥

अब्भुट्ठेइ, अणाढायमाणे, अपरियाणमाणे, अणब्भुट्ठायमाणे, परम्मुहे संचिट्ठइ । तएणं तेतलिपुत्ते कणगज्झयस्स अंजलिं करेइ । तएणं से कणगज्झए राया अणाढायमाणे तुसिणीए परम्मुहे संचिट्ठइ । तएणं तेतलिपुत्ते कणगज्झयं विप्परिणयं जाणित्ता भीए जाव संजायभए एवं वयासी—रुट्ठेणं मम कणगज्झए राया हीणे णं ममं कणगज्झए राया, अवज्झाए णं ममं कणगज्झए, राया तं ण नज्जइ णं ममं केणइ कुमारेण मारेहिइ त्ति कट्टु भीए तत्थे५ जाव सणियं२ पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता, तमेव आसखंधं दुरूहेइ, दुरूहित्ता, तेतलिपुरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे, तेणेव पहारेत्थ गमणाए । तएणं तेतलिपुत्तं जे जहा ईसर जाव पासंति, ते तहा नो आढायंति नो परियाणंति नो अब्भुट्ठेति नो अंजलिपरिग्गहं करेंति, इट्ठाहिं जाव णो संलवंति नो पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य मग्गओ य समणुगच्छंति । तएणं तेतलिपुत्ते जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ । उवागच्छित्ता जाविय से तत्थ बाहिरिया परिसा भवइ, तं जहा—दासेइ वा पेसेइ वा भाइल्लएइ वा साविय णं नो आढाइ नो परियाणाइ नो अब्भुट्ठेइ, जाविय से अब्भिंतरिया परिसा भवइ, तं जहा – पियाइ वा मायाइ वा जाव सुण्हाइ वा साविय णं नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो अब्भुट्ठेइ । तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव वासघरे जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, सयणिज्जंसि णिसी-

यइ, णिसीइत्ता, एवं वयासी–एवं खलु अहं सयाओ गिहाओ णिग्गच्छामि, तं चेव जाव अब्भिंतरिया, पुरिसा नो आढाइ नो परिजाणाइ, नो अब्भुट्ठेइ, तं सेयं खलु मम अप्पाणं जीवीयाओ ववरोवित्तएत्तिकट्टु, एवं संपेहेइ, संपेहित्ता तालउडं विसं आसगंसि पक्खिवइ, से य विसे णो संकमइ। तएणं तेतलिपुत्ते नीलुप्पल जाव असिं खंधंसि ओहरइ, तत्थ वि य से धारा ओपल्ला। तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासगं गीवाए बंधइ, बंधित्ता अप्पाणं मुयइ, तत्थ वि य से रज्जू छिन्ना। तएणं से तेतलिपुत्ते महइ महालयं सिलं गीवाए बंधइ, बंधित्ता अत्थाहमतारमपोरिसियंसि उदगंसि अप्पाणं मुयइ, तत्थ वि से थाहे जाए। तएणं से तेतलिपुत्ते सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकायं पक्खिवइ, पक्खिवित्ता मुयइ, तत्थ वि से अगणिकाए विज्झाए। तएणं से तेतलीपुत्ते एवं वयासी–सद्धेयं खलु भो समणा वयंति, सद्धेयं खलु भो माहणा वयंति, सद्धेयं खलु भो समणामाहणा वयंति, अहं एगो असद्धेयं वयामि, एवं खलु अहं सहपुत्तेहिं अपुत्ते को मेयं सद्दहिस्सेइ? सहमित्तेहिं अमित्ते, को मेयं सद्दहिस्सइ, एवं अत्थेणं दारेणं दासेहिं परिजणेणं एवं खलु तेतलिपुत्तेणं अमच्चे कणगज्झएणं रन्ना अवज्झाएणं समाणेणं तेतलिपुत्तेणं तालपुडगे विसे आसगंसि पक्खित्ते, से वि य णो कमइ को मेयं सद्दहिस्सइ? तेतलिपुत्तेणं नीलुप्पल जाव खंधंसि, ओहइ-

रिए, तत्थ वि से धारा ओपल्ला को मेयं सद्दहिस्सइ। तेतलि-पुत्तेणं पासगं गीवाए बंधेत्ता जाव रज्जू छिन्ना को मेयं सद्दहिस्सइ? तेतलिपुत्तेणं महइमहालयं जाव बंधित्ता अत्थाहे जाव उदगंसि, अप्पामुक्के, तत्थ वि य णं थाहे जाए को मेयं सद्दहिस्सइ? तेतलिपुत्तेणं, सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकायं पक्खिवित्ता अप्पामुक्को तत्थ वि से अगणिकाए विज्झाए, को मेयं सद्दहिस्सइ? ओहयमणसंकप्पे जाव झियाइ ॥ सू० १० ॥

टीका—'तएणं से पोट्टिले' इत्यादि। ततः खलु स पोट्टिलोदेवस्तेतलिपुत्रम् 'अभिक्खणं २' अभीक्ष्णम् २=पुनः पुनः केवलिप्रज्ञप्ते धर्मे संबोधयति। परन्तु नो चैव खलु स तेतलिपुत्रः 'संबुज्झइ'-सम्बुध्यते=प्रतिबोधं प्राप्नोति। ततः खलु तस्य पोट्टिलदेवस्य 'इमेयारूवे' अयमेतद्रूपः=पुरउच्यमानः 'अज्झत्थिए' ५=आध्यात्मिकः चिन्तितः प्रार्थितः मनोगतः संकल्पः समुदपद्यत। संकल्पप्रकारमाह-'एवं खलु' इत्यादि। एवं खलु कनकध्वजो राजा तेतलिपुत्रं आद्रियते यावत् भोगं च संवर्द्धयति, ततः खलु स तेतलिपुत्रोऽभीक्ष्णं २ मया

'तएणं से पोट्टिले' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से पोट्टिले देवे) वह पोट्टिलाका जीव देव (तेतलिपुत्तं अभिक्खणं २ केवलिपन्नत्ते धम्मे संबोहेइ, नो चेव णं से तेतलिपुत्ते संबुज्झइ) तेतलिपुत्र अमात्यको बार बार केवलिप्रज्ञप्त धर्ममें प्रतिबोधित करने लगा परन्तु तेतलिपुत्र प्रतिबोध को प्राप्त नहीं हुआ। (तएणं तस्स पट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५-एवं खलु कणगज्झए राया तेतलिपुत्तं अढाइ, जाव भोगं च संवड्ढेइ, तएणं से तेतलिपुत्ते अ-

---

तएणं से पोट्टिले इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) त्यार पछी (से पोट्टिले देवे) ते पोट्टिलानो जीव देव (तेतलिपुत्तं अभिक्खणं २ केवलिपन्नत्ते धम्मे संबोहेइ नो चेव णं से तेतलिपुत्ते संबुज्झइ)

तेतलिपुत्र अमात्यने वारंवार केवलि प्रज्ञप्तधर्ममां प्रतिबोधित करवा लाग्यो पण तेतलिपुत्रने प्रतिबोध प्राप्त थयो नहि.

(तएणं तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५-एवं खलु कणगज्झए राया तेतलिपुत्तं आढाइ, जाव भोगं च संवड्ढेइ, तएणं से तेतलिपुत्ते अभिक्खणं

'संबोहिज्जमाणेवि' संबोध्यमानोऽपि धर्मे नो संबुध्यते=प्रतिबोधं न प्राप्नोति। 'तं तत्=तस्मात् कारणात् श्रेयः खलु मम कनकध्वजं राजानं तेतलिपुत्राद् विपरिणमयितुम्=तेतलिपुत्रविषये कनकध्वजस्य मानसिको भावो यथा विपरिणतो भवेत्तथा कर्तुमुचितम्, इतिकृत्वा=इति मनसि विचार्य एवं संप्रेक्षते=विचारयति सम्प्रेक्ष्य कनकध्वज तेतलिपुत्राद् विपरिणमयति=विपरीतं करोति। ततः खलु तेतलिपुत्रः 'कल्लं' कल्ये द्वितीयस्मिन् दिने प्रातः 'ण्हाए जाव पायच्छित्ते' स्नातो यावत् प्रायश्चित्तः=स्नातः=कृतस्नानः यावत् पदेन कृतबलिकर्मा=काकादि निमित्तं कृतान्नभागःकृतकौतुकमांगल्यप्रायश्चित्तः=कृतानि कौतुकानि दुःस्वप्नादि-दोषनिवारणार्थं मषीपुण्ड्रादीनि-माङ्गल्यादीनि = मङ्गलकारकाणि दूर्वाक्षतादीनि =प्रायश्चित्तवदवश्यं कर्तव्यानि येन सः, 'आसक्खंधवरगए' अश्वस्कन्ध-वरगतः=अश्वारूढः बहुभिः पुरुषैः संपरिवृतः स्वस्माद् गृहाद् निर्गच्छति, निर्गत्य

भिक्खणं २ संबोहिज्जमाणे वि धम्मे नो संबुज्झइ, तं सेयं खलु मम कणगज्झयं रायं तेतलिपुत्ताओ विप्परिणमेत्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ)
तब उस पोट्टिल देवको ऐसा आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ-कनकध्वज राजा तेतलिपुत्र अमात्यका आदर करते हैं यावत् वे उनके सुख साधनकी सामग्री बढा दिया है-इसलिये मेरे द्वारा बार बार प्रतिबोधित करने पर भी वे धर्म में प्रतिबुद्ध नहीं बन रहे हैं-प्रतिबोध को प्राप्त नहीं हो रहे हैं। इसलिये मुझे अब ऐसा करना चाहिये कि जिससे तेतलिपुत्र के विषय में कनकध्वज राजा का मानसिक विचार बदल जावे। इस प्रकार का विचार उस देवके मनमें जगा। (संपेहित्ता कणगज्झयं तेतलिपुत्ताओ विप्परिणामेइ, तएणं तेतलिपुत्ते कल्लं ण्हाए

२ संबोहिज्जमाणे वि धम्मे नो संबुज्झइ, तं सेयं खलु मम कणगज्झयं रायं तेतलिपुत्ताओ विप्परिणामेत्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ)

ત્યારે તે દેવરૂપ પોટ્ટિલાના જીવ દેવને એવો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સંકલ્પ ઉદ્ભવ્યો કે રાજા કનકધ્વજ અમાત્ય તેતલિપુત્રનો આદર કરે છે યાવત્ તેઓએ તેમની બધી જાતની સુખસગવડની સામગ્રીમાં વધારો પણ કરી આપ્યો છે, એથી મારાવડે વારંવાર પ્રતિબોધિત કરવા છતાંએ તેઓ ધર્મમાં પ્રતિબુદ્ધ થઈ જતા નથી એટલે કે તેમને વારવાર પ્રેરણા આપવા છતાં પ્રતિબોધ થયો નથી. એટલા માટે હું હવે એ પ્રમાણે કંઈક કરું કે જેથી રાજા કનકધ્વજના માનસિક વિચારો અમાત્ય તેતલિપુત્રને માટે પ્રતિકૂળ થઈ જાય તે દેવે મનમાં આ જાતનો વિચાર કર્યો.

(संपेहित्ता कणगज्झयं तेतलिपुत्ताओ विप्परिणामेइ तएणं तेतलिपुत्ते कल्ले ण्हाए जाव पायच्छित्ते आसखंधवरगए, बहूहिं पुरिसेहिं संपरिवुडे, साओ गिहाओ,

यत्रैव कनकध्वजो राजा तत्रैव 'पहारेत्थ गमणाए' प्राधारयद् गमनाय-प्रस्थितवान्। ततः खलु तेतलिपुत्रममात्यं 'जेजहा' ये यथा=येन प्रकारेण बहवो 'राईसरतलवरजावपभियओ' राजेश्वरतलवर यावत्प्रभृतयः, राजेश्वरतलवरादयः पश्यन्ति, ते तथैव तममात्यमाद्रियन्ते नमस्कारादिना परिजानन्ति=शुभागमनमित्यनुमोदयन्ति, अभ्युत्तिष्ठन्ति=अभ्युत्थानं कुर्वन्ति, आदृत्य परिज्ञाय, अभ्युत्थाय अञ्जलिपरिग्रहं कुर्वन्ति, तथा इष्टाभिः कान्ताभिः यावत्-मियाभिर्मनोज्ञाभिर्मनोऽमाभिः'

जाव पायच्छित्ते आसखधवरगए, बहूहिं पुरिसेहिं स परिवुडे, साओ गिहाओ, णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव कणगज्झए राया तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएणं० तेतलिपुत्तं अमच्चं जे जहा बहवे राईसरतलवर जाव पभियाओ पासंति ते तहेव आढायंति परियाणंति, अब्भुट्ठेंति) इस विचार के आते ही उस देवने कनकध्वज राजा को तेतलिपुत्र अमात्य के प्रति विपरीत परिणमादिया। जब द्वितीय दिन प्रातः काल स्नान कर बलिकर्म, कर-काकादि निमित्त अन्न का विभाग कर, कौतुक, मंगल, प्रायश्चित्त कर-दुःस्वप्न आदि दोषों को निवारण करने के लिये मषी पुण्ड्रादि और मंगल कारक दूर्वाक्षतादि तथा प्रायश्चित्तकी तरह आवश्यक कृत्य समाप्त कर-वह तेतलिपुत्र अमात्य घोडे पर बैठ कर जब अनेक पुरुषों के साथ साथ अपने घर से निकला तब निकल कर वह उस ओर गया जहां कनकध्वज राजा थे। तेतलिपुत्र अमात्य को ज्यों ही राजेश्वर आदि कों ने आता हुआ देखा तो उन्होंने पहिले की तरह ही उसका आदर किया, उसके आगमन की सराहना की

णिगच्छिइ णिग्गच्छित्ता जेणेव कणगज्झए राया तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएणं० तेतलिपुत्तं अमच्चं जे जहा बहवे राईसर तलवर जाव पभियाओ पासंति ते तहेव आढायंति पमियाणंति, अब्भुट्ठेंति)

આ જાતનો વિચાર ઉત્પન્ન થતાંજ તે દેવે અમાત્ય તેતલિપુત્ર ને માટે રાજા કનકધ્વજને પ્રતિકૂળ બનાવીદીધો બીજા દિવસે સવાર થતાં સ્નાન, બલિકર્મ, (કાગડા વગેરે પક્ષીઓ માટે અન્નભાગ અર્પણ) કૌતુક, મંગળ, પ્રાયશ્ચિત્ત-એટલે કે દુઃસ્વપ્ન વગેરેના દોષોના ઉપશમન માટે મષી પુણ્ડ્ર વગેરે તેમજ મંગળ કારક દુર્વા અક્ષત (ચોખા) વગેરેથી પ્રાયશ્ચિત્ત ની આવશ્યક વિધિઓ પતાવીને ઘણા પુરુષોથી વીંટળાઇને અમાત્ય તેતલિપુત્ર ઘોડા ઉપર સવાર થઇને જ્યાં કનકધ્વજ રાજા હતા ત્યાં ગયો. અમાત્ય તેતલિપુત્રને આવતાં જોતાની સાથે જ રાજેશ્વર વગેરે લોકોએ પહેલાંની જેમ જ તેમને આદર કર્યો, તેમના આગમનની સરાહના કરી અને બધાએ ઉભાથઇને તેમનેવધાવી લીધા

वाग्भिः आलपन्तः संलपन्तश्च=आलापं=संभाषणं, संलापं=परस्परसंभाषणं कुर्वन्तश्च पुरतः=अग्रे च पृष्ठतः=पश्चाद्भागतश्च, पार्श्वतः=पार्श्वभागतश्च, मार्गतः=यस्मान्मार्गात् तेतलिपुत्रो निर्गच्छति, तन्मार्गतश्च 'समणुगच्छंति' समनुगच्छन्ति। ततः खलु स तेतलिपुत्रो यत्रैव कनकध्वजस्त त्र उपागच्छति। ततः खलु स कनकध्वजो राजा तेतलिपुत्रमेजमानं पश्यति, दृष्ट्वा नो आद्रियते, नो परिजानाति, नो अभ्युत्तिष्ठति। अनन्तरं 'आणाढायमाणे' अनाद्रियमाणः=तस्मादरं-

---

सबने उठकर उसे लिया-(आढाइत्ता, परिजाणित्ता अब्भुट्ठित्ता अंजलि परिग्गहं करेंति, इट्ठाहिं कंताहिं जाव वग्गूहिं आलवेमाणा य संलवेमाणा य पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य मग्गओ य समणुगच्छंति तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव कणगज्झए राया तेणेव उवागच्छइ, तएणं से कणगज्झए राया तेतलिपुत्तं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो आढाइ नो परियाणाइ, नो अब्भुट्ठेइ, अणाढायमाणे अपरियाणमाणे अणब्भुट्ठायमाणे परम्मुहे संचिट्ठइ) आदर देकर शुभागमन की अनुमोदनाकर तथा उठकर उन सबने फिर दोनों हाथो की अंजलि जोडकर उसे नमस्कार किया। बाद में इष्ट, कांत यावत् प्रिय-मनोज्ञ-मनोम वाणियों से आलाप-संभाषण, संलाप परस्पर संभाषण-करते हुए वे सब आगे, पीछे आजू बाजू होकर जिस मार्ग से वह आरहा था उसी मार्ग से उसके साथ साथ चले आये। चलते २ तेतलिपुत्र अमात्य जहां कनकध्वज राजा बैठे थे वहां आया। कनकध्वज राजा ने उन्हें आता हुआ देखा-तौभी पहिले की तरह देखकर न

(अढाइत्ता, परिजाणित्ता अब्भुट्ठित्ता अंजलि परिग्गहं करेंति इट्ठाहिं, कंताहिं जाव वग्गूहिं आलवेमाणा य संलवेमाणा य पुरओ य, पिट्ठओ य, पासओ य, मग्गओ य, समणुगच्छंति तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव कणगज्झए राया तेणेव उवागच्छइ, तएण से कणगज्झए राया तेतलिपुत्तं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो अब्भुट्ठेइ, अणाढयमाणे अपरियाणमाणे अणब्भुट्ठायमाणे परम्मुहे संचिट्ठइ)

તેમને આદર આપીને, શુભાગમનને અનુમોદિત કરીને તેઓ બધા ઉભા થયા અને ત્યાર પછી બને હાથેની અંજળિ બનાવીને તેમને નમસ્કાર કર્યા ત્યાર બાદ ઇષ્ટ, કાંત, યાવત્ પ્રિય, મનોજ્ઞ અને મનોમ વાતોથી આલાપ-સંભાષણ, સંલાપ-પરસ્પર સંભાષણ કરતાં તેઓ સર્વે આગળ, પાછળ અને તેમની બંને બાજુએ થઈને જે માર્ગથી તેઓ આવતા હતા તે માર્ગથી જ તેની સાથે સાથે ચાલવા લાગ્યા તેતલિપુત્ર અમાત્ય ચાલતાં ચાલતાં જ્યા રાજા કનકધ્વજ બેઠા હતા ત્યા આવ્યા પણ કનકધ્વજ રાજાએ તો તેમને જોયા છતા પણ તેમને

माब्रुवन् ' अपरिजाणमाणे ' अपरिजानन् , तदागमनमननुमोदयन् अनभ्युत्तिष्ठन्= अभ्युत्थानाद्यकुर्वन् ' परम्मुहे ' पराङ्मुखः=विमुख सन् संतिष्ठते । ततः खलु तेतलिपुत्रः कनकध्वजस्य राज्ञः संमुखे अञ्जलिं करोति । ' तएणं ' ततः खलु= तेतलिपुत्रेण अञ्जलिकरणानन्तरमपि स कनकध्वजो राजा अनाद्रियमाणः, अपरिजानन् , अनभ्युत्तिष्ठन् तूष्णीकः पराङ्मुखः संतिष्ठते । ततः खलु तेतलिपुत्रः कनकध्वजं विपरिणतं=विपरीतं ज्ञात्वा ' भीए जाव संजायभए ' भीतो यावत् संजातभयः, एवमवदत्=मनस्यकथयत्-रुष्टः खलु मम=मम विषये कनध्वजो राजा,

उसका कोई आदर किया-न उसके आनेकी कोई सराहना की और न उठकर उसे लिया ही। इस तरह अनादर अननुमोदन एवं अनभ्युत्थान करते हुए वे राजा प्रत्युत उस ओरसे अपना मुँह फेर कर बैठ गये। (तएणं तेतलिपुत्ते कणगज्झयस्स अंजलिं करेइ) तेतलिपुत्र ने आते ही राजा कनकध्वज को नमस्कार किया-(तएणं से कणगज्झए राया अणाढायमाणे तुसिणीए परम्मुहे संचिट्ठइ) तो भी उन कनकध्वज राजा ने उस अंजलि करने का भी कोई आदर नहीं किया केवल चुप चाप ही विमुख बना हुआ बैठा रहा-(तएणं तेतलिपुत्ते कणगज्झयं विप्परिणयं जाणित्ता भीए संजायभए एवं वयासी) तब तेतलिपुत्र ने कनकध्वज राजा को विपरीत जानकर भीत (भय पाया हुआ) यावत् संजात भय होकर मनमें ऐसा विचार किया-(रुट्ठे णं ममं कणगज्झए राया) कनकध्वज राजा मेरे ऊपर रुष्ट हो गये हैं। (हीणे णं ममं कण-

આદર ન કર્યો, તેમના આવવાની સરાહના ન કરી અને ઉભા થઈને તેમને સત્કાર્યા પણ નહિ આ રીતે અનાદર, અનનુમોદન અનભ્યુત્થાન કરતા તે રાજા તેમના તરફ થી મોં ફેરવીને બેસી ગયા. (तएणं तेतलिपुत्ते कणगज्झयस्स अंजलिं करेइ) તેતલિપુત્રે આવતાંની સાથે જ રાજા કનકધ્વજને નમસ્કાર કર્યા.

(तएणं से कणगज्झए राया अणाढायमाणे तुसिणीए परम्मुहे संचिट्ठइ) છતાંએ રાજા કનકધ્વજે તેમના નમસ્કારનો પણ ઉચિત સત્કાર કર્યો નહિ ફક્ત તેઓ ચુપચાપ મોં ફેરવીને બેસી જ રહ્યા.

(तएणं तेतलिपुत्ते कणगज्झयं विप्परिणयं जाणित्ता भीए जाव संजायभए एवं वयासी)

ત્યારે તેતલિપુત્ર અમાત્યે રાજા કનકધ્વજને પ્રતિકૂળથઈ ગયેલા (નારાજ થયેલા) જાણીને ભયભીત યાવત્ સંજાતભય વાળા થતાં મનમાં વિચાર કર્યો કે (रुट्ठेण ममं कणगज्झए राया) કનકધ્વજ રાજા મારા ઉપર નારાજ

'हीणे णं' हीनः खलु=प्रीतिहीनः खलु ममोपरि कनकध्वजो राजा 'अवज्झाए' अपध्यात=दुर्भावग्रस्तो जातः खलु मम विषये कनकध्वजो राजा 'तं' तत्= तस्मात् 'न नज्जइ' न ज्ञायते खलु एष मां केन कीदृशेन कुमारेण=कुत्सितेन मारेण 'मारेहिइ' मारयिष्यति 'त्तिकट्टु' इति कृत्वा=इति विचिन्त्य भीतस्त्रस्तः यावत्-त्रसितः, उद्विग्नः, सञ्जातभयः सन् 'सणियं२' शनैः२ 'पच्चोसक्केइ' प्रत्यवष्वष्कते =प्रत्यवसर्पति=पश्चाद्गच्छति प्रत्यवष्वष्क्य, तमेव 'आसखंधं'=अश्वस्कन्धं दूरोहति, दूरुह्य 'तेतलिपुरं' अत्र षष्ठ्यर्थे द्वितीया, तेतलिपुरस्येत्यर्थः, मध्यमध्येन यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैव प्राधारयद् गमनाय। ततः खलु तं तेतलिपुत्रं 'जेजहा'

गज्झए राया) कनकध्वज राजा मेरे ऊपर प्रीति से रहित हो गये हैं। (अवज्झाए णं ममं कणगज्झए राया) कनकध्वज राजा मेरे विषय में सद्भाव रहित बन गये हैं। (तं ण नज्जइ णं ममं केणइ कुमारेणं मारे-हिइ त्ति कट्टु भीए तत्थे पूजावत्सणिय २ पच्चोसक्कइ) तो न मालूम यह मुझे किस कुत्सित मरण से मरवा डाले, ऐसा विचार कर वह भीत (भययुक्त) हो गया त्रस्त यावत् संजात भयवाला बन गया। और धीरे २ वहां से पीछाहट कर चला आया-(पच्चोसक्कित्ता तमेव आसखंधं दुरुहेइ, दुरुहित्ता तेतलिपुरं मज्झं मज्झेणं जेणेव सएगिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए) आकर के वह अपने उसी घोडे पर बैठकर तेतलिपुर के बीच से होता हुआ अपने घर की तरफ चल दिया (तएणं तेतलिपुत्त जे जहा ईसर जाव पासंति ते तहा नो आढायंति, नो परिया-

---

थई गया छे. (हीणेणं ममं कणगज्झए राया) કનકધ્વજ રાજાનો હવે મારા ઉપર પ્રેમ રહ્યો નથી. (अवज्झाए णं ममं कणगज्झए राया) કનકધ્વજ રાજા મારા પ્રત્યે સદ્ભાવના રહિત થઈ ગયા છે.

(तं ण नज्जइ णं ममं केणइ कुमारेणं मारेहिइ त्ति कट्टु भीए तत्थे जाव सणिय २ पच्चोसक्कइ)

તો કોણ જાણે ક્યારે તેઓ મને કમોતે મરાવી નંખાવે આરીતે વિચાર કરીને તે ભયભીત થઈ ગયો, તે ત્રસ્ત યાવત સંજાત ભયવાળો થઈ ગયો અને ધીમેધીમે ત્યાંથી પાછો ફરીને આવતો રહ્યો.

(पच्चोसक्कित्ता तमेव आसखंधं दुरूहेइ, दुरूहित्ता तेतलिपुरं मज्झं मज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

ત્યાંથી આવીને તે પોતાના ઘોડા ઉપર સવાર થઈને તેતલિપુરની વચ્ચે થઈને પોતાના ઘર તરફ રવાના થયો.

तएणं तेतलिपुत्तं जे जहा ईसर जाव पासंति ते तहा नो आढायंति, नो

ये यथा=ये यथास्थिताः 'ईसरजाव' ईश्वर यावत्=ईश्वरतलवरमाडम्बिकादयः पश्यन्ति, 'ते तहेव' ते तथा स्थिता एव सन्तो नो आद्रियन्ते, नो परिजानन्ति, नो अभ्युत्तिष्ठन्ति, नो अञ्जलिपरिग्रहं कुर्वन्ति, इष्टाभिर्यावद्वाग्भिर्नो संलपन्ति, नो पुरतश्च पृष्ठतश्च पार्श्वाश्च मार्गतश्च समनुगच्छन्ति। ततः खलु तेतलिपुत्रो यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैव उपागच्छति। यापि च 'से' तस्य 'तत्थ' तत्र भवने बाह्या परिषद् भवति, तद् यथा-'दासाइ वा' दासाइति वा,

णंति, नो अब्भुट्ठेंति) मार्ग में तेतलिपुत्र को आते हुए जिन ईश्वर तलवर, माडम्बिक आदिको ने देखा तो उन्होंने अब पहिले की तरह न उसका आदर किया न उसके आगमन की अनुमोदना की और न उसे देखकर वे उठे ही (नो अंजलिपरिग्गहं करेंति, इट्ठाहिं जाव णो संलवंति नो पुरओ य पिट्ठओय पासओय मग्गओय समणुग०) और न उसे हाथ जोड़ कर नमस्कार ही किया। न इष्ट प्रिय वाणियों से उससे आलाप, संलाप किया, और न आजू बाजू से होकर वे उसके साथ मार्ग में ही चले। (तएणं तेतलिपुत्ते जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ) इस तरह चलता हुआ वह तेततिपुत्र अमात्य अपने घर पर आ गया। उवागच्छित्ता जाविसे तत्थ बाहिरिया परिसा भवइ, तंजहा दासेइ वा पेसेइ वा भाइल्लएइ वा सा वि य णं नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो अब्भुट्ठेइ) वहां पर भी जो दास घर के काम काज करने

परियाणंति, नो अब्भुट्ठेंति)

માર્ગમાં જતાં તેતલિપુત્રને ઇશ્વર તલવર માડંબિક વગેરે લોકોએ જોયો પણ કોઇએ પહેલાંની જેમ તેનો આદર ન કર્યો, તેના આગમનની અનુમોદના ન કરી અને તેને જોઇને તેઓ ઊભા ન થયા.

(नो अंजलि परिग्गहं करेंति, इट्ठाहिं जाव णो संलवंति नो पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य मग्गओ य समणुग०)

અને તેઓએ હાથ જોડીને તેને નમસ્કાર પણ ન કર્યા ઇષ્ટ, પ્રિય, વચનોથી તેઓએ તેની સાથે આલાપ ન કર્યો, સંલાપ ન કર્યો અને બન્ને બાજુએ થઇને તેઓ માર્ગમાં તેની સાથે સાથે ચાલ્યા પણ નહિ. (तएणं तेतलिपुत्ते जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छइ) આ પ્રમાણે ચાલતો ચાલતો તેતલિપુત્ર અમાત્ય પોતાને ઘેર આવી ગયો.

(उवागच्छित्ता जावि से तत्थ बाहिरिया परिसा भवइ, तं जहा दासेइ वा पासेइ वा भाइल्लएइ वा, सा वि य णं नो आढाइ नो परियाणाइ, न अब्भुट्ठेइ) ત્યાં પણ જે દાસો-ઘરમાં કામ કરનારા નોકરો, પ્રૈષ્યો-ઘરના કામ માટે

दासाः=गृहकार्यकारिणोभृत्याः,'पेसाइवा' प्रेष्यादति वा, प्रेष्याः गृहकार्यं कर्तुमन्यत्र प्रेषणीया भृत्याः, 'भाइल्लएति वा' भाइल्लाइति वा, 'भाइल्ल' इति देशीशब्दः,हालिकः भागिनश्चेति तदर्थः हालिकाः=भूमिकर्षणार्थं नियुक्ता भृत्याः, भागिनः,=स्वव्ययेनाऽन्यस्य क्षेत्रे कृषिं कृत्वा उपजातान्नस्यार्धभाग ग्राहिणः, एतद्रूपा या परिषत् साऽपि च एतं नो आद्रियते,नो परिजानाति, नो अभ्युत्तिष्ठते । याऽपि च तस्य आभ्यन्तरिको परिषद् भवति, 'तं जहा' तद् यथा 'पियाइ वा' पिताइति वा, ' मायाइ वा ' माता इति वा, ' जाव सुण्हाइ वा ' यावत् स्नुषाइति वा, स्नुषाः=पुत्रवध्वः, तद्रूपापि च परिषद् एनं नो आद्रियते, नो परिजानाति, नो अभ्युत्तिष्ठति । ततः खलु स तेतलिपुत्रो यत्रैव वासगृहं यत्रैव स्वकं शयनीयं तत्रैव उपागच्छति,उपागत्य,

वाले नौकर प्रेष्य, घर के काम के लिये जिन्हे बाहर भेजा जाता है ऐसे भृत्य, तथा भाईल्ल-हालिक-भूमि कर्षणार्थ नियुक्त भृत्य, अथवा भागीदार-अपने व्यय से अन्य के खेत में कृषिकरके उत्पन्न अन्न के अर्ध-भाग को लेने वाले वटियाजन इनरूप जो बाह्य परिषत् थी उसने भी उसका आदर नहीं किया, उसके आगमन की अनुमोदना नहीं की और न वह उसके आने पर अपने अधिष्ठित स्थान से उठे। (जाविय से अभिंतरिया परिसा भवइ-तंजहा-पियाइ वा मायाइ वा जाव सुण्हाइ वा सा वि य णं नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो अब्भुट्ठेइ) इसी तरह जो उसकी अन्तरंग परिषद थी जैसे पिता माता यावत् स्नुषा-पुत्रवधू आदि जन इन्होंने भी उसका आदर नहीं किया, आगमन का अनुमोदन नहीं किया और न ये कोई भी उसके आने पर अपने स्थानसे

જેઓને બહાર મોકલવામા આવે છે તે ભૃત્યો, તથા ભાઇલ્લ-હાળીકો એટલે કે ખેડવા માટે નિયુક્ત કરાયેલા ભૃત્યો અથવા તો ભાગીદારો-કે જે પોતાના ખર્ચે જ બીજાના ખેતરોમાં અનાજ વાવે છે અને વળતરમા ખેતરના માલિક પાસેથી અર્ધોભાગ મેળવે છે-એવા જે બાહ્ય પરિષત સંબંધી લોકો હતા તેઓ એ પણ તેનો આદર કર્યો નહિ, તેના આગમનને અનુમોદન આપ્યું નહિ અને ન તેના આવવા બદલ પોતાના સ્થાનેથી સત્કાર માટે તેઓ ઊભા થયા.
(जा वि य से अभिंतरिया परिसा भवइ-तं जहा-पियाइ वा मायाइ वा जाव सुण्हाइ वा सा वि य णं नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो अब्भुट्ठेइ) અને આ પ્રમાણે જ તેની અંતરંગ પરિષદના લોકો જેમ કે પિતા માતા યાવત્ સ્નુષા-બેટા વહુ-વગેરે લોકોએ પણ તેનો આદર કર્યો નહિ, તેના આગમનને અનુમોદન આપ્યું નહિ અને તેઓમાંથી કોઇ પણ તેના આવવા બદલ પોતાના સ્થાનથી ઊભા થયા નહિ.

शयनीये निषीदति, निषद्य, एवमवदत्=मनस्यकथयत्-एवं खलु=यथा अद्य तथैवान्यस्मिन्नपि दिवसे, अहं स्वकाद् गृहात् निर्गच्छामि, 'तं चेव जाव अब्भिंतरिया परिसा नो आढाइ, नो परियाणाइ नो अब्भुट्ठेइ' तदेव यावत् आभ्यन्तरिकी परिषद् नो आद्रियते, नो परिजानाति, नो अभ्युत्तिष्ठति, अस्यायमभिप्रायः- पूर्वस्मिन् दिवसे राज्ञि प्रसन्ने मां दृष्ट्वा राजेश्वरादयः सर्वे आद्रियन्ते स्म, परिजानान्ति स्म अभ्युत्तिष्ठन्ति स्म, अद्याऽपि गृहनिर्गतं मां ते तथैव सत्कारयन्तिस्म। परन्तु राज्ञि अकस्मात् अप्रसन्ने राजेश्वरतलवरमाडम्बिककौटुम्बिकप्रभृतयः तथा मदीय बाह्याभ्यन्तरा च परिषदपि सर्वेऽपि च मां नाद्रियन्ते, नो परिजानन्ति, नो

उठे। (तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव वासघरे जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ) इस तरह घर पर आकर वह तेतलिपुत्र अमात्य जहां अपना वासगृह और उसमें भी जहां अपनी शय्या थी वहां गया (उवागच्छित्ता सयणिज्जंसि निसीयइ, णिसीइत्ता एवं वयासी) वहां जाकर वह उस पर बैठ गया-और मनही मन विचार करने लगा-(एवं खलु अहं सयाओ गिहाओ णिग्गच्छामि, तं चेव जाव अब्भिंतरिया पुरिसा नो आढाइ, नो परिजाणाइ नो अब्भुट्ठेइ-तं सेयं खलु मम अप्पाणं जीवियाओ ववरोवित्तएत्ति कट्टु एव संपेहेइ) पहिले के दिनों में जब मैं अपने घर से निकलता था तो लोग-राजेश्वर आदि समस्त जन मुझ पर राजा की प्रसन्नता होने के कारण आता जाता हुआ देखकर मेरा आदर करते थे-मेरे आगमन आदि की अनुमोदन करते थे उठकर अपने विनय प्रदर्शित करते थे-तथा आज भी जब मैं घरसे निकल

(तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव वासघरे जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ)

આ રીતે ઘેર આવીને તેતલિપુત્ર અમાત્ય જ્યાં તેની રહેવાની ઓરડી અને તેમાં પણ જ્યાં પોતાની પથારી હતી ત્યાં ગયો. (उवागच्छित्ता सयणिज्जंसि निसीयइ, णिसीइत्ता एवं वयासी) ત્યાં જઈને તે તેના ઉપર બેસી ગયો અને મનમાં જ વિચાર કરવા લાગ્યો કે

(एवं खलु अहं सयाओ गिहाओ णिग्गच्छामि, तं चेव जाव अब्भिंतरिया पुरिसा नो आढाइ, नो परिजाणाइ, नो अब्भुट्ठेइ-तं सेयं खलु मम अप्पाणं जीवियाओ ववरोवित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ)

પહેલાં જ્યારે હું ઘેરથી બહાર નીકળતો હતો ત્યારે લોકો-રાજેશ્વર વગેરે બધા લોકો-રાજા મારા ઉપર ખુશ હતા એટલે-આવતાં જતાં જોઈને મારો આદર કરતા હતા, મારા આગમનનું અનુમોદન કરતા હતા તેમજ ઊભા થઈને વિનય પ્રદર્શિત કરતા હતા અને આજે પણ હું જ્યારે ઘેરથી નીકળીને

अभ्युत्तिष्ठन्ति । ' तं ' तत्=तस्मात् कारणात्, श्रेयः खलु मम आत्मानं जीविताद् व्यपरोपयितुम्, इति कृत्वा, एवं संप्रेक्षते, संप्रेक्ष्य तालपुटं विषम् ' आसगंसि ' आस्ये=मुखे प्रक्षिपति, विषं नो संक्राम्यति=विषत्वेन नो परिणमति । ततः खलु स तेतलिपुत्रो ' नीलुप्पल जाव असिं ' नीलोत्पल यावदसिं=नीलोत्पल गवलगुलिकसमप्रभं=नीलोत्पलं=नीलकमलम् गवलं=माहिषं शृङ्गम्, ' गुलिकं ' नीलरङ्गविशेषः, तैः समा प्रभा तेतलि कान्तिर्यस्य स त तादृशं यावदसिं=तीक्ष्णखड्गं ' खंधे ' स्कन्धे=कण्ठपृष्ठे ' ओहरइ ' अवहरति=निपातयति । तत्राऽपि च

कर राजा के पास गया-तब भी इन सबलोगों ने पूर्ववत् मेरा आदर आदि सब कुछ किया-परन्तु अकस्मात राजा के रुष्ट होने पर जब मैं वहां से लौटकर वापिस अपने स्थान पर आने लगा-तो किसी ने भी मेरा आदर आदि कुछ भी सत्कार नहीं किया। यहां तक कि जो मेरी बाह्य और आभ्यन्तर परिषद है-भीतर बाहरके नौकर चाकर एवं माता पिता आदि जन हैं-उसने भी आज इस समय आने पर मुझे कुछ नहीं समझा-अतः मुझे अब ऐसी स्थिति से मरना ही उत्तम है। इस प्रकार का उसने अपने मन में विचार किया-(संपेहित्ता तालउडं विसं आसगंसि पक्खिवइ, सेय विसे णो संकमइ, तएणं से तेतलिपुत्ते नीलुप्पल जाव असिं खंधसि ओहरइ, तत्थ विय से धारा ओपल्ला, तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव असोगवणिया तेणेव उ०) विचार करके उसने तालपुटविष को अपने मुख में डाला-परन्तु उसने अपना कुछ भी प्रभाव

રાજાની પાસે ગયો ત્યારે પણ એ બધાંએ પહેલાંની જેમજ મારો આદર વગેરે બધું કર્યું હતું પણ ઓચિંતા રાજાને નારાજ થઈ જવા બદલ જ્યારે હું ત્યાંથી પાછો ફરીને પોતાને ઘેર આવવા લાગ્યો ત્યારે કોઈએ પણ મારો આદર કે સત્કાર કર્યો નહિ મારી બાહ્ય અને આભ્યતર પરિષદ-એટલે કે બહારના નોકરો-ચાકરો અને માતા પિતા વગેરે-છે તેઓએ પણ આજે અત્યારે મારા આવવા બદલ કંઈ પણ કિંમત કરી નહિ. એથી એવી પરિસ્થિતિમાં મારૂં મરણ જ ઉત્તમ ઉપાય છે

(संपेहित्ता तालउडं विसं आसगंसि पक्खिवइ, सेय विसे णो संकमइ, तएणं से तेतलिपुत्ते नीलुप्पल जाव असिं खंधसि ओहरइ, तत्थवि य से धारा ओपल्ला, तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव असोगवणिया तेणेव उ०)

આ જાતનો વિચાર કરીને તેણે તાલપુટ વિષ (ઝેર) ને પોતાના

'से' तस्य खङ्गस्य धारा 'ओपल्ला' कुण्ठिता, 'ओपल्लं' इति देशी शब्दः तलपुटेन विषेण, कण्ठे निपातितेनासिनाऽपि च तदभिलषितं मरणं न जातम्। ततः खलु=तदनन्तरं स तेतलिपुत्रो यत्रैव अशोकवनिका=अशोकवाटिका तत्रैव उपागच्छति,उपागत्य पाशकं ग्रीवायां बध्नाति, बद्ध्वा 'रुक्खं' वृक्षं 'दुरुहइ, दुरोहति=आरोहति, दूरुह्य, पाशं वृक्षे बध्नाति, बद्ध्वा आत्मानं 'मुयइ' मुञ्चति= अधः पातयति। 'तत्थवि' तत्राऽपि=एतस्मिन्मरणोपाये कृतेऽपि च 'से' तस्य रज्जुश्छिन्ना=मध्यत एव पाशस्त्रुटितः। ततः खलु स तेतलिपुत्रः 'महइमहालयं' महातिमहतीम्=अति विशालां शिलां ग्रीवायां बध्नाति, बद्ध्वा 'अत्थाहमतारमपोरिसियंसि' अस्ताघातारापौरुषेये=नास्ति स्नाघः यस्य तत् अस्ताघम्=

नहीं दिखलाया-अर्थात् वह विष रूप से परिणत नहीं हुआ। इसके बाद उस तेतलिपुत्रने नीलोत्पल गवल, गुलिक की प्रभा जैसी प्रभावाली अत्यन्त नीलवर्ण वाली-ऐसी तलवार को कि जिसकी धार बहुत तीक्ष्ण थी-अपनी गर्दन पर रखा-अर्थात् उसे गर्दन पर चलाई-परन्तु उसने भी अपना काम नहीं किया-वह भी-कुंठित हो गई-इस तरह जब इन दोनों वस्तुओ से अपना अभिलषित मरण साध्य नहीं हुआ-अब वह तेतलिपुत्र जहां अशोकवनिका-अशोक वाटिका-थी वहां गया (उवागच्छित्ता पासगगीवाए बंधइ) वहां जाकर उसने अपनीं ग्रीवामें फंदा डाला-बांधा (बंधित्ता अप्पाणं मुयइ, तत्थ वि से रज्जू छिन्ना) बान्ध कर फिर वह वृक्ष पर चढ गया और वहां से अपने आपको नीचे लटका दिया परन्तु यहां पर भी उसकी रज्जू बीच में से टूट गई (तएणं से तेतलिपुत्ते

मुखमां नाख्युं. पण तेणे कंई असर बतावी नहि एटले के ते विष रूपमां परिणम्युं नहि. त्यार पछी ते तेतलिपुत्रे, नीलोत्पल गवल, गुलिकना जेवी प्रभावाळी तेमज तीक्ष्ण धारवाळी तलवारने पोतानी डोक उपर मूकी एटले के तेना वडे तेणे पोतानी डोक उपर घा कर्यो पण तेनाथी पण कंई काम थयुं नहि एटले के तरवार पण बूठी थई गई हती 'ओपल्ल' आ कुंठित (बूठी) अर्थ माटे वपरायेलो देशी शब्द छे. ज्यारे आ रीते ते बंने वस्तुओथी तेनी इच्छा पूरी थई नहि एटले के तेनुं मरण थई शक्युं नहि त्यारे ते ज्यां अशोक वनिका-अशोक वाटिका-हती त्यां गयो (उवागच्छित्ता पासगं गीवाए वंधइ) त्यां जईने तेणे पोतानी डोकमां फांसो भेरवीने बांध्यो. (बंधित्ता अप्पाण मुयइ तत्थ वि से रज्जू छिन्ना) बांधीने ते वृक्ष उपर चढी गयो अने त्यांथी पोतानी मेळे ज ते लटकी गयो परंतु अहीं पण फांसानुं दोरडुं वच्चेथी तूटी गयुं हतुं.

अतलस्पर्शि, अतारम्=अतरणीयम् , अपौरुषेयम्=पुरुषः प्रमाणं यस्य तत् पौरुषेयम्= न पौरुषेयम्=अपौरुषेयम्=पुरुषप्रमाणरहितम् , एतेषां कर्मधारयः, तस्मिन् अतिगम्भीरे इत्यर्थः, उदके आत्मानं मुञ्चति । तत्राऽपि=तस्मिन्नुदकेऽपि च 'से' तस्य=तेतलिपुत्रस्य 'थाहे' स्ताघो जातः । ततः खलु स तेतलिपुत्रः शुष्के तृणकूटे=तृणपुञ्जे 'अगणिकाय' अग्निकायं प्रक्षिप्य, तत्र आत्मानं मुञ्चति । तत्रापि=शुष्के तृणेऽपि सोऽग्निकायो 'विज्झाए' विध्यातः=उपशान्तः । 'तएणं' ततः खलु=एतस्य सर्वस्य असम्भाव्यस्य सम्भावनानन्तरम् स तेतलिपुत्र एवमवा-

महइमहालय सील गीवाए-बंधइ बंधित्ता अत्थाह मतारमपोरिसियंसि उदगंसि अप्पाणं मुयइ, तत्थ वि से थाहे जाए) इसके बाद उस-तेतलिपुत्र ने एक बहुत विशालकाय शिला को अपने गले में बांधा-और बांध कर अपने आपको अथाह-अतार एवं अपुरुष प्रमाण जल में छोड़ दिया-परन्तु वह जल भी उसके लिए स्ताध थाह युक्त-बन गया-(तएणं से तेतलिपुत्ते सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकायं पक्खिवइ पक्खिवित्ता मुयइ, तत्थ वि से अगणिकाए विज्झाए-तएणं से तेतलिपुत्ते एवं-वयासी-सद्धेय खलु भो समणा वयंति सद्धेयं-खलु भो माहणा वयंति, सद्धेयं खलु भो समणमाहणा वयंति, अहं एगो असद्धेयं वयामि एवं खलु अहं सह पुत्तेहिं अपुत्ते को मेयं सद्दहिस्सइ ? सहमित्ते हिं अमित्ते को मेयं सद्दहिस्सइ) इसके बाद तेतलिपुत्रने शुष्क घासके ढेर में अग्नि लगाई-और उसमें अपने आपको डाल दिया-परन्तु वह भी

(तएण से तेतलिपुत्ते महइ महालयं सिलं गीवाए बधइ, बंधित्ता अत्थाहमतारम-पोरिसियंमि उदगंसि अप्पाणं मुयइ, तत्थ वि से थाहे जाए)

ત્યાર પછી તે તેતલિપુત્રે એક બહુ મોટી ભારે શિલા (પથરો) ને પોતાની જાતને અથાહ-અતાર અને અપુરુષ પ્રમાણે પાણીમાં નાખી દીધી પરંતુ તે ઊંડુ પાણી પણ તેના માટે થાહ વાળું એટલે કે છીછરું થઈ ગયુ.

(तएणं से तेतलिपुत्त सुक्कंसि तणकूडंमि अगणिकायं पक्खिवइ, पक्खिवित्ता मुयइ, तत्थवि से अगणिकाए विज्झाए-तएण से तेतलिपुत्ते एवं वयासी सद्धेयं खलु भो समणा वयंति सद्धेयं-खलु भो माहणा वयंति, सद्धेयं खलु भो समण-माहणा वयंति , अहं एगो असद्धेयं वयामि एव खलु अहं सह पुत्तेहिं अपुत्ते-को मेयं सद्दहिस्सइ ? सह मित्तेहिं अमित्ते-को मेयं सद्दहिस्सइ)

ત્યાર પછી, તેતલિપુત્રે સૂકા ઘાસના ઢગલામાં અગ્નિ પ્રગટાવ્યો અને પોતાની જાતને તેમાં નાખી દીધી પરંતુ તે પણ વચ્ચેથી જ ઓલવાઇ ગઇ.

दीत्=चित्तं संबोध्य मनस्येवमकथयत्-भो चित्त ! श्रमणा यद् वदन्ति तत्खलु श्रद्धेय=श्रद्धा योग्यं, श्रद्धेयं खलु भोः ब्राह्मणा वदन्ति, श्रद्धेय खलु भोः ! श्रमण ब्राह्मणा वदन्ति। अयं भाव-आत्मपरलोकाद्यर्थ प्रतिबोधकं श्रमणादीनां वचनं श्रद्धेयं भवति, अतीन्द्रियस्याप्यात्म परलोकादिस्वरूपस्यानुमानादि प्रमाणविषयतया श्रद्धाविषयत्वात्। परन्तु अहमेको असहायः अश्रद्धेयम् अविश्वसनीयं वदामि। यद्यपि मदीयं वचनं सर्वथा सत्यम्, तथापि असम्भाव्यतया जनैः प्रत्येतुमशक्यम्। तदेवाह-'एवं खलु' इत्यादिना 'एवं खलु' मयि अश्रद्धेय·

बीच ही में बुझ गई। इस तरह इन समस्त असंभवनों की संभवना के बाद तेतलिपुत्रने अपने आपको संबोधित करते हुए मन में विचार किया-हे चित्त ! श्रमणजन जो कहते हैं वह श्रद्धेय हैं। ब्राह्मणजन जो कहते हैं वह श्रद्धेय है इसी प्रकार श्रमणमाहणजन जो कहते हैं वह श्रद्धेय है। इसका भाव यह है कि आत्मा, परलोक आदि पदार्थ जो कि अतीन्द्रिय हैं वे अनुमान आदि प्रमाण कि विषयभूत हो जाते है-इसलिये ये श्रद्धाके विषय बन जाते हैं-अतः इन अतीन्द्रिय आत्म, परलोक आदि पदार्थों को प्रतिपादित करने वाले श्रमण माहण आदिकों के वचन भी श्रद्धेय हो जाते हैं, परन्तु मैं जो कह रहा हूँ वह अश्रद्धेय कह रहा हूँ एक असहाय हूँ-इसलिये-मुझे इस विषयमें किसी को भी सहायता मिलने वाली नहीं है। उन श्रमण माहण आदिजनों के वचनों के सहायक तो अनुमान आदि प्रमाण है-परन्तु मेरा सहायक कोई प्रमाण ही नहीं होता है, यद्यपि मैं सर्वथा सत्य कहता हूँ परन्तु वह मेरा वचन असंभवित असहाय-होने की वजह से मनुष्यों के लिये श्रद्धेय नहीं बन

આ રીતે આ બધા અસંભવનોની સંભાવના બાદતે તલિપુત્રે પોતાની જાતનેજ સંબોધિત કરતાં મનમાં વિચાર કર્યો કે હે ચિત્ત ! શ્રમણજનો જે કંઇ કહે છે તે શ્રદ્ધેય છે, બ્રાહ્મણો જે કંઈ કહે છે તે શ્રધ્ધેય છે આ પ્રમાણે શ્રમણ માહણજનો જે કઇ કહે છે તે શ્રદ્ધેય છે આનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે આત્મા પરલોક વગેરે પદાર્થો જેઓ કે અતીન્દ્રિય છે-તેઓ અનુમાન વગેરે પ્રમાણના વિષયભૂત થઈ જાય છે. એટલા માટે તે પદાર્થો શ્રદ્ધાના વિષય બની જાય છે એથી આ બધા અતીન્દ્રિય આત્મ, પરલોક વગેરે પદાર્થોનું પ્રતિપાદન કરનાર શ્રમણ માહણ વગેરેના વચનો પણ શ્રદ્ધેય થઈ જાય છે, પણ હું જે કંઈ કહી રહ્યો છે તે અશ્રદ્ધેય કહી રહ્યો છું. એક અસહાય છુ એથી મને આ બાબતમા કોઈની મદદ પણ મળી શકે તેમ નથી તે શ્રમણ માહણ વગેરેના વચનોના સહાયક તો અનુમાન વગેરે પ્રમાણો છે પણ મારા કથનનું સહાયભૂત થાય તેવું કોઈ પ્રમાણ જ નથી. જો કે હુ જે કંઇ પણ કહી રહ્યો છું તે સંપૂર્ણ રીત યથાર્થ સત્ય-કહી રહ્યો છુ. પણ મારા તે વચનો અસંભવિત અસહાય હોવા બદલ

वचने सती यदि अहमेवं=एवंभूतं सत्यमपि वदामि, यत्–अहं ' सहपुत्तेहिं अपुत्ते ' सहपुत्रैरपि अपुत्रः=पुत्रेषु विद्यमानेष्वपि अहं पुत्ररहित एवास्मि तेरनादृतत्वात् कः ' मेयं ' ममेदं=इदं मदीयं वचनं ' सद्दहिस्सइ ' श्रद्धास्यति=प्रत्येष्यति, न कोऽपि, तथा अहं ' सहमित्तेहिंअमित्ते ' सहमित्रैरमित्रः=मित्रेषु विद्यमानेष्वपि ' मित्ररहितोऽहं ' को ' मेदं ' ममेदं वचनं श्रद्धास्यति ? एवम्=अनेन प्रकारेणैव अर्थेन दारैः दासैः परिजनेन च सहितोऽपि, न रहितोऽस्मि, इदं मदीयं वचनं कः श्रद्धास्यति, अपितु न कोऽपि । ' एवं ' अमुना प्रकारेण खलु यद्यहं ब्रवीमि–यत् ' तेतलिपुत्रो ' तेतलिपुत्र नामधेये खलु मयि अमात्ये कनकध्वजेन राज्ञा ' अवज्झाएणं समाएणं ' अपध्यातेन=दुश्चिन्तकेन सता, अर्थात् कनकध्वजो राजा

सकता है जैसा मैं यह सत्य भी कहूँ कि मैं पुत्रों के विद्यमान होने पर भी अपुत्र पुत्र रहित–हूँ, तो कौन मेरी इस बात को श्रद्धा से देखेगा– इसी तरह मैं यह कहूँ कि मैं मित्रों के विद्यमान होने पर भी मित्र रहित हूँ–तो कौन मेरे इन वचनों पर विश्वास करेगा–(एवं अत्थे णं दारेणं दासेहिं परिजणेणं एवं खलु तेतलिपुत्तेणं अमच्चे कणगज्झएणं रन्नाअवज्झाएणं समाणेणं तेतलिपुत्तेणं तालपुडगे विसे आसगंसि पक्खित्ते से वि य णो कमइ को मेयं सद्दहिस्सइ ? तेतलिपुत्तेणं नीलुप्पल जाव खंधंसि ओहरिए तत्थ वि से धारा ओपला को मेयं सद्दहिस्सइ) इस तरह अर्थ, दारा, दास, परिजन, इन से युक्त होने पर भी मैं–इन से रहित हूँ, कौन मेरे इस वचन को मानेगा? अर्थात् कोई नहीं मानेगा इसी तरह यदि मैं ऐसा कहूँ कि मुझे तेतलिपुत्र अमात्य के ऊपर कनक

માણસો માટે શ્રદ્ધેય થઈ શકે તેમ નથી. જેમ કે હું અત્યારે આ જાતની સાચી વાત પણ કહું કે પુત્રો હોવા છતાંએ હું પુત્ર વગરનો છું તો કોણ મારી આ વાતને શ્રદ્ધાની દૃષ્ટિએ જોશે ? આ પ્રમાણે જ હું કહું કે મિત્રો હોવા છતાંએ હું મિત્ર વગરનો છું તો કોણ મારી આ વાત ઉપર શ્રદ્ધા ધરાવશે?

(एवं अत्थेणं दारेणं दासेहिं परिजणेणं एवं खलु तेतलिपुत्तेणं अमच्चे कणगज्झएणं रन्ना अवज्झाएणं समाणेणं तेतलिपुत्तेण तालपुडगे विसे आसगंसि पक्खित्ते से वि य णो कमइ, को मेयं सद्दहिस्सइ ? तेतलिपुत्तेणं नीलुप्पल जाव खंधंसि ओहरिए तत्थ वि से धारा ओपला को मेयं सद्दहिस्सइ)

આ રીતે અર્થ (ધન), દારા (પત્ની) દાસ, પરિજન એ બધા હોવા છતાં પણ હું એમના વગર છું મારી આ વાત ઉપર કોણ વિશ્વાસ મૂકવા તૈયાર થશે ? એટલે કે કોઈ પણ વિશ્વાસ કરશે જ નહિ. આ રીતે જ જો હું આમ કહું કે મારા ઉપર રાજા કનકધ્વજ નારાજ થઈ ગયા હતા એટલા માટે

तेतलिपुत्रो दुश्चिन्तको जातः इतिहेतोः, तेतलिपुत्रेण तालपुटकं विषम् 'आसगंसि' आस्ये=मुखे प्रक्षिप्तम्, 'से वि य' तदपि च विषं नो 'कमइ' न क्राम्यति=विषत्वेन न परिणमति को जनः 'मेदं' ममेदं सत्यमपि वचनं श्रद्धास्यति न कोऽपि, तथा 'तेतलिपुत्तेणं' नीलुप्पल जाव खंधसि ओहरिए' तेतलिपुत्रेण नीलोत्पल यावत् स्कन्धे अपहृतः=तेतलिपुत्रेण नीलोत्पलगवलगुलिकसमप्रभाऽसिः 'स्कन्धे' कण्ठमूले 'अवहृतः' प्रहृतः 'तत्थवि' तत्रापि=तस्मिन् मरणोपाये कृतेऽपि च' तस्य=असेः धारा ओपल्ला=कुण्ठीभूता को 'मेदं' ममेदं श्रद्धास्यति। एवमेव यद्यहं ब्रूयाम् यन्मया 'तेतलिपुत्तेणं पासगं गीवाए बंधेत्ता जाव रज्जूछिन्ना को मेयं सद्दहिस्सइ' तेतलिपुत्रेण पाशकं ग्रीवायां बद्ध्वा यावत् रज्जुश्छिन्ना, को ममेदं श्रद्धास्यति ? तेतलिपुत्रेण अतिविशालां शिलां यावद् बद्ध्वा अस्ताधयाव-

ध्वज राजा दुश्चितक बन गये–इसलिये मैंने तालपुट विष मुख में डाल दिया परन्तु वह विषरूप से परिणमित नहीं हुआ। मैंने विष खाया–पर मैं मरा नहीं–कौन मनुष्य मेरी इस सत्य बात को श्रद्धा की दृष्टी से देखेगा। तथा मैंने नीलोत्पल, गवल एवं गुलिका की प्रभा जैसी प्रभाव वाली तीक्ष्ण तलवार अपनी गर्दन पर मरने के लिये चलाई–परन्तु वह भोटी धारवाली बन गई–कुण्ठित हो गई–उससे मेरी गर्दन नही कटी–कौन मेरी इस बात को मानने के लिये तैयार हो सकेगा (तेतलिपुत्तेणं पासगं इत्यदि) इसी तरह यदि मैं यह कहूँ कि मुझ तेतलिपुत्रने अपने गले में पाशक डाला और वृक्षपर चढकर वहां से नीचे में लटक पड़ा और फंदा बीच में से टूट गया तो कौन इन वचनों पर विश्वास करेगा। (तेतलिपुत्तेणं महइमहालयं जाव बंधित्ता अत्थाह जाव उदगंसि अप्पा

મેં તાલપુટવિષ (ઝેર) ખાધું હતું પણ તે વિષના રૂપમાં પરિણત થયુ નથી એટલે કે વિષ ભક્ષણ કરવા છતાંએ હું મરણ પામ્યો નહિ. આ વાત ઉપર કયો માણસ વિશ્વાસ મૂકવા તૈયાર થશે ? તેમજ નીલોત્પલ, ગવલ અને ગુલિકાના જેવી પ્રભાવાળી તીક્ષ્ણ ધારવાળી તરવારનો મેં મરવા માટે મારી ડોક ઉપર ઘા કર્યો પણ તે તરવાર જ બૂઠી ધારવાળી થઈ ગઇ–કુંઠિત થઇ ગઈ–તેનાથી મારી ડોક કપાઈ નહિ. મારી આ વાત ઉપર કોણ વિશ્વાસ કરવા તૈયાર થશે ? (तेतलिपुत्तेणं पासग इत्यादि) આ રીતે જ હું આમ કહું કે મેં તેતલિપુત્રે પોતાના ગળામાં ફાંસો નાંખ્યો અને વૃક્ષ ઉપર ચઢયો. વૃક્ષ ઉપર ચઢીને ત્યાંથી નીચે લટકી પડયો પણ ફાંસો વચ્ચેથી જ તૂટી ગયો તો કોણ મારી આ વાત ઉપર વિશ્વાસ મૂકશે ?

(तेतलिपुत्तेणं महइमहालयं जाव बंधित्ता अत्थाह जाव उदगंसि अप्पा मुक्के,

दुदके आत्मा मुक्तः, तत्रापि च खलु स्ताघो जातः, को ममेदं श्रद्धास्यति=मया स्वकण्ठे महाशिलां बद्ध्वा अगाधे उदके आत्मा मुक्तः, परन्तु तस्मिन्नुदकेऽपि मम तलस्पर्शो जातः, इति मम वचनं कः श्रद्धास्यति ? पुनश्च–तेतलिपुत्रेण मया शुष्के तृणकूटे=तृणपुञ्जेऽग्निकायं प्रक्षिप्य प्रज्वलिते तस्मिन् आत्मा मुक्तः, परन्तु सोऽग्निकायः 'विज्झाए' विध्यातः=उपशान्त, इत्येवंरूपमपि मदीयं वचनं कः श्रद्धास्यति ? न कोऽपि, इत्येवं स तेतलिपुत्रः 'ओहयमणसंकप्पे' अपहृतमनः संकल्पः=भग्नोत्साहः सन् यावद् ध्यायति=आर्त्तध्यानं करोति ॥सू० १०॥

मुक्को, तत्थ वि णं थाहे जाए को मेयं सद्दहिस्सइ ? तेतलिपुत्तेणं सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकायं पक्खिवित्ता अप्पा मुक्को तत्थ वि से अगणिकाए विज्झाए को मेयं सद्दहिस्सइ ? ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ) मुझ तेतलिपुत्रने एक बहुत बड़ी शिला को गलेमें बांधी और बाद में अथाह अतार अपुरुष प्रमाण जल में कूंद पड़ा परन्तु वह जल कूंदते ही थाह वाला बन गया अथाह नहीं रहा मेरी इस सत्य बात पर भी कौन श्रद्धा करेगा। इसी तरह मुझ तेतलिपुत्रने एक बडे भारी शुष्क घास के ढेर में अग्नि लगाई और उस में अपने आप को प्रक्षिप्त कर दिया– परन्तु वह अग्नि बुझ गई उसने मुझे भस्म नहीं किया मेरी इसबात को कौन श्रद्धा रूप से स्वीकार करेगा। इस प्रकार अपहृत मनः संकल्प वाला बन कर–उत्साह रहित होकर वह तेतलिपुत्र अमात्य आर्तध्यान में पड़ गया ॥ सू० १० ॥

तत्थ वि णं थाहे जाए को मेयं सद्दहिस्सइ ? तेतलिपुत्तेणं सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकायं पक्खिवित्ता अप्पा मुक्को तत्थवि से अगणिकाए विज्झाए को मेयं सद्दहिस्सइ ? ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ)

મેં તેતલિપુત્રે એક બહુ ભારે મોટી શિલા (પથરો) ગળામા બાંધી અને ત્યાર પછી હું અથાહ (ઊંડા) અતાર અપુરુષ પ્રમાણ જેટલા પાણીમાં કૂદી ગયો પણ કૂદતાંની સાથે જ પાણી થાહવાળુ (છીછરું) થઇ ગયું, અથાહ (ઊંડુ) રહ્યુ નહિ મારી આ વાત ઉપર પણ કોણ વિશ્વાસ મૂકશે ? આ પ્રમાણે જ મેં તેતલિપુત્રે એક બહુ મોટા ભારે સૂકા ઘાસના ઢગલામાં અગ્નિ પ્રગટાવ્યો અને તેમાં મેં પોતાની જાતને ઝંપલાવી દીધી પણ તે અગ્નિ ઓલવાઇ ગયો. તેણે મને ભસ્મ કર્યો નહિ. મારી આ વાતને કોણ શ્રદ્ધેય માનીને સ્વીકારવા તૈયાર થશે ? આ રીતે તે અપહતમનઃ સંકલ્પવાળો (હતાશ) થઇને નિરુત્સાહી બની ગયો અને આર્તધ્યાનમાં ડૂબી ગયો. ॥ "સૂત્ર ૧૦" ॥

मूलम्—तएणं से पोट्टिले देवे पोट्टिलारूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता, तेतलिपुत्तस्स अदूरसामंते ठिच्चा एवं वयासी—हं भो ! तेतलिपुत्ता ! पुरओ पवाए पिट्ठओ हत्थिभयं, दुहओ अचक्खुफासे, मज्झे सराणि वरिसंति, गामे पलित्ते रन्ने झियाइ, रन्ने पलित्ते गामे झियाइ । आउसो तेतलिपुत्ता ! कओ वयामो ?, तएणं से तेतलिपुत्ते पोट्टिलं एवं वयासी—भीयस्स खलु भो ! पव्वज्जा सरणं, उक्कंठियस्स सदेसगमणं छुहियस्स अन्नं, तिसियस्स पाणं, आउरस्स भेसज्जं, माइयस्स रहस्सं अभिजुत्तस्स पच्चयकरणं, अद्धाणपरिसंतस्स वाहणगमणं, तरिउकामस्स पवहणकिच्चं, परं अभिउंजिउ कामस्स सहायकिच्चं खंतस्स दंतस्स जिइंदियस्स एत्तो एगमवि णं भवइ । तएणं से पोट्टिले देवे तेयलिपुत्तं अमच्चं एवं वयासी—सुट्ठु णं तुमं तेयलिपुत्ता ! एयमट्ठं आयाणाहि त्तिकट्टु दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयइ, वइत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए, तामेव दिसं पडिगए ॥ सू० ११ ॥

टीका—'तएणं से' इत्यादि । 'तएणं' ततः खलु तेतलिपुत्रे आर्तध्यानरते सति स पोट्टिलोदेवः 'पोट्टिलारूवं' पोट्टिलारूप विकुर्वति=वैक्रियशक्त्या-

---

'तएणं से पोट्टिले देवे' इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से पोट्टिले देवे) उस पोट्टिल देवने (पोट्टिला रूवं विउव्वइ) पोट्टिला के रूप की विकुर्वणा की—अर्थात् वैक्रिय शक्ति के प्रभाव से उसने पोट्टिला का रूप धारण किया (विउव्वित्ता

'तएणं से पोट्टिले देवे' इत्यादि

ટીકાર્થ-(तएणं) ત્યાર પછી (से पोट्टिले देवे) તે પોટ્ટિલદેવે (पोट्टिला रूवं विउव्वइ) પોટ્ટિલાના રૂપની વિકુર્વણા કરી એટલે કે વૈક્રિય શક્તિના પ્રભાવથી

धारयति, विकुर्वित्वा तेतलिपुत्रस्य अदूरसामन्ते=नातिदूरे नातिनिकटे स्थित्वा एवमवादीत्-हंभो तेतलिपुत्र ! 'हंभो' इत्यामन्त्रणे, हे तेतलिपुत्र ! 'पुरओ' पुरतः=अग्रतः ' 'पवाए' प्रपातः=गर्तः, अतो निर्गमनमसम्भवि, पृष्ठतः हस्तिभयम्, अतो प्रत्यावर्तनं चासंभवि, 'दुहओ' उभयतः=उभयत =उभयोः पार्श्वयोः 'अचक्खुफासे' अचक्षुस्पर्शः=अन्धकारः, 'मज्झे' मध्ये=यत्र वयमास्महे तत्र 'सराणि' शरा =बाणाः, 'वरिसंति' वर्षन्ति=निपतन्ति । 'गामे पलित्ते' ग्रामे प्रदीप्ते=प्रज्वलिते सति रण्णे' अरण्यं=वनं 'झियाइ' ध्यायति=गन्तुं चिन्तयति, अरण्ये प्रदीप्ते ग्रामं ध्यायति=गन्तुं चिन्तयति, 'आउसो तेतलिपुत्ता' हे आयुष्मन् तेतलिपुत्र ! 'उभओ पलित्ते' उभयतः प्रदीप्ते=उभयस्मिन् प्रज्वलिते वयं 'कओ वयामो' कुतो व्रजामः=कगच्छामः । ततः खलु स तेतलिपुत्रः पोट्टिला-

---

तेतलिपुत्तस्स अदूरसामंते ठीच्चा एवं वयासी) धारण कर के वह तेतलिपुत्र के समीप गयी। वहां जाकर उसने उससे इस प्रकार कहा-(हं भो तेतलिपुत्ता ! पुरओ पवाए पिट्ठओ हत्थिभयं) अरे ओ तेतलिपुत्र ! आगे प्रपात खड्डा है और पीछे हाथी का भय है। (दुहओ अचक्खुफासे, मज्झे सराणि वरिसंति) दोनों ओर अन्धेरा है और जहां हमलोग ठहरे हुए हैं वहां बाणों की वृष्टि हो रही है। (गामे पलित्ते रण्णो झियाइ, रन्नो पलित्ते गामे झियाइं) ग्राम में आगलगने पर मनुष्य जंगल में चले जाने को सोचता है-और जंगल में आग लगने पर ग्राम में चले आने के लिये विचारता है। (आउसो तेतलिपुत्ता ! उभओ पलित्ते कओ वयामो) परन्तु जब दोनों में आग लग जावे तो हे आयुष्मन तेतलिपुत्र ! कहो ! हम कहां जावे ? (तएणं से

તેણે પોટ્ટિલાનું રૂપ ધારણ કર્યું (विउव्वित्ता तेतलिपुत्तस्स अदूरसामते ठीच्चा एवं वयासी) ધારણ કરીને તે તેતલિપુત્રની પાસે ગઈ ત્યાં જઈને તેણે તેને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે (हं भो तेतलिपुत्ता ! पुरओ पवाए पिट्ठओ हत्थिभयं) અરે, ઓ ! તેતલિપુત્ર ! તમારી સામે પ્રપાત-ખાધ છે અને તમારી પાછળ હાથીનો ભય છે (दुहओ अचक्खुफासे, मज्झे सराणि वरिसंति) બંને તરફ અંધારૂં છે અને જ્યા અમે ઊભા છીએ ત્યાં તીરો વર્ષી રહ્યા છે (गामे पलित्ते रण्णो झियाइ रन्नो पलित्ते गामे जियाइं) ગામમાં આગ લાગતા માણુસ જંગલમાં નાસી જવાનો વિચાર કરે છે અને જંગલમા આગ લાગતાં ગામમાં આવતા રહેવાનો વિચાર કરે છે. (आउसो तेतलिपुत्ता उभओ पलित्ते कओ वयामो) પણ જ્યારે બંને તરફ આગ સળગી ઉઠે ત્યારે હે આયુષ્મન્ત તેતલિપુત્ર ! બોલો, અમે ક્યાં જઇએ ?

मेवमवादीत् 'भो' हे पोट्टिले ! भीतस्य खलु प्रव्रज्याशरणं भवति तत्र दृष्टान्तमाह—यथा—'उक्कंडियस्स' उत्कण्ठितस्य=परदेशवर्त्तित्वादुत्सुकस्य स्वदेशगमनं; 'छुहियस्स' क्षुधितस्य अन्नम्, 'तिसियस्स' तृषितस्य पानं, 'आउरस्स आतुरस्य=रोगिणः 'भेसज्जं' भैषज्यं 'मायिस्स' मायिकस्य=मायाविनः रहस्यं=गोपनम्, 'अभिजुत्तस्स' अभियुक्तस्य = दोषापवादयुक्तस्य 'पच्चयकरणं = प्रत्ययकरणं तन्निराकरणेन स्वविषये निर्दोषताप्रतीत्युत्पादनम्, 'अद्धाणपरिसंतस्स' अध्वपरिश्रान्तस्य=मार्गगमनपरिखिन्नस्य 'वाहणगमणं' वाहनगमनं, शकटादिना गमनं 'तरि-

---

तेतलिपुत्ते पोट्टिलं एवं वयासी—भीत्तस्स खलु भो पवज्जा—सरणं—उक्कंडियस्स सदेसगमणं छुहियस्स अन्नं, तिसियस्स पाणं, आउरस्स भेसज्जं, माइयस्स रहस्सं, अभिजुत्तस्स पच्चयकरणं, अद्धाण परिसंतस्स वाहणगमणं, तरिउकामस्स पहवणकिच्चं, परं अभिउंजिउकामस्स सहायकिच्चं संतस्स दंतस्स जिइंदियस्स एत्तो एगमवि ण भवइ) इस प्रकार पोट्टिला की बात सुनकर तेतलिपुत्र अमात्य ने उससे ऐसा कहा हे पाट्टिले ! भीन (भय युक्त) के लिये प्रव्रज्या शरण भून होती है, जैसे—परदेश वर्नी उत्सुक व्यक्ति के लिये स्वदेश गमन शरण भूत होना है, भूखे के लिये अन्न शरण भून होना है प्यासे के लिये पानी, आतुर रोगी के लिये भैषज्य, मायावी के लिये मायाचारी, अभियुक्त—दोषापवाद वाले के लिये दोषों के निराकरण से अपने विषय में निर्दोषता की प्रतीति का उत्पादन, शरण भून होना है। मार्ग श्रान्त के लिये वाहन से गमन, करना शरण भून होता है, तैरने की इच्छा वाले के

(तएणं से तेतलिपुत्ते पोट्टिलं एवं वयासी—भीतस्स खलु भो पव्वज्जा सरणं उक्कंडियस्स सदेसगमणं छुहियरस अन्नं निसियस्स पाणं, आउरस्स भेसज्जं, माइयस्स रहस्सं, अभिजुत्तस्स पच्चयकरणं, अद्धाणपरिसंतस्स वाहणगमणं, तरिउकामस्स सहायकिच्चं संतस्स जिइंदियस्स एत्तो एगमवि ण भवइ)

આ રીતે પોટ્ટિલાની વાત સાંભળીને તેતલિપુત્ર અમાત્યે તેને કહ્યું કે હે પોટ્ટિલે ! ભયભીત થયેલાને માટે પ્રવ્રજ્યા શરણુ ભૂત હોય છે—જેમ—પરદેશમાં રહેતી ઉત્સુક વ્યક્તિને માટે પોતાને દેશ પાછા ફરવુ શરણુ ભૂત હોય છે ભૂખ્યાને માટે અન્ન શરણુ ભૂત હોય છે. આ પ્રમાણે જ તરસ્યાને મ ટે પાણી, આતુર—રોગ—ને માટે ભૈષજ્ય—દવા, માયાવીને માટે માયા ચ રી, અભિયુક્ત—દોષાપવાદ-વાળા—ને માટે દોષોના નિરાકરણથી પોતાના વિષે નિર્દોષતાની પ્રતીતિનુ ઉત્પાદન શરણુ ભૂત હોય છે માર્ગમાં ચાલતાં થાકી ગયેલાને માટે વાહનનો ઉપયોગ શરણુ ભૂત હોય છે, તરવાની ઈચ્છા ધરાવતા માણુસને માટે નાવ વગેરે જલયાન

उकामस्स ' तरीतुकामस्य ' पवहणकिच्चं ' प्रवहणकृत्यम्-प्रवहणं=प्रतरणं कृत्यं यस्य तत्, जलयानं-नौकादिकमित्यर्थः ' परं अभिओजितुकामस्स ' परमभियोजयितुकामस्य=समाक्रमितुमुद्यतस्य ' सहायकिच्चं ' सहायकृत्यं=मित्रादीनां साहाय्यं शरणं भवति, परं प्रव्रज्यानन्तरं ' खंतस्स ' क्षान्तस्य=क्षमाशीलस्य, ' दंतस्स ' दान्तस्य इन्द्रिय नो इन्द्रियाणां दमनशीलस्य, ' जिइंदियस्स ' जितेन्द्रियस्य= वशीकृतेन्द्रियस्य ' एत्तो ' इतः=एषु पूर्वोक्तेषु मध्ये 'एगमवि न भवइ' एकमपि न भवति। एकमपि शरणं तस्य प्रव्रजितस्योपादेयं न भवतीत्यर्थः। ततः खलु तेतलिपुत्रस्यैतद्वचनश्रवणानन्तरम् स पोट्टिलो देवः तेतलिपुत्रममात्यमेवमवदत्-सुष्ठु खलु त्वं हे तेतलिपुत्र! एतमर्थम्=' भीतस्य प्रव्रज्या शरणम् ' इत्येवंरूप भावम् ' आयाणाहि ' आजानीहि=अनुष्ठानद्वारेणावबुध्यस्व-प्रव्रज्यां गृहाणेत्यर्थः ' त्ति

लिये नौकादि यान शरण भूत होता है, और जो दूसरों पर आक्रमण करने के लिये उद्यत होता है उनके लिये मित्रादिकों की सहायता शरण भूत होती है। परन्तु जो क्षमाशील होता है, दान्त-इन्द्रियों को एवं मन को दमन करता है, जितेन्द्रिय होता है ऐसे प्रव्रजित को इन पूर्वोक्त शरणों मेसे एक भी शरण उपादेय नहीं होता है। (तएणं से पोट्टिले देवे तेयलिपुत्तं अमच्चं एवं वयासी-सुट्ठुणं तुमं तेयलिपुत्ता! एयमट्ठं आयाणाहि त्ति कट्टु दोच्चंपि तच्चंपि एव वइत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए) इस प्रकार तेतलिपुत्र के वचन सुनने के बाद उस पोट्टिल देवने तेतलिपुत्र अमात्य से ऐसा कहा हे तेतलिपुत्र! डरे हुए को प्रव्रज्या शरण होती है इस भावरूप अर्थ को तुम अनुष्ठान द्वारा अच्छी तरह जानो अर्थात् प्रव्रज्या ग्रहण करो। ऐसा

શરણુ ભૂત હોય છે અને જે બીજાઓ ઉપર હુમલો કરવા તૈયાર હોય છે તેના માટે મિત્ર વગેરેની મદદ શરણુ ભૂત હોય છે પણ જે ક્ષમાશીલ હોય છે, દાંત-ઇન્દ્રિયો અને મનને દમન કરનાર હોય છે-એટલે કે જિતેન્દ્રિય હોય છે એવા પ્રવ્રજિતના માટે એ બધી ઉપર વર્ણવામા આવેલી શરણોમાથી એકેય કામમાં આવતી નથી.

(तएणं से पोट्टिले देवे तेयलिपुत्त अमच्चं एवं वयासी-सुट्ठुणं तुमं तेयलिपुत्ता! एयमट्ठं आयाणाहि त्ति कट्टु, दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयइ वइत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए)

આ રીતે તેતલિપુત્રનાં વચન સાંભળીને તે પોટ્ટિલ દેવે તેતલિપુત્ર અમાત્યને કહ્યું કે હે તેતલિપુત્ર! ભયભીત થયેલાને માટે પ્રવ્રજ્યા શરણુ ભૂત હોય છે આ ભાવરૂપ અર્થને તમે અનુષ્ઠાન દ્વારા સારી રીતે સમજો. એટલે કે તમે

कट्टु ' इति कृत्वा=इत्युक्त्वा ' दोच्चंपि ' द्वितीयमपि=द्वीतीयवारमपि एवं वदति, वदित्वा यस्या दिश प्रादुर्भूतः, तस्यामेव दिशि प्रतिगतः ॥ सू० ११ ॥

मूलम्-तएणं तस्स तेतलिपुत्तस्स सुभेणं परिणामेणं जाइसरणे समुप्पन्ने । तएणं तस्स तेतलिपुत्तस्स अयमेमेयारूवे अज्झत्थिए५ समुप्पज्जित्था-एवं खलु अहं इहेव जंबूद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे पोक्खलावई विजये पोंडरिगिणीए रायहाणीए महापउमे नामं राया होत्था । तएणं अहं थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव चोद्दसपुव्वाइं० बहूणि वासाणि सामन्नपरियायं० मासियाए संलेहणाए महासुक्के कप्पे देवे । तएणं अहं ताओ देवलोयाओ आयुक्खएणं३ इहेव तेतलिपुरे तेतलिस्स भद्दाए भारियाए दारगत्ताए पच्चायाए, तं सेयं खलु मम पुव्वदिट्ठाइं महव्वयाइं सयमेव उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, एवं संपेहेइ, संपेहित्ता सयमेव महव्वयाइं आरुहेइ, आरुहित्ता, जेणेव पमयवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि सुहनिसन्नस्स अणुचिंतेमाणस्स पुव्वाहीयाइं सामाइयमाइयाइं चोद्दसपुव्वाइं सयमेव अभिसमन्नागयाइं। तएणं तस्स तेतलिपुत्तस्स अणगारस्स सुभेणं परिणामेणं जाव तयावरणिज्जाणं कम्माणं खयोव-

---

कहकर उसने इसी बात को उससे दुबारा तिबारा भी कहा और कहकर बादमें वह पोट्टिला रूप धारी देव जिस दिशा से प्रकट हुआ था उसी दिशा तरफ चला गया ॥ सू० ११ ॥

પ્રવ્રજ્યા સ્વીકારી લો, આ પ્રમાણે કહીને તેણે બીજી અને ત્રીજી વખત પણ આ રીતે જ કહ્યું અને ત્યાર પછી તે પોટ્ટિલા રૂપ ધારી દેવ જે દિશા તરફથી પ્રગટ થયો હતો તે તરફ પાછો જતો રહ્યો. ॥ સૂત્ર " ૧૧ " ॥

समेणं कम्मरयविकरणकरं अपुव्वकरणं पविट्ठस्स केवलवर-णाणदंसणे समुप्पण्णे ॥ सू० १२ ॥

टीका—'तएणं तस्स' इत्यादि। ततः खलु तस्य तेतलिपुत्रस्य शुभेन परिणामेण जातिस्मरणम्=पूर्वभवज्ञानं समुत्पन्नम्। ततः खलु तस्य तेतलिपुत्रस्य अयमेतद्रूप आध्यात्मिकः प्रार्थितः चिन्तितः कल्पितो मनोगतः संकल्पः समुदपद्यत एवं खलु अहम् इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे महाविदेहेवर्षे पुष्कलावती विजये पुण्डरी-किण्यां राजधान्यां महापद्मो नाम राजा आसम्। ततः खलु अहं स्थविराणामन्तिके-मुण्डो भूत्वा यावत् 'चोद्दसपुव्वाइं०' चतुर्दशपूर्वाणि०=चतुर्दशपूर्वाणि अधीत-वान्, बहूनि वर्षाणि 'सामन्नपरियायं०' श्रामण्यपर्याय०=चारित्रपर्यायं पालित-

---

'तएणं तस्स तेतलिपुत्तस्स' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (तेतलिपुत्तस्स) तेतलिपुत्र को (सुभेणं परिणामेणं जाइ सरणे समुप्पन्ने)शुभपरिणाम से जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न हो गया। (तएणं तस्स तेतलिपुत्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए ५ समु-प्पज्जित्था–एवं खलु अहं इहेव जंबूदीवे दीवे महाविदेहे वासे पोक्खला-वई विजए पोंडरिगिणीए रायहाणीए महापउमे नामं राया होत्था) उसके प्रभाव से उसने अपने पूर्वभव को जान लिया–उसने जाना कि मैं इसी जंबूद्वीप नामके द्वीप में महाविदेह क्षेत्र में पुष्कलावती विजय में पुण्डरीकिणी नामकी राजधानी में महापद्म नाम का राजा था (तएणं अहं थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव चोद्दसपुव्वाइं० बहूणि

'तएणं तस्स तेतलिपुत्तस्स' इत्यादि

टीकार्थ–(तएणं) त्यारणाद (तेतलिपुत्तस्स) तेतलिपुत्रने (सुभेणं परिणामेणं जाइ सरणे समुप्पन्ने) शुभ परिणामथी जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न थई गयुं (तएणं तस्स तेतलिपुत्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए ५ समुप्पज्जित्था–एवं खलु अहं इहेव जम्बूदीवे दीवे महाविदेहे वासे पोक्खलावई विजए पोंडरिगिणीए रायहाणीए महापउमे नामं राया होत्था)

तेना प्रभावथी तेणे पोताना पूर्व भवने जाणी लीधो. तेने आ जातनुं ज्ञान थयुं के ते आ जम्बूद्वीप नामना द्वीपमां महा विदेह क्षेत्रमां पुष्कलावती विजयमां पुंडरीकिणी नामनी राजधानीमां महापद्म नामे राजा हतो.

(तएणं अहं थेराणंअंतिए मुंडे भवित्ता जाव चोद्दस पुव्वाइं० बहूणि वासाणि

वान् । अनन्तरं मासिक्या संलेखनया कालमासे कालं कृत्वा 'महासुक्के कप्पे' महाशुक्रे कल्पे=सप्तमे देवलोके 'देवे' देवः=देवत्वेनोत्पन्नः । ततः खलु अहं तस्माद् देवलोकात् 'आयुक्खएणं ३' आयुः क्षयेण ३=आयुर्भवस्थिति क्षयानन्तरम् इहैव तेतलिपुरे तेतलेरमात्यस्य भद्राया भार्याया 'दारगत्ताए' दारकत्वेन=पुत्रतया 'पच्चायाए' प्रत्यायातः=उत्पन्नः, तत्=तस्मात् श्रेयः ख मम पूर्वदृष्टानि=पूर्वभवपालितानि 'महव्वयाइं' महाव्रतानि=पञ्चमहाव्रतानि स्वयमेव उपसंपद्य विहर्तुम्, एवं संप्रेक्षते संप्रेक्ष्य स्वयमेव महाव्रतानि आरोहति=स्वीकरोति, आरुह्य, यत्रैव प्रमदवनम्=उद्यानं तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य 'असोगवरपाय-

---

वासाणि सामन्नपरियाय० मासियाए संलेहणाए महासुक्के कप्पे देवे-तएणं अहं ताओ देवलोयाओ आयुक्खएणं ३ इहेव तेतलिपुरे तेतलिस्स अमच्चस्स भद्दाए भारियाए दारगत्ताए पच्चायाए) वहां मैंने स्थविरों के पास मुंडित होकर दीक्षा धारण की थी और ग्यारह अंगों का अध्ययन कर विशिष्ट तपस्या की थी अन्त में अनेक वर्षोंतक श्रामण्य पर्यायका पालन कर एक मासकी संलेखना धारण कर मैं काल अवसर काल कर सातवां महाशुक्र कल्पमें देवकी पर्यायसे उत्पन्न हो गया। वहां की आयुष्य स्थिति भवस्थिति स्थितिके क्षयके अनन्तर मैं वहांसे चलकर इस तेतलिपुर में तेतलि अमात्य के यहां भद्रा भार्या की कुक्षि से पुत्र रूप में अवतरित हुआ। (तं सेयं खलु मम पुव्वदिट्ठाइं महव्वयाइं सयमेव उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए-एवं संपेहेइ, संपेहित्ता सयमेव महव्वयाइं आरुहेइ, आरुहित्ता जेणेव पमयवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ,

---

सामन्नपरियाय० मासियाए संलेहणाए महासुक्के कप्पे देवे-तएणं अहं ताओ देवलोयाओ आयुक्खएणं ३ इहेव तेतलिपुरे तेतलिस्स अमच्चस्स भद्दाए भारियाए दारगत्ताए पच्चायाए)

ત્યાં મેં મુંડિત થઈને સ્થવિરોની પાસેથી દીક્ષા ધારણ કરી હતી અને અગિયાર અંગોનું અધ્યયન કરીને વિશિષ્ટ તપસ્યા કરી હતી. છેવટે ઘણાં વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનું પાલન કરીને એક મહિનાની સંલેખના ધારણ કરી અને ત્યાર પછી કાળ અવસરે કાળ કરીને સાતમા મહા શુક્ર કલ્પમા દેવના પર્યાયથી હું જન્મ પામ્યો ત્યાંની ભવસ્થિતિ ૩ (ત્રણ) ના ક્ષય થવા બદલ હું ત્યાંથી આવીને આ તેતલિપુરમાં તેતલિ અમાત્યને ત્યાં ભદ્રા ભાર્યાના ગર્ભથી પુત્ર રૂપમાં જન્મ પામ્યો.

(तं सेयं खलु मम पुव्वदिट्ठाइं महव्वयाइं सयमेव उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए एवं संपेहेइ, संपेहित्ता सयमेव महव्वयाइं आरुहेइ, आरुहित्ता जेणेव पमयवणे

वस्स ' अशोकवरपादपस्य=अशोकवृक्षस्य ' अहे ' अधः परिणतशिलोपरि ' सुह-निसन्नस्स ' सुखनिषण्णस्य=सुखोपविष्टस्य ' अणुचिंतेमाणस्स ' अनुचिन्तयतः= पूर्वभवे कृतमध्ययनादिकं स्मरत ' पुव्वाहीयाइं ' पूर्वाधीतानि=पूर्वभवे पठितानि सामायिकादीनि चतुर्दशपूर्वाणि स्वयमेव ' अभिसमन्नागयाइं ' अभिसमन्वागतानि= ज्ञानविषयतया संजातानि । ततः खलु तस्य तेतलिपुत्रस्य अनगारस्य शुभेन परि-णामेन ' जाव ' यावत्-प्रशस्तैरध्यवसायैः, प्रशस्ताभिर्लेश्याभि र्विशुद्ध्यमानाभिः ' तयावरणिज्जाणं ' तदावरणीयानां=ज्ञानावरणीयादीनां कर्मणां ' खयोवसमेणं '

उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि सुहनि-सन्नस्स अणुचिंत्तेमाणस्स पुव्वाहीयाइं सामाइयमाइयाइं चोद्दसपुव्वाइं सयमेव अभिसमन्नागयाइं) इसलिये अब मुझे यही उचित है कि मैं पूर्व भव में पालित किये पंच महाव्रतों को अपने आप धारण करलूं। ऐसा उसने विचार किया। विचार करके फिर उसने अपने आपही महाव्रतों को धारण कर लिया। धारण करके फिर वह जहां प्रमदवन नामका उद्यान था वहां चला गया। वहां जाकर वह अशोक वृक्ष के नीचे रक्खे हुए पृथिवी शिलापट्टक पर पटाकार से परिणत शिला के ऊपर-आनन्द के साथ बैठ गया और पूर्व भव में कृत अध्ययन आदि का वार २ चिन्तवन करने लगा। इस तरह विचार करते २ उसके पूर्व भव में पठित सामायिक आदि चौदह पूर्व ज्ञान के विषय भूत बन गये। (तएणं तस्स तेतलिपुत्तस्स अणगारस्स सुभेणं परिणामेणं जाव तया-

---

उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिला पट्टयंसि सुहनिसन्नस्स अणुचिंत्तेमाणस्स पुव्वाहीयाइं सामाइयमाइयाइं चोद्दस पुव्वाइं सयमेव अभिसमन्नागयाइं)

એટલા માટે હવે મને એજ યોગ્ય લાગે છે કે પૂર્વ ભવમાં જે પાંચ મહાવ્રતોને મેં ધારણ કરેલાં તેને પોતાની મેળે જ ધારણ કરી લઉં. આ રીતે તેણે વિચાર કર્યો. વિચાર કર્યા બાદ તેણે પોતાની મેળે જ પાંચ મહાવ્રતો ધારણ કરી લીધાં ધારણ કર્યા પછી તે જ્યાં પ્રમદવન નામે ઉદ્યાન હતું ત્યાં જતો રહ્યો ત્યાં જઈને તે અશોક વૃક્ષની નીચે મૂકાયેલા પૃથિવી શિલા પટ્ટક ઉપર-પટ્ટાકાર રૂપથી પરિણત શિલા ઉપર-આનંદ અનુભવતો બેસી ગયો અને પૂર્વ ભવમાં જે કંઈ અધ્યયન કર્યું હતું તેનું વારવાર ચિંતન કરવા લાગ્યો. આ રીતે ચિંતન કરતાં કરતાં પૂર્વભવમા ભણેલા સામાયિક વગેરે ચૌદ પૂર્વજ્ઞાન તેને વિષયભૂત થઈ ગયાં.

क्षयोपशमेन=उदितानां कर्मणां क्षयेण अनुदितानां कर्मणामुपशमेन=निरुद्धोदयत्वेन 'कम्मरयविकरणकरं' कर्मरजो विकरणकरम् 'अपुव्वकरणं' अपूर्वकरणम्=अष्टमगुणस्थानम् प्रविष्टस्य तस्य केवलवरज्ञानदर्शनं समुत्पन्नम् ॥सू० १२॥

मूलम्–तएणं तेतलिपुरे नयरे अहा संनिहिएहिं वाणमंतरेहिं देवेहि देवीहिय देवदुंदुभीओ समाहयाओ, दसद्धवन्ने कुसुमे निवाडिए, दिव्वे देवगीयंगधव्वनिनाए कए यावि होत्था। तएणं से कणगज्झए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे एवं वयासी–एवं खलु तेतलिपुत्ते मए अवज्झाए मुंडे भवित्ता पव्वइए, तं गच्छामि णं तेतलिपुत्तं अणगारं वंदामि नमंसामि वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं विणएणं भुज्जो २ खामेमि, एवं संपेहेइ, संपेहित्ता ण्हाए० चाउरंगणीए

वरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं कम्मरयविहरणकरं अपुव्वकरणं पविट्ठस्स केवलवरनाणदंसणे समुप्पण्णे) इस प्रकार शुभ परिणामों से यावत् प्रसस्त अध्यवसायों से विशुद्धमान लेश्याओं से, उसके ज्ञानावरणी आदि कर्मों का क्षयोपशम–उदित कर्मों का क्षय एवं अनुदित कर्मों का उपशम–हो गया–सो इस के प्रभाव से वे कर्मरज को दूर करने वाले अष्टम अपूर्व करण नामके गुणस्थान में प्राप्त हो गये। बाद में बारहवें गुणस्थान के अंत में और तेरहवें गुणस्थान के प्रारंभ में उन्हें केवलज्ञान और केवलदर्शन उत्पन्न हो गया ॥सू० १२॥

(तएणं तस्स तेतलिपुत्तस्स अणगारस्स सुभेणं परिणामेणं जाव तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं कम्मरयविकरणकरं अपुव्वकरणं पविट्ठस्स केवलवरनाणदंसणं समुप्पण्णे)

આ રીતે શુભ પરિણામોથી, યાવત્ પ્રશસ્ત અધ્ય વસાયોથી, વિશુદ્ધમાન લેશ્યાઓથી તેના જ્ઞાનાવરણીય વગેરે કર્મોનો ક્ષયોપશમ–ઉદિત કર્મોનો ક્ષય અને અનુદિત કર્મોનો ઉપશમ થઈ ગયો. એના પ્રભાવથી તેઓ કર્મરજને વિકરણ કરનારા અષ્ટમ અપૂર્વ કરણ નામના ગુણસ્થાનમાં પ્રાપ્ત થઈ ગયા. ત્યાર પછી બારમા ગુણસ્થાનના અંતમાં અને તેરમા ગુણસ્થાનના પ્રારંભમાં તેમને કેવળજ્ઞાન અને કેવળ દર્શન ઉત્પન્ન થઈ ગયાં. ॥ સૂત્ર "૧૨" ॥

सेणाए जेणेव पमयवणे उज्जाणे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तेतलिपुत्ते अणगारं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं विणएणं भुज्जो२ खामेइ, नच्चासन्ने जाव पज्जुवासइ । तएणं से तेतलिपुत्ते अणगारे कणगज्झयस्स रन्नो तीसे य महइ महालयाए० धम्मं परिकहेइ। तएणं से कणगज्झए राया तेतलिपुत्तस्स केवलिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म, पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं सावगधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता समणोवासए जाए जाव अहिगय जीवाजीवे । तएणं तेतलिपुत्ते केवली बहूणि वासाइं केवलिपरियागं पाउणित्ता जाव सिद्धे । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं चोद्दसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते तिबेमि ॥ सू० १३ ॥

॥ चउद्दस अज्झयणं समत्तं ॥

टीका—' तएणं ' इत्यादि । ततः खलु तेतलिपुरे नगरे ' अहासंनिहिएहिं ' यथा संनिहितैः=आसन्नैः ' वाणमंतरेहिं ' वाणव्यन्तरैः देवैः देवीभिश्च देवदुन्दुभयः समाहताः=आकाशे देवैः देवीभिश्च देवदुन्दुभयो वादिता इत्यर्थः, ' दसद्धवण्णे कुसुमे निवाडिए' दशार्द्धवर्णं कुसुमं निपातितम्, अत्र जाति विवक्षायामेकवचनम्,

---

' तएणं तेतलिपुरे नयरे ' इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (तेतलिपुरे नयरे) तेतलिपुर नगरमें (अहासंनिहिएहिं वाणमंतरेहिं देवेहिं देवीहिय देवदुंदुभीओ समाहयाओ, दसद्धवन्ने कुसुमे निवाडिए, दिव्वे देवगीयगंधव्वनिनाए कए यावि

'तएणं तेतलिपुरे नयरे' इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तएणं) ત્યાર પછી (तेतलिपुरे नयरे) તેતલિપુર નગરમાં (अहा संनिहिएहिं वाणमंतरेहिं देवेहिं देवीहिय देवदुंदुभीओ समाहयाओ, दसद्धवन्ने कुसुमे निवाडिए, दिव्वे देवगीयगंधव्वनिनाए कए यावि होत्था)

दशार्द्धवर्णानि=पञ्चवर्णाणि अचित्तपुष्पाणि निपातितानि=वर्षितानि, दिव्यः=मनोहरः गीतगन्धर्व निनादः कृतश्चापि अभवत्। ततः खलु स कनकध्वजो राजा 'इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ' यस्याः कथाया लब्धार्थः मया दुष्टचिन्ता विषयीकृतस्तेतलिपुत्रः अमात्यः प्रव्रज्य प्रमदवने केवलवरज्ञानदर्शनसम्पन्नो जात इति वृत्तान्ताभिज्ञः सन् एवमवादीत्–एवं खलु तेतलिपुत्रो मया ' अवज्झाए ' अपध्यातः=दुष्टचिन्ताविषयीकृतः सन् मुण्डो भूत्वा प्रव्रजितः, 'तं' तत्=तस्मात् कारणात् नमस्यित्वा ' एयमट्ठं ' एतमर्थं=मया कृतमपमानरूपमर्थं विनयेन भूयो भूयः ' खामेमि ' क्षमयामि, एवं संप्रेक्षते, संप्रेक्ष्य ' ण्हाए ' स्नातः कृतस्नानः ' चाउरंगिणीए सेणाए ' चतुरङ्गिण्या सेनया सार्द्धं यत्रैव प्रमदवनं उद्यानं यत्रैव तेतलि-

---

होत्था) यथा संनिहित आसन्न भूत हुए वाण, व्यन्तर देवों ने और देवियों ने आकाश में देवदुन्दुभियां बजाई। पंचवर्ण के अचित्त कुसुमों की वृष्टि की। मनोहर गीत गधर्व निदान भी किया। (तएणं से कणगज्झए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे एवं वयासी) जब यह समाचार कनकध्वज राजा को ज्ञात हुआ मेरी दुष्ट विचारणा के विषय भूत बने हुए, तेतलिपुत्र अमात्य ने दीक्षित होकर प्रमदवन में केवल ज्ञान और केवलदर्शन प्राप्त कर लिया है–इस प्रकार का वृत्तान्त जब उसे मालूम पड़ा–तब उसने अपने मन में विचार किया (एवं खलु तेतलि पुत्ते मए अवज्झाए मुंडे भवित्ता पव्वइए, तं गच्छामि णं तेतलिपुत्तं अणगारं वंदामि नमंसामि, वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं विणएणं भुज्जो२ खामेमि एवं संपेहेइ–संपेहित्ता ण्हाए० चाउरंगिणीए सेणाए जेणेव पमयवणे उज्जाणे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेतलि

યથા સંનિહિત આસન્નભૂત થયેલા વાણવ્યંતર દેવોએ અને દેવીઓએ આકાશમાં દેવદુંદુભિઓ વગાડી, પાંચ રંગના અચિત્ત પુષ્પોની વર્ષા કરી અને મનોહર ગીત ગંધર્વ નિનાદ (ધ્વનિ) પણ કર્યો. (तएणं से कणगज्झए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे एवं वयासी) જ્યારે આ સમાચારોની જાણ રાજા કનકધ્વજને થઈ કે મારી દુષ્ટ વિચારણાને લીધે તેતલિપુત્ર અમાત્યે દીક્ષિત થઈને પ્રમદવનમાં કેવળજ્ઞાન અને કેવળ દર્શન પ્રાપ્ત કરી લીધા છે ત્યારે તેણે મનમા વિચાર કર્યો કે

(एवं खलु तेतलिपुत्ते मए अवज्झाए मुंडे भवित्ता पव्वइए तं गच्छामि णं तेतलिपुत्तं अणगारं वंदामि नमंसामि, वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं विणएणं भुज्जो २ खामेमि एवं संपेहेइ–सपेहित्ता ण्हाए० चाउरंगिणीए सेणाए जेणेव पमयवणे उज्जाणे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेतलिपुत्तं अणगारं

पुत्रोऽनगारस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य तेतलिपुत्रमनगारं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एतमर्थं=स्वकृतापराधलक्षणं विनयेनभूयो भूयः क्षमयति= क्षमां कारयति, तथा 'नच्चासन्ने०' नात्यासन्ने नातिदूरे यावत् पर्युपास्ते= सेवां करोति। ततः खलु स तेतलिपुत्रोऽनगारः कनकध्वजाय राज्ञे तस्यां च

पुत्तं अणगारं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं विणएणं भुज्जो २ खामेइ नच्चासन्ने जाव पज्जुवासइ) मैंने तेतलिपुत्र को अपनी दुष्ट चिन्ता का विषयभूत बनाया है-सो वह मुंडित होकर दीक्षित हो गया है। इसलिये मैं अब उसके पास जाऊँ और उन तेतलिपुत्र अनगार को वंदना करूं-नमस्कार करूँ। वंदना नमस्कार कर मैं अपने द्वारा किये अपमान रूप अपराधकी बडे विनय के साथ बार२ उनसे क्षमा मांगूं- इस प्रकार ज्योंही उसने विचार किया-कि उसी समय वह उठा और स्नान किया-बाद में अपनी चतुरंगीनी सेना के साथ जहां प्रमदवन था -उसमें जहां तेतलिपुत्र अनगार विराजमान थे वहां पहुँचा-वहां पहुँच कर उसने तेतलिपुत्र अनगार को वंदना की नमस्कार किया। वंदना नमस्कार करके फिर अपने द्वारा कृत अपमान रूप अपराध की बडे विनय के साथ बार २ उनसे क्षमा कराई और समुचित स्थान पर बैठ कर उनकी सेवा सुश्रूषा की (तएणं से तेतलिपुत्ते अणगारे कणगज्झ-

वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं विणएणं भुज्जो २ खामेइ नच्चासन्ने जाव पज्जुवासइ)

તેતલિપુત્ર અમાત્યને મેં પોતાની દુષ્ટ ચિંતાનો વિષયભૂત (લક્ષ્ય) બનાવ્યો છે તેથી જ તે મુંડિત થઈને દીક્ષિત થઈ ગયો છે. એટલા માટે હવે હું તેની પાસે જાઉં અને તેતલિપુત્ર અનગારને વંદન કરૂં નમસ્કાર કરૂં વંદના અને નમસ્કાર કરીને હું મારા વડે થઈ ગયેલા અપમાન રૂપ અપરાધ બદલ બહુ જ નમ્રપણે તેમની પાસેથી ક્ષમા યાચના કરૂં આ રીતે વિચાર થતાંની સાથે તરત જ તે ઊભો થયો અને સ્નાન કર્યું ત્યાર પછી પોતાની ચતુરંગિણી સેનાને સાથે જ્યાં પ્રમદવન હતું અને તેમાં પણ જ્યાં તેતલિપુત્ર અનગાર વિરાજમાન હતા ત્યાં પહોંચ્યો ત્યાં પહોંચીને તેણે તેતલિપુત્ર અનગારને વંદના કરી અને નમસ્કાર કર્યા. વંદના અને નમસ્કાર કરીને તેણે તેના વડે થઈ ગયેલા અપમાન રૂપ અપરાધની બહુ જ નમ્રપણે ક્ષમા માગી અને ત્યાર પછી તેણે ઉચિત સ્થાન ઉપર બેસીને તેમની સેવા તેમજ સુશ્રૂષા કરી.

(तएणं से तेतलिपुत्ते अणगारे कणगज्झयस्स रण्णो तीसे य महइ महाल- याए० धम्मं परिकहेइ)

'महइमहालयाए०' महातिमहत्यां परिषदि धर्मं 'परिकहेइ' परिकथयति=उपदिशति। ततः खलु स कनकध्वजो राजा तेतलिपुत्रस्य केवलिनोऽन्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य पञ्चाणुव्रतिकं सप्तशिक्षाव्रतिकं इत्येवं द्वादशविधं श्रावकधर्मं प्रतिपद्यते, प्रतिपद्य श्रमणोपासको जातः। कीदृशः?—अभिगत जीवा—जीवः=परिज्ञात-

---

यस्स रण्णो तीसे य महइमहालयाए० धम्मं परिकहेइ) इसके बाद उन तेतलिपुत्र अनगार केवली ने कनकध्वजराजा को उपस्थित परिषद् को विशाल धर्म का उपदेश दिया—(तएणं से कणज्झझए राया तेतलिपुत्तस्स केवलिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं सावगधम्मं पडिवज्जइ पडिवज्जित्ता समणोवासए जाए जाव अहिगयजीवाजीवे। तएणं तेतलिपुत्ते केवली बहूणि वासाइं केवलिपरियागं पाउणित्ता जाव सिद्धे। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं चोद्दसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि) उपदेश सुनने के बाद कनकध्वज राजाने तेतलिपुत्र केवलि के समीपश्रुतचारित्ररूप धर्म के प्रभाव से प्रेरित होकर और उस श्रुत धर्म का अच्छो तरह हृदय से विचार कर पांच अणुव्रत एवं सात शिक्षा रूप श्रावक धर्म धारण कर लिया। धारण करके वे श्रमणोपासक बन गये—यावत् जीव और अजीव तत्त्व का क्या स्वरूप है इसके भी वे ज्ञाता हो गये। बाद में तेतलिपुत्र केवलीने अनेक वर्षां तक केवलि

ત્યાર પછી તે તેતલિપુત્ર અનગાર કેવળીએ કનકધ્વજ રાજાને તેમજ ઉપસ્થિત પરિષદને સવિસ્તર ધર્મ વિષે ઉપદેશ આપ્યો.

(तएणं से कणगज्झए राया तेतलिपुत्तस्स केवलिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं सावगधम्मं पडिविज्जइ पडिविसज्जित्ता समणोवासए जाए जाव अहिगयजीवाजीवे। तएणं तेतलिपुत्ते केवलि बहूणि वासाइं केवलिपरियागं पाउणित्ता जाव सिद्धे। एवं खलु जंबू। समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं चोद्दसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि)

ઉપદેશ સાંભળીને કનકધ્વજ રાજાએ તેતલિપુત્ર કેવળિના શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મના પ્રભાવથી પ્રેરાઇને તે શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મ વિષે મનમાં સારી રીતે વિચાર કરીને તેમની પાસેથી પાંચ અણુવ્રત અને સાત શિક્ષારૂપ શ્રાવકધર્મ ધારણ કરી લીધા. ધારણ કરીને તેઓ શ્રમણોપાસક થઈ ગયા અને યાવત્ જીવ તેમજ અજીવતત્ત્વનું સ્વરૂપ શું છે? તેનું પણ તેઓને જ્ઞાન થઈ ગયું. ત્યાર પછી તેતલિપુત્ર કેવળીએ ઘણાં વર્ષો સુધી કેવળી પર્યાયનું પાલન કર્યું અને આમ તેઓએ યાવત સિદ્ધપદ

सकलजीवाजीवतत्त्वज्ञश्चाऽपि जातः । ततः खलु तेतलिपुत्रः केवली बहूनि वर्षाणि केवलिपर्यायं पालयित्वा यावत् सिद्धः=मोक्षं गतः ।

सुधर्मास्वामी माह—एवं खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन भगवता महावीरेण चतुर्दशस्य ज्ञाताध्ययनस्य 'अयमट्ठे' अयमर्थः=पूर्वोक्तो भावः मज्ञप्तः=प्ररूपितः, 'त्ति बेमि' इति ब्रवीमि=भगवत्समीपे यथा श्रुतं तथा त्वां प्रतिकथयामि । एतेन अध्ययनेन इदं मायातं यत्–प्राणिनो यावद् दुःखं मानभ्रंशं च न प्राप्नुवन्ति तावद् बहुशः प्रबोधिता अपि धर्मं न स्वीकुर्वन्ति, यथा तेतलिपुत्रः ॥ सू० १३ ॥

इति श्री–विश्वविख्यात–जगदल्लभ–प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितक-
लापालापक–प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक–वादिमानमर्दक–श्रीशाहूच्छ-
त्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त–'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित–कोल्हापुरराज-
गुरु–बालब्रह्मचारि–जैनाचार्य–जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री–घासीलाल-
व्रतिविरचितायां 'ज्ञाताधर्मकथाङ्ग' सूत्रस्यानगारधर्मामृतव-
र्षिण्याख्यायां व्याख्यायां चतुर्दशमध्ययनं संपूर्णम् ॥१४॥

पर्याय का पालन कर यावत् सिद्ध पद प्राप्त कर लिया। सुधर्मास्वामी कहते हैं–हे जंबू ! श्रमणभगवान महावीर ने इस चौदहवे ज्ञानाध्ययन का यह पूर्वोक्तरूप से भाव अर्थ प्ररूपित किया है। सो जैसा मैंने उन भगवान के समीप में सुना है यह वैसा ही तुमसे कहा है। इस अध्ययन से हमें यह ज्ञान हो जाता है कि संसार में तेतलिपुत्र की तरह ऐसे भी प्राणी हैं कि वे जब तक दुःख और अपमान को नहीं पालते हैं तब तक अनेक बार प्रतिबोधित करने पर भी–धर्म को स्वीकार नहीं करते हैं ॥ सू० १३ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर पूज्य श्री घासीलालजी महाराज कृत "ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र" की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्याका चौदहवां अध्ययन समाप्त ॥ १४ ॥

મેળવી લીધું સુધર્મા સ્વામી કહે છે કે હે જંબૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ ચૌદમા જ્ઞાતાધ્યયનનો પૂર્વોક્ત રૂપથી ભાવ–અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે. જેવો અર્થ મેં તેઓશ્રી પાસેથી સાંભળ્યો છે તેવોજ તમને કહ્યો છે. આ અધ્યયનથી અમને આ જાતનું જ્ઞાન થાય છે કે સંસારમાં તેતલિપુત્રની જેમ એવાં પણ પ્રાણીઓ છે કે તેઓ જ્યાં સુધી દુઃખી અને અપમાનિત થતા નથી ત્યાં સુધી ઘણા વખત પ્રતિબોધિત કરવા છતા ધર્મને સ્વીકારતા નથી ॥ સૂત્ર ' ૧૩ " ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનું ચૌદમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૪ ॥

॥ अथ पञ्चदशमध्ययनं प्रारभ्यते ॥

गतं चतुर्दशमध्ययनं सम्प्रति पञ्चदशमारभ्यते, पूर्वाध्ययनेऽपमानाद् विषयत्यागः प्रदर्शितः, अत्र तु स जिनोपदेशाद् भवतीति प्रतिपादयिष्यतेऽतस्तस्य सद्भावेऽर्थप्राप्तिः, असद्भावेत्वनर्थप्राप्तिर्भवतीत्येवं पूर्वेण सम्बन्धः तत्रेदमादिसूत्रम्–' जइणं भंते ' इत्यादि ।

मूलम्–जइणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं चोद्दसमस्स नायज्झणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते पन्नरसमस्स णं भंते णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था, पुन्नभद्दे चेइए जियसत्तू राया । तत्थ णं चंपाए नयरीए धण्णे णामं सत्थवाहे होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए । तीसे णं चंपाए नयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अहिच्छत्ता नामं नयरी होत्था,

---

–ःनन्दिफल नामका पन्द्रहवां अध्यायन प्रारं ः–

चौदहवां अध्ययन समाप्त हो चुका–अब पन्द्रहवां अध्ययन प्रारंभ होता है। पूर्व अध्ययन में तेतलि प्रधान के आख्यान द्वारा अपमान से भी विषयों का त्याग कर दिया जाता है यह बात समझाई गई है। इस अध्ययन में यह विषय त्याग जिनके उपदेश से होता है यह कहा जावेगा। इस लिये उसके सद्भाव में अर्थ प्राप्ति और असद्भाव में अनर्थ प्राप्ति होती है इस तरह से पूर्व अध्ययन के साथ इसका संबन्ध बन जाता है:–जइणं भंते ! समणेणं इत्यादि ॥

નંદિફળ નામે પંદરમું અધ્યયન પ્રારંભ

ચૌદમું અધ્યયન પુરૂ થયું છે. હવે પંદરમુ અધ્યયન શરૂ થાય છે. પહેલાંના અધ્યયનમાં તેતલિપ્રધાનના આખ્યાન વડે એ વાત સમજાવવામાં આવી છે કે અપમાનથી પણ વિષયોનો ત્યાગ કરવામાં આવે છે. આ અધ્યયનમાં આ વિષય ત્યાગ જેમના ઉપદેશથી થાય છે તે વિષે કહેવામાં આવશે. એટલા માટે તેના સદ્ભાવમાં અર્થ પ્રાપ્તિ અને અસદ્ભાવમા અનર્થ પ્રાપ્તિ હોય છે. આ રીતે પૂર્વ અધ્યયનની સાથે આનો સંબધ સમજી શકાય છે.

ટીકાર્થ–'जइणं भंते ! समणेणं' इत्यादि ।

रिद्धत्थिमियसमिद्धा वन्नओ। तत्थ णं अहिच्छत्ताए नयरीए कणगकेऊ नामं राया होत्था, महया वन्नओ। तस्स धण्णस्स सत्थवाहस्स अन्नया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए कप्पिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था सेयं खलु मम विपुलं पणियभंडमायाए अहिच्छत्तं नगरिं वाणिज्जाए गमित्तए, एवं संपेहेइ संपेहित्ता गणिमंच४ चउव्विहं भंडं गेण्हइ, सगडीसागडं सज्जेइ सज्जित्ता सगडीसागडं भरेंति२ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! चंपाए नगरीए सिंघाडग जाव पहेसु घोसणं घोसेह ॥ सू० १ ॥

टीका—जम्बूस्वामी पृच्छति—यदि खलु भदन्त! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिमानधेयं स्थानं सम्प्राप्तेन चतुर्दशस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः=पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः तर्हि पञ्चदशस्य ज्ञाताध्ययनस्य श्रमणेन भगवता महा-

---

टीकार्थ—जंबूस्वामी पूछते हैं कि (जइणं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्ते णं चोद्दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते पन्नरसमस्स णं भंते णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्ते णं के अट्ठे पण्णत्ते) भदंत! यदि श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मोक्षप्राप्त कर चुके हैं चौदहवें ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्रतिपादित किया है—तो हे भदंत! मुक्ति प्राप्त हुए उन्हीं श्रमण भगवान

જંબૂ સ્વામી પૂછે છે કે—

(जइणं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं चोद्दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते पन्नरसमस्स णं भंते णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते)

હે ભદંત! જે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે—કે જેઓ મોક્ષ પ્રાપ્ત કરી ચુક્યા છે-ચૌદમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપથી અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે તો હે ભદંત! મુક્તિ પ્રાપ્ત કરેલા તે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પંદરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો શો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે.

वीरेण यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मस्वामी कथयति–एवं खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये चम्पा नाम नगर्यासीत् । तत्र पूर्णभद्र चैत्यं जितशत्रू राजा चाभवत् । तत्र खलु चम्पायां नगर्यां धन्यो नाम सार्थवाह आसीत् । स कीदृशः ? इत्याह–आढ्यो यावद् अपरिभूतः प्रभूतशक्तिशालीत्यर्थः । तस्या खलु चम्पाया नगर्या उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे अहिच्छत्रा नाम नगर्यासीत् । सा कीदृशी?–त्याह–' रिद्धत्थिमियसमिद्धा ' ऋद्धस्तिमितसमृद्धा, तत्र ऋद्धा=नभः स्पर्शिबहु-प्रासादयुक्ता, स्तिमिता = स्वपरचक्रभयरहिता, समृद्धा=धनधान्यादि परिपूर्णा, ' वण्णओ ' वर्णकः=नगरी वर्णनपाठोऽत्रवाच्यः, स तु औपपातिकसूत्रादवसेयः । तत्र खलु अहिच्छत्रायां नगर्यां कनककेतुर्नाम राजाऽऽसीत् । ' महया वण्णओ '

महावीर ने पन्द्रहवें ज्ञाताध्ययन का क्या अर्थ निरूपित किया है। (एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपानामं नयरी होत्था) इस प्रकार जंबू स्वामी के प्रश्न के समाधान निमित्त श्री सुधर्मा स्वामी उन से कहते हैं कि जंबू ! सुनो–तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है–उस काल और उस समय में चंपा नाम की नगरी थी (पुन्नभद्दे चेइए जियसत्तू राया, तत्थ णं चंपाए नयरीए धण्णे नामे सत्थवाहे होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए) पूर्णभद्र नाम का उसमें उद्यान था। जितशत्रु नामका राजा उसमें रहता था। उसी चंपा नगरी में धन्य नामका सार्थवाह भी रहता था। यह जन धन धान्यादि संपन्न था। एवं लोकमान्य भी था। (तीसे णं चंपाए नयरीए उत्तर पुरत्थिमे दिसीभाए अहिच्छत्ता नामं नयरी होत्था, रिद्धत्थिमिय समिद्धा वन्नओ–तत्थणं अहिच्छत्ताए

(एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था)

આ રીતે જંબૂ સ્વામીના પ્રશ્નના સમાધાન માટે શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જંબૂ ! સાંભળો, તમારા પ્રશ્નનો જવાબ આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે ચંપા નામે નગરી હતી.

(पुन्नभद्दे चेइए जियसत्तू राया, तत्थ णं चंपाए नयरीए धण्णे नामे सत्थवाहे होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए)

તેમા પૂર્ણ ભદ્ર નામે ઉદ્યાન હતું. તેમાં જિતશત્રુ નામે રાજા રહેતો હતો. ધન્ય નામે એક સાર્થવાહ પણ તે ચંપા નગરીમા જ રહેતો હતો. તે જન, ધન, ધાન્ય, વગેરેથી સંપન્ન હતો, તેમજ લોક માન્ય પણ હતો.

(तीसेणं चंपाए नयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अहिच्छत्ता नामं नयरी होत्था, रिद्धत्थिमिय समिद्धा वन्नओ–तत्थणं अहिच्छत्ताए नयरीए कणगकेउ नामं राया होत्था महया वन्नओ)

महा० वर्णक=स च 'महयाहिमवंतमहंतमलयमंदरमहिंदसारे' महाहिमवन्महामलयमन्दरमहेन्द्रसारः, इत्यादिरूपोऽत्र विज्ञेयः। तस्य धन्यस्य सार्थवाहस्य अन्यदा कदाचित् पूर्वरात्रापररात्रकालसमये=रात्रे पश्चिमे प्रहरे अयमेतद्रूप आध्यात्मिकश्चिन्तितः प्रार्थितः कल्पितो मनोगतः संकल्पः=विचारः समुदपद्यत-श्रेयः=उचितं खलु मम विपुल=प्रचुरं 'पणियभंडं' पणितभाण्ड=गणिमादिक्रय विक्रयवस्तुभाण्डम् 'आयाए' आदाय=गृहीत्वा अहिच्छत्रां नगरीं वाणिज्याय गन्तुम्, गणिमादिपण्यवस्तुजातं गृहीत्वा व्यापारायाहिच्छत्रां नगर्यां मया गन्तव्यमिति भावः। एवं 'संपेहेइ' संप्रेक्षते=विचारयति, संप्रेक्ष्य गणिमं ४-गणिमं धरिमं मेयं परिच्छेद्य चेत्येवंरूपं चतुर्विधं भाण्डं=पण्यवस्तुजातं गृह्णाति, गृहीत्वा 'सगडीसागडं' शकटी-

---

नयरीए कणगकेऊ नाम राया होत्था, महया वन्नओ) उस चंपा नगरी के ईशान कोण में अहिच्छत्रा नामकी नगरी थी। यह नभस्तलस्पर्शी प्रासादों से युक्त स्वचक्र और परचक्र के भयसे रहित तथा धन धान्य आदि विभव से विशेष समृद्ध थी। नगरी के वर्णन का पाठ औपपातिक सूत्र में जैसा नगरी का वर्णन किया गया है वैसा ही यहां जनना चाहिये। उस अहिच्छत्रा नगरी में कनककेतु नामका राजा रहता था। इस राजा के वर्णन में "महया हिमवंतमहंतमलयमंदरमहिंदसारे" इत्यादिरूप पाठ यहां लगा लेना चाहिये। (तस्स धन्नस्स सत्थवाहस्स अन्नया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए, कप्पिए, मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था-सेयं खलु मम विउलं पणियभंडमायाए अहिच्छत्तं नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए, एवं संपेहेइ, संपेहित्ता गणिमं च ४ चउव्विहं भंडे गेण्हइ, सगडी सागडं सज्जेइ स-

---

તે ચંપા નગરીના ઈશાન કોણમા અહિચ્છત્રા નામે નગરી હતી. આકાશને સ્પર્શતા એવા ઊંચા પ્રાસાદોથી આ નગરી યુક્ત હતી તેમજ સ્વચક્ર અને પરચક્રના ભયથી રહિત તથા ધન ધાન્ય વગેરે વૈભવથી આ નગરી સવિશેષ સમૃદ્ધ હતી. ઔપપાતિક સૂત્રમા નગરીના વિષે જેવુ વર્ણન કરવામાં આવ્યુ છે તેવું જ અહીં પણ જાણી લેવું જોઈએ તે અહિચ્છત્રા નગરીમાં કનકકેતુ નામે રાજા રહેતો હતો, આ રાજાના વર્ણન માટે (महया हिमवत्त-महत-मलय मंदर-महिंदसारे) વગેરે પાઠ અહીં સમજવો જોઈએ.

(तस्स धन्नस्स सत्थवाहस्स अन्नया कयाइं, पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए, पत्थिए, कप्पिए, मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था-सेयं खलु मम विउलं पणियभंडमायाए अहिच्छत्तं नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए एवं संपेहेइ, संपेहित्ता गणिमं च ४ चउव्विहं भंडे गेण्हइ सगडीसागडं सज्जेइ, सज्जित्ता

शाकटं=लघुमहच्छकटसमूह सज्जयति,=प्रगुणी करोति सज्जयित्वा शकटीशाकटं भरेति. भृत्वा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, आहूय एवमवादीत्-गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः! चम्पाया नगर्याः 'सिंघाडगजावपहेसु' शृङ्गाटक-त्रिकचतुष्क चत्वरमहापथपथेषु घोषणाम्=घोषयत ॥ सू०१ ॥

ज्जित्ता सगडीसागडं भरेइ भरित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छहणं तुब्भे देवाणुप्पिया! चंपाए नयरीए सिंगाडग जाव पहेसु घोसणं घोसेह) एक दिन की बात है कि उस धन्यसार्थवाह को रात्रि के पश्चिम प्रहर में यह इस प्रकार का आध्यात्मिक चिन्तित, प्रार्थित कल्पित मनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ कि मैं गणिमादि रूप विपुल पण्य वस्तु को लेकर व्यापार के लिये जो अहिच्छत्रा नगरी में जाऊँ तो बहुत अच्छी बात है। इस प्रकार उसने विचार किया-ऐसा विचार करके उसने गणिम, धारिम, मेय और परिच्छेद्य रूप चार प्रकार का भाण्ड लिया। भाण्ड लेकर फिर उसने गाड़ी और गाड़ों को तैयार करवाया-जब वे गाडी गोड़े तैयार हो चुके तब उसने उस पण्य (विक्रेय वस्तु) को उनमें भरा-भर कर फिर उसने अपने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया बुलाकर उसने ऐसा कहा-हे देवानुप्रियों! तुम लोग जाओ-और चंपा नगरी के शृंगाटक, त्रिक, चतुष्क, चत्वर, महापथ इन सब मार्गों में घोषणा करो। क्या घोषणा करना-यह बात नीचे के सूत्र से सूत्रकार प्रदर्शित करते हैं॥ सू० १ ॥

सगडीसागडं भरेइ, भरित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छहणं तुब्भे देवाणुप्पिया। चंपाए नयरीए सिंघाडग जाव पहेसु घोसणं घोसेह)

એક દિવસે તે ધન્ય સાર્થવાહને રાત્રિના છેલ્લા પહોરમાં આ જાતને આધ્યાત્મિક, ચિંતિત, પ્રાર્થિત, કલ્પિત, મનોગત સંકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે પુષ્કળ પ્રમાણમાં ગણિમ વગેરે વેચાણની વસ્તુઓ લઈને વેપાર ખેડવા માટે જો હું અહિચ્છત્રા નગરીમાં જાઉં તો બહુ સારુ થાય. આ રીતે તેણે વિચાર કર્યો. આવો વિચાર કરીને તેણે ગણિમ, ધરિમ, મેય અને પરિચ્છેદ્ય રૂપ ચાર પ્રકારની વસ્તુઓ વાસણોમાં ભરી. ચારે જાતની વસ્તુઓ વાસણોમાં ભરીને તેણે ગાડી તેમજ ગાડાંઓને તૈયાર કરાવ્યા જ્યારે ગાડી અને ગાડાંઓ તૈયાર થઈ ચૂક્યાં ત્યારે તેણે તે વેચાણની વસ્તુઓને ગાડી અને ગાડાંઓમાં મૂકી ત્યાર પછી તેણે પોતાના કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે જાઓ, અને ચંપા નગરીના શૃંગાટક, ત્રિક, ચતુષ્ક, ચત્વર, મહાપથ આ બધા માર્ગોમાં ઘોષણા કરો. ઘોષણા કરતાં શું કહેવું તે નીચેના સૂત્ર વડે સૂત્રકાર પ્રકટ કરે છે. ॥ સૂત્ર "૧" ॥

घोषणास्वरूपमाह-'एवं खलु' इत्यादि ।

मूलम्-एवं खलु देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे विउलं पणियं मायाए इच्छइ अहिच्छत्तं नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए तं जो णं देवाणुप्पिया ! चरए वा चीरिए वा चम्मखंडिए वा भिच्छुंडे वा पंडुरंगे वा गोयमे गोव्वइए वा गिहिधम्म-चिंतए वा अविरुद्ध विरुद्धवुड्ढसावगरत्तपडनिग्गंथप्पभिइपा-संडत्थे वा गिहत्थे वा धण्णेणं सत्थवाहेणं सद्धिं अहिच्छत्तं नगरिं गच्छइ तस्स णं धण्णे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तगं दलाइ अणुवाहणस्स उवाहणाओ दलयइ अकुंडियस्स कुंडियं दलयइ अपत्थयणस्स पत्थयणं दलयइ अपक्खेवगस्स पक्खेवं दलयइ अंतराऽविय से पडियस्स वा भग्गलुग्गस्स साहेज्जं दलयइ सुहंसुहेण य णं अहिगच्छत्तं संपावेइ तिकट्टु दोच्चंपि तच्चंपि घोसेह घोसित्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तएणं ते कोडुंबिय पुरिसा जाव एवं वयासी-हंदिसुणंतु भवंतो चंपानगरीवत्थव्वा वहवे चरगा य जाव पच्चपिणंति ॥सू०२॥

टीका—एवं खलु हे देवानुप्रियाः ! धन्यः सार्थवाहः विपुलान् पणितभाण्डान् 'आयाए' आदाय इच्छति अहिच्छत्रां नगरीं 'वाणिज्जाए' वाणिज्याय=

'एवं खलु देवाणुप्पिया' इत्यादि ।

टीकार्थ-(एवं खलु देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे विउलं पणियं मायाए इच्छइ अहिच्छत्तं नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए) हे देवाणुप्रियो !

एवं खलु देवाणुप्पिया इत्यादि ।

(एवं खलु देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे विउलं पणियं मायाए इच्छइ अहिच्छत्तं नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો શ્રૃંગાટક વગેરે માર્ગોમાં આ જાતની ઘોષણા

व्यापाराय गन्तुं तत्=तस्मात् यः खलु हे देवानुप्रिया! कोऽपि धन्येन सार्थवाहेन सार्द्धमहिच्छत्रां नगरीं 'गच्छती' त्युत्तरेण सम्बन्धः, कोऽसौ, यस्तेन सार्द्धं गच्छेदित्याह-'चरए' इत्यादिना 'चरए वा' चरकः=गृहस्थस्य गृहे निष्पन्नस्यौदनादेर्योऽग्रभागो दानार्थं पृथक्कृत्य स्थाप्यते तस्य भिक्षावृत्त्याग्राहकः, 'चीरिए वा' चीरिकमार्गपतितशटितचीवरपरिधारकः, 'चम्मखंडिए वा' चर्मखण्डिकः=चर्मधारकः, 'भिच्छुंडे वा' भिक्षोण्डः=अन्यानीतभिक्षान्नभोजी, 'पंडुरंगे वा' पाण्डुराङ्गः=भस्मलिप्तशरीरः, 'गोयमे वा' गौतमः=वृषभमधिकृत्य कणभिक्षाग्राही, 'गोव्वइए वा' गोव्रतिकः=गोचर्यानुकारी यथा यथा गौः स्थानासनादिक्रियां करोति तथा तथा सोऽपि करोतीति भावः, 'गिहिधम्मचिंतए वा' गृहिधर्मचिन्तकः=गृहिणो=गृहस्थस्य धर्मो गृहिधर्मस्तं चिन्तयतीति तथा, 'गृहस्थधर्मएवश्रेयान् नान्यः' उक्तश्च—

तुम लोग श्रृंगाटक आदि मार्गों में खड़े होकर इस प्रकार की घोषणा करना-कि धन्य सार्थवाह विपुल मात्रा में पणित (विक्रय वस्तु) को लेकर अहिच्छत्रा नगरी में व्यापार के लिये जाना चाहता है (तं जो णं देवाणुप्पिया! चरए वा चीरिए वा चम्मखंडिए वा भिच्छुडे वा पंडुरंगे वा गोयमे गोव्वइए वा गिहिधम्मचिंतए वा अविरुद्धविरुद्ध वुड्ढ सावगरत्तपडनिग्गंथप्पभिइपासंडत्थे वा गिहत्थे वा धण्णेणं सत्थवाहेणं सद्धिं अहिच्छत्तं नयरिं गच्छइ तस्स णं धण्णे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तगं दलाइ) इसलिये हे देवाणुप्रियो! जो भी कोई धन्य सार्थवाह के साथ अहिच्छत्रा नगरी जाना चाहता हो-चाहे वह चरक हो चीरिक हो, चर्मखंडधारी हो, भिक्षोण्ड हो, पाण्डुरङ्ग हो, गौतम हो, गोव्रतिक हो, गृहस्थधर्म चिन्तक हो, अविरुद्ध हो, विरुद्ध हो, वृद्ध-

---

કરો કે ધન્ય સાર્થવાહ પુષ્કર પ્રમાણમાં પણિત (વેચાણની વસ્તુઓ) લઈને અહિચ્છત્રા નામે નગરીમાં વેપાર ખેડવા માટે જવા ઈચ્છે છે

(तं जो णं देवाणुप्पिया! चरए वा चीरिए वा चम्मखंडिए वा भिच्छुडे वा पंडुरंगे वा गोव्वइए वा गिहिधम्मचिंतए वा अविरुद्धविरुद्धवुड्ढसावगरत्तपडनिग्गंथप्पभिइ पासंडत्थे वा गिहत्थे वा धण्णेणं सत्थवाहेणं सद्धिं अहिच्छत्तं नयरिं गच्छइ-तस्स णं धण्णे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तगं दलाइ)

એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયો! ધન્ય સાર્થવાહની સાથે જે કોઈ જવા ઈચ્છતો હોય-ભલે તે ચરક હોય, ચીરિક હોય, ચર્મ ખંડ ધારી હોય, ભિક્ષોંડ હોય, પાડુરંગ હોય, ગૌતમ હોય, ગોવ્રતિક હોય, ગૃહસ્થ ધર્મ ચિંતક હોય,

"गृहाश्रमसमो धर्मो,-न भूतो न भविष्यति ।
पालयन्ति नराः शूराः, क्लीबा पाषण्डमाश्रिताः ॥ १ ॥"

इत्यभिसन्धाय तथा चिन्तनशीलः, 'अविरुद्धविरुद्धवुड्ढसावगरत्तपडनिग्गंथप्पभिइपासंडत्थे वा' अविरुद्धविरुद्धवृद्धश्रावकरक्तपटनिर्ग्रन्थप्रभृतिपाषण्डस्थः तत्र-'अविरुद्ध' अविरुद्धः विरुद्धः कस्मादपीत्यविरुद्धः=विनयवादी क्रीयावादीत्यर्थः, परलोकाभ्युपगमात्, 'विरुद्ध' विरुद्धः विरुद्धः = विरुद्धवादोऽस्यास्तीति-अर्श आदिग्वादच्, विरुद्धवादी आक्रियावादीत्यर्थः परलोकानभ्युपगमात्, 'वुड्ढसावग' वृद्धश्रावकः=ब्राह्मणः, वृद्धः=वृद्धकालिको यः श्रावकः सः, भरतादिकाले पूर्वं श्रावकसत्त्वेन पश्चाद् ब्राह्मणत्वभावात्, 'रत्तपड' रक्तपट=गैरिकवस्त्रधारीपरिव्राजकः, 'णिग्गंथप्पभिइ' निर्ग्रन्थप्रभृतिः = साधुप्रभृतिरन्यः कोऽपिकपिलादिः पाषण्डस्थो वा गृहस्थो वा, इति यदि एषु यः कोऽपिगच्छेत् तस्मै खलु धन्यः सार्थवाहः अच्छत्रकाय=छत्ररहिताय छत्रकं ददाति=दास्यतीति भावः, एवं सर्वत्र विज्ञेयम् 'अणुवाहणस्स' अनुपानहे=पादत्राणरहिताय 'उवाहणाओ' उपानहौ ददाति, अकुण्डिकाय=जलपात्ररहिताय कुण्डिकां=जलपात्रं ददाति । 'अपत्थयणस्स' अपथ्यदनाय शम्बलरहिताय 'पत्थयणं' पथ्यदनं = शम्बलं ददाति । 'अपक्खेवगस्स' अप्रक्षेपकाय, प्रक्षेपकः = पूर्तिद्रव्यं, तद्रहिताय मध्यमार्गे न्यून शम्बलाय प्रक्षेपकं=शम्बलपूरकं द्रव्यं ददाति । 'अंतरावि य' अन्तराऽपि च= मार्गान्तरालेऽपि च 'से' तस्मै पतिताय = वाहनाद् पादादिस्खलनेन वा, वा=

श्रावक हो, गैरिकवस्त्रधारी परिव्राजक हो, निर्ग्रन्थ हो, पाखंडी हो, चाहे गृहस्थ हो कोई भी क्यों न हो, उसके लिये धन्य सार्थवाह यदि वह छत्ररहित है तो छत्र देगा (अणुवाहणस्स उवाहणाओ दलयइ अकुंडियस्स कुंडियं दलयइ अपत्थयणस्स पत्थयणं दलयइ अपक्खेवगस्स पक्खेवं दलयइ अंतराऽवि य से पडियस्स वा भग्गलुग्गस्स साहेज्जं दलयइ,

---

અવિરુદ્ધ હોય, વિરુદ્ધ હોય, વૃદ્ધ શ્રાવક હોય, ગૈરિક વસ્ત્ર ધારી પરિવ્રાજક હોય, નિર્ગ્રંથ હોય, પાખંડી હોય અને ગૃહસ્થ હોય કોઈ પણ કેમ ન હોય તેના માટે જો તે છત્ર વગરનો હોય તેવાને ધન્ય સાર્થવાહ છત્ર આપશે

(अणुवाहणस्स उवाहणाओ दलयइ, अकुंडियस्स कुंडियं दलयइ अपत्थयणस्स पत्थयणं दलयइ अपक्खेवगस्स पक्खेवं दलयइ अंतराऽविय से पडियस्स वा

अथवा 'भग्गलुग्गस्स' भग्नरुग्णाय भग्नाय = त्रुटितहस्तपादाद्यवयवाय रुग्णाय = रोगाक्रान्ताय रोगग्रस्ताय वा 'साहेज्जं' साहाय्यम् = औषधोपचारादि करणरूपं ददाति, तथा – सुखं – सुखेन = सुखपूर्वकं च तम् अहिच्छत्रां नगरीं 'संपावेइ' संप्रापयति=संप्रापयिष्यतीत्यर्थः । 'त्तिकट्टु' इति कृत्वा एवमुच्चार्य द्वितीयमपि तृतीयमपि वारं घोषयत, घोषयित्वा मम 'एयमाणत्तियं' एतामाज्ञप्तिकाम्=एतद्रूपां ममाज्ञां 'पच्चप्पिणह' प्रत्यर्पयत=मदुक्तां घोषणां कृत्वा पुनर्मह्यं निवेदयतेत्यर्थः । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः 'तथाऽस्तु-

सुहंसुहेणं अहिच्छत्तं संपावेइ, त्ति कट्टु दोच्चंपि तच्चंपि घोसेह) पदत्राण (जूता) रहित है तो जूता (पदत्राण) देगा जलपात्र रहित होगा उसे जलपात्र देगा, कलेवा (भोजन) रहित है तो कलेवा (भोजन) देगा, शम्बलपाथेय पूरक द्रव्यसे रहित है तो उसे शम्बल पाथेय-भाता पूरक द्रव्य देगा, अर्थात् चलते२ बीच मार्गमें ही जिसका कलेवा (भोजन) समाप्त हो जावेगा उसे उसके योग्य द्रव्यप्रदान करेगा, मार्गके मध्यमें चलते२ यदि वह घोड़ेसे गिर गया होगा, अथवा पैदल चलते२ यदि वह पैर फिसल कर गिर गया होगा और इस तरह से उसके हाथ पैर आदि टूट गये होंगे तो उसकी सार संभाल करेगा-रोगी की दवाई करेगा, और बड़े आनन्द के साथ उसे अहिच्छत्रा नगरीमें पहुँचा देगा। इस प्रकार की इस घोषणा को तुम लोग दो तीन बार करना । और (घोसित्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह) करके फिर हमें पीछे इसकी खबर देना (तएणं ते कोडुंबियपुरिसा-जाव एवं वयासी हंदि सुणंतु भवंतो चंपा

भग्गलुग्गस्स साहेज्जं दलयइ, सुह सुहेणं अहिच्छत्तं संपावेइ, त्ति कट्टु दोच्चंपि तच्चंपि घोसेह)

જોડા વગરનો હશે તેને જોડા આપશે, જમવાની સગવડ હશે નહિ તેને જમવાની સગવડ કરી આપશે. શંબલ-પાથેય-પૂરક દ્રવ્ય વગરનો હશે તેને શંબલ-પાથેય-પૂરક દ્રવ્ય આપશે એટલે કે માર્ગમાં અધવચ્ચે ભાતું ખલાસ થઈ ગયું હશે તેને યોગ્ય ધન આપશે માર્ગમાં અધવચ્ચે ચાલતાં ચાલતાં જો તે ઘોડા ઉપરથી પડી જશે અથવા પગે ચાલતાં ચાલતા જો તે પગ લપસવાથી પડી જશે અને તેથી તેના હાથ પગ વગેરે ભાગી ગયા હશે તો તેની તે સુશ્રૂષા કરશે-રોગની દવા કરશે અને સુખેથી તેને અહિચ્છત્રા નગરીમાં પહોંચાડશે. આ રીતે તમે બે ત્રણ વખત ઘોષણા કરો અને (घोसित्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह) ઘોષણા કરીને અમને ખબર આપો.

(तएणं ते कोडुंबियपुरिसा जाव एवं वयासी हंदि सुणंतु भवंतो चंपानयरी-

इत्युक्त्वा चम्पानगर्यां शृङ्गाटकादिमहापथपथेषु समागत्य-एवमवादिषुः-'हंदि' इत्यामन्त्रणे तेन हे लोकाः! शृण्वन्तु-भवन्तः-यत् चम्पानगरी वास्तव्या बहवः 'चरगाय जाव' इति-चरकचीरिकादयो धन्येन सार्थवाहेन सार्द्धमहिच्छत्रां नगरीं गच्छन्ति तेभ्यो धन्यः सार्थवाहश्छत्रादिकं सर्वं दास्यति, मार्गे च स्खलितेभ्यो रोगादिग्रस्तेभ्यश्च औषधोपचारादिना साहाय्यं करिष्यति, सुखपूर्वकमहिच्छत्रां नगरीं प्रापयिष्यति च, इत्येवं घोषयित्वा धन्यसार्थवाहाय 'पच्चप्पिणंति' प्रत्यर्पयंति=निवेदयन्ति ॥ सू० २ ॥

नगरीवत्थव्वा बहवे चरगा य जाव पच्चप्पिणंति) इस प्रकार धन्यसार्थवाह की बात को उन कौटुम्बिक पुरुषों ने "तथास्तु" कहकर स्वीकार लिया और चंपानगरी में शृंगाटक आदि महापथ पर्यंतके समस्त मार्गों में जाकर इस प्रकार की घोषणा की, हे लोको! सुनो-जो कोई चंपा नगरी का निवासी चरक आदि जन धन्य सार्थवाह के साथ अहिच्छत्रा नगरी को जाना चाहता हो उसके लिये धन्यसार्थवाह छत्रादि सब देगा तथा जो मार्ग में पतित हो जावेंगे अथवा रोगाक्रान्त बन जावेंगे उनकी औषधि आदि द्वारा सहायता भी करेगा और इस तरह वह उनके लिये सकुशल अहिच्छत्रा नगरी में पहुँचा देगा-इस प्रकार की घोषणा करके उन लोगों ने इसकी खबर धन्य सार्थवाह के पास भेज दी। गृहस्थ के घर निष्पन्न हुए औदनादिक खाद्य वस्तुओं का जो सर्व प्रथम हिस्सा दानके लिये पृथक कर रख लिया जाता है, उस

वत्थव्वा बहवे चरगा य जाव पच्चप्पिणंति)

આ રીતે ધન્ય સાર્થવાહની આજ્ઞાને તે કૌટુંબિક પુરુષોએ સ્વીકારી લીધી અને ચંપા નગરીના શ્રૃંગાટક વગેરે મહાપથોમાં જઈને આ રીતે તેઓએ ઘોષણા કરી કે હે લોકો! સાંભળો, ચંપા નગરીમાં રહેનાર ચરક વગેરે ગમે તે માણસ ધન્ય સાર્થવાહની સાથે અહિચ્છત્રા નગરીમાં જ તેને ધન્ય સાર્થવાહ છત્ર વગેરે બધું આપશે, તેમજ માર્ગમાં કોઈ પડી જશે અથવા તો માંદો થઈ જશે તો ધન્ય સાર્થવાહની તેની બરોબર માવજત કરાવીને તેની સહાય કરશે અને તેને સકુશળ અહિચ્છત્રા નગરીમા પહોંચાડશે આ રીતે ઘોષણા કરીને તે લોકોએ ધન્ય સાર્થવાહને ઘોષણનું કામ પુરું થઇ જવાની ખબર આપી. ગૃહસ્થને ઘેર તૈયાર કરાયેલા ભાત વગેરે ખાદ્ય વસ્તુઓનો જે સૌ પહેલાં દાન માટે જૂદો કરીને રાખવામાં આવે છે તે ભાગને જે ભીખ માંગીને લઈ જાય છે તેને ચરિક કહે છે. માર્ગમાં પડેલાં ફાટેલાં વસ્ત્રો જે

हिस्से को जो भिक्षा वृत्ति से ले जाते हैं उनका नाम चरिक है। मार्ग में गिरे हुए फटेचिटे वस्त्र को लेकर जो पहिनते हैं उनका नाम चीरिक है। चमड़े को जो अपने पहिरने के उपयोग में लाते हैं वे चर्म खडिक है। दूसरे के द्वारा लायी गई भिक्षा से जो अपना निर्वाह करते हैं वे भिक्षोण्ड हैं। अपने शरीर पर जो भस्म लपेटे रहते हैं वे पांडुरंग हैं। बैल को लेकर जो दूसरों के घरों से अनाज मांगते हैं वे गौतम है। दिलीप राजा की तरह जो गायकी सेवा करने में लगे रहते हैं-जब वह बैठती है तब वे बैठते हैं-वह खड़ी होती है तो वे भी खडे हो जाते हैं इत्यादि रूप से गोचर्यानुकारी जो जन होते हैं वे गोव्रतिक हैं। गृहस्थ धर्म ही श्रेष्ठ है, इस प्रकार मान कर जो उसमें रह रहते हैं वे गृहिधर्म चिन्तक है। जैसे-गृहस्थाश्रम के समान धर्म न हुआ है और न आगे होगा ही। जो शूरवीर मनुष्य होते हैं वे ही इसे पालते हैं। पाषंड धर्म को पालने वाले मनुष्य शूरवीर नहीं हैं किन्तु वे तो क्लीव-नपुंसक हैं. ऐसी इनकी मान्यता होती है। अविरुद्ध शब्द का अर्थ विरुद्ध नहीं रहते हैं सबका समानरूप से विनय करते हैं। विरुद्ध शब्द का अर्थ अक्रियावादी है। ये अक्रिया वादी पर-

પહેરે છે તેનું નામ ચીરિક છે. ચામડાને જે વસ્ત્ર તરીકે પહેરવામાં કામમાં લે છે તે ચર્મ ખંડિત છે. બીજાઓ વડે લાવવામાં આવેલી ભિક્ષાથી જે પોતાનું ઉદર પોષણ કરે છે તે ભિક્ષોંડ છે. પોતાના શરીર ઉપર જે રાખ ચોળે છે તે પાંડુરંગ છે. બળદને સાથે લઈને જેઓ બીજાઓના ઘરેથી અનાજ માંગે છે તેઓ ગૌતમ કહેવાય છે. રાજા દિલીપની જેમ જેઓ ગાયની સેવા કરવામાં વ્યસ્ત રહે છે-જ્યારે ગાય બેસે છે ત્યારે તેઓ બેસે છે, જ્યારે ગાય ઊભી થાય છે ત્યારે તેઓ પણ ઊભા થઈ જાય છે વગેરે રૂપમાં જેઓ ગોચર્યાનુકારી જન હોય છે તેઓ ગોવ્રતિક કહેવાય છે. ગૃહસ્થ ધર્મજ ખરેખર ઉત્તમ ધર્મ છે આમ ચોક્કસ પણે માનીને તેમાં દત્તચિત્ત રહે છે તેઓ ગૃહિધર્મ-ચિંતક છે. જેમકેઃ—ગૃહસ્થાશ્રમ જેવો ધર્મ થયો નથી અને આગળ ભવિષ્યમાં થવાની સંભાવના પણ નથી. જેઓ શૂરવીર માણસો હોય છે તેઓ જ આ ધર્મનું પાલન કરે છે. પાખંડ ધર્મને પાલન કરનારા માણસો શૂરવીરો નથી પણ તેઓ તો નપુંસક છે. ગૃહસ્થીઓની આ જાતની માન્યતા હોય છે. અવિરુદ્ધ શબ્દનો અર્થ ક્રિયાવાદી છે. કેમ કે એઓ કોઈ પણ માણસથી વિરુદ્ધ આચરણ કરતા નથી તેઓ બધાની સાથે સરખી રીતે વિનયપૂર્ણ વ્યવહાર કરે છે. વિરુદ્ધ શબ્દનો અર્થ અક્રિયાવાદી છે. અક્રિયાવાદી લોકો પરલોક જેવી વસ્તુમાં

मूलम्—तएणं तेसिं कोडुंबिय पुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म चंपानयरी वत्थव्वा बहवे चरगा य जाव गिहत्था य जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति तएणं से धण्णे सत्थवाहे तेसिं चरगाण य जाव गिहत्थाण य अच्छत्तगस्स छत्तं दलयइ जाव पत्थय णं दलाइ दलइत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! चंपाए नयरीए बहिया अग्गुज्जाणंसि मम पडिवालेमाणा चिट्ठह, तएणं ते चरगा य जाव गिहत्था य धण्णेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा जाव चिट्ठंति, तएणं धण्णे सत्थवाहे सोहणंसि तिहिकरणनक्खत्तंसि विउलं असणं ४ उवक्खडावेइ उवक्खडावित्ता मित्तनाइ० आमंतेइ आमंतित्ता भोयणं भोयावेइ भोयावित्ता आपुच्छइ आपुच्छित्ता सगडीसागडं जोयावेइ जोयावित्ता चंपानगरीओ निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता चरगा य जाव गिहत्था य सद्धिं घेत्तूण णाइविप्पइट्ठेहिं अद्धाणेहिं वसमाणे२ सुहेहिं वसहिं पायरासेहिं अंगं

लोक नहीं मानते हैं। वृद्धश्रावक—ब्राह्मण—अर्थ का वाचक है। क्यों कि ये पहिले भरत चक्रवर्ती के समय में श्रावक थे—पश्चात् ब्राह्मण बन गये इसलिये " वृद्धकालिको यः श्रावकः " इस व्युत्पत्ति के अनुसार वृद्धश्रावक शब्द ब्राह्मण अर्थ का वाची बन जाता है। बाकी अवशिष्ट शब्दों का अर्थ स्पष्ट है ॥ सू० २ ॥

વિશ્વાસ કરતા જ નથી વૃદ્ધ શ્રાવક-બ્રાહ્મણ અર્થને સ્પષ્ટ કરે છે કેમ કે એઓ પહેલાં ભરત ચક્રવર્તીના વખતે શ્રાવક હતા ત્યાર પછી એઓ બ્રાહ્મણ થઈ ગયા એટલા માટે ' वृद्ध कालिको यः श्रावकः सः वृद्ध श्रावकः ' આ વ્યુત્પત્તિ મુજબ વૃદ્ધ શ્રાવક શબ્દ બ્રાહ્મણ અર્થનો વાચક થઈ જાય છે. બીજા શેષ શબ્દોના અર્થ તો સ્પષ્ટ જ છે. ॥ સૂત્ર " ૨ " ॥

जणवयं मज्झं मज्झेणं जेणेव देसग्गं तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सगडीसागडं मोयावेइ मोयावित्ता सत्थणिवेसं करेइ करित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया! मम सत्थनिवेसंसि महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयह—एवं खलु देवाणुप्पिया ! इमीसे आगामियाए छिन्नावायाए दीहमद्धाए अडवीए बहुमज्झदेसभाए बहवे णंदिफला नामं रुक्खा पन्नत्ता किण्हा जाव पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियगरेरिज्जमाणा सिरीए अईव अईव उवसोभेमाणा चिट्ठंति मणुण्णा वन्नेणं४ जाव मणुन्ना फासेणं मणुन्ना छायाए, तं जो णं देवाणुप्पिया ! तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि वा कंद० तय० पत्त० पुप्फ० फल० बीयाणि वा हरियाणि वा आहारेइ छायाए वा वीसमइ तस्स णं आवाए भद्दए भवइ तओ पच्छा परिणममाणा२ अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेंति, तं मा णं देवाणुप्पिया ! केइ तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि वा जाव छायाए वा वीसमउ, मा णं सेऽवि अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जिस्सइ, तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! अन्नेसिं रुक्खाणं मूलाणि-य जाव हरियाणि य आहारेह छायासु वीसमहत्ति घोसणं घोसेह जाव पच्चप्पिणंति, तएणं से धण्णे सत्थवाहे सगडीसागडं जोएइ२ जेणेव नंदिफला रुक्खा तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तेसिं नंदिफलाणं अदूरसामंते सत्थणिवेसं करेइ करित्ता दोच्चंपि तच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता

एवं वयासी–तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! मम सत्थनिवसंति महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा२ एवं वयह–एएणं देवाणुप्पिया ! ते णंदिफला रुक्खा किण्हा जाव मणुन्ना छायाए तं जो णं देवाणुप्पिया ! एएसिं णंदिफलाणं रुक्खाणं मूलाणि वा कंद० पुप्फ० तय० पत्त० फल० जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेइ, तं माणं तुब्भे जाव दूरे दूरेणं परिहरमाणा वीसमह, मा णं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविस्सइ, अन्नेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव वीसमहत्तिकट्टु घोसणं जाव पच्चप्पिणंति, तत्थ णं अप्पेगइया पुरिसा धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं सद्दहंति पत्तियंति रोयंति एयमट्ठं सद्दहमाणा३ तेसिं नंदिफलाणं० दूरं दूरेण परिहरमाणा२ अन्नेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव वीसमंति तेसिं णं आवाए नो भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा२ सुहरूवत्ताए भुज्जो२ परिणमंति, एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो निग्गंथी वा जाव पंचसु कामगुणेसु नो सज्जेइ नो रज्जेइ से णं इहभवे चेव वहूणं समणाणं अच्चणिज्जे५ परलोए नो आगच्छइ जाव वीइवइस्सइ, जहा य ते पुरिसा तत्थ णं अप्पेगइया पुरिसा धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति३ धण्णस्स एयमट्ठं असद्दहमाणा३ जेणेव ते नंदिफला तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि य जाव वीसमंति तेसिं णं आवाए भद्दए भवइ तओ पच्छा परिणममाणा जाव ववरोवेंति, एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा

निग्गंथी वा जाव पव्वइए पंचसु कामगुणेसु सज्जेइ सज्जित्ता जाव अणुपरियट्टिस्सइ जहा वा ते पुरिसा ॥ सू० ३ ॥

टीका—'तएणं तेसिं' इत्यादि। ततः खलु तेषां कौटुम्बिकपुरुषाणामन्तिके एतमर्थं=पूर्वोक्तमहिच्छत्रानगरीगमनार्थघोषणारूपं भावं श्रुत्वा=कर्णविषयीकृत्य, निशम्य=हृद्यवधार्य चम्पानगरी वास्तव्या अहिच्छत्रानगरीगन्तुकामा बहवश्चरकाश्च यावद् गृहस्थाश्च यत्रैव धन्यः सार्थवाह—स्तत्रैवोपागच्छन्ति। ततः खलु स धन्यः सार्थवाहस्तेषां चरकाणां च यावद् गृहस्थानां च मध्ये अच्छत्रकाय-छत्रं ददाति यावत् पथ्यदनं=शम्बलं ददाति, एवमवादीत्=कथयति गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः! चम्पाया नगर्या वहिः 'अग्गुज्जाणंसि' अग्र्योद्याने मां 'पडिवालेमाणा' प्रतिपालयन्तः=प्रतीक्षमाणास्तिष्ठत। ततः खलु ते चरकाश्च=

—:तएणं तेसिं इत्यादि:—

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (तेसिं कोडुंबियपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म चंपानगरी वत्थव्वा बहवे चरगाय जाव गिहत्था य जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति) उन कौटुम्बिक पुरुषों के मुख से इस घोषणारूप अर्थ को सुनकर और उसे हृदय में धारणकर चंपा नगरी निवासी अनेक चरक से लेकर गृहस्थ पर्यंत मनुष्य जहां धन्य सार्थवाहक था वहां आये (तएणं से धण्णे सत्थवाहे तेसिं चरगाण य जाव गिहत्थाण अच्छत्तगस्स छत्तं दलइ जाव पत्थयणं दलाइ दलइत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया। चंपाए नयरीए बाहिया अग्गुज्जाणंसि ममं पडिवाले माणा चिट्ठह) इसके बाद धन्य सार्थवाह

'तएणं तेसिं' इत्यादि।

ટીકાર્થ-(तएणं) ત્યાર પછી

(तेसिं कोडुंबिय पुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म चंपानगरी वत्थव्वा बहवे चरगाय जाव गिहत्था य जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति)

તે કૌટુંબિક પુરુષોના મુખથી આ ઘોષણા રૂપ અર્થને સાંભળીને અને તેને હૃદયમાં ધારણ કરીને ચંપા નગરીના ઘણા ચરકથી માંડીને ગૃહસ્થ સુધીના બધા માણસો જ્યાં ધન્ય સાર્થવાહ હતા ત્યાં આવ્યા.

(तएणं से धण्णे सत्थवाहे तेसिं चरगाण य जाव गिहत्थाण अच्छत्तगस्स छत्तं दलयइ, जाव पत्थयणं दलाइ, दलइत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! चंपाए नयरीए बाहिया अग्गुज्जाणंसि ममं पडिवालेमाणा चिट्ठह)

चरकादयो यावद् गृहस्था धन्येन सार्थवाहेन-एवमुक्ताः सन्तः 'जाव' यावत्-धन्यं सार्थवाहं प्रतीक्षमाणास्तिष्ठन्ति । ततः खलु धन्यः सार्थवाहः शोभने तिथि-करणनक्षत्रे=शुभदिवसे विपुलमशनादिकं चतुर्विधाहारम् उपस्कारयति=निष्पादयति उपस्कार्य मित्रज्ञातिस्वजनसम्बन्धिपरिजनान् आमन्त्रयति, भोजनं भोजयति=कार-

---

ने उन चरक आदि से लेकर गृहस्थ पर्यन्त के मनुष्यों में जिसके पास छत्ता आदि नहीं था उसे छत्ता दिया यावत् जिस के पास कलेवा नही था उसको कलेवा-मार्ग भोजन-दिया । बाद में उसने उन सबसे कहा हे देवानुप्रियों ! तुम यहां से चलो और मुख्य उद्यान में मेरी प्रतीक्षा करते हुए ठहरे रहो-(तएणं ते चरगाय जाव गिहत्था य धण्णेणं सत्थ वाहेणं एवं वुत्ता समाणा जाव चिट्ठंति, तएणं धण्णे सत्थवाहे सोहणंसि त्तिहिकरणनक्खत्तसि विउलं असण ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तनाइ० आमंतेइ, आमंत्तित्ता भोयणं भोयावेइ, भोयावित्ता आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सगडीसागडं जोयावेइ, जोयवित्ता चंपानगरीओ निग्गच्छइ) इस प्रकार धन्यसार्थवाह के द्वारा कहे गये वे चरकादि गृहस्थ पर्यन्त समस्तजन वहां से चलकर मुख्य उद्यान में गये-और धन्यसार्थवाह की प्रतीक्षा करते हुए वहां ठहर गये । धन्यसार्थवाह ने शुभ तिथि, करण, एवं नक्षत्र में विपुल मात्रा में अशन आदि रूप चारों प्रकार का आहार निष्पन्न करवाया । जब आहार निष्पन्न हो

त्यार पछी धन्य सार्थवाहे तेओ चरक वगेरेथी मांडीने गृहस्थ सुधीना बधा माणुसोमांथी जेनी पासे छत्री वगेरे न हती तेने छत्री वगेरे अने जेनी पासे मार्ग माटेनुं भोजन न हतु तेने भोजन आप्युं त्यार बाद तेणे बधा ने कह्यु के हे देवानुप्रियो ! तमे अहींथी मुख्य उद्यानमां जाओ अने त्यां मारी प्रतीक्षा करो.

(तएणं ते चरगाय जाव गिहत्थाय धण्णेणं सत्थवाहे णं एव वुत्ता समाणा जाव चिट्ठति, तएण धण्णे सत्थवाहे सोहणंसि त्तिहिकरणनक्खत्तसि विउलं असणं ४ उवक्खडवेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइ आमंतेइ, आमंतित्ता भोयणं भोयावेइ, भोयावित्ता आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सगडीसग्गडं जोयावेइ, जोयावित्ता चंपानगरीओ निग्गच्छइ)

आ रीते धन्य सार्थवाह वडे आज्ञापित थयेला चरक गृहस्थ वगेरे बधा माणुसो त्यांथी मुख्य उद्यानमां गया अने धन्य सार्थवाहनी राह जोता. तेओ त्या ज रोकाया. धन्य सार्थवाहे शुभ तिथि, करण, अने सारा नक्षत्रमां पुष्कळ प्रमाणमां अशन वगेरे रूप चारे जातना आहारो तैयार कराव्या. ज्यारे

यति, भोजयित्वा 'आपुच्छइ' आपृच्छति=विदेशगमनार्थमाज्ञां प्रार्थयति, आपुच्छय=आज्ञा प्राप्य शकटीशाकटं योजयति, योजयित्वा चम्पा नगरीतो निर्गच्छति=निस्सरति, निर्गत्य चरकान् यावत् गृहस्थांश्च सार्द्ध गृहीत्वा 'नाइविप्पगिट्ठेहिं' नातिविप्रकृष्टेषु=नातिदूरेषु यथोचितेषु 'अद्धाणेहिं' अध्वसु=मार्गेषु 'वसमाणे २' वसन्-वसन् स्थाने स्थाने निवासं कुर्वन् 'सुहेहिं' शुभैः=प्रशस्तैः 'वसहिपायरासेहिं' वसतिप्रातराशैः = निवासस्थाने प्रातःकालीनलघुभोजनैः सह अङ्गजनपदस्य=अङ्गदेशस्य मध्य-मध्येन यत्रैव 'देसग्गं' देशाग्यं=अङ्गदेशसीमा वर्त्तते तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य शकटीशाकटं मोचयति, मोचयित्वा 'सत्थनिवेसं' सार्थनिवेशं करोति, कृत्वा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति=आह्वयति शब्दयित्वा=आहूय एवमवादीत्-" हे देवानुप्रियाः! यूयं खलु मम सार्थनिवेशे महता-महता शब्देन=उच्चस्वरेण उद्घोषयन्तः=सन्तः एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण वदत=कथयत-

---

चुका-तब उसने अपने मित्र, ज्ञाति आदि परिजनोंको आमंत्रित किया। आमंत्रित करके फिर उन सबको उसने उस चतुर्विध आहारको भोजन कराया भोजन कराके फिर उन सबसे परदेश गमन करने की उसने आज्ञा मांगी। आज्ञाप्राप्त करके उसने गाडी और गाड़ों को जुतवाया जुतवा कर फिर वह चंपा नगरी से बाहिर निकला। चरकादि गृहस्थ पर्यन्त समस्त जन को अपने साथ में ले लिया-(निग्गच्छित्ता चरगाय जाव गिहत्थाय सद्धिं घेत्तूण णाइविप्पगिट्ठेहिं अद्धाणेहिं वसमाणे२ सुहेहिं वसहिपायरासेहिं अंगं जणवयं मज्झं मज्झेणं जेणेव देसग्गं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सगडीसागडं मोयावेइ मोयावित्ता सत्थणिवेसं करेइ करित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दवित्ता एवं वयासी — तुब्भेणं देवाणुप्पिया! मम सत्थनिवेसंसि महया २

આહારો તૈયાર થઈ ગયા ત્યારે તેણે પોતાના મિત્ર, જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનોને આમંત્રિત કર્યા. આમંત્રિત કરીને તેણે બધાને ચારે જાતના આહારો જમાડયા. ત્યાર પછી તેણે સૌની પાસેથી પરદેશ જવાની આજ્ઞા માગી આમ તેણે બધાની પાસેથી આજ્ઞા મેળવીને ગાડી તેમજ ગાડાંઓ જોતરાવ્યાં અને ત્યાર પછી તે ચંપા નગરી થી બહાર નીકળ્યો. તેણે ઉદ્યાનમાં રાહ જોનારા બધા ચરક ગૃહસ્થ વગેરે માણસોને પણ સાથે લઈ લીધા હતા.

(निग्गच्छित्ता चरगाय जाव गिहत्था य सद्धिं घेत्तूण णाइविप्पगिट्ठेहिं अद्धाणेहिं वसमाणे २ सुहेहिं वसहिपायरासेहिं अंगं जणवयं मज्झं मज्झेणं जेणेव देसग्गं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सगडीसागडं मोयावेइ, मोयावित्ता-सत्थणिवेसं करेइ, करित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता

एवं खलु हे देवानुप्रिया ! ' इमीसे ' अस्याः ' अगामियाए ' = ग्रामरहितायाः ' छिन्नवायाए ' छिन्नपातायाः छिन्नः आपातो = जनसञ्चारो यत्र सा, तस्याः जनसञ्चाररहितायाः ' दीहमद्धाए ' दीर्घाध्वायाः-दीर्घः=बहुकालगम्यः अध्वा= मार्गो यत्र सा, तस्याः-चिरकाललङ्घनीयायाः, एतादृश्या अटव्याः बहुमध्यदेश- भागे=अतिमध्यभागे, ' एत्थ णं ' अत्र खलु बहवो नन्दिफलानामवृक्षाः मज्ञप्ताः= लोकैः कथिताः । कीदृशास्ते ? इत्याह-' किण्हा ' इत्यादि=कृष्णाः=कृष्णवर्णाः, कृष्णावभासाः=अतिनीलत्वेन कृष्णच्छटासम्पन्नाः यावत्-नीलादिवर्णयुक्ताः,

---

सद्देणं उग्घोसेमाणा२ एवं वयह-एवं खलु देवाणुप्पिया ! इमीसे अगा- मियाए छिन्नावायाए दीहमद्धाए अडवीए बहुमज्झदेसभाए बहवे णंदिफ- लानामं रुक्खा पन्नत्ता किण्हा जाव पत्तिया,पुप्फिया, फलिया हरियगरेरि- ज्जमाणा सिरीए अईव२ उवसोभेमाणा चिट्ठंति) निकल कर नाति विप्र- कृष्ट-यथोचित-मार्गोंमें ठहरता २ और वहां२प्रातः कालीन कलेवा करता हुआ वह जहां अंगदेश की सीमा थी वहां पर आया। वहां आकर के उसने अपने शकटी शकटों को ढील दिया और ढील करके फिर अपने सार्थ को ठहरा दिया। ठहरा देने के बाद फिर उसने अपने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया-और उनसे इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियों ! तुम लोग हमारे सार्थनिवेश में बड़े जोर २ से घोषणा करते हुए ऐसा कहो कि हे देवानुप्रियो ! सुनो जन संचार रहित दीर्घ मार्ग वाली इस आगे की अटवी के मध्यभाग में लोग कहते हैं कि अनेक नंदीफल नाम के

एवं वयासी — तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! मम सत्थ निवेसंसि महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयह-एवं खलु देवाणुप्पिया ! इमीसे अगामियाए छिन्नावायाए दीहमद्धाए, अडवीए बहुमज्झदेसभाए बहवे णंदिफलानामं रुक्खा पन्नत्ता किण्हा जाव पत्तिया, पुप्फिया फलिया, हरियगरेरिज्जमाणा सिरीए अईव २ उवसोभेमाणा चिट्ठंति)

ત્યાંથી રવાના થઈને તે માર્ગમાં યથાસ્થાને નજીક નજીકના સ્થળો ઉપર વિશ્રામ કરતો અને ત્યાં સવાર થતાં જલપાન (નાસ્તો) વગેરે કરતો તે અંગદેશની હદ ઉપર પહોંચ્યો. ત્યાં પહોંચીને તેણે ગાડી અને ગાડાંઓને છોડી મૂક્યા અને ત્યાં પોતાના સાર્થને રોક્યો. રોક્યા પછી તેણે પોતાના કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! અમારા સાર્થ સંનિવેશમાં તમે લોકો મોટેથી આ પ્રમાણેની ઘોષણા કરતાં કહો કે હે દેવાનુપ્રિયો ! સાંભળો ! હવે આગળ આવનાર લાંબા માર્ગવાળા નિર્જન વનમાં લોકો એમ કહે છે કે તેમાં ઘણાં નંદિફળ

तथा-'पत्तिया' पत्रिताः=पत्रबहुलाः, 'पुप्फिया' पुष्पिताः=पुष्पबहुलाः, 'फलिया' फलिताः=फलबहुलाः 'हरियगरेरिज्जमाणा' हरितकाराज्यमानाः= हरितकेन=हरितवर्णेन भृशं शोभमानाः 'सिरीए' श्रिया=हरितपल्लवादिशोभया अतीवातीव उवशोभमानास्तिष्ठन्ति=वर्त्तन्ते। पुन कीदृशास्ते' इत्याह-मनोज्ञाः-वर्णेन, 'जाव' यावत्-गन्धेन, रसेन स्पर्शेन, मनोज्ञाश्छायया, रम्यवर्णादिना रम्य छायया च युक्ता इत्यर्थः, 'त' तत्=तस्मात् नन्दिवृक्षाणां सौन्दर्यादिकारण-वशात् 'जो णं' यः खलु हे देवानुप्रियाः! तेषां नन्दिफलानां=नन्दिफलाभिधानां वृक्षाणां मूलानि वा कन्दानि वा त्वचो वा, पत्राणि वा, पुष्पाणि वा, फलानि वा, बीजानि वा, हरितानि वा 'आहारेइ' आहारयति, तेषां छायायां वा 'वीस-मइ' विश्राम्यति तस्य खलु आवाए' आपाते=पूर्वं भक्षणादि समये 'भद्दए'

वृक्ष हैं। ये वृक्ष कृष्ण वर्णवाले हैं और देखने पर भी अति हरित होने के कारण कृष्ण ही प्रतीत होते हैं। पत्र, पुष्प एवं फलों से वे युक्त हैं। वे हरित वर्णसे बडे सुहावने लगते हैं। उनके पल्लव आदि सब हरे २ हैं। इससे उन की शोभा बडी नीराली बनी हुई हैं। (मणुण्णा वन्नेणं ४ जाव मणुन्ना फासेणं मणुन्ना छायाए, तं जो णं देवाणुप्पिया! तेसिं नंदिफलाणं रुक्खाणं मूलाणिवा कंद० तय० पत्त० पुप्फ० फल० बीयाणि वा हरियाणि वा आहारेइ, छायाए वा वीसमइ, तस्स णं आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा २ आकाले चेव जीवियाओ व वरो वेंति) वर्ण, रस, गंध एवं स्पर्श से वे बडे मनोज्ञ हैं। छाया भी उनकी बडी मनोज्ञ है। इस लिये हे देवानुप्रियो! जो कोई इन की सुन्दरता आदि कारण के वशसे आकृष्ट होकर इन नंदिफल वृक्षों के मूलों को कंदों को छालों को, पत्रों को, फलों को बीजों को अथवा हरित अंकुरों

નામે વૃક્ષો છે. તે વૃક્ષો કૃષ્ણ વર્ણવાળાં છે અને ખૂબજ લીલાં હોવાથી કૃષ્ણ વર્ણના જેવા જ લાગે છે પત્રો, પુષ્પો અને ફળોથી તેઓ સમૃદ્ધ છે. લીલાં છમ હોવાથી તેઓ અત્યંત સુંદર લાગે છે તેમનાં પત્રો વગેરે બધાં લીલાં છે. તેથી તેમની શોભા એકદમ અનોખી છે.

(मणुण्णा वन्नेणं ४ जाव मणुन्ना फासेणं मणुन्ना छायाए तं जो णं देवाणुप्पिया! तेसिं नंदिफलाणं रुक्खाणं मूलाणि वा कंद० तय० पत्त० पुप्फ० फल० बीयाणि, वा हरियाणि वा आहारेइ, छायाए वा वीसमइ, तस्स णं आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा २ अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेंति)

વર્ણ, રસ, ગંધ અને સ્પર્શથી તેઓ ખૂબજ મનોજ્ઞ છે. છાંયડો પણ તેઓનો અત્યંત મનોજ્ઞ છે એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયો! કોઈ પણ માણસ તેમની સુંદરતા વગેરે કારણોથી આકર્ષાઈને તે નંદિફળ વૃક્ષોના મૂળોને, કંદોને, છાલને પાંદડાંઓને, પુષ્પોને, બિયાંઓને અથવા તો લીલી કૂંપળોને ખાશે કે

भद्रकं=सुखं भवति, ततः पश्चात्=स्तोककालानन्तरं 'परिणममाणा२' परिणमन्तः २ रसादिरूपेण परिणमनं प्राप्नुवन्तस्ते मूलकन्दादयस्तं पुरुषम् अकाले एव जीविताद् व्यपरोपयन्ति=प्राणनाशं कुर्वन्तीत्यर्थः, 'तं' तत्=तस्मात्कारणात् मा खलु हे देवानुप्रियाः! 'केइ' कोऽपि तेषां नन्दिफलवृक्षाणां मूलानि वा यावत्-कन्दादीनि आहारयतु, तेषां छायायां वा विश्राम्यतु तेषां फलानि मा आहारयतु, छायायांच मा विश्राम्यतु, इति भावः, सोऽपि च=यो नन्दिफलवृक्षाणां मूलादीनि-नाहारयिष्यति, नापि च तच्छायायां विश्रमिष्यति सः न खलु अकाल एव जीविताद् व्यपरोपिष्यते, स न मरिष्यतीत्यर्थः। यूयं खलु हे देवानुप्रियाः!

को, खावेगा अथवा उनकी छाया में विश्राम करेगा उसे उससमय तो बडा अनन्द आवेगा-परन्तु उसके बाद में थोडे ही समय में जैसे २ रसादिरूप से उसका परिणमन होगा वैसे२ वे भक्षित मूलादिकंद इस पुरुष को अकालमें ही जीवन से रहित कर देंगे। (तं माणं देवाणुप्पिया केइ तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि वा जाव छायाए वा वीसमउ, माणं से वि अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जिस्सइ, तुब्भेणं देवाणुप्पिया! अन्नेसिं रुक्खाणं मूलानि जाव हरियाणिय आहारेह, छायासु वीसमह त्ति घोसणं घोसेह, जाव पच्चप्पिणंति) इसलिये हे देवानुप्रियो! तुम लोग में से कोई भी व्यक्ति उन नंदिफल वृक्षों के मूल आदिकों को न खावे और न कोई उन की छाया मे ही विश्राम करे। जो उन नंदिफल वृक्षों के मूल आदिकों को नही खावेगा और न उनकी छाया में विश्राम ही करेगा वह अकाल में अपने जीवन से रहित नहीं बनेगा। वहां इनसे

તેમના છાયડામા વિસામો લેશે ત્યારે તો તેમને ખૂબજ આનંદ પ્રાપ્ત થશે પણ ત્યાર પછી થોડા જ સમયમા જેમ જેમ તેમનું રસાદિરૂપ પરિણમન થશે તેમ તેમ તેઓ ખાધેલા મૂળ કંદ વગેરે તે માણસને અકાળે જ નિર્જીવ બનાવી દેશે.

(तं माणं देवाणुप्पिया! केइ तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि वा जाव छायाए वा वीसमउ, माणं से वि अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जिस्सइ, तुब्भेणं देवाणुप्पिया! अन्नेसिं रुक्खाणं मूलानि जाव हरियाणि य आहारेह, छायासु वीसमह त्तियोसणं घोसेह जाव पच्चप्पिणंति)

એથી હે દેવાનુપ્રિયો! તમારામાથી કોઈ પણ માણસ તે નંદિફળ વૃક્ષોના મૂળોને ન ખાય અને તેની છાયામાં પણ વિસામો લેવા બેસે નહિ. જે માણસ નંદિફળ વૃક્ષોના મૂળ વગેરેનું ભક્ષણ કરશે નહિ તેમજ તેમના છાયડામાં પણ વિસામો લેશે નહિ તેનું અકાળે મરણ થશે નહિ. તમે લોકો તે વનમાં નંદિફળ વૃક્ષોને બાદ કરતાં બીજા જે વૃક્ષો હોય હે દેવાનુપ્રિયો! તમે લોકો તેમના મૂળોને તેમજ લીલી કૂંપળો વગેરેનું ભક્ષણ કરજો અને તેમની જ છાયામાં વિસામો લેશો. આ પ્રમાણે તમે ઘોષણા કરો. ત્યાર પછી-તે લોકોએ આજ્ઞા પ્રમાણે

अन्येषाम्=तद्भिन्नानां वृक्षाणां मूल नि च यावत् हरितानि च 'आहारेत्थ' आहारयत, छायासु विश्राम्यत च" इति=एतद्रूपां घोषणां घोषयत कुरुत। 'जाव' यावत्-ते च तथैव कृत्वा तदाज्ञां प्रत्यर्पयन्ति=तस्मै निवेदयन्तीत्यर्थः। ततः खलु धन्यः सार्थवाहः शकटीशाकटं योजयति, योजयित्वा यत्रैव नन्दिफलावृक्षास्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तेषां नन्दिफलानाम् अदूरसामन्ते सार्थनिवेशं करोति, कृत्वा द्वितीयमपि तृतीयमपि वारं कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-

---

भिन्न जो और दूसरे वृक्ष हों हे देवानुप्रियों! तुमलोग उन्हीं के मूलों को यावत् हरिताङ्कुरों को खाना उनकी ही छाया में विश्राम करना। इस प्रकारकी तुमलोग घोषणा करो। यावत् उन्होंने वैसा ही किया और इस की खबर धन्य सार्थवाह को भी दे दी। (तएणं से धण्णे सत्थ वाहे सगडीसगडं जोएइ २ जेणेव नंदिफलरुक्खा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेसिं नंदिफलाणं अदूरसामंते सत्थणिवेसे करेइ, करित्ता दोच्चंपि तच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी तुब्भे णं देवाणुप्पिया! मम सत्थनिवेसंसि महया२ सद्देणं उग्घोसेमाणा२ एवं वयह -एएणं देवणुप्पिया! ते णंदिफलारुक्खा, किण्हा जाव मणुन्ना छायाए) इस के बद उस धन्य सार्थवाहने अपनी गाड़ी और गाड़ोंको जुतवाया और जुतवाकर जहां वे नंदि फलवृक्ष थे वहां गया। वहां जाकर उसने उन नंदिफल वृक्षों के पास अपने सार्थ को ठहरा दिया-अर्थात् अपना पडाव डाला ठहरने के बाद फिर उसने कौटुम्बिक पुरुषों को दोबार और

જ ઘોષણા કરીને ધન્ય સાર્થવાહને ઘોષણાનું કામ થઈ જવાની ખબર આપી

(तएणं से धण्णे सत्थवाहे सगडी सागडं जोएइ २ जेणेव नंदिफलरुक्खा, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेसिं नंदिफलाणं अदूरसामंते सत्थणिविसे करेइ करित्ता दोच्चंपि तच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी तुब्भेणं देवाणुप्पिया! मम सत्थनिवेसंसि महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयह- एएणं देवाणुप्पिया! ते णंदिफला रुक्खा, किण्हा जाव मणुन्ना छायाए)

ત્યાર પછી તે ધન્ય સાર્થવાહે ગાડીઓ અને ગાડાંઓને જોતરાવ્યાં અને જોતરાવીને તેઓ જે તરફ નંદિફળ વૃક્ષો હતાં તે તરફ રવાના થયા. ત્યાં પહોંચીને તેણે નંદિફળ વૃક્ષોની પાસે પોતાના સાર્થને રોકયો અર્થાત્ વિસામા માટે ત્યાંજ પડાવ નાખ્યો પડાવ નાખ્યા બાદ તેણે બે ત્રણ વખત કૌટુંબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો!

यूयं खलु हे देवानुप्रियाः! मम सार्थनिवेशे महता-महता शब्देन उद्घोषयन्तः२ एवं वदत-" एते खलु हे देवानुप्रियाः! ते इमो नन्दिफलावृक्षाः यदर्थं, पूर्वमुपदिष्टम् कृष्णा यावत्-मनोज्ञा'छायया, तद् यो खलु हे देवानुप्रियाः! एतेषां नन्दिफलानां वृक्षाणां मूलानि वा, कन्दानि वा पुष्पाणि वा, त्वचो वा, पत्राणि वा, फलानि वा, यावत्-तानि मूलकन्दादीनि तं जीविताद् व्यपरोपयन्ति, तत् मा खलु यूयं ' जाव ' यावत्-तेषां मूलकन्दादीनि मा आहारयत, मा च तेषां छायासु विश्राम्यत किन्तु तान दूरं-दूरेण=दूरत एव ' परिहरमाणा ' परिहरन्तः=वर्जयन्तः

तीन वार बुलाया-बुलाकर उसने ऐसा कहा-हे देवानुप्रिया! तुम मेरे सार्थ निवेश में जाकर जोर २ से ऐसी घोषणा करो-कि हे देवानुप्रियो जिन नंदिफल वृक्षों के विषय में पहिले सूचना दी गई है-वे येही कृष्ण यावत छाया से मनोज्ञ नंदिफल वृक्ष हैं। तं जो णं देवाणुप्पिया! एएसिं णंदिफलाणं रुक्खाणं मूलाणिवा कंद० पुप्फ० तय० पत्त० फल जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेइ, तं माणं तुब्भे जाव दूरे दूरेणं परिहरमाणा वीसमह. माणं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविस्सइ, अन्नेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव वीसमहत्ति कट्टु घोसणं जाव पच्चप्पिणंति) इस लिये हे देवानुप्रियो! तुम लोग में से कोई भी व्यक्ति इन नंदिफलवृक्षोंके मूलोंको, कंदोंको, पुष्पोंको, छालोंको, फलोंको नही खावे और न वह इनकी छायामें विश्राम ही करे-नहीतो वह अकालमें ही कालकवलित अर्थात् मर जावेगा हो जावेगा। इस लिये इन्हें बहुत दूर छोडकर दूसरी जगह तुम लोग विश्राम करो इससे जीवन से रहित

મારા સાર્થ નિવેશમા જઈને મોટેથી તમે આ પ્રમાણે ઘોષણા કરો કે હે દેવાનુપ્રિયો! જે નંદિફળ વૃક્ષોના વિષે પહેલાં તમને જાણ કરવામાં આવી હતી તે એજ કૃષ્ણ તેમજ છાયાથી મનોજ્ઞ લાગતાં નદિફળ વૃક્ષો છે.

(तं जो णं देवाणुप्पिया! एएसिं णंदिफलाणं रुक्खाणं मूलाणि वा कंद० पुप्फ० तय० पत्त० फल जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेइ तं माणं तुब्भे जाव दूरं दूरेणं परिहरमाणा वीसमह,माणं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविस्सइ, अन्नेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव वीसमहत्ति कट्टु घोसणं जाव पच्चप्पिणंति)

એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયો! તમારામાંથી કોઈ પણ માણસ નંદિફળ વૃક્ષોનાં મૂળોને, કંદોને, પુષ્પોને, છાલને, ફળોને ખાય નહિ અને તેમની છાયામાં પણ વિસામો લે નહિ, નહિતર તે અકાળે જ મૃત્યુને ભેટશે. એટલા માટે એમનાથી ખૂબ જ દૂર રહીને વિસામો લેશો તેથી તમારા જીવનને કંઈ

सन्तोऽन्यत्र 'वीसमह' विश्राम्यत=विश्रामं कुरुत तेन न खलु यूयं जीविताद् व्यपरोपिष्यध्वे, तथा-अन्येषां वृक्षाणां मूलानि च यावत्-कन्दादीनि आहारयत, छायासु विश्राम्यत" इति कृत्वा घोषणां घोषयत, यावत्-ते घोषणां घोषयित्वा-धन्यसार्थवाहाय तदाज्ञां प्रत्यर्पयन्ति। तत्र=खलु सार्थे अप्येके पुरुषा धन्यस्य सार्थवाहस्य एतमर्थम्=एतदुपदेशं श्रद्दधति, प्रतियन्ति-रोचयन्ति, एतमर्थं श्रद्दधानाः=श्रद्धाविषयिकुर्वाणाः प्रतियन्तः रोचयन्त' तेषां नन्दिफलवृक्षाणां मूलादीनि छायां च दूरं -दूरेण=दूरतएव परिहरन्तः=परिवर्जयन्तोऽन्येषां वृक्षाणां मूलानि च यावत्-कन्दादीनि आहारयन्ति, अन्यवृक्षाणां छायासु च विश्राम्यन्ति, तेषां खलु

नहीं होओगे। तथा इनसे अतिरिक्त और जो दूसरे वृक्ष हैं उनके मूलों को यावत् कन्दादिकों को खाओ और उनकी छाया में विश्राम करो। इस प्रकार की घोषणा कर दो-उन्हों ने धन्य सार्थवाह की आज्ञानुसार वैसा ही किया और इसकी उसे खबर भी दे दी। (तत्थ णं अप्पेगइया पुरिसा धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं सद्दहंति, पत्तियंति रोयंति, एयमट्ठं सद्दहमाणाइ तेसिं नंदिफलाणं० दूरं दूरेणं परिहरमाणा २ अन्नेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव वीसमंति) वहां सार्थ में के कितनेक मनुष्यों ने धन्य सार्थवाहके इस सूचना रूप अर्थको स्वीकार कर लिया। उस पर श्रद्धा जमाई उसे अपनी प्रतीति का विषय बनाया तथा उन्हें वह बात अच्छी तरह रुचि कर भी हुई। इसलिये इस बात पर श्रद्धा आदि संपन्न बने हुए उन लोगों ने उन नंदि फल वृक्षों के मूलादिकों को और उनकी छाया को बहुत दूर से छोड़कर अन्य वृक्षों के मूलादि

પણ મુશ્કેલી નડશે નહિ. તેમજ આ વૃક્ષો સિવાયનાં બીજાં વૃક્ષો છે, તેમના મૂળ, કંદ વગેરે તમે ખાવ અને તેમના છાયડામાં વિશ્રામ કરો તેઓએ ધન્યસાર્થવાહની આજ્ઞા પ્રમાણે જ ઘોષણા કરીને તેને ખબર આપી

(तत्थ णं अप्पेगइया पुरिसा धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं सद्दहंति, पत्तियंति, रोयंति, एयमट्ठं सद्दहमाणाइं तेसिं नंदिफलाणं० दूरं दूरेणं परिहरमाणा २ अन्नेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव वीसमंति)

ત્યાં સાર્થમાં આવેલા કેટલાક માણસોએ ધન્યસાર્થવાહની સૂચના રૂપ આ વાતને સ્વીકારી લીધી અને તેને શ્રદ્ધાની અપેક્ષાએ પોતાના હૃદયમાં સ્થાન આપતા બરોબર તેની ઉપર પ્રતીતિ કરી લીધી તે લોકોને તે વાત રૂચિકર પણ થઈ પડી આ રીતે શ્રદ્ધાયુક્ત થયેલા તે લોકોએ તે નંદિફળ વૃક્ષોના મૂળ વગેરેથી અને તેમની છાયાથી ખૂબ જ દૂર રહીને બીજાં વૃક્ષોના મૂળ તેમજ કંદ વગેરેને ખાધાં તથા તેમની છાયામાં વિસામો લીધો.

आपाते=पूर्वमाहारसमये नो भद्रकं भवति=विशिष्टस्वादादिलाभो न भवति किन्तु ततः पश्चाद्=भक्षणविश्रामानन्तर परिणम्यमानानि २ रसादिरूपेण परिणतानि मूलकन्दादीदि शुभरूपतया=भद्रकतया भूयो भूयः परिणमन्ति ।

अथोपनयं दर्शयन् सुधर्मस्वामी प्राह-' एवामेव ' इत्यादिना । ' एवामेव ' एवमेव=अनेनैव पूर्वोक्तप्रकारेण हे आयुष्मन्तः श्रमणाः ? योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा ' जाव ' यावत्-आचार्योपाध्यायानामन्तिके मुण्डो भूत्वा प्रव्रजितस्तेषामुपदेशं श्रद्धानः सन् पञ्चसु कामगुणेषु=शब्दादिविषयेषु ' नो सज्जेइ ' नो

कों को यावत कंदों को खाया और उनकी छाया में विश्राम किया। (तेसिं णं आवाए णो भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणयमाणा २ सुह-रूवत्ताए भुज्जो २ परिणमंति, एवामेव समणाउसो जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पंचसु कामगुणेसु नो सज्जेइ, नो रज्जेइ, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं ४ अच्चणिज्जे परलोए नो आगच्छइ, जाव वीईवयस्सइ, जहा वा ते पुरिसा) परन्तु इन पुरुषोंको उनके मूला दिकों के खाने के समय विशिष्ट स्वादादि की प्राप्तिरूप भद्रक का लाभ तो नहीं हुआ-किन्तु उसके बाद जब खाये हुए उन मूलादिकों का रसादि रूप से परिणमन हुआ तब उन्हें बार २ शुभ रूप परिणमन होने से आनन्द आया और जीवन सुरक्षित रहा-अब सुधर्मास्वामी इसका उपनय (दृष्टान्त के अर्थ को प्रकृति में जोडना) दिखलाते हुए कहते हैं कि इसी तरह से हे आयुष्मन्त श्रमणो। जो हमारे निर्ग्रन्थ श्रमण एवं श्रमणियांजन हैं वे आचार्य उपाध्यायके पास मुंडित होकर दीक्षित हो जाते हैं और उनके उपदेश को श्रद्धा आदि का विषयभूत

(तेसिं णं आवाए णो भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा २ सुहरूवत्ताए भुज्जो २ परिणमंति, एवामेव समणाउसो जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पंचसु कामगुणेसु नो सज्जेइ, नो रज्जेइ से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं४ अच्चणिज्जे परलोए नो आगच्छइ, जाव वीइवयसइ. जहा वा ते पुरिसा)

ते माणुसोने वृक्षोना मूळ कंद वगेरे खाती वखते सविशेष स्वाद वगेरेनी अनुभूति तो थई शकी नहि पण खाधा पछी ते मूळ कंद रस वगेरे रूपमां परिणत थयां त्यारे तेमने सुख मळ्युं अने साथे साथे तेमनां जीवन पण सुरक्षित रह्यां. सुधर्मा स्वामी हवे एज वातने दृष्टान्तनां रूपमां स्पष्ट करतां कहे छे के हे आयुष्मंत श्रमणो ! आ प्रमाणे ज जे अमारा निर्ग्रंथ श्रमणीओ, आचार्य तेमज उपाध्यायनी पासे मुंडित थईने श्रद्धा वगेरेथी

स्वजते=आसक्तो भवति, 'नो रज्जेइ' नो रज्यते नो अनुरक्तो भवति स खलु इह भवएव बहूनां श्रमणानां श्रमणीनां बहूनां साधूनां साध्वीनां मध्ये-अर्चनीयः= माननीयः सन् परलोके=भवान्तरे नो आगच्छति=जन्म न आप्नोति किन्तु- यावत्-अस्मिन्नेव भवे चातुरन्तसंसारकान्तारं व्यतिव्रजिष्यति=उल्लङ्घयिष्यति, मोक्षं प्राप्स्यतीत्यर्थः 'जहा वा ते पुरिसा' यथा वा ते पुरुषाः-यथा वा=येन प्रकारेण धन्यसार्थवाहोपदेशश्रद्धया ते=नन्दिफलवृक्षमूलकन्दादि परिवर्जनेन तत्कथनानुसारसमाचरणशीलाः पुरुषाः=सार्थपुरुषाः सुखपूर्वकमहिच्छत्रां नगरीं प्राप्स्यन्ति तथेत्यर्थः। अथ श्रद्धा रहितान् वर्णयति-'तत्थ णं' इत्यादि। तत्र खलु सार्थे अप्येके=ये तेचित् पुरुषाः धन्यस्य सार्थवाहस्य एतमर्थं=नन्दिफलभक्षणादि निषेधरूपं

बनाते हुए पांच काम गुणों में-शब्दादि विषयों में आसक्त नहीं बनते हैं अनुरक्त नहीं बनते हैं वे इस भवमें ही अनेक साधु और साध्वियों के बीचमें माननीय होते हुए परलोक में जन्म से रहित हो जाते हैं- अर्थात् पुनः उन्हें जन्म धारण नहीं करना पडता है। कारण वे इसी भव में चतुर्गति रूप इस संसार कान्तार को पार करने वाले बन जाते हैं-उन्हें मोक्ष प्राप्त हो जावेगा ऐसे वें तैयार हो जाते हैं। जिस प्रकार धन्य सार्थवाह के उपदेश पर श्रद्धा करने से ये सार्थ के कितनेक पुरुष नंदि वृक्षों के मूलकंदादिकों का परिहार-त्याग करते हुए और उसके कथनानुसार अपना आचरण बनाते हुए सकुशल अहिच्छत्रा नगरी को प्राप्त कर लेंगें ऐसे बन गये। अब जिन्होंने धन्य सार्थवाहके वचनों पर श्रद्धा नहीं की-उनकी क्या दशा हुई इस बात का वर्णन सूत्रकार करते हैं-(तत्थ णं अप्पेगइया पुरिसा धण्णस्स सत्थवाहस्स एय-

---

युक्त थईने पाच काम गुणोमां शब्दादि विषयोमा-अनासक्त रहे छे એटले के अनुरक्त थता नथी, तेओ आ भवमा ज घणा साधुओ तेमज साध्वीओनी वच्चे सन्माननीय थतां परलोकमां जन्मरहित थई जाय छे એटले के फरी तेओनो जन्म थतो नथी केमके तेओ आ भवमा ज चतुर्गति रूप आ संसार कांतारने पार करवा लायक सामर्थ्य मेळवी ले छे तेओ मोक्ष मेळववा योग्य थई जाय छे, जेम धन्यसार्थवाहना उपदेश उपर श्रद्धा मूकीने सार्थना केटलाक पुरुषोએ नंदि वृक्षोना मूळ कंद वगेरेने त्यजीने तेनी सूचना मुजब आचरण करतां अहिच्छत्रा नगरीमां पहोची शके तेवा थई गया हवे जे पुरुषोએ धन्यसार्थवाहनी वात उपर श्रद्धा मूकी नहि तेओनी शी हालत थई तेनुं वर्णन करतां सूत्रकार कहे छे—

(तत्थणं अप्पेगइया पुरिसा धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति ३

नो श्रद्दधति नो रोचयन्ति नो प्रतियति। ते धन्यस्य-एतमर्थम् अश्रद्दधाना अरोचयन्तः, अप्रतियन्त यत्रैव नन्दिफला वृक्षास्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तेषां नन्दिफलानां मूलानि च यावत्-कन्दादीनि आहारयन्ति, तेषां छायासु च विश्राम्यन्ति तेषां खलु आपाते=पूर्वं फलभक्षणादिसमये भद्रकं भवति=शुभस्वादादिलाभोभवति किन्तु 'तओ पच्छा' ततः पश्चात्=फलभक्षणाद्यनन्तरं परिणम्यमानाः=रसादिरूपेण

मट्ठं नो सद्दहंति ३ धण्णस्स एयमट्ठं असद्दहमाणा ३ जेणेव ते नंदिफला तेणेव उवागच्छिंति उवागच्छित्ता तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि य जाव वीसमंति, तेसि णं आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा जाव ववरोवेंति एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पव्वइए पंचसु कामगुणेसु सज्जेइ, सज्जित्ता जाव अणुपरियट्टिस्सइ जहा वा ते पुरिसा) वहां पर कितनेक पुरुषों ने धन्यसार्थवाह के इस कथन को कि नंदिफल वृक्षों के कंदमूलादि नहीं खाना चाहिये और न उनकी छायामें ही विश्राम करना चाहिये श्रद्धाकी दृष्टिसे नहीं देखा उस पर अपनी श्रद्धा नहीं जमाई, उसे अपनी रुचि का प्रतीति का विषय नहीं बनाया-वे पुरुष- धन्यसार्थवाह के इस कथन को अश्रद्धेय आदि मानकर जहां पर नंदिफल वृक्ष थे- वहां गये वहां जाकर उन्होंने उनके मूल कंदादि कों को खाया उनकी छाया में विश्राम किया उस समय उन्हें बड़ा आनन्द आया- स्वाद जन्य कोई अपूर्व सुख मिला -किन्तु जब उनका परिपाक काल आया जब वे खाये हुए मूलकन्दादि

धण्णस्स एयमट्ठं असद्दहमाणा ३ जेणेव ते णंदिफला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि य जाव वीसमंति, तेसि णं आवाए भद्दए, भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा जाव ववरोवेंति एवामेव समणाउसो। जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पव्वइए पंचसु कामगुणेसु सज्जेइ, सज्जित्ता जाव अणुपरियट्टिस्सइ, जहा वा ते पुरिसा)

ત્યાં કેટલાક માણસોએ ધન્યસાર્થવાહના નંદિફળ વૃક્ષોના કંદમૂળો વગેરે ખાવા જોઈએ નહિ તેમજ તે વૃક્ષોની છાયામાં પણ વિસામો લેવો નહિ આ જાતના કથન પ્રત્યે શ્રદ્ધાવાન થયા નથી, તેના ઉપર વિશ્વાસ મૂક્યો નહિ અને પ્રતીતિપૂર્વક તેમાં પોતાની અભિરૂચી બતાવી નહિ. તે માણસો ધન્યસાર્થવાહના કથન અશ્રદ્ધેય માનીને જ્યાં નંદિફળ વૃક્ષો હતા ત્યાં ગયા. ત્યાં જઈને તેમણે તેમના મૂળ કંદ વગેરે ખાધાં અને તેમના છાંયડામાં વિસામો લીધો. તે સમયે તો તેમને ખૂબ જ આનંદ પ્રાપ્ત થયો, ફળોના સ્વાદમાં અપૂર્વ સુખ મળ્યું, પણ જ્યારે તેઓની પાચન ક્રિયા થવા માંડી એટલે કે ખાધેલા મૂળકંદ વગેરે

परिणामं प्राप्नुवन्तः सन्तः कन्दादयः यावत्-तान् जीविताद् व्यपरोपयन्ति । 'एवमेव' एवामेव=अनेनैव प्रकारेण हे आयुष्मन्तः श्रमणाः योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा यावत् प्रव्रजितः सन् पञ्चसु कामगुणेषु=शब्दादिकामभोगेषु स्वजते, रज्यते-कामभोगासक्तो भवति यावत्-स खलु इहभवे बहूनां श्रमण-श्रमणीनां, बहूनां श्रावकश्राविकानां मध्ये हिलनीयो, निन्दनीयः, खिसनीयो भवति, परलोके=च भवान्तरे चातुरन्तसंसारकान्तारम् अनुपर्यटिष्यति चातुर्गतिकसंसार एव स्थास्यति न तु मोक्षं प्राप्स्यतीत्यर्थः । येन प्रकारेण ते=धन्योपदेशमश्रद्दधानाः पुरुषाः=सार्थस्थिता जना नन्दिफलवृक्षमूलकन्दादिभक्षणेन तत्रैव म्रियन्ते नतु-अहिच्छत्रां नगरीं प्राप्नुवन्तीति भावः ॥ सू० ३ ॥

मूलम्—तएणं से धण्णे सत्थवाहे सगडीसागडं जोयावेइ जोयावित्ता जेणेव अहिच्छत्ता नयरी तेणेव उवागच्छइ उवा-

---

रसादिरूप से पणिमने लगे-तब वे सब अपने२ जीवन से रहित हो गये -मर गये-। इसी तरह हे आयुष्मंत श्रमणो। जो हमारा निर्ग्रन्थ व निर्ग्रन्थी साध्वीजन यावत प्रव्रजित होकर पंचकाम गुणों में-पंचइन्द्रियों के शब्दादि विषयों में-आसक्त बन जाता है-अनुरक्त हो जाता है, वह इस भवमें अनेक श्रमण श्रमणियोंके बीच हीलनीय, निंदनीय एवं खिसनीय होता है एवं वह भवान्तर में भी इस चतुर्गति रूप संसार कान्तार में ही घूमता रहेगा-मोक्ष प्राप्त नहीं करेगा। जिस प्रकार धन्य सार्थवाह के उपदेश पर श्रद्धा नहीं करने वाले सार्थ के ये कितनेक पुरुष नंदिफल वृक्षों के मूलादि के खाने से वहीं पर मर गये-अहिच्छत्र नगरी नहीं जा सके ॥ सू० ३ ॥

રસ વગેરે રૂપમાં પરિણત થવા લાગ્યા ત્યારે તેઓ બધા નિર્જીવ થઈ ગયા, મૃત્યુ પામ્યા. આ પ્રમાણે જ હે આયુષ્મંત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રંથ સાધુઓ કે નિર્ગ્રંથ સાધ્વીઓ પ્રવ્રજીત થઈને પાંચ કામ ગુણોમાં અર્થાત્ પાંચે ઇન્દ્રિયોના શબ્દાદિ વિષયોમાં આસક્ત થઇ પડે છે-એટલે કે અનુરક્ત થઇ જાય છે, તે આ ભવમાં ઘણા શ્રમણો અને ઘણી શ્રમણીઓની વચ્ચે હીલનીય, નિંદનીય, અને ખિંસનીય હોય છે અને બીજા ભવમાં પણ આ ચતુર્ગતિ રૂપ સંસાર-કાંતારમાં જ ભ્રમણ કરતો રહેશે. તેને મોક્ષ પ્રાપ્ત થશે નહિ. ધન્યસાર્થવાહના ઉપદેશને શ્રદ્ધેય ન માનનારા કેટલાક માણસો જેમ નંદિ ફળ વૃક્ષોના મૂળ વગેરે ખાઇને ત્યાંને ત્યાંજ મરણ પામ્યા, અહિચ્છત્રા નગરીમાં પહોંચી શકયા નહિ, તેમજ તેઓની પણ સ્થિતિ થાય છે. ॥ સૂ. ૩ ॥

गच्छित्ता अहिच्छत्ताए णयरीए वहिया अग्गुज्जाणे सत्थनिवेसं करेइ करित्ता सगडीसागडं मोयावेइ, तएणं से धण्णे सत्थवाहे महत्थं३ रायरिहं पाहुडं गेण्हइ गेण्हित्ता बहुहिं पुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे अहिच्छत्तं नयरिं मज्झं मज्झेणं अणुप्पविसइ अणुप्पविसित्ता जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेइ, वद्धावित्ता तं महत्थं३ पाहुडं उवणेइ, तएणं से कणगकेऊ, राया हट्ठतुट्ठ० धण्णस्स सत्थवाहस्स तं महत्थं३ जाव पडिच्छइ पडिच्छित्ता धण्णं सत्थवाहं सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता उस्सुक्कं वियरइ २ पडिविसज्जेइ। तएणं से धण्णे सत्थवाहे भंडविणिमयं करेइ करित्ता पडिभंडं गेण्हइ गेण्हित्ता सुहंसुहेणं जेणे२ चंपानयरी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता मित्तनाइ०अभिसमन्नागए विउलाइं माणुस्सगाइं कामभोगाइं भुंजमाणे विहरइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं धण्णे सत्थवाहे धम्मं सोच्चा जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेत्ता पव्वइए सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ पाउणित्ता मासियाए सं० अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अंतं करेहिइ। एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव संपत्तेणं पन्नरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥ सू० ४ ॥

॥ पन्नरसमं नायज्झयणं समत्तं ॥

टीका—'तएणं से' इत्यादि । ततः खलु स धन्यः सार्थवाहः शकटीशाकटं योजयति, योजयित्वा यत्रैवाहिच्छत्रा नगरी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य अहिच्छत्रायां नगर्यां बहिः अग्र्योद्याने=मुख्योद्याने सार्थनिवेशं करोति, कृत्वा शकटी-शाकटं मोचयति । ततः खलु स धन्यः सार्थवाहः 'महत्थं' महार्थं=महाप्रयोजनकं. 'महग्घं' महार्घं=महामूल्य, 'महरिहं' महार्हं=महतां योग्य 'रायरिहं' राजार्हं=राजयोग्यं प्राभृतं गृह्णाति, गृहीत्वा बहुभिः पुरुषैः सार्द्धं संपरिवृतः अहिच्छत्रां नगरीं मध्यमध्येन अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य यत्रैव कनककेतू राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'करयल जाव बद्धावेइ' करतल यावद् वर्धयति—कर-

---

'तएणं से धण्णे सत्थवाहे' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से धण्णे सत्थवाहे) उस धन्यसार्थवाहने (सगडी सागडं जोयावेइ जोयावित्ता जेणेव अहिच्छत्ता णयरी तेणेव उवागच्छइ) वहां से अपने गाड़ी और गाड़ों को जुतवाया और जुतवा-कर जहां अहिच्छत्रा नगरी थी उस ओर चल दिया। (उवागच्छित्ता अहिच्छत्ताए नयरीए बहिया अग्गुज्जाणे सत्थनिवेसं करेइ) धीरे धीरे अहिच्छत्रा नगरी में वह पहुँच गया। वहां पहुँच कर उसने बाहर रहे हुए प्रधान बगीचे में अपने सार्थ को ठहरा दिया। (करित्ता सगडी सागडं मोयावेइ) और वहीं पर अपनी गाड़ी और गाड़ों को ढील दिया। (तएणं से धण्णे सत्थवाहे महत्थं ३ रायारिहं पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता बहुहिं पुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे अहिच्छत्तं नयरिं मज्झं मज्झेणं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवाग-

---

तएणं से धण्णे सत्थवाहे इत्यादि—

टीकार्थ-(तएणं) त्यारबाद (से धण्णे सत्थवाहे) ते धन्यसार्थवाहे (सगडी सागडं जोयावेइ जोयावित्ता जेणेव अहिच्छत्ता णयरी तेणेव उवागच्छइ त्यांथी पोतानी गाडीओ अने गाडाओने जोतरावीने जे तरफ अहिच्छत्रा नगरी हती ते दिशा तरफ रवाना थयो. (उवागच्छित्ता अहिच्छत्ताए नयरीए बहिया अग्गुज्जाणे सत्थनिवेसं करेइ) अने धीमे धीमे अहिच्छत्रा नगरीमां पहोंची गयो. त्यां पहोंचीने तेणे नगरीनी बहार आवेला प्रधान उद्यानमां पोताना सार्थनो मुकाम नाख्यो. (करित्ता सगडीसागडं मोयावेइ) अने त्यां ज पोतानी गाडीओ अने गाडाओने छोडावी नाख्यां.

(तएणं से धण्णे सत्थवाहे महत्थं ३ रायरिहं पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता बहुहिं पुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे अहिच्छत्तं नयरिं मज्झं मज्झेणं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता

तल्परिगृहीतं शिरआवर्तं दशनखं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा राजानं जयविजयशब्देन वर्द्धयति, वर्द्धयित्वा तन्महार्थं महार्घं महार्हं प्राभृतम् उपनयति=राज्ञः समीपे स्थापयति। ततः खलु स कनककेतू राजा हृष्टतुष्टहृदयो हर्षवशविसर्पद्हृदयो धन्यस्य सार्थवाहस्य तन्महार्थं ३ यावत् प्राभृतं 'पडिच्छइ' प्रतीच्छति=स्वीकरोति, प्रतीष्य धन्य सार्थवाहं सत्कारयति सम्मानयति, सत्कृत्य सम्मान्य तस्मै 'उस्सुक्कं' उच्छुल्कं=शुल्काभावपत्र 'केनापि राजपुरुषेणास्मात्करो न ग्राह्यः' इत्येतद्रूपमाज्ञापत्रं वितरति=ददाति, वितीर्य त प्रतिविसर्जयति।

च्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेइ, वद्धावित्ता तं महत्थं ३ पाहुडं उवणेइ) इस के बाद उस धन्य सार्थवाह ने महार्थ साधक, महामूल्य एवं महा पुरुषों के योग्य-प्राभृत-भेंट को साथ में लिया, और लेकर अनेक पुरुषों के साथ २ अहिच्छत्रा नगरी में बीच से होता हुआ प्रविष्ट हुआ। नगरी में प्रविष्ट होकर वह जहां कनक केतु राजा थे वहां गया वहां जाकर उसने राजा को दोनों हाथ जोड कर नमस्कार किया, और जय विजय शब्दों को उच्चारण करते हुए उन्हें वधाई दी। वधाई देकर उसने फिर राजा के समक्ष अपनी भेट रखदी। (तएणं से कणगकेऊ राया हट्ठ तुट्ठ० धण्णस्स सत्थवाहस्स तं महत्थं ३ जाव पडिच्छइ पडिच्छित्ता धण्णं सत्थवाह सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता उस्सुक्कं वियरइ २ पडिविसज्जेइ) कनककेतु राजाने हर्षित एवं संतुष्ट होकर धन्यसार्थवाह की उस महार्थ साधक महामूल्य राज योग्य भेंट

जेणेव कणगकेउ राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेइ, वद्धावित्ता तं महत्थं३ पाहुडं उवणेइ)

ત્યારપછી તે ધન્યસાર્થવાહે મહાર્થ સાધક બહુ કિંમતી અને મહા પુરૂષોને યોગ્ય ભેટ સાથે લઇને ઘણા માણસોની સાથે અહિચ્છત્રા નગરીની વચ્ચેના માર્ગે (રાજમાર્ગ) થઇને નગરીમા પ્રવિષ્ટ થયો. નગરીમાં પ્રવેશીને તે જ્યાં કનકકેતુ રાજા હતા ત્યાં ગયો ત્યાં જઇને તેણે રાજાને બંને હાથ જોડીને નમસ્કાર કર્યા અને જય વિજય શબ્દો ઉચ્ચારણ કરતાં તેમને વધાઈ આપી. વધાઈ આપ્યા પછી તેણે રાજાની સામે પોતાની ભેટ મૂકી દીધી

(तएणं से कणगकेऊ राया हट्ठ तुट्ठ० धण्णस्स सत्थवाहस्स तं महत्थं ३ जाव पडिच्छइ पडिच्छित्ता धण्णं सत्थवाहं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता उस्सुक्कं वियरइ २ पडिविसज्जेइ)

કનકકેતુ રાજાએ હર્ષિત તેમજ સંતુષ્ટ થઇને મહાર્થ સાધક મહામૂલ્યવાળી અને રાજાઓને માટે યોગ્ય ભેટ સ્વીકારી લીધી. સ્વીકાર કર્યા બાદ

ततः खलु स धन्य सार्थवाहस्तत्र 'भंडविणिमयं' भाण्डविनिमयं=भाण्डानां=क्रयाणकवस्तूनां विनिमयम्=आदानप्रदानं करोति, कृत्वा 'पडिभंडं' प्रतिभाण्डं=विनिमयेन प्राप्तं वस्तुजातं गृह्णाति, गृहीत्वा शकटीशाकटं भरति भृत्वा शकटीशाकटं योजयति, योजयित्वा सुखं=सुखेन=सुखपूर्वकं यत्रैव चम्पानगरी=स्वनिवासस्थानं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य मित्रज्ञातिस्वजनसम्बन्धिपरिजनैः सह 'अभिसमन्नागए' अभिसमन्वागतः=संमिलितो विपुलान् मानुष्यकान् कामभोगान् भुञ्जानो विहरति।

को स्वीकार कर लिया। स्वीकार करके फिर उन्हों ने धन्यसार्थवाह का सत्कार एवं सन्मान किया। सत्कार सन्मान करके "किसी भी राज पुरुष को इन से कर नहीं लेना चाहिये इस प्रकार का शुल्क भाव विषयक आज्ञा पत्र" उसके लिये प्रदान किया और प्रदान करके बाद में उसे वहां से विदा कर दिया। (तएणं से धण्णे सत्थवाहे भंडविणिमयं करेइ, करित्ता पडिभंडं गेण्हइ, गेण्हित्ता सुहं सुहेणं जेणेव चंपा नयरी तेणेव उवागच्छइ) इसके बाद धन्यसार्थवाह ने वहां रह कर अपनी क्रयाणक वस्तुओं का विक्रय किया और उससे प्राप्त द्रव्य से और दूसरी वस्तुओं को खरीदा। खरीद कर उसने उन्हें गाडी और गाडों में भरा भरकर उन्हें जुनवाया और जुनवाकर फिर वह वहां से चंपानगरी की ओर वापिस चल दिया। (उवागच्छित्ता मित्तनाइ० अभिसमन्नागए विउलाइं माणुस्सगाइं कामभोगाइं भुंजमाणे विहरइ)

તેમણે ધન્યસાર્થવાહનો સત્કાર તેમજ સન્માન કર્યું. સત્કાર અને સન્માન કરીને રાજાએ 'કોઇપણ રાજપુરૂષ તેમની પાસેથી રાજકર લે નહિ' તે પ્રમાણેની વ્યવસ્થા કરતાં તેમને શુલ્ક માફીનું આજ્ઞાપત્ર લખી આપ્યું ત્યારપછી તેને ત્યાંથી જવાની આજ્ઞા આપી

(तएणं से धण्णे सत्थवाहे भंडविणिमयं करेइ, करित्ता पडिभंडं गेण्हइ, गेण्हिता सुह सुहेणं जेणेव चंपानयरी तेणेव उवागच्छइ)

ત્યારબાદ ધન્યસાર્થવાહે ત્યાં રહીને પોતાની ક્રયાણક વસ્તુઓને વેચી અને તેનાથી જે ધન મળ્યુ તેનાથી બીજી વસ્તુઓ ખરીદી લીધી. વસ્તુઓની ખરીદ કરીને તેણે બધી વસ્તુઓની ખરીદી કરીને તેણે બધી વસ્તુઓને ગાડી તેમજ ગાડાઓમાં ભરી અને ત્યારપછી ગાડી અને ગાડાઓને જોતરાવીને ત્યાંથી ચંપા નગરી તરફ પાછો રવાના થયો.

(उवागच्छित्ता मित्तनाइ० अभिसमन्नागए विउलाइं माणुस्सगाइं काम भोगाइं भुंजमाणे विहरइ)

तस्मिन् काले तस्मिन् समये स्थविरागमनम् । धन्यः सार्थवाहो धर्मं श्रुत्वा प्रतिबुद्धः सन् ज्येष्ठपुत्रं कुटुम्बे स्थापयित्वा प्रव्रजितः, सामायिकादीनि एकादशाङ्गान्यधीते । बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयति, पालयित्वा मासिक्या संलेखनया ऽऽत्मानं जुष्ट्वा षष्टि भक्तानि अनशनेन छित्वा कालमासे कालं कृत्वा—

चंपानगरी में आकर वह अपने मित्र, ज्ञाति, स्वजन, संबन्धी परिजनों से मिला और विपुल मनुष्य भव संबन्धी काम भोगों को भोगने लगा (तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं, धण्णे सत्थवाहे धम्मं सोच्चा जेट्ठं पुत्तं कुडुंबे ठवेत्ता पव्वइए, सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अंतं करेहिइ । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं पन्नरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि) उसी काल और उसी समय में वहां पर स्थविरों का आगमन हुआ। धन्यसार्थवाह ने उनसे धर्म का व्याख्यान सुना सुनकर वह प्रतिबुद्ध हो गया और प्रतिबुद्ध हो करके फिर वह कुटुंब में अपने ज्येष्ठ पुत्र को रखकर दीक्षित होकरके उसने सामायिक आदि ग्यारह अंगोंका अध्ययन किया। अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन कर १ मास की संलेखना से ६० भक्तों का अनशन द्वारा छेदन करके काल अवसर काल करके देव-

ચંપા નગરીમાં આવીને તે પોતાના મિત્ર. જ્ઞાતિ, સ્વજન, સંબંધી પરિજનોને મળ્યો અને વિપુલ મનુષ્ય ભવના કામભોગો ભોગવવા લાગ્યો.

(तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं धण्णे सत्थवाहे धम्मं सोच्चा जेट्ठं पुत्तं कुडुंबे ठवेत्ता पव्वइए, सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, जाव अंतं करेहिइ । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं पन्नरसमस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि)
તે કાળે અને તે સમયે તે નગરીમાં સ્થવિરો પધાર્યા ધન્યસાર્થવાહે તેઓના મુખથી ધર્મનું વ્યાખ્યાન સાંભળ્યું અને સાંભળીને તેને પ્રતિબોધ થયો પ્રતિબુદ્ધ થઈને તેણે પોતાના કુટુંબના વડા તરીકે પોતાના મોટા પુત્રનીનીમણુક કરીને દીક્ષા ગ્રહણ કરી દીક્ષા ગ્રહણ કર્યા બાદ તેણે સામાયિક વગેરે અગિયાર અંગોનું અધ્યયન કર્યું અને ઘણાં વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનુ પાલન કરીને એક માસની સંલેખનાથી ૬૦ ભક્તોનું અનશન વડે છેદન કરીને કાળના વખતે

अन्यतरेषु देवलोकेषु 'देवत्ताए' देवतया=देवत्वेन उपपन्नः। महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति यावत्-सर्वदुःखानामन्तं करिष्यति। एवं खलु हे जम्बूः! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्-सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं सम्प्राप्तेन पञ्चदशस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः=पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः 'त्तिबेमि' इति ब्रवीमि व्याख्या पूर्ववत्।सू०४।

इति श्री विश्वविख्यात – जगद्वल्लभ–प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलित-ललितकलापालापक –प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक–वादिमानमर्दक श्रीशाहू छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त 'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित-कोल्हापुरराजगुरु–बालब्रह्मचारि जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री घासीलालव्रतिविरचितायां श्री ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायां पञ्चदशमध्ययनं समाप्तं ॥ १५ ॥

लोक में देव की पर्याय से उत्पन्न हो गया। महाविदेह क्षेत्र से यह सिद्ध अवस्था कोप्राप्त करेगा–यावत् समस्त दुःखों का अन्त करने वाला होगा इस प्रकार हे जंबू! श्रमण भगवान महावीर ने कि जो सिद्धगति नाम के स्थान को प्राप्त करचुके हैं इस पंद्रहवे ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त भाव प्रज्ञप्त किया है। ऐसा मैंने उनके मुख से सुना है सो यह वैसा तुमसे कहा है ॥ सू० ४ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराजकृत "ज्ञाता-धर्मकथाङ्गसूत्र" की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्याका पंद्रहवां अध्ययन समाप्त ॥ १५॥

કાળ કરીને દેવલોકમાં દેવના પર્યાયથી જન્મ પામ્યો. મહાવિદેહ ક્ષેત્રથી તે સિદ્ધ અવસ્થા પ્રાપ્ત કરશે યાવત્ બધા દુઃખોનો તે અન્ત કરનાર થશે. આ રીતે હે જંબૂ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેઓએ સિદ્ધિગતિ નામના સ્થાનને મેળવી લીધુ છે–આ પંદરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત ભાવ નિરૂપિત કર્યો છે. મેં જે પ્રમાણે તેઓશ્રીના મુખથી સાંભળ્યું છે તે પ્રમાણે જ તમારી આગળ રજુ કર્યું છે. ॥ સૂત્ર ૪ ॥

જૈનાચાર્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાધ્યયન સૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનું પંદરમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥૧૫॥

॥ अथ षोडशाध्ययनं प्रारभ्यते ॥

उक्तं पञ्चदशाध्ययनम्, तत्र विषयसङ्गोऽनर्थस्य कारणमित्युपदिष्टम् इह षोडशाध्ययने तु तद्विषयनिदानमनर्थस्य मूलं भवतीत्युच्यते, इत्येवं सम्बन्धेन प्रसङ्गतः प्राप्तस्यास्याध्ययनस्य प्रथमं सूत्रमाह—' जइणं भंते ! ' इत्यादि ।

मूलम्—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं पन्नरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सोलसमस्स णं भंते णायज्झयणस्स णं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था, तीसेणं चंपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए सुभूमिभागे उज्जाणे होत्था, तत्थ णं चंपा नयरीए तओ माहणा भायरो परिवसंति, तं जहा—सोमे सोमदत्ते सोमभूई, अड्ढा जाव अपरिभूया रिउव्वेय जाव सुपरिनिट्ठिया, तेसि णं माहणाणं तओ भारियाओ होत्था, तं जहा-नागसिरी भूयसिरी जक्खसिरी

सोलहवां अध्यन प्रारंभ

पन्द्रहवां अध्यन समाप्त हो चुका—अब सोलहवां अध्यन प्रारंभ होता है। पंद्रहवें अध्यन में विषयसंघ अनर्थ का कारण कहा गया है—अब सोलहवें अध्यन में विषय निदान अनर्थ का कारण होता है यह स्पष्ट किया जायगा। इस संबन्ध से आया हुआ इस अध्ययन का यह प्रथम सूत्र है ' जइणं भंते । ' इत्यादि ।

સોળમું અધ્યયન પ્રારંભ

પંદરમું અધ્યયન પુરૂ થાય છે. હવે સોળમું અધ્યયન પ્રારંભ થાય છે. પંદરમા અધ્યયનમાં વિષયસંગને અનર્થનું કારણ બતાવવામાં આવ્યું છે. હવે સોળમા અધ્યયનમાં વિષય-નિદાન અનર્થનું કારણ હોય છે, આ વાત સ્પષ્ટ કરવામાં આવશે. આ વિષયને લગતું આ અધ્યયનનું પહેલું સૂત્ર આ છેઃ—

जइणं भंते इत्यादि—

सुकुमाल जाव तेसि णं माहणाणं इट्ठाओ ५, विपुले माणु-
स्सए जाव विहरंति । तएणं तेसिं माहणाणं अन्नया कयाई
एगयओ समुवागयाणं जाव इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे
समुप्पज्जित्था, एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमे विउले
धणे जाव सावतेज्जे अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ
पकामं दाउं पकामं भोत्तुं पकामं परिभाएउं तं सेयं खलु अम्हं
देवाणुप्पिया ! अन्नमन्नस्स गिहेसु कल्लाकल्लिं विउलं असणं
पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेउं उवक्खडावित्ता परिभुंज-
माणाणं विहरित्तए, अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति परिसु-
णित्ता कल्लाकल्लिं अन्नमन्नस्स गिहेसु विपुलं असण४ उव-
क्खडावेंति, उवक्खडावित्ता परिभुंजमाणा विहरंति, तएणं
तीसे नागसिरीए माहणीए अन्नया भोयणवारए जाए यावि
होत्था, तएणं सा नागसिरी विपुलं असणं४ उवक्खडेति
उवक्खडित्ता एगं महं सालइयं तित्तालाउयं बहुसंभारसंजुत्तं
णेहावगाढं उवक्खडेइ उवक्खडित्ता एगं बिंदुयं करयलंसि
आसाएइ आसाइत्ता तं खारं कडुयं अक्खज्जं अभोज्जं
विसब्भूयं जाणित्ता एवं वयासी—धिरत्थु णं मम नागसिरीए
अहन्नाए अपुन्नाए दूभगाए दूभगसत्ताए दूभगणिंबोलियाए
जीएणं मए सालइए बहुसंभारसंभिए नेहावगाढे उवक्ख-
डिए, सुबहुदव्वक्खए, नेहक्खए य कए, तं जइणं ममं
जाउयाओ जाणिस्संति तो णं मम खिंसिस्संति तं जाव
ताव मम जाउयाओ ण जाणंति ताव मम सेयं एयं साल-

इयं तित्तालाउ य बहुसंभारणेहकयं एगंते गोवेत्तए अन्नं सालइयं महुरालाउयं जाव नेहावगाढं उवक्खडेत्तए, एवं संपेहेइ संपेहित्ता तं सालइयं जाव गोवेइ, अन्नं सालइयं महुरालाउयं उवक्खडेइ, तेसिं माहणाणं ण्हायाणं जाव सुहासणवरगयाणं तं विपुलं असणं४ परिवेसेइ, तएणं ते माहणा जिमियभुत्तुत्तरागया समाणा आयंता चोक्खा परम-सुइभूया सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था, तएणं ताओ माहणीओ ण्हायाओ जाव विभूसियाओ तं विपुलं असणं ४ आहारेंति आहारित्ता जेणेव सयाइं२ गेहाइं तेणेव उवा-गच्छइ उवागच्छित्ता सकम्मसंपउत्ताओ जायाओ ॥सू०१॥

टीका—श्रीजम्बूस्वामी श्रीसुधर्मस्वामिनं पृच्छति-यदि खलु हे भदन्त != हे भगवन् श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं सम्प्राप्तेन पञ्चदशस्य अयम्=उक्तरूपः, अर्थः प्रज्ञप्तः, षोडशस्य खलु ज्ञाताध्ययनस्य श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं संप्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ?,

---

टीकार्थ-(जइणं भंते । समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं पन्नरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सोलसमस्स णं भंते? णाय-ज्झयणस्सणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू ?) श्री जंबू स्वामी सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि भदंत । श्रमण भगवान् महावीरने जो कि सिद्धि गति नामक स्थानको प्राप्त हो चुके हैं पन्द्रहवें ज्ञाताध्ययनका यह पूर्वोक्तरूपसे अर्थ निरूपित किया है-तो

टीકાર્થ-(जइणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं पन्नरस-मस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सोलसमस्स णं भंते ! णायज्झयणस्स णं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जंबू !)

શ્રી જંબૂ સ્વામી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે હે ભદંત ! શ્રમણ ભગ-વાન મહાવીરે કે-જેઓ સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાનને મેળવી ચૂકયા છે-પંદરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો તે શ્રમણ ભગવાન

श्रीसुधर्मास्वामी कथयति-' एवं खलु जंबू ' इत्यादि । एवं खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये चम्पा नाम नगरी आसीत्, तस्याः खलु चम्पाया नगर्या बहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे सुभूमिभागनामकमुद्यानमासीत्, तत्र खलु चम्पायां नगर्यां त्रयो ब्राह्मणा भ्रातरः परिवसन्ति, तद् यथा-(१) सोमः, (२) सोमदत्तः, (३) सोमभूतिः, ते किं भूताः-आढ्याः=धनवन्तः यावद्-अपरिभूताः, तथा-' रिउव्वेय जाव ' ऋग्वेद-यजुर्वेदसामवेदाथर्ववेदेषु साङ्गोपाङ्गेषु सुपरिनिष्ठिताः । तेषां खलु ब्राह्मणानां तिस्रोभार्या आसन्, तद् यथा-(१) नागश्रीः,

---

सोलहवें ज्ञाताध्यन का हे भदंत ? उन्हीं श्रमण भगवान महावीरने कि जो सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त हो चुके हैं क्या भाव अर्थ प्रतिपादित किया है ? इस प्रकार के जंबू स्वामी के प्रश्नका उत्तर देते हुए सुधर्मास्वामी उनसे कहते हैं कि जंबू ! (तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था, तीसेणं चंपाए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए सुभूमिभागे उज्जाणे, होत्था, तत्थ णं चंपाए नयरीए तओ माहणा भायरा परिवसंति) उस काल और उस समय में चंपा नामकी नगरी थी । उस चंपा के बाहिर ईशान कोण में सुभूमि भाग नाम का उद्यान था । उसी चंपा नगरी में तीन ब्राह्मण भाइ रहते थे (तं जहा) उनके नाम ये हैं-(सोमे सोमदत्ते सोमभूई) सोम, सोमदत्त, और सोमभूति (अड्ढा जाव अपरिभूया) ये सब धन धान्यादि संपन्न एवं जन मान्य (रिउव्वेय, जाव सुपरिनिट्ठिया) ये सबके सब ऋग्वेद आदि चारों वेदों

મહાવીરે-કે જેઓ સિદ્ધિગતિ મેળવી ચૂકયા છે-સોળમા જ્ઞાતાધ્યયનનો શો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ? આ રીતે જંબૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાંભળીને સુધર્મા સ્વામી તેમને ઉત્તર આપતાં કહે છે કે હે જંબૂ !

(तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था, तीसेणं चंपाए वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए सभूमिभागे उज्जाणे, होत्था तत्थ णं नयरीए तओ माहणा भायरा परिवसंति)

તે કાળે અને તે સમયે ચંપા નામે નગરી હતી તે ચંપા નગરીની બહાર ઈશાન કોણમાં સુભૂમિભાગ નામે ઉદ્યાન હતું તે ચંપા નગરીમા ત્રણ બ્રાહ્મણ ભાઈઓ રહેતા હતા (तजहा) તેમના નામ આ પ્રમાણે છે-(सोमे सोमदत्ते सोभूमई) સોમ, સોમદત્ત, અને સોમભૂતિ (अड्ढा जाव अपरिभूया) તેઓ ત્રણે ધનધાન્ય વગેરેથી સંપન્ન તેમજ જનમાન્ય હતા (रिउव्वेय, जाव सुपरिनिट्ठिया) તેઓ ત્રણે ઋગ્વેદ વગેરે ચારે વેદોના સારા જ્ઞાતા હતા.

(तेसि णं माहणा णं तओ भारियाओ होत्था तं जहा-नागसिरी, भूयसिरी

(२) भूतश्रीः, (३) यक्षश्रीश्च, ताः किं भूताः—सुकुमारपाणिपादाः, यावत्—सर्वाङ्ग-सुन्दर्यः, तेषां खलु ब्राह्मणानामिष्टाः=कमनीयाः, विपुलान् मानुष्यकान् यावत् कामभोगान् भुञ्जाना विहरन्ति।

ततः खलु तेषां ब्राह्मणानामन्यदा कदाचिदेकतः समुपागतानां यावत् अय-मेतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूपः, मिथः=परस्परं, कथासमुल्लापः=वार्तालापः समुदप-द्यत—एवं खलु हे देवानुप्रियाः! अस्माकमिदं विपुलं धनं गणिमधरिममेयपरि-च्छेद्य भेदाच्चतुर्विधं यावत् 'सावतेज्जे' स्वापतेयं – पद्मरागादिरूपं वा, अत्र यावत्पदबोध्यं-कनकसुवर्णरत्नादिकं तथा-मौक्तिकादिकं च विद्यते, किंभूतं तदि-त्याह-'अलाहि' पर्याप्त=परिपूर्ण-यावत्—आसप्तमात् कुलवंशात्=सप्तमवंशपर्यन्तं-

---

के अच्छे जानकार थे। (तेसिणं माहणाणं तओ भारियाओ होत्था-तं जहा-नागसिरी, भूयसिरी, जक्खसिरी, सुकुमाल जाव तेसिं णं माहणाणं इट्ठाओ ५ विपुले मा० जाव विहरंति) इन तीनों ब्राह्मणों की तीन स्त्रियां थी। उनके नाम ये हैं।—नाग श्री, भूत श्री, और यक्ष श्री, ये सब सुकुमार करचरणवाली थी यावत् सर्वाङ्ग सुन्दर थीं। ये तीनों ब्राह्मण इनके साथ मनुष्यभव संबन्धी काम भागों को भोगते हुए आनंद से रहते थे। (तएणं तेसिं माहणाणं अन्नया कयाई एगय ओ समुवागयाणं जाव इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था) एक दिन की बात है कि जब ये तीनो भाई एक जगह बैठे हुए थे तब इनका परस्पर में इस प्रकार का विचार चला—(एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमे विउले धणे जाव सावतेज्जे अलाहिजाव आसत्तमाओ कुल-

---

जक्खसिरी, सुकुमार जाव तेसि णं माहणाणं इट्ठाओ५ विपुले मा०जाव विहरंति) આ ત્રણે બ્રાહ્મણોને ત્રણ સ્ત્રીઓ હતી. તેમનાં નામો આ પ્રમાણે છે. નાગશ્રી, ભૂતશ્રી, અને યક્ષશ્રી. તેઓ ત્રણે સુકોમળ હાથ અને પગવાળી હતી અને બધાં અંગો તેમનાં સુંદર હતાં. ત્રણે બ્રાહ્મણો તેમની સાથે મનુષ્ય ભવના કામભોગો ભોગવતાં સુખેથી રહેતા હતા.

(तएणं तेसिं माहणाणं अन्नया कयाई एगयओ समुवागयाणं जाव इमेया-रूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था)

એક દિવસની વાત છે કે તેઓ ત્રણે ભાઈ એક સ્થાને બેઠા હતા ત્યારે તેઓ પરસ્પર આ જાતનો વિચાર કરવા લાગ્યા કે—

(एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमे विउले धणे जाव सावतेज्जे अलाहि

पकामं दातुं, पकामं भोक्तुं पकामं परिभाजयितुम् ततः = तस्मात् श्रेयः = श्रेयस्करं खलु अस्माकं हे देवानुप्रियाः ! अन्योन्यस्य = परस्परस्य गृहेषु 'कल्लाकल्लिं' कल्याकल्यं प्रतिदिवसं विपुलं = बहुलम्, अशनं पानं खाद्यं स्वाद्यं 'उवक्खडाउं' उपस्कार्युपरिभुञ्जानानां विहर्तुम्। अन्योन्यस्य=परस्परस्य एतमर्थं ते त्रयो भ्रातरो ब्राह्मणाः प्रतिश्रृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति प्रतिश्रुत्य 'कल्लाकल्लिं'

वंसाओ पकामं दाउं पकामं भोत्तुं पकामं परिभाएउं-तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया। अन्नमन्नस्स गिहेसु कल्लाकल्लिं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेउं) हे देवानुप्रियो ! अपने पास विपुलमात्रा में, गणिम, धरिम, मेय, एवं परिच्छेद्यरूप चारों प्रकार का धन है, यावत् पद्मराग आदिरूप स्वापत्य भी हैं, कनक, सुवर्ण, रत्न, मणिमौक्तिक आदि सब कुछ है-और वह इतना अधिक है कि सात पीढी तक भी यदि खूब दान दिया जावे, बैठ २ खूब खाया जावे-और उसका हिस्सा भाग भी कर दिया जावे-तो भी वह समाप्त नहीं हो सकता है। इसलिये हम लोगों को उचित है कि हम लोग प्रति दिन एक दूसरे के घर पर अशन, पान, खाद्य एवं स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार विपुल मात्रा में बनवावें और (उवक्खडावित्ता परिभुंजमाणाणं विहरित्तए) बनवा कर उस का भोजन करें। (अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति) इस प्रकार का आपस का विचार उन्होंने एक दूसरे का स्वीकार कर लिया।

जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं भोत्तुं पकामं परिभाएउं तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! अन्नमन्नस्स गिहेसु कल्लाकल्लिं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेउं)

હે દેવાનુપ્રિયો ! આપણી પાસે પુષ્કળ પ્રમાણમાં ગણિમ, ધરિમ, મેય, અને પરિચ્છેદ્ય રૂપ ચારે જાતનું ધન છે. યાવત્ પદ્મરાગ વગેરે રૂપ સ્વાપત્ય પણ છે. કનક' સુવર્ણ, રત્ન, મણિ, મોતી, વગેરે બધું છે-અને જે કંઇ છે તે એટલું બધું છે કે સાત પેઢી સુધી પણ જો પુષ્કળ પ્રમાણમાં દાન કરવામાં આવે છતાં તે ખૂટશે નહિ. એથી અમને એ યોગ્ય લાગે છે કે અમે બધા દરરોજ એકબીજાને ઘેર અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્યરૂપ ચાર જાતના આહારો પુષ્કળ પ્રમાણમાં બનાવડાવીએ અને (उवक्खडावित्ता परिभुंजमाणाणं विहरित्तए) બનાવડાવીને જમીએ. (अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति) આ રીતે બધાએ એકમત થઇને વાત સ્વીકારી લીધી.

कल्याकल्यं=प्रतिदिवसम् अन्योन्यस्य गृहेषु विपुलमशनादिकमुपस्कारयन्ति । उपस्कार्य परिभुञ्जाना विहरन्ति । ततः खलु तस्या नागश्रियो ब्राह्मण्या अन्यदा=कदाचिदन्यस्मिन् समये 'भोयणवारए' भोजनवारकः=भोजयितुं नियमितो दिवसो भोजनवारकः जातः=समायातश्चाप्यभवत्, ततः खलु सा नागश्रीः विपुलमशनं पानं खाद्यं स्वाद्यमुपस्करोति=निष्पादयति, उपस्कृत्य एकं महत् 'सालइयं' सारचितं-सारेण रसेन चितं युक्तं यद्वा-शारदिकं=शरदृतुभवं 'तित्तालाउअं' तिक्तालाबुकं=निम्बादिवत् तिक्तरसयुक्ततुम्बीफलं, बहुसंभारसंयुक्तं=बहुभिः=अनेकविधैः संभारद्रव्यैः=शाकादौ स्वादसुगन्धविशेषार्थं हिङ्गुमेथिकाजीरकादीनि व्याघारकद्रव्याणि निक्षिप्यन्ते, तैर्मिश्रितं, 'णेहावगाढं' स्नेहावगाढं=घृतादिव्याप्तम् (युक्तम्) 'उवक्खडेइ' उपस्करोति, उपस्कृत्यैकं बिन्दुकं करतले समादाय

(पडिसुणित्ता कल्लाकल्लिं अन्नमन्नस्स गिहेसु विउलं असणं ४ उवक्खडावेंति) स्वीकार करके अब वे एक दूसरे के घर पर विपुल मात्रा में निष्पन्न हुए अशनादिरूप चतुर्विध आहार को खाने पीने लगे। (तएणं तीसे नागसिरीए माहणीए अन्नया भोयणवारए जाए यावि होत्था) किसी एक दिन नागश्री ब्राह्मणी की भोजन बनाने की बारी आई (तएणं सा नागसिरी विउलं असणं ४ उवक्खडेंति) सो उस दिन उसने विपुल मात्रा में चारों प्रकार का आहार बनाया (उवक्खडित्ता एगं महं सालइयं तित्तालाउअं बहुसंभारसंजुत्तं णेहावगाढं उवक्खडेइ) आहार बनाकर फिर उसने शरदृतु में उत्पन्न हुई अथवा रस से सरस बनी हुई तिक्तरसतुंबी का शाक बनाया-और उसमें स्वाद एवं सुगंधि के निमित्त हींग, मैथी, जीरे आदि का बघार दिया। उसे खूब अधिक घृत में छौंका था-इसलिये घृत उसके ऊपर तैर रहा था।

(पडिसुणित्ता कल्लाकल्लिं अन्नमन्नस्स गिहेसु विउलं असणं ४ उवक्खडावेंति)

સ્વીકારીને તેઓ એકબીજાને ઘેર પુષ્કળ પ્રમાણમાં અશનપાન વગેરે ચાર જાતના આહારોને ખાવા-પીવા લાગ્યા.

(तएणं तीसे नागसिरीए माहणीए अन्नया भोयणवारए जाए यावि होत्था)

કોઈ એક દિવસે નાગશ્રી બ્રાહ્મણીનો ભોજન તૈયાર કરવાનો વારો આવ્યો. (तएणं सा नागसिरि विउलं असणं ४ उवक्खडेंति) તેણે તે દિવસે પુષ્કળ પ્રમાણમાં ચારે જાતના આહારો બનાવ્યા.

(उवक्खडित्ता एगं महं सालइयं तित्तालाउअं बहुसंभार संजुत्तं णेहावगाढं उवक्खडेइ)

આહાર બનાવીને તેણે શરદ્ ઋતુમાં ઉત્પન્ન થયેલી અથવા તો રસથી સરસ થયેલી તિક્તરસવાળી તુંબીનું શાક બનાવ્યું અને તેમાં સ્વાદ અને સુગંધીને માટે હીંગ, મેથી, જીરૂ વગેરેનો વઘાર દીધો હતો એટલે તેની

आस्वादयति, अस्वाद्य तत् क्षारं कटुकमस्वाद्यमभोज्यं विषभूतं ज्ञात्वा एवमवादीत्–धिगस्तु मां नागश्रियमधन्यामपुण्यां दुर्भगां 'दुभगसत्ताए' दुर्भगसत्वां दुर्भगं=निष्फलं सत्त्वं=बलं यस्याः सा तां व्यर्थपरिश्रमामित्यर्थः 'दूभगणिबोलिए' दुर्भगनिम्ब-गुलिकानिम्बफलिका, तद्वद् दुर्भगा तां=जनैरनादरणीयामित्यर्थः, अत्र द्वितीयार्थे षष्ठी प्राकृतत्वात्, 'जीए' यथा खलु मया शारदिकं बहुसंभारद्रव्यसंभृतं स्नेहाव-

---

(उवक्खडित्ता एगं बिंदुयं करयलंसि आसाएइ) जब वह तैयार शाक हो चुका–तब उसने उसमें से एक बिन्दु मात्र शाक अपनी हथेली पर रखा और फिर उसे चखा–(आसाइत्ता तं खारं कडुयं अक्खज्जं अभोज्जं विसब्भूयं जाणित्ता एवं वयासी–धिरत्थु णं मम नागसिरीए अहन्नाए, अपुन्नाए दुरभगाए दुभगसत्ताए दुभगणिबोलियाए जीएणं मए सालइए बहुसंभारसंभिए नेहावगाढे उवक्खडिए) चखकर उसे ज्ञात हुआ कि यह शाक तो बहुत खारा है, बहुत अधिक कडुआ है। खाने के योग्य नहीं है भोजन में लेने के लायक नहीं है, यह तो विष जैसा है ऐसा जानकर उसने मन ही मन विचार किया उस विचार में उसने कहा–मुझ नागश्री को धिक्कार है, मैं अधन्या और अपुण्या हूँ। जनों के द्वारा आदर पाने योग्य नहीं हूँ। मेरे इस बल को बार २ धिक्कार हो–मेरा यह बल बिलकुल निष्फल है मैंने जो इस शाक के बनाने में इतना उद्यम किया है वह मेरा सर्वथा निष्फल गया। जिस प्रकार नीम

ઉપર થી તરતું હતું (उवक्खडित्ता एगं बिंदुयं करयलंसि आसाएइ) જ્યારે શાક તૈયાર થઈ ગયું ત્યારે તેણે તેમાંથી ફક્ત એક ટીપા જેટલું શાક પોતાની હથેળી ઉપર લઈને ચાખ્યું.

(आसाइत्ता तं खारं कडुयं अक्खज्जं अभोज्जं विसब्भूयं जाणित्ता एवं वयासी–धिरत्थु णं मम नागसिरीए अहन्नाए, अपुन्नाए, दूरभगाए दूभगसत्ताए दूभगणिबोलियाए जीएणं मए सालइए बहुसंभारसंभिए नेहावगाढे उवक्खडिए)

ચાખવાથી તેને લાગ્યું કે આ શાક તો ખૂબ જ ખારું છે, ખૂબ જ કડવું છે, ખાવાલાયક નથી, ભોજનમાં કામ લાગે તેવું નથી, આ તો ઝેર જેવું છે, આમ જાણીને તેણે પોતાના મનમાં જ વિચાર કર્યો અને વિચાર કરતાં તેણે પોતાની જાતને જ આ પ્રમાણે કહ્યું કે–મને–નાગશ્રીને–ધિક્કાર છે, હું ખરેખર અધન્યા તેમજ અપુણ્યા છું, હું લોકો દ્વારા આદર મેળવવા લાયક નથી. મારા આ બળને વારવાર ધિક્કાર છે, મારું આ બળ સાવ નકામું છે. શાક તૈયાર કરવામાં જેટલો મેં શ્રમ કર્યો છે તે બધો નકામો ગયો. જેમ લીમ-

गाढमुपस्कृतं, तेन सुबहुद्रव्यक्षयः-हिङ्गुजीरकादिद्रव्यनाशः, स्नेहक्षयः=घृतादिक्षयश्चकृतः, तत्=तस्मात् यदि खलु मम 'जाउयाओ' यातृकाः, देवरभार्याः ज्ञास्यन्ति, 'तोणं' तर्हि खलु मम 'खिसिस्संति' खिसिष्यन्ति-निन्दां कोपं च करिष्यन्ति, तत्-तस्मात् यावन्मम यातृका न जानन्ति, तावन्मम श्रेयः-उचितं एतत् शारदिकं तिक्तालावुकं बहुसंभारस्नेहकृतम् एकान्ते 'गोवेत्तए' गोपयितुम्, अन्यत् शारदिकं मधुरालावुकं मधुरतुम्बीफलं यावत् स्नेहावगाढमुपस्कर्तुम्। एवं

की निबौली किसी मनुष्य की दृष्टि में आदर पाने योग्य नहीं होती है उसी प्रकार मैं भी जनों द्वारा अनादरणीय बनी हूँ। जो मैंने शरद कालिक अथवा सरस इस तुंबी फल का हिङ्गु, जीरकादि द्रव्यों से युक्त और घृतादि से युक्त शाक बनाया है (सुबहुदव्वक्खए, नेहक्खए य कए) इस के बनाने में मैंने व्यर्थ ही बहुत से हिङ्गु जीरे मैंथी आदि द्रव्य का और घृत का विनाश किया है। (तं जइणं ममं जाउयाओ जाणिस्संति, तो, णं मम खिसिस्संति) इस बात को यदि मेरी देवरानी जानेंगी तो वे मेरे ऊपर गुस्सा होगी और मेरी निंदा करेंगी। (तं जाव ताव ममं जाउयाओ ण जाणंति ताव ममं सेयं एयं सालइयं तित्तालाउय बहुसंभारणेह कयं एगंते गोवेत्तए) इसलिये मुझे अब यही उचित है कि मैं इस शारदिक तित्तोलावु के शाक को जो बहुत संभार एवं घृत डालकर बनाया हैं किसी एकान्त स्थान में छुपाकर रख दूँ और

ડાની લીંબોળી માણુસોની સામે આદર મેળવવા યોગ્ય ગણાતી નથી તે પ્રમાણે હું પણ માણુસો દ્વારા આદર પ્રાપ્ત કરવા લાયક રહી નથી. એટલે કે હું લોકોની સામે અનાદરણીય થઈ ગઈ છું. મેં શરદ્ કાલિક અથવા સરસ તુંબીના ફળનું હીંગ, જીરૂ વગેરે દ્રવ્યોથી યુક્ત અને ઘી વગેરેથી યુક્ત શાક બનાવ્યું છે (सुबहु दव्वक्खए नेहक्खए य कए) એને તૈયાર કરવામાં મેં વ્યર્થ હીંગ, જીરૂં, મેથી વગેરે તેમજ ઘી વગેરે વસ્તુઓનો દુર્વ્યય કર્યો છે (तं जइणं ममं जाउयाओ जणिस्संति, तो णं मम खिसिस्संति) જો મારાં દેરાણીને આ વાતની જાણ થશે તો તેઓ ચોક્કસ મારા ઉપર ગુસ્સે થશે. અને મારી નિંદા કરશે.

(तं जाव ताव ममं जाउयाओ ण जाणंति ताव ममं सेयं एयं सालइयं तित्तोलाउय बहु संभारणेहकयं एगंते गोवेत्तए)

એથી અત્યારે મને એ જ યોગ્ય લાગે છે કે આ શારદિક તિક્તોલાબુ (કડવી તૂંબડી) ના શાક ને-કે જે ખૂબ જ સરસ ઘી નાખીને વઘારવામાં આવ્યુ છે-એક તરફ છુપાવીને મૂકી દઉં અને તેની જગ્યાએ (अन्नं सालइयं

संप्रेक्षते=विचारयति, संप्रेक्ष्य तत् शारदिकं यावद् तिक्तालाबुकं गोपयति=क्वचित् समाच्छाद्य धरति अन्यत् शारदिकं मधुरालाबुकमुपस्करोति=रन्धयति शेशवारादिभिः संस्करोति। तेषां ब्राह्मणानां यावत् सुखासनवरगतानां निजनिजासने-सुखोपविष्टानां तद् विपुलमशनपानं खाद्य स्वाद्यं परिवेषयति=तेषां भोजनावसरे भोजनपात्रे ददातीत्यर्थः। ततः खलु ते ब्राह्मणाः 'जिमियभुत्तुत्तरगया' जिमित-

उसके स्थानपर (अन्नं सालइयं महुरालाउयं जाव नेहावगाढं उवक्खडेत्तए) दूसरी शारदिक मधुर तुंबड़ी का शाक हींग, जीरे और मैंथी का वघार लगाकर घृत में तैरता हुआ बनालूँ (एवं संपेहेइ, संपेहित्ता तं सालइ य जाव गोपेइ अन्नं सालइयं महुरालाउयं उवक्खडेइ तेसिं महणाणं ण्हायाणं जाव सुहासनवरगयाणं तं विपुलं असणं ४ परिवेसेइ) ऐसा उसने विचार किया-विचार करके उस शारदिक कडवी तुंबडी के बहुत संभार एवं घृत युक्त शाक एकान्त में छुपाकर रख दिया-और दूसरी शारदिक मधुर तुंबडी-का शाक हींग जीरे और मैंथी का वघार लगाकर घृत में तैरता हुआ बना लिया। इतने में वे तीनों ब्राह्मण स्नान आदि से निपट कर भोजन शाला में आकर अपने २ आसन पर शांति के साथ बैठ गये। उनके बैठते ही उसने उन्हें अशन आदिरूप चारों प्रकार का आहार थालों में परोसा (तएणं ते माहणा जिमिय भुत्तुत्तरागया समाणा आयंता, चोक्खा परम सुइ-

महुरालाउयं जाव नेहावगाढं उवक्खडेत्तए) બીજી શારદિક મીઠી તૂંબડીનું ઘી ઉપર તરી રહ્યું છે એવું શાક હીંગ, જીરૂં અને મેથીમાં વઘારીને બનાઉં.

(एवं संपेहेइ, संपेहित्ता तं सालाइ य जाव गोवेइ, अन्नं सालइयं महुरालाउयं उवक्खडेइ, तेसिं माहणाणं ण्हायाणं जाव सुहासनवरगयाणं तं विपुलं असणं ४ परिवेसेइ)

આ જાતનો તેણે વિચાર કર્યો, વિચાર કરીને તેં શારદિક કડવી તૂંબડીના સરસ ઘીમાં વઘારેલા શાકને એક તરફ છૂપાવીને મૂકી દીધું અને બીજી શારદિક મીઠી તુંબડી-દૂધી-નું હીંગ, જીરૂં અને મેથીનો વઘાર કરીને ઉપર ઘી તરતું શાક બનાવ્યું. એટલામાં તો તેઓ ત્રણે બ્રાહ્મણો સ્નાન વગેરેથી પરવારીને ભોજનશાળામાં આવીને પોતપોતાના આસન ઉપર શાંતિથી બેસી ગયા. તેમને બેસતાં જ તેણે તેઓને અશન વગેરે રૂપ ચારે જાતનો આહાર થાળીમાં પીરસ્યો.

भुक्तोत्तरगताः भोजनानन्तरं वहिरागताः सन्तः 'आयंता' आचान्ताः कृतचुलुकाः 'चोक्खा' चोक्षाः=प्रक्षालितहस्तमुखाः परमशुचिभूताः 'सकम्मसंपउत्ता' स्वकर्मसंप्रयुक्ताः=स्वस्वकार्यसंलग्ना जाताश्चाप्यभवन्। ततः खलु ताः ब्राह्मण्यः स्नाताः यावत् वस्त्रालंकारविभूषितास्तद् विपुलमशन पानं खाद्यं स्वाद्यम् आहारयन्ति=आहारंकुर्वन्ति भुञ्जते स्म। आहृत्य, यत्रैव स्वकानि स्वकानि गृहाणि= आवासभवनानि तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य स्वकर्मसंप्रयुक्ता जाताः ॥ सू० १ ॥

मूलम्–तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा नाम थेरा जाव वहुपरिवारा जेणेव चंपा नामं नयरी जेणेव सुभूमिभागे

भूया सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था) आहार जब परोसा जा चुका–तब उन सबने उसे खाया पीया–और खा पीकर जब वे निपट चुके तब उन्होंने कुल्ला आदि कर अपने मुंह का प्रक्षालन किया–और हाथों को साफकर वे अपने २ कार्य में लग गये। (तएणं ताओ माहणीओ ण्हायाओ जाव विभूसियाओ तं विपुलं असणं ४ आहारेंति, आहारित्ता जेणेव सयाइं २ गेहाइं तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता सकम्म संपउत्ताओ जायाओ) इसके बाद उन ब्राह्मणियोंने जो कि पहिले से ही स्नान कर चुकी थी और अपने २ शरीर को सुन्दर वेष-भूषा से सुसज्जित किये हुए थी, उस विपुल अशनादिरूप चतुर्विध आहार को खाया–और खाकर के फिर वे अपने २ वासभवनों में चली गईं–वहां जाकर अपने २ वे सब काममें लग गईं ॥ सूत्र १ ॥

(तएणं ते माहणा जिमिय भुत्तुत्तरागया समाणा आयंता, चोक्खा परमसुइ भूया सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था)

આહાર જ્યારે પીરસાઈ ગયો ત્યારે તેઓ ત્રણે જમ્યા અને જમી પરવારીને કોગળા વગેરે કરીને હાથ મોં સાફ કર્યાં અને હાથ મોં સાફ કરીને તેઓ ત્રણે પોતપોતાના કામમાં પરોવાઈ ગયા.

(तएणं ताओ माहणीओ ण्हायाओ जाव विभूसियाओ तं विपुलं असणं४आहारित्ता जेणेव सयाइं२ गेहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सकम्मसंपउत्ताओ जायाओ)

ત્યારબાદ તે બ્રાહ્મણીઓએ–કે જેઓએ પહેલાં સ્નાન કરીને પોતાના શરીરને સુંદર વસ્ત્રોથી શણગાર્યું હતું–તે પુષ્કળ પ્રમાણમાં બનાવવામાં આવેલો અશન વગેરે રૂપ ચાર જાતનો આહાર કર્યો આહારથી પરવારીને તેઓ પોતપોતાના વાસભવનમાં જતી રહી અને ત્યાં જઈને તેઓ સર્વે પોતપોતાના કામોમાં પરોવાઈ ગઈ. ॥સૂ૦૧॥

उज्जाणे तेणेव उवागच्छंति २ अहापडिरूवं जाव विहरंति, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया, तएणं तेसिं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे ओराले जाव तेउलेस्से मासं मासेणं खममाणे विहरइ, तएणं से धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ बीयाए पोरिसीए एवं जहा गोयमसामी तहेव उग्गाहेइ उग्गाहित्ता तहेव धम्मघोसे थेरं आपुच्छइ जाव चंपाए नयरीए उच्चनीयमज्झिमकुलाइं जाव अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे, तएणं सा नागसिरी माहणी धम्मरुइं एज्जमाणं पासइ पासित्ता तस्स सालइयस्स बहुसंभारसंभियस्स णेहावगाढस्स तित्तकडुयस्स पट्ठवणट्ठयाए हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठित्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं सालइयं तित्तकडुयं च बहुसंभारसंभियं णेहावगाढं धम्मरुइस्स अणगारस्स पडिग्गहंसि सव्वमेव निसिरइ, तएणं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमितिकट्टु णागसिरीए माहणीए गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता चंपाए नयरीए मज्झं मज्झेणं पडिनिक्खमइ जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मघोसस्स अदूरसामंते अन्नपाणं पडिलेहइ पडिलेहित्ता अन्नपाणं करयलंसि पडिदंसेइ, तएणं ते धम्मघोसा थेरा सालइयस्स जाव नेहावगाढस्स गंधेणं

अभिभूया समाणा तओ सालइयाओ जाव नेहावगाढाओ एगं बिंदुगं गहाय करयलंसि आसाएइ। तित्तगं खारं कडुयं अखज्जं अभोज्जं विसभूयं जाणित्ता धम्मरुइं अणगारं एवं वयासी—जइणं तुमं देवाणुप्पिया! एवं सालइयं जाव नेहावगाढं आहारेसि तो णं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि, तं मा णं तुमं देवाणुप्पिया! इमं सालइयं जाव आहारेहि, मा णं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जेहि, तं गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया! इमं सालइयं एगंतमणावाए अच्चित्ते थंडिले परिट्ठवेहि परिट्ठवित्ता अन्नं फासुयं एसणिज्जं असणंपाणं खाइमं साइमं पडिगहित्ता आहारं आहारेहि ॥ सू० २ ॥

टीका—'तेणं कालेणं' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये धर्मघोषा नाम स्थविरा यावत्—बहुपरिवाराः—बहुसाधुपरिवारेण सहिता यत्रैव चम्पा नाम नगरी, यत्रैव सुभूमिभागमुद्यानं तत्रैवोपागच्छन्ति, अत्र 'धर्मघोषा' इति बहुवचनमादरार्थं प्रयुक्तम्, उपागत्य यथा प्रतिरूपं यावत्—अवग्रहमवगृह्य संयमेन

तेणं कालेणं तेणं समएणं इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय में (धम्मघोसा नाम थेरा जाव बहुपरिवारा जेणेव चंपा नामं नयरी जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं जाव विहरंति—परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ परिसा पडिगया—तएणं तेसिं धम्मघोसाण थेराणं अंतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे ओराले

(तेणं कालेणं तेणं समएणं) इत्यादि।

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) ते કાળે અને તે સમયે (धम्मघोसा नाम थेरा जाव बहुपरिवारा जेणेव चंपा नामं नयरी जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं जाव विहरंति परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसापडिगया, तएणं तेसिं धम्मघोसाणं थेराणं

तपसाऽऽत्मानं भावयन्तो विहरति-आसतेस्म। परिषद् निर्गता धर्मः कथितः=धर्मकथा कथिता, परिषत् प्रतिगता=धर्मकथा श्रवणानन्तरं प्रतिनिवृत्ता। ततः खलु तेषां धर्मघोषाणां स्थविराणामन्तेवासी धर्मरुचिर्नामानगारः उदारः प्रधानो यावत् संक्षिप्तविपुलतेजोलेश्यः=संक्षिप्ता शरीरान्तः संकोचिता, विपुला=अनेकयोजनप्रमितक्षेत्रस्थितवस्तुदहनसमर्था, तेजोलेश्या=विशिष्टतपोजन्यलब्धिविशेषो येन सः

जाव तेउलेस्से मासं मासेणं खमयाणे विहरइ) धर्म घोष नामके स्थविर यावत् अनेक परिवार से युक्त होकर जहां चंपा नगरी, ओर उसमे जहां वह सुभूमिभाग नाम का उद्यान था वहां आये। वहां आकर के उन्हों ने वहां ठहरने के लिये अपने कल्पानुसार आज्ञा मांगी बाद मे वे वहा संयम और तप से आत्माको भावित करते हुए ठहर गये। चंपानगरी के समस्त जन उनको वंदना एवं धर्मकथा सुनाने के लिये वहां आये। उन्होंने श्रुतचारित्र रूप धर्मका उपदेश दिया। उपदेश श्रवण कर परिषद अपने २ स्थान पर पीछे गई। इसके अनन्तर इन धर्मघोप स्थविर के अन्तेवासी जिनका नाम धर्मरुचि अनागार था बड़े उदार प्रकृति के थे विशिष्ट तपस्याओं को किया करते थे-उसके प्रभाव से इन्हें तेजोलेश्या की प्राप्ति हो गई थी और वह तेजोलेश्या इन्होंने अपने शरीर के भीतर संक्षिप्त कर रक्खी थी इस तेजोलेश्या का यह स्वभाव होता हैं कि जब वह शरीर से बाहिर निकलती है तो अनेक योजन प्रमित क्षेत्र में रही हुइ वस्तुओ को भस्मकर देती है। मास क्षपण की उपवास रूप तपस्या

अंतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे ओराले जाव तेउलेस्से मासं मासेणं खममाणं विहरइ

ધર્મઘોષ નામના સ્થવિર પોતાના ઘણા પરિવારોની સાથે જ્યાં ચંપા નગરી અને તેમાં પણ જ્યાં તે સુભૂમિભાગ નામે ઉદ્યાન હતું ત્યાં આવ્યા. ત્યાં આવીને તેમણે ત્યાં રોકાવાની પોતાના આચાર મુજબ આજ્ઞા માંગી. ત્યાર પછી તેઓ ત્યા પોતાના આત્માને તપ અને સંયમથી ભાવિત કરતાં રહેવા લાગ્યા. ચંપા નગરીના બધા લોકો તેમનાં વંદન તેમજ ધર્મકથા શ્રવણ માટે ત્યાં આવ્યા તેઓશ્રીએ શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો. ઉપદેશ સાંભળીને લોકો પોતપોતાના નિવાસ સ્થાને જતા રહ્યા. ત્યારપછી ધર્મઘોષ સ્થવિરના અંતેવાસી-જેમનું નામ ધર્મરુચિ અનગાર હતું, જેઓ ખૂબ જ ઉદાર પ્રકૃતિના હતા, વિશિષ્ટ તપસ્યાઓ કરતા રહેતા હતા. જેના પ્રભાવથી એમણે તેજોલેશ્યા મેળવી હતી અને તેજોલેશ્યાને તેમણે પોતાના શરીરમાં જ સંકોચી રાખી હતી, આ તેજો-લેશ્યાનો પ્રભાવ આ જાતનો હોય છે કે જ્યારે તે શરીરની બહાર નીકળે છે ત્યારે ઘણા યોજનો સુધીના ક્ષેત્રમાં મૂકેલી વસ્તુઓને ભસ્મ કરી નાખે છે-માસક્ષપણની ઉપવાસ રૂપ તપસ્યાથી તેઓ

तथा, मासं=त्रिंशदहोरात्रात्मकं कालं मासेन=मासक्षपणेन मासोपवासरूपतपः कर्मणा 'खममाणे' क्षपयन्=यापयन् विहरति। ततः खलु स धर्मरुचिरनगारो मासक्षपणपारणके प्रथमायां पौरुष्यां 'सज्झायं' स्वाध्यायं सूत्रपाठरूपं करोति, द्वितीयायां पौरुष्यां ध्यानम् सूत्रार्थचिन्तनरूपं ध्यायति-करोति, एवं यथा गौतमस्वामी, तथैव गौतमस्वामीवत् तृतीयपौरुष्यां भाजनवस्त्राणिप्रमार्जयति, प्रमार्ज्य भाजनानि 'उग्गाहेइ' अवगृह्णाति, अवगृह्य यत्रैव धर्मघोषस्थविरस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तथैव श्रीमहावीरस्वामीनं गौतमस्वामिवदेव धर्मघोषं स्थविरमापृच्छति,

---

से ये अपने त्रिंशत अहोरात्रात्मक काल को उस समय व्यतीत कर रहे थे। अर्थात् एक महीने की तपस्या इन्होंने उस समय कर रखे थे-(तएणं से धम्मरुइ अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ बीयाए पोरिसीए एवं जहा गोयमसामी तहेव उग्गाहेइ, उग्गाहित्ता तहेव धम्मघोसं थेरं आपुच्छइ, जाव चंपाए नयरीए उच्च नीय मज्झिमकुलाइं जाव अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे, तएणं सा नागसिरी माहणी धम्मरुइ एज्जमाणं पासइ) ये धर्मरुचि अनगार मासक्षपण की पारणा के दिनप्रथम पौरुषी में सूत्रपाठ रूप स्वाध्याय, द्वितीय पौरुषी में सूत्रार्थ चिन्तन रूप ध्यान और तृतीय पौरुषी मे गौतम स्वामी की तरह वस्त्रपात्रों का प्रमार्जन करते। इस तरह इन्होंने तृतीय पौरुषी में वस्त्र पात्रो का प्रमार्जन कर अपने पत्रों को उठाया और उठकर ये धर्मघोष स्थविर के पास गये।

પોતાના ત્રિંશત્ અહોરાત્રાત્મક કાળને તે સમયે પસાર કરી રહ્યા હતા-એટલે કે તેઓ તે સમયે એક માસની તપસ્યા કરી રહ્યા હતા.

(तएणं से धम्मरुइ अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, बीयाए पोरीसए एवं जहा गोयमसामी तहेव उग्गाहेइ, उग्गाहित्ता तहेव धम्मघोसं थेरं आपुच्छइ, जाव चंपाए नयरीए उच्चनीय मज्झिमकुलाइं जाव अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे, तएणं सा नागसिरी माहणी धम्मरुइं एज्जमाणं पासइ)

ધર્મરુચિ અનગાર ગૌતમ સ્વામીની જેમ પ્રથમ પૌરુષીમાં સૂત્રપાઠ રૂપ સ્વાધ્યાય, દ્વિતીય પૌરુષીમાં સૂત્રાર્થ ચિંતન રૂપ ધ્યાન અને તૃતીય પૌરુષીમાં વસ્ત્ર અને પાત્રોનું પ્રમાર્જન કરતા હતા, માસ ક્ષપણના પોતાના પારણાના દિવસે પણ તેઓએ તૃતીય પૌરુષીમાં વસ્ત્ર-પોતાનું પ્રમાર્જન કરીને પોતાના પાત્રોને લીધા અને લઈને તેઓ ધર્મઘોષ સ્થવિરની પાસે ગયા. જેમ ગૌતમ

यावत्-चंपायां नगर्यामुच्चनीचमध्यमकुलानि यावदटन् यत्रैव नागश्रिया ब्राह्मण्या गृहं तत्रैवानुप्रविष्टः ।

ततः खलु सा नागश्री ब्राह्मणी धर्मरुचिमनगारम् एजमानम्-आगच्छन्तं पश्यति, दृष्ट्वा तस्य 'सालइयस्स' शारदिकस्य तिक्तकटुकस्य=तिक्तकटुकतुम्बकस्य बहुस भारसंभृतस्य स्नेहावगाढस्य 'पट्ठवणट्ठयाए' प्रस्थापनार्थं=परिष्ठापनार्थं हृष्टतुष्टा 'उट्ठाए' उत्थया=उत्थानक्रियया उत्तिष्ठति, उत्थाय यत्रैव भक्तगृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तद् शारदिकं तिक्तकटुकतुम्बकं बहुसंभारसंभृतं स्नेहावगाढं धर्मरुचेरनगारस्य 'पडिग्गहंसि' पतद्ग्रहे-पात्रे, सर्वमेव 'निसिरइ'

जिस प्रकार गौतम स्वामी श्री महावीर स्वामी से पूछकर आहार लेने के लिये जाते थे उसी प्रकार इन्होंने धर्मघोष स्थविर से आहार लाने के लिये आज्ञा मांगी । आज्ञा प्राप्तकर ये चंपानगरी में उच्च नीच एवं मध्यमकुलो में भ्रमण करते हुए जहां नागश्री ब्राह्मणी का घर था वहां गये । नागश्री ब्राह्मणी ने इन्हें ज्योंही आते हुए देखा (पासित्ता तस्स सालइयस्स बहु संभारसंभियस्स णेहावगाढस्स तित्तकडुयस्स पट्ठवणट्ठयाए हट्ठ तुट्ठा उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठित्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ) त्योंहीं यह बहुसंभार संभृत एवं स्नेहावगाढ उसकडवी तुंबडीका आहार देने के लिये उत्थान क्रिया द्वारा-उठी-अर्थात् अपने में रही हुई उठने की शक्ति से उठी और हृष्ट तुष्ट होती हुइ जहां भोजन-गृह था वहां गइ । (उवागच्छित्ता तं सालइयं तित्तकडुयं च बहुसंभार संभियं णेहावगाढं धम्मरुइयस्स अणगारस्स पडिग्गहंसि सव्वमेव निसिरइ) वहां

સ્વામીને પૂછીને આહાર લાવવા માટે નીકળતા હતા તેમજ તેઓએ પણ આહાર લાવવા માટે ધર્મઘોષ સ્થવિરની પાસે આજ્ઞા માંગી. આજ્ઞા મેળવીને તેઓ ચંપા નગરીમાં ઉચ્ચનીચ અને મધ્યમ કુળોમાં ભ્રમણ કરતાં જ્યાં નાગશ્રી બ્રાહ્મણીનું ઘર હતું ત્યાં ગયા. નાગશ્રી બ્રાહ્મણીએ તેઓને આવતા જોયા.

(पासित्ता तस्स सालइयस्स बहुसंभारसंभियस्स णेहावागाढस्स तित्तकडुयस्स पट्ठवणट्ठयाए हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ)

ત્યારે તરત જ સરસ વઘારેલો ઘી તરતો કડવી તુંબડીનો આહાર આપવા માટે ઉત્થાન ક્રિયા વડે ઊભી થઈ એટલે કે પોતાનામાં રહેલી ઊભા થવાની તાકાતથી તે ઊભી થઈ અને હૃષ્ટ તેમજ તુષ્ટ થતી જ્યા ભોજનશાળા હતી ત્યાં ગઈ.

(उवागच्छित्ता तं सालइयं तित्तकडुयं च बहुसंभारसंभियं णेहावगाढं धम्मरुइयस्स अणगारस्स पडिग्गहंसि सव्वमेव निसिरइ)

निसृजति=परिष्ठापयति । ततः खलु स धर्मरुचिरनगारः 'अहापज्जत्तं' यथा पर्याप्तम्-उदरपूर्तये पूर्णमेतद् इति कृत्वा=इति मनसि विभाव्य, नागश्रिया ब्राह्मण्या गृहात् प्रतिनिष्क्रामति-निर्गच्छति प्रतिनिष्क्रम्य चम्पाया नगर्या मध्यमध्येन प्रतिनिष्क्राम्यति प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव सुभूमिभागमुद्यानं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य धर्मघोषस्य स्थविरस्य 'अदूरसामन्ते'=नातिदूरे नातिसमीपे, अन्नपानं 'पडिलेहेइ' प्रतिलेखयति प्रतिलेख्य अन्नपानं करतले पात्रं कृत्वा प्रतिदर्शयति। ततः खलु ते धर्मघोषाः स्थविरास्तस्य शारदिकस्य तिक्तकटुतुम्बकस्य यावत् स्नेहावगाढस्य गन्धेनाऽभिभूतासन्तस्तस्माच्छारदिकाद् यावद् स्नेहावगाढादेकं बिन्दुकं गृहीत्वा करतले कृत्वा आस्वादयति । तिक्तकं क्षारं कटुकम् अखाद्यमभोज्यं विषभूतं ज्ञात्वा धर्म-

---

जाकर उसने उस शारदिक कडवी तुंबडी का बहु संभार संभृत एवं स्नेहावगाढ शाक धर्मरुचि अनागार के पात्र में सब का सब डाल दिया (तएणं से धम्मरुइ अणगारे अहापज्जत्तमित्तिकट्टु णागसिरीए माहणीए गिहाओ पडिनिक्खमइ) इसके बाद वे धर्मरुचि अनगार "यह उदर पूर्ति के लिये पर्याप्त है" ऐसा मन में समझ कर नागश्री ब्राह्मणी के घर से बाहर निकले पडिक्खिमित्ता चंपाए नयरीए मज्झं मज्झेणं पडिनिक्खमइ, जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे - तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मघोसस्स अदुरसामंते अन्नपाणं पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता अण्णपाणं करयलंसि पडिदंसेइ, तएणं से धम्मघोसा थेरा तस्स सालइस्स जाव नेहावगाढस्स गंधेणं अभिभूया समाणा ताओ सालइयाओ जाव नेहावगाढाओ एगं बिंदुगं गहाय करयलंसि आसाएइ)

ત્યાં જઈને તેણે તે શારદિક કડવી તૂંબડીનું ખૂબ જ સરસ રીતે વઘારેલું તેમજ ઘી તરતું શાક લઈ આવી અને ત્યારપછી ધર્મરુચિ અનગારના પાત્રમાં બધું નાખી દીધું.

(तएणं धम्मरूई अणगारे अहापज्जत्तमित्ति कट्टु णागसिरीए महिणीए गिहाओ पडिनिक्खमइ)

ત્યારપછી તે ધર્મરુચિ અનગાર " આ ઉદર પોષણ માટે પર્યાપ્ત છે " એવું જાણીને નાગશ્રી બ્રાહ્મણીના ઘેરથી બહાર નીકળ્યા.

(पडिनिक्खमित्ता चंपाए नयरीए मज्झं मज्झेणं पडिनिक्खमइ, जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मघोसस्स अदूरसामंते अन्नपाणं पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता अण्णपाणं करयलंसि पडिदसइ, तएणं से धम्मघोसाथेरा तस्स सालइस्स जाव नेहावगाढस्स गंधेणं अभिभूया समाणा तओ सालइयाओ जाव नेहावगाढाओ एगं बिंदुगं गहाय करयलसि आसाएइ)

रुचिमनगारमेवमवदत् यदि खलु त्वं हे देवानुप्रिय । एतद् शारदिकं यावत्-तिक्तकटुकतुम्बकं यावत् स्नेहावगाढम् आहारयसि=आहारं करिष्यसि, तर्हि खलु त्वमकाले एव जीविताद् व्यपरोपिष्यसे' एतदशनेन मरणमवश्यं प्राप्स्यसीत्यर्थः । तत्=तस्मात् मा खलु त्वं हे देवानुप्रिय ! एतद् शारदिकं यावदाहारय, मा खलु

निकल कर चंपानगरी के बीचो बीचसे होकर चल दिये सो जहां सुभूमिभाग नाम का उद्यान था वहां आ गये । वहां आकर वे अपने आचार्य धर्मघोष स्थविर के पास आये वहां आकर उन्होंने भिक्षामें प्राप्त हुआ आहार बताया और बताने के बाद उस शारदिक कडवी तुंबडी के यावत् स्नेहावगाढ शाक की गंध से अभिभूत होते हुए उन धर्मघोष आचार्य ने उस शारदिक यावत् स्नेहावगाढ शाक में से एक बिन्दु मात्र को अपने हाथ की हथेली पर रख कर चखा (तित्तगं खारं कडुयं अखज्जं अभोज्जं विसभूयं जाणित्ता धम्मरुइ अणगारं एवं वयासी -इणं तुमं देवाणुप्पिया । एयं सालइयं जाव नेहावगाढं आहारेसि तो णं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि) चखते ही " यह तिक्त हैं क्षार से युक्त है कडुक है अखाद्य एवं अभोज्ज है तथा विषभूत है " ऐसा जानर धर्मरुचि अनगार से उन्होंने ऐसा कहा हे देवानुप्रिय ! यदि तुम शारदिक कडवी तुंबडी के बहु संभार संभृत एवं स्नेहावगाढ इस शाक का आहार करोगे-तो निश्चय से बिना मृत्यु के

નીકળીને ચંપા નગરીની વચ્ચેના માર્ગથી પસાર થતાં જ્યાં સુભૂમિભાગ નામે ઉદ્યાન હતું ત્યાં આવ્યા. ત્યાં આવીને તેઓ પોતાના આચાર્ય ધર્મઘોષ સ્થવિરની પાસે આવ્યા અને ત્યાં આવીને તેમણે ભિક્ષામાં પ્રાપ્ત થયેલા આહારને બતાવ્યો અને બતાવીને તે શારદિક કડવી તૂંબડીના સરસ વઘારેલા ઘી તરતા શાકની સુવાસથી અભિભૂત થતાં તે ધર્મઘોષ આચાર્યે તે શારદિક સરસ વઘારેલા ઘી તરતા શાકને હથેળી ઉપર મૂકીને ચાખ્યું.

(तत्तगं खारं कडुयं अखज्जं अभोज्जं विसभूयं जाणित्ता धम्मरुइं अणगारं एवं वयासी-जइणं तुमं देवाणुप्पिया ! एयं सालइयं जाव नेहावगाढं आहारेसि तो णं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि)

ચાખતાં જ " આ તિક્ત છે, ખારું છે, કડવું છે, અખાદ્ય તેમજ અભોજ્ય છે તથા વિષભૂત છે " આવું જાણીને ધર્મરુચિ અનગારને તેઓએ આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! જો તમે શારદિક કડવી તૂંબડીના સરસ વઘારેલા ઘીતરતા શાકનો આહાર કરશો તો ચોક્કસ તમે કમોતે મરી જશો.

स्वमकालएव जीवितात् व्यपरोपयस्व=मा म्रियस्व। तत्=तस्मात् गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिय। इदं शारदिकं 'एगंतमणावाए' एकान्तेऽनापाते=एकान्ते=निर्जनस्थाने, अनापाते-आपातः-द्वीन्द्रियादिप्राणिनां संयोगस्तद्वर्जिते, अचित्ते=जीवरहिते, स्थण्डिले=भूमौ 'परिट्ठवेहि' परिष्ठापय, परिष्ठाप्यान्यत् प्रासुकमेषणीयं=द्वाचत्वारिंशद्दोषरहितं, शुद्धम्-अशनपानखाद्यस्वाद्यम् प्रतिगृह्य आहारमाहारय॥सू०२॥

मूलम्-तएणं से धम्मरुई अणगारे धम्मघोसेणं थेरेणं एवं वुत्ते समाणे धम्मघोसस्स थेरस्स अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ अदूरसामंते थंडिल्लं

मरजाओगे-(तं मा णं तुमं देवाणुप्पिया! इमं सालइयं जाव आहारेहि मा णं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जहि तं गच्छणं तुमं देवाणुप्पिया! इमं सालइयं एगंतमणावाए अच्चित्ते थंडिले पडिट्ठवेहि, परिट्ठवित्ता अन्नं फासुयं एसणिज्जं असणं पाणं खाइमं साइमं पडिगाहेत्ता आहारं आहारेहि) इसलिये हे देवानुप्रिय! तुम शारदिक कडवी तुंबडी के शाक किसी एकान्त स्थानमें कि जहां द्वीन्द्रियादि प्राणियोंको संचरण नहीं—और जो अचित्त हो ऐसी भूमि पर परिष्ठापना कर आओ। और परिष्ठापना करके फिर प्रासुक एषणीय ४ ४२ दोषों से रहित शुद्ध अशन, पान खाद्य स्वाद्य रूप दूसरे आहार को लेकर भोजन कर लो॥ सू० २॥

(तं माणं तुमं देवाणुप्पिया! इमं सालइयं जाव आहारेहि माणं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जहि तं गच्छणं तुमं देवाणुप्पिया! इमं सालइयं एगंतमणावाए अचित्ते थंडिले पडिट्ठवेहि, परिट्ठवित्ता अन्नं फासुयं एसणिज्जं असणं पाणं खाइमं साइमं पडिगाहित्ता आहारं आहारेहि)

એથી હે દેવાનુપ્રિય! તમે આ શારદિક તૂંબડીના શાકને ખાશો નહિ તેથી અકાળે તમારૂં મરણ પણ થશે નહિ. માટે હે દેવાનુપ્રિય! તમે આ આ શારદિક કડવી તૂંબડીના શાકની કોઇપણ એકાંત-નિર્જન સ્થાનમા કે જ્યાં દ્વિન્દ્રિયાદિ પ્રાણીઓનું સંચરણ હોય નહિ-અને જે અચિત્ત હોય એવી ભૂમિ ઉપર પરિષ્ઠાપના કરી આવો અને પરિષ્ઠાપના કર્યા બાદ પ્રાસુક એષણીય ૪૨ દોષોથી રહિત શુદ્ધ અશન, પાન, ખાદ્ય-સ્વાદ્ય રૂપ બીજો આહાર લાવી તે આહાર ગ્રહણ કરો. ॥ સૂત્ર "૨"॥

पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता तओ सालाइयाओ एगं बिंदुगं गहेइ गहित्ता थंडिलंसि निसिरइ तो णं तस्स सालइयस्स तित्तकडुयस्स बहुनेहावगाढस्स गंधेण बहूणि पिपीलिगासहस्साणि पाउब्भूयाइं जा जहा य णं पिवीलिका आहारेइ सा तहा अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जइ तएणं तस्स धम्मरुइस्स अणगारस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५ जाव ताव इमस्स सालइयस्स जाव एगंमि बिंदुगंमि पक्खित्तंमि अणेगाइं पिपीलियासहस्साइं ववरोविज्जंति तं जइ णं अहं एयं सालइयं थंडिलंसि सव्वं निसिरामि तएणं बहूणं पाणाणं ४ वहकारणं भविस्सइ, तं सेयं खलु ममेयं सालइयं जावगाढं सयमेव आहारेत्तए, मम चेव एएणं सरीरेणं णिज्जाउत्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता मुहपोत्तियं पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता ससीसोवरियं कायं पमज्जेइ२ तं सालइयं तित्तकडुयं बहुनेहावगाढं बिलमिव पन्नगभूतेणं अप्पाणेणं सव्वं सरीरकोट्ठंसि पक्खिवइ, तएणं तस्स धम्मरुइस्स तं सालइयं जाव नेहावगाढं आहारियस्स समाणस्स मुहुत्तंतरेण परिणममाणंसि सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा, तएणं से धम्मरुची अणगारे अथामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे आधारणिज्जमितिकट्टु आयारभंडगं एगंते ठवेइ ठवित्ता थंडिल्लं पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता दब्भसंथारगं संथारेइ संथारित्ता दब्भसंथारगं दुरूहइ, दुरूहित्ता पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसन्ने करयलपरिग्गहियं एवं वयासी—नमोऽत्थु

णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, णमोऽत्थु णं धम्मघोसाणं थेराणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसगाणं, पुव्विंपि णं मए धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावजीवाए जाव परिग्गहे, इयाणिंपि णं अहं तेसिं चेव भगवंताणं अंतियं सव्वं पाणाइवाइं पच्चक्खामि जाव परिग्गहं पच्चक्खामि जावजीवाए, जहा खंदओ जाव चरिमेहिं उस्सासेहिं वोसिरामितिकट्टु आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालगए ॥ सू० ३ ॥

टीका—ततः खलु स धर्मरुचिरनगारो धर्मघोषेण स्थविरेणैवमुक्तः सन् धर्मघोषस्य स्थविरस्यान्तिकात्=समीपात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य सुभूमिभागोद्यानाद् अदूरसामन्ते=नातिदूरे नातीसमीपे स्थण्डिलं प्रतिलेखयति, प्रतिलेख्य ततः=तस्माद् शारदिकात् तिक्तकटुकात् तुम्बकादेकं बिन्दुकं गृह्णाति, गृहीत्वा स्थण्डिले=भूमौ 'निसिरइ' निसृजति=परिष्ठापयति। ततः खलु तस्य शारदिकस्य

तएणं से धम्मरुई अणगारे इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (से धम्मरुई अणगारे धम्मघोसेणं थेरेणं एवं वुत्ते समाणे धम्मघोसस्स थेरस्स अंतियाओ पडिनिक्खमइ) वे धर्म रुचि अनगार धर्म घोष से इस प्रकार कहे जाने पर धर्मघोष के पास से चले आये (पडिनिक्खमित्ता सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ अदूर सामंते थंडिलं पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता तओ सालइयाओ एगं बिंदुगं गहेइ, गहित्ता थंडलंसि निसिरइ, तो णं तस्स सालइयस्स तित्त कडुय-

त एण से धम्मरुई अणगारे इत्यादि

टीकार्थ–(त एणं) त्यारपछी

(से धम्मरुई अणगारे धम्मघोसेणं थेरेणं एवं वुत्ते समाणे धम्मघोसस्स थेरस्स अंतियाओ पडिनिक्खमइ)

ते धर्मरुचि अनगार धर्मघोषनी आ वात सांभळीने तेमनी पासेथी आवता रह्या.

(पडिनिक्खमित्ता सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ अदूरसामंते थंडिलं पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता तओ सालइयाओ एगं बिंदुगं गहेइ, गहित्ता थंडिलंसि निसरइ, तो णं तस्स सालइयस्स तित्तकडुयस्स बहुनेहावगाढस्स गंधेणं बहूणि पिपीलिगा

तिक्तकटुकस्य तुम्बकस्य बहुसंभारसंभृतस्य स्नेहावगाढस्य गन्धेन बहूनि पिपीलिका-सहस्राणि प्रादुर्भूतानि, या यथा च 'णं' तं=शारदिकस्य तिक्तकटुक तुम्बकस्य विन्दुकं पिपीलिका आहरति, सा तथा अकाले एव "जीवियाओ ववरोविज्जइ" जीविताद् व्यपरोप्यते=प्राणेभ्यो वियुज्यते 'म्रियते' इत्यर्थः, ततः खलु=पिपी-लिकाविराधनमवलोक्य धर्मरुचेरनगारस्यायमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूपः आध्या-त्मिकः=५ आत्मगतः चिन्तितः=स्मरणरूपः, प्रार्थितः=अभिलाषरूपः, कल्पितः=कल्पनारूपः, मनोगतः=अन्तः प्रकाशितः संकल्पो विचारः समुदपद्यत यदि तावदस्य शारदिकस्य यावत्-तिक्त तुम्बकस्य एकस्मिन् विन्दुके प्रक्षिप्ते सति, अनेकानि पिपीलिकासहस्राणि 'ववरोविज्जंति' व्यपरोप्यन्ते=प्राणेभ्यो वियुज्यंते म्रियन्ते।

स्स बहुनेहावगाढस्स गंधेणं बहूणि पिपीलिगासहस्साणि पाउब्भूयाइं जा जहायणं पिपीलिका आहारेइ सा तहा अकाले चेव जीवियओ ववरोविज्जइ) और आकर के उन्होंने सुभूमिभाग उद्यान से न अतिदूर और न अति समीप भूमि की प्रतिलेखना की। प्रतिलेखना करके फिर उन्होंने उस शारदिक-तिक्तकटु-तुंबडी के शाक में से एक बिन्दुमात्र शाक लिया-और लेकर उसे भूमि पर डाल दिया। तो इतने में ही शारदिक तिक्तकडवी तुंबडी के उस बहुस्नेहावगाढ शाक की गंध से वहां हजारों कीड़िया एकट्ठी-एकत्रित-हो गईं। उनमें से जिस कीड़ीने जिस समय उसे खाया वह कीड़ी उसी समय वहां मर गई। (तएणं तस्स धम्मरुइयस्स अणगारस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५-जइ ताव इम-स्स सालइयस्स जाव एगंमि बिन्दुगंमि पक्खित्तंमि अणेगाइं पिपीलिया

सहस्साणि पाउब्भूयाइं जा जहायणं पिवीलिका आहारेइ सा तहा अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जइ)

અને આવીને તેમણે સુભૂમિભાગ ઉદ્યાનથી વધારે દૂર પણ નહિ અને વધારે નજીક પણ નહિ એવા-સ્થાને ભૂમિની પ્રતિલેખના કરી. પ્રતિલેખના કરીને તેઓએ તે શારદિક-તિકત કડવી તૂબડીના શાકમાંથી એક ટીપા જેટલું શાક લીધું અને લઈને તે ભૂમિભાગ ઉપર નાખી દીધું. નાખતાંની સાથે જ ત્યાં શારદિક તિકત-કડવી તુંબડીના ઘી તરતા શાકની સુવાસથી હજારો કીડીઓ એકઠી થઈ ગઈ. તેઓમાંથી જે જે કીડીએ તે શાકને ખાધું હતું તે તે તરતજ ત્યાં મરી ગઈ.

तएणं तस्स धम्मरुइयस्स अणगारस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५ जइ ताव इम-स्स सालइयस्स जाव एगंमि बिंदुगंमि पक्खित्तम्मि अणेगाइं पिवीलिया सहस्साइं

तत्=तस्माद् यदि खल्वहमेतद् शारदिकं 'थंडिलंसि' स्थण्डिले=भूमौ सर्वं 'निसिरामि' निसृजामि=परिष्ठापयामि, 'तोणं' तर्हि खलु बहूनां प्राणानां=प्राणाः सन्त्येषामिति प्राणाः=प्राणवन्तस्तेषां, तथाभूतानां जीवानां तत्=तस्माद् श्रेयः=श्रेयस्करं खलु ममेदं शारदिकं तिक्तकटुकालाबुकं यावत्-स्नेहावगाढं स्वयमेव आहारयितुं=भोक्तुम्, ममैव 'एएण' एतेन=तिक्ततुम्बकाहारेण 'सरीरेणं' शरीरं खलु 'णिज्जाउ' निर्यातु=निर्गच्छतु नश्यतु 'त्तिकट्टु' इति कृत्वा इति मनसि निधाय एवम्=अनेन प्रकारेण संप्रेक्षते=पुनः पुनर्विचारेण शरीरनिर्याणं कर्तुं

सहस्साइं ववरोविज्जंति, तं जइणं अहं एयं सालइयं थंडलंसि सव्वं निसिरामि तएणं बहुणं पाणाणं ४ वह कारणं भविस्सइ तं सेयं खलु ममेयं सालइयं जाव गाढं सयमेव आहारेत्तए) इस तरह पिपीलिकाओ की विराधना देखकर धर्मरुचि अनगार को इस प्रकार आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प-विचार हुआ-यहां संकल्पके चिन्तित, प्रार्थित, कल्पित इन तीन विशेषणों को ग्रहण कर ने के निमित्त सूत्र में ५ का अंक दिया है। जब इस शारदिक तिक्त कडवी तुंबडी की शाक की एक बिन्दु मात्र जमीन पर डालने पर अनेक पिपीलिका सहस्र प्राणों से वियुक्त हो जाती हैं तो मैं जब इस शारदिक तिक्त कडवी तुंबी के शाकको पूरेरूपमें जमीन पर परिष्ठापित कर दूँगा तो अनेक प्राणियों४ के वह विराधना का कारण होगा इसलिये मुझे उचित है कि मैं ही इस शारदिक तिक्त कडवी तुंबडी के इस बहुत मसालेदार एवं स्नेहावगाढ बहुत घृतसे युक्त शाक को स्वयं आहार कर जाऊँ। (मम चेव एएणं सरीरेणं णिज्जाउत्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता मुहपोत्तियं २

ववरोविज्जंति, तं जइणं अहं एयं सालइयं थंडलंसि सव्वं निसिरामि तएणं बहुणं पाणाणं४वह कारणं भविस्सइ तं सेयं खलु ममेयं सालइयं जाव गाढं सयमेव आहारेत्तए

આ પ્રમાણે કીડીઓની વિરાધના જોઈને ધર્મરુચિ અનગારને આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સંકલ્પ-વિચાર-ઉદ્ભવ્યો. અહીં સંકલ્પના ચિંતિત, પ્રાર્થિત, કલ્પિત આ ત્રણે વિશેષણોના ગ્રહણ માટે સૂત્રમાં ૫ નો અંક આપવામાં આવ્યો છે-કે જ્યારે આ શારદિક તિક્ત કડવી તૂંબડીના શાકના ફક્ત એક ટીપાને પૃથ્વી ઉપર નાખવાથી ઘણી કીડીઓ હજારો પ્રાણોથી વિયુક્ત થઈ જાય છે ત્યારે હું શારદિક કડવી તૂંબડીના બધા શાકને પૃથ્વી ઉપર નાખીશ ત્યારે તે અનેક પ્રાણીઓ ૪ ની વિરાધનાનું કારણ થશે. એથી મને એજ યોગ્ય લાગે છે કે હું આ શારદિક તિક્ત કડવી તૂંબડીના આ સરસ મસાલાવાળા અને ઘી તરતા શાકને પોતે જ ખાઈ જાઉં.

निश्चिनुते। संप्रेक्ष्य-' मुहपोत्तियं ' मुखपोत्तिकां=सदोरकमुखवस्त्रिकां रजोहरणं च प्रतिलेखयति, प्रतिलेख्य ' ससीसोवरियं ' सशीर्षोपरिकं=चरणतलाद् मस्तकोपरिभागपर्यन्तं कायं=शरीरं, ' पमज्जेइ ' प्रमार्जयति, प्रमार्ज्य तद् शारदिकं तिक्तकटुकं बहुसंभारसंभृतं स्नेहावगाढं बिलमिव पन्नगभूतेन आत्मना सर्वं शरीरकोष्ठके=उदरे प्रक्षिपति मुखस्य पार्श्वद्वयस्पर्शरहितमाहारयतीत्यर्थः। ततः खलु तस्य धर्मरुचेस्तद्

पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता ससीसोवरियं कायं पमज्जेइ पमज्जित्ता तं सालइयं तित्तकडुयं बहुनेहावगाढं बिलमिव पन्नगभूएणं अप्पाणेणं सव्वं सरीरकोट्ठंसि पक्खिवइ) मेरा ही शरीर इस तिक्त कटु तुंबडी के आहार से नाश होवे इस प्रकार उन्होंने अपने मनमें बार २ सोचा सोचकर अपने शरीर के निर्याण करने का उन्होंने निश्चय कर लिया। निश्चय करने के अनन्तर सदोरक मुखवस्त्रिका एवं रजोहरण इनकी उन्होने प्रतिलेखना करके फिर वे चरण तल से लेकर मस्तकोपरिभाग पर्यन्त तक के समस्त अपने शरीर की प्रमार्जना करके उन्होंने उस शारदिक तिक्त कडवी तुंबडी के बहुत मसाला से युक्त एवं स्नेहावगाढ बहुत घी से युक्त समस्त शाक का आहार कर लिया-जिस प्रकार सर्प जब बिल में प्रविष्ट होता है तब बिल के दोनों पर्श्वभागों को स्पर्श नहीं करता हुआ उसमें सीधा प्रविष्ट हो जाता है-उसी तरह वह शाक रूप सर्प भी मुख रूप बिल के दोनों पार्श्व भागों को स्पर्श नहीं करता हुआ सीधा गले से होकर पेट में चला गया। (तएणं तस्स

(मम चेव एएणं सरीरेणं णिज्जाउत्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता मुहपोत्तियं २ पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता ससिसोवरियं कायं पमज्जेइ पमज्जित्ता तं सालइयं तित्तकडुयं बहुनेहावगाढं बिलमिव पन्नगभूएणं अप्पाणेणं सव्वं सरीर कोट्टंसि पक्खिवइ)

મારૂં શરીર જ આ તિકત કડવી તૂંબડીના આહારથી નષ્ટ થાય. આ રીતે તેણે પોતાના મનમાં વારંવાર વિચાર કર્યો. વિચારીને પોતાના શરીરને નષ્ટ કરવાનો તેમણે મક્કમ વિચાર કર્યા બાદ તેણે સદોરક મુખવસ્ત્રિકા અને રજો-હરણની તેમણે પ્રતિલેખના કરી. પ્રતિલેખના કરીને તેમણે પગના તળિયાથી માંડીને મસ્તક સુધીના પોતાના આખા શરીરની પ્રમાર્જના કરી ત્યારે તેમણે તે શારદિક તિકત કડવી તૂંબડીના સરસ મસાલાવાળા અને ઉપર ઘી તરતા બધા શાકનો આહાર કરી લીધો. જેવી રીતે સાપ જ્યારે દરમાં પ્રવેશે છે ત્યારે દરના બંને પાર્શ્વભાગનો સ્પર્શ કર્યા વગર તેમાં સીધો પ્રવિષ્ટ થઈ જાય છે તેમજ તે શાક રૂપી સાપ પણ મુખ રૂપી દરના બંને પાર્શ્વભાગને સ્પર્શ્યા વગર સીધું ગળામા થઇને પેટમાં જતું રહ્યું.

शारदिकं यावत्-स्नेहावगाढम् आहारितस्य=भुक्तवतः, ततो मुहुर्तान्तरेण परिणम्यमाने=आहारे परिणामं प्राप्ते सति शरीरे वेदना प्रादुर्भूता, सा कीदृशी ? त्याह-उज्ज्वला=तीव्रा, यावद् 'दुरहियासा' दुरध्यासा=दुरधिसहा-असह्येत्यर्थः। ततः खलु स धर्मरुचिरनगारो ऽस्थामा, हीनपराक्रमः, अबलः=मनोबलरहितः अवीर्यः=हतोत्साहः अपुरुषकारपराक्रमः,=पुरुषार्थहीनः, 'अधारणिज्जमितिकट्टु' अधारणीयमिति कृत्वा-धारयितुमशक्यमिदं शरीरमितिमनसि विचार्य 'आयारभंडगं' आचारभाण्डकम्-आचाराय आचारपालनार्थं भाण्डकं=भाण्डोपकरणं वस्त्रपात्रादिक-

---

धम्मरुइस्स तं सालइयं जाव नेहावगाढं आहारियस्स समाणस्स मुहुत्तंतरेणं परिणममाणंसि सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा-तएणं से धम्मरुई अणगारे अथामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमित्ति कट्टु अयारभंडगं एगंते ठवेइ, ठवित्ता थंडिल्लं पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता दब्भसंथारगं संथारेइ, संथारित्ता दब्भसंथारगं, दुरुहइ, दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसन्ने करयल परिग्गहियं एवं वयासी) शाक उन धर्मरुचि अनगार के पेट में पहुँचते ही एक मुहूर्त के बाद जब वह पचने लगा तब उनके शरीर में उज्ज्वल यावत् दुरधिध्यास वेदना प्रकट हुई। इस से वे धर्मरुचि अनगार पराक्रम से हीन, मनोबल से विहिन, हतोत्साह होकर पुरुषार्थ रहित बन गये। यह शरीर अब धारण करने से अशक्य हो रहा है ऐसा जब उन्होंने प्रतीत होने लगा तब उन्होंने अपने आचारभांडक पंचविध आचार पालने के लिये जो - वस्त्र - पात्रादिक थे उनको -एकान्त में रख दिया-रखकर फिर उन्हों ने संस्तारकभूमि की

(तएणं तस्स धम्मरुइस्स तं सालइयं जाव नेहावगाढं आहारियस्स समाणस्स मुहुत्तंतरेणं परिणममाणंसि सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा-तएणं से धम्मरुई अणगारे अथामे, अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमित्ति कट्टु आयारभंडगं एगंते ठवेइ, ठवित्ता थंडिल्लं पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता दब्भसंथारगं संथारेइ, संथारित्ता दब्भसंथारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसन्ने करयलपरिग्गहियं एवं वयासी)
શાક તે ધર્મરુચિના પેટમાં પહોંચતાં જ એક મુહૂર્ત પછી જ્યારે તેનું પાચન શરૂ થયુ ત્યારે તેમના શરીરમાં ઉજ્વલ યાવત્ દુરધિધ્યાસ વેદના થવા માંડી. તેથી તે ધર્મરુચિ અનગાર પરાક્રમ વગર, મનોબળ વગર હતોત્સાહી થઈને પુરુષાર્થ વગર બની ગયા. હવે આ શરીર ટકવું અશકય થઇ પડયું છે એવી જ્યારે તેઓને પ્રતીતિ થવા લાગી ત્યારે તેમણે પોતાના આચાર

मित्यर्थः, एकान्ते स्थापयति, स्थापयित्वा स्थण्डिलं=संस्तारकभूमिं प्रतिलेखयति, प्रतिलेख्य दर्भसंस्तारकं 'संथारेइ' संस्तृणाति=आस्तृतं करोति संस्तीर्य, दर्भसंस्तारकं दूरोहति=आरोहति, दूरुह्य पौरस्त्याभिमुखः=पूर्वदिगभिमुखः, 'संपलियंकनिसन्ने' संपल्यङ्क निषण्णः=पद्मासनसंनिविष्टः, करतलपरिगृहीतं=संयोजितहस्ततलद्वयं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=स्वमनस्युक्तवान्,

"नमोऽत्थुणं अरहंताणं जाव संपत्ताणं,—

—णमोऽत्थुणं धम्मघोसाणं थेराणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसयाणं"

नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यो भगवद्भ्यो यावत् संप्राप्तेभ्यः, नमोस्तु खलु धर्मघोषेभ्यः स्थविरेभ्यो मम धर्माचार्येभ्यो धर्मोपदेशकेभ्यः, पूर्वमपि दीक्षाग्रहणकालेऽपि खलु मया धर्मघोषाणां स्थविराणामन्तिके सर्वः प्राणातिपातः प्रत्याख्यातो यावज्जीवं 'यावत् परिग्रहः' अत्र यावच्छब्देन—सर्वो मृषावादः, सर्वमदत्तादानं सर्वं मैथुनं च प्रत्याख्यातम्, तथा—सर्वः परिग्रहः प्रत्याख्यातः। इदानीमपि खलु अहं तेषामेव भगवतामन्तिके सर्वं प्राणातिपातं प्रत्याख्यामि यावत् परिगहं प्रत्याख्यामि याव-

---

प्रतिलेखना की प्रतिलेखना करके फिर उसके ऊपर उन्होंने दर्भसंस्तारक को बिछाया—बिछाकर फिर वे उसपर बैठकर फिर पूर्वदिशा की ओर मुखकर पर्यङ्कासन से उस पर विराजमान हो गये विराजमान होकर उन्होंने अपने दोनों हाथों को जोड़ा और मस्तक पर उसकी अंजलि रखकर इस प्रकार अपने मन ही मन वे कहने लगे—(नमोत्थुणं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं, णमोत्थुणं धम्मघोसाणं थेराणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसगाणं पुव्विंपि णं मए धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावजीवाए जाव परिग्गहे इयाणिं पि अहं तेसिंचेव भगवंताणं अंतियं सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव

ભાંડકને—વસ્ત્ર પાત્ર વગેરેને એકાંતમાં મૂકી દીધાં. મૂકયા બાદ તેઓએ સંસ્તારક ભૂમિની પ્રતિલેખના કરી. પ્રતિલેખના કરીને તેની ઉપર તેમણે દર્ભ સંસ્તારક કર્યો દર્ભસંસ્તારક પાથરીને તેઓ તેની ઉપર બેસીને પૂર્વ દિશા તરફ મુખ કરીને પર્યંકાસનથી તેની ઉપર વિરાજમાન થઈ ગયા. વિરાજમાન થઈને તેઓએ પોતાના બંને હાથોને જોડયા અને તેમની અંજલી બનાવીને મસ્તક ઉપર મૂકી અને પોતાના મનમાં જ કહેવા લાગ્યા.

(નમોત્થુ ણં અરિહંતાણં જાવ સંપત્તાણં ણમોત્થુણં ધમ્મઘોસાણં થેરાણં મમ ધમ્માયારિયાણં ધમ્મોવએસગાણં પુવ્વિં પિ ણં મએ ધમ્મઘોસાણં થેરાણં અંતિએ સવ્વે પાણાઇવાએ પચ્ચક્ખાએ જાવ જીવાએ જાવ પરિગ્ગહે, ઇયાણિં પિ અહં તેસિં ચેવ

ज्जीवं, यथा–स्कन्दकः=स्कन्दकवत् यावच्चरमै–रुच्छ्वासैः, 'वोसिरामितिकट्टु' व्युत्सृजामि=शरीरं परित्यजामि' इति कृत्वा "आलोइय पडिकंते' आलोचितप्रतिकान्तः=पूर्वकृतं यदतीचारजातं तदालोचितं, पुनरकरणप्रतिज्ञया प्रतिक्रान्तं येन स तथाभूतः समाधिप्राप्तः=आत्मसमाधियुक्तः कालगतः=मरणं प्राप्तः ॥सू०३॥

मूलम्–तएणं ते धम्मघोसा थेरा धम्मरुइं अणगारं चिरं गयं जाणित्ता समणे निग्गंथे सद्दावेंति सद्दावित्ता एवं वयासी

परिग्गहं पच्चक्खामि जाव जीवाए जहा खंदओ जाव चरिमेहिं उस्सासेहिं वोसिरामित्ति कट्टु आलोइय पडिक्कंते समाहिपत्ते कालगए) यावत् सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हुए अरिहंत भगवंतो के लिये मेरा नमस्कार हो–धर्मोपदेशक मेरे धर्माचार्य श्री धर्मघोषस्थविर के लिये मेरी नमस्कार हो मैंने पहिले दीक्षा ग्रहण के समय उन धर्मघोष स्थविर के समीप समस्त प्राणातिपात, समस्त मृषावाद, समस्त अदत्तादान, समस्त मैथुन तथा समस्त परिग्रह जीवन पर्यन्त प्रत्याख्यान कर दिया है। अब भी मैं उन्हीं भगवंतो के समक्ष समस्त प्राणातिपात यावत् समस्त परिग्रह का यावज्जीव प्रत्यख्यात करता हूँ। यावत् अन्तिम श्वासोतक स्कन्दककी तरह इस शरीरका परित्याग करता हूँ। इस प्रकार मन ही मन कह कर वे धर्मरुचि अनागार आलोचित प्रतिक्रान्त बनकर आत्मसमाधिमें तल्लीन होते हुए मरण प्राप्त हुवे ॥सू०३॥

भगवंताणं अंतियं सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव परिग्गहं पच्चक्खामि जाव जीवाए जहा खंदओ जाव चरिमेहिं उस्सासेहिं वोसिरामित्ति कट्टु आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालगए)

યાવત્ સિદ્ધગતિ મેળવેલા અરિહંત ભગવંતોના માટે મારા નમસ્કાર છે. ધર્મોપદેશક મારા ધર્માચાર્ય શ્રી ધર્મઘોષ સ્થવિરના માટે મારા નમસ્કાર છે. પહેલાં દીક્ષા ગ્રહણ કરતી વખતે મેં તે ધર્મઘોષ સ્થવિરની પાસે સમસ્ત પ્રાણાતિપાતો, સમસ્ત મૃષાવાદો, સમસ્ત અદત્તાદાનો સમસ્ત મૈથુનો તથા સમસ્ત પરિગ્રહોનું પ્રત્યાખ્યાન કર્યું હતું. અત્યારે પણ તે જ ભગવંતોની સામે સમસ્ત પ્રાણાતિપાત યાવત્ સમસ્ત પરિગ્રહોનું યાવજ્જીવ પ્રત્યાખ્યાન કરૂં છું. જીવનના છેલ્લા શ્વાસ સુધી સ્કન્દકની જેમ આ શરીરનો ત્યાગ કરૂં છું. આ રીતે પોતાના મનમાં જ કહીને તે ધર્મ–રુચિ અનગાર આલોચિત પ્રતિકાંત થઈને આત્મસમાધિમાં તલ્લીન થતાં મરણ પામ્યા. ॥ સૂત્ર "૩" ॥

—एवं खलु देवाणुप्पिया ! धम्मरुई अणगारे मासखमण-पारणगंसि सालइयस्स जाव गाढस्स णिसरणट्टयाए बहिया निग्गए चिरगए तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! धम्म-रुइस्स अणगारस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेह, तएणं ते समणा निग्गंथा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता धम्मघोसाणं थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनि-क्खमित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणा जेणेव थंडिल्लं तेणेव उवागच्छंति उवा-गच्छित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स सरीरगं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवविप्पजढं पासंति पासित्ता हा हा अहो अकज्जमितिकट्टु धम्मरुइस्स अणगारस्स परिनिव्वाणवत्तियं काउस्सग्गं करेंति करित्ता धम्मरुइस्स आयारभंडगं गेण्हंति गेण्हित्ता जेणेव धम्मघोसा थेरा तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता गमणा-गमणं पडिक्कमंति पडिक्कमित्ता एवं वयासी—एवं खलु अम्हे तुब्भं अंतियाओ पडिनिक्खमामो२ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स परिपेरंतेणं धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्व जाव करेमाणे जेणेव थंडिल्ले तेणेव उवा०२ जाव इहं हव्वमागया, तं कालगए णं भंते ! धम्मरुई अणगारे इमे से आयारभंडए, तएणं ते धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओगं गच्छंति गच्छित्ता समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य सद्दावेंति सद्दावित्ता एवं वयासी —एवं खलु अज्जो ! मम अंतेवासी धम्मरुची नाम अणगारे

पगइभद्दए जाव विणीए मासं मासेणं अणिक्खित्तेणं तवो-कम्मेणं जाव नागसिरीए माहणीए गिहे अणुपविट्ठे, तएणं सा नागसिरी माहणी जाव निसीरइ, तएणं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमितिकट्टु जाव कालं अणवकंखमाणे विहरति, से णं धम्मरुई अणगारे बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं सोहम्मजाव सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववन्ने, तत्थ णं अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, तत्थ धम्मरुइस्सवि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता से णं धम्मरुई देवे ताओ देवलोगाओ जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ तं धिरत्थु णं अज्जो ! णागसिरीए माहणीए अधन्नाए अपुन्नाए जाव णिंबोलियाए जाए णं तहारूवे साहू धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि सालइएणं जाव गाढेणं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए ॥ सू० ४ ॥

टीका—' तएणं ते ' इत्यादि । ततः खलु—इतश्च ते धर्मघोषाः स्थविरा धर्मरुचिमनगारं चिरं गतं बहुकालतो गतं ज्ञात्वा श्रमणान् निर्ग्रन्थान् शब्दयति,

---

तएणं ते धम्मघोसा थेरा इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (ते धम्मघोसा थेरा) उन—धर्मघोष स्थविरने(धम्मरुइं अणगारं) धर्मरुचि अनगार को (चिरंगयं जाणित्ता) बहुत देर के गये हुए जानकर (समणे निग्गंथे सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं

तएण ते धम्मघोसा थेरा इत्यादि

टीकार्थ-(तएणं) त्यारबाद (ते धम्मघोसा थेरा) ते धर्मघोष स्थविरे (धम्मरुइं अणगारं) धर्मरुचि अनगारने (चिरगयं जाणित्ता) बहु वखतथी बहार गयेला जाणीने

शब्दयित्वा, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादिषुः=उक्तवन्तः, एवं खलु हे देवानुप्रियाः ! धर्मरुचिरनगारो मासक्षपणपारणके शारदिकस्य तिक्तकटुकतुम्बकस्य यावत्-स्नेहावगाढस्य 'णिसिरणट्ठयाए' निसृजनार्थं बहिर्निर्गतश्चिरगतः=तस्मिन् गते सति बहुतरः कालो व्यतीत इत्यर्थः। तत्-तस्माद् गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः ! धर्मरुचेरनगारस्य सर्वतः समन्ताद् मार्गणगवेषणं=सम्यगन्वेषणं कुरुत। ततः खलु ते श्रमणा निर्ग्रन्था यावत् प्रतिशृण्वन्ति=तथा करिष्यामीत्युक्त्वा तामाज्ञां स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य धर्मघोषाणां स्थविराणामन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रतिनि

वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि सालइयस्स जाव गाढस्स णिसिरणट्ठयाए बहिया निग्गए-चिरगए, तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! धम्मरुइयस्स अणगारस्स सव्वओ समंता गवेसणं करेह) श्रमण निर्ग्रन्थों को बुलाया। बुलाकर उनोने ऐसा कहा-हे देवानुप्रियो ! धर्मरुचि अनगार आज मासखमण की पारणा के दिन शारदिक तिक्त कडुयी तुंबडी का बहु संभार संभृत शाक कि जिसके ऊपर घृत तैर रहा था लाये थे-मैंने उसे परिष्ठापन के लिये उन्हें आज्ञा दिया सो वे उसे परिष्ठापन करने के लिये यहां से बाहिर चले गये-गये उन्हें बहुत देर हो गई-वे अभीतक नहीं आये इसलिये हे देवानुप्रियों ! तुम लोग जाओ और धर्मरुचि अनागार की सब तरफ चारों दिशाओं मे मार्गणा एवं गवेषणा करो। (तएणं ते समणा निग्गंथा जाव पडिसुणेंति, पडि सुणित्ता धम्मघोसाणं

(समणे निग्गंथे सद्दावेंति सद्दावित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! धम्मरूई अणगारं मासखमणपारणगंसि सालइयस्स जाव गाढस्स णिसिरणट्ठयाए बहिया निग्गयाए-चिरगए, तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेह)

શ્રમણ નિર્ગ્રંથોને બોલાવ્યા. બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું-કે હે દેવાનુપ્રિયો ! ધર્મરુચિ અનગાર આજે માસ ખમણની પારણાના દિવસે શારદિક તિકત કડવી તૂંબડીનું સરસ વધારેલુ ઉપર ઘી તરતું શાક આહાર માટે લાવ્યા હતા. તેઓને મેં પ્રતિષ્ઠાપાનની આજ્ઞા આપી છે, તેઓ પરિષ્ઠાપન માટે અહીંથી બહાર ગયા છે. તેઓને બહાર ગયાને બહુ જ વખત થયો છે, હજી તેઓ આવ્યા નથી. એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો જાઓ અને ધર્મરુચિ અનગારની ચોમેર માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરો.

(तएणं ते समणा निग्गंथा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता धम्मघोसाणं

ष्क्रम्य धर्मरुचेरनगारस्य सर्वत समन्तात् मार्गणगवेषणं कुर्वन्तो यत्रैव स्थण्डिलं=स्थलं धर्मरुचेरनगारस्य कालकरणस्थानं तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य धर्मरुचेरनगारस्य शरीरकं 'निप्पाणं' निष्प्राणं=प्राणरहितं, 'निच्चेट्टं' निश्चेष्टं=चेष्टारहितं 'जवविप्पजढं' जीव विप्रत्यक्तं=जीवहीनं पश्यन्ति, दृष्ट्वा हा! हा! अहो! इति खेदे, 'अकज्जं' अकार्यम्=अनिष्टं जातं यद्धर्मरुचिनगारो मृतः, 'तिकट्टु'

थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता धम्मरुइस्स-अणगारस्स सव्वाओ समंता मग्गणगवेसणं करेमाणा जेणेव थंडिल्लं तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स सरीरगं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवविप्पजढं पासंति, पासित्ता हा हा अकज्जमिति कट्टु धम्मरुइस्स अणगारस्स परि निव्वाणवत्तियं काउस्सग्गं-करेंति)

उन निर्ग्रन्थ श्रमणों ने अपने धर्माचार्य की इस आज्ञा को यावत् स्वीकार कर लिया। और स्वीकार करके फिर वे धर्मघोष स्थविर के पास से निकले निकल कर उन्होंने धर्मरुचि अनागार की चारों दिशाओमें सब प्रकार से मार्गणा गवेषणा की। इस तरह मार्गण गवेषणा करते हुए जहां वह स्थण्डिल था-धर्मरुचि अनागार की मृत्यु होने का स्थान था-वहां आये वहां आकर के उन्होंने धर्मरुचि अनगार के शरीर को प्राण-रहित, चेष्टा रहित और जीव रहित देखा। देखकर के सहसा उनके मुख से हाय हाय यह खेद सूचक शब्द निकल पड़ा वे कहने लगे यह बडा अनिष्ट हुआ-जो धर्मरुचि अनागार का देहावसान हो गया।

थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेमाणा जेणेव थंडिल्लं तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स, सरीरगं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीव विप्पजढं पासंति, पासित्ता हाहा अकज्जमिति कट्टु धम्मरुइस्स अणगारस्स परिनिव्वाण वत्तियं काउस्सग्गं करेंति)

તે નિર્ગ્રંથ શ્રમણોએ પોતાના ધર્માચાર્યની આજ્ઞાને સ્વીકારી લીધી અને સ્વીકારીને તેઓ ધર્મઘોષ સ્થવિરની પાસેથી નીકળીને ધર્મરુચિ અનગારની બધી રીતે ચોમેર માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરવા લાગ્યા. આ રીતે માર્ગણ ગવેષણ કરતાં જ્યાં તે સ્થંડિલ હતું-ધર્મરુચિ અનગારના મૃત્યુનું સ્થાન હતું ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને તેઓએ ધર્મરુચિ અનગારના શરીરને નિષ્પ્રાણ નિશ્ચેષ્ટ અને નિર્જીવ જોયું. આ દૃશ્ય જોતાની સાથે જ તેઓના મુખથી હાય! હાય! ના ખેદ સૂચક શબ્દો નીકળી પડયા. તેઓ કહેવા લાગ્યા કે આ બહુ જ ખોટું થયું છે-ધર્મરુચિ અનગારનું દેહાવસાન થઈ ગયું છે. આ

इतिकृत्वा-इतिखेदं कृत्वा धर्मरुचेरनगारस्य 'परिनिव्वाणवत्तियं' परिनिर्वाण-प्रत्ययिकं=परिनिर्वाणं मरणं तत्र यन्मृतशरीरस्य परिष्ठापनं तदपि परिनिर्वाणमेव तदेव प्रत्ययोहेतुर्यस्य स परिनिर्वाणप्रत्ययिकः तं तथा, मृतपरिष्ठापननिमित्तकमि-त्यर्थः कायोत्सर्गं कुर्वन्ति, कृत्वा धर्मरुचेरनगारस्याऽऽचारभाण्डकं=वस्त्रपात्रादिकं गृह्णन्ति गृहीत्वा यत्रैव धर्मघोषाः स्थविरास्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य गमनागमनम्=इर्यापथिकीं प्रतिक्रामन्ति, प्रतिक्रम्यैवमवादिषुः एवं खलु हे स्वामिन् ! वयं युष्मा-कमन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामामः=प्रतिनिर्गताः, प्रतिनिष्क्रम्य सुभूमिभागस्योद्यानस्य

इस प्रकार कहकर उन्होंने वहीं पर मृत शरीर को वोसराने रूप कायो-त्सर्ग किया। (करित्ता० उवागच्छ०) कायोत्सर्ग करके फिर उन्होंने उन धर्मरुचि अनागार के आचार भांडको को वस्त्र पात्रादिकों को-उठा लिया-उठाकर वे जहां धर्मघोष स्थविर थे-वहां आये (उवागच्छित्ता गमणागमणं पडिक्कमंति, पडिक्कमित्ता एवं वयासी-एवं खलु अम्हे-तुब्भं अंतियाओ पडि निक्खमामो २ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स परिपे-रंतेणं धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्व जाव करेमाणे जेणेव थंडिल्ले तेणेव उवा० २ जाव इहं हव्वमागया, तं कालगएणं भंते ! धम्मरुई अणगारे इमे से आयारभंडए - तएणं ते धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओगं गच्छंति गच्छित्ता समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य सद्दावेति-सद्दाविता एवं वयासी) आकर के उन्होंने ईर्यापथिक प्रतिक्रमण किया। प्रतिक्रमण करके फिर इस प्रकार वे कहने लगे हे स्वामिन् ! हम लोग आपके पास से यहां से गये-और जाकर सुभूमिभाग उद्यान की चारों

રીતે કહીને તેમણે ત્યાંજ મૃત શરીરને વોસરાવા રૂપ કાયોત્સર્ગ કર્યો. (करित्ता० उवागच्छ०) કાયોત્સર્ગ કરીને તેઓએ ધર્મરુચિ અનગારના આચાર ભાંડકોને તેમજ વસ્ત્રોને લઈ લીધા અને લઈને જ્યાં ધર્મઘોષ સ્થવિર હતા ત્યાં આવ્યા. (उवागच्छित्ता गमणागमणं पडिक्कमंति, पडिक्कमित्ता एवं वयासी-एवं खलु अम्हे तुब्भं अंतियाओ पडिनिक्खमामो २ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स परिपेरंतेणं धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्व जाव करेमाणे जेणेव थंडिल्ले तेणेव उवा० जाव इहं हव्व-मागया तं कालगएणं भंते ! धम्मरुई अणगारे इमे से आयारभंडए तएणं ते धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओगं गच्छंति गच्छित्ता समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य सद्दावेंति-सद्दावित्ता एवं वयासी) ત્યાં આવીને તેમણે ઈર્યાપથિક પ્રતિક્રમણ કર્યું. પ્રતિક્રમણ કરીને તેઓ આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે હે સ્વામિન્! અમે લોકો અહીંથી આપની પાસેથી ગયા અને જઈને સુભૂમિભાગ ઉદ્યાનની ચોમેર ફરતાં ફરતાં ધર્મરુચિ

'परिपेरंतेणं' परिपर्यन्तेन=चतुर्दिक्षु परिभ्रमन्तो धर्मरुचेरनगारस्य 'सव्वजाव' सर्वतः समन्ताद् मार्गणगवेषणं कुर्वन्तो यत्रैव स्थण्डिलं तत्रैवोपागच्छामः, उपागत्य यावद् इह हव्यमागताः स कालगतः खलु हे भदन्त! धर्मरुचिरनगारः, इमानि 'से' तस्य, आचारभाण्डकानि। ततः ख ते धर्मघोषाः स्थविराः 'पुव्वगए' पूर्वगते=दृष्टिवादान्तर्गतश्रुताधिकारविशेषे उपयोगं गच्छन्ति=लगयन्ति यदा धर्मरुचिराहारमानेतुं नगर्यां गतस्तदा कस्य गृहे गतः? केनेदमाहारंदत्त' मित्यादि ज्ञातुं स्वकीयोपयोगं नयन्तीत्यर्थः, गत्वा-स्वकीयोपयोगं लगयित्वा, श्रमणान् निर्ग्रन्थान् निर्ग्रन्थीश्च शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—एवं खलु हे आर्याः! ममान्तेवासी=शिष्यः, धर्मरुचिर्नामाऽनगारः 'पगइभद्दए' प्रतिकभद्रकः=प्रकृत्या

दिशाओं में फिरते २ धर्मरुचि अनगार की सर्व प्रकार से मार्गण, गवेषणा करने लगे। मार्गणा, गवेषणा करते हुए हम लोग फिर उस स्थान पर पहुँचे जहां धर्मरुचि अनगार का शव पड़ा हुआ था वहां से अभी २ हम लोग आरहे हैं। हे भदंत! वे धर्मरुचि अनगार कालगत हो गये हैं-ये उनके आचार भाण्डक वस्त्र पात्र हैं। इस के बाद उन धर्मघोष स्थविर ने दृष्टि वाद के अंतर्गत श्रुताधिकार विशेष में अपना उपयोग लगाया-तो उन्हें यह ज्ञात हो गया कि जब धर्मरुचि आहार लेने के लिये नगरी में गये तो वे किसके घर गये, किस ने यह आहार उन्हे दिया इत्यादि। अपने उपयोग से इस बात को जानकर उन्होंने निर्ग्रन्थ श्रमणों और निर्ग्रन्थ श्रमणियों को बुलाया और बुलाकर उनसे ऐसा कहा-(एवं खलु अज्जो मम अंतेवासी, धम्मरुई, णाम

અનગારની બધી રીતે માર્ગણા ગવેષણા કરવા લાગ્યા. માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરતાં અમે લોકો તે જગ્યાએ પહોંચ્યા જ્યાં ધર્મરુચિ અનગારનું મડદું પડ્યું હતું. અમે લોકો અત્યારે ત્યાંથી જ આવી રહ્યા છીએ. હે ભદંત! તે ધર્મરુચિ અનગાર મરણ પામ્યા છે. તેઓશ્રીના આ આચાર ભાંડક વસ્ત્રપાત્રો છે. ત્યારપછી તે ધર્મઘોષ સ્થવિરે દૃષ્ટિવાદના અંતર્ગત શ્રુતાધિકાર વિશેષમાં પોતાનો ઉપયોગ લગાવ્યો. તેમાંથી તેઓને આ વાતની જાણ થઈ કે જ્યારે ધર્મરુચિ આહાર લાવવા માટે નગરીમાં ગયા હતા, ત્યારે તેઓ કોના ઘેર ગયા હતા, આ આહાર તેમને કોણે આપ્યો હતો વગેરે. પોતાના ઉપયોગથી આ બધી વિગત જાણીને તેમણે નિર્ગ્રંથ શ્રમણો અને નિર્ગ્રંથ શ્રમણીઓને પોતાની પાસે બોલાવી અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

(एवं खलु अज्जो मम अंतेवासी, धम्मरुई णाम अणगारे पगइभद्दए जाव

स्वभावेन भद्रकः-शान्तः, यावद्-यावत् करणादिदं द्रष्टव्यम्-' पगइ उवसंते, पगइ-पयणु कोहमाणमायालोहे, मिउमद्दवसंपण्णे, आलीणे, भद्दए, इति । प्रकृत्युपशान्तः, प्रकृति प्रतनुक्रोधमानमाया लोभः, मृदु मार्दवसंपन्नः, आलीनः, भद्रकः, इति । विनीतः ' मासं मासेणं' मासं व्याप्य मासेन=मासक्षपणनामकेन, अनिक्षिप्तेन=अन्तररहितेन, अविश्रान्तेनेत्यर्थः तपः कर्मणा विचरन् पारणकदिने यावत्-नागश्रिया ब्राह्मण्यागृहमनुपविष्टः, ततस्तदनन्तरं सा नागश्री ब्राह्मणी यावत्-शारदिकं तिक्तालाबुकं ' निसिरइ ' निसृजति=पात्रे निक्षिपतिस्म । ततः धर्मरुचि-

---

अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए मासं मासेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं जाव नागसिरीए माहणीए गिहे अणुपविट्ठे तएणं सा नागसिरी माहणी जाव निसीरइ, तएणं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमित्ति कट्टु जाव कालं अणवकंखेमाणे विहरइ, सेणं धम्मरुई अणगारे बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पउणित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं सोहम्म जाव सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववन्ने ठिई पण्णत्ता) आर्यो! सुनो बात ऐसी है मेरे अन्तेवासी शिष्य-धर्मरुचि अनगार स्वभाव से ही भद्र परिणामी थे। यावत् शब्द से इस पाठ का यहां संग्रह हुआ है " पगइ उवसंते पगइ पगणु कोहमाणमाया लोहे मिउमद्दवसंपण्णे आलीणे भद्दए "। ये अविश्रान्त अंतर रहित-मास मासखमण पारणा करते थे । आज उनके पारणा का दिन था-सो गोचरीके लिये भ्रमण करते हुए ये नागश्री ब्राह्मणीके घर

विणीए मासं मासेणं अणिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं जाव नागसिरीए माहणीए गिहे अणुपविट्ठे तएणं सा नागसिरि माहणी जाव निसीरइ, तएणं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जमित्ति कट्टु जाव कालं अणवकंखेमाणे विहरइ,सेणं धम्मरुई अणगारे बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पउणित्ता अलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं सोहम्म जाव सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववन्ने ठिई पण्पत्ता)

આર્યો! સાંભળો, વાત એવી છે કે મારા અંતેવાસી શિષ્ય-ધર્મરુચિ અનગાર સ્વભાવથી જ ભદ્ર પરિણામી હતા. યાવત્ શબ્દથી અહીં આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે-" पगइ उवसंते " (पगइपयणुकोहमाणमायालोहे मिउमद्दव संपण्णे आलिणे भद्दए) તેઓ અવિશ્રાંત-અંતર રહિત-(નિરંતર) માસ ખમણ કરતા રહેતા હતા. આજે તેમનો પારણાનો દિવસ હતો, તેઓ આહાર માટે ભ્રમણ કરતાં નાગશ્રી બ્રાહ્મણીના ઘેર ગયા હતા. બ્રાહ્મણીએ શારદિક તિક્ત

रनगारो यथापर्याप्तमितिकृत्वा=क्षुधानिवृत्तये पूर्णमिति मत्वा यावत्-कालम् 'अवणकंखेमाणे' अनवकाङ्क्षमाणः विहरति, स खलु धर्मरुचिरनगारो बहूनि वर्षाणि श्रमणपर्यायं पालयित्वा, आलोचित प्रतिक्रान्तः समाधिप्राप्तः कालमासे कालं कृत्वा ऊर्ध्वं 'सोहम्म जाव सव्वट्ठसिद्धे' सौधर्मादयो द्वादशदेवलोकाः, तत ऊर्ध्वं नवग्रैवेयकानि तदुपरि यावत् सर्वार्थसिद्धे, महाविमाने देवत्वेनोपपन्न=देवभवं प्राप्तवान्। तत्र=तस्मिन् सर्वार्थसिद्धविमाने, खलु 'अजहण्णमणुक्कोसेणं' अजघन्यानुत्कृष्टेन=जघन्योत्कृष्टवर्जितेन तत्र हि सर्वेषां देवानां स्थितिः समानैव भवति न तु न्यूनाऽधिककालतया विषमेतिभावः। त्रयस्त्रिंशत् सागरोपमानि स्थितिः प्रज्ञप्ता, तत्र धर्मरुचेरपि देवस्य त्रयस्त्रिंशत् सागरोपमानि स्थितिः प्रज्ञप्ता, स खलु धर्मरुचिर्देवस्तस्माद् देवलोकाद्=सर्वार्थसिद्धविमानाद् यावद् च्युतः सन् यावद् महाविदेहे वर्षे सिज्झिहिइ' सेत्स्यति, सिद्धिं प्राप्स्यति। तत्=तस्माद् धिगस्तु खलु हे

पहुंचे। यावत् उसने शारदिक तिक्त कडवे तुंबे की शाक उनके पात्र में वोहराया। धर्मरुचि अनगार ने उसको क्षुधानिवृत्ति के लिये पर्याप्त मान कर लिया। उन धर्मरुचि अनगारने अनेक वर्षों तक श्रमण्य पर्याय का पालन किया और पालन करके आलोचित प्रतिक्रान्त होकर वे समाधि में लीन हो गये। काल अवसर काल करके अब वे सौधर्म आदि १२ देवलोकों से ऊपर नवग्रैवेयकों से भी आगे जो सर्वार्थसिद्धि नाम का विमान है कि जिसमें ३३ सागर की स्थिति है-और यह स्थिति जहां सब देवों की समान हैं उसमें ३३ सागर की स्थितिवाले देव हुए हैं। "अजहण्णमणुक्कोसेण" जघन्य और उत्कृष्ट तेत्रीस सागरोवम की स्थिति है। (से णं धम्मरुई देवे ताओ देवलोगाओ जाव महाविदेहे-वासे सिज्झिहिइ, तं धिरत्थु

કડવી તુંબડીનું શાક તેમના પાત્રમા વહોરાવ્યું. ધર્મરુચિ અનગારે તેને ક્ષુધા નિવૃત્તિ માટે પર્યાપ્ત જાણીને તેને સ્વીકારી લીધું. તે ધર્મરુચિ અનગારે ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનુ પાલન કર્યું છે અને પાલન કરીને આલોચિત પ્રતિક્રાંત થઇને તેઓ સમાધિમાં લીન થઇ ગયા છે. કાળ સમયે કાળ કરીને હવે તેઓ સૌધર્મ વગેરે બાર દેવલોકોથી ઉપર નવ ગ્રૈવેયકોથી પણ આગળ જે સર્વાર્થસિદ્ધિ નામે વિમાન છે કે જેમા ૩૩ સાગરની સ્થિતિ છે અને આ સ્થિતિ જ્યાં બધા દેવોની સરખી છે, તેઓ તેમાં ૩૩ સાગરની સ્થિતિવાળા દેવ થયા છે 'अजहण्णमणुक्कोसेणं" જઘન્ય અને ઉત્કૃષ્ટ ૩૩ સાગરોપમની સ્થિતિ છે.

(सेणं धम्मरुई देवे ताओ देवलोगाओ जाव महाविदेहे-वासे सिज्झिहिइ,

आर्याः ! नागश्रियं ब्राह्मणीमधन्यामपुण्यां यावद् दुर्भग निम्बगुलिकाम्, यथा-खलु नागश्रिया ब्राह्मण्या तथारूपः प्रकृतिभद्रत्वादिगुणयुक्तः साधुः धर्मरुचिरनगारो मासक्षपणपारणके शारदिकेन तिक्तालाबुकेन यावत् स्नेहावगाढेनाऽकाल एव जीविताद् व्यपरोपितः ॥सू०४॥

मूलम्-तएणं ते समणा निग्गंथा धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म चंपाए सिंघाडगतिग जाव बहुजणस्स एवमाइक्खंति-धिरत्थु णं देवाणुप्पिया ! नागसिरीए माहणीए जाव णिंबोलियाए जाए णं तहारूवे साहू साहूरूवे सालइएणं जीवियाओ ववरोवेइ, तए णं तेसिं समणाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ

णं अज्जो ! नागसिरीए माहणीए अधन्नाए, अपुन्नाए, जाव णिंबोलियाए जाए णं तहारूवे साहू धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि सालइए णं जाव गाढेणं अकाले. चेव जीवियाओ ववरोविए) वे धर्मरुचि देव इस देवलोक से चवकर यावत् महाविदेह क्षेत्र से सिद्धिको प्राप्त करेंगे आर्यो ! अधन्य, अपुण्य यावत् दुर्भग निम्बगुलिका जैसी अनादरणीय उस नागश्री ब्राह्मणी को धिक्कार हो-कि जिसने तथारूप, प्रकृति भद्रत्वादि गुणों से संपन्न साधु धर्मरुचि अनगार को मासखमण के पारणा के दिन शारदिक तिक्त कडवी तुंबी का शाक यावत् स्नेहावगाढ बनाकर दिया-कि जिससे वे अकाल में मरण को प्राप्त हुए ॥ सू० ४ ॥

तं धिरत्थुणं अज्जो ! नागसिरीए माहणीए अधन्नाए, अपुन्नाए, जाव णिंबोलियाए जाए ण तहारूवे साहू धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि सालइएणं जाव गाढेणं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए)

તે ધર્મરુચિ દેવ તે દેવલોકથી ચવીને યાવત્ મહાવિદેહ ક્ષેત્રથી સિદ્ધિને મેળવશે હે આર્યો ! અધન્ય, અપુણ્ય, યાવત્ દુર્ભગ નિંબગુલિકા જેવી અનાદરણીય તે નાગશ્રી બ્રાહ્મણીને ધિક્કાર છે કે જેણે તથારૂપ, પ્રકૃતિ ભદ્રત્વ વગેરે ગુણોવાળા સાધુ ધર્મરુચિ અનગારને માસ ખમણના પારણાંના દિવસે શારદિક તિકત કડવી તૂંબડીનું શાક-કે જે સરસ વધારેલું, જેની ઉપર ઘી તરતું હતું-વહોરાવ્યું, જેને લીધે અકાળે જ તેઓનું મરણ થયું. ॥ સૂત્ર "૪" ॥

धिरत्थु णं नागसिरीए माहणीए जाव जीवियाओ ववरोविए, तएणं ते माहणा चंपाए नयरीए बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणा जेणेव नागसिरी माहणी तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता णागसिरीं माहणीं एवं वयासी—हं भो ! नागसिरी ! अपत्थिय पत्थिय दुरंत पंत-लक्खणे हीणपुण्णचाउद्दसे धिरत्थु णं तव अधन्नाए अपुन्नाए जाव णिंबोलियाए जाव णं तुमं तहारूवे साहू साहूरूवे मास-खमणपारणंसि सालइएणं जाव ववरोविए, उच्चावयाहिं अक्कोसणाहिं अक्कोसेंति उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसेंति उच्चावयाहिं णिब्भत्थणाहिं णिब्भत्थंति उच्चावयाहिं णिच्छोड-णाहिं निच्छोडेंति तज्जेंति तालेंति तज्जेत्ता तालेत्ता सयाओ गिहाओ निच्छुभंति, तएणं सा नागसिरी सयाओ गिहाओ निच्छूढा समाणी चंपाए नगरीए सिंघाडगतियचउक्कचच्चर-चउम्मुह० बहुजणेणं हीलिज्जमाणी खिंसिज्जमाणी निंदिज्जमाणी गरहिज्जमाणी तज्जिज्जमाणी पव्वहिज्जमाणी धिक्कारिज्जमाणी थुक्कारिज्जमाणी कत्थइ ठाणं वा निलयं वा अलभमाणी२ दंडि-खंडनिवसणा खंडमल्लयखंडघडगहत्थगया फुट्टहडाहडसीसा मच्छियाचडगरेणं अन्निज्जमाणमग्गा गेहं गेहेणं देहं बलियाए वित्तिं कप्पेमाणी विहरइ, तएणं तीसे नागसिरीए माहणीए तब्भवंसि चेव सोलस रोयायंका पाउब्भूया, तं जहा—सासे कासे जोणिसूले जाव कोढे, तएणं सा नागसिरी माहणी

सोलसहिं रोयायंकेहिं अभिभूया समाणी अट्टदुहट्टवसट्टा कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीससागरोवमट्ठिइएसु नेरएसु नेरइयत्ताए उववन्ना ॥ सू० ५ ॥

टीका—'तएणं ते' इत्यादि । ततः खलु ते श्रमणाः निर्ग्रन्था धर्मघोषाणां स्थविराणामन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य चंम्पायां श्रृङ्गाटक–यावन्महापथेषु बहुजनस्य एवमाख्यान्ति धिगस्तु खलु हे देवानुप्रियाः ! नागश्रियं ब्राह्मणीं यावद् दुर्भगनिम्बगुलिकाम् , यया खलु तथारूपः साधुः साधुरूपो धर्मरुचिरनगारः शारदिकेन यावत्तिक्तालाबुकेन जीविताद् व्यपरोपितः। ततः खलु तेषां श्रमणानामन्तिके

'तएणं ते समणा निग्गंथा' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (ते समणा निग्गंथा धम्मघोसा थेराणं अंतिएएयमट्ठं सोच्चा निसम्म चंपाए सिंघाडगतिग जाव बहुजणस्स एवमाइक्खंति–धिरत्थुणं देवाणुप्पिया! नागसिरीए जाव णिंबोलियाए जाएणं तहारूवे साहू साहूरूवे सालइएणं जीवियाओ ववरोवेइ) उन श्रमण निर्ग्रन्थोंने धर्मघोष स्थविर के मुख से इस समाचार को सुनकर और उसका हृदय में विचार कर चंपानगरी में श्रृंगाटक यावत् महापथों में बहुजनों से ऐसा कहा हे देवानुप्रियों ! ब्राह्मणी नागश्री को धिक्कार है यावत् निम्ब की निबोली जैसी अनादरणीय है कि जिसने तथा रूप साधु–साधुरूप धर्मरुचि अनगार को शारदिक यावत् कडवे तुम्बे का शाक देकर जीवन से रहित कर दिया है। (तएणं तेसिं समणाणं अं-

'तएणं ते समणा निग्गंथा' इत्यादि—

टीकार्थ-(तएणं) त्यारणाद

(ते समणा निग्गंथा धम्मघोसा थेराणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म चंपाए सिंघाडगतिग जाव बहुजणस्स एव माइक्खंति–धिरत्थुणं देवाणुप्पिया! नागसिरीए माहणीए जाव णिंबोलियाए जाए णं तहारूवे साहू साहूरूवे सालइएणं जीवियाओ ववरोवेइ)

ते श्रमणु निर्ग्रंथोએ ધર્મઘોષ સ્થવિરના મુખથી આ વાત સાંભળીને અને તેને હૃદયમાં ધારણ કરીને ચંપાનગરીમાં શ્રૃંગાટક મહાપથો વગેરેમાં ઘણા માણસોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! બ્રાહ્મણી નાગશ્રીને ધિક્કાર છે અને તે લીમડાની લીંબોળીની જેમ અનાદરણીય છે કેમકે તેણે તથારૂપ સાધુ સાધુરૂપ ધર્મરુચિ અનગારને શારદિક કડવી તૂંબડીનું શાક આપીને મારી નાખ્યા છે.

एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य बहुजनोऽन्योन्यस्य=परस्परस्य एवमाख्याति-एवं भाषते एवं प्रज्ञापयति, एवं प्ररूपयति धिगस्तु खलु नागश्रिया ब्राह्मण्याः, यया धर्मरुचिरनगारः शारदिकेन यावद् जीविताद् व्यपरोपितः। ततः खलु ते ब्राह्मणा चंपायां नगर्यां बहुजनस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य, आशुरुप्ताः=शीघ्रं क्रोधाविष्टाः यावत् मिसमिसन्तः=क्रोधानलेन प्रज्वलन्तः, यत्रैव नागश्रीर्ब्राह्मणी तत्रैवोपागच्छन्ति,

---

तिए एयमट्ठं सोच्चा बहुजणे अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ, एवं भासइ धिरत्थुणं नागसिरीए माहणीए जाव जीवियाओ ववरोविए, तएणं ते माहण चंपाए नयरीए बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरत्ता जाव मिसिमिसेमाणा जेणेव नागसिरी माहणी तेणेव उवागच्छंति) उन श्रमणजनों के मुख से इस समाचार को सुनकर और उसे हृदय में धारण करके अनेक मनुष्य आपस में इस प्रकार कहने लगे बोलने लगे प्रज्ञापना करने लगे प्ररूपणा करने लगे कि ब्राह्मणी नागश्री को धिक्कार है जिसने धर्मरुचि अनगार को शारदिक-तिक्त कडवे तुंबे के शाक से जीवन रहित करदिया है। इस प्रकार उन ब्राह्मणों ने तथा सोम, सोमदत्त, सोमभूति आदि ने जब चंपानगरी में अनेक मनुष्यों के मुख से इस बात को सुना-तो वे सुनकर और उसे अपने २ हृदय में धारण कर इकदम क्रोध से तम तमा उठे और यावत् क्रोधानल से जलते हुए जहां नागश्री ब्राह्मणी थी वहां आये-

---

(तएणं तेसिं समणाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा बहुजणे अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ, एवं भासइ धिरत्थुणं नागसिरीए माहणीए जाव जीवियाओ ववरोविए, तएणं ते माहणा चंपाए नयरीए बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरत्ता जाव मिसिमिसेमाणा जेणेव नागसिरी माहणी तेणेव उवागच्छंति) ते श्रमण लोकोना मुखथी आ समाचार सांभळीने अने तेने हृदयमां धारण करीने घणा माणुसो एकबीजानी साथे आ रीते वातचीत करवा लाग्या, प्रज्ञापना करवा लाग्या, प्ररूपणा करवा लाग्या के ब्राह्मणी नागश्रीने धिक्कार छे. जेणे धर्मरुचि अनगारने शारदिक-तिक्त कडवी तूंबडीना शाकथी मारी नाख्या. आ रीते ते ब्राह्मणोए एटले के सोम, सोमदत्त अने सोमभूतिए ज्यारे चंपा नगरीना अनेक माणुसोना मुखथी आ वात सांभळी त्यारे तेओ सांभळीने अने तेने हृदयमां धारण करीने एकदम क्रोधाविष्ट थई गया अने क्रोधरूपी अग्निमां बळगता ज्यां नागश्री ब्राह्मणी हती त्यां आव्या.

उपागत्य नागश्रियं ब्राह्मणीमेवमवादिषुः–उक्तवन्तः, हं भो ! नागश्रीः ! अप्रार्थित प्रार्थिके ! मरणाभिलाषिणि ! दुरन्तप्रान्तलक्षणे ! हीनपुण्यचातुर्दशिके ! धिगस्तु खलु तव अधन्यायाः अपुण्यायाः यावद्–दुर्भगनिम्बगुलिकायाः, अत्र द्वितीयार्थे षष्ठी आर्षत्वात्, यया खलु त्वया तथारूपः साधुः साधुरूपो धर्मरुचिरनगारो मासक्षपणपारणके शारदिकेन तिक्तालाबुकेन यावद् व्यपरोपितः, 'उच्चावयाहिं' उच्चावचाभिः=उच्चनीचाभिः 'अक्कोसणाहिं' आक्रोशनाभिः=निन्दावचैः नीचाऽसि त्वमित्यादिभिर्वचनैः 'अक्कोसंति' आक्रोशन्ति–फटकारयन्ति उच्चावचाभिः उद्धंसनाभिः दुष्कुलोत्पन्नाऽसित्यादिवचनैः, 'उद्धंसेंति' उद्धंसयन्ति=कुलादि-

(उवागच्छित्ता णागसिरीं माहणीं एवं वयासी) हं भो ! नागसिरी ! अपत्थियपत्थिय दुरंतपंतलक्खणे, हीण पुण्णचाउद्दसे धिरत्थुणं तव अधन्नाए अपुन्नाए जाव णिंबोलियाए जाए णं तुमे तहारूवे साहू साहूरूवे मासखमणपारणंसि सालइएणं जाव ववरोविए उच्चावएयाहिं अक्कोसणाहिं अक्कोसंति ......उद्धसेंति) वहां आकर उन्होंने नागश्री ब्राह्मणीसे कहा अरीओ नागश्री ! अरी अप्रार्थित प्रार्थके। हे दुरन्तप्रान्त लक्षणे। ओ हीन पूण्य चातुर्दशिके ! तुझ अपुण्य अधन्या को धिक्कार हो ! तूं दुर्भग निम्बगुलिका जैसी अनादरणीय है जो तूने मासखमणके पारणा के दिन घरपर आहार लेने के निमित्त आये हुए तथा रूप साधुरूप धर्मरुचि अनगार को शारदिक तिक्त कडवे तुंबे का शाक देकर जीवन से रहित कर दिया है। तूं बडी नीच है इत्यादि रूप ऊँच, नीच आक्रोश निन्दा–वचनों से उन्हों ने उसे फटकारा तूं नीच खानदान की

(उवागच्छित्ता णागसिरीं माहणीं एवं वयासी–हं भो ! नागसिरी ! अपत्थिय पत्थिय दुरंतपंतलक्खणे, हीनपुण्णचाउद्दसे धिरत्थु णं तव अधन्नाए अपुन्नाए जाव णिंबोलियाए जाए णं तुमे तहारूवे साहू साहूरूवे मासखमणपारणंसि सालइएणं जाव ववरोविए उच्चावएयाहिं अक्कोसणाहिं अक्कोसंति...उद्धंसेंति) त्यां आवीने तेमणे नागश्री ब्राह्मणीने कह्युं के–के मुई ओ नागश्री ! अप्रार्थित प्रार्थके ! हे दुरंत प्रांत लक्षणे ! ओ हीनपुण्य चातुर्दशिके ! तारा जेवी पापणी अधन्याने धिक्कार छे तुं दुर्भग निंबगुलिका (लिंबोळी जेवी अनादरणीय छे. केमके तेणे मास–खमणना पारणांना दिवसे घेर आहार लेवा माटे आवेला तथारूप साधु साधुरूप धर्मरुचि अनगारने शारदिक तिक्त कडवी तूंबडीनुं शाक आपीने मारी नाख्या छे. तुं साव नीच छे, आम कहीने ऊंच–नीच आक्रोष–निंदा–ना वचनोथी तेओए तेने फीटकारी. तुं नीच

गौरवात्पातयन्ति, उच्चावचाभिर्निर्भत्सनाभिः=परुषवचनैः 'णिब्भत्थेंति' निर्भर्त्सयन्ति, उच्चावचाभिः 'णिच्छोडणाहिं' निश्छोटनाभिः='अस्मद् गृहाद्देहि-निस्सर इत्यादि वचनैः 'निच्छोडेंति' निश्छोटयन्ति = गृहादित्यागभयोत्पादनेन भीषयन्ति, 'तज्जेंति' तर्जयन्ति 'ज्ञास्यसि पापे!' इत्यादिवाक्यैरङ्गुली प्रदर्शनपूर्वकं ताडनभयं प्रदर्शयन्ति, 'तालेंति' ताडयन्ति चपेटादिभिः, तर्जयित्वा ताडयित्वा, स्वकाद् गृहाद् 'निच्छुभंति' निक्षिपन्ति = बहिर्निः-सारयन्ति। ततस्तदनन्तरं सा नागश्रीः स्वकाद् गृहाद् 'निच्छूढा समाणा' निक्षिप्तासती=निःसरितासती, चम्पाया नगर्याः शृङ्गाटक त्रिकचतुष्कचत्वरचतुर्मुखमहापथपथेषु यत्र यत्र

है इस तरह की ऊँची नीची वाणियों से उसे भला बुरा कहा कुलादि के गौरव से उसे पतित कहा। (उच्चावयाहिं णिब्भत्थणाहिं णिब्भत्थंति उच्चावयाहिं णिच्छोडणाहिं निच्छोडेंत्ति, तज्जेंति, तालेंति, तज्जेत्ता तालेत्ता सयाओ गिहाओ निच्छुभंति) ऊँचे नीचे कठोर वचनों से उसका तिरस्कार किया। भले बुरे वचनो से उसे डरवाया-हमारे घर से तू बाहिर निकल जा इत्यादि भयोत्पादक शब्दों से उसे भय दिखलाया। ओ पापिनी! तूजे मालूम पड जायगा, इत्यादि वाक्यों से अंगुली दिखा २ कर उसे मारने का भय दिखलाया और चपेटा-थप्पड आदि से उसे पीटा भी। और पीटपाट कर उसे उन्होंने फिर अपने घर से बाहिर निकाल दिया। (तएणं सा नागसिरी सयाओ गिहाओ निच्छूढा समाणी चंपाए नगरीए सिंघाडगतिगचउक्कचचरचउम्मुह०

ખાનદાનની છે, આ જાતનાં ઉંચા નીચા વચનોથી તેણે ખોટી ખરી સંભળાવી. કુળ વગેરેના ગૌરવથી તેણે પતિતા કહ્યું

(उच्चावयाहिं णिब्भत्थणाहिं णिब्भत्थंति, उच्चावयाहिं णिच्छोडणाहिं निच्छोडेंति, तज्जेंति, तालेंति तज्जेत्ता तालेत्ता सयाओ गिहाओ निच्छुभंति)

ઉંચા નીચા વચનોથી તેનો તિરસ્કાર કર્યો, ખોટાં ખરાં વચનોથી તેને બીવડાવી. 'અમારા ઘરથી તુ બહાર નીકળી જા' વગેરે ભયોત્પાદક વચનોથી તેણીને બીક બતાવી. 'એ પાપણી! તને મજા બતાવવી દઈશું?' વગેરે વચનોથી સામી આંગળી કરીને તેને મારી નાખવાની બીક બતાવવા લાગ્યા અને થપ્પડ લાફા વગેરેથી તેને માર પણ માર્યો, મારપીટ કરીને તેઓએ તેને પોતાના ઘેરથી બહાર કાઢી મૂકી.

(तएणं सा नागसिरी सयाओ गिहाओ निच्छूढा समाणी चंपाए नगरीए सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरचउम्मुह० बहुजणेणं हीलिज्जमाणी खिंसिज्जमाणी

गच्छति तत्र तत्र सर्वत्र बहुजनेन 'हीलिज्जमाणी' हील्यमाना-जात्याद्युद्घाटनेन, 'खिंसिज्जमाणी' खिंस्यमाना-परोक्षकुत्सनेन, 'निंदिज्जमाणी' निन्द्यमाना-तत्परोक्षम् 'गरहिज्जमाणी' गर्ह्यमाना-तत्समक्षमेव 'तज्जिज्जमाणी' तर्ज्यमाना-अङ्गुलीचालनेन भयमुत्पाद्यमाना 'पव्वहिज्जमाणी' प्रव्यथ्यमाना यष्ट्यादिताडनेन 'धिक्कारिज्जमाणी' धिक्क्रियमाणा 'थुक्कारिज्जमाणी' थुत्क्रियमाणा कुत्रापि

बहुजणेणं हीलिज्जमाणी खिंसिज्जमाणी निंदिज्जमाणी, गरहिज्जमाणी, तज्जिज्जमाणी, पव्वहिज्जमाणी, धिक्कारिज्जमाणी, थुक्कारिज्जमाणी, कत्थइ ठाणं वा निलयं वा अलभमाणी २ दंडि खंडा निवसणा खंड खंडमल्लय खंड खंड घडगहत्थगया फुट्टहडाहडसीसा मच्छियाचडगरेणं अण्णिज्जमाणमग्गा गेहं गेहेणं देहं बलियाए वित्तिं कप्पेमाणी विहरइ) अपने घर से बाहिर निकल कर वह नागश्री चंपानगरी के श्रृंगाटक, त्रिक, चतुष्क, चत्वर चतुर्मुख महापथ आदि मार्गों पर जहां २ गई, वहां २ सर्वत्र अनेक जनों ने उसकी "यह नीचजाति की है" इत्यादिरूप से हीलना की। सब के सब उसपर बहुत क्रोधित हुए सबने उसकी परोक्ष में निंदा की। सामने सबने उसे भला बुरा कहा। अंगुली संचालन पूर्वक उसे मारने पीटने का भय दिखलाया। किन्हीं २ ने उसे लकडी आदिसे मारा पीटा भी। अनेकोंने उसे धिक्कारा। कितनेक जनों ने उसे देखकर उसपर थूक भी दिया। इस तरह की परिस्थिति

निंदिज्जमाणी, गरहिज्जमाणी, तज्जिज्जमाणी पव्वहिज्जमाणी, धिक्कारिज्जमाणी, थुक्कारिज्जमाणी, कत्थइ ठाणं वा निलयं वा अलभमाणी २ दंडिखंडा निवसणा खंडमल्लय खंड खंड घडगहत्थगया फुट्टहडाहडसीसामच्छियाचडगरेणं अण्णिज्जमाणमग्गा गेहं गेहेणं देह बलियाए वित्तिं कप्पेमाणी विहरइ)

પોતાના ઘેરથી બહાર નીકળીને તે નાગશ્રી ચંપા નગરીના શ્રૃંગાટક, ત્રિક, ચતુષ્ક, ચત્વર, ચતુર્મુખ, મહાપથ વગેરે માર્ગો ઉપર જ્યાં ગઈ ત્યાં ત્યાં બધે ઘણા માણસોએ તેની "આ નીચ જાતની છે" વગેરે વચનોથી હીલના કરી. બધા માણસો તેની ઉપર ખૂબ જ ગુસ્સે થયા. તેની ગેર હાજરીમાં લોકોએ તેની ખૂબ નિંદા કરી, તેની સામે તેને બધાએ ખરી ખોટી સંભળાવી, આગળી ચીંધી ચીંધીને તેની સાથે મારપીટ કરવાની બીક બતાવવા લાગ્યા કોઈ કોઈએ તો તેને લાકડી વગેરેનો ફટકો પણ માર્યો, ઘણાઓએ તેને ફિટકારી, કેટલાક માણસોએ તેને જોઇને તેની ઉપર થૂંકી દીધું.

स्थानं वा निवासार्थं निलयं वा-अल्पकालविश्रामार्थस्थानम्, अलभमाना २=अप्राप्नुवती २, 'दंडीखंडनिवसगा' दण्डिखण्डनिवसना=दण्डि-कृतसन्धानं जीर्णवस्त्रं, तस्य खण्डं, तदेव निवसनं-परिधानं यस्याः सा तथा, 'खंडमल्लयखंडघडगहत्थगया' खण्डमल्लक-खण्डघटकहस्तगता=खण्डमल्लः=भिक्षार्थं शरावखण्डं खण्डघटकश्च पानार्थं घटखण्डं, तद् द्वयं हस्तगतं यस्याः सा तथा, 'फुट्टहडाहडसीसा' स्फुटितहडाहडशीर्षा-स्फुटितं स्फुटितकेशं 'हडाहडम्' अत्यर्थं शीर्षं शिरो यस्याः सा तथा, विकीर्णकेशवतीत्यर्थ 'मच्छियाचडगरेणं अन्निज्जमाणमग्गा' मक्षिकाचटकरेण अन्वीयमानमार्गा मक्षिकासमूहेन अनुगम्यमानमार्गा शरीरवस्त्रादीनां मलिनत्वात् मक्षिकास्तत्पृष्ठतो धावन्तीत्यर्थः 'गेहं गेहेणं देहं वलियाए' गृहं गृहेण देहबलिकया=प्रतिगृहं देहनिर्वाहहेतोः उदरपूर्त्यर्थमेवेत्यर्थः-वृत्तिं 'कप्पेमाणी' कल्प्यमाना=कुर्वाणा सती विहरति। ततस्तदनन्तरं खलु तस्या नागश्रिया ब्राह्मण्यास्तस्मिन् भवे एव षोडश रोगातङ्काः प्रादुर्भूताः, तद्यथा-(१) श्वासः, (२) कासः, (३) ज्वरः, 'जावकुट्ठे' यावत्-कुष्ठम्, (४) दाहः, (५) कुक्षिशूलम्, (६)

का सामना करती हुई वह कहीं पर भी बैठने के लिये स्थान को, और ठहरनेके लिये-विश्राम करनेके लिये-जगह भी को नही प्राप्त करती फटे हुए जीर्ण वस्त्र के टुकडे को पहिरे हुए भिक्षा के लिये मिट्टी के खप्पर को और पानी के लिये फूटे घडे के टुकडे को हाथ में लिये हुए इधर उधर एक घर से दूसरे घर पर उदर पूर्ति के लिये फिरने लगी। इसके शिर के बाल ईधर उधर बिखरे हुए रहते थे। शरीर और वस्त्रादिकों के मैले कुचैले होने के कारण मक्षिकाओं का समूह इसके पीछे पीछे २ भागता रहता था। (तएणं तीसे नागसिरीए माहणीए तब्भवंसि चेव सोलसरोयायंका पाउब्भूया- तं जहा सासे कासे जोणिसूले, जाव

આવી પરિસ્થિતિનો મુકાબલો કરતી કોઈ પણ સ્થાને બેસવાની કે રોકાવાની કે વિશ્રામ કરવાની જગ્યા તે મેળવી શકી નહિ, અને છેવટે ફાટેલા જૂના વસ્ત્રોના કકડાને વીંટાળીને ભિક્ષાના માટે માટીનું ખપ્પર અને પાણીના માટે ફૂટી માટલીના કકડાને હાથમાં લઈને પેટ ભરવા માટે આમતેમ એક ઘેરથી બીજે ઘેર ભમવા લાગી. તેના માથાના વાળો આમ તેમ અસ્ત વ્યસ્ત રહેતા હતા, શરીર અને વસ્ત્રો વગેરે મેલા હોવાને લીધે માખીઓના ટોળેટોળાં તેની પાછળ પાછળ ભમતાં રહેતાં હતાં.

(तएणं तीसे नागसिरीए माहणीए तब्भवंसि चेव सोलसरोयायंका पाउब्भूया-तं जहा सासे कासे जोणिसूले, जाव कोढे तएणं सा नागसिरी माहिणी,

भगन्दरः, (७) अर्शः, (८) योनिशूलम्, (९) दृष्टिशूलम्, (१०) मूर्धशूलम्, (११) अरुचिः, (१२) अक्षिवेदना, (१३) कर्णवेदना, (१४) कण्डूः, (१५) जलोदरम्, (१६) कुष्ठम्। ततस्तदनन्तरं सा नागश्री ब्राह्मणी षोडशभी रोगातङ्कैरभिभूता-सती आर्तदुःखार्तवशार्त्ता=शारीरिकमानसिकदुःखयुक्ता कालमासे कालं कृत्वा षष्ठयां पृथिव्याम् 'उक्कोसेणं' उत्कृष्टतः, द्वाविंशति सागरोपमस्थितिकेषु नर-केषु-नरकावासेषु नारकत्वेन उपपन्ना-उत्पन्ना ॥ सू०५ ॥

मूलम्-सा णं तओऽणंतरंसि उव्वट्टित्ता मच्छेसु उववन्ना, तत्थ णं सत्थवज्झा दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा अहे सत्तमीए पुढवीए उक्कोसाए तेत्तीसं सागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु उववन्ना, सा णं ततोऽणंतरं उवट्टित्ता दोच्चंपि

कोढे तएणं सा नागसिरी माहिणी, सोलसहिं रोयायंकेहिं अभिभूया समाणी अट्टदुहट्टवसट्टा कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसे णं बावीससागरोवमट्ठिइएसु नरएसु नेरइयत्ताए उववन्ना) उस नागश्री ब्राह्मणी को उसी भव में ये सोलह रोगातंक प्रकट हो गये-(१) श्वास (२) कास (३) ज्वर (४) दाह (५) कुक्षिशूल (६) भगन्दर (७) अर्श (८) योनिशूल (९) दृष्टिशूल (१०) मूर्धशूल (११) अरुचि (१२) अक्षि-वेदना (१३) कर्णवेदना (१४) कण्डू (१५) जलोदर (१६) कुष्ठ। इन १६ सोलहरोगातंकों से अत्यन्त दुःखित हुई-शारीरिक एवं मानसिक व्य-थाओं से व्यथित हुई-वह नागश्री काल अवसर कालकर छठी पृथिवी में २२ सागर की उत्कृष्ट स्थितिवाले नरकावासों नैरयिक की पर्यायसेमें उत्पन्न हुई ॥ सू० ५ ॥

सोलसहिं रोयायंकेहिं अभिभूया समाणी अट्ट दुहट्टवसट्टा कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइयत्ताए उववन्ना)

તે નાગશ્રી બ્રાહ્મણીને તેજ ભવમાં આ સોળ રોગાંતકો પ્રકટ થયા. (૧) શ્વાસ (૨) કાસ (૩) જ્વર (૪) દાહ (૫) કુક્ષિશૂલ (૬) ભગંદર (૭) અર્શ (૮) યોનિશૂલ (૯) દૃષ્ટિશૂલ (૧૦) મૂર્ધશૂલ (૧૧) અરૂચિ (૧૨) અક્ષિવેદના (૧૩) કર્ણવેદના (૧૪) કણ્ડૂ (૧૫) જલોદર (૧૬) કુષ્ઠ આ સોળ રોગાંતકોથી અતીવ દુઃખી થયેલી શારીરિક તેમજ માનસિક વ્યથાઓથી વ્યથિત થતી તે નાગશ્રી કાળ અવસરે કાળ કરીને છઠ્ઠી પૃથિવીમા બાવીસ સાગરની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિવાળા નરકાવાસોમાં નૈરયિકની પર્યાયથી જન્મ પામી. ॥ સૂ. ૫ ॥

मच्छेसु उववज्जइ, तत्थ वि य णं सत्थविज्झा दाहवक्कंतीए दोच्चंपि अहे सत्तमीए पुढवीए उक्कोसं तेत्तीससागरोवम-ट्ठिईएसु नेरइएसु उववज्जई, सा णं तओहिंतो जाव उव्व-ट्टित्ता तच्चंपि मच्छेसु उववन्ना तत्थ वि य णं सत्थवज्झा जाव कालं किच्चा दोच्चंपि छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं० तओऽणंतरं उव्वट्टित्ता मच्छेसु उरएसु एवं जहा गोसाले तहा नेयव्वं जाव रयणप्पभाओ सत्तसु उववन्ना तओ उव्व-ट्टित्ता जाइं इमाइं खहयर विहाणाइं जाव अदुत्तरं च णं खर बायर-पुढविकाइयत्ताते तेसु अणेगसतसहस्स खुत्तो ॥सू०६॥

टीका—'सा णं' इत्यादि। सा=नागश्री ब्राह्मणी खलु ततः=षष्ठ्या पृथिव्याः अनन्तरम्=आयुर्भवस्थितिक्षये सति 'उव्वट्टित्ता' उद्वर्त्य—निस्सृत्य मत्स्येषूत्पन्ना, तत्र खलु मत्स्यभवे सा 'सत्थवज्झा' शस्त्रविद्धा। 'दाहवक्कंतीए' दाहव्युत्क्रान्त्या—दाहोत्पत्त्या, कालमासे कालंकृत्वाऽधः सप्तम्यां पृथिव्यामुत्कृष्टत्रयस्त्रिंशत्सागरोपमस्थितिकेषु 'नेरइएसु' नैरयिकेषु उत्पन्ना। सा खलु ततः=सप्तम्याः पृथिव्याः अनन्तरमुद्वर्त्य द्वितीयवारमपि मत्स्येषूत्पद्यते। तत्रापि च खलु शस्त्र

'सा णं तओ' इत्यादि।

टीकार्थ-(सा) वह नागश्री तओऽणतरंसि) उस छट्ठी नरककी भव-स्थिति समाप्त होने पर (उवट्टित्ता) वहां से निकली—और निकलकर (मच्छेसु उववन्ना तत्थणं सत्थवज्झा दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा अहे सत्तमीए पुढवीए उक्कोसाए तेत्तीसं सागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु उववन्ना, सा णं ततोऽणंतरं उवट्टित्ता दोच्चंपि मच्छेसु उवव-

'सा णं तओ' इत्यादि—

टीकार्थ-(सा) ते नागश्री (त ओ ऽ णंतरंसि) ते छठी नरकनी भवस्थिति पूरी थया बाद (उवट्टित्ता) त्यांथी नीकळी अने नीकळीने

(मच्छेसु उववन्ना तत्थ णं सत्थवज्झा दाह वक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा अहे सत्तमीए पुढवीए उक्कोसाए तेत्तीसं सागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु उववन्ना सा णं उववज्जइ)

विद्धा दाहव्युत्क्रान्त्या द्वितीयवारमपि अधः सप्तम्यां पृथिव्यामुत्कृष्टतस्त्रयस्त्रिंशत्सा- गरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूपपद्यते, सा खलु 'तओहिंतो' तस्याः=सप्तम्याः पृथिव्याः, यावद् उद्वर्त्य 'तच्चंपि' तृतीयवारमपि मत्स्येषु उत्पन्ना। तत्रापि च खलु शस्त्रविद्धा 'जाव कालं किच्चा' यावत् दाहव्युत्क्रान्त्या कालमासे कालं कृत्वा द्वितीयवारमपि षष्ठयां पृथिव्यामुत्कृष्टतो द्वाविंशतिसागरोपमस्थितिकेषु नरकेषूत्पन्ना, सा खलु ततः=षष्ठयाः पृथिव्या अनन्तरं 'उवट्टित्ता' उद्वर्त्य= निस्सृत्य उरःपरिसर्पेषूत्पन्नाः, तत्र शस्त्रवध्या दाहव्युत्क्रान्त्यामुत्कृष्टतः सप्तदश- सागरोपमस्थितिकेषूत्पन्ना। एवं यथा गोशालकस्तथा ज्ञातव्यम्=गोशालकवदस्या-

---

ज्जई) तिर्यञ्चगति में मच्छ की पर्याय से उत्पन्न हो गई। वहां वह मत्स्य के भव में शस्त्र से विद्ध होकर दाह की उत्पत्ति से काल अवसर काल कर मरी सो नीचे सप्तम नरक में ३३ तेतीस सागर की उत्कृष्ट स्थितिवाले नरकावास में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई। वहां से निकलकर फिर वह मत्स्य की पर्याय से उत्पन्न हुई। (तत्थ वि य णं सत्थविज्झादाहवक्कंतीए दोच्चंपि अहे सत्तमीए पु०) वहां वह शस्त्र से पुनः विद्ध होकर दाहकी व्युत्क्रान्ति से मरी और मरकर द्वितीयवार भी सप्तम नरक में (उक्कोसं तेतीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइए उवव- ज्जइ) उत्कृष्ट-तेतीस सागर की स्थिति लेकर नैरयिक की पर्याय में उत्पन्न हुई। (सा णं तओ हिं तो जाव उववट्टित्ता तच्चंपि मच्छेसु उव- वन्ना, तत्थ वि य णं सत्थवज्झा जाव कालं किच्चा दोच्चंपि छट्टीए पुढ- वीए उक्कोसे णं तओऽणंतरं उवट्टित्ता मच्छेसु उरएसु एवं जहा गोसाले

તિર્યંચ ગતિમાં મચ્છથી પર્યાયની જન્મ પામી. ત્યાં તે મત્સ્યના ભવમાં શસ્ત્ર વડે વીંધાઈને દાહથી પીડાઈને કાળ અવસરે કાળ કરીને મરણ પામી અને નીચે સાતમા નરકમાં ૩૩ સાગરની ઉત્કૃષ્ઠ સ્થિતિવાળા નરકાવાસમાં નૈરયિકની પર્યાયથી જન્મ પામી. ત્યાંથી નીકળીને ફરી તે મત્સ્યના પર્યાયથી જન્મ પામી. (तत्थ वि य णं सत्थविज्झा दाहवक्कतीए दोच्चंपि अहे सत्तमीए पु०) ત્યાં તે ફરી શસ્ત્ર વડે વિદ્ધ થઈને દાહથી પીડાઈને મરી અને મરીને બીજી વખત પણ સાતમાં નરકમાં (उक्कोसं तेतीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइए उव- वज्जइ) ઉત્કૃષ્ઠ ૩૩ સાગરની સ્થિતિ લઈને નૈરયિકની પર્યાયમાં જન્મ પામી. (सा णं तओहिं तो जाव उव्वट्टित्ता तच्चंपि मच्छेसु उववन्ना, तत्थ वि य णं सत्थवज्झा जाव कालं किच्चा दोच्चंपि छट्टीए पुढवीए उक्कोसेणं तओऽणंतरं

वर्णनं बोध्यमित्यर्थः, 'यावरयणप्पभाए सत्तसु उववन्ना' यावद् रत्नप्रभायां सप्त-सूत्पन्ना=अयं भावः-उरः परिसर्पभवतो निः सृत्य पञ्चम्यां धूमप्रभायां पृथिव्या-मुत्कृष्टतः सप्तदशसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूत्पन्ना, ततो निः सृत्य द्वितीय-वारमुरःपरिसर्पेषूत्पद्यते, तत्रापि पूर्ववत् कालं कृत्वा द्वितीयवारमपि पञ्चम्यां पृथि-

तहा नेयव्वं जाव रयणप्पभाओ सत्तसु उववन्ना, तओ उव्वट्टित्ता जाइं ईमाइं खहायर विहाणाइं जाव अदुत्तरं च णं खरबायर पुढविकाइयत्ता ते तेसु अणेगसतसहस्स खुत्तो) वहां से भव स्थिति समाप्त होते ही वह निकली-निकल कर तीसरी बार भी मत्स्य की पर्याय में उत्पन्न हुई। वहां शस्त्र विद्ध होकर दाह की व्युत्क्रान्ति से मरी सो मर कर दुबारा भी छठी ही पृथिवी में २२ बावीस सागर की उत्कृष्ट स्थिति ले कर उत्पन्न हुई। वहां की भवस्थिति समाप्त कर जब वह वहां से निकली तो उरः परिसर्प की पर्याय में उत्पन्न हुई। वहां पर भी वह शस्त्र विद्ध होकर दाह की व्युत्क्रान्ति से-उत्पत्ति से काल अवसर काल कर धूमप्रभा नाम की पंचम पृथिवी में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई। वहां सत्तरह सागर की उत्कृष्ट-स्थिति इसकी हुई। गोशालक की तरह इसका वर्णन जानना चाहिये। तात्पर्य इसका इस प्रकार है-१७ सागर की उत्कृष्टस्थिति वाले पंचम नरक से निकल द्वितीय बार भी वह उरः परिसर्प की पर्याय से उत्पन्न हुई। वहां से पूर्व की तरह

उव्वट्टित्ता मच्छेसु उरएसु एवं जहा गोसाले तहा नेयव्वं जाव रयणप्पभाओ सत्तसु उववन्ना, तओ उव्वट्टित्ता जाइं इमाइं खहयरविहाणाइं जाव अदुत्तरं, च णं खरबायरपुढविकाइयत्ता ते तेसु अणेगसतसहस्सखुत्तो) ત્યાંની ભવસ્થિતિ પૂરી થતાં જ તે ત્યાંથી નીકળી અને નીકળીને ત્રીજી વાર પણ માછલીના પર્યાયમાં જન્મ પામી. ત્યાં શસ્ત્રથી વીંધાઈને તથા દાહથી પીડાઈને મરણ પામી અને તે વખતે પણ છઠી પૃથિવીમાં ૨૨ સાગરની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ લઈને ઉત્પન્ન થઈ. ત્યાંની ભવસ્થિતિ પૂરી કરીને જ્યારે તે ત્યાંથી નીકળી ત્યારે તે ઉરઃ પરિસર્પના પર્યાયમાં જન્મ પામી. ત્યાં પણ તે શસ્ત્રથી વીંધાઈને અને દાહથી પીડાઈને કાળ અવસરે કાળ કરીને ધૂમપ્રભા નામની પંચમ પૃથિવીમાં નૈરયિકના પર્યાયથી જન્મ પામી ત્યાં ૧૭ સાગરની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ તેની થઈ. ગોશાલકની જેમ આનું વર્ણન જાણી લેવું જોઈએ. મતલબ આની આ છે કે ૧૭ સાગરની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિવાળા પંચમ નરકથી નીકળીને બીજી વખત પણ તે ઉરઃ પરિસર્પના પર્યાયથી જન્મ પામી. ત્યાંથી પણ પહેલાંની જેમજ કાળ અવસરે કાળ કરીને બીજીવાર પણ આ પંચમ પૃથિવીમાં

व्यामुत्कृष्टतः सप्तदशसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूत्पन्ना । ततो निःसृत्य तृतीयवारमपि उरः परिसर्पेषूत्पद्यते, अत्र पूर्ववत् कालं कृत्वा चतुर्थ्यां पङ्कप्रभायां पृथिव्यामुत्कृष्टतो – दशसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूत्पन्ना, ततो निःसृत्य सिंहेषूत्पद्यते,तत्रापि पूर्ववत् कालं कृत्वा द्वितीयवारमपि चतुर्थ्यां पृथिव्यामुत्कृष्टतो-दशसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूत्पन्ना। ततश्चतुर्थ्याः पृथिव्या निःसृत्य द्वितीयवारमपि सिंहेषूत्पद्यते, तत्र पूर्ववत् कालं कृत्वा तृतीयायां बालुकप्रभायां पृथिव्यामुत्कृष्टतः सप्तसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूत्पन्ना, ततो निःसृत्य पक्षिषूत्पद्यते, तत्र पूर्ववत् कालं कृत्वा द्वितीयवारमपि तृतीयायां पृथिव्यामुत्कृष्टतः

काल कर द्वितीयवार भी यह पंचम पृथिवी में १७ सागर की उत्कृष्ट स्थितिवाले नरकों में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई। वहां की स्थिति समाप्त कर जब यह वहां से निकली–तो तीसरी बार भी यह उरः परिसर्पों में उत्पन्न हुई । वहां से पूर्व की तरह काल कर चौथी पंक प्रभा पृथिवी में कि जहां १० सागर की नैरयिकों की उत्कृष्ट स्थिति है वहां नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई । वहां से निकल कर यह सिंह की पर्याय में उत्पन्न हुई । पहिले की तरह वहां से भी मर कर द्वितीय बार भी यह चतुर्थ नरक में दश सागर की स्थिति वाले नरक में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई । चतुर्थ नरक से निकल कर यह दुबारा भी सिंह की पर्याय से उत्पन्न हुई । वहां से अपने समय पर मर कर फिर यह बालुका प्रभा नाम की तीसरी पृथिवी में सात सागर की उत्कृष्ट स्थिति लेकर नैयरिक की पर्याय में उत्पन्न हुई। वहां से निकल कर फिर यह पक्षियों के कुल में उत्पन्न हुई । यहां से मर कर

---

१७ सागरनी उत्कृष्ट स्थितिवाળा नरકોમાં નૈરયિકના પર્યાયથી જન્મ પામી. ત્યાંની સ્થિતિ પૂરી કરીને જ્યારે તે ત્યાંથી નીકળી તો ત્રીજી વાર પણ તે ઉરઃ પરિસર્પમાં ઉત્પન્ન થઈ. ત્યાંથી પહેલાંની જેમ કાળ કરીને ચોથી પંક-પ્રભા પૃથિવીમાં–કે જ્યાં દશસાગરની નૈરયિકોની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ છે, ત્યાં નૈર-યિકની પર્યાયથી ઉત્પન્ન થઇ, ત્યાંથી નીકળીને તે સિંહના પર્યાયથી જન્મ પામી. પહેલાંની જેમ ત્યાંથી પણ મરણ પામીને બીજીવાર પણ ચતુર્થ નરકમાં દશ સાગરની સ્થિતિવાળા નરકમાં નૈરયિકના પર્યાયથી જન્મ પામી. ચતુર્થ નરકથી નીકળીને તે ફરી સિંહના પર્યાયથી ઉત્પન્ન થઇ. ત્યાંથી મરણ પામીને ફરી તે વાલુકાપ્રભા નામની ત્રીજી પૃથિવીમાં સાત સાગરની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ લઇને નૈર-યિકની પર્યાયમાં જન્મ પામી. ત્યાંથી નીકળીને તે ફરી તે પક્ષીઓના કુળમાં

सप्तसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूत्पन्ना। ततस्तृतीयायाः पृथिव्या निः सृत्य द्वितीयवारमपि पक्षिषूत्पद्यते, तत्रापि पूर्ववत् कालं कृत्वा द्वितीयायां पृथिव्यां शर्करप्रभायामुत्कृष्टतस्त्रिसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूत्पन्ना। ततो निस्सृत्य सरीसृपेषूत्पद्यते, तत्रापि शस्त्रवेध्या दाहव्युत्क्रान्त्या कालमासे कालं कृत्वा द्वितीयवारमपि द्वितीयायां पृथिव्यामुत्कृष्टतस्त्रिसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूत्पन्ना। ततो द्वितीयायाः पृथिव्याः निः सृत्य द्वितीयवारमपि सरीसृपेषूत्पद्यते, तत्रापि पूर्ववत् कालं कृत्वा प्रथमायां पृथिव्यां रत्नप्रभायामुत्कृष्टत एकसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूत्पन्ना, ततो निः सृत्य संज्ञिषु, ततो निः सृत्याऽसंज्ञिषूत्पद्यते, ततो निः

फिर यह पुनः तीसरे नरक में सात सागर की उत्कृष्ट स्थिति वाले नैरयिकों में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई। यहां से निकल कर पुनः यह पक्षियों के कुल में उत्पन्न हुई। यहां से मर कर फिर यह दूसरी पृथिवी जो शर्करा प्रभा है और जिसके नरकावासों में तीन सागर की उत्कृष्ट स्थिति है वहां नैरयिकों की पर्याय से उतनी स्थिति लेकर उत्पन्न हुई। वहां से निकल कर सरीसृपों में यह दाह की व्युत्क्रान्ति से मरी तो मर कर द्वितीय बार भी द्वितीय पृथिवी के नरकावासों में तीन सागर की उत्कृष्ट स्थिति लेकर उत्पन्न हुई। द्वितीय पृथिवी से निकल कर दुबारा यह सरीसृप में उत्पन्न हुई। वहां से अपने समय पर मर कर रत्नप्रभा नामकी प्रथम पृथिवी में उत्कृष्ट एक सागर की स्थिति वाले नरकावासों में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई। वहां की भवस्थिति समाप्त होने पर यह वहां से निकलकर संज्ञी जीवों में वहां

જન્મ પામી. ત્યાંથી મરણુ પામીને ફરી તે ત્રીજા નરકમાં સાત સાગરની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિવાળા નૈરયિકોમાં નૈરયિકના પર્યાયથી ઉત્પન્ન થઇ. ત્યાંથી નીકળીને ફરી તે પક્ષીઓના કુળમાં ઉત્પન્ન થઈ ત્યાંથી મરણુ પામીને ફરી તે બીજી પૃથિવી જે શર્કરાપ્રભા છે અને જેના નરકાવાસોમાં ત્રણ સાગરની ઉત્કૃષ્ઠ સ્થિતિ છે ત્યાં નૈરયિકોના પર્યાયથી તેટલી જ સ્થિતિ લઇને જન્મ પામી. ત્યાંથી નીકળીને સરીસૃપોમાં તે ઉત્પન્ન થઈ. ત્યાં શસ્ત્રથી વીંધાઇને તથા દાહથી પીડાઇને મરણુ પામી અને ત્યારપછી બીજીવાર પણુ બીજી પૃથિવીના નરકાવાસોમાં ત્રણુ સાગર જેટલી ઉત્કૃષ્ઠ સ્થિતિ લઇને ઉત્પન્ન થઈ. બીજી પૃથ્વિથી નીકળીને બીજીવાર તે સરીસૃપમાં ઉત્પન્ન થઈ ત્યાંથી યથા સમય મરણુ પામીને રત્નપ્રભા નામની પ્રથમ પૃથ્વિમાં ઉત્કૃષ્ઠ એક સાગરની સ્થિતિવાળા નરકાવાસોમાં નૈરયિકના પર્યાયતી ઉત્પન્ન થઈ ત્યાંની ભવસ્થિતિ પૂરી કરીને તે ત્યાંથી નીકળીને સંજ્ઞી-જીવોમાં, ત્યાંથી પણુ મરણુ પામીને અસંજ્ઞી-જીવોમાં

सृत्य द्वितीयवारमपि प्रथमायां पृथिव्यां पल्योपमस्याऽसंख्येयभागस्थितिकेषु नैरयिकेषु नैरयिकतयोत्पन्ना ' इति ।

' तओ उव्वट्टित्ता ' तत उद्वर्त्य=रत्नप्रभातो निः सृत्य यानि इमानि ' खह-यरविहाणाइं ' खचरविधानानि चर्मपक्ष्यादीनि भवन्ति तेषु, यावत् अथोत्तरं च खलु यानीमानि खरबादरपृथिवीकायिकविधानानि तेषु खरबादरपृथिवीकायिक-तयाऽनेकशतसहस्रकृत्वः समुत्पन्ना ॥ सू०६ ॥

मूलम्—सा णं तओऽणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबूद्दीवे दीवे भारहेवासे चंपाए नयरीए सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि दारियत्ताए पच्चायाया तएणं सा भद्दा सत्थवाही णवण्हं मासाणं० दारियं पयाया सुकुमालकोमलियं गयतालुयसमाणं, तीसे दारियाए निव्वत्तबारसाहियाए अम्मा-पियरो इमं एयारूवं गोन्नं गुणनिष्फन्नं नामधेज्जं करेंति-जम्हा णं अम्हं एसा दारिया सुकुमाला गयतालुयसमाणा तं होउणं अम्हं इमीसे दारियाए नामधेज्जे सुकुमालिया, तएणं तीसे दारियाए अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति सूमालियत्ति, तएणं सा सूमालिया दारिया पंचधाई परिग्गहिया तं जहा—खीरधाईए

से भी मर कर असंज्ञी जीवों में और फिर वहां से मर कर फिर दुबारा भी प्रथम पृथिवी में १ एक पल्य के असंख्यात वें भाग प्रमाण स्थितिवाले नरकावासों में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई । उस रत्न प्रभा पृथिवी से निकल कर फिर यह जितने ये पक्षिभेद हैं—चर्म पक्षी आदि हैं—उनमें और उनके बाद जो ये खर—बादर—पृथिवीकायादि भेद हैं उनमें खरबादर पृथिवीकायिकरूपसे लाखों वार उत्पन्न हुई ॥सू०६॥

અને ફરી ત્યાંથી મરણ પામીને બીજીવાર પણ પહેલી પૃથ્વિમાં ૧ એક પલ્યના અસંખ્યાતમા ભાગ પ્રમાણ સ્થિતિવાળા નરકાવાસોમાં નૈરયિકના પર્યાયથી જન્મ પામી. તે રત્નપ્રભા પૃથ્વિથી નીકળીને ફરી તે જેટલા પક્ષી ભેદો છે-ચર્મ પક્ષી વગેરે છે-તેઓમાં અને ત્યારપછી ખર-બાદર પૃથ્વીકાય વગેરે ભેદ, છે તેઓમાં ખર-બાદર પૃથ્વિકાયિકના રૂપમાં લાખો વાર જન્મ પામી. સૂ. ૬

जाव गिरिकंदरमालीणा इव चंपकलया निव्वाए निव्वाघायंसि जाव परिवड्डइ, तएणं सा सूमालिया दारिया उम्मुक्कबालभावा जाव रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठ सरीरा जाया यावि होत्था ॥ सू० ७ ॥

टीका—'सा णं तओ' इत्यादि । सा खलु नागश्रीः ततोऽनन्तरम् उद्वर्त्य जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे चम्पायां नगर्यां सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य भद्राया भार्यायाः कुक्षौ 'पच्चायाया' प्रत्यायाता गर्भेसमागता । ततः खलु सा भद्रा सार्थवाही नवसु मासेषु बहुप्रतिपूर्णेषु अर्द्धाष्टमेषु रात्रिन्दिवेषु व्यतिक्रान्तेषु सत्सु दारिकां

'सा णं तओऽणंतरं' इत्यादि ।

टीकार्थ-(सा णं तओऽणंतरं उवट्टित्ता) इसके बाद वह नागश्री खर पृथवी कायिका से निकल कर (इहेव जंबूदीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिसि दारियत्ताए पच्चायाया) इसी जंबूद्वीप नाम के द्वीप में स्थित भारतवर्ष नामके क्षेत्र में वर्तमान चंपानगरी में सागरदत्त सेठ की धर्मपत्नी-भद्रा की कुक्षि में पुत्रीरूप से अवतरी (तएणं सा भद्दा सत्थवाही नवण्हं मासाणं दारियं पयासा सुकुमालकोमलियं गयतालुयसमाणं तीसे दारियाए निव्वत्त बारिसाहियाए अम्मापियरो इमं एयारूवं गोन्नं गुणनिप्फन्नं नाम धेज्जं करेंति, जम्हाणं अम्हं एसा दारिया सुकुमाला गयतालुय समाणा तं होउणं अम्हं इमीसे दारियाए नामधेज्जे सुकुमालिया) भद्रा सार्थ

'सा णं तओऽणंतरं उवट्टित्ता' इत्यादि—

टीकार्थ-(सा णं तओऽणंतरं उवट्टित्ता) त्यारपछी ते नागश्री खर पृथ्विकायिकथी नीकळीने (इहेव जंबूदीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिसि दारियत्ताए पच्चायाया) એ જ જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમાં આવેલા ભારતવર્ષ નામના ક્ષેત્રમાં વિદ્યમાન ચંપાનગરીમાં સાગરદત્ત શેઠની ધર્મપત્ની ભદ્રાના ઉદરમાં પુત્રી રૂપમાં અવતરી. (तएणं सा भद्दा सत्थवाही नवण्हं मासाणं० दारियं पयाया सुकुमालकोमलियं गयतालुयसमाणं तीसे दारियाए निव्वत्तबारिसाहियाए अम्मापियरो इमं एयारूवं गोन्नं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति, जम्हाणं अम्हं एसा दारिया सुकुमाला गयतालुयसमाणा तं होउणं अम्हं इमीसे दारियाए नामधेज्जे सुकुमालिया)

'पयाया' प्रजाता=प्रजनितवती, किं भूतां दारिकामित्याह—'सुकुमालकोमलियं' सुकुमारकोमलाम्-अतिमृदुलाम् गजतालुकसमानां अङ्गस्यातिकोमलतया गजतालुतुल्यामित्यर्थः। तस्या दारिकाया 'निव्वत्तबारसाहियाए' निर्वृत्तद्वादशाहिकायाः सम्प्राप्तद्वादशदिवसायाः अम्बापितरौ=मातापितरौ इदमेतद्रूपं 'गोणं' गौणं =गुणेभ्य आगतं=प्राप्तं गुणनिष्पन्नं=गुणबोधकं नामधेयं कुरुतः कर्तुंविचारयतः तथाहि यस्मात् खलु अस्माकमेषा दारिका सुकुमारा गजतालुकसमाना जाता, तद्=तस्मात् भवतु खलु अस्माकमस्या दारिकाया नामधेयं 'सुकुमारिका' इति। ततः विचारकरणानन्तरं खलु तस्या दारिकाया अम्बपितरौ नामधेयं कुरुतः 'सुकुमारिका' इति। ततः खलु सा सुकुमारिका दारिका पञ्चधात्रीपरिगृहीता-पञ्चसंख्यकाभि धात्रीभिः=उपमातृभिः सुरक्षिता जाता, तद् यथा=तासां पञ्चानां धात्रीणां नामानि दर्शयति 'खीरधाईए जाव गिरकंदर' इति। क्षीरधात्र्या=स्तन्य-

वाहिके गर्भ के नौ मास तथा साढे सात दिन रात पूर्णरूप से व्यतीत हो चुके तब उसने पुत्रीको जन्म दिया। यह पुत्री अत्यन्त कोमल अंगवाली थी इसी लिये गजका तालु भाग जिस प्रकार मृदुल होता है यह वैसी ही कोमल थी। जब यह १२ बारह दिन की हो चुकी-तब इस के मातापिताने इसका 'यथा नाम तथा गुण' इस कहावतके अनुसार गुणों को लेकर नाम संस्कार करने का विचार किया। विचार करने के बाद उन्होंने इस ख्याल से कि यह हमारी पुत्री अत्यन्त सुकुमार और गज तालु का के जैसी मृदुल है अतः इसका नाम सुकुमारिका रहे (तएणं तीसे दारियाए अम्मा पियरो नामधेज्जं करेंति सूमालियत्ति) उस कन्या का नाम सुकुमारिका रख दिया (तएणं सा सुकुमारियदारिया

ભદ્રા સાર્થવાહીના ગર્ભના નવ માસ અને સાઢા સાત દિવસ રાત પૂરા થઇ ચૂકયા ત્યારે તેણે પુત્રીને જન્મ આપ્યો. આ પુત્રી અતીવ કોમળાંગી હતી હાથીના તાળવાનો ભાગ જેવો સુકોમળ હોય છે, તે તેવીજ કોમળ હતી. જ્યારે તે બાર દિવસની થઈ ગઈ ત્યારે તેના માતાપિતાએ જેવું નામ તેવા ગુણવાળી એ કહેવત મુજબ ગુણોના આધારે તેનો નામ સંસ્કાર કરવાનો વિચાર કર્યો. વિચાર કર્યા બાદ તેઓએ પોતાની પુત્રીની સુકોમળ દૃષ્ટિ સમક્ષ રાખીને એટલે કે તેઓએ આ પ્રમાણે વિચારીને કે આ મારી પુત્રી હાથીના તાળવા જેવી સુકોમળ છે માટે એનું નામ સુકુમારી રાખીએ.

(तएणं तीसे दारियाए अम्माबियरो नामधेज्जं करेंति सूमालियत्ति)

તે કન્યાનું નામ સુકુમારી રાખ્યું.

दायिन्या, यावत्करणादेवं बोध्यम्-' मंडणधाईए ' मज्जणधाईए कीलावणधाईए अंकधाईए' इति । मण्डनधात्र्या=वस्त्रमाल्याङ्कालरपरिधापिकया, मज्जनधात्र्या= स्नानकारिकया, क्रीडनधात्र्या=या क्रीडां=खेलनं कारयंति तया, तथा अङ्कधात्र्या =उत्सङ्गे स्थापिकया च पाल्यमाना, उपलाल्यमाना आलिङ्ग्यमाना स्तूयमाना प्रचुम्ब्यमाना, गिरिकन्दरमालीना चम्पकलतेव निर्वाते महावातरहिते निर्व्याघाते=

पंचधाई परिग्गहिया तं जहा-खीरधाईए जाव गिरिकंदरमालिणा इव चंपकलया निव्वाए निव्वाघायंसि जाव परिवड्ढइ-तएणं सा सूमालिया दारिया उम्मुक्कपालभावा जाव रूवेणं य जोव्वणेण य लावण्णेणय उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था) इसकी रक्षा के लिये माता पिताने५ धायमाताए-उपमाताएँ-रख दी-उनकी देखरेखमें यह सुरक्षित रहने लगी उनके नाम ये हैं-क्षीरधात्री दुग्ध पान करानेवाली-धाय, मंडनधात्री-वस्त्र माला अलंकार आदि पहिरानेवाली धाय, मज्जन धत्री-स्नान करोनेवाली धाय, क्रीडन धात्री-खेल कुंद करोनेवाली धाय, अंक धात्री-अपनी गोद में बैठानेवाली धाय, इस तरह इन ५ धाय माताओं द्वारा पालित होती हुई, उपलालित होती हुई, आलिङ्गय मान होती हुई, स्तूयमान होती हुई और प्रचुम्ब्यमान होती हुई यह सुकुमारिका कन्या, गिरिकन्दरा में उत्पन हुई चम्पकलता जैसे महावातसे वर्जित एवं उपद्रवों से रहित स्थान में आनन्द के साथ बढता है-उसी प्रकार बढने लगी। धीरे २ बाल्यावस्था से जब यह रहित हो गई-तब

(तएणं सा सुकुमारिया दारिया पंचधाई परिग्गहिया तं जहा-खीरधाईए जाव गिरिकंदरमालिणा इव चंपकलया निव्वाए निव्वाघायंसि जाव परिवड्ढइ-तएणं सा सूमालिया दारिया उम्मुक्कबालभावा जाव रूवेणं य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठ सरीरा जाया यावि होत्था)

તેના રક્ષણ માટે માતા-પિતાએ ૫ ધાય-માતાઓ ઉપમાતાઓની નીમણુંક કરી, તેમનાં નામો નીચે લખ્યા મુજબ છે—ક્ષીરધાત્રી-દૂધ પીવડાવનાર ધાય, મંડનધાત્રી-વસ્ત્ર, માળા, અલંકારો વગેરે પહેરાવનારી ધાય, મજ્જન-ધાત્રી-સ્નાન કરાવનારી ધાય-ક્રીડનધાત્રી રમાડનાર ધાય, અંકધાત્રી-પોતાના ખોળામાં બેસાડનારી ધાય, આ રીતે આ ૫ ધાય માતાઓ વડે પાલિત થતી-ઉપપાલિત થતી, આલિંગ્યમાન થતી, સ્તૂયમાન થતી અને પ્રચુંબ્યમાન થતી તે સુકુમારિકા કન્યા ગિરિકંદરાઓમાં ઉત્પન્ન થયેલી ચંપકલતાની જેમ મહાવાતથી રક્ષિત તેમજ બીજા ઉપદ્રવોથી રહિત સ્થાનમાં સુખેથી વધે છે. તેમજ મોટી

उपद्रववर्जिते स्थाने यावत् सुखं सुखेन परिवर्धते स्म । ततः खलु सा कुमारिका दारिका उन्मुक्तबालभावा=व्यतीतबाल्यावस्था, यौवनमनुप्राप्ता यावद् रूपेण=आकृत्या च, यौवनेन=तारुण्यवयसा च, लावण्येन=यौवनवयोजनितकान्तिविशेषेण च, उत्कृष्टा =विशेषशोभासम्पन्ना, उत्कृष्टशरीरा=सर्वाङ्गसुन्दरी जाता चाप्यभवत् ॥ सू०७ ॥

मूलम्—तत्थ णं चंपाए नयरीए जिणदत्ते नाम सत्थवाहे अड्ढे० तस्स णं जिणदत्तस्स भद्दा भारिया सूमाला इट्ठा जाव माणुस्सए कामभोए पच्चणुब्भवमाणा विहरइ, तस्स णं जिणदत्तस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सागरए नाम दारए सुकुमाले जाव सुरूवे, तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नया कयाई साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता सागरदत्तस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीईवयइ इमं च णं सूमालिया दारिया ण्हाया चेडियासंघपरिवुडा उप्पिं आगासतलगंसि कणगतेंदूसएणं कीलमाणी२ विहरइ, तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे सूमालियं दारियं पासइ पासित्ता सूमालियाए दारियाए रूवे य३ जायविम्हए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! कस्स दारिया किं वा णामधेज्जं

यौवनने इसके शरीर पर अपना अधिकार स्थापित करना प्रारंभ कर दिया—उस समय यह रूप आकृति—से यौवन—तारुण्य वय से, और यौवन वय जनित कान्ति विशेषसे विशिष्ट शोभा संपन्न हो गई और समस्त इस के शारीरिक अवयव सुंदर हो गये अर्थात् उस समय यह सर्वाङ्ग सुन्दरी बन गई । सू० ७ ।

થવા લાગી. ધીમે ધીમે જ્યારે તે બચપણુ વટાવીને યુવાવસ્થા સંપન્ન થવા માંડી ત્યારે તેના શરીર ઉપર યૌવનના ચિહ્નો દેખાવાલાગ્યાં. તે સમયે તે રૂપ—આકૃતિ-થી, યૌવન—તારૂણ્ય—થી અને યૌવનાવસ્થા જનિત સવિશેષ કાંતિથી વિશિષ્ટ શોભા સંપન્ન થઇ ગઇ અને તેના શરીરનાં બધાં અંગો સુંદર થઇ ગયાં, એટલે કે તે વખતે તે સર્વાંગ સુંદરી બની ગઇ. ॥ સૂત્ર ૭ ॥

से ?, तएणं ते कोडुंबियपुरिसा जिणदत्तेण सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ करयल जाव एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया सूमालिया नाम दारिया सुकुमालपाणिपाया जाव उक्किट्ठसरीरा तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे तेसिं कोडुंबियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाए जाव मित्तनाइ परिवुडे चंपाए० जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, तएणं सागरदत्ते सत्थवाहे जिणदत्तं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता आसणेणं उवणिमंतेइ उवणिमंतित्ता आसत्थं वीसत्थं सुहासणवरगयं एवं वयासी—भण देवाणुप्पिया ! किमागमणपओयणं ?, तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! तव धूयं भद्दाए अत्तियं सूमालियं सागरस्स भारियत्ताए वरेमि, जइ णं जाणाह देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो वा संजोगो दिज्जउणं सूमालिया सागरस्स, तएणं देवाणुप्पिया कि दलयामो सुंकं सुमालियाए?, तएणं से सागरदत्ते तं जिणदत्तं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया सूमालिया दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा जाव किमंग पुण पासणयाए तं नो खलु अहं इच्छामि सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओगं तं जइणं देवाणुप्पिया ! सागरदारए मम घरजामाउए

भवइ तो णं अहं सागरस्स दारगस्स सूमालियं दलयामि-तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागरदारगं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–एवं खलु पुत्ता ! सागरदत्ते सत्थवाहे मम एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया ! दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा तं चेव तं जइ णं सागरदारए मम घरजामाउए भवइ ता दलयामि, तएणं से सागरए दारए जिणदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए, तएणं जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नया कयाइं सोहणंसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहुत्तंसि विउले असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडावित्ता मित्तणाइ० आमंतेइ जाव सम्माणित्ता सागरं दारगं ण्हायं जाव सव्वालंकारविभूसियं करेइ, करित्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहावेइ, दुरूहावित्ता मित्तणाइ जाव संपरिवुडे सव्विड्ढीए साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता चंपानयरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहावेइ, पच्चोरुहावित्ता सागरगं दारगं सागरदत्तस्स सत्थ० उवणेइ, तएणं सागरदत्ते सत्थवाहे विपुलं असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडावेइ उवक्खडवित्ता जाव सम्माणेत्ता सागरगं दारगं सूमालियाए दारियाए सद्धिं पट्टयं दुरूहावेइ दुरूहावित्ता सेयापीएहिं कलसेहिं मज्जावेइ मज्जावित्ता अग्गिहोमं करावेइ करावित्ता सागरं दारयं सूमालियाए दारियाए पाणिं गिण्हावेइ ॥ सू० ८ ॥

टीका—'तत्थ णं चंपाए' इत्यादि। तत्र खलु चम्पायां नगर्यां जिनदत्तो नाम सार्थवाह आढ्यो यावद् अपरिभूत आसीत्, तस्य जिनदत्तस्य भद्रा भार्या आसीत्-सा किम्भूता-सुकुमारा इष्टा यावद् मानुष्यकान् 'पच्चणुब्भवमाणा' प्रत्यनुभवन्ती विहरति। तस्य खलु जिनदत्तस्य पुत्रो भद्राया भार्याया आत्मजः=अङ्गजातः, सागरो नाम दारकः आसीत् स किम्भूतः-सुकुमारपाणिपादः, सर्व-लक्षणसम्पन्नः यावत्-सुरूपः। ततः खलु स जिनदत्तसार्थवाहः अन्यदा कदाचित्

'तत्थ णं चंपाए' इत्यादि।

टीकार्थ-(तत्थ णं चंपाए नयरीए जिणदत्ते नाम सत्थवाहे अड्ढे, तस्स णं जिणदत्तस्स भद्दा भारिया, सूमाला इट्ठा जाव माणुस्सए कामभोए पच्चणुब्भवमाणा विहरइ) उस चंपा नगरीमें जिनदत्त नामका एक सार्थवाह रहता था जो धनधान्य आदि से विशेष परिपूर्ण एवं जन मान्य था। इसकी धर्मपत्नी का नाम भद्रा था। यह सर्वाङ्ग सुन्दरी थी। समस्त अंग और उपांग इसके वडे ही सुकुमार थे। यह अपने पतिको अत्यन्त इष्ट प्रिय थी। पति के साथ मनुष्य भव सम्बन्धी काम भोगों को भोगती हुई यह आनंद के साथ अपने समय व्यतीत किया करती थी (तस्स णं जिणदत्तस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सागरए नामं दारए सुकुमाले जाव सुरूवे) भद्रा भार्या से उत्पन्न हुआ जिनदत्त सार्थवाहके एक पुत्र था-जिसका नाम सागर था। यह सुकुमाल यावत्

तत्थणं चंपाए इत्यादि—

टीकार्थ-(तत्थणं चंपाए नयरीए जिणदत्ते नाम सत्थवाहे अड्ढे तस्सणं जिणदत्तस्स भद्दा भारिया, सूमाला इट्ठा जाव माणुस्सए कामभोए पच्चणुब्भवमाणा विहरइ) ते चंपा नगरीमां जीनदत्त नामे એક સાર્થવાહ રહેતો હતો. તે ધન ધાન્ય વગેરેથી સવિશેષ સંપન્ન તેમજ સમાજમાં પૂછાતો માણસ હતો. તેની ધર્મપત્નીનું નામ ભદ્રા હતું, તે સર્વાંગ સુંદરી હતી. તેના બધા અંગો અને ઉપાંગો બહુ જ સુકોમળ હતાં, તે પોતાના પતિને બહુજ વહાલી હતી. પતિની સાથે મનુષ્ય ભવના કામભોગો ભોગવતી તે સુખેથી પોતાનો વખત પસાર કરી રહી હતી.

(तस्सणं जिणथत्तस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सागरए नामं दारए सुकुमाले जाव सुरूवे)

ભદ્રાભાર્યાથી ઉત્પન્ન થયેલો ભદ્રાભાર્યાને એક પુત્ર હતો. તેનું નામ સાગર હતું. તે સુકુમાર યાવત્ સુંદર રૂપવાન હતો.

स्वकाद् गृहात् प्रतिनिष्क्रामति=निर्गच्छति, प्रतिनिष्क्रम्य, सागदत्तस्य गृहस्य 'अदूरसामन्ते'=नातिदूरे नातिसमीपे 'वीइवयइ' व्यतिव्रजति=गच्छति, 'इमंचणं' अस्मिन् समये सुकुमारिका दारिका स्नाता=कृतस्नाना 'चेडियासंघपरिवुडा' चेटिकासंघपरिवृता=दासीसमूहमध्यगता, उपरि आकाशतलके-प्रासादस्याट्टालिकोपरि 'कणगतेंदुसकेणं' कनकतेंदुससयेन 'तेंदुसय' इतिदेशीशब्दः, सुवर्णमयकन्दुकेन 'कीलमाणी २' विहरति, ततः खलु स जिनदत्तः सार्थवाहः सुकुमारिकां दारिकां पश्यति, दृष्ट्वा सुकुमारिकाया दारिकाया रूपे च यौवने च लावण्ये च 'जाव विम्हए' यावत् विस्मितः=आश्चर्ययुक्तः सन् कौटुम्बिकपुरुषान्=आज्ञाकारिणः पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-एषा खलु हे देवानुप्रिया ! कस्य दारिका किं वा नामधेयं 'से' इति तस्याः ?, ततः खलु ते

अच्छे रूपवाला था। (तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नया कयाई साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता सागरदत्तस्स गिहस्स अदूर सामंतेणं वीईवयई) एक दिन जिनदत्त सार्थवाह अपने घरसे निकला और निकलकर सागरदत्तके घरके पास से हो कर जा रहा था। (इमं च णं सूमालिया दारिया ण्हाया चेडियासंघपरिवुडा उप्पिआगासतलगंसि कणगतेंदूसएणं कीलमाणी२ विहरइ) इसी समय सुकुमारिका दारिका नहा धो कर अपने प्रासाद की छत पर दासी समूहके साथ २ सुवर्णमय कंदुक (गेंद) से खेल रही थी। (तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे सूमालियं दारियं पासइ पासित्ता सूमालियाए दारियाए रूवेय ३ जाय विम्हए कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी एसणं देवाणुप्पिया ! कस्स दारिया किं वा-नामधेज्जं से ? तएणं ते

तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नया कयाई साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता सागरदत्तस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीईवयई)

એક દિવસે જીનદત્ત સાર્થવાહ પોતાને ઘેરથી બહાર નીકળ્યો અને નીકળીને સાગરદત્તના ઘરની પાસે થઇને જઈ રહ્યો હતો.

(इमं च णं सूमालिया दारिया ण्हाया चेडियासंघपरिवुडा उप्पिं आगासतलगंसि कणगतेंदूसएणं कीलमाणी २ विहरइ)

તે વખતે સુકુમારિકા દારિકા સ્નાન કરીને પોતાના મહેલની અગાશી ઉપર દાસી સમૂહની સાથે સુવર્ણમય કંદુક (દડી) રમતી હતી.

(तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे सूमालियं दारियं पासइ पासित्ता सूमालियाए दारियाए रूवेय ३ जाय विम्हए कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी एसणं देवाणुप्पिया ! कस्स दारिया किं वा नामधेज्जं से ? तएणं ते कोडुंबिय

कौटुम्बिकपुरुषा जिनदत्तेन सार्थवाहेनैवमुक्ताः सन्तो हृष्टतुष्टाः-अतिमुदिताः 'करयल जाव' करतलपरिगृहीतं शिर आवर्तं दशनखं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादिषुः-हे देवानुप्रियाः ! एषा सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य 'धूया' दुहिता=पुत्री, भद्राया आत्मजा सुकुमारिका नाम दारिका सुकुमारपाणिपादा यावद्-रूपेण च यौवनेन च लावण्येन च उत्कृष्टा उत्कृष्ट शरीरा । ततः खलु स जिनदत्तः सार्थ-

---

कोडुंबिय पुरिसा जिणदत्तेण सत्थवाहेणं एवं वुत्तासमाणा हट्ठ करयल जाव एव वयासी-एसणं देवाणुप्पिया! सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स धूया-भद्दाए अत्तिया सूमालिया नाम दारिया सुकुमालपाणिपाया जाव उक्किट्ठ सरीरा) खेलती हुई उस कुमारिका दारिका को जिनदत्त सार्थवाह ने देखा-देखकर वे सुकुमारिका दारिका के रूप यौवन एवं लावण्य में आश्चर्यचकित हो गये-और आश्चर्य से युक्त होकर उन्होंने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया-बुलाकर वे उनसे इस प्रकार कहने लगे—हे देवानुप्रियो ! यह कन्या किसकी है इसका नाम क्या है । जिनदत्त सार्थवाह के द्वारा पूछे गये उन कौटुम्बिक पुरुषों ने हर्षित हो कर और अपने दोनों हाथों जोड़ कर बडे विनय के साथ उनसे ऐसा कहा—हे देवानुप्रिय ! यह पुत्री सागरदत्त सार्थवाहकी है । भद्रा भार्या की कुक्षि से यह जन्मी है । इसका नाम सुकुमारिका है । इसके कर चरण बडे ही सुकुमार हैं यावत् रूप, यौवन एवं लावण्यसे यह सर्वोत्कृष्ट है और सर्वाङ्ग सुन्दरी है । (तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे तेसिं कोडुंबियाणं

पुरिसा जिणदत्तेण सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ करयल जाव एव वयासी-एसणं देवाणुप्पिया ! सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तिया सूमालिया नाम दारिया सुकुमालपाणिपाया जाव, उक्किट्ठसरीरा)

રમતી સુકુમાર દારિકાને જીનદત્ત સાર્થવાહે જોઈ જોઈને તેઓ સુકુમાર દારિકાના રૂપ, યૌવન અને લાવણ્યમાં આશ્ચર્ય ચકિત થઇ ગયા અને ત્યાર-પછી તેમણે કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તે તેમને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિયો ! આ કન્યા કોની છે ? એનું નામ શું છે ? જીનદત્ત સાર્થવાહ વડે એવી રીતે પૂછાએલા તે કૌટુંબિક પુરુષોએ હર્ષિત થઇને પોતાના બંને હાથ જોડીને બહુજ વિનયની સાથે તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! સાર્થવાહ સાગરદત્તની આ પુત્રી છે. ભદ્રાભાર્યાના ઉદરથી આનો જન્મ થયો છે સુકુમારિકા આનુ નામ છે. એના હાથપગ ખૂબ જ સુકોમળ યાવત્ રૂપ, યૌવન અને લાવણ્યથી આ સર્વોત્કૃષ્ટ છે અને સર્વાંગ સુંદરી છે.

वाहस्तेषां कौटुम्बिकानामन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्नातो यावद् मित्रज्ञातिपरिवृतश्चम्पाया नगर्या मध्ये भूत्वा यत्रैव सागरदत्तस्य गृहं तत्रैवोपागच्छति, ततस्तदनन्तरम् सागरदत्तः सार्थवाहः खलु जिनदत्तं सार्थवाहम् एजमानम्=आगच्छन्तं पश्यन्ति, दृष्ट्वाऽऽसनादुत्तिष्ठति, उत्थाय 'आसणेणं उवणिमंतेइ' आसनेनोपनिमन्त्रयति=आसन उपवेशनार्थं प्रार्थयति, उपनिमन्त्र्य, आसनोपर्युपवेशनानन्तरम् ,आस्वस्थं=मार्गश्रमापगमात् श्रान्तिरहितं, विस्वस्थं=विशेषतो विश्रान्तिमुपगतं, सुखासनवरगतं=सुखेन विशिष्टासनोपविष्टं, तं

अंतिए एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता ण्हाए, जाव मित्तणाइपरिवुडे चंपाए० जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, तएणं सागरदत्ते सत्थवाहे जिणदत्तं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता आसणेणं उवणिमंतेइ उवणिमंतित्ता आसत्थं सुहासणवरगयं एवं वयासी) जिनदत्त सार्थवाहने उन कौटुम्बिक पुरुषों के मुख से जब इस अर्थ को सुना तो सुनकर वह पहिले अपने घर गया—वहां जा कर उसने स्नान किया। यावत् फिर वह अपने मित्र, ज्ञाति आदि परिजनों के साथ२ चंपानगरी के बीच से हो कर जहां सागरदत्त का घर था वहां पहुँचा-सागरदत्तने ज्यों ही अपने घर पर आते हुए जिनदत्त सार्थवाहको देखा - तो वह जल्दीसे अपने स्थान से उठा-और उठकर " आप यहां बैठिये " इस प्रकार उनसे कहने लगा जब वे यथोचित स्थान पर बैठ चुके और आस्व

(तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे तेसिं कोडुंबियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा—जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाए, जाव मित्तणाइ परिवुडे चंपाए० जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, तएणं सागरदत्ते सत्थवाहे, जिणदत्तं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता आसणेणं उवणिमंतेइ उवणिमंतित्ता आसत्थं वीसत्थं सुहासणवरगयं एवं वयासी)

જીનદત્ત સાર્થવાહે તે કૌટુંબિક પુરૂષોના મુખથી આ વાત સાંભળીને સૌ પહેલાં તેઓ પોતાને ઘેર ગયા. ત્યાં પહોંચીને તેમણે સ્નાન કર્યું. યાવત્ પછી તે પોતાના મિત્ર, જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનોની સાથે ચંપા નગરીની વચ્ચે થઈને જ્યાં સાગરદત્તનું ઘર હતું ત્યાં પહોંચ્યા. સાગરદત્ત જીનદત્ત સાર્થવાહને પોતાને ઘેર આવતા જોઈને ત્વરાથી તે પોતાના આસન ઉપરથી ઊભો થઈ ગયો અને ઊભો થઈને " તમે અહીં બેસો "

जिनदत्तं सार्थवाहमेवं=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्-हे देवानुप्रिय ! भण=कथय,किमागमनप्रयोजनम्=कस्मै प्रयोजनाय समागतो भवान् ? ततः खलु स जिनदत्तः सार्थवाहः सागरदत्तं सार्थवाहमेवं=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्-एवं खलु अहं हे देवानुप्रिय ! तव दुहितरं=पुत्रीं, भद्राया आत्मजां सुकुमारिकां=सुकुमारिकानाम्नी सगरस्य=सगरनामकस्य मत्पुत्रस्य भार्यात्वेन 'वरेमि' वृणोमि=वाञ्छामि, यदि खलु त्वं जानीहि हे देवानुप्रिय ! 'जुत्तं वा' युक्तं वा=योग्यं वा-'एतत् कार्यं समुचितं भवति' ति 'पत्तं वा' प्राप्तं वा=एतत् कार्यं कुलमर्यादामनुप्राप्तं वा,

---

स्थविश्वस्थ बन चुके-तब विशिष्ट आसन पर शांति के साथ बैठे हुए उन जिनदत्त सार्थवाह से उसने इस प्रकार पूछा।-(भण देवाणुप्पिया ! किमागमणपओयणं) कहिये देवानुप्रिय ! यहां पधारने का आपका क्या प्रयोजन है ? किस प्रयोजन से आप यहां आये हैं-कहिये-(तएणं से जिणदत्तसत्थवाहे सागरदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी-एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! तव धूयं भद्दाए अंतियं सूमालियं सागरस्स भारियत्ताए वरेमि जइणं जाणाह देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो वा संजोगो दिज्जउणं सूमालिया सागरस्स) जिनदत्त सार्थवाहने सागरदत्त सार्थवाहसे तब इस प्रकार कहा हे देवानुप्रिय ! मैं आपकी सुभद्रा की कुक्षिसे उत्पन हुई सूमालिका पुत्री को अपने पुत्र सागर की भार्या बनाना चाहता हूँ। यदि आप इसे स्वीकार करें कि यह कार्य योग्य है-उचित है-कुल मर्यादा के अनुसार है अथवा मेरा पुत्र आपकी

આ રીતે તેમને કહેવા લાગ્યો. જ્યારે તેઓ ઉચિત સ્થાને બેસી ગયા અને આસ્વસ્થ વિશ્વસ્થ થઈ ચૂકયા ત્યારે વિશિષ્ટ આસન ઉપર શાંતિપૂર્વક બેઠેલા તે જીનદત્ત સાર્થવાહને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું-(भण देवाणुप्पिया ! किमागमण पओयणं) હે દેવાનુપ્રિય ! બતાવો અહીં પધારવાની પાછળ આપનો શો હેતુ છે ? કયા પ્રયોજનથી આપ અહીં આવ્યા છો ?

(तएणं से जिणदत्त सत्थवाहे सागरदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी-एवं खलु अहं देवाणुप्पिया! तव धूयं भद्दाए अंतियं सूमालियं सागरस्स भारियत्ताए वरेमि जइणं जाणाह देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो वा संजोगो दिज्जउ णं सूमालिया सागरस्स)

જીનદત્ત સાર્થવાહે સાગરદત્ત સાર્થવાહને ત્યારે આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! હુ તમારી સુભદ્રાના ઉદરથી જન્મ પામેલી સુમાલિકા પુત્રીને મારા પુત્ર સાગરની પત્ની બનાવવા ઇચ્છું છું. આપ જો મારી માગણી ઉચિત સમજતા હો, કુળ-મર્યાદા યોગ્ય તેમજ મારો પુત્ર તમારી કન્યા માટે યોગ્ય

पात्रं=' कन्या योग्योऽयं मत्पुत्रः सागरः ' इति, ' सलाहणिज्जं वा ' श्लाघनीयं= प्रशंसनीयं वा ' सरिसो वा संजोगो ' सदृशो वा संयोगः-अयं कन्यावरयो वैवाहिकः सम्बन्धः कुलेन रूपेण गुणेन वा तुल्य इति, 'तो ' तर्हि ' दिज्जउ ' ददातु भवान् खलु सुकुमारिकां दारिकां सागराय=मत्पुत्रायेतिभावः। ततः खलु हे देवानुप्रिय ! ब्रूहि-किं दद्म-किं दद्यां, शुल्कं=संमानार्थं द्रव्यं सुकुमारिकाया दारिकायाः ? ततः खलु स सागरदत्तः सार्थवाहस्तं जिनदत्तमेवमवादीत्-एवं खलु हे देवानुप्रिय ! सुकुमारिका दारिका ममैका एकजाता=एकैवोत्पन्ना, तथा-इष्टा-अनुकूला, यावत्-कान्ता=ईप्सिता, प्रिया=प्रीतिपात्रा, मनोज्ञा=मनोगता तथा-

---

कन्या के योग्य है यह संबन्ध प्रशंसनीय है, कन्या और वर का यह वैवाहिक संवन्ध कुल रूप और गुणों के अनुरूप है तो आप अपनी पुत्री सुकुमारिका को मेरे पुत्र सागर के लिये प्रदान कर दीजिये-(तएणं देवाणुप्पिया ! किं दलयामो सुक्कं सुमालियाए ?) हे देवानुप्रिय ! साथ में यह भी कहदीजिये कि सुकुमारिका दारिका के संमानार्थ हम क्या द्रव्य देवें (तएणं से सागरदत्ते तं जिणदत्तं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया मम एगा, एगजाया इट्ठा जाव किमंगपुण पासणयाए तं नो खलु अहं इच्छामि, सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओगं तं जइणं देवाणुप्पिया ! सागरदारए मम धरजामाउए भवइ, तो णं अहं सागरस्स सूमालियं दलयामि) सागरदत्तए ने जिनदत्त से तब इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ! यह सुकुमारिका पुत्री मेरे यहां एक ही लड़की है और यह एक ही उत्पन्न हुई

છે, 'આ સંબંધ સારો છે, કન્યા તેમજ વરનો આ લગ્ન સંબંધ કુળ રૂપ અને ગુણોને અનુરૂપ છે તો તમે તમારી પુત્રી સુકુમારિકાને મારા પુત્ર સાગરને માટે આપો. (तएणं देवाणुप्पिया ! किं दलयामो सुंक्कं सुमालियाए ?) હે દેવાનુપ્રિય ! સાથે સાથે એ પણ અમને જણાવો કે સુકુમારી દારિકાના સંમાનાર્થ અમે શું દ્રવ્ય રૂપમાં આપીએ ?

(तएणं से सागरदत्ते त जिणदत्तं एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया मम एगा,एग जाया इट्ठा जाव किमंगपुण पासणयाए तं नो खलु अहं इच्छामि सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओगं तं जइणं देवाणुप्पिया ! सागरदारए मम धरजामाउए भवइ, तो णं अहं सागरस्स दारगस्स सुमालियं दलयामि) ત્યારે સાગરદત્તે જીનદત્તને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! આ સુકુમારિકા દારિકા મારે એકની એક પુત્રી છે અને આ એક જ જન્મી છે.

मनोमा=मतसः स्थानभूता, किं बहूना उदुम्बरपुष्पमिव 'उदुम्बरपुष्पं केनापि दृष्टम्' इतिवत् श्रवणविषयत्वेन सा दुर्लभा, किमङ्ग! पुन-र्दर्शनविषयतया, तत्=तस्माद् नो खलु अहमिच्छामि सुकुमारिकाया दारिकायाः क्षणमपि विप्रयोगं=वियोगम्, तत्=तस्माद् यदि खलु हे देवानुप्रिय! सागरदारको मम 'घरजामाउए' गृहजामातृकः=गृहवासीजामाता भवति 'तोणं' तर्हि खलु अहं सागराय दारकाय सुकुमारिकां ददामि। ततः खलु स जिनदत्तः सार्थवाहः सागरदत्तेन सार्थवाहेनैव मुक्तः सन् यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सगरदारकं=स्वपुत्रं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-एवं खलु हे पुत्र! सगारदत्तः सार्थवाहो मम=मां प्रति, 'सम्बन्धसामान्ये षष्ठी' एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-एवं खलु हे देवानुप्रिय! सुकुमारिका दारिका ममैका एक जाता इष्टा 'तं चेव'

है। यह मेरे लिये ईष्ट यावत् मनोम है-कान्त है, प्रिय है और मनोज्ञ है। अनुकूल होने से इष्ट, ईप्सित होने से कान्त प्रीतिपात्र होने से प्रिय मनको रुचने वाली होने से मनोज्ञ एवं मन का स्थान भूत होने से मनोज्ञ है। ज्यादा क्या कहूँ यह तो हमें उदुंबर पुष्प के समान दर्शन दुर्लभ थी-सुनने की तो बात ही क्या। अतः मैं इसे देना नहीं चाहता हूँ। कारण इस सुकुमारिका दारिका के बिना मैं एक क्षण भी नहीं रह सकता हूँ इसलिए हे देवानुप्रिय! सागर यदि घरजमाई बन कर रहना चाहें तो मैं उन्हें यह अपनी सुकुमारिका पुत्री दे सकता हूँ। (तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागरदारगं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-एवं खलु पुत्ता! सागरदत्ते सत्थवाहे मम एवं

આ મને ઇષ્ટ યાવત્ મનોમ છે-એટલે કે કાંત છે, પ્રિય છે, અને મનોમ છે. અનુકૂળ હોવા બદલ ઇષ્ટ, ઇપ્સિત હોવાથી કાંત, પ્રીતિપાત્ર હોવા બદલ પ્રિય અને મનને ગમે એવી હોવાથી મનોજ્ઞ તથા મનનો આશ્રય હોવાથી મનોમ છે. વધારે શું કહું! આ તો અમને ઉદુંબર પુષ્પની જેમ દર્શન-દુર્લભ હતી. સાંભળવાની તો વાત જ શી કરવી! એથી આને હું આપવા ઇચ્છતો નથી. કારણ કે એના વગર હુ ક્ષણવાર પણ રહી શકતો નથી એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિય! સાગર જો ઘર જમાઈ થઇને મારી પાસે રહેવા ઇચ્છતો હોય તો હું આ મારી સુકુમારીકા પુત્રી તેમને આપી શકું તેમ છું.

(तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्ते णं सत्थवाहे णं एवं वुत्ते समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदारगं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-एवं खलु पुत्ता! सागरदत्ते सत्थवाहे मम एवं वयासी-एवं खलु

तदेव=पूर्वोक्तवर्णनमेवात्रबोध्यं यावत्-तस्माद् नो खल्वहमिच्छामि सुकुमारिकाया दारिकायाः क्षणमपि विप्रयोगं, तत्=तस्माद् यदि खलु सागरदारको मम 'घर-जामाउए' गृहजामातृकाः=गृहवासी जामाताभवति, तर्हि ददामि। ततः खलु त सागरको दारको जिनदत्तेन तार्थवाहेनैवमुक्तः तन् तूष्णीकः=मौनावलम्बी सन् संतिष्ठते।

वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! सूमालिया दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा तं चेव जइणं सागरदारए मम घरजमाउए भवइ ता दलयामि) इस प्रकार सागरदत्त सार्थवहके कहे जाने पर जिनदत्त सार्थवाह जहां अपना घर था वहाँ आया-वहां आकर उसने अपने सागेर पुत्र को बुलाया। बुला कर फिर उससे उसने ऐसा कहा-हे पुत्र-सागरदत्त सार्थवाह ने मुझसे ऐसा कहा है कि आपका पुत्र सागर यदि मेरे घर जमाई बन कर रहना चाहें तो मैं अपनी सुकुमारिका उन्हें दे सकता हूँ। उनका घरजमाई बनाने का कारण यह है कि यह सुकुमारिका पुत्र पुत्री उसके एक ही पुत्री है-और एक ही उत्पन्न हुई हैं। यह उसे बहुत ही अधिक इष्ट यावत् मनोम है। इस तरह सागरदत्त का कहा हुआ समस्त कथन जिनदत्त ने अपने पुत्र सागर को सुना दिया। इसलिये वह उसका एक क्षण भी वियोग सहन नहीं कर सकता है। अतः वह

देवाणुप्पिया! सूमालिया दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा तं चेव जइणं सागर-दारए मम घरजमाउए भवइ ता दलयामि)

આ રીતે જીનદત્ત સાર્થવાહ તેમની આ વાત સાંભળીને તે જીનદત્ત સાર્થવાહ જ્યાં પોતાનું ઘર હતું ત્યાં આવ્યા. ત્યાં આવીને તેણે પોતાના સાગરપુત્રને બોલાવ્યો. બોલાવીને તેણે તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે પુત્ર! સાગરદત્ત સાર્થવાહે મને આ પ્રમાણે કહ્યું છે કે તમારો પુત્ર સાગર જો મારો ઘર જમાઈ રહેવા કબૂલતો હોય તો હું મારી પુત્રી સુકુમારિકા તેમને આપવા તૈયાર છું. તેઓ તમને ઘર જમાઈ બનાવવા એટલા માટે ઈચ્છે છે કે સુકુ-મારિકા દારિકા તેમની એકની એક પુત્રી છે. તે તેમને અતીવ ઈષ્ટ યાવત્ મનોમ છે. આ રીતે સાગરદત્તે જે કંઈ કહ્યું હતું તે બધું તેમણે પોતાના પુત્ર સાગર આગળ રજૂ કર્યું. અને છેવટે કહ્યું કે એટલા માટે જ તે એક ક્ષણ પણ પોતાની પુત્રીનો વિયોગ સહી શકતો નથી. તમને તે આ કારણથી જ ઘર જમાઈ બનાવવા ઇચ્છે છે.

ततः खलु जिनदत्तः सार्थवाहो ऽन्यदा कदाचित् शोभने=शुभकारके, तिथिकरणनक्षत्रमुहूर्ते विपुलमशनं पानं खाद्यं स्वाद्यमुपस्कारयति, निष्पादयति, उपस्कार्य मित्रज्ञातिप्रभृतिनामन्त्रयति, आमन्त्र्य ' जाव सम्माणेइ ' यावत् सम्मानयति भोजयति, भोजयित्वा वस्त्रादिभिः सत्करोति, सत्कृत्य स्वागतवचनादिना

तुम्हें घरजमाई बनाना चाहता है। (तएणं से सागरए दारए जिणदत्ते णं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठइ, तएणं जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नया कयाइं सोहणंसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहूत्तंसि विउलं असण पान खाइम साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइ०आमंतेइ, जाव सम्माणित्ता सागरं दारगं ण्हायं जाव सव्वालंकारविभूसियं करेइ, करित्ता पुरिससहस्स वाहिणिं सीयं दुरुहावेइ, दुरुहावित्ता मित्तणाइ जाव संपरिवुडे सव्विड्ढीए साओ गिहाओ निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता चंपा नयरिं मज्झं मज्झेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ) जिनदत्त सार्थवाह के द्वारा इस प्रकार कहा जाने पर वह सागर दारक चुपचाप रह गया उसने कुछ भी उत्तर नहीं दिया। एक दिन जिनदत्त ने शुभ, तिथि करण, दिवस नक्षत्र मुहूर्त्तमें विपुल मात्रा में अशन, पान, खाद्य और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार बनवाया –बनवाकर उसने अपने मित्र ज्ञाति आदिबन्धुओं को आमंत्रित किया आमंत्रित करके फिर उसने उन सबको भोजनकराया–भोजन कराकर

(तएणं से सागरए दारए जिणदत्ते णं सत्थवाहे णं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठइ, तएणं जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नया कयाइं सोहणंसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहूत्तंसि, विउलं असणपान खाइम साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाई आमंतेइ, जाव सम्माणित्ता सागरं दारगं ण्हायं जाव सव्वालंकारविभूसियं करेइ, करित्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरुहावेइ, दुरुहावित्ता मित्तणाइ जाव संपरिवुडं सव्विड्ढीए साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता चंपा नयरिं मज्झं मज्झेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ)

જીનદત્ત સાર્થવાહ વડે આ પ્રમાણે કહેવાયેલો સાગર પુત્ર એકદમ ચૂપ થઇને બેસી જ રહ્યો. તેણે કોઇ પણ જાતનો જવાબ આપ્યો નહિ એક દિવસ જીનદત્તે શુભતિથિ, કરણ, દિવસ, નક્ષત્ર મુહૂર્ત્તમાં પુષ્કળ પ્રમાણમાં અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતનો આહાર બનાવડાવ્યો. બનાવડાવીને તેણે પોતાના મિત્ર, જ્ઞાતિ વગેરે સંબંધીઓને આમંત્રિત કર્યા. આમંત્રિત કરીને તેણે તે બધા આવેલા સંબંધીઓને જમાડયા. જમા-

सम्मानयति सम्मान्य सागरं दारकं स्नातं यावत् सर्वालङ्कारविभूषितं कारयति, कारयित्वा पुरुषसहस्रवाहिनीं शिबिकां दूरोहयति=आरोहयति, दूरोह्य मित्रज्ञाति स्वजन–सम्बन्धिभिर्यावत् परिवृतः सर्वद्धर्या सकलविभवेन स्वकाद् गृहाद् निर्गच्छति, निर्गत्य चम्पाया नगर्या मध्यमध्येन=मध्येभूत्वा यत्रैव सागरदत्तस्य गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य शिबिकातः 'पच्चोरुहावेइ' प्रत्यवरोहयति, सागरदारकं स्वपुत्रं प्रत्यवतारयति, प्रत्यवरोह्य सागरकं दारकं सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य उपनयति=समीपमानयति ।

ततः खलु सागरदत्तः सार्थवाहो विपुलमशनं पानं खाद्यं स्वाद्यं=चतुर्विधमाहारम् उपस्कारयति=निष्पादयति, उपस्कार्य यावत् = मित्रादिसहितं जिनदत्तमामन्त्र्य भोजयित्वा, सत्कृत्य, संमानयति, संमान्य सागरकं दारकं सुकुमारिकया दारिकाया सार्धं 'पट्टयं' पट्टकं 'दुरूहावेइ' दूरोहयति=आरोहयति, दूरुह्य श्वेतपीतकः=

सबका वस्त्रादिक से सत्कार किया सत्कार करके फिर उनका स्वागत वचानादिकों द्वारा सन्मान किया– । सन्मान कर के बाद में उसने अपने सागरपुत्रको स्नान कराया– । स्नान कराकर उसने उसे समस्त अलंकारो से विभूषित कराया । विभूषित कराकर बाद में उसने उसे पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिका पर चढाया चढाकर मित्र, ज्ञाति, स्वजन संबंधियो को साथ लेकर फिर वह सकल विभवके अनुसार अपने घर से निकला –निकलकर चंपानगरी के बीचो बीच से होता हुआ सागरदत्त का जहाँ घर था वहाँ पहुँचा । (उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहावेइ, पच्चोरुहावित्ता सागरगं दारगं सागरदत्तस्स सत्थ० उवणेइ, तएणं, सागरदत्ते सत्थवाहे विपुलं असणपाण खाइम साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता जाव सम्माणेत्ता सागरगं दारगं सूमालियाए दारियाए सद्धिं पट्टयं

ડીને બધાને વસ્ત્રો વગેરે આપીને સત્કાર કર્યો, સત્કાર કરીને તેણે તેમનું સ્વાગત વચનો વડે સન્માન કર્યું. સન્માન કર્યા બાદ તેણે પોતાના સાગર પુત્રને સ્નાન કરાવ્યું સ્નાન કરાવીને તેણે તેને બધા અલંકારોથી શણગાર્યો, શણગારીને તેણે તેને પુરૂષ–સહસ્રવાહિની પાલખીમાં બેસાડયો. ત્યારપછી મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન સંબંધીઓને સાથે લઈને તે પોતાના સંપૂર્ણ વૈભવની સાથે પોતાના ઘેરથી નીકળ્યો–નીકળીને ચંપા નગરીની વચ્ચે થઈને તે જ્યાં સાગરદત્તનું ઘર હતું ત્યાં પહોંચ્યો.

(उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहावेइ, पच्चोरुहावित्ता सागरगं दारगं सागरदत्तस्स सत्थ० उवणेइ, तएणं, सागरदत्ते सत्थवाहे विपुलअसणपाणखाइम साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता जाव सम्माणेत्ता सागरगं दारगं सूमालियाए

राजतसौवर्णैः कलशैः = वारिपूर्णैर्घटैर्मज्जयति = स्नपयति, मज्जयित्वा अग्निहोमं कारयति, कारयित्वा सागरं दारकं सुकुमारिकाया दारिकायाः पाणि ग्राहयति॥सू ८॥

दुरूहावेइ, दुरूहावित्ता सेयापीएहिं कलसेहिं मज्जावेइ, मज्जावित्ता अग्गिहोमं करावेइ, करावित्ता सागर दारयं सूमालियाए दारियाए पाणिं गिण्हावेइ) वहां पहुँचकर उसने अपने पुत्र सागर को पालखी से नीचे उतारा और उतारकर सागरदत्त सार्थवाह के पास उसे लेआया। सागरदत्त सार्थवाहने भी पहिलेसे ही विपुलमात्रा में अशन, पान, खाद्य, एवं स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार तैयार करवालियो था सो उससे मित्रादि सहित जिनदत्त सार्थवाह को आनंद के साथ खिलाया खिलाकर सबका सत्कार किया सन्मान किया। सत्कार सन्मान करने के बाद फिर सागरदत्तने सागर दारक को अपनी पुत्री सुकुमारिका के साथ एक पट्टक पर बैठाया-बैठाकर सुवर्ण चांदी के कलशोंसे उनका अभिषेक कराया अभिषेक हो जाने के बाद अग्निहोम कराया। अग्निहोम जब हो चुका तब सागरदत्तने अपनी पुत्री सुकुमारिका का सागर के हाथ में हस्तमिलाप किया-अर्थात् लग्न कर दिया ॥ सू० ८ ॥

दारियाए सद्धिं पट्टयं, दुरूहावेइ, दुरूहावित्ता सेयापीएहिं कलसेहिं मज्जावेइ, मज्जावित्ता अग्गिहोमं करावेइ, करावित्ता सागरदारयं सूमालियाए दारियाए पाणिं गिण्हावेइ)

ત્યાં પહોંચીને તેણે પોતાના પુત્ર સાગરને પાલખીમાંથી નીચે ઉતાર્યો અને ઉતારીને સાગરદત્ત સાર્થવાહની પાસે લઇ ગયો. સાગરદત્ત સાર્થવાહે પણ પહેલેથી જ પુષ્કળ પ્રમાણમાં અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતનો આહાર તૈયાર કરાવીને રાખ્યો હતો. તેણે મિત્ર વગેરે લોકોની સાથે જીનદત્ત સાર્થવાહને આનંદની સાથે જમાડયા અને ત્યારપછી તેણે સૌનો સત્કાર તેમજ સન્માન કર્યું. સત્કાર અને સન્માન કર્યા બાદ સાગરદત્તે સાગરદારકને પોતાની પુત્રી સુકુમારિકાની સાથે એક પટ્ટક ઉપર બેસાડયો. બેસાડીને સોના-ચાંદીના કળશોથી તેમનો અભિષેક કરાવડાવ્યો. અભિષેકનું કામ પુરૂં થયા બાદ તેણે અગ્નિહોમ કરાવ્યો. અગ્નિહોમની વિધિ પૂરી થઈ ગઈ ત્યારે સાગરદત્તે પોતાની પુત્રી સુકુમારિકાનો સાગરની સાથે હસ્તમેળાપ કરાવી દીધો એટલે કે લગ્ન કરાવી દીધાં. ॥ સૂ. ૮ ॥

मूलम्—तएणं सागरदारए सूमालियाए दारियाए इमं एयारूवं पाणिफासं पडिसंवेदेइ से जहा नामए असिपत्तेइ वा जाव मुम्मुरेइ वा एत्तो अणिट्ठतराए चेव० पाणिफासं पडिसंवेदेइ, तएणं से सागरए अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिट्ठइ, तएणं से सागरदत्ते सत्थवाहे सागरस्स दारगस्स अम्मापियरो मित्तणाइ० विउलेण असणपाणखाइमसाइमं पुप्फवत्थ जाव सम्माणेत्ता पडिविसज्जइ, तएणं सागरए दारए सूमालियाए सद्धिं जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिगंसि निवज्जइ, तएणं से सागरए दारियाए सूमालियाए दारियाए इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ, से जहा नामए असिपत्तेइ वा जाव अमणामयरागं चेव अंगफासं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ, तएणं से सागरए अंगफासं असहमाणे अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिट्ठइ,तएणं से सागरदारए सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सूमालियाए दारियाए पासाउ उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणीयंसि निवज्जइ, तएणं सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी पइव्वया पइमणुरत्ता पतिं पासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव से सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ, तएणं से सागरदारए सूमालियाए दारियाए

दुच्चंपि इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ जाव अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिट्ठइ, तएणं से सागरदारए सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सयणिज्जाओ उट्ठेइ उट्ठित्ता वासघरस्स दारं विहाडेइ विहाडित्ता मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ सू० ९॥

टीका—'तएणं' इत्यादि । ततः खलु सागरदारकः सुकुमारिकाया दारिकाया इममेतद्रूपं=वक्ष्यमाणप्रकारं पाणिस्पर्शं=करस्पर्शं प्रतिसंवेदयति=अनुभवति, कीदृशः स करस्पर्शः इति सदृष्टान्तमाह—'से जहानामए' इत्यादि । तद् यथा नामकम्=यथा दृष्टान्तम्-दृष्टान्तं प्रदर्शयति-'असिपत्तेइ वा' इत्यादि । असिपत्रमिति वा=असिपत्रं-खड्गः, यथा खड्गधारायाः स्पर्शः सोढुमशक्यस्तद्वत् सुकुमारिका दारिकायाः करस्पर्शः प्रतिसंवेद्यत इति भावः । 'जाव मुम्मुरे इ वा०' यावत् मुर्मुरेति वा=अत्र यावत् करणादिदं बोध्यम्—'करपत्तेइ वा खुरपत्तेइ वा

'तएणं सागरदारए' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद-अर्थात् सागरदारकने जब हस्तमिलाप किया तब (सागरदारए) उस सागर को (सूमालियाए दारियाए) सुकुमारिका दारिकाका (पाणिपासं) वह हस्तका स्पर्श (इमं एयारूवं पडिसंवेदेइ) इस प्रकार से लगा (से जहा नामए असिपत्तेइ वा जाव मुम्मुरेइवा, एत्तो अणिट्ठतराए चेव० पाणिफासं पडिसंवेदेइ) जैसे वह असिपत्र तलवार का स्पर्श हो यावत् अग्नि कणमिश्रित भस्म का स्पर्श हो । यहां यावत् शब्दसे "कर पत्तेइ" वा खुर पत्तेइवा, कलंब चीरिया

'तएणं सागरदारए' इत्यादि

टीकार्थ-(तएणं) त्यारपछी એટલે કે સાગરદારકે જ્યારે હસ્તમેળાપ કર્યો ત્યારે (सागरदारए) તે સાગરને (सूमालियाए दारियाए) સુકુમાર દારિકાનો (पाणिपास) તે હાથનો સ્પર્શ (इमंएया रूवं पडिसंवेदेइ) આ પ્રમાણે લાગ્યો કે

(से जहा नामए असि पत्तेइ वा जाव मुम्मुरेइ वा, एत्तो अणिट्ठत्तराए चेव पाणिफासं पडिसंवेदेइ)

જાણે તે અસિપત્ર-તરવાર-નો સ્પર્શ ન હોય, યાવત્ અગ્નિકણ મિશ્રિત ભસ્મનો સ્પર્શ ન હોય. અહીં 'યાવત્' શબ્દથી

(करपत्तेइ वा खुरपत्तेइ वा, कलंबचीरियापत्तेइ वा सत्ति अग्गेइ वा कोंतग्गेइ

कलंबचीरियापत्तेइ वा सत्तिअग्गेइ वा कोंतग्गेइ वा तोमरग्गेइ वा भिंडिमालग्गेइ वा सूचिकलावएइ वा विच्छुयडंकेइ वा कविकच्छूइ वा इंगालेइ वा मुम्मुरेइ वा अच्चीइ वा जालेइ वा आलाएइ वा सुद्धागणीइ वा भवेयारूवेसिया ?, नो इणट्ठे समट्ठे, करपत्रमिति वा क्षुरपत्रमिति वा कदम्बचीरिकापत्रमिति वा शक्त्यग्रमिति वा कुन्ताग्रमिति वा तोमराग्रमिति वा भिन्दिपालाग्रमिति वा वृश्चिकदंश इति वा कपिकच्छुरिति वा अङ्गार इति वा मुर्मुर इति वा अर्चिरिति वा ज्वालेति वा, अलातमिति वा शुद्धाग्निरिति वा भवेदेतद्रूपः-स्यात् ?, नायमर्थः समर्थः, इति । तत्र करपत्रं= क्रकचं 'करवत्' इति प्रसिद्धं क्षुरपत्रम्='उस्तरा' इति प्रसिद्धम् , कदम्बचीरिकापत्रम्-कदम्बचीरिका-तृणविशेषः, अस्या अग्रभागोऽतितीक्ष्णो भवति तस्य पत्रं, शक्तिः=शस्त्रविशेषः-त्रिशूलं वा तस्या अग्रभागः स्व कुन्तः 'भाला' इति प्रसिद्धः शस्त्रविशेषः, तदग्रभागः, तोमरः=वाण विशेषस्तदग्रभागः, भिन्दिपालः= शस्त्रविशेषः सूचीकलापकं सूचीसमूहस्तस्याग्रभागः, वृश्चिकदंशः=वृश्चिक कण्टकः, कपिकच्छुः-खर्जुकारी वनस्पतिविशेषः, अङ्गारः=ज्वालारहितोऽग्निः, मुर्मुरः=अग्नि-

---

पत्तेइ वा, सत्ति अग्गेइवा कोंतग्गेइवा तोमरग्गेइ वा, भिंडिमालग्गे वा सूचिकलावएइवा विच्छुय डंकेइ वा कवि कच्छूइवा इंगालेइ वा मुम्मुरेइ वा अच्चोइ वा जालेइ वा आलाइ वा सुद्धागणीइ वा भवेयारू वेसिया ? नो इणट्ठे समट्ठे) कर पत्र-कर वत, क्षुर पत्र-उस्तरा कदम्बचीरिका पत्र छुहिया घास-जिसका अग्रभाग अधिक तीक्ष्ण होता है शक्ति-अग्र -शक्ति-त्रिशूल अथवा आयुधविशेष का अग्रभाग कुन्ताग्र भाले की नोक तोमराग्र-बाण की अनी भिन्दिपाल-शस्त्र विशेष-का अग्रभाग-सूची कलापका अग्रभाग-बिच्छु का डंक कपिकच्छु-करेंच-जिसके स्पर्श होनेपर खुजली आती है-ज्वाला रहित अग्नि, मुर्मुर-अग्निकणमिश्रित

तोमरग्गेइ वा, भिंडिमालग्गे वा सूचिकलावएइ वा विच्छुय डंकेइ वा, कविकच्छुइ वा इंगालेइ वा, मुम्मुरेइ वा अच्चोइ वा जालेइ वा, आलाइ वा सुद्धागणीइ वा भवेयारूवे सिया ? नो इणट्ठे समट्ठे)

કરપત્ર-કરવત, ક્ષુરપત્ર - અસ્રો, કદંબચીરિકા પત્ર-છુરિકા કે જેનો અગ્રભાગ એકદમ તીક્ષ્ણ હોય છે, શકિત-અગ્ર-શકિત,-ત્રિશૂળ અથવા આયુધ વિશેષનો અગ્રભાગ, કુંતાગ્ર-ભાલાની અણી, તોમરાગ્ર-તીરની અણી, ભિંદિવાલ-વિશેષનો અગ્રભાગ, સૂચીકલાપનો અગ્રભાગ, વીંછીનો ડંખ, કવિકચ્છુ-કચ્ચ-જેના સ્પર્શથી ખંજવાળ આવે છે, જવાળા રહિત અગ્નિ, મુર્મુર-અગ્નિકણ મિશ્રિત ભસ્મ, અર્ચિ-લાકડાઓથી સળગતી જવાળા, જવાળા-લાકડા વગરની

कणमिश्रितभस्म अर्चिः=इन्धन प्रतिबद्धा ज्वाला, ज्वालातु-इन्धनच्छिन्ना, आलातम्=उल्मुकं, शुद्धाग्निः लोहपिण्डस्थाऽग्निः । असिपत्रादि-शुद्धाग्निपर्यन्तानां स्पर्श इव सुकुमरिकायाः करस्पर्शो भवेत्कथञ्चित्किम्? नायमर्थः समर्थ=अयं दृष्टान्तसमूहः करस्पर्श साम्यं प्राप्तुं न समर्थः तर्हि कीदृशः ? इत्याह 'एत्तो अणिट्ठतराए चेव०' एतस्माद् असिपात्रदीनां स्पर्शादनिष्टतरक एव, अकान्ततरक एव=अत्यन्तमकमनीय एव, अप्रियतरक एव=अतिदुःखजनकएव अमनोज्ञतरकएव=अतिशयेन मनोविकृतिकारकएव अमनोमतरकएव=अतिशयेन मनः प्रतिकूलएव वर्त्तते, तमेवम्भूतं पाणिस्पर्शं सुकुमारिकादारिकायाः करस्पर्शं प्रतिसंवेदयति=अनुभवति ।

ततः खलु स सागरदारकः अकामकः= निरभिलाषः 'अवसव्वसे' अपस्ववशः=अपगतस्वातन्त्र्यः विवशः सन् मुहूर्तमात्रं=स्तोककाल संतिष्ठते (ततः खलु स सागरदत्तः सार्थवाहः सागरस्य दारकस्य अम्बापितरौ मित्रज्ञातिस्वजनसम्बन्धिप-

---

भस्म अर्चि-इन्धन प्रतिबद्ध ज्वाला, ज्वाला-इन्धन से रहित ज्वाला अलात-उल्मुक शुद्धाग्नि-लोहपिण्डस्थ अग्नि । इन असिपत्र से लेकर शुद्धअग्नि पर्यन्त पदार्थों का स्पर्श जैसा होता है वैसा ही सुकुमारिका के कर का स्पर्श हो सकता था-परन्तु यहां यह अर्थ समर्थित नहीं है -अर्थात् उसके सुकुमारिका के कर स्पर्श में इन दृष्टान्तों के स्पर्श की समानता नही मिल सकती है क्यों कि वह स्पर्श तो इनके स्पर्श से भी अधिक अनिष्टतर हीथा, अकान्ततरक ही था-अत्यन्त अकमनीय था, अप्रिय तरकही था-अत्यन्त दुःखजनक ही था, अमनोज्ञतरक ही था -अत्यंन्त मनो विकृतिजनक ही था, अमनोमतरक ही था-अत्यंन्त मनः प्रतिकूल ही था । (तएणं से सागरए अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिट्ठइ, तएणं से सागरदत्ते सत्थवाहे सागरस्स दारगस्स

જ્વાળા, અલાત-ઉલ્મુક, શુદ્ધ અગ્નિ-લોહપિંડસ્થ અગ્નિ-આટલી વસ્તુઓનું ગ્રહણ કરવું જોઇએ. આ અસિપત્રથી માંડીને શુદ્ધ અગ્નિ સુધીના પદાર્થોનો જે જાતનો સ્પર્શ હોય છે તેવો જ સુકુમારિકાના હાથનો પણ સ્પર્શ હતો.

પણ હકીકતમાં તો આ વસ્તુઓની સમાનતા પણ તેના તીક્ષ્ણ સ્પર્શની સાથે કરી શકાય તેમ નથી કેમકે તેના હાથનો સ્પર્શ તો ઉકત વસ્તુઓના સ્પર્શ કરતાં પણ વધારે અનિષ્ટતર હતો, અકાંતતરક હતો, અતીવ અકમનીય હતો, અપ્રિયતરક હતો, અત્યંત દુઃખજનક હતો, અમનોમતરક હતો, ખૂબજ મનો વિકૃતિજનક હતો, અમનોમ તરક હતો, બહુ જ મનઃ પ્રતિકૂળ હતો.

(तएणं से सागरए अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिट्ठइ, तएणं से सा-

रिजनांश्च विपुलेनाशनपानखाद्यस्वाद्येन पुष्पवस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण सत्करोति संमानयति सत्कृत्य संमान्य प्रतिविसर्जयति = प्रस्थापयति । ततः खलु सागरको दारकः सुकुमारिकया सार्धं यत्रैव वासगृहं-शयनगृहं तत्रैवोपागच्छति उपागत्य सुकुमारिकया दारिकया सार्धं 'तलिमंसि' तलिमे देशीयोऽयंशब्दः तल्पे-शयनीये 'निवज्जइ' निषीदति । ततः खलु स सागरदारकः सुकुमारिकाया दारिकाया इममेतमद्रूपमङ्गस्पर्शं प्रतिसंवेदयति-तद् यथानामकं=तत् प्रतिसंवेदनं दृष्टान्तोपन्यासपूर्वकं प्रदर्श्यते-असिपत्रं वा यावद् अमनोमतरमेव सुकुमारिकाया अङ्गस्पर्शं

अम्मापियरो मित्तणाइ० विउलेणं असणं पाणंखाइमं साइमं पुप्फवत्थ जाव सम्माणेत्ता पडिविसज्जति) अतः वह सागर उसमें अभिलाषा से रहित बन गया। फिर भी वहां विवश होकर वह कुछ समय तक ठहरा रहा। सागरदत्त सार्थवाह ने सागर दारक के मातापिता का तथा उसके मित्र, ज्ञाति स्वजन, संबन्धी परिजनों का विपुल अशन, पान, खाद्य और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार से एवँ पुष्प वस्त्र, गन्ध, माला तथा अलंकार से खूब सत्कार किया-सन्मान किया। सत्कार सन्मान करके फिर उसने सबको अपने यहां से विदा कर दिया। (तएणं सागरए दारए सूमालियाए सद्धिं जेणेव वासगिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिगंसि निवज्जइ, तएणं से सागरए दारए सूमालियाए दारियाए इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ से जहानामए असि पत्तेइवा जाव अमणामयरागंचेव अंगफासं

गरदत्ते सत्थवाहे सागरस्स दारगस्स अम्मापियरो मित्तणाइ० विउलेणं असणं पाणं खाइमं साइमं पुप्फवत्थ जाव सम्माणेत्ता पडिविसज्जति)

એટલા માટે તે સાગર તેમાં અભિલાષાથી રહિત બની ગયો. છતાંએ તે ત્યાં લાચાર થઈને થોડા વખત સુધી રોકાયો. સાગરદત્ત સાર્થવાહે સાગર દારકના માતાપિતાનો તેમજ તેના મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન, સંબંધી પરિજનોનો વિપુલ અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહારથી અને પુષ્પ વસ્ત્ર, ગંધ, માળા તેમજ અલંકારોથી બહુ સત્કાર અને સન્માન કર્યું. સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તેણે સૌને પોતાને ત્યાંથી વિદાય કર્યા.

(तएणं सागरए दारए सूमालियाए सद्धिं जेणेव वासगिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिगंसि निवज्जइ, तएणं से सागरए दारए सूमालियाए दारियाए इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ से जहा नामए असिपत्तेइ वा जाव अमणामयरागं चेव अंगफासं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ तएणं

प्रत्यनुभवन् विहरति। ततः खलु स सागरदारकस्तस्या अङ्गस्पर्शमसहमानोऽपरव-वशः=अपगत स्वातन्त्र्यः, सन् मुहूर्तमात्रं संतिष्ठते । ततः खलु स सागरदारकः सुकुमारिकां दारिकां सुखप्रसुप्तां ज्ञात्वा सुकुमारिकाया दारिकायाः पार्श्वत उत्तिष्ठति, उत्थाय यत्रैव स्वकं शयनीयं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य शयनीये, 'निवज्जइ' निषीदति स्वपितीत्यर्थः । ततः खलु सुकुमारिका दारिका ततो मूहूर्तान्तरे प्रति-बुद्धा=जागरिता सति पतिव्रता 'पइमणुरत्ता' प्रत्यनुरक्ता स्वपतिं प्रत्यनुरागिणी, पार्श्वे पतिमपश्यन्ती 'तलिमाउ' तल्यात्=शयनीयाद् उत्तिष्ठति, उत्थाय यत्र

पच्चणुब्भवमाणे विहरइ तएणं से सागरए अंगफासं असहमाणे अव-सव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिट्ठइ) इसके बाद सागरदारक सुकुमारिका के साथ जहां वासगृह-शयन घर-था वहाँ गया वहां जाकर वह उस सुकु-मारिकाके साथर एक शय्यापर बैठ गया। बैठ जाने पर उस सागरदारक को सुकुमारिका दारिकाका अगंस्पर्श इस रूपसे प्रतीत हुआ-जैसे मानो असिपत्र आदिका स्पर्श हो ! इन असिपत्र (खड्गको यावत्) आदिको के स्पर्श से भी उसका वह अंगस्पर्श यावत् अमनामतरक ही था। इस प्रकार का उसका अंगस्पर्श अनुभवता हुआ वह सागरदारक विवश बनकर वहां कुछ समय तक ठहरा बाद में जब उससे सहन नही हुआ तो । (तएणं से सागरदारए सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सूमालियाए दरियाए पासाउ उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव सए सय-णिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणीयंसि निवज्जइ, तएणं सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी पइव्वया पइ

से सागरए अगफासं असहमाणे अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिट्ठइ).

ત્યારપછી સાગર દારક સુકુમારિકાની સાથે જ્યાં વાસગૃહ-શયનઘર હતું ત્યાં ગયો, ત્યાં જઇને તે સુકુમારિકાની સાથે એક શય્યા ઉપર બેસી ગયો. બેઠા બાદ તે સાગર દારકને સુકુમારિકા દારિકાનો અંગ-સ્પર્શ એવા પ્રકારનો જણાયો કે તે અસિપત્ર - તરવાર વગેરેનો સ્પર્શ ન હોય ! અસિપત્ર વગેરે કરતાં પણ તેનો અંગ સ્પર્શ યાવત અમનોમતરક હતો. આ રીતે તેના અંગ સ્પર્શને અનુભવતો સાગર દારક લાચાર થઇને ત્યાં થોડા વખત સુધી રોકાયો અને ત્યારબાદ જ્યારે તેને તે સ્પર્શ અસહ્ય થઇ પડયો ત્યારે

(तएणं से सागरदारए सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सूमालियाए दारियाए पासाउ उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवा-गच्छित्ता सयणीयंसि निवज्जइ, तएणं सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स

'से' तस्य शयनीयं तत्रैवोपागच्छति उपागत्य सागरदारकस्य पार्श्वे (निवज्जई) निषीदति=स्वपिति। ततः खलु स सागरदारकः सुकुमारिकाया दारिकाया 'दुच्चंपि' द्वितीयवारमपि इममेतद्रूपम् पूर्वोक्तप्रकारकम् अङ्गस्पर्शं प्रतिसंवेदयति यावद्-अकामकोऽपस्ववशो मुहूर्तमात्रं संतिष्ठति, ततः खलु स सागरदारकः सुकुमारिकां दारिकां सुखप्रसुप्तां ज्ञात्वा शयनीयात्=शय्यात उत्तिष्ठति, उत्थाय वासगृहस्य=शयनगृहस्य द्वारं 'विहाडेइ' विघाटयति = उद्घाटयति विघाटय 'मारामुक्के विव काए' मारामुक्त इव काकः=मार्यन्ते प्राणिनो यस्यां सा मारा

मणुरत्ता पतिं पासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्ठेइ उट्ठित्ता उवागच्छइ) वह सागरदारक उस सुकुमारिका दारिका को सुखसे सोई हुई जानकर उस सुकुमारिका दारिका के पास से उठ बैठा-और उठकर जहां अपनी शय्या थी वहां चला गया। वहां आकर उस पर पड़ गया इतने में ही एक मुहूर्त के बाद वह पति में अनुरक्त बनी हुई पतिव्रता सुकुमारिका दारिका जग गई और अपने पास पति को न देखकर अपने पलंग से उठ बैठी। उठकर वह जहां सागरदारक का पलंग था वहां गई। (उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ) वहां जाकर वह उसके पास सो गई। (तएणं से सागरदारए सुमालियाए दारियाए दुच्चंपि इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ जाव अकामए अवसव्वसे मुहुत्त-मित्तं संचिट्ठइ, तएणं से सागरदारए सुमालियं दारियं सुहपसुत्तं

पडिबुद्धा समाणी पइव्वया पइमणुरत्ता पत्तिंपासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्ठेइ उट्ठित्ता उवागच्छइ)

ते सागर दारक ते सुकुमारिका दारिकाने सुखेथी सूतेली जाणीने तेनी पासेथी ऊठ्यो, अने ऊठीने ज्यां पोतानी शय्या हती त्यां जतो रह्यो. त्यां जईने ते तेनी उपर पडी गयो. एटलामां एक मुहूर्त पछी पतिमां अनुरक्त बनेली पतिव्रता सुकुमारिका दारिका जागी गई अने पोतानी पासे पति न जोतां पोतानी शय्या उपरथी ऊठी अने बेठी गई. त्यारपछी ते ऊठीने ज्यां सागर दारकनी शय्या हती त्यां गई. (उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ) त्यां जईने ते तेना पडखामां सूई गई.

(तएणं से सागरदारए सुमालियाए दारियाए दुच्चंपि इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ जाव अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिट्ठइ,तएणं से सागरदारए सुमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सयणिज्जाओ उट्ठेइ,उट्ठित्ता वासघरस्स दारं विहा-

शूना वधस्थानं, तस्यामुक्तो निस्सृतः काक इव, यद्वा-मारात्=मारकपुरुषाद्यामुक्तः =निर्मुक्तः विच्छुटितः काको यथा वेगतो निर्गच्छति तद्वत्, यस्या एव दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः ॥ सू० ९ ॥

मूलम्—तएणं सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा पइवया जाव अपासमाणी सयणिज्जाओ उट्टेइ सागरस्स दारियाए सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेमाणी२ वासघरस्स दारं विहाडियं पासइ पासित्ता एवं वयासी—गए से

जाणित्ता सयणिज्जाओ उट्ठेइ, उट्ठित्ता वासघरस्स दारं विहाडेई, विहाडेत्ता मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए) सागरदारक को सुकुमारिका दारिका का अंगस्पर्श दुबारा भी वैसा ही पूर्वोक्तरूप से अनुभव में आया—अतः उसके पास सोने की इच्छा न होने पर भी वह विवशहोकर कुछ समय तक उसके पास सोता रहा—जब वह अच्छी तरह सो गइ—तब वह उसे सुख प्रसुप्तजानकर उसके पास से उठा—और उठकर उसने उस वास गृह के दरवाजे को खोला खोलकर जिस प्रकार 'मारामुक्त' काक बड़े वेगसे निकलता है —उसी तरह यह भी बहुत जल्दी वहां से निकलकर जिस दिशा से प्रकट हुआ था—उसी दिशा तरफ वापिस चला गया। जिस में प्राणी मारे जाते हैं उसका नाम मारा—शूना— वधस्थान है। इस मारा से निकला हुआ अथवा मारनेवाले पुरुष के हाथ से छूटा हुआ—ऐसे ये दो अर्थ " मारमुक्त " इस शब्द के हो सकते हैं। सू० ९

डेई, विहाडित्ता मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए)
સાગર દારકને સુકુમારિકાનો બીજીવારનો અંગ સ્પર્શ પણ પહેલાંની જેમજ લાગ્યો. એટલા માટે તેની પાસે સૂવાની ઇચ્છા ન હોવા છતાંએ તે વિવશ થઇને થોડીવાર સુધી તેની પાસે પડી રહ્યો. જ્યારે તે સારી રીતે સૂઈ ગઈ ત્યારે તે તેને સુખેથી સૂતી જાણીને તેની પાસેથી ઉઠયો અને ઉઠીને તેણે તે વાસગૃહના બારણાને ઉઘાડયુ. ઉઘાડીને જેમ મારા—મુક્ત કાગડો જલ્દી નીકળી જાય છે તેમજ તે પણ બહુ જ ત્વરાથી ત્યાંથી નીકળીને જે દિશા તરફથી આવ્યો હતો તે જ દિશા તરફ પાછો જતો રહ્યો. જે સ્થાને પ્રાણીઓ મારી નાખવામાં આવે છે તેનું નામ "મારા" (વધસ્થાન) છે. આ 'મારા'થી છૂટીને આમ બે અર્થો 'મારામુક્ત' શબ્દના થઇ શકે છે. ॥ સૂત્ર ૯ ॥

सागरे त्तिकट्टु ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ, तएणं सा भद्दा सत्थवाही कल्लं पाउ० दास चेडियं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिए ! वहुवरस्स मुह-धोवणियं उवणेहि, तएणं सा दासचेडी भद्दाए एवं वुत्ता समाणी एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणेति, मुहधोवणियं गेण्हइ गेण्हित्ता जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सूमालियं दारियं जाव झियायमाणिं पासइ पासित्ता एवं वयासी – किन्नं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहिसि ?, तएणं सा सूमालिया दारिया तं दास-चेडी एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! सागरए दारए मम सुहपसुत्तं जाणित्ता मम पासाओ उट्ठेइ उट्ठित्ता वास-घरदुवारं अवगुणइ जाव पडिगए तएणं तओ अहं मुहुत्तं-तरस्स जाव विहाडियं पासामि, गए णं से सागरएत्तिकट्टु ओहयमण जाव झियायामि, तएणं सा दासचेडी सूमालि-याए दारियाए एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरदत्ते तेणेव उवा-गच्छइ उवागच्छित्ता सागरदत्तस्स एयमट्ठं निवेएइ, तएणं से सागरदत्ते दासचेडीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जेणेव जिणदत्तस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवाग-च्छइ उवागच्छित्ता जिणदत्तं एवं वयासी–किण्णं देवाणु-प्पिया ! एवं जुत्तं वा पत्तं वा कुलाणुरूवं वा कुलसरिसं वा जन्नं सागरदारए सूमालियं दारियं अदिट्ठदोसं पइवयं

विप्पजहाय इहमागओ बहूहिं खिज्जणियाहि य रुंटणियाहि य उवालभइ, तएणं जिणदत्ते सागरदत्तस्स एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरए दारए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागरयं दारयं एवं वयासी—दट्ठुणं पुत्ता! तुमे कयं सागरदत्तस्स गिहाओ इहं हव्वमागते, तेणं तं गच्छह णं तुमं पुत्ता! एवमवि गए सागरदत्तस्स गिहे, तएणं से सागरए जिणदत्तं एवं वयासी—अवि आइं अहं ताओ! गिरिपडणं वा तरुपडणं वा मरुप्पवायं वा जलप्पवेसं वा जलणप्पवेसं वा विसभक्खणं वा सत्थोवाडणं वा वेहाणसं वा गिद्धापिट्ठं वा पवज्जं वा विदेसगमणं वा अब्भुवगच्छिज्जामि नो खलु अहं सागरदत्तस्स गिहं गच्छिज्जा, तएणं से सागरदत्ते सत्थवाहे कुड्डंतरिए सागरस्स एयमट्ठं निसामेइ निसामित्ता लज्जिए विलीए विड्डे जिणदत्तस्स गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुकुमालियं दारियं सद्दावेइ सद्दावित्ता अंके निवेसेइ निवेसित्ता एवं वयासी—किण्णं तुमं पुत्ता! सागरएणं दारएणं मुक्का ?, अहंणं तुमं तस्स दाहामि जस्स णं तुमं इट्ठा जाव मणामा भविस्ससित्ति सूमालियं दारियं ताहिं इट्ठाहिं वग्गूहिं समासासेइ समासासित्ता पडिविसज्जेइ ॥ सू० १० ॥

टीका—'तएणं' इत्यादि । ततः=तन्निर्गमनानन्तरं खलु सुकुमारिका दारिका ततो मुहूर्त्तान्तरे प्रतिबुद्धा=जागरिता सती पतिव्रता यावत् पतिमपश्यन्ती

शयनीयात्=शय्यात उत्तिष्ठति, उत्थाय सागरस्स दारकस्य सर्वतः समन्ताद् मार्गणगवेषणं कुर्वती२ वासगृहस्य=शयनगृहस्य द्वारं विघाटितम्=उद्घाटितं पश्यति, दृष्ट्वा एवमवादीत्-गतः स सागरदारकः, इति कृत्वा 'ओहयमणसंकप्पा' अपहतमनः संकल्पा=नष्टमनोरथा, यावत् ध्यायति=आर्तध्यानं करोतिस्म। ततस्तदनन्तरं भद्रा सार्थवाही 'कल्लं' कल्ये=द्वितीयदिवसे प्रादुः प्रभातायां रजन्यां यावत् तेजसा ज्वलति=दीप्यमाने सूर्ये उदिते दासचेटीकां=दासपुत्रीं शब्दयति, शब्दयित्वा

'तएणं सूमालिआ दारिया' इत्यादी।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (सूमालिया दारिया) सुकुमारिका दारिका (तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा पइवया जाव अपासमाणी) एक मुहूर्त के बाद जग पडी-सो उस पतिव्रता ने वहां अपने पतिको जब नहीं देखा तब (सयणिज्जाओ उट्ठेइ, सागरस्स दारगस्स सव्वाओ समंता मग्गणगवेसणं करेमाणी २ वासघरस्स दारं विहाडियं पासइ, पासित्ता एवं वयासी) पलंग से उठी उठकर उसने सागर दारक की वहीं पर सब और बार २ मार्गण गवेषणा की-। जब उसने शयन गृह के दरवाजे को उघड़ा हुआ देखा-तब उसे विचार आया कि (गये से सागरे त्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ, तएणं सा भद्दा सत्थवाही कल्लं पाउ० दासचेडियं सद्दावेइ) कि सागर चले गये हैं। इस प्रकार अपहतमनःसंकल्प होकर वह विचार में पड़ गई, इतने मे भद्रा सार्थवा-

---

(तएणं सूमालिया दारिया इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तएणं) ત્યારબાદ (सूमालिया दारिया) સુકુમારિકા દારિકા (तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा पइवया जाव अपासमाणी) એક મુહૂર્ત પછી જાગી ગઈ તે પતિવ્રતાએ ત્યાં પોતાના પતિને જ્યારે જોયા નહિ ત્યારે

(सयणिज्जाओ उट्ठेइ, सागरस्स दारगस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेमाणी २ वासघरस्स दारं विहाडियं पासइ, पासित्ता एवं वयासी)

શય્યા ઉપરથી ઊભી થઈ અને ત્યારપછી તેણે ત્યાંજ આસપાસ ચોમેર સાગર દારકની માર્ગણા-ગવેષણા કરી. જ્યારે તેણે શયનગૃહના બારણાને ઉઘાડેલુ જોયુ ત્યારે તેને વિચાર આવ્યો કે

(गए से सागरे त्तिकट्टु ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ, तएणं सा भद्दा सत्थवाही कल्लं पाउ दासचेडियं सद्दावेइ)

સાગર જતા રહ્યા છે. આ રીતે અપહત મનઃ સંકલ્પવાળી થઈને તે

एवमवादीत्–हे देवानुप्रिये ! गच्छ खलु त्वं ' वहुवरस्स ' वधूवरयोः समीपे ' मुहधोवणियं ' मुखधावनिकां=दन्तधावनादिरूपाम् ' उवणेहि ' उपनय=प्रापय । ततः खलु सा दासचेटी भद्रया सार्थवाह्या एवमुक्तासती ' एयमट्ठं ' एतमर्थम्= एतद्वचनं ' तथा ऽस्तु ' इतिकृत्वा प्रतिशृणोति, प्रतिश्रुत्य ' मुहधोवणियं ' मुख धावनिकां गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव वासगृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सुकुमारिकां दारिकामेकाकिनीं यावत्–ध्यायन्तीं=आर्त्तध्यानं कुर्वतीं पश्यति, दृष्ट्वा एवमवादीत्–

हीने द्वितीय दिन प्रातः काल होते ही दासपुत्री को बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिए ! वहूवरस्स मुहधोवेणियं उवणेहि तएणं सा दासचेडी भद्दाए एवं वुत्ता समाणी एयमट्ठं तहत्ति पडि सुणंति मुहधोवणियं गेण्हइ, उवागच्छित्ता, सूमालियं दारियं जाव झियायमाणिं पासइ, पासित्ता एवं वयासी–किन्नं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहमणसंकप्पा जाव झियाहिसि ? तएणं सा सूमालिया दारिया तं दासचेडीं एवं वयासी–एव खलु देवाणुप्पिया सागरए दारए मम सुहपसुत्तं जणित्ता मम पासाओ उट्ठेइ, उट्ठित्ता वासघरदुवारं अवगु णइ, जाव पडिगए) बुलाकर उससे ऐसा कहा कि हे देवाणु प्रिय !तूं जा, और वधूवर के पास इस दन्त धावन आदिरूप मुख धावनिका को लेजा भद्रा के इस कथन को उस दासचेटी ने " तहत्ति " कहकर स्वीकार कर लिया–और मुख धावनीका को ले लिया–और लेकर फिर वह जहां वासगृह था–वहां गई । वहां पहुँचकर उसने सुकुमारिका दारिका को

ચિંતામાં ગમગીન થઇ ગઇ. એટલામાં બીજા દિવસે સવારે ભદ્રાસાર્થવાહીએ દાસપુત્રીને બોલાવી.

(सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिए ! वहूवरस्स मुहधोवणियं उवणेहि, तएणं सा दासचेडी भद्दाए एवंवुत्ता समाणी एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणंति मुहधोवणियं गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, सूमालियं दारियं जाव झियायमाणिं पासइ, पासित्ता एवं वयासी–किन्नं तुमं देवाणुप्पिया ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहिसि ? तएणं सा सूमालिया दारिया तं दासचेडीं एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! सागरए दारए मम सुहपसुत्तं जणित्ता मम पासाओ उट्ठेइ, उट्ठित्ता वासघरदुवारं अवगुणइ, जाव पडिगए)

બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયે ! તુ વરવધૂની પાસે આ દંતધાવન વગેરે મુખધાવનિકા લઇ જા ભદ્રાના આ કથનને સાંભળીને તે દાસચેટીએ ' તહત્તિ " કહીને તેને સ્વીકારી લીધુ અને મુખધાવનિકા (દાતણ) ને લઇ લીધુ અને લઇને તે જ્યા વાસગૃહ હતું ત્યાં ગઇ ત્યાં

हे देवानुप्रिये ! हे सुकुमारिके ! किं=कुतः खलु त्वम् अपहतमनः संकल्पा यावत् ध्यायसि ?, ततस्तदनन्तरं सा सुकुमारिका दारिका तां दासचेटीमेवमवादीत्-हे देवानुप्रिये ! एवं खलु सागरको दारको मां सुखप्रसुप्तां ज्ञात्वा मम पार्श्वादुत्तिष्ठति, उत्थाय वासगृहद्वारम् ' अवगुणइ ' अवगुणयति=अपावृणोति उद्घाटयति, 'यावत् प्रतिगत' ' यस्याः एव दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः । ततस्तदनन्तरं खलु ' तओ' ततो मुहूर्तान्तरेऽहं यावत्-प्रतिबुद्धा सती सागरदारकमपश्यन्ती शयनादुत्तिष्ठामि, उत्थाय तस्य मार्गणगवेषणं कुर्वती वासगृहस्य द्वारं विघाटितं पश्यामि गतः खलु स सागरकः ' इति कृत्वा=इति हेतोरहम् अपहतमनः संकल्पा यावद्-

---

चिन्ता मग्न देखा-देखकर उसने उससे पूछा कि हे देवानुप्रिये ! क्या कारण है जो आप अपहतमनः संकल्पा होकर चिन्ता मग्न बनी हुई हो ? इस दासचेटी के प्रश्नको सुनकर उस सुकुमारिका ने उस से कहा-देवानुप्रिये-सुनो-सागरदारक मुझे सुख प्रसुप्त जानकर मेरे पास से उठे और उठकर वासगृह के दरवाजे को खोलकर जहां से आये थे वहां चले गये है । (तए णं तओ अहं मुहुत्तंतरस्स जाव विहाडियं पासामि गएणं से सागरए त्तिकट्टु ओहयमणं जाव झियायामि, तए णं सा दासचेडी सूमालियाए दारियाए एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरदत्ते तेणेव उवागच्छइ) उसके बाद ज्योंही मैं जगी-तो मैंने जब सागर दारक को अपने पास नहीं देखा-तो मैं शय्या से उठ बैठी-और उठकर मैंने उनकी यहीं पर सब तरफ मार्गण गवेषणाकी उसमें मैंने वासगृह के दरवाजे उघडा पाया-तब मैं समझ

જઇને તેણે સુકુમારિકા દારિકાને ચિંતામાં ગમગીન જોઈ જોઇને તેણે તેને પૂછયું કે હે દેવાનુપ્રિયે ! શા કારણથી તમે અપહત મનઃ સંકલ્પા થઇને ચિંતામાં બેઠા છો ? દાસચેટીના પ્રશ્નને સાંભળીને તે સુકુમારિકાએ તેને કહ્યું-કે હે દેવાનુપ્રિયે ! સાંભળો, સાગર દારક મને સુખેથી સૂતી જાણીને મારી પાસેથી ઉભા થયા અને ઉભા થઇને વાસગૃહના બારણાને ઉઘાડીને જ્યાંથી આવ્યા હતા, ત્યાં જતા રહ્યા છે.

(तएणं तओ अहं मुहुत्तंतरस्स जाव विहाडियं पासामि गएणं से सागरए त्ति कट्टु ओहयमणं जाव झियायामि, तएणं सा दासचेडी, सूमालियाए दारियाए एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरदत्ते तेणेव उवागच्छइ)

ત્યાર પછી જ્યારે હું જાગી ત્યારે મેં સાગર દારક ને મારી પાસે જોયો નહિં, હું શય્યા ઉપર ઉઠી અને બેઠી થઈ ગઇ અને ત્યાર પછી મેં અહીં જ તેમની બધે માર્ગણ-ગવેષણા કરી મેં જ્યારે વાસગૃહના બારણાને ઉઘાડું જોયું ત્યારે હુ સમજી ગઇ કે તેઓ ચાલ્યા ગયા છે. આ વિચારથી જ હુ અપહત

आर्तध्यानं ध्यायामि । ततः खलु सा दासचेटी सुकुमारिकाया दारिकाया अन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा, यत्रैव सागरदत्तः सार्थवाह=सुकुमारिकायाः पिता, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तं सागरदत्तमेतमर्थं निवेदयति । ततस्तदनन्तरं स सागरदत्तः सार्थवाहो दासचेटया अन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य आशुरुप्तः=शीघ्रं क्रोधाविष्टः सन् यत्रैव जिनदत्तस्य सार्थवाहस्य गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य जिनदत्तं सार्थवाहमेवमवादीत्-हे देवानुप्रिय ! किं=कथं खलु एवं युक्तम्=उचितं वा प्राप्तं= कुलमर्यादामनुप्राप्तं वा कुलानुरूपं=कुलयोग्यतानुकूलं वा कुलसदृशं=कुलसाम्यापन्नं वा, यत् खलु सागरो दारकः सुकुमारिकां दारिकामदृष्टदोषां=निर्दोषां पतिव्रतां

गई कि वे चले गये है इस विचार से मैं अपहतमनः संकल्प होकर आर्तध्यान-चिन्ता-मे पड़ रही हूँ । इस प्रकार सुकुमारिका की बात सुनकर वह दासचेटी बहुत सोच विचार करके वहां से सागरदत्त के पास आई । (उवागच्छित्ता सागरदत्तस्स एयमट्ठं निवेएइ-तएणं से सागरदत्ते दासचेडीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरत्ते जेणेव जिणदत्तस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ-उवागच्छित्ता जिणदत्तं एवं वयासी) वहाँ आकर उसने सगरदत्त से इस बात को कहा-। इस तरह दासचेटी के मुख से इस बात को सुनकर और उसे हृदय में धारण कर सागरदत्त बहुत अधिक-क्रुद्ध हुआ-और उसी समय जहां जिनदत्त सार्थवाह का घर था वहां गया । वहां जाकर उसने जिनदत्त से इस प्रकार कहा-(किण्हं देवाणुप्पिया ! एवं जुत्तं वा पत्तं वा कुलाणुरूवं वा कुलसरिसं वा जन्नं सागरदारए सूमालियं

મનઃ સંકલ્પ થઇને આર્તધ્યાન-ચિંતા-માં પડી છું આ રીતે સુકુમારીકાની વાત સાંભળીને તે દાસ ચેટી ખૂબજ વિચાર કરીને ત્યાંથી સાગરદત્તની પાસે ગઈ

उवागच्छित्ता सागरदत्तस्य एयमट्ठं निवेएइ=तएणं से सागरदत्ते दासचेडीए अंतिए एयमट्ठं सोचा निसम्म आसुरुत्ते जेणेव जिणदत्तस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ-उवागच्छित्ता जिणदत्त एवं वयासी)

ત્યાં આવી ને તેણે સાગરદત્તને આ વાત કરી આ રીતે દાસ ચેટીના મુખથી બધી વિગત સાંભળીને અને તેને હૃદયમાં ધારણ કરીને સાગર દત્ત અત્યંત ગુસ્સે થયો અને તરત જ જ્યાં જિનદત્ત સાર્થવાહનું ઘર હતું ત્યાં ગયો ત્યા જઈને તેણે જિનદત્ત સાર્થવાહને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે

(किण्णं देवाणुप्पिया ! एवं जुत्तं वा पत्तं वा कुलाणुरूवं वा कुलसरिसं वा जन्नं सागरदारए सूमालियं दरियं अदिट्ठदोसं पइवयं विप्पजहाय इहमागओ बहूहिं खिज्जणियाहि य रुट्टणियाहि य उवालभइ)

विप्रहाय=त्यक्त्वा इहागतः-कथमेतद् युक्तं, यत् निर्दोषां सुकुमारिकां विहाय सागरदारकोऽत्र समायात इति। एवं बह्वीभिः 'खिज्जणियाहि य' खेदनिकाभिः= खेदपूर्णाभिस्तथा 'रुंटणियाहि य'=रुंटणियाभिश्च देशीयोऽयं शब्दः, रोदनक्रियायुक्ताभिः वाग्भिः उपालभते=सागरदत्तो जिनदत्तस्य उपालम्भं करोतीत्यर्थः।

ततः खलु जिनदत्तः सार्थवाहः सागरदत्तस्य सार्थवाहस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य यत्रैव सागरदारकस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सागरकं दारकं स्वपुत्रमेवं= वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-हे पुत्र! त्वया खलु दुष्ठु=अशोभनं कृतम् यत्-सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य गृहादिह हव्यमागतः, तत्=तस्माद् गच्छ खलु त्वं हे पुत्र! एवमपि=यथास्थितस्तथैव सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य गृहम्। सागरदारको जिनदत्तं सार्थवाहमेवमवादीत्-हे तात! अपि=निश्चयेन 'आइं' इति वाक्यालंकारे अहं

दारियं अदिट्ठदोसं पइवयं विप्पजहाय इह मागओ बहूहिं खिज्जणियाहि य रुट्टणियाहि य उवालभइ) हे देवानुप्रिय! क्या यह बात योग्य है-अथवा कुलमर्यादा के लायक है, या कुल की योग्यता के अनुसार है या कुल को शोभित करे ऐसी है, जो सागरदारक बिना किसी दोषके देखे-पतिव्रता सुकुमारिका दारिका को छोड़कर यहां आ गया है इस प्रकार अनेक खेदपूर्ण एवं रोदनक्रिया युक्त वचनोंसे सागरदत्तने अपने संबधी जिनदत्तको ठपका-उलाहना दिया। (तएणं जिणदत्ते सागरदत्तस्स एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरए दारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरयं दारयं एवंवयासी-दुट्ठुणं पुत्ता तुमे कयं,सागरदत्तस्स गिहाओ इह हव्वमागए, तेणं तं गच्छह णं तुमं पुत्ता! एवमविगए, सागरदत्तस्स गिहे, तएणं से सागरए जिणदत्तं एवं वयासी-अवि आइं अहं ताओ!

હે દેવાનુપ્રિય! શું આ વાત વાજબી છે? કુળ મર્યાદાને લાયક છે? અથવા તો કુળની યોગ્યતા મુજબ છે? કુળને શોભાવનારી છે? કે જે સાગર દારક કોઈ પણ જાતના દોષ જોયા વગર પતિવ્રતા સુકુમારીકા દારિકાને ત્યજીને અહીં આવી ગયો છે? આ રીતે મનને દુભાવનારા તેમજ ગળગળા થઈને રડતાં રડતાં ઘણાં વચનોથી સાગરદત્તે પોતાના વેવાઈ જિનદત્તને ઠપકો આપ્યો.
(तएणं जिणदत्ते सागरदत्तस्स एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरए दारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरयं दारयं एवं वयासी-दुट्ठुणं पुत्ता तुमे कयं सागरदत्तस्स गिहाओ इह हव्वमागए, तेणं तं गच्छह णं तुमं पुत्ता! एवमविगए, सागरदत्तस्स गिहे, तएणं से सागरए जिणदत्तं एवं वयासी-अवि आइं अहं

तवाज्ञया गिरिपतनं वा तरुपतनं वा मरुप्रपातं वा=निर्जलदेशगमनं वा जलप्रपातं वा=अगाधजले पतनं वा, ज्वलनप्रवेशं वा ज्वलदग्नौ प्रवेशं वा विषभक्षणं वा, 'सत्थोवाडणं वा' शस्त्रावपाटनं वा=शस्त्रेण शरीरविदारणं वा, 'वेहाणसं वा' वैहायसं वा कण्ठे पाशकग्रहणं वा, तथा-गृध्रस्पृष्टं=गृध्रैः स्पर्शनं मया गजोष्ट्रादीनां कलेवरे प्रवेशितस्य शरीरस्य मृतबुद्धया गृध्रैर्भक्षणं, तथा प्रव्रज्यां वा, विदेश-

---

गिरिपडणं वा तरुपडणं वा मरुप्पवायं वा जलप्पवेसं वा जलणप्पवेसं वा विसभक्खणं वा सत्थोवाडणं वा वेहाणसं वा गिद्धापिट्ठं वा पवज्जं वा विदेसगमणं वा अब्भुवगच्छिज्जामि, नो खलु अहं सागरदत्तस्स गिहं गच्छिज्जा) जिनदत्त सागरदत्त के इस उलाहने रूप अर्थ को सुनकरके जहां सागरदारक था वहां गया-वहां जाकर उसने सागर दारक से इस प्रकार कहा-हे पुत्र! यह तुमने अच्छा नहीं किया-जो तुम सागरदत्त के घर से यहां इतने जल्दी आ गये। इसलिये हे बेटा! तुम जैसे यहां बैठे हो वैसे ही सागरदत्त के घर चले जाओ। तब सागरदारकने अपने पिता जिनदत्त से इस प्रकार कहा-पिताजी! मैं आपकी आज्ञा से पर्वत से गिरना स्वीकार कर सकता हूँ, वृक्ष से नीचे पड़जाना स्वीकारकर सकता हूँ-मरुप्रपात-निर्जलप्रदेश में जाना अंगीकारकर सकता हूँ, अगाधजल में डूबकर मरसकता हूँ तथा जलती हुई अग्नि में प्रवेश करना, विषकाभक्षण करना, शस्त्र से शरीर का

ताओ! गिरिपडणं वा तरुपडणं वा मरुप्पवायं वा जलप्पवेसं वा जलणप्पवेसं वा विसभक्खणं वा सत्थोवाडणं वा वेहाणसं वा गिद्धापिट्ठं वा पवज्जं वा विदेसगमणं वा अब्भुवगच्छिज्जामि, नो खलु अहं सागरदत्तस्स गिहं गच्छिज्जा)

જિનદત્ત સાગરદત્તના આ ઠપકાને સાંભળીને જ્યાં સાગર દારક હતો ત્યાં ગયો અને ત્યાં જઈને તેણે સાગર દારકને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે પુત્ર! તમે આ જે કંઈ કર્યું છે, તે સારું ન કહેવાય તમે સાગરદત્તના ઘેરથી આટલા જલ્દી આવતા રહ્યા આ ઠીક નથી. એથી હે બેટા! તમે અત્યારે જેવી સ્થિતિમાં છો તેવી જ સ્થિતિમાં સાગરદત્તને ઘેર જતા રહો. ત્યારે સાગર દારકે પોતાના પિતાને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે પિતશ્રી! તમારી આજ્ઞાથી હું પર્વત ઉપરથી નીચે ગબડી પડવું સ્વીકારી શકું છું, વૃક્ષ ઉપરથી નીચે પડી જવું સ્વીકારી શકું છુ, મરુપ્રપત-નિર્જળ પ્રદેશમાં જવું સ્વીકારી શકું છું, ઊંડા પાણીમાં ડૂબીને મરી શકું છું, તેમજ સળગતા અગ્નિમાં પ્રવેશવુ, વિષનું ભક્ષણ કરવું, શસ્ત્રનાઘાથી શરીર ને કાપવું, ગળામાં ફાંસો

गमनं वा अभ्युपगच्छामि=स्वीकरोमि, किंतु खलु=निश्चयेन सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य गृहे नैवगच्छामि । ततस्तदा–स सागरदत्तः सार्थवाहः कुडयान्तरितः= भित्तिव्य-वधानेन स्थितः सागरस्य दारकस्य एतमर्थम्=उक्तं वचनं निशामयति=शृणोति, निशाम्य लज्जितः स्वयं, व्रीडितः परतः ' विडे ' विड्डः=देशीयोऽयं शब्दः स्वप-रतोलज्जितः, जिनदत्तस्य गृहात् प्रतिनिष्क्रामति=निर्गच्छति । प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सुकुमारिकां दारिकां शब्दयति, शब्द-यित्वा अङ्के=उत्सङ्गे ' निवेसेइ ' निवेशयति= उपवेशयति, निवेश्य एवमवादीत्–हे पुत्री ! किं=केन कारणेन खलु त्वं सागरेण दारकेण ' मुक्का ' मुक्ता=त्यक्ता ?।

विदारण करना गले में फांसी लगाकर मरजाना, गज, उष्ट्र आदि के मृतकलेवर मे मैं अपने आपको प्रविष्ट कराकर उस शरीरको मृतबुद्धि की कल्पना से गृद्ध पक्षियों द्वारा भक्षण करवाना यह सब मैं स्वीकार-कर सकताहूँ, इसी तरह दीक्षाग्रहण करना अथवा विदेश में चलेजाना भी स्वीकारकर सकता हूँ–परन्तु मैं सागरदत्त के घरजानास्वीकार नहीं कर सकता हूँ । अर्थात् ये सब पूर्वोक्त आपकी आज्ञाएँ मुझे विना किसी संकोचके या विचारके मान्य हैं परन्तु सागरदत्तके घरजाना मुझे मान्य नहीं है । (तएणं से सागरदत्ते सत्थवाहे कुडुंतरिए सागरस्स एयमट्ठं नि-सामेइ, निसामित्ता लज्जिए, विलीए, विड्डे. जिनदत्तस्स गिहाओ पडिनि-क्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुकुमालियं दारियं सद्दावेइ, सद्दावित्ता अंकेनिवेसेइ, निवेसित्ता एवं वयासी, किण्णं तुमं पुत्ता सागरएणं दारएणं मुक्का? अहं णं तुमं तस्स

ભેરવીને મરવું, હાથી ઊંટ વગેરેના મરેલા શરીરમાં પ્રવેશ કરી મારા શરી-રને મૃતબુદ્ધિની કલ્પનાથી ગીધ પક્ષીઓને ખવડાવવું આ બધું હુ સ્વીકારી શકું તેમ છું, તેવી જ રીતે દીક્ષા ગ્રહણ કરવી અથવા તો પરદેશમાં જતા રહેવું પણ હુ સ્વીકારી શકું છું પણ હું સાગરદત્તના ઘેર જવું સ્વીકારવા તૈયાર નથી. એટલે કે આ બધી ઉપરની તમારી આજ્ઞાઓ મને કોઇ પણ જાતના વિચાર કર્યા વગર માન્ય છે, પણ સાગરદત્તને ત્યાં જવું માન્ય નથી.
(तएणं से सागरदत्ते सत्थवाहे कुडुंतरिए सागरस्स एयमट्ठं निसामेइ, निसामित्ता लज्जिए, विलीए, विड्डे, जिनदत्तस्स गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुकुमालियं दारियं सद्दावेइ, सद्दावित्ता अंके निवेसेइ, निवेसित्ता एवं वयासी किण्णं पुत्ता सागरएणं दारएणं

अहं खलु त्वां तस्मै दास्यामि यस्य खलु त्वमिष्टा=अभिलषिता कान्ता प्रिया मनोज्ञा मनोमा=मनोगता भविष्यति, इति=एवं सुकुमारिकां दारिकां ताभिरिष्टाभिर्वाग्भिः 'समासासेइ' समाश्वासयति, समाश्वास्य प्रतिविसर्जयति=प्रस्थापयति ॥ १० ॥

मूलम्–तएणं से सागरदत्ते एगं महं दमगपुरिसं पासइ दंडिखंडनिवसणं खंडगमल्लगघडगहत्थगयं मच्छियासहस्सेहिं

दहामि जस्स णं तुमं इट्ठा जाव मणामा भविस्ससित्ति सूमालियं दारियं-ताहिं इट्ठाहिं वग्गूहिं समासासेइ, समासासित्ता पडिविसज्जेइ) वहीं भित्ति के पीछे छुपा हुआ सागरदत्त सार्थवाह सागर–के उन वचनों को सुन रहा था। सो सुनकरके स्वयं बडा लज्जित हुआ तथा दूसरोंसे भी उसे बड़ी शर्म आई इस तरह स्व और पर से लजाना हुआ वह जिन-दत्त के घर से बाहर निकल गया। और जाकर अपने घर पहुँचा। वहां पहुँच कर उसने अपनी पुत्री सुकुमारिका दारिका को बुलाया –बुलाने पर जब वह आ गई तब उसे उसने अपनी गोदी में बैठा लिया बैठानेके बाद फिर उसने उससे पूछा बेटी! सागरने तुम्हें किस कारण से छोड़ दिया है मैं तुम्हें उसी के दूंगा। कि जिस के लिये तुम अच्छी तरह इष्टा, कान्ता, प्रिया, मनोज्ञा एवं मनोमा होओगी, इस प्रकार उसने सुकुमारिका दारिकाको उनर इष्ट वचनों द्वारा अच्छी तरह आश्वासन दिया–धैर्य बँधाया–और आश्वासन देकर उसे विसर्जित करदिया। सू० १०

मुक्का ? अहं णं तुमं तस्स दाहामि जस्सणं तुमं इट्ठा जाव मणामा भविस्ससित्ति सूमालियं दारियं ताहिं इट्ठाहिं वग्गूहिं समासासेइ, समासासित्ता पडिविसज्जेइ) त्यां ज भींतनी पाछळ छुपाईने सागरदत्त सार्थवाह सागरनी ते बधी वातने सांभळी रह्यो हतो. सांभळी ते बहुज लज्जित थयो तेमज बीजा-ओथी पण ते खूबज लज्जित थयो आ रीते 'जाते' अने बीजाओथी लजातो ते जिनदत्तना घेरथी बहार नीकळी गयो अने नीकळीने पोताने घेर पहोंच्यो. त्यां जईने तेणे पोतानी पुत्री सुकुमारिका दारिकाने बोलावी ज्यारे ते सुकुमारिका दारिका आवी गई त्यारे तेने पोताना खोळामां बेसाडी लीधी बेसाडीने तेणे तेने पूछ्युं हे बेटी! शा कारणथी सागरे तने त्यजी छे? तने हुं ते पुरुषने ज आपीश के जेना माटे तुं सारी रीते ईष्टा, कांता, प्रिया, मनोज्ञा अने मनोमा थशे आ रीते तेणे सुकुमार दारिकाने पोताना ईष्ट वच नोथी सारीरीते आश्वासन आप्युं अने त्यार पछी तेने विदाय आपी ॥सू०१०॥

जाव अन्निज्जमाणमग्गं, तएणं से सागरदत्ते कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया! एयं दमगपुरिसं विउलेणं असणपाणखाइमसाइमं पलोभेहि पलोभित्ता गिहं अणुप्पवेसेह अणुप्पवेसित्ता खंडगमल्लगं खंडघडगं ते एगंते एडेह एडित्ता अलंकारियकम्मं कारेह कारित्ता ण्हायं कयबलि० जाव सव्वालंकारविभूसियं करेह करित्ता मणुण्णं असणपाणखाइमसाइमं भोयावेह भोयावित्ता मम अंतियं उवणेह, तएणं कोडुंबियपुरिसा जाव पडिसुणेंति पडिसुणित्ता जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तं दमगं असणं उवप्पलोभेंति उवप्पलोभित्ता सयं गिहं अणुपवेसिंति अणुपवेसित्ता तं खंडगमल्लगं खंडगघडगं च तस्स दमगपुरिसस्स एगंते एडंति, तएणं से दमगे तंसि खंडमल्लगंसि खंडघडगंसि य एगंते एडिज्जमाणंसि महया२ सद्देणं आरसइ, तएणं से सागरदत्ते तस्स दमगपुरिसस्स तं महया२ आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी—किण्णं देवाणुप्पिया! एस दमगपुरिसे महया महया सद्देणं आरसइ? तएणं ते कोडुंबियपुरिसा एवं वयासी—एस णं सामी! तंसि खंडमल्लगंसि खंडघडगंसि एगंते एडिज्जमाणंसि महया महया सद्देणं आरसइ, तएणं से सागरदत्ते सत्थ० ते कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी—मा णं तुब्भे देवाणुप्पिया! एयस्स दमगस्स तं

खंड जाव एडेह पासे ठवेह जहा णं पत्तियं भवइ, ते वि तहेव ठविंति. तएणं ते कोडुंबियपुरिसा तस्स दमगस्स अलंकारियकम्मं करेंति करित्ता सयपागसहस्सपागेहिं तिल्लेहिं अब्भंगेंति अब्भंगिए समाणे सुरभिगंधुव्वट्टणेणं गायं उव्वट्टिंति२ उसिणोदगेणं गंधोदगेणं सीतोदगेणं ण्हाणेंति पम्हल सुकुमाल गंधकासाइयाए। गायाइं लूहांति लूहित्ता हंसलक्खणं पट्टसाडगं परिहेंति परिहित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेंति करित्ता विउलं असणपाणखाइमसाइमं भोयावेंति भोयावित्ता सागरदत्तस्स उवणेंति, तएणं सागरदत्ते सूमालियं दारियं ण्हायं जाव सव्वालंकारविभूसियं करिता तं दमगपुरिसं एवं वयासी—देवाणुप्पिया! मम धूया इट्ठा एयं णं अहं तव भारियत्ताए दलामि भद्दियाए भद्दओ भविज्जासि, तएणं से दमगपुरिसे सागरदतस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति पडिसुणिता सूमालियाए दारियाए सद्धिं वासघरं अणुपविसइ अणुपविसित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिमंसि निवज्जइ, तएणं से दमगपुरिसे सूमालियाए इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ, सेसं जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता वासघराओ निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता खंडमल्लगं खंडघडगं च गहाय मारामुक्के विव काए जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए, तएणं सा सूमालिया जाव गएणं से दमगपुरिसे त्तिकट्टु ओहयमण जाव झियायइ ॥ सू० ११ ॥

टीका—' तएणं से ' इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु स सागरदत्तः सार्थवाहोऽन्यदा=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् काले ' उप्पिं आगासतलगंसि ' उपरि आकाशतलके=प्रासादोपरिभागे , सुहनिसण्णे ' सुखेनोपविष्टः, राजमार्गमवलोकमानः २ तिष्ठति । ततः खलु स सागरदत्त एकं महान्त ' दमगपुरिसं ' द्रमनपुरुषं ' दमग ' इति देशीयः शब्दः दरिद्रपुरुषं पश्यति, किम्भूतम् ? इत्याह-' दंडिखंड निवसणं ' दण्डिखण्डनिवसनं=दण्डि-कृतसन्धानं जीर्णवस्त्र तस्य खण्डं तदेव निवसनं परिधानवस्त्रं यस्य स दण्डिखण्डनिवसनस्तम्, तथा-, खंडमल्लग घडगहत्थगयं ' खण्डमल्लकघटकहस्तगतं= खण्डमल्लकं-खण्डशरावं स्फुटितशरावं भिक्षापात्रं, तथा खण्डघटकश्च=खण्डरूपो घटः स्फुटितस्य घटस्य भागः स एव जलपात्रं, एतद् द्वयं हस्तगतं यस्य तम्, ' मच्छियासहस्सेहिं जाव अन्निज्जमाणमग्गं ' मक्षिकासहस्रै यावत् अन्वीयमानमार्गं, शरीरवस्त्रादेर्मलिनत्वात् तत्पृष्ठतो मक्षिका आप

'तएणं से सागरदत्ते' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं से सागरदत्ते)इसके बाद सागरदत्तने किसी एक समय " उप्पिं आगासतलगंसि " अपने प्रासाद के ऊपर सुख पूर्वक बैठी हुई स्थिति में राजमार्ग का अवलोकन करते समय (एगं महं दमगपुरिसं पासइ) एक अत्यंत दरिद्र पुरुष को देखा (दंडिखंडनिवसणं खंडगमल्लगघडगहत्थगयं मच्छियासहस्सेहिं जाव अन्निज्जमाणमग्गं) जो जीर्णवस्त्र के जुड़े हुए चिथडे को पहिने था और जिसके हाथ में खंडमल्लकथा-फुटा हुआ मिट्टि के खप्पर था - तथा पानी पीने के लिये फुटे हुए घट का एक खप्पर था । हजारो मक्खिया जिसके पीछे पीछे, शरीर और वस्त्रो के मलिन होने से भिन्न २ करती हुई उड़ रही

' तएणं से सागरदत्ते ' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं से सागरदत्ते) त्यार બાદ સાગરદત્ત કોઈ એક વખત (उप्पिं आगासतलगंसि) પોતાના મહેલની ઉપર સુખેથી બેસીને રાજમાર્ગનું અવલોકનકરતો હતો. ત્યારે તેણે (एगं महं दमगपुरिसं पासइ) એક ખૂબજ દરિદ્ર-કંગાળ-પુરુષને જોયો. (दंडिखंडनिवसणं खंडगमल्लगघडगहत्थगयं मच्छियासहस्सेहिं जाव अन्निज्जमाणमग्गं) તેણે જૂના વસ્ત્રના ચીથરાઓ પહેરેલા હતા અને તેના હાથમાં ' ખંડમલ્લક હતું ' એટલે કે ફુટી ગયેલા માટીના વાસણનો એક કકડો હતો તેમજપાણી પીવા માટે ફુટેલી માટલીનું એક ખપ્પર હતું હજારો માખીઓ તેનીપાછળ પાછળ-શરીર અને વસ્ત્રોની મલીનતાને લીધે ઉડી રહી હતી.

तन्तीत्यर्थः । ततः खलु स सागरदत्त कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत् हे देवानुप्रियाः ! यूयं खलु एतं द्रमकपुरुषं =रङ्कपुरुषं विपुलेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन प्रलोभयत प्रलोभ्य गृहमनुप्रवेशयत, अनुप्रवेश्य खंडकमल्लकं= खण्डशरावं खण्डघटकं=पानीयपात्रं 'से' तस्य द्रमकपुरुषस्य एकान्ते=एकान्त स्थाने 'एडेह' निक्षेपयत, निक्षेप्य अलंकारिककर्म = केशनखच्छेदनादिकं नापितादिभिः कारयत, कारयित्वा स्नातं कृतबलिकर्माणं यावत् सर्वालङ्कार-

थीं । (तए णं से सागरदत्ते कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! एयं दमगपुरिसं विउलेणं असणपाण-खाइम साइमं पलोभेइ, पलोभित्ता गिहं अणुपवेसेह, अणुपवेसित्ता खंडगमल्लगं खंडघडगं तं एगंते एडेह एडित्ता अलंकारिकम्मं कारेह कारित्ता ण्हायं कयबलि० जाव सव्वालंकारविभूसियं करेह करित्ता मणुण्णं असणपाणखाइमसाइमं भोयावेह, भोयावित्ता मम अंतियं उवणेह) इसके बाद सागरदत्तने आज्ञाकारी पुरुषों को बुलाया। बुलाकर उसने इस प्रकार कहा देवानुप्रियो। तुम लोग इस दरिद्र पुरुषको विपुल अशन, पान, खाद्य और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहारका प्रलोभन दो-प्रलोभन देकर फिर इसे घर में भीतर करलो। जब यह घरके भीतर हो जावेगा तब तुमलोग इसके ये खंडमल्ल (फटी लंगोटी) और खंडघटक इससे छुड़ा-कर किसी एकान्त-सुरक्षित-स्थान में रखदो। बाद में नापित (नाई) को बुलाकर इसके सुन्दर ढंग से बाल बनवाओ नखआदि जो बढ़ रहे

(तएणं से सागरदत्ते कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! एयं दमगपुरिसं विउलेणं असणपाणखाइमसाइमं पलोभेइ, पलोभित्ता गिहं अणुप्पवेसेह, अणुप्पवेसित्ता खंडगमल्लगं खंड घडगं तं एगं ते एडेह, एडित्ता अलं-कारिकम्मं कारेह कारित्ता ण्हायं कयबलि० जाव सव्वालंकारविभूसियं करेह करित्ता मणुण्णं असणपाणखाइमसाइमं भोयावेह, भोयावित्ता मम अंतियं उवणेह)

ત્યારપછી સાગરદત્તે આજ્ઞાકારી પુરૂષોને બોલાવ્યા. બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ-કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો આ દરિદ્ર પુરૂષને પુષ્કળ પ્રમા-ણમાં અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહારની લાલચ આપો. લાલચ આપીને તેને ઘરની અંદર બોલાવી લો. જ્યારે તે ઘરમા આવી જાય ત્યારે તમે તેની પાસેના ખંડમલ્લ અને ખંડઘટક લઇને તેને એકાંત સુરક્ષિત સ્થાનમાં મૂકી દો. ત્યારપછી હજામને બોલાવીને તેના સરસ રીતે વાળ કપાવી નાખો અને વધી ગયેલા નખ વગેરેને કપાવી નાખો. ત્યારપછી તેને સ્નાન

विभूषितं कुरुत कृत्वा 'मणुण्णं' मनोज्ञं=रुचिरम् अशनपानखाद्यस्वाद्य भोजयत भोजयित्वा ममान्तिकं=समीपमुपनयत। ततः खलु कौटुम्बिकपुरुषा यावत्-प्रतिशृण्वन्ति='तथाऽस्तु' इति कृत्वा तदाज्ञां स्वीकुर्वन्ति प्रतिश्रुत्य यत्रैव स द्रमकपुरुषः=रङ्कपुरुषः, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तं द्रमकं रुचिरेण विपुलेनाशनादिना प्रलोभयन्ति प्रलोभ्य स्वकं गृहमनुप्रवेशयन्ति, अनुप्रवेश्य त खण्डकमल्लकं खण्डकघटकं च तस्य द्रमकपुरुषस्यैकान्ते 'एडंति' निक्षेपयन्ति, ततः खलु स द्रमकस्तस्मिन् खण्डमल्लके खण्डघटके च एकान्ते ''एडिज्जमाणंसि' निक्षेप्यमाणे सति महता २ शब्देन 'आरसइ' आक्रन्दति। ततः खलु स सागरदत्तस्तस्य द्रमकपुरुषस्य तं महान्तं 'आरसियइ सद्दं' आक्रन्दनशब्दं श्रुत्वा निशम्य कौटु-

---

हैं उन्हें कटवाओ। उसके पश्चात् इसे स्नान कराओ। बाद में इससे पशु पक्षी आदिको अन्नादिका भागरूप बलिकर्म आदिकरवाओ-जब यह बलिकर्म आदिकर चुके तब तुमलोग इसे समस्त अलंकारो से विभूषित करो, विभूषित करके फिर इसे मनोज्ञ अशन, पान, खाद्य, एवं स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार खिलाओ-खिलाकर के बाद में फिर हमारे पास इसे ले आओ। (तएणं कोडुंबियपुरिसा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता, जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं दमगं असणं उवप्पलोभेंति, उवप्पलोभित्ता सयं गिहं अणुपवेसिंति अणुपविसित्ता, तं खंडमल्लगं खंडगघडगं च तस्स दमगपुरिसस्स एगंते एडेंति, तएणं से दमगे तंसि खंडमल्लगंसि, खंडघडगंसि य एगंते एडिज्जमाणंसि महया २ सद्देणं आरसइ, तएणं से सागरदत्ते तस्स दमगपुरिसस्स तं महया२ आरसियसद्दं सोच्चा

કરાવો સ્નાન કરાવ્યા બાદ તેના હાથેથી પશુ-પક્ષી વગેરેને અન્ન વગેરેનો ભાગ આપવા રૂપ બલિકર્મ કરાવડાવો જ્યારે બલિકર્મની વિધિ પતી જાય ત્યારે તમે લોકો એને બધી જાતના અલંકારોથી શણગારો. શણગારીને તેને મનોજ્ઞ, અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહારો જમાડો. જમાડ્યા પછી તેને અમારી પાસે લઈ આવો.

(तएणं कोडुंबियपुरिसा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तं दमगं असणं उवप्पलोभेंते उवप्पलोभित्ता सयंगिहं अणुपवेसिंति, अणुपविसित्ता, तं खंडगमल्लगं खंडगघडगं च तस्स दमगपुरिसस्स एगंते एडेंति तएणं से दमगे तंसि खंडमल्लगंसि, खंडघडगंसि य एगंते एडिज्जमाणंसि महया २ सद्देणं आरसइ, तएणं से सागरदत्ते तस्स दमगपुरिसस्स तं महया२ आरसिय सद्दं सोच्चा निसम्म कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी)

म्बिकपुरुषानेवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः ! किं=केन कारणेन खलु एष द्रमकपुरुषो महता २ शब्देन आरसति=आक्रन्दति ? । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः एवमवदन्-एष खलु हे स्वामिन् ! तस्मिन् खण्डमल्लके खण्डघटके एकान्ते निक्षेप्यमाणे महता २ शब्देन आरसति=आक्रन्दति । ततः खलु स सागरदत्तः सार्थवाहस्तान् कौटुम्बिकपुरुषान् एवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः ! मा खलु यूयं एतस्य

निसम्म कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी) इस प्रकार की उन कौटुम्बिक ने सागरदत्त सेठ की इस आज्ञा को अच्छी तरह स्वीकार लिया और स्वीकारकर वहां जाकर उन्होंने उस दमक को अशन पान आदिरूप चतुर्विध आहार से बार २ लुभाया लुभाकर वे उसे अपने घर तक ले आये और अंत में अपने घर में उसे प्रवेश कराया । बाद में उन लोगोंने उस दमक पुरुष के फूटे हुए मिट्टी के दीपक के खंड को, तथा फूटे हुए घडे के खप्पर को उससे लेकर किसी सुरक्षित स्थान में रख दिया । जब उस दमकपुरुषने अपने खंडमल्लक(फटी लंगोटी) को और खंडघटकको अपने से लेकर एकान्त स्थानमें रखा जाता हुआ देखा-तो वह जोर जोरसे रोने लगा-उसके उस रोनेकी आवाजको सुनकर और उसे अपने चित्त में धारण कर सागरदत्तने कौटुम्बिक पुरुषों से इस प्रकार कहा-(किण्णं देवाणुप्पिया ! एसदमगपुरिसे महया २ सद्देणं आरसइ ३ तएणं ते कोडुंबियपुरिसा एवं वयासी एसणं सामी ! तंसि खंडमल्लगंसि खंडघडगंसि एगंते एडिज्जमाणंसि महया २ सद्देणं

આ જાતની સાગરદત્તની આજ્ઞાને તે કૌટુંબિક પુરૂષોએ સારી રીતે સ્વીકારી લીધી સ્વીકાર્યા બાદ તેઓ દરિદ્ર માણુસની પાસે ગયા ત્યાં જઈને તેમણે તેને બોલાવ્યો અને અશન, પાન વગેરે રૂપ ચાર જાતના આહારની વારંવાર લાલચ આપી. લલચાવીને તેઓ તેને ઘર સુધી લઈ આવ્યા અને છેવટે તેને ઘરમાં દાખલ કરી દીધો. ત્યારપછી તે લોકોએ તે દરિદ્ર માણુસની પાસેથી ફૂટેલા માટીના વાસણનો કટકો તેમજ ફૂટેલા માટલાના ખપ્પરને લઈને સુરક્ષિત સ્થાને મૂકી દીધુ જ્યારે તે દરિદ્ર માણસે પોતાના ખંડમલ્લકને અને ખંડઘટકને પોતાની પાસેથી છીનવીને એકાંત સ્થાનમાં મૂકતાં જોયું ત્યારે તે મોટેથી ઘાંટા પાડીને રડવા લાગ્યો. તેના રડવાના આવાજને સાંભળીને અને તેને પોતાના ચિત્તમા ધારણુ કરીને સાગરદત્તે કૌટુંબિક પુરૂષોને આ પ્રમાણે કહ્યુ.

(किण्णं देवाणुप्पिया ! एस दमगपुरिसे महया २ सद्देणं आरसइ, तएणं ते कोडुंबियपुरिसा एवं वयासी एसणं सामी ! तंसि खंडमल्लगंसि खंडघडगंसि एगंते एडिज्जमाणंसि महया २ सद्देणं आरसइ, तएणं से सागरदत्ते सत्थवाहे ते

द्रमकपुरुषस्य तत् खण्डमल्लकं खण्डघटकं यावत्-एकान्ते 'एडेह' निक्षेपयत अस्य परोक्षे मा स्थापयतेत्यर्थः, किन्तु पार्श्वे स्थापयत, यथा खलु 'पत्तियं' प्रत्ययः= विश्वासो भवति । तेऽपि कौटुम्बिकपुरुषास्तथैव स्थापयन्ति । ततः खलु ते कौटु-

---

आरसइ, तएणं से सागरदत्ते सत्थवाहे ते कोडुंबिय पुरिसे एवं वयासी) हे देवानुप्रियो ! क्या कारण है जो यह दमक पुरुष जोर २ से रो रहा है ? तब उन कौटुम्बिक पुरुषों ने ऐसा कहा कि हे स्वामिन् ! इसने ज्योंहीं अपने खंडमल्लक को और घटखंड को लेकर एक ओर सुरक्षित स्थान में रखे जाते हुए देखा वैसे ही यह बड़े जोर२ से रोने लगा है। ऐसा सुनकर सागरदत्त ने उन कौटुम्बिक पुरुषों से इस प्रकार कहा- (माणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! एयस्स दमगस्स तं खंड जाव एडेह, पासे ठवेह, जहाणं पत्तियं भवइ, तेवि तहेव ठवेंति, तएणं ते कोडुंबिय पुरिसा तस्स दमगस्स अलंकारियकम्मं करेंति, करित्ता सयपाग- सहस्सपागेहिं तिल्लेहिं अब्भगेंति, अब्भंगिए समाणे सुरभिगंधुव्व- ट्टणेणं गायं उव्वट्टिंति, २ उसिणोदगेणं गंधोदगेणं सीतोदगेणं ण्हावेंति) हे देवानुप्रियो ! तुम लोग इस दमक पुरुष के फूटे हुए मिट्टी के दीपक के खंड को और फूटे हुए घड़े के खप्पर को इससे लेकर परोक्ष में- अदृश्य स्थान में-मत रखो किन्तु इस के पास में ही-समक्षरखो, जिससे इसे अपनाविश्वास बना रहे । इस प्रकार सागरदत्त की बात

कोडुंबिय पुरिसे एवं एवं वयासी)

હે દેવાનુપ્રિયો ! શા કારણથી આ દરિદ્ર માણસ મોટેથી ઘાંટા પાડી પાડીને રડી રહ્યો છે ? ત્યારે તે કૌટુંબિક પુરૂષોએ આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સ્વામિન્ ! પોતાના ખંડમલ્લક અને ખંડઘટકને તેની પાસેથી લઇને બીજા સુરક્ષિત સ્થાને લઈ જતાં જોઇને આ દરિદ્ર માણસ મોટેથી રડવા લાગ્યો છે. આ પ્રમાણે સાંભળીને સાગરદત્તે કૌટુંબિક પુરૂષોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(माणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! एयस्स दमगस्स तं खंड जाव एडेह पासे ठवेह, जहाणं पत्तियं भवइ, ते वि तहेव ठवेंति, तएणं ते कोडुंवियपुरिसा तस्स दमगस्स अलंकारियकम्मं करेंति, करित्ता सयपागसहस्सपागेहिं तिल्लेहिं अब्भगेंति अब्भंगिए समाणे सुरभिगंधुव्वट्टणेणं गायं उव्वट्टिंति २ उसिं णोदगेणं गंधोदगेणं सीतोदगेणं ण्हावेंति)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો આ દરિદ્ર પુરૂષના ફૂટેલા માટીના દીપકના કટકાને અને ફૂટેલા ઘડાના ખપ્પરને એની પાસેથી લઇને દૂર એકાંતમાં મૂકશો નહિ પણ એની પાસે જ-એની સામે જ મૂકી રાખો. જેથી એને વિશ્વાસ રહે.

म्बिकपुरुषास्तस्य द्रमकस्य=रङ्कपुरुषस्य अलंकारिककर्म कारयन्ति कारयित्वा शत-पाक सहस्रपाकैस्तैलैरभ्यङ्गयति=मर्दयन्ति । अभ्यङ्गितः सन् सुरभिगन्धोद्वर्तनेन=सुगन्धिपिष्टकेन गात्रमुद्वर्तयन्ति, उद्वर्त्य उष्णोदकेन गन्धोदकेन शीतोदकेन स्नपयन्ति, स्नपयित्वा 'पम्हलसुकुमालगंधकासाइयाए' पक्ष्मलसुकुमारगन्ध-कापायिकया=पक्ष्मला=पक्ष्मवती मृदुरोमयुक्ता अत एव सुकुमारा तथा कषायेण रक्ता साटी कापायिका तया गात्राणि 'लूहंति' रूक्षयन्ति = प्रोञ्छयन्ति,

---

सुनकर उन आदेशकारी पुरुषों ने वैसा ही किया-अर्थात् उसके मल्लक-खंड और घटखंड दोनों को ही उसके समक्ष उन्होंने रख दिया। इसके बाद उन कौटुम्बिक पुरुषोंने उस दमक पुरुषका आलंकारिक कर्म करवाया । अब उसका अच्छी तरह अलंकारिक कर्म निष्पन्न हो चुका-तब उसके बाद उस द्रमक पुरुष केशरीर की उन लोगों ने शतपाक और सहस्र पाकवाले तैल से मालिश की-मालिश करनेके पश्चात्, सुगन्धि-पिष्टक-सुगंधितपिटी-से उसके शरीर का उपटन किया उस सुगंधित पिटी को उसके शरीर पर रगड़ २ कर मला इससे जो उसके शरीर पर मल जमा हुआ था वह चिकनाहट के संबन्ध से उस पिटीद्वारा निकल गया । जब उसके शरीर का उद्वर्त्तन हो चुका-तब फिर उन लोगों ने उसे उष्णोदक से गंधोदक से, एवं शीतोदक से स्नान कराया। स्नान कराकर बाद में उसका शरीर (पम्हलसुकुमारगंधकासाइयाए गायाइं लूहंति) पक्ष्मल-रूएँवाली-मृदुरोमयुक्त-सुकुमार-नरम, रँगी-हुई टुवाल से-अंगोछी-से-तौलिया से पोंछा । (लूहित्ता हंसलक्खणं

આ રીતે સાગરદત્તની વાત સાંભળીને તે આજ્ઞાકારી પુરૂષોએ તે પ્રમાણે જ કર્યું એટલે કે તેના મલ્લકખંડ અને ઘટખંડને તેની સામે જ મૂકી દીધા. ત્યારપછી તે કૌટુંબિક પુરૂષોએ તે દરિદ્ર માણસના વાળ અને નખ કપાવ્યા. જ્યારે આકામ સરસ રીતે પુરૂ થઇ ગયું ત્યારે તેઓએ દરિદ્ર માણસના શરીરને શતપાક અને સહસ્રપાકવાળા તેલથી માલિશ કર્યા બાદ સુગંધિપિષ્ટક-સુગંધિત પીઠી-તેના શરીરે ચોળીને ઉપટન કર્યું. એથી તેના શરીર ઉપર જેટલો મેલ હતો તે પીઠીની સ્નિગ્ધતાને લીધે સાફ થઈ ગયો જ્યારે તેના શરીરે પીઠી ચોળાઈ ગઈ ત્યારે તે લોકોએ તેને ગરમ પાણીથી, સુવાસિત પાણીથી અને ઠંડા પાણીથી સ્નાન કરાવ્યું. સ્નાન કરાવ્યા બાદ તેના શરીરને (पम्हल सुकुमार गंध कासाइयाए गायाइं लूहंति) પક્ષ્મલ-રૂંવાટાવાળા સુકોમળ, નરમ રંગીન ટુવાલથી લૂછ્યું.

रूक्षयित्वा 'हंसलक्खणं' हंसलक्षणं = हंसस्वरूपं तदिव शुक्लं स्वरूपं यस्य तत्, 'पट्टसाडगं' पट्टशाटकं=क्षौमवस्त्रं 'परिहेंति' परिधापयन्ति परिधाप्य सर्वालंकार-विभूषितं कुर्वन्ति, कृत्वा विपुलमशनपानखाद्यस्वाद्यं भोजयन्ति, भोजयित्वा सागरदत्तस्योपनयन्ति। ततः खलु सागरदत्तः सुकुमारिकां दारिकां स्नातां यावत्-सर्वालङ्कारभूषितां कृत्वा तं द्रमकपुरुषम् एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-हे देवानुप्रिय! एषा खलु मम दुहिता इष्टा, एतां खलु अहं तव भार्यात्वेन ददामि

पट्टसाडगं परिहेंति, परिहित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेंति, करित्ता विउलं असनपाणखाइमसाइमं भोयावेंति, भोयावित्ता सागरदत्तस्स उवणेंति) जब शारीरिक प्रत्येक अवयव ठीक २ अच्छी तरह से पोंछाजा चुका-तब फिर उन्होंने हँस चिह्नवाला अथवा हँस के जैसा शुभ्रपट्टशाटक-क्षौमवस्त्र उसको: पहिराया। क्षौमवस्त्र पहिराकर फिर उसको विपुल, अशन, पान, खाद्य एवं स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार का भोजन कराया। भोजन कराकर फिर वे उसको सागरदत्त के पास ले गये (तएणं सागरदत्ते सूमालियं दारियं ण्हायं जाव सव्वालंकार विभूसियं करित्ता तं दमगपुरिसं एवं वयासी-एसणं देवाणुप्पिया! मम धूया इट्ठा एयं णं अहं तव भारियत्ताए दलामि) सागरदत्त ने अपनी सुकुमारिका दारिका को स्नान कराकर यावत् समस्त अलंकारो से विभूषित करके उस द्रमक पुरुष से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय! यह मेरी लड़की है। और मुझे बहुत ही अधिक इष्ट, प्रिय, कान्त

(लूहित्ता हसलक्खणंपट्ट साडगं परिहेंति, परिहित्ता, सव्वालंकारविभूसियं करेंति, करित्ता विउलं असनपाणखाइमसाइमं भोयावेंति, भोयावित्ता, सागरदत्तस्स उवणेंति)

જ્યારે શરીરના બધા અંગો સરસ રીતે લુછાઈ ગયા ત્યારે તેઓએ હંસચિત્રિત અથવા તો હંસ જેવું સ્વચ્છ ધોળું પટ્ટશાટક ક્ષૌમ વસ્ત્ર પહેરાવ્યું. ક્ષૌમ વસ્ત્ર પહેરાવીને તેને વિપુલ અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહારો જમાડયા. જમાડયા પછી તેઓ તેને સાગરદત્તની પાસે લઈ ગયા

(तएणं सागरदत्ते सूमालियं दारियं ण्हायं जाव सव्वालंकारविभूसियं करित्ता तं दमगपुरिसं एवं वयासी-एसणं देवाणुप्पिया! मम धूया इट्ठा एयं णं अहं तव भारियत्ताए दलामि)

સાગરદત્તે પોતાની સુકુમારિકા દારિકાને સ્નાન કરાવીને યાવત્ બધી જાતના અલંકારોથી શણગારીને તે દરિદ્ર માણસને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય! આ મારી પુત્રી છે અને મને બહુ જ ઈષ્ટ, પ્રિય, કાંત, મનોજ્ઞ

'भद्दियाए' भद्रिकया=भाग्यशालिन्याऽनया त्वमपि भद्रको भाग्यशाली भविष्यसि। ततः खलु स द्रमकपुरुषः सागरदत्तस्यैतमर्थं प्रतिशृणोति=स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य सुकुमारिकया दारिकया सार्धं वासगृहमनुप्रविशति, सुकुमारिकया दारिकया सार्धं 'तलिगंसि' तल्ये=शयनीये 'नीवज्जइ' निषीदति उपविशति। ततः खलु स द्रमकपुरुषः सुकुमारिकाया इमं=पूर्वोक्तम् एतद्रूपं=पूर्वोक्तस्वरूपम् अङ्गस्पर्शं 'पडिसंवेदेइ' प्रतिसंवेदयति=प्रत्यनुभवति शेषं यथा सागरस्य=शेषवर्णनं सागरदारकवद् बोध्यम्, यावत्-अत्र यावच्छब्दादिदं द्रष्टव्यम्-'असिपत्रादीनां स्पर्शादप्यनिष्टतरं तदङ्गस्पर्शं ज्ञात्वा सागरदारकवद् द्रमकपुरुषोऽपि तां सुकुमारिकां सुखप्रसुप्तां ज्ञात्वा, शयनीयादुत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय वासगृहाद् निर्गच्छति, निर्गत्य खण्डमल्लकं=स्फुटि-

---

मनोज्ञ एवं मनोम है। मैं अपनी इस पुत्री को तुम्हें तुम्हारी भार्या के रूप में प्रदान करता हूँ (भद्दियाए भद्दओ भविज्जसि, तएणं से दमगपुरिसे सागरदत्तस्स एयमट्ठं पडि०२ सूमालियाए दारियाए सद्धिं वासघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिगंसि निवज्जइ) इस भाग्यशालिनी से तुम भी भाग्यशाली बनजाओगे। दमकपुरुष ने सागरदत्त के इस कथनरूप अर्थ को अंगीकार करलिया, और फिर वह उस सुकुमारिका दारिका के साथ वासगृह में प्रविष्ट हुआ। वहां जाकर वह उस सुकुमारिका दारिका के साथ साथ एक ही पलंग पर-बैठ गया-सोगया (तएणं से दमगपुरिसे सूमालियाए इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ,सेसं जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता वासघराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता खंडमल्लगं

અને મનોમ છે હું મારી આ પુત્રીને તમને તમારી પત્નીના રૂપમાં અર્પું છું. भद्दियाए भद्दओ भविज्जसि, तएणं से दमगपुरिसे सागरदत्तस्स एयमट्ठं पडि० २ सूमालियाए दारियाए सद्धिं वासघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिगंसि निवज्जइ)

આ ભાગ્યશીલાથી તમે પણ ભાગ્યશાળી થઈ જશો. તે દરિદ્ર પુરૂષે સાગરદત્તની એ વાતને સ્વીકારી લીધી અને ત્યારબાદ તે સુકુમારિકા દારિકાની સાથે વાસગૃહમાં પ્રવિષ્ટ થયો. ત્યાં જઈને તે દરિદ્ર માણસ સુકુમારિકા દારિકાની સાથે એક જ શય્યા ઉપર બેસી ગયો.

(तएणं से दमगपुरिसे सूमालियाए इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ, सेसं जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता वासघराओ निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता खंडमल्लगं खंडघडगं च गहाय मारामुक्के विव काए जामेव

तमिक्षापात्रं, खण्डघटकं=स्फुटितपानीयपात्रं च गृहीत्वा 'मारामुक्के विव काए' मारामुक्तइव काकः मारा-शूना प्राणिवधस्थानं ततो मुक्तः निःसृतः काक इव, अथवा-माराद्-मारकपुरुषात् तदीयहस्तादित्यर्थः मुक्त-विच्छुटितः काक इव शीघ्रतया यस्या एव दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः। ततः खलु सा सुकुमारिका यावद्-ततो मुहूर्त्तान्तरे प्रतिबुद्धा सती पतिमपश्यन्ती शयनीयादुत्तिष्ठति, उत्थाय द्रमकपुरुषस्य मार्गणगवेषणं कुर्वाणा वासगृहस्य द्वारं विघाटितं पश्यति

खंडघडगं च गहाय मारामुक्के विव काए जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए) उस समय उस दमक पुरुष को उस सुकुमारिका दारिका का वह पूर्वोक्त तथा पूर्वोक्त स्वरूपवाला अंगस्पर्श अनुभव में आया। शेष वर्णन सागरदारककी तरह जानना चाहिये। इस तरह वह दमक पुरुष भी असिपत्रादिकों के स्पर्श से भी अधिक अनिष्ट उसके अंग-स्पर्श को जानकरके, सागरदारक की तरह, सुख प्रसुप्त उस सुकुमारिका दारिका को जान उसे छोडने के लिये पलंग से उठा और उठकर उस वास घर से बाहिर निकला-निकलकर खंडमल्लक-फूटे हुए भिक्षापात्र को तथा खंडघटक-फूटे हुए पानी पीने के पात्र को-लेकर वध्यस्थान से अथवा मारक पुरुष के हाथ से मुक्त हुए काककी तरह वह बहुत जल्दी जहां से आया था उसी ओर चलदिया (तएणं सा सूमालिया जाव गएणं से दमगपुरिसे त्ति कट्टु ओहयमण जाव झियायइ) इसके थोड़ीदेर बाद वह सुकुमारिका दारिका जगी और पतिको अपने पास न

दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए)

તે વખતે તે દરિદ્ર માણુસને સુકુમારિકા દારિકાના અંગોના સ્પર્શ પહેલાં વર્ણન કરવાંમાં આવ્યા પ્રમાણેના કઠોર જ લાગ્યો. (અહીં સાગરદારક જેવું જ વર્ણન સમજી જવુ જોઇએ.) આ રીતે તે દરિદ્ર માણુસ પણુ તરવારના સ્પર્શ કરતાં પણુ વધારે અનિષ્ટકર તેનો સ્પર્શ જાણીને સાગર દારકની જેમજ સુખેથી સૂઇ ગયેલી તે સુકુમારિકા દારિકાને જોઈને, તેનો ત્યાગ કરવા માટે પલંગ ઉપરથી ઊભો થયો અને ઊભો થઈને વાસગૃહની બહાર નીકળ્યો અને નીકળીને ખંડમલ્લક-ફૂટેલા ભિક્ષાપાત્ર તેમજ ખંડઘટક-ફૂટેલા પાણી પીવા માટેના પાત્રને લઇને વધસ્થાનથી અથવા તો મારક (હિંસક) પુરૂષના હાથથી મુક્ત થયેલા કાગડાની જેમ તે ત્વરાથી જ્યાથી તે આવ્યો હતો તે તરફ જ જતો રહ્યો. (तएणं सा सूमालिया जाव गएणं से दमगपुरिसे त्ति कट्टु ओहमण जाव झियायइ) થોડા વખત પછી તે સુકુમારિકા દારિકા જાગી અને પતિને પોતાની પાસે ન જોઇને

दृष्ट्वा एवमवादीत्'-इति कृत्वा, अपहतमनः संकल्पा यावद्-आर्तध्यानं ध्यायति ॥ सू० ११ ॥

मूलम्-तएणं सा भद्दा कल्लं पाउ० दासचेडिं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी जाव सागरदत्तस्स एयमट्ठं निवेदेइ, तएणं से सागरदत्ते तहेव संभंते समाणे जेणेव वासहरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सूमालियं दारियं अंके निवेसेइ निवेसित्ता एवं वयासी-अहो णं तुमं पुत्ता ! पुरा पोराणा णं जाव पच्चणुब्भवमाणी विहरसि तं मा णं तुमं पुत्ता ! ओहयमण जाव झियाहि तुमं णं पुत्ता मम महाणसंसि विपुलं असणं४ जहा पुट्टिला जाव परिभाएमाणी विहराहि, तएणं सा सुमालिया दारिया एयमट्ठं पडिसुणेइ पडिसुणित्ता माहणसंसि विपुलं असणं जाव दलमाणी विहरइ ॥ सू०११ ॥

टीका—'तएणं सा' इत्यादि । ततः खलु सा भद्रा सार्थवाही=सुकुमारिका दारिकाया जननी 'कल्लं' कल्ये द्वितीयदिवसे प्रादुः प्रभातायां रजन्यां यावत्-

---

देखकर पलंग से उठी । उठकर उसने उस द्रमकपुरुषकी मार्गणा एवं गवेषणा की । उसमें उसने वासगृह के द्वार को खुला हुआ देखा । देखकर उसने विचारा कि वह द्रमक पुरुष अब चला गया है । ऐसा सोचकर वह अपहत मनः संकल्प होकर यावत् आर्तध्यान करने लगी ॥सू० ११॥

'तएणं सा भद्दा कल्लं' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (सा भद्दा कल्लं पाउ० दासचेडिं

શય્યા ઉપરથી ઊભી થઈ. ઊભી થઈને તેણે તે દરિદ્ર માણુસની શોધ ખોળ કરી. તેણે વિચાર કર્યો કે તે દરિદ્ર માણુસ તો જતો રહ્યો છે આ રીતે વિચાર કરીને તે અપહતમનઃસંકલ્પા થઈને યાવત્ આર્તધ્યાનમાં ડૂબી ગઈ. ॥ સૂત્ર ૧૧ ॥

'तएणं सा भद्दा कल्लं' इत्यादि

ટીકાર્થ-(तएणं) ત્યારબાદ (सा भद्दा कल्लं पाउ० दासचेडिं सद्दावेइ, सद्दा-

तेजसा ज्वलति सूर्ये-उदिते दासचेटीं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-यावत् सागरदत्तस्यैतमर्थं निवेदयति, अत्र यावच्छब्देन पूर्वसूत्रोक्तवर्णनमनुसन्धेयम्, तथा-वधूवरयोर्मुखधावनिकामुपनयेति। एवमुक्तासती दासचेटी वासगृहमुपागत्य सुकुमारिकामार्तध्यानं ध्यायन्तीं पश्यति, दृष्ट्वा एवमवादीत्-हे देवानुप्रिये ! किं खलु त्वम् अपहतमनः संकल्पा ध्यायसि ? ततः सुकुमारिका तां दासचेटीमेवमवादीत्-स द्रमकपुरुषो मां सुखप्रसुप्तां ज्ञात्वा मम पार्श्वादुत्थाय निर्गतः, ततोमुहूर्तान्तरेऽहमुत्थाय तमपश्यन्ती 'गतः स द्रमकपुरुषः, इति कृत्वा ऽऽर्तध्यानं ध्यायामि

सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी जाव सागरदत्तस्स एयमट्ठं निवेदेइ) सुकुमारिका दारिकाकी माता उस भद्रा ने द्वितीय दिन जब प्रातः काल हो गया था-और सूर्य उदित हो चुका था-तब अपनी दासचेटी को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-यहां यावत् शब्द से यह पूर्वसूत्र गत वर्णन जोड़लेना चाहिये जैसे, भद्राने बुलाकर उससे ऐसा कहा कि तूं वधू और वर के लिये यह मुख धोने की सामग्री दतौन आदि -लेजा जब भद्रा ने उससे ऐसा कहा तब वह दासचेटी वासगृह में गई -और वहां जाकर उसने सुकुमारिका को आर्तध्यान करती हुई देखा तब देखकर उसने उससे ऐसा कहा-देवानुप्रिये। क्या कारण है जो अपहृतमनः संकल्प होकर तुम आर्तध्यान कर रहीं हो-तब सुकुमारिका दारिका ने उस दासचेटी से इस प्रकार कहा-वह दमक पुरुष मुझे यहां सुख प्रसुप्त जान छोड़कर चला गया है। जब मैं थोड़ी देरबाद उठी तो मैंने उसे अपने पास नहीं देखा, वासभवन का द्वार खुला हुआ

वित्ता, एवं वयासी जाव सागरदत्तस्स एयमट्ठं निवेदेइ) सुकुमारिका દારિકાની માતા ભદ્રાએ બીજા દિવસે જ્યારે સવાર થઈ ગયું અને સૂર્ય ઉદય પામ્યો ત્યારે તેણે દાસીને બોલાવી અને બોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યું-અહીં યાવત્ શબ્દથી પહેલાંના સૂત્રની જેમ જ વર્ણન સમજી લેવું જોઈએ. જેમકે ભદ્રાએ તેને બોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યું કે વધૂ અને વરના મુખ પ્રક્ષાલન માટે દાતણ વગેરે લઈ જા. જ્યારે ભદ્રાએ તેને આ પ્રમાણે કહ્યુ ત્યારે તે દાસી વાસગૃહમાં ગઈ અને ત્યાં જઈને તેણે સુકુમારિકા દારિકાને આર્તધ્યાન કરતી જોઈ. ત્યારે આ પ્રમાણે તેની હાલત જોઈને તેણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયે ! શા કારણથી તમે અપહતમનઃ સંકલ્પ થઈને આર્તધ્યાન કરી રહ્યાં છો. ત્યારે સુકુમાર દારિકાએ તે દાસીને આ પ્રમાણે કહ્યુ-કે તે દરિદ્ર માણસ મને અહીં સુખેથી સૂતેલી છોડીને જતો રહ્યો છે જ્યારે થોડા વખત પછી હું જાગી ત્યારે મેં તેને મારી પાસે જોયો નહિ અને મેં વાસગૃહના બારણાને પણ ખુલ્લું

ततः सा दासचेटी सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य समीपमागत्यैतमर्थं निवेदयतीति योजना बोध्या। ततः खलु स सागरदत्तस्तथैव 'संभंते' संभ्रान्तः=उद्विग्नः सन् यत्रैव वासगृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सुकुमारिकां दारिकामङ्के निवेशयति, निवेश्य एवमवादीत्-अहो! इत्याश्चर्ये खलु हे पुत्रि! त्व 'पुरा' पुरा=पूर्वभवेषु 'पोराणाणं' पुराणानाम्=अतीतकालकृतानां, यावत्=अत्र यावच्छब्देनेदं बोध्यम्-'दुच्चिण्णाणं दुप्परक्कंताणं कडाणं पावाणं कम्माणं पावगं फलवित्ति

देखा तब मैं समझ गई कि वह यहां से चला गया है। इस प्रकार मैं चिन्ता में पड़ रही हूँ। सुकुमारिका को इस बात को सुनकर दासचेटी ने उसी समय वहां से वापिस आकर सागरदत्त को इस बात की खबर दी-" इस प्रकार यह पूर्वोक्त पाठ यहां लगा लेना चाहिये-(तएणं से सागरदत्ते तहेव संभंते समाणे जेणेव वासहरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूमालियं दारियं अंके निवेसेइ, निवेसित्ता एवं वयासी, अहोणं तुमं पुत्ता पुरा पोराणाणं जाव पच्चणुब्भवमाणी विहरसि तं माणं तुमं पुत्ता ओहयमण जाव झियाहि-तुमं णं पुत्ता मम महाणसंसि विपुलं असणं४ जहा पुट्टिला जाव परिभाएमाणी विहराहि) इसके बाद वह सागरदत्त पहिले जैसा उद्विग्न चित्त होकर जहां वासगृह था वहां गया। वहां जा कर उसने सुकुमारिका दारिका को अपनी गोद में बैठा लिया और बैठाकर कहने लगा-हे पुत्रि! तुमने पहिले भवों में जो दुश्चीर्ण दुष्पराक्रान्त, (कठिनताई से भोगने योग्य एवं कृत ज्ञानावरणीय आदि अशुभ कर्म उपार्जित

જોયું ત્યારે મને ચોક્કસપણે ખાત્રી થઈ ગઈ કે તે અહીંથી ચાલ્યો ગયો છે. આ રીતે હુ ચિંતામાં પડી છું. સુકુમારિકાની આ વાત સાંભળીને દાસીએ તરત જ સાગરદત્તને ખબર આપી. આ રીતે અહીં પહેલાનો પાઠ જાણી લેવો જોઈએ.

तएणं से सागरदत्ते तहेव संभंते समाणे, जेणेव वासहरे तेणेव उवागच्छइ,उवागच्छित्ता सूमालियं दारियं अंके निवेसेइ,निवेसित्ता एवं वयासी अहो णं तुमं पुत्ता! पुरा पोराणाणं जाव पच्चणुब्भवमाणी विहरसि तं माणं तुमं पुत्ता ओहयमण जाव झियाहि-तुमं णं पुत्ता मम महाणसंसि विपुलं असणं ४ जहा पुट्टिला जाव परिभाएमाणी विहराहि)

ત્યારપછી સાગરદત્ત પહેલાંની જેમ વ્યાકુળ ચિત્તવાળો થઈને જ્યાં વાસગૃહ હતું ત્યાં આવ્યો. ત્યાં આવીને તેણે સુકુમારિકા દારિકાને પોતાના ખોળામાં બેસાડી લીધી અને બેસાડીને કહેવા લાગ્યા કે હે પુત્રિ! તેં પહેલા ભવમા જે કંઈ દુશ્ચીર્ણ, દુષ્પરાક્રાંત અને કૃતજ્ઞાનાવરણીય વગેરે અશુભ કર્મો ઉપા-

विसेसं' इति-दुश्चीर्णानां-दुश्चरितानां वाङ्मनोजनित मृषावादादिकर्मणामित्यर्थः, किं भूतानां तेषां? दुष्पराक्रान्तानां-कायिकानां प्राणिहिंसाऽदत्तादानादीनां, कृतानां प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशभेदेन बद्धानां पापानां=अशुभानां कर्मणां=ज्ञानावरणीयादीनां पापकम्-अशुभं, फलवृत्तिविशेषम्, प्रत्यनुभवन्ती=वेदयन्ती विहरसि=वर्तसे तत्=तस्माद् मा खलु त्वं हे पुत्रि! अपहृतमनःसंकल्पा यावद् ध्याय=आर्तध्यानं मा कुरु इत्यर्थः, त्वं खलु हे पुत्रि! मम 'महाणसंसि' महानसे-पाकशालायां विपुलमशनं पानं खाद्यं स्वाद्यं यथा पोट्टिला यावत् परिभाजयन्ती=श्रमणादिभ्यः प्रविभागं कुर्वती 'विहराहि' विहर=तिष्ठ। ततः खलु सा सुकु-

किये-प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश बंधके भेदसे बांधे हैं-उन्हीं पुराने अशुभ ज्ञानावरणीय आदि कर्मों के तुम अशुभ फल विशेष को इस समय भोग रही हो। पूर्व भवों में जो पाप किये हैं वेही यहां " "पुराण" शब्द से गृहीत हुए हैं। पाप शब्द यहां अशुभ ज्ञानावरणीय आदि कर्मों का बोधक है। ये अशुभ ज्ञानावरणीय आदि कर्म जीव अशुभ मन, वचन और काय की प्रवृत्ति से जन्य मृषावाद आदि क्रियाओं से, तथा प्राणिहिंसा, अदत्तादान आदि कुकृत्यों से बांधता है। बांधते समय इनमें प्रकृति, स्थिति अनुभाग और प्रदेश बंधरूप विभाग हो जाता है। अधिक स्थिति और अधिक अनुभाग बंध इनमें संक्लेश परिणामों से पडता है। इसलिये हे पुत्रि। तुम अपहृतमनः संकल्प होकर यावत् आर्तध्यान मत करो। तुम तो मेरी भोजन शाला में चतुर्विध आहार तैयार करा कर पोट्टिला की तरह श्रमण आदि

र्जित कर्यां हतां-प्रकृति, स्थिति, अनुभाग अने प्रदेश बंधना भेदथी बांध्या छे अत्यारे तुं तेज पहेलांना अशुभ ज्ञानावरणीय वगेरे कर्मोना अशुभ फळ विशेषने भोगवी रही छे. पूर्व भवमां जे पाप करवामां आव्यां होय तेने अही "पुराण" शब्दथी ग्रहण करवामा आव्या छे. अहीं पाप शब्द अशुभ ज्ञानावरणीय वगेरे कर्मोने स्पष्ट करे छे आ बधा अशुभ ज्ञानावरणीय वगेरे कर्मो जीव अशुभ-मन, वचन, अने कायनी प्रवृत्तिथी जन्य मृषावाद वगेरे क्रियाओथी तेमज प्राणीओनी हिंसा, अदत्तादान वगेरे कुकर्मोथी बांधे छे बांधती वखते एओमां प्रकृति, स्थिति, अनुभाग अने प्रदेश बंधरूप विभाग थई जाय छे अधिक स्थिति अने अधिक अनुभाग बंध तेओमां संक्लेश परिणामोथी पडे छे. एथी हे पुत्रि। तमे अपहृतः मनः संकल्प थईने यावत्

मारिका दारिका एतमर्थं प्रतिशृणोति=स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य महानसे विपुलमशनपानखाद्य स्वाद्यं यावद् 'दलमाणी' ददती विहरति=आस्ते स्म ॥ सू०१२ ॥

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं गोवालियाओ अज्जाओ बहुस्सुयाओ एवं जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ तहेव समोसड्ढाओ तहेव संघाडओ जाव अणुपविट्ठे तहेव जाव सूमालिया पडिलाभित्ता एवं वयासी—एवं खलु अज्जाओ ! अहं सागरस्स अणिट्ठा जाव अमणामा नेच्छइ णं सागरए मम नामं वा जाव परिभोगं वा, जस्स २ वि य णं दिज्जामि तस्स २ वि य णं अणिट्ठा जाव अमणामा भवामि, तुब्भे य णं अज्जाओ ! बहुनायाओ एवं जहा पुट्टिला जाव उवलद्धे जे णं अहं सागरस्स दारियाए इट्ठा कंता जाव भवेज्जामि, अज्जाओ तहेव भणंति तहेव साविया जाया चिंता तहेव सागरदत्तं सत्थवाहं आपुच्छइ जाव गोवालियाणं अंतिए पव्वइया, तएणं सा सूमा-

---

जनों के लिये वितरण करती रहो (तएणं सा सूमालिया दारिया एयमट्ठं पडिसुणेइ पडिसुणित्ता महाणसंसि विपुलं असण जाव दलमाणी विहरइ) इस तरह पिता सागरदत्त के समझाने पर उस सुकुमारिका दारिका ने अपने पिता के इस कथन को स्वीकार कर के वह महानस भोजन शाला में निष्पन्न चतुर्विध आहार को श्रमणादि जनों के लिये वितरण भी करने लगी ॥ सूत्र १२ ॥

આર્તધ્યાન કરીશ નહિ. તું મારી ભોજન શાળામાં ચાર જાતના આહારો તૈયાર કરાવડાવીને પોટ્ટિલાની જેમ શ્રમણ વગેરે જનોને આપતી રહે.

(तएणं सा सूमालिया दारिया एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता महाणसंसि विपुलं असण जाव दलमाणी विहरइ)

આ રીતે પિતા સાગરદત્ત વડે સમજાવવામાં આવેલી તે સુકુમાર દારિકાએ પોતાના પિતાના કથનને સ્વીકારી લીધુ અને સ્વીકારીને તે ભોજનશાળામાં તૈયાર થયેલા ચારે જાતના આહારોને શ્રમણ વગેરેને આપવા લાગી. ॥ સૂ. ૧૨

लिया अज्जा जाया ईरियासमिया जाव गुत्तबंभयारिणी बहूहिं चउत्थछट्टट्ठम जाव विहरइ, तएणं सा सूमालिया अज्जा अन्नया कयाइ जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–इच्छामि णं अज्जाओ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी चंपाओ बाहिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं सूराभिमुही आयावेमाणा विहरित्तए, तएणं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं एवं वयासी–अम्हे णं अज्जे! समणीओ निग्गंथीओ ईरियासमियाओ जाव गुत्तबंभयारिणीओ नो खलु अम्हं कप्पइ बाहिया गामस्स जाव सण्णिवेसस्स वा छट्ठं२ जाव विहरित्तए, कप्पइ णं अम्हं अंतो उवस्सयस्स विइपरिक्खित्तस्स संघाडिबद्धियाए णं समतल पइयाए आयावित्तए, तएणं सा सूमालिया गोवालियाए एयमट्ठं नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ एयमट्ठं अ०२ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठं छट्ठेणं जाव विहरइ ॥सू०१३॥

टीका—'तेणं कालेणं' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये 'गोवालियाओ अज्जाओ' गोपालिका=गोपालिकानाम्न्यः आर्याः=साध्व्यः, 'बहुस्सुयाओ' बहुश्रुताः=श्रुतपारगामिन्यः, एवम्=अनेन प्रकारेण यथैव 'तेतलिणाए' तेतलिज्ञाते=चतुर्दशे तेतलिपुत्राध्ययने वर्णिताः 'सुव्वयाओ' सुव्रताः=सुव्रता-

---

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तेणं कालेणं–तेणं समएणं) उस काल और उस समय में (गोवालियाओ अज्जाओ बहुस्सुयाओ एवं जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ

'तेणं कालेणं–तेणं समएणं' इत्यादि—

टीकार्थ–(तेणं कालेणं–तेणं समएणं) ते काळे अने ते समये (गोवालियाओ अज्जाओ बहुस्सुयाओ एवं जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ

नाम्न्यः साध्व्यः. 'तहेव समोसढाओ' तथैव समवसृताः=सुव्रतावद् गोपालिकाः समागताः । 'तहेव संघाडओ जाव अणुपविट्ठे' तथैव संघाटको यावद् अनुप्रविष्टः गोपालिकानामार्याणामेकः संघाटकः यावत्=सुकुमारिकाया गृहेऽनुप्रविष्टः । तथैव यावत् सुकुमारिका ता आर्याः अशनादिना प्रतिलम्भ्य एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्–हे आर्याः! एवं खलु अहं सागरस्य दारकस्यानिष्टा यावद्=अकान्ता अप्रिया अमनोज्ञा अमनोमा मनः प्रतिकूलाऽस्मि, नेच्छति खलु सागरको मम नाम वा गोत्रं वा श्रोतुम्, किं पुनर्यावत् मया सह परिभोगं वा, यत्र मम नामाऽपि श्रोतुं नेच्छति तत्र का वार्ता परिभोगस्य, अहं तु तेन सर्वथा परि, त्यक्तेति भावः । अपि च यस्मै यस्मै खलु 'दिज्जामि' दीये=स्वपित्रा प्रदत्ता भवामि, तस्य तस्यापि च खलु अनिष्टा यावद् अमनोमा=मनः प्रतिकूला भवामि, हे आर्याः! यूयं च खलु 'वहुनायाओ' वहुज्ञाताः ज्ञानातिशययुक्ताः, 'एवं

तहेव समोसढाओ तहेव संघाडओ जाव अणुपविट्ठे तहेव जाव सूमालिया पडिलभित्ता एवं वयासी) गोपालिका नामकी आर्यिका जो श्रुत पारगामिनी थीं इस प्रकार से कि जिस प्रकार से तेतलि प्रधान नामक चौदहवें अध्ययन में सुव्रता साध्वी वर्णित हुई है–थीं–वे उसी तरह से वहां आईं । इनका एक संगाडा था, यावत् सुकुमारिका के घर में गोचरी के लिये प्रवेश किया । सुकुमारिका ने बड़ी भक्ति के साथ उन्हें आहार पानी दिया–और देकर वह फिर इस प्रकार से उनसे कहने लगी–(एवंखलु अज्जाओ! अहं सागरस्स अणिट्ठा, जाव अमणामा, नेच्छइ णं सागरए मम नामं वा जाव परिभोगं वा जस्स २ वि य णं दिज्जामि तस्स–तस्स वि य णं अणिट्ठा, जाव अमणामा भवामि तुब्भे य णं अज्जाओ! वहुनायाओ, एवं जहा पुट्टिला जाव उवलद्धे

तहेव समोसढाओ तहेव संघाडओ जाव अणुपविट्ठे तहेव जाव सूमालिया पडिलभित्ता एवं वयासी)

ગોપાલિકા નામે આર્યિકા કે જે શ્રુત પારગામિની હતી. તેતલીપ્રધાન નામના ચૌદમા અધ્યયનની સુવ્રતા સાધ્વી જેવી હતી તેવી જ તે પણ હતી. સુવ્રતા સાધ્વીની જેમ જ તે યાવત્ સુકુમારિકાના ઘેર તે ગોચરી માટે ગઈ. સુકુમારિકાએ ખૂબ જ ભક્તિ–ભાવથી તેમને આહારપાણી આપ્યું અને આપીને તે તેમને આ પ્રમાણે કહેવા લાગી—

(एवं खलु अज्जाओ अहं सागरस्स अणिट्ठा, जाव अमणामा नेच्छइ णं सागरए मम नामं वा जाव परिभोगं वा जस्स २ वि य णं दिज्जामि तस्स तस्स वि य णं अणिट्ठा, जाव अमणामा भवामि तुब्भे य णं अज्जाओ! वहुनायाओ,

यथा पोट्टिला यावद् उपलब्धम्' अयमर्थः-यथा तेतलिपुत्रभार्या पोट्टिला स्वभर्तृवशीकरणोपायप्रदर्शनार्थं सुव्रतां साध्वीं पृच्छतिस्म, तथा-सुकुमारिका दारिका गोपालिका संघाटकं पृष्ठवती, तादृशं चूर्णयोगादिकमुपलब्धं=ज्ञातं किम्? येनाहं सागरस्य दारकस्येष्टा कान्ता यावद् भवेयं आर्यास्तथैव भणन्ति=यथा पोट्टिलि-

जे णं अहं सागरस्स दारगस्स इट्ठा कंता जाव भवेज्जामि, अज्जाओ तहेव भणंति, तहेव साविया जाया, तहेव चिंता, तहेव सागरदत्तं सत्थवाहं आपुच्छइ जाव गोवालियाणं अंतिए पव्वइया) हे आर्याओं। मैं अपने पति सागर दारक के अनिष्ट बनी हूं यावत् अकान्त अप्रिय अमनोज्ञ एवं अमनोम मनः प्रतिकूल बनी हुई हूँ। वे मेरा नाम गोत्र कुछ भी सुनना नहीं चाहते हैं। तो फिर उनके साथ परिभोग करने की तो बात ही क्या है। मुझे तो उन्होंने सर्वथा ही छोड दी है। अपिच-मेरे पिता मुझे जिस २ व्यक्ति के लिये देते हैं-मैं उस २ व्यक्ति के लिये भी अनिष्ट आदि बन जाती हूँ। हे आर्याओ! आप तो बहुश्रुत हैं अनेक शास्त्रों की ज्ञाता है-ज्ञान के अतिशय से संपन्न हैं। इस प्रकार उस सुकुमारिका ने पोट्टिला की तरह अपने पति को वश में करने के विषय में उनसे उपाय पूछा पोट्टिलाने अपने पति तेतलिपुत्र को वशमें करने को पहिले जैसे सुव्रता साध्वी के संघाटेसे उपाय पूछा था-और कहा आपको यदि कोई ऐसा चूर्ण आदि का प्रयोग उपलब्ध

एवं जहा पुट्टिला जाव उवलद्धे जेणं अहं सागरस्स दारगस्स इट्ठा कंता जाव भवेज्जामि, अज्जाओ तहेव भणंति, तहेव साविया जाया, तहेव चिंता, तहेव सागरदत्तं सत्थवाहं आपुच्छइ जाव गोवालियाणं अंतिए पव्वइया)

હે આર્યાઓ! મારા પતિ સાગરદારક માટે હું અનિષ્ટ થઈ ગયેલી છું યાવત્ અકાંત, અપ્રિય, અમનોજ્ઞ અને અમનોમ થઈ ચૂકી છું. તેઓ મારા નામ ગોત્ર કંઇ પણ સાંભળવા ઇચ્છતા નથી ત્યારે તેમની સાથે પરિભોગ કરવાની તો વાત જ શી કરવી. તેઓએ મને એકદમ જ જે છોડી દીધી છે. અને મારા પિતાએ મને જે જે માણુસને આપે છે તે બધા માટે પણ હું અનિષ્ટ વગેરે થઈ જાઉં છું. હે આર્યાઓ! તમે તો બહુશ્રુત છો, ઘણાં શાસ્ત્રોને જાણો છો, જ્ઞાન સંપન્ન છો. આ રીતે પોટ્ટિલાની જેમ જ સુકુમારિકા દારિકાએ પણ પતિને વશમાં કરવા માટેના ઉપાયોની પૂછપરછ કરી. પોટ્ટિલાએ પોતાના પતિ તેતલિપુત્રને વશમા કરવા માટે પહેલા સુવ્રતા સાધ્વીના સંઘાટાથી જેમ ઉપાયો પૂછ્યા હતા તેમજ તેણે પણ તેમને કહ્યું કે-જો એવો

कया पृष्टा सुव्रतायाः संघाटकस्थिताः साऽव्यस्तामवोचत्, तथैव गोपालिका संघाटस्थाः आर्या भणन्ति=वदन्ति स्मेत्यर्थः। 'तहेव साविया जाया' तथैव श्राविका जाता=पोट्टिला वत् सुकुमारिका दारिकाऽपि श्राविका जाता। तथैव चिन्ता-पोट्टिलावदेव पश्चात्=प्रव्रज्यां ग्रहीतुं चिन्ता सुकुमारिकाया मनसि प्रादुर्भूता। सुकुमारिका सागरदत्तं सार्थवाहं=स्वपितरं तथैव=यथा स्वपतिं पोट्टिला, तद्वद् आपृच्छति, यावद् गोपालिकानामन्तिके प्रव्रजिता=दीक्षां गृहीतवती। ततः खलु सा सुकुमारिका आर्या=साध्वी जाता सा किं भूता-ईर्यासमिता यावद् गुप्त

हो तो भी बता दीजिये कि जिससे मैं अपने पति सागरदारक को इष्ट, कान्त यावत् मनोम बनजाऊँ। गोपालिका के संघाडे की इन आर्याओं ने सुकुमारिका को, पोट्टिला को सुव्रता साध्वी की तरह समझाया-वह उसी तरहसे श्राविका बन गई। पोट्टिला की तरह इस सुकुमारिका ने भी बाद में दीक्षा लेने का मन में विचार किया-। पोट्टिलाने जिस तरह अपने पति से आज्ञा लेकर दीक्षा धारण की थी-उसी प्रकार इस सुकुमारिका ने भी अपने पिता सागरदत्त से पूछकर गोपालिका आर्या के समीप दीक्षा धारण कर ली। (तएणं सा सूमालिया अज्जा जाया ईरिया समिया जाव गुत्तबंभयारिणी बहूहिं चउत्थ छट्ठट्ठम जाव विहरइ, तएणं सा सूमालिया अज्जा अन्नया कयाइं जेणेव गोवालिया अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ) इस तरह वह सुकुमारिका आर्या बन गई। वह ईर्यासमिति आदि का पालन करने लगी

કોઈ ચૂર્ણ વગેરેનો પ્રયોગ મળી શકે તો પણ મને બતાવી દો કે જેથી હું મારા પતિ સાગરદારકના માટે ફરી ઇષ્ટ, કાંત, યાવત્ મનોમ થઈ જાઉં. ગોપાલિકા સંઘાડાની તે આર્યાઓએ-સુવ્રતા-સાધ્વીએ જેમ પોટ્ટિલાને સમજાવી તેમજ સમજાવી અને છેવટે તે શ્રાવિકા બની ગઈ. પોટ્ટિલાની જેમજ તે સુકુમારિકાએ પણ ત્યારપછી દીક્ષા લેવાનો મનમાં મક્કમ વિચાર કરી લીધો. પોટ્ટિલાએ જેમ પોતાના પતિની આજ્ઞા લઈને દીક્ષા ધારણ કરી હતી તેમજ સુકુમારિકાએ પણ પોતાના પતિ સાગરદત્તને પૂછીને ગોપાલિકા આર્યાની પાસેથી દીક્ષા ધારણ કરી લીધી

(तएणं सा सूमालिया अज्जा जाया इरिया जाव गुत्तबंभयारिणी बहूहिं चउत्थ छट्ठट्ठम जाव विहरइ, तएणं सा सूमालिया अज्जा अन्नया कयाइं जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ)

આ રીતે સુકુમારિકા આર્યા થઈ ગઈ, તે ઇર્યા સમિતિ વગેરેનું પાલન કરવા લાગી. અને નવકોટીથી બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રતની રક્ષા કરવા લાગી. ઘણા

ब्रह्मचारिणी सा बहुभिश्चतुर्थषष्ठाष्टमभक्तैर्यावत्-तपः कर्मभिरात्मानं भावयन्ती विहरति=आस्तेस्म । ततः खलु सा सुकुमारिका आर्या अन्यदा कदाचिद् यत्रैव गोपालिका आर्यास्तत्रैवोपागच्छति उपागत्य वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्=हे आर्याः ! इच्छामि खलु युष्माभिरभ्यनुज्ञाता सती चम्पानगर्या बहिः सुभूमिभागस्योद्यानस्यादूरसामन्ते = नातिदूरे नातिनिकटे षष्ठषष्ठेन-षष्ठभक्तानन्तरं पुनः षष्ठभक्तेन 'अणिक्खित्तेणं' अनिक्षिप्तेन =अविश्रान्तेन-अन्तररहितेन, तपःकर्मणा 'सूराभिमुही' सूर्याभिमुखी 'आयावेमाणी' आतापयन्ती-आतापनां कुर्वती विहर्तुम्' इति । ततस्तदनन्तरं ता गोपालिका आर्याः सुकुमारिकामार्यामेवमवादिषुः-हे आर्ये ! वयं खलु श्रमण्यो

और नौ कोटी ब्रह्मचर्य से महाव्रत की रक्षा करने लगी। अनेक चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, भक्त आदि तपस्याओं से अपने आपको भावित भी करने लगी। एक दिन की बात है कि वह सुकुमारिका आर्या साध्वी-जहां गोपालिका आर्या विराज मान थी वहां गई-(उवागच्छित्ता वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी, इच्छामि णं अज्जाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी चंपाओ बाहिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूर सामंते छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्ते णं तवोकम्मे णं सूराभिमुही आयावेमाणी विहरित्तए) वहां जाकर उसने उन्हें वंदना की, नमस्कार किया ! वंदना एवं नमस्कार कर फिर वह इस-प्रकार कहने लगी-हे भदंत ! मैं आप से आज्ञा प्राप्त कर चंपा नगरी से बाहिर सुभूमिभाग नाम के उद्यान के समीप अंतररहित छट्ठ छट्ठ की तपस्या से सूर्याभिमुखी होकर आतापना करना चाहती हूँ। (तएणं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं एवं वयासी-अम्हेणं

ચતુર્થ, ષષ્ઠ, અષ્ટમ ભક્ત વગેરે તપસ્યાઓથી પોતાને ભાવિત પણ કરવા લાગી. એક દિવસની વાત છે કે તે સુકુમારિકા આર્યા સાધ્વી જ્યાં ગોપાલિકા આર્યા વિરાજમાન હતી ત્યાં ગઇ. (उवागच्छित्ता वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता एवं वयासी, इच्छामि ण अज्जाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी चंपाओ बाहिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठं छट्ठेण अणिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं सूराभिमुही आयावेमाणि विहरित्तए) ત્યાં જઇને તેણે તેમને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા. વંદના તેમજ નમસ્કાર કરીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ભદંત ! આપની આજ્ઞા મેળવીને હું ચંપા નગરીમાં બહાર સુભૂમિભાગ નામના ઉદ્યાનની પાસે અંતર રહિત છઠ્ઠ છઠ્ઠની તપસ્યા કરતાં સૂર્યાભિમુખી થઇને આતાપના કરવા ઇચ્છું છું. (तएणं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं

निर्ग्रन्थ्यः ईर्यासमिताः=ईर्यासमितियुक्ताः, यावद्-गुप्तब्रह्मचारिण्यः स्मः, तस्माद् नो खलु अस्माकं कल्पते-'बहिया' बहिः-ग्रामाद् यावद् संनिवेशाद् षष्ठ षष्ठेन 'जाव विहरित्तए' यावद् विहर्तुम् ग्रामादे र्बहिः प्रदेशे साध्वीनां स्थितिः शीलभङ्गादिकारणं भवतीति भावः । किंतु कल्पते खलु अस्माकम् 'अंतो' अन्तः=अभ्यन्तरे 'उवस्सयस्स' उपाश्रयस्य=वसतेः, किम्भूतस्य 'वितिपरिक्खित्तस्स' वृतिपरिक्षिप्तस्य=भित्त्यादिना सर्वतः समावृतस्य, 'संघाडिबद्धियाए' संङ्घाटिका प्रतिबद्धायाः=प्रतिबद्धशाटिकायाः सर्वथाऽनुद्घाटितगात्राया इत्यर्थः 'समतलपइयाए' समतलपदिकायाः=भूमौ समतलतया स्थापितचरणयुगलाया आयावित्तए' आतापयितुम्=आतापनां कर्त्तुं कल्पते इति पूर्वेण सम्बन्धः । ततः

अज्जे ! समणीओ निग्गंथीओ ईरियासमियाओ जाव गुत्तबंभचारिणीओ,नो खलु अम्हं कप्पइ बहियागामस्स जाव सण्णिवेसस्स वा छट्ठं० जाव विहरित्तए) इस प्रकार सुकुमारिका साध्वी का कथन सुनकर गोपालिका आर्या ने उस सुकुमारि का आर्या से इस प्रकार कहा हे आर्ये ! हम लोग निर्ग्रन्थ श्रमणियां हैं । ईर्या आदि समितियों का पालन करती हैं । और नौ कोटि से ब्रह्मचर्य की रक्षा करती हैं । इसलिये हम लोगों को ग्राम से यावत् सन्निवेश से बाहिर रह कर षष्ठ षष्ठ की तपस्या करना यावत् सूर्याभिमुखी होकर आतापन योग धारण करना कल्पित नहीं है । कारण-ग्रामादि के बाहिरी प्रदेश में साध्वियों का रहना शीलभग आदि का निमित्त बन जाता है । (कप्पइ णं अम्हं अंतो उवस्सयस्स विइपरिक्खित्तस्स संघाडिबद्धियाए णं समतल पइयाए आयावित्तए) हमें तो यही कल्पित है कि हम लोग उपाश्रय के

एव वयासी-अम्हेणं अज्जे ! समणीओ निग्गंथीओईरिया सामियाओ जाव गुत्त बंभचारिणीओ, नो खलु अम्हं कप्पइ बहिया गामस्स जाव सण्णिवेसस्स वा छट्ठं० जाव विहरित्तए) આ રીતે સુકુમારિકા સાધ્વીનું કથન સાંભળીને ગોપાલિકા આર્યાએ સુકુમારિકા આર્યાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે આર્યે ! આપણે નિર્ગ્રંથ શ્રમણીઓ છીએ. ઈર્યા વગેરે સમિતિઓનું પાલન કરીએ છીએ, અને નવકોટિથી બ્રહ્મચર્યનું રક્ષણ કરીએ છીએ. એથી આપણે ગામથી યાવત્ સન્નિવેશથી બહાર રહીને ષષ્ઠ ષષ્ઠની તપસ્યા કરવી યાવત્ સૂર્યાભિમુખી થઈને આતપન યોગ ધારણ કરવો કલ્પિત નથી. કારણ કે-ગામ વગેરેથી બહારના પ્રદેશમાં સાધ્વીઓએ રહેવું શીલભગ વિગેરેનું નિમિત્ત થઈ જાય છે. (कप्पइ णं अम्हं अंतो उवस्सयस्स विइपरिक्खित्तस्स संघाडिबद्धियाए णं समतलपइयाए आयावित्तए) આપણને તો એ જ કલ્પિત છે કે આપણે ભીંત વગેરેથી ચોમેર

खलु सा सुकुमारिका गोपालिकानामार्याणामेतमर्थं नो श्रद्दधाति 'नो पत्तियइ' नो प्रत्येति=नो विश्वसिति, 'नो रोएइ' नो रोचते, एतमर्थम् अश्रद्दधाना, अप्रतियन्ती, अरोचमाना सति सुभूमिभागस्य उद्यानस्य अदूरसामन्ते षष्ठ-षष्ठेन यावत्-तपः कर्मणा सूर्याभिमुखी भूत्वा-आतापनां कुर्वती विहरति ॥ सू० १३ ॥

मूलम्-तत्थ णं चंपाए ललिया नाम गोट्ठी परिवसइ, नरवइ दिण्णवियारा अम्मापिइनिययनिप्पिवासा वेसविहारकयनिकेया नाणाविहअविणयप्पहाणा अड्ढा जाव अपरिभूया, तत्थ णं चंपाए देवदत्ता नामं गणिया होत्था सुकुमाला जहा अंडणाए, तएणं तीसे ललियाए गोट्ठीए अन्नया पंच गोट्ठिल्लगपुरिसा देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स

कि जो भित्ति आदि से सब तरफ से परिक्षिप्त है भीतर ही अपने शरीर को शाटिका से अच्छी तरह संवृत्त करती हुई और भूमि पर दोनों चरणों को बराबर स्थापित कर आतापना लें (तएणं सा सूमालिया गोवालियाए एयमट्ठं नो सद्दहइ, नो पत्तियइ नो रोएइ एयमट्ठं अ० ३ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठं छट्ठेणं जाव विहरइ) इस गोपालिका आर्या के कथन ऊपर उस सुकुमारिका आर्या को श्रद्धा नहीं जमी उस पर उसे विश्वास नहीं आया, वह उसे रुचा नहीं। इस तरह वह उसे अश्रद्धा अप्रतीति और अरुचि का विषय बनाती हुई सुभूमिभाग नामक उद्यान के पास षष्ठ षष्ठ की तपस्या करती हुई वह सूर्याभिमुख होकर आतापना करने लगी ॥ सू० १३ ॥

પરિક્ષિપ્ત ઉપાશ્રયની અંદર જ પોતાના શરીરને શાટિકા-સાડીથી સારી રીતે ઢાંકીને અને ભૂમિ ઉપર બંને ચરણોને બરાબર સ્થાપિત કરીને આતાપના લઇએ (तएणं सा सूमालिया गोवालियाए एयमट्ठं नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, एयमट्ठं अ० ३ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठं छट्ठेणं जाव विहरइ) ગોપાલિકા આર્યાના કથન ઉપર સુકુમાર આર્યાને શ્રદ્ધા થઈ નહિ, તેના ઉપર તેને વિશ્વાસ થયો નહિ તે તેને ગમ્યું પણ નહિ આ રીતે તે તે કથન પ્રત્યે અશ્રદ્ધા, અપ્રતીતિ અને અરુચિ ધરાવતી સુભૂમિભાગ નામના ઉદ્યાનની પાસે ષષ્ઠ ષષ્ઠની તપસ્યા કરતી સૂર્યાભિમુખી થઈને આતાપના કરવા લાગી ॥ સૂત્ર ૧૩ ॥

उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तत्थ णं एगे गोट्ठिल्लगपुरिसे देवदत्तं गणियं उच्छंगे धरइ एगे पिट्ठओ आयवत्तं धरेइ एगे पुप्फपूरयं रएइ एगे पाए रएइ एगे चामरुक्खेवं करेइ तएणं सा सूमालिया अज्जा देवदत्तं गणियं तेहिं पंचहिं गोट्ठिल्लपुरिसेहिं सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी पासइ तएणं तीसे इमेयारूवे संकप्पे समुप्पज्जित्था-अहो णं इमा इत्थिया पुरा पोराणाणं कम्माणं जाव विहरइ, तं जइ णं केइ इमस्स सुचरियस्स तव-नियमबंभचेरवासस्स कल्लाणे फलवित्तिविसेसे अत्थि तो णं अहमवि आगमिस्सेणं भवग्गहणेणं इमेयारूवाइं उरा-लाइं जाव विहरिज्जामि त्तिकट्टु नियाणं करेइ करित्ता आयावणभूमिओ पच्चोरुहइ ॥सू० १४॥

टीका—'तत्थ णं चंपाए' इत्यादि। तत्र खलु चम्पायां नगर्यां ललिता नाम्नी 'गोट्ठी' गोष्ठी=मण्डली परिवसति किं भूता सा गोष्ठीत्याह—'नरवइदिण्ण-वियारा' नरपतिदत्तविचारा नरपतिना दत्तो विचारः संमतिर्यस्यै सा तथा—सेवा-दिना सन्तुष्टान्नरपतेर्लब्धस्वतन्त्रता, तथा – 'अम्मापिइनिययनिप्पिवासा' अम्बापितृनिजकनिःपिपासा=मातापित्रादि निरपेक्षा, 'वेसविहारकय निकेया'

'तत्थ णं चंपाए ललिया नाम' इत्यादि।

टीकार्थ-(तत्थ णं चंपाए ललिया नाम गोट्ठी परिवसइ) उस चंपानगरीमें 'ललिता' इस नामकी गोष्ठी-मंडली-रहती थी। (नरवइ दिण्णवियारा, अम्मापिइ नियय निप्पिवासा वेसविहारकयनिकेया,

'तत्थणं चंपाए ललिया नाम' इत्यादि—

टीકાર્થ-(तत्थणं चंपाए ललिया नाम गोट्ठी परिवसइ) ते ચંપા નગરીમાં 'લલિતા' નામે ગોષ્ઠી 'મંડળી રહેતી હતી. (नरवइ, दिण्णवियारा अम्मापिइ नियय निप्पिवासा, वेसविहारकयनिकेया, नाणाविहअविणयप्पहाणा, अड्ढा

वेश्याविहारकृतनिकेता – वेश्यागृहकृतनिवासा, तथा–' नाणाविहअविणयप्प-हाणा ' नानाविधाऽविनयप्रधाना, तथा–आढ्या=धनधान्यसम्पन्ना, यावद् अपरि-भूता=परैरनभिभूता, आसीत् । तत्र खलु चम्पायां नगर्यां देवदत्ता नाम 'गणिया' गणिका=वेश्या, आसीत्, सा किम्भूतेत्याह–सुकुमारपाणिपादा, चतुष्षष्टिकला-विशारदा ' जहा अंडणाए ' यथा अण्डज्ञाते=अण्डनामके तृतीये ज्ञाताध्ययने यथाऽस्यावर्णनं तद्वदिह बोध्यम् । ततः खलु तस्या ललिताया गोष्ठ्या अन्यदा= अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित्समये, पञ्च ' गोट्ठिल्लगपुरिसा ' गोष्ठिकपुरुषा=मण्डलीपुरुषाः समानवयस्का इत्यर्थः देवदत्तया गणिकया सार्धं सुभूमिभागस्योद्यानस्योद्यानश्रियं= उद्यानशोभां प्रत्यनुभवन्तो विहरन्ति । तत्र खलु एको गोष्ठिकपुरुषो देवदत्तां

नाणाविह अविणयप्पहाणा, अड्ढा जाव अपरिभूया) इसने अपनी सेवासे राजाको प्रसन्न कर रखा था–सो उसकी कृपा से यह बिलकुल स्वच्छंद थे । अपने माता पिता आदि कुटुम्बी जनों की यह परवाह नहीं किया करते थे–उनको इन पुरुषों से बिलकुल भय नहीं था । वेश्याओं के घर में पड़े रहना–यही इनका एक काम था । अनेक प्रकार के अविनय प्रधान रूप अनाचारों का सेवन करना यही उनका काम था । पैसे की–द्रव्यकी उनके– पास कमी नहीं थी । कोई इनको कुछ कह सुन नहीं सकता था । (तत्थ णं चंपाए देवदत्ता नामं गणिया होत्था, सुकुमाला, जहा अंडणाए, तएणं तीसे ललियाए गोट्ठीए अन्नया पंच ' गोट्ठिल्लगपुरिसा देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जा-णस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति) उसी चंपा नगरी में

जाव अपरिभूया) ते मंडळीએ પોતાની સેવાથી રાજાને પ્રસન્ન કરેલો હતો. તેમની કૃપાથી તે મંડળી એકદમ સ્વચ્છંદપણું આચરતી હતી. પોતાના માતા પિતા વગેરે કુટુંબી લોકોની પણ તેઓ દરકાર કરતા ન હતા. તેઓને આ વડીલોની કોઈપણ જાતની બીક હતી નહિ, વેશ્યાઓના ઘેર પડયા રહેવું ફક્ત એજ એમનું એક માત્ર કામ હતું. અનેક પ્રકારના અવિનયપૂર્ણ આચરણો કરવાં એજ તેઓના જીવનનું મુખ્ય કામ હતું, ધનની તેઓની પાસે ખોટ હતી નહિ. કોઈપણ નાગરિકની એટલી પણ તાકાત નહોતી કે તેઓ તેમને કંઈપણ કહે ! (तत्थ णं चंपाए देवदत्ता नामं गणिया होत्था, सुकुमाला, जहा अंडणाए, तएणं तीसे ललियाए गोट्ठीए अन्नया पंच गोट्ठिल्लगपुरिसा देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति) તેજ ચંપા

गणिकामुत्सङ्गे धरति एकः 'पिट्ठओ' पृष्ठतः 'आयवत्तं' आतपत्रं=छत्र धरति, एकः 'पुप्फपूरयं' पुष्पपूरकं=पुष्पाणां रचनाविशेषं 'रएइ' रचयति, एकः पादौ-अलक्तकादिना रञ्जयति। एकः 'चामरुक्खेवं' चामरोत्क्षेपं=चामरवीजनं करोति। ततः खलु सा सुकुमारिका आर्या देवदत्तां गणिकां तैः पञ्चभिर्गोष्ठिक-

देवदत्ता नाम की एक गणिका रहती थी। यह चौसठ कलाओं में निष्णात थी। इसके हाथ पैर आदि सब ही अवयव बहुत ही अधिक सुकुमार थे। मयूर अंड नाम के तृतीय ज्ञाताध्ययन में इसका जैसा वर्णन किया गया है- वैसा ही वर्णन इसका यहां जानना चाहिये। एक समय की बात है कि गोष्ठी के ५, पुरुष कि जो समान वयसवाले थे देवदत्ता गणिका के साथ उस सुभूमिभाग उद्यान में आये-और वहां की उद्यान की शोभा का निरीक्षण करते हुए इधर-उधर घूमने लगे-(तत्थ णं एगे गोट्ठिल्लग पुरिसे देवदत्तं गणियं उच्छगे धरइ, एगे पिट्ठओ आयवत्तं धरेइ, एगे पुप्फपूरयं रएइ, एगे पाए रएइ, एगे चामरुक्खेवं करेइ, तएणं सा सूमालिया अज्जा देवदत्ता गणियं तेहिं पंचहिं गोट्ठिल्लगपुरिसेहिं सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी पासइ) वहां एक उस मंडली के पुरुष ने देवदत्ता गणिका को अपनी गोदी में बैठाया, एक दूसरे-मंडली के पुरुष ने उसके पीछे से उसके ऊपर छत्ता ताना, एक तीसरे पुरुषने उसके निमित्त पुष्पों की रचना रचीं, चौथे पुरुष ने उसके दोनों पैरों में माहुर लगाया पांचवें ने

નગરીમા દેવદત્તા નામે એ ગણિકા રહેતી હતી. તે ૬૪ કળાઓમા નિપુણ હતી, તેના હાથ-પગ વગેરે બધાં અંગો અતીવ સુકોમળ હતાં. મયૂરી અંડ નામના ત્રીજા અધ્યયનમાં દેવદત્તાનું જેવું વર્ણન કરવામા આવ્યુ છે તેવું જ વર્ણન અહીં પણ જાણી લેવું જોઈએ એક દિવસની વાત છે કે ગોષ્ઠી-મંડળીના પાંચ માણસો કે જેઓ સરખી ઉંમરવાળા હતા-દેવદત્તા ગણિકાની સાથે તે સુભૂમિભાગ ઉદ્યાનમાં ગયા અને ત્યાની ઉદ્યાન શોભાનું નિરીક્ષણ કરતા આમ તેમ ફરવા લાગ્યા. (तत्थण एगे गोट्ठिल्लगपुरिसे देवदत्तं गणियं उच्छंगे धरइ, एगे पिट्ठओ आयवत्तं धरेइ, एगे पुप्फपूरयं रएइ, एगे पाए रएइ, एगे चामरुक्खेवं करेइ तएण सा सूमालिया अज्जा देवदत्तं गणियं तहिं पचहिं गोट्ठिल्लपुरिसेहिं सद्धिं उरालाइ माणुस्सगाइं भागभोगाइं भुंजमाणी पासइ) ત્યાં તે મંડળીના એક માણસે દેવદત્તા ગણિકાને પોતાના ખોળામાં બેસાડી બીજા માણસે તેની ઉપર છત્રી તાણી, ત્રીજા માણસે તેના માટે પુષ્પોની રચના કરી, ચોથા માણસે તેના પગમાં લાલ રંગ લગાવ્યો, પાંચમા માણસે તેના ઉપર ચામર

पुरुषैः सार्धमुदारान्=श्रेष्ठान् भोगान् भुञ्जानां-कुर्वतीं पश्यति, ततस्तस्याः सुकुमारिकाया अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूपः संकल्पः=विचारः समुदपद्यत-अहो ! खलु इयं स्त्री पुरा=पूर्वभवे 'पोराणाणं' पुराणानाम्-पुरातनानां सचितानां कर्मणां पुण्यकर्मणां यावत्=फलवृत्तिविशेषं प्रत्यनुभवन्ती विहरति तत्=तस्मात् कारणाद् यदि खलु कोऽप्यस्य सुचरितस्य तपोनियमब्रह्मचर्यवासस्य कल्याणः=इष्टः शुभरूपः, फलवृत्तिविशेषः अस्ति, 'तो' तर्हि खलु अहमपि 'आगमिस्सेणं' आगामिना भवग्रहणेन इमान् एतद्रूपान् उदारान् भोगान् यावद् भुञ्जाना 'विह-

---

उस पर चमर ढोरे। इस तरह से उस सुकुमारिका आर्या ने उन मंडली के पांच पुरुषों के साथ उस देवदत्ता गणिका को उदार मनुष्य भव संबन्धी काम भोगों को भोगते हुए देखा। (तएणं तीसे इमेयारूवे संकप्पे समुप्पज्जित्था-अहो णं इमा इत्थिया पुरा पोराणाणं कम्माणं जाव विहरइ) तो उस सुकुमारिका आर्या को इस प्रकार का यह विचार उत्पन्न हुआ-अहो ! इस स्त्री ने पूर्वभव में जो पुण्य कर्म कमाये हैं उन्हीं पुराने पुण्य कर्मों के यावत् फलवृत्ति विशेष को यह भोग रही है। (तं जइणं केइ इमस्स सुचरियस्स तव नियमबंभचेरवासस्स कल्लाणे फलवित्तिविसेसे अत्थि तो णं अहमवि आगमिस्सेणं भवग्गहणेणं इमेयारूवाइं उरालाइं जाव विहरिज्जामि, त्तिकट्टु नियाणं करेइ, करित्ता आयावणभूमिओ पच्चोरुहइ) इसलिये यदि इन पालित तप, नियम एवं ब्रह्मचर्य व्रतों का कोई शुभरूप फलवृत्ति विशेष है तो मैं भी आगामी भव में इसी तरह के उदार मनुष्य भव सम्बन्धी काम भोगों

ઢોળ્યા. આ રીતે તે સુકુમારિકા આર્યાએ મંડળીના પાંચે માણસોની સાથે તે દેવદત્તા ગણિકાને ઉદાર મનુષ્યભવના કામભોગો ભોગવતાં જોયા. (तएणं तीसे इमेयारूवे संकप्पे समुप्पज्जित्था-अहो ण इमा इत्थिया पुरा पोराणाणं कम्माणं जाव विहरइ) ત્યારે તે સુકુમાર આર્યાને આ જાતનો વિચાર ઉદ્ભવ્યો કે અહો ! આ સ્ત્રીએ પૂર્વભવમાં જે પુણ્યકર્મ કર્યા છે તેમને લીધેજ એટલે કે તે જ પૂર્વભવના પુણ્ય-કર્મોના યાવત્ ફળવિશેષને આ ભોગવી રહી છે. (तं जइ णं केइ इमस्स सुचरियस्स तव नियम बंभचेरवासस्स कल्लाणे फलवित्तिविसेसे अत्थि तो णं अहमवि आगमिस्से णं भवग्गहणे ण इमेयारूवाइं उरालाइं जाव विहरिज्जामि, ति कट्टु नियाणं करेइ, करित्ता आयावणभूमिओ पच्चोरुहइ) આ બધા મારા વડે આચરવામાં આવેલા તપ, નિયમ અને બ્રહ્મચર્ય વ્રતોનું શુભ ફળ છે તો હું પણ આવતા ભવમાં આ જાતના જ ઉદાર મનુષ્યભવ સંબંધી કામભોગોને ભોગવું. આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેણે નિદાન

रिज्जामित्ति कट्टु ' ' विहरामि ' इति कृत्वा ' नियाणं ' निदानं करोति, कृत्वा आतापनभूमितः प्रत्यवरोहति–आतापनां परित्यजति ॥ सू०१४॥

मूलम्–तएणं सा सूमालिया अज्जा सरीरवउसा जाया यावि होत्था, अभिक्खणं अभिक्खणं२ हत्थे धोवेइ पाए धोवेइ सीसं धोवेइ मुहं धोवेइ थणंतराइं धोवेइ कक्खंतराइं धोवेइ गोज्झंतराइं धोवेइ जत्थ णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ तत्थ वि य णं पुव्वामेव उदएणं अब्भुक्खइत्ता तओ पच्छा ठाणं वा३ चेइए, तएणं ताओ गोवालियाओ सूमालियं अज्जं एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! अज्जे अम्हे समणीओ निग्गंथीओ ईरियासमियाओ जाव बंभचेरधारिणीओ नो खलु कप्पइ अम्हं सरीरबाउसियाए होत्तए, तुमं च णं अज्जे ! सरीरबाउसिया अभिक्खणं अभिक्खणं हत्थे धोवेसि जाव चेएसि, तं तुमं णं देवाणुप्पिए ! तस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पडिवज्जाहि, तएणं सा सूमालिया गोवालियाणं अज्जाणं एयमट्ठं नो आढाइ नो परिजाणइ अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी विहरइ, तएणं ताओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं अभिक्खणं अभिक्खणं अभिहीलंति जाव परिभवंति, अभिक्खणं अभिक्खणं एयमट्ठं निवारेंति, तएणं तीए सूमालियाए समणीहिं निग्गंथीहिं हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्ज-

---

को भोगू । ऐसा विचार कर उसने निदान बंध किया और करके फिर वह आतापन भूमि से आतापना लेकर अपने स्थान आगई ॥ सू०१४॥

બંધ કર્યો અને કરીને તે આતાપન ભૂમિથી આતાપના લઈને પોતાના સ્થાને આવી ગઈ. ॥ સૂત્ર ૧૪ ॥

माणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था, जयाणं अहं अगारवासमज्झे वसामि तया णं अहं अप्पवसा, जया णं अहं मुंडे भवित्ता पव्वइया तया णं अहं परवसा, पुव्विं च णं ममं समणीओ आढायंति२ इयाणिं नो आढंति२ तं सेयं खलु मम कल्लं पाउ० गोवालियाणं अंतियाओ पडिनिक्खमित्ता पाडिएक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए त्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता कल्लं पा० गोवालियाणं अज्जाणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता पडिएक्कं उवस्सयं उवसंपज्जि-त्ताणं विहरइ, तएणं सा सूमालिया अज्जा अणोहट्टिया अनिवारिया सच्छंदमई अभिक्खणं अभिक्खणं हत्थे धोवेइ जाव चेएइ तत्थ वि य णं पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीला२ संसत्ता२ बहूणि वासाणि सामण्ण-परियागं पाउणइ अद्धमासियाए संलेहणाए तस्स ठाणस्स अणालोइयअपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा ईसाणे कप्पे अण्णयरंसि विमाणंसि देवगणियत्ताए उववण्णा, तत्थेगइयाणं देवीणं नव पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थ णं सूमालियाए देवीए नव पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ॥ सू० १५ ॥

टीका—'तएणं सा' इत्यादि। ततः खलु सा सुकुमारिका आर्या 'सरीर

'तएणं सा सूमालिया अज्जा' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) इस के बाद (सा सूमालियाए अज्जा सरीर बउसा

'तएणं सा सूमालिया अज्जा' इत्यादि—

टीकार्थ-(तएणं) त्यारपछी (सा सूमालिया अज्जा सरीरबउसा जाया याबि

वउसा ' शरीरबकुशा शरीरसंस्कारपरायणा जाता चाप्यभवत्, अभीक्ष्णं २ पुनः पुनः हस्तौ ' धोवेइ ' धावति=प्रक्षालयति, पादौ धावति ' सीसं ' शीर्षं=शिरः धावति, मुखं धावति, ' थणंतराइं ' स्तनान्तराणि धावति ' कक्खंतराइं ' कक्षान्तराणि धावति, ' गोज्झंतराइं ' गुह्यान्तराणि गुह्यप्रदेशं धावति, यत्र खलु ' ठाणं वा ' स्थानम्-उपवेशनार्थं स्थानं ' सेज्जं वा ' शय्यां वा ' निसीहियं वा ' नैषेधिकीं स्वाध्यायभूमिं वा ' चेएइ ' चेतयति-करोति, तत्रापि च खलु पूर्वमेवोदकेन ' अब्भुक्खइत्ता ' अभ्युक्ष्य=अभिषिच्य, ततः पश्चात् ' ठाणं वा ' स्थानं वा शय्यां वा नैषेधिकीं वा चेएइ ' चेतयति-करोति ।

जाया यावि होत्था-अभिक्खणं २ हत्थे धोवेइ, पाए धोवेइ, सीसं धोवेइ, मुहं धोवेइ, थणंतराइं धोवेइ, कक्खंतराइं धोवेइ, गोज्झंतराइं धोवेइ) वह सुकुमारिका आर्या शरीर संस्कार करने में भी तत्पर बन गई। बार २ वह हाथ धोने लगी, पैर धोने लगी, शिर धोने लगी, मुख धोने लगी, स्तनान्तरों को धोने लगी, कक्षाओं को धोने लगी और गुह्य प्रदेश को धोने लगी। (जत्थ णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ तत्थ वि य णं पुव्वामेव उदएणं अब्भुक्खइत्ता तओ पच्छा ठाणं वा ३ चेएइ, तएणं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं एवं वयासी) इसी तरह वह जहां अपना बैठने के लिये स्थान बनाती, शय्या-पाथरती, स्वाध्याय स्थान करती, वहां भी वह पहिले से ही उसे जल से सींच देती-तब जाकर वहां वह अपना स्थान, शय्या एवं स्वाध्याय भूमि नियत करती। इस प्रकार की परिस्थिति देख कर गोपा-

---

होत्था-अभिक्खणं २ हत्थे धोवेइ, पाए धोवेइ, सीसं धोवेइ, मुहं धोवेइ, थणंतराइं धोवेइ, कक्खंतराइं धोवेइ गोज्झंतराइं धोवेइ) તે સુકુમારિકા આર્યા શરીર-સંસ્કારના કામમાં પરોવાઇ ગઇ. વારંવાર હાથ ધોવા લાગી, પગ ધોવા લાગી, માથું ધોવા લાગી, મુખ ધોવા લાગી, સ્તનોના વચ્ચેના સ્થાનને ધોવા લાગી, બગલોને ધોવા લાગી, અને ગુપ્ત સ્થાનોને ધોવા લાગી (जत्थणं ठाणं वा सेज्जंवा निसीहियं वा चेएइ तत्थवि य णं पुव्वामेव उदएणं अब्भुक्खइत्ता तओ पच्छा ठाणं वा ३ चेएइ तए णं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं एवं वयासी) આ પ્રમાણે જ તે જ્યાં પોતાનું બેસવાનું સ્થાન નક્કી કરતી, કે પથારી પાથરતી અથવા તો સ્વાધ્યાય માટે બેસવાનું સ્થાન નક્કી કરતી. ત્યાં પહેલેથી જ તે સ્થાનને પાણી છાંટતી હતી અને ત્યારપછી તે ત્યાં પોતાનું સ્થાન-શય્યા અને સ્વાધ્યાય સ્થાન નક્કી કરતી હતી આ જાતની પરિસ્થિતિ જોઇને ગોપાલિકા આર્યાએ તે

ततः खलु गोपालिका आर्याः सुकुमारिकामार्यामेवमवादिषुः एवं खलु हे देवानुप्रिये! आर्ये! वयं श्रमण्यः-तपस्विन्यः निर्ग्रन्थ्यः बाह्याभ्यन्तरग्रन्थिरहिताः ईर्यासमिता यावद् गुप्तब्रह्मचर्यधारिण्यः स्मः, नो खलु कल्पतेऽस्माकं सरीरबाउसियाए' शरीरबकुशिका 'होत्तए' भवितुम् इति त्वं च खलु हे आर्ये! शरीरबाकुशिका जाता, अभीक्ष्णं=पुनः पुनरतिशयेन हस्तौ धावसि =प्रक्षालयसि, यावत्-स्थानं वा शय्यां वा स्वाध्यायभूमिं वा जलेनाभ्युक्ष्य 'चेएसि' चेतयसि स्थानादिकं करोषीत्यर्थः। तत्=तस्मात् त्वं खलु हे देवानुप्रिये! तत् स्थानम् 'आलोएहि' आलोचय, स्वातिचारं प्रकाशयेत्यर्थः। यावत् 'पडिवज्जाहि' प्रतिपद्यस्व=प्रायश्चित्तं स्वीकुरु' इत्यर्थः। ततः खलु सा सुकु-

---

लिका आर्या ने उस सुकुमारिका आर्या से कहा-(एवं खलु देवाणुप्पिया! अज्जे अम्हे समणीओ निग्गंथीओ ईरियासमियाओ जाव बंभचेर धारिणिओ, नो खलु कप्पइ अम्हं सरीरबाउसियाए होत्तए, तुमं च णं अज्जे सरीरबाउसिया- अभिक्खणं २ हत्थे धोवेसि, जाव चेएसि) हे देवानुप्रिये! हम आर्याएँ निर्ग्रन्थ श्रमणियां हैं। ईर्या आदि पांच समितियोंका पालन करती हैं। नौकोटि ब्रह्मचर्य सहितमहाव्रतको पालन करती हैं। अतः हम लोगों को अपने शरीर के संस्कार करने में परायण बनना कल्पित नहीं हैं। हे आर्ये! तुम शरीर संस्कार करने में परायण बन चुकी हो। बार २ तुम हाथों को धोती हो यावत् स्थान को शय्या को, और स्वाध्याय भूमि को पहिले से ही पानीसे धोकर नियत करती हो (तं तुमं णं देवाणुप्पिए! तस्स ठाणस्स आलोएहिं, जाव पडिवज्जाहि) इस लिये हे देवानुप्रिये! तुम उस स्थान की आलोचना करो-अपने अतिचारों को प्रकाशित करो यावत् उनका प्रायश्चित्त लो।

સુકુમારિકા આર્યાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-(एवं खलु देवाणुप्पिया! अज्जे अम्हे समणीओ निग्गंथीओ ईरियासमियाओ जाव बंभचेरधारिणिओ नो खलु कप्पइ अम्हे सरीरबाउसियाए होत्तए, तुमं च णं अज्जे सरीरबाउसिया, अभिक्खणं २ हत्थे धोवेसि जाव चेएसि) હે દેવાનુપ્રિયે! અમે આર્યાઓ નિર્ગ્રંથ શ્રમણીઓ છીએ, ઈર્યા વગેરે પાંચ સમિતિઓનું અમે પાલન કરીએ છીએ, નવકોટિથી બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રત ધારણ કરીએ છીએ. એથી પોતાના શરીરનો સંસ્કાર કરવો એ આપણા માટે યોગ્ય ગણાય નહિ હે આર્યે! તમે શરીરના સંસ્કારમાં પરાયણ બની ચૂકી છો. તમે વારંવાર હાથોને ધુઓ છો યાવત્ સ્થાનને, શય્યાને અને સ્વાધ્યાયભૂમિને પહેલેથી જ પાણીથી ધોઈને નક્કી કરી લો છો. (तं तुमं ण देवाणुप्पिए! तस्स ठाणस्स आलोएहि, जाव पडिवज्जाहि) એથી

मारिका आर्या गोपालिकानामार्याणामेतमर्थं 'नो आढाइ' नाद्रियते, नो परिजानीते तद्वचने ध्यानं न ददाति, । अनाद्रियमाणा=अनादरं कुर्वती, अपरिजानाना=ध्यानमददाना विहरति=आस्ते । ततः खलु ताः गोपालिका आर्याः सुकुमारिकामार्यामभीक्ष्णं=पुनः पुनरभिहीलन्ति खिंसन्ति निन्दन्ति यावत् परिभवन्ति । अभीक्ष्णं=पुनः पुनः, 'एयमट्ठं' एतमर्थम् उक्तमर्थं शरीरशोभाकरणजलप्रक्षेपादिकं निवारयन्ति=प्रतिषेधयन्ति । ततः खलु 'तीए' तस्याः सुकुमारिकायाः श्रमणीभिर्निर्ग्रन्थीभिः हील्यमानाया यावद् वार्यमाणाया अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूपः आध्यात्मिको यावन्मनोगतः संकल्पो-विचारःसमुदपद्यत=प्रादु-

(तएण सा सूमालिया गोवालियाणं अज्जाणं एयमट्ठं नो आढाइ, नो परिजाणाइ, अणाढायमाणी, अपरिजाणमाणी, विहरइ) सुकुमारिका आर्या ने गोपालिका आर्या के इस कथन रूप अर्थ को आदर की दृष्टि से नहीं देखा, उनके वचनों पर उसने कुछ भी ध्यान नहीं दिया। इस तरह उनके वचनों का अनादर और उन पर ध्यान नहीं देती हुई वह रहने लगी (तएणं ताओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं अभिक्खणं २ एयमट्ठं निवारेंति, तएणं तीसे सूमालियाए समणीहिं निग्गंथीहिं हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) इस के पश्चात् उन गोपालि का आर्या ने उस सुकुमारिका आर्या की वार २ अवहेलना की, उस पर वे गुस्सा भी हुई उसकी निंदा भी की यावत् उसका तिरस्कार भी किया। वार २ उसे शरीर की शोभा करने से और जल का सिंचन करने से रोका। तब उसे इस प्रकार का

હે દેવાનુપ્રિયે! તમે તે સ્થાનની આલોચના કરો-પોતાના અતિચારને પ્રકાશિત કરો યાવત્ તેના માટે પ્રાયશ્ચિત્ત કરો. (तएणं सा सुमालिया गोवालियाणं अज्जाणं एयमट्ठं नो आढाइ, नो परिजाणाइ, अणाढायमाणी, अपरिजाणमाणी, विहरइ) સુકુમારિકા આર્યાએ ગોવાલિકા આર્યાના આ કથનરૂપ અર્થને આદરની દૃષ્ટિથી જોયો નહિ, તેમના વચનો ઉપર તેણે કંઈ પણ વિચાર કર્યો નહિ. આ રીતે તેમના વચનોનો અનાદર અને તે પ્રત્યે બેદરકાર થઈને તે પોતાનો વખત પસાર કરવા લાગી. (तएणं ताओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं अभिक्खणं २ एयमट्ठं निवारेंति, तएणं तीसे सूमालियाए समणीहिं निग्गंथीहिं हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) ત્યારપછી તે ગોપાલિકા આર્યાએ તે સુકુમારિકા આર્યાની વારંવાર અવહેલના કરી, તેની તરફ તેમણે ગુસ્સો પણ બતાવ્યો, તેની નિંદા કરી યાવત્ તેનો તિરસ્કાર પણ કર્યો. તેને વારંવાર શરીરને શોભાવવા બદલ તેમજ જળનું સિંચન કરવા બદલ

भूतः, यदा=यावत् कालं खलु अहमगारवासमध्ये वसामि, तदा=तावत् कालं खल्वहं 'अप्पवसा' आत्मवशा स्वाधीना आसम्, यदा खल्वहं मुण्डा भूत्वा प्रव्रजिता तदा खल्वहं परवशा पराधीना जाता। 'पुव्विं' पुरा पूर्वस्मिन् काले च खलु 'ममं' मां श्रमण्यः 'आढायंति' २ आद्रियन्ते, तथा परिजानन्ति, इदानीं नो आद्रियन्ते नो परिजानन्ति, 'तं' तत्=तस्मात् श्रेयः खलु मम कल्ये प्रादुर्भूत प्रभातयां रजन्यां यावज्ज्वलति सूर्ये अभ्युद्गते गोपालिकानामार्याणामन्तिकात् प्रतिनिष्क्रम्य 'पाडिएक्कं' पार्थक्यं=पार्थक्याश्रयं पृथग्भूतम् अन्यमित्यर्थः 'उव-

---

यह आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ-(जयाणं अम्हं आगारवासमज्झे वसामि तयाणं अहं अप्पवसा जयाणं अहं मुंडे भवित्ता पव्वइया तयाणं अहं परवसा, पुव्विं च णं ममं समणीओ आढायंति, इयाणि णो आढंति २ तं सेयं खलु मम कल्लं पाउ०गोवालियाणं अंतियाओ पडिनिक्खमित्ता पडिएक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ) जब तक में घर में रही तब तक स्वाधीन रही-और अब जब से मुंडित होकर प्रव्रजित हुई हूँ तब से पराधीन बन रही हूँ। पहिले ये श्रमणियां मेरा आदर करती थीं-मेरी बात मानती थीं परन्तु अबतो कोई भी न मेरा आदर करती है-और न मेरी बात ही मानती है। इस लिये मुझे अब यही उचित होगा कि मैं दूसरे दिन जब प्रातः काल होने पर सूर्य प्रकाश से चमकने लगे-तब मैं गोपालिका आर्याके पास से निकल कर किसी दूसरे भिन्न उपा-

---

રોક ટોક કરી. ત્યારે તેને આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સંકલ્પ ઉદ્ભવ્યો કે (जयाणं अम्हं आगारवासमज्झे वसामि तयाणं अहं अप्पवसा जयाणं अहं मुंडे भवित्ता पव्वइया तयाणं अहं परवसा पुव्विं च णं ममं समणीओ आढायंति, इयाणि णो आढंति २ तं सेयं खलु मम पाउ० गोवालियाणं अंतियाओ पडिनिक्खमित्ता पडिक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ) જ્યાં સુધી હું ઘરમાં રહી ત્યાં સુધી સ્વાધીન રહી પણ જ્યારથી મુંડિત થઈને પ્રવ્રજીત થઇ છું ત્યારથી પરાધીન થઈ ગઈ છું પહેલાં આ શ્રમણીઓ મારો આદર કરતી હતી, મારી વાત માનતી હતી પણ અત્યારે તો કોઈ પણ મારો આદર નથી કરતું અને મારી વાત પણ માનતું નથી. તેથી મારે માટે એ જ ઉચિત છે કે, બીજે દિવસે સવારે સૂર્ય ઉદય પામતાં જ હું ગોપાલિકા આર્યાની પાસેથી નીકળીને કોઇ બીજા ઉપાશ્રયે જતી રહું. આ જાતનો તેણે વિચાર કર્યો (संपेहित्ता) વિચાર કરીને તે (कल्लं पा०

स्सयं ' उपाश्रयम् उपसंपद्य विहर्तुमितिकृत्वा एवं संप्रेक्ष्य कल्ये प्रादुर्भूतप्रभातायां रजन्यां यावज्ज्वलतिसूर्ये उदिते ति गोपालिकानामार्याणामन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य ' पाडिएक्कं ' प्रार्थक्यं-पृथग्भूतमन्यमुपाश्रयमुपसंपद्य खलु विहरति-आस्ते स्म।

ततः खलु ता सुकुमारिका आर्या ' अणोहट्टिया ' अनप्पघट्टिका अपवारकरहिता-उच्छृङ्खला अविनयवतीति यावत् ' अनिवारिया ' अनिवार्या दुर्निवारा ' सच्छंदमई ' स्वच्छन्दमतिः-चारित्रधर्मानुरोधरहितभावा, अभीक्ष्णं-पुनः पुनः हस्तौ धावति=प्रक्षालयति यावत्=स्थानं वा शय्यां वा नैषेधिकीं वा जलेनाभ्युक्ष्य चेतयति=स्थानादिकं करोतीत्यर्थः। तत्रापि च खलु पार्श्वस्था, पार्श्वस्थविहारिणी,

---

श्रय मे चली जाऊँ इस प्रकार का उसने विचार किया (संपेहित्ता) ऐसा विचार करके (कल्लं पा० गोवालियाणं अज्जाणं) दूसरे ही दिन प्रातः काल जब सूर्योदय हो गया-तब वह गोपालिका आर्या के (अंतियाओ) पास से (पडिनिक्खमित्ता) निकल कर (पडिएक्कं) भिन्न दूसरे (उवस्सयं) उपाश्रय को (उवसंपज्जित्ताणं विहरइ) प्राप्तकर वहां रहने लगी-अर्थात् दूसरे उपाश्रय में चली आई। (तएणं सा सूमालिया अज्जा अणोहट्टिया अनिवारिया सच्छंदमई अभिक्खणं अभिक्खणं हत्थे धोवेइ जाव चेएइ) वहां वह सुकुमारिका आर्या विना किसी रोक टोक के स्वच्छंद बनकर रहने लगगई। वहां उसे कोई रोकने वाला रहा नहीं-सो जो मन में आया वह करने लगगई-इस तरह वह चारित्र धर्म के भाव से रहित बन गई। वार २ अपने हाथों को धोती यावत् स्थान, शय्या, और स्वाध्याय की भूमि को धोकर वहां

गोवालियाणं अज्जाणं) બીજે દિવસે સવારે જ્યારે સૂર્ય ઉદય પામ્યો ત્યારે તે ગોપાલિકા આર્યાની (अंतियाओ) પાસેથી (पडिनिक्खमित्ता) નીકળીને (पडिएक्कं) બીજા (उवस्सयं) ઉપાશ્રયને (उवसंपज्जित्ताणं विहरइ) મેળવીને ત્યાં રહેવા લાગી, એટલે કે બીજા ઉપાશ્રયમાં જતી રહી. (त एणं सा सूमालिया अज्जा अणोहट्टिया अनिवारिया सच्छंदमई अभिक्खणं हत्थे धोवेइ जाव चेएइ) ત્યાં તે સુકુમારિકા આર્યા કોઈપણ જાતની રોક ટોક વગર સ્વચ્છંતાંપૂર્વક રહેવા લાગી. ત્યાં તેને કોઈ રોક-ટોક કરનાર હતું નહિ એટલે જે પ્રમાણે તેની ઇચ્છા થતી તે પ્રમાણે જ તે આચરતી હતી. આ રીતે તે ચારિત્ર ધર્મના ભાવથી રહિત બની ગઇ. વારંવાર તે પોતાના હાથોને ધોતી હતી યાવત્ સ્થાન, પથારી અને સ્વાધ્યાયના સ્થાનને ધોઇને ત્યાં પોતાનુ સ્થાન નક્કી કરતી હતી.

अवसन्ना, अवसन्नविहारिणी, कुशीला कुशीलविहारिणी, संसक्ता, संसक्तविहारिणी, बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयति, पालयित्वा अर्धमासिक्या संलेखनया तस्य स्थानस्याऽनालोचिता अप्रतिक्रान्ता कालमासे कालं कृत्वा, ईशाने कल्पेऽन्यत-मस्मिन् विमाने माधुर्यादि वाचना ये आचार्याणां विमानसंख्याया विस्मरणेन निश्चयाभावादन्यतमस्मिन्नित्युक्तम् , देवगणिकतया उपपन्ना। तत्रैकैकासां देवीनां नवपल्योपमानि स्थितिः प्रज्ञप्ता ॥ सू० १५ ॥

अपना स्थान नियत करती। इस प्रकार (तत्थ वि य णं पासत्था पासत्थ विहारी, ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीला२ संसत्ता२ बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ) वहां उस सुकुमारिका ने पार्श्वस्था पार्श्वस्थ विहारिणी, अवसन्ना, अवसन्न विहारिणी,कुशीला,कुशील विहारिणी, संसक्ता, संसक्त विहारिणी बनकर अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन किया (पाउणित्ता अद्ध मासियाए) पालन करके वह अर्धमास की संलेखना धारण कर (कालमास) अपनी मृत्यु के अवसर (कालं किच्चा) पर मरी-सो मरकर (अणालोइय अपडिक्कंता) अपने पापों की अनालोचना करने से वह प्रतिक्रान्त नहीं बन सकने के कारण (ईसाणे कप्पे) ईशानकल्प में (अण्णयरंसि विमाणंसि) किसी एक विमान में (देवगणियत्ताए उववण्णा) देवगणिका के रूप में उत्पन्न हुई। (तत्थेगइयाणं देवीणं नवपलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थणं सूमालियाए देवीए नव पलिओवमाई ठिइ पण्णत्ता) वहां कितनिक देवियों

આ રીતે (तत्थ वि य णं पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीलाऽसंसत्ता २ बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ) ત્યાં તે સુકુ-મારિકાએ પાર્શ્વસ્થા, પાર્શ્વસ્થ વિહારિણી, અવસન્ના, અવસન્ન વિહારિણી, કુશીલા, કુશીલ વિહારિણી, સંસકતા, સંસકત વિહારિણી થઈને ઘણાં વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનુ પાલન કર્યું. (पाउणित्ता अद्धमासियाए) પાલન કરીને તે અર્ધમાસિકની સંલેખના ધારણ કરીને (कालमासे) પોતાના મૃત્યુ કાળે (कालं किच्चा) તે મરણ પામી. અને મરણ પામીને (अणालोइय अपडिक्कंता) પોતાના પાપોની આલોચના ન કરવાથી પ્રતિક્રાંત ન બની શકવાના કારણે તે (ईसाणे कप्पे) ઇશાન કલ્પમાં (अण्णयरंसि विमाणंसि) કોઈ એક વિમા-નમાં (देवगणियत्ताए उववण्णा) દેવગણિકાના રૂપમાં જન્મ પામી. (तत्थे गइयाणं देवी णं नवपलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थणं सूमालियाए देवीए नव पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता) ત્યાં કેટલીક દેવીઓની સ્થિતિ નવ પલ્યોપમની કહે-

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नामं नयरे होत्था, वन्नओ तत्थ णं दुवए नामं राया होत्था, वन्नओ, तस्स णं चुलणीदेवी धट्ठज्जुणे कुमारे जुवराया, तएणं सा सूमालियादेवी ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं जाव चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नयरे दुपयस्स रण्णो चुलणीए देवीए कुच्छिंसि दारियत्ताए पच्चायाया, तएणं सा चुलणीदेवी नवण्हं मासाणं जाव दारियं पयाया, तएणं सा तीसे दारियाए निव्वत्तबारसाहियाए इमं एयारूवं गोणं गुणणिप्फण्णं नामधेज्जं जम्हाणं एस दारिया दुवयस्स रण्णो धूया चुलणीए देवीए अत्तया तं होउ णं अम्हं इमीसे दारियाए नामधिज्जे दोवई, तएणं तीसे अम्मापियरो इमं एयारूवं गुण्णं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करिंति दोवई, तएणं सा दोवई दारिया पंच धाइपरिग्गहिया जाव गिरिकंदरमल्लीण इव चंपगलया निवाय-

---

की स्थिति नौ पल्योपम की कही गई है—सो इस सुकुमारिकादेवी की वहां नौ पल्योपम की स्थिति हुई। यहां जो " किसी एक विमान में " ऐसा अनिश्चयात्मक पद आया है उसका तात्पर्य यह है कि माथुर्यादि-वाचना के समय में आचार्यों को विमान संख्या का विस्मरण हो जाने से उसका निश्चय नहीं रहा। अतः ऐसा कहा गया है ॥ सू० १५ ॥

વામા આવી છે તો તે સુકુમારિકા દેવીની પણ ત્યાં નવપલ્યોપમની સ્થિતિ થઈ. અહીં જે "કોઈ એક વિમાનમાં" આ જાતનું અનિશ્ચયાત્મક પદ આવ્યું છે તેનું કારણ આ પ્રમાણે છે કે માથુર્યાદિ વાચનાના સમયે આચાર્યોને વિમાન સંખ્યાનુ વિસ્મરણ થઇ જવાથી તે વિષે નિશ્ચય રહ્યો નહિ. એથી આ પ્રમાણે કહેવામાં આવ્યું છે. ॥ સૂત્ર ૧૫ ॥

निव्वाघायंसि सुहंसुहेणं परिवड्ढइ। तएणं सा दोवई रायवरकन्ना उम्मुक्कबालभावा जाव उक्किट्ठसरीरा जाया जावि होत्था, तएणं तं दोवइं रायवरकन्नं अण्णया कयाई अंतेउरियाओ ण्हायं जाव विभूसियं करेंति करित्ता दुवयस्स रण्णो पाएवंदिउं पेसंति तएणं सा दोवइं राय० जेणेव राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता दुवयस्स रण्णो पायग्गहणं करेइ, तएणं से दुवए राया दोवइं दारियं अंके निवेसेइ निवेसित्ता दोवइए रायवरकन्नाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए दोवइं रायवरकन्नं एवं वयासी-जस्स णं अहं पुत्ता! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि तत्थ णं तुमं सुहिया वा दुक्खिया वा भविज्जासि, तएणं मम जावजीवाए हिययडाहे भविस्सइ, तं णं अहं तव पुत्ता! अज्जयाए सयंवरं विरयामि, अज्जयाए णं तुमं दिण्णसयंवरा जण्णं तुमं सयमेव रायं वा जुवरायं वा वरेहिसि से णं तव भत्तारे भविस्सइ त्तिकट्टु ताहिं इट्ठाहिं जाव आसासेइ आसासित्ता पडिविसज्जेइ ॥ सू० १६ ॥

टीका—'तेणं कालेणं' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये इहैव जम्बूद्वीपे भारते वर्षे पञ्चालेषु जनपदेषु काम्पिल्यपुरं=काम्पिल्यपुरनामकं नगर-

---

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय में (इहेव जंबुदीवे भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नामं नयरे होत्था) इसी जंबूद्वीप में भारत वर्ष में पांचाल जनपद में

तेणं कालेणं तेणं समएणं इत्यादि—

ટીકાર્થ–(तेण कालेणं तेणं समएणं) તે કાળે અને તે સમયે (इहेव जंबुद्दीवे भारहेवासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नामं नयरे होत्था) આ જંબૂદ્વીપમાં ભારત વર્ષમાં પાંચાલ જનપદમાં કાંપિલ્યપુર નામે નગર હતું. (वन्नओ) આ નગરનું વર્ણન ઔપપાતિક સૂત્રમાં કરવામાં આવ્યું છે ત્યાંથી પાઠકોએ જાણી

मासीत्, वर्णकः=अस्य नगरस्य वर्णनमौपपातिकसूत्राद् बोध्यम्। तत्र खलु द्रुपदो नाम राजाऽऽसीत्, चुलनी नाम्नी देवी भार्याऽभवत्, तस्य पुत्रः 'धट्ठज्जुणे' धृष्टद्युम्नो नाम कुमारो युवराजोऽभवत्।

ततः खलु सा सुकुमारिका देवी तस्माद् देवलोकादायुःक्षयेण यावत्-च्युत्वा इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे पंचालेषु जनपदेषु काम्पिल्यपुरे नगरे द्रुपदस्य राज्ञः=चुलन्या देव्याः कुक्षौ दारिकतया=पुत्रीत्वेन 'पच्चायाया' प्रत्यायाता=समुत्पन्ना। ततः खलु सा चुलनीदेवी नवानां मासानां बहुप्रतिपूर्णानां यावद् दारिकां पुत्रीं प्रजाता=प्रजनितवती। ततः खलु सा तस्या दारिकाया

कांपिल्यपुर नाम का नगर था। (वन्नओ) इस नगर का वर्णन औपपातिक सूत्र में किया गया है सो वहां से जान लेना चाहिये। (तत्थ णं दुवए नामं राया होत्था वन्नओ तस्स णं चुलणीदेवी, धट्ठज्जुणे कुमारे जुवराया, तएणं सा सूमालिया देवी ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं जाव चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे, भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो चुलणीए देवीए कुच्छिसि दारियत्ताए पच्चायाया) वहांके राजाका नाम द्रुपद था। राजाका वर्णन भी पहिले जैसा ही जानना चाहिये। इस की रानी का नाम चुलनीदेवी था। कुमार का नाम धृष्टद्युम्न था-यह युवराज था। वह सुकुमारिका आर्या का जीव उस दूसरे ईशान देवलोक से आयु आदि क्षय हो जाने के कारण चवकर इसी जंबूद्वीप नाम के द्वीप में भरत क्षेत्र में, पांचाल जनपद में कांपिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की चुलनीदेवी की कुक्षि में पुत्री रूपसे अवतरित हुआ। (तएणं सा चुलणीदेवी नवण्हं मासाणं जाव

લેવું જોઈએ. (तत्थ णं दुवए नामं राया होत्था, वन्नओ, तस्सणं चुलणी देवी धट्ठज्जुणे कुमारे, जुवराया, तएणं सा सूमालिया देवी ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं जाव चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो चुलणीए देवीए कुच्छिसि दारियत्ताए पच्चायाया) ત્યાંના રાજાનું નામ દ્રુપદ હતું રાજાનું વર્ણન પણ ઔપપાતિક સૂત્રમાં વર્ણિત કોણિક રાજાની જેમજ જાણી લેવું જોઈએ તેની રાણીનું નામ ચુલની દેવી હતું. તેના પુત્રનું નામ ધૃષ્ટદ્યુમ્ન હતું. ધૃષ્ટદ્યુમ્ન યુવરાજ હતો, સુકુમારિકા આર્યાનો જીવ તે બીજા દેવલોકથી આયુ વગેરે ક્ષય થવા બદલ ચવીને આજ જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમાં, ભરત ક્ષેત્રમાં, પાંચાલ્ય જનપદમાં, કાંપિલ્યપુર નગરમાં દ્રુપદ રાજાની ચુલની દેવીના ઉદરમાં પુત્રી રૂપે અવતરિત થયો. (त एणं सा चुलणी

'निव्वत्तबारसाहियाए' निर्वृत्तद्वादशाहिकायां=द्वादशेऽहनि संप्राप्ते इदमेतद्रूपं नाम कृतवती यस्मात् खलु एषा दारिका द्रुपदस्य राज्ञो 'धूया' दुहिता-पुत्री चुलन्या देव्या 'अत्तिया' आत्मजा=अङ्गजाता, तस्माद् भवतु खल्वस्माकमस्या दारिकाया नामधेयं 'द्रौपदी' इति। ततः खलु तस्या अम्बापितरौ इमसेतद्रूपं गोणं=गुणप्राप्तं गुणनिष्पन्नं=गुणसंपन्नं, नामधेयं कुरुतः। ततः सा द्रौपदी दारिका पञ्चधात्रीभिर्यावद् गिरिकन्दरमालीने चम्पकलता निवातनिव्याघाते सुखं-सुखेन परिवर्धते स्म।

दारियं पयाया तएणं सा तीसे दारियाए निव्वत्तबारसाहियाए इमं एया रूवं गोणं गुणणिप्फण्णं नामधेज्जं जम्हाणं एस दारिया दुवयस्स रण्णो धूया चुलणीए देवीए अत्तया तं होउणं-अम्हं इमीसे दारियाए नामधिज्जे दोवई) गर्भ के जब नौ मास अच्छी तरह समाप्त हो चुके तब चुलनी-देवी ने एक पुत्री को जन्म दिया। पुत्री को उत्पन्न हुए १२ वां दिन लगा-तब चुलनी माताने उसका इस रूप से गुणनिष्पन्न नामरक्खा क्यों कि यह द्रुपदराजा की पुत्री है और मुझ चुलनी के उदर से उत्पन्न हुई है-इसलिये इस हमारी कन्या का नाम द्रुपदी रहो इस तरह के विचार से (तीसे अम्मा पियरो) माता पिता ने उसका (इमं एयारूवं गुणं गुणनिष्फन्नं नामधेज्जं करिंति दोवई) इस तरह का गुणनिष्पन्न नाम द्रौपदी रख दिया। (तएणं) इसके बाद-(सा दोवई दारिया पंचधाइ परिग्गहिया जाव गिरिकंदरमल्लीणइव चंपगलया निवायनिव्वाघायंसि सुहं सुहेणं परिवड्ढइ) वह द्रौपदी दारिका पांच धायमाताओं से युक्त

देवी नवण्हं मासाणं जाव दारियं पयाया तएणं सा तीसे दारियाए निव्वत्तबार-साहियाए इमं एयारूवं गोणं गुणणिप्फवण्णं नामधेज्ज जम्माणं एस दारिया दुवयस्स रण्णो धूया चूलणीए देवीए अत्तया तं होउणं अम्हं इमीसे दारियाए नामधिज्जे दोवई) ગર્ભના નવમાસ જ્યારે સંપૂર્ણપણે સમાપ્ત થયા ત્યારે ચૂલની દેવીએ એક પુત્રીને જન્મ આપ્યો. પુત્રીના જન્મ પછી જ્યારે અગિ-યાર દિવસ પૂરા થયા અને બારમો દિવસ શરૂ થયો ત્યારે ચુલની માતાએ વિચાર કર્યો કે દ્રુપદ રાજાની આ કન્યાપુત્રી છે અને મારા ગર્ભથી જન્મ પામી છે, આ પ્રમાણે આનું નામ દ્રૌપદી રાખીએ તો સારૂં આમ વિચારીને (तीसे अम्मापियरो) માતાપિતાએ (इमं एयारूवं गुणं गुणनिप्फन्नं नाम धेज्जं करिंति दोवई) આ રીતે તે કન્યાનું ગુણ નિષ્પન્ન નામ દ્રૌપદી પાડયું (तएणं) ત્યારપછી (सा दोवई दारिया पंचधाइपरिग्गहिया जाव गिरिकंदर मल्लीण इव चंपगलया निवायनिव्वाधायंसि सुहं सुहेणं परिवड्ढइ) દ્રૌપદી

ततः खलु सा द्रौपदी राजवरकन्या उन्मुक्तबालभावा यावद् उत्कृष्टा, उत्कृष्ट-शरीरा जाता चाप्यभवत् । ततः खलु तां द्रौपदीं राजवरकन्यामन्यदा कदाचिद् 'अंते उरियाओ' आन्तः पुरिक्य=अन्तः पुरवर्तिन्यः स्त्रियः स्नातां यावत्-वस्त्रा-लंकारविभूषितां कुर्वन्ति कृत्वा द्रुपदस्य राज्ञः पादौ वन्दितुं 'पेसंति' प्रेषयन्ति, ततः खलु सा द्रौपदी राजवरकन्या यत्रैव द्रुपदो राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य द्रुपदस्य राज्ञः पादग्रहणं करोति, ततः खलु स द्रुपदो राजा द्रौपदीं दारिकामङ्के

होकर इस तरह पलने पुषने लगी कि जिस तरह गिरि की कंदरा के प्रदेशमें उत्पन्न हुई चंपकलता वात रहित निरुपद्रव स्थान में आनन्द के साथ पलती पुषती है । (तएणं सा दोवई रायवरकन्ना उम्मुक्कबाल-भावा, जाव उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था, तएणं तं दोवइं रायव-रकन्नं अण्णया कयाई अंते उरियाओ ण्हायं जाव विभूसियं करेंति, करित्ता दुवयस्स रण्णो पाए वंदिउं पेसंति) वह राजवर कन्या द्रौपदी बालभाव रहित होकर जब यौवन अवस्था वाली हो चुकी तब इस के शरीर में लावण्य की चमक से विषय सौन्दर्य आ गया-अतः उस समय यह विशेषरूप से उत्कृष्ट शरीर वाली बनगई। किसी एक दिन की बात है कि अंतः पुर की स्त्रियों ने द्रौपदी को स्नान कराकर यावत् वस्त्रालं-कार से विभूषित किया-और विभूषित कर के द्रुपद राजा की चरण वंदना करने के लिये भेज दिया (तएणं सा दोवइ राय० जेणेव दुवए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, दुवयस्स रण्णो पायग्गहणं करेइ,

દારિકા પાંચ ધાયમાતાઓથી યુક્ત થઇને આ પ્રમાણે લાલિત પાલિત થવા માંડી જેમકે પર્વતની કંદરાના પ્રદેશમાં ઉત્પન્ન થયેલી ચંપકલતા નિર્વાત, નિરૂપદ્રવ સ્થાનમાં સુખેથી મોટી થતી ન હોય ! (तएणं सा दोवई रायवर-कन्ना उम्मुक्कबालभावा जाव उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था, तएणं तं दोवई रायवरकन्नं अण्णया कयाई अंते उरियाओ ण्हायं जाव विभूसियं करेंति करित्ता दुवयस्स रण्णो पाए वंदिउं पेसंति) તે રાજવર કન્યા, દ્રૌપદી બચપણુ વટાવીને જ્યારે યુવાવસ્થા સંપન્ન થઈ ગઈ ત્યારે તેના શરીરમાં લાવણ્યના ચમકથી સવિશેષ સૌંદર્ય દીપી ઉઠ્યું. તેથી તે વખતે તે વિશેષ રૂપથી ઉત્કૃષ્ટ શરીર-વાળી થઇ ગઇ હતી. કોઇ એક દિવસની વાત છે કે રણુવાસની સ્ત્રીઓએ દ્રૌપ-દીને સ્નાન કરાવ્યું યાવત્ વસ્ત્રાલંકારોથી વિભૂષિત કરી અને વિભૂષિત કરીને દ્રુપદ રાજાની ચરણુ વંદણા કરવા માટે મોકલી (तएणं सा दोवइ राय० जेणेव दुवए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, दुवयस्स रण्णो पायग्गहणं करेइ, तएणं

निवेशयति, निवेश्य द्रौपद्या राजवरकन्याया रूपेण च यौवनेन च लावण्येन च 'जायविह्मए' जातविस्मयः=आश्चर्यं प्राप्तः स द्रुपदो द्रौपदीं राजवरकन्या मेवमवादीत्-हे पुत्रि ! यस्य खलु अहं राज्ञो वा युवराजस्य वा भार्यात्वेन स्वय-मेव दास्यामि, तत्र खलु त्वं सुखिता वा दुःखिता वा भविष्यसि, ततः खलु मम 'जाव जीवाए' यावज्जीवं 'हिययडाहे' हृदयदाहः-मनोदुःखं भविष्यति।

तएणं से दुवए राया दोवइं दारियं अंके निवेसेइ, निवेसित्ता, दोवईए रायवरकन्नाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए दोवइं, रायवरकन्नं एवं वयासी) सो वह राजवर कन्या द्रौपदी जहां द्रुपद राजा था वहां आई। वहां आकर उसने वंदना करने के लिये द्रुपद राजा के ज्योंही दोनों पैरों को पकड़ा कि इतने में उस द्रुपद राजाने उस द्रौपदी दारिका को अपनी गोदमें बैठा लिया। द्रौपदी के बैठते ही वह राजा उस राजवर कन्या द्रौपदी के रूप, यौवन और लावण्य से विशेष विस्मित हुआ-सो विस्मित होकर उसने उस राजवर कन्या द्रौपदी से इस प्रकार कहा-(जस्स णं अहं पुत्ता ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारि-यत्ताए सयमेव दलइस्सामि,तत्थ णं तुमं सुहिया वा दुक्खिया वा भवि-ज्जासि तएणं मम जाव जीवाए हिययडाहे भविस्सइ) हे पुत्रि ! मैं स्वयं तुम्हें जिस राजा को, अथवा युवराज को भार्या के रूप में दूंगा वहां तुम सुखी और दुःखी दोनों भी हो सकती हो। तो इससे मुझे यावज्जीव हृदय दाह-मानसिक दुःख रहेगा। (तं णं अहं पुत्ता !

से दुवए राया दोवइ दारियं अंके निवेसेइ, निवेसित्ता, दोवईए रायवरकन्नाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए दोवइं रायवरकन्नं एवं वयासी) ते राजवर कन्या द्रौपदी ज्यां राजा द्रुपद हता त्यां गई. त्यां जईने तेणे द्रुपद राजाने वंदन करवा माटे बंने पगो पकडया त्यारे तेओए द्रौपदी दारि-काने पोताना खोळामां बेसाडी द्रौपदी ज्यारे खोळामां बेसी गई त्यारे राजा ते राजवर कन्या द्रौपदीना रूप, यौवन अने लावण्यथी सविशेष विस्मित थयो अने विस्मित थईने तेणे ते राजवर कन्या द्रौपदीने आ प्रमाणे कह्यु— (जस्स णं अहं पुत्ता ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि, तत्थणं तुमं सुहिया वा दुक्खिया वा भविज्जासि तएणं मम जाव जीवाए हिय-यडाहे भविस्सइ) हे पुत्रि ! हु तने जे राजाने के युवराजने भार्याना रूपमां आपीश त्यां तु सुखी पण थई शके तेम छे अने दुःखी पण. तेथी मने

=तत्तस्मात् खल्वहं हे पुत्रि ! तव 'अज्जयाए' अद्यतया-एषु दिवसेषु अल्पेषु दिनेषु इत्यर्थः स्वयंवरं वरयामि-कारयामि अद्यतया स्वल्पदिवसेष्वेव खलु त्वं 'दिण्णसयंवरा' दत्तस्वयंवरा=व्रियते इति वरः, कन्यया स्वयं वृतः स्वयंवरः, स दत्तः कन्यायाः पित्रादिना यस्यै सा दत्तस्वयंवरा भविष्यतीति भावः। 'दत्तस्वयं-वरा' इतिपदं व्याचक्षाण कथयति-'जंणं तुमं' इत्यादि। यं खलु त्वं स्वयमेव राजानं वा युवराजं वा वरिष्यसि, स खलु तव भर्ता भविष्यति' इतिकृत्वा=इत्युक्त्वा ताभिरिष्टाभिर्यावद्=वाग्भिराश्वासयति, आश्वास्य प्रतिविसर्जयति ॥ सू० १६।

मूलम्-तएणं से दुवए राया दूयं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया ! बारवइं नयरिं तत्थ णं तुमं कण्हं वासुदेवं समुद्दविजयपामोक्खे दस दसारे बलदेव-पामुक्खे पंचमहावीरे उग्गसेणपामोक्खे सोलसरायसहस्से पज्जुण्णपामुक्खाओ अद्धुट्ठाओ कुमारकोडीओ संबपामोक्खाओ

अज्जयाए सयंवरं विरयामि, अज्जयाए णं तुमं दिण्ण सयंवरा जण्णं तुमं सयमेव रायं वा जुवरायं वा वरेहिसि से णं तव भत्तारे भविस्सइ त्ति कट्टु ताहिं इट्ठाहिं जाव आसासेइ, असासित्ता पडिविसज्जेइ) इस लिये हे पुत्रि। मैं थोड़े ही दिनों में तुम्हारा स्वयंवर करवाने वाला हूँ। तुम इन दिनों में दत्तस्वयंवरा हो जाओगी, सो तुम जिस राजाको या युवराज को अपनी इच्छानुसार वरोगी वही तेरा भर्ता बन जायगा। इस तरह कहकर राजा ने अपनी पुत्री को इष्ट आदि विशेषणों वाली वाणी से आश्वासित किया और फिर आश्वासित करके उसे वहाँ से भेज दिया ॥ सू० १६ ॥

જીવન પર્યન્ત દુઃખ થયા કરશે. (तं णं अहं पुत्ता ! अज्जयाए सयंवरं विर-यामि, अज्जयाए ण तुमं दिण्णसयंवरा जण्णं तुमं सयमेव रायं वा जुवरायं वा वरेहिसी से णं तव भत्तारे भविस्सइ, ति कट्टु ताहिं इट्ठाहिं जाव आसासेइ आसासित्ता पडिविसज्जेइ) હે પુત્રિ! થોડા દિવસોમાં જ હું તમારા માટે સ્વયંવર કરવાનો છું. ત્યારે તું સ્વયંવરમાં દત્ત સ્વયંવરા થઈ જશે. જે રાજા કે યુવરાજને તું તારી પસંદગી આપશે તેજ તારો પતિ થશે. આ પ્રમાણે કહીને રાજાએ પોતાની પુત્રીને ઇષ્ટ વગેરે વિશેષણોથી યુક્ત વચનો વડે આશ્વાસનથી આશ્વાસિત કરીને તેને ત્યાંથી વિદાય કરી ॥ સૂત્ર ૧૬ ॥

सट्ठि दुद्दंतसाहस्सीओ वीरसेणपामोक्खाओ इक्कवीसं वीरपुरिस-साहस्सीओ महसेणपामोक्खाओ छप्पन्नं बलवगसाहस्सीओ अन्ने य बहवे राईसरतलवरमाडंबियकोडुंबियइब्भसिट्ठिसेणा-वइसत्थवाहपभिइओ करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं अंजलिं मत्थए कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेहि वद्धावित्ता एवं वयाहि—एवं खलु देवाणुप्पिया! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए चुलणीए देवीए अत्तयाए धट्ठज्जुणकुमारस्स भगिणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सइ तं णं तुब्भे देवाणुप्पिया! दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरि-हीणं चेव कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह, तएणं से दूए करयल जाव कट्टु दुवयस्स रण्णो एयमट्ठं पडिसुणेंति पडिसुणित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति, उवट्ठवित्ता तएणं से दूए ण्हाए जाव अलंकार० सरीरे चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ दुरुहित्ता बहूहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध जाव गहियाऽऽउह पह-रणेहिं सद्धिं संपरिवुडे कंपिल्लपुरं नयरं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ पंचालजणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवाग-च्छइ, सुरट्ठाजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव बारवइ नयरी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता बारवइं नयरिं मज्झं मज्झेणं अणुप-विसइ अणुपविसित्ता जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स बाहिरिया

उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता चाउघंटं आस-रहं ठवेइ ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता मणुस्सवग्गु-रापरिक्खित्ते पायविहारचारेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामुक्खे य दस दसारे जाव बलवगसाहस्सीओ करयल तं चेव जाव समोसरह। तएणं से कण्हे वासुदेवे तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव हियए तं दूयं सक्कारेइ सम्मा-णेइ सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ ॥ सू० १७ ॥

टीका—'तएणं से' इत्यादि। ततस्तदनन्तरं स द्रुपदो राजा दूत शब्द-यति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिय! द्वारवतीं=द्वारकां नगरीम्, तत्र खलु त्वं कृष्णं वासुदेवं, समुद्रविजयप्रमुखान् दश दशार्हान्, बलदेव-प्रमुखान् पञ्च महावीरान्, उग्रसेनप्रमुखान् षोडश राजसहस्राणि, प्रद्युम्नप्रमुखाः अर्धचतुर्थीः कुमारकोटीः=प्रद्युम्नप्रमुखान् सार्धत्रिकोटिराजकुमारान्, साम्बप्रमुखाः षष्टिदुर्दान्तसाहस्रीः=साम्बप्रमुखान् षष्टिसहस्रदुर्दान्तान्, वीरसेनप्रमुखान् एक विंशतिवीरपुरुषसाहस्रीः=वीरसेनप्रमुखान् एकविंशतिसहस्रवीरपुरुषान्, महासेन

'तएणं से दुवए' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं से दुवए राया दूयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया! बारवइ नयरिं-तत्थणं तुमं कण्हं वासुदेवं समु-द्दविजय पामोक्खे दसदसारे बलदेव पामोक्खे पंच महावीरे उग्गसेन पामो-क्खे सोलसरायसहस्से पज्जुण्णपामोक्खाओ अद्धुट्ठाओ कुमारकोडीओ संबपामोक्खाओ सट्ठि दुद्दंत साहस्सीओ वीरसेन पामोक्खाओ इक्कवीसं

'तएणं से दुवए' इत्यादि—

टीकार्थ-(तएणं से दुवए राया दूयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया! वारवइं नयरिं-तत्थणं तुमं कण्हं वासुदेवंसमुद्द विजयपामोक्खे दसदसारे बलदेवपामोक्खे पंच महावीरे उग्गसेनपामोक्खे सोलसरायसहस्से पज्जुण्ण-पामुक्खाओ अद्धुट्ठाओ कुमारकोडीओ संबपामोक्खाओ सट्ठि दुद्दंत साहस्सीओ वीर-सेन पामोक्खाओ इक्कवीसं वीरपुरिससाहस्सीओ महसेनपामोक्खाओ छप्पनं बलव-

प्रमुखाः षट्पञ्चाशत् बलवत्साहस्रीः=महासेनप्रमुखान् षट्पञ्चाशत्सहस्रप्रमितबलवतो राज्ञः, अन्यांश्च बहून् राजेश्वरतलवरमाडंविककौटुम्बिकेभ्यश्रेष्ठिसेनापति सार्थवहप्रभृतीन् करतलपरिगृहीतं दशनखं शिर आवर्तमञ्जलिं मस्तके कृत्वा जयेन विजयेन=जयविजयशब्देन 'वद्धावेहि' वर्धय=अभिनन्दय वर्धयित्वा एव ब्रूहि-हे देवानुप्रियाः! एवं खलु काम्पिल्यपुरे नगरे द्रुपदस्य राज्ञो दुहितुः=पुत्र्याः, चुलन्या देव्या आत्मजायाः धृष्टद्युम्नकुमारस्य भगिन्याः, द्रौपद्या राजवरकन्यकाया स्वयं-

---

वीर पुरिससाहस्सीओ महसेनपामोक्खाओ छप्पन्नं बलवगसाहस्सीओ अन्नेय बहवे राई सरतलवरमाडंबियकोडुंबियइब्भसेट्ठिसेणावइ सत्थवाहपभिइओ करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं अंजलिं मत्थए कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेहि वद्धाविता एवं वयाहि) इस द्रुपद राजाने अपने एक दूत को बुलाया और बुलाकर उससे ऐसा कहा-देवानुप्रिय! तुम द्वारका नगरीको जाओ वहा तुम कृष्ण वासुदेव को, समुद्र विजय प्रमुख दश दशार्हों को, बलदेव प्रमुख पांच महावीरों को, उग्रसेन प्रमुख सोलह हजार राजाओं को प्रद्युम्न प्रमुख ३॥) साढे तीन करोड़ राजकुमारों को ६० हजार दुर्दान्त साम्ब प्रमुखों को २१ हजार वीरसेन प्रमुख वीरों को ५६ हजार महासेन प्रमुख बलिष्ठ राजाओं को, तथा और भी अनेक राजेश्वर तलवर, माडंबिक, कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति, सार्थवाह आदिकों को दोनों अपने हाथों की दशनखों वाली अजलि बनाकर और उसे मस्तक से घुमाकर नमस्कार करना तथा "जय विजय" शब्दोच्चारण करते हुए उन्हें वधाई देना-उनका अभिनन्दन करना। वधाई देकरके फिर उन से ऐसा

गसाहस्सीओ अन्ने य बहवे राईसरतलवरमाडंवियकोडुंवियइब्भसेट्ठिसेणावइसत्थवाहपभिइओ करयल परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं अंजलि मत्थए कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेहि, वद्धावित्ता एवं वयाहि) ત્યારપછી દ્રુપદ રાજાએ પોતાના એક દૂતને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય! તમે દ્વારકા નગરીમાં જાઓ. ત્યાં તમે કૃષ્ણવાસુદેવને, બળદેવ પ્રમુખ પાંચ મહાવીરોને, ઉગ્રસેન પ્રમુખ સોળ હજાર રાજાઓને, પ્રદ્યુમ્ન પ્રમુખ સાડા ત્રણ કરોડ રાજકુમારોને, ૬૦ હજાર દુર્દાંતસાંબ પ્રમુખોને, ૨૧ હજાર વીરસેન પ્રમુખ વીરોને, ૫૬ હજાર મહાસેન પ્રમુખ બલિષ્ઠ રાજાઓને તેમજ બીજા પણ બધા રાજેશ્વર, તલવર, માડંબિક, કૌટુંબિક, ઇભ્ય, શ્રેષ્ઠિ, સેનાપતિ, સાર્થવાહ વગેરેને પોતાના બંને દશ નખોવાળા હાથોની અંજલિ બનાવીને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કરજો તથા 'જય વિજય' શબ્દોચ્ચારણ કરતાં બધાને તમે અભિનંદિત

वरो भविष्यति, तत्=तस्मात् खलु यूयं हे देवानुप्रियाः ! द्रुपद राजानमनुगृह्णन्तः 'अकालपरिहीणं च्चेव' कालविलम्बरहितमेव काम्पिल्यपुरे नगरे समवसरत, ततः खलु स दूतः करतल० यावत्-अञ्जलिं मस्तके कृत्वा द्रुपदस्य राज्ञ एतमर्थं प्रतिशृणोति, प्रतिश्रुत्य यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छति उपागत्य कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्-क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः चतुर्घण्टं=घंटाचतुष्टययुक्तम् अश्वरथं युक्तमेवोपस्थापयत । यावत्-उपस्थापयन्ति । तत खलु स दूतः

कहना-(एवं खलु देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए चुल्लणीए देवीए अत्तयाए धट्ठज्जुणकुमारस्स भगिणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सइ, तं णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चेव कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह) हे देवानुप्रियों ! कांपिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री, चुलनी देवी की आत्मजा, धृष्टद्युम्न कुमार की भगिनी राजवर कन्या द्रौपदी का स्वयंवर होनेवाला है, इसलिये हे देवानुप्रियों ! आप लोग द्रुपद राजाके ऊपर अनुग्रह करके बहुत ही शीघ्र कांपिल्यपुर नगर मे पधारें । (तएणं से दूए करयल जाव कट्टु दुवयस्स रण्णो एयमट्ठं पडिसुणेति पडिसुणित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी, खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति) दूतने द्रुपद राजा के इस कथन को दोनों हाथ जोड़कर स्वीकार कर लिया । स्वीकार करके फिर

કરજો. અભિનંદિત કર્યા બાદ તમે તેઓને આ પ્રમાણે વિનતી કરજો (एवं खलु देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए चुल्लणीए देवीए अत्तयाए धट्ठज्जुणकुमारस्स भगिणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सई, तं णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चेव कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह) હે દેવાનુપ્રિયો ! કાંપિલ્યપુર નગરમાં દ્રુપદ રાજાની પુત્રી ચુલની દેવીની આત્મજા, ધૃષ્ટદ્યુમ્નકુમારની બહેન રાજવર કન્યા દ્રૌપદીનો સ્વયંવર થવાનો છે એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે દ્રુપદ રાજા ઉપર કૃપા કરીને સત્વરે કાંપિલ્ય નગરમા પધારો. (तएणं से दूए करयल जाव कट्टु दुवयस्स रण्णो एयमट्ठ पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति) દ્રુપદ રાજાની આજ્ઞાને દૂતે બંને હાથ જોડીને સ્વીકારી લીધી. સ્વીકાર કર્યા બાદ તે જ્યાં

स्नातः यावत्-सर्वालङ्कारविभूषितशरीरश्चतुर्घण्टमश्वरथं 'दुरुहइ' दूरोहति-आरोहति। दूरुह्य बहुभिः पुरुषैः कीदृशैः पुरुषैरित्याह-'सन्नद्ध जाव गहिया' इति अत्र यावच्छब्देनैवं बोध्यम्-सन्नद्धबद्धवम्मियकवएहिं, उप्पीलियसरासनपट्टिगेहिं, पिणद्धगेविज्जगबद्धाविद्धविमलवरचिन्धपट्टेहिं, गहियाऽऽउहपहरणेहिं इति। सन्नद्धबद्धवर्मितकवचैः उत्पीडितशरासनपट्टकैः, पिनद्धग्रैवेयकबद्धाविद्धविमलवरचिह्नपट्टैः गृहीतायुधप्रहरणैः, सन्नद्धाः सज्जीकृताः, बद्धाः=कशाबन्धनेन संबद्धा, वर्मिताः=अङ्गे परिहिताः कवचा यै स्ते सन्नद्धबद्धवर्मितकवचास्तैः, तथा-उत्पीडितशरासनपट्टकैः उत्पीडितानि=गुणारोपणेन वक्रीकृतानि शरासनपट्टकानि धनुः प्रकाण्डानि यैस्ते उत्पीडितशरासनपट्टकाः रज्ज्वारोपणवक्रीकृतधनुर्धारिणस्तैः,

---

वह जहां अपना घर था वहां आया। वहां आकर उसने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया बुलाकर उनसे ऐसा कहा हे देवानुप्रियों! तुम लोग शीघ्र ही चार घंटों से युक्त अश्वरथ को घोड़े जोतकर यहां ले आओ। उन्होंने आज्ञानुसार ऐसा ही किया। वे चार घंटा वाले उस रथ में घोड़े जोतकर उसे वहां ले आये (तएणं से दूए ण्हाए जाव अलंकार० सरीरे चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, दुरुहित्ता बहूहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध जाव गहियाऽऽउहपहरणेहिं सद्धिं संपरिवुडे कंपिल्लपुरनयरं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ) इस के बाद दूतने स्नान किया, यावत् अपने शरीर को समस्त अलंकारों से विभूषित किया। बाद में वह उस चतुर्घंट वाले अश्वरथ पर सवार हो गया। उस के साथ सजाकर अपने शरीर पर कवच पहिर रखा है ऐसा अनेक पुरुष थे ज्यापर बाण को आरोपित करने से वक्री भूत हुआ धनुष जिनके हाथों में हैं ऐसे अनेक धनुर्धारी

પોતાનું ઘર હતું ત્યાં આવ્યો. ત્યાં આવીને તેણે કૌટુંબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય! તમે સત્વરે ચાર ઘંટડીઓવાળો અશ્વરથ જોતરીને અહીં આવો. કૌટુંબિક પુરૂષોએ તેમજ કર્યું ચાર ઘંટડીઓવાળો અશ્વરથ જોતરીને ત્યાં લઈ આવ્યા. (तएण से दूए ण्हाए जाव अलंकार० सरीरे चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, दुरुहित्ता बहूहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध जाव गहियाऽऽउहपहरणेहिं सिद्धिं संपरिवुडे कंपिल्लपुरनयरं मज्झं मज्झेणं निगच्छइ) ત્યારબાદ દૂતે સ્નાન કર્યું યાવત્ પોતાના શરીરને બધી જાતના અલંકારોથી શણગાર્યું. ત્યારપછી તે દૂત ચતુર્ઘંટવાળા અશ્વરથ ઉપર સવાર થઈ ગયો. તે દૂતની સાથે બખતરથી સુસજ્જ થયેલા ઘણા પુરૂષો હતા. પ્રત્યંચા ઉપર બાણ ચઢાવવાથી વક્ર થઈ ગયેલા ધનુષો જેમના હાથોમાં છે

तथा–पिनद्धग्रैवेयकबद्धाविद्धविमलवरचिह्नपट्टैः– पिनद्धानि – परिधृतानि ग्रैवेयकाणि–कण्ठभूषणानि यै स्ते तथा, बद्धः=आरोपितः संयोजितः आविद्धः=मस्तके-परिधृतः विमलः=स्वच्छः वरः चिह्नपट्टः–स्वपक्षबोधकचिह्न : यैस्ते तथा, ततो द्विपदकर्मधारयः, तथा–गृहीतायुधप्रहरणैः=आयुधानि अस्त्राणि, प्रहरणानि-शस्त्राणि गृहीतानि यैस्ते गृहीतायुधप्रहरणा स्तैः, सार्धं संपरिवृतः काम्पिल्यपुरं नगरं मध्यमध्येन मध्यमार्गेण निर्गच्छति, पञ्चालजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव 'देसप्पंते' देशप्रान्तं–देशसीमा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'सुरट्ठाजणवयस्स' सौराष्ट्रजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव द्वारवती नगरी तत्रैवोपागच्छति उपागत्य द्वारवतीं नगरीं मध्यमध्येन अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य यत्रैव कृष्णस्य वासुदेवस्य

पुरुष थे, जिन्होंने गले में आभूषणों को पहिररक्खे हैं और मस्तक के ऊपर स्वच्छ, स्वपक्षबोधक चिह्न धारण किया है ऐसे अनेक व्यक्ति थे। तथा आयुध एवं प्रहरणों को लेकर अनेक सैनिक जन इसके आसपास हो कर चल रहे थे। सो वह दूत इन सब के साथ २ उस कांपिल्यपुर नगर के बीचोंबीच से होकर निकला। (पंचालजणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ–सुरट्ठा जणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव बारवइ नयरी तेणेव उवागच्छइ) चलते २ वह पांचाल जनपद के बीचोंबीच से होता हुआ जहां पर अपने देशकी सीमा का अन्त था वहां आया। वहां आकर वह सौराष्ट्र देशके बीचसे निकलता हुआ जहां द्वारावती नगरी थी वहां आया–(उवागच्छित्ता बारवइं नयरीं मज्झं मज्झेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव कण्हस्स

એવા ઘણા ધનુર્ધરો તેની સાથે હતા, જેઓએ ગળામાં આભૂષણો પહેરેલાં અને મસ્તક ઉપર સ્વચ્છ સ્વપક્ષ બોધક ચિહ્ન પટો બાંધી રાખેલા એવા પણ અનેક પુરૂષો તેની સાથે હતા. આયુધ અને પ્રહરણોને ઉચકીને પણ ઘણા સૈનિકો તેની બંને બાજુએ ચાલી રહ્યા હતા. આ રીતે તે દૂત તેઓ બધાની સાથે કાંપિલ્યપુર નગરની વચ્ચે થઈને નીકળ્યો. (પંચાલ जणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ सुरट्ठा जणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव बारवइ नयरी तेणेव उवागच्छइ) આમ પોતાની યાત્રા પૂરી કરીને તે દૂત પાંચાલ જનપદની વચ્ચોવચ્ચ જ્યાં પોતાના દેશની હદ પૂરી થતી હતી ત્યાં આવ્યો. ત્યાં આવીને તે સૌરાષ્ટ્ર દેશની વચ્ચે થઈને જ્યાં દ્વારાવતી નગરી હતી ત્યાં આવ્યો. (उवागच्छित्ता बारवइं, नयरिं मज्झं मज्झेणं, अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव कण्हस्स

बाहिरुपस्थानशाला–आस्थानमण्डपः, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य चातुर्घण्टमश्वरथं स्थापयति, स्थापयित्वा 'रहाओ' रथात् 'पच्चोरुहइ' प्रत्यवरोहति–प्रत्यवतरति, प्रत्यवरुह्य 'मनुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते' मनुष्यवागुरापरिक्षिप्तः=मनुष्यसमूहपरिवृतः, स दूतः पादविहारचारेण=पादाभ्यां गमनेन यत्रैव कृष्णवासुदेवस्तत्रैवोपागच्छति, उपगत्य कृष्णं वासुदेवं समुद्रविजयप्रमुखांश्च दशदशार्हान् यावत् बलवत्साहस्रीः, करतलपरिगृहीतदशनखं शिरआवर्तं मस्तके अञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्–'तं चेव' तदेव–अत्र पूर्वोक्तमेव वर्णनं बोध्यम् यावत्–समवसरत

वासुदेवस्स बाहिरिया उवट्ठाण साला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउघंटं आसरहं ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पायविहारचारेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ) वहां आकर द्वारावती नगरी में बीचोंबीच के मार्ग से होता हुआ प्रविष्ट हो कर वह जहां कृष्ण वासुदेव की बाहिर में उपस्थानशाला–सभामंडप था वहां गया। वहां पहुंचकर उसने अपने चार घंटावाले अश्वरथ को खड़ा कर दिया। रोक दिया–उसके रुकते ही वह उससे नीचे उतरा। उतर कर वह मनुष्योंके समूहसे परिक्षित (युक्त) हो कर पैदल ही जहां कृष्ण वासुदेव थे वहां गया। (उवागच्छित्ता कण्हं वासुदेवसमुद्दविजयपामुक्खे य दस दसारे जाव बलवगसाहस्सीओ करयल तं चेव जाव समोसरह) वहां जा करके उसने कृष्ण वासुदेव को समुद्रविजय प्रमुख दश दशार्होंको यावत् महासेन प्रमुख ५६, हजार बलिष्ठ राजाओंको दोनों हाथों की अंजलिकर और उसे मस्तक पर रखकर

देवस्स बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउघंट आसरहं ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पायविहारचारेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ) त्यां आवीने ते द्वारावती नगरीना मध्यमार्गे थईने नगरमां प्रविष्ट थयो अने त्यारपछी ते ज्यां कृष्ण–वासुदेवनी बाह्य उपस्थानशाळा–दीवाने आम–(सभा मंडप) हती त्यां गयो. त्यां पहोंचीने तेणे पोताना चार घंटडीओवाळा रथने ऊभो राख्यो अने पोते नीचे उतर्यो. उतर्या पछी ते पोताना नोकरो–सेवकनी साथे ज्यां कृष्ण–वासुदेव हता त्यां गयो. (उवागच्छित्ता कण्हं वासुदेवसमुद्दविजयपामुक्खे य दस दसारे जाव बलवगसाहस्सीओ करयल त चेव जाव समोसरह) त्यां जईने तेणे कृष्ण–वासुदेवने समुद्र विजय प्रमुख दशार्होने यावत् महासेन प्रमुख ५६ हजार बलिष्ठ राजाओने बंने हाथनी अंजलि बनावीने तेने

इति पर्यन्तम्, अयमर्थः-काम्पिल्यपुरनगरे द्रुपदस्य राज्ञः पुत्र्या द्रौपद्याः स्वयंवरो भविष्यति, तस्माद् यूयं द्रुपदं राजानमनुगृह्णन्तः कालविलम्बरहितं काम्पिल्यपुरे नगरे समागच्छतेति स दूतः प्रोक्तवान्' इति।

ततः खलु स कृष्णो वासुदेवस्तस्य दूतस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्टः यावत्-हर्षवशेन विसर्पद्हृदयस्तं दूतं सत्कारयति तथा संमानयति, सत्कार्य समान्य प्रतिविसर्जयति ॥ सू०१७ ॥

मूलम्-तएणं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! सभाए सुहम्माए सामुदाइयं भेरिं तालेहि, तएणं से कोडुंबियपुरिसे करयल जाव कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ पडिसुणित्ता

नमस्कार किया। यहां पर 'एवं खलु देवाणुप्पिया,' से लेकर समोसरह "तकका पूर्वोक्त पाठ इसके द्वारा कहा गया लगा लेना चाहिये-जिसका तात्पर्य यह है कि कांपिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयंवर होने वाला है सो आपलोग द्रुपद राजा के ऊपर कृपा कर के उसमें शीघ्र पधारें। इस प्रकार (तएणं से कण्हे वासुदेवे तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव हियए तं दूयं सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ) कृष्ण वासुदेव ने उस दूत के मुखसे जब इस समाचार को सुना-तो वे सुनकर और उसे हृदयमें धारण कर बहुत ही अधिक हर्षित एवं संतुष्ट हुए। दूतका उन्होंने सत्कार किया, सन्मान किया। बादमें उसे वहां से विसर्जित कर दिया ॥सू०१७॥

મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કર્યા. અહીં 'एवं खलु देवाणुप्पिया' થી समोसरह' સુધીનો પાઠ દૂત વડે કહેવામાં આવેલો છે એમ સમજી લેવું જોઈએ તેની મતલબ એ છે કે કાંપિલ્યપુર નગરમાં દ્રુપદ રાજાની પુત્રી દ્રૌપદીનો સ્વયંવર થવાનો છે તો આપ સૌ દ્રુપદ રાજા ઉપર મહેરબાની કરીને તેમાં સત્વરે પધારો. આ રીતે (तएणं से कण्हे वासुदेवे तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव हियए तं दूयं सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ) કૃષ્ણ-વાસુદેવે દૂતના મુખથી આ જાતના સમાચારો સાંભળ્યા ત્યારે સાંભળીને અને તેઓને બરાબર હૃદયમાં ધારણ કરીને અત્યંત હર્ષિત તેમજ સંતુષ્ટ થઈને તેમણે દૂતનો સત્કાર તેમજ સન્માન કર્યું. ત્યારપછી તેમણે દૂતને વિદાય કર્યો. ॥ સૂત્ર ૧૭ ॥

जेणेव सभाए सुहम्माए सामुदाइया भेरी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सामुदाइयं भेरिं महया महया सद्देणं तालेइ तएणं ताए सामुदाइयाए भेरीए तालियाए समाणीए समुद्दविजयपामोक्खा दस दसारा जाव महसेणपामुक्खाओ छप्पण्णं बलवगसाहस्सीओ ण्हाया विभूसिया जहा विभव-इड्ढिसक्कारसमुदएणं अप्पेगइया जाव पायविहारचारेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता कर-यल जाव कण्हे वासुदेवे जएणं विजएणं वद्धावेंति, तएणं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वया-सी—खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! अभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह हयगय जाव पच्चप्पिणंति, तएणं से कण्हे वासुदेवे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता समुत्तजा-लाकुलाभिरामे जाव अंजणगिरिकूडसन्निभं गयवइं नरवई दुरूढे, तएणं से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामुक्खेहिं दसहिं दसारेहिं जाव अणंगसेणापामुक्खेहिं अणेगाहिं गणियासाह-स्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं बारवइनयरिं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता सुरट्ठाजणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पंचालजणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० १८ ॥

टीका—'तएणं से' इत्यादि । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कौटुम्बिक-पुरुषं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिय ! सभायां सुधर्मायां 'सामुदाइयं' सामुदायिकिं भेरिं ताडय, ततः खलु स कौटुम्बिक-पुरुषः करतल० यावद्-मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा यावत् कृष्णस्य वासुदेवस्यैतमर्थं प्रतिशृणोति, प्रतिश्रुत्य यत्रैव सभायां सुधर्मायां 'सामुदाइया' सामुदायिकी भेरी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सामुदायिकीं भेरीं महता २ शब्देन ताडयति, येन महाशब्दो भवति, तथा भेरीं ताडयति स्मे' त्यर्थः, ततस्तदनन्तरं खलु तस्यां

'तएणं से कण्हे वासुदेवे' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे) उन कृष्ण वासुदेवने (कोडुंबियपुरिसं सद्दावेइ) अपने कौटुम्बिक पुरुष को बुलाया, बुला-कर (एवं वयासी) उनसे ऐसा कहा-(गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए सामुदाइयं भेरिं तालेहि) हे देवानुप्रिय तुम सुधर्मा सभामें जाओ और वहां जाकर सामुदाय की भेरी को बजाओ (तएणं से कोडुंबिय पुरिसे करयल जाव कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं पडि सुणेइ, पडिसुणित्ता जेणेव सभाए सुहम्माए सामुदाइया भेरी तेणेव, उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सामुदाइयं भेरिं महया२ सद्देणं तालेइ) इस प्रकार की कृष्ण वासुदेव की आज्ञा को उस पुरुष ने बड़े विनय के साथ अपने दोनों हाथों को मस्तक पर रखकर स्वीकार कर लिया-और स्वीकार करके फिर वह सुधर्मा सभा में जहां वह सामुदायिकी भेरी थी वहां आया। वहां आकर उसने उस सामुदायिकी भेरी को इसतरह से

'तएणं से कण्हे वासुदेवे' इत्यादि—

टीकार्थ-(तएण) त्यारपछी (से कण्हे वासुदेवे) ते कृष्ण-वासुदेवे (कोडुंबिय पुरिसं सद्दावेइ) पोताना कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या अने बोलावीने (एवं वयासी) तेमने आ प्रमाणे कह्युं के-(गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए सामुदाइयं भेरिं तालेहि) हे देवानुप्रिय ! तमे सुधर्मा सभामां जाओ अने त्यां जईने सामुदायिकी भेरी वगाडो. (तएणं से कोडुंबियपुरिसे कर-यल जाव कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ पडिसुणित्ता जेणेव सभाए सुहम्माए सामुदाइया भेरी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सामुदाइयं भेरिं महया २ सद्देणं तालेइ) आ जातनी कृष्ण-वासुदेवनी आज्ञाने ते पुरुषे खूबज नम्र-पणे बन्ने हाथोने मस्तके मूकीने स्वीकारी लीधी, स्वीकार कर्या पछी ते त्यांथी ज्यां सुधर्मा सभामां सामुदायिकी भेरी हती त्यां जईने तेणे मोटा अवाज साथे तेम ते सामुदायिकी भेरीने वगाडी. (तएणं ताए सामुदाइयाए भेरीए

सामुदायिक्यां भेर्यां ताडितायां सत्यां समुद्रविजयप्रमुखा दश दशार्हा यावत्-महासेन प्रमुखाः षट्पञ्चाशद् बलवत्साहस्रयाः=षट्पञ्चाशत्-सहस्रप्रमिता बलवन्तो राजानः स्नाता यावद्-सर्वालंकारविभूषिता यथाविभवर्द्धिसत्कारसमुदयेन 'अप्पेगइया' अप्येके-यावद्=केचिद् हयारूढा=अश्वारूढाः केचिद् गजारूढाः, केचिद् रथारूढाः केचिद् पादविहारचारेण यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तत्रैवोपागच्छंति, उपागत्य करतल० यावत् कृष्णं वासुदेव जयेन विजयेन=जयविजयशब्देन वर्धयन्ति। ततः खलु कृष्णो वासुदेवः कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-भो देवानुप्रियाः! क्षिप्रमेव 'अभिसेक्कं' आभिषेक्यं गज-

---

बड़े बल से बजायी कि जिससे उससे बड़ी भारी आवाज निकली (तएणं ताए सामुदाइयाए भेरीए तालियाए समाणीए समुद्दविजय पामोक्खा दस दसारा जाव महासेण पामुक्खाओ छप्पणं बलवगसाहस्सीओ ण्हाया जाव विभूसिया जहा विभव इड्ढी सक्कारसमुदएणं अत्थेगइया जाव पायविहारचारेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छति) इस तरह उस सामुयिकी भेरी के बजने पर समुद्रविजय आदि दश दशार्हों ने यावत् ५६ हजार महासेन प्रमुख बलिष्ठ राजाओं ने स्नान किया। यावत् समस्त अलंकारों से विभूषित होकर एवं सबके सब अपने विभव ऋद्धि और सत्कार के अनुसार जहां कृष्ण वासुदेव थे वहां आये। इनमें कितनेक घोडों पर कितनेक हाथियों पर कितनेक रथों पर बैठकर आये और कितनेक पैदल ही चलकर आये (उवागच्छित्ता करयल जाव कण्हं वासुदेवं जएणं विजएणं बद्धावेंति, तएणं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ सद्दवित्ता एवं वयासी, खिप्पामेव

तालियाए समाणीए समुद्दविजयपामोक्खा दस दसारा जाव महासेण पामुक्खाओ छप्पणं बलवगसाहस्सीओ ण्हाया जाव विभूसिया जहा विभव इड्ढी सक्कारसमुदएणं अप्पेगइया जाव पायविहारचारेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति) આ રીતે તે સામુયિકી ભેરી વગાડવામાં આવી ત્યારે સમુદ્ર વિજય વગેરે દશ દશાર્હોએ યાવત ૫૬ હજાર મહાસેન પ્રમુખ બલિષ્ઠ રાજાઓએ સ્નાન કર્યું. યાવત તેઓ સર્વે સમસ્ત અલંકારોથી સુસજ્જ થઈને પોતાના વિભવ અને સત્કારની સાથે જ્યાં કૃષ્ણ-વાસુદેવ હતા ત્યાં ગયા. આમાં કેટલાક ઘોડાઓ ઉપર, કેટલાક હાથીઓ ઉપર, કેટલાક રથો ઉપર સવાર થઈને ત્યાં પહોંચ્યા હતા તો કેટલાક પગે ચાલીને જ કૃષ્ણ-વાસુદેવની પાસે હાજર થયા હતા. (उवागच्छित्ता करयल जाव कण्हं वासुदेवं जएणं विजएणं बद्धावेंति तएणं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दाविता एवं वयासी खिप्पा-

रत्नं=मम मुख्यहस्तिनं परिकल्पयत-सज्जीकुरुत, हयगजरथपदातिरूप चतुरङ्गबल सज्जीकुरुत, एतां ममाज्ञां प्रत्यर्पयत, इति ततस्ते कौटुम्बिकपुरुषाः 'तथाऽस्तु' इत्युक्त्वा तदाज्ञां स्वीकृत्य सर्वं संपाद्य वाहनं बलं च सर्वं सज्जीकृतमस्माभिरिति यावत् प्रत्यर्पयन्ति=निवेदयन्ति स्म। ततः खलु स कृष्णो वासुदेवो यत्रैव मज्जन-गृहं तत्रैवोपागच्छति, मज्जनगृहं कीदृशमित्याह-'समुत्तजालाकुलाभिरामे' समु-क्तजालाकुलाभिरामं मुक्ताभिः सहितानि जालानि गवाक्षास्तैराकुलं युक्तमतएवा-भिरामं सुन्दरम्, उपागत्य स तत्र स्नानं कृत्वा यावत्-सर्वालंकारविभूषितः, अञ्जनगिरिकूटसन्निभम्=उच्चतरं श्यामवर्णमित्यर्थः, गजपतिं=हस्तिषु मुख्यं हस्तिनं नरपतिः=श्री कृष्णवासुदेवः 'दुरूढे' दूरूढः=समारूढः, ततः खलु स कृष्णो

भो देवाणुप्पिया ! अभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह, हयगय जाव पच्चप्पिण ति) वहां आकर उन्होंने दोनों हाथ जोड़कर कृष्ण वासुदेव को नमस्कार करते हुए जय विजय शब्दों द्वारा वधाई दी-इसके बाद उन कृष्ण वासुदेव ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया-बुलाकर उससे इस प्रकार कहा-भो देवानुप्रियो ! तुमलोग शीघ्र ही मेरे मुख्य हाथी को सजाओ-तथा-हय, गज, रथ और पदातिरूप चतुरंग युक्त सेना को भी सजाकर तैयार करो। पीछे हम को इसकी खबर दो। इसके बाद उन कौटुम्बिक पुरुषों ने-"तथास्तु" कहकर उनकी आज्ञा को स्वीकार लिया और स्वीकार करके बल और वाहन सब हमने सज्जित कर दिये हैं इस प्रकार की खबर उन्हें पीछे कर दी। (तएणं से कण्हे वासुदेवे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समुत्तजालाकुलाभिरामे जाव अंजणगिरि कूडसन्निभं गयवइं नरवई दुरूढे) इसके पश्चात् वे

मेव भो देवाणुप्पिया ! अभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह, हयगयजाव पच्चप्पिणंति) ત્યાં જઈને તેઓએ બંને હાથ જોડીને 'જયવિજય' શબ્દોથી કૃષ્ણ-વાસુદેવને નમસ્કાર કરતાં અભિનંદિત કર્યા ત્યારપછી કૃષ્ણ-વાસુદેવે કૌટુંબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! સત્વરે તમે મારા મુખ્ય હાથીને તેમજ બીજી પણ ઘોડા, હાથી, રથ અને પાયદલની ચતુરંગિણી સેનાને સુસજ્જ કરો અને સેના સુસજ્જ થઈ જાય ત્યારે અમને ખબર આપો. ત્યારપછી કૌટુંબિક પુરૂષોએ 'તથાસ્તુ' કહીને તેમની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી અને સ્વીકારીને તેઓ પોતાના કામમા પરોવાઈ ગયા. જ્યારે કામ થઈ ગયું ત્યારે તેઓએ "સેના અને વાહન તૈયાર છે" આ જાતની ખબર આપી. (तएणं से कण्हे वासुदेवे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता समुत्तजालाकुलाभिरामे जाव अंजणगिरिकूडसन्निभं गयवइं नरवई दुरूढे)

वासुदेवः समुद्रविजयप्रमुखैर्दशार्हैं यावत् अनङ्गसेनाप्रमुखाभिरनेकाभिर्गणिका साहस्रीभिः सार्धं संपरिवृतः सर्वद्धर्या=छत्रादिराजचिह्नरूपया यावत्-शङ्खपण-वपटहभेर्यादिरवेण द्वारवती नगर्या मध्यमध्येन=निर्गच्छति, निर्गत्य सौराष्ट्रजन-पदस्य मध्यमध्येन यत्रैव देशप्रान्तं-देशसीमा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पञ्चा-लजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव काम्पिल्यपुरं नगरं तत्रैव प्राधारयद् गमनाय= गन्तुं प्रवृत्तः ॥ सू० १८ ॥

कृष्ण वासुदेव जहां स्नान घर था वहां गये-वहां जाकर उन्होंने मुक्ताओं सहित गवाक्षों से सुन्दर उस स्नान घर में स्नान किया-स्नान करके फिर सर्व अलंकारो से विभूषित होकर वे नरपति अंजन गिरि के शिखर जैसे-विशाल कृष्णवर्ण वाले गजपति पर आरुढ हो गये। (तएणं से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामोक्खेहिं दसहिं दसारेहिं जाव अणंग सेणा पामुक्खेहिं अणेगाहिं गणिया साहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्व-ड्ढीए जाव रवेणं बारवइनयरिं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता सुरट्ठा जणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंचाल जणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए) आरुढ होकर वे कृष्ण वासुदेव समुद्र विजय आदि दश दशार्हों यावत् अंगसेना प्रमुख हजारों गणिकाओं के साथ २ छत्र आदि राज चिह्नरूप विभूति से युक्त होकर शंख, पणव, पटह, भेरी आदि बाजों की तुमुल ध्वनि पूर्वक द्वारावती नगरी के बीच से

त्यारपछी ते कृष्णु-वासुदेव ज्यां स्नानघर हतुं त्यां गया त्यां जईने तेमणे मोती जडेला गवाक्षोथी रमणीय लागता स्नानघरमां स्नान कर्युं अने त्यार पछी बधा अलंकारोथी विभूषित थईने-नरपति अंजनगिरिना शिखर जेवा विशाल कृष्णु वर्णवाळा गजपति उपर सवार थई गया (तएणं से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामोक्खेहिं दसहिं दसारेहिं जाव अणंगसेणा पामुक्खेहिं अणेगाहिं गणियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं बारवइ नयरिं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता सुरट्ठा जणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पंचालजणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए) सवार थई ने तेओ समुद्र विजय वगेरे दश दशार्हो यावत् अंगसेना प्रमुख हजारो गणिकाओनी साथे छत्र विगेरे राजचिह्न रूप विभूतिथी युक्त थईने शंख, पणुव, पटह, भेरी वगेरे तुमुल ध्वनि स्थाने द्वारवती नगरीनी वच्चे थईने पसार थया. त्याथी पसार

मूलम्—तएणं से दुवए राया दोच्चं दूयं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया! हत्थिणाउरं नयरं तत्थ णं तुमं पंडुरायं सपुत्तयं जुहिट्ठिल्लं भीमसेणं अज्जुणं नउलं सहदेवं दुज्जोहणं भाइसयसमग्गं गंगेयं विदुरं दोणं जयद्दहं सउणी किवं आसत्थामं करयल जाव कट्टु तहेव समोसरह, तएणं से दूए एवं वयासी जहा वासुदेवे नवरं भेरी नत्थि जाव जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए२। एएणेव कमेणं तच्चं दूयं चंपानयरिं तत्थ णं तुमं कण्हं अंगरायं सेल्लं नंदिरायं करयल तहेव जाव समोसरह। चउत्थं दूयं सुत्तिमइं नयरिं तत्थ णं तुमं सिसुपालं दमघोससुयं पंचभाइसयसंपरिवुडं करयल तहेव जाव समोसरह। पंचमगं दूयं हत्थसीसनयरं तत्थ णं तुमं दमदंतं रायं करयल तहेव जाव समोसरह। छट्ठं दूयं महुरं नयरिं तत्थ णं तुमं धरं रायं करयल जाव समोसरह। सत्तमं दूयं रायगिहं नयरं तत्थ णं तुमं सहदेवं जरासिंधुसुयं करयल जाव समोसरह। अट्ठमं दूयं कोडिण्णं नयरं तत्थ णं तुमं रुप्पिं भेसगसुयं करयल तहेव जाव समोसरह। नवमं दूयं विराडनयरं तत्थ णं तुमं कीयगं भाउसय समग्गं करयल जाव समोसरह। दसमं दूयं अवसेसेसु य गामागार

होते हुए निकले। निकलकर वे सौराष्ट्र देश के बीचों बीच से चलकर वहां आये जहां देश की सीमा थी। उस सीमा पर आकर के फिर वे पांचाल जनपद के मध्य से होते हुए जहां कांपिल्य पुर नगर था उस ओर चल दिये।' सू० १८

થઈને તેઓ સૌરાષ્ટ્ર દેશની વચ્ચે થઈને પોતાના દેશની હદ સુધી પહોંચ્યા. ત્યાંથી તેઓ પાંચાલ જનપદની વચ્ચે થઈને જ્યાં કાંપિલ્યપુર નગર હતું તે તરફ રવાના થયા. ॥ સૂત્ર ૧૮ ॥

नगरेसु अणेगाइं रायसहस्साइं जाव समोसरह । तएणं से दूए तहेव निग्गच्छइ जेणेव गामागर जाव समोसरह। तएणं ताइं अणेगाइं रायसहस्साइं तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ० तं दूयं सक्कारेंति सक्कारित्ता सम्माणेंति सम्मा० णित्ता पडिविसज्जिंति, तएणं ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा पत्तेयं२ ण्हाया सन्नद्धहत्थिखंधवरगया हयगयरह० महया भडचडगररहपहकर० सएहिंतो२ नगरेहिंतो अभिनिग्गच्छंति२ जेणेव पंचाले जणवए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० १९ ॥

टीका—'तएणं से' इत्यादि । ततः खलु स द्रुपदो राजा द्वितीयं दूतं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं पाण्डुं राजं सपुत्रकं=पुत्रैः सहितं

'तएणं से दुवए राया' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) इस के बाद (से दुवए राया) उस द्रुपद राजाने (दोच्चं दूयं सद्दावेइ) अपने दूसरे दूतको बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी) बुलाकर उससे ऐसा कहा-गच्छणं तुमं देवाणुप्पिया हत्थिणाउरं नयरं तत्थ णं तुमं पंडुरायं सपुत्तयं जुहिट्ठिल्लं भीमसेणं अज्जुणं नउलं सहदेवं दुज्जोहणं भाइसयसमग्गं गंगेयं विदुरं दोणं जयद्दहं सउणीकिवं आसत्थामं करयल जाव कट्टु तहेव समोसरह) बुलाकर उससे ऐसा कहा हे देवानुप्रिय ! तुम हस्तिनापुर नगर जाओ-वहां जाकर तुम पुत्र

'तएणं से दुवए राया' इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારપછી (से दुवए राया) તે દ્રુપદ રાજાએ (दोच्चं दूयं सद्दावेइ) પોતાના બીજા દૂતને બોલાવ્યો (सद्दावित्ता एवं वयासी) બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે (गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया हत्थिणाउरं नयरं, तत्थ णं तुम पंडुरायं सपुत्तय जुहिट्ठिल्लं भीमसेणं अज्जुणं नउलं सहदेवं दुज्जोहणं भाइसयसमग्गं गगेयं विदुरं दोणं जयद्दहं सउणी किवं आसत्थामं करयल जाव कट्टु तहेव समोसरह) હે દેવાનુપ્રિય ! તમે હસ્તિનાપુર નગરમાં જાઓ.

युधिष्ठिरं भीमसेनम् अर्जुनं नकुलं सहदेवं दुर्योधनं भ्रातृशतसमग्रं=शतभ्रातृभिः सहितं, गाङ्गेयं=भीष्म, विदुरं द्रोणं जयद्रथं शकुनिं 'किवं' कृपम्=कृपाचार्यं, अश्वत्थामानं करतल० यावत् मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा, तथैव समवसरत यथा पूर्वमुक्तं तथैवात्र 'समवसरत' इतिपर्यन्तं बोध्यम् अयं भावः–जयविजयशब्देन वर्धयित्वा एवं ब्रूहि–काम्पिल्यपुरे नगरे द्रुपदस्य राज्ञः पुत्र्या द्रौपद्याः स्वयंवरो भविष्यति तस्माद् खलु हे देवानुप्रियाः! यूयं द्रुपदं राजानमनुगृह्णन्तः कालविलम्बरहित-मेव काम्पिल्यपुरे नगरे समवसरत। ततः स दूतो द्रुपदस्य वचनं स्वीकृत्य हस्तिना पुरं गत्वा पाण्डुराजादिकमेवमवादीत्='काम्पिल्यपुरे द्रौपद्याः स्वयंवरो भविष्यति तत्र शीघ्रमागच्छत' इति ततोऽसौ दूतः पाण्डुराजादिना सम्मानितो विसर्जितश्च 'जहा वासुदेवे' यथा–वासुदेवः कृष्णस्तद्वदत्रापि विज्ञेयम्–'नवरं' विशेषस्तु 'भेरी नत्थि' भेरीनास्ति, कृष्णवासुदेव इव पाण्डुराजादिः स्नातः सर्वालंकार विभूषितो गजारूढश्चतुरङ्गसेनया संपरिवृतः सर्वद्धर्या युक्तो यावत् यत्रैव काम्पिल्य-पुरं नगरं तत्रैव प्राधारयद् गमनाय=गन्तुं प्रवृत्तः।

सहित पांडुराज को, युधिष्ठिर को, भीमसेन को, अर्जुन को नकुल को, सहदेव को, सौभाईयों सहित दुर्योधन को, गांगेय भीष्म पितामह को विदुर को, द्रोण को जयद्रथ को, शकुनि को, कृपाचार्य को, और द्रोणा-चार्य के पुत्र अश्वत्थामा को पहिले दोनों हाथों की अंजलि बनाकर और उसे मस्तक पर रखकर नमस्कार करना उन सबको जय विजय आदि शब्दों से वधा देना। वधाकर फिर इस प्रकार कहना कि कांपिल्य पुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयंवर है, इस लिये हे देवानुप्रियो! आप सब द्रुपद राजा के ऊपर कृपा करके विना किसी विलंब के शीघ्रही कांपिल्यपुर नगर में पधारें। (तएणं से दूए एवं वयासी–जहा वासुदेवे नवरं भेरी नत्थि, जाव जेणेव कंपिल्लपुरे

અને ત્યાં જઈને તમે પુત્રો સહિત પાંડુરાજને, યુધિષ્ઠિરને, ભીમસેનને, અર્જુનને, નકુલને, સહદેવને, સો ભાઈઓ સહિત દુર્યોધનને, ગાંગેય ભીષ્મ પિતામહને, વિદુરને, દ્રોણને, જયદ્રથને, શકુનિને, કૃપાચાર્યને અને દ્રોણાચાર્યના પુત્ર અશ્વત્થામાને સૌ પહેલાં કરબદ્ધ થઈને–અંજલિ બનાવીને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કરજો અને 'જય વિજય' શબ્દોથી તેઓને અભિનંદિત કરજો ત્યારપછી તમે તેમને આ પ્રમાણે વિનંતી કરજો કે કાંપિલ્યપુર નગરમાં દ્રુપદ રાજાની પુત્રી દ્રૌપદીનો સ્વયંવર થવાનો છે એથી હે દેવાનુપ્રિયો! આપ સૌ દ્રુપદ રાજા ઉપર મહેરબાની કરીને સત્વરે કાંપિલ્ય નગરમાં પધારો. (तएणं से दूए एव वयासी–जहा वासुदेवे नवरं भेरी नत्थि जाव जेणेव कंपिल्ल-

नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए २ एएणेव कमेणं तच्चं दूयं चंपानयरिं तत्थ णं तुमं कण्णं अंगरायं सेल्लं नंदिरायं करयल तहेव जाव समोसरह चउत्थं दूयं सुत्तिमइं नयरिं, तत्थ णं तुमं सिसुपालं दमघोससुयं पंच-भाइसयसंपरिवुडं करयल तहेव जाव समोसरह) इस के बाद दूत अपने राजा की आज्ञा प्रमाण कर वहां से हस्तिनापुर को चला गया। वहाँ पहुँच कर उसने पांडुराजा आदि से बडे विनय पूर्वक इस प्रकार कहा–कांपिल्यपुर में द्रौपदी का स्वयंवर होगा–सो आप सब कृपाकर शीघ्रातिशीघ्र वहां पधारें। इस तरहके समाचार देकर वह दूत पांडुराजा आदि से सन्मानित होकर वहां से वापिस हो गया। पांडुराज आदि स्नान कर सर्वालंकारों से विभूषित होकर गजारूढ हो, चतुरंगिणी सेना के साथ अपनी ऋद्धि आदि के अनुसार यावत् जहां कांपिल्यपुर नगर था उस ओर चल दिये। इस तरह कृष्ण वासुदेव की तरह यहां पर सब पाठ लगा लेना चाहिये। उस पाठ से इस में विशेषता केवल इतनी है कि वे सब जब द्वारावती नगरी से कांपिल्यपुर नगर को जाने के लिये निकले तो उनके साथ भेरी थी–यहां वह नहीं है। इसी क्रम से द्रुपद ने तीसरे दूत को बुलाया–बुलाकर उससे भी इसी प्रकार से

पुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए २ एएणेव कमेणं तच्चं दूयं चंपानयरिं तत्थ णं तुमं कण्णं अंगरायं सेल्लं नंदिरायं करयल तहेव जाव समोसरह चउत्थं दूयं सुत्तिमइं नयरिं तत्थणं तुमं सिसुपालं दमघोससुयं पंचभाइसयसंप-रिवुडं करयल तहेव जाव समोसरह) त्यारपछी दूत पोताना राजानी आज्ञा प्रमाणे त्यांथी हस्तिनापुर तरफ रवाना थई गयो त्यां पहोंचीने तेणे पांडु राजा वगेरे राजाओने नम्रपणे आ रीते विनंति करी के–कांपिल्यपुरमां द्रौपदीनो स्वयंवर थशे तो आप सौ कृपा करीने सत्वरे त्यां पधारो. आ रीते समाचारो आपीने ते दूत पांडुराज वगेरेथी सन्मान पामीने त्यांथी पाछो फर्यो. पांडुराज वगेरे बधाओ पण स्नान वगेरेथी परवारीने तेमज सर्वा-लंकारोथी सुसज्ज थईने हाथीओ उपर सवार थया अने पोत पोतानी चतु-रंगिणी सेना तेमज ऋद्धिनी साथे यावत् जे तरफ कांपिल्यपुर नगर हतुं ते तरफ रवाना थया. आ प्रमाणे कृष्ण–वासुदेवनी जेमज अहीं पण वर्णन समजी लेवुं जोईए कृष्ण–वासुदेवना पाठमां पांडुराज करता एटली विशेषता हती के तेओ ज्यारे द्वारावती नगरीनी बहार नीकळ्या त्यारे तेमनी साथे भेरी पण हती, पांडुराजनी साथे भेरी न हती आ प्रमाणे द्रुपद राजाए त्रीजा दूतने बोलाव्यो अने तेने पण आ रीते कह्युं के हे देवानुप्रिय! तमे

एतेनैव क्रमेण तृतीयं दूतं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिय! चम्पानगरीम्, तत्र खलु कर्णं=कर्णनामकम्-अङ्गराजम्=अङ्गदेशस्याधिपतिं, तथा 'सेल्लं' शैल्यं=शैल्यनामकं नन्दिराजं=नन्दिदेशाधिप करतल॰ परिगृहीतं दशनखं यावत्-मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा जयेन विजयेन वर्धयित्वा एवं ब्रूहि-'तहेव' तथैव=पूर्ववदत्र बोध्यम्-तद् यथा-"काम्पिल्यपुरे नगरे द्रुपदस्य राज्ञः पुत्र्या द्रौपद्याः स्वयंवरो भविष्यति, तस्माद् खलु हे देवानुप्रियाः! यूयं द्रुपदं राजानमनुगृह्णन्तः शीघ्रमेव काम्पिल्यपुरे नगरे समवसरत" इति एवं द्रुपदो-राजा चतुर्थं दूतं शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं शुक्तिमतीं नगरीं, तत्र खलु त्वं शिशुपालं दमघोषसुतं पञ्चभ्रातृशतसंपरिवृतं करतय॰ यावन्मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा ब्रूहि-'तथैव यावत् समवसरत' यथा पूर्वमुक्तं तद्वदत्र 'समवसरत' इति-

---

कहा-कि हे देवानुप्रिय! तुम चपानगरी जाओ वहां अंगदेश के अधिपति कर्ण राजा को तथा नन्दिदेश के अधिपति शैल्यराजा को कर तल परिगृहीत दशनखवाली अंजलि मस्तक पर रखकर नमस्कार करना बाद में जय विजय शब्दों से उन्हें वधाई देकर पूर्व की तरह ऐसा कहना-कि कांपिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयंवर होने वाला है, सो हे देवानुप्रियों! आपलोग द्रुपद राजा पर कृपा करके जल्दी से जल्दी कांपिल्यपुर नगर पधारें। इसी तरह द्रुपद ने चौथे दूत को बुलाकर उससे ऐसा ही कहा-कि तुम शुक्तिमती नगरी में जाओ वहां जाकर दमघोष के पुत्र तथा पांचसौ अपने भाइयों से युक्त शिशुपाल राजा से करतल परिगृहीत दशनखवाली अंजलि मस्तक पर रखकर कहना, पहिले की तरह ऐसा कहना कि कांपिल्यपुर नगरमें

ચંપા નગરીમાં જાઓ, ત્યાં અંગ દેશના અધિપતિ કર્ણ રાજાને તેમજ નંદિ દેશના અધિપતિ શૈલ્યરાજને હાથોની અંજલિ બનાવીને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કરજો અને જય-વિજય શબ્દોથી તેમને અભિનંદિત કરજો. ત્યારપછી તેમને વિનંતી કરજો કે કાંપિલ્યપુર નગરમાં દ્રુપદ રાજાની પુત્રી દ્રૌપદીનો સ્વયંવર થવાનો છે તો હે દેવાનુપ્રિયો! તમે સૌ દ્રુપદ રાજા ઉપર કૃપા કરીને અવિલંબ કાંપિલ્યપુર નગરમાં આવો. આ રીતે દ્રુપદ રાજાએ ચોથા દૂતને બોલાવ્યો અને તેને પણ આ પ્રમાણે કહ્યું કે તમે શુક્તિમતી નગરમાં જાઓ અને ત્યાં જઈને દમઘોષના પુત્ર શિશુપાલ રાજાને જ પોતાના પાંચસો ભાઈઓ સહિતકરબદ્ધ થઈને અંજલિ મસ્તકે મૂકીને વિનંતી કરતાં આ પ્રમાણેના સમાચાર આપજો કે કાંપિલ્યપુર નગરમાં દ્રુપદ રાજાની પુત્રી દ્રૌપ-

पर्यन्तं वाच्यमित्यर्थः । एवं द्रुपदो राजा पञ्चमकं दूतं शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं हस्तिशीर्षनगरं, तत्र खलु त्वं दमदन्तं=दमदन्तनामकं राजानं करतलपरिगृहीतदशनखं यावन्मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा ब्रूहि-' तथैव यावत् समवसरत ' इति पूर्ववदेवात्रापि ' समवसरत ' इतिपर्यन्तं वाच्यम् एवं स द्रुपदो राजा षष्ठं दूतं शब्दयित्वाऽवादीत्-गच्छ खलु त्वं मथुरां नगरीं, तत्र खलु त्वं धरं=धरनामकं राजानं ' करतल० यावत् समवसरत' अत्रापि पूर्ववद्दूतगमनादिकं बोध्यम् , एवं सप्तमं दूतं शब्दयित्वा एवमवदत्-गच्छ खलु त्वं राजगृहं नगरम् , तत्र खलु त्वं सहदेवं जरासिन्धुसुतं ' करतल० यावत् समवसरत ' इति पूर्ववत्-द्रौपद्याः स्वयंवरस्य वार्तां कथयित्वा ' काम्पिल्यपुरे नगरे समवसरत ' इति ब्रूहि । तथा स

द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयंवर होने वाला है-सो आप कृपा करके शीघ्र ही वहां पधारें । (पंचमगं दूयं हत्थिसीसनयरं तत्थ णं तुमं दमदंतं रायं करयल तहेव जाव समोसरह,छट्ठं दूयं महुरं नयरिं तत्थ ण तुमं धरं रायं करयल जाव समोसरह सत्तमं दूयं रायगिहं नयरं तत्थणं तुम सहदेवं जरासिंधुसुयं करयल जाव समोसरह, अट्ठमं दूयं कोडिण्णं नयरं तत्थणं तुमं रुप्पिं भेसगसुयं करयल तहेव जाव समोसरह, नवमं दूयं विराडनयर तत्थ णं तुमं कीयगं भाउसयसमग्गं करयल जाव समोसरह, दसमं दूयं अवसेसेसु गामागरनगरेसु अणेगाइं रायसहस्साइं जाव समोसरह) इसी तरह पांचवे दूत को हस्तिशीर्षनगर में दमदन्त नाम के राजा के पास छठे दूत को मथुरा नगरी में धर राजा के पास, सातवें दूत को राजगृह नगर में जरासिंधु के पुत्र सहदेव के पास

दीनो स्वयंवर थवानो छे एथी तमे कृपा करीने अविलंब त्यां पधारो. (पंचमगं दूयं हत्थसीसनयरं तत्थ णं तुम दमदंतं रायं करयल तहेव जाव समोसरह छट्ठं दूय महुरं नयरिं तत्थणं तुमं धरं रायं करयल जाव समोसरह सत्तमं दूयं रायगिहं नयरं तत्थ णं तुमं सहदेवं जरासिंधु सुयं करयल जाव समोसरह अट्ठमं दूयं कोडिण्णं नयरं तत्थणं तुमं रूप्पिं भेसगसुयं करयल तहेव जाव समोसरह नवमं दूयं विराडनयरं तत्थ णं तुमं कीचगं भाउसयसमग्गं करयल जाव समोसरह, दसमं दूयं अवसेसेसु गामागर नगरेसु अणेगाइं रायसहस्साइं जाव समोसरह) आ प्रमाणे पांचमा दूतने हस्तीशीर्ष नगरमां दमदन्त नामना राजानी पासे, छठ्ठा दूतने मथुरा नगरीमां धर राजानी पासे, सातमा दूतने राजगृह नगरमा जरासिंधुना पुत्र सहदेवनी पासे, आठमा दूतने कौडिन्य नगरमां भीष्मकना पुत्र रुक्मि राजानी पासे, नवमा दूतने

द्रुपदो राजा अष्टमं दूतं शब्दयित्वाऽवादीत्-गच्छ खलु त्वं कौण्डिल्यनगरं तत्र खलु त्वं ' रुप्पिं ' रुक्मिणं=रुक्मिनामकं भीष्मकसुतं करतल तथैव यावत् समवसरत पूर्ववत् ' समवसरत ' इति पर्यन्तं वाच्यम् । एवं स द्रुपदो राजा नवमं दूतं शब्दयित्वाऽवादीत्-गच्छ खलु त्वं विराटनगरं, तत्र खलु त्वं ' कीयगं ' कीचकं-कीचकनामकं राजानं शतभ्रातृसहितं करतल यावत् समवसरत अत्रापि व्याख्या पूर्ववत्। एवं स द्रुपदो राजा दशमं दूतं शब्दयित्वाऽवादीत्-अवशेषेषु च ग्रामाकर-नगरेषु अनेकानि राजसहस्राणि यावत् समवसरत, अत्रापि व्याख्या पूर्ववत्, ततस्तदनन्तरं खलु स दूतस्तथैव=पूर्वोक्तदूतइव निर्गच्छति काम्पिल्यनगरतो निः

में आठवें दूत को कौण्डिल्य नगर में भीष्मक के पुत्र रुक्मि राजा के पास में नौवें दूत को विराट नगर में सौ भाइयों से युक्त कीचक के पास में, और दशवे दूतों को अवशिष्ट ग्रामों में आकरों में एवं नगरों में हजारों राजाओं के पास जाने के लिये कहा। इन दूतों को राजा द्रुपद ने यह समझादिया कि तुम लोग जब इन राजाओं के पास जाओ तब पहिले उन्हें दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार करना और कहना कि कांपिल्य पुर नगर में द्रुपदकी पुत्री द्रौपदी का स्वयंवर होने वाला है सो आप लोग उस में द्रुपद राजा उपर दया कर के शीघ्र से शीघ्र पधारें। राजाकी आज्ञानुसार तीसरे दूतसे लेकर नौवें दूत तक समस्त दूत जिन्हें २ जहां २ जाने को कहा था-वे वहां२ चले गये। वहां जाकर उन्हों ने जैसा द्रुपद राजा ने इन से करने एव कहने को कहा था-वैसा ही उन्हों ने वहा २ किया और कहा। इस तरह पहिले की तरह यहां तक सब व्याख्या समझलेनी चाहिये। (तएणं से दूए तहेव निगच्छइ,

વિરાટ નગરના સો ભાઈઓથી યુક્ત કીચકની પાસે અને દશમા દૂતને બાકી રહી ગયેલા બીજા ગ્રામોમા આકરોમાં અને નગરોમાં હજારો રાજાઓની પાસે જવા હુકમ કર્યો આ બધા દૂતોને રાજા દ્રુપદે જતાં પહેલાં આ વાત સરસ રીતે સમજાવી દીધી હતી કે જ્યારે તમે રાજાઓની પાસે જાઓ ત્યારે સૌ પહેલાં પોતાના બંને હાથ જોડીને તેઓને નમસ્કાર કરજો અને ત્યારપછી તમે તેમને વિનતી કરજો કે કાંપિલ્ય નગરમાં દ્રુપદની પુત્રી દ્રૌપદીનો સ્વયવર થવાનો છે તો આપ સૌ દ્રુપદ રાજા ઉપર કૃપા કરીને અવિલબ ત્યાં પધારો. રાજાની આજ્ઞા મુજબ ત્રીજા દૂતથી માંડીને નવમા દૂત સુધીના બધા દૂતો જ્યા જ્યાં તેઓને જવાનું હતું ત્યાં ત્યા પહોચ્યા ત્યા પહોચીને તેઓએ દ્રુપદ રાજાએ જેમ આજ્ઞા કરી હતી તેમજ તેઓએ કર્યું અને કહ્યુ, અહીં પહેલાંની જેમજ સમજી લેવું જોઈએ. (तएणं से दूए तहेव निगच्छइ, जेणेव गामागर जाव

सरति, निर्गत्य यत्रैव ग्रामाकरनगरेषु अनेकानि राजसहस्राणि, तत्रैवोपागच्छति उपागत्य यावत्-समवसरत, 'समवसरत' इति पर्यन्तं दूतवाक्यं पूर्ववद् बोध्यम्। ततः खलु तानि अनेकानि राजसहस्राणि तस्य दूतस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्टाः सन्तः दूतं सत्कारयन्ति=सत्कृतं कुर्वन्ति संमानयन्ति,सत्कार्य, संमान्य प्रतिविसर्जयन्ति।

ततः खलु ते वासुदेवप्रमुखा बहुसहस्रसंख्यका राजानः,=प्रत्येकं २ स्नाताः

जेणेव गामागर जाव समोसरह) वह दशवां दूत उसी तरह से-पहिले के दूतों के समान कांपिल्य नगर से निकला और निकल कर जहां ग्राम आकर और नगर थे-वहां पर अनेक राजसहस्रों के पास गया-वहां जाकर शिष्टाचार पूर्वक उसने सब से इस प्रकार कहा कि काम्पिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयंवर होने वाला है-सो आपसब लोग द्रुपद राजा के ऊपर कृपा करके जल्दी कांपिल्य पुर नगर पधारे (तएणं ताइं अणेगाइं रायसहस्साइं तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ० तं दूयं सक्कारेंति, सक्कारित्ता सम्माणेति, सम्माणित्ता पडिविसज्जेंति) इस प्रकार वे अनेक सहस्त्र राजा उस दूत के मुख से इस समाचार को सुन कर और उसे अपने अपने २ हृदयों में अवधारित कर बहुत ही अधिक आनन्द से प्रमुदित बनकर परम संतोष को प्राप्त हुए। उन्होंने उस दूत का सत्कार किया सत्कार करके सन्मान किया और सन्मान करके फिर उसे पीछे विसर्जित कर दिया-भेजदिया। (तएणं ते वासुदेव पामुक्खा बहवे रायसहस्सा पत्तेयं

समोसरह) તે દશમો દૂત બધાની જેમ કાંપીલ્ય નગરથી નીકળ્યો અને નીકળીને જ્યાં ગ્રામ આકર અને નગર હતા ત્યા અનેક સહસ્રો રાજાઓની પાસે ગયો. ત્યાં જઇને નમ્રપણે તેણે સહુને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે કાંપિલ્ય નગરમાં દ્રુપદ રાજાની પુત્રી દ્રૌપદીનો સ્વયંવર થવાનો છે તો આપ સૌ દ્રુપદ રાજા ઉપર કૃપા કરીને અવિલંબ કાંપિલ્ય નગરમાં પધારો. (तएण ताइं अणेगाइं रायसहस्साइं तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठ सोचा निसम्म हट्ठ० तं दूयं सक्कारेंति. सक्कारित्ता, सम्मणेति, सम्माणित्ता, पडिविसज्जेति) આ રીતે સહસ્રો રાજાઓ તે દૂતના મુખથી આ સમાચાર સાંભળીને અને તેને પોતાના હૃદયમાં ધારણ કરીને ખૂબ જ પ્રસન્ન તેમજ પરમ સંતુષ્ટ થયા. તેઓએ દૂતનો સત્કાર કર્યો અને સન્માન કર્યું ત્યારપછી દૂતને તેઓએ વિદાય આપી. (तएणं ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा पत्तेय २ ण्हाया

सन्नद्धवद्धवर्मितकवचाः यावद् गृहीतायुदप्रहरणाः हस्तिस्कन्धवरगता हयगजरथ महाभटचटकरप्रकरवृन्दपरिक्षिप्ताः=अश्वगजरथमहासुभटसमूहपरिवृताः, स्वकेभ्यः स्वकेभ्योऽभिनिर्गच्छन्ति, अभिनिर्गत्य यत्रैव पञ्चालो जनपदस्तत्रैव प्राधारयन् गमनाय=गन्तुं प्रवृत्ताः ॥ सू०१९ ॥

मूलम्–तएणं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छहणं तुमं देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे वहिया गंगाए महानदीए अदूरसामंते एगं महं सयंवरमंडवं करेह अणेगखंभसयसन्निविट्ठं लीलट्ठियं सालभंजिआगं जाव पच्चप्पिणंति, तएणं से दुवए राया दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी –खिप्पामेव

२ण्हाया सण्णद्ध हत्थिखंधवरगया हय गयरह० महया भडचडगररहपहकर० सएहिंतो २ नगरेहिंतो अभिनिग्गच्छति २ जेणेव पांचाले जणवए तेणेव पहारेत्थ गमणाए) बादमें जब दूत समाचार देकर वापिस कांपिल्य पुर नगर में आचुके तब वासुदेव प्रमुख वे अनेक शहस्र राजा प्रत्येक स्नान से निवटे, और सजाकर अपने२ शरीर पर कवच पहिरा, यावत् आयुध और प्रहरणों को अपने २ साथ लिया, अपने २ प्रधान हाथियों पर चढे और हाथी घोडे रथ और महाभटों के समुदाय से घिरे हुए होकर ये सब अपने राज महलोंसे–नगरों से–निकले–निलकर जहां पांचाल जनपद था उस ओर चल दिये ॥ सू० १९

सन्नद्धहत्थिखंधवरगया हयगयरह० महया भडचडगररहपहकर० सएहिंतो २ नगरेहिंतो अभिनिग्गच्छंति २ जेणेव पांचाले जणवए तेणेव पहारेत्थ गमणाए) त्यारपछी ज्यारे बधा दूतो समाचार आपीने कांपिल्यपुर नगर पाछा आवी गया त्यारे वासुदेव प्रमुख घणा हजारो राजाओए स्नान कर्यो अने त्यारबाद पोताना शरीर उपर कवचो धारण कर्यां यावत् आयुधो अने प्रहरणोने पोतानी साथे लीधा त्यारपछी तेओ बधा पोतपोताना प्रधान हाथीओ उपर सवार थया अने हाथी, घोडा, रथ अने महाभटोना समुदायनी साथे पोताना राजमहेलथी–नगरोथी नीकळ्या अने नीकळीने ज्यां पांचाल जनपद हतो ते तरफ रवाना थया ॥ सूत्र १९ ॥

भो देवाणुप्पिया ! वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे करेह तेवि करेत्ता पच्चप्पिणंति, तएणं दूवए वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आगमं जाणेत्ता पत्तेयं२ हत्थिखंध जाव परिवुडे अग्घं च पज्जं च गहाय सव्विड्ढिए कंपिल्लपुराओ निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता जेणेव ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता ताइं वासुदेवपामुक्खाइं अग्घेण य पज्जेण य सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं पत्तेयं२ आवासे वियरइ, तएणं ते वासुदेवपामोक्खा जेणेव सया२ आवासा तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता हत्थिखंधाहिंतो पच्चोरुहंति पच्चोरुहित्ता पत्तेयं खंधावारनिवेसं करेंति करित्ता सए२ आवासे अणुपविसंति अणुपविसित्ता सएसु२ आवासेसु य आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्ना य संतुयट्टा य बहूहिं गंधव्वेहि य नाडएहि य उवगिज्जमाणा य उवणच्चिज्जमाणा य विहरंति, तएणं से दुवए राया कंपिल्लपुरं नगरं अणुपविसइ अणुपविसित्ता विउलं असण४ उवक्खडावेइ उवक्खडावित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! विउलं असणं४ सुरं च मज्जं च मंसं च सीधुं च पसण्णं च सुबहुपुप्फवत्थगंधमल्लालंकारं च वासुदेवपामोक्खाणं रायसहस्साणं आवासेसु साहरह, तेवि साहरंति, तएणं तं वासुदेवपामुक्खा तं विउलं

असणं४ जाव पसन्नं च आसाएमाणा४ विहरंति, जिमियाभुत्तु-त्तरागया वि य णं समाणा आयंता जाव सुहासणवरगया बहूहिं गंधव्वेहिं जाव विहरंति, तएणं से दुवए राया पुव्वाव-रण्हकालसमयंसि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! कंपिल्लपुरं सघाडग जाव पहे वासुदेवपामुक्खाण य रायसहस्साणं आवासेसु हत्थिखंधवरगया महया२ सद्देणं जाव उग्घोसेमाणा२ एवं वदह—एवं खलु देवा-णुप्पिया कल्लं पाउ० दुवयस्स रण्णो धूयाए चुलणीए देवीए अत्तयाए धट्ठज्जुणस्स भगिणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सइ, तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया! दुवयं रायाणं अणुगिण्हेमाणा ण्हाया जाव विभूसिया हत्थिखंधवरगया सको-रंट० सेयवरचामर० हयगयरह० महया भडचडगरेणं जाव परिक्खित्ता जेणेव सयंवरमंडवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पत्तेयं२ नामंकिएसु आसणेसु निसीयह२ दोवइं रायकण्णं पडि-वालेमाणा२ चिट्ठह, घोसणं घोसेह२ मम एयमाणत्तियं पच्च-प्पिणह, तएणं ते कोडुंबिया तहेव जाव पच्चप्पिणंति, तएणं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी —गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! सयंवरमंडपं आसियसंमज्जि-ओवलित्तं सुगंधवरगंधियं पंचवण्णपुप्फपुंजोवयारकलियं काला-गरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्क जाव गंधवट्टिभूयं मंचाइमंचकलियं करेह करित्ता वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं पत्तेयं२ नामं-

काइं आसणाइं अत्थुयपच्चत्थुयाइं रएह२ एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, ते वि जाव पच्चप्पिणंति, तएणं ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा कल्लं पाउ० ण्हाया जाव विभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरंट० सेयवरचामराहिं हयगय जाव परिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेणं जेणेव सयंवरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अणुपविसंति अणुपविसित्ता पत्तेयं२ नामंकिएसु आसणेसु निसीयंति दोवइं रायवरकण्णं पडिवालेमाणा चिट्ठंति, तएणं से पंडुए राया कल्लं ण्हाए जाव विभूसिए हत्थिखंधवरगए सकोरंट० हयगय० कंपिल्लपुरे मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति जेणेव सयंवरमंडवे जेणेव वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं करयल० वद्धावेत्ता कण्हस्स वासुदेवस्स सेयवरचामरं गहाय उववीयमाणे चिट्ठंति ॥ सू० २० ॥

टीका—'तएणं से' इत्यादि। ततः खलु स द्रुपदो राजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः! काम्पिल्यपुरस्य नगरस्य बहिः प्रदेशे गङ्गाया महानद्या अदूरसामन्ते=नातिदूरे नातिसमीपे एकं महान्तं स्वयम्वरमण्डपं कुरुत कीदृशमित्याह—'अणेग' इत्यादि।

'तएणं से दूवए राया कोडुंबिय पुरिसे' इत्यादि।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (दुवए राया) द्रुपद राजा ने (कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ) कौटुम्बिकपुरुषों को बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी) बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा-(गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! कंपिल्लपुरे नयरे बहिया गंगाए महानईए अदूरसामंते एगं मह सयंवरमंडवं करेह,

---

'तएणं से दूवए राया कोडुंबिय पुरिसे' इत्यादि—

टीकार्थ-(तएणं) त्यारपछी (दूवए राया) द्रुपद राजाए (कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ) कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या. (सद्दावित्ता एवं वयासी) बोलावीने तेमने आ प्रमाणे कह्युं के (गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! कंपिल्लपुरे नयरे बहिया गंगाए महानईए अदूरसामंते एगं महं सयंवरमंडवं करेह, अणेगखंभस-

अनेकस्तम्भशतसंनिविष्टं=अनेकशतस्तम्भयुक्तं, 'लीलट्ठियसालभंजिआगं' लीलास्थितशालभञ्जिकं=लीलया स्थिता शालभञ्जिका=पुत्तलिका यस्मिंस्तादृशं, यावत्-'तथाऽस्तु' इति कृत्वा ते कौटुम्बिकपुरुषास्तदाज्ञां स्वीकृत्य तथैव संपाद्य, प्रत्यर्पयन्ति=मण्डपो निर्मित इति निवेदयन्ति। ततः खलु स द्रुपदो राजा 'दोच्चंपि' द्वितीयवारमपि कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः! क्षिप्रमेव वासुदेवप्रमुखाणां बहूनां राजसहस्राणाम् आवासं-वासस्थानं कुरुत=रचयत, तेऽपि कौटुम्बिकपुरुषा. 'करेत्ता' कृत्वा=वासुदेवादीनां निवासार्थं पृथक् पृथक् योग्यं वासस्थानं विधाय प्रत्यर्पयन्ति=द्रुपदाय राज्ञे कथयन्ति। ततः

अणेग खंभसयसन्निविट्ठं लीलट्ठियसालभंजियागं जाव पच्चप्पिणंति) हे देवानुप्रियों! तुमलोग जाओ-और कांपिल्यपुर नगरके बाहिर गंगा महानदी के न अतिदूर और न अति समीप-उचित स्थान-में एक बड़ाभारी स्वयंवर मंडप बनाओ। जो अनेक सैकड़ों स्तंभोंसे युक्त हो तथा जिसमें विविध प्रकार की क्रीडा करती हुई पुत्तलिकाएँ सजा कर लगाई गई हों। यावत् "तथास्तु" कह कर उन लोगों ने राजा की इस आज्ञा को मान लिया और उसी आज्ञाके अनुसार स्वयंवर मंडप बना कर इसकी खबर राजाको कर दी। (तएणं से दूवए राया दोच्चंपि कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव देवाणुप्पिया! वासुदेव पामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे करेह ते वि करेत्ता पच्चप्पिणंति इसके बाद द्रुपद राजा ने दूसरे कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया-बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियो! तुम लोग शीघ्रातिशीघ्र वासुदेव

यसन्निविट्ठं लीलट्ठियसालभंजिआगं जाव पच्चप्पिणंति) હે દેવાનુપ્રિયો! કાંપિલ્યપુર નગરની બહાર મહા નદી ગંગાથી વધારે દૂર નહીં તેમજ વધારે નજીક પણ નહિ એવા યોગ્ય સ્થળે એક ભારે વિશાળ સ્વયંવર મંડપ તૈયાર કરો કે જે ઘણા સેંકડો થાંભલાઓવાળો હોય, તેમજ જેમાં અનેક જાતની ક્રીડા કરતી પૂતળીઓ સજાવીને મૂકવામા આવી હોય તે લોકોએ પણ 'તથાસ્તુ' કહીને રાજાની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી અને ત્યારપછી તેમની આજ્ઞા મુજબ જ સ્વયંવર મંડપ તૈયાર કરીને રાજાને તેની ખબર આપી (तएणं से दुवए राया दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव देवाणुप्पिया! वासुदेव पामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे करेह, ते वि करेत्ता पच्चप्पिणंति) ત્યારપછી દ્રુપદ રાજાએ બીજા કૌટુંબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે લોકો અવિલંબ વાસુદેવ પ્રમુખ ઘણા

खलु द्रुपदो राजा वासुदेवप्रमुखाणां बहूनां राजसहस्राणाम् आगमं=आगमनं ज्ञात्वा प्रत्येकं २ हस्तिस्कंधवरगतः, हयगजरथमहाभटसमूहपरिवृतः, अर्घ्यं=पानार्थं जलं पाद्यं=चरणप्रक्षालनार्थमुदकं च गृहीत्वा सर्वद्धर्या छत्रचामरादिरूपया काम्पिल्यपुरतो निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव ते वासुदेवप्रमुखा बहुसहस्रसंख्यका-राजानस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तानि वासुदेवप्रमुखाणि बहूनि राजसहस्राणि=तान् बहुसहस्रसंख्याकान् वासुदेवप्रमुखान् राज्ञः, अर्घ्येण च पाद्येन च सत्कार-

प्रमुख अनेक सहस्र राजाओं को बैठने के लिये पृथक्२ स्थान बनाओ। उन्होंने राजाकी आज्ञानुसार वैसा ही किया और इसकी खबर राजा को कर दी। (तएणं दुवए वासुदेव पामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आगमं जाणेत्ता पत्तेयं २ हत्थिखंध जाव पडिवुडे अग्घं च पज्जं च गहाय सव्वि-ड्ढीए कंपिल्लपुराओ निग्गच्छइ,निगच्छित्ता जेणेव ते वासुदेव पामोक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताइं वासुदेवपामु-क्खाइं अग्घेण य पज्जेण य सक्कारेइ, सम्माणेइ) इसके बाद द्रुपद राजा वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं का आगमन जानकर अपने प्रधान हस्ती पर आरूढ हो हय, गज, रथ तथा महाभटों के समूह के साथ २ प्रत्येक राजा के लिये अर्घ्य-पीने के लिये पानी, पाद्य-चरण प्रक्षालन के जल-लेकर छत्रचामर आदि अपनी राजविभूतिसे युक्त होकर कांपिल्य पुर नगर से निकले-निकलकर जहां वासुदेव प्रमुख हजारों राजा थे वहां गये। वहां जाकर उन्होंने उन वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं का अर्घ्य

હજારો રાજાઓને બેસવા માટે જુદા જુદા સ્થાન તૈયાર કરો તે લોકોએ પણ રાજાની આજ્ઞા મુજબ જ બધું કામ પતાવી દીધું અને કામ થઈ ગયાની ખબર રાજા સુધી પહોંચાડી દીધી. (तएणं दुवए वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं राय-सहस्साणं आगमं जाणेत्ता पत्तेयं २ हत्थिखंध जाव पडिवुडे अग्घं च पज्जं च गहाय सव्विड्ढीए कंपिल्लपुराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताइं वासुदेवपामुक्खाइं अग्घेण य पज्जेण य सक्कारेइ, सम्माणेइ) ત્યારપછી વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓનું આગમન સાંભળીને દ્રુપદ રાજા પોતાના પ્રધાન હાથી ઉપર સવાર થયા અને ઘોડા, હાથી, રથ તેમજ મહાભટોના સમૂહની સાથે દરેકે દરેક રાજાને માટે અર્ઘ્ય-પીવા માટે પાણી-લઈને છત્ર ચામર વગેરે પોતાની રાજ-વિભૂતિથી યુક્ત થઈને કાંપિલ્યપુરથી બહાર નીકળ્યા અને નીકળીને જ્યાં વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓ હતા ત્યાં પહોંચ્યા. ત્યાં જઈને તેમણે તે

यति, संमानयति, सत्कार्य्य सत्कार कृत्वा, समान्य तेषां वासुदेवप्रमुखाणां प्रत्येकं२ पृथक् २ आवासं 'वियरइ' वितरति । ततः खलु ते वासुदेवप्रमुखाः यत्रैव स्वकाः २=निजा २ आवासास्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य हस्तिस्कन्धात् प्रत्यवरोहन्ति प्रत्यवरुह्य प्रत्येकं२ स्कन्धावारनिवेशं कुर्वन्ति, कृत्वा स्वके स्वके आवासेऽनुप्रविशन्ति, अनुप्रविश्य स्वकेषु स्वकेषु आवासेषु–आसनेषु च शयनेषु च सनिषण्णा उपविष्टाश्च तथा 'संतुयट्टा' संत्वग्वर्तिताः परिवर्तितपार्श्वाश्च बहुभिर्गन्धर्वैश्च 'नाडएहि य' नाटकैश्च 'उवगिज्जमाणा य' उपगीयमानाश्च, 'उवणच्चिज्जमाणा य'

और पाद्य से सत्कार किया–सन्मान किया । (सक्कारित्ता, सम्माणित्ता, तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं पत्तेयं २ आवासे वियरइ, तएणं ते वासुदेव पामुक्खा जेणेव सया २ आवासा तेणेव उवागच्छइ,उवागच्छित्ता हत्थि खंधाहिं तो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता पत्तेय खंधावारनिवेसं करेंति) सत्कार सन्मान करके उन्होंने उन सब वासुदेव प्रमुखों को प्रत्येक के लिये पृथक्२ आवास–स्थान–दिया, । इसके पश्चात् वे वासुदेव प्रमुखराजा जहां अपना २ स्थान नियत था–वहां गये । वहां जाकर के अपने २ हाथियों पर से नीचे उतरे और उतर करके उन्होंने अपनी २ स्कन्धावार स्थापित कर दी–अर्थात् सैन्य को ठहरा दिया । (करित्ता सए २ आवासे अणु०) ठहरा कर फिर वे अपने २ आवासों में प्रविष्ट हुए (अणुपविसित्ता सएसु २ आवासेसु य आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्ना य संतुयट्टा य बहूहिं गंधव्वेहिं य नाडएहि य उवगिज्जमाणा य

વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓનું અર્ઘ્ય અને પાદ્યથી સત્કાર તેમજ સન્માન કર્યું. (सक्कारित्ता सम्माणित्ता तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं पत्तेयं २ आवासे वियरइ, तएणं ते वासुदेवपामुक्खा जेणेव सया २ आवासा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाहितो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता पत्तेयं खंधावारनिवेसं करेंति) સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તેમણે વાસુદેવ પ્રમુખ દરેકે દરેક રાજાને જુદું જુદું આવાસ સ્થાન આપ્યું ત્યારપછી વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓ જ્યાં પોતપોતાનું આવાસ સ્થાન નક્કી કરવામાં આવ્યું હતું ત્યાં ગયા. ત્યાં જઈને તેઓ પોતપોતાના હાથીઓ ઉપરથી નીચે ઉતર્યા અને ઉતરીને તેઓએ પોતપોતાની સ્કન્ધાવાર–છાવણી સ્થાપિત કરી એટલે કે સેનાનો પડાવ નાખ્યો. (करित्ता सए २ आवासे अणु०) છાવણી નાખીને તેઓ પોતપોતાના આવાસ સ્થાનમાં પ્રવિષ્ટ થયા (अणुपविसित्ता सएसु २ आवासेसु य आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्ना य संतुयट्टा य बहूहिं गंधव्वेहिं य नाडएहि य उवगिज्जमाणा य

उपनृत्यमानाश्च गीत श्राव्यमाणाश्च, नृत्यं दर्श्यमानाश्च विहरन्ति । ततः खलु स द्रुपदो राजा काम्पिल्यपुरं नगरमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य विपुलम्- अशनं पानं खाद्यं स्वाद्यम् उपस्कारयति. संस्कारयति. उपस्कार्य कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः ! विपुलम् , अशनं पानं खाद्यं स्वाद्यं सुरां च मद्यं च मांसं च सीधु च प्रसन्नां च सीधुः प्रसन्ना च मदिरा विशेषे. तथा सुबहु पुष्पवस्त्रगन्धमाल्यालंकारं च वासुदेवप्रमुखाणां राजसहस्राणाम् आवासेषु ' साहरह ' संहरत=उपनयत, तेऽपि कौटुम्बिकपुरुषास्तथैव संहरन्ति ।

उवणच्चिज्जमाणा य विहरंति, तएणं से दुवए राया कंपिल्लपुरं नयरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता विउलं असण ४ उवक्खडावेइ) प्रविष्ट होकर के वे अपने अपने आवास स्थानों में आसनों पर एवं बिस्तरों पर जाकर अच्छी तरह बैठ गये लेट गये । वहां लेटे हुए उनकी अनेक गंधर्वोंने, अनेक नाटथकारों ने स्तुति की-उनकी प्रशंसा के गीत गाए, नाटक दिखलाया । इसके बाद द्रुपद राजा कांपिल्यपुर नगर के भीतर आये-वहां आकर के उन्होंने विपुलमात्रा में अशन, पान, खाद्य एवं स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार तैयार करवाया-पकवोया । (उवक्खडावित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-(गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! विउलं असणं ४ सुरं च मज्जं च सीधुं च पसण्णं च सुबहु पुप्फवत्थ गंधमल्लालंकारं च वासुदेवपामोक्खाणं रायसहस्साणं आवासेसु साहरह) तैयार करवा कर फिर उन्होंने कौडुम्बिक पुरुषों को बुलाया बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियो तुमलोग जाओ और इस

उवणच्चिज्जमाणा य विहरंति, तएणं से दुवए राया कंपिल्लपुरं नयरं अणुपविसइ अणुपविसित्ता विउलं असण४ उवक्खडावेइ) प्रवेशीने तेओ पोतपोताना आसनो उपर सारी रीते बेसी गया, सूई गया त्यां सूई गयेला तेओनी घणा गंधर्वोए, घणा नाटयकारोए स्तुति करी, तेमनी प्रशंसाना गीतो गायां अने नाटको भजव्यां. त्यारपछी द्रुपद राजा कांपिल्यपुर नगरमां आव्या त्यां आवीने तेओए पुष्कळ प्रमाणमां अशन, पान खाद्य अने स्वाद्य रूप चार जातनो आहार तैयार करावडाव्यो (उवक्खडावित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! विउल असण४ सुरं च मज्जं च मंसं च सीधुं च पसण्णं च सुबहुपुप्फवत्थगंधमल्लालंकारं च वासुदेवपामोक्खाणं रायसहस्साणं आवासेसु साहरइ) तैयार करावीने तेमने कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या अने बोलावीने तेओने कह्युं के हे देवानुप्रियो ! तमे

ततः खलु ते वासुदेवप्रमुखास्तद् विपुलम्, असनं पानं खाद्यं स्वाद्यं यावत् प्रसन्नां च 'आसायमाणा' आस्वादयन्तो विहरन्ति, अपि च खलु 'जिमिया' जिमिताः-भुक्तवन्तः, 'भुत्तुत्तरागया' भुक्तोत्तरागताः भुक्तोत्तरं=भोजनानन्तरम् आगताः भुवतेत्यत्र भावे क्तः भोजनस्थानादासन्नप्रदेशे मुखप्रक्षालनार्थमागताः सन्तः 'आयंता' आचान्ताः-कृतचुल्लुकाः, यावत्-सुखासनवरगताः=आसनवरे सुखो-

अशन, पान, खाद्य स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार को सुरा मद्य, सीधु और प्रसन्न मदिरा को और अनेक विध इन पुष्पों को वस्त्रों को गंधमाल्य एवं अलंकारों को वासुदेव प्रमुख राजसहस्रों के आवास स्थानों पर ले जाओ। (ते वि साहरंति) राजा की आज्ञानुसार वे सब उन अशनादिवस्तुओं को वहां पर ले गये। (तएणं ते वासुदेवपामुक्खा तं विउलं असणं ४ जाव पसन्नं च आसाएमाणा ४ विहरंति) इसके बाद उन वासुदेव प्रमुख राजाओं ने उस आनीत विपुल अशनादिरूप प्रसन्ना मदिरा तक की आहार की सामग्री को खाया (जिमिया भुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा जाव सुहासणवरगया बहूहिं गंधव्वेहिं जाव विहरंति) खा पी कर जब वे निश्चिन्त हो चुके और मुख प्रक्षालन के लिये भोजन स्थान से उठकर दूसरे निकट स्थान पर आये-तब उन्होंने कुल्ला किया-और फिर सुन्दर अपने २ आसनों पर शांति पूर्वक आकर बैठ गये। इनके बैठते ही मनोविनोद के लिये

લોકો જાઓ અને આ અશન, પાન, ખાદ્ય, સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહારને સુરા, મદ્ય, માંસ, સીધુ અને પ્રસન્ન મદિરાને અને ઘણી જાતના આ પુષ્પોને, વસ્ત્રોને, ગંધમાલ્ય અને અલંકારોને વાસુદેવ પ્રમુખ રાજસહસ્રોના આવાસ સ્થાને પહોંચાડો. (ते वि साहरंति) રાજાની આજ્ઞા પ્રમાણે તેઓ બધાએ તે ખાદ્ય પદાર્થોને રાજાઓના આવાસ સ્થાને પહોંચાડી દીધા. (तएणं ते वासुदेवपामुक्खा तं विउलं असणं ४ जाव पसन्नं च आसाएमाणा ४ विहरंति त्यारपछी ते वासुदेव प्रमुख राजाओए त्यां पहोंचाडवामां आवेला पुष्कळ प्रमाणमां अशन वगेरेथी मांडीने प्रसन्न मदिरा सुधीना बधी जातना आहार सामग्री वगेरेनुं खूब रुचिपूर्वक पान कर्युं.

(जिमिया भुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा आयंता जाव सुहासणवरगया बहूहिं गंधव्वेहिं जाव विहरंति)

જમી પરવારીને જ્યારે તેઓ નિશ્ચિત થઈ ચૂકયાં ત્યારે તેઓ મુખ પ્રક્ષાલન માટે ભોજન સ્થાનથી ઊભા થઈને બીજા પાસેના સ્થાને ગયા. ત્યાં તેઓએ કોગળા કર્યા અને ત્યારપછી તેઓ ફરી પોતપોતાના સુંદર આસનો

प्रविष्टाः बहुभिर्गन्धर्वैर्यावद् नाटकैश्चोपगीयमानाः उपनृत्यमानाश्च विहरन्ति= आसते स्म इत्यर्थः।

ततः खलु स द्रुपदो राजा पूर्वापराह्णकालसमये कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु हे देवानुप्रियाः! काम्पिल्यपुरे नगरे शृङ्गाटक यावत्-त्रिकचतुष्कचत्वर महापथपथेषु वासुदेवप्रमुखाणां च राजसहस्राणामावासेषु आवाससमीपेषु हस्तिस्कन्धवरगता महता २ शब्देन=उच्चैः स्वरेण यावद् उद्घोषयन्तः २ एवं वदत-एवं खलु हे देवानुप्रियाः! कल्ये-आगामीनि द्वितीय-

---

गंधर्वों ने नाना प्रकार के स्तुत्यात्मक गीत गाये और नाट्यकारों ने नृत्य दिखलाये। (तएणं से दुवए राया पुव्वावरण्हकालसमयंसि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ,सद्दावित्ता, एवं वयासी, गच्छह णं तुम्हे देवाणुप्पिया! कंपिल्लपुरे सिंघाडग जाव पहेसु वासुदेवपामुक्खाण य राय सहस्साण य आवासेसु हत्थि खंधवरगया महया२ सद्देणं जाव उग्घोसेमाणा २ एवं वदह, एवं खलु देवाणुप्पिया! कल्लं पाउ० दुवयस्स रण्णो धूयाए चुलणीए देवीए अत्तयाए धट्ठज्जुणस्स भगिणीए दोवईए रायवरकन्नाए सयंवरं भविस्सइ) इसके बाद द्रुपदराजा ने पूर्वापराह्ण काल के समय में कौटुम्बिक पुरुषों को बुलवाया और बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियों! तुमलोग हाथी पर बैठकर कांपिल्यपुर नगर में जाओ और वहां श्रृंगाटक यावत् त्रिक चतुष्क चत्वर महापथ आदि मार्गों में जो वासुदेव प्रमुख राजा के आवासस्थान हैं उनके समीप बडे जोर २

ઉપર શાંતિપૂર્વક બેસી ગયા તેમના મનો-વિનોદ માટે ગંધર્વોએ અનેક જાતના સ્તુત્યાત્મક ગીતો ગાયાં અને નાટયકારોએ નૃત્ય કરી બતાવ્યાં.

(तएणं से दुवए राया पुव्वावरण्हकालसमयंसि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता, एवं वयासी, गच्छह णं तुम्हे देवाणुप्पिया! कंपिल्लपुरे संघाडग जाव पहेसु वासुदेवपामुक्खाण य महया २ सद्देणं जाव उग्घोसेमाणा २ एवं वदह, एवं खलु देवाणुप्पिया! कल्लं पाउ० दुवयस्स रण्णो धूयाए चुलणीए देवीए अत्तयाए धट्ठज्जुणस्स भागणीए दोवईए रायवरकन्नाए सयंवरं भविस्सइ)

ત્યારપછી દ્રુપદ રાજાએ પૂર્વાપરાહ્ન કાળના સમયે કૌટુંબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે લોકો હાથી ઉપર બેસીને કાંપિલ્યપુર નગરમાં જાઓ અને ત્યાંના શૃંગાટક યાવત્ ત્રિક ચતુષ્ક ચત્વર મહાપથ વગેરે માર્ગોમાં-કે માર્ગોની પાસે વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓના આવાસ ઘરો છે તેની પાસે બહુ મોટા સાદે આજાતની

दिवसे प्रादुर्भूतप्रभातायां रजन्यां तेजसा ज्वलति सूर्येऽभ्युद्गते द्रुपदस्य राज्ञो दुहितुः=पुत्र्याः, चुलन्यादेव्या आत्मजायाः, धृष्टद्युम्नस्य भगिन्या द्रौपद्या राजवरकन्यायाः स्वयंवरो भविष्यति, तत्=तस्मात् खलु हे देवानुप्रिया ! यूयं द्रुपदं राजानमनुगृह्णन्तः स्नाता यावत्-सर्वालङ्कारविभूषिता-हस्तिस्कन्धवरगताः सकोरण्टमाल्यदाम्ना छत्रेण ध्रियमाणेन श्वेतवरचामरैरुद्धूयमानैश्च युक्ताः हयगजरथमहाभटकरेण चतुरङ्गबलेन यावत् परिक्षिप्ताः=परिवृताः यत्रैव स्वयंवर-

से ऐसी घोषणा करते हुए कहो-कि हे देवानुप्रिय ! कल सूर्योदय होने पर द्रुपद राजा की पुत्री चुलनी देवी की आत्मजा और धृष्टद्युम्न की बहिन राजवर कन्या-द्रौपदी का स्वयंवर होगा (तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! दुपयं रायाणं अणुगिण्हेमाणा ण्हाया जाव विभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरण्ट० सेयवर चामर० हय गयरह० महया भडचडगरेणं जाव परिक्खित्ता जेणेव सयंवर मंडवे तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता पत्तेयं२ नामंकिएसु आसणेसु निसीयह २ दोवइं रायकण्णं पडिवालेमाणा २ चिट्ठह) इस लिये हे देवानुप्रियों ! आपलोग द्रुपदराजा के ऊपर कृपा करके स्नान आदि से निवट कर एवं समस्त अलंकारो से विभूषित होकर जहां स्वयंवर मंडप है वहां पधारें। आते समय हाथियों पर बैठकर आवें। कोरण्ट पुष्पों की मालाओं से सुशोभित छत्र उस समय आप सब के ऊपर तने हों और श्वेत सुन्दर चामर ऊपर ढोरे जा रहे हों। हय, गज, रथ एवं महाभटों का समूहरूप चतुरंगबल आप

ઘોષણા કરો કે હે દેવાનુપ્રિયો ! આવતી કાલે સવાર થતા દ્રુપદ રાજાની પુત્રી ચુલની દેવીની આત્મજા અને ધૃષ્ટદ્યુમ્નની બહેન રાજવર કન્યા દ્રૌપદીનો સ્વયંવર થશે.

(तं तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! दुपयं रायाणं अणुगिण्हेमाणा ण्हाया जाव विभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरण्ट० सेयवरचामर० हय गय रह० महया भडचडगरेणं जाव परिक्खित्ता जेणेव सयंवरमंडवे तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता पत्तेयं नामंकिएसु आसणेसु निसीयह २ दोवइं रायकण्णं पडिवालेमाणा २ चिट्ठह)

એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો દ્રુપદ રાજા ઉપર મહેરબાની કરીને સ્નાન વગેરેથી પરવારીને તથા સમસ્ત અલંકારોથી વિભૂષિત થઈને જ્યાં સ્વયંવર મંડપ છે, ત્યાં હાથીઓ ઉપર સવાર થઈને પધારો. કોરંટ પુષ્પોની માળાઓથી શોભતું છત્ર તે વખતે તમારા ઉપર તાણેલું હોવું જોઈએ અને સફેદ ચમરો પણ તમારા ઉપર ઢોળાતા હોવા જોઈએ હાથી, રથ અને મહાભટોના સમૂહ રૂપ ચતુરંગિણી સેના તમારી સાથે હોવી જોઈએ. સ્વયંવર

ण्डपस्तत्रैवोपागच्छत, उपागत्य प्रत्येकं 'नामंकिएसु' नामाङ्कितेषु स्व स्व-नामाक्षरयुक्तेषु आसनेषु निषीदत, निषद्य द्रौपदीं राजकन्यां 'पडिवालेमाणा २' प्रतिपालयन्तः २ प्रतीक्षमाणाः २ तिष्ठत इति घोषणां घोषयत, घोषयित्वा ममैतामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पयत, ततः खलु ते कौटुम्बिकास्तथैव यावत् प्रत्य र्पयन्ति। ततः खलु स द्रुपदो राजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः! स्वयंवरमण्डपम् "आसियसंम-ज्जिओवलित्तं" आसिक्तसंमार्जितोपलिप्तम्=आसिक्तम्-जलप्रक्षेपेणार्द्रीकृतं, संमा-र्जितं-कचवराद्यपनयनेन संशोधितम्, उपलिप्तं-मृद्गोमयादिभिरनुलिप्तं, तथा-सुगंधवरगंधियं' सुगंधवरगन्धितं-अगुरुगुग्गुलकर्पूरसरलदाहादिजनितसुगन्धयुक्तं, 'पञ्चवण्णपुप्फपुंजोवयारकलियं' पञ्चवर्णपुष्पपुञ्जोपचारकलितं। 'कालागुरुपवर-कुंदुरुक्कतुरुक्क-जाव गन्धवट्टिभूयं' कालागुरुप्रवरकुन्दुरुष्कतुरुष्क-यावद्-गन्धवर्ति-भूतं, अत्र यावच्छब्देन-धूवडज्झंतमघमघंतगन्धुद्धुयाभिरामं' इति बोध्यम्।

सब के साथ हो। मंडप में आकर प्रत्येक जन अपने अपने नामवाले आसन पर बैठजावे। बैठकर फिर वहां वह राजवर कन्या द्रौपदी की प्रतीक्षा करें। (घोसणं घोसेह २ मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह) इस प्रकार की घोषणा करो और जब तुमलोग ऐसी घोषणा कर चुको तब इसकी हमें पीछे खबर दो। (तएणं ते कोडुंबिया तहेव जाव पच्च-प्पिणंति) उन कौटुम्बिक पुरुषों ने नृपाज्ञानुसार ऐसा ही किया-बाद में हमलोग आपकी आज्ञानुसार घोषणा कर चुके हैं ऐसी सूचना राजा के पास भेज दी। (तएणं से दुवए राया कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ, सद्दाविसा एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! सयंवरमडवं आसियसंमज्जिओवलित्तं सुगंधवरगंधियं पच्चवण्णपुप्फपुंजोवयार-कलियं कालागरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्क जाव गंधवट्टिभूयं मंचाइमंचकलियं

મંડપમાં આવીને દરેકે દરેક પોતપોતાના નામવાળા આસન ઉપર બેસી જાય. ત્યાં બેસીને તેઓ રાજવર કન્યા દ્રૌપદીના આગમનની પ્રતીક્ષા કરે. (घोसणं घोसेह २ मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह) આ રીતે તમે ઘોષણા કરો અને આમ થઈ જાય ત્યારે મને ખબર આપો. (तएणं ते कोडुंबिया तहेव जाव पच्चप्पिणंति) તે કૌટુંબિક પુરુષોએ રાજાની આજ્ઞા પ્રમાણે જ બધું કામ પતાવી દીધું અને 'અમે લોકોએ આપની આજ્ઞા અનુસાર ઘોષણા કરી છે' એવી ખબર રાજાની પાસે પહોંચાડી દીધી.

(तएणं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दाविसा एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! सयंवरमंडवं आसियसंमज्जिओवलित्तं सुगंधवर-गंधियं पंचवण्णपुप्फपुंजोवयारकलियं कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्क जाव गंधवट्टि-

धूपदह्यमानमघमघायमानगन्धोद्धूताभिरामं, तत्र कालागुरुः कृष्णागुरुः, प्रवर-कुन्दुरुष्कं–चीडानामको गन्धद्रव्यविशेषः, तुरुष्कं च सिल्लकं,धूपश्च गन्धद्रव्य संयोगज इति द्वन्द्वः, यद्वा–एतत्सम्बन्धी यो धूपस्तस्य दह्यमानस्य यः सुरभिर्मघमघायमानः–अतिशयवान्, गन्ध उद्धूतस्तेनाभिरामो रमणीयः स तथा तं तथा–गन्धवर्तिभूतं गन्धवर्तिः–गन्धद्रव्यगुटिका तद्भूतं–तत्सदृशं सौरभ्यातिशयात् तथा–'मंचाइमंचकलियं' मञ्चातिमञ्चकलितं कुरुत, कृत्वा वासुदेवप्रमुखाणां बहूनां

करेह, करित्ता वासुदेव पामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं पत्तेयं २ नामंकाइं आसणाइं अत्थुयपच्चत्थुयाइं रएह २ एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह)

इसके बाद द्रुपदराजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और बुलाकर उनसे ऐसा कहा–हे देवानुप्रियो ! तुमलोग जाओ–और स्वयंवर मंडप को आसिक्त कर–जलसिंचन से आर्द्र करो, संमार्जित करो–कचवर आदि को उससे बाहिर कर उसे साफ करो एवं उपलिप्त करो मिट्टी तथा गोबर से उसे लीपो। सुगंधवरगंधित करो उसमें–अगुरु, गुग्गुल, कपूर आदि को जलाकर उनकी गंध से उसे सुगंध युक्त बनाओ पंचवर्ण के पुष्पों के पुंज उसमें जगह २ रखो। कृष्णागुरु प्रवर कुन्दरुष्क, तुरुष्कलोबान इनके चूर्ण को वहां अग्नि में खूब जलाकर उनके गंध से उसे बहुत ही अधिक मनोभिराम बनाओ ज्यादा क्या–उसे ऐसा करदो कि जिससे ऐसा ज्ञात हो कि यह एक सुगंधित द्रव्यों की वर्तिका है। वहां मंचों के ऊपर मंचों को

भूयं मंचाइमंचकलियं करेह, करित्ता वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं पत्तेयं २ नामंकाइं आसणाइं अत्थुयपच्चत्थुयाइं रएह २ एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह)

ત્યારપછી દ્રુપદ રાજાએ કૌટુંબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો જાઓ અને સ્વયંવર મંડપને આસિક્ત કરો–પાણી છાંટો, સમાર્જિત કરો, કચરો વગેરે સાફ કરો, અને ઉપલિપ્ત કરો, એટલે કે માટી તેમજ છાણથી લીંપો. સુગંધવર ગંધિત કરો એટલે કે તે સ્થાને અગુરૂ, ગુગ્ગુલ, કપૂર વગેરેનો ધૂપ કરીને તેની સુગંધથી તે સ્થાનને સુવાસિત કરો. પંચવર્ણના પુષ્પપુંજના સમૂહો સ્થાને સ્થાને ગોઠવીને તમે મંડપની શોભામાં અભિવૃદ્ધિ કરો. કૃષ્ણાગુરૂ, પ્રવર, કુંદરૂષ્ક, તુરૂષ્ક, લોબાન આ બધા પદાર્થોના ચૂર્ણને અગ્નિમાં નાખીને તે સ્થાનને સુગંધથી ખૂબ જ રમણીય બનાવી દો. તે સ્થાનને તમે એવું સરસ સુગંધમય બનાવી દો કે જેથી તે સુગંધિત દ્રવ્યોની વર્તિકા (અગરબત્તી) જેવું લાગે. ત્યાં તમે મંચો ઉપર

राजसहस्राणां प्रत्येकं २ नामाङ्कितान्यासनानि 'अत्थुयपच्चत्थुयाइं' आस्तृत प्रत्यवस्तृतानि=आच्छादित प्रत्याच्छादितानि 'रएह' रचयत, रचयित्वा एतामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पयत, तेऽपि=कौटुम्बिकपुरुषाः, यावत् प्रत्यर्पयन्ति। 'तएणं ते' वासुदेवप्रमुखाः बहुसहस्रसंख्यकाराजानः 'कल्लं' कल्ये प्रादुर्भूतप्रभातायां रजन्यां यावत् तेजसा ज्वलति सूर्येऽभ्युद्गते स्नाता यावत् सर्वालंकारविभूषिता हस्तिस्कन्धवरगता सकोरण्टमाल्यदाम्ना छत्रेण ध्रियमाणेन श्वेतवरचामरैरुद्धूयमानैश्च युक्ता हय गज–यावत्–रथपदातिसमूहेन परिवृता सर्वद्धर्या यावत् 'शङ्खपणहपटहादीनां रवेण यत्रैव स्थाने स्वयंवरमण्डपस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्यानुप्रविशन्ति, अनुप्रविश्य प्रत्येकं २ 'नामंकिएसु' नामाङ्कितेषु=स्वस्वनामाक्षरयुक्तेषु आसनेषु निषीदन्ति=उपविशन्ति, निषद्य द्रौपदीं राजवरकन्यां 'पडिवालेमाणा' प्रतिपालयन्तः=प्रतीक्षमाणास्तिष्ठन्ति।

रखो। उन पर वासुदेव प्रमुख राजाओं के प्रत्येक के नाम के आसनों को आस्तृत–शुभ्रवस्त्र से ढककर प्रत्यवस्तृत–और द्वितीय शुभ्रवस्त्र से आच्छादित कर रखो। रख कर फिर हमें पीछे इस सब कार्य के समाप्त होने की खबर दो। (ते वि जाव पच्चप्पिणंति) इस प्रकार राजा की आज्ञानुसार उन कौटुम्बिक पुरुषों ने सब कार्य उचित रूप में करके पीछे राजा को "सब कार्य आज्ञानुसार यथोचित हो चुका है" ऐसी खबर करदी। (तएणं ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा कल्लं पाउ० ण्हाया जाव विभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरंट० सेयवरचामराहिं हय गय जाव परिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेणं जेणेव सयंवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अणुपविसंति, अणुपविसित्ता पत्तेयं नामंकिएसु आसणेसु निसीयंति, दोवइं रायवरकण्ण पडिवालेमाणा २

મચોની ગોઠવણુ કરો. ત્યાં તમે વાસુદેવ પ્રમુખ દરેકે દરેક રાજાના નામથી અંકિત થયેલા આસનોને આસ્તૃત–સ્વચ્છ વસ્ત્રથી ઢાંકીને, પ્રત્યાવસ્તૃત અને બીજા સ્વચ્છ વસ્ત્રથી ઢાંકો આ બધું કામ પતાવીને તમે અમને ખબર આપો. (તે વિ જાવ પચ્ચપ્પિણ તિ) આ રીતે રાજાની આજ્ઞા સાંભળીને તે કૌટુંબિક પુરુષોએ તે મુજબજ બધું કામ પતાવી દીધું અને ત્યારપછી 'તમારી આજ્ઞા મુજબ કામ બધું પતી ગયું છે' એવી ખબર રાજાની પાસે પહોંચાડી.

(तएणं ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा कल्लं पाउ० ण्हाया जाव विभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरंट० सेयवरचामराहिं हय गय जाव परिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेणं जेणेव सयंवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अणुपविसंति, अणुपविसित्ता पत्तेयं नामंकिएसु आसणेसु निसीयंति, दोवइं रायवरकण्णं

ततः खलु 'पंडुए' पाण्डु नामको राजा 'कल्लं' कल्ये-प्रातः काले स्नातो यावत् सर्वालङ्कारविभूषितो हस्तिस्कन्धवरगतः सकोरण्टमाल्यदाम्ना छत्रेण ध्रियमाणेन श्वेतवरचामरैरुद्धूयमानैश्च युक्तो हयगजरथपदातिसमूहेन परिवृतः सर्वर्द्ध्या यावत्-रवेण काम्पिल्यपुरस्य नगरस्य मध्यमध्येन मध्ये भूत्वा निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव स्वयंवरमण्डपो यत्रैव वासुदेवप्रमुखा बहुसहस्रसंख्यका राजानस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तेषां वासुदेवप्रमुखाणां करतलपरिगृहीतदशनखं

चिट्ठंति) इस के बाद वे वासुदेव प्रमुख हजारों राजा दूसरे दिन जब रात्रि समाप्त हो चुकी प्रातः काल हो गया-सूर्य उदित हो चुका तब स्नान यावत् समस्त अलंकारों से विभूषित होकर, हाथियो पर चढे हुए ध्रियमाण कोरंट पुष्पों की माला से विराजित छत्र से युक्त होते हुए उद्धूयमान श्वेत वरचामरों से वीज्यमान होते हुए एवं हय, गज यावत् रथ पदाति समूह से परिवृत्त होते हुए अपनी राज विभूति के अनुसार यावत् शंख पणव पटह आदि के साथ २ जहां वह स्वयंवर मंडप था-वहां आये। वहां आकर वे सब उसके भीतर प्रविष्ट हुए। प्रविष्ट होकर वे प्रत्येक जन अपने २ नाम से अंकित आसनों पर पृथक २ बैठ गये और राजवर कन्या द्रौपदी की प्रतीक्षा करने लगे। (तएणं से पंडुए राया कल्लं ण्हाए जाव विभूसिए सकोरंट० हयगय० कंपिल्लपुरं मज्झंमज्झेण निग्गच्छति-जेणेव सयंवरमंडवे जेणेव वासुदेव पामुक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेसिं वासुदेव

पडिवालेमाणा २ चिट्ठति)

ત્યારપછી વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓ બીજા દિવસે જ્યારે રાત્રિ પસાર થઈ ગઈ અને સવાર થતાં સૂર્ય ઉદય પામ્યો ત્યારે સ્નાન વગેરેથી પરવારીને પોતાના શરીરને બધા આભૂષણોથી શણગારીને, હાથીઓ ઉપર સવાર થ'ને, સુગંધિત કોરંટ પુષ્પોની માળાઓથી શોભિત અને છત્રથી યુક્ત થઈ ઉત્તમ શ્વેત ચામરોથી વીજ્યમાન થતા તેમજ ઘોડા, હાથી યાવત્ રથ પદાતિ સમૂહથી પરિવૃત થતા પોતાના રાજ્ય વૈભવ અનુસાર યાવત્ શંખ પણવ પટહ વગેરે વાજાઓની સાથે જ્યાં સ્વયંવર મંડપ હતો ત્યાં ગયા. ત્યાં જઈને તેઓ બધા મંડપમા પ્રવિષ્ટ થયા અને પ્રવિષ્ટ થઈને તેઓ પોત-પોતાના નામાંકિત જુદા જુદા આસનો ઉપર બેસી ગયા અને રાજવર કન્યા દ્રૌપદીની પ્રતીક્ષા કરવા લાગ્યા

(तएणं से पंडुए राया कल्लं ण्हाए जाव विभूसिए हत्थिखंधवरगए सकोरंट० हय गय० सयंवरामंडवे जेणेव वासुदेव पामुक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव

शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा जयेन विजयेन वर्धयित्वा कृष्णस्य वासुदेवस्य श्वेतवरचामरं गृहीत्वा 'उववीयमाणे' उपवीजयन् चामरादूधूननेन सेवमानस्तिष्ठति ॥ सू० २१ ॥

पामुक्खाणं करयल वद्धावित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स सेयवरचामरं गहाय उववीयमाणे चिट्ठति) इस के बाद पांडु नामक राजा प्रातः काल स्नान से निवट कर और समस्त अलकारों से विभूषित होकर अपने पट्ट गजराज पर चढ कर कांपिल्य पुर नगर के बीच से होते हुए उस स्वयंवर मडप में आये। जब ये गजराज पर चढे हुए आरहे थे उस समय इन के ऊपर कोरंट पुष्पों की माला से विराजित छत्र, छत्रधारियों ने तान रखा था। चामर ढोरने वाले शुभ्र चामर ढोर रहे थे। हय, गज, रथ एव पदादि समूहरूप चतुरंगिणी सेना इनके साथ चल रही थी। राजसी ठाटबाट से ये सुसज्जित थे। विविध बाजे साथ में बजते हुए-आरहे थे। मंडप में आकर ये जहां वासुदेव प्रमुख हजारों राजा बैठे हुए थे- वहां गये। वहां जाकर उन्होंने उन वसुदेव प्रमुख हजारों राजाओं को दोनों हाथ जोड कर बडी नम्रता के साथ नमस्कार किया। जय विजय शब्दों द्वारा उन्हें वधाई दी। वधाई देकर फिर ये कृष्ण वासुदेव के ऊपर श्वेतचामर लेकर ढोरते हुए वहां बैठ गये॥ सू० २० ॥

उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं करयल०वद्धावेत्ता कण्हस्स वासुदेवस्स सेयवरचामरं गहाय उववीयमाणे चिट्ठति)

ત્યારપછી પાંડુ નામક રાજા સવારે સ્નાનથી પરવારીને સમસ્ત અલંકારોથી પોતાના શરીરને શણગારીને અને પોતાના મુખ્ય ગજરાજ ઉપર સવાર થઈને કાંપિલ્યપુર નગરની વચ્ચેથી પસાર થઈને સ્વયંવર મંડપમાં આવ્યા. જ્યારે તેઓ ગજરાજ ઉપર બેસીને આવતા હતા ત્યારે કોરંટ પુષ્પોની માળાઓથી શોભિત છત્ર છત્રધારીઓએ તાણેલું હતું ચામર ઢોળનારાઓ શ્વેત ચામરો ઢોળી રહ્યા હતા, ઘોડા, હાથી, રથ અને પદાતિ સમૂહ રૂપ ચતુરંગિણી સેના તેમની સાથે સાથે ચાલી રહી હતી રાજસી ઠાઠથી તેઓ સુસજ્જિત હતા, અનેક જાતના વાજાઓ વાગી રહ્યાં હતાં મંડપમાં આવીને તેઓ જ્યા વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓ બેઠેલા હતા ત્યા ગયા. જ્યાં વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓ બેઠેલા હતા ત્યા તેમની પાસે જઈને તેઓએ વાસુદેવ પ્રમુખ સર્વે રાજાઓને ખૂબ જ નમ્રપણે બંને હાથ જોડીને નમસ્કાર કર્યા જય વિજય શબ્દોથી તેઓને અભિનંદિત કર્યા અભિનંદિત કર્યા બાદ તેઓ કૃષ્ણ વાસુદેવની ઉપર શ્વેત ચામર ઢોળતા ત્યાં બેસી ગયા. ॥ સૂત્ર ૨૦ ॥

मूलम्—तएणं सा दोवई रायवरकन्ना जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कय-कोउयमंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिया जिणपडिमाणं अच्चणं करेइ, करित्ता जेणेव अंतेउरे तेणेव उवागच्छइ ॥ सू० २१ ॥

टीका—'तएणं सा' इत्यादि। ततस्तदनन्तरं सा द्रौपदी राजवरकन्या यत्रैव मज्जनगृह तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्नाता 'कयबलिकम्मा' कृतबलि-कर्मा अन्नादिषु वायसादिप्राणिनां संविभागो बलिकर्म तत् कृतं यया सा तथा कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ता 'सुद्धप्पावेसाइं' शुद्धप्रवेश्यानि शुद्धानि स्वच्छानि प्रवेश्यानि-सभायां प्रवेष्टुं योग्यानि, यत्परिधानेन सभायां लोकाः प्रवेष्टुमर्हन्ती-त्यर्थः, मङ्गलानि=शुभानि वस्त्राणि 'पवरपरिहिय' प्रवरपरिहिता-प्रवरविधिना प्रवरेण शोभाकारेण विधिना परिहिता=परिधानेन धृतवती आर्षत्वात् कर्तरिक्तः,

'तएण सा दोवई रायवर कन्ना' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) इस के बाद (सा दोवई रायवर कन्न) वह राजवर कन्या द्रौपदी (जेणेव मज्जणघरे) जहां स्नान घर था (तेणेव उवागच्छइ) उस ओर गई (उवागच्छित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगल पायच्छित्ता) वहां जाकर २ उसने स्नानघरमें स्नान किया, नहाकर फिर उसने काक पक्षि आदि को अन्नादि का भाग देने रूप बलि कर्म किया कौतुक मंगल प्रायश्चित्त किये। (सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइ पवर परिहिया) सभा में प्रवेश के योग्य ५ शुद्ध स्वच्छ मांगलिक वस्त्र अच्छी तरह विधि के अनुसार पहिरी हुई (जिणपडिमाण अच्चणं करेइ)

'तएण सा दोवईरायवरकन्ना' इत्यादि—

टीकार्थ-(तएण) त्यारपछी (सा दोवई रायवरकन्ना) ते राजवर कन्या द्रौपदी (जेणेव मज्जणघरे) ज्यां स्नानघर हतुं (तेणेव उवागच्छइ) त्यां गई. (उवागच्छित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कय कोउयमंगलपायच्छित्ता) त्यां जईने तेणे स्नानघरमां स्नान कर्युं. स्नान कर्या बाद तेणे कागडा वगेरे पक्षीओने अन्न वगेरेनो भाग अर्पीने बलिकर्म कर्युं-कौतुक मंगळ प्रायश्चित्त कर्या. (सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइ पवरपरिहिया मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ) सभामां प्रवेशवा योग्य स्वच्छ मांगलिक वस्त्रो तेणे सरस रीते पहेर्यां, त्यारपछी ते स्नानघरथी बहार नीकळी (जिणपडिमाणं अच्चणं करेइ) जिन

वस्त्राणि परिधाय ' जिणपडिमाणं अच्चणं करेइ ' जिनप्रतिमानां, कामदेव प्रतिमानांमर्चनं करोति विवाहविधि निर्विघ्न संपन्नार्थ मिति भावः ' करित्ता ' कृत्वा ' जेणेव अंतेउरे तेणेव उवागच्छइ ' यत्रैवान्तःपुरं तत्रैवो- पागच्छति ॥सू०२१॥

द्रौपदीचर्चा

यत्तु-" जिणपडिमाणं अच्चणं करेइ " इति पाठं समाश्रित्य भगवतोऽर्हतः पूजन जैनधर्मानुयायिभिः कर्तव्यमित्याहुस्तन्मिथ्यात्वविलसितम् , अस्य पाठस्य चरितानुवादरूपत्वेन विधायकत्वासम्भवात् । विधिवाक्यं हि जिनाज्ञाया बोधकत्वेन विधायकं भवति, यथा-भगवता विधेयतयोपदिष्टं षड्विधावश्यकं चतुर्विध-

जिन प्रतिमा का कामदेव की प्रतिमा का निर्विघ्न विवाहकार्य के लिये अर्चन करती है अर्चन कर के फिर वह (जेणेव अंते उरे तेणेव उवागच्छइ) जहाँ अतःपुर था वहां चली गई ॥ सू० २१ ॥

द्रौपदी चर्चा

जो "जिणपडिमाणं अच्चणं करेइ" इस पाठका आश्रय लेकर प्रतिमापूजन की उपयोगिता कहते हुए यह कहते हैं, कि " अर्हत भगवान की प्रतिमा की पूजा जैनधर्म के पालकों को करना चाहिये" यह उनका कथन मिथ्यात्व का विलास ही है। क्यों कि यह " जिनपडिमाणं " इत्यादि वाक्य चरित का ही अनुवादक है-अतः ऐसे वाक्य किसी मुख्य अर्थ के विधायक नहीं हुआ करते हैं। चारितानुवाद से तो सिर्फ जिस व्यक्ति ने जो २ आचरण किया है उसका ही बोध होता है। शास्त्र विहित मार्गके निर्देशक विधिवाक्य हुआ करते हैं-क्यों कि कि ऐसे वाक्य जिन भगवान की आज्ञाके विधायक होते हैं। जिस प्रकार षट्

પ્રતિમાનું કામદેવની પ્રતિમાનું નિર્વિધ્ને વિવાહકાર્ય સંપન્ન થવાના હેતુથી અર્ચન કરે છે, અર્ચન કરીને (जेणेव अंतेउरे तेणेव उवागच्छइ) જ્યાં રણુવાસ છે તે તરફ જતી રહી. ॥ સૂત્ર ૨૧ ॥

દ્રૌપદી ચર્ચા

કેટલાક "जिणपडिमाणं अचणं करेइ" આ પાઠના આધારે પ્રતિમા પૂજનની ઉપયોગિતા સિદ્ધ કરતાં આ પ્રમાણે કહે છે કે " અર્હંત ભગવાનની પ્રતિમાનું પૂજન જૈનધર્મ પાલન કરનારાઓએ કરવું જોઈએ " તેમનું આ કથન સત્યથી બહુ દૂર છે એટલે કે આ વાત સાવ અસત્યથી પૂર્ણ છે. કેમકે આ " जिनपडिमाणं " વગેરે વાક્ય ચરિતના જ અનુવાદક છે એટલા માટે એવાં વચનો કોઈ વિશેષ અર્થને સ્પષ્ટ કરનારાં હોતા નથી. ચરિતાનુવાદથી તો ફક્ત જે માણસે જે તે આચરણ કર્યું છે, ફક્ત તેનું જ જ્ઞાન થાય તેમ છે. શાસ્ત્રવિહિત માર્ગને બતાવનારા તો વિધિ વાક્યો જ થાય છે. જેવી રીતે

संघस्य कर्तव्यं भवति ।

तथा चोक्तम्—समणेण सावएण य अवस्सकायव्वयं हवइ जम्हा ।

अंतो अहोनिसस्स य, तम्हा आवस्सयं नाम ॥ १ ॥ इति (अनुयोगद्वा०)

छाया-श्रमणेन श्रावकेण च अवश्यकर्त्तव्यकं भवति यस्मात् ।

अन्तेऽहर्निशस्य च तस्माद् आवश्यकं नाम ॥ १ ॥

" जं इमं समणे वा समणी वा सावए वा साविया वा ।

तच्चित्ते तम्मणे जाव उभओकालं छव्विहं आवस्सयं करेंति (अनु०)

छाया-यदिदं श्रमणो वा श्रमणी वा श्रावको वा श्राविका वा ।

तच्चित्तः तन्मना यावद् उभयकालं षड्विधमावश्यकं नाम ॥ २ ॥

आवश्यक कार्यों को प्रतिपादन करने वाले वाक्य जिन प्रभु की आज्ञा के निर्देशक होने से साधु साध्वी श्रावक श्राविकारूप चतुर्विध संघ को उपादेय माने जाते हैं । शास्त्र में भी यही बात कही गई है

' समणे ण सावएण य ' इत्यादि

शास्त्र विहित षट् आवश्यक कर्तव्य चतुर्विध श्रीसंघ को रात्री एवं दिनके अंतिमभागमें अवश्य करन चाहिये । उनके किये विना मुनि का मुनिपन नहीं और श्रावकका श्रावकपन नहीं । अतः षट् आवश्यक कार्य अवश्य करने योग्य होनेसे आवश्यक रूप से प्रतिपादित हुए हैं ।

" जं इमं समणे वा समणी वा सावए वा साविया वा तच्चित्ते तम्मणे वा जाव उभओ कालं " इत्यादि ।

इसलिये जब ये आवश्यक हैं तब चाहे साधु हो या साध्वी हो श्रावक हो या श्राविका हो कोई भी क्यों न हो उसका यह कर्तव्य हो

છ આવશ્યક કાર્યોનાં પ્રતિપાદન કરનારાં વાક્યો જીન પ્રભુની આજ્ઞાનાં નિર્દેશક હોવાને કારણે સાધુ સાધ્વી શ્રાવક શ્રાવિકા રૂપ ચતુર્વિધ સંઘના માટે યોગ્ય ગણાય છે શાસ્ત્રમાં પણ આ પ્રમાણે કહેવામાં આવ્યું છે'—

" समणेण सावएण य ' ઈત્યાદિ

શાસ્ત્રવિહિત છ પ્રકારના આવશ્યક કર્તવ્યો ચતુર્વિધ સંઘને રાત્રિ તેમજ દિવસના અંતિમ ભાગમાં ચોક્કસ પણે આચરવાં જોઇએ. તેના આચરણ વગર મુનિનું મુનિપણું નથી અને શ્રાવકનુ શ્રાવકપણું નથી એટલા માટે છ આવશ્યક કાર્ય ચોક્કસ કરવા યોગ્ય હોવાથી આવશ્યક રૂપથી પ્રતિપાદિત કરવામાં આવ્યા છે.

" जं इमं समणे वा समणी वा सावए वा साविया वा तच्चित्ते तम्मणे जाव उभओ कालं इत्यादि—આ પ્રમાણે જ્યારે તેઓ ' આવશ્યક ' છે, ત્યારે ભલે સાધુ હોય કે સાધ્વી હોય તેમજ શ્રાવક હોય કે શ્રાવિકા હોય ગમે તે કેમ

चारितानुवादवचनस्य विधायकत्वाङ्गीकारे सूर्याभदेवचरिते शस्त्रादिवस्तूनामर्चनस्य श्रूयमाणतया तन्मते तदपि विधेयं स्यात्।

द्रौपद्याऽपि तत्र खलु प्रतिमायां भगवतोऽर्हतः पूजनं न कृतम्, जैनप्रवचने प्रतिमापूजनस्य विधानाभावात्, प्रतिमापूजनस्य षट्कायजीवहिंसासाध्यतया जैनधर्मत्वाभावाच्च।

तथाहि—प्रतिमापूजाऽङ्गीकारे तदर्थं षट्कायहिंसाऽवश्यंभाविनी, एवं च

जाता है कि वह उन्हीं में चित्त लगाकर और मन को तन्मय करके इसे उभय काल में अवश्य करे।

चरित के अनुवादक कथन करने वाले-वाक्य को यदि विधेय रूप से स्वीकार किया जाय तो सूर्याभदेवके चरित में खड्गादि शस्त्र आदि वस्तुओं की भी पूजा सुनी जाती है-अतः उनमें भी पूज्यता आजानी चाहिये और इस प्रकार से पूजन के पक्षपातियों को उनका पूजन भी विधेय कोटि में मानलेना चाहिये।

द्रौपदी ने भी वहां प्रतिमा में जो भगवान अर्हंत की पूजन नहीं की उसका कारण यह है कि एक तो जैन प्रवचन में प्रतिमा पूजन के विधान का अभाव है और दूसरे-यह प्रतिमा पूजन षट् काय के जीवों की विराधना द्वारा साध्य होती है, इसलिये इस प्रतिमा पूजन में जिनेन्द्र द्वारा प्रतिप्रादित-धर्म आत्मकल्यणसाधकरूप सम्यग्दर्शनादिक का अभाव है। षट् काय के जीवों की विराधना से जो साध्य हुआ करता है वहां सच्चे धर्म के दर्शन तक भी दुर्लभ हैं अतः प्रतिमा पूजन

न होय तेनी ए फरज थई पडे छे के ते तेओमां ज पोतानुं चित्त परोवीने मनने तल्लीन करीने तेने बंने काळमां अवश्य आचरे.

चरितने अनुवादक रूपे बतावनार वाकयने जो विधेय रूपमां स्वीकारवामां आवे तो सूर्याभदेवना चरितमां शस्त्र वगेरे वस्तुओनी पण पूजानी वात सांभळवामां आवे छे. एथी तेमनामां पण पूज्यता आवी जवी जोईए अने आ रीते पूजनना पक्षपातीओए तेमनी पूजा पण विधेयना रूपमां मान्य करवी जोईए.

द्रौपदीए पण त्यां प्रतिमामां भगवान अर्हंतनुं पूजन कर्युं नथी तेनुं कारण ए छे के प्रथम तो जैन प्रवचनमां प्रतिमा-पूजननुं विधान नथी अने बीजुं आ प्रतिमा पूजन षट्कायना जीवोनी विराधना द्वारा संपन्न होय छे, तेथी आ प्रतिमा पूजनमां जीनेन्द्र वडे प्रतिपादित धर्म-आत्मकल्याण साधक रूप सम्यग्-दर्शन वगेरेनो अभाव छे. षट्कायना जीवोनी विराधनाथी

प्राणातिपातविरमणव्रतिनां मुनीनां प्रतिमापूजोपदेशे स्वधर्मस्य मूलोच्छेदः स्यादेव। अत एव-जिनप्रणीतागमे प्रतिमापूजाया विधिर्नोपलभ्यते। प्रतिमास्थापनार्थं

अंगीकार करने में उस पूजन के समय में षट्काय के जीवों की विराधना जब अवश्यंभावी है तब भला! हम इसे विधेय मार्ग कैसे मान सकते हैं, और कैसे यह स्वीकार किया जा सकता है कि इस पूजन का कर्त्ता सच्चे धर्म का उपासक है तथा प्रतिमापूजन को धर्म माना जावे तो एक बड़ा भारी दोष यह भी आकर उपस्थित होता है कि सर्व प्रकार के हिंसादिक पापों से सर्वथा विरक्त महाव्रती मुनिजन जब इस प्रतिमापूजनरूप धर्म का उपदेश करेंगे तब वे भी कारितादिरूप कराने आदि रूप से इसके कर्त्ता होने के कारण अपने मुनिधर्म के मूलतः ही विध्वंसक माने जायेंगे। मुनिजन हिंसादिक सावद्य व्यापारों के कृत, कारित एवं अनुमोदना इन तीन करण एवं तीन योग से त्यागी हुआ करते हैं। जब ये प्रतिमापूजन रूप धर्म का गृहस्थों के लिये व्याख्यान देंगे तब उनके व्याख्यान से प्रेरित हो गृहस्थ जन उस ओर अपनी प्रवृत्ति चालू करने वाले होंगे, और उस प्रकार के उनके व्यवहार से इस कार्य में षट्काय के जीवों की विराधना होने से उस विराधना

જે સાધ્ય થાય છે તેમાં તો સાચા ધર્મના દર્શન સુદ્ધાં દુર્લભ છે. એટલા માટે પ્રતિમા-પૂજન સ્વીકારવામાં તે પૂજન કરતી વખતે ષટ્કાયના જીવોની વિરાધના જ્યારે ચોક્કસપણે થવાની છે ત્યારે અમે તેને વિધેય માર્ગ કયા આધારે માન્ય કરીએ. અને એની સાથે સાથે અમે એ પણ કેવી રીતે સ્વીકાર કરીએ કે આ જાતનું પૂજન કરનાર સાચા ધર્મનો ઉપાસક છે? જો પ્રતિમા પૂજનને ધર્મ રૂપે સ્વીકારીએ તો એમાં એક ભારે દોષ એ છે કે સર્વ પ્રકારનાં હિંસા વગેરે પાપોથી સર્વથા વિરક્ત મહાવ્રતી મુનિજનો જ્યારે આ પ્રતિમા પૂજન રૂપ ધર્મનો ઉપદેશ આપશે ત્યારે તેઓ પણ કારિતાદિ રૂપ કરાવવા વગેરે રૂપથી એના કર્તા રૂપે હોવા બદલ પોતાના મુનિ ધર્મના મૂલતઃ વિધ્વંસક ગણાશે. મુનિજનો હિંસા વગેરે સાવદ્ય વ્યાપારોના કૃત, કારિત અને અનુમોદના આ ત્રણ કરણ અને ત્રણ યોગના ત્યાગી હોય છે. જ્યારે તેઓ પ્રતિમા-પૂજન રૂપ ધર્મનું ગૃહસ્થોને માટે વ્યાખ્યાન આપશે ત્યારે તેમનાં વ્યાખ્યાનથી પ્રેરાઈને ગૃહસ્થો તે પ્રમાણે આચરશે જ અને આ જાતનાં તેમનાં આચરણોથી આ કામમા ષટ્કાય જીવોની વિરાધના હોવાથી તે વિરાધનાને કરાવનારા આ ઉપદેશક મુનિઓ જ ગણાશે ત્યારે એમના અહિંસા વગેરે મહાવ્રતો ત્રિયોગ અને ત્રિકરણ વિશુદ્ધ રૂપે કેવી રીતે રહી શકશે? એથી ધર્મલાભને ઇચ્છતાં પણ તેઓ આ જાતના વિચારોની ભૂલમાં જ મોટી ભૂલ કરી

देवायतनप्रतिमाऽऽरामकूपादिकरणे तदुपदेशदाने च पृथिवीकायहिंसाया अवश्यम्भावः । देवायतनादिकरणे पूजाङ्गतयास्नान प्रतिमास्नपनवस्त्रक्षालनादिकरणे च तदुपदेशदाने चाप्कायविराधनमपि, तथा-पूजाङ्गधूपदीपारात्रिकसम्पादनं चाग्निकायविराधनया विना न संभवति, वायुकायहिंसनं तु धूपदीपारात्रिका-

के कराने वाले ये उपदेशक मुनिजन माने जायेंगे-तब इनके अहिंसादि महाव्रत त्रियोग और त्रिकरण विशुद्ध कैसे रह सकेंगे ? अतः लाभ की चाहना में इन विचारों की भूल में ही बड़ी भारी भूल होने से ये अपने धर्म के सच्चे आराधक नहीं माने जा सकेंगे। इसलिये यह बात अवश्य माननी चाहिये कि जिन प्रणीत आगम में प्रतिमापूजन की विधि नहीं पाई जाती है।

इसी प्रकार प्रतिमा स्थापन, प्रतिमा प्रतिष्ठा करवाना, मंदिर वगैरह बनवाना एवं उस प्रतिमा की पूजा निमित्त बगीचा तथा कुआ आदि का करवाना ये बातें पृथिवी कायिक जीवों की हिंसा के कारण हैं अतः त्याज्य हैं। इनके बनवाने आदि का जो उपदेश करते हैं वे भी पृथिवीकायिक जीवों की हिंसा से मुक्त नहीं हो सकते हैं। इसी प्रकार पूजन का अंग होने से स्नान, प्रतिमा के अभिषेक तथा पूजन के वस्त्रों के धोने साफ करने में और उसके उपदेश देने में अप्काय के जीवों की विराधना होती है, धूपखेना, दीपक जलाना, आरती उतारना ये सब बातें अग्निकायिक जीवों की विराधना के बिना नहीं हो सकती है अर्थात् इनमें अग्निकायिक जीवों की विराधना अवश्यंभाविनी है।

બેસશે અને તેઓ પોતાના ધર્મના સાચા આરાધક ગણાશે નહિ. એટલા માટે આ વાત ચોક્કસપણે માની જ લેવી જોઈએ કે 'જીન પ્રણીત' આગમમાં પ્રતિમા-પૂજનની વિધિ મળતી નથી.

આ પ્રમાણે પ્રતિમા-સ્થાપન, -પ્રતિમા-પ્રતિષ્ઠા કરાવવી, મંદિર વગેરે બનાવવાં અને તે પ્રતિમાની પૂજા માટે ઉદ્યાન તેમજ વાવ વગેરે તૈયાર કરાવવાં એ પૃથ્વિ-કાયિક જીવોની હિંસાના કારણ છે-એટલા માટે ત્યાજ્ય છે. તેને બનાવવા માટે જે લોકો ઉપદેશ આપે છે તેઓ પણ પૃથ્વિ-કાયિક જીવોની હિંસાથી મુક્ત થઈ શકતા નથી. આ રીતે જ પૂજનને માટે સ્નાન, પ્રતિમાનો અભિષેક તેમજ પૂજનના વસ્ત્રોને ધોવામાં અને તેના ઉપદેશમાં પણ અપ્કાયના જીવોની વિરાધના હોય છે. ધૂપ કરવો, દીપક કરવો, આરતી ઉતારવી આ બધી વિધિઓ અગ્નિ-કાયિક જીવોની વિરાધના વગર સંભવી શકે તેમ નથી એટલે કે તેઓમાં અગ્નિ-કાયિક જીવોની વિરાધના ચોક્કસપણે

दिमिश्रामरादिवीजनैर्नृत्यगीतवादित्रैश्च सविशदं भवति, वनस्पतिकायविराधनं च प्रतिमापूजानिमित्तकेऽनन्तकायकोमलविविधफलपुष्पपत्रसंग्रहे नियतं भवति। पृथिवीकायाद्याश्रिता बहुविधनिरपराधहीनदीनदुर्बलप्रकृतिभीरुसंगोपितशरीरा द्वीन्द्रियादि पञ्चेन्द्रियान्तास्त्रसा जीवा अपि छेदनभेदनस्वाश्रयविनाशजनितानन्तदुःखैस्तीव्रतरवेदनामुपलभ्येतस्ततः स्खलितपतिता म्रियन्ते।

धूपकेधुंआ से, दीप तथा आरती की ज्योति से चमर आदि के ढोरने से, नृत्य करने से, गीत गाते समय मुख से निकले हुए गर्म वायु से, एवं बाजों के बजाने से वायुकायिक जीवों की विराधना होती हुई स्पष्ट मालूम देती है। वनस्पति कायिक जीवों की विराधना भी इस समय इस प्रकार से होती है, कि–मूर्ति पूजन के लिये उसके पूजक अनन्त कायिक ऐसे कोमल अनेक प्रकार के फल, पुष्प और पत्रों का संग्रह जो करता है इस प्रकार इस पूजन में षट्कायिक जीवों की हिंसा का आरंभ स्पष्ट देखा जाता है। तथा त्रस कायिक जीवों का भी इसके निमित्तहनन होता है और वह इस प्रकार से–कि जब पृथिवीकायिकादि जीवों का आरंभ प्रतिमा आदि के निर्माण में या देव आयतन (मन्दिर) आदि के कराने में किया जाता है तो उस समय उसके आश्रित जो बहुत से अनेक जाति के निरपराधी, हीन, दीन, दुर्बल, प्रकृति से भयशील तथा संगोपित शरीरवाले ऐसे द्वीन्द्रियादिकसे लेकर पंचेन्द्रिय तक जितने भी त्रस जीव रहते हैं वे सब के सब छेदन, भेदन, एवं स्वाश्रय के विनाश जनित अनंत दुःखों से संतप्त होकर

थवानी જ છે ધૂપના ધૂમાડાથી દીપક અને આરતીની જ્યોતથી ચમર વગેરેને ઢાળવાથી તેમજ વાજાંઓ વગાડવાથી વાયુકાયિક જીવોની વિરાધના થાય છે તેની દરેકને સ્પષ્ટ પ્રતીતિ થતી જ રહે છે. વનસ્પતિ–કાયિક જીવોની વિરાધના પણ તે વખતે આ પ્રમાણે થાય છે કે મૂર્તિ–પૂજન માટે પૂજા કરનારાઓ અનંત–કાયિક એવા કોમળ ઘણી જાતનાં ફળો, પુષ્પો અને પત્રોને એકઠાં કરે છે આમ આ પૂજામાં ષટ્‌–કાયિક જીવોની હિંસા સ્પષ્ટપણે દેખાય છે. ત્રસ–કાયિક જીવોનું પણ તેને લીધે હનન હોય છે. જેમકે જ્યારે પૃથિવ–કાયિક વગેરે જીવોનો આરંભ પ્રતિમા વગેરેના નિર્માણમાં અથવા તો દેવ–આયતન (મંદિર) વગેને બનાવવામાં કરવામાં આવે છે ત્યારે તેના આશ્રિત જે ઘણા અનેક જાતના નિરપરાધિ, હીન, દીન, દુર્બલ, પ્રકૃતિથી બીકણ તેમજ સંગોપિત શરીરવાળા એવા દ્વીન્દ્રિયાદિકથી માંડીને પંચેન્દ્રિય સુધીના જેટલાં ત્રસ જીવો રહે છે તેઓ સર્વે છેદન, ભેદન અને સ્વાશ્રયના વિનાશથી અનંત

धर्मस्य लक्षणं हि-जिनाज्ञामयोऽयप्रवृत्तिकत्वम्, "आणाए मामगं धम्मं" इति भगवद्वचनात्, किं च-अगारानगारभेदेन धर्मस्य द्वैविध्यमभिधाय-भगवता-"अणगारधम्मो ताव" इत्यादिना सर्वप्राणातिपातविरमणादि-रात्रिभोजनान्तान् अनगारधर्मानुपदिश्य तदनन्तरमिदं कथितम्—

'अयमाउसो! अणगारसामइए धम्मे पण्णत्ते एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए निग्गंथे वा निग्गंथी वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ' (औपपातिसूत्रम्)

अयमायुष्मन्! अनगारसामायिकः=अनगारसिद्धान्तविषयः, धर्मः प्रज्ञप्तः। एतस्य धर्मस्य 'शिक्षायामुपस्थितः'=आराधकः, निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रंथी वा विहर-

---

और वहां से गिर पड़कर अन्त में मर जाते हैं।

जिनेन्द्र की आज्ञा में प्रवृति करना यही धर्म का लक्षण है। भगवान का भी आचाराङ्गसूत्र अ- ६ उ- २ सू- ८ में यही कथन है "आणाए मामगं धम्मं" इति। प्रभु ने जिस समय धर्म का उपदेश दिया उस समय उन्होंने इस धर्मके दो भेद कहे हैं इनमें एक-१ सागारी गृहस्थका धर्म और दूसरा अनगार-मुनिका धर्म। "अनगार धम्मो ताव" इत्यादि सूत्र से समस्त जीवों की विराधना आदि से विरक्त होना यहां से लगाकर रात्रिभोजन का सर्वथा परिहार करना यहां तक जो कुछ कहा है वह सब अनगार धर्म को लेकर कहा गया है उसके बाद उन्होंने औपपातिक सूत्र में यह कहा है कि "अयमाउसो अणगारसामइए धम्मे पण्णत्ते, एयस्स धम्मस्स सिक्खाए, उवट्ठिए निग्गंथे वा निग्गंथी वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ" हे आयुष्मन! यह अनगारसामायिक-मुनियों का सिद्धान्त विषयक

દુઃખોથી સંતપ્ત થઈને અને ત્યાંથી પડી જઈને, ભ્રષ્ટ થઈને અંતે મૃત્યુને ભેટે છે.

જીનેન્દ્રની આજ્ઞા પ્રમાણે અનુસરવું એજ ધર્મનું લક્ષણ છે. આચારાંગ સૂત્ર અ-૬, ઉ-૨, સૂ-૮ મા પણ ભગવાને આ પ્રમાણે કહ્યુ છે કે "आणाए मामगं धम्मं इति" પ્રભુએ જ્યારે ધર્મ વિષે ઉપદેશ આપ્યો ત્યારે તેમણે આ ધર્મના બે ભેદ બતાવ્યા છે ૧ સાગાર ગૃહસ્થનો ધર્મ અને ૨ અનગાર મુનિનો ધર્મ "अनगारधम्मो ताव" વગેરે સૂત્રથી સમસ્ત જીવોની વિરાધના વગેરેથી વિરક્ત થવું અહીંથી માંડી રાત્રિ-ભોજનનો સંપૂર્ણપણે ત્યાગ કરવો અહીં સુધી જે કંઇ કહ્યુ છે તે બધું અનગાર ધર્મને ઉદ્દેશીને કહેવામા આવ્યુ છે ત્યારપછી ઔપપાતિક સૂત્રમાં તેઓશ્રીએ આ પ્રમાણે કહ્યુ છે કે—
(अयमाउसो अणगारसामइए धम्मे पण्णत्ते, एयस्स धम्मस्स सिक्खाए, उवट्ठिए निग्गंथे वा निग्गंथी वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ) હે આયુષ્મન્!

माण आज्ञाया आराधको भवति। एतस्य धर्मस्याराधक एवाज्ञाया आराधक इत्युक्त्वाऽऽज्ञैव धर्मस्य प्रकाशकतया मूलमिति बोधितम्। तदनन्तरं च भगवता—

"अगारधम्मं दुवालसविहं आइक्खइ। तं जहा—पंच अणुव्वयाइं, तिण्णि-गुणव्वयाइं चत्तारि सिक्खावयाइं" इत्यादिना द्वादशविधं धर्मं निरूप्य कथितम्।

'अयमाउसो! अगारसामइए धम्मे पण्णत्ते' एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए समणोवासए वा समणोवासिया वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ" इति।

धर्म कहा गया है-अर्थात् मुनियों का यह धर्म कहा गया है। इस धर्म की शिक्षा में जो उपस्थित होता है अर्थात् जो इस धर्म की-आराधना करते हैं- चाहे वे साधु हों चाहे साध्वी हों कोइ भी हो ये जिनेन्द्र भगवान की आज्ञा के आराधक होते हैं। इस धर्म की आराधना करनेवाला जीव ही जिनेन्द्र की आज्ञा का आराधक माना गया है इस कथन से "जिस बात में भगवान की आज्ञा हो वही धर्म का मूल है अन्य आज्ञा विरुद्ध प्रवृत्ति है" यह बात समझाई गई है इस के बाद भगवान ने "अगारधम्मं दुवालसविहं आइक्खइ तं जहा-पंच अणुव्वयाइं, तिण्णिगुणव्वयाइं चत्तारि सिक्खावयाइं" इस सूत्र से यह प्रकट किया है कि गृहस्थ का धर्म १२ प्रकार का है ५ अणुव्रत, ३ गुण-व्रत और ४ शिक्षाव्रत। इस प्रकार से कथन कर "अयमाउसो अगार-सामइए धम्मे पण्णत्ते एयस्स धमस्स सिक्खाए, उवट्ठिए, समणोवासए वा समणोवासिया वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ" इति-है

આ અનગાર સામાયિક મુનિયોનો સિદ્ધાન્ત વિષયક ધર્મ કહેવામાં આવ્યો છે એટલે કે આ મુનિઓનો ધર્મ કહેવામાં આવ્યો છે. આ ધર્મની શિક્ષામાં જે ઉપસ્થિત હોય છે એટલે કે આ ધર્મની આરાધના કરે છે-ભલે તેઓ સાધુ હોય કે સાધ્વીઓ ગમે તે કેમ ન હોય તેઓ જીનેન્દ્ર ભગવાનની આજ્ઞાના આરાધકો હોય છે આ ધર્મની આરાધના કરનારો જીવ જ જીનેન્દ્રના આરા-ધક ગણાય છે આ કથનથી એ વાત સમજાવવામાં આવી છે કે જે વાતમા ભગવાનની આજ્ઞા હોય તેજ ધર્મ છે, આજ્ઞા વિરૂદ્ધ બીજું આચરણ અધર્મ છે. ત્યારપછી ભગવાન વડે "अगारधम्मं दुवालसविहं आइक्खइ तं जहा पंच अणुव्वयाइं, तिण्णि गुणव्वयाइं चत्तारि सिक्खावयाइं" આ સૂત્ર દ્વારા એ સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યુ છે કે ગૃહસ્થનો ધર્મ ૧૨ પ્રકારનો છે-૫ અણુવ્રત, ૩ ગુણુવ્રત અને ૪ શિક્ષાવ્રત. આ રીતે "अयमाउसो अगारसामाइए धम्मे पण्णत्ते एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए, समणोवासए वा समणोवासिया वा विहरमाणे

छाया—अयमायुष्मन्! अगारसामयिको धर्मः प्रज्ञप्तः, एतस्य धर्मस्य शिक्षायामुपस्थितः'=आराधकः श्रमणोपासको वा श्रमणोपासिका वा विहरमाणा आज्ञाया आराधको भवति। इति॥

अत्रापि एतस्य द्वादशविधस्य धर्मस्याराधक एव श्रमणोपासक आज्ञाया आराधक इति बोधयताऽऽज्ञैव धर्मस्य मूलमिति बोधितम्।

आचाराङ्गसूत्रेऽपि प्रथमाध्ययने तृतीयोद्देशे भगवताऽभिहितम्-"जाए सद्धाए णिक्खंते तमेवमणुपालिज्जा-विजहित्ता विसोत्तियं पुव्वसंजोगं। पणया वीरा महावीहिं। लोगं च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभयं।" इति

आयुष्मन्! यह गृहस्थ का धर्म कहा गया है। इस धर्म की शिक्षा में उपस्थित-श्रमणोपासक-मुनिजनों के भक्त ऐसे श्रावकजन अथवा श्राविकाजन तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा के आराधक माने जाते हैं। इस सूत्र में भी यही प्रकट किया गया है कि इस १२ प्रकार के धर्म का आराधक ही श्रमणोपासक-श्रावक, श्राविका तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा का आराधक है इस प्रकार समझानेवाले श्री जिनेन्द्र देव ने आज्ञा ही धर्म का मूल है यह समझाया है।

आचारांग सूत्र के प्रथम अध्ययनके तृतीय उद्देशे में भगवान ने यह कहा है "जाए सद्धाए णिक्खते तमेव मणुपालिज्जा विजहित्ता विसोत्तियं पुव्वसंजोगं। पणया वीरा महावीहिं लोगं च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभयं" कि जिस श्रद्धा उत्साह से "अर्हंत प्रभु द्वारा प्रतिपादित सम्यग्दर्शनादिक मोक्षके मार्ग है या नहीं है" इस प्रकार सर्व

आणाए आराहए भवइ" હે આયુષ્મન્ત! આ ગૃહસ્થ ધર્મ બતાવવામાં આવ્યો છે. આ ધર્મની શિક્ષામાં ઉપસ્થિત શ્રમણોપાસક મુનિઓના ભક્તજન-શ્રાવકો અથવા તો શ્રાવિકાઓ તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાના આરાધક ગણાય છે. આ સૂત્રમાં પણ આ પ્રમાણે જ સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યું છે કે ૧૨ પ્રકારના ધર્મના આરાધકો જ શ્રમણોપાસક શ્રાવક શ્રાવિકા તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાને આરાધકો છે. આ રીતે સમજાવનારા શ્રી જીનેન્દ્રદેવે આજ્ઞા જ ધર્મનું મૂળ છે આમ સમજાવ્યું છે.

આચારાંગ સૂત્રના પહેલા અધ્યયનના ત્રીજા ઉદ્દેશકમાં ભગવાને આ પ્રમાણે કહ્યું છે-"जाए सद्धाए णिक्खंते तमेवमणुपालिज्जा विजहित्ता विसोत्तियं पुव्वसंजोगं। पणया वीरा महावीहिं लोगं च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभयं" કે જે શ્રદ્ધા-ઉત્સાહથી "અર્હંત પ્રભુ વડે પ્રતિપાદિત સમ્યગ્ દર્શન વગેરે મોક્ષના માર્ગો છે કે નહિ" આ રીતે સર્વ આગમ વિષયક સર્વ શંકા તેમજ

यया श्रद्धया-सम्यक्त्वेन 'विसोत्तियं' विस्रोतसिकां=शङ्कां-सर्वशङ्कां देशशङ्कां चेत्यर्थः, यथा-' किमार्हतो मोक्षमार्गोऽस्ति न वा ' इति सर्वागमविषयिका शङ्का सर्वशङ्का, तथा-" किमप्कायादयो जीवाः सन्ति न वा " इति देशशङ्का। तथा 'पुव्वसंजोगं' पूर्वसंयोगं=मातापित्रादिसम्बन्धं धनधान्यस्वजनादिसम्बन्धं वा, इदमुपलक्षणं-तेन पश्चात्संयोगमपि श्वशुरादिकृतं, 'विजहित्ता' विहाय=परित्यज्य 'णिक्खंत्ते' निष्क्रान्तः=प्रव्रजितः। 'तं' तां श्रद्धाम् .' अणुपालिज्जा एव' अनुपालयेदेव-निरतिचारं रक्षेदित्यर्थः।

अथ-' परिशीलितमार्गोऽनुगम्यते ' इति लोकरीत्या शिष्यश्रद्धादृढीकरणाय पूर्वमहापुरुषाचरितोऽयं मार्ग इति।

वीराः—भाववीराः संयमानुष्ठाने वीर्यवन्तः 'महावीहिं' महावीथिं= महावीथिः-सम्यग्दर्शनादिलक्षणो महामार्गः महापुरुषसेवितत्वात्, तां महावीथिं

आगम विषयक सर्वशंका का तथा " अप् कायिकादिक जीव हैं या नहीं " इस प्रकार की देशशंका और माता पिता आदि के साथ के संबंधरूप पूर्व संयोग एवं धन, धान्य, स्वजन आदि संबंध, उपलक्षण से श्वशुर आदिरूप पश्चात् संयोग का परित्याग कर यह जीव संसार आदि पदार्थों को हेय समझ उनसे सर्वथा विरक्त हो जाता है उस श्रद्धा का अतिचार आदि कों से रक्षा करनी चाहिये-उस श्रद्धा का अतिचार रहित होकर मुनि को पालन करना चाहिये। जो मार्ग परिशीलित होता है उस पर अनेक प्राणी चलते हैं यह लौकिकरीति है। इसीरीति के अनुसार शिष्यों की श्रद्धा को दृढ करने के लिये " यह मार्ग पूर्व में महापुरुषों द्वारा सेवित किया गया है " हमें समझाने के लिये सूत्रकार " पणया वीरा महावीहिं " इस अंश का कथन करते हैं

" અપ્કાયિક વગેરે જીવો છે કે નથી " આ જાતની દેશ શંકા અને માતા પિતા વગેરેની સાથેના સંબંધ રૂપ પૂર્વ સંયોગ અને ધન, ધાન્ય, સ્વજન વગેરે સંબંધ ઉપલક્ષણથી ' શ્વસુર ' વગેરે રૂપ પશ્ચાત્ સંયોગનો પરિત્યાગ કરીને આ જીવ સંસાર વગેરે પદાર્થોને હેય સમજીને તેમના તરફ સંપૂર્ણપણે વિરક્ત થઈ જાય છે તે શ્રદ્ધાની અતિચાર વગેરેથી રક્ષા કરવી જોઈએ. તે શ્રદ્ધાનું પાલન મુનિએ અતિચાર વગર થઈને કરવું જોઈએ જે માર્ગ પરિશીલિત હોય છે તે તરફ ઘણાં પ્રાણીઓ જાય છે, આ લૌકિક પ્રથા છે. આ પ્રથા પ્રમાણે શિષ્યોની શ્રદ્ધાને મજબૂત બનાવવા માટે " આ માર્ગ મહા પુરૂષો વડે સેવવામાં આવ્યો છે. " આ વાત સમજાવવા માટે સૂત્રકાર " પણયા વીરા મહાવીહિ " આ વચનને ટાંકે છે. વીર બે પ્રકારના હોય છે-

'पणया' प्रणताः=प्राप्ताः कठिनतरतपःसंयमाराधनेन प्राप्तवन्त इत्यर्थः। अय मेव मार्गो मोक्षावाप्तिकरोऽशेषसंयमिसेवितत्वात्, तीर्थङ्करादिमहापुरुषा अपि मार्गमिममनुशीलितवन्त इति विश्वसनीयतया शिष्याणां श्रद्धापूर्वकं प्रवृत्तिर्यथा स्यादितिभावः।

कश्चिन्मन्दधीः शिष्योऽनेकदृष्टान्तैर्बोध्यमानोऽपि अप्कायादिजीवेषु न श्रद्दधातीति तमुद्दिश्य कथयति-हे शिष्य! तव मतिर्यद्यपि अप्कायजीवविषये न

वीर दो प्रकार के होते हैं? द्रव्यवीर और दूसरे भाववीर। संयम के अनुष्ठान करने में जो शक्तिसंपन्न हैं वे भाववीर हैं। ये जीव सम्यग्दर्शन आदि लक्षणरूप इस महाविस्तृतमार्ग को कि जो महापुरुषों द्वारा सेवित हुआ है कठिनतर तप और संयम की आराधना से प्राप्त कर लिया करते हैं। कहनेका सार यही है कि भाववीर यही अपने चित्तमें विचार किया करते हैं कि सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन, सम्यग्चारित्र और सम्यगतप रूप ही मार्ग है क्यों कि इसी से मुक्ति की प्राप्ती होती है- इसीलिये इस मार्गका समस्त संयमीजीवोंने पूर्व में सेवन किया है और तो क्या स्वयं तीर्थंकर प्रभु ने भी इसी मार्ग की परिशीलना की है। इसलिये इस मार्ग में प्रवृत्ति सर्वहित विधायी है इस प्रकार यह मार्ग विश्वास योग्य होने से शिष्यजन भी श्रद्धापूर्वक इसमें प्रवृत्ति करें।

कोई मन्दबुद्धिवाला शिष्य अनेक दृष्टान्तो द्वारा समझाये जाने पर भी यदि अप्काय आदि जीवों की श्रद्धा से रहित होता है तो उसे

---

१ द्रव्य-वीर, २ भाव-वीर. संयमना अनुष्ठानमां जे शक्तिशाळी छे ते भाव वीर छे. आ बधा जीवो सम्यग्-दर्शन वगेरे लक्षण रूप आ विस्तृतमार्गने के जे महापुरुषो वडे सेववामां आव्युं छे-कठण तप अने संयमनी आराधनाथी मेळवी ले छे. कहेवानी मतलब ए छे के भाव-वीरो पोताना मनमां आ प्रमाणे ज विचारो करता रहे छे के खरी रीते सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन, सम्यग् चारित्र रूप ज मार्ग छे केमके मुक्तिनी प्राप्ति एनाथी ज थाय छे. एटला माटे ज पहेलां थई गयेला बधा जीवोए आ मार्गनुं ज अनुसरण कर्युं हतुं. तीर्थंकर प्रभुए जाते पण आ मार्गनी ज परिशीलता करी छे. एथी आ मार्गमां प्रवृत्त थवुं ते बधी रीते हितावह छे. आ प्रमाणे आ मार्ग विश्वसनीय होवा बदल शिष्यो पण श्रद्धा राखीने तेमां प्रवृत्त थाय.

कोईक मंद बुद्धि धरावनार शिष्य घणा दृष्टांतो वडे स्पष्ट करवामां आववा छतां पण जो अप्काय वगेरे जीवोनी श्रद्धाथी रहित होय छे तो

परिस्फुरति, तद्विषये विशेषज्ञानाभावात्, तथापि भगवदाज्ञया श्रद्धा नितरां विधेयेत्याशयेनाह—" लोगं च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभयं " इति।

" लोगं " लोकम् अत्र लोकशब्देन प्रकरणवशादप्काय लोक एव गृह्यते, तमप्कायलोकं, च शब्देन अन्यांश्चाप्कायाश्रितान् जीवान् " आणाए " आज्ञया तीर्थंकर वचनेन " अभिसमेच्चा " अभिसमेत्य आभिमुख्येन सम्यग्ज्ञात्वा, अप्कायादयो जीवाः सन्तीत्येवमवबुध्येत्यर्थः, " अकुतोभयं " नास्ति कुतश्चित्

समझानेके लिये सूत्रकार कहते हैं कि हे शिष्य! तुम्हारी बुद्धि अप्कायिक आदि जीवोंकी श्रद्धा करनेमें उन विषयक विशेषज्ञानके अभावसे यदि समर्थ नहीं है, तो भी भगवान् की आज्ञा से तुम्हें उनके विषय में अपनी श्रद्धा को दूषित नहीं होने देना चाहिये-अर्थात् भगवान की आज्ञा प्रमाण मानकर तुम्हें उनके विषय में अपनी अतिशय श्रद्धा जाग्रत करनी चाहिये। सूत्रकार इसी अभिप्राय से कहते हैं कि " लोगं च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभयं " इति। अप्काय रूप लोक को तथा " च " शब्द से अन्य अप्काय के अश्रित जीवों को तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा से अच्छी तरह जानकर उनकी आज्ञानुसार उनका अस्तित्व मानकर आत्मकल्याण के अभिलाषी मुनियों को संयम का पालन करना चाहिये। सूत्रस्थलोक शब्द यहां प्रकरण के वश से अप्काय का बोधक है। " च " शब्द से तदाश्रित अन्य जीवों का ग्रहण हुआ है। "अकुतोभयं" शब्द का अर्थ संयम है कहीं से भी किसी

તેને સમજાવવા માટે સૂત્રકાર કહે છે કે હે શિષ્ય! તમારી બુદ્ધિ અપ્કાયિક વગેરે જીવોની શ્રદ્ધા કરવામા તેમના વિષે સવિશેષ જ્ઞાનના અભાવના લીધે જો સમર્થ નથી તો પણ ભગવાનની આજ્ઞાથી તે પ્રત્યે તમે પોતાની શ્રદ્ધાને દૂષિત થવા દેશો નહિ એટલે કે ભગવાનની આજ્ઞા પ્રમાણ માનીને મંદ બુદ્ધિવાળા શિષ્યોએ તેમના પ્રત્યે પોતાની વધારેમાં વધારે શ્રદ્ધા જાગ્રત કરવી જોઇએ. સૂત્રકાર આ પ્રયોજનથી જ કહે છે કે " लोगं च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभयं " इति। અપ્કાય રૂપ લોકને તેમજ ' च ' શબ્દથી બીજા અપ્કાયાશ્રિત જીવોને તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાથી સારી પેઠે સમજીને તેમની આજ્ઞા મુજબ તેમનું આસ્તિત્વ માનીને આત્મકલ્યાણને ઇચ્છનારા મુનિઓએ સંયમનું પાલન કરવુ જોઇએ. સૂત્રમાં આવેલો ' લોક ' શબ્દ અહીં પ્રકરણ વશાત્ અપ્કાયનો વાચક છે. ' च ' શબ્દથી તદાશ્રિત બીજા જીવોનું ગ્રહણ થયુ છે " અકુતોભય " શબ્દનો અર્થ સંયમ છે. કોઈ પણ જગ્યાએથી કોઈ પણ રીતે જીવોને જેનાથી ભય હોતો નથી તે અકુતોભય-સંયમ

केनापि प्रकारेण प्राणिनां भयं यस्मात् सोऽकुतोभयः=संयमस्तम्, "अणुपालिज्जा" अनुपालयेत् इति पूर्वोक्तेन सम्बन्धः। सर्वदा जीवाभिरक्षणरूपसंयमानुपालने सावधानतया यत्नः कार्यः इत्यर्थः।

अत्र "जाए सद्धाए णिक्खंते तमेवमणुपालिज्जा विजहित्ता विसोत्तियं पुव्वसंजोगं" इत्यनेन श्रद्धाया आराध्यत्वे जिनाज्ञायाः सद्भावात् श्रद्धाया धर्मत्वं सिद्धम्।

श्रद्धादृढीकरणमपि च धर्मस्तदर्थं "पणया वीरा महावोहिं" इति भगवदुपदेशस्य सद्भावात्।

"लोगं च आणाए अभिसमेच्चा" इत्यनेनाज्ञायाः षट्कायजीवतत्त्वज्ञानहेतुत्वेन वर्णनात् तत्त्वज्ञानस्य धर्मत्वम्।

भी प्रकार से जीवों को जिससे भय नहीं होता है वह अकुतोभय-संयम है भाव इसका यही है कि आत्म कल्याण के इच्छुक मुनियों को जीवों के संरक्षण रूप संयम की आराधना करने में सावधानता पूर्वक प्रयत्नशील रहना चाहिये। यहां "जाए सद्धाए निक्खंते तमेवमणुपालिज्जा, विजहित्ता विसोत्तियं पुव्वसंजोगं" इस सूत्रांश से यह बात समझाई गई है कि श्रद्धा की आराधना में जिनेन्द्र की आज्ञा का सद्भाव है अतः वही धर्म है। अपि च श्रद्धा की दृढता करना यह भी धर्म है। इसी निमित्त "पणया वीरा महावोहिं" यह भगवान का उपदेश है।

"लोगं च अणाए अभिसमेच्चा" इस सूत्रांश से यह प्रकट होता है कि जब जिनेन्द्र की आज्ञा षट्‌ कायिक जीवों के वास्तविक ज्ञान होने में हेतुरूप से वर्णित हुई है तो इस स्थिति में तत्त्वज्ञान धर्म है।

છે. મતલબ એ છે કે આત્મકલ્યાણ ઈચ્છનારા મુનિઓને જીવોની રક્ષા રૂપ સંયમની આરાધના કરવામાં સાવધાન થઈને પ્રયત્ન કરતાં રહેવું જોઈએ. અહીં "जाए सद्धाए निक्खंते तमेवमणुपालिज्जा, विजहित्ता विसोत्तियं पुव्वसंजोगं" આ સૂત્રાંશ વડે આ વાત સ્પષ્ટ કરવામાં આવી છે કે શ્રદ્ધાની આરાધનામાં જીનેન્દ્રની આજ્ઞાનો સદ્ભાવ છે એટલા માટે તેજ ધર્મ છે. અને શ્રદ્ધાને મજબૂત બનાવવી તે પણ ધર્મ છે. આ નિમિત્તે જ "पणया वीरा महावीहिं" આ ભગવાનનો ઉપદેશ છે.

"लोगंच आणाए अभिसमेच्चा" આ સૂત્રાંશ વડે આ વાત સ્પષ્ટ થાય છે કે જ્યારે જીનેન્દ્રની આજ્ઞા ષટ્કાયિક જીવો વિષે વાસ્તવિક જ્ઞાન કરાવવા માટે જ કરવામાં આવી છે ત્યારે આવી પરિસ્થિતિમાં તત્વજ્ઞાન ધર્મ છે.

'अकुतोभयं' इत्यस्य-" अणुपालिज्जा " इत्यनेनान्वयाद् अकुतोभयं-संयमम् अनुपालयेदित्यपि भगवदाज्ञैव, तथा च संयमस्याऽऽराध्यतया विधानात् संयमस्य धर्मत्वं बोध्यम्।

अपरं च-उत्तराध्ययनसूत्रे-"धम्माणं कासवो मुह " इत्युक्तम् " धम्माणं " धर्माणां श्रुतधर्माणां चारित्रधर्माणां च " कासवो " काश्यपः काश्यपगोत्रीयः श्रीमहावीरवर्धमानस्वामी " मुह " मुखं वक्ता वर्तते ।

अहिंसादौ खलु भगवतोऽर्हत आज्ञा वर्तते, पश्यागमेषु । यथा-आचाराङ्गसूत्रे-

" से बेमि-जे य अतीता, जे य पडुप्पन्ना, जे य आगमिस्सा अरहंता भगवंतो, ते सव्वेवि एवमाइक्खंति एवं भासंति एवं पण्णवेंति एवं परूवेंति—

'अकुतोभयं' इस पद का " अणुपालिज्जा" इस क्रियापद के साथ अन्वय करने से यह अर्थ होता है कि अकुतोभयरूप संयम का पालन करना चाहिये, यह भी जब भगवान की आज्ञा ही है तो इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि भगवान की आज्ञा से संयम आराधन करने लायक होने से धर्म रूप है। अपरं च-उत्तराध्ययन सूत्र में " धम्माणं कासवो मुहं " यह कहा है इसका भाव यह है कि श्रुत एवं चारित्र धर्मों के मुख-वक्ता-काश्यप गोत्रीय श्री महावीर वर्धमान स्वामी हैं। देखो उन्हों ने आगमों में अहिंसादिक महाव्रतों के पालने का मुमुक्षुओं= मोक्षाभिलाषियों के लिये इस प्रकार आज्ञा प्रदान की है " से बेमि-जे य अतीता जे य पडुप्पन्ना जे य आगमिस्सा अरहंता भगवंतो ते सव्वे वि एवमाइक्खंति एवं भासंति एवं पण्णवेंति एवं परूवेंति " सव्वे

' अकुतोभय " આ પદનો ' अणुपालिज्जा ' આ ક્રિયાપદની સાથે અન્વય કરવાથી આ પ્રમાણે અર્થ થાય છે કે અકુતોભય રૂપ સંયમનું પાલન કરવું જોઈએ. આ પણ ભગવાનની જ આજ્ઞા છે તો એનાથી આ વાત સ્પષ્ટ થઈ જાય છે કે ભગવાનની આજ્ઞાથી ' સંયમ ' આરધવા યોગ્ય હોવાથી ધર્મરૂપ છે. અને વળી ' ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર ' માં " धम्माणं कासवो मुहं " આ પ્રમાણેનો ઉલ્લેખ છે. એનો અર્થ એમ થાય છે કે શ્રુત અને ચારિત્ર ધર્મોના મુખ્ય-વક્તા-કાશ્યપ ગોત્રીય શ્રી મહાવીર વર્ધમાન સ્વામી છે. તેઓશ્રીએ અહિંસા વગેરે મહાવ્રતોના પાલન કરનારા મોક્ષ ઇચ્છનારા લોકોને માટે આગમોમાં આ જાતની આજ્ઞા કરી છે કેઃ—

"से बेमि-जे य अतीता जे य पडुप्पन्ना जे य आगमिस्सा अरहंता भगवंतो ते सव्वे वि एवमाइक्खंति एवं भासंति एवं पण्णवेंति एवं परूवेंति सव्वे

सव्वे पाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता न हंतव्वा न अज्जावेयव्वा, न किलायव्वा, न उद्दवेयव्वा।

एस धम्मे सुद्धे णितिए सासए, समेच्चा लोयं खेयन्नेहिं पवेइए।

आर्हतधर्मएव श्रद्धेय इति बोधयितु श्रीसुधर्मास्वामीप्राह-"से बेमि" इत्यादि। तीर्थंकरैः स्वस्वशिष्येभ्यो यत् सम्यक्त्वमुक्तं तदहं ब्रवीमि। यद्वा-'से' इत्यस्य 'स' इतिच्छाया। येन मया भगवतः श्री वर्धमानस्वामिनस्तीर्थंकरस्य सकाशे तद्वचनतस्तत्त्वज्ञानं लब्धं, सोऽहं ब्रवीमि।—भगदुक्तार्थमेव कथयामि, तस्मान्मम वाक्यं श्रद्धेयमितिभावः।

पाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता न हंतव्वा, न अज्जावेयेव्वा, न परिघेत्तव्वा, न परितावेयव्वा न किलामेयव्वा, न उद्दवेयव्वा। एस धम्मे सुद्धे णितिए समेच्चा लोयं खेयन्नेहिं पवेइए" (आ. सू० अ-४ उ- १ सू० १) श्री सुधर्मा स्वामी इस सूत्र द्वारा जम्बूस्वामी को यह समझाते हैं कि अर्हतप्रभु द्वारा प्रतिपादित धर्म ही श्रद्धा करने योग्य हैं-वे इसमें कहते हैं कि तिर्थंकर देवों ने अपने २ शिष्यों के लिये जिस सम्यक्त्व का कथन किया है वही तत्व उन तीर्थंकर प्रभुके वचनों द्वारा श्रवण कर मैं तुम्हें समझाता हूँ अर्थात् मैं अपनी निजी कल्पना से इस विषय में कुछ भी न कह कर जो कुछ तुम्हें समझाउँगा वह तीर्थंकर प्रभु की मान्यतानुमार ही समझाऊंगा अतःइस में संदेह के लिये थोड़ी सी भी जगह नहीं है-इसलिये इस मेरे कथन का मूलस्रोत जब श्री तीर्थंकर प्रभु का उपदेशश्रवण है तब यह श्रद्धेय-श्रद्धा करने योग्य आवश्य है भगवान् का यह आदेश है-कि जितने भी

पाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता न हंतव्या, न अज्जावेयव्वा, न परिघेत्तव्वा, न परितावेयव्वा, न किलामेयव्वा, न उद्दवेयव्वा। एस धम्मे सुद्धे णितिए समेच्चा लोयं खेयनेहिं पवेइए" (आ. सू अ. ४ उ १ सू. १) श्री सुधर्मा स्वामी आ सूत्र वडे श्री जम्बू स्वामीने आ प्रमाणे समजावे छे के अर्हंत प्रभु वडे प्रतिपादित धर्म ज श्रद्धेय छे, तेओ आ सूत्रमां कहे छे के तीर्थंकर देवोए पोतपोताना शिष्यो माटे जे सम्यकत्वनुं निरूपण कर्युं छे ते ज तत्त्व तीर्थंकर प्रभुना मुखथी श्रवण कर्या बाद हु तमने समजावी रह्यो छुं. एटले के हुं पोतानी मेळे आमां कंई पण उमेर्या वगर तीर्थंकर प्रभुनी मान्यता मुजब ज तमने समजावीश एथी अमां शंकाने माटे सहेज पण स्थान नथी. आ प्रमाणे ज्यारे मारा कथननो मूळ स्रोत श्री तीर्थंकर प्रभुनु उपदेश श्रवण छे त्यारे ते श्रद्धेय ज छे. भगवाननी आ प्रमाणे आज्ञा छे के

भगवदुक्तार्थमाह-" जे य अतीता " इत्यादि । ये च अतीताः=अतीतकालिकाः, ये च 'पडुप्पन्ना' प्रत्युत्पन्नाः=वर्तमानकालिकाः पञ्चभरतेषु पञ्चैरवतेषु पञ्चमहाविदेहेषु वर्तमानाः, ये च " आगमिस्सा " आगामिनः-भविष्यत्कालभाविनः, ते सर्वेऽपि अर्हन्तो भगवन्तः एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण " आइक्खंति " आख्यान्ति=परप्रश्नावसरे कथयन्ति । अत्र वर्तमानग्रहणमुपलक्षणं तेनातीतानाग-

---

भूतकाल में तीर्थंकर हुए हैं, वर्तमान काल में भी पांच भरत, पांच ऐरवत तथा पांच महाविदेह सम्बन्धी जितने भी तीर्थंकर हैं और भविष्यत काल में जो तीर्थंकर होंगे उन सब ने जब उनसे किसी ने प्रश्न किया, तो एक यही उत्तर दिया है देव एवं मनुष्यों की सभा में अपनी सर्वभाषा में परिणमित हुई अर्धमागधीरूप दिव्यध्वनि द्वारा उन्हों ने समस्त जीवों को यही समझाया है, और हेतु, दृष्टान्तों द्वारा इसी बात की पुष्टि की है। वक्तव्य विषय के भेद और प्रभेदों को प्रकट करते हुए उन्हों ने अच्छी तरह से यही प्ररूपणा की है कि समस्त प्राणी पृथिवी आदिक एकेन्द्रिय स्थावर जीवों से लेकर द्वीन्द्रियादिक पंचेन्द्रिय जीव पर्यन्त त्रस जीव, चतुर्दश भूतग्रामरूप समस्त भूत, नरकगति, तिर्यञ्चगति, मनुष्यगति एवं देवगति के समस्त जीव, एवं अपने द्वारा किये गये कर्मों के उदय के फल स्वरूप सुख दुःख आदि का अनुभव करने वाले समस्त सत्व दण्ड आदि द्वारा कभी भी ताडन करने योग्य, घात करने योग्य, ये मेरे आधीन हैं ऐसा ख्याल

ભૂતકાળમાં જેટલા તીર્થંકર થયા છે, વર્તમાનકાળમાં પણ પાંચ ભરત, પાંચ ઐરવત તથા પાંચ મહાવિદેહ સંબંધી જેટલા તીર્થંકરો છે અને ભવિષ્યકાળમાં જેટલા તીર્થંકરો થશે તે બધામાંથી જ્યારે કોઇએ પ્રશ્ન કર્યો ત્યારે એક જ ઉત્તર આપ્યો છે, દેવ અને માણસોની સભામાં પોતાની સર્વ ભાષામાં પરિણમિત થયેલી અર્ધ માગધી રૂપ દિવ્યધ્વનિમાં તેઓએ બધા જીવોને એજ વાત સમજાવી છે અને હેતુ તેમજ દૃષ્ટાંતો વડે આ વાતનું જ સમર્થન કર્યું છે. વક્તવ્ય વિષયનો ભેદ અને પ્રભેદોને સ્પષ્ટ કરતાં તેઓએ સરસ રીતે એજ પ્રરૂપણા કરી છે કે સમસ્ત પ્રાણીઓ પૃથિવ વગેરે એકેન્દ્રિય સ્થાવર જીવોથી માંડીને દ્વીન્દ્રિય વગેરે પંચેન્દ્રિય જીવ સુધીના ત્રસ જીવ, ચતુર્દશ ભૂતગ્રામ રૂપ સમસ્ત ભૂત, નરક ગતિ, તિર્યંચ ગતિ, મનુષ્ય ગતિ અને દેવ ગતિના બધા જીવો, અને પોતાના વડે કરવામાં આવેલાં કર્મોના ઉદયના ફળ સ્વરૂપ સુખ દુઃખ વગેરેને અનુભવતા બધા સત્વો દંડ વગેરેથી કોઈ પણ વખત તાડન કરવા યોગ્ય કે ઘાત કરવા યોગ્ય, કે એઓ મારા આધીન છે

तयोरपि ग्रहणम्, तथा च–'एवमाचख्युः, एवमाख्यास्यन्ति' इत्यपि योजनीयम्। एवं सर्वासु क्रियासु योजनीयम्। तथा–एवं "भासंति" भाषन्ते=सुरनरपरिषदि सर्वजीवानां स्वस्वभाषापरिणामिन्याऽर्धमागध्या भाषया ब्रुवन्ति। तथा–एवं "पण्णवेंति" प्रज्ञापयन्ति=हेतुदृष्टान्तादिना प्रकर्षेण बोधयन्ति। तथा–एवं 'परूवेंति' प्ररूपयन्ति=तत्तद्भेदं प्रदर्श्य प्रकर्षेण निर्णयन्ति।

ननु सर्वेऽप्यर्हन्तो भगवन्तः–किमाख्यान्तीत्यादिजिज्ञासायामाह–'सव्वे पाणा' इत्यादि। सर्वे=निरवशेषाः, प्राणाः=प्राणिनः, पृथिव्यादयः स्थावरा

कर परिग्रह रूप से संग्रह करने योग्य, अन्न, पान आदि के निरोध एवं गर्मीसर्दी आदिमें रखने से कभी भी पीडा पहुँचाने योग्य और विषप्रदान एवं शस्त्र के आघात से विनाश करने योग्य नहीं हैं।

सूत्र में "आइक्खंति–आख्यान्ति" यह वर्तमानकालिक–क्रियापद अतीत और अनागतकालिक क्रियापद का उपलक्षक है। अतः इस से यह अर्थ प्रतीत होता है कि उन तीर्थंकर प्रभुओं ने वर्तमान में जैसा कहा है वैसा ही उन्हों ने या अन्य भूत कालिक तीर्थंकरों ने भूत काल में भी कहा है एवं आगामी कालमें भी वे वैसा ही कहेंगे। इसी प्रकार "भासंति, पण्णवेंति" इत्यादि क्रियापदों के साथ भी अतीत और अनागत कालिक क्रियादोंका संबंध कर लेना चाहिये। इस कथन से सूत्रकार ने उनके कथन में परस्पर में विरुद्ध अर्थकी प्ररूपणा का अभाव प्रदर्शित किया है जो कुछ उन्हों ने कहा है। वह भूत, भविष्यत और वर्तमान काल में से किसी भी काल में किसी भी

એવું સમજીને પરિગ્રહ રૂપથી સંગ્રહ કરવા યોગ્ય, કે અન્ન, પાન વગેરેનો નિરોધ અને ગર્મી, ઠંડી વગેરેમાં રાખીને કોઈ પણ વખતે પીડિત કરવા યોગ્ય અને વિષ આપીને તેમજ શસ્ત્રના આઘાતથી વિનાશ કરવા યોગ્ય નથી.

સૂત્રમાં "आइक्खति आख्यान्ति" આ વર્તમાનકાલિક ક્રિયાપદ અતીત તેમજ અનાગત કાલિક ક્રિયાપદનું ઉપલક્ષક છે. એથી એના વડે આ જાતના અર્થની પ્રતીતિ થાય છે કે તે તીર્થંકર પ્રભુઓએ વર્તમાનકાળમાં જે પ્રમાણે કહ્યું છે, તે પ્રમાણે જ તેઓએ અથવા તો બીજા ભૂતકાલિક તીર્થંકરોએ ભૂતકાળમાં પણ કહ્યું છે અને ભવિષ્યકાળમાં પણ તેઓ તે પ્રમાણે જ કહેશે. આ રીતે "भासंति, पण्णवेंति" વગેરે ક્રિયાપદોની સાથે પણ અતીત અને અનાગત કાલિક ક્રિયાપદોનો સંબંધ જોડવો જોઈએ. આ કથનથી સૂત્રકારે તેમના કથનમા પરસ્પરમાં વિરુદ્ધ અર્થની પ્રરૂપણાનો અભાવ બતાવ્યો છે. તેમણે જે

द्वीन्द्रियादिपञ्चेन्द्रियपर्यन्तास्त्रसाश्चेत्यर्थः, इन्द्रियादिप्राणानां यथासम्भवंधारणात् तेषु प्राणित्वमस्तीति भावः। तथा-सर्वे 'भूया' भूताः=भवन्ति भविष्यन्त्यभूवन्निति भूताः-चतुर्दशभूतग्रामरूपाः, तथा-सर्वे जीवाः=जीवन्ति जीविष्यन्त्यजीविषु रिति जीवाः-नारकतिर्यङ्मनुष्यदेवाः, तथा-सर्वे "सत्ता" सत्त्वाः=

प्रमाण द्वारा बाधित नहीं हो सकने से पूर्वापर विरोध रहित ही कहा है। "प्राण" शब्द से सूत्रकार ने त्रस और स्थावर प्रणियों का ग्रहण किया है। क्यो कि १० द्रव्य प्राणों में से इनको अपने २ योग्य प्राणो का सद्भाव पाया जाता है। अतः इनके सद्भाव से ही ये प्राणी कहे जाते हैं। "भवन्ति, भविष्यन्ति, अभूवन्" यह भूत शब्द की व्युत्पत्ति है। इसका भाव यही है कि जो वर्तमान में सत्ता विशिष्ट हैं, आगामी काल में सत्ता विशिष्ट रहेगे एवं भूतकाल में भी जो सत्ता विशिष्ट थे। इस व्युत्पत्ति से सूत्रकार ने यह प्रदर्शित किया हैं कि प्रत्येक जीवादिक पदार्थ किसी भी काल में उत्पाद और व्यय धर्म विशिष्ट होते हुए भी अपनी २ सत्ता से रहित नहीं होते हैं। क्यों कि द्रव्य का "उत्पादव्ययध्रौव्यं सत्" उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य ये स्वभाव है। इससे यह बात निश्चित कोटि में आता है कि किसी भी नवीन पदार्थ का उत्पाद नहीं होता है और न सत् पदार्थ का विनाश ही होता है। "सतो विनाशः असतश्चोत्पादो न" "जीवन्ति, जीविष्यन्ति, अजीविषु" यह जीव शब्द की व्युत्पत्ति है।

કંઈ કહ્યું છે તે ભૂત ભવિષ્યત અને વર્તમાનકાળમાંથી કોઈ પણ કાળમાં ગમે તે પ્રમાણ દ્વારા બાધિત નહિ હોવા બદલ પૂર્વાપર વિરોધ રહિત જ કહ્યું છે, "प्राण" શબ્દ વડે સૂત્રકારે ત્રસ અને સ્થાવર પ્રાણીઓનું ગ્રહણ કર્યું છે. કેમકે ૧૦ દ્રવ્ય પ્રાણોમાંથી એમનામાં પોતપોતાને યોગ્ય પ્રાણોનો સદ્ભાવ મળે છે એથી એમના સદ્ભાવથી જ તેઓ પ્રાણી કહેવાય છે. "भवन्ति, भविष्यन्ति, अभूवन्" આ ભૂત શબ્દની વ્યુત્પત્તિ છે એનો અર્થ આ પ્રમાણે છે કે વર્તમાનકાળમાં જેઓ સત્તા વિશિષ્ટ છે, તેઓ ભવિષ્યકાળમાં સત્તા વિશિષ્ટ રહેશે અને ભૂતકાળમા પણ જેઓ સત્તા વિશિષ્ટ હતા. આ વ્યુત્પત્તિ વડે સૂત્રકારે એ બતાવ્યું છે કે દરેકે દરેક જીવ વગેરે પદાર્થ કોઈ પણ કાળમાં ઉત્પાદ અને વ્યયધર્મ વિશિષ્ટ હોવા છતાંએ પોતપોતાની સત્તાથી રહિત હોતા નથી. કેમકે દ્રવ્યનો "उत्पादव्ययध्रौव्यं सत्" ઉત્પાદ, વ્યય અને ધ્રૌવ્ય સ્વભાવ છે એથી એ વાત ચોક્કસ રીતે સ્પષ્ટ થાય છે કે કોઈ પણ નવીન પદાર્થનો ઉત્પાદ થતો નથી અને સત્ પદાર્થનો વિનાશ પણ થતો નથી. "सतो विनाशः असतश्चोत्पादो न" "जीवन्ति, जीविष्यन्ति, अजीविषु" આ

स्वकृतकर्मजन्यसुखदुःखानुभविनः । अत्र सर्वप्राणिषु पुनः पुनर्दयाकरणाय पर्यायशब्दप्रयोगः ।

'न हंतव्वा' न हन्तव्याः=दण्डादिभिर्न ताडयितव्याः इत्यर्थः, "न अज्जावेयव्वा" नाज्ञापयितव्याः=न घातयितव्या इत्यर्थः, "न परिघेत्तव्वा" न परिग्रहीतव्याः=इमे ममायत्ता इति कृत्वा परिग्रहरूपेण न स्वीकर्तव्याः, "न परिता-

---

जो जीते हैं, जीवेंगे और जिये है, इस कथन से सूत्रकार ने जीव में त्रिकाल में भी जीवनत्व धर्म का अभाव नहीं होता है यह प्रदर्शित किया है चाहे जीव एक इन्द्रिय अवस्थावाला भी हो तो भी वह जीवन अवस्था से रहित नहीं होता है इससे वृक्षादिकों में अचेतनता मानने वाले बौद्ध आदिकों का मन्तव्य खंडित होता है ।

सूत्र में प्राणी, भूत, और सत्त्व इन एकार्थक पर्यायवाची शब्दों का जो सूत्रकार ने प्रयोग किया है उनका मुख्य प्रयोजन "समस्त जीवों में बारंबार दया करनी चाहिये" है ।

यह वीतरागप्रभु द्वारा प्रतिपादित प्राणातिपातविरमणरूप धर्मशुद्ध पापानुबन्ध रहित हैं । इस कथन से सूत्रकार ने इस बात की पुष्टि की है जो अवीतराग-शाक्य आदि द्वारा धर्मरूप से प्रतिपादित हुआ है तथा जिसे उन्होंने धर्मरूप से स्वीकार किया है वह वास्तविक धर्म नहीं है । कारण कि इनमें हिंसादिक दोषों का सद्भाव पाया जाता है इनके

જીવ શબ્દની વ્યુત્પત્તિ છે. જેઓ જીવે છે, જીવશે અને જીવ્યા છે આ કથન વડે સૂત્રકારે જીવમાં ત્રિકાળમાં પણ જીવનત્વ ધર્મનો અભાવ થતો નથી આ વાત સ્પષ્ટ કરી છે ભલે તે જીવ એક ઇન્દ્રિય અવસ્થાવાળો હોય છતાંએ તે જીવન અવસ્થાથી રહિત થતો નથી. આ કથનથી વૃક્ષ વગેરેમાં અચેનતા માનનારા બૌદ્ધ વગેરેના મતનું ખંડન થઈ જાય છે.

સૂત્રકારે સૂત્રમાં જે પ્રાણી, ભૂત અને સત્વ આ બધા એકાર્થક પર્યાય-વાચી શબ્દોનો જે પ્રયોગ કર્યો છે તેનું ખાસ કારણ "બધા જીવોમાં વારંવાર સદય રહેવું જોઈએ" તે જ છે.

વીતરાગ પ્રભુ વડે પ્રતિપાદિત પ્રાણાતિપાત વિરમણ રૂપ આ ધર્મ શુદ્ધ પાપાનુબન્ધ રહિત છે આ કથનથી સૂત્રકારે એ વાતને પુષ્ટ કરી છે કે જે અવીતરાગ-શાક્ય વગેરે દ્વારા ધર્મ-રૂપથી પ્રતિપાદિત થયો છે તેમજ તેમણે જેને ધર્મ-રૂપથી સ્વીકાર્યો છે તે ખરેખર ધર્મ નથી. કેમકે તેમાં હિંસા વગેરે દોષોનો સદ્ભાવ છે. અસર્વજ્ઞ તથા રાગયુક્ત લોકો દ્વારા પ્રતિપાદિત હોવાને

वेयव्वा" न परितापयितव्याः=अन्नपानाद्यवरोधनेन ग्रीष्मातपादौ स्थापनेन च न पीडनीयाः, " न किलामेयव्वा " न क्लामयितव्याः=न खेदयितव्याः=न विषशस्त्रादिना मारयितव्याः।

एषः=अनन्तरोक्तः सर्वार्हद्भगवत्प्ररूपितः, धर्मः=सर्वप्राणिप्राणातिपातविरमणरूपः, शुद्धः=निर्मलः-पापानुबन्धरहित-इत्यर्थः। आर्हतधर्मादन्यस्तु धर्मत्वेन यः शाक्यादेरभिमतः स खलु असर्वज्ञसरागोपदिष्टत्वेन हिंसादिदोषसद्भावेन च न शुद्ध इति भावः। अत एव-एष नित्यः=अविनाशी, सर्वदा पञ्चसु महाविदेहेषु

सद्भाव का कारण उसमें असर्वज्ञ और सरागियों द्वारा प्रणीतता ही है पूर्ण ज्ञानीयों द्वारा प्रदर्शित मार्ग ही शुद्ध होता हैं इसका कारण उनमें राग द्वेष का सर्वथा अभाव ही होता है। असर्वज्ञ या रागद्वेषकलुषितचित्तवालों द्वारा प्रदर्शित मार्ग इसलिये शुद्ध नहीं होता है कि वे एक तो उस विषय के पूर्ण ज्ञाता नहीं होते, दूसरी अपनी रागद्वेषमयी प्रवृत्ति को पुष्ट करने के लिये उसकी अन्यथा भी प्ररूपणा कर देते हैं। ऐसा धर्म शाश्वतिक नित्य नहीं होता है-क्यों कि ऐसा धर्मका विशिष्ट ज्ञानियों-केवलज्ञानियों द्वारा जीवों का कल्याण की कामना से निराकरण कर दिया जाता है। वीतरागप्रतिपादित धर्म ही अविनाशी रहता है, और उसीसे जीवों का सदा कल्याण होता रहता है। इसमें अन्यथाप्ररूपणाके लिये थोड़ी सी भी जगह नहीं मिलती है। पंच महाविदेह क्षेत्रोंमें अब भी इस शुद्ध धर्मका सद्भाव है। इसी अपेक्षा इसे सूत्रकारने नित्य-अविनाशी कहा है। शाश्वतगतिरूप मुक्ति का कारण होने से

લીધે જ તેમાં હિંસા વગેરે સદોષતા છે. પૂર્ણજ્ઞાનીઓ વડે પ્રદર્શિત માર્ગ જ શુદ્ધ હોય છે. કેમકે તેઓમાં સંપૂર્ણપણે રાગદ્વેષનો અભાવ જ હોય છે. અસર્વજ્ઞ કે રાગદ્વેષ કલુષિત ચિત્તવાળા લોકો વડે પ્રતિપાદિત માર્ગ શુદ્ધ એટલા માટે હોતો નથી કે તેઓ પ્રથમ તો તે વિષયને સંપૂર્ણપણે જાણતા નથી અને બીજું તેઓ પોતાની રાગદ્વેષમયી પ્રવૃત્તિને પુષ્ટ કરવા માટે તેની અન્યથા પ્રરૂપણા પણ કરી બેસે છે. એવો ધર્મ શાશ્વતિક-નિત્ય હોતો નથી કેમકે એવા ધર્મનું વિશિષ્ટ જ્ઞાનીઓ-કેવળજ્ઞાનીઓ-વડે જીવોની કલ્યાણ કામનાથી પ્રેરાઇને નિરાકરણ કરવામા આવે છે. વીતરાગ પ્રતિપાદિત ધર્મ જ અવિનાશી રહે છે, અને તેથી સર્વદા જીવોનું કલ્યાણ થતું રહે છે. આમાં અન્યથા પ્રરૂપણા માટે અવકાશ જ નથી. અત્યારે પણ પંચવિદેહ ક્ષેત્રમાં આ શુદ્ધ ધર્મનો સદ્ભાવ છે. આ ધર્મને આ દૃષ્ટિથી જ સૂત્રકારે નિત્ય-અવિનાશી કહ્યો છે. શાશ્વત ગતિ રૂપ મુક્તિનો કારણ હોવાથી આ ધર્મ શાશ્વત માન-

सद्भावात् । तथा-शाश्वतः=शाश्वतगतिकारणत्वात् । यद्वा-यतो नित्यस्तस्माच्छाश्वत इति । अयमेव धर्मः श्रद्धेयो ग्राह्यश्चेत्यत्र हेतुं प्रदर्शयन् विशेषणान्तरमाह- समेत्य इत्यादि । लोकं षट् जीवनिकायं दुःखदावानलान्तःपतितं, समेत्य=केवलज्ञानेन प्रत्यक्षतया विज्ञान, खेदज्ञैः=सर्वप्राणिदुःखाभिज्ञैस्तीर्थकरैः प्रवेदितः= आदिष्टः । 'प्रवेदितः' इत्यनेन धर्मोऽयं मया न स्वमनीषया कल्पितः' इति च सुधर्मस्वामिना शिष्यमुद्दिश्य सूचितम् । अनुयोगद्वारे—

यह शाश्वत माना गया है अथवा हेतु हेतुमद्भाव से भी यों कह सकते हैं कि जिस कारण से यह नित्य है इसी कारण से यह शाश्वत माना गया है । अतः प्रत्येक मुमुक्षु जीवों द्वारा यह धर्म श्रद्धेय श्रद्धा करने योग्य एवं ग्राह्य-आराधन करने योग्य है इस विषय में पूर्वोक्त-रूप से सूत्रकार हेतु का कथन कर उस धर्म की प्ररूपणा करने के कारण का प्रदर्शन करते हुए " समेत्य लोकं खेदज्ञैः प्रवेदितः " कहते हैं कि समस्त प्राणीयों के दुःखों के वेत्ता केवलज्ञानी प्रभु ने इस षट्जीव निकायरूप लोक को प्रत्यक्षरूप से साक्षात् दुःखरूपी दावानल से जलता हुआ देखकर इस शुद्ध, शाश्वतिक धर्म का कथन किया है ।

भावार्थ-अनंत सांसारिक दुःखो से संतप्त समस्त संसारी जीवों को साक्षात् हस्तामलकवत् देखकर दुःखों से उनके उद्धार के निमित्त वीतराग केवलज्ञानियोंने ही इस धर्म की प्ररूपणा की है । मैं ने अपनी ओर से इसका कथन नहीं किया है । इस प्रकार श्री सुधर्मास्वामी अपने शिष्य जम्बूस्वामी को समझाते हैं ।

વામાં આવ્યો છે. અથવા હેતુ-હેતુ મદ્ભાવથી પણ એમ કહી શકાય છે કે જે કારણને લઈને આ નિત્ય છે તે કારણથી જ આ શાશ્વત માનવામાં આવ્યો છે. એથી દરેક મોક્ષને ઇચ્છનારા જીવો વડે આ ધર્મ શ્રદ્ધેય-શ્રદ્ધા કરવા યોગ્ય અને ગ્રાહ્ય આરાધવા યોગ્ય છે. આ વિષે સૂત્રકાર પૂર્વોક્ત રૂપે હેતુનું કથન કરીને તે ધર્મની પ્રરૂપણા કરતાં " समेत्य लोकं खेदज्ञैः प्रवेदितः " કહે છે કે બધા પ્રાણીઓનાં દુઃખોને જાણનારા કેવળજ્ઞાની પ્રભુએ આ ષટ્જીવ-નિકાય રૂપ લોકને પ્રત્યક્ષ રૂપમાં સાક્ષાત્ દુઃખ રૂપી દાવાનળમાં સળગતા જોઈને શુદ્ધ, શાશ્વતિક ધર્મનું કથન કર્યું છે—

ભાવાર્થ—સંસારના બધા જીવોને અનંત સાંસારિક દુઃખોથી હસ્તા-મલકવત્ સંતપ્ત જોઈને તેમના ઉદ્ધાર માટે વીતરાગ કેવળજ્ઞાનીઓ એ જ આ ધર્મનું નિરૂપણ કર્યું છે. મેં પોતાની મેળે આ કથન કર્યું નથી. શ્રી સુધર્મા સ્વામી પોતાના શિષ્ય જંબૂ સ્વામીને આ પ્રમાણે સમજાવે છે.

" जह मम ण पियं दुक्खं जाणियं एमेव सव्वजीवाणं ।

न हणइ न हणावेइ य, सममणइ तेण सो समणो । इति "

छाया-यथा मम न प्रियं दुःखं, ज्ञात्वा एवमेव सर्वजीवानाम् ।

न हन्ति न घातयन्ति च समम् अणति तेन स समणः ॥

च शब्दात् घ्नतश्चान्यान्न समणुजानीत इत्यनेन प्रकारेण ' सममणति ' त्ति सर्वजीवेषु तुल्यं वर्त्तते यतस्तेनासौ श्रमण इति गाथार्थः ।

'एस धम्मे सुद्धे' इत्यनेन आर्हत धर्मस्य हिंसादि दोषाभावाद्भगवता शुद्धत्वमुक्तम् । शुद्धधर्मबोधकत्वाच्च द्वादशाङ्ग्याः प्रवचनत्वमागमत्वं सर्वोत्कृष्टत्वं च सिध्यति । प्रवचनस्य स्वरूपं माहात्म्यं चाऽऽगमेषु भगवताऽभिहितम् ।

अनुयोगद्वार में-

जह मम ण पियं दुःखं जाणियं एमेव सव्वजीवाणं ।

न हणइ न हणावेइ य सममणइ तेण सो समणो ॥ इति ।

जिस प्रकार दुःख मुझे इष्ट नहीं है, उसी तरह वह दुःख किसी भी संसारी जीवों को इष्ट नहीं है ऐसा समझ कर जो जीवों की विराधना स्वयं नहीं करता और न दूसरों से करवाता है तथा समस्त जीवों में तुल्यता की भावना रखता है वही श्रमण है। श्रमण होने में ये पूर्वोक्त बाते हेतु-कारण हैं।

" एस धम्मे सुद्धे " इस सूत्रांश से श्री सुधर्मास्वामी ने तीर्थंकर कथित धर्म में हिंसादिक दोषों के अभाव से शुद्धता का कथन किया है। इस शुद्ध धर्म का बोधक-बोध करानेवाली होने से ही द्वादशांगी में प्रवचनता, आगमता एवं सर्वोत्कृष्टता सिद्ध होती है। भगवान ने

અનુયોગદ્વારમાં—जह मम ण पियं दुःखं जाणियं एमेव सव्वजीवाणं ।

न हणइ न हणावेइ य सममणइ तेण सो समणे ॥ इति ।

જેમ મને દુઃખ ગમતું નથી તેમજ તે દુઃખ સંસારના કોઇ પણ જીવને ગમે જ નહિ. આમ સમજીને જેઓ જીવોની વિરાધના પોતે કરતા નથી અને બીજાઓથી કરાવતા નથી તેમજ બધા જીવોમાં તુલ્યતા (સમાનતા) ની દૃષ્ટિ રાખે છે તેઓ જ 'શ્રમણ' છે. આ ઉપરની વાતો શ્રમણ થવા માટે હેતુ કારણ છે.

" एस धम्मे सुद्धे " આ સૂત્રાંશથી શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ તીર્થંકર કથિત ધર્મમાં હિંસા વગેરે દોષોના અભાવથી શુદ્ધતાનું કથન કર્યું છે. આ શુદ્ધ ધર્મના બોધક—બોધ કરાવનારી હોવાથી જ દ્વાદશાગીમા પ્રવચનતા આગમતા અને સર્વો-ત્કૃષ્ટતા સિદ્ધ થાય છે. ભગવાને આગમોમાં પ્રવચનનું સ્વરૂપ અને તેનો પ્રભાવ

यथा भगवतीसूत्रे—

पवयणं भंते ! पवयणं, पावयणी पवयणं ? । "गोयमा ! अरहा ताव णियमा पावयणी । पवयणं पुण दुवालसंगे गणिपिडगे । तं जहा—आयारो० जाव दिट्ठिवाओ । इति, (श० २० उ०८)

भंते ! हे भदन्त ! "पवयणं" प्रवचनं—किं प्रवचनं, उत—"पावयणी" प्रवचनी प्रवचनम् ? । "गोयमा !" हे गौतम ! 'अरहा' अर्हन् 'ताव' तावत् नियमात्प्रवचनी । प्रवचनं पुन 'दुवालसगे' द्वादशाङ्गी "गणिपिडगे" गणिपिटकम् । तद् यथा—"आयारो जाव दिट्ठिवाओ" आचाराङ्गादि यावत् दृष्टिवादः । इति,

पुनस्तत्रैव—"से नूणं भंते ! तमेव सच्चं नीसंकं जं जिणेहिं पवेइयं ? ।

प्रवचन का स्वरूप और उसका प्रभाव-माहत्म्य आगमों में कहा है । जैसे भगवती सूत्र में "पवयणं भंते ! पवयणं, पावयणी पवयणं ? गोयमा ! अरहा ताव णियमा पावयणी । पवयणं पुण दुवालसंगे गणिपिडगे । तं जहा—आयारे जाव दिट्ठिवाओ । इति (श० २० उ ०८)

भावार्थ—गौतमस्वामी पूछते हैं हे भगवन् ! प्रवचन प्रवचन है—या प्रवचनी प्रवचन है ? इस अंश का समाधान करते हुए भगवान् कहते हैं—हे गौतम ! गणिपिटक जो आचारांग से लेकर दृष्टिवाद तक द्वादशांग आगम है वह समस्त प्रवचन है । इस प्रवचन को अर्थतः प्रकट करनेवाले श्री तीर्थंकर प्रभु प्रवचनी हैं । उसी भगवती सूत्र में और भी यह कहा है कि—"से नूणं भंते ! तमेव सच्चं निसंकं जं जिणेहिं पवेइयं ! हंता गोयमा ! तमेव सच्चं से नूणं भंते ! एवं मणे

માહાત્મ્ય કહ્યો છે જેમકે ભગવતી સૂત્રમાં "पवयणं भंते ! पवयणं पावयणी पवयणं ? गोयमा ! अरहा ताव णियमा पावयणी । पवयणं पुण दुवालसंगे गणिपिडगे ! तं जहा—आयारो जाव दिट्ठिवाओ । इति (श. २० उ ८)

ભાવાર્થ—ગૌતમ સ્વામી પૂછે છે કે હે ભગવન્ ! પ્રવચન પ્રવચન છે કે પ્રવચની પ્રવચન છે ? આ શંકાનું સમાધાન કરતાં ભગવાન કહે છે—કે હે ગૌતમ ! ગણિપિટક-કે જે આચારાંગથી માંડીને દૃષ્ટિવાદ સુધી દ્વાદશાંગ આગળ છે તે સમસ્ત પ્રવચન છે અર્થતઃ આ પ્રવચનને પ્રકટ કરનારા શ્રી તીર્થંકર પ્રભુ પ્રવચની છે તે ભગવતી સૂત્રમાં જ આ પ્રમાણે કહેવામાં આવ્યુ છે કે—(से नूणं भंते तमेव सच्चं नीसंकं जं जिणेहिं पवेइयं ! हंता गोयमा ! तमेवं सच्चं से नूणं भंते ! एवं मणे धारेमाणे एवं पकरेमाणे आणाए आराहए

हंता गोयमा ! तमेव सच्चं । से नूणं भंते ! एवं मणे धारेमाणे एवं पकरेमाणे आणाए आराहए भवइ ?। हंता गोयमा ! तं चेव " त्ति ।

छाया—अथ नूनं भदन्त ! तदेव सत्यं निश्शङ्कं यज्जिनैः प्रवेदितम् ? । हन्त गौतम ! तदेव सत्यम् । अथ नूनं भदन्त ? एवं मनसि धारयन् एवं प्रकुर्वन् आज्ञाया आराधको भवति ? हन्त गौतम ! तदेव " इति ।

आवश्य सूत्रेऽपि—"इणमेव निग्गंथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं केवलियं पडिपुन्नं नेयाउयं संसुद्धं सल्लगत्तणं सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं निज्जाणमग्गं निव्वाणमग्गं अवितहमसंदिद्धं । इत्थं ठिया जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वाएंति सव्वदुःखाणमंतं करंति ।

धारेमाणे एवं पकरेमाणे आणाए आराहए भवइ ! हंता गोयमा ! तं चेव इति " इस सूत्र का भावार्थ यह है कि प्रत्येक मुमुक्षु (मोक्षाभिलाषी) जन को अपने हृदय में इस बात का पूर्णदृढ विश्वास रखना चाहिये कि जो जिनेन्द्र देव ने प्रतिपादित किया है वही वास्तविक तत्त्व है-उसमें किसी भी प्रकार की शंका के लिये स्थान नहीं है इस प्रकार के दृढ विश्वास से उसे अपने मन में धारण करनेवाला और उसके अनुसार ही अपनी प्रवृत्ति करनेवाला मोक्षाभिलाषीजन तीर्थंकरप्रभुकी आज्ञाका आराधक होता है आवश्यक सूत्रमें भी यही बात कही गई है

" इणमेव निग्गंथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं केवलियं पडिपुन्नं नेयाउयं संसुद्धं सल्लगत्तणं सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं णिज्जाणमग्गं निव्वाणमग्गं अवितहमसंदिद्धं । इत्थं ठिया जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिवाएंति सव्वदुःखाणमंतं करंति ।

भवइ ! हंता गोयमा ! तं चेव इति) આ સૂત્રનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે દરેક મોક્ષ ઇચ્છનારી વ્યક્તિને પોતાના હૃદયમાં સંપૂર્ણપણે આ વાતની ખાતરી થવી જોઈએ કે જે જીનેન્દ્ર દેવે પ્રતિપાદિત કર્યું છે તે જ વાસ્તવિક તત્વ છે તેમાં લગીરે શંકા નથી. આ જાતના દૃઢ વિશ્વાસથી તેને પોતાના મનમાં કરનાર અને તે મુજબ જ આચરણ કરનારી મોક્ષને ઇચ્છનારી વ્યક્તિ પ્રભુની આજ્ઞાની આરાધક હોય છે આવશ્યક સૂત્રમાં પણ એ જ વાત કહેવામાં આવી છે-(इणमेव निग्गंथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं केवलियं पडिपुन्नं नेयाउयं संसुद्धं सल्लगत्तणं सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं णिज्जाणमग्गं निव्वाणमग्गं अवितहमसंदिद्धं ! इत्थं ठिया जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिवाएंति सव्व दुःखाणमंतं करंति ।

छाया—इदमेव निर्ग्रन्थं प्रवचनं सत्यम् अनुत्तरं, कैवलिकं, प्रतिपूर्णं, नैयायिकं, संशुद्धं, शल्यकर्त्तनं, सिद्धिमार्गः, मुक्तिमार्गः, निर्याणमार्गः, निर्वाणमार्गः, अवितथम्, असन्दिग्धम्, अत्र स्थिता जीवाः सिद्ध्यन्ति, बुध्यन्ते, मुच्यन्ते, परिनिर्वान्ति, सर्व दुःखानामन्तं कुर्वन्ति ।

अन्यच्च—इमं च णं सव्वजगजीवरक्खणदयट्ठाए पावयणं भगवया सुकहियं " इति (प्रश्न० संवर०)

छाया—' इदं च खलु सर्वजगज्जीवरक्षणदयार्थाय प्रवचनं भगवता सुकथितम् ' इति ।

धर्मध्यानस्याऽऽज्ञाविचयादि भेदेन चातुर्विध्यं प्रदर्शयता भगवता–प्राधान्यादाज्ञाविचयः प्राथम्येन प्रोक्तः ।

भावार्थ–इस का स्पष्ट है। इसमें सूत्रकार ने मुख्यरूप से यही बात प्रकट की है कि इस निर्ग्रन्थ प्रवचन मार्ग में स्थित जीव अष्ट कर्मोंका विनाश कर सिद्धदशासंपन्न हो जाते हैं। इस अवस्थाकी प्राप्ति होना ही जीवों के समस्त दुःखों का विनाश है।

अन्यच्च—इमं च णं सव्वजगजीवरक्खणट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहियं " इति–(प्रश्न. संवर०)

इस प्रवचन की प्ररूपणा करने का श्री तीर्थंकर प्रभु का यही एक उद्देश रहा है कि समस्त संसारीजन इस प्रवचन के अभ्यास से सर्व जगत के जीवों की रक्षा करे और उनकी दया पालें।

ध्यान का वर्णन करते हुए भगवान ने उस ध्यान के ४ भेद कहे हैं। उनमें धर्मध्यान के आज्ञाविचय आदि जो ४ पाये प्रकट किये

આ કથનનો ભાવાર્થ સ્પષ્ટ છે. આમાં ખાસ કરીને સૂત્રકારે એ જ વાત સ્પષ્ટ રીતે બતાવી છે કે આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન માર્ગમાં સ્થિત જીવ અષ્ટ કર્મોનો વિનાશ કરીને સિદ્ધિ દશા સંપન્ન થઈ જાય છે. આ અવસ્થા મેળવવી એ જ જીવોના સઘળા દુઃખનો વિનાશ છે.

अन्यच्च–इम च णं सव्व जगजीवरक्खणदयट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहीयं " इति–(प्रश्न० संवर०)

શ્રી તીર્થંકર પ્રભુનો આ પ્રવચનની પ્રરૂપણા કરવાનો એ જ ઉદ્દેશ રહ્યો છે કે બધા સંસારીજનો આ પ્રવચનના અભ્યાસથી જગતના સર્વે જીવોની રક્ષા કરે અને તેમની દયા પાળે.

ધ્યાનનું વર્ણન કરતાં ભગવાને તેના ચાર ભેદો વર્ણવ્યા છે. તેઓમાં ધર્મધ્યાનના આજ્ઞા-વિચય વગેરે ચાર ઉપભેદો સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યા છે

यथा भगवती सूत्रे--(श० २५ उ० ७)

" धम्मे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा-आणाविचए " अवायविचए, विवागविचए, संठाणविचए ॥

छाया—धर्मध्यानं चतुर्विधं प्रज्ञप्तम् । तद् यथा-आज्ञाविचयः, अपायविचयः, विपाकविचयः, संस्थानविचयः ।

अत्र प्रसङ्गवशाद् आज्ञाविचय एव व्याख्यायते—

आज्ञाविचयश्च-आज्ञायाः पर्यालोचनं, आज्ञा-सर्वज्ञप्रणीत आगमः, तामाज्ञामित्थं विचिनुयात्=पर्यालोचयेत् – पूर्वापरविशुद्धमतिनिपुणामशेषजीवकायहिता

हैं उन में सर्व प्रथम आज्ञाविचय को जो कहा है उसका कारण यही है कि शेष तीन पायों (भेदों) में प्रधान है। भगवती सूत्र श. २५ उ- ७ में देखो यह वर्णन इस प्रकार से हुआ है-धम्मे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा-आणाविचए, अवायविचए, विवागविचए, संठाणविचए ॥

अर्थ—धर्मध्यान ४ प्रकार का है (१) आज्ञाविचय (२) अपायविचय (३) विपाकविचय (४) संस्थानविचय।

प्रसंगवश यहां आज्ञाविचय पर विवेचन किया जाता है-तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा का विचय-पर्यालोचन-विचार करना सो आज्ञाविचय है सर्वज्ञ कथित आगम का नाम आज्ञा है। इस आगमरूप आज्ञा का इस प्रकार से विचार करना चाहिये-यह प्रभु प्रतिपादित आगम पूर्वापर विरोध रहित होने से विशुद्ध है, प्रत्येक सूक्ष्म अन्तरित और दूरार्थ के प्रतिपादन करने में अतिनिपुण है, प्रत्येक जीवों का यह हितकारी

તેઓમાં જો સૌ પ્રથમ આજ્ઞા વિચયનો જે ઉલ્લેખ કરવામાં આવ્યો છે તેનું કારણ એ જ છે કે બાકી રહેલા ત્રણ ઉપભેદોમાં તે મુખ્ય છે ભગવતી સૂત્ર શ. ૨૫ ઉ. ૭ માં એના માટે જોવું જોઈએ. ત્યાં આનું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે-धम्मे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा-आणाविचए, अवायविचए, विवाग विचए, संठाणविचए ॥

અર્થ—ધર્મધ્યાનના ચાર પ્રકાર છે. (૧) આજ્ઞા-વિચય, (૨) અપાય વિચય, (૩) વિપાક વિચય, (૪) સંસ્થાન વિચય.

પ્રસંગવશ અહીં આજ્ઞાવિચય વિષે વર્ણન કરવામાં આવે છે. તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાનો વિચય-પર્યાલોચન-વિચાર કરવો તે આજ્ઞાવિચય છે. સર્વજ્ઞકથિત આગમનું નામ આજ્ઞા છે તે આગમરૂપ આજ્ઞાનો આ રીતે વિચાર કરવો જોઈએ કે આ પ્રભુ પ્રતિપાદિત આગમ પૂર્વાપર વિરોધ રહિત હોવા બદલ વિશુદ્ધ છે, દરેક સૂક્ષ્મ અંતરિત અને દૂરાર્થના પ્રતિપાદન કરવામાં

है, अनवद्य है, इस में प्रत्येक जीवादिक पदार्थ का विवेचन बहुत ही अच्छी तरह से किया गया है अतः यह महार्थ है इसका प्रभाव भी अद्वितीय है इसकी छत्रछाया में आने से प्रत्येक भव्य जीव आत्मकल्याण के अपने अन्तिम लक्ष्य की सिद्धि कर लिया करते हैं। इस में प्रतिपादित तत्व सामान्यजन नहीं ज्ञात कर सकते हैं-द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक नयरूप दो दृष्टियां जिनके पास हैं-वे ही इसमें प्रतिपादित विषय को अच्छी तरह ज्ञात कर सकते हैं। इसमें जो भी कुछ कथन सर्वज्ञ भगवान् ने किया है वह इन्हीं दो दृष्टियों को सामने रखकर किया गया है यदि एक दृष्टि को ही प्रधान रखकर इसके तत्व को समझने की चेष्टा की जाय तो वह प्रतिपाद्य विषय ठीक २ नहीं समझा जा सकता है। तथा इस प्रकार की प्ररूपणा अन्यथा भी ज्ञात होने लगती है इसलिये दूसरी दृष्टि को सामने रखकर ही वह विषय ठीक २ रीति से समझ में आ सकता है, अतः इसी अभिप्रायसे इसे निपुण जनवेद्य कहा है तथा इस में प्रत्येक पदार्थ को उत्पादन व्यय और ध्रौव्य आत्मक कहा गया है-वह भी द्रव्य और पर्याय की अपेक्षा से ही कहा गया है द्रव्य की अपेक्षा से प्रत्येक जीवादिक पदार्थ ध्रौव्यरूप

અતીવકુશળ છે. દરેકે દરેક જીવો નો આ હીતકારી છે. અનવદ્ય છે, એમાં દરેકે દરેક જીવ વગેરે પદાર્થનું વિવેચન બહુજ સૂક્ષ્મતા પૂર્વક કરવામાં આવ્યું છે એથી આ મહાર્થ છે. આનો પ્રભાવ પણ અદ્વિતીય છે, આની છત્ર-છાયામાં આવવાથી દરેક ભવ્યજીવ આત્મકલ્યાણ વિષયક પોતાની અંતિમ લક્ષ્યની સિદ્ધિ પ્રાપ્તકરી લે છે. આમાં પ્રતિપાદિત તત્ત્વ સામાન્ય લોકો જાણી શકતા નથી. દ્રવ્યાર્થિક તેમજ પર્યાયાર્થિક નયરૂપ બે દૃષ્ટિઓ જેની પાસે છે. તેઓ જ આમાં પ્રતિપાદિત વિષયને સારી પેઠે સમજી શકે છે. સર્વજ્ઞ ભગવાને આમાં જે કંઈ કહ્યું છે તે બધુ આ પૂર્વોક્ત બંને દૃષ્ટિઓ ને પોતાની સામે રાખીને જ કહ્યું છે. જો એક-દૃષ્ટિને જ પ્રધાન સમજીને તેના તત્ત્વને જાણવાની ચેષ્ટા કરવામાં આવે તો તે પ્રતિપાદ્ય વિષય યથાવત્ સમજી શકાય જ નહિ. તેમજ આ જાતની પ્રરૂપણા અન્યથા પણ માલુમ થવા માંડે છે એથી બીજી દૃષ્ટિને પોતાની સામે રાખીને જ વિચાર કરીએ તો વિષય સરસ રીતે સમજી શકાય તેમ છે. આ પ્રયોજનથી જ આને 'નિપુણજન-વેદ્ય' કહેવામાં આવ્યો છે તેમજ આમાં જો દરેક પદાર્થને ઉત્પાદ, વ્યય અને ધ્રૌવ્ય આત્મક કહેવામા આવ્યો છે તે પણ દ્રવ્ય અને પર્યાયની અપેક્ષાથી જ કહેવામાં આવ્યો છે. દ્રવ્યની

मनन्वयां महार्थां महानुभावां निपुणजनविज्ञेयां द्रव्यपर्यायप्रपञ्चवतीमनाद्यनिधनाम्। अस्य प्रवचनस्याऽऽद्यन्तरहितत्वं च भगवता नन्दीसूत्रे निगदितम्—

"इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं न कयाइ णासी ॥"

इत्येतद् द्वादशाङ्गं गणिपिटकं न कदापि नासीत् ॥ इत्यादि।

है और पर्याय की अपेक्षा से उत्पाद व्ययरूप है, इसलिये भी जिन प्रतिपादित आगमरूप आज्ञा स्वयं द्रव्य और पर्याय के विस्तार वाली है। अथवा जीवादिक समस्त छ द्रव्यों की त्रिकालवर्ती समस्त पर्यायें इसमें प्रतिपादित हुई हैं, अथवा कोई भी द्रव्य कभी भी पर्याय रहित नहीं हो सकता है-स्वभाव पर्यायें और व्यञ्जन पर्यायें, विभाव पर्यायें और अर्थपर्यायें प्रत्येकक्षण में समस्तद्रव्यों में होती रहती हैं, इत्यादिरूप से द्रव्य और पर्यायों का प्रतिपादन इस आज्ञा में भगवान ने प्रदर्शित किया है इस अपेक्षा भी यह द्रव्य और पर्याय के विस्तार वाली मानी गई है तथा यह अनादि अनन्त है न कभी इस आज्ञा की आदि हुई है और न कभी इसका विनाश होगा। नंदीसूत्र में भी प्रवचन की अनादि अनन्तता के विषय में "इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडिगं न कयाइनासी" यही कहा है-ऐसा कोई सा भी काल नहीं था कि जिस काल में इस द्वादशांगरूप गणिपिटकका सद्भाव नहीं था।

અપેક્ષાથી દરેક જીવ વગેરે પદાર્થ ધ્રૌવ્યરૂપ છે. અને પર્યાયની અપેક્ષાથી ઉત્પાદ વ્યયરૂપ છે. એટલા માટે પણ જિન પ્રતિપાદિત આગામરૂપ આજ્ઞા પોતે દ્રવ્ય અને પર્યાયના પ્રપંચ (વિસ્તાર) વાળી છે. અથવા તો જીવ વગેરે બધા ૬ દ્રવ્યોના ત્રિકાલ વર્તી સમસ્ત પર્યાયો આમાં પ્રતિપાદિત થયા છે, અથવા કોઈ પણ દ્રવ્ય કોઇ પણ દિવસે પર્યાય રહિત થઇ શકતું નથી. સ્વભાવ પર્યાયો અને વ્યંજન પર્યાયો, વિભાવ પર્યાયો અને અર્થ પર્યાયો દરેક ક્ષણમાં બધા દ્રવ્યોમા થતી રહે છે. ઇત્યાદિ રૂપથી દ્રવ્ય અને પર્યાયોનું પ્રતિપાદન આ આજ્ઞામાં ભગવાને બતાવ્યું છે. આ અપેક્ષાથી પણ આ દ્રવ્ય અને પર્યાયના પ્રપંચ (વિસ્તાર) વાળી માનવામાં આવી છે. તેમજ આ અનાદિ અનંત છે. કોઇ દિવસ આજ્ઞાની આદિ થઇ નથી અને કોઇ પણ દિવસે આનો વિનાશ થશે નહિ. નંદીસૂત્રમા પણ પ્રવચનની અનાદિ અનંતતાને લગતી (इच्चे इयं दुवालसंगं गणिपिडगं न कयाइनासी) એ જ વાત કહેવામાં આવી છે. એવો કોઈ પણ કાળ હતો નહિ કે તે કાળે આ દ્વાદશાંગ રૂપ ગણિપિટકનો સદ્ભાવ હતો નહિ. આ રીતે આ આગમની મહત્તા અથવા તો એના મહા

इत्थं चागममाहात्म्यपर्यालोचनरूपस्य धर्मध्यानस्याऽऽ – र्हताऽऽज्ञाविषयत्वाद् धर्मध्यानस्य धर्मत्वं सिद्धम् । तथा–हिंसादि–दोषलेशेनाप्यसंपृक्तस्य शुद्धधर्मस्य बोधकत्वादहिंसाप्रधानस्य प्रवचनस्य श्रद्धेयत्वं च सिद्धम् ।

अहिंसायामर्हतो भगवत आज्ञा प्रदर्शिता, एवं संयमेपि तदाज्ञा वर्तते । यथा –ज्ञाताधर्मकथाऽङ्गसूत्रे–(प्रथमाध्ययने)

" तएणं समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं सयमेव पव्वावेइ, जाव सयमेव आयार जाव धम्ममाइक्खइ एवं खलु देवाणुप्पिया ! गंतव्वं चिट्ठियव्वं णिसीइयव्वं

इस प्रकार इस आगम की महत्ता अथवा उसके महात्म्य का विचार करना यही आज्ञाविचय नामक धर्मध्यान का प्रथम भेद है । इस ध्यान में अर्हतप्रभु की आज्ञा का ही विचार होता है–अतः इस ध्यान में उन की आज्ञा का विषय करनेवाला होने से धर्मरूपता सिद्ध है तथा हिंसादिक दोष के लेश से भी रहित ऐसे शुद्ध धर्म का बोधक होने से अहिंसाप्रधान इस प्रवचन में श्रद्धेयता सिद्ध होती है ।

इस पूर्वोक्त प्रकार से अहिंसा में अर्हंत भगवान् की आज्ञा का प्रदर्शन कर अब संयममें भी उनकी आज्ञा इसी प्रकार की है यह प्रकट करने के लिये सर्व प्रथम ज्ञाताधर्मकथाङ्ग सूत्र से इस विषय की पुष्टि करते हुए सूत्रकार कहते हैं ।

" तएणं समणे भगवं महावीरे मेहंकुमारं सयमेव पव्वावेइ, जाव धम्ममाइक्खइ, एवं खलु देवाणुप्पिया ! गंतव्वं चिट्ठियव्वं णिसी-

---

त्म्यने लगतो विचार करवो એ જ આજ્ઞા–વિચય નામક ધર્મધ્યાનનો પ્રથમ ભેદ છે. આ ધ્યાનમાં અહ઼ંત પ્રભુની આજ્ઞા વિષે જ વિચાર હોય છે. તેથી આ ધ્યાનમાં તેમની આજ્ઞાનો વિષય પ્રતિપાદિત થયો છે માટે આમાં ધર્મરૂપતા સિદ્ધ છે તેમજ હિંસા વગેરે દોષોથી પણ રહિત શુદ્ધ ધર્મનો બોધક હોવાને કારણે અહિંસા પ્રધાન આ પ્રવચનમાં શ્રદ્ધેયતા સિદ્ધ થાય છે.

આ પ્રમાણે પૂર્વોક્ત રીતે અહ઼ંત ભગવાનની અહિંસાના વિષે આજ્ઞા બતાવીને હવે આગળ સૂત્રકાર સંયમ માટે પણ તેઓશ્રીની આજ્ઞા આ રીતે જ છે. આ વાત સ્પષ્ટ કરવાને માટે સૌ પ્રથમ જ્ઞાતા–ધર્મકથાઙ્ગ સૂત્રથી આ વિષયની પુષ્ટિ કરતાં કહે છે—

" तए णं समणे भगवं महावीरे मेहंकुमारं सयमेव पव्वावेइ, जाव सयमेव आयार जाव धम्ममाइक्खइ, एवं खलु देवाणुप्पिया ! गंतव्वं चिट्ठि-

तुयट्टियव्वं भुंजियव्वं भासियव्वं, एवं उट्ठाय उट्ठाय पाणेहिं भूयेहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमेणं संजमियव्वं, अस्सिं च णं अट्ठे णो पमाएयव्वं " इति, ।

ततः खलु श्रमणो भगवान् महावीरो मेघं कुमारं स्वयमेव प्रव्राजयति, यावत् स्वयमेव आचार यावद् धर्ममाख्याति–एवं खलु हे देवानुप्रिय ! गन्तव्यं, स्थातव्यं निषत्तव्यं, त्वग्वर्तयितव्यं भोक्तव्यं भाषितव्यत्, एवमुत्था य उत्थाय प्राणेषु भूतेषु जीवेषु सत्त्वेषु संयमेन संयन्तव्यम्, अस्मिंश्च खलु अर्थे नो प्रमादयितव्यम्। इति,

दशवैकालिक सूत्रे ऽपि—

" जयं चरे जयं चिट्ठे जयमासे जय सए ।
जयं भुंजंतो भासंतो पावकम्मं न बंधई ॥ "

इयव्वं तुयट्टियव्वं भुंजियव्वं भासियव्वं एवं उट्ठाय उट्ठाय पाणेहिं भूयेहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमेणं संजमियव्वं, अस्सिंच णं अट्ठे णो पमाएयव्वं"

श्रमण भगवान महावीर ने स्वयं अपने ही हाथों से मेघकुमारको जब भागवती दीक्षा प्रदान की उसके लिये मुनि विषयक आचार आदि का जब उन्हों ने उपदेश दिया तब उन्हों ने उसे यही समझाया कि हे देवानुप्रिय ! चलते, ठहरते, बैठते, लेटते, आहारकरते और बात· चित करते समय प्राणियों, भूतों, जीवों, और सत्वो में सदा संयम से ही प्रवृत्ति करनी चाहिये। मुनि का यही कर्तव्य है कि वह प्रत्येक शारीरिक एवं वाचनिक क्रियाओं में, संयमित प्रवृत्ति करें। इस प्रकार की प्रवृत्तिशील होने से ही मुनि द्वारा अपने संयम की रक्षा होती है इस विषय में मुनि को कभी भी प्रमाद नहीं करना चाहिये। दशवै· कालिक सूत्र में भी यही कहा है–" जयं चरे जयं चिट्ठे जयमासे जयं

यव्व णिसीइयव्वं तुयट्टियव्वं भुंजियव्वं, भासियव्वं, एव उट्ठाय उट्ठाय पाणेहिं भूयेहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमेणं संजमियव्वं अस्सिं च ण अट्ठे णो पमाएयव्वं "

શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે જાતે પોતાના હાથથી જ મેઘકુમારને જ્યારે ભાગવતી દીક્ષા આપી અને તેને મુનિવિષયક આચાર વગેરેને લગતો ઉપદેશ આપ્યો ત્યારે તેઓશ્રીએ તેને ઉપદેશમાં એ જ વાત સમજાવી કે હે દેવાનુ-પ્રિય ! ચાલતા ઊભા રહેતાં, બેસતાં, સૂઈ જતા, આહાર કરતાં અને વાતચીત કરતા પ્રાણીઓ, ભૂતો, જીવો અને સત્વોમાં હંમેશા સંયમથી જ પ્રવૃત્તિ કરતાં રહેવુ જોઈએ મુનિની એ જ ફરજ છે કે તે દરેક શારીરિક અને વાચનિક ક્રિયા-ઓમા સંયમિત પ્રવૃત્તિ કરે. આ રીતે પ્રવૃત્તિશીલ થઈને રહેવાથી જ મુનિઓ વડે સંયમની રક્ષા થાય છે. આ બાબતમાં મુનિએ કોઈ પણ દિવસે પ્રમાદ કરવો જોઈએ નહિ. દશવૈકાલિક સૂત્રમાં પણ એજ વાત કહેવામા આવી છે. (जयं चरे जय चिट्ठे जयमासे जयंसए, जयं भुंजंतो भासंतो पावकम्मं न बंधई)

छाया-यतं चरेत् यतं तिष्ठेत्, यतमासीत यतं शयीत।
यतं भुञ्जानो भाषमानः पापकर्म न बध्नाति ॥ १ ॥ इति।

तत्रैव-' संजमं निहुओ चर " इत्यादि। छाया-संयमं निभृतश्चर ' इति।

संयमे तीर्थंकरस्याज्ञा प्रदर्शिता, इदानीं तपसि तदाज्ञा प्रदर्श्यते। यथा-दशवैकालिक सूत्रे-(द्वितीयाध्ययने)

" आयावयाही चय सोगमल्लं " इति। " आयावयाही " आतापय=आतापनारूपतपोधर्माराधनेन तनुं शोषय, " सोगमल्लं " सौकुमार्यं " चय " त्यज परिहर।

सए, जयं भुंजतो भासंतो पावकम्मं न बंधई" सकल संयमियों को पूर्ण सावधानता पूर्वक ही चलना चाहिये और पूर्ण सावधानता पूर्वक ही बैठना चाहिये। उठने बैठने में तथा आहारादि क्रिया करने और बोलने चालने में सदा उसे अपनी यत्नाचारमय प्रवृत्ति पर ही लक्ष्य रखना चाहिये। इस प्रकार की प्रवृत्ति करने से वह साधु पापकर्म का बंध नहीं करता है। इसलिये हे मेघकुमार! तुम " संयम निभृतश्चर " इस सकल संयम की अच्छी तरह से-यत्नाचारमय प्रवृत्ति से रक्षा करो-पालन करो। इस प्रकार से संयम की आराधना में तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा का प्रदर्शन सूत्रकार ने किया है। अब तप के आराधन करने में उनकी क्या आज्ञा है-वे यह स्पष्ट करते हैं " आयावयाही चय सोगमल्लं " (दशवैकालिक द्वितीय अध्ययन) ' हे मुने! सुकुमालपने को छोड़ आतापनाले ' आतापनारूप तपधर्म की आराधना से मुनि को चाहिये

બધા સંયમી લોકોએ સંપૂર્ણ પણે સાવધાન થઈનેજ ચાલવું જોઈએ અને પૂર્ણ સાવધાન થઈને જ બેસવું જોઈએ. ઉઠવા બેસવામાં તેમજ આહાર વગેરે ક્રિયા કરવામાં અને બોલવા ચાલવામાં હંમેશા તેને પોતાની યત્નાચારમય પ્રવૃત્તિ ઉપર જ લક્ષ્ય આપવું જોઈએ. આ રીતે પ્રવૃત્તિ કરવાથી તે સાધુ પાપ-કર્મનો બંધ કરતો નથી. એથી હે મેઘકુમાર! તમે " संयमं निभृतश्चर " આ સકલ સંયમની સારી રીતે યત્નાચારમયી પ્રવૃત્તિ વડે રક્ષા કરો-આનું પાલન કરો. આ રીતે સૂત્રકારે સંયમની આરાધના વિષે પ્રભુની આજ્ઞાનું પ્રદર્શન કર્યું છે. હવે તપની આરાધના કરવામા તેઓશ્રીની આજ્ઞા શી છે? તે સૂત્રકાર અહીં સ્પષ્ટ કરે છે-" आयावयाही चय सोगमल्लं " (दशवैकालिक द्वितीय अध्ययन) હે મુનિ! સુકોમળતાને ત્યજીને આતાપના સ્વીકારો. આતાપના રૂપ તપધર્મની આરાધનાથી મુનિ પોતાના શરીરને કૃશ (દુર્બળ) બનાવે અને શારીરિક

किंच श्रमणस्य क्षान्त्यादिदशविधे धर्मे तपसः पाठो वर्तते, तस्मात् तपोधर्म इति विज्ञायते। तथाचोक्तं समवायाऽङ्गसूत्रे-(समवाय १०)

" दसविहे समणधम्मे पण्णत्ते, तं जहा-(१) खंती, (२) मुत्ती (३) अज्जवे (४) मद्दवे (५) लाघवे (६) सच्चे (७) संजमे (८) तवे (९) चियाए (१०) बंभचेरवासे।

अहिंसादीनां जिनाज्ञाप्रयोज्यप्रवृत्तिकत्वस्वरूपस्य धर्मलक्षणस्य सद्भावाद् धर्मत्वं सिद्धं।

उक्तं धर्मस्य लक्षणं, लक्ष्या अहिंसादयश्च प्रोक्ताः, तत्राहिंसासंयमतपोरूपो धर्म उत्कृष्ट मङ्गलं बोध्यम्।

तथाचोक्तं दशवैकालिकसूत्रे-(प्र० अ० १)

" धम्मो मंगलमुक्किट्ठं ,अहिंसा संजमो तवो।
देवावि तं नमंसंति जस्स धम्मे सया मणो॥ "

कि वह अपने शरीर को कृश करें एवं शारीरिक सुकुमारता का मोह छोड़े। उत्तम क्षमा आदिक जो श्रमणों के दशप्रकार के धर्म कहे गये हैं, उनमें तप का भी कथन आया है, अतः तप में धर्मरूपता सिद्ध ही होती है। समवायांग सूत्र में श्रमण के दश प्रकार के धर्मों का कथन करते हुए सूत्रकार ने यही कहा है-" दसविहे समणधम्मे पण्णत्ते, तं जहा-खंती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे, लाघवे, सच्चे, संजमे, तवे, चियाए बंभचेरवासे।

इन अहिंसादिक महाव्रतों में धर्मरूपता इसलिये सिद्ध होती है कि वहां पर जिनेन्द्र प्रभु की आज्ञा प्रयोज्य प्रवृत्तिरूप धर्म के लक्षण का सद्भाव पाया जाता है इस प्रकार धर्म का लक्षण और उसके लक्ष्यभूत अहिंसादिकों का कथन है। ये अहिंसा, संयम और तपरूप धर्म ही

સુકુમારતાનો મોહ ત્યજી દે. ઉત્તમ ક્ષમા વગેરે શ્રમણોના દશ પ્રકારના ધર્મ કહેવામા આવ્યાં છે તેઓમાં તપનું કથન છે એથી તપમાં ધર્મરૂપતા સિદ્ધ થાય જ છે. સૂત્રકારે સમવાયાંગ સૂત્રમાં શ્રમણના દશ પ્રકારના ધર્મનું કથન કરતાં આ પ્રમાણે જ કહ્યુ છે—

" दसविहे समणधम्मे पण्णत्ते,-तं जहा-खंत्ती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे, लाघवे, सच्चे' संजमे, तवे चियाए बंभचेरवासे। "

આ અહિંસા વગેરે મહાવ્રતોમાં ધર્મરૂપતા એટલા માટે સિદ્ધ થાય છે કે તેઓમા જીનેન્દ્ર પ્રભુની આજ્ઞા પ્રયોજ્ય પ્રવૃત્તિ રૂપ ધર્મના લક્ષણનો સદ્ભાવ છે. આ રીતે ધર્મનું લક્ષણ અને તેના લક્ષ્યભૂત અહિંસા વગેરેનું કથન છે. અહિંસા, સંયમ અને તપ રૂપ ધર્મ જ ઉત્કૃષ્ટ મંગળ રૂપ છે. દશવૈકાલિક

छाया—धर्मो मङ्गलमुत्कृष्टम् अहिंसा संयमस्तपः ।
देवा अपि तं नमस्यन्ति, यस्य धर्मे सदा मनः ॥

नन्वहिंसा-संयम-तपो-रूपो धर्मो मङ्गलमुत्कृष्टमित्येतद्वचः किमाज्ञासिद्धम् आहोस्विद् युक्तिसिद्धमपि ?

अत्रोच्यते—उभयसिद्धमपि, तथाहि-जिनवचनत्वा-दाज्ञासिद्धम्. अनुमानमप्यत्रवर्तते-' अहिंसासंयमतपोरूपो-धर्मो मङ्गलमुत्कृष्टम् इति प्रतिज्ञा, ' देवादि

उत्कृष्ट संगलरूप हैं दशवैकालिकसूत्र में यही कहा है " धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो। देवा वि तं नमसंति जस्स धम्मे सया-मणो " धर्म ही उत्कृष्ट मंगल है। अहिंसा संयम और तप ये ही धर्म हैं। जिसका अन्तः करण इस धर्म से सदा युक्त रहता है उसके लिये देव भी नमस्कार करते हैं।

शंका-अहिंसा, संयम और तपरूप धर्म में जो उत्कृष्ट मंगलरूपता कही है वह आज्ञासिद्ध है इसलिये कही है कि युक्ति से सिद्ध है इसलिये कही है ? भावार्थ-अहिंसादिकों में उत्कृष्टमंगलता किस प्रमाण से सिद्ध है ? आगम से या अनुमान से ?

उत्तर-इनमें उत्कृष्ट मंगलरूपता आगम और युक्ति दोनों से सिद्ध है। जिनेन्द्र के वचन होने से इनमें आज्ञासिद्धता है तथा अनुमान से प्रसिद्ध होने से युक्ति सिद्धता है। " धम्मो मंगलमुक्किट्ठं " इत्यादि गाथा द्वारा इनमें जिनेन्द्रवचनरूप आगमता पूर्व में ही प्रदर्शित की जा चुकी है अनुमान प्रसिद्धता इस प्रकार है-अनुमान के पांच अंग होते

સૂત્રમાં એ જ વાત કહેવામાં આવી છે-" धम्मो मंगलमुक्किट्ठं-अहिंसा संजमो तवो। देवा वि तं नमसंति जस्स धम्मे सया मणो " ધર્મ જ ઉત્કૃષ્ટ મંગળ છે. અહિંસા સંયમ અને તપ એ જ ધર્મ છે. જેનું અન્તઃકરણ આ ધર્મથી સદા યુક્ત રહે છે તેને દેવો પણ નમન કરે છે.

શંકા—અહિંસા, સંયમ અને તપ રૂપ ધર્મને જે ઉત્કૃષ્ટ મંગળ રૂપ કહેવામાં આવ્યો છે તે આજ્ઞાસિદ્ધ છે. માટે કહેવામાં આવેલ છે કે યુક્તિથી સિદ્ધ છે એટલા માટે કહેવામાં આવે છે ? ભાવાર્થ-અહિંસા વગેરેમાં ઉત્કૃષ્ટ મંગળતા કયા પ્રમાણથી સિદ્ધ છે ? આગમથી કે અનુમાનથી ?

ઉત્તર—આમાં ઉત્કૃષ્ટ મંગલરૂપતા આગમ અને યુક્તિ બંનેથી સિદ્ધ છે. જિનેન્દ્રનાવચનો હોવાથી આમાં આજ્ઞા સિદ્ધતા છે તેમજ અનુમાનથી પ્રસિદ્ધ હોવા બદલ યુક્તિ સિદ્ધતા છે. " धम्मो मगलमुक्किट्ठं " વગેરે ગાથા વડે આમાં જિનેન્દ્ર પ્રવચનરૂપ આગમતા પહેલાં બતાવવામા આવી જ છે અને અનુ-

मान्यत्वात्, इति हेतुः। अर्हदादिवत् इति दृष्टान्तः इह यो यो देवादिमान्यः स स उत्कृष्टं मङ्गलं यथाऽर्हदादयः, 'तथा चायं धर्मः' इत्युपनयः, तस्माद् देवादिमान्यत्वादुत्कृष्टं मङ्गलमिति निगमनम्।

वस्तुतस्तु धर्माधर्मस्वरूपं सूक्ष्मत्वाच्छद्मस्थैर्दुर्ज्ञेयं, केवलं सर्वज्ञेन रागादिदोषरहितेन पञ्चत्रिंशद्वचनातिशयसंपन्नेन केवलिना तीर्थंकरेण केवलालोकेन सुज्ञेयं भवति। छद्मस्थानां तु भगवद्वचनमेव नियामकं, तथाचोक्तम्—

हैं-१ प्रतिज्ञा, २ हेतु, ३ दृष्टान्त, उपनय ४ और ५ निगमन। अर्हंत भगवान की तरह देवादिकों द्वारा मान्य होने से अहिंसा, तप और संयमरूप धर्म उत्कृष्ट मंगल हैं।

इस अनुमान वाक्य में "अहिंसा, संयम और तप रूप धर्म उत्कृष्टमंगल है" यह प्रतिज्ञा है "देवादिकों द्वारा मान्य होने से" यह हेतु है। "अर्हन्त की तरह" यह दृष्टान्त है पक्ष में हेतु के दुहराने से उपनय और प्रतिज्ञा के दुहराने से निगमन सिद्ध हैं जैसे-"जो जो देवादिकों द्वारा मान्य होता है वह २ उत्कृष्ट मंगल होता है जैसे अर्हंत प्रभु-ये भी देवादिकों द्वारा मान्य हैं। इस प्रकार पक्ष में हेतु के दुहराने रूप उपनय है इसलिये "वे भी उत्कृष्ट मंगल स्वरूप हैं" इस प्रकार प्रतिज्ञा के दुहराने रूप निगमनवाक्य है।

वास्तव में तो धर्म और अधर्म का स्वरूप सूक्ष्म होने से हम छद्मस्थों के लिये अत्यंत परोक्ष है-इस लिये हम उसे सिर्फ अनुमान या

માન પ્રસિદ્ધતા આ પ્રમાણે સમજવી જોઈએ. અનુમાનના પાંચ અંગો હોય છે-પ્રતિજ્ઞા' ૧, હેતુ ૨, દૃષ્ટાંત ૩, ઉપનય ૪, અને નિગમન ૫,

અર્હંત ભગવાનની જેમ દેવ વગેરે દ્વારા માન્ય હોવા બદલ અહિંસા, તપ અને સંયમ રૂપ ધર્મ ઉત્કૃષ્ટ-મંગલ છે.

આ અનુમાન વાક્યમાં "અહિંસા, સંયમ અને તપ રૂપ ઉત્કૃષ્ટ મંગળ છે." આ પ્રતિજ્ઞા છે. "દેવ વગેરે દ્વારા માન્ય હોવાથી આ હેતુ છે. અર્હંતની જેમ" આ દૃષ્ટાંત છે પક્ષમાં હેતુને બેવડાવવાથી ઉપનય અને પ્રતિજ્ઞાને બેવડાવવાથી નિગમન સિદ્ધ છે જેમકે "દેવ વગેરે દ્વારા જે જે માન્ય હોય છે તે તે ઉત્કૃષ્ટ-મંગલ હોય છે જેમ અર્હંત પ્રભુ પણ દેવ વગેરે દ્વારા માન્ય છે. આરીતે પક્ષમાં હેતુને બેવડાવવાથી ઉપનય છે, માટે "તેઓ પણ ઉત્કૃષ્ટ મંગળ સ્વરૂપ છે" આરીતે પ્રતિજ્ઞાને બેવડાવવા રૂપ નિગમન વાક્ય છે.

વસ્તુતઃ ધર્મ તેમજ અધર્મનું સ્વરૂપ સૂક્ષ્મ હોવાથી અમારા જેવા છદ્મસ્થો માટે તે અતીવ પરોક્ષ છે એથી અમે ફક્ત તેને અનુમાન કે આગમથી

" धर्माधर्मव्यवस्थाया', शास्त्रमेव नियामकम् ।
तदुक्ताऽऽसेवनाद् धर्मस्त्वधर्मस्तद्विपर्ययात् ॥ " इति,

आगम से ही ज्ञात कर सकते हैं। घटपटादिकों की तरह उसे स्पष्ट रूप से देख नहीं सकते हैं । इसीलिये वह दुर्ज्ञेय है । जो अनुमान और आगम से गम्य होता है वह अग्नि आदि की तरह किसी न किसी के प्रत्यक्ष होता है यह स्पष्ट सिद्धान्त है। तीर्थंकर प्रभु ने कि जो राग और द्वेष से सर्वथा रहित हैं, त्रिकालवर्ती समस्त पदार्थों को जो हस्तामलकवत् स्पष्ट जानते हैं, ३५ वाणी के अतिशय से जो युक्त हैं अपने केवलज्ञान रूपी आलोक से उसे विशदरूप से जान लिया है। हम छद्मस्थों के लिये इनके वचनों के सिवाय इस विषय का नियामक और कुछ नहीं है। अतः उनके कथनानुसार ही धर्म और अधर्म का स्वरूप हम संसारी जीव जान सकते हैं या जानते हैं। "धर्माधर्मव्यवस्थायाः शास्त्रमेव नियामकं, तदुक्ता सेवनात् धर्मस्त्वधर्मस्तद्विपर्ययात्"-धर्म और अधर्म के स्वरूप की व्यवस्था करने वाले केवल सर्वज्ञभगवान् के वचन स्वरूप आगम ही हैं। अतः उनके द्वारा प्रदर्शित मार्ग का सेवन करना धर्म और उससे विपरीत मार्ग का सेवन करना अधर्म है

भावार्थ-जीवोंको धर्मकी प्राप्ति सर्वज्ञ भगवान द्वारा प्रदर्शित मार्ग

સમજી શકીયે છીએ. ' ઘટ પટ ' વગેરેની જેમ તેને સ્પષ્ટ પણે જોઈ શકતા નથી એથી જ તે દુર્જ્ઞેય છે. જે અનુમાન અને આગમથી ગમ્ય હોય છે તે અગ્નિ વગેરેની જેમ કોઈને કોઈને પ્રત્યક્ષ હોય છે આ એક સ્પષ્ટ સિદ્ધાંત છે. રાગ અને દ્વેષથી સંપૂર્ણ પણે રહિત એવા તીર્થંકર પ્રભુએ-કે જેઓ ત્રિકાળવર્તી બધા પદાર્થોને હસ્તામલકવત્ સ્પષ્ટ રીતે જાણે છે, ૩૫ વાણીના અતિશયથી જેઓ યુકત છે-પોતાના કેવળજ્ઞાન રૂપી આલોકથી તેને વિશદ રૂપથી જાણી લીધું છે. અમારા જેવા છદ્મસ્થોને માટે એમનાં વચનો સિવાય આ વિષયનો નિયામક બીજો કોઈ નથી. એથી અમે તેમના કહ્યા મુજબ જ ધર્મ અને અધર્મનું સ્વરૂપ જાણી શકીયે છીએ " धर्माधर्म-व्यस्थायाः शास्त्रमेव नियामकं, तदुक्तासेवनात् धर्मस्त्वधर्मस्तद्विपर्ययात् " ધર્મ અને અધર્મના સ્વરૂપની વ્યવસ્થા કરનાર ફકત સર્વજ્ઞ ભગવાનના વચન સ્વરૂપ આગમો જ છે. એથી તેમના વડે દર્શાવવામા આવેલા માર્ગનું સેવન કરવું એજ ધર્મ અને તેથી વિરુદ્ધ માર્ગનું સેવન કરવું અધર્મ છે. ભાવાર્થ-સર્વજ્ઞ ભગવાન દ્વારા

पर चलनेसे ही हो सकती है, इससे विपरीत मार्ग पर चलने से नहीं। अतः जो जीव धर्म को साक्षात्कार करना चाहते हैं उनका कर्तव्य है कि वे सर्वज्ञ भगवन द्वारा कथित मार्ग का सेवन करें और उस से भिन्न मार्ग का परित्याग करें। इस प्रकार की प्रवृत्ति से वे धर्म और अधर्म के स्वरूप के ज्ञाता बन जाते हैं। इस कथन से शंकाकार की इस आशंकाका यहां परिहार किया गया है कि जो उसमें पहिले यह प्रश्न किया कि अहिंसादिकों में जो उत्कृष्ट मंगलरूपता है वह किस प्रमाण से है। सूत्रकारने आगम और अनुमान दोनों प्रमाणों से उनमें उत्कृष्ट मंगलता सिद्ध की है इस कथन से एक बात और हमें यह ज्ञात होती है कि सर्वज्ञ कथित सिद्धान्त की जांच के लिये जबतक तर्क का जोर चलता रहे बुद्धिमान तबतक अपनी तर्कणा की कसौटी पर उसे कसता रहे-पर जब तर्क की समाप्ति हो जावे-तर्कणा शक्ति कुंठित हो जावे-तो उस व्यक्ति का कर्तव्य है वह आगम प्रमाण से ही उस सिद्धान्त का अनुसरण करें। फिर उसे उस विषय में तर्क करने की आवश्यकता नहीं है क्यों कि सूक्ष्मादिक पदार्थ सर्वज्ञ के सिवाय छद्मस्थों के

પ્રદર્શિત માર્ગ ઉપર ચાલવાથી જ જીવો ને ધર્મની પ્રાપ્તિ થઇ શકે તેમ છે. એનાથી વિરુદ્ધ માર્ગના સેવન થી નહિ. એથી જે જીવો ધર્મનું પ્રત્યક્ષ દર્શન ઈચ્છતાહોય તેમની ફરજ છે કે તેઓ સર્વજ્ઞ ભગવાન દ્વારા કથિત માર્ગનું સેવન કરે અને તેના વિરુદ્ધ માર્ગનો ત્યાગ કરે આ જાતની પ્રવૃત્તિથી તેઓ ધર્મ અને અધર્મના સ્વરૂપને જાણનારા થઇ જાય છે. આ કથનથી શંકાકારની એ આશંકાનો અહીં પરિહાર કરવામાં આવ્યો છે કે જે તેમાં પહેલાં આ પ્રશ્ન કરવામાં આવ્યો છે કે અહિંસા વગેરે માં જે ઉત્કૃષ્ટ મંગળ રૂપતા છે તે કયા પ્રમાણના આધારે છે? સૂત્રકારે આગમ તેમજ અનુમાન બંને-પ્રમાણો થી તેઓમાં ઉત્કૃષ્ટ મંગળતા સિદ્ધ કરી છે. એ કથન વડે બીજી આ વાતનું પણ જ્ઞાન થાય છે કે સર્વજ્ઞ-કથિત સિદ્ધાન્તની પરીક્ષા માટે જ્યાં સુધી તર્કની શક્તિ કાયમ રહે બુદ્ધિમાનો ત્યાં સુધી પોતાની તર્કણાની કસોટી ઉપર કસતા રહે-પણ જ્યારે તર્કની શક્તિ મંદ થઇ જાય-તર્કણા શક્તિ કુંઠિત થઇ જાય ત્યારે તે વ્યક્તિ ની ફરજ છે કે તે આગળ પ્રમાણથી જ તે સિદ્ધાન્ત નું અનુસરણ કરે. પછી તે વિષયમાં જ તેને મીનમેખ કરવી જોઇએ નહિ કેમ કે સૂક્ષ્મ વગેરે પદાર્થો સર્વજ્ઞ સિવાય છદ્મસ્થોના માટે સ્પષ્ટ રૂપથી જાણી શકાય

स्वयमेव भगवता–अहिंसासंयमतपसां धर्मत्वं,तथा – तेषामुत्कृष्टमङ्गलस्वरूपत्वेन प्राधान्यं च वर्णितं, तत्राप्यहिंसायाः–सर्वधर्ममूलत्वेन प्राधान्यात् प्रथमं स्थानं प्रदत्तम् । तस्य सर्वप्रधानस्याऽहिंसाधर्मस्य षट्कायोपमर्दनसाध्ये मूर्तिपूजने मूलतः समुच्छेदं केवलालोकेन साक्षात् पश्यन् भगवानर्हन् मूर्तिपूजनार्थमाज्ञां प्रदद्यादित्याकाशकुसुममिवात्यन्तमसदेव बोध्यम् ।

स्पष्ट रूप से ज्ञान के विषय नहीं हो सकते हैं। अतः ऐसे विषयों में सर्वज्ञ के वचन ही प्रमाण कोटि में अंगीकार करना चाहिये।

भगवान ने स्वयं ही अहिंसा, संयम और तप में धर्मरूपता तथा उत्कृष्ट मंगलरूप होने से प्रधानता कही है। अहिंसा में जो प्रधान रूपता कही गई है उसका मुख्य कारण यह है कि वह समस्तधर्मों का मूल है और इसीलिये उसे उन्हों ने सर्वप्रथमस्थान दिया है जब यह बात है तो विचारना चाहिये कि भगवा मूर्तिपूजा की आज्ञा कैसे दे सकते हैं। क्यों कि वह पूजा षट्काय के जीवों की विराधना से साध्य होती है। इस विराधना में अहिंसा धर्म का मूलतः ही अभाव समाया हुआ है। अर्थात् मूर्तिपूजा में उस प्रभुप्रतिपादित अहिंसा धर्म का सर्वथा उच्छेद हो हो जाता है–मूर्तिपूजा करने वाला पूजक अहिंसा धर्म का रक्षक नहीं हो सकता है–प्रत्युत उसे हिंसा का ही दोष लगता है इस प्रकार स्वयं भगवान जब अपने केवल ज्ञान से इस बात को

તેમ નથી. એથી એવી બાબતોમાં સર્વજ્ઞ નાં વચનો જ પ્રમાણ રૂપમાં સ્વીકારવાં જોઇએ.

ભગવાનને પોતે જ અહિંસા, સંયમ અને તપમાં ધર્મ રૂપતા તેમજ ઉત્કૃષ્ટ મંગળરૂપ હોવાથી પ્રધાનતા બતાવી છે. અહિંસામાં જે પ્રધાન રૂપતા દર્શાવવામાં આવી છે, મુખ્યત્વે તેનું કારણ આ પ્રમાણે છે કે તે બધા ધર્મોનું મૂળ છે અને એથી તેને સૌએ સૌ પ્રથમ સ્થાન અર્પ્યું છે. જ્યારે એવી વાત છે ત્યારે આપણે વિચારવું જોઇએ કે ભગવાન મૂર્તિપૂજાની આજ્ઞા કેવી રીતે આપી શકે તેમ છે ? કેમ કે તે પૂજા તો ષટ્કાયના જીવોની વિરાધનાથી સાધ્ય હોય છે. આ વિરાધનામાં અહિંસા ધર્મનો મુખ્યત્વે અભાવનો જ સમાવેશ થયો છે તેમ કહી શકાય છે. એટલે કે મૂર્તિપૂજામાં તે પ્રભુ પ્રતિપાદિત અહિંસા ધર્મનો સંપૂર્ણ પણે ઉચ્છેદ જ થઈ જાય છે. મૂર્તિપૂજા કરનાર પૂજારી અહિંસા ધર્મનો રક્ષક થઇ શકતો નથી અને બીજી રીતે તો તેને હિંસાનો દોષ જ ઓઢવો પડે છે. આ રીતે જ્યારે પોતે ભગવાન પોતાના કેવલજ્ઞાનથી આ

एवं लक्ष्याः समालोचिताः, इदानीमलक्ष्या उच्यन्ते-हिंसादौ जिनाज्ञाविरुद्धा प्रवृत्तिर्भवति लोकानां तस्मादधर्मा हिंसादय एव तस्य धर्मलक्षणस्यालक्ष्या भवन्ति।

धर्माधर्मस्वरूपबोधनार्थं हि भगवताऽऽवश्यके नाम-स्थापनाद्रव्यभावभेदेन चतुर्विधो निक्षेपः प्रदर्शितः। तत्र भावावश्यके एव तीर्थंकराज्ञायाः सद्भावाद्

साक्षात् जानते हैं तो फिर वे ही मूर्तिपूजा करने की आज्ञा देंगे यह मान्यता आकाशपुष्पकी तरह सर्वथा असत्य ही है यह स्वयं समझने जैसी बात है जहाँ हिंसा है वहां धर्म नहीं है अहिंसामें ही सच्चाधर्म है।

इस प्रकार धर्म के लक्ष्यभूत अहिंसा आदि का यहां तक विचार किया। अब उससे विपरीत हिंसादिकों का विचार करते हैं-

हिंसा आदि पाप हैं-इन में प्रवृत्ति कने की आज्ञा जिन भगवान ने नहीं दी है फिर भी जो प्रवृत्ति करते हैं वे उस आज्ञा से बहिर्भूत हैं। अतः जिनाज्ञा से विरुद्ध प्रवृत्ति होने से जोवों के लिये धर्म प्राप्ति के बदले इनसे अधर्म की ही प्राप्ति होती है। जिन से जोवों को अधर्म की प्राप्ति होती हो, वे स्वयं अधर्म हैं। हिंसादिक पापों में अधर्मता होने का कारण उनमें धर्म के लक्षण का अभाव है। इसीलिये ये धर्म के लक्षण के अलक्ष्य हुए हैं। इस धर्म और अधर्म के स्वरूप को समझाने के लिये भगवान ने आवश्यकसूत्र में नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव

વાતને સ્પષ્ટપણે પ્રત્યક્ષરૂપમાં જાણે છે તો પછી તેઓ જ મૂર્તિપૂજા કરવાની આજ્ઞા આપે એવી માન્યતા આકાશ પુષ્પની જેમ સંપૂર્ણપણે અસત્ય જ સિદ્ધ થાય છે. આપણે પોતે પણ આ વાત સમજી શકીએ તેમ છીએ. કે જ્યાં હિંસા છે ત્યાં ધર્મ નથી. અહિંસામાં જ સાચો ધર્મ છે.

આ રીતે ધર્મના લક્ષ્યભૂત અહિંસા વગેરે ને માટે અહીં સુધી વિચાર કરવામાં આવ્યો છે. હવે આગળ તેથી વિરુદ્ધ હિંસા વગેરેની બાબતમાં વિચાર કરવામાં આવે છે—

હિંસા વગેરે પાપ છે-આમાં પ્રવૃત્ત થવાની આજ્ઞા જિન ભગવાનને કોઈને પણ આપી નથી છતાં જેઓ તેમાં પ્રવૃત્તિ કરે છે તેઓ તે આજ્ઞાથી બહિર્ભૂત છે. એથી જિનાજ્ઞાની પ્રતિકૂળ પ્રવૃત્તિ હોવાથી જીવોને ધર્મ પ્રાપ્તિના સ્થાને એમનાથી અધર્મની જ પ્રાપ્તિ થાય છે. જીવોને જેનાથી અધર્મની પ્રાપ્તિ થાય છે તે પોતે અધર્મ છે હિંસા વગેરે પાપોમાં અધર્મતા હોવાને લીધે તેઓમા ધર્મના લક્ષણનો અભાવ છે એટલા માટે જ તેઓ ધર્મના લક્ષણથી અલક્ષ્ય થયા છે. આ ધર્મ અને અધર્મના સ્વરૂપને સમજાવવા માટે ભગવાને

धर्मत्वम्, अन्यविधेष्वावश्यकेषु रागद्वेषहिंसादिदोषसद्भावेन मोक्षमार्गोपदेशे प्रवृत्तस्य तीर्थंकरस्य चाऽऽज्ञाया अभावेन न तत्र धर्मलक्षणं समनुगच्छति, तेषां मोक्षसाधकत्वाभावाज्जैनधर्मपदं लब्धु-मनर्हत्वात्। तथाचोक्तमनुयोगद्वारे--

"से किं तं नामावस्सयं ?। नामावस्सयं जस्स णं जीवस्स वा अजीवस्स वा

के भेद से ४ चार निक्षेपों का कथन किया है उनमें नाम स्थपना और द्रव्यरूप धर्म निक्षेप के आराधन करने की भगवान ने जीवों को आज्ञा नहीं दी है क्यों कि इनसे जीवों को धर्म की प्राप्ति नहीं होती है। धर्म की प्राप्ति कराने वाला केवल भाव निक्षेपरूप आवश्यक है। इसकी आराधना से ही जीवों को धर्म प्राप्त हुआ करता है-अतः इस में ही धर्मरूपता प्रकट की गई है बाकी के इसके अतिरिक्त निक्षेपों में-आवश्यकों में रागद्वेष और हिंसा आदि दोषों का सद्भाव होने से एवं मोक्ष मार्ग के उपदेशप्रदान करने में प्रवृत्त तीर्थंकरों की इनके आराधन करने में आज्ञा का अभाव होने से धर्म के लक्षण का समन्वय ही नहीं होता है। मुक्ति का जो साधक होता है वही जैन-धर्म है। इन ३ निक्षेपरूप आवश्यकों में मुक्ति की साधकता का अभाव है-इसलिये ये जैनधर्म के पदको स्वप्न में भी प्राप्त नहीं कर कते हैं।

अनुयोगद्वार में यही बात कही गई है—

से किं तं नामावस्सयं ? नामावस्सयं जस्स णं जीवस्स अजीवस्स

આવશ્યકસૂત્રમાં નામ, સ્થાપના દ્રવ્ય અને ભાવના ભેદથી ચાર નિક્ષેપો નું કથન કર્યું છે. તેઓમાં નામ, સ્થાપના, અને દ્રવ્યરૂપ ધર્મ નિક્ષેપને આરાધવાની ભગવાને જીવોને આજ્ઞા આપી નથી કેમ કે એમનાથી જીવોને ધર્મની પ્રાપ્તિ થતી નથી ધર્મની પ્રાપ્તિ કરાવનારો કેવળ ભાવનિક્ષેપરૂપ આવશ્યક છે. એની આરાધનાથી જ જીવોને ધર્મની પ્રાપ્તિ થાય છે એથી આમાં જ ધર્મરૂપતા બતાવવામાં આવી છે. એના સિવાયના બીજા નિક્ષેપોમાં-આવશ્યકોમાં-રાગદ્વેષ અને હિંસા વગેરે દોષોનો સદ્ભાવ હોવાથી અને મોક્ષ માર્ગના ઉપદેશ આપવામાં પ્રવૃત્ત તીર્થંકરોની એમની આરાધના કરવાની આજ્ઞાનો અભાવ હોવાથી ધર્મના લક્ષણનો સમન્વય જ થતો નથી. મુકિતનો જે સાધક હોય છે તે જ જૈન-ધર્મ છે. આ ૩ નિક્ષેપરૂપ આવશ્યકોમાં મુકિતની સાધકતાનો અભાવ છે માટે એઓ જૈન ધર્મના પદને સ્વપ્નમાંયે મેળવી શકે તેમ નથી

અનુયોગદ્વારમાં એ જ વાત કહેવામાં આવી છે—

से किं तं नामावस्सयं ? नामावस्सयं जस्स णं जीवस्स अजीवस्स वा जीवाण वा

जीवाण वा अजीवाण वा तदुभयस्स वा तदुभयाण वा आवस्सएत्ति नामं कज्जइ, से तं नामावस्सयं।

अथ किं तत् नामावश्यकं ? नामावश्यकं–यस्य खलु जीवस्य वा अजीवस्य वा जीवानां वा अजीवानां वा, तदुभयस्य वा तदुभययोर्वा वा आवश्यकमिति नाम क्रियते तदेतन्नामावश्यकम्।

" से किं तं ठवणावस्सयं २ ? जण्णं कट्ठकम्मे वा पोत्थकम्मे वा चित्तकम्मे वा लेप्पकम्मे वा गंथिमे वा वेढिमे वा पूरिमे वा संघाइमे वा अक्खे वा वराडए वा एगो वा अणेगो वा सब्भावठवणा वा असब्भावठवणा वा आवस्सएत्ति ठवणा ठविज्जइ, से त ठवणावस्सयं।

छाया–अथ किं तत् स्थापनावश्यकम्? स्थापनावश्यकं यत् खलु काष्ठकर्म वा पुस्तकर्म वा चित्रकर्म वा लेप्यकर्म वा ग्रन्थिमं वा वेष्टिमं वा पूरिमं वा सङ्घातिमं

वा जीवाण वा अजीवाण वा तदुभयस्स वा तदुभयाण वा आवस्सएत्ति नामं कज्जइ से तं नामावस्सयं।

से किं तं ठवणावस्सयं ? जण्णं कट्ठकम्मे वा पोत्थकम्मे वा चित्तकम्मे वा लेप्पकम्मे वा गंथिमे वा वेढिमे वा पूरिमे वा संघाइमे वा अक्खे वा वराडए वा एगो वा सब्भावठवणा वा असब्भावठवणा वा आवस्सएत्ति ठवणा ठविज्जइ, से तं ठवणावस्सयं

भावार्थ—जीव, अजीव अथवा तदुभय स्वरूप आदि पदार्थों में " यह आवश्यक है " इस प्रकार नाम संस्कार करना वह जीव अजीव आदि नाम आवश्यक है इस नाम आवश्यक में आवश्यक के वास्तविक गुणादि कुछ भी नहीं होते हैं–सिर्फ लोक व्यवहार के लिये ही इस प्रकार की वहां पर निक्षेपविधि करली जाती है काष्ठ, पुस्तक चित्र

अजीवाण वा तदुभयस्स वा तदुभयाण वा आवस्सए त्ति नामं कज्जइ से त नामावस्सयं।

से किं तं ठवणावस्सयं ? जण्णं कट्ठकम्मे वा पोत्थकम्मे वा चित्तकम्मे वा लेप्पकम्मे वा गंथिमे वा वेढिमे वा पूरिमे वा संघाइमे वा अक्खे वा वराडए वा एगो वा अणेगो वा सब्भावठवणा वा असब्भावठवणा वा आवस्सएत्ति ठवणा ठविज्जइ, सेतं ठवणावस्सयं।

ભાવાર્થ—જીવ, અજીવ અથવા તદુભય સ્વરૂપ વગેરે પદાર્થોમાં " આ આવશ્યક છે " આ રીતે નામ સંસ્કાર કરવો ને જીવ અજીવ વગેરે ' નામ આવશ્યક ' છે આ નામ આવશ્યકમા આવશ્યક ના વાસ્તવિકગુણ વગેરે કંઇ જ હોતા નથી ફક્ત લોકવ્યવહાર ના માટે જ આ જાતની ત્યા નિક્ષેપવિધિ કરવામાં

वा अक्षं वा वराटकं वा एको वा अनेको वा सद्भावस्थापना वा असद्भावस्थापना वा 'आवश्यक'-मिति स्थापना स्थाप्यते, तदेतत् स्थापनावश्यकम् ।

भावावश्यकस्वरूपशून्ये गोपालदारकादौ आवश्यकेति नामकरणे नाम्ना-नाममात्रेणावश्यकं नामावश्यकं गोपालदारकादिर्भवति। स्थापनाऽपि भावावश्यक

एवं अक्ष-शतरंज की गोटी आदि में एक अथवा अनेक आवश्यक क्रिया करने वाले श्रावक आदि का तदाकार अथवा अतदाकार लिखित चित्र स्थापना आवश्यक (निक्षेप) है यह स्थापना दो प्रकार की है एक सद्भाव स्थापना और २ दूसरी असद्भावस्थापना। सद्भाव स्थापना में जिसकी स्थापना की जाती है उसकी सर्व आकृति कोतरी रहती है असद्भूत स्थापना में इस प्रकार की आकृति आदि नहीं रहती है वहां पर केवल संकेत ही है जैसे शतरंज की गोटियां में यह प्यादा है यह वजीर है, यह हाथी है इत्यादि सिर्फ कल्पना ही कल्पना रहती है-वहां उनका कोई भी आकार कोतरा नहीं रहता है। नाम निक्षेप में जिस प्रकार भाव आवश्यक शून्यता रहती है उसी प्रकार स्थापना में भी यही बात रहती है किसी गोपाल (ग्वालिये) के लड़के का "आवश्यक" इस प्रकार का नाम जिस प्रकार भाव आवश्यक रहित नाम निक्षेप में है उसी प्रकार भाव आवश्यक के स्वरूप से शून्य स्थापना निक्षेप में भी "यह आवश्यक है" यह स्थापना निक्षेप है।

આવે છે, કાષ્ઠ, પુસ્તક, ચિત્ર અને અક્ષ-શતરંજ ની સોગઠી વગેરેમાં એક કે અનેક આવશ્યક ક્રિયા કરનાર શ્રાવક વગેરેનું તદાકાર કે અતદાકાર લેખિત ચિત્ર-સ્થાપન આવશ્યક (નિક્ષેપ) છે. આ સ્થાપના બે પ્રકારની છે. એક સદ્ભાવ સ્થાપના અને બીજી અસદ્ભાવ સ્થાપના. સદ્ભાવ સ્થાપનામાં જેની સ્થાપના કરવામાં આવે છે તેની આકૃતિ સંપૂર્ણપણે કોતરેલ હોય છે. અસદ્-ભૂત સ્થાપનામાં આ જાતની આકૃતિ વગેરે રહેતી નથી ત્યાં ફક્ત સંકેત જ છે. જેમ શેતરંજની સોગઠીઓમાં આ પાયદળ છે, આ વજીર છે, આ હાથી છે વગેરે ફક્ત કોરી કલ્પના જ હોય છે તેમાં તેમની કોઇપણ જાતની આકૃતિ કોતરેલી હોતી નથી. નામ નિક્ષેપમાં જેમ ભાવ આવશ્યક શૂન્યતા રહે છે તેમજ સ્થાપનામાં પણ એ જ વાત હોય છે. કોઇ ગોવાળિયાના પુત્રનું 'આવ-શ્યક' આ જાતનું નામ જેમ ભાવ આવશ્યક રહિત નામ નિક્ષેપમાં છે તે પ્રમાણે જ ભાવ આવશ્યકના સ્વરૂપથી શૂન્ય સ્થાપના નિક્ષેપમાં પણ "આ આવશ્યક છે" આ સ્થાપના નિક્ષેપ છે.

स्वरूपशून्ये काष्ठकर्मादौ क्रियते। अतो भावशून्ये क्रियमाणत्वाविशेषादनयो-र्नास्ति कश्चिद् भेद इत्याशयेनाह—

"णामट्ठवणाणं को पइविसेसो?। छाया-नामस्थापनयोः कः प्रतिविशेषः?। अत्रोत्तरमुच्यते—

'णामं आवकहिअं, ठवणा इत्तरिआ वा होज्जा आवकहिआ वा'॥ छाया-नाम-यावत्कथिकं, स्थापना-इत्वरिका वा भवेद् यावत्कथिका वा।

'णामं आवकहियं' नाम यावत्कथिकं-स्वाश्रयद्रव्यस्यास्तित्वकथां याव-दनुवर्तते इत्यर्थः, स्थापना तु 'इत्तरिया वा' इत्वरिका वा स्वल्पकालस्थायिनी वा 'होज्जा' स्यात्, यावत्कथिका वा, अयं भावः-काचित्-स्थापना स्वाश्रय-द्रव्यस्य सद्भावेऽपि, मध्यकाल एव निवर्तते, काचित्तु-तत्सत्तां यावदवतिष्ठते

शंका—जिस प्रकार भाव आवश्यक के स्वरूप से शून्य गोपाल के लड़के आदि में "आवश्यक" इस प्रकार का नामनिक्षेपरूप आवश्यक है उसी प्रकार भाव आवश्यकके स्वरूपसे शून्य काष्ठधर्म आदिकों में भी यही बात है। अतः भाव आवश्यकके स्वरूपकी शून्यताकी अपेक्षा से इन दोनोंमें कोई भी अन्तर नहीं है। तो फिर इन दोनोंमे क्या भेद है!

उत्तर—"णामं आवकहियं ठवणा इत्तरिया वा होज्जा आवकहिआ-वा" इस प्रकार की शंका ठीक नहीं-क्यों कि नाम यावत्कथित होता है स्थापना इत्वरिक और यावत्कथिक दोनों प्रकार की होती है। अपने आश्रयभूत द्रव्यका जबतक अस्तित्व-सद्भाव रहता है तबतक नामनि-क्षेप रहता है। इत्वरिक शब्द का अर्थ अल्पकालीन है चित्र एवं अक्ष आदिकों में यह स्थापना अल्पकालीन होती है। इस प्रकार नाम और

શંકા—જેમ ભાવ આવશ્યકના સ્વરૂપથી શૂન્ય ગોવાળિયાના પુત્ર વગે-રેમાં "આવશ્ય" આ જાતનું નામ નિક્ષેપ રૂપ આવશ્યક છે તેમજ ભાવ આવશ્યકના સ્વરૂપથી શૂન્ય કાષ્ઠકર્મ વગેરેમા પણ એ જ વાત છે. એથી ભાવ આવશ્યકના સ્વરૂપની શૂન્યતાની દૃષ્ટિએ આ બંનેમાં કોઈ પણ જાતનો તફાવત નથી, ત્યારે આ બંનેમા ભેદ શો છે?

ઉત્તર—(णाम आवकहियं ठवणा इत्तरिया वा होज्जा आवकहिआ वा) શંકા યોગ્ય નથી કેમકે નામ યાવત્ કથિત હોય છે. સ્થાપના ઇત્વરિક અને યાવત્કથિત બંને પ્રકારની હોય છે. પોતાને આશ્રયભૂત દ્રવ્યનુ જ્યાં સુધી સદ્-ભાવ-અસ્તિત્વ રહે છે ત્યાં લગી નામ નિક્ષેપ રહે છે। ઇત્વરિક શબ્દનો અર્થ અલ્પકાલીન છે. ચિત્ર અને અક્ષ (રમવાના પાસા) વગેરેમાં એ સ્થાપના અલ્પકાળ માટે હોય છે. આ રીતે નામ અને સ્થાપનામાં ભાવ. નિક્ષેપની

इति। एवं च-नामस्थापनयोर्भावशून्यत्वेनाधारसाम्येऽपि भेदः स्वस्वावस्थानकालकृत एव भगवता प्रदर्शितः। यद्यपि गोपालदारकादौ विद्यमानेऽपि कदाचिदनेकनामपरिवर्तनं लोके क्वचिद् दृश्यते, तथा च कालकृतोऽपि भेदो नास्ति, तथापि-बहुशः स्थले नाम्नो यावत्कथिकत्वमेव दृश्यते, नाम्नः परावर्तनं तु क्वचिद्विरलतयोपलभ्यते। अतोऽल्पस्थलव्यापित्वेन नाम्न इत्वरिकता भगवता न विवक्षिता। नाम्नोऽल्पकालिकताकल्पने तूत्सूत्रप्ररूपणापत्तिरिति बोध्यम्।

स्थापनामें भावनिक्षेपकी शून्यताकी अपेक्षासे समानता आती है तो भी अपने२ कालकी अपेक्षासे इनमें इस प्रकार भेद-अन्तर माना गया है।

शंका—नामनिक्षेप में जो यावत्कथिकता प्रदर्शित की गई है, वह ठीक नहीं है-कारण कि हम देखते हैं नामवान द्रव्य-गोपालदारक आदि के विद्यमान रहते हुए भी उस में अनेक नामों का परिवर्तन होता रहता है। कभी उसका "आवश्यक" यह नाम होता है, तो "इन्द्र" यह नाम रख लिया जाता है। फिर "आवश्यक" इस नाम निक्षेप में यावत्कथिकता कैसे आ सकती है?

उत्तर-शंका ठीक है इस प्रकार से विचार करने पर कालकृत अन्तर यद्यपि उन दोनों में नहीं मालूम होता है-तो भी इस बात की यहां पर विवक्षा नहीं है इसका कारण यही है कि यह नामपरिवर्तन अल्पस्थलवर्ती होनेसे व्याप्य है। यह बात सब जगह नहीं होती। कहीं २ ही होती है यहां सामान्यकथन है-विशेष नहीं। सामान्यरूप से नाम

શૂન્યતાની અપેક્ષાથી સમાનતા આવી જાય છે, છતાંયે પોતપોતાના કાળની અપેક્ષાથી તેઓમાં આ જાતનો ભેદ અન્તર માનવામાં આવ્યો છે.

શંકા—નામ નિક્ષેપમાં જે યાવત્કથિકતા બતાવવામાં આવી છે, તે ઉચિત નથી. કારણ કે નામવાળું ગોપાળદારક વગેરેના વિદ્યમાન રહેતા પણ તેમાં અનેક નામોનું પરિવર્તન થતું રહે છે. કોઈ વખતે તેનું નામ 'આવશ્યક' રાખવામાં આવે છે તો કોઇ વખત 'ઇન્દ્ર' નામ રાખવામાં આવે છે. તો પછી 'આવશ્યક' આ નામ નિક્ષેપમાં યાવત્કથિત કેવી રીતે આવી શકે છે?

ઉત્તર—શંકા ઉચિત છે. આ રીતે વિચાર કરવાથી જો કે કાળકૃત અંતર તેઓ બંનેમાં જણાતું નથી છતાંયે આ વાતની અહીં વિવક્ષા નથી. એનું કારણ આ પ્રમાણે છે કે આ નામ પરિવર્તન અલ્પ-સ્થલવર્તી હોવાથી વ્યાપ્ય છે, આ વાત બધે સ્થાને હોતી નથી કોઇક કોઈક સ્થાને જ હોય છે. અહીં

यत्तु-उपलक्षणमात्रं चेदं कालभेदेनैतयोर्भेदकथनम्-अपरस्यापि बहुप्रकार-भेदस्य सम्भवात्, इत्युक्तं, तदुत्सूत्रप्ररूपणम् यथोत्सूत्रप्ररूपणभियानामनिक्षेपे इत्वरिकतायाः क्वचित् संभवेऽपि भगवताऽनुक्तत्वादुपलक्षणमिति न स्वीकृतं तथैव स्थापनायां कालातिरिक्तस्य भेदहेतोः कल्पनेऽप्युत्सूत्रप्ररूपणं प्रसज्येत कालान्यकृत-

यावत्कथिक ही होता है। इसी अपेक्षा को लक्ष्य में रखकर भगवान ने उसमें इत्वरिकता का कथन न कर केवल यावत्कथिकता का ही कथन किया है यदि नाम में जो केवल इत्वरिकता ही मानी जावेगी-तो यह बात सिद्धान्त से बहिर्भूत होने से मानने वाले के लिये उत्सूत्रप्ररूपणा करने की आपत्ति का दोष आवेगा-क्यों कि शास्त्र में भगवान ने नाम निक्षेप में केवल यावद्रव्य भविता ही प्रदर्शित की है।

जो व्यक्ति इस शंका का इस प्रकार से समाधान करते हैं कि "काल के भेद से जो नाम और स्थापना में भेद कहा गया है वह केवल उपलक्षण मात्र है-इससे अन्य अनेक प्रकारों से भी इन दोनों में परस्पर भेद है यह बात जानी जाती है" सो उनका यह कथन शास्त्र-मर्यादा के विरुद्ध है जिस प्रकार नाम निक्षेप में कहीं २ इत्वरिकता होने पर भी भगवान द्वारा स्वीकृत न होने से वह उपलक्षणरूप से स्वीकृत नहीं की गई है-उसी प्रकार स्थापना में भी कालकृत भेद के

સામાન્ય કથન છે વિશેષ નહિ. સામાન્ય રૂપથી નામ યાવત્ કથિત જ હોય છે આ વાતને સામે રાખીને જ ભગવાને તેમાં ઇત્વરિકતાનું કથન ન કરતા ફક્ત યાવત્કથિકતાનું કથન કર્યું છે. જો નામમાં ફક્ત ઇત્વરિકતા જ માનવામાં આવશે તો આ વાત સિદ્ધાન્તની બહાર હોવાથી માનનાર માટે ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણા કરવા રૂપ દોષ આવશે. કેમકે શાસ્ત્રમાં ભગવાને નામ નિક્ષેપમા ફક્ત યાવદ્-દ્રવ્ય-ભાવિતા જ બતાવી છે.

જે માણસો આ શંકાનુ સમાધાન આ પ્રમાણે કરે છે કે "કાલના ભેદથી જે નામ અને સ્થાપનામાં તફાવત બતાવવામાં આવ્યો છે તે ફક્ત ઉપલક્ષણ માત્ર છે. એથી બીજા અનેક પ્રકારોથી પણ આ બંનેમાં પરસ્પર તફાવત છે આ વાત સ્પષ્ટ થાય છે." જેથી તેમનુ આ કહેવું શાસ્ત્ર-મર્યાદાથી વિપરીત છે. જેમ નામ-નિક્ષેપમાં કોઈક કોઈક ઠેકાણે ઈત્વરિકતા હોવા છતાંયે ભગવાન વડે સ્વીકૃત ન હોવાથી તે ઉપલક્ષણ રૂપથી સ્વીકારવામાં આવી નથી, તેમ સ્થાપનામાં પણ કાલકૃત ભેદ સિવાય બીજા વડે અન્તર-ભેદ-માનવામાં

भेदस्य भगवताऽनुक्तत्वात्। एतेन-" यत् कैश्चिदुक्तं यथा प्रतिमारूपस्थापनादर्शनाद् भावः समुल्लसति नैवं नामश्रवणमात्रादिति नामस्थापनयोर्भेदः, यथा चेन्द्रादेः प्रतिमारूपस्थापनायां,लोकस्योपयाचितेच्छा पूजाप्रवृत्ति,समीहितलाभादयो-दृश्यन्ते,नैव नामेन्द्रादौ, इत्यपि तयोर्भेदः। एवमन्यदपि वाच्यमिति तदुत्सूत्रप्ररू-

सिवाय अन्य द्वारा अन्तर भेद मानने में उत्सूत्र प्ररूपणा करने का दोष आता है, कारण कि भगवान ने कालकृत भेदके सिवाय स्थापना निक्षेप में अन्य और किसी दूसरी अपेक्षा से भेद का कथन नहीं किया हैं इस प्रकार के कथन से " यह बात भी जो दूसरों ने कही है कि नाम और स्थापना में इस प्रकार से भी भेद है-कि " जिस प्रकार अर्हंत की प्रतिमारूपस्थापना के देखने-दर्शन करने से भावों की जागृति होती है, उस प्रकार नाम निक्षेपरूप अर्हंत नाम के सुनने से भावों की जागृति नहीं होती है। अथवा-इन्द्रादिक की प्रतिमारूप स्थापना में जिस प्रकार से लौकिकजनों की उस प्रतिमा से कुछ मांगने की इच्छा उसके पूजन करने की भावना और उस प्रतिमा द्वारा उनके अभिलषितमनोरथों की पूर्ति होती हुई देखी जाती है. उस प्रकार नामरूप इन्द्र में उनकी इस प्रकार की प्रवृत्ति और अभिलषित मनोरथों की पूर्ति होती हुई नहीं देखी जाती है। इसी तरह और भी ऐसी कई बातें हैं जो नाम और स्थापना में अन्तर कराती है। यह सब कालकृत भेद के सिवाय

ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણુ રૂપ દોષ થઈ જાય છે કારણુ કે ભગવાને કાલકૃત ભેદ સિવાય સ્થાપના નિક્ષેપમાં બીજી કોઈ અન્ય દૃષ્ટિએ ભેદ-કથન કર્યું નથી. આ જાતના કથનથી " આ વાત પણુ જે બીજાઓએ કહી છે કે નામ અને સ્થાપનામાં આ રીતે પણુ તફાવત છે કે " જેમ અર્હંતની પ્રતિમા રૂપ સ્થાપનાને જોવા એટલે કે દર્શન કરવાથી ભાવોની જાગૃતિ થાય છે, તેમ નામ નિક્ષેપ રૂપ અર્હંતના નામને સાંભળવાથી પણુ ભાવોની જાગૃતિ હોતી નથી. અથવા તો ઇન્દ્ર વગેરેની પ્રતિમા રૂપ સ્થાપનામાં જેમ લૌકિક માણુસોની તે પ્રતિમાથી કંઇક માગણી કરવાની ઇચ્છા, તેની પૂજા કરવાની ભાવના અને તે પ્રતિમા વડે તેમના અભિલષિત મનોરથોની પૂર્તિ થતી દેખાય છે તેમ નામ રૂપ ઇન્દ્રમાં તેમની આ જાતની પ્રવૃત્તિ અને અભિલષિત મનોરથોની પૂર્તિ થતી જોવામાં આવતી નથી. આ પ્રમાણે બીજી પણુ ઘણી બાબતો છે જે નામ અને સ્થાપનામાં અંતર કરાવે છે.

पणा जनितानन्तसंसारजनकम् । आगमे यदिदमुपलभ्यते–" तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयसवणयाए महाफलं ।" इति, तत्र नास्ति नामनिक्षेपस्य विषयः । "अरहंताणं भगवंताणं" इत्युक्त्या तस्मिन्नर्थे प्रयुक्तस्य नाम्न एव श्रवणेन महाफलसंभवात्, गोपालदारकादौ प्रयुक्तस्य नाम्नः श्रवणेन तु गोपालदारकाद्यर्थस्यैव बोधादात्मपरिणामशुद्धिहेतुत्वं तस्य नास्तीति । नामनिक्षेपस्थले भगवतोऽर्हतः स्मरणासंभवः, तस्य भावशून्यत्वात्, अत्र तु नामगोत्राभ्यां भगवदर्हतः सम्बन्धं षष्ठ्यन्तपदप्रयोगादेव दर्शयता भगवता नामनिक्षेपो न विवक्षितः । भावजिन-

---

नाम और स्थापना में भेद कल्पना का कथन उत्सूत्र प्ररूपक होने से अनन्त संसार का जनक है अतः हेय है । "तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयसवणयाए महाफलं" आगम में जो यह सूत्र लिखा हुआ देखा है उसका अभिप्राय नामनिक्षेप परक नहीं है । अर्थात्–इस सूत्र से नाम निक्षेप की पुष्टि नहीं होती है । यदि सूत्रकार को इस सूत्र से जो नामनिक्षेप की पुष्टि करना इष्ट होता तो "अरहंताणं भगवंताणं इस पद के स्वतन्त्र देने की कोई खास आवश्यकता नहीं थीं । अतः यह बात माननी चाहिये कि अरहंत भगवान के ही नामगोत्र के श्रवण से महाफल होता है । किसी गोपाल के लड़के में निक्षिप्त "अरहंत" इस नाम के सुनने से नहीं । उस में प्रयुक्त भी उस नाम के श्रवण से तो केवल उस गोपाल दारकरूप अर्थ का ही बोध होता है । "अरहंत" यह नाम जिसरूप के संकेत से अरि-

---

આ બધું કાલકૃત ભેદ સિવાય નામ અને સ્થાપનામાં ભેદ કલ્પનાનું કથન ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપક હોવાથી અનંત સંસારનું જનક છે એથી ત્યાજ્ય છે. "तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नाम गोयसवणयाए महाफलं" આગમમાં જે આ સૂત્ર મળે તેનો અભિપ્રાય નામનિક્ષેપપરક નથી. એટલે કે આ સૂત્ર વડે નામ નિક્ષેપ–પુષ્ટિ થતી નથી. જો સૂત્રકારને આ સૂત્ર વડે નામ–નિક્ષેપની પુષ્ટિ કરવું ઇષ્ટ લાગતું હોત તો "अरहंताणं भगवंताणं" આ પદને સ્વતંત્ર રૂપમાં મૂકવાની કોઈ ખાસ આવશ્યકતા હતી નહિ. એથી આ વાત માની લેવી જોઈએ કે અરહંત ભગવાનના નામ ગોત્ર–શ્રવણથી મહાફળ પ્રાપ્ત હોય છે. કોઇ ગોપાળના પુત્રમાં નિક્ષિપ્ત "અરહંત" આ નામને સાંભળવાથી નહિ તેમાં પ્રયુક્ત પણ તે નામના શ્રવણથી તો ફક્ત તે ગોપાળના પુત્ર રૂપ અર્થનો જ બોધ હોય છે. "अरहंत" આ નામ જે રૂપના સંકેતથી અરિહંત પ્રભુમાં સંકેતિત થયું છે–તે રૂપના સંકેતથી જ ગોપાળના પુત્રમાં સંકેતિત

हंत प्रभु में संकेतित हुआ है-उसी रूप से संकेत से गोपाल के पुत्र में संकेतित नहीं हुआ है। लौकिक व्यवहारके लिये ही केवल "अरहंत" ऐसा उसका नाम करलिया गया है। नाम निक्षेप में जिसका निक्षेप किया जाता है उस जाति के द्रव्य, गुण और कर्म-क्रिया आदि निमित्त की अनपेक्षा रहती है इस निमित्त के सद्भाव में वह नाम निक्षेप का विषय नहीं माना जाताहै। भाव निक्षेप का ही वह विषय होता है अतः यह निश्चित होता है कि अरहंत भगवान के ही नाम गोत्र के श्रवण के महाफल सूत्रकार ने प्रकट कियाहै यदि नामनिक्षेप से यह फल प्राप्त होने लगता तो फिर भावनिक्षेप की आवश्यकता ही क्या थी। उसके श्रवण मात्र से ही जीवों के आत्मिक भावों में शुद्धिरूप महाफल का लाभ होने लगता। तथा जिसका "अरिहंत" यह नाम है वह स्वयं अरिहंत प्रभु की तरह महापवित्र, ३४ अतिशयों सहित ८ प्रातिहार्य आदि विभूति संपन्न हो जाता। परन्तु ऐसा नहीं होता है अतः यह मानना चाहिये कि यह सूत्र भावनिक्षेप की ही पुष्टि विधायक है-नामनिक्षेप का नहीं। नामनिक्षेप से भगवान अरिहंत की स्मृति भी नहीं कराई जाती है-कारण कि वह नामनिक्षेप स्वयं उस प्रकार के भावों से शून्य है। अनुभूत पदार्थ की स्मृति हुआ करती

થયું નથી. લૌકિક વ્યવહાર માટે ફક્ત "અરહંત" આવું નામ પાડવામાં નામનિક્ષેપમાં જેનો નિક્ષેપ કરવામાં આવે છે તે જાતિના દ્રવ્ય, ગુણ અને કર્મ-ક્રિયા વગેરે નિમિત્તની અપેક્ષા રહે છે. આ નિમિત્તના સદ્ભાવમાં તે નામ-નિક્ષેપનો વિષય માનવામાં આવતો નથી. ભાવ નિક્ષેપનો જ તે વિષય હોય છે. એથી એ સિદ્ધ થાય છે કે અરહંત ભગવાનના જ નામ ગોત્રના શ્રવણથી જ સૂત્રકારે મહાફળ બતાવ્યું છે. જો નામનિક્ષેપથી આ ફળ મળી શક્યું હોત તો પછી ભાવનિક્ષેપની આવશ્યકતા જ શી હતી? તેના શ્રવણ માત્રથી જ જીવોની આત્મિક ભાવોમાં શુદ્ધિ રૂપ મહાફળનો લાભ થવા માંડતો. તેમજ જેનું "અરિહંત" આ નામ છે તે પોતે અરિહંત પ્રભુની જેમ મહાપવિત્ર, ૩૪ અતિશયો સહિત, ૮ પ્રતિહાર્ય વગેરે વિભૂતિઓથી સંપન્ન થઇ જાત, પણ આવુ થતું નથી એથી એમ સમજી લેવું જોઇએ કે આ સૂત્રથી ભાવનિક્ષેપની જ પુષ્ટિ થાય છે-નામ નિક્ષેપની નહિ. નામ નિક્ષેપથી ભગવાન અરિહંતની સ્મૃતિ પણ કરવામાં આવતી નથી કારણ કે તે નામ-નિક્ષેપ જાતે તે જાતના ભાવોથી રહિત છે અનુભૂત પદાર્થનું સ્મરણ થયા કરે છે જેનું

है जिसका "अरिहंत" यह नाम रखा गया है उसके देखने से अरिहंत की स्मृति हो भी कैसे सकती है-स्मृति तो अरिहंत की जब हो सकती कि जब उसमें उनकी स्मृति के चिह्न होते-वह स्वयं उस प्रकार के हेतु हो सकती है माना कि श्रवण कर्त्ता शास्त्र आदिकों में अरिहंतप्रभु के गुणों का वर्णन पढकर चित्त में उकेर कर भले ही "अरिहंत" इस नामके श्रवण से उनका स्मरण कर सकता है। परन्तु गोपालदारकादी में कृत नाम से उनका स्मरण उसे नहीं हो सकता-उस नाम से तो उसमें ही संकेतित उस शब्द से उस गोपाल दाररूप अर्थ का ही उसे बोध होगा। यदि अरिहंत नाम के सुनने से सुनने वाले को अरिहंत पदार्थ का भान होता हैतो वह नाम निक्षेप का विषय नहीं माना गया है भावनिक्षेप का ही वह विषय है। थोड़ा बहुत भी किसी अपेक्षा से सादृश्य होने पर एक पदार्थ को देखकर सदृश दूसरे पदार्थ का स्मरण हो जाता है परन्तु प्रकृत में गोपालदाकरूप अरिहंत नामनिक्षेप में ऐसा कौन सा सादृश्य है जो वह अरिहंत का स्मरण करा सके। अतः नाम और गोत्र के साथ साक्षात् भगवान अरिहंत का संबंध षष्ठी विभक्ति द्वारा प्रदर्शित करने वाले सूत्रकार ने इस सूत्र में नामनिक्षेप का कोई

"અરિહંત" આ નામ રાખવામાં આવ્યું છે. તેને જોવાથી અરિહંત સ્મૃતિ પણ કેવી રીતે થઇ શકે તેમ છે? સ્મૃતિ તો અરિહંતની ત્યારે જ થઈ શકે કે જ્યારે તેમાં તેમની સ્મૃતિના ચિહ્નો હોય, તે પોતે આ જાતના ભાવોથી રહિત થયેલો હોય, ત્યારે તે કેવી રીતે તેમની સ્મૃતિનું કારણ થઈ શકે છે? આ વાત આપણે સ્વીકારી શકીયે તેમ છીએ કે શ્રવણ-કર્ત્તા શાસ્ત્ર વગેરેમાં અરિહંત પ્રભુના ગુણોનું વર્ણન વાચીને ચિત્તમાં ધારણ કરીને ભલે 'અરિહંત' આ નામના શ્રવણથી તેમનું સ્મરણ કરી શકે છે. પણ ગોપાળદારક વગેરેમાં કૃત નામથી તેનું સ્મરણ થઈ શકતું નથી. તે નામ વડે તો તેમાં જ સંકેતિત તે શબ્દથી તે ગોપાળદારક રૂપ અર્થનો જ તે બોધ થશે જો અરિહંત નામ શ્રવણથી સાંભળનારને અરિહંત પદાર્થોનું જ્ઞાન થાય છે ત્યારે તે નામનિક્ષેપનો વિષય માનવામાં આવ્યો નથી ભાવનિક્ષેપનો જ તે વિષય છે કોઈ પણ રીતે થોડું પણ સરખાપણું હોવાથી એક પદાર્થને જોઇને તેના સરખા બીજા પદાર્થનું સ્મરણ થઈ જાય છે પણ પ્રકૃતમા ગોપાળદારક રૂપ અરિહંત નામનિક્ષેપમાં એવું કઈ જાતનું સરખાપણું છે કે જે તે અરિહંતનું સ્મરણ કરાવી શકે? એથી નામ અને ગોત્રની સાથે સાક્ષાત્ ભગવાન અરિહંતનો સંબંધ ષષ્ઠી વિભકિત વડે દર્શાવનારા સૂત્રકારે આ સૂત્રમાં નામનિક્ષેપનો કોઈ પણ વિષય પ્રતિપાદિત કર્યો નથી. ભાવનિક્ષેપ-

बोधकस्य नाम्न एव श्रवणेन महाफलसंभवः। एवं स्थापनापि भावरूपार्थशून्या, स्थापनया भावरूपार्थस्य नास्ति कोऽपि सम्बन्धः। भावजिनशरीरवर्तिनी याऽऽकृतिरासीत्, तस्या आश्रयाश्रयिभावरूपसम्बन्धो भावजिनेन सह तदानीं विद्यमान आसीत्। यथा भावजिनं पश्यतस्तदानीं भावोल्लासोऽपि कस्यचित् संजातः,

---

भी विषय प्रतिपादित नहीं किया है। भावनिक्षेप का ही विषय इसमें कहा है इसलिये भावजिन का बोध कराने वाले जिन 'अरिहंत' आदि नामों के सुनने से ही महाफल होता है ऐसा मानना चाहिये।

इसी प्रकार स्थापना निक्षेप भी भावरूप अर्थ से शून्य है कारण कि इसका उसके साथ कोई संबंध नहीं है भावजिन की अवस्था की आकृति पाषाण आदि की मूर्ति में "यह वही है" इस प्रकार की कल्पना करने का नाम स्थापना है तीर्थंकर प्रकृति के उदयसे समवसरणादि विभूति सहित आत्मा का नाम भाव जिन है इस भाव जिन के शरीर की जो आकृति है उसका संबंध विचारिये उस पाषाण आदि की प्रतिमा में कैसे आसकता है। क्यों कि इस आकृति का संबंध आश्रय आश्रयी भावसे वे जिन जिसकाल में थे उसी काल में उनके साथ था। उनके नहीं रहने पर पाषाण आदि में इस तरह का आश्रय आश्रयी भाव संबंध मानना उचित कैसे कहा जा सकता है, भावजिन के सद्भाव में जिस प्रकार उनके साक्षात् दर्शन से प्राणियों को एक प्रकार

નોજ વિષય તેમાં બતાવ્યો છે એથી જીનનો બોધ કરાવનાર જીન "અરિહંત" વગેરે નામ શ્રવણથી મહાફળ પ્રાપ્ત હોય છે આમ સમજવું જોઈએ

આ પ્રમાણે સ્થાપના નિક્ષેપ પણ ભાવ રૂપ અર્થથી રહિત છે. કારણ કે આનો તેની સાથે કોઈ પણ જાતનો સબંધ નથી. ભાવજીનની અવસ્થાની આકૃતિ પથ્થર વગેરેની મૂર્તિમાં "આ તેઓ જ છે" આ જાતની કલ્પના કરવાનું નામ સ્થાપના છે. તીર્થંકરની પ્રકૃતિના ઉદયથી સમવસરણ વગેરે વિભૂતિ સહિત આત્માનું નામ ભાવજીન છે આ ભાવજીનના શરીરની જે આકૃતિ છે તેના વિષે આપણે પણ વિચાર કરીયે કે પથ્થર વગેરેની પ્રતિમામાં તેનો સબધ કેવી રીતે આવી શકે છે? કેમકે તે આકૃતિનો સંબંધ આશ્રય આશ્રયી ભાવથી તે જીન જે કાળમાં હતા તે કાળમા જ તેમની સાથે હતો. તેમની ગેરહાજરીમાં પથ્થર વગેરેમાં આ જાતનો આશ્રય-આશ્રયી ભાવ સંબંધ માન્ય રાખવો કેવી રીતે યોગ્ય કહી શકાય તેમ છે? ભાવજીનના સદ્ભાવમા જેમ તેમના સાક્ષાત દર્શનથી પ્રાણીઓમાં એક જાતનો ભાવોલ્લાસ ઉદ્ભવે

तथा भक्त्या तासाकृति स्मरतो जनस्य भावोल्लासः संभवतु, तदाऽऽकृतेर्भावजिनेन संबन्धात्, परंतु स्थापनाया आश्रयाश्रयिभावसम्बन्धो नास्ति भावजिनेन सह। भावजिनात्मनस्तत्रावाहनं स्थापनंतु जिनाज्ञाबाह्य प्रवचनविरुद्धं कर्तुमशक्यं, कथं तर्हि–भावजिनसम्बन्धाभावे प्रतिमा भावजिनं तद्गुणं वा स्मारयितुं शक्ता भवेत्।

का भावोल्लास होता है, उसी प्रकार से भक्ति के आवेश से भी उनकी उस आकृति का उस समय स्मरण करने वाले प्राणी को उस प्रकार के भावोल्लास का सद्भाव हो सकता है। इसका निषेध नहीं है। क्यों कि स्मृति के आधारभूत जिन परमात्मा उस काल में स्वयं विद्यमान हैं। उन के अभाव में उन्हें नहीं देखने वाले प्राणियोंको भी उनकी उस प्रतिमा से उसी प्रकार का भावोल्लास होता है यह मान्यता केवल एक कल्पना मात्र है वास्तविक नहीं। इसके समाधान के निमित्त जो यह कहा जाता है कि उस पाषाण प्रतिमा में जिन भगवान की आत्मा का मंत्रादिकों द्वारा आह्वान किया जाता है अतः उस प्रतिमा के दर्शन से साक्षात् भाव जिनके ही दर्शन होते हैं सो यह मान्यता सर्वथा असत्य है–कारण कि मोक्ष में प्राप्त आत्माओं का पाषाण आदि प्रतिमाओं में अपनी मान्यता सिद्ध करने के लिये आह्वान आदि मानना सर्वथा जिनसिद्धान्त से विरुद्ध है मोक्ष प्राप्त आत्माएँ कहीं पर भी किसी भी काल में आह्वान करने से नहीं आती हैं ऐसी जिन-शासन की आज्ञा है इस तरह से उस पाषाण आदि की आत्माओं का

છે, તેમ ભક્તિના આવેશથી પણ તેમની એ આકૃતિનું તે સમયે સ્મરણ કરનાર પ્રાણીને તે જાતના ભાવોલ્લાસની અનુભૂતિ થઇ શકે છે આનો નિષેધ નથી કેમકે સ્મૃતિમાં તે આકૃતિના આધારભૂત જીન પરમાત્મા તે કાળમાં જાતે વિદ્યમાન છે. તેમના અભાવમાં તેમને નહિ જોનારા પ્રાણીઓને પણ તેમની તે પ્રતિમાથી તે પ્રમાણેનો જ ભાવોલ્લાસ થાય છે, આ માન્યતા ફક્ત એક કોરી કલ્પના જ છે, વાસ્તવિક નથી. એના સમાધાન માટે જે આમ કહેવામાં આવે છે કે તે પથ્થરની પ્રતિમામાં જીન ભગવાનના આત્માનું મંત્રો વગેરેથી આવાહન કરવામા આવે છે, એથી તે પ્રતિમાના દર્શનથી પ્રત્યક્ષ ભાવજીન-નાજ દર્શન થાય છે, તો આ માન્યતા સાવ અસત્ય છે કારણ કે મોક્ષમાં પ્રાપ્ત આત્માઓનું પથ્થર વગેરે પ્રતિમાઓમાં પોતાની માન્યતા સિદ્ધ કરવા માટે આહ્વાહન વગેરે માનવું તે તો જીન સિધ્ધાંતથી સાવ વિરૂધ્ધ છે. મોક્ષ પ્રાપ્ત આત્માઓ કોઈ પણ સ્થાને અને કોઇ પણ કાળે આવાહન કરવાથી આવતા નથી. એવી જીન શાસનની આજ્ઞા છે. આ રીતે તે પથ્થર વગેરેની પ્રતિમામા

सर्वथा कुप्रावचनिकद्रव्यावश्यकवत् प्रतिमापूजनं कुर्वन्तः कारयन्तश्च मिथ्यादृष्टित्वं प्राप्नुवन्ति न तु सम्यक्त्वमिति ।

द्रव्यावश्यकं-द्विविधं-आगमतो नोआगमतश्च । यस्य जन्तोरावश्यकशास्त्रं शिक्षितादिगुणोपेतं भवति, स जन्तुस्तत्रावश्यकशास्त्रे शिष्याध्यापनरूपया वाचनया गुरुं प्रति प्रश्नलक्षणया प्रच्छनया, पुनः पुनः सूत्रार्थाभ्यासरूपया परावर्तनया, तथा

अह्वान होने से आना मान लिया जाय तो फिर उस प्रतिमा में सजीवता मानने में क्या दोष है इसलिये यह स्वीकार करना ही चाहीये। कि भावजिन के अभाव में वह प्रतिमा भावजिन एवं उनके गुणों का स्मरण करवाने में सर्वथा समर्थही है। जब यह निश्चित सिद्धान्त है तो फिर इसकी पूजनादि करने कराने से जो मनुष्य समकित की प्राप्ति होना मानते हैं वे उस विधवा कि दशा जैसे हैं जो अपने पति की फोटो या मूर्ति के दर्शन एवं सहवास आदि से सन्तान की उत्पत्ति की कामना करती हो। इसलिये कुप्रावचनिक द्रव्य आवश्यक की तरह यह प्रतिमापूजनादि कर्म करने कराने वाले दोनों ही जन मिथ्यात्वरूप दृष्टि के ही पात्र हैं, सम्यक्त्व के नहीं।

द्रव्य निक्षेपरूप आवश्यक, आगम और नोआगम के भेद से दो प्रकार का है। उसमें जिस प्राणी के आवश्यक शास्त्र शिक्षितादिगुणों से युक्त है वह प्राणी उस आवश्य शास्त्र में, शिष्यों का पढानेरूप

તે આત્માઓનું આવાહન હોવાથી આવવું માની લઈએ તો પછી તે પ્રતિમાને સજીવ માનવામાં શો વાંધો છે? એટલા માટે આપણે આ વાત સ્વીકારવી જ જોઈએ કે ભાવજીનના અભાવમાં તે પ્રતિમા ભાવજીન અને તેમના ગુણોનું સ્મરણ કરાવવામાં સંપૂર્ણપણે સમર્થ જ છે. જ્યારે આ સિધ્ધાન્ત નિશ્ચિત રૂપે માન્ય થયેલો છે ત્યારે તેનુ પૂજન વગેરે કરાવવાથી જે લોકો સમકિતની પ્રાપ્તિ થવી માને છે તેમની તો વિધવા જેવી દશા છે કે જે પોતાના પતિની છબી કે મૂર્તિના દર્શન અને સહવાસ વગેરેથી સંતાન મેળવવાની ઇચ્છા કરતી હોય! એટલા માટે કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય આવશ્યકની જેમ આ પ્રતિમા પૂજન વગેરે કાર્ય કરનાર તેમજ કરાવનાર બંને માણસો મિથ્યાત્વ રૂપ દૃષ્ટિનાં જ પાત્ર છે, સમ્યકત્વનાં નથી.

દ્રવ્ય નિક્ષેપ રૂપ આવશ્યક આગમ તેમજ નોઆગમના ભેદથી બે પ્રકાર છે. તેમાં જે પ્રાણી આવશ્યક શાસ્ત્ર શિક્ષિત વગેરે ગુણોથી યુકત છે તે પ્રાણી તે આવશ્યક શાસ્ત્રમાં શિષ્યોને ભણાવવા રૂપ વાચનાથી, ગુરુ-પ્રતિ તદ્

धर्मकथया वर्तमानोऽप्यनुपयोगे सति आगमतो द्रव्यावश्यकम्, 'अणुवओगो दव्वं' इति वचनात्। अनुपयोगो भावशून्यता।

वाचना से, गुरु के प्रति तद्विषयक प्रश्न लक्षणरूप पृच्छना से बार बार सूत्र और अर्थ के अभ्यासरूप परावर्तन से तथा धर्मकथा से वर्तमान होता हुआ भी अनुपयुक्त अवस्थासंपन्न होने से आगम की अपेक्षा द्रव्य आवश्यक है। अनुपयोग का नाम ही द्रव्य है।

भावार्थ-" भूतस्य भाविनो वा भावस्य हि कारणं तु यल्लोके तद्द्रव्यम् " यह द्रव्यनिक्षेप का लक्षण है। भूतपर्याय या भविष्यत् पर्याय का जो कारण आधार होता है, वह द्रव्य है जिस प्रकार किसी राजा के युवराज को राजा कह दिया जाता है यद्यपि वह अभी वर्तमान में राजारूपपर्याय से युक्त नहीं है-आगे उसे राजपर्याय प्राप्त होगी, परन्तु फिर भी उसे व्यवहार में लोग राजा कहते हैं। यह भविष्यत् पर्याय की अपेक्षा द्रव्य निक्षेपका विषय है। जोपहिले राजा था-कारण वश जब वह राजागद्दी का परित्याग कर देता है-तब भी लोग उसे राजा कहते हैं। यहां उस राजा में यद्यपि वर्तमान समय में राजपर्याय से युक्तता नहीं है तौ भी भूतकाल की अपेक्षा से ही उसे राजा कहा जाता है। यह भूतकाल की अपेक्षा से राजपर्याय का आधार होने के कारण द्रव्य-निक्षेप का विषय है प्रकृत में इस निक्षेप की आयोजना इस प्रकार से

વિષયક પ્રશ્ન લક્ષણ રૂપ પૃચ્છનાથી, વારવાર સૂત્ર અને અર્થના અભ્યાસ રૂપ પરાવર્તનથી તથા ધર્મકથાથી વર્તમાન હોવા છતાંયે અનુપયુક્ત અવસ્થા સંપન્ન હોવાથી આગમની અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક છે, અનુપયોગનું નામ જ દ્રવ્ય છે

ભાવાર્થ—" भूतस्य भाविनो वा भावस्य हि कारणं तु यल्लोके तद् द्रव्यम् " આ દ્રવ્ય નિક્ષેપનું લક્ષણ છે. ભૂત-પર્યાય કે ભવિષ્યત પર્યાયનો જે કારણ, આધાર હોય છે, તે દ્રવ્ય છે. જેમ કોઈ રાજાના યુવરાજને રાજા કહી દેવામાં આવે છે. જો કે તે વર્તમાનમા રાજા રૂપ પર્યાયથી યુક્ત નથી. આગળ તેને રાજ પર્યાય પ્રાપ્ત થશે, છતાંયે તેને વ્યવહારમાં લોકો રાજા કહે છે. આ ભવિષ્યત પર્યાયની અપેક્ષા દ્રવ્ય નિક્ષેપનો વિષય છે જે પહેલાં રાજા હતો-પણ કોઈ કારણસર રાજગાદિનો તે પરિત્યાગ કરી દે છે, ત્યારે પણ લોકો તેને રાજા કહે છે. અહીં તે રાજામા જો કે વર્તમાન સમયમા રાજ પર્યાયથી યુકતતા નથી છતાંયે ભૂતકાળની અપેક્ષાથી તેને રાજા કહેવામાં આવે છે આ ભૂતકાળની અપેક્ષાથી તેને રાજા કહેવામા આવે છે આ ભૂતકાળની અપેક્ષાથી રાજપર્યાયનો આધાર હોવા બદલ દ્રવ્ય નિક્ષેપનો વિષય છે. પ્રકૃતમા આ નિક્ષેપની આયો-

अथ नोआगमतो द्रव्यावश्यकमुच्यते-अत्र नो शब्दः सर्वथा प्रतिषेधे देशतः प्रतिषेधेऽपि च वर्तते। तथा च सर्वथा-आगमाभावमाश्रित्य द्रव्यावश्यकं, तथा

होती है कि जो वर्तमान में आवश्यक शास्त्र का ज्ञाता नहीं है आगे भविष्यत् काल में उस शास्त्र का ज्ञाता होंगे उसे तथा जो भूतकाल में उस शास्त्र का ज्ञाता था अब वर्तमान काल में उसका ज्ञाता नहीं है-उसे आवश्यक इस प्रकार जानना या कहना यहद्रव्यनिक्षेप की अपेक्षा आवश्यक है। इसके मूल में दो भेद हैं? आगम द्रव्य निक्षेप और दूसरा नोआगमद्रव्यनिक्षेप। आवश्यक शास्त्र आदि का जो ज्ञाता हो, शिष्यों को जो उसे पढाता हो, उस विषयक गुरु आदि के निकट जो तात्त्विक चर्चा आदि भी करता हो इस प्रकार वाचना, प्रच्छना-पर्यटना अनुप्रेक्षा और धर्मोपदेशरूप पांचो प्रकार के स्वाध्याय से जो उसकी पर्यालोचना कर रहा है-परन्तु उसमें उपयोग नहीं है-अनुपयुक्त है वह आगम की अपेक्षा द्रव्य आवश्यक है। इसमें आवश्यक शब्द के अर्थ का ज्ञान ही आगमरूप से विवक्षित है। अतः आवश्यक शास्त्र का ज्ञाता होता हुआ भी उसमें अनुपयुक्त आत्मा आगम की अपेक्षा द्रव्य आवश्यक है यह बात निश्चित हुई।

नो आगम की अपेक्षा द्रव्य आवश्यक इस प्रकार है-जहां आगम का सर्वथा अभाव या आगम के एक देश का अभाव विवक्षित होता

જના એ રીતે હોય છે કે વર્તમાનમાં જે આવશ્યક શાસ્ત્રનો જ્ઞાતા નથી, ભવિષ્યકાળમાં તે શાસ્ત્રનો જ્ઞાતા થશે તેને તેમજ જે ભૂતકાળમાં તે શાસ્ત્રનો જ્ઞાતા હતો હમણા વર્તમાનકાળમાં તેનો જ્ઞાતા નથી તેને, 'આવશ્યક' આ રીતે જાણવું કે કહેવું આ દ્રવ્યનિક્ષેપની અપેક્ષાએ આવશ્યક છે. એના મૂળ રૂપે બે ભેદો છે-૧ આગમ દ્રવ્ય નિક્ષેપ અને બીજો નોઆગમ દ્રવ્ય નિક્ષેપ. આવશ્યક શાસ્ત્ર વગેરેનો જે જ્ઞાતા હોય, જે શિષ્યોને ભણાવતો હોય, તદ્-વિષયક ગુરૂ વગેરેની પાસે જઇને જે તાત્વિક ચર્ચા વગેરે પણ કરતો હોય, આ રીતે વાચના, પ્રચ્છના, પર્યટના, અનુપ્રેક્ષા અને ધર્મોપદેશ રૂપ પાંચે જાતના સ્વાધ્યાયથી જે તેની પર્યાલોચના કરી રહ્યો છે, પણ તેમાં તેનો ઉપ-યોગ નથી, અનુપયુક્ત છે, તે આગમની અપેક્ષાદ્રવ્ય 'આવશ્યક' છે એમા આવશ્યક શબ્દના અર્થનું જ્ઞાન જ આગમ રૂપથી વિવક્ષિત છે એથી આવશ્યક શાસ્ત્રના જ્ઞાતા હોવા છતાંયે તેમાં અનુપયુક્ત આત્મા આગમની અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક છે, આ વાત સિદ્ધ થઇ છે.

નોઆગમની અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક એ પ્રમાણે છે કે જ્યા આગમનો સંપૂર્ણપણે અભાવ કે આગમના એક દેશનો અભાવ વિવક્ષિત હોય છે તે નો

देशत आगमाभावमाश्रित्य द्रव्यावश्यकं च-नोआगमतो द्रव्यावश्यकम्। तत्-त्रिविधम्-ज्ञशरीरद्रव्यावश्यकं, भव्यशरीरद्रव्यावश्यकं,तद्व्यतिरिक्त द्रव्यावश्यकं चेति।

है-वह नो आगम की अपेक्षा से द्रव्य आवश्यक माना गया है। " नो आगम " में नो शब्द सर्वथा आगम के अभाव का अथवा उसके एक देश के अभाव का बोधक है। इसके ज्ञशरीरद्रव्यावश्यक, भव्यशरीर-द्रव्यावश्यक, और तद्व्यतिरिक्त द्रव्यावश्यक, इस प्रकार तीन भेद हैं। आवश्यक शास्त्र का जो पहिले (भूतकाल में) ज्ञाता था-तथा दूसरों के लिये इस शास्त्र का उपदेश आदि भी जिसने पहिले दिया है ऐसे जीव का अचेतन शरीर ज्ञशरीरद्रव्यावश्यक है जो जीव इस समय आवश्यक शास्त्र का ज्ञाता नहीं है भविष्यत् काल में उसका ज्ञाता बनेगा उसका वह अचेतन शरीर भविष्यत् काल में आवश्यक शास्त्र के ज्ञान का आधार होने की अपेक्षा से, भव्यशरीरद्रव्यावश्यक है। तद्व्यतिरिक्तद्रव्यावश्यक लौकिक कुप्रावचनिक और लोकोत्तर के भेद से ३ प्रकार का है। लौकिकजनों द्वारा आचरित आवश्यक कर्म लौकिक द्रव्यआवश्यक है। जैसे राजसभा में जाने वाले राजा, युवराज, तलवर (कोटपाल) आदि जन प्रातः काल में उठकर राजसभा में जाने के लिये प्रथम प्राभातिक विधियों से निपटते हैं-मुख धोते हैं, दातों को

આગમની અપેક્ષાથી દ્રવ્ય આવશ્યક માનવામાં આવ્યો છે " नोआगम " માં નો શબ્દ આગમના સંપૂર્ણપણે અભાવનો કે તેના એક દેશના અભાવનો બોધક છે તેના જ્ઞશરીર દ્રવ્યાવશ્યક, ભવ્યશરીર દ્રવ્યાવશ્યક અને તદ્‌વ્યતિરિક્ત દ્રવ્યાવશ્યક આ પ્રમાણે ત્રણ ભેદો છે આવશ્યક શાસ્ત્રનો જે પહેલાં (ભૂતકાળમાં) જ્ઞાતા હતો તેમજ બીજાઓ માટે આ શાસ્ત્રનો ઉપદેશ વગેરે પણ જેણે પહેલાં આપ્યો છે એવા જીવનું અચેતન શરીર જ્ઞ શરીર દ્રવ્યાવશ્યક છે. જે જીવ અત્યારે આવશ્યક શાસ્ત્રનો જ્ઞાતા નથી, ભવિષ્યકાળમાં તેનો જ્ઞાતા થશે તેનું તે અચેતન શરીર ભવિષ્યકાળમાં આવશ્યક શાસ્ત્રના જ્ઞાનનો આધાર હોવાને કારણે ભવ્ય શરીર દ્રવ્યાવશ્યક છે. તદ્‌વ્યતિરિક્ત દ્રવ્યાવશ્યક લૌકિક કુપ્રાવચનિક અને લોકોત્તર એમ ત્રણ પ્રકારનો છે લૌકિક માણસો વડે આચરિત આવશ્યક કર્મ લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યક છે જેમ રાજસભામાં જનારા રાજા, યુવરાજ, તલવર (કોટ્ટપાલ) વગેરે લોકો સવારે ઉઠીને રાજસભામાં જવા માટે પ્રથમ પ્રાભાતિક વિધિયોથી પરવારે છે, મુખ ધુએ છે,

ज्ञातवानिति-ज्ञः, ज्ञस्य शरीरं-ज्ञशरीरं तदेव द्रव्यावश्यकमिति विग्रहः । जीव परित्यक्तमावश्यकशास्त्रज्ञानवतः शरीरं ज्ञशरीरद्रव्यावश्यकम् । यः कश्चिद् जीवः जन्मकालादारभ्य अनेनैव आत्तेन - गृहीतेन शरीरसमुच्छ्रयेण, जिनोपदिष्टेन भावेन आवश्यकमित्येतत् पदं=शास्त्रं आगामिनि काले शिक्षिष्यते न तावच्छिक्षते, तज्जीवाधिष्ठितं शरीरं भव्यशरीरद्रव्यावश्यकमिति । ज्ञशरीर-भव्यशरीरव्यतिरिक्तं द्रव्यावश्यकं त्रिविधम्-लौकिकं, कुप्रावचनिकं, लोकोत्तरिकं, चेति ।

लौकिकं द्रव्यावश्यकम् "ये राजेश्वरतलवरादयः प्रभातसमये-मुखधावन-दन्तप्रक्षालन-तैल-कङ्कतक-सर्षप-दूर्वा-दर्पण-धूप-पुष्प-माल्य-गन्ध-ताम्बूल -वस्त्रादिकानि द्रव्यावश्यकानि कुर्वन्ति, कृत्वा पश्चाद् राजकुलदेवकुलादौ गच्छन्ति, तत्-तेषां सम्बन्धिमुखधावनादि ।

कुप्रावचनिकं द्रव्यावश्यकम् 'ये इमे चरकचीरिकादयः पाषण्डस्था', इन्द्र-स्कन्द-रुद्र-शिव-वैश्रवण-देव-नाग-यक्ष-भूत-मुकुन्दाऽऽर्या-दुर्गा- कोट्टक्रियाणाम् - उपलेपनसंमार्जनाऽऽवर्षणधूपपुष्पगन्धमाल्यादिकानि द्रव्यावश्यकानि कुर्वन्ति. तेषां तद् इन्द्रस्कन्दादेरुपलेपनादि । कुत्सितं प्रवचनं येषां ते कुप्रवचना स्तेषामिदं कुप्रावचनिकम् । उपलेपनं चन्दनपङ्केन, संमार्जनं-स्नपनानन्तरं वस्त्रेण जलप्रोञ्छनम् आवर्षणम्=गन्धोदकेन, 'गुलाबजल' इत्यादि भाषाप्रसिद्धेन ।

नामावश्यकम्-आवश्यकनामको गोपालदारकादिः, स्थापनावश्यकम्-आव-

साफ करते हैं, स्नान करते हैं। सुगंधित तैल लगाते हैं इत्यादि आवश्यक कार्य करते हैं। पीछे राजसभा में या देवकुल में जाते हैं। उनका यह मुख धावन आदि कार्य लौकिक द्रव्य आवश्यक है। चरक चीरिक आदि पाखंडियों द्वारा जो इन्द्र, स्कन्द, रुद्र, वैश्रवण, देव, नाग और यक्षादिकों की मूर्तियों का चंदन से लेपन, अभिषेक कराने के बाद वस्त्र से मूर्तिस्थ जल का पोंछना मंदिर में या उन मूर्तियों पर गुलाबजल का छिडकाव आदि करना ये सब कुप्रावचनिक द्रव्यावश्यक है।

દાંત સાફ કરે છે, સ્નાન કરે છે, સુગંધિત તેલ લગાવે છે, વગેરે આવશ્યક કાર્યો કરે છે ત્યારપછી રાજસભામા અથવા તો દેવકુળમા જાય છે તેમનુ મુખ ધોવુ વગેરે કામ લૌકિક-દ્રવ્ય આવશ્યક છે ચરક ચીરિક વગેરે પાખંડીઓ વડે જે ઇન્દ્ર, સ્કન્દ, રુદ્ર, શિવ, વૈશ્રવણ, દેવ, નાગ અને યક્ષો વગેરેની મૂર્તિઓનુ ચંદનથી અભિષેક કરાવ્યા બાદ વસ્ત્રથી મૂર્તિના પાણીને લૂંછવુ, મંદિરમા કે તે મૂર્તિઓ ઉપર ગુલાબજળનુ સિંચન વગેરે કરવુ આ બધુ કુપ્રાવચનિક દ્રવ્યાવશ્યક છે. આ પ્રમાણે નામ સ્થાપના અને દ્રવ્યના ભેદથી આ

श्यकक्रियावतः कस्यचित् काष्टकर्मादिषु प्रतिकृतिः, द्रव्यावश्यकं च आवश्यकोपयोगशून्या देहागमक्रिया', एष्वावश्यकेषु उपयोगाभावेन चरणगुणरहितत्वेन च कर्मनिर्जराजनकत्वाभावादाराध्यत्वेन जिनाज्ञा नास्ति, तस्मादेतत् त्रिविधमावश्यकं धर्मपदवाच्यं न भवतीति निश्चयादलक्ष्यमेव। लोकोत्तरिकद्रव्यावश्यकं पत्र-

इस प्रकार नाम, स्थापना और द्रव्य के भेद से यह आवश्यक तीन प्रकार का होता है। किसी गोपाल के पुत्र का "आवश्यक" इस प्रकार का कृतनाम संस्कार नाम आवश्यक है। आवश्यक क्रियाओं से युक्त किसी व्यक्ति की काष्ट आदि में तदाकार रूप से या अतदाकाररूप से प्रतिकृतिको कल्पना करना या उसे बनालेना यह स्थापना आवश्यक है। आवश्यक में उपयोग से शून्य प्राणी की जो भी आगम और नो आगम की अपेक्षा से क्रियाएँ हैं वे सब द्रव्य आवश्यक हैं। इन तीनों आवश्यकों में उपयोग-भावरूप-आवश्यक के अभाव से तथा चारित्रगुण तदनुकूल प्रवृत्ति के आचरण से रहित होने से कर्मों की निर्जरा कराने में साधकपना नहीं है। अतः जिनेन्द्रदेव ने इनके आराधन करने की आज्ञा प्रदान नहीं की है। धर्म को ही आराधन करने की उन्होंने आज्ञा दी है क्यों कि वही कर्मों की निर्जरा कराने में साधक है। इन तीनों में कर्मों की निर्जरा कराने का अभाव होने से धर्मस्वरूपता नहीं है। धर्मपद वाच्य भी ये नहीं हैं। इसीलिये ये तीनों धर्म के लक्षण से शून्य होने से इसके अलक्ष्य हैं, ऐसा समझना चाहिये। लोकोत्तरिक द्रव्य

આવશ્યક ત્રણ પ્રકારનું હોય છે કોઈ ગોપાળના પુત્રનો 'આવશ્યક' આ રીતે કરેલો સંસ્કાર નામ આવશ્યક છે આવશ્યક ક્રિયાઓથી યુક્ત કોઈ વ્યક્તિની કાષ્ઠ વગેરેમા તદાકાર રૂપથી કે અતદાકાર રૂપથી પ્રતિકૃતિની કલ્પના કરવી કે પ્રતિકૃતિનુ નિર્માણ કરવુ તે સ્થાપના આવશ્યક છે. આવશ્યકમા ઉપયોગથી રહિત પ્રાણીની જે કંઈપણ આગમ અને નો આગમની અપેક્ષાથી ક્રિયાઓ છે તે બધી દ્રવ્ય આવશ્યક છે. આ ત્રણે આવશ્યકોમાં ઉપયોગ ભાવ રૂપ આવશ્યકના અભાવથી તેમજ ચારિત્રગુણ તદનુકુળ પ્રવૃત્તિના આચરણ વગર થઈ જવાથી કર્મોની નિર્જરા કરાવવામાં સાધકપણું નથી તેથી જીનેન્દ્ર દેવે તેમના આરાધનની આજ્ઞા આપી નથી. ધર્મની આરાધના કરવાની જ તેઓશ્રીએ આજ્ઞા આપી છે કે-કે ધર્મજ કર્મોની નિર્જરા કરાવવામાં સાધક છે આ ત્રણેમાં કર્મોની નિર્જરા કરાવવાનો અભાવ હોવાને કારણે ધર્મસ્વરૂપતા નથી એ ધર્મપદ વાચ્ય પણ નથી તેથી આ ત્રણે ધર્મના લક્ષણથી રહિત હોવાને કારણે તેના અલક્ષ્ય છે એમ સમજવુ જોઈએ. સામાયિક વગેરે લોકો-

चनोक्तं सदपि जिनाज्ञाबाह्यैः स्वच्छन्दविहारिभिर्मूलोत्तरगुणरहितैः षट्कायनिरनु-कम्पैरनुपयोगपूर्वकं क्रियमाणं सामायिकादिकम् तच्च धर्मपदवाच्यं न भवितुमर्हति, तत्रापि निर्जराजनकत्वाभावेन विधेयतया जिनाज्ञाया आभावात्।

एवमेव–नामजिनः स्थापनाजिनस्तथा द्रव्यजिनश्च निर्जराजनकत्वाभावा-दाराध्यत्वेन जिनाज्ञाया अभावात्। तदाराधनं धर्मपदवाच्यं न भवितुमर्हति।

आवश्यक समायिक आदि हैं इनके करने का विधान यद्यपि प्रवचन शास्त्र में विहित है तो भी इसे जो धर्म का अलक्ष्य बताया गया है उसका कारण यह है कि ये जब जिनदेव की आज्ञा से बहिर्भूत बने हुए, स्वेच्छाचारी, मूलगुण और उत्तर गुणों से रहित एवं षट्काय के जीवों की रक्षा करने में असावधान मनुष्यों द्वारा अनुपयोगपूर्वक करने में आते हैं तब ये द्रव्य आवश्यकरूप से कहे जाते हैं। और इसीलिये ये धर्मपद के वाच्य नहीं हैं अर्थात् धर्मरूप नहीं हैं। जहां धर्मरूपता नहीं है वहां कर्मों की निर्जरा कारकत्व भी नहीं है। यह सर्व सम्मत सिद्धान्त है। भगवान ने जो इस अवस्था में इन्हें विधेय नहीं कहा है उसका यही कारण है। अतः जिस प्रकार नाम आव-श्यक, स्थापना आवश्यक और द्रव्य आवश्यक ये तीन निक्षेप आरा ध्यरूप से तीर्थंकर प्रभु ने अनविधेय कहे हैं, उसी प्रकार से नामजिन स्थापनाजिन तथा द्रव्यजिन भी आराध्य नहीं हैं। इनकी आराधना करने में जो धर्म की प्राप्ति होना कहते हैं या मानते हैं उन्हें 'जिन

त्तर द्रव्य आवश्यक छे प्रवचन शास्त्रमां एमनां आचरणनुं विधान विहित छे छतांये एने जे धर्मना अलक्ष्य रूपमां बतावववामां आव्यो छे. तेनी मत-लब ए छे के ज्यारे ते जीनदेवनी आज्ञाथी बहिर्भूत बनेला स्वेच्छाचारी, मूळगुण तेमज उत्तर गुणोथी रहित अने षटकाय जीवोनी रक्षा करवामां असावधान माणसो वडे अनुपयोग पूर्वक आचरवामां आवे त्यारे ते द्रव्य आवश्यक रूपमा कहेवाय छे एथी ते धर्मपद वाच्य नथी. एटले के धर्म रूप नथी ज्या धर्मरूपता नथी त्यां कर्मोनी निर्जरा कारकता पण नथी. आ सर्वमान्य सिद्धान्त छे. भगवाने जे आ अवस्थामा एमने विधेय कह्या नथी तेनुं कारण पण ए ज छे एटला माटे जेम नाम आवश्यक, स्थापना आवश्यक अने द्रव्य आवश्यक आ त्रण निक्षेपोने आराध्य रूपथी तीर्थंकर प्रभुए अविधेय कह्या छे, तेमज नाम जिन, स्थापना जिन तेमज द्रव्यजिन पण आराध्य नथी. एमनी आराधना करवामा जे धर्मनी प्राप्ति थवी बतावववामा आवे छे के मानवामा आवे छे, तेमने जिन भगवाननी

एवं च प्रतिमापूजनमपि धर्मलक्षणस्य लक्ष्यं न भवति, तत्र धर्मत्वाभाव-निश्चयात्। 'मोक्षकामो जिनप्रतिमां पूजयेत्' इत्येवमर्हतो भगवत आज्ञायाः प्रवचनेऽनुपलब्धेः। धर्मविषये सर्वत्र भगवदाज्ञोपलभ्यते—दृश्यते हि आवश्यकार्थं भगव-

भगवान की आज्ञा से बहिर्भूत ही समझना चाहिये। यदि इन निक्षेपों की या स्थापनानिक्षेप की आराधना करने से आराधक जीवों को धर्म का लाभ होता तो वे उनकी आराधना करने का भव्य जीवों को अथ इय २ उपदेश देते। इस प्रकार की स्वमनः कल्पित प्रवृत्ति से उनकी पूजा आदि करने में षट्काय के जीवों की कितनी विराधना होती है यह एक स्वानुभवगम्य बात है। अतः जहां आरंभ है वहां धर्म नहीं है। जहां धर्म नहीं है उसकी आराधना से कर्मों की निर्जरा भी नहीं हो सकती है। इस प्रकार से नाम स्थापना और द्रव्यजिन आदि तीन निक्षेप भी धर्म के लक्षण से शून्य होने से उसके अलक्ष्य माने गये हैं। जब स्थापना जिन ही उसका अलक्ष्यभूत है, तो फिर जिन की प्रतिमा बनाकर उसकी पूजा आदि कार्य भी धर्मलक्षण से शून्य होने से वह भी उसका अलक्ष्य है ऐसा निश्चित हो जाता है भगवान ने इस प्रकार की आज्ञा शास्त्र में कहीं भी नहीं दी है "मोक्षकामो जिन-प्रतिमां पूजयेत्" कि मुक्ति की अभिलाषा वाला प्राणी जिन प्रतिमा की पूजा करें। धर्मकी आराधना करने की ही उन्हों ने आगम में आज्ञा

આજ્ઞાથી બહિર્ભૂત જ સમજવા જોઈએ. આ નિક્ષેપોની કે સ્થાપના નિક્ષેપોની આરાધના કરવાથી આરાધક જીવોને ધર્મનો લાભ થતો હોય ત્યારે તો તેઓ તેમની આરાધના કરવા માટે ભવ્ય જીવોને ચોક્કસ ઉપદેશ આપતા. આ રીતે પોતાના મનથી જ કલ્પના કરીને તેમની પૂજા વગેરે કરવામાં ષટ્કાય જીવોની કેટલી બધી વિરાધના હોય છે તે જાતે જ અનુભવવા જેવી વાત છે એટલા માટે જ્યા આરંભ છે ત્યા ધર્મ તો નથી જ અને જ્યાં ધર્મ નથી તેની આરા-ધનાથી કર્મોની નિર્જરા પણ થઈ શકે તેમ નથી. આ રીતે નામ સ્થાપના અને દ્રવ્ય જિન વગેરે ત્રણ નિક્ષેપો પણ ધર્મના લક્ષણથી રહિત હોવા બદલ તેને અલક્ષ્ય માનવામા આવ્યા છે જ્યારે સ્થાપના જિન જ તેના માટે અલક્ષ્યરૂપ છે, ત્યારે જિનની પ્રતિમા બનાવીને તેની પૂજા વગેરે કાર્યો પણ ધર્મલક્ષણથી રહિત હોવાથી તે પણ તેના માટે અલક્ષ્યરૂપ છે આવી ચોક્કસ ખાત્રી થઇ જાય છે ભગવાને આ જાતની આજ્ઞા શાસ્ત્રમા કોઈ પણ સ્થાને કરી નથી "મોક્ષકામો જિનપ્રતિમા પૂજયેત્" કે મોક્ષની ઈચ્છા રાખનાર પ્રાણી જિન પ્રતિમાનું પૂજન કરે ધર્મની આરાધના કરવાની જ તેઓશ્રીએ આગમમા આજ્ઞા

दाज्ञा, दर्शनार्थं ज्ञानार्थं च भगवदाज्ञा पुनरहिंसासंयमतपःसंवरादिविधिरपि शास्त्रे प्रदर्शितः परंतु प्रतिमापूजनार्थमाज्ञा क्वापि नोपलभ्यते शास्त्रेषु, प्रत्युत कुप्रावचनिकद्रव्यावश्यकलक्षणाक्रान्तत्वेन प्रतिमापूजनं जैनागमविरुद्धमिति सूचितम्। इन्द्रादिपूजनं हि कुप्रावचनिकस्य नोआगमतो द्रव्यावश्यकस्योदाहरणतया भगवता प्रदर्शितम्। तेन सर्वं प्रतिमापूजनं कुप्रावनिचकं तादृशद्रव्यावश्यके भगवता निक्षिप्तमिति सुस्पष्टं प्रतीयते। षट्कायहिंसासाध्यायाः पूजाया

प्रदान की है जैसे—आवश्यक, दर्शन और ज्ञान की आराधना प्रत्येक मोक्षाभिलाषी भव्य जन को करना चाहिये—इस प्रकार के आवश्यक आदि की आराधना करने का स्पष्ट उल्लेख आगमों में मिलता है—तथा जिस प्रकार उन्होंने अहिंसा, संयम, तप और संवर आदि की विधि शास्त्रों में प्रदर्शित की है—उस प्रकार न तो उन्होंने प्रतिमा पूजन की कहीं न आज्ञा प्रदान की है और न उस की विधि ही कही है कुप्रावचनिक द्रव्य आवश्यक के लक्षण से युक्त होने से प्रत्युत प्रतिमापूजन को जैन आगम से विरुद्ध ही सूचित किया है। कुप्रावचनियों द्वारा मान्य इन्द्रादिकों के पूजन को भगवान नो आगम की अपेक्षा से द्रव्य आवश्यक के उदाहरण रूप में प्रकट किया है इससे ही यह बात स्पष्ट हो जाती है कि उन्होंने अन्य समस्त प्रतिमा पूजन को भी इसी कुप्रावचनिक द्रव्य आवश्यक की तरह द्रव्य आवश्यक में रखा है। प्रवचन में कुत्सितता—खोटापन कुशास्त्रता हिंसादिक साध्य पूजा आदि कार्यों

કરી છે. જેમ આવશ્યક, દર્શન અને જ્ઞાનની આરાધના દરેકે દરેક મોક્ષ ઇચ્છનારા ભવ્ય જનને કરવી ઘટે છે. જેમ આવશ્યક વગેરેની આરાધના કરવા વિષેનો ઉલ્લેખ આગમોમાં મળે છે, તેમજ જેમ તેમણે અહિંસા, સયમ, તપ અને સંવર વગેરેની વિધિ શાસ્ત્રોમાં બતાવી છે તેમ તેમણે કોઇ પણ સ્થાને પ્રતિમા પૂજનની આજ્ઞા કરી નથી અને તેની વિધિ પણ બતાવી નથી પ્રતિમા પૂજાને કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય આવશ્યકના લક્ષણથી યુક્ત હોવા બદલ જૈન આગમોથી વિરૂદ્ધ જ બતાવવામાં આવી છે. કુપ્રાવચનીઓ વડે માન્ય ઇન્દ્ર વગેરેના પૂજનને ભગવાને આગમની અપેક્ષાએ દ્રવ્ય આવશ્યકના ઉદાહરણ રૂપમાં બતાવ્યું છે એથી આ વાત સ્પષ્ટ સમજી શકાય તેમ છે કે તેમણે બીજી પણ બધી પ્રતિમા પૂજાને પણ આ કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય આવશ્યકની જેમ દ્રવ્ય આવશ્યકમાં જ સ્થાન આપ્યુ છે પ્રવચનમાં કુત્સિતતા કુશાસ્ત્રતા હિંસા વગેરે સાધ્ય પૂજા વગેરે કાર્યોની પુષ્ટિ કરવાથી જ સંભવે છે. બીજા ચરક

विधायकतया प्रवचनस्य कुत्सितत्वं, तेनैव चेन्द्रादिपूजनस्य कुप्रावचनिकत्वं भवति। एवं प्ररूपयतो भगवतोऽर्हतः प्रतिमायाः पूजनस्य प्रसङ्ग एव तदानीं नासीत्-हिंसामयत्वात्पूजनस्य, तेन प्रवचने भगवता प्रतिमापूजनप्रतिषेधो विशिष्य नोक्तः। प्रतिषेधवाक्यं हि तदैव सार्थकं, यदाप्रतिषेध्यरूपोऽर्थः कथंचित् प्रसक्तो भवति। जिनप्रतिमापूजनं हि न तावल्लौकिकं द्रव्यावश्यकं, नापि लोकोत्तरिकं द्रव्यावश्यकं, जिनो हि लोकोत्तरो देवस्तत्पूजनमपि स्याच्चेत् लोकोत्तरिकमेव

की पुष्टि करने से ही आती है। अन्य चरक आदि समस्त प्रवचनों में इन्हीं हिंसादिक कर्मों के करने का विधान स्पष्टरूप से पाया जाता है। इसीलिये ये कुप्रवचन माने गये हैं। इनके द्वारा प्रदर्शित इन्द्रादिक पूजन भी इसी निमित्त से कुप्रावचनिक कहा गया है। जैन शास्त्रों में प्रतिमापूजन के निषेध का स्पष्ट उल्लेख जो देखने में नहीं आता है, उसका यह कारण है कि जिस समय प्रभु ने इन्द्रादिक के पूजन का कुप्रावचनिक रूप मानकर निषेध किया उस समय उनके समक्ष अर्हंत की प्रतिमा के पूजन का प्रसंग ही नहीं था, नहीं तो इसका भी वे स्वतन्त्र रूप से निषेध करते-दूसरे-प्रतिमा पूजन कार्य हिंसामय कार्य है-भगवान ने धर्म के लिये भी हिंसा करने का आदेश नहीं दिया है अतः जब वीतराग शास्त्र में हिंसा का विधान ही नहीं है-तब इसका भी विधान कैसे वे करते प्रतिषेध वाक्य उसी समय सार्थक माना जाता है जब प्रतिषेध्यरूप पदार्थ किसी भी रूप से प्रसक्त होता है।

ચીરિક વગેરે બધા પ્રવચનોમાં એ જ હિંસા વગેરે કર્મોને કરવાનું વિધાન સ્પષ્ટ રૂપ જોવામાં આવે છે. એથી આ બધા કુપ્રાવચનિક માનવામાં આવે છે. એમના વડે પ્રદર્શિત ઇન્દ્ર વગેરેનું પૂજન પણ આ કારણને લીધે જ કુપ્રાવચનિક કહેવાય છે. જૈન શાસ્ત્રોમાં પ્રતિમા પૂજનના નિષેધનો સ્પષ્ટપણે જે ઉલ્લેખ જોવામાં આવતો નથી તેનું કારણ પણ એ છે કે જ્યારે પ્રભુએ ઇન્દ્ર વગેરેના પૂજનને કુપ્રાવચનિક રૂપ માનીને નિષેધ કર્યો ત્યારે તેમની સામે અર્હંતની પ્રતિમાના પૂજનની વાત જ ન હતી, નહિતર તેઓશ્રી એ તેનો પણ સ્વતંત્ર રૂપથી નિષેધ કર્યો હોત. બીજી વાત એ છે કે પ્રતિમા પૂજનનું કાર્ય હિંસામય છે, ભગવાને ધર્મના માટે પણ હિંસા કરવાની આજ્ઞા કરી નથી. એટલા માટે જ્યારે વીતરાગ શાસ્ત્રમાં હિંસા વિષેનું વિધાન જ નથી ત્યારે આનું વિધાન પણ તેઓ કેવી રીતે કરે. પ્રતિષેધ વાક્ય ત્યારે જ સાર્થક ગણાય છે જ્યારે પ્રતિષેધ્યરૂપ પદાર્થ કોઇ પણ રૂપથી પ્રસક્ત હોય છે. આ પ્રતિમા

स्यात् लोके तु तस्य समावेशानर्हतया लौकिकत्वासंभवात् । प्रवचने भगवता यत् सामायिकादि षड्विधावश्यकं प्ररूपितं तदेव स्वच्छन्दविहारिभिः षट्कायहिंसकैर्जिनाज्ञाबाह्यैः क्रियमाणं लोकोत्तरिक-द्रव्यावश्यकम् । तत्र षड्विधावश्यके जिनप्रतिमा पूजनस्य प्रवेशात् तस्य लोकोत्तरिकद्रव्यावश्यके समावेशो न संभवति।

यह प्रतिमापूजनरूप कार्य न लौकिक द्रव्य अवश्यक है और न लोकोत्तर द्रव्य अवश्यक ही है।

शंका—प्रतिमा पूजन लौकिक द्रव्य आवश्यक नहीं है यह तो आप का कहना ठीक है, क्यों कि यह लौकिक द्रव्य आवश्यकों से सर्वथा भिन्न है। परन्तु इसे लोकोत्तरिक द्रव्य आवश्यक मानने में आपको क्या विवाद है। क्यों कि प्रभु स्वयं लोकोत्तर देव माने जाते अतः उनका पूजन भी लोकोत्तरिक ही मानना चाहिये ?

उत्तर—प्रवचन में भगवान जो सामायिक आदि छह प्रकार के आवश्य कों का वर्णन किया है-वे जब जिन आज्ञा बाह्य-स्वच्छन्दविहारी और षट्काय की विराधना करने में निरत अनुपयुक्त पुरुषों द्वारा करने में आते हैं लोकोत्तरिक द्रव्य आसश्यक रूप से प्रतिपादित किये गये हैं। इन षट्प्रकार के आवश्यकों में प्रतिमापूजन का कोई अधिकार ही नहीं है। अतः इसे कैसे लोकोत्तरिक आवश्यक माना जा सकता है।

પૂજનરૂપ કાર્ય માટે ન તો લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યક છે અને ન તો લોકોત્તર દ્રવ્ય આવશ્યક છે.

શંકાઃ—પ્રતિમા પૂજન લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યક નથી. તમારી આ વાત તો ઉચિત છે. કેમ કે આ લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યકોથી સંપૂર્ણપણે ભિન્ન છે. પણ એને લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યક માનવામાં તમને શો વાંધો છે? કેમકે પ્રભુ જાતે લોકોત્તર દેવ મનાય છે. ત્યારે તેમનું પૂજન પણ લોકોત્તરિક જ માનવું જોઇએ?

ઉત્તર—પ્રવચનમાં ભગવાને જે સામાયિક વગેરે છ જાતના આવશ્યકોનું વર્ણન કર્યું છે તેઓ જ્યારે જિન-આજ્ઞા બાહ્ય સ્વચ્છંદ વિહારી અને ષટ્-કાયની વિરાધના કરવામા નિરત અનુપયુકત પુરુષો વડે આચરવામાં આવે છે. લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યક રૂપથી પ્રતિપાદિત કરવામાં આવે છે. આ છ જાતના આવશ્યકોમાં પ્રતિમા પૂજનનો કોઇ અધિકાર જ નથી. એટલા માટે લોકોત્તરિક આવશ્યક કેવી રીતે માની શકાય?

कुप्रवचनेऽर्हत्प्रतिमापूजाविधानं विशिष्य नोक्तं तथापि कामपूरकमृतमनुष्यपूजनवत् तस्य पूजा प्रतिमायां क्रियमाणा कुप्रावचनिकीति वक्तुं शक्यते । तस्मिन् कुप्रवचने हि पूजाधारनिर्णयावसरे सामान्यतः पूज्यस्य सर्वस्यापि पूजाधारः प्रतिमा-

---

भावार्थ-शंकाकार ने प्रतिमापूजन को लोकोत्तरिक आवश्यक मानकर द्रव्य आवश्यक में जो उसका समावेश करना चाहा है सो उसकी इस आशंका का समाधान करते हुए सूत्रकारने यह कहा है कि जिन आज्ञा बाह्य एवं सामायिक आदि में अनुपयुक्त पुरुषों द्वारा किये गये सामायिक आदि षट् विध आवश्यक कार्य ही लोकोत्तरिक द्रव्य आवश्यक में परिगणित किये गये हैं। इनमें प्रतिमा पूजा का कोई संबंध ही नहीं है-प्रतिमा पूजा षट् विध आवश्यक कार्यों में परिगणित ही नहीं हुई है। अतः उसका वहां पर किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं होने से उसे लोकोत्तरिक द्रव्य आवश्यक में नहीं गिना जा सकता है अतः इसका समावेश केवल कुप्रावचनिक द्रव्य आवश्यक में ही हुआ है ऐसा मानना चाहिये।

शंका—कुप्रवचन में इन्द्रादिकों की पूजा करने के विधान की तरह प्रतिमा पूजा का विधान तो पाया नहीं जाता है फिर आप इसे कुप्रावचनिक में अन्तर्भूत कैसे कह सकते हैं ?

ભાવાર્થઃ—શંકાકારે પ્રતિમા પૂજનને લોકોત્તરિક આવશ્યક માનીને દ્રવ્ય આવશ્યકમાં તેનો સમાવેશ કરવાની જે ઈચ્છા બતાવી છે. તેની તે શંકાનુ સમાધાન કરતાં સૂત્રકારે આ પ્રમાણે કહ્યુ છે કે જિન આજ્ઞા બાહ્ય અને સામાયિક વગેરેમા અનુપયુક્ત પુરુષો વડે કરવામાં આવેલા સામાયિક વગેરે છ જાતના આવશ્યક કાર્યો જ લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યકમાં પરિગણિત કરવામા આવ્યાં છે. એનાથી પ્રતિમા પૂજાનો કોઈ સંબંધ જ નથી. પ્રતિમા પૂજા ષટ્વિધ આવશ્યક કાર્યોમાં પરિગણિત જ થઈ નથી એટલા માટે ત્યાં તેનો કોઈ પણ રીતે સંબંધ નહિ હોવાથી લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યકમાં તેની ગણના થઈ શકે તેમ નથી. એથી ફક્ત દ્રવ્ય આવશ્યકમાં જ થયો છે આમ માની લેવું જોઈએ.

શંકાઃ—કુપ્રવચનમાં ઈન્દ્ર વગેરેની પૂજા કરવાના વિધાનની જેમ પ્રતિમા પૂજાનું વિધાન તો મળતું નથી ત્યારે તમે એને કુપ્રવાચનિકમાં કેવી રીતે સમાવિષ્ટ કરી શકો ?

चित्रादय इति प्ररूपितम् । एवं च जिनपूजनं-कुप्रावचनिकं-नोआगमतो द्रव्यावश्यकं प्रतिमायां क्रियमाणत्वात् , इन्द्रादिपूजनवत् ,इत्यनुमानेनापि कुप्रावचनिक द्रव्यावश्यकतया धर्मपदवाच्यं न भवतीति ।

उत्तर—यद्यपि कुप्रवचन में प्रतिमा पूजा का विधान स्वतन्त्ररूप से नहीं किया गया है, तो भी कामपूरक प्रणियों के मनोरथ को पूर्ण करने वाले-मनुष्य के मृत-निर्जीव देह की पूजा की तरह प्रतिमा में होती हुई पूजा भी कुप्रावचननि की है ।

इस प्रकार हम अनुमानसे कह सकते हैं । उसमें प्रवचनमें पूजाके आधार का निर्णय करते समय सामान्यरूप से पूजा के आधारभूत जितने भी प्रतिमा चित्र आदि पूज्य हैं वे सब गृहीत हुए हैं । इस प्रकार प्रतिमा की सर्व पूजा का आधार प्रतिमा और चित्र आदि है । इसलिये वह कुप्रावचनिक है । इस प्रकार हम कहते हैं । इस कथन से यह व्याप्ति सिद्ध होती है कि इन्द्रादिक पूजन की तरह प्रतिमा में जो जो पूजाएँ की जाती हैं वे सब कुप्रावचनिकी हैं । अत. जिन पूजन भी प्रतिमा में किये जाने पर नोआगम की अपेक्षा से कुप्रावचनिक द्रव्य आवश्यक ही है, और इसीलिये वह धर्मपद का वाच्य नहीं है यह बात स्पष्टरूप से सिद्ध हो जाती है इसमें अनुमान प्रयोग इस प्रकार से करना चाहिए ।

ઉત્તર—જો કે કુપ્રવચનમા પ્રતિમા પૂજનનુ વિધાન સ્વતંત્ર રૂપમા કરવામાં આવ્યું નથી છતાંય માનવીના મનોરથોને પૂર્ણ કરનારા-માણુસના મૃત નિર્જીવ શરીરની પૂજાની જેમજ પ્રતિમાની કરવામાં આવેલી પૂજા પણુ કુપ્રાવચનિકી છે આમ અમે અનુમાનથી કહી શકીએ છીએ. તે કુપ્રવચનમા પૂજાના આધારનો નિર્ણય કરતી વખતે સામાન્ય રૂપથી પૂજાના આધારભૂત જેટલા પ્રતિમા ચિત્ર વગેરે પૂજ્ય છે તેઓ સર્વેનું ગ્રહણ થયું છે.

આ રીતે પ્રતિમાની સર્વ પૂજાનો આધાર પ્રતિમા અને ચિત્ર વગેરે છે એટલા માટે તે કુપ્રાવચનિક છે આમ અમે કહી શકીએ છીએ. આ કથનથી એ વ્યપ્તિસિદ્ધ થાય છે કે ઇન્દ્ર વગેરેના પૂજનની જેમ પ્રતિમાઓમાં જે જે પૂજાઓ કરવામાં આવે છે તેઓ સર્વે કુપ્રાવચનિકી છે એટલા માટે જિન પૂજા પણુ પ્રતિમામાં આવતી હોવાથી આગમની અપેક્ષાથી કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય આવશ્યક છે અને એથી તે ધર્મપદવાચ્ય નથી. આ વાત સ્પષ્ટપણે સિદ્ધ થઈ જાય છે. આમાં અનુમાનપ્રયોગ આ પ્રમાણે કહી શકાય તેમ છે.

अथ भावावश्यकमुच्यते–विवक्षितक्रियानुभवयुक्तो योऽर्थः स भावः, भाव तद्वतोरभेदोपचाराद् भावः। यथा–ऐश्वर्यरूपायाइन्दनक्रियाया अनुभवात् इन्द्रो भाव उच्यते। भावश्चासौ आवश्यकं च, भावमाश्रित्य वा आवश्यकं भावावश्यकम्।

"जिनपूजनं नो आगमतो कुप्रावचनिकं द्रव्यावश्यकं प्रतिमायां क्रियमाणत्वात् इन्द्रादिपूजनवत्"। अतः इस समस्त पूर्वोक्त कथन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि वह प्रतिमापूजन कार्य लोकोत्तरिक द्रव्य आवश्यक रूप से भी प्रसक्त होता तो भगवान् इसका अवश्य प्रतिषेध करते।

अथ भावावश्यकमुच्यते – अब भाव आवश्यक क्या है इसका कथन सूत्रकार करते हैं–वर्तमान समय में उस विवक्षितरूप पर्याय से युक्त द्रव्य का नाम भाव है। भाव यद्यपि वर्तमान क्रिया रूप माना गया है, फिर भी यहां पर उस क्रिया से युक्त द्रव्य को जो भाव कहा है उसका कारण द्रव्य और पर्याय का अभेद संबंध है। भगवान द्रव्य के बिना नहीं रह सकता है। भाव द्रव्य की एक पर्याय है, वह निराश्रय होती नहीं है–अतः जिस द्रव्य के आश्रय वह रहेगी उन दोनों में अभेदोपचार से उस पर्याय से उपलक्षित उस द्रव्य को ही भाव कह दिया है। जिस प्रकार ऐश्वर्यरूप इंदन (देदीप्यमान होना)

"जिनपूजनं नो आगमतो कुप्रावचनिकं द्रव्यावश्यकं प्रतिमायां क्रियमाणत्वात् इन्द्रादिपूजनवत्"

એટલા માટે આ પૂર્વોક્ત કથનથી આ વાત સ્પષ્ટ થાય છે કે તે પ્રતિમા પૂજન કાર્ય લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યક પણ નથી. જો તે લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યકરૂપે પણ પ્રસક્ત હોત તો ભગવાન તેનો ચોક્કસ પ્રતિષેધ કરત.

'અથ ભાવાવશ્યકમુચ્યતે':—હવે આવશ્યક શું છે એનું સ્પષ્ટીકરણ સૂત્રકાર કરે છે–વર્તમાન સમયમાં તે વિવક્ષિત રૂપ પર્યાયથી યુક્ત દ્રવ્યનું નામ ભાવ છે. જો કે ભાવ વર્તમાન ક્રિયારૂપ માનવામાં આવ્યો છે, છતાંય અહીં તે ક્રિયાથી યુક્ત દ્રવ્યને જ ભાવ બતાવ્યો છે તેનું કારણ દ્રવ્ય અને પર્યાયનો અભેદ સંબંધ છે ભાવ ભગવાન દ્રવ્ય વગર રહી શકતો નથી ભાવ દ્રવ્યની એક પર્યાય છે, તે નિરાશ્રય હોતી જ નથી. એથી જે દ્રવ્યના આશ્રયે તે રહેશે તેઓ બનેમાં અભેદોપચારથી તે પર્યાયથી ઉપલક્ષિત તે દ્રવ્યને જ ભાવ કહી દીધા છે. જેમ ઐશ્વર્ય ઇંદન (દેદીપ્યમાન થવું) ક્રિયાના અનુભ-

तद् द्विविधम्- (१) आगमत:=आगममाश्रित्य, (२) नोआगमत:=आगमाभावमाश्रित्य।

आगमतो भावावश्यकमाह—

" से किं तं आगमओ भावावस्सयं? आगमओ भावावस्सयं जाणए उवउत्ते, से तं आगमओ भावावस्सयं "। (अनुयोग०)

अथ किं तदागमतो भावावश्यकम्?, उत्तरमाह-" ज्ञायक उपयुक्त " आगमतो भावावश्यकम्।

अयमर्थः-आवश्यकपदार्थज्ञस्तज्जनितसंवेगेन विशुध्यमानपरिणामस्तत्र चोपयुक्तः साध्वादिरागमतो भावावश्यकम्, अत्रावश्यकार्थज्ञानरूपस्यागमस्यात्र

क्रिया के अनुभव से उपलक्षित शचीपति भाव इन्द्र कहा जाता है। इसी प्रकार जो आवश्यक रूप क्रिया के अनुभवसे युक्त है वही आत्मा भावावश्यक कहलाता है। भावरूप जो आवश्यक है वह, अथवा भाव को आश्रय करके जो आवश्यक है वह भावावश्यक है।

यह भाव आवश्यक भी दो प्रकार का है-१ आगम की अपेक्षा भाव आवश्यक और दूसरा नो आगम की अपेक्षा भाव आवश्यक। इनमें " ज्ञायकः उपर्युक्तः आगमतो भावावश्यकं " ज्ञायक उपयुक्त आत्मा आगम की अपेक्षा से भाव आवश्यक माना गया है। आवश्यकरूप पदार्थ का जो ज्ञाता है उसका नाम ज्ञायक है। आवश्यकरूप पदार्थ के ज्ञान से जनित संवेग द्वारा विशुद्ध हुए परिणामों का नाम उपयोग है। इस उपयोग से विशिष्ट जो साधु आदि जन हैं वे आगम की अपेक्षा से भाव आवश्यक हैं। क्यों कि इनमें आवश्यकरूप पदार्थ

વથી ઉપલક્ષિત શચીપતિ ભાવ ઇન્દ્ર કહેવાય છે તેમજ જે આવશ્યકરૂપ ક્રિયાના અનુભવથી યુક્ત છે તે આત્મા ભાવાવશ્યક કહેવાય છે. ભાવરૂપ જે આવશ્યક છે તે અથવા ભાવને આશ્રય કરીને જે આવશ્યક છે તે ભાવાવશ્યક છે.

આ ભાવ આવશ્યક પણ બે પ્રકારનો છે-૧, આગમનની અપેક્ષા ભાવ આવશ્યક અને ૨, નો આગમનની અપેક્ષા ભાવ આવશ્યક એમનામાં "ज्ञायक' उपयुक्तः आगमतो भावावश्यकं" જ્ઞાયક ઉપયુક્ત આત્મા આગમની અપેક્ષાથી ભાવ આવશ્યક માનવામા આવ્યો છે આવશ્યકરૂપ પદાર્થનો જે જ્ઞાતા છે તેનું નામ જ્ઞાયક છે આવશ્યકરૂપ પદાર્થના જ્ઞાનથી જનિત સવેગવડે વિશુદ્ધિ પામેલા પરિણામોનુ નામ ઉપયોગ છે. આ ઉપયોગથી વિશિષ્ટ જે સાધુ વગેરે લોકો છે તેઓ આગમની અપેક્ષાથી ભાવ આવશ્યક છે. કેમકે તેઓમાં આવ-

मत्त्वात्, भावावश्यकता चात्रावश्यकार्थज्ञानजनितोपयोगपरिणामवत्त्वाद्भा-माश्रित्यावश्यकमिति व्युत्पत्तेः। इदमुक्तं भवति आवश्यकार्थज्ञस्य आवश्यकोपयोगपरिणाम आगमतो भावावश्यकं, साध्वादिस्तु तादृशपरिणामवत्त्वादागमतो भावावश्यकमुच्यते। इदमावश्यकोपयोगपरिणामरूपं भावावश्यकं धर्मपदवाच्यं, श्रुतधर्मान्तर्गतत्वात्, अत्र जिनाज्ञायाः सत्त्वात्।

नोआगमतो भावावश्यकं त्रिविध–लौकिकं, कुप्रावचनिकं, लोकोत्तरिकं चेति लौकिकं भावावश्यकं- पूर्वाह्णे भारतस्य वाचनं श्रवणं वा, अपराह्णे रामायणस्य

के ज्ञानरूप आगम का सद्भाव पाया जाता है। इसलिये साधु आदि जनों में आगम की अपेक्षा से आवश्यकता और इस आवश्यक के अर्थ ज्ञान से जनित उपयोगरूप परिणामों की विशिष्टता होने से भाव रूपता आती है। अतः " भाव को आश्रित करके जो आवश्यक है वह भाव आवश्यक है " यह कथन सुसंगत हो जाता है

भावार्थ–"आवश्यक" इस पद के अर्थज्ञान से विशिष्ट तथा तद्-नुकूल उपयोग परिणति संपन्न आत्मा ही आगम की अपेक्षा से भावा-वश्यक कहा गया है। ये भावावश्यक साधु आदि हैं। क्यों कि ये ही इस प्रकार की परिणति वाले होते हैं। अतः श्रुतधर्म के अन्तर्गत होने से यह भावावश्यक ही धर्म पद का वाच्य कहा गया है और ऐसे ही धर्म की आराधना करने की भगवानने आज्ञा प्रदान की है।

नो आगम की अपेक्षा से भाव आवश्यक तीन प्रकार का माना गया है। (१) लौकिक (२) कुप्रावचनिक और लोकोत्तरिक। पूर्वाह्ण में

श्यकરૂપ પદાર્થના જ્ઞાનરૂપ આગમનો સદ્ભાવ મળે છે. એટલા માટે સાધુ વગેરે લોકોમાં આગમની અપેક્ષાથી આવશ્યકતા અને આ આવશ્યકતાના અર્થ જ્ઞાનથી જનિત ઉપયોગરૂપ પરિણામોની વિશિષ્ટતા હોવાથી ભાવરૂપતા આવે છે. એટલા માટે " ભાવને આશ્રિત કરીને જે આવશ્યક છે તે ભાવ આવશ્યક છે. " આ કથ સુસંગત થઈ પડે છે.

ભાવાર્થ:—" આવશ્યક " આ પદના અર્થ જ્ઞાનથી વિશિષ્ટ તેમજ તદ-નુકૂળ ઉપયોગ પરિણતિ સંપન્ન આત્મા જ આગમની અપેક્ષાએ ભાવ આવશ્યક સાધુ વગેરે છે કેમકે એ લોકો જ આ જાતની પરિણતિવાળા હોય છે. એથી શ્રુતધર્મના અંતર્ગત હોવા બદલ આ ભાવાવશ્યક જ ધર્મપદવાચ્ય કહેવામાં આવ્યો છે અને આ જાતના ધર્મની આરાધના કરવાની ભગવાને પણ આજ્ઞા કરી છે.

નો આગમની અપેક્ષાએ ભાવ આવશ્યકના ત્રણ પ્રકારો છે:-(૧) લૌકિક (૨) કુપ્રાવચનિક (૩) અને લોકોત્તરિક પૂર્વાહ્નમા ભારતનું વાંચન અથવા શ્રવણ

वाचनं श्रवणं वा। लोके हि भारतस्य वाचनं श्रवणं पूर्वाह्ण एव क्रियमाणं दृश्यते, तथा रामायणस्य वाचनं श्रवणमपराह्ण एव क्रियमाणं दृश्यते, वैपरीत्ये दोषदर्शनात्। ततश्चेत्थं लोकेऽवश्यकरणीयतयाऽऽवश्यकत्वं तद्वाचकस्य श्रोतुश्च तदर्थोपयोगपरिणामसत्त्वाद् भावत्वं, तद्वाचकः पुस्तकपत्रादिपरावर्तनरूपया हस्ताभिनयरूपया च क्रियया युक्तो भवति, श्रोतापि च गात्रसंयतत्व–करसंपुटीकरणादि

भारत का वांचना अथवा सुनना, अपराह्ण में रामायण का वांचना या सुनना ये सब लौकिक भाव आवश्यक हैं। लोक में भारत का वांचना अथवा सुनना पूर्वाह्णमें ही किया जाता है। रामायणका वांचन और श्रवण अपराह्ण में ही होता हुआ देखा जाता है। इससे विरुद्ध प्रवृत्ति करने से अनेक प्रकार के दोषों का भाजन बनना पडता है, इस प्रकार लोक में भारतादिक ग्रन्थों का 'वांचना आदि कार्य नियमित समय में अवश्य करने योग्य होने की वजह से आवश्यक रूपमें माना गया है। अतः इसमें इस प्रकार से आवश्यकपना आ जाता है। तथा इनके वांचने वालो में या सुनने वालों में उनके अर्थ के प्रति उपयोगात्मक परिणाम के सद्भाव से भावरूपता आती है। क्यों कि जबतक उनके वांचने वाले में उनके अर्थ के प्रति उपयोगात्मक परिणाम की जागृति नहीं होगी, तब तक वे उन पुस्तकों के पत्रों आदि का परावर्तन करने रूप क्रिया और श्रोताओं को अनेक अर्थ की संगति बैठाने के लिये हस्त आदि के संचालनरूप अभिनय क्रिया का उपयोग ही

અપરાહ્ણમાં રામાયણનું વાચન કે શ્રવણ આ બધું લૌકિક ભાવ આવશ્ય છે. લોકમાં ભારતનું વાંચન અથવા તો શ્રવણ પૂર્વાહ્ણમાં જ કરવામાં આવે છે. રામાયણનું વાંચન અને શ્રવણ અપરાહ્ણમાં જ થતું જોવામાં આવે છે. એથી વિરુદ્ધ આચરણ કરવાથી માણસ ઘણી જાતના દોષોને પાત્ર થઇ પડે છે આ પ્રમાણે ભારત વગેરે ગ્રંથોનું વાંચન વગેરે કાર્ય નિયમિત સમયમાં આવશ્યક કરવા યોગ્ય હોવા બદલ આવશ્યક રૂપમાં માનવામાં આવે છે. એથી આમાં આ રીતે આવશ્યકપણું આવી જાય છે. તેમજ એમનું વાંચન કરનારાઓમા તેમના તરફ ઉપયોગાત્મક પરિણામના સદ્ભાવથી ભાવરૂપતા આવે છે. કેમકે જ્યાસુધી તેમનું વાંચન કરનારાઓમાં તેમના અર્થ પ્રત્યે ઉપયોગાત્મક પરિણામની જાગૃતિ થશે નહિ, ત્યાં સુધી તેઓ તે પુસ્તકના પત્રો વગેરેના પરાવર્તન કરવારૂપ ક્રિયા અને શ્રોતાઓના માટે અનેક જાતના અર્થની સંગતિ બેસાડવા માટે હાથ વગેરેના હલનચલનરૂપ અભિનય ક્રિયા ઉપયોગ જ કેવી રીતે કરી શકે.

क्रियावान् भवति, एवं तयोः क्रियावत्त्वेन नोआगमत्वं, "किरियाऽऽगमो नहोइ" इति वचनात्। क्रियारूपे देशे आगमाभावाद् नोआगमत्वमपि, अत्र नो शब्दस्य देशनिषेधबोधकत्वात्। लोके भारतादावागमत्वं व्यवह्रियते, तस्माद्देशत आगमोऽस्त्यपि। तस्माद् पूर्वाह्नेऽपराह्णे यथानिर्दिष्टकाले भारताद्युपयुक्तो यदवश्यं भारतादि वाचयति शृणोति वा, तद् वाचनं श्रवणं च लौकिकं भावावश्यकमिति बोध्यम्।

कैसे कर सकते हैं। परन्तु उस समय इस प्रकार की ये समस्त क्रियाएँ उनमें प्रत्यक्ष ही देखने में आती हैं। इसी प्रकार श्रोताजन भी अटल होकर उनके सुनने में तन्मय हो जाते हैं। समय २ पर हाथ जोड़ने रूप क्रियाएँ भी करते हैं। इस प्रकार की क्रियाएँ से युक्त होने से उन सुनने वांचने वालों में नो आगमता भी है क्यों कि "किरिया आगमो न होइ" क्रिया आगम नहीं मानी जाती है ऐसा सिद्धान्त का कथन है। "नो आगम" में नो शब्द आगम के एक देश का वाचक है। इसलिये क्रियारूप एक देश में पूर्णरूप से आगम का अभाव होने से आगम की एक देशता उसमें मानने में आती है। भारतादिक पुस्तकों में आगमता का कथन लोक की अपेक्षा से ही किया गया जानना चाहिये। क्यों कि लोक में अन्य व्यवहारी जन इनमें आगमता का व्यवहार करते हुए देखे जाते हैं। इस प्रकार पूर्वाह्न या अपराह्न में किसी भी निर्दिष्ट समय में भारतादिक ग्रन्थों का ज्ञाता उनमें उपयुक्त होकर जो उनका वांचना आदि कार्य करता है-या जो श्रोताजन उप-

---

પણ તે વખતે આ જાતની આ બધી ક્રિયાઓ તેઓમાં પ્રત્યક્ષરૂપે જોવામાં આવે છે આ રીતે શ્રોતાઓ પણ તલ્લીન થઇને સાંભળવા માંડે છે. યોગ્ય સમયે તેઓ હાથ જોડવારૂપ ક્રિયાઓ પણ કરે છે. આ જાતની ક્રિયાઓથી યુક્ત હોવા બદલ તે વાંચનારા તેમજ સાભળનારાઓમાં નો આગમતા પણ છે કેમકે "किरिया आगमो न होइ" ક્રિયા આગમ માનવામાં આવતી નથી આ સિદ્ધાન્તનુ કથન છે. "नो आगम" માં નો શબ્દ આગમના એક દેશનો વાચક છે એટલા માટે ક્રિયારૂપ એકદેશમાં આગમનો સંપૂર્ણપણે અભાવ હોવાથી તેના આગમની એકદેશતા માનવામાં આવે છે ભારત વગેરે ગ્રંથોમાં આગમતાનુ કથન લોકની અપેક્ષાથી જ કરવામાં આવ્યુ છે કેમકે લોકમાં બીજા વ્યવહારી લોકો પણ એના આગમતારૂપ વ્યવહાર કરતાં જોવાય છે. આ રીતે પૂર્વાહ્ન કે અપરાહ્નમા કોઇ પણ નિર્દિષ્ટ સમયમાં ભારત વગેરે ગ્રંથો નો જ્ઞાતા તેઓમા ઉપયુક્ત થઇને જે તેમનુ વાચન વગેરે કાર્ય કરે છે અથવા તો

कुप्रावचनिकं भावावश्यकमुच्यते—ये इमे चरकचीरिकादयो यावत् पाषण्डस्था उपयुक्ता यथावसरं यदवश्यम्—ईज्याञ्जलि—होम—जपो—न्दुरुक्कनमस्कारादिकं भाव-रूपमावश्यकं कुर्वन्ति तेषां तत् कुप्रावचनिकं भावावश्यकम्।

तत्र—इज्या—सन्ध्योपासनम्, अञ्जलिः—जलाञ्जलिः सूर्याय दीयते, होमः—नित्यहवनम्, जपः—गायत्र्याः, उन्दुरुक्कं—अयं देशीयः शब्दः धूपार्थकः, नमस्कारः=वन्दनम्, एतेषां चरकादिभिः पाषण्डस्थैरवश्यं क्रियमाणत्वादावश्यकत्वम्। तदर्थोपयोगश्रद्धादिपरिणामसद्भावात् भावत्वम्। चरकादीनां तदर्थोप-

---

युक्त होकर उन्हें सुनते हैं वह सब वाचना सुनना आदि कार्य नो आगम की अपेक्षा से लौकिक भाव आवश्यक है।

जो चरक चीरिकादि जन उपयुक्त होकर अपने आवश्यक कार्य स्वरूप इज्या, अंजलि, होम जप, उन्दुरुक्क, और नमस्कार आदि भाव-रूप आवश्यक करते हैं, उनके ये सब कार्य कुप्रावचनिक भाव आवश्यक हैं संध्या की उपासना करना इज्या है, सूर्य के लिये जलकी अंजलि देना अञ्जलि है, निल्य हवन करना होम, गायत्री का पाठ करना जब, धूप का खेना उन्दुरुक्क और नमस्कार करना वन्दना कर्म हैं। ये सब कार्य चरकादि जनों द्वारा प्रतिदिन अवश्य करने योग्य होते हैं—अतः इनमें उन्हीं की मान्यतानुसार आवश्यकपना कहा गया है इनके करने में उनके अन्तः कारण में उनके अर्थ के प्रति उपयोग एवं श्रद्धा आदिरूप परिणति का सद्भाव पाया जाता है। इस

જે શ્રોતાઓ ઉપયુકત થઈને તેમનું શ્રવણ કરે છે તે બધું વાંચન શ્રવણ વગેરે કાર્ય નો આગમની અપેક્ષાએ લૌકિક ભાવ આવશ્યક છે.

જે ચરક ચીરિક વગેરે લોકો ઉપયુકત થઇને આવશ્યક કાર્યસ્વરૂપ ઇજ્યા, અંજલિ, હોમ, જપ, ઉન્દુરુક્ક અને નમસ્કાર વગેરે ભાવરૂપ આવશ્યકો કરે છે, તેઓના આ બધા કાર્યો કુપ્રાવચનિકભાવ આવશ્યક છે. સંધ્યાની ઉપાસના કરવી એ ઇજ્યા છે, સૂર્યને માટે પાણીની અંજલિ આપવી તે અંજલી છે, દરરોજ હવન કરવો તે હોમ, ગાયત્રી પાઠ કરવો તે જપ અને ધૂપ કરવો તે ઉન્દુરુક્ક અને નમસ્કાર એ વંદના કર્મ છે. આ બધા કાર્યો ચરક વગેરે લોકો વડે હમેશાઅવશ્ય કરવાયોગ્ય હોય છે. એટલા માટે આમાં તેમની માન્યતા મુજબ જ આવશ્યકપણું કહેવામા આવ્યું છે એમના આચરણથી તેમના હૃદયમા તેના અર્થ પ્રત્યે ઉપયોગ અને શ્રદ્ધા વગેરે રૂપ પરિણુતિ નો સદ્ભાવ મળે છે. આ અપેક્ષાએ ત્યાં ભાવતા અને

योगरूपो देश आगमः, करशिरः संयोगादिक्रियारूपो देशस्तु नोआगमः, तथा च देशिकागमभावमाश्रित्य नो आगमत्वमपि, नोशब्दस्यात्रापि देशनिषेधपरत्वात् ।

लौकिकं कुप्रावचनिकं च नोआगमतो भावावश्यकं न धर्मपदवाच्यम्, तत्र जिनाज्ञाया अभावादिति बोध्यम् ।

अथ किं लोकोत्तरिकं नोआगमतो भावावश्यकम् ? उच्यते अनुयोगद्वारे ।

" जण्णं इमे समणे वा समणी वा सावओ वा साविया वा तच्चित्ते तम्मणे

अपेक्षा से वहां भावता और एकदेश से आगमता भी है। क्यों कि हाथों का जोड़ना नमस्कार करना आदि रूप जो भी क्रियाएँ हैं वे सब नो आगम हैं। इस अपेक्षा इनमें पूर्णरूप से आगमपना न होकर आगम की एक देशता ही है चरक चीरीकादि द्वारा मान्य ग्रन्थों की निर्दिष्ट क्रियाओं का ही वहां सद्भाव है और उन्हीं के अर्थ में उनका उपयोगादिरूप परिणाम है। इसलिये ये सब चरक चीरीकादि की क्रियाएँ नो आगम की अपेक्षा से भाव आवश्यक हैं। यहां पर भी नो शब्द देश निषेध परक है अर्थात् आगम के एक देश का वाचक है ये लौकिक और कुप्रावचनिक जिन्हें नो आगम की अपेक्षा से भावावश्यकरूप में प्रकट किया गया है धर्मपद के वाच्य नहीं हैं। क्यों कि इन की आराधना से जीवों के कर्मों की निर्जरा नहीं होती है। अतः तीर्थंकर प्रभु ने इनके आराधन करने की आज्ञा प्रदान नहीं की है।

नो आगम की अपेक्षा से लोकोत्तरिक भाव आवश्यक इस प्रकार

એકદેશથી આગમતા પણ છે. કેમકે હાથ જોડવા, નમસ્કાર કરવા વગેરે રૂપ જે ક્રિયાઓ છે તે સર્વે નોઆગમ છે આ દૃષ્ટિએ એમનામાં આગમતા સંપૂર્ણપણે નથી ફક્ત આગમની એકદેશતા જ છે. ચરક ચીરિક વગેરે વડે માન્ય ગ્રંથોની નિર્દિષ્ટ ક્રિયાઓનો જ ત્યાં સદ્ભાવ છે અને તેમના જ અર્થમાં તેમનો ઉપયોગ વગેરરૂપ પરિણામ છે એટલા માટે આ બધા ચરક ચીરિક વગેરેની ક્રિયાઓ નો આગમની અપેક્ષાથી ભાવ આવશ્યક છે અહીં પણ નો શબ્દ દેશનિષેધ પરક છે એટલે કે આગમના એકદેશનો વાચક છે આ લૌકિક અને કુપ્રાવચનિકો જેમને નો આગમની દૃષ્ટિએ ભાવાવશ્યક રૂપમાં પ્રગટ કરવામાં આવ્યા છે-ધર્મપદના વાચ્ય નથી કેમકે એમની આરાધનાથી જીવોના કર્મોની નિર્જરા થતી નથી, એટલા માટે તીર્થંકર પ્રભુએ એમને આરાધવાની આજ્ઞા કરી નથી.

નો આગમની અપેક્ષાએ લોકોત્તરિક ભાવ આવશ્યક આ પ્રમાણે છેઃ—

जण्णं इमे समणे वा समणी वा सावओ वा साविया वा तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे

तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविए अण्णत्थ कत्थइ मणं अकरेमाणे उभओकालं आवस्सयं करेइ, से तं लोगुत्तरियं भावावस्सयं, से तं नोआगमतो भावावस्सयं, से तं भावावस्सयं ॥"

छाया-यत्खलु श्रमणो वा श्रमणी वा श्रावको वा श्राविका वा तच्चित्तस्तन्मनस्कस्तल्लेश्यस्तदध्यवसितस्तत्तीव्राध्यवसायस्तदर्थोपयुक्तस्तदर्पितकरणस्तद्भावनाभावित अन्यत्र कुत्रचिन्मनोऽकुर्वन् उभयकालं यत् आवश्यकं सामायिकादि करोति तेषां तल्लोकोत्तरिकं भावावश्यकम्। तेषां तद् नोआगमतो भावावश्यकम् तदेतद्भावावश्यकम् ।

अत्राप्यवश्य करणीयत्वादावश्यकत्वं, तदर्थोपयोगश्रद्धादिपरिणामस्य सद्भावाद् भावत्वम्, रजोहरणप्रमार्जिकाव्यापारयथारात्निकवन्दनकरणानन्तर सविधि

है-जण्णं इमे समणे वा समणी वा सावओ वा साविया वा तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोपउत्ते तदप्पिअकरणे तब्भावणाभाविए अण्णत्थ कत्थइ मणं अकरेमाणे उभओकालं आवस्सयं करेंति, से तं लोगुत्तरियं भावावस्सयं, से तं नो आगमतो भावावस्सयं से तं भावावस्सयं (अनुयोगद्वार)

श्रमण अथवा श्रमणी श्रावक अथवा श्राविका जो सामायिक आदि आवश्यक क्रियाओं को तच्चित होकर (उनमें ही चित्त लगाकर) तन्मन होकर उनमें ही अन्तःकरणको एकाग्रकर इत्यादि सूत्रमें कथित विधिके अनुसार दोनों कालों में करतेहैं वह उनका कार्य नो आगम की अपेक्षा से लोकोत्तरिक भाव आवश्यक हैं। ये सामायिक आदि क्रियाएँ अवश्य करने योग्य होने से आवश्यक है। कर्त्ता का उनके अर्थ में उपयोग रूप एवं श्रद्धा आदि रूप परिणाम का सद्भाव होने से उनमें

तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोपउत्ते तदप्पिअकरणे तब्भावणाभाविए अण्णत्थ कत्थइ मणं अकरेमाणे उभओकालं आवस्सयं करेंति, से तं लोगुत्तरियं भावावस्सयं, से तं नो आगमतो भावावस्सय, से तं भावावस्सयं (अनुयोगद्वार)।

શ્રમણ અથવા શ્રમણી શ્રાવક અથવા શ્રાવિકા જે સામાયિક વગેરે આવશ્યક ક્રિયાઓને તચ્ચિત્ત થઈને (તેમનામા મન પરોવીને) તલ્લીન થઈને તેમનામા જ મન લગાવીને વગેરે સૂત્રમા કથિત વિધિ મુજબ બને વખત કરે છે તેમનુ તે કાર્ય નો આગમની અપેક્ષાએ લૌકોત્તરિક ભાવ આવશ્યક છે. આ સામાયિક વગેરે ક્રિયાઓ અવશ્ય કરવા યોગ્ય હોવાથી આવશ્યક છે કર્ત્તાનો તેમના અર્થમા ઉપયોગરૂપ પરિણામનો સદ્ભાવ હોવાથી તેમનામા ભાવતા પણ છે. રજોહરણથી ભૂમિ વગેરેનું પ્રમાર્જન કરવું, વદના વગેરે કૃતિ

षड्विधावश्यककरणरूपायाः क्रियायाः अनागमत्वात् नोआगमत्वं बोध्यम्, अत्रापि नो-शब्दस्य देशतः प्रतिषेधपरत्वात्। इदम् लोकोत्तरिकं नो आगमतो भावावश्यकं धर्मपदवाच्यम् तत्र विधेयतया भगवतोऽर्हत आज्ञायाः सद्भावात्। अन्येऽपि धर्मलक्षणमेवमाहुः—

" वचनादविरुद्धाद्य-दनुष्ठानं यथोदितम्।
मैत्र्यादिभावसंमिश्रं तद्धर्म इति कीर्त्यते "॥ १॥

भावना भी है रजोहरण से भूमि आदि का प्रमार्जन करना, वंदना आदि कृति कर्म करना आदि विधि पूर्वक जो षट् विध आवश्यक करने रूप क्रियाएँ हैं वे सब "किरिया आगमो न होइ" इस नियम के अनुसार आगम नहीं हैं। अत: इन में आगम के एक देश अभाव की अपेक्षा से नो आगमता है। यहाँ पर भी नो शब्द सम्पूर्ण रूप से आगम का प्रतिषेध परक न होकर उसके एक देश का ही प्रतिषेधक है। अतः ये सामायिक आदि षड्विध आवश्यक नोआगम की अपेक्षा से लोकोत्तरीक भाव आवश्यक हैं' और इनके ही आराधन करने की जिनेन्द्र देवने भव्य जीवों को आज्ञा दी है। कारण कि ये धर्मपद के वाच्य हैं इनकी आराधना से भव्यजीवों के कर्मों की निर्जरा होती है।

दूसरों ने भी इस प्रकार धर्म का लक्षण कहा है-

वाचनादविरुद्धाद्यदनुष्ठानं यथोदितम्।
मैत्र्यादिभावसंमिश्र तद्धर्म इति कीर्त्यते॥

કર્મ આચરવા વગેરે વિધિપૂર્વક જે ષટ્વિધ આવશ્યક કરવારૂપ ક્રિયાઓ છે તેઓ સર્વે "किरिया आगमो न होइ" આ નિયમ મુજબ આગમ નથી એટલા માટે એમનામાં આગમના એકદેશ અભાવની અપેક્ષાથી નો આગમતા છે. અહીં પણ નો શબ્દ સંપૂર્ણ રૂપથી આગમનો પ્રતિષેધ પરક નથી પણ તેના એકદેશનો જ પ્રતિષેધક છે એટલા માટે સામાયિક વગેરે આ ષટ્વિધ આવશ્યકો નો આગમની અપેક્ષા એ લોકોત્તરિક ભાવ આવશ્યક છે અને જિનેન્દ્ર દેવે એમની આરાધના કરવાની જ ભવ્ય જીવોને આજ્ઞા કરી છે. કેમકે આ બધા ધર્મપદના વાચ્ય છે એમની આરાધનાથી ભવ્ય જીવોના કર્મોની નિર્જરા થાય છે.

બીજાઓએ પણ આ રીતે ધર્મનું લક્ષણ બતાવ્યું છે:—

वाचनादविरुद्धाद्यदनुष्ठानं यथोदितम्।
मैत्र्यादिभावसंमिश्र तद्धर्म इति कीर्त्यते॥

अत्यव्याख्या वचनादिति ल्यब्लोपे पञ्चमी, वचनमनुसृत्येत्यर्थः । वचनम्= आगमः । कीदृशाद् वचनादित्याह—अविरुद्धात्-कषच्छेदतापेषु अविघटमानात्, तत्र विधिप्रतिषेधयोर्बाहुल्येनोपवर्णनं कषशुद्धिः, पदे पदे तद्योगक्षेमकारिक्रियोपदर्शनं छेदशुद्धिः, विधिप्रतिषेधतद्विषयाणां जीवादिपदार्थानां च स्याद्वादपरीक्षया याथात्म्येन समर्थनं तापशुद्धिः । तच्चाविरुद्धं वचनं जिनप्रणीतमेव, निमित्तशुद्धेः

अविरुद्ध आगम से यथोदित एवं मैत्री आदि भावनाओं से मिश्रित जो अनुष्ठान है वह धर्म है । स्पष्टार्थ—वचन शब्द का अर्थ आगम है । आगम में अविरुद्धता कष, ताप, और छेद द्वारा परीक्षित होने पर ही आती है । जिस प्रकार सुवर्ण की परीक्षा कष—कसोटी पर करने से ताप—अग्नि में तपाने से और छेद—छैनी वगैरह द्वारा काटने से होती है, उसी प्रकार आगम की शुद्धि की परीक्षा भी इन तीन उपायों द्वारा की जाती है । विधि और प्रतिषेध का बहुलता से जिस शास्त्र में वर्णन है, वह शास्त्रकष से शुद्ध कहा जाता है । पद पद पर जिस शास्त्र में इनके योग और क्षेमकारि क्रियाओं का कथन किया गया मिलता है वह शास्त्र छेदसे शुद्धमाना जाता है । विधि एवं प्रतिषेध तथा इन के विषयभूत जीवादिक पदार्थों का स्याद्वाद ढंग से जहां पर यथार्थ समर्थन किया जाता है सप्तभंगी द्वारा जहां पर इनका सुन्दर शैली से विवेचन करने में आता है वह शास्त्र तप उपायद्वारा शुद्ध माना जाता

અવિરુદ્ધ આગમથી યથોદિત અને મૈત્રી વગેરે ભાવનાઓથી મિશ્રિત જે અનુષ્ઠાન છે તે ધર્મ છે. સ્પષ્ટાર્થ—વચન શબ્દનો અર્થ આગમ છે. આગમમાં અવિરુદ્ધતા, કષ, તાપ અને છેદ વડે પરીક્ષિત થયા પછી જ આવે છે. જેમ સોનાની પરીક્ષા કષ-કસોટી ઉપર કસવાથી તાપ અગ્નિ ઉપર તપાવવાથી અને છેદ—છીણી વગેરેથી કાપવાથી હોય છે, તેમજ આગમની શુદ્ધિની પરીક્ષા પણ આ ત્રણે ઉપાયો વડે કરવામાં આવે છે. વિધિ અને પ્રતિષેધનું મોટા પ્રમાણમાં જે શાસ્ત્રમાં વર્ણન છે, તે શાસ્ત્ર કષથી શુદ્ધ કહેવાય છે. ડગલે ને પગલે જે શાસ્ત્રમાં એમના યોગ અને ક્ષેમકરિ ક્રિયાઓનુ કથન કરવામાં આવ્યું છે તે શાસ્ત્ર છેદથી શુદ્ધ માનવામાં આવે છે વિધિ અને પ્રતિષેધ તેમજ એમના વિષયભૂત જીવ વગેરે પદાર્થોનો સ્યાદ્‌વાદના રૂપથી જ્યાં યથાર્થ વર્ણન કરવામા આવે છે, સપ્તભંગી વડે જ્યાં સુંદર શૈલીમાં એમનું વિવેચન કરવામાં આવે છે, તે શાસ્ત્ર તપ ઉપાયવડે શુદ્ધ માનવામા આવે છે આ ત્રણે

वचनस्य हि वक्ता निमित्तमन्तरङ्गम् , तस्य च रागद्वेषमोहपारतन्त्र्यमशुद्धिः, तेभ्यो वितथवचनप्रवृत्तेः, न चैषाऽशुद्धिर्जिने भगवति, जिनत्वविरोधात् , जयति रागद्वेषमोहरूपान्तरङ्गान रिपूनिति शब्दार्थानुपपत्तेः तपनदहनादिशब्दवत् , अन्वर्थतया चास्याभ्युपगमात् , निमित्तशुद्धयभावाद् नाजिनप्रणीतवचनमविरुद्धम् । यतः—

है। इन तीनों उपायों से परीक्षित आगम ही परिशुद्ध कहा गया है। अविरुद्ध वचन का नाम ही आगम है।

इन कषादिकों से जो आगम में शुद्धता आती है उसका कारण निमित्त की शुद्धि है। निमित्त शुद्ध जिन प्रणीत वचन ही हैं। अन्य प्रणीत वचन नहीं। निमित्त में भी शुद्धि का कारण राग, द्वेष और मोह का अभाव है। वचन का अन्तरंग कारण वक्ता ही हुआ करता है वक्ता की प्रमाणता से ही वचन—आगम में प्रमाणता आती है इसीलिये राग द्वेष आदि से कलुषित व्यक्तियों के वचन प्रमाण कोटि में नहीं आते हैं। क्यों कि राग द्वेष आदिक सद्भाव में वचनों में परस्पर विरुद्ध अर्थ की प्ररूपकता स्वयं ही आ जाती है अतः यह निश्चित सिद्धान्त है कि जहां पर इनका सर्वथा अभाव है वही सच्चा आगम का प्रणेता हो सकता है। और उसी आगम में अविरुद्धता है। ऐसा अविरुद्ध आगम जिन प्रणीत ही हो सकता है क्यों कि उनमें पूर्वोक्त राग-द्वेष आदि द्वारा अशुद्धि का सर्वथा अभाव हो चुका है इस के सर्वथा दूर होने से ही वे " जिन " इस प्रकार की संज्ञा वाले हुए हैं। "जयति

ઉપાયોથી પરીક્ષિત આગમ જ પરિશુદ્ધ કહેવામા આવ્યો છે અવિરુદ્ધ વચનનું નામ જ આગમ છે. કષ વગેરેથી આગમમાં જે શુદ્ધતા આવે છે તેનું કારણ નિમિત્તની શુદ્ધિ છે. જિન પ્રણીત વચનો જ નિમિત્તશુદ્ધ છે બીજાઓ વડે પ્રણીત વચનો નહિ નિમિત્તમાં પણ શુદ્ધિનું કારણ રાગ, દ્વેષ અને મોહનો અભાવ છે વચનનું અંતરંગ કારણ બોલનાર જ હોય છે બોલનારા (વક્તા) ની પ્રમાણુતાથી જ વચન—આગમમાં પ્રમાણુતા આવે છે એટલા માટે જ રાગ દ્વેષ વગેરેથી કલુષિત માણુસોના વચનો પ્રમાણુ કોટિમા આવતાં નથી કેમકે રાગદ્વેષ વગેરે સદ્ભાવ વચનોમાં પરસ્પર વિરુદ્ધ અર્થની પ્રરૂપકતા જાતે જ આવી જાય છે. એટલા માટે આ નિશ્ચિત સિદ્ધાંત છે કે જ્યાં એમનો સંપૂર્ણ-અભાવ છે તે જ સાચા આગમનો પ્રણેતા થઈ શકે છે અને તે આગમમાંજ અવિરુદ્ધતા છે એવુ અવિરુદ્ધ આગમ જિનપ્રણીત જ થઈ શકે છે કેમકે તેમનામાં પૂર્વોક્ત રાગદ્વેષ વગેરે વડે અશુદ્ધિનો સંપૂર્ણપણે અભાવ થઈ ચૂક્યો છે અશુદ્ધિ સર્વ રીતે નષ્ટ થવાથી તેઓ 'જિન' સંજ્ઞાવાળા થયા છે.

कारणस्वरूपानुविधायि कार्यं, तन्न दुष्टकारणाऽऽरब्धं कार्यमदुष्टं भवितुमर्हति, निम्बबीजादिक्षु यष्टिरिवेति। अन्यथा-कारणव्यवस्थोपरमप्रसङ्गात्।

यच्च-यदृच्छाप्रणयनप्रवृत्तेषु तीर्थान्तरीयेषु रागादिमत्स्वपि घुणाक्षरोत्किरण

रागद्वेषमोहरूपान् अन्तरंगरिपून् इति जिनः" राग द्वेष आदिक जो अन्तरंग शत्रु हैं इन पर जिसने विजय पायी है वे ही जिन कहलाते है जिस प्रकार तपन (सूर्य) दहन (अग्नि) आदि शब्द यथानाम तथा गुण वाले हुआ करते हैं, इसी प्रकार "जिन" यह नाम भी यथा नाम तथा गुण वाला है यथा नाम तथा गुण का होना ही नाम की सार्थकता है। जिन्हों ने इन अन्तरंग शत्रुओं को परास्त नहीं किया उनके वचनों में परस्पर अविरुद्धार्थता नहीं आसकती है-क्यों कि वहां पर निमित्त की शुद्धि नहिं हैं। इसीलिये अजिन प्रणीत वचन अविरुद्ध नहीं होते हैं। लोक में भी जिस प्रकार नीम के बीज से इक्षु की उत्पत्ति देखने में नहीं आती उसी प्रकार सदोष कारण से उत्पन्न हुआ कार्य भी निर्दोष नहीं होता है। कार्य में निर्दोषता कारण कि निर्दोषता पर आधार रखती है। न्याय शास्त्र का भी यही सिद्धान्त है "कारण स्वरूपानुविधायि कार्यं" कि कार्य, कारण के स्वरूप का अनुविधायक होता है। यदि इस प्रकार की व्यवस्था न मानी जावे तो फिर कार्य कारण भाव की व्यवस्था ही नहीं बन सकती है। हर एक पदार्थ

"जयति रागद्वेषमोहरूपान् अन्तरंगरिपून् इति जिन." रागद्वेष वगेरे जे अंतरंग शत्रुओ छे तेमना उपर जेमणे विजय मेळव्यो छे तेओ ज जिन कहेवाय छे. जेम तपन (सूर्य) दहन (अग्नि) वगेरे शब्दो नाम जेवा ज गुणवाळा होय छे, ते प्रमाणे ज "जिन" आ नाम पण नाम प्रमाणे ज गुणवाळुं छे जेवुं नाम तेवा गुणो होवा ए ज नामनी सार्थकता छे. जेमणे आ अंतरंग शत्रुओने हराव्या नथी तेमना वचनोमां परस्पर अविरुद्धार्थता आवी शकती नथी केम के त्यां निमित्तनी शुद्धि नथी एटला माटे अजिन प्रणीत वचनो अविरुद्ध होता नथी. लोकमां पण जेम लीमडाना बीजथी शेरडीनी उत्पत्ति जोवामां आवती नथी तेमज सदोष कारणथी उत्पन्न थयेलु कार्य पण निर्दोष होतुं नथी. कार्यमां निर्दोषता कारणनी निर्दोषता उपर आधारित होय छे. न्यायशास्त्रनो पण एज सिद्धांत छे, "कारणस्वरूपानुविधायिकार्यं" के कार्य कारणना स्वरूपनो अनुविधाता होय छे. जो आ जातनी व्यवस्था मानवामां आवे

व्यवहारेण क्वचित् किंचिदविरुद्धमपि वचनमुपलभ्यते, मार्गानुसारिबुद्धौ वा प्राणिनि क्वचित्, तदपि जिनप्रणीतमेव, तन्मूलकत्वात् तस्य ।

हर एक का कार्य और कारण हो जायगा। अतः आगमरूप कार्य की शुद्धि के लिये निमित्त रूप कारण शुद्धि का होना अवश्य आवश्यकीय माना गया है।

प्रश्न—आपने जो कहा कि आगम में अविरुद्धता उसके कारणभूत प्रणेता के अधीन है—सो यह बात हमें मान्य है। परन्तु इससे यह बात तो सिद्ध नहीं होती है कि वे अविरुद्ध वचन जिन भगवान के ही है' अन्य के नहीं-कारण कि अन्य सिद्धान्तकारों के वचनों में भी किसी अंशसे अविरुद्धार्थता देखी जाती है। अतः उन्हें सदोष मान कर आप जो उनमें अनाप्तता सिद्ध करते हैं सो यह बात कैसे मान्य हो सकती है ?

उत्तर-शंका तो ठीक है-परन्तु विचार करने से इसका उत्तर भी सहजरूप में मिल जाता है। अन्य सिद्धान्तकारों ने जो कुछ रचनाएँ की हैं-वे सब उन्हों ने अपनी इच्छानुसार ही की हैं। अपनी निज कल्पना में जो कुछ उन्हें सूझा वही उन्हों ने लिखा है। उनकी रचनाओं में पूर्वापर विरोध स्पष्ट प्रतीत होता है इससे उनमें रागादिक दोषों का अस्तित्व सिद्ध होता है। अब रही उनके वचनों में घुणाक्षर

નહિ તો કાર્ય કારણ ભાવની વ્યવસ્થા બની શકે તેમ નથી. દરેક પદાર્થ દરેકનું કાર્ય અને કારણ થઈ જશે. એટલા માટે આગમરૂપ કાર્યની શુદ્ધિ માટે નિમિત્તરૂપ કારણ શુદ્ધિ થવી ચોક્કસપણે આવશ્યકીય માનવામા આવી છે.

પ્રશ્ન—તમે કહ્યુ કે આગમમાં અવિરુદ્ધતા તેના કારણભૂત પ્રણેતાના આધીન છે-એ વાત એમને માન્ય છે. પણ એનાથી આ વાત તો સિદ્ધ થતી નથી કે તે અવિરુદ્ધ વચનો જિન ભગવાનના જ છે, બીજાઓના નહિ. કેમકે બીજા સિદ્ધાન્તકારોના વચનોમાં પણ કોઇ પણ અંશે અવિરુદ્ધાર્થતા જોવામાં આવે છે. એટલા માટે તેમને દોષયુક્ત માનીને તમે જે તેમનામાં અનાપ્તતા સિદ્ધ કરો છો આ વાત કેવી રીતે માન્ય થઇ શકે તેમ છે !

ઉત્તર —શંકા તો ઠીક છે, પણ વિચાર કરવાથી આનો જવાબ પણ સરળ રીતે મળી શકે તેમ છે બીજા સિદ્ધાન્તકારોએ જે રચનાઓ કરી છે તે બધી તેમણે પોતાની ઇચ્છા મુજબ જ કરી છે પોતાની કલ્પનાથી જે કંઇ તેમને યોગ્ય લાગું તે તેમણે લખ્યું છે. તેમની રચનાઓમા પૂર્વાપર વિરોધ સ્પષ્ટ રીતે દેખાઈ આવે છે. એનાથી તેઓમાં રાગ વગેરે દોષો છે એવી વાત સિદ્ધ થાય છે. હવે ઘુણાક્ષર ન્યાયથી કોઇક કોઇક સ્થાને તેમના વચનોમાં અવિરુદ્ધ

कीदृशमनुष्ठानं धर्मः? इत्याह—' यथोदितम् ' यथा येन प्रकारेण कालाद्या-राधनानुसाररूपेण-उदितं=प्रतिपादितं, तत्रैवाविरुद्धवचने इति गम्यम् ।

अन्यच्च—

जो जहवायं न कुणइ, मिच्छादिट्ठी तओ उ को अन्नो ? ।
वड्ढेइ मिच्छत्तं, परस्स संकं जणेमाणो ॥ इति ।

छाया-यो यथावादं न करोति, मिथ्यादृष्टिस्ततस्तु कोऽन्यः ।
वर्धयति मिथ्यात्वं, परस्य शङ्काजनयन् ॥ इति ।

पुनरपि कीदृशमित्याह-' मैत्र्यादिभावसंमिश्रम् ' इति । मैत्र्यादयः=मैत्री मुदिता करुणा माध्यस्थलक्षणा ये भावाः=अन्तःकरणपरिणामाः, तत्पूर्वकाश्च

न्याय से कही २ अविरुद्ध अर्थ प्रतिपादकता सो वह उनकी निज की घर की वस्तु नहीं है-उसका मूल स्रोत अविरुद्ध अर्थ का प्ररूपक जिन प्रणित आगम ही है । यही बात मार्गानुसारी बुद्धिवाले व्यक्ति में भी समझ लेनी चाहिये । वह जो कुछ भी सत्यार्थ कहता है उसका मूल कारण जिनप्रणीत आगम का सहारा ही है । श्लोक कथित "यथोदित" पद इस बात का समर्थन करता है कि देश काल आदि की आराधना के अनुसार जो आचार-अनुष्ठान प्रतिपादित किया गया है । उससे जो अविरुद्ध कहा गया है-वही धर्म है इससे विपरीत नहीं । "मैत्र्यादि-भाव संमिश्रम् " इस पद द्वारा सूत्रकार यह प्रतिपादित करते हैं कि वह अनुष्ठान मैत्री, मुदिता, करुणा और माध्यस्थ इन चार लक्षणों से युक्त होता है । ये धर्म के बाह्य चिह्न हैं । इनके सद्भाव से आत्मा में

અર્થ પ્રતિપાદકતા પણ છે તે તેમની પોતાની વસ્તુ તો નથી જ કેમકે તેનાં મૂળિયાં તો અવિરુદ્ધ અર્થના પ્રરૂપક જિનપ્રણીત આગમમા જ છે. એ જ વાત માર્ગાનુસારી બુદ્ધિવાળી વ્યક્તિમાં પણ સમજી લેવી જોઇએ. તે જે કંઇ પણ સત્યાર્થ કહે છે તેનું મૂળ કારણ જિન પ્રણીત આગમ જ છે. શ્લોક કથિત "યથોદિત" પદ આ વાત ને સ્પષ્ટ કરે છે કે દેશકાળ વગેરેની આરાધના મુજબ જે આચાર-અનુષ્ઠાન-પ્રતિપાદિત કરવામાં આવ્યાં છે, તેનાથી જે અ-વિરુદ્ધ કહેવામાં આવ્યુ છે તે ધર્મ છે. એનાથી વિપરીત નહિ. "मैत्र्यादि भावसमिश्रम्" આ પદવડે સૂત્રકાર આ વાત સ્પષ્ટ કરે છે કે તે અનુષ્ઠાન-મૈત્રી, મુદિતા, કરુણા અને માધ્યસ્થ આ ચાર લક્ષણોથી યુક્ત હોય છે. આ બધા ધર્મના બાહ્ય ચિન્હો છે. એમના સદ્ભાવથી આત્મામાં ધર્મનું અસ્તિત્વ

वाह्यचेष्टाविशेषाः, तैः संमिश्रं=संयुक्तं, मैत्र्यादिभावानां निःश्रेयसाभ्युदयधर्ममूलत्वेन शास्त्रान्तरेषु प्रतिपादनात्। तदेवंविधमनुष्ठानं धर्म इति कीर्त्यते शब्द्यते सुधीभिरिति।

नन्वेवं वचनाऽनुष्ठानं धर्म इति प्राप्तं, तथा च प्रीतिभक्त्यसङ्गानुष्ठानेष्वव्याप्तिरिति चेन्न-इह तु वचनादित्यत्र वेदात् प्रवृत्तिरित्यत्रेव प्रयोज्यत्वार्थिका

धर्म का अस्तित्व जाना जाता है अन्य सिद्धान्तकारों ने भी इन्हें निःश्रेयस और स्वर्ग के कारणभूत धर्म का मूल कहा है। अतः जो आगम से अविरुद्ध है, काल आदि की आराधना के अनुसार जो आराधित होता है और जो मैत्री आदि चार भावनाओं से गर्भित है ऐसा अनुष्ठान ही धर्म है। ऐसे ही धर्म की आराधना करने का गणधर आदि का आदेश है।

भावार्थ-तीर्थंकर कथित आगम के अनुसार होने वाले अनुष्ठान का नाम धर्म है। इसका फलितार्थ यही है कि जिस अनुष्ठान में तीर्थंकर प्रभु द्वारा कथित आगम से विरोध नहीं आता है वही धर्म है। तथा च-प्रीति भक्ति और असंग रूप अनुष्ठानों में इस लक्षण की अप्राप्ति नहीं होती है क्यों कि वहां पर भी इस लक्षण का सद्भाव पाया जाता है " वाचनानुष्ठानं धर्मः " इस प्रकार के कथन में " वेदात् प्रवृत्तिः " की तरह प्रयोज्य अर्थ में पंचमी विभक्ति हुई है अतः जिस प्रवृत्ति का प्रयोज्य वचन है वह धर्म है। (वचनानुष्ठानं धर्मः) यहां से लेकर (प्रीति भक्ति असंगानुष्ठान इत्यादि तक) लिखने की आवश्यकता

જાણવામાં આવે છે બીજા સિદ્ધાંતકારોએ પણ આ બધાને નિઃશ્રેયસ અને સ્વર્ગના કારણભૂત ધર્મનું મૂળ બતાવ્યું છે એથી જે આગમથી અવિરુદ્ધ છે કાળ વગેરેની આરાધના મુજબ જે આરાધિત હોય છે અને જે મૈત્રી વગેરે ચાર ભાવનાઓથી યુક્ત છે એવું અનુષ્ઠાન જ ધર્મ છે એવા જ ધર્મની આરાધના કરવા માટે ગણધર વગેરેનો આદેશ છે

ભાવાર્થ —તીર્થંકર કથિત આગમમુજબ આચરાયેલા અનુષ્ઠાનનું નામ ધર્મ છે એનો અર્થ આ પ્રમાણે ફલિત થયો છે કે જે અનુષ્ઠાનમાં તીર્થંકર પ્રભુ વડે કથિત આગમથી વિરોધ જણાતો નથી તે જ ધર્મ છે તેમજ પ્રીતિ, ભક્તિ અને અસંગ રૂપ અનુષ્ઠાનોમાં આ લક્ષણની અપ્રાપ્તિ પણ હોતી નથી કેમકે ત્યાં પણ આ લક્ષણનો સદ્ભાવ મળે છે " વાચનાનુષ્ઠાનં ધર્મઃ " આ વચનના કથનમાં " વેદાત્ પ્રવૃત્તિ "ની જેમ પ્રયોજ્ય અર્થમાં પંચમી વિભક્તિ થઈ છે એટલા માટે જે પ્રવૃત્તિનું પ્રયોજ્ય વચન છે તે ધર્મ છે (વચનાનુષ્ઠાનં ધર્મઃ) અહીંથી માંડીને પ્રીતિ ભક્તિ અસંગાનુષ્ઠાન વગેરે સુધી લખવાની

पञ्चमी, तथा च-वचनप्रयोज्यप्रवृत्तिकत्वं लक्षणमिति न कुत्राप्यव्याप्तिदोषावकाशः प्रीतिभक्त्यसङ्गानुष्ठानानामपि वचनप्रयोज्यत्वाऽनपायादिति ।

किं च--हिंसादिपापपरिहारो धर्मसिद्धेर्लिङ्गमित्यार्हताः स्वीकुर्वन्ति । तथा चोक्तम्-

औदार्यं दाक्षिण्यं पापजुगुप्साऽथ निर्मलो बोधः ।
लिङ्गानि धर्मसिद्धेः, प्रायेण जनप्रियत्वं च ॥ इति ।

पापजुगुप्सा=पापपरिहारः ।

षट्कायवधसाध्यं प्रतिमापूजनं कुर्वतां धर्मसिद्धिः कथं स्यादिति विचारयन्तु सुधियः । अपरं च—

प्रतीत नहीं होता है क्यों कि वचनानुष्ठान धर्म का अर्थ वचन के अनुसार होने वाला अनुष्ठान धर्म है इसमें कोई जातका दोष नहीं आता है।"

किंच—हिंसादिक पांच पापों का परित्याग धर्म सिद्धि का चिह्न है इस प्रकार की मान्यता जैनियों की है। शास्त्रान्तर में यही बात प्रकट की गई है-

औदार्यं दाक्षिण्यं पापजुगुप्साऽथ निर्मलो बोधः ।
लिङ्गानि धर्मसिद्धेः प्रायेण जनप्रियत्वं च ॥ (षोडशा-ग्रंथ ४ प्रकरण)

उदारता-हृदय की विशालता, दाक्षिण्य-सर्व जीवों के अनुकूल प्रवृत्ति, पापजुगुप्सा-पाप का परित्याग, निर्मलबोध-तत्त्वज्ञान, और जन प्रियत्व ये ५ धर्मसिद्धि के लक्षण हैं। अब यहां पर विचारने की बात यह है कि जब पाप का परिहार करना यह धर्मसिद्धि का लक्षण

આવશ્યકતા જણાતી નથી કેમકે વચનાનુષ્ઠાન ધર્મનો અર્થ વચન મુજબ થનાર અનુષ્ઠાન ધર્મ છે. આમાં કોઈ પણ જાતનો દોષ નથી

કિંચ—હિંસા વગેરે પાંચ પાપોનો પરિત્યાગ ધર્મસિદ્ધિનું ચિહ્ન છે. આ જાતની માન્યતા જૈનીઓની છે. શાસ્ત્રાંતરમાં પણ એ જ વાત સ્પષ્ટ કરવામાં આવી છેઃ—

औदार्यं दाक्षिण्यं पापजुगुप्साऽथ निर्मलो बोधः ।
लिङ्गानि धर्मसिद्धेः प्रायेण जिनप्रियत्वं च ॥ (षोडशग्रंथ ४ प्रकरण)

ઉદારતા—હૃદયની વિશાલતા, દાક્ષિણ્ય-બધા જીવોને અનુકૂળ થઈ પડે તેવી પ્રવૃત્તિ, પાપ જુગુપ્સા-પાપનો ત્યાગ, નિર્મળ બોધ - તત્ત્વજ્ઞાન, અને જિનપ્રિયત્વ આ પાંચે ધર્મસિદ્ધિના લક્ષણો છે, હવે આપણી સામે આ વાત વિચાર કરવાયોગ્ય છે કે જ્યારે પાપનો પરિહાર કરવો એ ધર્મસિદ્ધિનું લક્ષણ

एकेन्द्रियादिषड्जीवनिकायजीवानां रक्षणं धर्मस्य मूलमिति वदतामर्हतां षट्कायविराधनासाध्यायाः प्रतिमापूजायाः अङ्गीकारे जैनत्वमेव नश्यति, जैन धर्मस्य मूलतत्त्वस्य समुच्छेदात्।

तथा चोक्तम्–जीवदयसच्चवयणं, परधणपरिवज्जणं सुसीलं च।
खंती पंचिंदियनिग्गहो य धम्मस्स मूलाइं ॥ दर्शनशुद्धि–२ तत्त्व)

है तो प्रतिमा का पूजन करने वाले के इसका परिहार कैसे हो सकता है। क्यों कि यह पहिले ही प्रकट किया जा चुका है कि यह प्रतिमा-पूजन कार्य षट् काय के आरंभ के बिना साध्य हो ही नहीं सकता। अतः प्रतिमापूजन वाले को धर्मसिद्धि का लाभ मानना यह एक मनगढंत कल्पना ही है–शास्त्रीय कल्पना नहीं। शास्त्र में तो यही जिनेन्द्र देव की आज्ञा है कि एकेन्द्रिय आदि षट् निकाय के जीवों की रक्षा करना ही प्रत्येक जैन मात्र का कर्तव्य है, और यही धर्म का मूल है जब इस प्रकार की वीतराग प्रभु की आज्ञा है–तो फिर यह तो सोचो की षट्निकाय की विराधना से साध्य इस प्रतिमापूजन की मान्यता में जैनत्व का रक्षण ही कैसे हो सकता है–। प्रत्युत जैनधर्म का इस प्रकार की मान्यता से समूलतः नाश ही हो जाता है।

जीवदयसच्चवयणं परधणपरिवज्जणं सुसीलंच।
खंती पंचिंदिय निग्गहोय धम्मस्स मूलाइं ॥ (दर्शन शु २ तत्त्व)

છે ત્યારે પ્રતિમાની પૂજા કરનારાઓ માટે આનો પરિહાર કેવી રીતે થઈ શકે તેમ છે કેમકે આ વાત પહેલા જ પ્રગટ કરવામાં આવી છે કે આ પ્રતિમા પૂજન કાર્ય ષટ્કાયના આરંભ વગર સાધ્ય થઈ શકે તેમ નથી એથી પ્રતિમા પૂજનવાળા માટે ધર્મસિદ્ધિનો લાભ સમજી લેવો આ એક ખોટી કલ્પના માત્ર છે. શાસ્ત્રીય કલ્પના નથી શાસ્ત્રમાં તો જિનેન્દ્રદેવની એ જ આજ્ઞા છે કે એકેન્દ્રિય વગેરે ષટ્કાયના જીવોની રક્ષા કરવી જ દરેકે દરેક જૈનનું કર્તવ્ય છે અને એ જ ધર્મનું મૂળ છે. જ્યારે આ જાતની વીતરાગ પ્રભુની આજ્ઞા છે ત્યારે આ વાત ઉપર તો વિચાર કરીએ કે ષટ્કાય નિકાયની વિરાધનાથી સાધ્ય આ પ્રતિમા પૂજનની માન્યતામાં જૈનત્વનું રક્ષણ જ કેવી રીતે થઈ શકે છે. આ જાતની માન્યતાથી તો જૈન ધર્મનો મૂળરૂપે વિનાશ જ થઈ જાય છે.

जीवदयसच्चवयणं परधणपरिवज्जणं सुसीलं च।
खंती पंचिंदियनिग्गहोय धम्मस्स मूलाइं ॥ (दर्शन शु० २ तत्त्व)

जीवाश्चेतनादिलिङ्गव्यङ्ग्या एकेन्द्रियादयः तेषां दया=रक्षणं जीवदयेति। ह्रस्वत्वं प्राकृतप्रभवम्। धर्ममूलं भवतीति सर्वत्र क्रियाऽध्याहारः कार्यः।

प्रतिमापूजनं विशुद्धपरिणामजनकत्वादुपादेयमितिकथनं निर्मूलम्--

धर्माङ्गेषु दयायाः प्राधान्यात् प्राथम्यं वर्तते। हिंसासाध्यायां प्रतिमापूजायां दयाया अभावाद् धर्माङ्गत्वं न सिध्यति। तथा च विशुद्धात्मपरिणामरूपं धर्मं प्रति कारणत्वं प्रतिमापूजनस्य न संभवति। अन्यच्च--

इस लोक में यही बात कही गई है। जीवों की दया करना सत्य बोलना, पर धन के हरण करने का त्याग करना, कुशील का त्यागना, क्षमाभाव रखना, पांचों इद्रियों को वश में रखना ये सब धर्म के मूल हैं। जिस प्रकार विना मूल-जड़ के वृक्ष की स्थिति आदि नहीं हो सकती है-उसी प्रकार उनके विना भी धर्मरूपी महावृक्ष की जीवात्मा-ओं में स्थिरता नहीं हो सकती है जो व्यक्ति "प्रतिमा के पूजने से विशुद्ध परिणामों की आत्मा में जागृति होती है" इस बात का सम-र्थन करते हुए उपयोगिता सिद्ध करते हैं उनका यह कथन बिलकुल ही निर्मूल है क्यों कि धर्म में सर्वप्रथम स्थान दया को ही दिया गया है जीवों की हिंसा से साध्य इस प्रतिमापूजन में उस दया का संरक्षण ही नहीं होता है-इसलिये इसे धर्म का अंग कैसे माना जा सकता है जो धर्म का ही अंग नहीं बनता है उससे कैसे परिणामों में विशुद्धता की जागृति हो सकती है अतः यह प्रतिमापूजन धर्म प्राप्ति में कारण नहीं है ऐसा मानना चाहिये।

આ શ્લોકમાં એ જ વાત બતાવવામાં આવી છે કે જીવ ઉપર દયા કરવી, સત્ય બોલવું, પારકાના ધનને લઈ લેવાની વૃત્તિને દૂર કરવી, કુશીલનો ત્યાગ કરવો, ક્ષમાભાવ રાખવો, પાંચ ઇન્દ્રિયોને વશમાં રાખવી આ બધાં ધર્મનાં મૂળ છે જેમ મૂળ-જડ વગરનાં વૃક્ષની સ્થિતિ વગેરે જ થઈ શકે તેમ નથી તેમજ એમના વગર પણ ધર્મરૂપી મહાવૃક્ષની જીવાત્માઓમાં સ્થિરતા થઇ શકે તેમ નથી. જે વ્યક્તિ "પ્રતિમાના પૂજનથી વિશુદ્ધ પરિણામોની આત્મામાં જાગૃતિ થાય છે." આ વાતને યોગ્ય માનીને આની ઉપયોગિતા સિદ્ધ કરે છે, તેમનું આ કથન સાવ નિર્મૂળ-વ્યર્થ છે. કેમકે ધર્મમાં સૌ પ્રથમ સ્થાન દયાનેજ આપવામાં આવે છે. જીવોની હિંસાથી સાધ્ય આ પ્રતિમા પૂજનમાં તે દયાની રક્ષા જ થતી નથી. એટલા માટે આને ધર્મનું અંગ કેવી રીતે માની શકીયે. અને જે ધર્મનું જ અંગ થઈ શકતું નથી તેનાથી કેવી રીતે પરિણામોમાં વિશુદ્ધતાની જાગૃતિ થઈ શકે. એટલા માટે આ પ્રતિમાપૂજન ધર્મપ્રાપ્તિમા કારણ નથી આમ માની લેવુ જોઈએ.

धर्मालम्बनानि स्थानाङ्गसूत्रे भगवता प्रज्ञप्तानि--

"धम्मं णं चरमाणस्स पंच निस्साठाणा पण्णत्ता ।

तं जहा-छक्काया, गणो, राया, गिहवई, सरीरं" ॥ इति ।

भगवता धर्मालम्बनानि पञ्चैव कथितानि । तत्र "छकाया" इत्युक्त्या गणराजादीनामपि संग्रहे सत्यपि पुनरतेषां विशिष्योपन्यासः प्राधान्यख्यापनार्थः

अन्यच्च-"धम्मं चरमाणस्स पंच निस्साठाणा पण्णत्ता-तं जहा-छक्काया, गणो, राया, गिहवई, सरीरं" इति-भगवान ने धर्म के छहकाय, गण, राजा, गाथापति और शरीर इस प्रकार ये छह आलम्बन स्थान स्थानाङ्गसूत्र में कहे हैं। इनमें जिन प्रतिमा का कथन नहीं किया है-इससे यह भलीभांति विदित हो जाता है कि जिन प्रतिमा और उसका पूजन धर्म का अवलम्बन रूप नहीं है यदि जिन प्रतिमा का पूजन कार्य धर्म का अवलम्बनरूप सिद्धान्तकारों की दृष्टि में मान्य होता तो वे अवश्य इन स्थानों के कथन करते-जिस प्रकार छहकाय, गण, राजा इत्यादि का कथन किया है। यद्यपि "छहकाय" इस एक पद से ही गण, राजा आदि का स्वतः कथन सिद्ध हो जाता है, क्यों की इन सब का समावेश उसी एक पद में हो जाता है। फिर भी इनका भिन्न २ रूप से जो नाम निर्देश किया है उसका कारण ये धर्म के प्रधान आलम्बन रूप हैं इस बात को प्रकट करने के लिये ही किया गया है। इसी प्रकार

અને બીજું પણ કહ્યુ છે કે "धम्म चरमाणस्स पंच निस्साठाणा पण्णत्ता-तं जहा छक्काया, गणो, राया, गिहवई, सरीरं" इति, ભગવાને ધર્મનાં છ કાય, ગણ, રાજા, ગાથાપતિ અને શરીર આ રીતે છ આલંબનસ્થાન સ્થાનાંગ સૂત્રમાં કહ્યાં છે આ બધામાં જિન પ્રતિમાનું કથન કરવામાં આવ્યુ નથી. એનાથી આ સ્પષ્ટ રીતે જણાય છે કે જિનપ્રતિમા અને તેનું પૂજન ધર્મનું અવલંબન નથી. જો સિદ્ધાન્તકારોની દષ્ટિમાં જિન પ્રતિમાના પૂજનનું કાર્ય ધર્મના અવલંબન રૂપમાં માન્ય હોત તો તેઓ ચોક્કસ આ સ્થાનોના કથનની સાથે સાથે તેમનું પણ કથન જેમ છ કાય, ગણ રાજા વગેરેનું કથન કર્યું છે તેમ કર્યું હોત જો કે "ષટ્કાય" આ એક પદથી જ ગણ, રાજા વગેરેનું સ્વતઃ કથન સિદ્ધ થઈ જાય છે, કેમકે આ બધાનો સમાવેશ તે એક પદમાં જ થઈ જાય છે, છતાંય આ બધાનો સ્વતંત્ર રૂપમાં જે નામ નિર્દેશ કરવામાં આવ્યો છે તેનું કારણ આ છે કે તે બધા ધર્મના પ્રધાન આલંબનરૂપ છે, આ વાતને પ્રગટ કરવા માટે જ કરવામાં આવ્યો છે. આ પ્રમાણે જો જિનપ્રતિમા પણ

दर्शनवन्दनपूजनादिना जिनप्रतिमायाः सम्यक्त्वशुद्धिहेतुत्वाऽष्टकर्मक्षयहेतुत्व स्वीकारे तु अस्या अपि निश्रास्थानत्वेन निश्रास्थानेषु विशिष्य तदुपन्यासमकृत्वा "पंच निस्साठाणा पण्णत्ता" इति कथनं विरुध्यते। तस्मात् जिनप्रतिमाया निश्रास्थानेष्वनभिधानात् प्रतिमायां धर्मालम्बनत्वं न सिध्यति। एवं च तत्पूजनं कुशलात्मपरिणामविशेषस्य धर्मस्य कारणं नास्तीति विश्वसनीयम्।

प्रतिमापूजायामारम्भः परिग्रहश्चावश्यं भावी। ताभ्यां विना पूजाया असम्भवात् तथाऽपि-प्रतिमापूजोपदेशकाः एवं वदन्ति--

---

यदि जिन प्रतिमा भी दर्शनवन्दना और पूजादिक द्वारा सम्यक्त्वशुद्धि एवं अष्टकर्मों के क्षय का कारण होती तो उसका भी धर्म का आलम्बनरूप होने से यहां पर विशेषरूप से शास्त्रकार को कथन करना चहिये था! परन्तु ऐसा तो सूत्रकार ने किया नहीं है। फिर भी यदि उसे धर्म का अवलम्बनरूप स्वीकार किया जाय तो इस सूत्र में प्रतिपादित 'पांच ही निश्रास्थान हैं" इस कथन से विरोध आता है कारण कि उन स्थानों से अतिरिक्त एक और जिनप्रतिमापूजन धर्म का आलम्बन रूप स्थान बढ जाता है अतः 'पंच निस्साठाणा पण्णत्ता' इस सूत्र प्रदर्शित उपन्यास से यह बात पुष्ट होती है कि जिन प्रतिमा धर्म का आलम्बन स्थान नहीं है। यह तो उस के पक्षपातियों के ही दिमाग की एक उटपटांग सूझ है यह जानते हुए भी कि जिनप्रतिमापूजन में आरंभ और परिग्रह अवश्यंभावी है, इनके विना वह कथमपि साध्य हो नहीं सकती है, तो भी जिनपूजाके उपदेशक खेद है कि जनता को

દર્શન વન્દના અને પૂજા વગેરે વડે સમ્યકત્વ શુદ્ધિ અને અષ્ટ કર્મોના ક્ષયનું કારણ હોત તો ધર્મના આલંબનરૂપ હોવા બદલ અહીં વિશેષરૂપમાં શાસ્ત્રકારો વડે તેનું કથન કરવું જોઈએ પણ સૂત્રકારે આવું કંઈ કર્યું નથી. છતાંય જો તેને ધર્મના અવલંબનરૂપે સ્વીકારીયે તો આ સૂત્રમાં પ્રતિપાદિત "પાંચ જ નિશ્રાસ્થાનો છે" આ કથનથી વિરોધ ઊભો થાય છે કેમકે તે સ્થાનોથી અતિરિક્ત એક બીજા જિનપ્રતિમા પૂજન ધર્મના આલંબનરૂપ સ્થાનની વૃદ્ધિ થઈ જાય છે એથી "पंच निस्साठाणा पण्णत्ता" આ સૂત્ર પ્રદર્શિત ઉપન્યાસથી આ વાત પુષ્ટ થાય છે કે જિનપ્રતિમા ધર્મનું આલંબન સ્થાન નથી આ તો ફક્ત તેના તરફદારીઓના મસ્તિષ્કની જ વ્યર્થની કલ્પના છે. જિનપ્રતિમા પૂજનમાં આરંભ અને પરિગ્રહ અવશ્યંભાવી છે. એના વગર તે કોઈ પણ સંજોગે સાધ્ય થઈ શકે તેમ નથી આવુ જાણુવા છતાં બહુ દુઃખ સાથે કહેવુ પડે છે કે જિન પૂજાના ઉપદેશકો સમાજને "पूयाए काय

अपि च–" पूयाए कायवहो, पडिकुट्ठो सो उ किं तु जिणपूया ।
सम्मत्तसुद्धिहेउ, त्ति भावणीया उ णिरवज्जा " ॥१॥
छाया–पूजायां कायवधः प्रतिकुष्टः सतु किन्तु जिनपूजा ।
सम्यक्त्वशुद्धिहेतु–रिति भावनीया तु निरवद्या ॥१॥
सर्वमेतदुत्सूत्रप्ररूपणम्––श्रूयतां प्रवचनं तावत्––
दो ट्ठाणाइं अपरियाणित्ता आया णो केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए। तं जहा–आरंभे चेव परिग्गहे चेव। दोट्ठाणाइं अपरियाणित्ता आया णो केवलं बोहिं बुज्झिज्जा। तं जहा–आरंभे चेव परिग्गहे चेव॥ (स्था. २ ठा. १उ.)इति

" पूयाए कायवहो पडिकुट्ठो सो उ कि तु जिणपूया । सम्मत्तसुद्धिहेउं, त्ति भावणीया उ णिरवज्जा ॥ १ ॥ इस प्रकार की उत्सूत्र प्ररूपणा द्वारा भ्रम में ही डालते रहते हैं। हमें तो बुद्धि पर तरस आता है कि ये क्यों नहीं इस सिद्धान्त को समझने की चेष्टा करते हैं कि–" दोट्ठाणाइं अपरियाणित्ता आया णो केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए । तं जहा–आरंभे चेव परिग्गहे चेव। दोट्ठाणाइं अपरियाणित्ता आया णो केवलबोधिं बुज्झिज्जा तं जहा–आरंभे चेव परिग्गहे चेव (स्था. २ ठा. १ उ.) ये दो धनधान्य आदि रूप परिग्रह और प्राणातिपात आदि रूप आरंभ स्थान अनर्थ के कारण है। जब तक आत्मा ज्ञ परिज्ञा से इन्हें जान कर और प्रत्याख्यान परिज्ञा से इनका परित्याग नहीं कर देती है तब वह ब्रह्मदत्त की तरह केवलि द्वारा कथित धर्म के सुननेका अधिकारी नहीं हो सकती है और न इन दोनों के त्याग किये विना वह सम्यक्त्व को

वहो पडिकुट्ठो सोउ किं तु जिणपूया। सम्मत्तसुद्धिहेउं, त्ति भावणीया उ णिरवज्जा ॥ १ ॥ આ જાતની ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણા વડે ભ્રમમાં જ નાખી રાખે છે. અમને તો તેમની બુદ્ધિ ઉપર દયા આવે છે કે તેઓ આ સિદ્ધાંતને સમજવાની કોશિશ કેમ નહિં કરતા હોય? કેમકે " दो ट्ठाणाइं अपरियाणित्ता आयाणो केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए । त जहा–आरंभे चेव परिग्गहे चेव। दो ट्ठाणाइ अपरियाणित्ता आया णो केवलिबोधिं बुज्झिज्जा तं जहा–आरंभे चेव परिग्गहे चेव (स्था० २ ठा० १ उ०) આ બે ધન ધાન્ય વગેરે રૂપ પરિગ્રહ અને પ્રાણાતિપાત વગેરે રૂપ આરંભ સ્થાન અનર્થના કારણ છે. જ્યાં સુધી આત્મા જ્ઞ પરિજ્ઞા વડે એમને જાણીને અને પ્રત્યાખ્યાન પરિજ્ઞાવડે એમનો પરિત્યાગ કરતી નથી ત્યાં સુધી તે બ્રહ્મદત્તની જેમ કેવલિવડે કથિત ધર્મને સાંભળવા માટે અધિકારી (યોગ્ય પાત્ર) ગણાઈ શકે તેમ નથી. અને તે બન્નેના જ્યાં સુધી ત્યાગ કરે નહિ ત્યાં સુધી તે સમ્યક્ત્વ મેળવવા યોગ્ય

'दो ठाणाइं' द्वे स्थाने=द्वे वस्तुनी 'अपरियाणित्ता' अपरिज्ञाय=ज्ञपरिज्ञया 'एतावारम्भपरिग्रहावनर्थाय' इत्यविज्ञाय अलं ममाभ्यामिति परिहाराभिमुख्य-द्वारेण प्रत्याख्यानपरिज्ञया अप्रत्याख्याय च प्रक्षद्वत्तवत् तयोः प्रवृत्तः, 'आया' आत्मा=जीवः, नो केवलिप्रज्ञप्तं=जिनोक्तं धर्मं लभेत श्रवणतया-श्रवणभावेन श्रोतुमित्यर्थः। जैनधर्मश्रवणानर्हो भवतीति भावः। तद् यथा आरम्भः-प्राणा-तिपातादिरूपः, पापस्थानम् परिग्रहः-धनधान्यादिसंग्रहः।

द्वे स्थाने अपरिज्ञाय - ज्ञपरिज्ञयाऽनर्थकारणमज्ञात्वा प्रत्याख्यानपरिज्ञया अप्रत्याख्याय च तत्र प्रवृत्तः 'आया' आत्मा-जीवः केवलं बोधिं=अर्थात् सम्यक्त्वं न बुध्येत=न प्राप्नुयादित्यर्थः।

पाने के भी योग्य बन सकती है" यह सूत्र हमें यह शिक्षा देता है कि भला जिस परिग्रह और आरंभयुक्त आत्मामें केवलि प्रज्ञप्त धर्म सुनने तक की भी योग्यता नहीं है और न जिसमें सम्यक्त्व का अनुभव है, है उस आत्मा में " वह प्रतिमा सम्यक्त्व की शुद्धि का कारण होता " इस प्रकार की मान्यता आकाश के फूल के समान एक कल्पना मात्र ही है। अतः यह सिद्धान्त निश्चित होता है कि इस प्रतिमापूजन में न तो धर्म के कोई मौलिकतत्त्व का समावेश है और न धर्म का कोई अंग ही है। यह न तो धर्म का आलम्बनरूप है और न धर्म के लक्षण से ही युक्त है। फिर भी इसे धर्म पद का वाच्य मानना केवल स्पष्ट रूप से उत्सूत्र प्ररूपणामात्र है इस प्रकार शास्त्रीयमर्यादा के विरुद्ध इस प्रतिमा पूजन का उपदेश देने वाले तथा प्रतिमापूजन कराने वाले उप-

---

બની શકે તેમ નથી. "આ સૂત્ર અમને આ જાતની ભલામણ કરે છે કે જે પરિગ્રહ અને આરંભયુક્ત આત્મામાં કેવલિ પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મ સાંભળવા સુધીની પણ યોગ્યતા નથી અને જેમાં સમ્યક્ત્વની અનુભૂતિ પણ નથી તે આત્મામાં "તે પ્રતિમા સમ્યક્ત્વની શુદ્ધિનું કારણ હોય છે," આ જાતની માન્યતા આકા-શના પુષ્પની જેમ એક ખોટી કલ્પના માત્ર જ નથી તો બીજું શું છે ? એટલા માટે એ સિદ્ધાન્ત નિશ્ચિત થાય છે કે આ પ્રતિમાપૂજનમાં ધર્મના ન કોઈ મૌલિક તત્ત્વોનો સમાવેશ છે અને ન તો તે ધર્મનું કોઈ પણ એક અંગ છે. આ ધર્મનું આલંબનરૂપ નથી અને ધર્મના લક્ષણથી યુક્ત પણ નથી. છતાં ય તેને ધર્મપદવાચ્ય માનવું તે સ્પષ્ટ રીતે ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણા માત્ર છે. આ રીતે શાસ્ત્રની મર્યાદાથી વિપરીત આ પ્રતિમા પૂજનનો ઉપદેશ આપનારાઓ તેમજ પ્રતિમા

यत्र केवलिप्रज्ञप्तधर्मस्य श्रवणायापि योग्यता न भवति, सम्यक्त्वस्य च नानुभवः, तत्र सम्यक्त्वशुद्धिहेतुत्वं गगनकुसुमवन्मनोविकल्पमात्रम्। यस्य प्रतिमापूजनस्य नास्ति धर्ममूलत्वं न चास्ति धर्माङ्गत्वं, नापि धर्मालम्बनत्वं, न चापि धर्मलक्षणसमन्वितं, तस्य धर्मपदवाच्यत्वकल्पने — सुस्पष्टमेवोत्सूत्रप्ररूपणम्। भगवताऽर्हता-प्रवचने अनुपदिष्टस्य प्रतिमापूजनस्योपदेशकरणेन भ्रान्ति जनयतां प्रतिमापूजन कारयतां च का गतिः स्यादिति समालोचनीयं सुधीभिः। अपरं च—

दोहिं ठाणेहिं आया केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए तं जहा खएण चेव उवसमेण चेव एवं जाव मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा तं जहा—खएण चेव उवसमेण चेव। (स्था० २ ठा० ४ उ०)

"खएण चेव" इति ज्ञानावरणीयस्य दर्शनमोहनीयस्य च कर्मण उदयप्राप्तस्य क्षयेण, अनुदितस्य चोपशमेन=क्षयोपशमेनेत्यर्थः। अत्र पदद्वयेन क्षयोपशमरूपोऽर्थो गृह्यते। यावत् करणात्—"केवलं बोहिं बुज्झेज्जा।"

केवलिप्रज्ञप्तधर्मस्य श्रवणं तथा सम्यक्त्वं च ज्ञानावरणीयस्य दर्शनमोहनीयस्य च कर्मणः क्षयोपशमादेव लभ्यते इति भगवता प्रतिबोधितम्। इदमत्रबोध्यम् नहि रुधिरलिप्तवस्त्रस्य रुधिरेण प्रक्षालने शुद्धिर्भवति प्रत्युत मलिनतरत्वमेव,

---

देशक तथा प्रेरक की वास्तविक वस्तुस्थिति से जनता को अंधकार में रखने के कारण क्या गति होगी यह स्वयं बुद्धिमानों को विचार ने जैसी बात है।

अपरं च—दोहिं ठाणेहिं आयाकेवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए-तं जहा इत्यादि सूत्र—

इसका भावार्थ यह है-जीव केवलियों द्वारा प्रज्ञप्त धर्म का श्रवण तथा सम्यक्त्व का लाभ ज्ञानावरणीय और दर्शनमोहनीय कर्म के क्षय और क्षयोपशम से ही करता है प्रतिमापूजन से नहीं। जिस प्रकार रुधिर से मैले वस्त्र की सफाई रुधिर में ही धोने से नहीं होती, उसी

પૂજન કરાવનારા ઉપદેશકો પ્રેરકરૂપ થઈને યથાર્થ વસ્તુસ્થિતિથી સમાજને અંધારામાં રાખે છે તે બદલ તેમની શી દશા થશે તે વિદ્વાનો સમજી શકે છે.

અને બીજું પણ કે—दोहिं ठाणेहिं आया केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए-तं जहा—ઇત્યાદિ સૂત્ર—

આનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે કેવલિઓ વડે પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું શ્રવણ તેમજ સમ્યક્ત્વનો લાભ જીવ જ્ઞાનાવરણીય અને દર્શન મોહનીય કર્મના ક્ષય અને ક્ષયોપશમથી કરે છે. પ્રતિમાપૂજનથી નહિ જેમ લોહીથી ખરડાએલા વસ્ત્રની સફાઈ લોહી વડે ધોવાથી થતી નથી તેમજ સમ્યક્ત્વની શુદ્ધિ અથવા તો કર્મોનો વિનાશ પ્રતિમાપૂજનથી થતો નથી બલ્કે જેમ તે લોહીથી

तथा—सम्यक्त्वशुद्ध्यर्थं कर्मक्षयार्थं च प्रतिमापूजने प्रवृत्तस्य जीवस्य षट्कायोपमर्दनसाध्यपूजया ज्ञानावरणीयस्य दर्शनमोहनीयस्य च कर्मणो वृद्धौ सत्यां सम्यक्त्वस्य केवलिप्रज्ञप्तधर्मस्याऽपि प्राप्तिःकालत्रयेऽपि न संभवति किं पुनः कर्मक्षयाशा

सम्यक्त्वमात्मनः क्षायोपशमिको भावः। प्रतिमा तु न क्षयोपशमस्वरूपा, न चापि क्षयोपशमहेतुः, ज्ञानावरणीयदर्शनमोहनीयकर्मनिर्जराजनकत्वाभावात्, देशतः कर्मक्षयो हि निर्जरा तां प्रति तपस एव कारणत्वात्। उक्तं चोत्तराध्ययनसूत्रे—

प्रकार सम्यक्त्व की शुद्धि अथवा कर्मों का विनाश प्रतिमापूजनसे नहीं होता है, प्रत्युत जिस प्रकार वह रुधिरयुक्त वस्त्ररुधिर से साफ किये जाने पर अधिक मलिन हो जाता है उसी प्रकार षट्काय की विराधना साध्य इस प्रतिमापूजन में लवलीन जीव भी ज्ञानावरणीय और दर्शन मोहनीय कर्म की वृद्धि करता हुआ अधिकाधिक मलिन होता रहता है वह कभी भी इनकी वृद्धिसे सम्यक्त्व और केवलि प्रज्ञप्त धर्म का पाने वाला नहीं बन सकता है। इसलिये कर्मों के क्षय करने की आशा से प्रतिमापूजन में लवलीन मनुष्य अपने कर्मों का इस कार्यसे क्षय करता है यह एक दुराशामात्र है अरे! जब इस कार्य से जीव सम्यक्त्व और केवलिप्रज्ञप्त धर्म तक के भी लाभ से सदा वंचित रहता है तो उससे फिर कर्म क्षय मानना यह कोरी कल्पना मात्र ही है। सम्यक्त्व यह जीव का क्षायोपशमिक भाव है। प्रतिमा न क्षयोपशम स्वरूप है और न उस क्षयोपशम में कारण रूप ही है। कारण कि इस से ज्ञानावरणीय और दर्शनमोहनीय कर्म की निर्जरा नहीं होती है। कर्मों का

ખરડાયેલું વસ્ત્ર લોહીવડે સાફ કરવાથી મલિન થઈ જાય છે તેમજ ષટ્કાયની વિરાધના સાધ્ય આ પ્રતિમાપૂજનમાં તલ્લીન થયેલો જીવ પણ જ્ઞાનાવરણીય દર્શન મોહનીય કર્મની વૃદ્ધિ કરતો કરતોવધારે વધારે મલિન થતો જાય છે તે કોઈ પણ સમયે એમની વૃદ્ધિમાં સમ્યક્ત્વ અને કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મને મેળવી શકનાર થઈ શકતો નથી. એટલા માટે કર્મોને ક્ષય કરવાની આશાથી પ્રતિમા પૂજનમાં તલ્લીન માણસ પોતાના કર્મોને આ કાર્ય (પ્રતિમાપૂજન) થી ક્ષય કરવા માંગે છે તે ફક્ત દુરાશા માત્ર છે. જ્યારે આ કાર્યથી જીવ સમ્યક્ત્વ અને કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મના લાભથી પણ સદા દૂર રહે છે ત્યારે તેનાથી કર્મ ક્ષયની આશા રાખવી તે ખોટી કલ્પના માત્ર જ છે. સમ્યક્ત્વ જીવનો ક્ષયોપશમિક ભાવ છે. હવે ન તો પ્રતિમા ક્ષયોપશમ સ્વરૂપ છે અને ન તે ક્ષયોપશમમાં કારણ રૂપે છે. કેમકે એનાથી જ્ઞાનાવરણીય અને દર્શનમોહનીય

"भवकोडीसंचियं कम्मं तवसा निज्जरिज्जइ।" (अ ३०, गा ६) तत्त्वार्थसूत्रेऽपि—

"तपसा निर्जरा च" (अ० ९ सू० ४।

अत्र चकारः संवरसमुच्चयार्थः। समितिगुप्तिधर्मानुप्रेक्षापरीषहजयचारित्रैः संवरो भवति, तपसा तु निर्जरा संवरोऽपि चेति भावः सम्यक्त्वं नाम सम्यग्दर्शनं, तच्च स्थानाङ्गसूत्रम्- (स्था० २उ० १) द्विविधं प्रोक्तं। निसर्गसम्यगदर्शनम् अभिगमसम्यग्दर्शनं चेति। निसर्गतः=स्वभावतः—न परोपदेशतो यदुत्पद्यते, तन्निसर्गसम्यग्दर्शनम्। अधिगमात् – सद्गुरूपदेशतो यदुत्पद्यते, तदधिगमसम्यग्दर्शनम्।

एक देश क्षय होना निर्जरा है। इस निर्जरा के प्रति कारणता तो तप में बतलाई गई है। देखो उत्तराध्ययन सूत्र में यही बात कही है—

"भवकोडी संचियं कम्मं तवसा णिज्जरिज्जइ" करोडों भवों में संचित कर्मों की जीव तप से निर्जरा कर देता है। तत्त्वार्थ सूत्र में भी "तपसा निर्जरा च" इस सूत्र द्वारा यही बात कही गई है-तप से निर्जरा और संवर दोनों होते हैं। सूत्रस्थ "च" शब्द से संवर का ग्रहण हुआ है।

भावार्थ-इसका यही है कि पांच समिति, ३ गुप्ति, १० यतिधर्म १२, अनुप्रेक्षा, २२ परीषहों का जीतना एवं ५ प्रकार का चारित्र पालना-इनसे संवर होता है और तप से संवर एवं निर्जरा दोनों ही होते हैं। स्थानाङ्गसूत्र में सम्यग्दर्शन दो प्रकार का कहा गया है-१ निसर्ग

કર્મના નિર્જરા થઇ શકે તેમ નથી. કર્મોના એકદેશનો ક્ષય થવો તે નિર્જરા પ્રત્યે કારણતા તો તપમાં બતાવવામાં આવી છે, જુઓ ઉત્તરાધ્યયન સૂત્રમાં એ જ વાત સ્પષ્ટ કરી છે—

"ભવકોડી સંચિયં કમ્મં તવસા નિજ્જરિજ્જઇ" કરોડો ભવોમાં સંચિત કર્મોની નિર્જરા જીવ તપથી કરી નાંખે છે. તત્ત્વાર્થ સૂત્રમાં પણ "તપસા નિર્જરા ચ" આ સૂત્રવડે એ જ વાત કહેવામાં આવી છે કે તપથી નિર્જરા તેમજ સંવર બન્ને થાય છે. "સૂત્રમાં આવેલ "ચ" શબ્દથી સંવરનું ગ્રહણ કરવામાં આવ્યું છે

ભાવાર્થ—આનો આ પ્રમાણે છે કે પાંચ સમિતિ, ૩ ગુપ્તિ, ૧૦ યતિધર્મ, ૧૨ અનુપ્રેક્ષા ૨૨ પરીષહોને જીતવા અને ૫ પ્રકારના ચારિત્રનું પાલન વગેરે આ બધાથી સંવર થાય છે. અને તપથી સંવર અને નિર્જરા બન્ને થાય છે. સ્થાનાંગસૂત્રમાં સમ્યગ્દર્શન બે પ્રકારનું બતાવવામાં આવ્યું

केचित्तु--अत्राभिगमशब्दार्थो निमित्तमपि, तच्च प्रतिमादि इति वदन्ति, तन्मोहनीयकर्मोदयविलसितम् -- अभिगमसम्यग्दर्शने हि प्रतिमानिमित्तकत्वं न संभवति श्रवणादिना क्षयोपशमहेतोरेव सद्गुरूपदेशस्यात्राभिगमन-

और दूसरा अभिगम। जो सम्यग्दर्शन जीवों को स्वभाव से ही होता है। सद्गुरु के उपदेश से जो जीव को प्राप्त होता है वह अभिगम सम्यग्दर्शन है। निसर्ग और अभिगम में अन्तरंग कारणदर्शन मोहनीय कर्म का क्षयोपशम आदि समान हैं परन्तु इसके होने पर भी जो जीव को सद्गुरु के उपदेश से प्राप्त होता है वह अभिगम और जो इसके विना प्राप्त होता है वह निसर्ग सम्यग्दर्शन है कोई २ व्यक्ति अभिगम शब्द का अर्थ निमित्त परक भी करते हैं और वह निमित्त "प्रतिमा आदि हैं" ऐसा मानते हैं। परन्तु यह उनका कथन केवल मोह कर्म का ही विलास है क्यों कि अभिगम सम्यग्दर्शन में प्रतिमा रूप निमित्त कता संभवित नहीं होती है-वहां तो श्रवण आदि से दर्शन मोहनीय कर्म के क्षयोपशम के कारणरूप सद्गुण के उपदेश का ही अभिगम शब्द से ग्रहण हुआ है। यदि सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति में वह कारण होता तो उस का ग्रहण निमित्तरूप से होता परन्तु ऐसा तो होता नहीं है-कारण कि वह अचेतन है उस से प्रवचन के अर्थ का उपदेश होता नहीं है। प्रवचन के अर्थ के उपदेश सुनेविना श्रोताओं को प्रवचन का अर्थ ज्ञान कैसे हो सकता है? अर्थज्ञान हुए विना

છે. ૧ નિસર્ગ અને ૨ અભિગમ સદ્દગુરુના ઉપદેશથી નહિ પણ જીવોને સ્વભાવથી જ જે સમ્યગ્દર્શન થાય છે તે નિસર્ગ સમ્યગ્દર્શન છે. સદ્દગુરુના ઉપદેશથી જે જીવને સમ્યગ્દર્શન પ્રાપ્ત થાય છે તે અભિગમ સમ્યગ્દર્શન છે. નિસર્ગ અને અભિગમમાં અંતરંગ કારણ દર્શનમોહનીય કર્મનો ક્ષયોપશમ વગેરે સમાન જ છે પણ એના હોવા છતાંય જીવને જે સદ્દગુરુના ઉપદેશથી મળે છે તે અભિગમ અને જે એના વગર મળે તે નિસર્ગ સમ્યગ્દર્શન છે. કેટલીક વ્યક્તિઓ અભિગમ શબ્દનો અર્થ નિમિત્ત પરક પણ કરે છે અને તે નિમિત્ત "પ્રતિમા વગેરે છે" એવું માને છે. પણ આવું કથન તેમના ફક્ત મોહ કર્મનો જ વિલાસ છે કેમકે અભિગમ સમ્યગ્દર્શનમાં પ્રતિમા રૂપ નિમિત્તકતા સંભવિત થઈ શકે તેમ નથી ત્યાં તો શ્રવણ વગેરેથી દર્શનમોહનીય કર્મના ક્ષયોપશમના કારણરૂપ સદ્દગુણના ઉપદેશનું જ અભિગમ શબ્દથી ગ્રહણ થયું છે જો સમ્યગ્દર્શનની ઉત્પત્તિમાં તે કારણ હોત તો તેનું ગ્રહણ નિમિત્ત રૂપથી થાત પણ આવુ થતુ નથી કેમકે તે અચેતન છે તેનાથી પ્રવચનના અર્થનો ઉપદેશ થઈ શકતો નથી. પ્રવચનના અર્થનો ઉપદેશ સાંભળ્યા વિના

शब्देन ग्रहणात् सम्यक्त्वं हि तत्त्वार्थश्रद्धानरूपं, तच्च प्रवचनार्थज्ञानादेव, प्रवचनार्थज्ञानं च निर्जरामूलकं, निर्जरा च विनयवैयावृत्त्यस्वाध्यायरूपतपोविशेषेभ्यः, तत्र च सद्गुरूपदेशः कारणं, न तु प्रतिमा। सा हि सद्गुरुवत् प्रवचनार्थमुपदेष्टुमसमर्था, तस्या जडत्वात् ,। नापि सा निर्जराहेतुः, विनयादितपोरूप-

---

कर्मों की निर्जरा नहीं हो सकती है। निर्जरा के अभाव में दर्शन मोहनीय कर्म के क्षय उपशम आदि रूप सम्यक्त्व की उत्पत्ति संभवित नहीं है। अतः अभिगम सम्यग्दर्शन में सद्गुरु का उपदेश ही निमित्त माना गया है और उसीका ग्रहण यहां पर उस शब्द से हुआ है प्रतिमा का नहीं-इसी का खुलाशा " सम्यक्त्वं हि तत्त्वार्थश्रद्धानरूपं, तच्च प्रवचनार्थज्ञानादेव, प्रवचनार्थज्ञानं च निर्जरामूलकं - निर्जरा च विनय वैयावृत्यस्वाध्यायरूपतपोविशेषेभ्यः, तत्र च सद्गुरूपदेशः कारणं न तु प्रतिमा " अर्थ इन पंक्तियों में लिखा गया है। तत्वार्थ का श्रद्धान करना सम्यक्त्व है। वह श्रद्धान प्रवचन के अर्थज्ञान से ही होता है और उस अर्थज्ञानका मूल कारण निर्जरा मानी गई है अपना प्रतिपक्षी कर्मों की निर्जरा हुए विना तत्त्वज्ञान हो ही नहीं सकता है विनय, वैयावृत्य, स्वाध्यायरूपतप विशेष निर्जरा के कारण हैं तप की आराधना में सद्गुरु का उपदेश कारण है इस प्रकार परम्परा संबंध से अभिगम सम्यग्दर्शन में सद्गुरु का उपदेश ही निमित्तरूप से गृहीत हुआ है प्रतिमा नहीं-कारण वह सद्गुरु के उपदेश की तरह प्रवचन

શ્રોતાઓને પ્રવચનનું અર્થજ્ઞાન કેવી રીતે થઇ શકે? અર્થજ્ઞાન વગર કર્મોની નિર્જરા પણ થઇ શકતી નથી નિર્જરા વિના દર્શનમોહનીય કર્મના ક્ષય ઉપશમ વગેરે રૂપ સમ્યકૃત્વની ઉત્પત્તિ સંભવિત નથી એટલા માટે અભિગમ સમ્યગ્દર્શનમાં સદ્ગુરુનો ઉપદેશ જ નિમિત્તરૂપે માનવામા આવ્યો છે. અને તે શબ્દથી તેનું જ ગ્રહણ થયું છે પ્રતિમાનું નહિ. આનું જ સ્પષ્ટીકરણ "સમ્યક્ત્વ હિ તત્ત્વાર્થશ્રદ્ધાનરૂપ, તચ્ચ પ્રવચનાર્થજ્ઞાનાદેવ, પ્રવચનાર્થજ્ઞાનં નિર્જરા લકં નિર્જરા ચ વિનયવૈયાવૃત્ત્યસ્વાધ્યાયરૂપતપોવિશેષેભ્યઃ, તત્ર ચ સદ્ગુરૂપદેશઃ કારણં ન તુ પ્રતિમા" આનો અર્થ આ પ્રમાણે છે, કે તે તત્ત્વાર્થનું શ્રદ્ધાન કરવું તે સમ્યકૃત્વ છે તે શ્રદ્ધાન પ્રવચના અર્થજ્ઞાનનું મૂળ કારણ નિર્જરા જ માનવામા આવે છે. પોતાના પ્રતિપક્ષી કર્મોની નિર્જરા થયા વગર તત્ત્વજ્ઞાન થઈ જ શકતુ નથી. વિનય, વૈયાવૃત્ય, સ્વાધ્યાય રૂપ તપ વિશેષ નિર્જરાના કારણ છે તપની આરાધનામાં સદ્ગુરુનો ઉપદેશ કારણ છે. આ રીતે પરંપરા સંબંધથી અભિગમ સમ્યગ્દર્શનમાં સદ્ગુરુનો ઉપદેશ જ નિમિત્ત રૂપમાં ગ્રહીત થયો છે નહિ કે પ્રતિમા, કેમકે તે સદ્ગુરુના ઉપદેશની જેમ

त्वाभावात्, कथं तर्हि सम्यक्त्वं प्रतिमायाः संभवति ? कथमपि नहि। अत एवो-पदेशस्य सम्यक्त्वं प्रति कारणत्वं प्रदर्शयन् भगवानवादीत्—उत्तराध्ययनसूत्रे—(अ० २८ गा० १५)

" तहियाणं तु भावाणं सब्भावे उवएसणं ।
भावेणं सद्दहंतस्स सम्मत्तं तं वियाहियं ॥ इति ।

छाया—तथ्यानां तु भावानां सद्भाव उपदेशनम् ।
भावेन श्रद्दधतः सम्यक्त्वं तद् व्याख्यातम् ॥

जीवाजीवादिपदार्थानां सद्भावे यद् उपदेशनं=गुरोरुपदेशः, तद् भावेन—अन्तःकरणेन श्रद्दधतः मोहनीयकर्मणः क्षयेण क्षयोपशमेन वा याऽभिरुचिरुत्पद्यते, तत् सम्यक्त्वं तीर्थकरैर्व्याख्यातम् ।

के अर्थ का उपदेश करने में अचेतन होने से सर्वथा असमर्थ है कर्मों की निर्जरा में भी वह हेतु रूप नहीं होती है—कारण कि कर्मों की निर्जरा के हेतु तो विनयादिक तप ही माने गये हैं, प्रतिमा विनयादि तप स्वरूप नहीं है। अतः प्रतिमा में सम्यक्त्व की उत्पत्ति में कारणता किसी भी प्रकार संभवित नहीं होती है—उत्तराध्ययन सूत्र में सद्गुरु के उपदेश को सम्यक्त्व के प्रति कारण प्रकट करते हुए सिद्धान्तकार कहते हैं कि—तहियाणं तु भावा णं सब्भावे उवएसणं ।

भावेणं सद्दहंतस्स सम्मत्तं तं वियाहियं ॥ इति ॥

जीव और अजीव आदि पदार्थों का सद्गुरु ने जो यथावस्थित स्वरूप प्रकट किया है, उसका उसीरूप से अन्तः करण से श्रद्धान करने वाले प्राणी के दर्शन मोहनीय कर्म के क्षय अथवा क्षयोपशम

પ્રવચનના અર્થનો ઉપદેશ કરવામાં અચેતન હોવા બદલ સંપૂર્ણપણે અસમર્થ છે. કારણ કે કર્મોની નિર્જરાના હેતુ તો વિનય વગેરે તપોજ માનવામાં આવ્યા છે. પ્રતિમા વિનય વગેરે તપ સ્વરૂપ નથી, એટલા માટે પ્રતિમામાં સમ્યકત્વની ઉત્પત્તિમાં કારણતા કોઇ પણ રીતે સંભવી શકે તેમ નથી ઉત્તરાધ્યયન સૂત્રમાં સદ્ગુરૂના ઉપદેશને સમ્યકત્વના પ્રતિ કારણ બતાવતાં સિદ્ધાન્તકાર કહે છે—

तहियाणं तु भावाणं सब्भावे उवएसणं ।
भावेणं सद्दहंतस्स सम्मत्तं तं वियाहियं ॥ इति ॥

જીવ અને અજીવ વગેરે પદાર્થોનું જે યથાવસ્થિત સ્વરૂપ સદ્ગુરૂએ પ્રકટ કર્યું છે તેનું તે રૂપથી અંતઃકરણથી શ્રદ્ધા ન કરનારા પ્રાણીના દર્શન મોહ-નીય કર્મના ક્ષય કે ક્ષયોપશમથી જે રૂચિ ઉત્પન્ન થાય છે, તેનું નામ જ

यदि प्रतिमाऽपि सम्यक्त्वलाभे निमित्तं स्यात्तर्हि भगवता स्थानाङ्गसूत्रे प्रतिमानिमित्तकत्वेन सम्यग्दर्शनस्य तृतीयभेदोऽपि वाच्यः, तस्यानुक्तत्वात् प्रतिमायाः सम्यक्त्वलाभे निमित्तत्वं नास्तीति बोध्यम् । किं च—

प्राणातिपातसाध्यायाः प्रतिमापूजायाः सम्यक्त्वशुद्धिहेतुत्वं वदन्तः स्व-दुर्गतिं न पश्यन्ति मोहान्धाः, स्थानाङ्गसूत्रे हि प्राणातिपातस्य दुर्गतिहेतुत्वं प्रदर्शितम्—

पंचहिं ठाणेहिं जीवा दुग्गइं गच्छंति । तं तहा–पाणाइवाएणं, मुसावाएणं, अदिन्नादाणेणं, मेहुणेणं, परिग्गहेणं " इति । (स्था. ५ ठा. १ उ)

से जो रुचि उत्पन्न होती है उसी का नाम सम्यग्दर्शन है ऐसा तीर्थंकर प्रभुने कहा है यदि सम्यक्त्व की प्राप्ति में प्रतिमा निमित्त होती तो स्थानाङ्ग सूत्र में जो " दोहिं ठाणेहिं आया केवलि पन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए " ऐसा कहा है वहां यदि सम्यक्त्व के लाभ में प्रतिमा भी निमित्त होती तो उसके निमित्त होने से दो स्थानों की जगह सम्यक्त्व की प्राप्ति में तीन स्थानों का कथन सूत्रकार को करना चाहिये था परन्तु वहां दो स्थानों के अतिरिक्त तृतीयस्थान का कथन हुआ नहीं है, अतः इससे यह सिद्धान्त निश्चित होता है कि सम्यक्त्व के लाभ में प्रतिमा निमित्त नहीं है ।फिर भी प्राणातिपात द्वारा साध्य प्रतिमा पूजन को मोह के आवेश से अंधे हुए व्यक्ति सम्यक्त्व की शुद्धि का कारण बतलाते हुए अपनी दुर्गति का कुछ भी ख्याल नहीं करते हैं यही एक बडे आश्चर्य की बात है देखो प्राणातिपात को स्थानाङ्ग सूत्र में दुर्गति

સમ્યગ્દર્શન છે, આમ તીર્થંકર પ્રભુએ કહ્યુ છે જો સમ્યકત્વની પ્રાપ્તિમાં નિમિત્ત રૂપે હોત તો સ્થાનાંગ–સૂત્રમાં જે " दोहिं ठाणेहिं आया केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए " આ પ્રમાણે કહ્યું છે, ત્યાં જો સમ્યકત્વના લાભમાં પ્રતિમા પણ નિમિત્ત થઈ શકત તો તેને નિમિત્ત રૂપે થવા બદલ બે સ્થાનોની જગ્યાએ સમ્યકત્વની પ્રાપ્તિમાં ત્રણ સ્થાનોનું કથન સૂત્રકારે કરવુ જોઈતું હતું, પણ ત્યાં તો બે સ્થાનો સિવાય ત્રીજા સ્થાનનું કથન થયું જ નથી. એથી આ સિદ્ધાન્તની ખાત્રી થાય છે કે સમ્યકત્વના લાભમાં પ્રતિમા નિમિત્ત નથી. છતાંયે પ્રાણાતિપાત વડે સાધ્ય પ્રતિમા પૂજનને અજ્ઞાનની નિદ્રામાં પડેલી વ્યક્તિઓ સમ્યકત્વની શુદ્ધિનુ કારણ બતાવતી પોતાની દુરવસ્થા તરફ સહેજ પણ જોતી નથી તે એક બહુ નવાઈ જેવી વાત છે. જુઓ પ્રાણાતિપાતને સ્થાનાંગસૂત્રમાં દુર્ગતિનુ જ કારણ બતાવવામાં આવ્યું છે–(पंचहिं ठाणेहिं

किं च–यथा लोके मुग्धानां सुवर्णमात्रसाम्येनाशुद्धसुवर्णेऽपि प्रवृत्तिमवलोक्य शुद्धाशुद्धपरीक्षणाय विचक्षणैः कषच्छेदतापा आद्रियन्ते, तथाऽत्रापि परीक्षणीये श्रुतचारित्रलक्षणे धर्मे कषादयः समादरणीया भवन्ति।

प्राणिवधादीनां पापस्थानानां यस्तु शास्त्रे प्रतिषेधः, तथा स्वाध्यायध्यानादीनां यश्च तत्र विधिः स धर्मरूपः। प्राणिवधसंपर्कवति पूजने तु धर्मत्वबुद्धिर्मोहवशादेव भवति, शास्त्रे प्राणिवधस्य प्रतिषेधात्। अतस्तत्र नास्ति कषशुद्धिः।

का ही कारण कहा है "पंचहिं ठाणेहिं जीवा दुग्गइं गच्छंति–तं जहा–पाणाइवाएणं, मुसावाएणं, अदिन्नादाणेणं, मेहुणेणं, परिग्गहेणं इति। (स्था ५ ठा- १ उ) इन पांचो स्थानों से जीव दुर्गति के पात्र बनते हैं – प्राणातिपात से, मृषावाद से, अदत्तादान से मैथुन से और परिग्रह से। किञ्च–लोक में जिस में जिस प्रकार भोलेभाले व्यक्तियों की सुवर्णमात्र की समानता से अशुद्ध स्वर्ण में भी यह सच्चा सुवर्ण है इस प्रकारकी प्रवृत्ति को देखकर सुवर्णपरीक्षक जन उसके सम्यक्त्व और असम्यक्त्व परीक्षाके लिये कष छेद और तप रूप उपायों का अवलम्बन करते हैं उसी प्रकार परीक्षणीय इस श्रुतचारित्ररूप धर्म की परीक्षा के लिये सूत्रकारों ने कषादिक परीक्षा के साधनों का उपयोग किया है प्राणिवधादिक पापस्थानों का शास्त्र में जो निषेध का विधान हुआ है तथा स्वाध्याय एवं अध्ययन आदि का जो वहां पर विधान किया गया है यही धर्म का कष है पूजन में यह धर्म कष नहीं है क्यों कि वह प्राणि वध के संपर्क से दूषित है–अतः फिर भी जो उसमें धर्म

जीवा दुग्गइं गच्छंति–तं जहा–पाणाइवाएणं, मुसावाएणं, अदिन्नादाणेणं, मेहुणेणं परिग्गहेणं इति) (स्था. ५, ठा. १ उ.) આ પાંચે સ્થાનોથી જીવ દુર્ગતિને યોગ્ય ઠરે છે–પ્રાણાતિપાતથી, મૃષાવાદથી, અદત્તાદાનથી, મૈથુનથી અને પરિગ્રહથી. અને બીજું પણ કે લોકમાં જેમ ભોળા માણસોની સુવર્ણમાત્રની સમાનતાથી અશુદ્ધ સુવર્ણમાં પણ 'આ સોનુ ખરૂ છે,' આ જાતની પ્રવૃત્તિ જોઈને સુવર્ણ પરીક્ષકો તેના ખરા–ખોટાની પરીક્ષા માટે કષ, છેદ અને તાપ રૂપ ઉપાયોનો આસરો લે છે તેમજ પરીક્ષણીય આ શ્રુતચરિત્ર રૂપ ધર્મની પરીક્ષા માટે સૂત્રકારોએ કષ વગેરે પરીક્ષાના સાધનોનો ઉપયોગ કર્યો છે. પાણિ વધ વગેરે પાપસ્થાનોનું શાસ્ત્રમા જે નિષેધ રૂપ વિધાન થયું છે તેમજ સ્વાધ્યાય અને અધ્યયન વગેરેનું જે ત્યાં વિધાન કરવામાં આવ્યું છે તે જ ધર્મની કસોટી–કષ છે પૂજનમા આ ધર્મ કષ નથી કેમકે તે પ્રાણિવધના સંપર્કથી દૂષિત છે. છતાંય તેમાં ધર્મત્વની બુદ્ધિ રાખવામાં આવે છે તે ફક્ત

यत्र विधिः प्रतिषेधश्चेति द्वयं कदाचित् स्वरूपतो वैपरीत्यं न याति, अर्थात्-स्वाध्यायध्यानादौ नियमतः प्रवृत्त्या विधिपरिशुद्धिः, तथा हिंसादौ नियमतो निवृत्त्या प्रतिषेधपरिशुद्धिर्भवति, स धर्मच्छेद उच्यते। प्रतिमापूजायां तु नास्ति च्छेदशुद्धिः, तस्याः षट्कायोपमर्दनसाध्यत्वेन प्रतिषेधपरिशुद्ध्यभावात्।

प्रवचने जीवाजीवादीनां तत्त्वानां यथावस्थितस्वरूपनिरूपणं मोक्षसाधकमित्येवं निश्चयस्तापशुद्धिः। यथा वह्नौ तापनेन सुवर्णस्य यथावस्थितस्वरूपाविर्भावः तथा-प्रवचनोक्ततत्त्वानुसन्धानेन धर्मस्य स्वरूपमाविर्भवति। अत्र प्रतिमापूजायां प्रवचनोक्तसंवरनिर्जरातत्त्वलक्षणानाक्रान्तत्वान्नास्ति तापशुद्धिः।

त्वकी शुद्धि होती है वह केवल मोहका ही आवेश है। प्राणिवध शास्त्र से निषिद्ध है। जहां पर विधि और प्रतिषेध ये दोनों कभी भी अपने स्वरूप से विपरीतपने को प्राप्त नहीं होते हैं वहां पर छेद से शुद्धि मानी जाती है जिस प्रकार स्वाध्याय और अध्ययन आदि शुभ कार्यों में नियम से शास्त्र में प्रवृत्ति प्रदर्शित की गई है और हिंसादि कार्यों से उसमें नियम से निवृत्ति कही गई है। प्रतिमा पूजन में यह छेद शुद्धि नहीं है। क्यों कि इसमें प्रतिषेध से परिशुद्धि का अभाव है इस का कारण यह है कि वह षट्काय के जीवों के घात से साध्यकार्य है। प्रवचन में जीव और अजीव आदि तत्त्वों के यथावस्थित स्वरूप का वर्णन ही मोक्षका साधक है इस प्रकार का निश्चय ही ताप शुद्धि है। जिस प्रकार अग्नि में तपाने से स्वर्ण का यथावस्थित स्वरूप प्रकट होता है। उसी प्रकार प्रवचन कथित तत्त्वों के अनुसन्धान से धर्म के स्वरूप का अविर्भाव होता है इस प्रतिमापूजन में धर्मतत्त्वके अविर्भाव करने

અજ્ઞાનનો જ ઉભરો છે. પ્રાણિ વધ શાસ્ત્રનિષિદ્ધ છે. જ્યાં વિધિ અને પ્રતિષેધ આ બન્ને કોઈ પણ વખતે પોતાના સ્વરૂપથી વિપરીતાવસ્થામાં પરિવર્તિત થતા નથી ત્યાં છેદથી શુદ્ધિ માનવામાં આવે છે જેમ સ્વાધ્યાય અને અધ્યયન વગેરે શુભ કાર્યોમાં નિયમથી શાસ્ત્રમાં પ્રવૃત્તિ બતાવવામાં આવી છે અને હિંસા વગેરે કાર્યોથી તેમાં નિયમથી નિવૃત્તિ બતાવવામાં આવી છે. પ્રતિમા પૂજનમાં આ છેદ શુદ્ધિ નથી કેમકે આમાં પ્રતિષેધથી પરિશુદ્ધિનો અભાવ છે. આનું કારણ આ પ્રમાણે છે કે તે ષટ્કાયના જીવોના ઘાતથી સાધ્ય કાર્ય છે. પ્રવચનમાં જીવ અને અજીવ વગેરે તત્ત્વોના યથાવસ્થિત સ્વરૂપનું વર્ણન જ મોક્ષનું સાધક છે. આ જાતનો નિશ્ચય જ તાપ શુદ્ધિ છે. જેમ અગ્નિમાં તપાવવાથી સોનાનું યથાવસ્થિત સ્વરૂપ પ્રગટ થાય છે તેમજ પ્રવચન કથિત તત્ત્વોના અનુસંધાનથી ધર્મના સ્વરૂપનો આવિર્ભાવ થાય છે. આ પ્રતિમા પૂજનમાં ધર્મ

एभिः कषादिभिः परिशुद्धस्यैव धर्मत्वं संभवति तादृशस्यैव धर्मफल-जनकत्वात् ।

यथा-आधाकर्मादिदोषदूषिताहारादिदाने धर्मबुद्ध्या क्रियमाणे धर्म-व्याघातः, यथा वा इन्द्रादिपूजादौ धर्मव्याघातः, तथैव धर्मबुद्ध्या प्रतिमापूजनेऽपि धर्मव्याघातः स्यात् , तस्य जीवोपघातहेतुत्वात् ।

" प्रतिमापूजा-धर्मव्याघातवती, आगमोक्तन्यायनिराकृतत्वात् , अयोग्य-प्रव्रज्यादानवत् , इन्द्रादिपूजावद् वा " इत्याद्यनुमानेनापि प्रतिमापूजायां धर्म-व्याघातो भवतीति विश्वसनीयम् । उक्तं च—

की योग्यता तक भी नहीं है । कारण कि यह प्रवचन कथित संवर और निर्जरा तत्त्व के लक्षण से युक्त नहीं है-अतः इसमें ताप शुद्धि भी नहीं है । इन कषादिकों द्वारा परिशुद्ध हुई वस्तु में ही धर्मता आती है और वही यथार्थ में धर्म के फलका प्रदाता होता है । प्रतिमापू-जन में यह बात नहीं है-अतः वह धर्मरूप नहीं है ।

किंच-धर्मबुद्धि से बनाये गये, परन्तु आधाकर्म आदिदोषों से दूषित ऐसे आहार के दान में तथा इन्द्र आदिकों का पूजन करने में जिस प्रकार धर्म का व्याघात माना गया है, उसी प्रकार धर्मबुद्धि से की गई प्रतिमा का पूजन में भी जीवों का घात होने से धर्म का व्याघात होता है । इसलिये आगम कथित सिद्धान्त के अनुसार यह प्रतिमापूजन उपा-देय कोटि में नहीं आता है । फिर भी जो इसे करते हैं-कराते हैं-वे आगम कथित सिद्धान्त से सर्वथा बाह्य हैं-और धर्म का व्याघात कर-

તત્ત્વને આવિર્ભૂત કરવા સુધીની પણ ક્ષમતા નથી, કેમકે આ પ્રવચન કથિત સંવર અને નિર્જરા તત્ત્વનાં લક્ષણથી યુક્ત નથી એટલા માટે આમાં તાપ શુદ્ધિ પણ નથી. આ કષ વગેરે વડે પરિશુદ્ધ થયેલી વસ્તુમાં જ ધર્મતા આવે છે અને તે જ સાચા સ્વરૂપમાં ધર્મના ફળને આપનાર છે પ્રતિમા પૂજનમાં આ વાત નથી એથી તે ધર્મ રૂપ નથી.

ધર્મબુદ્ધિથી તૈયાર કરવામાં આવેલા, પણ આધાકર્મ વગેરે દોષો વડે દૂષિત એવા આહારના દાનમાં તેમજ ઇન્દ્ર વગેરેની પૂજા કરવામાં જેમ ધર્મનો વ્યાઘાત માનવામાં આવ્યો છે, તેમ જ ધર્મબુદ્ધિ રાખીને કરવામાં આવેલા પ્રતિમા પૂજનમાં પણ જીવોનો ઘાત હોવાથી ધર્મનો વ્યાઘાત હોય છે એટલા માટે આગમ કથિત સિદ્ધાન્ત મુજબ આ પ્રતિમા પૂજન ઉપાદેય કોટિમા આવતું નથી. છતાં યે જે આને કરે છે, કરાવે છે તેઓ આગમ કથિત સિદ્ધાં-તથી સર્વથા બાહ્ય છે અને ધર્મના વ્યાઘાતક છે એથી અયોગ્યને આપેલી

" प्रव्रज्यादिविधाने च, शास्त्रोक्तन्यायबाधिते ।
द्रव्यादिभेदतो ज्ञेयो, धर्मव्याघात एव हि "॥ हारिभद्राष्टकम्

यत्तु–जिनप्रतिमाया दर्शनं वन्दनं चावश्यकमेव साधूनामिति वन्दनाद्यकृत्वा भक्तपानं न कल्पते तेषामित्याहुस्तन्निर्मूलम्—

अहोरात्रकृत्येषु साधुकल्पेषु जिनप्रतिमादर्शनादेरनुक्तत्वात् । शृणु तावदहोरात्र-कृत्यं साधूनाम्—

नेवाले हैं अतः अयोग्य को दीक्षा दान की तरह अथवा इन्द्रादिक के पूजन की तरह यह प्रतिमापूजन आगमोक्त न्याय से निराकृत होने से धर्म का व्याघात करनेवाला है ऐसा विश्वास करना चाहिये। तथा च अनुमानप्रयोगोऽयं–प्रतिमापूजा धर्मव्याघातवती आगमोक्तन्याय निराकृतत्वात् अयोग्यप्रव्रज्यादानवत् इन्द्रादिपूजनवद्वा। इस अनुमान में दिया गया हेतु असिद्ध नहीं है–क्यों कि "प्रव्रज्यादिविधाने च शास्त्रोक्तन्यायबाधिते – द्रव्यादिभेदतो ज्ञेयो धर्मव्याघात एव हि" दृष्टान्त में इस हेतु का इस श्लोक द्वारा कथित प्रकार से सद्भाव पाया ही जाता है।

जो यह कहा जाता है कि जिनप्रतिमा के दर्शन वन्दन किये विना साधुओं को आहार पानी करना कल्पनीय नहीं है–अतः उसका दर्शन वन्दन करना साधुओं के लिये आवश्यक है वह बिलकुल निर्मूल है–कारण कि दिनरात संबंधी जितने भी साधुओं के कल्प हैं उन में इस बात का कहीं भी कथन किया हुआ नहीं मिलता है–दिनरात संबंधी साधुओं के ये कृत्य हैं—

દીક્ષાની જેમ અથવા તો ઇન્દ્ર વગેરેની પૂજાની જેમ આ પ્રતિમાપૂજન આગમ કથિત ન્યાયથી નિરાકૃત હોવા બદલ ધર્મના નાશ કરનારૂ છે આમ માની જ લેવુ જોઇએ " તથા ચ અનુમાનપ્રયોગોऽયં' પ્રતિમાપૂજા ધર્મવ્યાઘાતવતી આગમો-ક્તન્યાયનિરાકૃતત્વાત્ અયોગ્ય-પ્રવ્રજ્યાદાનવત્ ઇન્દ્રાદિપૂજનવદ્વા । આ અનુમાનમાં આપેલ હેતુ અસિદ્ધ નથી, કારણ કે–પ્રવ્રજ્યાદિવિધાને ચ શાસ્ત્રોક્તન્યાયબાધિતે –દ્રવ્યાદિભેદતો જ્ઞેયો ધર્મવ્યાઘાત એવ હિ । દૃષ્ટાંતમાં આ હેતુનો આ શ્લોક વડે જે કથિત પ્રકાર છે તેનો સદ્ભાવ મળે છે

જે એમ કહેવામાં આવે છે કે જીન પ્રતિમાના દર્શન કર્યા વગર સાધુ-ઓને આહાર પાણી કરવુ માન્ય નથી. એથી તેના દર્શન વન્દન કરવા સાધુ-ઓના માટે આવશ્યક છે તે સાવ ખોટી વાત છે. કેમકે દિવસ અને રાત્રિને લગતા સાધુઓને માટે જેટલા કલ્પ છે તેમા આ વાતનું કથન ક્યાંયે નથી. દિવસ અને રાત્રિના સાધુઓના આ નીચે લખ્યા મુજબ કૃત્યો છે—

पढमं पोरिसि सज्झायं, बीए झाणं झियायए।
तइयाए भिक्खायरियं, चउत्थीए पुणो वि सज्झायं ॥
पढमं पोरिसि सज्झायं, बीए झाणं झियायए।
तइयाए निद्दमोक्खं च, चउत्थीए पुणो वि सज्झाय ॥ इति,
(उत्तराध्ययनसूत्रे २६ अ.)

किं च-सामायिकाद्यावश्यकेष्वपि प्रतिमादर्शनादेरनुक्तत्वाद् जिनाज्ञाया एव च धर्ममूलत्वात्तस्य धर्मत्वं न सिध्यति।

यत्तु-पुष्पादिसमर्च्यर्चनलक्षणो द्रव्यस्तवः साधुना हेय एव श्रावकेण तु उपादेयोऽपि तथा चाह-भाष्यकारः-

अकसिणपवत्तगाणं, विरयाविरयाण एस खलु जुत्तो।
संसारपयणुकरणो दव्वत्थए कूवदिट्ठंतो (भाष्यकारः ४२)

पढम पोरिसि सज्झायं बीए झाणं झियायए।
तइयाए भिक्खायरियं चउत्थीए पुणो वि सज्झायं ॥
पढमं पोरिसि सज्झायं बीए झाणं झियायए।
तइयाए निद्दमोक्खं च चउत्थीए पुणो वि सज्झायं ॥
(उतरा- सूत्र २६ अ-)

अर्थस्पष्ट है। इसी प्रकार साधुओं के जो सामायिक आदि आवश्यक कृत्य हैं, उनमें भी प्रतिमा के दर्शन आदि करना नहीं कहा है। धर्म का मूल तो जिनेन्द्र भगवान की आज्ञा की आराधना करने में है इसलिये दर्शन वगैरह ये धर्म के मूल नहीं हैं। भाष्यकारने जो इस गाथा द्वारा "अकसिण पवत्तगाणं विरयोविरयाण एस खलु जुत्तो। संसार पयणुकरणो दव्वत्थए कूवदिट्ठंतो" (भाष्यकार ४२) यह कहा है कि

पढमे पोरिसि सज्झाय बीए झाणं झियायए।
तइयाए भिक्खायरियं चउत्थिए पुणो वि सज्झायं ॥
पढमे पोरिसि सज्झायं बीए झाणं झियायए।
तइयाए निद्दमोक्खं च चउत्थिए पुणो वि सज्झायं ॥ (उत्तरा०सूत्र-२६ अ.)

અર્થ સરળ જ છે આ રીતે સાધુઓના જે સામાયિક વગેરે આવશ્યક કૃત્યો છે, તેમનામાં પણ પ્રતિમાના દર્શન વગેરે કરવાની વાત કહી નથી. ધર્મનું મૂળ તો જીનેન્દ્ર ભગવાનની આજ્ઞાને આરાધવામાં આવે છે માટે દર્શન વગેરે આ બધા ધર્મનાં મૂળ નથી. ભાષ્યકારે જે આ ગાથા વડે-(अकसिण पवत्तगाणं विरयाविरयाण एस खलु जुत्तो । संसारपयणुकरणो दव्वत्थए

अकृत्स्नप्रवर्तकानां अकृत्स्नसंयमप्रवृत्तिमतां विरताविरतानां=देशविरतीनां श्रावकाणाम् एष द्रव्यस्तवः खलु युक्त एव। किंभूतोऽयमित्याह-संसार प्रतनुकरणः=संसारक्षयकारकः इत्यर्थः। ननु द्रव्यस्तवो हेयः प्रकृत्यैवासुन्दरः स कथं श्रावकाणां युक्तः ? । इत्याशङ्क्याह-कूपदृष्टान्त इति-

यथा लोके केऽपि जलाभावतस्तृष्णाकुलाः पिपासापनोदनाद्यर्थं कूपं खनन्ति ते कूपखनका मृत्तिकाकर्दमादिमिश्र मलिना भवन्ति, पश्चात् तदुद्भवेन जलेन तेषां तृष्णायास्तथा मृत्कर्दममलस्य च नाशो भवति तदनन्तरमपि ते तदन्ये च

श्रावकों के लिये उपादेय भी पुष्प आदिकों द्वारा भगवान की पूजा स्वरूप द्रव्यस्तव साधुओं के लिये हेय ही हैं। क्यों कि साधु सर्व आरंभ और परिग्रह के सर्वथा त्यागी हैं-श्रावक नहीं वे देश विरति संपन्न हैं। अतः उनके लिये द्रव्यस्तव संसार का क्षय कारक माना गया है कूप का दृष्टान्त देकर भाष्यकार ने इस शंका का परिहार किया है कि जिस प्रकार जल के अभाव से पिपासा को दूर करने के लिये कोई २ मनुष्य कूप को खोदते हैं और उसे खोदते समय मिट्टी और कीचड़ से मलिन भी हो जाते हैं परन्तु पश्चात् उस कूप में निकले हुए जल से वे उस कीचड़ और लगी हुई मिट्टी को साफ कर देते हैं और समय २ पर अपनी पिपासा की भी शांति करते रहते हैं। दूसरे और भी लोक उससे लाभ उठाते हैं। इस प्रकार उस जलयुक्त कुएँ से खोदने वाले व्यक्तियों को तथा और भी अन्यजनों को समय २ पर अनेक प्रकार से लाभ होता रहता है। ठीक इसी तरह इस द्रव्यस्तव में जो कि संयम

कूपदिट्ठंतो।) (भाष्यकार ४२) આ પ્રમાણે કહ્યું છે કે શ્રાવકોને માટે ઉપાદેય હોવા છતાં પુષ્પ વગેરે વડે ભગવાનની પૂજા સ્વરૂપ દ્રવ્યસ્તવ સાધુઓના માટે તો ત્યાજ્ય જ છે, કેમકે સાધુ સર્વ આરંભ અને પરિગ્રહના સંપૂર્ણપણે ત્યાગી હોય છે. શ્રાવક નથી, તેઓ દેશ વિરતિ સંપન્ન છે. એટલા માટે તેમને સામે રાખીને વિચાર કરીએ તો દ્રવ્યસ્તવ સંસારને ક્ષય કરનાર માનવામાં આવ્યો છે. કૂપનું દૃષ્ટાંત આપીને ભાષ્યકારે આ શંકાને દૂર કરી છે કે જેમ પાણીના અભાવને લીધે પીડાઈને તરસ મટાડવા માટે કેટલાંક માણસો વાવ ખોદે છે અને તે વખતે તેઓ માટી અને કાદવથી ખરડાઈ જાય છે પણ ત્યાર પછી વાવમાંથી નીકળતા પાણીથી જ તેઓ કીચડ તેમજ શરીરે ચોટેલી માટીને સાફ કરી નાખે છે અને વખતો વખત પોતાની તરસ પણ મટાડે છે. બીજા પણ કેટલાક લોકો તેનાથી લાભ મેળવે છે. આ રીતે તે પાણી ભરેલી વાવથી

लोका जलेन सुखिनो भवन्ति एवं द्रव्यस्तवे यद्यप्यसंयमो भवति तथापि तत एव सा परिणामशुद्धिर्भवति, या तद् असंयमोपार्जितमन्यच्च निरवशेषं क्षपयति इति ।

"तस्माद्विरताविरतैः श्रावकैरेष द्रव्यस्तवः कर्तव्यः ।
शुभानुबन्धी प्रभूतनिर्जराफल इति कृत्वा" इत्युक्तम्-

तदसत्-अत्र हि कूपदृष्टान्तो न संघटते कूपखननेन जलमुत्पद्यते इति सकल लोकप्रत्यक्षं, किन्तु षट्कायवधं कुर्वतः कारयतश्च धर्ममूलभूताया दयाया एव

की रक्षा नहीं होती है, तो भी यह कर्त्ता को परिणामों में शुद्धि का हेतु होता है। इससे कर्त्ता उस द्रव्यस्तव के करने में उद्भूत असंयम द्वारा उपार्जित पापों का सम्पूर्णरूप से विनाश कर देता है। इसलिये विरताविरत (एकदेश संयम की आराधना करनेवाले पंचमगुणस्थान-वर्ती श्रावकों द्वारा यह द्रव्यस्तव कर्तव्य कोटि में आने से उपादेय है। कारण कि यह उनके लिये शुभानुबंधी और कर्मों की अधिक निर्जरा-रूप फल का प्रदाता होता है" यह सब भाष्यकार का कथन ठीक नहीं है। कारण कि उन्हों ने जो कूप का दृष्टान्त देकर इस विषय की पुष्टि करनी चाहिये, उससे प्रकृत विषय की वास्तविक पुष्टि नहीं होती है। यह तो प्रत्येक लौकिक जन के प्रत्यक्ष अनुभव में आने जैसी बात है कि कूप के खोदने से जल निकलता है इस में तो विवाद की कोई जरूरत ही नहीं है, किन्तु प्रतिमा की पूजा करने और करानेवालों से षट्-

---

ખોદનાર લોકોને તેમજ બીજા પણ ઘણા માણસોને વખતો વખત ઘણી રીતે લાભ થતા રહે છે. ઠીક આ પ્રમાણે જ દ્રવ્યસ્તવમાં જો કે સંયમની રક્ષા થતી નથી, છતાંય તે કર્તાના માટે પરિણામમાં શુદ્ધિનું કારણ હોય છે. તેનાથી કર્તા તે દ્રવ્યસ્તવના કરવામાં ઉદ્ભૂત અસંયમ વડે મેળવેલા પાપોનો સંપૂર્ણ-પણે વિનાશ કરી નાખે છે. એથી વિરતાવિરત (એકદેશ સંયમની આરાધના કરનાર પંચમ ગુણસ્થાનવર્તી) શ્રાવકો વડે આ દ્રવ્યસ્તવ કર્તવ્ય કોટિમા આવવાથી ઉપાદેય છે. કારણ કે તે તેમના માટે શુભાનુબંધી અને કર્મોની વધારે નિર્જરા ફળને આપનાર છે. ભાષ્યકારનું આ બધુ કથન યોગ્ય નથી, કારણ કે તેઓએ જે વાવનું દૃષ્ટાંત આપીને આ વિષયની પુષ્ટિ કરવા પ્રયત્ન કર્યો છે, તેનાથી પ્રકૃત વિષયની વાસ્તવિક રૂપમાં પુષ્ટિ થતી જોવામાં આવતી નથી. દરેકે દરેક માણસના માટે આ તો એક પ્રત્યક્ષ અનુભવ કરી શકાય તેવી હકીકત છે કે વાવ ખોદવાથી પાણી નીકળે છે, આમાં તો ચર્ચાની કોઈ વાત જ ઊભી થતી નથી. પણ પ્રતિમાની પૂજા કરનાર અને કરાવનારાઓથી

काय के जीवों की रक्षा नहीं हो सकती है-उनसे उनकी विराधना होती है। ऐसी परिस्थिति में धर्म के मूलभूत सिद्धान्त का ही जब वहां अभाव है तब उस पूजन कार्य के उनके परिणामों में शुद्धि मानना यह कथन शास्त्र से विरुद्ध और प्रत्यक्ष आदि समस्त प्रमाणों से बाधित होता हुआ किसी भी समझदार व्यक्ति को मान्य नहीं हो सकता है प्रतिमा पूजनके पक्षपाती जो इस प्रकार अपने पक्षमें तर्क करते हैं कि-

सम्यक् स्नात्वोचिते काले संस्नाप्यच जिनान् क्रमात्।
पुष्पाहारस्तुतिभिश्च पूजयेदिति तद्विधिः॥

तथा-जिनप्रभसूरिकृतपूजाविधौ-सरससुरहिचंदणेणं . अंगेसु पूअं काऊण पंचगकुसुमेहिं गंधवासेहिं च पूएइ सद्वर्णैः सुगंधिभिः मरसैरभूपतितैर्विकाशिभिरसहितदलैः प्रत्यग्रैश्च प्रकीर्णैर्नानाप्रकारग्रथितैर्वा पुष्पैः पूजयेत्" इति-तथा— कुसुमक्खयगंधपईवधूयनेवेज्जफलजलेहिं पुणो अट्ठविहकम्मदलनी अट्ठुवयारा हवइ पूया" इति किञ्च-

जिनभवनं जिनबिम्बं जिनपूजां जिनमतं च यः कुर्यात्।
तस्य नरामरशिवसुखफलानि करपल्लवस्थानि॥

પટ્કાય જીવોની રક્ષા થઈ શકતી નથી, તે કાર્યથી તો તેમની વિરાધના જ હોય છે આવી પરિસ્થિતિમાં ધર્મના મૂળભૂત સિદ્ધાન્તોનો જ જ્યારે અભાવ છે ત્યારે તે પૂજા રૂપ કાર્યથી તેમના પરિણામોમાં શુદ્ધિ માનવી આ વાત શાસ્ત્રથી વિરૂદ્ધ અને પ્રત્યક્ષ વગેરે બીજા બધા પ્રમાણોથી બાધિત થતી કોઈ પણ સમજુ માણસના માટે તો માન્ય થઇ શકે તેમ નથી. પ્રતિમા પૂજનની તરફદારી કરનારાઓ પોતાની વાતને પુષ્ટ કરવા માટે જે આ જાતની ખોટી દલીલો સામે મૂકે છે કે—

सम्यक् स्नात्वोचिते काले सं स्नाप्य च जिनान् क्रमात्।
पुष्पाहारस्तुतिभिश्च पूजयेदिति तद्विधिः॥

तथा-जिनप्रभसूरिकृतपूजाविधौ-सरस-सुरहिचंदणेण अंगेसु पूअं काउण पंचगकुसुमेहिं गंधवासेहिं च पूएइ सद्वर्णैः सुगंधिभिः मरसैरभूपतितैर्विकाशिभिरसहितदलैः प्रत्यग्रैश्च प्रकीर्णैर्नानाप्रकारग्रथितैर्वा पुष्पैः पूजयेत्। इति तथा कुसुमक्खयगंधपईवधूयनेवेज्जफलजलेहिं पूणो अट्ठविहकम्मदलनी अट्ठुवयारा हवइ पूया" इति किञ्च—

जिनभवनं जिनबिम्बं जिनपूजां जिनमतं च यः कुर्यात्।
तस्य नरामरशिवसुखफलानि करपल्लवस्थानि॥

समुच्छेदात् परिणामशुद्धिरुत्पद्यत इति प्रवचनविरुद्धं कल्पनं सर्वप्रमाणबाधितं कस्यानुमतं भवेत् । अपि तु न कस्यापि ।

(आचाराङ्गसूत्रे भगवताऽभिहितम् (अ. १ उ. १)

" इमस्स चेव जीवियस्स परिवंदणमाणणपूयणाए जाइमरणमोयणाए दुक्खपडिघायहेउं से सयमेव पुढविसत्थं समारंभइ, अण्णेहिं वा पुढविसत्थं समारंभावेइ,

---

भावार्थ—पूजक उचित समय में अच्छी तरह स्नान करके जिनेन्द्र का अभिषेक कर पुष्प आदिकों से उन की पूजा करें। जिनप्रभसूरि द्वारा विरचित पूजाविधि में भी पूजा के विषय में यही विधि प्रदर्शित की गई है सरस सुगंधित चंदन से भगवान के नव अंगो में तिलकरूप पूजन कर पूजक सुगंधित, जमीन पर नहीं गिरे हुए, पत्र विनाके ताजे पंच जाति के पुष्पों द्वारा प्रभु की पूजा करें। पुष्प, अक्षत, गंध, प्रदीप, धूप, नैवेद्य फल और जल इन आठ द्रव्यों से आठ कर्मो को नाश करनेवाली अष्टप्रकारी पूजा होती है। जिनमंदिर, जिनप्रतिमा जिनपूजा और जिनमत को जो करता है, उस मनुष्य के हाथ में मनुष्यगति देवगति और मोक्ष के सुख आ जाते हैं—अर्थात् वह मनुष्य इन गतियों के सर्वोत्तम सुख भोग कर मोक्षसुख का भोक्ता बन जाता है—सो इस प्रकार का यह पूजन विषयक समस्त कथन प्रवचन सिद्ध ही है क्योंकी आचारांगसूत्र में भगवान ने "इमस्स चेव जीवियस्स परिवंदण माणणपूयणाए जाइमरणमोयणाए दुक्खपरिघायहेउं से सयमेव पुढविस-

---

ભાવાર્થ—પૂજા કરનાર યોગ્ય સમયે સારી રીતે સ્નાન કરીને જીનેન્દ્રનો અભિષેક કરે તેમજ પુષ્પ વગેરેથી તેમની પૂજા કરે. જીનપ્રભાસૂરિ વડે વિરચિત પૂજાવિધિમાં પણ પૂજાના વિષયમાં આ વિધિ જ બતાવવામાં આવી છે. સરસ સુગંધિત ચંદનથી ભગવાનનાં નવ અંગોમાં તિલક રૂપ પૂજન કરી પૂજા કરનાર સુવાસયુકત, જમીન ઉપર પડેલાં નહિ, પત્ર વગરનાં તાજાં, પાંચ જાતિનાં પુષ્પોથી પ્રભુની પૂજા કરે. પુષ્પ, અક્ષત, ગંધ, પ્રદીપ, ધૂપ, નૈવેદ્ય, ફળ અને પાણી આ આઠ દ્રવ્યોથી આઠ કર્મોને નષ્ટ કરનારી અષ્ટ પ્રકારની પૂજા હોય છે. જીન મંદિર, જીન પ્રતિમા, જીન પૂજા અને જીન મતને જે કરે છે, તે માણસની પાસે મનુષ્ય ગતિ, દેવગતિ અને મોક્ષનાં સુખો આવી જાય છે. એટલે કે તે માણસ આ ગતિઓનાં સર્વોત્તમ સુખો ભોગવીને મોક્ષ સુખને ભોગવનાર બની જાય છે, માટે આ જાતનું આ પૂજનને લગતું બધું કથન પ્રવચન સિદ્ધ જ છે, કેમકે આચારાંગ સૂત્રમાં ભગવાને—(इमस्स चेव जीवियस्स परिवंदणं माणणपूयणाए जाइमरणमोयणाए दुक्खपरिघायहेउं से

अण्णे वा पुढविसत्थं समारंभंते समणुजाणइ। तं से अहियाए तं से अबोहीए।" इति
जीवः कस्मै प्रयोजनाय पृथिवीकायस्य समारम्भं करोतीत्याह—" इमस्स चेव" इत्यादि। अस्यैव=क्षणभङ्गुरस्य, " जीवियस्स" जीवनस्य-जीवनस्यार्थे, तथा- परिवन्दनमाननपूजनाय=परिवन्दनं प्रशंसा, तदर्थं यथाऽऽश्चर्यगृहादिकरणे, माननं=सत्कारः तदर्थं, यथा -कीर्तिस्तम्भादिकरणे, पूजनं=स्वपूजनं प्रतिमापूजनं च, तत्र स्वपूजनं-वस्त्ररत्नादिपुरस्कारलाभस्तदर्थं, तथा-प्रतिमापूजनार्थं च प्रतिमादिरचने तथा—जातिमरणमोचनाय, तथा दुःखप्रतिघातहेतुं-दुःखविध्वंसार्थं।

त्थं समारंभइ, अण्णेहिं वा पुढविसत्थं समारंभावेइ, अण्णे वा पुढविसत्थं समारंभंते समणुजाणइ। तं से अहियाए तं से अबोहिए" इति- इस सूत्र में "जीव किस प्रयोजन के लिये पृथिवीकाय का समारंभ करता है" इस प्रश्न का उत्तर देते हुए यह कहा है कि यह जीव इस क्षणभंगुर जीवन के लिये परिवन्दन-प्रशंसा के लिये-आश्चर्योत्पादक गृह आदि बनवा न दें मान-सत्कार के लिये कीर्तिस्तंभ आदि कराने में, अपनी प्रतिष्ठा के लिये वस्त्र रत्नकम्बल आदि पुरस्कार में तथा प्रतिमापूजन के लिये प्रतिमादि बनवाने में तथा जाति-परलोक में सुख-के लिये देवमन्दिर आदिके बनवानेमें, मरण-जिनकी मृत्यु हो चुकी है ऐसे अपने पिता आदि की स्मृति के लिये स्तूप आदि की रचना कराने ने में, मोचन-मुक्ति प्राप्ति के लिये देव प्रतिमा आदि बनवानेमें अथवा अनेक प्रकारके दुःखोंके विनाशके लिये वर्तमानकालमें स्वयं भी पृथिवी

समेव पुढविसत्थं समारंभइ, अण्णेहिं वा पुढविसत्थं समारंभावेइ, अंण्णेवा पुढविसत्थं समारंभते समणुजाणइ तं से अहियाए तं से अबोहिए) इति—
"જીવ શા માટે પૃથ્વીકાયનો સમારંભ કરે છે" એ સવાલનો જવાબ આપતાં આ પ્રમાણે કહેવામાં આવ્યું છે કે આ જીવ આ ક્ષણભંગુર જીવન માટે પરિવન્દન-પ્રશંસા માટે આશ્ચર્યોત્પાદક ઘર વગેરે બનાવવામાં, માન-સત્કાર માટે કીર્તિસ્તંભો વગેરે તૈયાર કરાવવામાં, પોતાની પ્રતિષ્ઠા માટે વસ્ત્ર, રત્ન, કામળ વગેરે રૂપ પુરસ્કાર તેમજ પ્રતિમા પૂજન માટે પ્રતિમા વગેરે બનાવવામાં જાતિ પરલોકમાં સુખ પ્રાપ્તિ થાય તેના માટે દેવ-મંદિરો વગેરે તૈયાર કરાવવામાં, મરણ-જેઓ મરણ પામ્યા છે તેવા પોતાના પિતા વગેરેની યાદમાં સ્તૂપ, સમાધિ વગેરે બનાવવામાં, મોચન-મુક્તિ મેળવવા માટે દેવ-પ્રતિમા વગેરે બનાવવામાં અથવા તો ઘણી જાતનાં દુઃખોના વિનાશ માટે વર્તમાન કાળમાં પોતે પણ પૃથ્વીકાયના વિનાશ સ્વરૂપ દ્રવ્યભાવ શસ્ત્રનો વ્યાપાર

सः जीवनपरिवन्दनमाननपूजनाद्यर्थं जनः स्वयमेव पृथिवीशस्त्रं समारभते =पृथिव्युपमर्दकं द्रव्यभावशस्त्रं व्यापारयति। अन्यैर्वा पृथिवीशस्त्रं समारम्भयति =उद्योजयति। पृथिवीशस्त्रं समारभमाणान् अन्यान् समनुजानाति अनुमोदयति। एवमतीतानागताभ्यां, तथा मनोवाक्कायैश्च पृथिवीशस्त्रसमारम्भभेदा अवगन्तव्याः। पृथिवीशस्त्रं समारभमाणः किं फलं प्राप्नोतीत्याह—" तं से अहियाए " इत्यादि। " तं " तत्=पृथिवीकायसमारम्भणं, " से " तस्य=पृथिवीशस्त्रं समारभमाणस्य " अहियाए " अहिताय=अकल्याणाय भवतीति शेषः। ' तं ' तत् = तदेव च पृथिवीकायसमारम्भणमेव च " से " तस्य पृथिवीशस्त्रं समारभमाणस्य " अबोहीए " अबोधये सम्यक्त्वालाभाय जिनधर्मप्राप्त्यभावाय च भवति।

पृथिवीकायसमारम्भणं हि—कृतकारितानुमोदितभेदेन त्रिविधम्, तस्यातीत-

---

काय के विनाशस्वरूप द्रव्य भाव शस्त्रका व्यापार करता है, दूसरों से कराता है और इस शस्त्र का प्रयोग करने वाले प्राणियोंकी अनुमोदना करता है इसी प्रकार भूत और भविष्यत काल में मनवचन और काय से(त्रियोग और त्रिकरणके संबंधसे) यह जीव पृथिवी कायका समारम्भ करने वाला हुआ है और होगा। अतः जिस प्रकार वर्तमान में त्रियोग और त्रिकरण के संबंध से इस पृथिवी काय समारंभ के भेद होते हैं उसी प्रकार भूत और भविष्यत काल में भी उनके संबंध इसके भेद जानलेना चाहिये। यह पृथिवी काय का समारंभरूप शस्त्रका प्रयोग प्रयोक्ता जीवको कभी भी कल्याण एवं सम्यक्त्व के लाभ जिनधर्म की प्राप्ति की प्राप्ति कराने वाला नहीं होता है।

भावार्थ—पृथिवीकाय का समारम्भ कृत, कारित और अनुमोदना

(કાર્ય) કરે છે, બીજાઓ પાસે કરાવે છે અને આ શસ્ત્રનો પ્રયોગ કરનાર પ્રાણીઓની અનુમોદના કરે છે. આ પ્રમાણે ભૂત અને ભવિષ્યકાળમાં મન, વચન અને કાયથી (ત્રિયોગ અને ત્રિકરણના સંબંધથી) આ જીવ પૃથ્વિ કાયનો સમારંભ કરનાર થયો છે અને થશે. એટલા માટે જેમ વર્તમાનકાળમાં ત્રિયોગ અને ત્રિકરણના સબંધથી આ પૃથ્વિકાય સમારંભના ભેદ (પ્રકાર) હોય છે તેમજ ભૂત અને ભવિષ્યત કાળમાં પણ તેમના સંબંધ તેમજ ભેદ જાણી લેવા જોઈએ આ પૃથ્વિકાયના સમારંભ રૂપ શસ્ત્રનો પ્રયોગ પ્રયોકતા જીવના માટે કદાપિ કલ્યાણ સમ્યકત્વનો લાભ તેમજ જીન ધર્મની પ્રાપ્તિ કરાવનાર થતો નથી.

ભાવાર્થ—પૃથ્વિકાયનો સમારંભ કૃત, કારિત અને અનુમોદનાના ભેદથી ત્રણ પ્રકારનો છે. અતીત અને અનાગત કાળના ભેદોથી તેના બીજા ત્રણ ત્રણ

वर्तमानानागतभेदेन प्रत्येकं त्रैविध्ये नवधा भवति । नवविधस्यापि पृथिवीकाय-समारम्भणस्य मनोवाक्काययोगभेदेन प्रत्येकं त्रैविध्ये सप्तविंशतिर्भङ्गा भवन्ति । एवं त्रिधपृथिवीकायसमारम्भप्रवृत्तः खलु षट्कायारम्भसंपातजन्यघोरतरदुरितार्जनेन दुरन्तसंसारदावानलज्वालान्तःपात प्राप्यानन्तनरकनिगोदादिदुःखमनुभवन् न कदाचित् कल्याणं शाश्वतसुखप्रदं मोक्षमार्गं प्राप्नोतीतिभावः ॥

भगवता पृथिवीकायसमारम्भणवदप्कायादिसमारम्भणमप्यहितायाबोधये च भवतीत्यपि तत्रैव प्ररूपितम् । यत्रैकस्य पृथिवीकायस्य समारम्भणे सम्यक्त्व-

के भेद से तीन प्रकार का है-इसके अतीत और अनागत काल के भेद से तीन ३ प्रकार का और हो जाते हैं इस प्रकार यह तीनों कालों की अपेक्षा से ९ प्रकार का है। इन नव प्रकारों के साथ-मन वचन और काय इन तीनों का गुणा करने से यह २७ प्रकार का माना गया है इस प्रकार त्रिकरण और त्रियोग के संबंध से २७ प्रकार के इस पृथिवीकाय के समारंभ में प्रवृत्त जीव षट्काय के आरंभ के संपात जन्य घोरतर पापों के अर्जन से दुरन्त संसार रूपी दावानल की ज्वाला के मध्य में निमग्न बन अन्त में अनन्त नरक निगोदादिकों के दुःखो का अनुभव करता हुआ कभी भी निज कल्याण का भोक्ता एवं शाश्वत सुख को प्रदान करने वाले मोक्ष के मार्ग का पथिक नहीं बन सकता है पृथिवी-काय के समारम्भ की तरह अप्काय आदि का समारंभ भी इस जीवात्मा को सदा अहितकारी और अबोध का दाता है यह बात भी वहां पर (आचारांग सूत्र में) भगवान ने कही है अब विचारिए-जब

ભેદો થઈ જાય છે આ રીતે આ ત્રણે કાળોની અપેક્ષાએ નવ પ્રકારનો છે. આ નવ પ્રકારોની સાથે મન, વચન અને કાય આને ત્રણેનો ગુણાકાર કરવાથી આ ૨૭ પ્રકારનો માનવામાં આવ્યો છે. આ પ્રમાણે ત્રિકરણ અને ત્રિયોગના સંબંધથી ૨૭ પ્રકારના આ પૃથિવિકાયના સમારંભમાં પ્રવૃત્ત જીવ ષટકાયના આરંભના સંપાત જન્મ ઘોરતર (ભયંકર) પાપોને કારણે દુરંત સંસાર રૂપી દાવાનલના અગ્નિમાં પડીને છેવટે અનંત નરક નિગોદ વગેરે દુઃખોને અનુભવતો કદાપિ પોતાના કલ્યાણનો ભોકતા થઈને અને શાશ્વત-સુખને આપનાર મોક્ષ માર્ગનો પથિક (વટેમાર્ગુ) બની શકતો નથી. પૃથિવિકાયના સમારંભની જેમ અપ્કાય વગેરેનો સમારંભ પણ આ જીવાત્મા માટે હમેશાં અહિતકારી અને અબોધ (અજ્ઞાન) આપનારો છે આ વાત પણ આચારાંગ સૂત્રમાં ભગવાને કહી છે હવે આટલું તો આપણે પણ સમજી શકીએ છીએ કે જ્યારે જીવના માટે ફક્ત પૃથિવિકાયનો સમારંભ જ જ્યારે અહિત કરનાર અને મોક્ષના

मलभ्यं, किं पुनस्तत्र पट्कायसमारम्भणे स्वर्गापवर्गलाभस्य संभवः । परिवन्दन-माननपूजनार्थं जातिमरणमोचनार्थं दुःखप्रतिघातार्थं च ये जीवाः पृथिवीकायादि-समारम्भं कुर्वन्ति, ते तत्फलं विपरीतमेव लभन्ते यतोऽसौ समारम्भः अबोधिमहितं चोत्पादयतीत्युक्तं भगवता । परंतु तत्र प्रतिमापूजकाः शास्त्रविरुद्धमेवं कथयन्ति–प्रतिमापूजायां स्वाभ्युदयमोक्षार्थं क्रियमाणः पट्कायसमारम्भः खलु अबोधिम–

जीव के लिये यह अकेला पृथिवीकाय का समारंभ ही अहित का कर्त्ता और मोक्ष के मार्ग से वंचित रखनेवाला कहा गया है तो भला किस कार्य में षट्काय के जीवों का समारंभ होता है, उस कार्य से अथवा उस प्रकार के समारंभ से जीवों को स्वर्ग और अपवर्ग (मोक्ष) का लाभ कैसे हो सकता है ? अर्थात् किसी तरह नहीं हो सकता ।

जो मनुष्य परिवंदन मानन और पूजन के निमित्त तथा जाति और मरण के मोचन के निमित्त एवं दुःखो के विनाश करने के निमित्त पृथिवीकाय आदि का समारंभ करते हैं, वे उसका विपरीत ही फल भोगते हैं यह बात अच्छी तरह से प्रकट की जा चुकी है । क्यों कि प्रतिमापूजा बोध एवं हित प्राप्ति के लक्ष्य को लेकर के ही की जाती है –परन्तु इस लक्ष्य की सिद्धि न होकर उससे उल्टा कर्त्ता जीव अबोध एवं अहित का प्रापक ही होता है ऐसा श्री महावीर प्रभु का कथन है । फिर भी इसके पक्षपाती जन इस बात पर ध्यान न देकर शास्त्र विरुद्ध ही कथन करते हैं–वे यह कहते हैं " कि इस प्रतिमापूजन में माना कि

માર્ગથી દૂર ફેંકી દેનાર બતાવવામાં આવ્યો છે ત્યારે 'કયા કાર્યમાં ષટ્કાયના જીવોનો સમારભ હોય છે, તે કાર્યથી અથવા તો તે જાતના સમારંભથી જીવને સ્વર્ગ અને અપવર્ગ (મોક્ષ) નો લાભ કેવી રીતે સંભવી શકે તેમ છે ? એટલે કે કોઇ પણ કાળે જીવને આ કાયથી સ્વર્ગ કે મોક્ષનો લાભ થઇ શકતો નથી

જે માણસ પરિવંદન, માનન અને પૂજનના માટે તેમજ જાતિ અને મરણના મોચન માટે અને દુખોના વિનાશ માટે પૃથિવકાય વગેરેનો સમા-રંભ કરે છે, તેઓ તેનું ઉલટું ફળ ભોગવે છે આ વાત સારી રીતે સમ-જાવવામાં આવી છે, કેમકે પ્રતિમા પૂજા બોધ તેમજ હિત પ્રાપ્તિના લક્ષ્યને લઇને જ કરવામાં આવે છે. પણ આ લક્ષ્યની સિદ્ધિ ન થતાં તેનાથી સાવ વિપરીત કર્તા જીવ અબોધ અને અહિતને મેળવે છે એવુ જ શ્રી મહાવીર પ્રભુએ કહ્યુ છે. છતાંય પ્રતિમા પૂજાના કેટલાક તરફદારીઓ આ વાતને લક્ષ્યમાં ન રાખતાં શાસ્ત્ર વિરૂદ્ધ જ કથનને વળગી રહે છે. તેઓ આ પ્રમાણે કહે છે

हितं नोत्पादयति, प्रत्युत बोधिं नरामरशिवसुखरूपं हितं च सम्यग् जनयतीति, यदेतत् साक्षात् प्रवचनविरुद्धमिति ।

किं च आचाराङ्गसूत्रे पृथिवीकायसमारम्भस्य फलमुक्त्वा भगवता पुनरभिहितम्-'एस खलु गंथे, एस खलु मोहे एस खलु मारे, एस खलु णिरये, इच्चत्थं गढिए लोए, जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं पुढविकम्मसमारंभेणं पुढविसत्थं समारंभमाणे अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसइ ।' (आ० १ अ० २ उ०)

छाया- एष खलु ग्रन्थः, एष खलु मोहः, एष खलु मारः, एष खलु नरकः इत्यर्थं गृद्धो लोकः, यदिमं विरूपरूपैः शस्त्रैः पृथिवीकर्मसमारम्भेण पृथिवीशस्त्रं

षट्काय का समारंभ होता है-परन्तु यह समारंभ स्वाभ्युदय एवं मुक्ति प्राप्ति के निमित्त ही किया जाता है-अतः यह कर्त्ता जीवों को न अहित का ही उत्पादक होता है और न बोधि के लाभ से वंचित रखता है प्रत्युत यह उन्हें बोधि एवं नर अमर और मोक्ष के सुख स्वरूप हित का प्रदान करने वाला ही होता है" सो इस प्रकार का उनका यह कथन साक्षात् शास्त्र से विरुद्ध ही है-यह बात आचारांग सूत्र से भली भांति पुष्ट होती है उसमें पूर्वोक्तरीति से पृथिवीकाय के समारंभ का फल कह-कर फिर यह कहा गया है—" एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु नरये, एच्चत्थं गड्ढिए लोए, जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं पुढविकम्मसमारंभेणं पुढविसत्थं समारंभमाणे अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसइ" (आ- १ अ- २ उ-) यह पृथिवीकाय का समारंभरूप शस्त्र निश्चय से जीवों को अष्टप्रकार के ज्ञानावरणीय आदि कर्मों का बन्ध

છે-આપણે થોડા વખત માટે આમ પણ માની લઇએ કે આ પ્રતિમા પૂજનમાં ષટ્કાયનો સમારંભ થાય છે-પણ આ સમારંભ સ્વાભ્યુદય અને મુક્તિની પ્રાપ્તિ માટે જ કરવામાં આવે છે એટલા માટે આ કર્તા જીવોના માટે અહિતનો ઉત્પાદક પણ હોતો નથી અને બોધિના લાભથી પણ તેઓને વંચિત રાખતો નથી આ તો તેમને બોધિ અને નર અમર અને મોક્ષના સુખ સ્વરૂપ હિતને આપનાર જ હોય છે પણ તેમનું આ કથન પ્રત્યક્ષ રૂપમાં શાસ્ત્રથી વિરૂદ્ધ જ છે. આ વાત આચારાંગ સૂત્રથી સારી પેઠે પુષ્ટ થઈ જાય છે તેમાં પૂર્વોક્ત રીતથી પૃથ્વિકાયના સમારંભનું ફળ બતાવીને આ પ્રમાણે કહ્યું છે—

" एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे एस खलु नरये, एच्चत्थं गड्ढिए लोए जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं पुढविकम्मसमारंभेणं पुढविसत्थं समारंभमाणे अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसइ " (आ. १ अ. २ उ.)

આ પૃથ્વિકાયનું સમારંભ રૂપ શસ્ત્ર ચોક્કસ જીવોના માટે આઠ પ્રકારના

समारम्भमाणः अन्यान् अनेकरूपान् प्राणान् विहिंसति। एषः=पृथिवीशस्त्रसमारम्भः खलु निश्चयेन ग्रन्थः=ग्रथ्यते=वध्यते जीवोऽनेनेति ग्रन्थः, अष्टविधकर्मबन्धः, बन्धजनकत्वाद् ग्रन्थ इत्युच्यते। तथा-एष मोहः विपर्यासः वीपरीतज्ञानरूप इत्यर्थः तथा-एष मारः=निगोदादिमरणरूपः। तथा-एष खलु नरकः-नारक जीवानां दशविधयातनास्थानम्। इत्यर्थम्-एतदर्थं कर्मबन्ध-मोह मरण-नरकरूपं घोरं दुःखफलं प्राप्य पुनः पुनरेतदर्थमेव लोकः=अज्ञानवशवर्ती जीवः गृद्धः-लिप्सुरस्ति। यद्यपि विषयभोगासक्तो लोकः शरीरादिपरिपोषणार्थं परिवन्दनमाननपूजनार्थं जातिमरणमोचनार्थं दुःखप्रतिघातार्थं च पृथिवीशस्त्रसमारम्भं करोति, तथापि तत्फलं कर्मबन्धमोहमरणनरकरूपमेव लभते, अतः पृथिवीकर्मसमारम्भस्य तदेव फलं भवतीति भावः। तदेवं प्रवचनविरुद्धप्ररूपण-

कराने वाला होने से ग्रन्थस्वरूप, विपरीत ज्ञान का जनक होने से मोहरूप, निगोदादि जीवों का इस में मरण होता है-इसलिये मार स्वरूप तथा नारकियों की दश प्रकार की यातना का हेतु होने से यह नरकरूप माना गया है। इस प्रकार यह जीव इस पृथिवीकाय के समारंभरूप शस्त्र के फलस्वरूप कर्मबन्ध, मरण और नरकरूप घोरतर दुःखों को भोगता हुआ भी अज्ञान के आधीन होकर उसी शस्त्र के प्रयोग करने का फिर भी अभिलाषी हो रहा है। यद्यपि विषय भोगों में आसक्त बना हुआ यह जीव शरीर आदि की पुष्टि परिवंदन, मानन, पूजन एवं जाति और मरण के मोचन के लिये तथा दुःखो के विनाश के लिये पृथिवीकाय के समारंभरूप शस्त्र का प्रयोग करता है-परन्तु फिर भी इसका वह कर्मबन्ध, मोह, मरण, नरकरूप फल का ही भोक्ता बनता

જ્ઞાનાવરણીય વગેરે કર્મોનો બંધ કરાવનાર હોવા બદલ ગ્રન્થ સ્વરૂપ, વિરુદ્ધ જ્ઞાનને ઉત્પન્ન કરનારૂ હોવાથી મોહ રૂપ, નિગોદ વગેરે જીવોનું આમાં મરણ થાય છે માટે માર સ્વરૂપ તેમજ નારકીઓની દશ પ્રકારની યાતનાનુ કારણ રૂપ હોવાથી આ નરક રૂપ માનવામાં આવ્યું છે. આ રીતે આ જીવ આ પૃથિવકાયના સમારંભ રૂપ શસ્ત્રના ફળ સ્વરૂપ કર્મબંધ, મરણ અને નરક રૂપ ઘોરતર દુઃખોને ભોગવવા છતાં પણ અજ્ઞાનવશ થઈને તે જ શસ્ત્રનો પ્રયોગ કરવા માટે ફરી તૈયાર થઈ રહ્યો છે. જો કે વિષય ભોગોમાં આસક્ત બનેલો આ જીવ શરીર વગેરેની પુષ્ટિ પરિવંદન, માનન, પૂજન અને જાતિ મરણના મોચન માટે તેમજ દુઃખોને દૂર કરવા માટે પૃથિવકાયના સમારંભ રૂપ શસ્ત્રનો પ્રયોગ કરે છે પણ છતાંયે તે કર્મબન્ધ, મોહ, મરણ અને નરક રૂપ ફળને ભોગવનાર જ બને છે. એટલા માટે આપણે ચોક્કસ કહી શકીએ તેમ છીએ

पराः सर्वदोषपरिमुक्तं शुद्धमद्वितीयमनवद्यं जैनधर्मं सावद्यपूजोपदेशेन कुप्रावचनिकोपमेयं कुर्वन्तः संसारदावानले जनान् पातयन्तः स्वयं च मोहनीयकर्मोदयवशादन्धा इव सन्मार्गतो निपतन्तः स्वात्मानमहितेन मिथ्यात्वेन च पुनः पुनः संयोजयन्ति। यदि मृगतृष्णाऽपि केषांचित् पिपासाकुलानां स्वच्छजलधारावाहिनी भवेत्, तदा प्रतिमापूजापि तेषां द्रव्यलिङ्गिनां परिणामशुद्धि संपादिनी अष्टविधकर्मदलनी नरामरशिवसुखविधायिनी भवेदिति बोध्यम्।

है। अतः प्रतिमापूजन का उपदेश निश्चित है कि प्रवचनमार्ग से विरुद्ध है। इस विरुद्ध प्ररूपणा करने में तत्पर मनुष्य सर्व दोषों से रहित, शुद्ध और अद्वितीय एवं अनवद्य इस जैनधर्म को सावद्य पूजा के उपदेश से कुप्रावचनिक की तरह कलंकित-सदोष कर संसाररूपी दावानल में भोले भाले प्राणियों को डाल रहे हैं और स्वयं भी मोहनीय कर्म के उदय से अन्ध की तरह बन कर सन्मार्ग से विमुख होते हुए अपनी आत्मा को अहित और मिथ्यात्व के कलंक से कलुषित कर रहे हैं। अरे-कहीं मृगतृष्णा से भी प्यासे व्यक्तियों की प्यास बुझती हैं? यदि नहीं, फिर मृगतृष्णा तुल्य इस प्रतिमा पूजन से कर्त्ता की सम्यक्त्व और हित की प्राप्ति होने रूप प्यास कैसे बुझ सकती है-सोचो। हां! यदि ऐसा होता कि मृगतृष्णा स्वच्छजल की धारा बहाकर प्यासे प्राणियों की तृषा को शांत करती-तो यह प्रतिमा पूजन भी द्रव्यलिङ्गियों के परिणामों में शुद्धि करती हुई उनके अष्टकर्मों को दलने वाली और उन्हें नर, अमर एवं शिवसुख प्रदान करने वाली भी हो सकती।

કે પ્રતિમા પૂજનનો ઉપદેશ પ્રવચન માર્ગથી વિરુદ્ધ છે આ જાતની વિરુદ્ધ પ્રરૂપણા કરવામાં તત્પર માણસ બધા દોષોથી રહિત, શુદ્ધ, અદ્વિતીય અને અનવદ્ય આ જૈન ધર્મને સાવદ્ય પૂજાના ઉપદેશથી કુપ્રાવચનિકની જેમ કલંકિત દોષયુક્ત બનાવીને સંસાર રૂપી દાવાનલમાં ભોળા પ્રાણીઓને નાખી રહ્યો છે અને જાતે પણ મોહનીય કર્મના ઉદયથી આંધળાની જેમ થઈને સન્માર્ગથી દૂર થતા પોતાના આત્માને અહિત અને મિથ્યાત્વના કલંકથી કલુષિત કરી રહ્યો છે. મૃગજળથી પણ કોઈ દિવસે તરસ્યા માણસોની તરસ મટી શકી છે? જો આમ નથી તો પછી મૃગજળ જેવી આ પ્રતિમા પૂજનથી કર્ત્તાની સમ્યક્ત્વ અને હિતની પ્રાપ્તિ થવા રૂપ તરસ કેવી રીતે મટી શકે તેમ છે. જો મૃગજળ નિર્મળ પાણીનો જેમ થઈને તરસ્યા પ્રાણીઓની તરસ મટાડી શકત તો આ પ્રતિમા પૂજન પણ દ્રવ્યલિંગિઓના પરિણામોમાં શુદ્ધિ કરનારી તેમના આઠ કર્મોને નષ્ટ કરનારી અને નર, અમર અને શિવ-સુખ આપનારી પણ થઈ શકત?

यत्तु-ब्राह्मीलिपिरिव प्रतिमा वन्द्या, ' नमो बंभीए लिवीए " इतिपदं यद् व्याख्याप्रज्ञप्तेरादावुपन्यस्तं, तत्र ब्राह्मीलिपिरक्षरविन्यासः, सा यदि श्रुतज्ञानस्याऽऽकारस्थापना, तदा तद्वन्द्यत्वे साकारस्थापनाया भगवत्प्रतिमायाः स्पष्टमेव वन्द्यत्वम् तुल्यन्यायादित्युक्तं, तन्मोहनीयकर्मोदयविलसितम्-

श्रुतज्ञानरूपस्य भावश्रुतस्य स्थापना-श्रुतज्ञानवतः श्रुतपठनादिक्रियावतः साध्वादेश्चित्रादिकं भवति, श्रुततद्वतोरभेदोपचारात् साध्वादि श्रुतमुच्यते । स्थापनावश्यकस्य स्थापनाश्रुतस्य च तथैवानुयोगद्वारे भगवता वर्णनात्। यदेवं लिपिः श्रुतज्ञानस्य स्थापनारूपत्वं न प्राप्नोति । तस्मात् प्रतिमायां ब्राह्मीलिपिदृष्टान्तप्रदर्शनमुत्सूत्रप्ररूपणम् ।

किञ्च—प्रतिमापूजन की पुष्टि के लिये " नमो बंभीए लिवीए " व्याख्याप्रज्ञप्ति की आदि में लिखे हुए इस सूत्र के बल पर जो उसके पक्षपाती जन यह कहते हैं-" कि अक्षर विन्यासरूप ब्राह्मीलिपि जिस प्रकार श्रुतज्ञान के आकार की स्थानपारूप होकर वन्द्य-वन्दनीय मानी गई है उसी प्रकार साकार स्थापनारूप भगवान की प्रतिमा में भी वन्दनीयता स्पष्ट ही है " सो यह कथन विचार करने पर ठीक नहीं बैठता है।

तथाहि— श्रुतज्ञानरूप भावश्रुत की स्थापना-श्रुतज्ञानसंपन्न, और श्रुत के पठन की क्रिया विशिष्ट ऐसे जो साधु आदिजन हैं उनके चित्र आदि स्वरूप पड़ती है अर्थात् श्रुतज्ञानी साधु आदि के चित्रस्वरूप ही श्रुतज्ञानरूप भावश्रुतकी स्थापना होती है। ब्राह्मीलिपि अक्षर विन्यास है। वह श्रुतज्ञान की स्थापना है। यहाँ श्रुतज्ञानी साधु आदि को जो

અને બીજું પણ કે-પ્રતિમા પૂજનની પુષ્ટિ માટે " नमो बंभीए-लिवीए " વ્યાખ્યા પ્રજ્ઞપ્તિની શરૂઆતમાં આવેલા આ સૂત્ર મુજબ જે તેની તરફદારી કરનારા માણસો આમ કહે છે કે " અક્ષર વિન્યાસ રૂપ બ્રાહ્મિ લિપિ જેમ શ્રુતજ્ઞાનના આકારની સ્થાપના રૂપ થઈને વન્દ્ય-વંદનીય માનવામાં આવી છે, તેમજ આકાર-સ્થાપના રૂપ ભગવાનની પ્રતિમામાં પણ વંદનીયતા સ્પષ્ટ દેખીતી વાત જ છે પરંતુ આ કથનનો પણ વિચાર કર્યા બાદ યોગ્ય લાગતું નથી. તેમજ શ્રુતજ્ઞાન રૂપ ભાવશ્રુતની સ્થાપના-શ્રુતજ્ઞાન સંપન્ન અને શ્રુતના પઠનની ક્રિયા વિશિષ્ટ એવા જે સાધુ વગેરે લોકો છે તેમના ચિત્ર વગેરે સ્વરૂપ હોય છે એટલે કે શ્રુતજ્ઞાની સાધુ વગેરેના સ્વરૂપ જ શ્રુતજ્ઞાન રૂપ ભાવશ્રુતની સ્થાપના હોય છે બ્રાહ્મિ-લિપિ અક્ષર વિન્યાસ છે. તે શ્રુતજ્ઞાનની સ્થાપના છે અહીં શ્રુતજ્ઞાની સાધુ વગેરેને જે ભાવશ્રુત રૂપ કહેવામાં આવ્યો છે તે શ્રુતજ્ઞાન

यत्तु-अभयदेवीयवृत्तौ संज्ञाक्षररूपं द्रव्यं श्रुतं नमस्कुर्वन्नाह-'णमो बंभीए लिवीए' इत्युक्तं तद् भ्रान्तिमूलकम् पुस्तकवर्तिन्या अकारादिवर्णसंकेतरूपाया लिपेर्द्रव्यश्रुतत्व न संभवति यतः श्रुतं नाम द्वादशाङ्गीरूपमर्हत्प्रवचनं शास्त्रं यस्य कस्यचिज्जीवस्य शिक्षितं स्थितं जितं यावद् वाचनोपगतं भवति स जन्तुस्तत्र वाचनापृच्छनादिभिर्वर्तमानोऽपि श्रुतोपयोगाभावादागमसाश्रित्य द्रव्यश्रुतम्, आ

भावश्रुतरूप कहा गया है-वह श्रुतज्ञान और श्रुतवान में अभेद के उपचार से ही कहा गया समझाना चाहिये। इसी रूप से ही भगवान ने अनुयोग द्वार में स्थापना आवश्यक और स्थापना श्रुत का कथन किया है। अतः लिपि में भावश्रुत की कल्पना से श्रुतज्ञान की स्थापना मानना कथमपि युक्ति संगत नहीं है। इसी प्रकार लिपि में द्रव्यश्रुतता भी नहीं आती है। क्यों कि द्वादशांगीरूप अर्हत प्रवचन का नाम श्रुत है। श्रुतज्ञान का ज्ञाता जब उसमें अनुपयुक्त अवस्थानवाला है। तब वही आगम की अपेक्षा द्रव्यश्रुत कहा जाता है। संज्ञा अक्षर रूप आकृति को द्रव्यश्रुत नहीं कहा है। इस कथन से इस बात की पुष्टि होती है कि-अभयदेव विरचित वृत्ति में "णमो बंभीए लिवीए" इस पद का अर्थ संज्ञा अक्षररूप द्रव्यश्रुत परक मानकर जो नमस्कार किया गया है -वह भ्रान्तिमूलक है, क्यों कि पुस्तक में रही हुई संकेतित अकार आदि वर्ण की आकृति में द्रव्यश्रुतता संभवित नहीं होती है। वाचना, पृच्छना आदि से अधिगत श्रुत में अनुपयुक्तज्ञाता ही द्रव्यश्रुत है इसी

અને શ્રુતવાનમાં અભેદોપચારથી જ કહેવાયેલો સમજવો જોઈએ આ રૂપથી જ ભગવાને અનુયોગદ્વારમાં સ્થાપના આવશ્યક અને સ્થાપના શ્રુતનું કથન કર્યું છે એટલા માટે લિપિમાં ભાવશ્રુતની કલ્પનાથી શ્રુતજ્ઞાનની સ્થાપના માનવી કોઈ પણ રીતે યોગ્ય નથી આ પ્રમાણે જ લિપિમાં દ્રવ્યશ્રુતતા પણ આવતી નથી કેમકે દ્વાદશાંગી રૂપ અર્હંત પ્રવચનનું નામ શ્રુત છે આ શ્રુતજ્ઞાનનો જ્ઞાતા જ્યારે તેમાં અનુપયુક્ત અવસ્થાવાળો હોય છે ત્યારે તે આગમની અપેક્ષાએ દ્રવ્યશ્રુત કહેવાય છે. સંજ્ઞા અક્ષર રૂપ આકૃતિને દ્રવ્યશ્રુત કહી નથી. આ કથનથી આ વાતની પુષ્ટી થાય છે કે અભયદેવ વિરચિત વૃત્તિમાં "ણમો બંભીએ લિવીએ" આ પદનો અર્થ સંજ્ઞા અક્ષર રૂપ દ્રવ્ય શ્રુતપરક માનીને જે નમસ્કાર કરવામાં આવ્યા છે તે ભ્રાન્તિમય છે, કેમકે પુસ્તકમાં રહેલી સંકેતિત અકાર વગેરે વર્ણની આકૃતિમાં દ્રવ્યશ્રુતતા સંભવિત નથી હોતી. વાચના, પૃચ્છના વગેરેથી અધિગત શ્રુતમાં અનુપયુક્ત જ્ઞાતા જ દ્રવ્યશ્રુત છે

चाराङ्गादिकं प्रतिपूर्णघोषं कण्ठोष्ठविप्रमुक्तं पठितवतः साध्वादेस्तदर्थज्ञानाभावे सति द्रव्यश्रुतत्वं भवति, तथैवानुयोगद्वारे द्रव्यश्रुतस्य वर्णनात्। वर्णसंकेतरूपा लिपिस्तु न शब्दात्मिका, यतो वर्णस्यैवोच्चारणमुपपद्यते, न तु तत्संकेतस्य लिपिमतः पुस्तकादेस्तु श्रुतं शिक्षितं यावद् वाचनोपगतं न भवितुमर्हति अतस्तस्य द्रव्यश्रुतत्वं न संगच्छति कथं पुनस्तद्गतलिपेस्तत्संभवः ? कथमपि नहि।

किं च-द्रव्यश्रुतस्य वन्द्यत्वमेव नास्ति, अनुपयुक्तत्वाच्चरणगुणशून्यत्वाच्च, तस्माद् भावश्रुतस्यैव वन्द्यत्वप्राप्तौ द्रव्यश्रुतनमस्कारकल्पनं भ्रान्तिमूलकमेव। 'नमो बंभीए लिवीए' अस्यायमर्थः-वर्णात्मकभाषासंकेतरूपा लिपिर्ब्राह्मीलिपिः

प्रकार द्रव्यश्रुत का वर्णन अनुयोगद्वार में किया गया मिलता है। अकार आदि वर्णरूप से संकेतित लिपि में शब्दात्मकता आभी नही सकती है-क्यों कि वर्ण का ही उच्चारण होता है-उसके संकेत का नहीं। लिपियुक्त पुस्तकादि में भी वाचना आदि कुछ नहीं होता है। क्यों कि वह जड़ है-चेतन में ही ये वाचना पृच्छना आदि होते हैं। अतः उस में द्रव्यश्रुतता मानना सर्वथा अयुक्त है इसलिये यह निश्चित होता है कि अकार आदि वर्णरूप से संकेतित लिपि में और इस लिपि विशिष्ट पुस्तकादिक में द्रव्यश्रुतता किंचित मात्र भी संभवित नहीं है।

किंच—अनुपयुक्त होने से और चरणगुण शून्य होने से द्रव्यश्रुत में बंधता आ ही नहीं सकती है। भावश्रुत में ही उपयोग सहित और चरणगुण युक्तता होने से वंदता आती है-अतः द्रव्यश्रुत में नमस्कार करने की कल्पना करना केवल भ्रान्तिमूलक ही है "नमो बंभीए

આ રીતે દ્રવ્યશ્રુતનું વર્ણન અનુયોગ દ્વારમાં કરવામાં આવ્યું છે અકાર વગેરે વર્ણરૂપથી સંકેતિત લિપિમાં શબ્દાત્મકતા આવી શકે તેમ નથી. કેમકે ઉચ્ચારણ તો દ્રવ્યનું જ થાય છે, તેના સંકેતનું નહિ. લિપિ યુકત પુસ્તકો વગેરેમાં પણ વાચના વગેરે કંઈ જ હોતું નથી. કેમકે તે જડ છે, ચેતનમા જ વાચના પૃચ્છના વગેરે થાય છે. એથી તેમાં દ્રવ્યશ્રુતતા માનવી સાવ અયોગ્ય છે. એથી એ વાત ચોક્કસ થાય છે કે અકાર વગેરે વર્ણરૂપથી સંકેતિત લિપિમા અને આ લિપિ વિશિષ્ટ પુસ્તક વગેરેમાં દ્રવ્યશ્રુતતા થોડી પણ સંભવિત નથી.

અને બીજું પણ કે-અનુપયુકત હોવાથી અને ચરણગુણ શૂન્ય હોવાથી દ્રવ્યશ્રુતમાં બંધતા આવી જ શકતી નથી. ભાવશ્રુતમાં જ ઉપયોગ સહિત અને ચરણગુણ યુક્તતા હોવાથી વંદતા આવે છે એટલા માટે દ્રવ્યશ્રુતમાં નમસ્કાર કરવાની કલ્પના કરવી ભ્રાંતિમૂલક જ છે. " नमो बंभीए लिवीए " આનો અર્થ

ब्राह्मीशब्दस्य भाषार्थकत्वात्, उक्तं चामरकोशे-'ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाग् वाणी सरस्वती' इति। यद्वा-अष्टादशप्रकारा लिपिः श्रीमन्नाभेयजिनेन ब्राह्मीनामिकां स्वसुतां प्रदर्शिता तस्मात् सा लिपिर्ब्राह्मीत्युच्यते। लिपिज्ञानस्य श्रुतज्ञानोपयोगितया भावश्रुतहेतुं लिपिज्ञानरूपं भावलिपिं वन्दमानः श्रीसुधर्मा स्वामी प्राह-' नमो बंभीए लिवीए ' इति। श्रुतज्ञानं प्रति लिपिज्ञानं कारणं, यतो लिपिज्ञानेन तत्संकेतितशब्दस्मरणं, ततस्तदर्थज्ञानं जायते। तस्माद् भगवदुक्तार्थस्य प्रतिबोधनाय तद्बोधकशब्दजातरूपं श्रुतं लिपिबद्धं कर्तुकामः श्रुतबोधिकां

लिवीए " इसका अर्थ इस प्रकारसे संगत बैठता है-अकार आदि वर्णात्मक भाषा के संकेतरूप लिपि का नाम ब्राह्मी लिपि है-ब्राह्मी शब्द इस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है अमर कोष में भी यही बात कही है-" ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाग् वाणी सरस्वती "। अथवा-श्री आदिनाथ प्रभु ने अपनी ब्राह्मी नाम की पुत्री को १८ प्रकार की लिपि कही थी इसलिये भी उस लिपि का नाम ब्राह्मी लिपि इस प्रकार से पड़ गया है। श्रुतज्ञान में उपयोगी होने से इस लिपि के ज्ञान को भावश्रुत का कारण माना है। इसलिये लिपि ज्ञानरूप भाव लिपि को वन्दन करते हुए श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं " नमो बंभीए लिवीए "। श्रुतज्ञान के प्रति लिपि ज्ञान कारण है-क्यों कि लिपि के ज्ञान से अकारादि वर्णात्मक लिपि रूप से संकेतित उस उस शब्द का स्मरण होता है और उससे उसके अर्थ का ज्ञान होता है। अतः भगवान द्वारा प्रतिपादित अर्थ को समझाने के लिये उस अर्थ का प्रतिपादन करने वाले शब्दों के

આ પ્રમાણે સુસંગત બેસી શકે છે કે-અકાર વગેરે વર્ણાત્મક ભાષાના સંકેત રૂપ લિપિનું નામ બ્રાહ્મી લિપિ છે. બ્રાહ્મી શબ્દ ' ભાષા ' આ અર્થમાં પ્રયુક્ત થયો છે અમરકોશમાં પણ એ જ વાત કહેવામાં આવી છે કે " બ્રાહ્મી તુ ભારતી ભાષા ગીર્વાગ્વાણી સરસ્વતી " અથવા તો શ્રી આદિનાથ પ્રભુએ પોતાની બ્રાહ્મી નામની પુત્રીને અઢાર પ્રકારની લિપિઓ બતાવી હતી એટલા માટે પણ આ લિપિનું નામ બ્રાહ્મી લિપિ પડી ગયું છે. શ્રુતજ્ઞાનમાં ઉપયોગી હોવાથી આ લિપિના જ્ઞાનને ભાવશ્રુતનું કારણ માનવામાં આવ્યું છે. એથી લિપિજ્ઞાન રૂપ ભાવલિપિને વંદન કરતા શ્રીસુધર્માસ્વામી કહે છે કે "નમો બંભીએ લિવીએ" શ્રુતજ્ઞાન પ્રતિ લિપિજ્ઞાન કારણ છે કેમકે લિપિના જ્ઞાનથી અકાર વગેરે વર્ણાત્મક લિપિ રૂપથી સંકેતિત તે શબ્દનું સ્મરણ થાય છે. અને તેનાથી તેના અર્થનું જ્ઞાન થાય છે એટલા માટે ભગવાનદ્વારા પ્રતિપાદિત અર્થને સમજાવવા માટે તે અર્થનું

भावलिपिं प्रति समुपजातभक्तिः श्रीसुधर्मा स्वामी लिपिज्ञानस्य माहात्म्यं प्रकटयन् भावश्रुतं प्रति भावलिपेः कारणतयाऽभ्यर्हितत्वेन ततः पूर्वं भावलिपिवन्दनं कृतवान्, तत्पश्चाद् भावश्रुतं नमस्कुर्वन्नवादीत् ' नमः सुयस्स ' इति।

यत्तु-अभयदेवसूरिणा स्वकृतटीकायामुक्तम् ' जिणपडिमाणं अच्चणं करेइ ' त्ति एकस्यां वाचनायामेतावदेव दृश्यते। वाचनान्तरे तु-' ण्हाया जाव सव्वालंकारविभूसिय मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणामेव जिणघरे तेणामेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता जिणघरं अणुपविसइ २ त्ता, जिणपडिमाणं

समूहरूप श्रुत को लिपिबद्ध करने की इच्छा से श्री सुधर्मास्वामी कि जिन की भक्ति श्रुतबोधक भावलिपि के प्रति जागृत हुई है लिपिज्ञान के माहात्म्य को प्रकट करते हुए भावश्रुत को नमस्कार करने के पहिले भावलिपि को ही नमस्कार करते हैं क्यों कि भावश्रुत के प्रति भावलिपि को ही कारणता है, और इसी निमित्त से यह उसकी अपेक्षा पूज्य मानी गई है भावलिपि को नमस्कार करने के पश्चात् ही उन्हों ने "नम-सुयस्स" भावश्रुत को नमस्कार इस सूत्र द्वारा किया है। "जिणपडिमाणं अच्चणं करेइ" इस पाठ को लेकर जो टीकाकार अभयदेव सूरि ने जिनप्रतिमा कि पूजन करने की बात कही है-सो ठीक नहीं हैं। क्यों कि मालूम होता है, कि उन्हें मूल पाठ का निश्चय ही नहीं हुआ है-कारण कि एक वाचना में तो यही पाठ मिलता है-तब कि दूसरी वाचना में "ण्हाया जाव सव्वालंकारविभूसिया मज्जणघराओ पडिनिक्खमई, २ जेणामेव जिणघरे तेणामेव उवागच्छइ, २

પ્રતિપાદન કરનારા શબ્દોના સમૂહરૂપ શ્રુતને લિપિબદ્ધ કરવાની ઈચ્છાથી શ્રીસુધર્મા સ્વામી-કે જેમની શ્રુતબોધક ભાવલિપિ પ્રત્યે ભકિત ઉત્પન્ન થઇ છે-લિપિ જ્ઞાનના માહાત્મ્યને પ્રગટ કરતાં ભાવશ્રુતને નમસ્કાર કરતાં પહેલાં ભાવલિપિ. ને જ નમસ્કાર કર્યા છે કેમકે ભાવશ્રુત પ્રત્યે ભાવલિપિ જ કારણતા છે અને આ કારણથી જ આ તેના કરતાં પૂજ્ય માનવામા આવી છે. ભાવલિપિને નમસ્કાર કર્યા બાદ જ તેમણે "नम सुयस्स" આ સૂત્ર વડે ભાવશ્રુતને નમસ્કાર કર્યા છે "जिणपडिमाणं अच्चणं करेइ" આ પાઠના આધારે જે ટીકાકાર અભયદેવસૂરિએ જીનપ્રતિમાની પૂજાની વાત કહી છે તે યોગ્ય નથી કેમકે તેમને મૂળ પાઠનો નિશ્ચયજ થયો નથી એમ જણાઇ આવે છે કારણ કે એક વાચનામાં તો એ જ પાઠ મળે છે. ત્યારે બીજી વાચનામાં—

(ण्हाया जाव सव्वालंकारविभूसिया मज्जणघराओ पडिनिक्खमई, २ जेणामेव जिणघरे तेणामेव उवागच्छई, २ जिणघरं अणुपविसइ, जिणपडिमाणं आलोए

आलोए पणामं करेइ २ त्ता, लोमहत्थयं परामुसइ २ त्ता, एवं जहा सूरियाभो जिणपडिमाओ अच्चेइ तहेव भाणियव्वं जाव धूवं डहइ ' त्ति। तेन मूलपाठस्य निश्चयमस्य नाभूदिति विज्ञायते।

अतः परं च–' वामं जाणुं अंचेइ दाहिणं जाणुं धरणियलंसि णिवेसेइ २ ' इति प्रतिमापूजकैः स्वीकृतो मूलपाठस्तत्र वर्तते, टीकाकारस्तु–' दाहिणं जाणुं धरणीतलंसि निहट्टु ' इति पाठं टीकायां विलिख्य निगदति–' निहट्टु ' निहत्य स्थापयित्वेत्यर्थः, ' णिवेसेइ ' इत्यत्र–' निहट्टु ' इति पाठभेदः कृतः। तेनाप्येतद् विदितं भाति–यस्य यादृशं मनस्यभिरुचितं स तादृशमिह मूलपाठं प्रकल्पयति स्म इति।

जिणघरं अणुपविसइ जिणपडिमाणं आलोए पणामं करेइ, २ लोमहत्थयं परामुसइ, २ एवं जहा सूरियाभो जिणपडिमाओ अच्चेइ तहेव भाणियव्वं जाव धूवं डहइ " त्ति यह पाठ मिलता है। इसके बाद " वामं जाणुं धरणियलंसि णिवेसेइ २ " ऐसा पाठ मिलता है–और यही पाठ प्रतिमा पूजकों को संमत है। परन्तु टीकाकार श्री अभयसूरि ने " दाहिणं जाणुं धरणीतलंसी निहट्टु ' ऐसा पाठ टीकामें रखकर ' निहट्टु ' इस पद की टीका " स्थापना करके " ऐसी की है। इस प्रकार " णिवेसेइ " की जगह ' निहट्टु ' ऐसा पाठ भेद किया गया है। इसी प्रकार प्रतिमा पूजकों द्वारा स्वीकृत " निक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलंसि नमेइ " इस मूल पाठ में भी परिवर्तन " नमेइ " क्रिया पद से " निवेशयति " इस रूप से कर दिया है। इससे यह बात निश्चित होती है कि जिस के मन

पणामं करेइ, २ लोमहत्थयं परामुसइ, २ एवं जहा सूरियाभो जिनपडिमाओ अच्चेइ तहेव भाणियव्वं जाव धूवं डहइ) त्ति,

આ પાઠ મળે છે ત્યારપછી " वामं जाणु धरणियलसि णिवेसेइ २ " આ જાતનો પાઠ મળે છે અને એ જ પાઠ પ્રતિમા પૂજાના તરફદારીઓને માટે સંમત રૂપ છે. પરંતુ ટીકાકારશ્રી અભયદેવસૂરિએ " दाहिण जाणुं धरणीतलंसी निहट्टु " આ જાતનો પાઠ ટીકામાં કરીને " निहट्टु " આ પદની ટીકા–સ્થાપના કરીને આ પ્રમાણે કરી છે. આ રીતે " णिवेसेइ " ના સ્થાને " निहट्टु " આ જાતનો પાઠ ભેદ કરવામાં આવ્યો છે આ રીતે જ પ્રતિમા પૂજાના તરફદારીઓ વડે સ્વીકૃત (निक्खुत्तो मुद्धाणं धरणीतलंसि नमेइ) આ મૂળપાઠમાં પણ " नमेइ " ક્રિયાપદમાં " निवेशयति " આ જાતનું પરિવર્તન કરી નાખ્યું છે આથી આ વાતની ખાત્રી થાય છે કે જેના મનમાં જેવો પાઠ ગમ્યો હશે તે પ્રમાણે જ ફાવે તેમ પોતાની કલ્પનાથી મૂળ પાઠમાં

तदनन्तरं पुनः प्रतिमापूजकैः स्वीकृते-मूलपाठे-' तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलंसि नमेइ ' इति दृश्यते, 'नमेइ' इत्यत्र टीकाकारः-' निवेसेइ ' इतिलिखित्वा निवेशयतीत्यर्थ उक्तः, तेनात्र-मूलपाठस्य स्वस्वकपोलकल्पितत्वं सिध्यति, द्रौपद्याश्चरिते टीकाकृताऽभयदेवसूरिणा पुनरीदृशः पाठो लब्धः-

'ईसिं पच्चुन्नमति २त्ता, करयल०जाव कट्टु एवं वयासी-नमोत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं जाव संपत्ताणं वंदइ नमसइ२ जिणघराओ पडिनिक्खमइ ' इति इमं पाठं टीकायां विलिख्य टीकाकारः प्राह—

'तत्र वन्दते=चैत्यवन्दनविधिना प्रसिद्धेन,नमस्यति=पश्चात् प्रणिधानादियोगेनेति वृद्धाः। न च द्रौपद्याः प्रणिपातदण्डकमात्रं चैत्यवन्दनमभिहितं सूत्रे इति सूत्र-

में जैसा पाठ रुचा है उसने उसी प्रकार मूल पाठ में निज कल्पना का पाठ प्रक्षिप्त करके पाठ भेद कर दिया है। अतः स्वकपोलकल्पित होने से असली मूल पाठ का निश्चय ही नहीं होता है, द्रौपदी के चरित में टीकाकार अभयदेवसूरि को इस प्रकार का पाठ उपलब्ध हुआ-ईसिं पच्चुन्नमति २, करयल० जाव कट्टु एवं वयासी-नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं जाव संपत्ताणं वंदइ, नमंसइ २, जिणघराओ पडिनिक्खमइ इति " पाठ को लिखकर उन्हों ने टीका की। वन्दते-नमस्यति पद के अर्थ का खुलासा करते हुए वे कहते हैं कि प्रसिद्ध चैत्यवंदन विधि के अनुसार नमन करना वंदना और इसके बाद प्रणिधान आदि के योग से नमस्कार करना नमन है ऐसा सिद्धान्त वृद्धों का है। सूत्र में जब द्रौपदी का प्रणिपात दण्डक मात्र चैत्यवंदन कहा है-अर्थात् दण्ड की तरह प्रणाम करने रूप चैत्यवंदन कहा गया है-तो इसी से यह

કંઈક ઉમેરો કરીને પાઠ ભેદ કરી નાખ્યો છે. એટલા માટે સ્વકપોલકલ્પિત હોવા બદલ અસલ મૂળપાઠનો નિશ્ચય જ થઈ શકે તેમ નથી. દ્રૌપદી ચરિતમાં ટીકાકાર અભયદેવસૂરિને આ જાતનો પાઠ મળ્યો છે કે-(ईसिं पच्चुन्नमत्ति २, करयल० जाव कट्टु एवं वयासी-नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं जाव संपत्ताणं वंदइ, नमसइ २, जिणघराओ पडिनिक्खमइ इति) આ પાઠને લખીને તેમણે ટીકા કરી છે. ' वन्दते ' ' नमस्यति ' પદના અર્થનું સ્પષ્ટીકરણ કરતાં તેઓ કહે છે કે પ્રસિદ્ધ ચૈત્ય વંદન વિધિ મુજબ નમન કરવું વંદના અને ત્યારપછી પ્રણિધાન વગેરેના યોગથી નમસ્કાર કરવો નમન છે, વૃદ્ધોનો આ જાતનો સિદ્ધાન્ત છે સૂત્રમાં જ્યારે પ્રણિપાત દંડક માત્ર ચૈત્યવંદન કહ્યું છે ત્યારે એનાથી જ આ વાત સિદ્ધ થઈ જાય છે કે બીજા શ્રાવકોને પણ આ

प्रामाण्यादन्यस्यापि श्रावकादेस्तावदेव तदिति मन्तव्यं, चरितानुवादरूपत्वादस्य, इति। न चेत्यस्य मन्तव्यमित्यत्रान्वयः। द्रौपदी प्रणिपातदण्डकमात्रं–दण्डवत्प्रणामात्ररूपं चैत्यवन्दनं–प्रतिमावन्दनं कृतवतीत्यर्थं बुद्ध्वाऽन्योपि श्रावक एतत्सूत्रं प्रमाणमाश्रित्य तावदेव तत् प्रणिपातदण्डकमात्रं वन्दनं कुर्यादिति न मन्तव्यम्, तत्र कारणमाह 'चरितानुवादरूपत्वादस्य' इति। अस्य एतत्सूत्रस्य चरितानुवादरूपत्वात् ज्ञातप्रदर्शकतया यथावृत्तस्य तत्तच्चरितस्यानुवादरूपत्वात्, न तु भगवता 'जयं चरे जयं चिट्ठे' इत्यादिवत् कचिदाज्ञा प्रदत्ता।

तस्मादस्य विधिनिषेधबोधकत्वं न संभवतीत्याह–'न च चरितानुवादवच-

धान भी सिद्ध हो जाती है कि अन्य श्रावकों को भी इसी प्रकार वन्दन नमन करना चाहिये–सो इस प्रकार का कथन ठीक नहीं है। कारण कि यह चरितानुवाद रूप है।

भावार्थ–कोई अन्य श्रावक जन ऐसा समझकर कि सूत्रमें जब द्रौपदी ने दण्डकी तरह होकर, चैत्यवंदन किया है तो इसी सूत्रकी प्रमाणता लेकर हमें भी इसी तरहसे प्रणाम करना चाहिये सो इस प्रकार की मान्यता उनकी ठीक नहीं है कारण कि यह चरित का ही अनुवादक है। चरितका अनुवादक वाक्य विधेयरूप से मान्य नहीं होता है। यह सूत्र चरित का अनुवादक रूप है–इसका यह भाव है कि यह वाक्य ज्ञात अर्थ का प्रदर्शक होने से पहिले जो जो बातें २ जिस २ रूपमें हो चुकी हैं उन सब का अनुवादक रूप है। "जयं चरे जयं चिट्ठे" इत्यदि सूत्र की तरह यह विधि वाक्य नहीं है। इसीलिये भगवान ने प्रतिमा के पूजन और वंदना, नमन करने आदि की आज्ञा कहीं भी सूत्र में नहीं दी

પ્રમાણે જ વંદન નમન કરવાં જોઇએ. તો આ જાતનું કથન યોગ્ય નથી, કેમકે આ ચરિતાનુવાદ રૂપ છે.

ભાવાર્થ—ગમે તે શ્રાવક આમ સમજીને કે સૂત્રમાં જ્યારે દ્રૌપદીએ દંડાકારે થઇને ચૈત્ય વંદન કર્યું છે તો આ સૂત્રને જ પ્રમાણ સ્વરૂપ માનીને અમારે પણ આ પ્રમાણે જ પ્રણામ કરવા જોઇએ તો તેમની આ વાત પણ ઠીક કહી શકાય તેમ નથી, કેમકે આ ચરિતનો જ અનુવાદક છે. ચરિતનું અનુવાદક વાક્ય વિધેય રૂપમાં માન્ય હોતું નથી આ સૂત્ર ચરિતનો અનુવાદક રૂપ છે. આનો ભાવ એ છે કે આ વાક્ય જ્ઞાત અર્થનો પ્રદર્શક હોવાથી જે જે વાતો જે રૂપમાં થઇ ચૂકી છે તે બધાનું અનુવાદક રૂપ છે– "જયં ચરે જયં ચિટ્ઠે" ઇત્યાદિ સૂત્રની જેમ આ વિધિવાક્ય નથી એટલા માટે ભગવાને પ્રતિમાના પૂજન અને વંદન, નમન કરવા વગેરેની આજ્ઞા સૂત્રમાં

नानि विधिनिषेधसाधकानि भवन्ति अन्यथा सूर्याभदेवादिवक्तव्यतायां बहूनां शस्त्रादिवस्तूनामर्चनं श्रूयते इति तदपि विधेयं स्यात्'।

अत्रेदं बोध्यम्-' न च द्रौपद्याः प्रणिपातदण्डकमात्रं चैत्यवन्दनमभिहितं सूत्रे' इत्यादि वाक्यसन्दर्भेण टीकाकारेणाभयदेवसूरिणा द्रौपद्या वन्दनमेव कृतं न तु पूजनादिकमिति बोधयता तावानेव पाठः स्वीकृत इति। तस्माद् विधिरूपेण प्रतिमापूजनाय भगवतोऽर्हत आज्ञा न लभ्यते इति वादस्तावदास्ताम्, चरितानुवाद-रूपेणापि शास्त्रे भगवताऽर्हत्प्रतिमापूजनं क्वापि नोक्तमिति सिद्धम्। एवं चायमे-

---

है चरितानुवादरूप वाक्य में विधि और निषेध बोधकता संभवित नहीं होती है इसी ध्येय से " न च चरितानुवादवचनानि विधिनिषेध-साधकानि भवन्ति " ऐसा माना जाता है नहीं तो फिर, सूर्याभदेव द्वारा जिस प्रकार बहुत शस्त्र आदि वस्तुओं का पूजन करना सुना जाता है उसी प्रकार प्रतिमा पूजकों के लिये भी इनका पूजन विधेय मान लेना चाहिये।

भावार्थ—" न च द्रौपद्याः प्रणिपातदण्डकमात्रं चैत्यवंदनमभिहितं सूत्रे " इत्यादि वाक्य के द्वारा टीकाकार अभयसूरि ने इतना ही पाठ स्वीकृत किया है कि द्रौपदी ने सिर्फ वंदना ही की है, प्रतिमापूजन नहीं इसलिये इससे यह बात सिद्ध हो जाती है जब चरितानुवाद रूप से भी शास्त्र में कहीं भी भगवान ने अर्हन्त की प्रतिमा का पूजन नहीं कहा है। तब विधिरूप से प्रतिमा पूजन के लिये भगवान अर्हंत की आज्ञा है ऐसी मान्यता कोरी कल्पनामात्र ही है। इस प्रकार स्थानक-

---

કોઈ પણ સ્થાને કરી નથી ચરિતાનુવાદ રૂપ વાકયમાં વિધિ અને નિષેધ બોધકતા સંભવિત થતી નથી. આ ધ્યેયથી (न च चरितानुवादवचनानि विधि-निषेधसाधकानि भवन्ति) એમ માનવામાં આવે છે નહિતર પછી સૂર્યાભદેવ વડે જેમ ઘણા શસ્ત્રો વગેરે વસ્તુઓની પૂજા કરેલી વાત સંભળાય છે તેમજ પ્રતિમા પૂજકોના માટે પણ એમની પૂજા વિધેય રૂપમા માની લેવી જોઈએ.

ભાવાર્થ—" न च द्रौपद्याः प्रणिपातदण्डकमात्रं चैत्यवंदनमभिहितं सूत्रे " વગેરે વાકય દ્વારા ટીકાકાર અભયદેવસૂરિએ આટલા પાઠનો જ સ્વીકાર કર્યો છે કે દ્રૌપદીએ ફક્ત વંદના જ કરી છે, પ્રતિમા પૂજા નહિ. એથી આ વાત સ્પષ્ટ રીતે સિદ્ધ થઈ જાય છે કે જ્યારે ચરિતાનુવાદ રૂપથી પણ શાસ્ત્રમાં કોઈ પણ સ્થાને ભગવાને અર્હંતની પ્રતિમાના પૂજન વિષે કહ્યુ નથી. ત્યારે વિધિ રૂપથી પ્રતિમા પૂજન માટે ભગવાન અર્હંતની આજ્ઞા છે એવી માન્યતા ફક્ત કલ્પના માત્ર જ છે. આ પ્રમાણે સ્થાનકવાસી સંપ્રદાયની આ માન્યતા

नरूपः स्थानकवासिनां सिद्धान्तः शास्त्रानुकूलः सत्य इति निश्चीयताम् । अर्हद्वन्दनमपि द्रौपद्या न कृतमित्यग्रे सप्रमाणं निरूपयिष्यामः ।

किं च–प्रतिमापूजकानां प्रमाणभूते महानिशीथसूत्रेऽपि 'प्रतिमापूजायाः सावद्यतया तदर्थं जिनालयविधानं सावद्यं भवतीति मत्वा द्रव्यलिङ्गिभिः पृष्टेन कुवलयप्रभनाम्नाऽनगारेण निगदितं सावद्यमिदं नाहं वाङ्मात्रेणापि कुर्वे" इति । तदेवमनेन गणतामता तीर्थकरनामगोत्रं कर्मार्जितम् । एकभवावशेषीकृतश्च भवोदधिः । ततस्तैः सर्वैरेकमतं कृत्वा तस्य सावद्याचार्य इति नाम दत्तं प्रसिद्धिनीतं च । इति प्रतिबोधितम् ।

वाली संप्रदाय की यह मान्यता निर्दोष एवं शास्त्रानुकूल और सत्य है कि अर्हंत की प्रतिमा बनाकर पूजना शास्त्रविहितमार्ग से विपरीत मार्ग है। अर्हंत की प्रतिमा की वन्दना भी द्रौपदी ने नहीं की है इस बात को भी हम आगे प्रमाण देकर पुष्ट करेंगे।

किञ्च—प्रतिमापूजकों द्वारा प्रमाणरूप से स्वीकृत महानिशीथ सूत्र में भी यही समझाया गया है कि प्रतिमापूजन स्वयं एक सावद्यकर्म है, इसके निमित्त जिनालय आदि बनवाना भी सावद्यकर्म हैं। ऐसा समझकर–कुवलयप्रभनामक आचार्य ने द्रव्य लिंगियों द्वारा पूछे जाने पर यही उत्तर दिया है कि ये सब सावद्यकर्म हैं, मैं अपने वचनों से भी इस विषय का जरा भी मंडन नहीं कर सकता हूं" इस प्रकार कहने वाले उन कुवलयप्रभनामक आचार्यने तीर्थंकर नाम गोत्र कर्म उपार्जन करके एकभवावतारी बने। सावद्यकर्म निषेध करने वाले होने से

નિર્દોષ તેમજ શાસ્ત્રાનુકૂલ અને સત્ય છે કે અર્હંતની પ્રતિમા બનાવીને પૂજવી શાસ્ત્રવિહિત માર્ગથી ઉલટો માર્ગ છે અર્હંતની પ્રતિમાની વંદના પણ દ્રૌપદીએ કરી નથી, આ વાતને પણ અમે આગમપ્રમાણસિદ્ધ કરવા પ્રયત્ન કરીશું.

અને બીજું પણ કે–પ્રતિમા પૂજકો વડે પ્રમાણ રૂપે સ્વીકૃત મહાનિશીથ સૂત્રમાં પણ એજ વાત સમજાવવામાં આવી છે કે પ્રતિમા પૂજન જાતે એક સાવદ્ય કર્મ છે તેના નિમિત્તે જિનાલય વગેરે બનાવવા ને પણ સાવદ્ય કર્મ છે. એમ સમજીને જ કુવલયપ્રભ નામના આચાર્યે દ્રવ્યલિંગિઓ વડે પૂછાએલા પ્રશ્નના ઉત્તરમાં આ પ્રમાણે જ કહ્યું છે કે આ બધું સાવદ્યકર્મ છે. હું મારા વચનોથી પણ આ વિષયનું જરાય પણ મંડન કરી શકું તેમ નથી. આ રીતે કહેનાર તે કુવલયપ્રભ નામક આચાર્યે તીર્થંકર નામ ગોત્રકર્મ ઉપાર્જન કરીને એક ભવાવતારી બન્યા. સાવદ્યકર્મ નિષેધ કરનાર હોવાથી તે ચૈત્યવાસીઓએ

भगवान् श्री वर्धमानस्वामी गौतमं प्रति कथयति-'अस्या ऋषभादिचतुर्विंशतिकायाः प्राक् अतीतकालेन याऽतीता चतुर्विंशतिका, तस्यां मत्सदृशः सप्तहस्ततनुर्धर्मश्रीनामा चरमतीर्थङ्करो बभूव, तस्मिंश्च तीर्थङ्करे सप्ताश्चर्याणि अभूवन्। असंयतपूजायां प्रवृत्तायामनेके श्राद्धेभ्यो गृहीतद्रव्येण स्वस्वकारितचैत्यनिवासिनोऽभूवन्, तत्रैको मरकतच्छविः कुवलयप्रभनामाऽनगारो महातपस्वी उग्रविहारी शिष्यगणपरिवृतः समागात्, तैर्वन्दित्वोक्तम्, तदेव तत्रत्यप्रकरणं प्रदर्श्यते, तथा हि--महानिशीथसूत्रे पञ्चमाध्ययने—

जहा णं भयवं! जइ तुममिहाइ एगवासारत्तियं चाउम्मासियं पउंजियंताणमिच्छाए अणेगे चेइयालया भवंति नूणं तज्झाणणत्तीए ता कीरउ अणुग्गहमम्हाणं

उन चैत्यवासियों ने मिलकर उनका नाम 'सावद्याचार्य' रख दिया, और प्रसिद्ध भी कर दिया। जैसे-भगवान् श्री वर्धमानस्वामी गौतम प्रति कहते हैं-इस ऋषभादि चौवीसी के पहले भूतकालमें जो चोवीसी होगई है उस चौवीसीमें मेरे जैसा सात हाथप्रमाण शरीर वाला धर्म श्री नामका अंतिम तीर्थंकर हो गया है, उस तीर्थंकर के समयमें सात आश्चर्य हुए थे, उनमें "असंयतपूजा" नामका एक आश्चर्य था। उस असंयतपूजाकी प्रवृत्ति होनेपर बहुतसे साधु श्रावकों के पैसों से अपने अपने बनवाये हुवे चैत्योंमें निवास करते थे अर्थात् चैत्यवासी हो गये थे. वहां पर एक श्याम कांतिवाले कुवलयप्रभ नाम के मुनि महातपस्वी उग्रविहारी शिष्यपरिवार सहित पधारे थे, उनको उन चैत्यवासियों ने वंदना कर के जो कहा सो इस प्रकार है। जिस पाठ का यह कथानक है वह पाठ इस प्रकार है—

તેમનું નામ "સાવદ્યાચાર્ય" એ પ્રમાણે રાખ્યુ અને પ્રસિદ્ધ પણ કર્યું. જેમકે ભગવાન્ શ્રી વર્ધમાનસ્વામી ગૌતમને કહે છે કે—આ ઋષભાદિ ચૌવીસીના પહેલા ભૂતકાળમાં જે ચોવીસી થઈ ગઇ છે તે ચોવીસીમાં મારા જેવા સાત હાથ પ્રમાણ શરીરવાળા ધર્મશ્રી નામના છેલ્લા તીર્થંકર થઈ ગયા છે તે તીર્થંકરના સમયમાં સાત આશ્ચર્યો થયા હતા, તેમાં "અસંયતપૂજા" નામનું એક આશ્ચર્ય હતું તે અસંયત પૂજાની પ્રવૃત્તિ થઈ ત્યારે અનેક સાધુ-શ્રાવકોના પૈસાથી પોતપોતાના માટે બનાવરાવેલા ચૈત્યોમા વાસ કરતા હતા અર્થાત્ ચૈત્યવાસી થઇ ગયા હતા. ત્યા એક શ્યામ વર્ણવાળા કુવલયપ્રભ નામના મુનિમહારાજ કે જેઓ મહા તપસ્વી, ઉગ્ર વિહારી હતા, તેઓ પોતાના શિષ્ય પરિવાર સહિત ત્યાં પધાર્યા હતા તેમને તે ચૈત્યવાસીઓએ વંદના કરીને જે કહ્યું તે આ પ્રમાણે છે—

इहेव चाउम्मासियं। ताहे भणियं तेण महाणुभागेणं – गोयमा! जहा भो भो पियंवए! जइ वि जिणालए तहा वि सावज्जमिणं णाहं वायामित्तेणं पि आयरिज्जा। एवं च समयसारवरं तत्तं जहट्ठियं अविपरीतं णीसंकं भणमाणेण तेसिं मिच्छदिट्ठिलिंगीणं साहुवेसधारीणं मज्झे गोयमा! आसंकलियं तित्थयरनामकम्मगोयं तेणं कुवलयप्पभेणं, एगभवावसेसीकओ भवोयही॥ इति।

छाया–यथा खलु भगवन्! यदि त्वमिहापि एकवर्षारात्रिकं चातुर्मासिकं प्रयोक्तृणामिच्छया अनेके चैत्यालया भवन्ति नूनं। तद्ध्यानाज्ञप्त्या तस्मात् करोतु अनुग्रहमस्माकम् इहैव चातुर्मासिकम्। तदा भणितं तेन महानुभागेन – गौतम! यथा भो भो प्रियंवदाः! यद्यपि जिनालयः, तथापि सावद्यमिदं नाहं वाङ्मात्रेणापि आचरामि। एवं च समयसारवर तत्त्वं यथास्थितम् अविपरीतं निःशङ्कं भणता तेषां मिथ्यादृष्टिलिङ्गिनां साधुवेषधारिणां मध्ये गौतम! आसंकलितं तीर्थंकरनामकर्मगोत्रं तेन कुवलयप्रभेण एकभवावशेषीकृतो भवोदधिः॥ इति

"जहा णं भयवं? जइ तुममिहाइ एकवासारत्तियं चाउम्मासियं पउंजियंनाणमिच्छाए अणेगे चेइयालया भवंति नूणं तज्झाणत्तीए, ता कीरउ अणुग्गहमम्हाणं इहेव चाउम्मासियं। ताहे भणियं तेण महाणुभागेणं गोयमा! जहा भो भो पियंवए जइवि जिणालए तहा वि सावज्जमिणं णाहं वायामित्तेणं पि आयरिज्जा। एवं च समयसारपर तत्त जहट्ठियं अविपरीतं णीसंकं भणमाणेण तेसिं मिच्छदिट्ठिलिंगीणं साहुवेसधारीणं मज्झे गोयमा। आसंकलियं तित्थयरनामगोत्तं तेण कुवलयप्पभेणं एगभवावसेसीकओ भवोयही। इति (महानिशीथ पञ्चम अध्ययन) इस सूत्रका भावार्थ इस प्रकार है–

हे भगवन्! आप यहां एक वर्षारात्रिक चारमहिनें ठहरें

"जहा णं भयवं! जइ तुममिहाइ एकवासारत्तियं चाउम्मासियं पउंजियंनाण मिच्छाए, अणेगे चेइयालया भवंति नूणं तज्झाणत्तिए ता कीरउ अणुग्गहमम्हाणं इहेव चाउम्मासियं। ताहे भणियं तेण महाणुभागेण गोयमा! जहा भो भो पियंवए जइवि जिणालए तहावि सावज्जमिणं णाहं वायामित्तेणं पि आयरिज्जा। एवं च समयसारवर तत्तं जहट्ठियं अविपरीतं णीसंकं भणमाणेण तेसिं मिच्छदिट्ठिलिंगीणं साहुवेसधारीणं मज्झे गोयमा? आसंकलियं तित्थयरनामगोत्तं तेणं कुवलयप्पभेणं एगभवावसेसीकओ भवोयही। इति (महानिशीथ पञ्चम अध्ययन) આ સૂત્રનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે–હે ભગવન્!

हे भगवन् ! इह यदि यथा खलु त्वम् एकवर्षारात्रिकं चातुर्मासिकं तिष्ठसि प्रयोक्तृणाम्=प्रवर्तकानाम् इच्छया-आज्ञया अनेके चैत्यालया नूनं भवन्ति=भविष्यन्ति, तत् तस्माद् निवासार्थमाज्ञामुपादाय इहैव चातुर्मासिकं कुरु तावदस्माकमनुग्रहं कुरु भवदीयाज्ञया बहवश्चैत्यालया भविष्यन्ति। ततश्चास्माकमुपकारः क्रियतामिति भावः । तदा तेषां सावद्यपूजायां प्रवृत्तानां द्रव्यलिङ्गिनां वचनं श्रुत्वा तेन महानुभावेन कुवलयप्रभनाम्नाऽनगारेण भणितम्=उक्तम् , यथा-भो भो प्रियंवदाः । भो देवानुप्रियाः । यद्यपि जिनालयः, तथापि सावद्यमिदं जिनभवने कुर्वे

-अर्थात् यहीं पर चौमासा व्यतीत करें। प्रवर्तकों की आज्ञा से यहां पर अनेक चैत्यालय बन जायेंगे । इस लिये आप यहीं पर चौमासा व्यतीत करने का अनुग्रह करें। हमारे ऊपर आपका बड़ा ही अनुग्रह होगा । आपके उपदेश से निश्चय समझिये अनेक चैत्यालयों का निर्माण हो जायगा। इस प्रकार से उन द्रव्यलिंगियों से प्रार्थित होने पर महानुभाव कुवलयप्रभ आचार्य ने कहा कि हे देवानुप्रिय । यद्यपि तुम जिनालय के विषय में कहते हो-परन्तु-मैं इस कार्य को करवाने में श्रेय नहीं देखता हूं-कारण कि यह सावद्यकार्य है जिन भवन बनवाना और उसके बनवाने की प्रेरणा करना इन दोनों प्रकार की प्रवृत्तियों में पृथिवीकाय आदि छह प्रकारके जीवों की विराधना होती है इसी प्रकार से पूजन करने में भी षट्काय के जीवनिकायों का आरंभ अवश्यंभावी है। इसलिये अनेक प्रकार के षट्काय के जीवों के विघात का हेतु होने से पूजन के निमित्त भी जिन भवन का बनवाना सावद्यतर कार्य है ऐसे सावद्यतर कार्य का मैं किसी भी प्रकारसे उपदेश नहीं दूंगा। मैं कभी भीऐसा उपदेश नहीं दूंगा कि

તમે અહીં એકવર્ષારાત્રિક-ચાર માસ-રોકાઓ-એટલે કે અહી તમે ચોમાસું પુરૂ કરો. પ્રવર્તકોની આજ્ઞાથી અહીં ઘણા ચૈત્યાલયો બની જશે. એથી તમે અહીં જ ચોમાસુ પુરૂ કરવાની કૃપા કરો, અમારા ઉપર તમારો ભારે અનુગ્રહ થશે તમારા ઉપદેશથી અમને ચોક્કસ ખાત્રી છે કે ઘણા ચૈત્યાલયોનું નિર્માણ થઈ જશે. આ રીતે દ્રવ્ય લિંગિઓની પ્રાર્થના સાંભળીને મહાનુભાવ કુવલયપ્રભ આચાર્યે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! જો કે તમે જીનાલયના વિષે કહો છો, પણ મને આ કામ કરાવવામા શ્રેય લાગતું નથી, કેમકે આ સાવદ્યકર્મ છે જીન-ભવન બનાવવુ અને તેને બનાવવાની પ્રેરણા આપવી આ બને જાતની પ્રવૃત્તિઓમા પૃથ્વિકાય વગેરે છ જાતના જીવોની વિરાધના થાય છે આ રીતે પૂજા કરવામાં પણ ષટ્કાયના જીવનિકાયોનો આરંભ અવશ્યંભાવી છે એટલા માટે ઘણી જાતના ષટ્કાયના જીવોના વિઘાતના માટે હેતુરૂપ હોવા બદલ પૂજાના માટે પણ જીનભવન બનાવવું સાવદ્યતર કાર્ય છે. એવા સાવદ્યતર કાર્ય

कारिते च पृथिवीकायादिषट्जीवनिकायविराधना, तथैव जिनपूजायामपि तस्मात् पूजार्थकृताज्जिनभवनविधानं सावद्यतरं, बहुतरषट्कायजीवोपघातहेतुत्वात् नाहं वाङ्मात्रेणाऽपि उपदेशदानरूपेण वाग्योगमात्रेणापि आचरामि=कुर्वे जिनालयं कर्तुमुपदेशं न करिष्यामीत्यर्थः । एवं च=अनेन प्रकारेण, समयसारपरं शास्त्रसिद्धान्तसारभूतं तत्त्वं त्रिकरणत्रियोगैः प्राणातिपातो वर्जनीय इत्यादिरूपं यथास्थितं यथावस्थितस्वरूपं प्रमाणभूतं, अविपरीतं=विपर्ययज्ञानाविषयं, निश्शङ्कं=संशयवर्जितं वचनं भणता=कथयता, तेषां मिथ्यादृष्टिलिङ्गिनां मिथ्यादृष्टयः कुतीर्थिकास्तद्वज्जीवोपघातकारिणांसाधुवेषधारिणां=मध्ये हे गौतम ! आसंकलितम्=सम्यक् संगृहीतम् उपार्जितमित्यर्थः । किमुपार्जितमित्याह—तीर्थंकरनामगोत्रं तेन कुवलयप्रभेण, एकभवावशेषी कृतो भवोदधिः । सुगममेतत् ।

जिस में जिनालय बनवाने का विधान हो। इस प्रकार प्रवचन सिद्धान्त की सारभूत वस्तुस्थिति को यथार्थ रूप से बिना किसी संकोच के प्रकट करने वाले उन मुनिराज ने उन साधुवेष धारी द्रव्यलिंगियों के बीच कि जो मिथ्यादृष्टियों की तरह जीवों की हिंसा करने में प्रवृत्त थे उनके सामने इस प्रकार शुद्ध प्ररूपणा करनेसे हे गौतम ! तीर्थंकर नाम गोत्र कर्म का बंध किया—और संसार भी उनका एक भव मात्र बाकी रह गया इस उद्धरण से यही समझना चाहिये—कि जब प्रतिमा पूजन के लिये भी मंदिर बनवाना सावद्य कर्म है और इस सावद्यकार्य का उपदेश देना भी साधु के लिये वर्जनीय है—इसी अभिप्राय से कुवलयप्रभ सूरि ने इस कार्य का निषेध किया—इस निषेध से उन्हें तीर्थंकर नाम-गोत्र कर्म का बंध हुआ और संसार भी उनका एकभव मात्र बाकी बचा—तो फिर सर्व प्रकार से सावद्य कर्मों का परित्याग

માટે હું કોઈ પણ રીતે ઉપદેશ આપવા તૈયાર નથી, હું આ જાતનો ઉપદેશ કોઈપણ વખતે આપવા તૈયાર નથી કે જેમાં જીનાલય બનાવવાનું વિધાન સંભવિત હોય. આ રીતે પ્રવચન સિદ્ધાંતની સારભૂત વસ્તુસ્થિતિને સાચા રૂપમાં વગર કોઈ પણ જાતના સંકોચે–પ્રગટ કરનાર તે મુનિરાજે તે સાધુ વેષધારી દ્રવ્ય લિંગિઓની આગળ કે જેઓ મિથ્યાદૃષ્ટિવાળાઓની જેમ જીવોની હિંસા કરવામાં પ્રવૃત્ત હતા—શુદ્ધ પ્રરૂપણા કરી. આ રીતે શુદ્ધ પ્રરૂપણા કરવાથી હે ગૌતમ ! તીર્થંકર નામ–ગોત્રકર્મનો બંધ કર્યો અને સંસાર પણ એક ભવ જેટલો જ શેષ રહ્યો આ ઉદાહરણથી આપણે એજ વાત સમજવી જોઈએ કે જ્યારે પ્રતિમા પૂજન માટે પણ મંદિર બનાવવું સાવદ્યકર્મ છે અને આ સાવદ્યકર્મનો ઉપદેશ કરવો પણ સાધુના માટે ત્યાજ્ય છે આ હેતુથી જ કુવલયપ્રભસૂરિએ આ કાર્યનો નિષેધ કર્યો છે. આ નિષેધથી તેમને તીર્થંકર

अत्रेदं बोध्यम्—यत्र प्रतिमापूजार्थं क्रियमाणस्य जिनालयस्य वाचोपदेशकरणं सावद्यमिति जानता तत्परिवर्जने कृते तीर्थंकर नामगोत्रं कर्म समुपार्जितं, तत्र सर्वथा सावद्यमार्गं परिवर्जयतां सर्वप्राणिरक्षणार्थमहिंसाधर्मं सर्वतः प्रचारयतां प्रवचन—सिद्धान्तसारं विजानतां संयममार्गे प्रवृत्तिमतां सम्यक्त्वशुद्धिमतां प्रतिमापूजामकुर्वतां तन्निषेधयतां किं नामात्मनः कल्याणकरं कार्यमवशिष्टम्, इति।

अथ विवाहसमये द्रौपदी सम्यक्त्ववती नासीदिति वर्ण्यते—जैनागमानां विद्वांसः=सम्यगिदं वदन्ति—सनिदानस्य जीवस्य निदानफलप्राप्तिर्यावन्न भवति, तावदसौ सम्यक्त्ववञ्चितो जैनधर्माद् दूर एवावतिष्ठते।

करने वाले, समस्त प्राणियों की रक्षा के निमित्त अहिंसाधर्म का प्रचार करने वाले, प्रवचन सिद्धान्त के सार को जानने वाले, संयममार्ग में प्रवृत्ति वाले, सम्यक्त्व की शुद्धि से विशिष्ट और प्रतिमा की पूजा नहीं करने वाले एवं उसका निषेध करने वाले ऐसे संयमियों का अब और कौनसा ऐसा कार्य बाकी रहा है जो उनकी आत्मा के लिये कल्याण का साधन न हो।

अब यहां इस बात का वर्णन किया जाता है कि विवाह के समय द्रौपदी सम्यक्त्ववाली नहीं थी।

जैन आगमों का भलीभाँति परिशीलन करने वाले विद्वान् इस बातको अच्छी तरह जानते हैं कि जिस जीव ने जो निदान किया है—जबतक उसके फल की प्राप्ति उस जीव को नहीं हो जाती—तबतक वह जीव सम्यक्त्व से वंचित रहकर जिनधर्म से दूर ही रहता है।

નામ-ગોત્ર કર્મનો બંધ થયો અને સંસાર પણ તેમને માટે એકભવ જેટલો જ શેષ રહ્યો હતો. તો પછી સર્વ રીતે સાવદ્યકર્મોનો પરિત્યાગ કરનારા બધા પ્રાણીઓની રક્ષાના નિમિત્તે અહિંસા ધર્મનો પ્રચાર કરનારા પ્રવચન સિદ્ધાંતના સારને જાણનારા, સંયમ માર્ગમા પ્રવૃત્તિ કરનારા, સમ્યકત્વની શુદ્ધિથી વિશિષ્ટ અને પ્રતિમા પૂજા નહિ કરનારા અને તેને નિષેધ કરનારા એવા સંયમીઓનુ એવુ કયુ કામ શેષ રહ્યું છે કે જે તેમના આત્માના કલ્યાણનું સાધનરૂપ ન હોય ?

હવે અહીં આ વાતનું વર્ણન કરવામાં આવે છે કે લગ્નના વખતે દ્રૌપદી સમ્યકત્વવાળી ન હતી

જૈન આગમોનું સારી રીતે પરિશીલન કરનારા વિદ્વાનો આ વાતને સારી પેઠે જાણે છે કે જે જીવે જે નિદાન કર્યું છે-જ્યાં સુધી તેના ફળની પ્રાપ્તિ તે જીવને થઇ જતી નથી ત્યાં સુધી તે જીવ સમ્યકત્વથી વંચિત રહીને જીન-ધર્મથી દૂર રહે છે.

"पुव्वकयनियाणेणं चोइज्जमाणी२ जेणेव पंच पडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ते पंच पंडवे तेणं दसद्धवण्णेणं कुसुमदामेणं आवेढियपरिवेढियं करेइ, करित्ता, एवं वयासी-एए णं मए पंच पंडवा वरिया।" इति सूत्रपाठ प्रामाण्याद् विवाहसमये पूर्वकृतनिदानाधीनतया सम्यक्त्वरहितयं द्रौपद्या आसीत् अनन्तस्यास्तदानीं श्राविकात्वं न सिध्यति युगपत् पञ्चानां पतीनां वरणेन तस्याः पूर्वसंस्कारोदयवशाद् विपुलसुखभोगलालसाऽपि स्वाभाविकी, अतः सा कौमारे वयसि श्राविका नासीदिति युक्तिसिद्धस्यार्थस्यापलापः केन शक्यते कर्तुम्।

द्रौपदी कस्य पूजनं कृतवतीति जिज्ञासायां निर्णीयते—

"पुव्वकयनियाणेणं चोइज्जमाणी २ जेणेव पंच पंडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ते पंच पंडवे तेणं दसद्धवण्णेणं कुसुमदामेणं आवेढिय परिवेढियं करेइ। करित्ता एवं वयासी-एएणं मए पंच पंडवा वरिया" इस प्रकार के इस प्रमाणिक सूत्र पाठ से यह स्पष्टरीति से विदित हो जाता है कि विवाह के समय पूर्वकृत निदान के अधीन होने से द्रौपदी सम्यक्त्व रहित थी इसी लिये उस समय उस में श्राविकापना भी सिद्ध नहीं होता है। तथा एक ही साथ पांच पांडवों को पतिरूप से वरण करने से उसके पूर्व संस्कार के उदय से विपुल सुख भोगने की लालसा भी स्वभाविकी ज्ञात होती है इसलिये वह कुमार अवस्था में श्राविका नहीं थी इस युक्ति सिद्ध अर्थ का अपलाप कौन कर सकता है!

द्रौपदी ने किस की पूजा की इस प्रकार की जिज्ञासा होने पर

"पुव्वकयनियाणेणं चोइज्जमाणी २ जेणेव पंच पंडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, ते पंच पंडवे तेणं दसद्धवण्णेणं कुसुमदामेणं आवेढियपरिवेढियं करेइ। करित्ता एवं वयासी-एएणं मए पंच पंडवा वरिया"

આ સૂત્રના આ પ્રામાણિક સૂત્રપાઠથી આ સ્પષ્ટ રૂપમાં માલુમ થઈ જાય છે કે લગ્નના વખતે પૂર્વકૃત નિદાનને સ્વાધીન હોવાને કારણે દ્રૌપદી સમ્યક્ત્વ રહિત હતી એટલા માટે તે સમયે તેમાં શ્રાવિકાપણું સિદ્ધ થઈ શકે તેમ નથી તેમજ એકી સાથે પાંચે પાંડવોને પતિરૂપમાં વરણ કરવાથી તેના પૂર્વ સંસ્કારોના ઉદયથી વિપુલ સુખ ભોગવવાની ઇચ્છા પણ સ્વાભાવિકી પ્રકટ થાય છે એથી તે કુમાર અવસ્થામાં શ્રાવિકા હતી નહિ. આ યુક્તિ અર્થનો પરિહાર કોણ કરી શકે તેમ છે

દ્રૌપદીએ કોની પૂજા કરી? આ જાતની જિજ્ઞાસાને સામે રાખીને ટીકા-

अखण्डसौभाग्यप्रचुरभोगकामनया कामदेवस्यैव पूजनं तदानीमुपपद्यते। कामपूजनं विवाहोत्सवे विस्तरतो भवतीति लोके प्रसिद्धमस्तीति प्रतिमापूजकोऽपि श्री वर्धमानसूरिः प्रोक्तवान्। स्पष्टं चैतत् तद्विरचिते आचारदिनकरे द्वितीय-विभागे--" परसमये गणपतिकन्दर्पस्थापनम्। गणपतिकन्दर्पस्थापनं सुगमं लोकप्रसिद्धम्। " इति।

टीकाकार निर्णय करते हैं-

अखंड सौभाग्य एवं प्रचुर भोग की इच्छा से कामदेव का ही पूजन उस समय द्रौपदी ने किया है-यही बात संगत बैठती है। लोक में भी यही व्यवहार देखा जाता है कि विवाह के समय अच्छी तरह गाजे बाजे के साथ काम देवका पूजन लोग किया करते हैं। इस बात को वर्धमान सूरि भी जो प्रतिमापूजन के पक्षपाती हैं स्वीकार करते हैं और ऐसा ही कहते हैं। इसी बात का स्पष्टीकरण उन्होंने स्वनिर्मित आचारदिनकर के द्वितीय विभाग में किया है-वे लिखते हैं कि-—" परसमये गणपतिकंदर्पस्थापनम्। गणपतिकंदर्पस्थापनं सुगमं लोकप्रसिद्धम् " इति।

लौकिक शास्त्रमें गणपति एवं कंदर्प (कामदेव) की स्थापना होती है अतः गणपति और कन्दर्पका स्थापन करना सुगम और लोकप्रसिद्ध है।

કાર નિર્ણય કરતાં કહે છે કે—

અખંડ સૌભાગ્ય તેમજ પ્રચુર ભોગની ઇચ્છાથી જ તે સમયે દ્રૌપદીએ કામદેવનું જ પૂજન કર્યું છે, આ વાત જ યોગ્ય લાગે છે લોકમાં પણ આ જાતનો જ વહેવાર જોવામાં આવે છે કે લગ્નના વખતે વાજાંઓની સાથે સારી રીતે કામદેવનું પૂજન લોકો કરતા રહે છે આ વાતને વર્ધમાનસૂરિ પણ કે જેઓ પ્રતિમા પૂજનના તરફદાર છે-સ્વીકાર કરે છે અને આ પ્રમાણે જ કહે છે. આ વાતનું સ્પષ્ટીકરણ તેમણે સ્વનિર્મિત આચાર દિનકરના બીજા વિભાગમાં કર્યું છે. તેઓ લખે છે કે—

" परसमये गणपतिकंदर्पस्थापनम्। गणपतिकंदर्पस्थापनं सुगम लोक प्रसिद्धम् " इति।

લૌકિક શાસ્ત્રમાં ગણપતિ અને કંદર્પ (કામદેવ) ની સ્થાપના થાય છે. તેથી ગણપતિ કંદર્પની સ્થાપના કરવી તેજ સુગમ અને લોકપ્રસિદ્ધ છે.

"जिणपडिमाणं अच्चणं करेइ" अत्र जिनशब्दः कामदेवपरः। जिनशब्दस्य बहवोऽर्थाः कोशादौ प्रसिद्धाः सन्ति। यथा—

अर्हन्नपि जिनश्चैव, जिनः सामान्यकेवली।
कन्दर्पोऽपि जिनश्चैव, जिनो नारायणो हरिः॥ इति (हैमी नाममाला)

विजयगच्छीयः श्रीगुणसागरसूरिरपि ढालसागरनामके काव्ये षष्ठखण्डे द्रौपद्याः पूज्यदेवं निर्णीतवान्। उक्तं च तेन—

करि पूजा कामदेवनी भांखे द्रुपदी नार।
देव दया करी मुझने भलो देजो भरतार॥ १॥

अर्हन् सकलकर्म कषायमोहपरीषहान् जयतीति जिन उच्यते। सामान्य

"जिनपडिमाणं अच्चणं करेइ" इस सूत्र में जिन शब्द जिनेन्द्र भगवान का वाचक नहीं है, किन्तु कामदेव का वाचक है क्यों कि जिन शब्द के अनेक अर्थ कोषादिक ग्रन्थों में प्रसिद्ध हैं-यथा—

अर्हन्नपि जिनश्चैव जिन· सामान्यकेवली।
कंदर्पोऽपि जिनश्चैव जिनो नारायणो हरिः॥

इति (हैमीय नाममाला

विजय गच्छीय श्री गुणसागर सूरि ने भी "ढालसागर" नाम के काव्य में छठवें खंड में द्रौपदी के आराध्य देव का निर्णय किया है। उन्होंने लिखा है—

करि पूजा कामदेव नी भांखे द्रुपदी नार।
देव! दया करी मुझने भलो देजो भरतार॥१॥

इस सूत्र में अर्हन्त भगवान को 'जिन' इसलिये कहा गया है

"जिनपडिमाणं अच्चणं करेइ"

આ સૂત્રમાં જીન શબ્દ જીનેન્દ્ર ભગવાનનો વાચક નથી પણ કામદેવનો વાચક છે કેમકે જીન શબ્દોના ઘણા અર્થો કોષ વગેરે ગ્રન્થોમાં પ્રસિદ્ધ છે જેમકે—

अर्हन्नपि जिनश्चैव जिन सामान्यकेवली।
कंदर्पोऽपि जिनश्चैव जिनो नारायणो हरी:॥ इति (हैमीय नाममाला)

વિજયગચ્છીય શ્રી ગુણસાગરસૂરિએ પણ 'ઢાલસાગર" નામના કાવ્યના છઠ્ઠા ખંડમાં દ્રૌપદીના આરાધ્યદેવનો નિર્ણય કરતા તેમણે કહ્યુ છે કે—

करि पूजा कामदेवनी भाखे द्रुपदिनार।
देव! दया करी मुझने भलो देजो भरतार॥ १॥

આ સૂત્રમાં અર્હંત ભગવાનને 'જીન' એટલા માટે કહ્યા છે કે તેમણે

केवली घनघातककर्मचतुष्टयं जयतीति जिन उच्यते । विष्णुः स्वभुजबलेन खण्डत्रयं जयतीति जिन उच्यते । जिनशब्दस्य कामदेवोऽर्थश्चापि सगतः, यतः संसारिणां कामदेववशवर्तित्वेन लोकजयकारित्वाज्जिनत्वं कामस्योपपद्यते । रूपरहितस्यापि सिद्धस्य प्रतिमां पूज्यत्वेन शास्त्रानुक्तामपि प्रतिमापूजकाः प्रकल्पयन्ति, तद्वदनङ्गस्यापि कामस्य लौकिकशास्त्रप्रसिद्ध तद्ध्यानमनुसृत्य प्रतिमा प्रकल्प्यत इति

कि उन्हों ने समस्त कषाय, कर्म, मोह और परीषहों को जीता है। सामान्य केवली 'जिन' इसलिये कहे गये हैं कि उन्हों ने चार घनघातिया कर्मों को अपनी आत्मा से समूल नष्ट कर दिया है। विष्णु 'जिन' इसलिये कहलाये कि उन्हों ने अपने भुजबल से भरतखंड के छह खंडों में से तीन खंडों को अपने वश किया है इसी लिये ये अर्द्धचक्री भी कहलाते हैं। कामदेव को 'जिन' इस लिये कहा गया है कि इसके वश समस्त त्रिलोक है त्रिलोक में कोई भी प्राणी ऐसा नहीं बचा कि जिसे इस ने अपने वश में न किया हो।

शंका—द्रौपदी ने कामदेव की मूर्त्ति की पूजा की-आप की यह बात उस समय मानी जा सकती-जब कि कामदेव की मूर्ति बन सकती होती ? परन्तु कामदेव की मूर्ति तो बन नहीं सकती क्यों कि वह तो अमूर्तिक-अशरीर-अनङ्ग है। अंगवाले की ही मूर्ति बनती है-अनंग की नहीं।

બધા કષાય કર્મ, મોહ અને પરિષહોને જીત્યા છે સામાન્ય કેવલી "જીન" એટલા માટે કહેવામાં આવ્યા છે કે તેમણે ચાર ઘનપતિઓના કર્મોને પોતાના આત્માથી સમૂળ નષ્ટ કરી નાખ્યા છે વિષ્ણુ 'જીન' એટલા માટે કહેવાય છે કે તેમણે પોતાના ભુજ બળથી ભરતખંડના છ ખંડોમાંથી ત્રણ ખંડોને પોતાને વશ કર્યા છે એથી તેઓ અર્દ્ધચકી પણ કહેવાય છે. કામદેવને 'જીન' એટલા માટે કહેવામાં આવ્યો છે કે તેના વશમાં ત્રણે લોકો છે ત્રણે લોકોમાં એવું કોઇ પ્રાણી રહ્યું નથી કે જેને કામદેવે પોતાના વશમાં કર્યું ન હોય.

શંકા—દ્રૌપદીએ કામદેવની મૂર્તિની પૂજા કરી તે તમારી આ વાત ત્યારેજ યોગ્ય કહી શકાય કે જ્યારે કામદેવની મૂર્તિ બની શકતી હોય ? પણ કામદેવની મૂર્તિ તો તૈયાર થઈ શકે તેમ નથી કેમકે તે તો અમૂર્તિક–અશરીર અનંગ છે. અંગવાળાની જ મૂર્તિ બને છે, અનંગની નહિ

नाऽस्त्यत्र संशयः। लक्ष्मीगौर्यादिदेव्या अपि स्वाभीष्टपतिप्राप्तिकामनया पूजनं लोके प्रसिद्धमस्ति। लौकिकमन्त्रशास्त्रे मन्त्ररत्नमञ्जूषायां कामदेवाराधनस्याभीष्टपतिलाभहेतुत्वं निगदितम्—

" कन्यामिष्टामवाप्नोति, सापीष्ट पतिमाप्नुयात् ॥ " इति ।

अधुनाऽपि परिणयनसमये कुलदेवपूजनं लोके क्रियमाणं दृश्यते। कामदेवोऽपि

उत्तर—यह कहना ठीक नहीं है. क्यों कि मूर्ति पूजक जन अनङ्ग-सिद्धों की भी तो मूर्ति बनाकर उसकी पूजा किया करते हैं। यद्यपि सिद्धों की मूर्ति बनाने की आज्ञा शास्त्रों में नहीं कही गई है-तौ भी मूर्तिपूजक जन अपनी कल्पना से उनकी भी मूर्ति बनाकर पूजा करते ही हैं—

उसी प्रकार लौकिकशास्त्र प्रसिद्ध अनङ्ग कामदेव की भी लोग अपनी कल्पनानुसार मूर्ति बनाकर पूजते हैं। इस में आपत्ति की कौनसी बात है।

लक्ष्मी, गौरी आदि देवियों की भी पूजा लोक में अपने को अभिलषित पति प्राप्ति की कामना से स्त्रियों द्वारा की ही जाती है। लौकिक मन्त्र शास्त्र में मंत्ररत्नमंजूषा में कामदेव का आराधन-" कन्यामिष्टामवाप्नोति सापीष्टं पतिमाप्नुयात्' इस श्लोकार्धद्वारा इच्छित पति प्राप्ति का कारण कहा गया है।

वर्तमान समय में भी देखो! विवाह के समय में लोक में कुल देवता का पूजन किया ही जाता है यह कुल देवता का पूजन ही एक

ઉત્તર—આ વાત યોગ્ય નથી, કેમકે મૂર્તિ પૂજા કરનારા લોકો અનંગ સિદ્ધોની મૂર્તિ બનાવીને તેની પૂજા કરતા રહે છે જો કે શાસ્ત્રોમાં સિદ્ધોની મૂર્તિ બનાવવાની આજ્ઞા કરવામાં આવી નથી છતાંય મૂર્તિ પૂજક લોકો પોતાની કલ્પનાથી તેમની પણ મૂર્તિ બનાવીને પૂજા કરે જ છે. તેમજ લૌકિક શાસ્ત્ર પ્રસિદ્ધ અનંગ કામદેવની પણ લોકો પોતાની કલ્પના મુજબ મૂર્તિ બનાવીને તેને પૂજે છે. આમાં વાંધા જેવી કોઈ વાત નથી

લક્ષ્મી, ગૌરી વગેરે દેવીઓની પૂજા લોકમાં પોતાની ઇચ્છા મુજબ પતિ મેળવવાની કામનાથી સ્ત્રીઓ વડે કરવામાં આવે જ છે લૌકિક મંત્ર શાસ્ત્રમાં મંત્ર રત્ન મંજૂષામાં કામદેવનું આરાધન " कन्यामिष्टामवाप्नोति सापीष्ट पति माप्नुयात ' આ શ્લોકાર્ધ વડે ઇચ્છિત પતિપ્રાપ્તિનું કારણ બતાવવામાં આવ્યું છે.

વર્તમાન સમયમાં પણ આપણે જોઈએ તો લગ્નના સમયે લોકમાં કુળ દેવતાનું પૂજન કરવામાં આવે જ છે આ કુળદેવતાનું પૂજન જ એક રીતે

रागवतां गृहस्थानां कुलदेवत्वेन व्यवह्रियमाण आसीत्। द्रौपद्याऽपि स्वकुलदेवः पूजित इति युक्तमुत्पश्यामः।

अत्र—"नमोऽत्थु णं अरिहंताणं" इति पाठस्तु प्रवचनविरुद्ध एव वर्तते, लौकिककुलदेवप्रतिमाऽर्चनप्रकरणे लोकोत्तरस्य भगवतोऽर्हतः प्रसङ्गाभावात्। पूर्वभवकृतनिदानवत्याः कामभोगानुरक्तया द्रौपद्याः कामदेवार्चनसमये कामभोगविरतस्य वीतरागमार्गोपदेशकस्य वीतरागस्य भगवतोऽर्हतो वन्दनं नैव शास्त्रानुकूलम्। अत्र परिणयावसरे कुलदेवपूजनप्रसङ्गे भगवतोऽर्हतः प्रसङ्गएव नास्ति,

---

तरह से कामदेव का पूजन अनुसरण है। एक समय था कि जब कामदेव ही, रागशाली गृहस्थ जनों के लिये कुल देवता के रूप से वैवाहिक व्यवहार में मान्य होता था। द्रौपदीने भी उस समय जो कुल देवता का पूजन किया–वह कामदेव का ही पूजन किया यही युक्ति संगत बैठती है। इस पूजन के प्रकरण में जो "नमोत्थुणं अरिहंताणं" यह पाठ आता है वह प्रवचन विरुद्ध ही है क्यों कि लौकिक कुलदेवता की प्रतिमा के अर्चन–प्रकरण में लोकोत्तर अर्हंत भगवान के प्रकरण का संबंध ही क्या है। उस समय जब कि वह पूर्व भव में किये गये निदान से युक्त थी–और कामभोग में अनुरक्त हृदयवाली थी उस के लिये कामदेवका अर्चन(पूजन) करनेका समय ही स्पष्टरूपसे ज्ञात होता है कामभोगों से विरत वीतराग मार्ग के उपदेशक वीतरागप्रभु अर्हंत भगवान की पूजन वंदना का नहीं। यही सिद्धान्त शास्त्रनुकूल है–अन्य नहीं। अरे कहीं

કામદેવના પૂજનનું અનુસરણ છે એક વખત એવો હતો કે જ્યારે કામદેવજ, રાગશાળી ગૃહસ્થ લોકોને માટે કુળ દેવતાના રૂપમાં લગ્ન–સંબંધી વ્યવહારમાં માન્ય ગણાતો હતો. દ્રૌપદીએ પણ તે સમયે જે કુળ દેવતાનું પૂજન કર્યું તે કામદેવનું જ પૂજન કર્યું હતું એ જ વાત બરોબર લાગે છે. આ પૂજનના પ્રકરણમાં જે "नमोत्थुणं अरिहंताणं" આ પાઠ આવે છે તે પ્રવચન વિરૂદ્ધ જ છે કેમકે લૌકિક કુળદેવતાની પ્રતિમાના અર્ચન–પ્રકરણમાં લોકોત્તર અર્હંત ભગવાનના પ્રકારણનો સંબંધ જ શી રીતે યોગ્ય કહી શકાય. તે વખતે કે જ્યારે તે પૂર્વ ભવમાં કરેલા નિદાનથી યુક્ત હતી અને કામભોગમાં અનુરક્ત હૃદયવાળી હતી એવી સ્થિતિમાં તો તેના માટે કામદેવની અર્ચના કરવાનો વખત જ સ્પષ્ટ રૂપે જણાઇ આવે છે. કામભોગોથી વિરત વીતરાગ માર્ગના ઉપદેશક વીતરાગ પ્રભુ અર્હંત ભગવાનની પૂજા વંદના માટે તે વખત યોગ્ય કહી શકાય નહિ આ સિધ્ધાંત જ શાસ્ત્રાનુકૂળ છે બીજો નહિ. ગ્રુદ્ધમાં

द्रौपद्याः पूर्वभवकृतनिदानफलप्राप्त्यभावेन सम्यक्त्वरहितत्वात्। यस्य पूजनं तस्यैव वन्दनं तु न्यायोपपन्नं भवति, अत्र पूजनं कुलदेवतायाः, वन्दनं तु वीतरागस्यार्हत इति लोकन्यायविरुद्धम्। तस्माद् द्रौपद्या वीतरागस्यार्हतो वन्दनमपि तदानीं न कृतमिति सर्वप्रमाणसिद्धम्।

अत्राभयदेवसूरिणा स्वकृतवृत्तौ यदुक्तम् एकस्यां वाचनायामेतावदेव दृश्यते "जिणपडिमाणं अच्चणं करेइ" इति।

वीररसके सिवाय युद्धमें जानेवाले वीरके लिये मल्हारराग भी आनंददायी हो सकता है ?। कभी नहीं परिणय-विवाहके अवसर में कुलदेवता की ही पूजा करने का प्रसंग होता है-न कि भगवान अर्हंत की। अतः इस प्रकार का प्रसंग मानना एक मनगढंत कल्पना मात्र ही है! क्यों कि इस समय द्रौपदी पूर्वभव में किये हुए निदान की फल प्राप्ति के अभाव से सम्यक्त्व रहित थी, फिर उसे उस समय कामदेव की ही इच्छित फल प्राप्ति के लिये पूजा की सूझेगी, या उसके अभाव को करने वाले जिन भगवान की पूजा की। यह स्वयं विचारने जैसी बात है जिस का पूजन किया जाता है उसी की वंदना की जाती है-पूजन तो हो कुलदेवतारूप कामदेव का और वंदना की जाय वीतराग प्रभु श्री अरिहंत देव की। इस प्रकार की मान्यता तो लौकिकरीति से भी विरुद्ध पडती है। इसलिये सर्व प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि द्रौपदी ने जिनप्रतिमा का पूजन नहीं किया।

જનાર લડવૈયા માટે વીર રસ સિવાયનો મલ્હાર રાગ પણ શું આનંદ પમાડનાર થઈ શકે છે? નહીંજ લગ્નના સમયે તો ભગવાન અર્હંતની પૂજા કરતાં તો કુળદેવતાની પૂજા કરવાનો પ્રસંગજ યોગ્ય લેખાય છે. એટલા માટે આ જાતના પ્રસંગની વાત માનવી એ મનમાની કલ્પના માત્રજ છે. કેમકે આ સમયે દ્રૌપદી પૂર્વભવમા કરેલા નિદાનની ફળ પ્રાપ્તિના અભાવને લીધે સમ્યકત્વથી રહિત હતી અને એવી સ્થિતિમાં ઇચ્છિત ફળ પ્રાપ્તિ માટે તેને કામદેવની પૂજા કરવાની ઇચ્છા થાય કે તેનાથી વિરુદ્ધ ફળ આપનાર જીન ભગવાનની પૂજાની? આ જાતે વિચાર કરવા યોગ્ય વાત છે. જેની પૂજા કરવામાં આવે છે. તેને જ વંદના કરવામાં આવે છે. પૂજા તો કુળ દેવતારૂપ કામદેવની થાય અને વંદના વીતરાગ પ્રભુ શ્રી અરિહંત દેવની કરવામાં આવે. આ જાતની માન્યતા તો લૌકિક રીતિથી પણ વિરુદ્ધ છે. આ પ્રમાણે બધી રીતે વિચારતાં આ સિદ્ધ થાય છે કે દ્રૌપદીએ જીન પ્રતિમાનું પૂજન કર્યું નથી.

वाचनान्तरे तु 'ण्हाया' इत्यादि, तथा-द्रौपद्याः प्रणिपातदण्डकमात्रं चैत्यवन्दनमभिहितं सूत्रे इति, तदप्यत्र पाठे सिद्धान्तविरुद्धपाठप्रक्षेपसंभावनां प्रद्योतयति। अत्र यद्वाच्यं तत्प्रागेव निगदितम्।

मूलम्—तएणं तं दोवइरायवरकन्नं अंतेउरियाओ सव्वालंकारविभूसियं करेंति किं ते? वरपायपत्तणेउरा जाव चेडियाचक्कवालमयहरगविंदपरिक्खित्ता अंतेउराओ पडिणिक्खमइ-पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता किड्डावियाए लेहियाए सद्धिं चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ, तएणं से धट्ठज्जुणे कुमारे दोवईए कण्णाए सारत्थं करेइ, तएणं सा दोवई रायवरकण्णा कंपिल्लपुरं नयरं मज्झं मज्झेणं जेणेव सयवरमंडवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता रहं ठवेइ रहाओ पच्चोरुहइ पच्चोरु-

---

अभयदेव सूरि ने स्वरचित वृत्ति में जो यह कहा है कि एक वाचना में "जिनपडिमाणं अच्चणं करेइ" दूसरी अन्य वाचना में "ण्हाया इत्यादि-तथा द्रौपद्याः प्रणिपात दण्डकमात्र चैत्यवंदनमभिहितं सूत्रे इति" सो यह उनका कथन इस बात की संभावना को प्रकट करता है कि इस पाठ में सिद्धान्त से विरुद्ध पाठ का प्रक्षेप हुआ है। इस विषय में जो कुछ हमें समाधान करना था वह हमने पहिले ही कर दिया है।

॥ द्रौपदी पूजाचर्चा समाप्त ॥

અભયદેવસૂરિએ સ્વરચિત વૃત્તિમાં જે એ કહ્યું છે. કે એક વાચનામાં "जिनपडिमाणं अच्चणं करेइ" બીજી વાચનામાં "ण्हाया इत्यादि-तथा द्रौपद्याः प्रणिपातदण्डकमात्र चैत्यवंदनमभिहित सूत्रे इति।" તે તેમનું આ કથન આ વાતને પ્રકટ કરે છે કે આ પાઠમાં સિધ્ધાન્તથી વિરૂધ્ધ એવા પાઠનો પ્રક્ષેપ થયો છે. આ વિષે જે કંઈ યોગ્ય સ્પષ્ટીકરણ કરવાનું હતું તે અમે પહેલાં કરી દીધું છે.

દ્રૌપદી પૂજા ચર્ચા સમાપ્ત.

हित्ता किड्डाविियाए लोहियाए य सद्धिं सयंवरमंडपं अणुप-
विसइ अणुपविसित्ता करयल तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं
रायवरसहस्साणं पणामं करेइ, तएणं सा दोवई रायवर० एगं
महं सिरिदामगंडं किं ते ? पाडलमल्लियचंपय जाव सत्तच्छया-
ईहिं गंधद्धाणिं मुयंतं परमसुहफासं दरिसणिज्जं गिण्हइ, तएणं
सा किड्डाविया जाव सुरूवा जाव वामहत्थेणं चिल्लगं दप्पणं
गहेऊण सललियं दप्पणसंकंतबिंबसंदंसिए य से दाहिणेणं
हत्थेणं दरिसए पवररायसीहे फुडविसयविसुद्धरिभियगंभीर महु-
रभणिया सा तेसि सव्वेसिं पत्थिवाणं अम्मापिऊणं वंससत्तसा-
मत्थगोत्तविक्कंतिकंति बहुविह आगममाहप्परूव जोव्वणगुण-
लावण्णकुलसील जाणिया कित्तणं करेइ, पढमं ताव वण्हिपुंगवाणं
दसदसारवीरपुरिसाणं तेलोक्कबलवगाणं सत्तुसयसहस्समाणा-
वमद्दगाणं भवसिद्धिपवरपुंडरीयाणं चिल्लगाणं बलवीरियरूव-
जोव्वणगुणलावन्नकित्तिया कित्तणं करेइ, ततो पुणो उग्गसेण-
माईणं जायवाणं, भणइ य—सोहग्गरूवकलिए वरेहि वरपुरिस-
गंधहत्थीणं। जो हु ते होइ हिययदइओ, तएणं सा दोवई
रायवरकन्नगा बहूणं रायवरसहस्साणं मज्झं मज्झेणं समतिच्छ-
माणी२ पुव्वकयणियाणेणं चोइज्जमाणी २ जेणेव पंच पंडवा
तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता ते पंचपंडवे तेणं दसद्धवण्णेणं
कुसुमदामेणं आवेढियपरिवेढियं करेइ करित्ता एवं वयासी—
एएणं मए पंच पंडवा वरिया, तएणं तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं

बहूणि रायसहस्साणि महया२ सद्देणं उग्घोसेमाणा२ एवं वयंति सुवरियं खलु भो ! दोवइए रायवरकन्नाए२ त्तिकट्टु सयंवरमंडवाओ पडिनिक्खमंति पडिनिक्खमित्ता जेणेव सया २ आवासा तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता, तएणं धट्ठज्जुण्णे कुमारे पंच पंडवे दोवइं रायवरकण्णं चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ दुरूहित्ता कंपिल्लपुरं मज्झं मज्झेणं जाव सयं भवणं अणुपविसइ, तएणं दुवए राया पंच पंडवं देवइं रायवरकन्नं पट्टयं दुरूहेइ दुरूहित्ता सेया पीएहिं कलसेहिं मज्जावेइ मज्जावित्ता अग्गिहोमं कारवेइ पचण्हं पंडवाणं दोवईए य पाणिग्गणं करावेइ तएणं से दुवए राया दोवईए रायवरकण्णयाए इमं एयारूवं पीईदाणं दलयइ, तं जहा – अट्ठ हिरणगकोडीओ जाव अट्ठ पेसणकारीओ दासचेडीओ, अण्णं च विउलं धणकणग जाव दलयइ तएणं से दुवए राया ताइं वासुदेवपामोक्खाणं विउलेणं असण४ वत्थगंध जाव पडिविसज्जेइ ॥ सू० २१ ॥

टीका—'तएणं तं' इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु तां द्रौपदीं राजवरकन्यां 'अंतेउरियाओ' आन्तः पुरिक्यः= अन्तःपुरवर्तिन्यः स्त्रियः सर्वालंकारविभूषितां कुर्वन्ति, 'किं ते' तत्–तत्सौन्दर्यं किं वर्णयामि तद् वाचाऽभिलपितुं न

तए णं तं दोवइं रायवरकन्नं इत्यादि ।

टीकार्थ-(तए णं) इसके बाद (तं दोवइं रायवरकन्नं) उस राजवर कन्या द्रौपदी को (अंतेउरियाओ सव्वालंकारविभूसियं करेंति) अतः पुर की स्त्रियों ने समस्त अलंकारों से विभूषित किया। (किंते) उस समय

तएणं तं दोवइं रायवरकन्नं इत्यादि—

टीकार्थ—(तए णं) त्यारपछी (तं दोवइं रायवरकन्नं) ते राजवर कन्या द्रौपदीने (अंते उरियाओ-सव्वालंकारविभूसियं करेंति) रणवासनी स्त्रीओए समस्त अलंकारोथी शणगारी. (किं ते) ते समयना तेना सौंदर्यनुं वर्णन

शक्यत इत्यर्थः । 'वरपायपत्तणेउरा' वरपादमाप्तनूपुरा=चरणस्थापित प्रशस्त-नूपुरा यावत्- चेडियाचक्कवालमयहरगविन्दपरिक्खित्ता चेटिकाचक्रवालमहत्तरक वृन्देन-अनेकदासीमहत्तरसमूहेन परिक्षिप्ता-परिवृता, अन्तःपुरात् प्रतिनिष्क्रामति -निः सरति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव बाह्या=बहिः प्रदेशस्था 'उवट्ठाणसाला' उप-स्थानशाला=आस्थानमण्डप-सभामण्डइत्यर्थः, यत्रैव चातुर्घण्टोऽश्वरथस्तत्रैवोपाग-च्छति, उपागत्य 'किड्डावियाए' क्रीडिकया-क्रीडनधात्र्या कीदृश्या कीडिकया-इत्याह 'लेहियाए' इति लेखिकया=राजकुलवंशनामादिपरिचारिकया सार्धं

के उसके सौन्दर्य का हम क्या वर्णन करें। वह वाणी द्वारा कहने के योग्य नहीं है अर्थात् वाणी से उसका वर्णन नहीं हो सकता है। (वर पायपत्तणेउरा जाव चेडियाचक्कवालमयहरगविंदपरिक्खित्ता अंते उराओ पडिणिक्खमइ) चरणों में स्थापित किये गये हैं-पहिराये गये हैं-प्रशस्त नूपुर जिसको ऐसी वह द्रौपदी यावत् अनेक समझदार दासियों के महामहिम समूह से परिक्षिप्त होकर-अंतःपुर से बाहिर निकली। (पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किड्डावियाए लेहि-याए सद्धिं चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ) बाहिर निकलकर वह जहां बाहिर में सभामंडप और उसमें भी जहां चारघंटों वाला अश्वरथ था वहां आई। वहां आकर वह अपनी क्रीडनधात्री के कि जो लेखिका राजकुल, वंश नाम आदि की परिचायिका थी साथ उस चारघंटोंवाले

આપણે કેવી રીતે કરી શકીયે વાણી વડે તેનું વર્ણન અશક્ય છે એટલે કે વાણીમાં એટલી શક્તિ નથી કે તેના સૌંદર્યનું સચોટ વર્ણન કરી શકે.

(वरपायपत्तणेउरा जाव चेडियाचक्कवालमयहरगविंदपरिक्खित्ता अंतेउराओ पडिणिक्खमइ)

પગોમાં જેણે સુંદર નૂપુર પહેર્યાં છે એવી તે દ્રૌપદી ઘણી ચતુર દાસી-ઓથી વીંટળાઈને રણવાસથી બહાર નીકળી.

(पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किड्डावियाए लेहियाए सद्धिं चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ)

બહાર નીકળીને તે જ્યાં બહારના સભા-મંડપમાં ચાર ઘંટવાળો અશ્વ-રથ હતો ત્યાં આવી. ત્યાં આવીને તે પોતાની ક્રીડન ધાત્રી-કે જે લેખિકા રાજકુળ, વંશ નામ વગેરેની પરિચારિકા હતી-તેની સાથે તે ચાર ઘંટવાળા અશ્વરથ ઉપર સવાર થઈ ગઈ.

चातुर्घण्टमश्वरथं 'दुरूहइ' दूरोहति=आरोहति । ततस्तदनन्तरं धृष्टद्युम्नः कुमारो द्रौपद्याः कन्यायाः 'सारत्थं' सारथ्यं-सारथिकर्म करोति, ततः खलु सा द्रौपदी राजवरकन्या काम्पिल्यपुरस्य नगरस्य मध्यमध्येन यत्रैव स्वयम्वरमण्डपस्तत्रैवो-पागच्छति, उपागत्य रथं स्थापयति रथात् प्रत्यवरोहति प्रत्यवरुह्य क्रीडिकया लेखिकया च सार्धं स्वयंवरमण्डपम् अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य करतलपरिगृहीत दशनखं शिरआवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा तेषां वासुदेवप्रमुखाणां बहूण राजवरसह-

अश्वरथ में सवार हो गई। (तएणं से धट्ठज्जुण्णे कुमारे दोवईए कन्नाए सारत्थं करेइ, तएणं सा दोवइ रायवरकण्णा कंपिल्लपुरं नयरं मज्झं-मज्झेणं जेणेव सयंवरमंडवे तेणेव उवागच्छइ) उस के सवार होते ही धृष्टद्युम्न कुमार ने उस द्रौपदी कन्या का सारथ्य किया-उसके रथ पर सारथि का काम किया-द्रौपदी के रथ को हांका। इस तरह धृष्ट द्युम्न के द्वारा हांके गये रथ पर बैठी हुई वह राजवर कन्या द्रौपदी कांपिल्य पुर नगर के बीच से होकर जहां स्वयंवर-मंडप था उस ओर चल दी। (उवागच्छित्ता रहं ठवेइ रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता किड्डावियाए लेहियाए सद्धिं सयंवरमंडवं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता करयल तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं रायवरसहस्साणं पणामं करेइ) वहां पहुंचकर उसने रथ को खड़ा करवा दिया-रथके खडे होते ही वह उससे नीचे उतरी, नीचे उतर कर वह उस लेखिका क्रीडन धात्री के साथ स्वयंवर मंडप में प्रविष्ट हुई। प्रविष्ट होकर के उसने अपने दोनों हाथों को जोड कर उन वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं को प्रमाण

(तएणं से धट्ठज्जुण्णे कुमारे दोवईए कन्नाए सारत्थ करेइ, तएण सा दोवइ रायवरकण्णा कंपिल्लपुरं नगरं मज्झं मज्झेणं जेणेव सयंवरमंडवे तेणेव उवागच्छइ)

જ્યારે તે સવાર થઈ ગઈ ત્યારે કુમાર ધૃષ્ટદ્યુમ્ને તે દ્રૌપદી રાજવર કન્યાના રથ ઉપર બેસીને સારથીનું કામ સંભાળ્યું. આ પ્રમાણે ધૃષ્ટ દ્યુમ્ન વડે હાંકવામાં આવેલા તે રથ ઉપર સવાર થઈને તે રાજવર કન્યા દ્રૌપદી કાંપિલ્યપુર નગરની વચ્ચે થઈને જ્યાં સ્વયંવર મંડપ હતો ત્યાં રવાના થઈ

(उवागच्छित्ता रहं ठवेइ रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता किड्डावियाए लेहियाए सद्धिं सयंवरमंडवं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता करयल तेसिं वासुदेव पामुक्खाणं बहूणं रायवरसहस्साणं पणामं करेइ)

ત્યાં પહોંચીને તેણે રથને થોભાવડાવ્યો, જ્યારે રથ થોભ્યો ત્યારે તે રથ ઉપરથી નીચે ઉતરી, નીચે ઉતરીને તે લેખિકા ક્રીડન ધાત્રીની સાથે સ્વયંવર મંડપમાં પ્રવિષ્ટ થઈ. પ્રવિષ્ટ થઈને તેણે વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓને પોતાના બંને હાથ જોડીને નમસ્કાર કર્યા.

माणां प्रणामं करोति, ततः खलु सा द्रौपदी राजवरकन्या एकं महत् श्रीदामकाण्डं 'किं ते' किं तत्-तत्सौन्दर्यसौगन्ध्यवर्णनं किं करोमि ? तद् अपूर्वमितिभावः। 'पाडलमल्लियचंपय जाव सत्तच्छयाईहिं' पाटलमल्लिकाचम्पक-यावत् सप्तच्छदादिभिः 'गंधद्धाणिं' गन्धघ्राणिं गन्धतृप्तिं 'मुयंतं' मुञ्चत्=ददत् प्रकाशयदित्यर्थः परमसुखस्पर्शं दर्शनीयं गृह्णाति। ततः खलु सा क्रीडिका=क्रीडनधात्री यावत्-सुरूपा जाव 'वामहत्थेणं चिल्लगं दप्पणं' यावत् वामहस्तेन चिल्लगं दर्पणम् अत्र यावच्छब्देनेद बोध्यम्-सामावियघंसं चोद्दहजणस्स उस्सुयकरं विचित्तमणिरयणबद्धच्छरूहं' इति। स्वाभाविकघर्षं=स्वाभाविको नैसर्गिको घर्षो घर्षणं यत्र स तथा तं दर्पणमित्यन्वयः। स्वभावादेव चिक्कणमित्यर्थः, तथा-चतुर्दशजनस्यौत्सुक्यकरं=तरुणलोकस्य प्रेक्षणाभिलापजनकं, तथा-विचित्रमणिरत्नबद्धच्छरुकं=विचित्रमणिरत्नैर्बद्धः छरुको-मुष्टि ग्रहणस्थानं, यस्य स तथा तं, तथा-'चिल्लगं' देदीप्यमानं. दर्पणं-वामहस्तेन "गहेउण" गृहीत्वा 'सललियं' सललितं 'दप्पण-

किया' (तए णं सा दोवई रायवरकन्ना एगं महं सिरिदामगंड किंते ? पाडलमल्लियचंपय जाव सत्तच्छयाईहिं गंधद्धाणिं मुयंतं परमसुहफासं दरिसणिज्जं गेण्हइ) इसके बाद उस राजवर कन्या द्रौपदी ने एक बड़ा विस्तृत श्री दामकांड-जिस की सुन्दरता और सुगंधि का हम क्या वर्णन करें-जो अपूर्व था-पाटल-गुलाव के पुष्पों से, मल्लिका-मोंघरा के पुष्पों से यावत् सप्तच्छद वृक्ष के पुष्पों के गूंथा गया था, और जिस में से नासिका को तृप्ति करने वाली गंध निकल रही थी।
जिसका स्पर्श परम सुख दायक था-तथा जो दर्शनीय था अपने हाथ में लिया (तएणं सा किड्डाविया जाव सुरूवा जाव वामहत्थेणं चिल्लगं-दप्पणं गहेऊण सललिय दप्पणसंकंतबिंबसंदंसिए य से दाहिणेणं

(तए णं सा दोवई रायवरकन्ना एगं महं सिरिदामगंडं किं ते। पाडलमल्लिय चंपय जाव सत्तच्छयाईहिं गंधद्धाणिं मुयंत परमसुहफासं दरिसणिज्जं गेण्हइ)

ત્યારપછી તે રાજવર કન્યા દ્રૌપદીએ એક બહુ મોટો ભારે શ્રીદામકાંડને કે જેની સુંદરતાનું વર્ણન થઈ શકે તેમ નથી અને જે અપૂર્વ હતો-પાટલ ગુલાબના પુષ્પોથી, મલ્લિકા-મોગરાના પુષ્પોથી, ચમ્પાના પુષ્પોથી યાવત્ સપ્તચ્છદ વૃક્ષના પુષ્પોથી તે તૈયાર કરવામાં આવ્યો હતો અને જેમાંથી નાસિકાને તૃપ્તિ થાય તેવી સુવાસ પ્રસરી રહી હતી જેનો સ્પર્શ અત્યંત સુખકારી તેમજ જે દર્શનીય હતો-હાથમાં લીધો.

(तएणं सा किड्डाविया जाव सुरूवा जाव वामहत्थेणं चिल्लगं दप्पणं गहेऊण सललियं दप्पणसंकंतबिंबसंदंसिए य से दाहिणेणं हत्थेणं दरिसए पवर-

संकंतबिंबसंदंसिए य' दर्पणसंक्रान्तबिम्बसंदर्शितान्=दर्पणे संक्रान्तानि यानि राज्ञां बिम्बानि-प्रतिबिम्बानि, तैः संदर्शिताः=प्रतिबोधितास्तांश्च, प्रवरराजसिंहान् सिंहसदृशशूरान् श्रेष्ठनृपान् दक्षिणेन हस्तेन 'से' तस्याः द्रौपद्याः 'दरिसए' दर्शयति इह कर्मणः सम्बन्धमात्रविवक्षायां षष्ठी। तथा-'फुडविसयविसुद्ध-रिभियगंभीरमहुरभणिया' स्फुटविशदविशुद्धरिभितगम्भीरमधुरभणिता= अर्थतः

हत्थेणं दरिसए पवररायसीहे फुडविसयविसुद्धरिभियगंभीरमहुर-भणिया सा तेसिं सव्वेसिं पत्थिवाणं अम्मापिऊणं वंससत्तसामत्थ-गोत्तविक्कंतिकंतिबहुविहआगममहप्परूवजोव्वणगुणलावण्णं कुल जाणिया कित्तणं करेइ) इसके बाद उस क्रीडन धाय ने अपने हाथ में एक चमकता हुआ दर्पण लिया। यहां दर्पण के इन और विशेषणों का यावत् शब्द से ग्रहण हुआ है वे विशेषण ये हैं 'सामावियघंसं चोद्दहजणस्स उस्सुयकरं विचित्तमणिरयणबद्धछरुहं" इनका अर्थ इस प्रकार है-यह दर्पण स्वभावतः चिकना था। तथा तरुणजनों के चित्त में अपने को देखने की अभिलाषा का जनक था। मुष्टि से पकड़ने का जो इसका स्थान था वह विचित्र मणि-रत्नों से निर्मित था। उस दर्पण में जिन २ सिंह जैसे शूरवीर राजाओं के उस समय प्रतिबिम्ब पड़े हुए थे उन प्रतिबिम्बों को लेकर उस धायने उन श्रेष्ठ राजाओं को उस द्रौपदी के लिये अपने दक्षिण हाथ से बतलाया! बतलाते समय उन्हें दिखाते समय-वह धात्री बिलकुल अर्थ की अपेक्षा स्फुट एवं वर्ण

रायसीहे फुडविसयविसुद्धरिभियगंभीरमहुरभणिया सा तेसिं सव्वेसिं पत्थि-वाणं अम्मापिऊणं वंससत्तसामत्थगोत्तविक्कंतिकंतिबहुविहआगममहाप्परूवजोव्वण गुणलावण्णं कुलजाणिया कित्तणं करेइ)

ત્યારપછી તે ક્રીડનધાત્રીએ પોતાના હાથમાં એક ચમકતો અરીસો લીધો. અહીં 'અરીસા' માટે યવત્ શબ્દથી નીચે લખ્યા મુજબ વિશેષણોનું પણ ગ્રહણ સમજવું જોઈએ (सामावियघंसं चोद्दहजणस्स उस्सुयकरं विचित्तं मणिरयणबद्धछरुह) આ વિશેષણોનું સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે-તે અરીસો સ્વાભાવિક રીતે લીસો હતો, તેમજ તરુણ સ્ત્રીઓના ચિત્તમાં તેને જોવાની સહજ ભાવે ઈચ્છા જાગ્રત થાય તેવો હતો. તે અરીસાનો હાથો વિચિત્ર મણીરત્નોથી જડેલો હતો. તે અરીસામાં સિંહ જેવા શૂરવીર જે જે રાજાઓ દેખાયા તે ધાત્રીએ તે રાજાઓને પોતાના જમણા હાથથી સંકેત કરીને બતાવ્યા. બતાવતી વખતે અને સમજાવતી વખતે તે ધાય અર્થની અપેક્ષાથી

स्फुटं, वर्णतो विशदं स्फुटविशदं-शब्दार्थदोषरहितं, रिभितं-स्वरयुक्तं गम्भीरं-मेघध्वनिवत्, मधुरं-प्रियं श्रवणसुखदं, भणितं भाषितं यस्याः क्रीडिकायाः सा तथा, सा क्रीडिका तेषां सर्वेषां पार्थिवानां 'अम्मापिऊणं' मातापित्रोः 'वंससत्तसामत्थगोत्तविक्कंतिकंतिबहुविहआगममाहप्परूवजोव्वणगुणलावण्णकुलसीलजाणिया' वंशसत्त्वसामर्थ्यगोत्रविक्रान्तिकान्तिबहुविधागममाहात्म्यरूपयौवनगुणलावण्यकुलशीलज्ञायिका=वंशं-हरिवंशादिकं, सत्त्वम्-आपत्सु धैर्यम् सामर्थ्यं=बलं गोत्रं=गौतमगोत्रादि, विक्रान्तिं-विक्रमं, कान्तिं-प्रभां, बहुविधागमं अनेकशास्त्रविशारदं, माहात्म्यं-महानुभावतां, तथा-रूपयौवनगुणलावण्यानि च तथा-कुलं-वंशस्यावान्तरभेदं, शीलं च-स्वभावं च जानाति या सा 'कित्तणं' कीर्तनं=वंशादिवर्णनं करोति स्म। प्रथमं तावत्-'वण्हिपुंगवाणं' वृष्णिपुङ्गवानां 'दसदसारवीरपुरिसाणं' दशानां दशार्हाणां समुद्रविजयादीनां वीरपुरुषाणां, 'तेलोगबलवगाणं' त्रैलोक्यबलवतां 'सत्तुसयसहस्समाणावमद्दगाणं' शत्रुशतसहस्रमानावमर्दकानां, तथा-'भवसिद्धियवरपुंडरीयाणं' भवसिद्धिकवरपुण्डरीकाणां=भवति-

---

की अपेक्षा विशद ऐसी विशुद्ध-शब्दार्थ दोष रहित-स्वर युक्त मेघ ध्वनि समान गंभीर मधुर वाणी से भाषण करती जाती थी। उस भाषण में वह इन सब राजाओं के माता, पिता, वंश, सत्त्व, सामर्थ्य, गोत्र, विक्रम, कांति, अनेक शास्त्रों का ज्ञातृत्व, माहात्म्य, तथा रूप, यौवन गुण, लावण्य, कुल एवं शील की ज्ञाता होने के कारण इन सब का वर्णन करती जाती थी। वंश से हरिवंश आदि का और कुल से वंश के अवान्तर भेद का कथन होता है। (पढमं ताव वण्हिपुंगवाणं दसदसारवीरपुरिसाणं तेल्लोकबलवगाणं सत्तुसयसहस्समाणावमद्दगाणं भवसिद्धिपवरपुंडरीयाणं चिल्लगाणं बलवीरियरूवजोव्वणं

ગોષ્ઠમ સ્ફુટ અને વર્ણની અપેક્ષાથી વિશદ એવી વિશુદ્ધ એટલે કે શબ્દાર્થ દોષરહિત-સ્વરયુક્ત, મેઘધ્વનિ જેવી ગંભીર મધુરવાણીનું ઉચ્ચારણ કરી રહી હતી. પોતાના ભાષણ વડે તે ધાય બધા રાજાઓના માતા પિતા વંશ, સત્વ, સામર્થ્ય, ગોત્ર, વિક્રમ, કાંતિ, શાસ્ત્રજ્ઞાન, મહાત્મ્ય તેમજ રૂપ, યૌવન, ગુણ, લાવણ્ય, કુળ અને શીલ વગેરેની બાબતમાં જાણકાર હતી એટલે બધું વર્ણન કરતી જતી હતી. વંશથી હરિવંશ વગેરે અને કુળથી વંશનો અવાન્તર ભેદનું કથન થાય છે.

'પઢમં તાવ વણ્હિપુંગવાણં દસદસારવીરપુરિસાણં તેલ્લોક્કબલવગાણં સત્તુ-સયસહસ્સમાણાવમદ્દગાણં ભવસિદ્ધિપવરપુંડરીયાણં ચિલ્લગાણં બલવીરિયરૂવ-

भाविनी सिद्धिर्येषां, ते भवसिद्धिकास्तेषां मध्ये वरपुण्डरीकाणीव ये श्रेष्ठास्ते तथा तेषां, तथा 'चिल्लगाणं' तेजसा देदीप्यमानानां 'चिल्लग' इति देशी शब्दः। तथा- 'बलवीरियरूवजोव्वणगुणलावन्नकित्तिया' बलवीर्यरूपयौवन-गुणलावण्य कीर्तिका=बलं-कायिकं, वीर्यम्-उत्साहः, रूपं-सौन्दर्यं, यौवनं-तारुण्यं, गुणान्-औदार्यगाम्भीर्यादीन्, लावण्य-यौवनवयोजन्यं कान्तिविशेषं, कीर्तयति या सा तथा, सा क्रीडिकाधात्री कीर्तनं करोति स्मेत्यर्थः। अत्र पूर्वोक्तमपि विशे-षणं किंचिद् विशेषबोधनार्थं पुनः कथितम्।

ततस्तदनन्तरं पुनः सा क्रीडनधात्री 'उग्गसेणमाईणं जायवाणं' उग्रसेना-दीनां यादवानां बलवीर्यादि कीर्तनं करोति कृत्वा भणति च=सा धात्री द्रौपदीं

गुणलावण्ण कित्तियाकित्तणं करेइ) सबसे पहिले उस क्रीडन धात्री ने वृष्णिवंश के पुंगव समुद्रविजय आदिदश दशार्हों के कि जो त्रैलोक्य में भी विशिष्ट बलशाली माने जाते थे, लाखों शत्रुओं के मान को मर्दन करने वाले थे, भवसिद्धिक पुरुषों में जो श्रेष्ठ कमल के जैसे माने गये हैं, और जो अपने स्वाभाविक तेज से सदा दमकते रहते थे बल का, वीर्य का, रूप का, यौवन का, गुणों का, लावण्य का, कीर्तिका होने के कारण कीर्तन-वर्णन किया। शारीरिक शक्तिका नाम बल, उत्साह का नाम वीर्य, सौन्दर्य का नाम रूप तारुण्य का नाम यौवन है। औदार्य गांभीर्य आदि गुण है। यौवन वय से जन्य जो कांति शरीर में आती है वह लावण्य है (तओ पुणो उग्गसेणमाईणं जायवाण भणइ य सोहग्गरूवकलिए वरेहि वर पुरिसगंधहत्थीणं जो हु ते होइ हियय-दइओ, तएणं सा दोवई रायवरकन्नगा बहूणं रायवरसहस्साणं मज्झं

जोव्वणगुणलावण्णकित्तिया कित्तणं करेइ)

તે ક્રીડન ધાત્રીએ સૌ પહેલાં વૃષ્ણિ વંશમાં પુંગવ (શ્રેષ્ઠ) સમુદ્ર વિજય વગેરે દશ દશાર્હોનું-કે જેઓ ત્રણે લોકોમાં પણ વિશિષ્ઠ શક્તિશાળી ગણાતા હતા, લાખો શત્રુઓના માનનું મર્દન કરનારા હતા, ભવસિદ્ધિક પુરૂષોમા જેઓ કમળની જેમ શ્રેષ્ઠ ગણાતા હતા અને જેઓ પોતાના સ્વાભાવિક તેજથી હમેશાં પ્રકાશતા રહેતા હતા, બળ, વીર્ય, રૂપ, યૌવન, ગુણો, લાવણ્ય, કીર્તિ વગેરેથી સંપન્ન હતા-વર્ણન કર્યું. શારીરિક શક્તિનું નામ બળ, ઉત્સાહનું નામ વીર્ય, સૌન્દર્યનું નામ રૂપ અને તારૂણ્યનુ નામ યૌવન છે. ઔદાર્ય, ગાંભીર્ય ગુણો છે. યુવાવસ્થામાં જે શરીર કાંતિવાળું થાય છે તેને લાવણ્ય કહેવામાં આવે છે.

(तओ पुणो उग्गसेणमाईणं जायवाणं भणइ य सोहग्गरूवकलिए वरेहि वरपुरिसगंधहत्थीणं जो हु ते होइ हिययदइओ तएणं तं दोवई रायवरकन्नगा

पुनराह— 'सोहग्गरूवकलिए' इत्यादि, एवमत्रान्वयमुखेनव्याख्या—' वरपुरिसगंधहत्थीणं ' वीरपुरुषगन्धहस्तिना=हस्तिषु गन्धहस्तिन इव ये विशिष्टगुणसद्भावात् पुरुषेषु सर्वतः श्रेष्ठास्ते वरपुरुषगन्धहस्तिनस्तेषां मध्ये 'सोहग्गरूवकलिए' सौभाग्यरूपकलितः—अतिशयेन सौभाग्यसौन्दर्यसमन्वितः, यः खलु ते तव हृदयदयितः=हृदयप्रियः 'होइ' भवति, तं 'वरेहि' वरय=पतिभावेन स्वीकुरु इत्यर्थः।

ततस्तदनन्तरं खलु द्रौपदी राजवरकन्या बहूनां राजवरसहस्राणां मध्यमध्येन 'समइच्छमाणी २' समतिक्रामन्ती=गच्छन्ती 'पुव्वकयणियाणेणं' पूर्वकृतनिदानेन=सुकुमारिकाभवे भर्तृपञ्चकाभिलापरूपं निदानं कृतं तेन, 'चोइज्जमाणी २' प्रेर्यमाणा २ यत्रैव पञ्च पाण्डवास्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तान् दशार्धवर्णेन—पञ्चवर्णेन कुसुमदाम्ना 'आवेढियपरिवेढिए' आवेष्टितपरिवेष्टितान् करोति,

मज्झेणं समतिच्छमाणी २ पुव्वकयणियाणेणं चोइज्जमाणी २ जेणेव पंचपंडवा तेणेव उवागच्छइ) इसके बाद उस क्रीडन धाय ने यादव वंशवाले उग्रसेन आदि यादवों के बलवीर्य आदि का वर्णन किया—उसने द्रौपदी से कहा ये जैसे हाथियों में गंधहस्ती श्रेष्ठ होता है उसी तरह ये पुरुषों में विशिष्ट गुणोंके सद्भाव के कारण सर्व प्रकार से श्रेष्ठ हैं—इनके बीच में जो तुझे सौभाग्यरूप संकलित प्रतीत हो और तेरे हृदय को प्यारा लगे—उसे तू पतिरूप से वरले। इसके बाद वह राजवर कन्या द्रौपदी उन हजारों राजाओं के बीच से होती हुई सुकुमारिका के भव में कृत निदान के प्रभाव से बार २ प्रेरित होकर जहां पांच पांडव थे—वहां पहुँची—(उवागच्छित्ता ते पंच पांडवे तेणं दसद्धवण्णेणं कुसुमदामेणं आवेढियपरिवेढियं करेइ, करित्ता एवं वयासी, एएणं मए पंच

बहूणं रायवरसहस्साण मज्झं मज्झेणं समतिच्छमाणी २ पुव्वकयणियाणेणं चोइज्जमाणी २ जेणेव पंच पंडवा तेणेव उवागच्छइ)

त्यारपछी क्रीडन धात्रीએ ઉગ્રસેન વગેરેનું વર્ણન કર્યું અને કહ્યુ કે—હાથીઓમાં જેમ ગંધ હસ્તી ઉત્તમ ગણાય છે તેમજ પુરૂષોમાં સવિશેષ ગુણવાન એવા એઓ બધી રીતે સારા છે, આ બધામાં તને જે સૌભાગ્યશાલી લાગતા હોય અને તને જેઓ ગમતા હોય તેઓને તું પતિ રૂપમાં સ્વીકારી લે. ત્યારપછી તે રાજવર કન્યા દ્રૌપદી તે હજારો રાજાઓની વચ્ચેથી પસાર થઈને પોતાના સુકુમારિકાના ભવમાં કરેલા અભિલાષથી પ્રેરાઈને જ્યાં પાંચ પાંડવો હતા ત્યાં પહોંચી.

(उवागच्छित्ता ते पंच पांडवे तेणं दसद्धवण्णेणं कुसुमदामेणं आवेढिय परिवेढियं करेइ, करित्ता एवं वयासी, एएणं मए पंचपंडवा वरिया, तएणं

कृत्वा एवमवादीत्-एते खलु पञ्च पाण्डवा मया वृता इति। ततः खलु 'ताइं वासुदेवपामोक्खाइं बहूणि रायसहस्साणि' तानि वासुदेवप्रमुखाणि बहूनि राज-सहस्रसंख्यका वासुदेवप्रमुखा राजान इत्यर्थः। महता २ शब्देनोद्घोषयन्त एवं वदन्ति-सुवृतं खलु भोः! द्रौपद्या राजवरकन्यया इति कृत्वा-इत्युक्त्वा स्वयंवर-मण्डपात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, निर्गच्छन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव स्वका स्वका आवा-सास्तत्रैवोपागच्छन्ति। ततः खलु धृष्टद्युम्नः कुमारः पञ्च पाण्डवान् द्रौपदीं राजवरकन्यां चातुर्घण्टमश्वरथं 'दुरूहइ' दूरोहयति=आरोहयति दूरोह्य काम्पि-

---

पंडवा वरियो, तएणं तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं बहूणि रायसहस्साणि, महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयंति, सुवरियं खलु भो! दोव-इए रायवरकन्नाए त्ति कट्टु सयंवरमंडवाओ पडिनिक्खमंति, पडि-निक्खमित्ता जेणेव सया २ आवासा तेणेव उवागच्छइ) वहां पहूंच कर उसने उन पांचो पांडवों को उस पंचवर्णवाली माला से अवेष्टित परिवेष्टित कर दिया। करके फिर वह इस प्रकार कहने लगी-ये पांच पांडव मैंने पतिरूप से वर लिये हैं। इसके बाद उन वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं ने बड़े २ जोर के शब्दों से ऐसा कहा इस राजवर कन्या द्रौपदीने बहुत अच्छे वर वरे ऐसा कहकर वे उस स्वयंवर मंडप से बाहिर हो गये। बाहिर आकर फिर वे जहां अपने २ आवास स्थान थे वहां चले आये। (उवागच्छित्ता तएणं धट्ठज्जुण्णे कुमारे पंच पंडवे दोवइं रायवरकण्णं चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ, दुरूहित्ता कंपिल्लपुरं

तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं बहूणि रायसहस्साणि, महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयंति, सुवरियं खलु भो! दोवइए रायवरकन्नाए २ त्ति कट्टु सयंवरमंड-वाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सया२ आवासा तेणेव उवागच्छइ)

ત્યાં પહોંચીને તેણે તે પાંચ પાંડવોને પાંચ વર્ણવાળી માળાથી અવે-ષ્ટિત, પરિવેષ્ટિત કરી દીધા. ત્યારપછી તેઓને કહેવા લાગી કે હે પાંચ પાંડવો! મેં તમને પતિ રૂપમાં વરી લીધા છે. ત્યારબાદ તે વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓએ બહુ મોટા સાદથી આ પ્રમાણે કહ્યું કે આ રાજવર કન્યા દ્રૌપદીએ બહુ જ સારા વરો પસંદ કર્યા છે. આમ કહીને તેઓ સર્વે સ્વયંવર મંડપમાંથી બહાર નીકળી ગયા. બહાર નીકળીને તેઓ જ્યાં પોતાના આવાસ સ્થાનો હતાં ત્યા જતા રહ્યા.

(उवागच्छित्ता तएणं धट्ठज्जुण्णे कुमारे पंचपंडवे दोवइं रायवरकण्णं चाउ-ग्घंटं आसरहं दुरूहइ, दुरूहित्ता कंपिल्लपुरं मज्झं मज्झे णं जाव सयं भवणं अणु-

त्यपुरस्य मध्यमध्येन यावत् स्वकं भवनमनुप्रविशति, ततः खलु द्रुपदो राजा पञ्च पाण्डवान् द्रौपदीं राजवरकन्यां 'पट्टयं' पट्टकं=पट्टकोपरि 'दुरूहेइ' दूरोहयति=आरोहयति, दूरोह्य श्वेतपीतैः कलशैः 'मज्जावेइ' मज्जयति=स्नपयति अग्निहोमं विवाहविधिनाऽग्नौ होमं कारयति, पञ्चानां पाण्डवानां द्रौपद्याश्च पाणिग्रहणं कारयति, अत्र पञ्चानां पाण्डवानामिति सम्बन्धसामान्ये षष्ठी। ततः खलु स द्रुपदो राजा द्रौपद्या राजवरकन्यायाः इममेतद्रूपं प्रीतिदानं यौतुकदानं ददाति,

---

मज्झं मज्झेणं जाव सयंभवणं अणुपविसइ, तएणं दुवए राया पंच पंडवे दोवइं रायवरकन्नं पट्टयं दुरूहेइ, दुरूहित्ता सेयापीएहिं कलसेहिं मज्जावेइ, मज्जावित्ता अग्गिहोमं कारवेइ, पंचण्हं पंडवाणं दोवइए य पाणिग्गहणं करावेइ,) इसके बाद धृष्टद्युम्नकुमार ने उन पांच पांडवो को एवं राजवर कन्या द्रौपदी को चारघंटो से युक्त उस अश्वरथ पर बैठाया-बैठाकर कांपिल्यपुर नगर के बीच से होता हुआ वह जहां अपना भवन था वहां आया वहां आकर वह उसमें उन सब के साथ प्रविष्ट हुआ। इसके बाद द्रुपद राजा ने उन पांचो पांडवों को और राजवर कन्या उस द्रौपदी को एक पट्टक पर बैठा दिया-बैठाकर फिर उसने उनका श्वेत पीत कलशों से चांदी सोने के घड़ो से-अभिषेक करवाया अभिषेक करवा कर फिर उसने अग्नि होम करवाया-और उसकी साक्षी पूर्वक पांचो-पांडवो के साथ अपनी कन्या द्रौपदी का पाणि ग्रहण संस्कार करवा दिया। (तएणं से दुवए राया दोवइए राय-

---

परिसरः, तएणं दुवए राया पंच पंडवे दोवइं रायवरकन्नं पट्टयं दुरूहेइ, दुरूहित्ता सेयापीएहिं कलसेहिं मज्जावेइ मज्जावित्ता अग्गिहोमं कारवेइ, पंचण्हं पंडवाणं दोवइए य पाणिग्गहणं करावेइ)

ત્યારપછી ધૃષ્ટદ્યુમ્ન કુમારે તે પાંચ પાંડવોને અને રાજવર કન્યા દ્રૌપદીને ચાર ઘંટવાળા તે અશ્વરથ ઉપર બેસાડયા અને બેસાડીને કંપિલ્લપુર નગરની વચ્ચે થઈને જ્યાં પોતાનું ભવન હતું ત્યાં ગયા. ત્યાં જઈને તેઓ બધે તેમાં પ્રવિષ્ટ થયા. ત્યારપછી દ્રુપદ રાજાએ તે પાંચે પાંડવોને અને રાજવર કન્યા તે દ્રૌપદીને એક પટ્ટક ઉપર બેસાડી દીધા અને બેસાડીને તેણે તેમનો શ્વેત, અને પીળા કળશોથી-એટલે કે ચાંદી અને સોનાના કળશોથી અભિષેક કરાવડાવ્યો અભિષેક કરાવીને તેણે અગ્નિહોમ કરાવડાવ્યો અને તેની સાક્ષીમાં પોતાની કન્યા દ્રૌપદીનો હસ્તમેળાપ તેઓની સાથે કરાવી દીધો.

(तएणं से दुवए राया दोवइए रायवरकण्णयाए इमं एयारूवं पीईदाणं

तद् यथा—अष्ट हिरण्यकोटीः, यावत्=अष्ट रजतकोटी, अष्ट सुवर्णकोटीः, अष्ट ' पेसणकारीओ ' प्रेषणकारिणीः, आज्ञाकारिणीः दासचेटीः—दासपुत्रीः, अन्नं च विपुलं धनकनक—यावत् धनं—गणिमादिकं, कनकम् अघटितस्वर्ण, यावच्छब्देन—रत्ननि—कर्केतनादीनि, मणयश्चन्द्रकान्ताद्याः मौक्तिकानि च शङ्खश्च प्रतीत एव शिलाप्रवालानि च विद्रुमाणि रक्तरत्नानि—पद्मरागादीनि तान्येव सद् विद्यमानं यत् सारं=प्रधानं स्वापतेयं द्रव्यं तद् ददाति स्म ।

ततः खलु स द्रुपदो राजा तान् वासुदेवप्रमुखान् बहुसहस्रसंख्यकान् राज्ञः विपुलेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन भोजयति, भोजयित्वा वस्त्रगन्धादिभियावत् सत्कारयति संमानयति, सत्कार्य संमान्य प्रतिविसर्जयति ॥ सू० २२ ॥

वरकण्णयाए इमं एयारूवं पीईदाणं दलयइ, तं जहा—अट्ठहिरण्ण कोडीओ जाव अट्ठपेसणकारिओ दासचेडीओ, अण्णं च विउलं· धणकणग जाव दलयइ, तएणं से दुवए राया ताइं वासुदेव पामोक्खाणं विउलेणं असण४ वत्थगंध जाव पडिविसज्जेइ) इसके बाद द्रुपद राजाने राजवर कन्या उस द्रौपदी के लिये इतना इस प्रकार प्रीति दान दिया आठ हिरण्य कोटि—चांदी के बने हुए आठ करोड आभूषण, सुवर्ण के बने हुए आठ करोड आभूषण यावत् आज्ञा कारिणी ८ आठ दासियों और भी बहुत सा गणिमादिक रूप धन, अघटित सुवर्ण, कर्केतनादि रत्न, चन्द्रकान्त आदि मणि, मौक्तिक, शंख, विद्रुम, पद्मरागादि रक्त रत्न । यह सब सारभूत द्रव्य उसके लिये प्रदान किया । इसके बाद द्रुपदराजा ने उन वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं को अशन, पान, खाद्य एवं स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार एवं वस्त्र गंध आदि से सत्कृत सन्मानित कर अपने यहां से विदा कर दिया ॥ सू० २२ ॥

दलयइ, तं जहा अट्ठ हिरणकोडीओ जाव अट्ठ पेसणकारीओ दासचेडीओ, अण्णं च विउलं धणकणग जाव दलयइ, तएणं से दुवए राया ताइ वासुदेव पामोक्खाणं विउलेणं असण ४ वत्थ गंध जाव पडिविसज्जेइ)

ત્યારપછી દ્રુપદ રાજાએ રાજવર કન્યા દ્રૌપદીને આ પ્રમાણે પ્રીતિદાન આપ્યું કે આઠ હિરણ્ય–કોટિ–ચાંદીના આઠ કરોડ આભૂષણો યાવત્ આજ્ઞામા રહેનારી આઠ દાસીઓ અને બીજું પણ ઘણું ગણિમ વગેરે રૂપ. ધન, અઘ-ટિત સુવર્ણ, કર્કેતન વગેરે રત્ન, ચન્દ્રકાંત વગેરે મણિ, મૌક્તિક, શંખ, વિદ્રુપ, પદ્મરાગ વગેરે રક્ત રત્નો આપ્યા. આ બધું સારભૂત ધન દ્રૌપદીને આપ્યું. ત્યારપછી દ્રુપદ રાજાએ તે વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓને અશન, પાન, ખાદ્ય, અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહારો અને વસ્ત્ર, ગંધ વગેરેથી સત્કૃત સન્માન્નિત કરીને પોતાના નગરથી વિદાય કર્યા. ॥ સૂત્ર ૨૨ ॥

मूलम्—तएणं से पंडूराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं राय० करयल एवं वयासी--एवं खलु देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे नयरे पंचण्हं पंडवाणं दोवइए य देवीए कल्लाणकरे भविस्सइ तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ममं अणुगिण्हमाणा अकालपरिहीणं समोसरह, तएणं वासुदेवपामोक्खा पत्तेयं२ जाव पहारेत्थ गमणाए। तएणं से पंडुराया कोडुंबियपुरिसे सद्दा० २ एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे पंचण्हं पंडवाणं पंच पासायवडिंसए कारेह अब्भुग्गयमूसिय वण्णओ जाव पडिरूवे, तएणं ते कोडुंबियपुरिसा पडिसुणेंति जाव करावेंति, तएणं से पंडुए पंचहिं पंडवेहिं दोवईए देवीए सद्धिं हयगयसंपरिवुडे कंपिल्लपुराओ पडिनिक्खमइ२ जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए, तएणं से पंडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं आगमणं जाणित्ता कोडुंबि० सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरस्स नयरस्स बहिया वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे कारेह अणेगखंभसय तहेव जाव पच्चप्पिणंति, तएणं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागच्छइ, तएणं से पंडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं आगमणं जाणित्ता हट्ठतुट्ठे ण्हाए कयबलि० जहा दुवए जाव जहारिहं आवासे दलयइ, तएणं ते वासुदेव पा० बहवे रायसहस्सा जेणेव

सयाइं२ आवासाइं तेणेव उवा० तहेव जाव विहरंति, तएणं से पंडुराया हत्थिणाउरणयरं अणुपविसइ अणुपविसित्ता कोडुंबिय० सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! विउलं असण४ तहेव जाव उवणेंति, तएणं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे राया ण्हाया कयवलिकम्मा तं विउलं असणं४ तहेव जाव विहरंति, तएणं से पंडुराया पंच पंडवे दोवइं च देविं पट्टयं दुरूहेइ दुरूहित्ता सेयपीएहिं कलसेहिं ण्हावेंति ण्हावित्ता कल्लाणकारि करेइ करित्ता ते वासुदेवपामोक्खे बहवे रायसहस्से विउलेणं असण४ पुप्फवत्थेणं सक्कारेइ सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ, तएणं ताइं वासुदेवपामोक्खाइं बहूहिं जाव पडिगयाइं ॥ सू० २३ ॥

टीका—'तएणं से' इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु पाण्डू राजा तेषां वासुदेवप्रमुखाणां बहूनां राजसहस्राणां करतलपरिगृहीतं दशनखं शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्—एवं खलु हे देवानुप्रियाः ! हस्तिनापुरे नगरे पञ्चानां पाण्डवानां द्रौपद्याश्च देव्याः कल्याणकरो भविष्यति तत्—तस्मात् यूयं खलु हे देवानुप्रियाः मामनुगृह्णन्तः, अकालपरिहीनं=कालविलम्बरहितं—शीघ्रं समवसरत=आग-

---

'तएणं से पंडूराया' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से पंडूराया) उस पांडुराजा ने (तेसिं वासुदेव पामोक्खाणं) उन वासुदेव प्रमुख (बहूणं राय० करयल एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे नयरे पंचण्हं पंडवाणं दोवइए देवीए कल्लाणकरे भविस्सइ तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! मम

तएण से पंडुराया इत्यादि—

ટીકાર્થ–(तएण) ત્યારપછી (से पंडूराया) તે પાંડુ રાજાએ (ते सिं वासुदेवपामोक्खाण) તે વાસુદેવ પ્રમુખ

(बहूणं राय० करयल एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे नयरे पंचण्हं पंडवाणं दोवइए, देवीए कल्लाणकरे भविस्सइ तं तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! ममं अणुगिण्हमाणा अकालपरिहीणं समोसरह)

मनं कुरुत। ततः खलु वासुदेवप्रमुखाः प्रत्येकं २ यावत् प्राधारयद् गमनाय=हस्तिनापुरं नगरं गन्तुं प्रवृत्ता इत्यर्थः।

ततः खलु स पाण्डुनामको राजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः! हस्तिनापुरे पञ्चानां पाण्डवानां पञ्च 'पासायवडिंसए' प्रासादावतंसकान् कारयत। किं भूतानित्याह-'अब्भुग्गयमूसिय' अभ्युद्गतोच्छ्रितान्-अत्युच्चानित्यर्थः। वर्णकः-प्रथमाध्ययनोक्त-

---

अणुगिण्हमाणा अकालपरिहीणं समोसरह) हजारों राजाओं से अपने दोनों हाथों की अंजलि करके और उसे शिर पर रखकर के बड़ी नम्रता के साथ नमस्कार करके-इस प्रकार कहा हे देवानुप्रियो! हस्तिनापुर नगर में पांच पांडवों और द्रौपदी देवी का कल्याणकारी उत्सव होगा इसलिये हे देवानुप्रियों! आप सब मेरे ऊपर अनुग्रह करके शीघ्र से शीघ्र पधारें। (तएणं वासुदेवपामोक्खा पत्तेयं २ जाव पहारेत्थ गमणाए) इस के बाद वे वासुदेव प्रमुख प्रत्येक जन वहां हास्तिना पुर जाने के लिये प्रस्थित हो गये। (तएणं से पंडुराया कोडुम्बियपुरिसं सद्दावेइ २ एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया हत्थिणाउरे पंचण्हं पंडवाणं पंच पासायवडिंसए कारेह, अब्भुग्गयमुसिय वण्णओ जाव पडिरूवे) इतने में पांडुराजा ने कौडुम्बिकपुरुषों को बुलाया और बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियो! तुम लोग हस्तिना पुर जाओ वहां जाकर पांचों पांडवों के लिये पांच श्रेष्ठ प्रासाद बनवाओ। ये प्रासाद

હજારો રાજાઓને પોતાના બંને હાથોની અંજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને ખૂબ જ નમ્રપણે નમસ્કાર કર્યા અને આ પ્રમાણે વિનંતી કરી કે હે દેવાનુપ્રિયો! હસ્તિનાપુર નગરમાં પાંચે પાંડવો તેમજ દ્રૌપદી દેવીનો કલ્યાણકારી ઉત્સવ થશે એથી હે દેવાનુપ્રિયો! તમે સૌ મારા ઉપર કૃપા કરીને સત્વરે ત્યાં પધારો. (तएणं वासुदेवपामोक्खा पत्तेयं २ जाव पहारेत्थ गमणाए) ત્યારપછી તે વાસુદેવ પ્રમુખ દરેક રાજા ત્યાંથી હસ્તિનાપુર જવા ઉપડી ગયા.

तएणं से पंडुराया कोडुंबियपुरिसं सद्दावेइ २ एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया हत्थिणाउरे पंचण्ह पंडवाणं पंच पासायवडिंसए कारेह, अब्भुग्गयमुसिय वण्णओ जाव पडिरूवे)

તે વખતે પાંડુ રાજાએ કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે હસ્તિનાપુર જાઓ અને ત્યાં જઈને

मेघकुमार-प्रासादवद् वर्णनं विज्ञेयम् यावद् अनेकस्तम्भशतसंनिविष्टान् प्रतिरूपान्=शोभासौन्दर्यसम्पन्नान् । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः-'तथाऽस्तु' इत्युक्त्वा प्रतिशृण्वन्ति=आज्ञां स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य हस्तिनापुरं गत्वा पञ्च प्रासादावतंसकान् यावत् कारयन्ति । ततस्तदनन्तरं पाण्डूराजा पञ्चभिः पाण्डवैः द्रौपद्या देव्या च सार्धं हयगजरथपदातिसंपरिवृतः काम्पिल्यपुरात् प्रतिनिष्क्रामति-प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव हस्तिनापुरं नगरं तत्रैवोपागतः ।

ततः खलु स पाण्डूराजा तेषां वासुदेवप्रमुखाणामागमनं ज्ञात्वा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः !

बहुत ऊँचे हों । इन प्रासादों का वर्णन प्रथम अध्ययन में उक्त मेघ कुमार के प्रासादों जैसा जानना चाहिये । यावत् ये प्रासाद अनेक स्तंभशत से युक्त हों-शोभा सौन्दर्य से संपन्न हों । (तएणं ते कोडुम्बिय पुरिसा पडिसुणेंति, जा करावेंति) राजा की इस प्रकार की आज्ञा को उन कौटुम्बिक पुरुषों ने मान लिया और हस्तिनापुर जाकर उन्होंने पांच प्रासाद कथित रूपसे बनवा दिये । (तएणं से पंडुए पचहिं पंडवेहिं दोवइए देवीए सद्धिं हय गय संपरिवुडे कंपिल्लपुराओ पडिनिक्खमइ २ जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए) इसके बाद वे पांडुराजा पांडवों और द्रौपदी देवी को साथ लेकर हय, गज, आदि चतुरंगिणी सेना के साथ २ कांपिल्यपुर नगर से चल दिये-चलकर जहां हस्तिनापुर नगर था-वहां आये (तएणं से पंडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं आगमणं

પાંચે પાંડવો માટે પાંચ ઉત્તમ મહેલ બનાવડાવો. મહેલ ઊંચા હોવા જોઈએ. આ મહેલોનું વર્ણન પહેલા અધ્યયનમાં વર્ણવવામાં આવેલા મેઘ કુમારોના મહેલો જેવું જાણી લેવું જોઈએ. યાવત્ આ બધા મહેલો ઘણા સેંકડો થાંભલાઓથી યુક્ત તેમજ શોભા તથા સૌંદર્ય સંપન્ન હોવા જોઈએ. (तएणं ते कोडुंबियपुरिसा पडिसुणेंति जाव करावेंति) આ જાતની રાજાની આજ્ઞાને કૌટુંબિક પુરુષોએ સ્વીકારી લીધી અને હસ્તિનાપુર જઈને તેઓએ કહેવા મુજબ જ પાંચ મહેલો તૈયાર કરાવી દીધા.

(तएणं से पंडुए पंचहिं पंडवेहिं दोवइए देवीए सद्धिं हयगयसंपरिवुडे कंपिल्लपुराओ पडिनिक्खमइ २ जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए)

ત્યારપછી તે પાંડુ રાજા પાંચે પાંડવો અને દ્રૌપદી દેવીને લઈને સાથે ઘોડા, હાથી વગેરેની ચતુરંગિણી સેનાની સાથે કાંપિલ્યપુર નગરની બહાર નીકળ્યા અને નીકળીને જ્યાં હસ્તિનાપુર નગર હતું ત્યાં પહોંચ્યા.

(तएणं से पंडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं आगमणं जाणित्ता कोडुंबिय०

हस्तिनापुरस्य नगरस्य बहिः प्रदेशे वासुदेवप्रमुखाणां बहूनां राजसहस्राणामावासान् कारयत, कीदृशानावासान् इत्याह-'अणेगखंभ' इत्यादि । अनेकस्तम्भशतसंनिविष्टान्, तथैव-यथाऽऽवासान् कारयितुं पाण्डुना कथितं, तथैव कारयित्वा कौटुम्बिकपुरुषा यावत् प्रत्यर्पयन्ति=राज्ञे निवेदयन्ति स्म । ततः खलु वासुदेवप्रमुखा बहु सहस्रसंख्यका राजानो यत्रैव स्वकाः स्वका आवसास्तत्रैवोपागच्छन्ति,

---

जाणित्ता कोडुंबिय० सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरस्स नयरस्स बहिया वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे करेह) वहां आकर उन पांडुराजा ने उन वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं का आगमन जानकर कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियो ! तुम लोग जाओ और हस्तिनापुर नगर के बाहिर वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं को ठहरने के लिये आवासों को बनवाओ (अणेगखंभसय तहेव जाव पच्चप्पिणंति, तएणं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागच्छंति) ये आवास अनेक सैंकडोंस्तभों से युक्त हों। इस प्रकार जैसे आवासों को बनवाने के लिये पांडु राजा ने उन कौटुम्बिक पुरुषों से कहा था-वैसे ही आवास उन कोटुम्बिक पुरुषों ने बनवादिये और बनवाकर पीछे इसकी खबर भी राजा को करदी। इसके बाद वे वासुदेव प्रमुख हजारों राजा जहां हस्तिनापुर

सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरस्स नयरस्स बहिया वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे करेह)

ત્યા આવીને તે પાડુ રાજાએ તે વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓને આવી ગયેલા જાણીને પોતાના કૌટુંબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો જાઓ અને હસ્તિનાપુર નગરની બહાર વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓને રહેવા માટે આવાસો બનાવો.

(अणेगखंभसय० तहेव जाव पच्चप्पिणंति, तए णं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागच्छंति)

આ બધા આવાસો સેંકડો સ્તભોથી યુક્ત હોવા જોઇએ આ રીતે પાડુ રાજાએ જે જાતના આવાસો બનાવડાવવાનો હુકમ કર્યો હતો તે કૌટુંબિક પુરૂષોએ તે જ જાતના આવાસો બનાવડાવી દીધા અને બનાવડાવીને કામ પુરૂ થઇ જવાની રાજાને ખબર આપી ત્યારપછી તે વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓ જ્યાં હસ્તિનાપુર નગર હતુ ત્યાં આવી ગયા.

उपागत्य तथैव यावद् विहरन्ति । ततः खलु स पाण्डु राजा हस्तिनापुरं नगरमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-यूयं खलु हे देवानुप्रियाः ! विपुलम् अशनपानपानखाद्यस्वाद्यं, उपस्कारयत, उपस्कार्य यत्रैव वासुदेवप्रमुखास्तत्रैवोपनयत । तथैव यावद् उपनयन्ति, ततस्ते कौटुम्बिकपुरुषास्तथैव विपुलमशनादि चतुर्विधाऽऽहारमुपस्कारयन्ति उपस्कार्य यावद् वासुदेवादीनामन्तिके-उपनयन्ति=उपस्थापयन्ति ।

नगर था वहां आगये । (तएणं से पंडुराराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं आगमण जाणित्ता हट्ठतुट्ठे ण्हाए कयबलिकम्मे जहा दुवए जाव जहारिहं आवासे दलयंति, तएणं ते वासुदेव पा० बहवे रायसहस्सा जेणेव सयाइं २ आवासाइं तेणेव उवाग० तहेव जाव विहरंति) वासुदेव प्रमुख उन हजारों राजाओं का आगमन जानकर पांडुराजाने हर्षित एवं संतुष्ट होकर स्नान किया वायसादि पक्षियों के लिये अन्नादि का देने रूप बलि कर्म किया- जिस प्रकार द्रुपद राजाने यथा योग्य आवासस्थान इन्हों के लिये दिये थे उसी तरह पांडुराजा ने भी उन्हें जो जिस के योग्य स्थान था वह आवासस्थान दिया । पश्चात् वे वासुदेव प्रमुख हजारों राजा जहां अपने २ ठहरने के लिये आवासस्थान थे वहां गये वहां जाकर वे उसी तरह से ठहर गये । (तएणं से पंडूराया हत्थिणाउरं नयरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता, कोडुंबिय० सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! विउलं असणं ४ तहेव जाव उव-

---

(तएणं से पंडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं आगमणं जाणित्ता हट्ठतुट्ठे ण्हाए कयबलिकम्मे जहा दुवए जाव जहारिहं आवासे दलयंति, तएणं ते वासुदेव पा० बहवे रायसहस्सा जेणेव सयाइं २ आवासाइं तेणेव उवाग० तहेव जाव विहरंति)

વાસુદેવ પ્રમુખ તે હજારો રાજાઓનું આગમન સાંભળીને હર્ષિત તેમજ સંતુષ્ટ થઈને પાંડુ રાજાએ સ્નાન કર્યું. કાગડા વગેરે પક્ષીઓના માટે અન્ન વગેરેનો ભાગ અર્પીને બલિકર્મ કર્યું. દ્રુપદ રાજાએ જેમ તે રાજાઓને યથાયોગ્ય આવાસ સ્થાનો રહેવા માટે આપ્યા હતા તેમજ પાંડુ રાજાએ પણ તેઓ બધાને ઉચિત આવાસો આપ્યા. ત્યારપછી તેઓ વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓ જ્યાં પોતપોતાના રોકાવાના આવાસો હતા ત્યાં ગયા, ત્યાં પહોંચીને તેઓ ત્યાં રોકાઈ ગયા.

(तएणं से पांडुराया हत्थिणाउरं नयरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता, कोडुंबिय० सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! विउलं असणं

ततः खलु ते वासुदेवप्रमुखा बहवो राजानः स्नाताः कृतबलिकर्माणः=काकादिजीवेभ्यः कृतान्नादिसंविभागाः, तद् विपुलम् अशनं पानं खाद्यं स्वाद्यं तथैव–आस्वादयन्तो विस्वादयन्तः परिभुञ्जाना यावद् विहरन्ति=आसतेस्म। ततस्तदनन्तरं स पाण्डुराजा तान् पञ्च पाण्डवान् द्रौपदीं च देवीं 'पट्टयं' पट्टकं=पट्टकोपरि 'दुरूहेइ' दूरोहयन्ति=आरोहयति। आरोह्य श्वेतपीतैः कलशैः स्नपयंति,

णेंति, तएणं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे राया ण्हाया कयबलिकम्मा तं विउलं असणं ४ तहेव जाव विहरंति–तएणं से पंडुराया पंचपंडवे दोवइं च दोविं पट्टयं दुरूहेइ, दुरूहित्ता सेयपीएहिं ण्हावेंति, ण्हावित्तो कल्लाण कारि करेइ) इस के बाद पांडुराजा ने हस्तिनापुर नगर में प्रवेश किया प्रवेश कर कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया बुलाकर उनसे ऐसा कहा हे देवानुप्रियो! तुम लोग विपुल मात्रामें अशनादि रूप चतुर्विध आहार बनवाओ बनवाकर फिर उसे जहां वासुदेव प्रमुख राजा ठहरे हुए हैं वहां लेजाओ। इस प्रकार की अपने राजाकी आज्ञानुसार उन्होने वैसा ही किया–चतुर्विध आहार बनवाया और फिर उसे वासुदेव आदि राजाओं के पास पहुँचा दिया। आहार के पहुँचने पर उन वासुदेव प्रमुख राजाओं ने स्नान किया बलिकर्म किया–काक आदि जीवों के लिये कृत अन्नमें से विभाग देनेरूप कियाको–बादमें उन्हों ने उस चतुर्विध आहार को किया। इसके पश्चात् पांडुराजा ने उन पांचों पांडवों

४ तहेव जाव उवणेंति, तएणं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे राया ण्हाया कयबलिकम्मा तं विउलं असणं४ तहेव जाव विहरंति–तएणं से पंडुराया पंच पंडवे दोवइं च दोविं पट्टय दुरुहेइ, दुरुहित्ता सेयपीएहिं कलसेहिं ण्हावेंति ण्हावित्ता कल्लाणकारि करेइ)

ત્યારપછી પાંડુરાજા હસ્તિનાપુર નગરમાં પ્રવિષ્ટ થયા પ્રવિષ્ટ થઈને તેઓએ કૌટુંબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે લોકો વિપુલ માત્રામાં અશન વગેરે રૂપ ચાર જાતનો આહાર બનાવડાવો. બનાવડાવીને તમે તે આહારને જ્યા વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓ રોકાયા છે ત્યાં લઈ જાઓ, આ રીતે પોતાના રાજાની આજ્ઞા સાંભળીને તે લોકોએ તે પ્રમાણે જ કર્યું. તેઓએ ચાર જાતના આહારો બનાવડાવ્યા અને ત્યારપછી તે આહારોને વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓની પાસે પહોંચાડી દીધા. આહાર પહોંચાડી દીધા બાદ તે વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓએ સ્નાન કર્યું અને કાગડા વગેરે પક્ષીઓને અન્ન ભાગ અર્પીને બલિકર્મ કર્યું. ત્યાર પછી તેઓએ તે ચાર જાતના આહારને જમ્યા. ત્યારબાદ પાડુ રાજાએ તે

स्नपयित्वा 'कल्लाणकारिं' कल्याणकारि-शुभकारकं कर्म कारयति, कारयित्वा तान् वासुदेवप्रमुखान् बहुसहस्रसंख्यकान् राज्ञो विपुलेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन भोजयति, भोजयित्वा पुष्पवस्त्रादिभिः सत्कारयति, संमानयति, सत्कार्य संमान्य यावत् प्रतिविसर्जयति । ततः खलु ते वासुदेवप्रमुखा बहुसहस्रसंख्यका राजानो यावत् प्रतिगताः ॥ सू०२३ ॥

मूलम्—तएणं ते पंच पंडवा दोवईए देवीए सद्धिं कल्लाकल्लिं वारंवारेणं ओरालाइं भोगभोगाइं जाव विहरंति, तएणं से पंडू राया अन्नया कयाइं पंचहिं पंडवेहिं कोंतीए देवीए

को और द्रौपदी देवी को एक पट्टक पर बैठाया—बैठाकर उन का श्वेत पीत कलशों से चांदी और सोने के घडों से स्नान करवाया स्नान करवाकर फिर उसने उनका शुभकारक कर्म करवाया । (करित्ता ते वासुदेव पामोक्खे वहवे रायसहस्से विउलेणं असण ४ पुप्फवत्थेणं सक्कारेइ सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ, तएणं ताइं वासुदेवपामोक्खाइं वहूहिं जाव पडिगयाइं) शुभकारक कर्म करवाकर बाद में उन वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं का उस पांडुराज ने विपुल अशन पान आदिरूप चतुर्विध आहार से एवं पुष्प वस्त्रादि से खूब सत्कार किया सन्मान किया । यावत् फिर उन्हें अपने यहांसे अच्छी तरह से बिदा कर दिया । इसके बाद वे वासुदेव प्रमुख हजारों राजा जहां २ से जो २ आये थे वहां २ चले गये ॥ सू० २३ ॥

પાંચે પાંડવો અને દ્રૌપદી દેવીને એક પટ્ટક ઉપર બેસાડયા અને બેસાડીને સફેદ તેમજ પીળા કળશોથી એટલે કે ચાંદી અને સોનાના કળશોથી તેમને સ્નાન કરાવ્યું. સ્નાન કરાવ્યા બાદ તેમણે તેમની પાંસેથી શુભ કર્મો કરાવડાવ્યાં.

(करित्ता ते वासुदेवपामोक्खे वहवे रायसहस्से विउलेणं असण पुप्फवत्थेणं सक्कारेइ, सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ तएण ताइं वासुदेवपामोक्खाइं वहूहिं जाव पडिगयाइं)

શુભ કર્મો કરાવ્યા બાદ તે વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓને તે પાંડુ રાજાએ વિપુલ અશન-પાન વગેરે રૂપ ચતુર્વિધ આહારથી તેમજ પુષ્પ વસ્ત્ર વગેરેથીખૂબ જ સત્કાર કર્યો અને સન્માન કર્યું. યાવત ત્યારપછી તેઓને ત્યાથી સારી રીતે વિદાય કર્યા. વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓ પણ જ્યાથી આવ્યા હતા ત્યાં જતા રહ્યા. ॥ સૂત્ર ૨૩ ॥

दोवइए देवीए य सद्धिं अंतो अंतेउरपरियालसद्धिं संपरिवुडे सीहासणवरगए यावि विहरइ, इमं च णं कच्छुल्लणारए दंसणेणं अइभद्दए विणीए अंतो२ य कलुसहियए मज्झत्थोवत्थिए य अल्लीणसोमपियदंसणे सुरूवे अमइलसगलपरिहिए कालमियचम्मउत्तरासंगरइयवच्छे दण्डकमण्डलुहत्थे जडामउडदित्तसिरए जन्नोवइयगणेत्तियमुंजमेहलवागलधरे हत्थकयकच्छभीए पियगंधव्वे धरणिगोयरप्पहाणे संवरणावरणिओवयणिउप्पयणि लेसणीसु य संकामणिअभिओगपण्णत्ति गमणीथंभणीसु य बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु विस्सुयजसे इट्ठे रामस्स य केसवस्स य पज्जुन्नपईवसंबअनिरुद्धणिसढ—उम्मुयसारणगयसुमुहदुम्मुयहातीण जायवाणं अद्धुट्ठाण कुमारकोडीणं हिययदइए संथवए कलहजुद्धकोलाहलप्पिए भंडणाभिलासी बहुसु य समरसयसंपराएसु दंसणरए समंतओ कलहंसदक्खणं अणुगवेसमाणे असमाहिकरे दसारवरवीरपुरिसतिलोक्कबलवगाणं आमंतेऊण तं भगवई पक्कमणिं गगणगमणदच्छं उप्पइओ गगणमभिलंघयंतो गामागरनगरनिगमखेडकब्बडमडंबदोणमुहपट्टणासमसंवाहसहस्समंडियं थिमियमेइणीतलं वसुहं ओलोइंतो रम्मं हत्थिणाउरं उवागए पंडुरायभवणंसि अइवेगेण समोवइए, तएणं से पंडुराया कच्छुल्लनारयं एज्जमाणं पासइ पासित्ता पंचहिं पंडवेहिं कुंतीए य देवीए सद्धिं आसणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता कच्छुल्लनारयं सत्तट्ठपयाइं पच्चुग्गच्छइ पच्चुग्गच्छित्ता तिक्खु-

त्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ करित्ता वंदइ णमंसइ महरिहेणं आसणेणं उवणिमंतेइ,तएणं से कच्छुल्लनारए उदगपरिफासियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए णिसीयइ, णिसीयित्ता पंडुरायं रज्जे जाव अंतेउरे य कुसलोदंतं पुच्छइ, तएणं से पंडूराया कोंती-देवी पंच य पंडवा कच्छुल्लणारयं आढंति जाव पज्जुवासंति, तएणं सा दोवई कच्छुल्लनारयं असंजय अविरय अपडिहयप-च्चक्खायपावकम्मे त्तिकट्टु नो आढाइ नो परियाणइ नो अब्भु-ट्ठेइ नो पज्जुवासइ ॥ सू० २४ ॥

टीका—'तएणं ते' इत्यादि। ततस्तस्तदनन्तर खलु ते पञ्चपाण्डवा द्रौपद्या देव्या सार्धं 'कल्लाकल्लि' कल्याकल्ये प्रतिदिवसं वारंवारेण उदारान् भोगभोगान् यावद् भुञ्जाना विहरन्ति। ततः खलु स पण्डू राजाऽन्यदा कदाचित् पञ्चभिः पाण्डवैः कुन्त्या देव्या द्रौपद्या देव्या च सार्धं 'अंतो अंतेउरपरियाल'

'तएणं ते पंच पंडवा' इत्यादि।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (ते पंच पंडवा) वे पांचों पांडव (दोवईए देवीए) द्रौपदी देवी के साथ-(कल्लाकल्लिं वारंवारेणं ओरालाइं भोग भोगाइं जाव विहरंति-तए णं से पंडूराया अन्नया कयाई पंचहिं पंडवेहिं कोंतीए देवीए दोवईए देवीए य सद्धिं अंतेउरपरियालसद्धिं संपरिवुडे सीहासणवरगए यावि विहरइ) प्रतिदिन बारी बारी से उदारकाम भोगों को भोगने लगें एक दिन की बात है-कि पांडु राजा किसी एक समय पांचों पांडवों एवं अपनी पत्नी कुन्ती देवी और पुत्रवधू द्रौपदी

ટીકાર્થ—"તએણં તે પંચ પંડવા ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ-(તએણં) ત્યારપછી (તે પંચ પંડવા) તે પાંચ પાંડવો (દોવઈએ દેવીએ) દ્રૌપદી દેવીની સાથે

(કલ્લાકલ્લિં વારંવારેણં ઓરાલાઇં ભોગભોગાઇં જાવ વિહરંતિ-તએણં સે પંડૂરાયા અન્નયા કયાઇં પંચહિં પંડવેહિં કોંતીએ દેવીએ દોવઇએ દેવીએ ય સદ્ધિં અંતેઉરપરિયાલસદ્ધિં સંપરિવુડે સીહાસણવરગએ યાવિ વિહરઇ)

દરરોજ વારાફરતી ઉદાર કામભોગ ભોગવવા લાગ્યા. એક દિવસની વાત

अन्तः=अन्तःपुरस्य प्रासादमध्ये अन्तःपुरपरिवारेण 'परियाल' इति लुप्ततृतीयान्तं सार्धं संपरिवृतः सिंहासनवरगतश्चापि विहरति। 'इमं च' अस्मिन् समये खलु 'कच्छुल्लणारए' कच्छुल्लनाम्नाप्रसिद्धो नारदः दर्शनेन 'अइभद्दए' अतिभद्रकः=भद्रदर्शनः 'विणीए' विनीतः=नम्रो बाह्यतः 'अंतो य' अन्तश्च-कलुषहृदयः, 'मज्झत्थोवत्थिए य' माध्यस्थ्योपस्थितः=बाह्यतो मध्यस्थभावं प्राप्तः 'अल्लीणसोमपियदंसणे' आलीनसौम्यप्रियदर्शनः आलीनानामाश्रितानां सौम्यम् =आह्लादकं, प्रियं = प्रीतिकारकं दर्शनं यस्य स तथा, सुरूपः – सुन्दराकृतिकः, तथा-'अमइलसगलपरिहिए' अमलिनसकलपरिहितः=अमलिनं सकलम्-अखण्डम् परिहितं-वल्कलवस्त्ररूपं परिधानं यस्य स तथा, 'कालमियचम्मउत्तरासंग-

---

के साथ अंतःपुर के प्रासाद के भीतर अन्तःपुरपरिवार के साथ सिंहासन पर बैठे हुए थे-कि (इमंच णं) इसी समय (कच्छुल्लणारए पंडुरायभवणंसि अइवेगेण समोवइए दंसणे णं अइभद्दए, विणीए, अंतोय कलुसहियए मज्झत्थोवत्थिए य, अल्लीणसोमपियदंसणे सुरूवे अमइलसगलपरिहिए) पांडुराजा के भवन में कच्छुल्लनाम से प्रसिद्ध नारद गगन-आकाश-मार्ग से बड़े वेगसे उतर कर आये। नारद देखने में अति भद्र थे। ऊपर से बड़े विनीत थे। परन्तु भीतर में इनका हृदय बहुत अधिक कलुषित था। केवल ऊपर से ये माध्यस्थ भाव संपन्न थे। अपने आश्रित व्यक्तियों को इनका दर्शन आह्लादक एवं प्रीति कारक होता था। आकृति उनकी बड़ी सुन्दर थी। इनका बल्कल रूप परिधान अमलिन-साफ स्वच्छ और खण्ड रहित था। (कालमिय

છે કે તે પાંડુ રાજા કોઈ એક વખતે પાચે પાંડવો, પોતાની પત્ની કુંતી દેવી અને પુત્ર વધુ દ્રૌપદીની સાથે રણુવાસના મહેલની અંદર પોતાના પરિવારની સાથે સિંહાસન ઉપર બેઠા હતા. (इमं च णं) તે વખતે

(कच्छुल्लणारए पंडुरायभवणंसि अइवेगेण, समोवइए दंसणे णं अइभद्दए विणीए अंतोय कलुसहियए मज्झत्थोवत्थिए य, अल्लीणसोमपियदंसणे सुरूवे अमइलसगलपरिहिए)

પાંડુ રાજાના ભવનમાં કચ્છુલ્લ નામથી પંકાયેલા નારદ ગગન-આકાશ માર્ગથી બહુ જ વેગથી ઉતરીને આવ્યા. નારદ દેખાવમાં અત્યંત ભદ્ર હતા. ઉપર ઉપરથી તેઓ એકદમ વિનમ્ર હતા. પણ અંતર તેમનું મન ખૂબ જ કલુષિત હતું. ફક્ત ઉપર ઉપરથી જ તેઓ માધ્યસ્થ ભાવ સંપન્ન હતા. આશ્રિત વ્યક્તિઓને તેમનું દર્શન આહ્લાદક અને પ્રીતિકારક હતું. તેમની આકૃતિ ખૂબ જ સુંદર હતી તેમનું વલ્કલ રૂપ પરિધાન, એકદમ સ્વચ્છ-નિર્મળ હતું અને ખંડરહિત હતું.

रइयवच्छे' कालमृगचर्मोत्तरासंगरचितवक्षाः-कृष्णमृगचर्मोत्तरासङ्गेन रचितं शोभितं वक्षो यस्य स तथा, कृष्णमृगचर्मोत्तरीयवस्त्रधारकः। तथा-'दंडकमंडलुहत्थे' दण्डकमण्डलुहस्तः-'जडामउडदित्तसिरए' जटामुकुटदीप्तशिरस्कः, जण्णोवइयगणेत्तियमुंजमेहलावागलधरे' यज्ञोपवीतगणेत्रिकामुञ्जमेखलावल्कलधरः-तत्र यज्ञोपवीतं यज्ञसूत्रं गणेत्रिका-रुद्राक्षकृतं कलाचिकाभरणं, मुञ्जमेखला-मुञ्जमयं कटिबन्धनसूत्रं वल्कलं वृक्षत्वक्, तेषां धारकः स्कन्धोपरियज्ञसूत्रधारी, करमूले धृतरुद्राक्षमालः, मुञ्जमयकटिसूत्रधारी, शरीरे परिधृतवल्कल इत्यर्थः। 'हत्थकयकच्छभीए' हस्तकृतकच्छपिकः-हस्ते कृता कच्छपिका-वीणा येन स तथा, 'पियगंधव्वे' प्रियगन्धर्वः-गानप्रियः, 'धरणिगोयरप्पहाणे' धरणिगोचरप्रधानः-धरणिगोचराणां-भूमिचारिणां जनानां मध्ये प्रधानस्तस्या काशेऽपि विहरणशीलत्वात्

चम्मउत्तरासंगरइयवच्छे दण्डकमण्डलुहत्थे, जडामउडदित्तसिरए, जन्नोवइयगणेत्तिय मुंजमेहलवागलधरे, हत्थकयकच्छभीए, पियगंधव्वे, धरणिगोयरप्पहाणे, संवरणावरणिओवयणिउप्पयणी लेसणीसुयसंकामणि अभिओगपण्णत्ति गमणीथंभणीसु य बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु विस्सुयजसे) इनका वक्षस्थल काले मृग के चर्म रूप उत्तरासंग से सुशोभित था। दण्ड और कमण्डलु इनके हाथोंमें था। जटारूपी मुकुट से इनका मस्तक दीप्त हो रहा था। यज्ञसूत्र-जनेऊ, गणेत्रिका कलाई का आभरण रूप रुद्राक्ष की माला, मुञ्जमेखला-मुंज का बना हुआ कटि बन्धन सूत्र, और वृक्ष की छाल इन्हों ने धारण कररक्खी थी। हाथमें कच्छपिका-वीणा ले रखी थी। गान इन्हें बहुत प्रिय था। भूमि गोचरियों के बीच में ये प्रधान थे-क्यों कि ये आकाश में भी विहार

(कालमियचम्मउत्तरासंगरइयवच्छे दण्डकमण्डलुहत्थे जडामउडदित्तसिरए, जन्नोवइय गणेत्तियमुंजमेहलवागलधरे, हत्थकयकच्छभीए पियगंधव्वे, धरणिगोयरप्पहाणे, संवरणावरणिओवयणिउप्पयणिलेसणीसु य संकामणि अभिओगपण्णत्ति गमणीथंभणीसुय बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु विस्सुयजसे)

તેમનું વક્ષસ્થળ કાળા હરણના ચર્મરૂપ ઉત્તરાસંગથી શોભતું હતું. દંડ અને કમંડળ તેમનાં હાથોમાં હતા. જટા રૂપી મુકુટથી તેમનું મસ્તક પ્રકાશિત થઈ રહ્યું હતું. યજ્ઞ સૂત્ર-જનોઈ, ગણેત્રિકા-કાંડામા પહેરવાની આભરણ રૂપ રૂદ્રાક્ષની માળા, મુંજ-મેખલા-મુંજનું બનેલું કેડમાં પહેરાવાનું બંધન સૂત્ર અને વૃક્ષકની છાલ તેઓએ ધારણ કરેલી હતી. હાથમાં તેઓએ કચ્છપિકા-વીણા ધારણ કરેલી હતી. સંગીત તેમને ખૂબ જ ગમતું હતું. ભૂમિ ગોચરીઓને વચ્ચે તેઓ પ્રધાન હતા કેમકે તેઓ આકાશમાં વિચરણ કરતા

" संवरणावरणिओवयणिउप्पयणिलेसणीसु य " संवरण्यावरण्यवपतन्युत्पतनी-श्लेषणीषु च ' संवरणी-स्वस्यान्तर्धानकारिणी विद्या, आवरणी-परस्यान्तर्धान-कारिणी विद्या, अवपतनीअधोऽवतरणी विद्या, उत्पतनी-ऊर्ध्वगमनकारिणी विद्या, श्लेषणी-वज्रलेपादिवत् सन्धानकारिणी विद्या, तासु, तथा-' संकामणि अभि-ओगपण्णत्ति गमणीथंभणीसु य ' संक्रमण्यभियोगप्रज्ञप्तिगमनीस्तम्भनीषु च-संक्रामणी-विद्या-विशेषः यया-परशरीरादौ प्रवेष्टुं शक्नोति, सा विद्या, अभि-योगः स्वर्णादिनिर्माणविद्या वशीकरणविद्या च, प्रज्ञप्तिः=अविदितार्थबोधिनी गमनी

करते थे। संवरणी, आवरणी अवपतनी, उत्पतनी, श्लेषणी इन विद्या-ओं में तथा संक्रमणी, अभियोग, प्रज्ञप्ति, गमनी स्तम्भिनी इन नाना प्रकार की विद्याधर संबन्धी विद्याओं में इनकी कीर्ति विख्यात थी। जिस विद्या के प्रभाव से अपने आपको अन्तर्धान कर दिया जाता जाता है उसका नाम संवरणी विद्या है। दूसरा जिस विद्या से अन्त-र्धान करदिया जाता है उस विद्या का नाम आवरणी विद्या है। जिस विद्या के प्रभाव से ऊपर से नीचे उतरा जाता है उसका नाम अव-पतनी और जिसके प्रभाव से ऊर्ध्व में गमन किया जाता है उसका नाम उत्पतनी विद्या है। वज्रलेप आदि की तरह जो चिपका देती है वह श्लेषणी विद्या है। जिस विद्या के बल से दूसरे के शरीरमें प्रविष्ट होना होता है-ऐसी परशरीरप्रवेशकारिणी विद्याका नाम संक्रमणी विद्या है। स्वर्ण आदि के बनाने की जो निपुणता है-एवं परको

હતા. સંવરણી, આવરણી, અવપતની, ઉત્પતની, શ્લેષણી આ બધી વિદ્યા-ઓમાં તેમજ સંક્રમણી, અભિયોગ, પ્રજ્ઞપ્તિ, ગમની, સ્તંભની આ અનેક જાતની વિદ્યાધર સંબંધી વિદ્યાઓમાં તેમની કીર્તિ ચોમેર પ્રસરેલી હતી જે વિદ્યાના પ્રભાવથી પોતાની જાતને અદૃશ્ય કરી શકાય છે તે સંવરણી વિદ્યા છે. જે વિદ્યાથી બીજાને અદશ્ય કરી શકાય છે તે આવરણી કહેવાય છે. જે વિદ્યાના પ્રભાવથી ઉપરથી નીચે ઉતરી શકાય છે તે અવપતની અને જેના પ્રભાવથી ઉર્ધ્વ (આકાશ) માં ગમન કરી શકાય છે તે વિદ્યાનું નામ ઉત્પ-તની છે. વજ્ર લેપ વગેરેની જેમ જે ચોટાડી દે છે તે શ્લેષણી વિદ્યા છે. જે વિદ્યાના બળથી બીજાના શરીરમા પ્રવેશી શકાય એવી પરકાય પ્રવેશ કરિણી વિદ્યાનું નામ સંક્રમણી વિદ્યા છે. સોનું વગેરે બનાવવામાં જે નિપુણતા છે અને બીજાને વશવર્તી કરવાની જે શક્તિ છે તે વિદ્યાનું નામ અભિયોગ

-गमनप्रकर्षसाधिका-आकाशगामिनी च विद्याविशेषः-स्तम्भनी-स्तम्भनकारिणी विद्या, तासु 'बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु' बहुषु-नानाविधासु विद्याधरीषु=विद्याधर सम्बन्धिषु विद्यासु 'विस्सुयजसे' विश्रुतयशाः-विद्यासु नैपुण्या=विख्यातकीर्तिः, इष्टः=प्रियः, रामस्य=बलदेवस्य केशवस्य=कृष्णवासुदेवस्य च पुनः केषां प्रियइत्याह-' पज्जुन्नपईवसंबअनिरुद्धनिसढउस्सुयसारणगयसुमुहदुम्मुहाईणं जायवाणं ' प्रद्युम्न प्रतीपशाम्बानिरुद्धनिषधोत्सुकसारणगजसुमुखदुर्मुखादीनां यादवानाम्, प्रद्युम्नादीनां संख्यामाह-प्रद्युम्नः, प्रतीपः, शाम्बः, अनिरुद्धः, निषधः, उत्सुकः,

---

वश में करने कि जो शक्ति है उस विद्या का नाम अभियोग विद्या है। अविदित अर्थ जिस के प्रभाव से विदित हो जावे वह प्रज्ञप्ति विद्या गमन प्रकर्ष की साधक तथा आकाश में गमन कराने वाली विद्या गमनी विद्या स्तम्भन कराने वाली विद्यास्तम्भिनी विद्या है। (इट्ठे रामस्स य केसवस्स य पज्जुन्नपईयसंब अनिरुद्धणिसढउम्मुय सारण गयसुमुह दुम्मुहातीण जायवाणं अद्धुट्ठाण कुमारकोडीणं हियय‌दइए संथवए कलहजुद्धकोलाहलप्पिए, भंडणाभिलासी, बहुसु य समर सयसंपराएसु दंसणरए, समंतओ कलहंसदक्खणं अणुगवेसमाणे, असमाहिकरे दसारवरवीरपुरिसतिलोक्कबलवगाणं, आमंतेऊण तं भगवई पक्कमणि गगणगमणदच्छं उप्पइओ गगणमभिलंघयंतो गामागरनगरनिगमखेडकव्वडमडंबदोणमुहपट्टणासमसंवाहसहस्समंडियं थिमियमेइणीतलं वसुहं आलोइंतो रम्मं हत्थिणाउरं उवागए) बलदेव एवं कृष्ण वासुदेव को ये इष्ट थे तथा साढे तीन करोड, प्रद्युम्न, प्रतीप, साम्ब, अनिरुद्ध निषध उत्सुक, सारण, गज सुकुमाल सुमुख दुर्मुख

વિદ્યા છે અવિદિત અર્થ જેના પ્રભાવથી જાણી શકાય તે પ્રજ્ઞપ્તિ વિદ્યા, ગમન પ્રકર્ષની સાધિકા તેમજ આકાશમાં ગમન કરનારી વિદ્યા ગમની વિદ્યા કહેવાય છે. સ્તંભન કરાવનારી વિદ્યા સ્તંભની વિદ્યા છે. (इट्ठे रामस्स य केसवस्स य पज्जुन्नपईवसंबअनिरुद्धणिसढउस्सुयसारणगयसमुहदुम्मुहत्तीण जायवाणं अद्धुट्ठाणकुमारकोडीगं हिययदइए संथवए कलहजुद्धकोलाहलप्पिए, मंडणाभिलासी, बहुसयसमरसयसंपराएसु दंसणरए समंतओ कलहंसदक्खणं अणुगवेसमाणे असमाहिकरे दसारवरवीरपुरिसतिलोक्कबलवगाणं, आमंतेऊण तं भगवई, पक्कमणि गगणगमणदच्छं उप्पइओ गगणमभिलंघयंतो गामागरनगरनिगमखेडकव्वडमडंब दोणमुहपट्टणासमसंवाहसहस्समंडियं थिमिण मेइणीतलं वसुहं आलोइंतो रम्मं हत्थिणाउरं उवागए) બળદેવ તેમજ કૃષ્ણ વાસુદેવને તેઓ ઈષ્ટ હતા અને સાડા ત્રણ કરોડ પ્રદ્યુમ્ન, પ્રતીપ, સામ્બ, અનિરૂદ્ધ, નિષધ, ઉત્સુક, સારણ, ગજ સુકુમાલ, સુમુખ દુર્મુખ વગેરે વડાય કુમારોને માટે તેઓ હૃદયદયિત હતા એટલે કે ખૂબ જ પ્રિય હતા. એટલા

सारणः, गजसुकुमालः, सुमुखः, दुर्मुखः, इत्यादयो यादवकुमारास्तेषां ' अद्भुट्ठाणं कुमारकोडीणं ' अर्धचतुर्थीनां कुमारकोटीनां च सार्धत्रिकोटिप्रमितानां यादवकुमाराणामित्यर्थः ' हियय‌दइए ' हृदयदयितः=हृदयप्रियः, ' संथावए ' संस्तावकः-यादवानां प्रशंसकः, तथा-कलहयुद्धकोलाहलप्रियः=कलहो=विवादः, युद्धं=शस्त्रादिभिः प्रहरणं, कोलाहलो=जनानां महाध्वनिः, एते प्रियाः प्रमोदजनका यस्य स तथा, ' भंडणाभिलासी ' भण्डनाभिलाषी=भण्डनं राटिः-कलहः 'राड़' इति भाषायां तस्याभिलाषी तथा-बहुषु च समरशतसंपरायेषु=समरशतसंग्रामेषु दर्शनरत.=दर्शनाऽऽसक्तः, ' समंतओ ' समन्ततः सर्वप्रकारेण-परस्परं च कलहं ' सदक्खणं ' सदाक्षणं=सर्वस्मिन् क्षणे ' अणुगवेसमाणे ' अनुगवेषयन्=अन्वेषयन् , ' असमाहिकरे ' असमाधिकरः-चित्तविक्षेपकारकः चित्तस्यास्थैर्यकरः केषां चित्तस्य विक्षेपकइत्याह—' दसारवरवीरपुरिसतिलोकवलवगाणं ' दशार्हवरवीरपुरुषत्रैलोक्यबलवतां-दशार्हाः-समुद्रविजयादयो दशसंख्यकाः त एव वराः श्रेष्ठाः

इत्यादि यादवकुमारों के लिये ये हृदय दयित थे-अत्यंत प्रिय थे। इसी कारण यादवोंके प्रशंसक थे। कलहविवाद युद्ध एवं मनुष्यों का कोलाहल ये सब इन्हें बहुत अधिक अच्छे लगते थे। आनन्द जनक होते थे। राड़ (लडाई) के ये अभिलाषी बने रहते थे। अर्थात् हर एक जगह किसी न किसी रूप में परस्पर में लोगों में तकरार, कजिया कैसे उत्पन्न हो इस बात का इन्हें विशेष ध्यान रहता था। समर शतसंग्राम के देखने में इन्हें विशेष हर्षोल्लास होता था। सब प्रकार से परस्पर में सब समय में ये कलह की गवेषणा करने में ही लगे रहते थे। नेमिनाथ की अपेक्षा त्रैलोक्य में विशिष्ट बलवाली जो श्रेष्ठ वीर पुरुष समुद्र विजयादि दश

માટે જ તેઓ યાદવોનાં વખાણ કરનારા હતા. કલહ-કંકાસ, વિવાદ, યુધ્ધ અને માણુસોનો શોરબકોર આ બધું તેમને બહુ જ ગમતું હતું. આ બધાથી તેમને ખૂબ જ મજા પડતી હતી, કજીયો તેમને ખૂબજ ગમતો હતો એટલે કે દરેક સ્થાને ગમે તે કારણુને લીધે વચ્ચે પરસ્પર કલહ-કંકાસ કજીયો કેવી રીતે શરૂ થાય આ વાતની તેઓ તક જોતા રહેતા હતા. સેંકડો યુદ્ધોના બીભત્સ દૃશ્ય જોવામાં તેમને ખૂબ જ આનંદનો અનુભવ થતો હતો. તેઓ બધી રીતે રાત અને દિવસ એકબીજાને લડાવવાની શોધમાં જ ચોંટી રહેતા હતા. નેમિનાથની અપેક્ષા ત્રૈલોકયમાં સવિશેષ બળવાન શ્રેષ્ઠ વીર પુરૂષ સમુદ્રવિજય વગેરે દશ દશાર્હો હતા તેમના ચિત્તને તેઓ કષ્ટ આપનારા હતા.

वीराः पुरुषास्त्रैलोक्ये बलवन्तः नेमिनाथापेक्षया तेषाम्, 'आमंतेऊण तं भगवई' आमन्त्र्य=प्रयुज्य तां भगवतीं-विद्यां, कीदृशीं विद्यामित्याह—'पक्कमणिं' प्रक्रमणीं=प्रकृष्टगमनशक्ति-शालिनीं 'गगणगमणदच्छं' गगनगमनदक्षाम्=आकाशे गमने समर्थाम् 'उप्पइओ' उत्पतितः, गगनमभिलङ्घयन् उड्डीय गमनेनाकाशतलमुल्लङ्घयन् 'गामागरनगरनिगमखेडकव्वडमडंबदोणमुहपट्टणासमसंवाहसहस्समंडियं' ग्रामाकरनगरनिगमखेटकर्बटमंडबद्रोणमुखपत्तनाश्रमसंवाहसहस्रमण्डितं, तत्र-अष्टादशकरग्राह्यो ग्रामः, आकरः=स्वर्णाद्युत्पत्तिभूमिः, अविद्यमानकरं नगरं, निगमं=वणिग्ग्रामं खेटं=धूलीप्रकारं, कर्बटं=कुत्सितनगरं, यत्र योजनान्तराले ग्रामादिनास्ति तन्मडम्बं यत्र जलस्थलमार्गाभ्यां, भाण्डान्यागच्छंति तत् द्रोणमुखं, पत्तनं=द्विधा-जलपत्तनं स्थलपत्तनं, यत्र पर्वतादिदुर्गे लोका धान्यानि संवहंति स संवाह एतैः सहस्रैर्मण्डितं, स्तिमितमेदिनीतलं, 'वसुहं' वसुधां भूमि 'ओलोइंतो' अवलोकयन्=पश्यन् रम्यं हस्तिनापुरं नगरमुपागतः पाण्डुराजभवनेऽतिवेगेन समुपेतः=गगनादवतीर्ण इत्यर्थः ।

ततः खलु स पाण्डूराजा कच्छुल्लनारयं' कच्छुल्लनारदम् आगच्छन्तं पश्यति-दृष्ट्वा पञ्चभिः पाण्डवैः कुन्त्या च देव्यासार्धमासनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय

दशार्ह थे उनके ये सदा चित्त के विक्षेप कारक बने रहते थे। गमन में विशिष्ट शक्ति प्रदान करने वाली एवं आकाश में उठाकर ले चलने वाली उस भगवती प्रक्रमणी विद्या को प्रयुक्त करके ये आकाश में उड़ा करते थे। ये नारद, गमन से आकाशतल को उल्लंघन करते हुए ग्राम, आकर, नगर, निगम खेट, कर्बट, मडंब, द्रोणमुख, पत्तन, संवाह इनके सहस्रों से मंडित हुई ऐसी स्तिमितमेदनीतलवाली वसुधा-भूमि को देखते हुए रम्य हस्तिनापुर नगर में आये और वहां से गगनमार्ग से होकर फिर ये पांडुराज के भवन में पहुँचे। ऐसा संबंध यहां लगाना (तएणं से पंडूराया कच्छुल्लनारयं एज्जमाणं पासइ) इस के बाद पांडुराजा ने कच्छुल्ल इन नारद को आते हुए जब देखा (पासित्ता) तो

ગમનમાં વિશિષ્ટ શક્તિ આપનારી અને આકાશમાં ઉડાડીને લઈ જનાર તે ભગવતી પ્રક્રમણી વિદ્યાના બળથી તેઓ આકાશમાં ઉડતા રહેતા હતા. આ રીતે આ નારદ ગમનથી આકાશને ઓળંગીને સહસ્રો ગ્રામ, આકર નગર, નિગમ ખેટ કર્બટ, મડંબ, દ્રોણમુખ, પત્તન, સંબાહોથી, મંડિત અને સ્તિમિત પૃથ્વીને જોતા રમણીય હસ્તિનાપુર નગરમાં આવ્યા અને ત્યાંથી આકાશ માર્ગમાં થઈને પાંડુરાજના ભવનમાં પહોંચ્યા. (तएणं से पांडुराया कच्छुल्लनारयं एज्जमाणं पासइ) ત્યારબાદ પાંડુરાજાએ કચ્છુલ્લનારદને જ્યારે આવતા જોયા (पासित्ता) ત્યારે જોઈને (पंचहिं पंडवेहिं कुंतीए देवीए सद्धिं आसणाओ

कच्छुल्लनारदं सप्ताष्टपदानि प्रत्युद्गच्छति, नारदाभिमुखमायाति, प्रत्युद्गत्य 'तिक्खुत्तो' त्रिः कृत्वः – त्रिवारं, 'आयाहिणपयाहिणं' आदक्षिणप्रदक्षिणं करोति, कृत्वा वन्दते, नमस्यति वंदित्वा, नत्वा, महार्हेण–महतां योग्येन आसनेन उपनिमन्त्रयति। उपवेशनार्थं प्रार्थयति। ततः खलु स कच्छुल्लनारदः 'उदगपरिफासियाए' उदकपरिस्पृष्टायां जलच्छटेन सिक्तायां 'दब्भोवरिपच्चत्थुयाए' दर्भोपरिप्रत्यवस्तृतायां कुशे पर्यास्तीर्णायां 'भिसियाए' वृष्यां आसनविशेषे निषीदति=उपविशति, निषद्य पाण्डुं राजानं राज्ये यावदन्तः पुरे च कुशलोदन्तं–कुशलवार्तां पृच्छति, ततः खलु स पाण्डुराजा कुन्तीं देवीं पञ्च च पाण्डवा, कच्छुल्लनारदं 'आढंति' आद्रियन्ते यावत् पर्युपासते=सेवन्ते स्म। ततः खलु सा द्रौपदी कच्छुल्लनारदम् 'असंजयअविरयअपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे त्तिकट्टु' असंयताविरताप्रतिहताप्रत्याख्यातपापकर्मेति कृत्वा, तत्र–असंयतः–वर्तमानकालिकसर्वसावद्यानुष्ठाननिवृत्तः

देखकर (पंचहिं पंडवेहिं कुंतीए देवीए सद्धिं आसणाओ अब्भुट्ठेइ) ये पांचो पांडवो एवं कुन्ती के साथ अपने आसन से उठे। (अब्भुट्ठित्ता कच्छुल्लनारयं सत्तट्ठपयाइं पच्चुग्गच्छइ) और उठकर सात आठ पैर कच्छुलनारद के सामने स्वागत निमित्त गये (पच्चुग्गच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ नंमसइ, महरिहेणं आसणेणं उवणिमंतेइ तएणं से कच्छुल्लनारए उदगपरिफासियाए दब्भोवरि पच्चत्थुयाए भिसीयाए णिसीयइ, णिसीयित्ता पंडुरायं रज्जे जाव अंतेउरे य कुसलोदंतं पुच्छइ, तएणं से पंडुराया कोंतीदेवी पंचय पंडवा कच्छुल्लनारयं आढंति जाव पज्जुवासंति, तएणं सा दोवई कच्छुल्ल नारयं असंजयअविरयअपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे त्ति कट्टु नो आढाइ नो परियाणइ नो अब्भुट्ठेइ, नो पज्जुवासइ) जाकर के इन्हों ने

અબ્ભુટ્ઠેઇ) તેઓ પાંચે પાંડવો અને કુંતીની સાથે પોતાના આસન ઉપરથી ઊભા થયા. (અબ્ભુટ્ઠિત્તા કચ્છુલ્લનારયં સત્તટ્ઠપયાઇં પચ્ચુગ્ગચ્છઇ) અને ઊભા થઈને કચ્છુલ્લ નારદના સ્વાગત માટે સાત આઠ ડગલાં સામે ગયા.

(પચ્ચુગ્ગચ્છિત્તા તિક્ખુત્તો આયાહિણપયાહિણં કરેઇ, કરિત્તા વંદઇ નમંસઇ, મહરિહેણં આસણેણં ઉવણિમંતેઇ, તએણં સે કચ્છુલ્લનારએ ઉદગપરિફાસિયાએ દબ્ભોપરિપચ્ચત્થુયાએ ભિસિયાએ ણિસીયઇ, ણિસીયિત્તા પંડુરાયં રજ્જે જાવ અંતેઉરેય કુસલોદંતં પુચ્છઇ તએણં સે પંડુરાયા કોંતીદેવી પંચય પંડવા કચ્છુલ્લનારયં આઢંતિ જાવ, પજ્જુવાસંતિ, તએણં સા દોવઈ કચ્છુલ્લનારયં અસંજયઅવિરયઅપડિહયપચ્ચક્ખાયપાવકમ્મે ત્તિ કટ્ટુ નો આઢાઇ નો પરિયાણઇ નો અબ્ભુટ્ઠેઇ, નો પજ્જુવાસઇ)

संयतस्तथा विधो न भवति यः सोऽसंयतः=संयमरहित इत्यर्थः, अविरतः=अतीत कालिकपापाज्जुगुप्सापूर्वकं, भविष्यति च संवरपूर्वकमुपरतो निवृत्तो विरतस्तथा विधो न भवति यः सोऽविरतः, विरतिरहितः, अप्रतिहतप्रत्याख्यातपापकर्मा प्रतिहतं=वर्तमानकाले स्थित्यनुभागह्रासेन नाशितं तथा प्रत्याख्यातं=पूर्वकृताति-

---

उनके लिये तीन बार आदक्षिण प्रदक्षिण किया-करके उनको वंदनाकी नमस्कार किया। वंदना नमस्कार करके फिर उन्होंने उनसे महान् पुरुषों के बैठने योग्य आसन पर बैठने के लिये प्रार्थना की-इस के बाद वे कच्छुल्ल नारद जल के छींटों से सिक्त हुए आसन पर कि जो दर्भ के ऊपर आस्तीर्ण था बैठ गये। बैठकर उन्होंने पांडु राजा से राज्य की यावत् अंतः पुर की कुशल वार्ता पूछी। उनके पूछने पर पांडु राजाने कुन्ती देवी ने एवं पांचों पांडवों ने उन कच्छुल्ल नारद का खूब आदर किया यावत् अच्छी तरह से उनकी पर्युपासना की। द्रौपदी ने उन्हें असंयत, अविरत एवं अप्रतिहत प्रत्याख्यतपापकर्मा जानकर उनका आदर नहीं किया, उनके आगमन की अनुमोदना नहीं की और न वह उनके आने पर उठी। वर्तमान कालिक सर्व सावद्य अनुष्ठान से जो निवृत्त होता है वह संयत है-ऐसा संयत जो नहीं होता है वह असंयत कहलाता है। अतीत काल में हुए पापों से जुगुप्सा पूर्वक और भविष्यत्काल में उनसे संवर पूर्वक जो उपरत होता

સામે જઇને તેમણે ત્રણુવાર તેમની ચોમેર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણા કરી. ત્યારપછી તેમણે વંદન તેમજ નમન કર્યાં અને પછી તેમને પોતાના કરતાં મોટા માણસોને બેસવા યોગ્ય આસન ઉપર બેસવાની વિનંતી કરી. ત્યારબાદ તે કચ્છુલ્લ નારદ પાણીના છાંટાઓથી ભીના પાથરેલા દર્ભના આસન ઉપર બેસી ગયા. બેસીને તેઓએ પાંડુરાજાને રાજ્યની યાવત્ રણવાસની કુશળવાર્તા પૂછી. પાંડુરાજા, કુંતીદેવી અને પાંચે પાંડવોએ કચ્છુલ્લ નારદનો ખૂબજ આદર કર્યો યાવત્ સારી રીતે તેમની પર્યુપાસના કરી તેમને અસંયત, અવિરત અને અપ્રતિહતપ્રત્યાખ્યાતપાપકર્મા જાણીને દ્રૌપદીએ તેમનો આદર કર્યો નહિ, તેમના આગમનની અનુમોદના કરી નહિ અને જ્યારે તેઓ આવ્યા ત્યારે પણ તે ઊભી થઇ નહિ. વર્તમાનકાલિક સર્વ સાવદ્ય અનુષ્ઠાનથી જે નિવૃત્ત હોય છે તે સંયત છે, આ વ્યાખ્યા મુજબ જે સંયત નથી તે અસંયત કહેવાય છે. ભૂતકાળમાં થઇ ગયેલા પાપકર્મોથી જુગુપ્સાપૂર્વક અને ભવિષ્યત્કાલમાં તેમનાથી સંવરપૂર્વક જે ઉપરત હોય છે તે વિરત છે, એવો જે નથી તે અવિરત છે, એટલે કે વિરતિથી રહિત છે. વર્તમાનકાળમાં જેમાં

चारनिन्दया भविष्यत्यकरणेन निराकृतम् , अनयोः कर्मधारये प्रतिहतप्रत्याख्यातं ततो नञ्तत्पुरुषः, न प्रतिहतप्रत्याख्यातम्- अप्रतिहतप्रत्याख्यातं-न प्रतिहतं नापि-प्रत्याख्यातं पापकर्म येन सोऽप्रतिहतप्रत्याख्यातपापकर्मा, इति कृत्वा-एवं मत्वा 'नो आढाइ' नो आद्रियते, नो परिजानाति=नानुमोदयति नो अभ्युत्तिष्ठति नो पर्युपास्ते स्म ॥ सू०२४ ॥

है वह विरत है। ऐसा जो नहीं होता है वह अविरत है-विरति से रहित है। वर्तमान काल में जिसमें पापकर्मों की स्थिति और अनुभाग के ह्रास से नाश कर दिया है, तथा पूर्वकृत अतिचारों की निंदा से भविष्यत् काल में अकरण से जिसने उन्हें निराकृत कर दिया है ऐसा प्राणी प्रतिहत प्रत्याख्यात पापकर्म कहलाता है। ऐसा जो नहीं करता है-पापकर्मों को न प्रतिहत करता है और न प्रत्याख्यात करता है-वह अप्रतिहत प्रत्याख्यात पापकर्मा है-। अष्टादश कर ग्राह्य (करसे युक्त) जो होता है वह ग्राम है। स्वर्ण आदि की उत्पत्तिकी खाने जिसमें हो वह आकर है। जिसमें अठारह तरह का टेक्स कर नहीं लगता है वह नगर है। जहां पर वणिक्जनों का निवास हो वह निगम है। धूली का प्राकार जिसमें होता है-अर्थात् धूलि के परकोटे से जो घिरा होता है वह खेट है। कुत्सित नगर का नाम कर्बट है- जहां एक अढाई कोस के अन्तराल में (चारों दिशा से) ग्राम आदि नहीं पाये जाते हैं वह मडम्ब है। जहां पर स्थलमार्ग से एवं जल मार्ग से भाण्ड (वस्तु) आते हैं वह द्रोणमुख है। जल पत्तन और स्थलपत्तन के भेद से पत्तन दो प्रकार का होता है। जहां तापसलोग निवास करते हों वह

પાપકર્મોને સ્થિતિ અને અનુભાગના હ્રાસથી નાશ કર્યો છે તેમજ પૂર્વકૃત અતિચારોની નિંદાથી ભવિષ્યકાળમાં અકરણથી જેણે તેમને નિરાકૃત કરી દીધા છે એવું પ્રાણી પ્રતિહત પ્રત્યાખ્યાત પાપકર્મા કહેવાય છે. એવું જે કરતો નથી એટલે કે જે પાપકર્મોને પ્રતિહત કરતો નથી અને પ્રત્યાખ્યાત પણ કરતો નથી તે અપ્રતિ હત પાપકર્મા છે. જેમાં સામાન્ય માણસો વસે તે ગ્રામ છે. સોના વગેરેની ખાણો જ્યાં હોયતે આકર છે. જેમાં કોઈપણ જાતનો વેરો નાખવામાં આવતો નથી તે નગર છે. જ્યાં વાણીયાઓને નિવાસ હોય તે નિગમ છે. માટીની ભીંત ચોમેર બનાવેલી હોય તે ખેટ છે. કુત્સિત નગરનું નામ કર્બટ છે. જ્યાં અઢિ ગાઉ સુધીમાં ચારે તરફ ગ્રામ વગેરે હોતાં નથી તે મડંબ છે. જ્યાં સ્થળ માર્ગથી અને જળ માર્ગથી વાહનો આવે છે તે દ્રોણમુખ છે. જલપત્તન

मूलम्--तएणं तस्स कच्छुल्लणारयस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था अहोणं दोवई देवी रूवेणं जाव लावण्णेण य पंचहिं पंडवेहिं अणुबद्धा समाणी ममं णो आढाइ जाव नो पज्जुवासइ तं सेयं खलु मम दोवइए देवीए विप्पियं करित्तए त्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता पंडुयरायं आपुच्छइ आपुच्छित्ता उप्पयणिं विज्जं आवाहेइ आवाहित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव विज्जाहरगईए लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं पुरत्थाभिमुहे वीइवइउं पयत्ते यावि होत्था। तेणं कालेणं तेणं समएणं घायइसंडे दीवे पुरत्थिमद्धदाहिणड्ढ भरहवासे अमरकंका णाम रायहाणी होत्था, तएणं अमरकंकाए रायहाणीए पउमणाभे णामं राया होत्था महया हिमवंत० वण्णओ, तस्स णं पउमनाभस्स रन्नो सत्त देवीसयाइं ओरोहे होत्था, तस्स णं पउमनाभस्स रण्णो सुनाभे नामं पुत्ते जुवराया यावि होत्था, तएणं से पउमणाभे राया अंतो अंतेउरंसि ओरोहसंपरिवुडे सिंहासणवरगए विहरइ, तएणं से कच्छुल्लणारए जेणेव अमरकंका रायहाणी जेणेव पउमनाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पउमनाभस्स रन्नो भवणंसि झत्तिं वेगेणं समोवइए, तएणं से पउमनाभे राया कच्छुल्लं नारयं

आश्रम है जहां पर पर्वत आदि दुर्गम स्थानोंमें मनुष्य धान्य आदि रखतें हैं--वह संवाह है अर्थात् नगर के बाहर का प्रदेश जहां आभीर वगेरे लोग निवास करते हो ॥ सूत्र २४ ॥

સ્થલપત્તનની દૃષ્ટિએ પત્તનના બે પ્રકારો છે, જ્યાં પર્વત વગેરે દુર્ગમ સ્થાનોમાં માણસ ધાન્ય વગેરેની રાખે છે તે સંવાહ કહેવાય છે. અર્થાત્ નગરની બહારનો પ્રદેશ કે જ્યાં ભરવાડ વિગેરેનો વાસ હોય છે. ॥ સૂત્ર ૨૪ ॥

एज्जमाणं पासइ पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता अग्घेणं जाव आसणेणं उवणिमंतेइ, तएणं से कच्छुल्लनारए उदगपरिफासियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसीयइ जाव कुसलोदंतं आपुच्छइ, तएणं से पउमनाभे राया णियगओरोहे जायविम्हए कच्छुल्लणारयं एवं वयासी—तुब्भं देवाणुप्पिया ! बहूणि गामाणि जाव गेहाइं अणुपविससि, तं अत्थि आइं ते कहिंचि देवाणुप्पिया ! एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे जारिसए णं मम ओरोहे ?, तएणं से कच्छुल्लणारए पउमनाभेणं रन्ना एवं वुत्ते समाणे ईसिं विहासियं करेइ करित्ता एवं वयासी—सरिसे णं तुमं पउमणाभा ! तस्स अगडदद्दुरस्स, के णं देवाणुप्पिया ! से अगडदद्दुरे ?, एवं जहा मल्लिणाए एवं खलु देवाणुप्पिया ! जंबूद्दीवे दीवे भारहेवासे हत्थिणाउरे दुवयस्स रण्णो धूया चूलणीए देवीए अत्तया पंडुस्स सुण्हा पंचण्हं पंडवाणं भारिया दोवई देवी रूवेण य जाव उक्किट्ठसरीरा दोवईए णं देवीए छिन्नस्स वि पायंगुट्ठयस्स अयं तव ओरोहो सतिमंपि कलं ण अग्घंतित्तिकट्टु, पउमणाभं आपुच्छइ आपुच्छित्ता जाव पडिगए, तएणं से पउमणाभे राया कच्छुल्लणारयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म दोवईए देवीए रूवे य२ मुच्छिए४ दोवइए अज्झोववन्ने जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पोसहसालं जाव पुव्वसंगइयं देवं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! जंबूद्दीवे दीवे भारहेवासे हत्थिणाउरे

जाव सरीरा तं इच्छामिणं देवाणुप्पिया ! दोवइं देविं इहमा-णियं, तएणं पुव्वसंगइए देवीए पउमनाभं एवं वयासी – नो खलु देवाणुप्पिया ! एयं भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा जण्णं दोवई देवी पंचपंडवे मोत्तूण अन्नेणं पुरिसेणं सद्धिं ओरालाइं जाव विहरिस्सइ, तहा वि य णं अहं तव पियट्ठतयाए दोवइं देविं इहं हव्वमाणेमि त्तिकट्टु पउमणाभं आपुच्छइ आपुच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव लवणसमुद्दे मज्झंमज्झेणं जेणेव हत्थिणा-उरे णयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणाउरे जुहिट्ठिल्ले राया दोवईए सद्धिं उप्पिं आगासतलंसि सुहपसुत्ते यावि होत्था, तएणं से पुव्वसंगइए देवे जेणेव जुहि-ट्ठिले राया जेणेव दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता दोवईए देवीए ओसोवणियं दलयइ दलित्ता दोवइं देविं गिण्हइ गिण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव अमरकंका जेणेव पउमणाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पउमणा-भस्स भवणंसि असोगवणियाए दोवइं देविं ठावेइ ठावित्ता ओसोवणिं अवहरइ अवहरित्ता जेणेव पउमणाभे तेणेव उवा-गच्छइ उवागच्छित्ता एवं वयासी–एसणं देवाणुप्पिया मए हत्थिणाउराओ दोवई इह हव्वमाणीया तव असोगवणियाए चिट्ठइ, अतो परं तुमं जाणासित्तिकट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ सू० २५ ॥

टीका-'तएणं तस्स' इत्यादि । ततः खलु तस्य कच्छुल्लनारदस्य अयमेतद्रूपः आध्यात्मिकश्चिन्तितः प्रार्थितः कल्पितो मनोगतः संकल्पः समुदपद्यत, अहो ! खलु द्रौपदी देवी रूपेण यावत् लावण्येन च पञ्चभिः पाण्डवैरनुबद्धासती मां नो आद्रियते यावत् नो पर्युपास्ते, तत्=तस्मात् श्रेयः खलु मम द्रौपद्या देव्याः 'विप्पियं करित्तए' विप्रियं कर्तुम्, पाण्डवकृतसत्कारसंमानगर्विता विवेकरहिता जाता-

-ःतएणं तस्स कच्छुल्लनारयस्स इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (तस्स कच्छुल्लनारयस्स) उन कच्छुल्ल नारदको (इमेयारूवे) यह इस रूप (अज्झत्थिए, चिंतिए, पत्थिए, मणोगए, संकप्पे समुप्पज्जित्था) आध्यात्मिक, चिन्तित, प्रार्थित, मनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ । (अहो णं दोवईदेवी रूवेणं जाव लावण्णेणं य पंचहिं पंडवेहिं अणुवद्धा समाणी मम णो आढाइ, जाव नो पज्जुवासइ तं सेयं खलु मम दोवईए देवीए विप्पियं करित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता पंडुरायं आपुच्छइ आपुच्छित्ता उप्पयणिं विज्जं आवाहेइ आवाहित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव विज्जाहरगईए लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं पुरत्थाभिमुहे वीइवइउं पयत्ते यावि होत्था) देखो-यह कितने आश्चर्य की बात है कि द्रौपदी देवी ने रूप यावत् लावण्य से पांचों पांडवों के साथ भोगासक्त बनकर मेरा कोइ आदर नहीं किया है यावत् किसी भी प्रकार की पर्युपासना नहीं की है । इसलिये अब मुझे यही उचित- श्रेयस्कर है कि मै इस द्रौपदी देवी का विप्रिय करूँ-अनिष्टकरूँ

तएणं तस्स कच्छुल्लनारयस्स इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) त्यारपछी (तस्स कच्छुल्लनारयस्स) ते कच्छुल्ल नारदने (इमेयारूवे) आ जातनो (अज्झत्थिए, चिंतिए, पत्थिए, मणोगए, संकप्पे समुप्पज्जित्था) आध्यात्मिक, चिंतित, प्रार्थित, मनोगत संकल्प उद्भव्यो के

(अहोणं दोवई देवी रूवेणं जाव लावण्णेणं य पंचहिं पंडवेहिं अणुबद्धा समाणी मम णो आढाइ, जाव नो पज्जुवासइ तं सेयं खलु मम दोवईए देवीए विप्पियं करित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता पंडुरायं आपुच्छइ आपुच्छित्ता उप्पयणिं विज्जं आवाहेइ आवाहित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव विज्जाहरगईए लवण-समुद्दं मज्झ मज्झेणं पुरत्थाभिमुहे वीइवइउं पयत्ते याविहोत्था)

जुओ, आ केवी नवाईनी वात छे के द्रौपदी देवीए रूप यावत् लावण्यथी पांचे पांडवोनी साथे भोगासक्त थईने मारो कोई पण रीते आदर कर्यो नथी यावत् कोई पण जातनी पर्युपासना करी नथी एथी हवे मने एज योग्य जणाय छे के गमे ते रीते द्रौपदीनुं विप्रिय-अहित-करुं. हमणां

तस्मान्मदापहरणेन अस्याः प्रतिकूलाचरणं श्रेयः इति भावः। इति कृत्वा=इति मनसि निधाय एवं संप्रेक्षते=पर्यालोचयति, संप्रेक्ष्य पाण्डुं राजानमापृच्छ्य 'उप्पयणिं विज्जं' उत्पतनीम्-विद्याम् 'आवाहेइ' आवाहयति- स्मरति आवाह्य, मत्वा तया उत्कृष्टया यावद् विद्याधरगत्या लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन पौरस्त्याभिमुखः= पूर्वदिगभिमुखः, 'वीइवइउं पयत्ते' व्यतिव्रजितुं प्रवृत्तः=गमनतत्परश्चाप्यभवत्।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये 'धायईसंडे' धातकीषण्डे धातकीषण्डनामके, द्वीपे 'पुरत्थिमद्धदाहिणड्ढभरहवासे' पौरस्त्यार्धदक्षिणार्ध-भारतवर्षे=पूर्वदिग्वर्तिनि दक्षिणार्धभरतक्षेत्रे अमरकंका नाम राजधानी आसीत्। ततः खलु अमरकंकायां राजधान्यां पद्मनाभो नाम राजाऽभवत्। स कीदृश इत्याह-'महया हिमवंतमहंतमलयमंदरमहिंदसारे' महा-हिमवन्महामलयमन्दरमहेन्द्रसारः=महाहिमवानिव तथा-महामलयमन्दरमहेन्द्रवत् सारः=प्रधानः। अन्यनृपापेक्षयाऽधिकमहत्त्वादिगुणविभवैश्वर्यसम्पन्न इत्यर्थः, विस्तरतस्तु व्याख्यानं प्रथमाध्ययने कृतम्,

---

यह इस समय पांडवों द्वारा कृत सत्कार सम्मान से गर्विष्ठ बनी हुई है-सो विवेक रहित बन गई है-इसलिये इसके मद को उतारना चाहिये अतः इसके प्रतिकूल आचरण करना यही मुझे श्रेयस्कर है। इस प्रकार मन में रखकर उन्हों ने विचार किया-विचार करके फिर उन्हों ने पांडुराज से पूछा हे राजन् हम जाते हैं-पूछकर उन्हों ने उत्पतनी नाम की विद्या का आह्वान किया स्मरण किया-स्मरण कर के उस उत्कृष्ट यावत् विद्याधर संबन्धी गति से वहां से पूर्व दिशा की तरफ मुख कर के वे उड़ने में प्रवृत्त भी हो गये-(तेणं कालेणं तेणं समएणं धायईसंडे दीवे पुरत्थिमद्धदाहिणड्ढभरहे वासे अमरकंका णाम रायहाणी होत्था-तएणं अमरकंकाए रायहाणीए पउमणाभे णामं राया होत्था, महया हिमवंत०

તે આ પાંડવો વડે સત્કૃત તેમજ સન્માનીત થઈને ગર્વિષ્ઠા બની ગઈ છે તેથી તે અવિવેકી થઈ પડી છે, એથી હવે એના મદને ઉતારવો જોઈએ, એના વિરૂદ્ધ આચરવું જોઈએ, આ પ્રમાણે તેઓએ મનમાં વિચાર કર્યો. વિચાર કરીને તેમણે પાંડુરાયને પૂછયું કે હે રાજન્! અમે જઈએ, એ પ્રમાણે પૂછીને તેઓએ ઉત્પતની નામની વિદ્યાનું આહ્વાન કર્યું, સ્મરણ કર્યું. સ્મરણ કરીને તે ઉત્કૃષ્ટ યાવત્ વિદ્યાધર સંબંધી ગતિથી ત્યાંથી પૂર્વ દિશા ભણી મુખ કરીને ઉડવા લાગ્યા.

(तेणं कालेणं तेणं समएणं धायईसंडे दीवे पुरत्थिमद्धदाहिणड्ढभरहे वासे अमरकंका णाम रायहाणी होत्था तएणं अमरकंकाए रायहाणीए पउमणाभे णामं राया

वर्णकः=वर्णनं पूर्वोक्तवद् बोध्यम् , तस्य खलु पद्मनाभस्य राज्ञः 'सत्तदेवीसयाइं' सप्तदेवीशतानि=देवीनां राज्ञीनां शतानि-सप्तशतानिभार्याः 'ओरोहे' अवरोधे= अन्तः पुरे आसन् तस्य खलु पद्मनाभस्य राज्ञः सुनाभो नाम पुत्रो युवराजश्चाप्य-भवत् । ततः खलु स पद्मनाभो राजा अन्तः प्रदेशे 'अंतेउरंसि' अन्तः पुरे 'ओरोहसंपरिवुडे' अवरोधसंपरिवृतः - स्त्रीपरिवारसंपरिवृतः, सिंहासनवरगतो विहरति-आस्तेस्म ।

वण्णओ तस्सणं पउमनाभस्स रण्णो सत्तदेवीसयाइं ओरोहे होत्था तस्स णं पउमनाभस्स रण्णो सुनाभे नामं पुत्ते जुवराया यावि होत्था तएणं से पउमणाभे राया अंतो अंतेउरंसि ओरोहसंपरिवुडे सिंहासण वरगए विहरइ) उस काल और उस समय में धातकी षंड नाम के द्वीप में पूर्व दिग्वर्ती दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र में अमरकंका नाम की राजधानी थी। उस अमरकंका नाम की राजधानी में पद्मनाभ नाम का राजा रहता था। यह राजा महा हिमवान् पर्वत की तरह तथा महा मलय, मन्दर एवं माहेन्द्र की तरह अन्य राजाओं की अपेक्षा अधिक महत्त्वादिगुणों से विभव से एवं ऐश्वर्य से संपन्न था। इन पदों का विस्तार पूर्वक वर्णन प्रथम मेघकुमार अध्ययन में किया जा चुका है। इस राजा का वर्णन पहिले की तरह जानना चाहिये। उस पद्मनाभ राजा के अंतःपुर में ७०० सात सौ रानियां थीं। सुनाभ नाम का पुत्र था जो युवराज था, पद्मनाभ राजा के यहां एक दिन की बात है

होत्था, महया हिमवंत०वण्णओ,तस्स णं पउमनाभस्स रण्णो सत्तदेवी सयाइं ओरोहे होत्था तस्स णं पउमनाभस्स रण्णो सुनाभे नामं पुत्ते जुवराया यावि होत्था तएणं से पउमणाभे राया अंतो अंते उरंसि ओरोहसंपरिवुडे सिंहासणवरगए विहरइ)

તે કાળે અને તે સમયે ધાતકી ષંડ નામે દ્વીપમાં પૂર્વ દિશા તરફના દક્ષિણુર્ધ ભરત ક્ષેત્રમાં અમરકંકા નામે રાજધાની હતી. તે અમરકંકા નામે રાજધાનીમાં પદ્મનાભ નામે રાજા રહેતો હતો. તે રાજા મહા હિમાચલ પર્વ-તની જેમ તેમજ મહામલય, મંદર અને મહેન્દ્રની જેમ બીજા રાજાઓ કરતાં વધારે મહત્ત્વ વગેરે ગુણોથી, વૈભવથી અને ઐશ્વર્યથી સંપન્ન હતો. આ પદોનું સવિસ્તાર વર્ણન પ્રથમ મેઘકુમાર અધ્યયનમાં કરવામાં આવ્યું છે. આ રાજાનુ વર્ણન પણ પહેલાંની જેમ જ સમજવું જોઈએ. તે પદ્મનાભ રાજાના રણવાસમાં ૭૦૦ રાણીઓ હતી, સુનાભ નામે તેને પુત્ર હતો, જે યુવરાજ હતો. એક દિવસની વાત છે કે તે પદ્મનાભ રાજા રણવાસમાં સ્રી પરિવારની સાથે સિંહા-સન ઉપર બેઠા હતા.

ततः खलु स कच्छुल्लनारदो यत्रैवामरकङ्काराजधानी यत्रैव पद्मनाभस्य भवनं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पद्मनाभस्य राज्ञो भवने 'झत्ति' झटिति वेगेन 'समोवइए' समुपेतः=आकाशादवतीर्णः। ततः खलु स पद्मनाभो राजा कच्छुल्लं नारदं एजमानम्-आगच्छन्तं पश्यति, दृष्ट्वा आसनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थायार्घ्येण यावदासनेन उपनिमन्त्रयति-जलमासनं च ग्रहीतुं प्रार्थयति। ततः खलु स कच्छुल्ल-

---

कि अंतःपुर के भीतर स्त्री परिवार के साथ सिंहासन पर बैठे हुए थे। (तएणं से कच्छुल्लनारए जेणेव अमरकंका रायहाणी जेणेव पउमनाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमणाभस्स रण्णो भवणंसि झत्तिवेगेणं समोवइए, तएणं से पउमनाभे राया कच्छुल्लं नारयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता अग्घेणं जाव आसणेणं उवणिमंतेइ, तएणं से कच्छुल्लनारए उदग परिफासियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसीयइ जाव कुसल-लोदंतं आपुच्छइ) वे कच्छुल्ल नारद जहां अमर कंका राजधानी थी, जहां पद्मनाभ का भवन था वहां आये। आकर के वे पद्मनाभ राजा के भवन में बहुत शीघ्र वेग से उतरे। पद्मनाभ राजा ने जैसे ही कच्छुल्ल नारद को आते हुए देखा तो देखकर के अपने आसन से उठे और उठकर के उन्हों ने उन्हे अर्घ्य यावत् आसन से आमंत्रित किया।

(तएणं से कच्छुल्लनारए जेणेव अमरकंका रायहाणी जेणेव पउमनाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमणाभस्स रण्णो भवणंसि झत्तिवेगेणं समोवइए, तएणं से पउमनाभे राया कच्छुल्लं नारयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता अग्घेण जाव आसणेणं उवणिमंतेइ, तएणं से कच्छुल्लनारए उदगपरिफासियाए दब्भोपरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसीयइ जाव कुसलोदंतं आपुच्छइ)

ते कच्छुल्ल नारद ज्यां अमरकंका राजधानी हती, ज्यां पद्मनाभनुं भवन हतुं त्यां आव्या, आवीने ते पद्मनाभ राजाना भवनमां शीघ्र वेगथी ઉतर्या पद्मनाभ राजाए ज्यारे कच्छुल्ल नारदने आवता जोया त्यारे तेओ पोताना आसन ઉपरथी ઊभा थया अने ઊभा थईने तेमणे तेओने अर्घ्य यावत

नारदः उदकपरिस्पृष्टायां-जलाभिषिक्तायां दर्भोपरि प्रत्यवस्तृतायां वृष्याम् आसनशेषे निषीदति, यावत् कुशलोदन्तं=कुशलवार्ताम् आपृच्छति=सुखोपविष्टं तं कच्छुल्लनारदं पद्मनाभः कुशलवार्तां पृच्छतीत्यर्थः। ततः खलु स पद्मनाभो राजा-निजकावरोधे स्त्रीपरिवारे जातविस्मयः=समुत्पन्नगर्वः, कच्छुल्लनारदम् एवं-वक्ष्यमाणक्रमेण, अवादीत्-हे देवानुप्रिय! त्वं बहून् ग्रामान् यावत् गृहाणि अनुप्रविशति, तत्=तस्माद् अस्ति 'आइं' इति वाक्यालङ्कारे ते=त्वया कुत्रचिद् हे

इसके बाद वे कच्छुल्लनारद जल के छींटो से सिंचित आसन पर जो दर्भ के ऊपर बिछा हुआ था बैठ गये-बैठकर उन्हों ने पद्मनाभ राजा से कुशलवार्ता पूछा। पद्मनाभ राजा ने भी सुख पूर्वक बैठे हुए उन कच्छुल्ल नारद से उन के कुशल समाचार पूछे। (तएणं से पउमनाभे राया णियगओरोहे जायविम्हए कच्छुल्लणारयं एवं वयासी-तुब्भं देवाणुप्पिया! बहूणि गामाणि जाव गेहाइं अणुपविससि तं अत्थि आइं तेकहिं चि देवाणुप्पिया! एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे, जारिसए णं मम आरोहे? तएणं से कच्छुल्लणारए पउमनाभेणं रन्ना एवं वुत्ते समाणे ईसिं विहसियं करेइ, करित्ता एवं वयासी-सरिसेणं तुमं पउमणाभा! तस्स अगड ददूदुरस्स, केणं देवाणुप्पिया! से अगडददूदुरे! एवं जहा मल्लिणाए एवं खलु देवाणुप्पिया!) इसके बाद पद्मनाभ राजा ने अपने अतःपुर में विस्मित बनकर कच्छुल्लनारद से इस प्रकार

આસન ઉપર બેસવા માટે વિનંતી કરી. ત્યારપછી તે કચ્છુલ નારદ પાણીના છાંટાઓથી સિંચિત દર્ભના ઉપર પાથરેલા આસન ઉપર બેસીને પદ્મનાભ રાજાને તેઓના પરિવારની કુશળતાના સમાચારો પૂછ્યા. પદ્મનાભ રાજાએ પણ આસન ઉપર સુખેથી બેઠેલા તે કચ્છુલ્લનારદને કુશળ સમાચારો પૂછ્યા.

(तएणं से पउमनाभे राया णियगओरोहे जायविम्हए कच्छुल्लणारयं एवं वयासी-तुब्भं देवाणुप्पिया! वहूणि गामाणि जाव गेहाइं अणुपविससि, तं अत्थि आइं ते कहिं चि देवाणुप्पिया! एरिसए ओरोहे दिट्ठपूव्वे जारिसए णं मम ओरोहे? तएणं से कच्छुल्लणारए पउमनाभेणं रन्ना एवं वुत्ते समाणे ईसिं विहसियं करेइ, करित्ता एवं वयासी-सरिसेणं तुमं पउमणाभा! तस्स अगडददूदुरस्स केणं देवाणुप्पिया! से अगडददुदुरे? एवं जहा मल्लिणाए एवं खलु देवाणुप्पिया!)

ત્યારપછી પદ્મનાભ રાજાએ પોતાના રણુવાસના વૈભવને જોઈને આશ્ચર્ય થઈને કચ્છુલ્લ નારદને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય! તમે ઘણા ગ્રામ યાવત્ ઘરોમાં આવજા કરતા રહો છો તો હે દેવાનુપ્રિય! શું તમે પહેલાં

देवानुप्रिय ! ईदृशोऽवरोधो दृष्टपूर्वो यादृशः खलु ममावरोधः ? ममान्तः पुरे यादृश्यः स्त्रियो वर्तन्ते, तादृश्यः स्त्रियः कुत्रापि भवता दृष्टा इति पृच्छतीत्यर्थः। ततः खलु स कच्छुल्लनारदः पद्मनाभेन राज्ञा एवमुक्तः सन् 'ईषद् विहसितं' मन्दहासं करोति, कृत्वा एवमवादीत्—हे पद्मनाभ ! सदृशस्त्वं खलु तस्य 'अगडदद्दुरस्स' अगडदर्दुरस्य=कूपमण्डूकस्य यथा कूपमण्डूकः कूपाद् बहिः प्रदेशे विद्यमानं नकिमपि जानाति, तद्वत् त्वमपि स्वभवनाद् बहिरन्यत्रावस्थितं किमपि वस्तु न वेत्सीति भावः। कच्छुल्लनारदस्य वचनं श्रुत्वा पद्मनाभः कच्छुल्लनारदं पृच्छति—'के णं देवाणुप्पिया ! से अगडदद्दुरे' इति। हे देवानुप्रिय ! कः खलु सोऽगडदर्दुरः ? एवं पद्मनाभेन राज्ञा पृष्टः सन् कच्छुल्लनारदः प्राह—'एवं यथा मल्लिणाए' यथा मल्लिज्ञाते वर्णितमेवमत्र बोध्यम् समुद्रदर्दुरकूपदर्दुरयोः परस्परवार्तालापो यथा संजातस्तथा कच्छुल्लनारदेन कथित इत्यर्थः। पुनः कच्छुल्ल-

---

कहा—हे देवानुप्रिय ! तुम अनेक ग्राम यावत् से घरों में आते जाते रहते हो—तो क्या हे देवानुप्रिय ! तुमने कहीं पर क्या ऐसा अंतः पुर पहिले कभी देखा है—जैसा मेरा अन्तः पुर है ? पद्मनाभ राजा के द्वारा इस प्रकार पूछे गये वे कच्छुल्ल नारद कुछ हँसने लगे—हँसकर तब उन्हों ने उनसे इस प्रकार कहा—हे पद्मनाभ ! तुम उस कूपमंडूक के समान हो—जो अपने निवासस्थान भूत कुंए से बाहिरी प्रदेश में विद्यमान कुछभी नहीं जानते हो। कच्छुल्ल नारद के वचन सुनकर के पद्मनाभ ने उन कच्छुल्ल नारद से पूछा—देवानुप्रिय ! वह अगडदद्दुर का आख्यान कैसा है ? तब नारद ने उनसे कहा—मल्लि नाम के अध्ययन में कूपमंडूक और समुद्र मंडूक के परस्पर में वार्तालाप के रूप में यह आख्यान वर्णित किया हुआ है—सो नारद ने यह आख्यान जैसे का तैसा उन्हें सुना दिया— पुनः कच्छुल्ल नारद उनसे

કોઈ પણ સ્થાને અને કોઈ પણ દિવસે આવો મારા જેવો રણુવાસ જોયો છે ? પદ્મનાભ રાજા વડે આ રીતે પ્રશ્ન પૂછાએલા તે કચ્છુલ નારદ હસવા લાગ્યા, હસીને તેઓએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે પદ્મનાભ ! તમે તે કૂપ મંડૂક જેવા છો કે જે પોતાના નિવાસસ્થાન કૂપથી બહારના પ્રદેશ વિષે થોડું પણ જ્ઞાન ધરાવતો નથી. કચ્છુલ નારદના વચન સાંભળીને પદ્મનાભે તે કચ્છુલ નારદને પૂછયું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તે અગડ દર્દુરકનું આખ્યાન કેવી રીતે છે ? ત્યારે નારદે તેમને મલ્લિ નામે અધ્યયનમાં વર્ણવવામાં આવેલા કૂપ મંડૂક અને સમુદ્ર મંડૂકના વાર્તાલાપ રૂપે તે સંપૂર્ણ આખ્યાન તેમને કહી સંભળાવ્યું

नारदोवदति-एवं वक्ष्यमाणप्रकारेण खलु हे देवानुप्रिय ! जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे हस्तिनापुरे नगरे द्रुपदस्य राज्ञो दुहिता चूलन्या देव्या आत्मजा पाण्डोः स्नुषा पञ्चानां पाण्डवानां भार्या द्रौपदी देवी रूपेण च यावद् उत्कृष्ट शरीरा वर्तते द्रौपद्याः खलु देव्याश्छिन्नस्यापि पादाङ्गुष्ठकस्यायं तवावरोधः तवान्तःपुरवर्तिनी काचिदपि देवी 'सयतमंपि कलं' शततमामपि कलां नार्हति, इति कृत्वा=एवं ज्ञात्वा कथयामि-द्रौपदीसदृशी नास्ति काचिदपीति । ततः कच्छुल्लनारदोगन्तुकामः

कहते हैं कि हे देवानुप्रिय । सुनो-बात इस प्रकार है-(जंबू दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे दुवयस्स रण्णो धूया, चूलणीए देवीए अत्तया पंडुस्स सुण्हा, पंचण्हं पंडवाणं भारिया दोवई देवी रूवेण य जाव उक्किट्ठ सरीरा, दोवईए णं देवीए छिन्नस्स वि पायंगुट्ठयस्स अयं तव अवरोहो सयन्नमपि कलं ण अग्घई त्तिकट्टु पउमणाभं आपुच्छइ आपुच्छित्ता जाव पडिगए, तएणं से पउमणाभे राया कच्छुल्लणारयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म दोवइए, देवीए रूवे य च्छिए४ दोवईए अज्जोववन्ने जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ) जंबूद्वीप नाम के प्रथम द्वीप (मध्य जंबुद्वीप में) में भारतवर्ष में, हस्तिनापुर नाम के नगर में द्रुपद राजा की पुत्री चुलनी देवी की आत्मजा, पांडु राजा की स्नुषा-पुत्रवधू-पांच पांडवों की भार्या द्रौपदी देवी है । यह रूप से यावत् उत्कृष्ट शरीर है । तुम्हारा यह अंतःपुर उसके कटे हुए पैर के अंगूठे के सौवें अंश के बराबर

અને ત્યારપછી કચ્છુલ્લ તેમને કહેવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિય ! સાંભળો, વાત એવી છે કે—

(जंबू दीवे दीवे भारहेवासे हत्थिणाउरे दुवयस्स रण्णो धूया, चूलणीए देवीए अत्तया पंडुस्स सुण्हा, पंचण्हं पंडवाणं भारिया दोवई देवी रूवेण य जाव उक्किट्ठसरीरा, दोवईए णं देवीए छिन्नस्स वि पायंगुट्ठयस्स अयं तव अवरोहो सयन्नमपि कलं ण अग्घई त्ति कट्टु पउमणाभं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता जाव पडिगए, तएणं से पउमणाभे राया कच्छुल्लणारयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म दोवईए, देवीए रूवेय मुच्छिए ४ दोवईए अज्झोववन्ने जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ)

જંબૂ દ્વીપ નામના પ્રથમ દ્વીપમાં ભારત વર્ષમાં હસ્તિનાપુર નામે નગરમાં દ્રુપદ રાજાની પુત્રી ચૂલની દેવીની આત્મજા, પાંડુ રાજાની સ્નુષા-પુત્રવધૂ પાંચ પાંડવોની પત્ની દ્રૌપદીદેવી છે. તે રૂપથી યાવત્ ઉત્કૃષ્ટ શરીરવાળી છે. તમારો આ રણવાસ તેના કપાયેલા અંગૂઠાના સોમા ભાગની બરાબર પણ નથી, આ બધું હુ વિચારપૂર્વક કહી રહ્યો છું. દ્રૌપદી જેવી નારી કોઈ પણ

पद्मनाभमापृच्छति, पृष्ट्वा यावत् पद्मनाभेन राज्ञा सत्कारं प्राप्य प्रतिगतः=उत्पतनी विद्यया गगनमुल्लंघयन् प्रतिगत इत्यर्थः ।

ततः खलु स पद्मनाभो राजा कच्छुल्लनारदस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा= आकर्ण्य निशम्य हृद्यवधार्य द्रौपद्या देव्या रूपे च यौवने च लावण्ये च मूर्च्छितः= आसक्तः, गृद्धः = लोलुपः, ग्रथितः=निबद्धचित्तः, अभ्युपपन्नः = एकाग्रचित्तः सन् यत्रैव पौषधशाला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पौषधशालां प्रमार्ज्य यावदष्टम-भक्तं कृत्वा 'पूर्वसंगतिकं' पूर्वमित्रं देवम् एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-एवं खलु हे देवानुप्रिय ! जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे हस्तिनापुरे पाण्डवभार्या द्रौपदी देवी यावत्-उत्कृष्टशरीरा वर्तते, तत्=तस्माद् इच्छामि खलु हे देवानुप्रिय !

भी नहीं है। ऐसा मैं जानकर ही कह रहा हूँ। द्रौपदी के जैसी कोई भी नारी नहीं है। इस प्रकार कहकर वे कच्छुल्ल नारद वहां से चलने के लिये अभिलाषी बन गये-तब उन्होंने पद्मनाभ राजा से जाने के लिये पूछा पूछकर यावत् वे वहां से पद्मनाभ राजा से सत्कृत होकर उत्पतनी विद्या के प्रभाव से गगन तल को उल्लंघन करते हुए वापिस चले गये। इसके बाद वे पद्मनाभ राजा कच्छुल्ल नारद के मुख से इस समाचार रूप अर्थ को सुनकर और उसे हृदय में धारण कर द्रौपदी देवी के रूप, यौवन एवं लावण्य में मूर्च्छित ४ बन गये, यावत् उनका चित्त उन में बिलकुल एकाग्र हो गया। इस तरह होकर, वे जहां पौषधशाला थी वहां गये । (उवगच्छित्ता पोसहसालं जाव पुव्वसंगइयं देवं एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! जंबूदीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे जाव सरीरा तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया !

નથી. આ પ્રમાણે કહીને તે કચ્છુલ્લ નારદ ત્યાંથી ચાલવા માટે તૈયાર થઇ ગયા. તેમણે પદ્મનાભ રાજાને જવા માટે પૂછ્યું, પૂછીને યાવત્ ત્યાંથી તેઓ પદ્મનાભ રાજાની પાંસેથી સત્કૃત થઇને ઉત્પતની વિદ્યાના પ્રભાવથી આકા-શને ઓળંગતા જતા રહ્યા. ત્યારપછી તે પદ્મનાભ રાજા કચ્છુલ્લ નારદના મુખથી આ સમાચારને સાંભળીને અને તેને હૃદયમાં ધારણ કરીને દ્રૌપદી દેવીના રૂપ, યૌવન અને લાવણ્યથી મૂર્છિત ૪ થઈ ગયા, યાવત્ તેમનું મન તેમાં એકદમ ચોંટી ગયું. આ સ્થિતિમાં તેઓ જ્યાં પૌષધશાળા હતી ત્યાં ગયા.

(उवागच्छित्ता पोसहसालं जाव पुव्वसंगइयं देवं एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! जंबू दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे जाव सरीरा तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! दोवई देवीं इहमाणियं तएणं पुव्वसंगइए देवे पउमनाभं एवं

द्रौपदीं देवीम् 'इह माणियं' इहानेतुम्। ततः खलु पूर्वसंगतिको देवः पद्मनाभं नृपम् एवमवादीत्—हे देवानुप्रिय! नो खलु एतद् भूतं वा भवद् वा भविष्यद् वा, यत् खलु द्रौपदी देवी पञ्च पाण्डवान् मुक्त्वाऽन्येन पुरुषेण सार्धमुदारान् भोगान् यावद् विहरति, तथापि च खलु अहं तव प्रीत्यर्थं द्रौपदीं देवीमिह हव्यमानयामीति

दोवईं देवीं इहमाणियं तएणं पुव्वसंगइए देवे पउमनाभं एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया! एयं भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा जण्णं दोवई देवी पंच पंडवे मोत्तूण अन्नेणं पुरिसेणं सद्धिं ओरालाइं जाव विहरिस्सइ) वहां जाकर उन्होंने उस पोषध शाला को रजोहरण से साफ किया यावत् अष्टम भक्त कर के पूर्व संगति देव का आवाहन किया देवों के आनेपर पूर्व संगतिक देव से इस प्रकार कहा हे देवानुप्रिय! जंबूद्वीप नाम के द्वीप में भारत वर्ष में हस्तिनापुर नगर में पांडवो की भार्या द्रौपदी देवी है। यह यावत् उत्कृष्ट शरीर है। इसलिये हे देवानुप्रिय! मैं उस द्रौपदी देवी को तुमसे यहां ले आने के लिये चाहता हूँ। पद्मनाभ की इस वात को सुनकर पूर्वभव के मित्र उस देव ने उस से तव ऐसा कहा—हे देवानुप्रिय! ऐसी वात द्रौपदी के साथ न पहिले हुई है, न आगे होगी—और न अब वर्तमान में हो सकती है, जो द्रौपदी देवी पांच पांडवो को छोड़कर अन्य किसी दूसरे पुरुष के साथ उदार यावत् मनुष्य भव सबन्धी काम सुखों को भोगे (तहावि-

वयासी नो खलु देवाणुप्पिया! एयं भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा जण्णं दोवई देवी पंच पंडवे मोत्तूण अन्नेणं पुरिसेणं सद्धिं ओरालाइं जाव, विहरिस्सइ)

ત્યાં જઈને તેમણે તે પૌષધશાળાને રજોહરણથી સાફ કરી યાવત્ અષ્ટમ ભક્ત કરીને પૂર્વ સગતિ દેવનું આવાહન કર્યું. દેવ જ્યારે આવી ગયો ત્યારે તેમણે પૂર્વસંગતિક દેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય! જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમાં ભરત વર્ષમાં હસ્તિનાપુર નગરમાં પાંડવોની પત્ની દ્રૌપદીદેવી છે, તે યાવત્ ઉત્કૃષ્ટ શરીરવાળી છે. એથી હે દેવાનુપ્રિય! તે દ્રૌપદી દેવીને તમે અહીં લઈ આવો એવી મારી ઇચ્છા છે. પદ્મનાભની આ વાતને સાંભળીને પૂર્વભવના મિત્ર તે દેવે તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય! દ્રૌપદી દેવીની સાથે આ જાતનું આચરણ ન પહેલાં થયું છે ન ભવિષ્યમાં થશે અને ન વર્તમાનમાં થવાની શકયતા છે દ્રૌપદી દેવી પાંચે પાંડવો સિવાય બીજા કોઈ પુરૂષની સાથે ઉદાર યાવત્ મનુષ્યભવ સંબંધી કામસુખો ભોગવે આ વાત તદ્દન અસંભવિત છે.

कृत्वा=उक्त्वा पद्मनाभम् आपृच्छति आपृच्छ्य तया उत्कृष्टया देवसम्बन्धिन्या गत्या यावत् लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन=उपरिभागेन गगनमार्गेण, यत्रैव हस्तिनापुरं नगरं तत्रैव प्राधारयद् गमनाय ।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये हस्तिनापुरे नगरे युधिष्ठिरो राजा द्रौपद्या सार्धमुपरि आकाशतले=प्रासादाट्टालिकोपरि सुखप्रसुप्तश्चाप्यासीत्, ततः खलु स पूर्वसंगतिको देवो यत्रैव युधिष्ठिरो राजा यत्रैव द्रौपदी देवी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य द्रौपद्यै

य णं अहं तव पियट्ठतयाए दोवइं देवीं इहं हव्वमाणेमि त्तिकट्टु पउमणाभं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं जेणेव हत्थिणाउरे णयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए) फिर भी मैं तुम्हारी प्रीति के निमित्त द्रौपदी देवी को यहां शीघ्र लेकर आता हूँ। ऐसा कह-कर उसने जाने के लिये उन पद्मनाभ से पूछा, पूछकर फिर वह उस उत्कृष्ट देवभवसंबंन्धी गति से यावत् लवण समुद्र के बीच से होकर जहां हस्तिनापुर नगर था उस ओर चल दिया ! (तेणं कालेणं तेणं सम-एणं हत्थिणाउरे जुहिट्ठिले राया,दोवईए सद्धिं उप्पिं आगासतलंसि सुह-पसुत्ते यावि होत्था, तएणं से पुव्वसंगइए देवे जेणेव जुहिट्ठिल्ले राया जेणेव दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ) उस काल और उस समय में हस्तिनापुर नगरमें युधिष्ठिर राजाके साथ द्रौपदी आकाशतलमें-प्रासाद की अट्टालिका के ऊपर सोये हुए थे। वह पूर्व संगतिक देव जहां वे युधिष्ठिर राजा और जहां वह द्रौपदी देवी थी वहां आया-(उवागच्छित्ता

(तहावि य णं अहं तव पियट्ठतयाए दोवइं देवीं इहं हव्वमाणेमि त्ति कट्टु पउमणाभं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं जेणेव हत्थिणाउरे णयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

છતાંએ તમને ખુશ કરવા માટે હું દ્રૌપદી દેવીને શીઘ્ર અહીં લઈ આવું છું. આમ કહીને તેણે જવા માટે પદ્મનાભ રાજાને પૂછ્યું. પૂછીને તે પોતાની ઉત્કૃષ્ટ દેવભવ સંબંધી ગતિથી યાવત્ લવણ સમુદ્રની વચ્ચે થઈને જ્યાં હસ્તિનાપુર નગર હતું તે તરફ રવાના થયો.

(तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणाउरे जुहिट्ठिले राया, दोवईए सद्धिं उप्पिं आगासतलंसि सुहपसुत्ते यावि होत्था तएणं से पुव्वसंगइए देवे जेणेव जुहि-ट्ठिल्ले राया जेणेव दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ)

તે કાળે અને તે સમયે હસ્તિનાપુર નગરમાં યુધિષ્ઠિર રાજા અને દ્રૌપદી દેવી મહેલની અગાશી ઉપર સૂતા હતા તે પૂર્વ સંગતિક દેવ જ્યાં તે યુધિ-ષ્ઠિર રાજા અને જ્યાં તે દ્રૌપદી દેવી હતી ત્યાં આવ્યો.

देव्यै 'आसोवणियं' अवस्वापनीं निद्रां 'दलयइ' ददाति सुखप्रसुप्तां द्रौपदीं गाढनिद्रयाऽऽक्रान्तां कृतवानित्यर्थः। दत्वा-गाढनिद्रावतीं कृत्वा द्रौपदीं देवीं गृहीत्वा तया उत्कृष्टया देवसम्बन्धिन्यागत्या यावत् यत्रैवामरकंका राजधानी यत्रैव पद्मनाभस्य भवनं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पद्मनाभस्य भवने 'असोगवणियाए' अशोकवनिकायाम् अशोकवाटिकायां द्रौपदीं देवीं स्थापयति, स्थापयित्वा 'आसोवणिं अवहरइ' अवस्वापनीं निद्रामपहरति, अपहृत्य

दोवईए देवीए ओसोवणियं दलयइ, दलित्ता दोवई देविं गिण्हइ, गिण्हत्ता तीए उक्किट्ठाए जाव जेणेव अमरकंका जेणेव पउमणाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमणाभस्स भवणंसि असोगवणियाए दोवइ देवीं ठवेइ ठावित्ता ओसोवणिं अवहरइ, अवहरित्ता जेणेव पउमणाभे तेणेव उवागच्छइ,उवागच्छित्ता एवं वयासी-एस णं देवाणुप्पिया! मए हत्थिणाउराओ दोवई इह हव्वमाणीया, तव असोगवणियाए चिट्ठइ, अतोपुरं तुमं जाणिसि त्तिकट्टुजामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए) वहां आकर उसने द्रौपदी देवी को गाढ निद्रा में सुला दिया, सुलाकर फिर उसने उस द्रौपदी को वहां से उठाया-और उठाकर फिर वह उस उत्कृष्ट देवभवसंबन्धी गति से चलकर यावत् जहां अमरकंका नगरी और जहां पद्मनाभ राजा का भवन था वहां आया-। वहां आकर के उसने पद्मनाभ के भवन में अशोकवाटिका में द्रौपदी देवी को रखदिया। रखकर के फिर उसने उसे गाढ निद्रा से रहित कर

(उवागच्छित्ता दोवईए दीवीए ओसोवणिय दलयइ, दलित्ता दोवई देविं गिण्हइ, गिण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव अमरकंका जेणेव पउमणाभस्स भवणे-तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पउमणाभस्स भवणंसि असोगवणियाए दोवई देवीं ठवेइ ठावित्ता ओसोवणिं अवहरइ, अवहरित्ता जेणेव पउमणाभे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी-एसणं देवाणुप्पिया मए हत्थिणाउराओ दोवई इह हव्वमाणीया, तव असोगवणियाए चिट्ठइ, अतोपुरं तुमं जाणिसित्ति कट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए)

ત્યાં આવીને તેણે દ્રૌપદીને ગાઢ નિદ્રામાં સૂવાડી દીધી, સુવાડીને તેણે તે દ્રૌપદીને ત્યાથી ઉઠાવી અને ઉઠાવીને તે ઉત્કૃષ્ટ દેવભવ સંબંધી ગતિથી ચાલીને યાવત્ જ્યા અમરકંકા નગરી અને જ્યાં પદ્મનાભ રાજાનું કામવન હતું ત્યાં આવ્યો. ત્યાં આવીને તેણે પદ્મનાભના ભવનમા અશોક-વાટિકામાં દ્રૌપદી દેવીને મૂકી દીધી, મૂકીને તેણે ગાઢ નિદ્રા દૂર કરી દીધી, ગાઢ નિદ્રા દૂર

यत्रैव पद्मनाभस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य एवमवादीत्-एषा खलु हे देवानुप्रिय ! मया हस्तिनापुराद् द्रौपदी इह हव्यमानीता तवाशोकवनिकायां तिष्ठति, अतः परं त्वं जानासि' इति कृत्वा=उक्त्वा, यस्या एव दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः ॥ सू०२५ ॥

मूलम्-तएणं सा दोवई देवी तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी तं भवणं असोगवणियं च अपच्चभिजाणमाणी एवं वयासी-नो खलु अम्हं एसे सए भवणे णो खलु एसा अम्हं सगा असोगवणिया, तं ण णज्जइ णं अहं केणइ देवेण वा दाणवेणं वा किं पुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा अन्नस्स रण्णो असोगवणियं साहरियत्तिकट्टु ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ, तएणं से पउमणाभे राया ण्हाए जाव सव्वालंकार विभूसिए अंतेउरपरियालं संपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जेणेव दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता दोवइं देवीं ओहय० जाव झियायमाणीं पासइ पासित्ता एवं वयासी-किण्णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहय जाव झियाहि, एवं

दिया-गाढ निद्रा से रहित कर फिर वह वहां से जहां पद्मनाभ राजा थे वहां गया-वहां जाकर उसने उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! मैं हस्तिनापुर नगर से द्रौपदी को यहां ले आया हूँ। वह तुम्हारी अशोक वाटिका में ठहरी है, अतः अब तुम जानो। ऐसा कहकर वह देव जिस दिशा से प्रकट हुआ था-उसी दिशा की ओर वापिस चला गया। सू- २५

કરીને તે જ્યાં પદ્મનાભ રાજા હતા ત્યાં ગયો. ત્યાં જઇને તેણે તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું 'કે હે દેવાનુપ્રિય ! હસ્તિનાપુર નગરથી દ્રૌપદી દેવીને હું અહીં લઇ આવ્યો છું. તે તમારી અશોક-વાટિકામાં છે, એથી હવે તમે જાણો. આ પ્રમાણે કહીને તે દેવ જે દિશા તરફથી પ્રકટ થયો હતો તે જ દિશા તરફ પાછો જતો રહ્યો. ॥ સૂત્ર ૨૫ ॥

खलु तुमं देवाणुप्पिया ! मम पुव्वसंगइएणं देवेणं जंबूद्दी-वाओ २ भारहाओ वासाओ हत्थिणापुराओ नयराओ जुहिट्ठि-ल्लस्स रण्णो भवणाओ साहरिया तं मा णं तुमं देवाणुप्पिया! ओहय० जाव झियाहि, तुमं मए सद्धिं विपुलाइं भोगभोगाइं जाव विहराहि, तएणं सा दोवई देवी पउमणाभं एवं वयासी -एवं खलु देवाणुप्पिया ! जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे बारवइए णयरीए कण्हे णामं वासुदेवे ममप्पियभाउए परिवसइ, तं णं से छण्हं मासाणं मम कूवं नो हव्वमागच्छइ तएणं अहं देवा-णुप्पिया ! जं तुमं वदसि तस्स आणाओवायवयणणिद्देसे चिट्ठि-स्सामि, तएणं से पउमे दोवईए एयमट्ठं पडिसुणित्ता२ दोवइं देविं कण्णंतेउरे ठवेइ, तएणं सा दोवई देवी छट्ठं छट्ठेणं अनि-क्खित्तेणं आयंबिलपरिग्गहिएणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ सू० २६ ॥

टीका—'तएणं सा' इत्यादि । ततः खलु सा द्रौपदी देवी ततो मुहूर्त्तान्तरे प्रतिबुद्धा=जागरिता सती तद् भवनम् अशोकवनिकां च 'अपच्चभिजाणमाणी' अप्रत्यभिजानन्ती भवनादिकमपरिचितं जानन्ती एवमवादीत्—नो खलु अस्माक-

---

-:तएणं सा दोवई देवी इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (सा दोवईदेवी) वह द्रौपदीदेवी (ताओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी) १ मुहूर्त्त के बाद जगी सो जग कर उसने (तं भवणं असोगवणियं च अपच्चभिजाणमाणी एवं वयासी) उस भवन को एवं उस अशोकवाटिका को अपरिचित जानकर अपने मन में ऐसा विचार किया-(नो खलु अम्हं एसे सए भवणे, णो खलु

तएणं सा दोवई देवी इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) त्यारपछी (सा दोवई देवी) ते द्रौपदी देवी (ताओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी) એક મુહૂર્ત પછી જાગી અને જાગીને તેણે (तं भवणं असोगवाणियं च अपचभिजाणमाणी एवं वयासी) ते ભવન અને તે અશોક વાટિકાને અપરિચિત જાણીને પોતાના મનમાં આ જાતનો વિચાર કર્યો કે—

मेतद् भवनं नो खलु एषाऽस्माकं 'सगा' स्वका=स्वकीया, अशोकवनिका, तद् न ज्ञायते खलु–अहं केनापि देवेन वा दानवेन वा किं पुरुषेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा गन्धर्वेण वा अन्यस्य राज्ञोऽशोकवनिकायां 'साहरिया' संहृता–आनीताऽस्मि' इति कृत्वा=इति विचार्य, अपहतमनःसंकल्पा=अनिष्टयोगेन भग्नमनोरथा विषादमुपगतेत्यर्थः यावद् ध्यायति=आर्तध्यानं करोति ।

ततः खलु पद्मनाभो राजा स्नातो यावत् सर्वालंकारविभूषितोऽन्तःपुरपरिवारसंपरिवृतो यत्रैवाशोकवनिका यत्रैव द्रौपदी देवी, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य

एसो अम्हं सगा असोगवणिया, तं ण णज्जइ, णं अहं केणई देवेणवा दाणवेण वा किं पुरिसेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा अन्नस्स रण्णो असोगवणियं साहरियत्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ) यह मेरा निज का भवन नहीं है, यह मेरी निज की अशोक वाटिका नहीं है। तो पता नहीं पड़ता क्या मैं किसी दूसरे राजा की अशोकवाटिका में किसी देव, दानव, किंपुरुष, किन्नर महोरग अथवा, गंधर्व के द्वारा हरण कर लाई गई हूँ। इस प्रकार के विचार से उस का मनः संकल्प अपहत हो गया–अनिष्ट के योग से उस का मनोरथ भग्न हो गया और वह खेदखिन्न हो गई यावत् आर्तध्यान करने लगी। (तएणं से पउमणाभे राया ण्हाए जाव सव्वालंकारविभूसिए अंतेउरपरियालं संपरिवुडे, जेणेव असोगवणिया जेणेव दोवई देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोवई देवीं ओहय० जाव झिया-

(नो खलु अम्हं एसे सए भवणे णो खलु एसा अम्हं सगा असोगवणिया, तं ण णज्जइ णं अहं केणई देवेण वा दाणवेण वा किंपुरिसेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा अन्नस्स रण्णो असोगवणियं साहरियत्ति कट्टु ओहयमण संकप्पा जाव झियायइ)

આ મારૂં ભવન નથી, આ મારી અશોક વાટિકા નથી. કંઈ ખબર પડતી નથી, શું હું બીજા કોઈ રાજાની અશોક વાટિકામાં કોઈ દેવ, દાનવ, કિંપુરુષ કિન્નર, મહોરગ અથવા તો ગંધર્વ વડે અપહૃત થઈને લઈ જવામાં આવી છું. આ જાતના વિચારોથી તેનુ મન ઉદાસ થઇ ગયું, અનિષ્ટના યોગથી તેનો મનોરથ ભગ્ન થઈ ગયો અને તે ખેદ–ખિન્ન થઇ ગઇ યાવત્ આર્તધ્યાન કરવા લાગી.

(तएणं से पउमणाभे राया ण्हाए जाव सव्वालंकारविभूसिए अंतेउरपरियालं संपरिवुडे, जेणेव असोगवणिया जेणेव दोवई देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवाग-

द्रौपदीं देवीमपहतमनःसंकल्पां यावद् ध्यायन्तीं=आर्तध्यानं कुर्वतीं पश्यति दृष्ट्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे देवानुप्रिये! किं खलु त्वं 'ओहय० जाव झियाहि' अपहतमनः संकल्पा यावद् ध्यायसि=विषीदसि एवं खलु त्वं हे देवानुप्रिये! मम पूर्वसंगतिकेन देवेन जम्बूद्वीपाद् द्वीपाद् भारताद् वर्षाद् हस्तिनापुराद् नगराद् युधिष्ठिरस्य राज्ञो भवनात् संहृता=अपहताऽसि, ततस्तस्माद् मा

यमाणी पासइ, पासित्ता एवं वयासी, किण्णं तुमं देवाणुप्पिया! मम पुव्वसंगइएणं देवेणं जंबूदीवाओ २ भारहाओ वासाओ हत्थिणापुराओ नयराओ जुहिट्ठिल्लस्स रण्णो भवणाओ साहरिया, तं माणं तुमं देवाणुप्पिया! ओहय० जाव झियाहि तुमं मए सद्धिं विपुलाइं भोगभोगाइं जाव विहराहि) इसके बाद वह पद्मनाभ राजा नहा धोकर यावत् सर्वालंकारो से विभूषित हो अपने अंतःपुर परिवार से संपरिवृत होकर जहां वह अशोक वाटिका थी-और उसमें भी जहां वह द्रौपदी देवी बैठी थी-वहां आया-वहां आकर के उसने द्रौपदी देवी से अपहत मनः संकल्पवाली यावत् आर्त्तध्यान करती हुई देखकर इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिये! तुम क्यों अपहत मनः संकल्प होकर यावत् आर्तध्यान कर रही हो-खेद खिन्न हो रही हो तुम यहां हे देवानुप्रिय! मेरे पूर्व भव के मित्र देव के द्वारा जंबूद्वीप नाम के द्वीप से भारतवर्ष के हस्तिनापुर नगर से युधिष्ठिर राजा के भवन से हरण कर ले आई

च्छित्ता दोवइं देविं ओहय० जाव झियायमाणी पासइ, पासित्ता एवं वयासी किण्णं तुमं देवाणुप्पिया! ममपुव्वसंगइएणं देवेणं जंबूदिवाओ २ भारहाओ वासाओ हत्थिणापुराओ नयराओ जुहिट्ठिल्लस्स रण्णो भवणाओ साहरिया, तं माणं तुमं देवाणुप्पिया! ओहय० जाव झियाहि तुमं मए सद्धिं विपुलाइं भोगभोगाइं जाव विहराहि)

ત્યારપછી તે પદ્મનાભરાજા સ્નાન કરીને યાવત્ સર્વાલંકારોથી વિભૂષિત થઈને પોતાના રણવાસ-પરિવારને સાથે લઈને જ્યાં અશોક વાટિકા હતી અને તેમાં પણ જ્યાં તે દ્રૌપદી દેવી બેઠી હતી ત્યાં આવ્યો. ત્યાં આવીને તેણે દ્રૌપદી દેવીને અપહતમનઃ સંકલ્પવાળી યાવત્ આર્ત્તધ્યાન કરતી જોઈને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયે! તમે શા માટે અપહતમનઃ સંકલ્પા થઈને યાવત્ આર્ત્તધ્યાન કરી રહી છો? ખેદ-ખિન્ન થઈ રહ્યા છો? હે દેવાનુપ્રિયે! મારા પૂર્વભવના મિત્ર દેવ વડે તમે જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપના, ભારત વર્ષના હસ્તિનાપુર નગરના યુધિષ્ઠિર રાજાના ભવનથી અપહૃત થઈને અહીં લાવવામાં

खलु त्वं हे देवानुप्रिये ! अपहतमनःसंकल्पा यावद् ध्याय, आर्तध्यानं मा कुरु त्वं मया सार्धं विपुलान् भोगभोगान् यावद् भुञ्जाना विहर=मदीयप्रासादे तिष्ठ' इति।

ततः खलु सा द्रौपदी देवी पद्मनाभमेवमवादीत्–एवं खलु हे देवानुप्रिय ! जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे द्वारवत्यां नगर्यां कृष्णो नाम वासुदेवो मम प्रियभ्रातृकः=ममप्रियस्य भर्तुर्भ्राता परिवसति, तद् यदि खलु स षण्णां मासानां मध्ये 'ममं' मां 'कूवं' देशीशब्दोऽयम्, अन्वेषयितुं ग्रहीतुं वा नो शीघ्रमागच्छति–ततः खलु

गई हो। इसलिये हे देवानुप्रिये! तुम आपहतमनःसंकल्प बनकर यावत् आर्तध्यान मत करो। तुम तो अब मेरे साथ विपुल कामभोगों को भोगती हुई मेरे प्रासाद में रहो। (तएणं सा दोवई देवी पउमणाभं एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! जंबूदीवे दीवे भारहे वासे बारवइए णयरीए कण्हे णामं वासुदेवे ममप्पियभाउए परिवसइ, तं जइणं से छण्हं मासाणं मम कूवं णो हव्व मागच्छइ, तएणं अहं देवाणुप्पिया ! जं तुमं वदसि तस्स आणाओवायवयणणिद्देसे चिट्ठिस्सामि तएणं से पउमे दोवईए एयमट्ठं पडिसुणेइ २ दोवइं देवीं कण्णंतेउरे ठवेइ; तएणं सा दोवई देवी छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं आयंबिलपरिग्गहिएणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ) इसके बाद उस द्रौपदी देवी ने पद्मनाभ से इस प्रकार कहा–हे देवानुप्रिय ! सुनो–जंबूद्वीप नाम के द्वीप में भारतवर्षमें द्वारावती नगरी में कृष्ण वासुदेव मेरे प्रिय पतिके भ्राता रहते है। वे यदि छह मासके भीतर मुझे अन्वेषण करनेके लिये या

આવી છો એથી હે દેવાનુપ્રિયે! તમે અપહતમનઃ સંકલ્પા થઇને યાવત્ આર્ત્તધ્યાન ન કરો. તમે મનુષ્યભવ સંબંધી કામ ભોગો ભોગતાં મારા મહેલમાં રહો.

(तएणं सा दोवई देवी पउमणाभं एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! जंबूदीवे दीवे, भारहे वासे बारवइए णयरीए कण्णे णामं वासुदेवे मम पियभाउए परिवसइ, तं जइणं से छण्हं मासाणं मम कूवं णो हव्व मागच्छइ, तएणं अहं देवाणुप्पिया ! जं तुमं वदसि तस्स आणाओवायवयणणिद्देसे चिट्ठिस्सामि तएणं से पउमे दोवईए एयमट्ठं पडिसुणित्ता २ दोवई देवीं कण्णंतेउरे ठवेइ, तएणं सा दोवई देवी छट्ठ छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं आयंबिलपरिग्गहिएणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावे माणे विहरइ)

ત્યારપછી દ્રૌપદી દેવીએ પદ્મનાભને આ પ્રમાણે કહ્યું કે દેવાનુપ્રિય! સાંભળો, જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમાં ભારત વર્ષમાં દ્વારાવતી નગરીમાં કૃષ્ણ-વાસુદેવ મારા પ્રિય પતિના ભાઈ રહે છે. તેઓ છ મહીનાની અંદર મારી તપાસ

अहं हे देवानुप्रिय ! यत् त्वं वदसि=वदिष्यसि 'तस्स' तत्र 'आणाओवायवयणणिद्देसे' आज्ञावपातवचननिर्देशे स्थास्यामि, तवाज्ञाकारिणी वशवर्तिनी भविष्यामीत्यर्थः, आज्ञा-अवश्य विधेयतया आदेशः, उपपातवचनं सेवावचनं, निर्देशः-कार्याणि प्रति प्रश्नेकृते यन्निपतार्थमुत्तरम्, एषां समाहारद्वन्द्वः तत्र, ततः खलु स पद्मनाभो राजा द्रौपद्या एतमर्थं प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य द्रौपदीं देवीं 'कण्णंतेउरे' कन्यान्तः पुरे स्थापयति, ततः खलु सा द्रौपदीदेवी 'छट्ठं छट्ठेणं' षष्ठषष्ठेन षष्ठभक्तानन्तरं पुनः षष्ठभक्तेन, 'अनिक्खित्तेणं' अनिक्षिप्तेन=विरामरहितेन अन्तररहितेनेत्यर्थः, 'आयंबिलपरिग्गहिएणं' आयंबिलपरिगृहीतेन तपः कर्मणा आत्मानं भावयन्ती विहरति ॥ सू०२६ ॥

मूलम्-तएणं से जुहुट्ठिल्ले राया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धे समाणे दोवइं देविं पासे अपासमाणो सयणिज्जाओ उट्ठेइ उट्ठित्ता दोवईए देवीए सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेइ करित्ता दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा खुइं वा पवत्तिं वा अलभमाणे जेणेव पंडुराया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पंडुं रायं एवं वयासी एवं-खलु ताओ ! ममं आगासतलगंसि सुहपसुत्तस्स पासाओ

लेने के लिये यहां जल्दी से नहीं आयेगे तो उसके बाद हे देवानुप्रिय ! जैसा तुम कहोगे वैसा मैं करूँगी-तुम्हारी आज्ञा कारिणी वशवर्तिनी बन जाऊँगी। ऐसा अर्थ "आणाओवायवयणणिद्देसे" इन पदों का निकलता है। इसके बाद पद्मनाभ राजा ने द्रौपदी के इस कथन को स्वीकार करके उसे कन्या के अन्तः पुर में रखदिया। वहां वह द्रौपदी देवी आयंबिल परिगृहीत छट्ठ छट्ठ की अन्तर रहित तपस्या से अपने आप को भावित करती हुई रहने लगी। सू० २६

કરતાં કરતાં અહીં નહિ આવી શકે તો ત્યારપછી હે દેવાનુપ્રિય ! તમે જેમ કહેશો તેમ કરીશ, હું તમારી આજ્ઞાકારિણી વશવર્તિની બની જઇશ. "આણાઓવાયવયણાણિદ્દેસે" આ પદોથી આ જાતનો અર્થ નીકળે છે. ત્યારપછી પદ્મનાભ રાજાએ દ્રૌપદીના તે કથનને સ્વીકારી લીધું અને તેને કન્યાના અન્તઃ પુરમાં મૂકી દીધી. ત્યાં તે દ્રૌપદી દેવી આયંબિલ પરિગૃહીત છઠ્ઠ છઠ્ઠની અન્તર રહિત તપસ્યાથી પોતાની જાતને ભાવિત કરતી રહેવા લાગી. ॥ સૂત્ર ૨૬ ॥

दोवइ देवी ण णज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण वा किं पुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा णीया वा अवक्खित्ता वा ?, इच्छामि णं ताओ ! दोवईए देवीए सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं कयं, तएणं से पंडुराया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे नयरे सिंघाडगतियचउक्कचच्चरमहापहपहेसु महया२ सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! जुहिट्ठिल्लस्स रण्णो आगासतलगंसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी ण णज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण वा किं- पुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा नीया वा अवक्खित्ता वा. तं जो णं देवाणुप्पिया ! दोवइए देवीए सुइं वा जाव पवित्तिं वा परिकहेइ तस्स णं पंडुराया विउलं अत्थ- संपयाणं दाणं दलयइ त्तिकट्टु घोसणं घोसावेह२ एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तएणं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति, तएणं से पंडूराया दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा जाव अलभ- माणे कोंतीं देवीं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! बारवइं णयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं णिवेदेहि कण्ह णं परं वासुदेवे दोवइए मग्गणगवेसणं करेज्जा अन्नहा न नज्जइ दोवइए देवीए सुतीं वा खुतीं वा पवत्तीं वा उवलभेज्जा, तएणं सा कोंती देवी पंडुरण्णा एवं वुत्ता समाणी जाव पडिसुणेइ पडिसुणित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा हत्थिखंध-

वरगया हत्थिणाउरं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ णिग्गच्छित्ता कुरु-जणवये मज्झंमज्झेणं जेणेव सुरट्ठजणवए जेणेव बारवई णयरी जेणेव अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! जेणेव बारवई णयरी तेणेव अणुपविसह, अणुपविसित्ता कण्हं वासुदेवं करयल० एवं वयह–एवं खलु सामी ! तुब्भं पिउच्छा कोंती देवी हत्थिणा-उराओ नयराओ इह हव्वमागया तुब्भं दंसणं कंखइ, तएणं ते कोडुंबियपुरिसा जाव कहेंति, तएणं कण्हे वासुदेवे कोडुंबि-यपुरिसाणं अंतिए सोच्चा णिसम्म हत्थिखंधवरगए हयगय बारवईए य मज्झंमज्झेणं जेणेव कोंती देवी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुह पच्चोरुहित्ता कोंतीए देवीए पायग्गहणं करेइ करित्ता कोंतीए देवीए सद्धिं हत्थिखंधं दुरूहइ दुरुहित्ता बारावइए णयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सयं गिहं अणुपविसइ। तएणं से कण्हे वासुदेवे कोंती देविं ण्हायं कयबलिकम्मं जिमियभुत्तुत्त-रागयं जाव सुहासणवरगयं एवं वयासी संदिसउ णं पिउच्छा ! किमागमणपओयणं ?, तएणं सा कोंती देवी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–एवं खलु पुत्ता ! हत्थिणाउरे णयरे जुहिट्ठिल्लस्स आगासतले सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी ण णज्जइ केणइ अवहिया जाव अवक्खित्ता वा, तं इच्छामि णं पुत्ता ! दोवईए

देवीए मग्गणगवेसणं करित्तए, तएणं से कण्हे वासुदेवे कोंती पिउच्छि एवं वयासी-जं णवरं पिउच्छा! दोवइए देवीए कत्थइ सुइं वा जाव लभामि तो णं अहं पायालाओ वा भवणाओ अद्धभरहाओ वा समंतओ दोवइं साहत्थिं उवणेमित्तिकट्टु कोंतीं पिउत्थिं सक्कारेइ संमाणेइ जाव पडिविसज्जेइ, तएणं सा कोंती देवी कण्हेणं वासुदेवेणं पडिविसज्जिया समाणी जामेव दिसिं पाउ० तामेव दिसिं पडिगया ॥ सू० २५ ॥

टीका—'तएणं से' इत्यादि। ततः खलु स युधिष्ठिरो राजा ततो मुहूर्तान्तरे प्रतिबुद्धः सन् द्रौपदीं देवीं पार्श्वे 'अपासमाणो' अपश्यन्=अनवलोकयन् शयनीयादुत्तिष्ठति, उत्थाय द्रौपद्या देव्याः सर्वतः समन्ताद् मार्गणगवेषणं करोति, कृत्वा द्रौपद्या देव्या 'कत्थइ' कुत्रापि 'सुइं' श्रुतिं सामान्यवृत्तान्तं वा, 'खुइं' क्षुतिं छिक्कादि शब्दं वा 'पवत्तिं' प्रवृत्तिं वा विशेषवृत्तान्तं अलभमानो

तएणं से जुहिट्ठिल्ले राया इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से जुहिट्ठिल्ले राया) वे युधिष्ठिर राजा (तओ मुहुत्तंतरस्स) एक मुहूर्त्त के बाद (पडिवुद्धे समाणे) जगे-और जगकर उन्होंने (दोवइं देवीं) द्रौपदी देवी को (पासे अपासमाणो सयणिज्जाओ उट्ठेइ, उट्ठित्ता दोवईए सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेइ) अपने पास जब नहीं देखा तो वे अपनी शय्या से उठे और उठकर द्रौपदी देवीकी सबओरसे उन्होंने मार्गणा गवेषणाकी (करित्ता दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा खुइं वा पवत्तिं वा अलभमाणे जेणेव पंडुराया

'तएण' से जुहिट्ठिल्ले राया' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) त्यारपछी (से जुहिट्ठिल्ले राया) ते युधिष्ठिर राजा (तओ मुहुत्तंतरस्स) એક મુહૂર્ત બાદ (पडिवुद्धे समाणे) જાગ્યા. અને જાગીને તેમણે (दोवइं देवीं) દ્રૌપદી દેવીને,

(पासे अपासमाणो सयणिज्जाओ उट्ठेइ, उट्ठित्ता दोवईए सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेइ)

જ્યારે પોતાની પાસે જોઈ નહિ ત્યારે પોતાની શય્યા ઉપરથી ઊભા થયા અને ઊભા થઈને દ્રૌપદી દેવીની ચોમેર માર્ગણા ગવેષણા કરી.

(करित्ता दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा खुइं वा पवत्तिं वा अलभमाणे

यत्रैव पाण्डुराजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पाण्डुं राजानमेवमवादीत्— हे तात ! एवं खलु ममाकाशतले प्रासादाट्टालिकोपरि ' सुहपसुत्तस्स ' सुखप्रसुप्तस्य पार्श्वाद् द्रौपदी देवी ' ण णज्जइ ' न ज्ञायते केनापि देवेन वा दानवेन वा किन्नरेण वा किंपुरुषेण वा गन्धर्वेण वा हृता वा नीता=अन्यत्र प्रापिता वा अवक्षिप्ता वा= ? कूपगर्तादौ क्वचित् पातिता वा इत्यर्थः, तत्-तस्माद् इच्छामि खलु हे तातः ! द्रौपद्या देव्याः सर्वतः समन्ताद् मार्गणगवेषणं कर्तुम् ।

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंडुरायं एवं वयासी एवं खलु ताओ ममं आगासतलगंसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी ण णज्जइ, केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा णीया वा अवक्खित्ता वा) मार्गणा गवेषणा करके जब उसने द्रौपदी देवी की कहीं भी शोध, सामान्य खबर को उस के चिह्नस्वरूप छिक्का आदि के शब्द को, अथवा प्रवृत्ति-विशेष वृत्तान्त को नहीं पाया तब वे जहां पांडुराजा थे वहां गये-वहां जाकर के उन्होंने पांडुराजा से इस प्रकार कहा-हे तात ! जब मैं प्रासाद की अट्टालिकाके ऊपर सुखसे सो रहा था-तब मेरे पाससे न मालूम द्रौपदी देवी को किसी देवने, दानवने, किन्नरने, किंपुरुषने, महोरगने, गंधर्वने हरण कर कहां रख दिया है।-या उसे किसी कुंए में या खड्डे में डाल दिया है (इच्छामि णं ताओ दोवईए देवीए सव्वओ समंता मग्गण गवेसणं कयं) इस लिए हे तात! मैं द्रौपदी देवी की सब तरफ से

जेणेव पंडुराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंडुरायं एवं वयासी एवं खलु ताओ ममं आगासतलगंसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी ण णज्जइ, केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा णीया वा अवक्खित्ता वा)

માર્ગણા ગવેષણા કર્યા બાદ પણ જ્યારે તેમણે દ્રૌપદી દેવીની કોઈપણ રીતે, સામાન્ય ખબર અને ચિહ્ન સ્વરૂપ છીંક વગેરે શબ્દને અથવા તો પ્રવૃત્તિ-વિશેષ વૃત્તાંત-ની પણ જાણ થઈ નહિ ત્યારે તેઓ જ્યાં પાંડુરાજા હતા ત્યાં ગયા, ત્યાં જઈને તેમણે પાંડુરાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે તાત ! જ્યારે હું મહેલની અગાશીમાં સૂઈ રહ્યો હતો ત્યારે મારી પાસે ન જાણે કોણે દ્રૌપદી દેવીનું કોઈ દેવે, દાનવે કે કિન્નરે કે કિંપુરુષે કે મહોરગે કે ગંધર્વે હરણ કર્યું છે. અથવા તો દ્રૌપદી દેવીને કોઇએ કૂવામાં કે ખાડામાં નાખી દીધી છે. (इच्छामि णं ताओ दोवईए देवीए सव्वओ समंतो मग्गण-

ततः खलु स पाण्डुराजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्–गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः ! हस्तिनापुरे नगरे शृङ्गाटकत्रिकचतुष्कचत्वरमहापथपथेषु महता महता शब्देनोद्घोषयन्तः एवं वदत–एवं खलु हे देवानुप्रियाः ! युधिष्ठिरस्य राज्ञ आकाशतलके सुखप्रसुप्तस्य पार्श्वाद् द्रौपदी देवी न ज्ञायते केनापि देवेन वा दानवेन वा किं पुरुषेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा

और सब प्रकार से मार्गणा और गवेषणा करना चाहता हूँ। (तए णं से पंडुराया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छहाणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे नयरे, सिंघाडगतीय चउक्कचच्चर महापहपहेसु महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! जुहिट्ठिल्लस्स रण्णो आगासतलगंसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी ण णज्जइ, केणइ, देवेण वा दानवेण वा किंनरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा नीया वा अवक्खित्ता वा) इस बात को सुनकर के उन पांडुराजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और बुलाकर उनसे ऐसा कहा–हे देवानुप्रियो ! तुम लोग हस्तिनापुर नगर में जाओ–और वहां के श्रृंगाटक, त्रिक चतुष्क, चत्वर, महापथ इन समस्त मार्गों में बड़े जोर २ से ऐसी घोषणा बार २ करो कि हे देवाणुप्रियों ! सुनो प्रासादकी अट्टालिका पर सुखपूर्वक सोये हुए युधिष्ठिर राजा के पास से न मालूम किसी देवने, या दानवने, किसी, किन्नरने,

गवेसणं कयं) એટલા માટે હે તાત ! હું ચોમેર બધી રીતે દ્રૌપદી દેવીની માર્ગણા અને ગવેષણા કરવા ઇચ્છું છું.

(तए णं से पंडुराया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे नयरे, सिंघाडगतीयचउक्कचच्चरमहापहपहेसु महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! जुहिट्ठिल्लस्स रण्णो आगासतलगंसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी ण णज्जइ, केणइ देवेण वा दानवेर वा किंनरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेणं वा गंधव्वेण वा हिया वा नीया वा अवक्खित्ता वा)

આ વાતને સાંભળીને પાંડુ રાજાએ કૌટુંબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો હસ્તિનાપુર નગરમાં જાઓ અને ત્યાંના શ્રૃંગાટક, ત્રિક, ચતુષ્ક, ચત્વર, મહાપથ આ બધા માર્ગોમાં મોટા સાદે આ જાતની ઘોષણા કરો કે હે દેવાનુપ્રિયો ! સાંભળો, મહેલની અગાશી ઉપર સુખેથી સૂતા યુધિષ્ઠિર રાજાની પાંસેથી ન જાણે કોઇ દેવે કે દાનવે અથવા તો કોઈ કિન્નરે કે કિંપુરુષે અથવા કોઇ મહોરગે કે

गन्धर्वेण वा हृता वा नीता वा अवक्षिप्ता वा, तत्=तस्माद् यः खलु हे देवानुप्रियाः! द्रौपद्या देव्याः श्रुतिं वा क्षुतिं वा प्रवृत्तिं वा परिकथयति, तस्य खलु पाण्डू राजा विपुलमर्थसंप्रदानं दानं ददाति=इति कृत्वा-इत्युक्त्वा घोषणां घोषयत, घोषयित्वा एतामज्ञप्तिकां मत्यर्पयत। ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषास्तथैव घोषणां कृत्वा यावदाज्ञां मत्यर्पयन्ति=हे स्वामिन्! भवदाज्ञया घोषणा कृताऽस्माभिरिति निवेदयन्ति।

या किसी किंपुरुष ने या किसी महोरग ने या किसी गंधर्व ने द्रौपदी देवी को हरण कर लिया है-या हरणकर उसे कहीं रख दिया है अथवा किसी कुएँ में या खड्डे में डाल दिया है (तं जो णं देवाणुप्पिया! दोवईए देवीए सुइं वा जाव पवत्ति वा परिकहेइ, तस्स णं पंडुराया विउलं अत्थसंपयाणं दाणं दलयइ, त्ति कट्टु घोसणं घोसावेह २ एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तएणं ते कोडुंबिय पुरिसा जाव पच्चप्पिणंति-तएणं से पंडुराया दोवईए देवीए कत्थइ सुइंवा जाव अलभमाणे कोंतीं देवीं सद्दावेइ) तो हे देवानुप्रियो! जो कोई भी मनुष्य द्रौपदी देवी की शोध करेगा यावत् उसके विशेषवृत्तान्त को लाकर देगा-हम से आकर कहेगा, उसको पांडुराजा बहुत अधिक मात्रा में अर्थ संप्रदान-दान-देगा। इस प्रकार की तुम घोसषणा करो, और घोषणा कर के फिर हमें इसकी पीछे खबर दो। इस प्रकार राजा की आज्ञा पाकर उन कौटुम्बिक पुरुषों ने इसी प्रकारकी घोषणा करके इस की खबर राजाके

ગંધર્વે દ્રૌપદી દેવીનું અપહરણ કર્યું છે કે હરણ કરીને તેને કયાંક મૂકી દીધી છે કે કોઈ કૂવામાં અથવા તો ખાડામાં નાખી દીધી છે.

(तं जो णं देवाणुप्पिया! दोवईए देवीए सुइं वा जाव पवत्ति वा परिकहेइ, तस्सणं पंडुराया विउलं अत्थसंपयाणं दाणं दलयइ, त्ति कट्टु घोसणं घोसावेह २ हयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तएणं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति-तएणं से पंडुराया दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा जाव अलभमाणे कोंतीं देवीं सद्दावेइ)

તો હે દેવાનુપ્રિયો! જે કોઈ પણ માણુસ દ્રૌપદી દેવીની શોધ કરશે યાવત્ તેના વિષે સવિશેષ સમાચાર જાણીને અમને ખબર આપશે, અમને કહેશે, તેને પાંડુ રાજા ખૂબ જ દ્રવ્ય-ધન આપશે. આ રીતે તમે ઘોષણા કરો અને ઘોષણા થઈ જવાની અમને ખબર પણ આપો. આ રીતે રાજાની આજ્ઞા સાંભળીને તે કૌટુંબિક પુરુષોએ આ પ્રમાણે જ ઘોષણા કરીને તેની ખબર રાજાને આપી ત્યારપછી જ્યારે પાંડુ રાજાએ દ્રૌપદી દેવીની કોઈપણ સ્થાને

ततः खलु स पाण्डू राजा द्रौपद्या देव्याः कुत्रापि श्रुतिं वा यावत् प्रवृत्तिम् अलभमानः कुन्तीं देवीं शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्–गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिये ! द्वारवतीं नगरीं कृष्णस्य वासुदेवस्य एतमर्थं निवेदय=सुखप्रसुप्ता द्रौपदी केनाऽपि हृता नीता कूपादौ प्रक्षिप्ता वेति न ज्ञायते इत्येतद्रूपं वृत्तान्तं कथय, कृष्णः खलु परं वासुदेवो द्रौपद्या मार्गणगवेषणं कुर्यात् अन्यथा न ज्ञायते द्रौपद्या देव्याः श्रुतिं वा प्रवृत्तिं वा क्षुतिं वा उपलभेत ।

पास भेजदी । इसके बाद जब पांडुराजा ने द्रौपदी देवी की कहीं पर भी श्रुती यावत् प्रवृत्ति नहीं पाई तब उन्हों ने कुंति देवी को बुलाया–(सद्दावि०ए०वयासी) और बुलाकर उन से ऐसा कहा–(गच्छहणं तुमं देवाणुप्पिया ! बारवइं नयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं णिवेदेहि, कण्हेणं परं वासुदेवे दोवइए मग्गणगवेसणं करेज्जा–अन्नहा न नज्जई, दोवईए देवीए सुतीं वा खुतीं वा पवत्तीं वा उवलभेज्जा) हे देवानुप्रियो ! तुम द्वारावती नगरी में कृष्ण वासुदेव के पास जाओ–और उनसे इस अर्थका निवेदन करो कि सुख प्रसुप्त द्रौपदी को किसी ने हरलिया है। हरण कर उसे कहीं पहुचा दिया है या किसी कुएँ में या खड्डे में डाल दिया है। पता नहीं पड़ता है। वे कृष्ण वासुदेव अवश्य २ ही द्रौपदी की मार्गणा गवेषणा करेंगे। नहीं तो द्रौपदी देवी की श्रुति, क्षुति अथवा प्रवृत्ति हमें प्राप्त हो जावेगी–यह नहीं कहा जा सकता है।

શ્રુતિ યાવત્ પ્રવૃત્તિ મેળવી નહિ ત્યારે તેમણે કુંતી દેવીને બોલાવી. (सद्दावि० ए० वयासी) અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું—

(गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! बारवइं नयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं णिवेदेहि, कण्हेणं परं वासुदेवे दोवईए मग्गणगवेसणं करेज्जा अन्नहा न नज्जई, दोवईए देवीए सुतीं वा खुतीं वा पवत्तीं वा उवलभेज्जा)

હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે દ્વારાવતી નગરીમાં કૃષ્ણવાસુદેવની પાંસે જાઓ અને તેમને આ પ્રમાણે વિનંતી કરો કે સુખથી સુતેલી દ્રૌપદીનું કોઇએ હરણ કરી લીધું છે. હરણ કરીને તેને ક્યાંક મૂકી દીધી છે અથવા તો કોઇ કૂવામાં કે ખાડામાં નાખી દીધી છે. ન જાણે શું થઇ ગયું છે ? કૃષ્ણવાસુદેવ મને ખાત્રી છે કે ચોક્કસ દ્રૌપદી દેવીની માર્ગણા ગવેષણા કરશે નહિંતર દ્રૌપદી દેવીની શ્રુતિ, ક્ષુતિ અથવા પ્રવૃત્તિની જાણ અમને થશે એવી શકયતા જણાતી નથી.

ततः खलु सा कुन्ती देवी पाण्डुना राज्ञा एवमुक्ता सती यावत् प्रतिशृणोति=पाण्डुनृपस्याज्ञां स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य-स्वीकृत्य स्नाता कृतबलिकर्मा हस्तिस्कन्धवरगता हस्तिनापुरस्य मध्यमध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य कुरुजनपदस्य=कुरुनामकस्य देशस्य मध्यमध्येन यत्रैव सौराष्ट्रजनपदः, यत्रैव द्वारवती नगरी, यत्रैवाग्रोद्यानं=यत्रान्यस्थानादागतानां स्थित्यर्थमावासो विद्यते तादृशं बहिः प्रदेशवर्त्युपवनम् , तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य हस्तिस्कन्धात् प्रत्यवरोहति=प्रत्यवतरति, प्रत्यवरुह्य कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूयं हे

(तएणं सा कोंती देवी पंडुरण्णा एवं वुत्ता समाणी जाव पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता, ण्हाया कयबलिकम्मा हत्थिखंधवरगया हत्थिणाउरं मज्झं मज्झेणं णिगच्छइ णिगच्छित्ता कुरुजणवयं मज्झं मज्झेणं जेणेव सुरट्ठ जणवए जेणेव बारवई णयरी जेणेव अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी) इस के बाद पांडुराजा द्वारा इस प्रकार कही गई कुंती देवी ने पांडुराजा की आज्ञा को स्वीकार कर लिया-और स्वीकार कर के उसने स्नान किया-काक आदि पक्षियों के लिये अन्नदेने रूप बलि कर्म किया। बाद में वह हाथी के ऊपर बैठकर हस्तिनापुर नगर के बीच से होकर निकली -निकलकर वह कुरुदेश के बीच से होती हुई जहां सौराष्ट्र जनपद था और उसमें भी जहां द्वारावती नगरी थी-वहां पर भी जहां वह अग्रउद्यान था कि जिसमें बाहरसे आये हुए पथिक विश्राम के लिये ठहर जाते थे-वहां गई। वहां जाकर

(तए णं सा कोंती देवी पंडुरण्णा एवं वुत्ता समाणी जाव पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता, ण्हाया कयबलिकम्मा हत्थिखंधवरगया हत्थिणाउरं मज्झं मज्झेणं णिगच्छइ, णिगच्छित्ता कुरुजाणवयं मज्झं मज्झेणं जेणेव सुरट्ठजणवए जेणेव बारवई णयरी जेणेव अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी) ત્યારપછી પાંડુરાજા વડે આ પ્રમાણે આજ્ઞાપિત થયેલી કુંતી દેવીએ પાંડુરાજાની આજ્ઞાને સ્વીકારી લીધી અને સ્વીકારીને તેણે સ્નાન કર્યું. કાગડા વગેરે પક્ષીઓને અન્નભાગ અર્પીને બલિકર્મ કર્યું ત્યારપછી તે હાથી ઉપર સવાર થઈને હસ્તિનાપુર નગરની વચ્ચે થઈને નીકળી. નીકળીને તે કુરુદેશની વચ્ચે થઈને જ્યાં સૌરાષ્ટ્ર જનપદ હતું અને તેમાં પણ જ્યાં અગ્ર ઉદ્યાન હતું-કે જેમાં બહારથી આવનારા પથિકો વિશ્રામ માટે રોકાતા હતા-તેમાં

देवानुप्रियाः ! यत्रैव द्वारवती नगरी तत्रैवानुप्रविशत, अनुप्रविश्य कृष्णं वासुदेवं करतलपरिगृहीतदशनखं शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवं वदत एवं खलु हे स्वामिन् ! युष्माकं पितृष्वसा कुन्ती देवी हस्तिनापुराद् नगराद् इह हव्यमागता युष्माकं दर्शनं काङ्क्षति । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषा यावत् कथयन्ति=कृष्णवासुदेवस्य समीपे कुन्तीकथितं वचनं निवेदयन्तीत्यर्थः । ततः खलु कृष्णो वासु-

वह हाथी से नीचे उतरी और उतर कर के उसने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया- बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा-(गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! जेणेव बारवईणयरी, तेणेव अणुपविसह, अणुपविसित्ता कण्हं वासुदेवं करयल० एवं वयह, एवं खलु सामी ! तुब्भं पिउच्छा कोंती देवी हत्थिणाउराओ नयराओ इह हव्वमागया,-तुब्भं दंसणं कंखइ, तएणं ते कोडुंबिय पुरिसाणं अंतिए सोच्चा णिसम्म हत्थिखंधवरगए हयगयचारवईए य मज्झं मज्झेणं जेणेव कोंती देवी-तेणेव उवागच्छइ) हे देवानुप्रियों ! तुम द्वारावती नगरी में जाओ-वहां जाकर कृष्ण वासुदेव को दोनों हाथोंकी अंजलि बनाकर और उसे मस्तक पर रखकर शिर झुकाते हुए नमस्कार करना-बादमें उनसे ऐसा कहना-कि हे स्वामिन् ! आपकी पितृष्वसा-बुआ-कुंती देवी हस्तिनापुर नगर से यहां अभी -आई है-वे आपके दर्शन करना चाहती हैं। उन कोटुम्बिक पुरुषोंने कुंती देवी की इस आज्ञा को शिरोधार्य कर श्री कृष्ण

રોકાઇ. ત્યાં જઇને તે હાથી ઉપરથી નીચે ઉતરી અને ઉતરીને તેણે કૌટુંબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! जेणेव बारवई णयरी, तेणेव अणुपविसह, अणुपविसित्ता कण्हं वासुदेवं करयल० एवं वयह एवं खलु सामी ! तुब्भ पिउच्छा कोंती देवी हत्थिणाउराओ नयराओ इह हव्वमागया, तुब्भं दसण कंखइ, तए णं ते कोडुंवियपुरिसा जाव कहेंति, तएणं कण्हे वासुदेवे कोडुंबिय पुरिसाणं अंतिए सोच्चा णिसम्म हत्थिखंधवरगए हयगयचारवइए य मज्झं मज्झेणं जेणेव कोंती देवी-तेणेव उवागच्छइ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે દ્વારાવતી નગરીમાં જાઓ, ત્યાં જઇને કૃષ્ણવાસુદેવને બંને હાથોની અંજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને માથું નીચે નમાવીને નમસ્કાર કરજો ત્યારપછી તેમને આ પ્રમાણે વિનતી કરજો કે હે સ્વામિન્ ! તમારી પિતૃષ્વસા-ફોઈ કુંતી દેવી હસ્તિનાપુર નગરથી અત્યારે અહીં આવ્યા છે તેઓ તમને જોવા માગે છે તે કૌટુંબિક પુરૂષોએ કુંતી દેવીની આ આજ્ઞાને સ્વીકારીને શ્રીકૃષ્ણ વાસુદેવને આ સમાચારની ખબર આપી

देवः कौटुम्बिकपुरुषाणामन्तिके श्रुत्वा निशम्य हस्तिस्कन्धवरगतो हयगजरथ-पदातिसंपरिवृतो द्वारवत्या नगर्या मध्यमध्येन यत्रैव कुन्ती देवी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य हस्तिस्कन्धात् प्रत्यवरोहति, प्रत्यवरुह्य कुन्त्या देव्याः पादग्रहणं करोति, कृत्वा कुन्त्या देव्या सार्धं हस्तिस्कन्धं ' दुरुहइ ' दूरोहति=आरोहतीत्यर्थः। दूरुह्य द्वारवत्या नगर्या मध्यमध्येन यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्वकं गृहमनुप्रविशति ।

वासुदेव के लिये इस समाचार की खबर करदी कृष्ण वासुदेव कौटु-म्बिक पुरुषों के पास से इस समाचार को सुनकर और उसे हृदय में धारण कर हाथी पर बैठ, हयगज, रथ एवं पदातियों के साथ २ द्वारा वती नगरी के बींच से होते हुए जहां कुंतीदेवी थी वहां आये। (उवा-गच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता कोंतीए देवीए पाय-ग्गहणं करेइ, करित्ता कोंतीए देवीए सद्धिं हत्थिखंधं दुरूहइ, दुरूहित्ता बारवईए णयरीए मज्झं मज्झेणं जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयं गिहं अणुपविसइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे कोंतीदेवीं ण्हायं कयबलिकम्मं जिमियभुत्तुत्तरागयं जाव सुहासणवरगयं एवं वयासी) वहां आकर वे हाथी पर से नीचे उतरे और उतरकर कुंती देवी के चरणों में नमन किया-चरण स्पर्श करके कुंतीदेवी के साथ २ हाथी पर बैठ गये-बैठ कर के द्वारावती नगरी के ठीक भीतर से होकर जहां अपना गृह-प्रासाद-था वहां आये-वहां आकर प्रासाद के भीतर

દીધી. કૃષ્ણવાસુદેવે કૌટુંબિક પુરૂષોની પાંસેથી આ સમાચારો સાંભળીને તેને હૃદયમાં ધારણ કરીને, હાથી ઉપર સવાર થઈને, ઘોડા, હાથી, રથ અને પાય-દળોની સાથે દ્વારાવતી નગરીની વચ્ચે થઈને જ્યાં કુંતી દેવી હતાં ત્યાં આવ્યા. (उवागच्छित्ता हत्थिखधाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहि ा कोंतीए दैवीए पायग्गहणं करेइ, करित्ता कोंतीए देवीए सद्धि हत्थिखंधं दुरुहइ, दुरुहित्ता बारवईए णयरीए मज्झं मज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, सयं गिहं अणुपविसइ, तएणंसे कण्हे वासुदेवे कोंती देवी ण्हायं कयवलिकम्मं जिमियभुत्तुत्त-रागय जाव सिहासणवरगयं एवं वयासी)

ત્યાં પહોંચીને તેઓ હાથી ઉપરથી નીચે ઉતર્યા અને ઉતરીને કુંતી દેવીને પગે લાગ્યા અને પગે લાગીને કુંતી દેવીની સાથે હાથી ઉપર સવાર થયા. સવાર થઈને જ્યાં પોતાનું ભવન હતું ત્યાં આવ્યા, ત્યાં આવીને ભવનની

ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कुन्तीं देवीं स्नातां कृतबलिकर्माणं काकादिभ्यः कृतान्नसंविभागा जिमितभुक्तोत्तरागतां जिमिता-भोजनं कृतवती भुक्तोत्तरागता-भुक्तोत्तरकालं-भोजनोत्तरकालम्-आगता, तां तथा, यावत् सुखासनवरगता=सुख-पूर्वकं विशिष्टासनोपविष्टाम् एवमवादीत्-हे पितृष्वसः! संदिशन्तु किमागमनप्रयो-जनम् ?, ततः खलु सा कुन्ती देवी कृष्णं वासुदेवमेवमवादीत्-एवं खलु हे पुत्र! हस्तिनापुरे नगरे युधिष्ठिरस्याकाशतले सुखप्रसुप्तस्य पार्श्वाद् द्रौपदी देवी न ज्ञायते केनापि अपहृता यावद् अवक्षिप्ता वा, तत् तस्माद् इच्छामि खलु हे पुत्र!

चले गये। कुंती ने वहां जाकर स्नान किया बलिकर्म किया। बाद में चतुर्विध आहार को जीमकर जब वे सुखपूर्वक बैठ गई तब कृष्ण वासुदेव ने उनसे कहा (संदिसउ णं पिउच्छा! किमागमणपओयणं ? तएणं सा कोंती देवी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी एवं खलु पुत्ता! हत्थिणाउरे जुहिट्ठिल्लस्स अगासतले सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी ण णज्जइ, केणइ अवहिया जाव अवक्खित्ता वा तं इच्छामिणं पुत्ता! दोवईए देवीए मग्गणगवेसणं करित्तए) हे भुआजी! कहिये-किस कारण से आप यहां पधारीं हैं? इस प्रकार कृष्ण वासुदेव के पूछने पर उस कुंतीने उन कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा-पुत्र! सुनो-आने का कारण इस प्रकार है-हस्तिनापुर नगरमें प्रासाद की अट्टालिका के ऊपर सुखके साथ सोये हुए युधिष्ठिर के पास से द्रौपदी देवी न मालूम किसीने हरण करली है-यावत् किसी कुंए मे या खड्डे में डाल दी है।

અંદર ગયા. કુંતીએ ત્યાં પહોંચીને સ્નાન કર્યું અને બલિકર્મ કર્યું. ત્યાર પછી ચાર જાતના આહારો જમીને જ્યારે તે સુખેથી સ્વસ્થ થઇને બેસી ગયા ત્યારે કૃષ્ણ વાસુદેવે તેમને કહ્યું કે:—

(संदिसउ णं पिउच्छा! किमागमणपओयणं ? तएणं सा कोंती देवी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी एवं खलु पुत्ता! हत्थिणाउरे णयरे जुहिट्ठिल्लस्स आगासतले सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवीण णज्जइ, केणइ अवहिया जाव अवक्खित्ता वा तं इच्छामि णं पुत्ता! दोवईए मग्गणगवेसणं करित्तए)

કહો, શા કારણથી તમે અહીં આવ્યા છો? આ રીતે કૃષ્ણ વાસુદેવના પ્રશ્નને સાંભળીને કુંતી દેવીએ કૃષ્ણ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે પુત્ર! સાંભળો, હું એટલા માટે અહીં આવી છું કે હસ્તિનાપુર નગરમા મહેલની અગાશી ઉપરથી સુખેથી સૂતેલા યુધિષ્ઠિરની પાસેથી ન જાણે કોણે દ્રૌપદી દેવીનુ હરણ કરી લીધુ છે યાવત કોઇ કૂવામા એ કે ખાડામાં નાખી દીધી છે. એથી હે પુત્ર! હું ઇચ્છું છું કે:—દ્રૌપદી દેવીની શોધખોળ થવી જોઈએ.

द्रौपद्या देव्या मार्गणगवेषणं 'करित्तए' कर्तुम् इति। ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कुन्तीं 'पिउच्छि' पितृष्वसारमेवमवादीत्-यत् नवरं हे पितृष्वसः। यदि द्रौपद्या देव्याः कुत्रापि श्रुतिं वा क्षुतिं वा प्रवृत्तिं वा यावत् लभे, 'तो णं' तर्हि खलु, अहं पातालाद् भवनाद् वा अर्धभरताद् वा=खण्डत्रयमध्यात् समन्तात्=सर्वतः स्थानाद्, द्रौपदीं देवीं 'साहत्थि' स्वहस्तेन 'उवणेमि' उपनयामि, इति कृत्वा=इत्युक्त्वा कुन्तीं 'पिउत्थि' पितृष्वसारं सत्कारयति संमानयति, सत्कार्य

इस लिये हे पुत्र! मैं चाहती हूँ कि द्रौपदी की मार्गणा एवं गवेषणा होनी चाहिये। (तएणं से कण्हे वासुदेवे कोंतीं पिउच्छिं एवं वयासी- जं णवरं पिउच्छी दोवइए देवीए कत्थइ सुइं वा जाव लभामि तो णं अहं पायालाओ वा भवणाओ अद्धभरहाओ वा, समंतओ दोवइं साहत्थि उवणेमि त्ति कट्टु कोंती पिउच्छिं सक्कारेइ सम्माणेइ, जाव पडिविसज्जेइ, तएणं सा कोंती देवी कण्हेणं वासुदेवेणं पडिविसज्जिया, समाणी जामेव दिसिं पाउ० तामेवदिसिं पडिगया) तब कृष्ण वासुदेव ने अपनी भुआ कुंती देवी से इस प्रकार कहा-हे भुआ! मैं और अधिक तो क्या कहूँ-द्रौपदी देवी की यदि मैं कहीं पर भी श्रुतिक्षुति, और प्रवृत्ति पा लेता हूँ तो मैं चाहे वह पाताल में हो, या किसीके भवन में हो, या अर्ध भरत क्षेत्र में से कहीं पर भी क्यों न हो-उस द्रौपदी देवी को सब जगह से अपने हाथों से ला कर दूँगा। इस प्रकार कहकर उन कृष्ण वासुदेव ने अपनी पितृष्वसा कुंती देवी का सत्कार किया,

---

(तएणं से कण्हे वासुदेवे कोंतं पिउच्छिं एवं वयासी जं णवरं पिउच्छा दोवइए देवीए कत्थइ सुइं वा जाव लभामि तो णं अहं पायालाओ वा भवणाओ अद्ध भरहाओ वा, समंतओ दोवइं साहत्थिं उवणेमित्ति कट्टु कोंती पिउच्छिं सक्कारेइ सम्माणेइ, जाव पडिविसज्जेइ, तएणं सा कोंती देवो कण्हेणं वासुदेवेणं पडिविसज्जिया समाणी जामेव दिसिं पाउ० तामेव दिसिं पडिगया)

ત્યારે કૃષ્ણ વાસુદેવે પોતાના ફોઈ કુંતી દેવીને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ફોઈ! હું વધારે શું કહું, દ્રૌપદી દેવીની જો હું કોઈ પણ સ્થાને શ્રુતિ, ક્ષુતિ અને પ્રવૃત્તિ મેળવી લઈશ તો ભલે તે પાતાળમાં હોય, કોઈના ભવનમાં હોય કે અર્ધ ભરત ક્ષેત્રમાં ગમે ત્યાં કેમ ન હોય તે દ્રૌપદી દેવીને ગમે ત્યાંથી હું લાવી આપને આપીશ તેમ છું. આ પ્રમાણે કહીને તે કૃષ્ણ વાસુદેવે પોતાના ફોઈ પિતૃશ્વસા-કુંતીદેવીનો સત્કાર કર્યો અને સન્માન કર્યું. સત્કાર તેમજ સન્માન

संमान्य यावत्-प्रतिविसर्जयति। ततः खलु सा कुन्ती देवी कृष्णेन वासुदेवेन प्रतिविसर्जिता सती यस्या एव दिशः प्रादुर्भूता तामेव दिशं प्रतिगिता ॥सू०२७॥

मूलम्—तएणं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! बारवइं एवं जहा—पंडू तहा घोसणं घोसावेंति जाव पच्चप्पिणंति, पंडुस्स जहा तएणं से कण्हे वासुदेवे अन्नया अंतो अंतेउरगए ओरोहे जाव विहरइ, इमं च णं कच्छुल्लए जाव समोवइए जाव णिसीइत्ता कण्हं वासुदेवं कुसलोदंतं पुच्छइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लं एवं वयासी—तुमं णं देवाणुप्पिया! बहूणि गामा जाव अणुपविससि, तं अत्थि याइं ते कहिं वि दोवइए देवीए सुती वा जाव उवलद्धा?, तएणं से कच्छुल्ले कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! अन्नया कयाइं धायईसंडे दीवे पुरत्थिमद्धं दाहिणड्ढभरहवासं अवरकंकारायहाणिं गए, तत्थ णं मए पउमनाभस्स रन्नो भवणंसि दोवई देवी जारिसिया दिट्ठपुव्वा यावि होत्था तएणं कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लं एवं वयासी-तुब्भं चेव णं देवाणुप्पिया! एवं पुव्वकम्मं, तएणं से कच्छुल्लनारए कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे उप्पयणिं विज्जं

सन्मान किया, सत्कार सन्मान कर यावत् उन्हें प्रति विसर्जित कर दिया। इसके बाद वे कुंती देवी वहां से प्रतिविसर्जित होकर जिस दिशा से प्रकट हुई थीं—उसी दिशा की ओर चली गईं॥ सू०२७॥

કરીને તેમને વિદાય કર્યાં, ત્યારપછી તે કુંતીદેવી ત્યાંથી વિદાય મેળવીને જે દિશા તરફથી આવ્યાં હતાં તે જ તરફ પાછાં રવાના થયાં. ॥ સૂત્ર ૨૭ ॥

तएणं से कण्हे वासुदेवे इत्यादि ॥ सूत्र २८ ॥

आवाहेइ आवाहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए, तएणं से कण्हे वासुदेवे दूयं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! हत्थिणाउरं पंडुस्स रन्नो एयमट्ठं निवेदेहि एवं खलु देवाणुप्पिया! धायइसंडे दीवे पुरच्छिमद्धे अवरकंकाए रायहाणीए पउमणाभभवणंसि दोवइए देवीए पउत्ती उवलद्धा, तं गच्छंतु पंच पंडवा चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा पुरत्थिमवेयालीए ममं पडिवालेमाणा चिट्ठंतु, तएणं से दूए जाव भणइ, पडिवालेमाणा चिट्ठह ते वि जाव चिट्ठंति, तएणं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! सन्नाहियं भेरिं ताडेह, ते वि –तालेंति, तएणं तेसिं सण्णाहियाए भेरीए सद्दं सोच्चा समुद्दविजयपामोक्खा दसदसारा जाव छप्पण्णं बलवयसाहस्सीओ सन्नद्धबद्ध जाव गहियाउहपहरणा अप्पेगइया हयगया गयगया जाव वग्गुरापरिक्खित्ता जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेंति, तएणं कण्हे वासुदेवे हत्थिखंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं० सेयवर० हयगय० महया भडचडगरपहकरेणं बारवईए णयरीए मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ, जेणेव पुरत्थिमवेयाली तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं एगयओ मिलित्ता खंधावारणिवेसं करेइ

करित्ता पोसहसालं अणुपविसइ अणुपविसित्ता सुट्ठियं देवं मणसि करेमाणे२ चिट्ठइ, तएणं कण्हस्स वासुदेवस्स अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि सुट्ठिओ आगओ, भण देवाणुप्पिया ! जं मए कायव्वं, तएणं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! दोवई देवी जाव पउमनाभस्स भवणंसि साहरिया तण्णं तुमं देवाणुप्पिया ! मम पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वियरेहि, जण्णं अहं अमरकंकारायहाणी दोवईए कूवं गच्छामि, तएणं से सुट्ठिए देवे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-किण्हं देवाणुप्पिया ! जहा चेव पउमणाभस्स रन्नो पुव्वसंगइएणं देवेणं दोवई जाव संहरिया तहा चेव दोवई देविं धायइसंडाओ दीवाओ भारहाओ जाव हत्थिणापुरं साहरामि, उदाहु पउमणाभं रायं सपुरबलवाहणं लवणसमुद्दे पक्खिवामि ?, तएणं कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं देवं एवं वयासी-मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव साहराहि तुमं णं देवाणुप्पिया ! लवणसमुद्दे अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं मग्गं वियराहि, सयमेव णं अहं दोवईए कूवं गच्छामि, तएणं से सुट्ठिए देवे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-एवं होउ, पंचहिं पंडवेहिं अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वियरइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे चाउरंगिणीसेणं पडिविसज्जेइ-पडिविसज्जित्ता पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्दं

मज्झंमज्झेणं वीइवयइ वीइवइत्ता जेणेव अमरकंका राय- हाणी जेणेव अमरकंकाए अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ उवा- गच्छित्ता रहं ठवेइ ठवित्ता दारुयं सारहिं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! अमरकंकारायहाणीं अणुपविसाहि२ पउमणाभस्स रण्णो वामेणं पाएणं पायपीढं अक्कमित्ता कुंतग्गेणं लेहं पणामेहि तिवलियं भिउडिं णिडाले साहट्टु आसुरुत्ते रुट्ठे कुद्धे कुविए चंडिक्किए एवं वयासी--हं भो पउमणाहा! अपत्थियपत्थिया दुरंतपंतलक्खणा हीणपुन्नचा- उद्दसा सिरीहिरिधी परिवज्जिया अज्ज ण भवसि किन्नं तुमं ण याणासि कण्हस्स वासुदेवस्स अहव णं जुद्धसज्जे णिग्गच्छाहि एस णं कण्हे वासुदेवे पंचहिं पंडवेहिं अप्पछट्ठे दोवईं देवीए कूवं हव्वमागए, तएणं से दारुए सारही कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे जाव पडिसुणेइ पडिसुणित्ता अमरकंका रायहाणिं अणुपविसइ अणुपविसित्ता जेणेव पउमनाहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेत्ता एवं वयासी--एस णं सामी! मम विणयपडिवित्ती इमा अन्ना मम सामिस्स समुहाणत्तित्तिकट्टु आसुरुत्ते वामपाएणं पायपीढं अणुक्कमइ अणुक्कमित्ता कोंतग्गेणं लेहं पणामइ पणामित्ता जाव कूवं हव्वमागए, तएणं से पउमणाभे दारुणेणं सारहिणा एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते त्तिवलिं भिउडिं निडाले साहट्टु एवं वयासी--णो अप्पिणामि णं अहं देवाणुप्पिया! कण्हस्स

वासुदेवस्स दोवई, एसणं अहं सयमेव जुज्झसज्जो णिग्गच्छामि त्तिकट्टु दारुयं सारहिं एवं वयासी-केवलं भो ! रायसत्थेसु दूये अवज्झे त्तिकट्टु असक्कारिय असम्माणिय अवद्दारेणं णिच्छुभावइ, तएणं से दारुए सारही पउमणाभेणं असक्कारिय जाव णिच्छूढे समाणे जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल० कण्हं जाव एवं वयासी--एवं खलु अहं सामी ! तुब्भं वयणेणं जाव णिच्छुभावेइ ॥ सू० २८ ॥

टीका—'तएणं से' इत्यादि। ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत् गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रिय ! द्वारवतीं नगरीम्, 'एवं यथा पाण्डुस्तथा घोषणां घोषयत'-यथा पाण्डु राजा हस्तिनापुरे घोषणां कारितवान् तद्वदित्यर्थः। तेऽपि कौटुम्बिकपुरुषास्तथैव घोषणां

—:तएणं से कण्हे वासुदेवे इत्यादि।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे) उन कृष्ण वासुदेव ने (कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ) कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया (सद्दावित्ता) बुलाकर (एवं वयासी) उन से ऐसा कहा (गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया बारवइं) हे देवानुप्रियों! तुम द्वारावती नगर में जाओ (एवं जहा पंडु तहा घोसणं घोसावेंति जाव पच्चप्पिणंति पंडुस्स जहा) वहां पांडु राजाकी तरह घोषणा करो-अर्थात् पांडु राजाने जिस प्रकार द्रौपदी की खबर लानेवाले के लिये अर्थ प्रदान का घोषणा अपने कौटुम्बिक पुरुषों द्वारा हस्तिनापुर नगर में करवाई थी-इसी प्रकार की घोषणा करने के

'तएणं से कण्हे वासुदेवे' ઇત્યાદિ.

ટીકાર્થ-(तएणं) ત્યારપછી (से कण्हे वासुदेवे) તે કૃષ્ણ વાસુદેવે (कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ) કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા (सद्दावित्ता) બોલાવીને (एवं वयासी) તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—(गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया बारवइं) હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે દ્વારવતી નગરીમાં જાઓ (एवं जहा पंडु तहा घोसणं घोसावेंति जाव पच्चप्पिणंति पंडुस्स जहा) ત્યાં પાંડુ રાજાની જેમ જ ઘોષણા કરો એટલે કે પાંડુ રાજાએ જેમ દ્રૌપદીની શોધ કરવા માટેની દ્રવ્ય આપવાની ઘોષણા હસ્તિનાપુર નગરમાં કરાવી હતી તે પ્રમાણે જ ઘોષણા કરવા

कृत्वा 'जाव पच्चप्पिणंति' यावत् प्रत्यर्पयन्ति–घोषणां कृत्वा–कृष्णस्य वासुदेव-स्यान्तिके ते कौटुम्बिकपुरुषा निवेदयन्ति–द्वारवत्यां नगर्यां सर्वत्र घोषणाकृता-ऽस्माभिरिति। 'पंडुस्स जहा' पाण्डोर्यथा यथा पाण्डो र्नृपस्य वर्णकस्तथाऽत्रापि बोध्यः। यथा पाण्डुराजा द्रौपद्याः श्रुतिं यावत् प्रवृत्तिं न लब्धवान्, तथा कृष्णवा-सुदेवोऽपि द्रौपद्याः श्रुत्यादिकं न प्राप्तवानिति भावः। ततः खलु कृष्णो वासुदेवः अन्यदा=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् समये 'अंतो' अन्तः–स्वप्रासादे अन्तःपुरगतो-ऽवरोधे यावद् विहरति। 'इमं च णं' अस्मिन् समये च खलु 'कच्छुल्लए' कच्छु-ल्लको नारदो यावत् समवसृतः= गगनतलादवतरन् कृष्णसद्मनि समागतः यावत् निषद्य=उपविश्य गगनतलादवतरन् कृष्णसद्मनि समागतः, यावत् निषद्य=उपविश्य

लिये कृष्ण वासुदेव ने अपने कौटुम्बिक पुरुषों को आदेश दिया कि वे भी द्वारावती में इसी तरह की घोषणा करें। अपने राजा की आज्ञानु-सार उन्हों ने द्वारावती में घोषणा करदी और इस की खबर पीछे कृष्ण वासुदेव को कर दी। यहां अवशिष्ट वर्णन पांडु राजा के जैसा वर्णन है वैसा ही जानना चाहिये। अर्थात् घोषणा कराने पर भी द्रौपदी की किसी भी प्रकार की खबर वगैरह का कोई भी समाचार पांडु राजा को नहीं मिला वैसा कृष्ण वासुदेव को भी नहीं मिला (तएणं) तब (से कण्हे वासुदेवे अन्नया अतो अतेउरगए ओरोहे जाव विहरइ इमं च णं कच्छुल्लए जाव समोसरए) वे कृष्ण वासुदेव एक दिन की बात है कि अपने अन्तः पुर के प्रासाद के भीतर अन्तःपुर की स्त्रियों के साथ बैठे हुए थे कि इसी समय वे कच्छुल्ल नाम के नारद आकाश मार्ग से

માટે કૃષ્ણ વાસુદેવે પોતાના કૌટુંબિક પુરુષોને આજ્ઞા કરી કે તેઓ પણ દ્વારાવતી નગરીમાં આ પ્રમાણે જ ઘોષણા કરે. પોતાના રાજાની આજ્ઞા પ્રમાણે તે લોકોએ દ્વારવતી નગરીમાં ઘોષણા કરી અને ઘોષણાનું કામ થઈ ગયું છે તેની ખબર પણ કૃષ્ણ વાસુદેવની પાંસે પહોંચાડી દીધી. અહીં અવશિષ્ટ વર્ણન પાંડુ રાજાનું જેવું છે તે પ્રમાણે જ સમજી લેવું જોઈએ. એટલે કે ઘોષણા કર્યા પછી પણ પાંડુ રાજાને દ્રૌપદી દેવીની કોઈ પણ જાતની ખબર કે સમાચાર મળ્યા નહિ તે પ્રમાણે કૃષ્ણ વાસુદેવને પણ કોઈ પણ સમાચારો ઘોષણા બાદ મળ્યા નહિ. (तएणं) ત્યારે (से कण्हे वासुदेवे अन्नया अंतो अंते-उरगए ओरोहे जाव विहरइ, इमं च णं कच्छुलए जाव समोसरए) એક દિવસની વાત છે કે તે કૃષ્ણ વાસુદેવ પોતાના મહેલની અંદર રણવાસની સ્ત્રીઓની સાથે બેઠા હતા તે વખતે કચ્છુલ્લ નામે નારદ આકાશ માર્ગથી ઉતરીને ત્યાં

कृष्णं वासुदेवं कुशलोदन्तं=कुशलवार्तां पृच्छति, ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कच्छुल्ल नारदमेवमवादीत्-हे देवानुप्रिय ! त्वं खलु बहूनि ग्रामाकरादीनि परिभ्राम्यसि, तत्र बहूनि गृहाणि यावदनुप्रविशसि. तत् तस्मादस्ति 'आइं' इति वाक्यालंकारे ते त्वया यदि कुत्रचिद् द्रौपद्यादेव्याः श्रुतिर्वा यावद् उपलब्धा=ज्ञाता ? तर्हि कथय' इति भावः। ततः खलु स कच्छुल्लनारदः कृष्णं वासुदेवमेवमवादीत्-एवं खलु हे देवानुप्रियाः अहमन्यदाकदाचिद् धातकीषण्डे द्वीपे पौरस्त्यार्धे=पूर्वदिग्भागवर्तिनि, दक्षिणार्धभरतवर्षे-अमरकंकानाम्नीं राजधानीं गतः। तत्र खलु मया

उतरकर वहां आये-(जाव णिसी इत्ता कण्हं वासुदेवं कुसलोदंतं पुच्छइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लं एवं वयासी-तुमं णं देवाणुप्पिया ! बहूणि गामागर जाव अणुपविससि तं अत्थि आइं ते कहिं वि दोवईए देवीए सुतीवा जाव उवलद्धा तएणं से कच्छुल्ले कण्हं वासुदेवं एवं वयासी) यावत् बैठकर उन्हों ने कृष्ण वासुदेव से कुशल वृत्तान्त पूछा -कृष्णवासुदेव ने तब कच्छुल्ल नारद से ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम अनेक ग्राम आकर आदिस्थानों में परिभ्रमण करते रहते हो-अनेक गृहादिकों में आते जाते रहते हो तो कहो-कहीं पर क्या तुम्हें द्रौपदी देवी की श्रुति उपलब्ध हुई है-उसकी तुम्हें किसी प्रकार की कोई खबर मिली है-उसका किसी भी प्रकार का कोई चिन्ह उपलब्ध हुआ है ? इस प्रकार कृष्ण वासुदेव के पूछने पर कच्छुल्ल नारद ने उन कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा-(एवं खलु देवाणुप्पिया ! अन्नया कयाइं

આવ્યા. (जाव णिसीइत्ता कण्हं वासुदेवं कुसलोदंतं पुच्छइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लं एवं वयासी, तुमं णं देवाणुप्पिया ! बहूणि गामागर जाव अणुपविससि तं अत्थि आइ ते कहिं वि दोवईए देवीए सुतीं वा जाव उवलद्धा-तएणं से कच्छुल्ले कण्हं वासुदेवं एवं वयासी) ત્યાં આવીને બેઠા અને બેસીને તેમણે કૃષ્ણ વાસુદેવને કુશળ વાર્તા પૂછી. વાસુદેવે ત્યારે કચ્છુલ્લ નારદને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે ઘણાં ગ્રામ, આકર વગેરે સ્થાનોમાં પરિભ્રમણ કરતા રહો છો, ઘણા ઘરો વગેરેમાં આવજા કરતા રહો છો તો કહો, કોઈ પણ સ્થાને તમને દ્રૌપદી દેવીની શ્રુતિ મળી છે-તેના તમને કોઈ પણ જાતના સમાચારો મળ્યા છે, તેનું કોઈ પણ જાતનું ચિહ્ન તમને મળ્યું છે ? આ રીતે કૃષ્ણ વાસુદેવના પ્રશ્નને સાંભળીને કચ્છુલ્લ નારદે તે કૃષ્ણ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કેઃ—

(एवं खलु देवाणुप्पिया ! अन्नया कयाइं धायईसंडे दीवे पुरत्थिमद्धं

पद्मनाभस्य राज्ञो भवने द्रौपदीदेवी यादृशी दृष्टपूर्वा चाप्यभवत्, अयं भावः-काचिद्द्रौपदीसदृशी देवी पद्मनाभस्य राज्ञोभवने दृष्टा किंतु सा मया न सम्यग्-ज्ञाता नापि सम्यक्परिचिता, इति । ततः खलु कृष्णो वासुदेवः कच्छुल्लनारदमेव-मवादीत्-हे देवानुप्रियाः युष्माकमेव खलु 'एवम्' ईदृशं 'पुव्वकम्मं' पूर्वकर्म-पूर्वकृतं कर्म, युष्माभिरेवेदृशं कर्म पूर्वं कृतमित्यर्थः । ततः खलु स कच्छुल्लनारदः कृष्णेन वासुदेवेनैवमुक्तः सन् उत्पतनीं विद्यामावाहयति । आवाह्य यस्याः एवदिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवो दूतं शब्दयति=

धायईसंडे दीवे पुरत्थिमद्धं दाहिणद्धभरहवासं अमरकंका रायहाणिं गए तत्थ णं मए पउमनाभस्स रण्णो भवणंसि दोवई देवी जारिसिया दिट्ठ-पुव्वा यावि होत्था, तएणं कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लं एवं वयासी-तुब्भे चेव णं देवाणुप्पिया ! एवं पुव्वकम्मं-तएणं से कच्छुल्लनारए कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे उप्पयणिं विज्जं आवाहेइ, आवाहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भुए तामेव दिसिं पडिगए) सुनो मैं तुम्हें बताता हूँ -हे देवाणुप्रिय ! मैं किसी एक समय द्वितीय धातकी खंड द्वीप में पूर्व दिग्भागवर्ती दक्षिणार्ध भरतक्षेत्र में अमरकंका नाम की राजधानी में गया हुआ था वहां मैंने पद्मनाभ राजा के भवन में द्रौपदी देवी जैसी एक नारी देखी थी-परन्तु मैं उसे अच्छी तरह नहीं जान सका-और न उससे परिचित ही हो सका-। नारद की ऐसी बात सुनकर कृष्ण वासुदेव ने उनसे कहा हे देवानुप्रिय ! आपने ही ऐसा कार्य सब से पहिले किया है-इसके बाद उन कच्छुल्ल नारदने कृष्ण वासुदेवके द्वारा

दाहिणद्धभरहवासं अमरकंका रायहाणिं गए, तत्थणं मए पउमनाभस्स रण्णो भवणंसि दोवई देवी, जारिसिया दिट्ठपुव्वा यावि होत्था, तएणं कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लं एवं वयासी-तुब्भे चेवणं देवाणुप्पिया ! एवं पुव्व कम्म-तएणं से कच्छुल्ल नारए कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे उप्पयणिं विज्जं आवाहेइ, आवाहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भुए तामेव दिसिं पडिगए)

સાંભળો, તમને હું બધી વિગત બતાવું છું. હે દેવાનુપ્રિય ! કોઈ એક વખતે હું ધાતકી ખંડદ્વીપમાં, પૂર્વ દિશા તરફના દક્ષિણાર્ધ ભરત ક્ષેત્રમાં, અમરકંકા નામે રાજધાનીમાં ગયો હતો. ત્યાં મેં પદ્મનાભ રાજાના ભવનમાં દ્રૌપદી દેવી જેવી એક નારી જોઈ હતી. પણ હું તેને સારી પેઠે ઓળખી શક્યો નહિ અને ન તેનાથી પરિચિત થઈ શક્યો. નારદની આ વાત સાંભળીને કૃષ્ણવાસુદેવે તેમને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! સૌ પહેલાં તમે જ આ કામ કર્યું છે. ત્યારપછી તે કચ્છુલ્લનારદે કૃષ્ણ વાસુદેવની આ વાત સાંભળીને પોતાની ઉત્પતની

आह्वयति, शब्दयित्वा-एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रियाः ! हस्तिनापुरं पाण्डोराज्ञ एतमर्थं निवेदय-एवं खलु हे देवानुप्रिय ! धातकीषण्डे द्वीपे 'पुरत्थिमद्धे' पौरस्त्यार्धे पूर्वदिग्भागवर्तिनि अमरकंकायां राजधान्यां पद्मनाभभवने द्रौपद्या देव्याः प्रवृत्तिरुपलब्धा, तत्=तस्मात् गच्छन्तु पञ्च पाण्डवाश्चतुरङ्गिण्या सेनया सार्धं संपरिवृता 'पुरत्थिमवेयालीए' 'पौरस्त्यवेलायां-पूर्वदिग्वर्तिनि लवणसमुद्रे मां 'पडिवालेमाणा' प्रतिपालयन्तः-प्रतीक्षमाणा तिष्ठन्तु, ततस्तदनन्तरं स दूतो यावत् पाण्डोरग्रे गत्वा कृष्णवासुदेवोक्तं वचनं भणति=कथयति= 'पडिवालेमाणा चिट्ठह' अयं भावः-' धातकीषण्डे द्वीपे पूर्वदिग्भागवर्तिनि अमरकंकायां राजधान्यां पद्मनाभभवने द्रौपद्याः प्रवृत्तिरुपलब्धा, तस्मात् पञ्च पाण्ड-

---

इस प्रकार कहे जाने पर अपनी उत्पतनीविद्याका स्मरण किया। स्मरण करके फिर वे जिस दिशा से प्रकट हुए थे उसी दिशा की ओर चले गये। (तएणं से कण्हे वासुदेवे दूयं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छणं तुमं देवाणुप्पिया! हत्थिणाउरं पंडुस्स रण्णो एयमट्ठं निवेदेहि) इसके बाद उन कृष्ण वासुदेव ने दूत को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय! तुम हस्तिनापुर नगर जाओ-वहां पांडु राजा से ऐसा कहना-(एवं खलु देवाणुप्पिया! धायइसंडे दीवे पुरत्थिमद्धे अमरकंकाए रायहाणीए पउमणाभभवणंसि दोवईए देवीए पउत्ती उवलद्धा-तं गच्छंतु पंच पंडवा चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा पुरत्थिमवेयालीए ममं पडिवालेमाणा चिट्ठंतु) हे देवानुप्रिय! वह वक्तव्य विषय यह है-धातकी षंड नाम के द्वीप में पूर्व दिग्भागवर्ती दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र मे वर्तमान अमरकंका नाम की राजधानी में पद्मनाभ राजा

વિદ્યાનું સ્મરણ કર્યું. સ્મરણ કરીને પછી તેઓ જે દિશા તરફથી આવ્યા હતા તે જ દિશા તરફ પાછા રવાના થઈ ગયા. (तएणं से कण्हे वासुदेवे दूयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया! हत्थिणाउरं पंडुस्स रण्णो एयमट्ठं निवेदेहि) ત્યારપછી તે કૃષ્ણ વાસુદેવે દૂતને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય! તમે હસ્તિનાપુર નગરમાં જાઓ-અને ત્યાં પાંડુ રાજાને આ પ્રમાણે કહો કે—

(एवं खलु देवाणुप्पिया! धायइसंडे दीवे पुरत्थिमद्धे अमरकंकाए रायहाणीए पउमणाभभवणंसि दोवईए देवीए पउत्ती उवलद्धा-तं गच्छंतु पंच पंडवा चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा पुरत्थिमवेयालीए ममं पडिवालेमाणा चिट्ठंतु) હે દેવાનુપ્રિય! ધાતકી ષંડ નામે દ્વીપમાં પૂર્વ દિશા તરફના દક્ષિણાર્ધ ભરત ક્ષેત્રમાં વિદ્યમાન અમરકંકા નામની રાજધાનીમાં પદ્મનાભ રાજાના ભવ-

वाश्वतुरङ्गिण्या सेनया सार्धं संपरिवृताः पौरस्त्यवेलायां मां प्रतिपालयन्तस्तिष्ठन्तु ' इति । एवं दूतमुखात् कृष्णवासुदेवोक्तं वचनं श्रुत्वा तेऽपि=पञ्च पाण्डवा यावत् तिष्ठन्ति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति,

के भवन में द्रौपदी देवी की खबर मिली है-इसलिये पांचो पांडव चतुरंगिणी सेना के साथ युक्त होकर लवण समुद्र की पूर्व दिग्भागवर्तिनी वेला पर जाकर वहां मेरी प्रतीक्षा करें। (तएणं से दूए जाव भणइ, पडिवालेमाणा चिट्ठह, ते वि जाव चिट्ठंति, तएणं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! सन्नाहियं भेरिं ताडेह ते वि ताडेंति, तएणं तीसे सण्णाहियाए भेरिए सद्दं सोच्चा विजयपामोक्खा, दस दसारा जाव छप्पण्णं वलवयसाहस्सीओ सन्नद्धवद्ध जाव गहियाउहपहरणा अप्पेगइया हयगया, गयगया, जाव वग्गुरा परिक्खित्ता जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव कण्णे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ) इस प्रकार अपने राजा कृष्णवासुदेव की आज्ञा लेकर वह दूत हस्तिनापुर गया वहां जाकर उसने इस समाचार को पांडुराजा से कह दिया। वे पांचों पांडव इस समाचार को दूत के मुख से सुनकर चतुरंगिणी सेना के साथ लवण समुद्र के पूर्व दिग्भागवर्ती तट पर जाकर कृष्ण वासुदेव की प्रतीक्षा में ठहर गये-। इसके बाद कृष्ण वासुदेव ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया-बुलाकर

નમાં દ્રૌપદી દેવીના વાવડ મળ્યા છે તો હવે પાંચે પાંડવો ચતુરંગિણી સેનાની સાથે પ્રયાણ કરીને લવણ સમુદ્રના પૂર્વ કિનારા ઉપર પહોંચીને મારી પ્રતીક્ષા કરે.

(तएणं से दूए जाव भणइ, पडिवाले माणा चिट्ठह ते वि जाव चिट्ठंति, तएणं से कण्हे वासुदेवे कोडुंविय पुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! सन्नाहियं भेरिं ताडेह ते वि ताडेंति, तएणं से सण्णाहियाए भेरीए सद्द सोच्चा समुद्दविजयपामोक्खा, दस दसारा जाव छप्पण्णं वल वय साहस्सीओ सन्नद्धवद्धजाव गहियाउहपहरणा अप्पेगइया हयगया, गयगया, जाव वग्गुरापरिक्खित्ता जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव कण्णे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ)

આ રીતે પોતાના રાજા કૃષ્ણ વાસુદેવની આજ્ઞા મેળવીને તે દૂત હસ્તિનાપુર તરફ રવાના થયો ત્યાં પહોંચીને તેણે પાંડુ રાજાને બધા સમાચારો કહી સંભળાવ્યા. પાંચે પાંડવો દૂતના મુખથી આ સમાચાર સાંભળીને પોતાની ચતુરંગિણી સેના સાથે ત્યાંથી પ્રયાણ કરીને લવણ સમુદ્રના પૂર્વ કિનારા ઉપર પહોંચીને ત્યાં કૃષ્ણ વાસુદેવની પ્રતીક્ષા કરતા રોકાઇ ગયા. ત્યારપછી કૃષ્ણ વાસુદેવે કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું

शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः सांनाहिकीं सैनिकानां सज्जीभवनार्थं नादो यस्यास्तां भेरीं ताडयत तेऽपि ताडयन्ति, ततः खलु तस्याः सांनाहिक्या भेर्याः शब्दं श्रुत्वा समुद्रविजयप्रमुखा दश दशार्हा यावत् 'छप्पण्णं बलवयसाहस्सीओ' षट् पञ्चाशद् बलवत्साहस्र्याः=षट्पञ्चाशत्सहस्रप्रमिता बलवन्त इत्यर्थः 'सन्नद्धबद्ध-जाव गहियाउहपहरणा' अत्र यावच्छब्देनैवं द्रष्टव्यम्-सन्नद्धबद्धवर्मितकवचा उत्पीडितशरासनपट्टकाः पिनद्धग्रैवेयकबद्धाविद्धविमल वरचिह्नपटाः गृहीतायुधप्रहरणा इति। व्याख्याऽस्मिन्नेवाध्ययने पूर्वमुक्ता अप्येकिकाः=केचिद् हयगताः केचिद् गजगताः यावद् वागुरापरिक्षिप्ताः=मनुष्यवृन्दैः परिवृताः, यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तत्रैवोपागच्छन्ति उपागत्य करतल० यावद् जयेन विजयेन वर्धयन्ति। ततः खलु कृष्णो वासुदेवो हस्तिस्कन्धवरगतः सको-

---

उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियों! तुम सुधर्मा सभा में जाओ वहां जाकर तुम सांनाहिकी भेरी बजाओ-। कौटुम्बिक पुरुषोंने ऐसा ही किया सुधर्मा सभामें जाकर उस सांनाहिकी भेरीको बजाया-। इस सांनाहिकी भेरीकी गर्जनाको सुनकर समुद्रविजय आदि दश दशार्ह यावत् ५६, हजार प्रमित बलवीर पुरुष सन्नद्ध बद्धर्मिवतकवच होकर, यावत् आयुध प्रहरणों को लेकर तैयार सुसज्जित हो गये। यहां यावत् शब्द से उत्पीडितशरासन पट्टकाः, "पिनद्धाग्रैवेयकबद्धविद्धविमलवरचिह्नपट्टाः" इस पाठ का संग्रह हुआ है। इन शब्दों की व्याख्या इसी अध्ययन में पहिले की जा चुकी है। इनमें कितनेक घोडों पर, कितनेक हाथियों पर, बैठकर अन्य मनुष्यों के समूह से परिवृत्त हो जहां वह सुधर्मा सभा और जहां वे कृष्णवासुदेव थे वहां आये। (उवागच्छित्ता करयल जाव

કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે સુધર્મા સભામાં જાઓ, ત્યાં જઈને તમે સાંનાહિકી ભેરી વગાડો, તે કૌટુંબિક પુરુષોએ પણ તે પ્રમાણે જ આજ્ઞાનું પાલન કર્યું. સુધર્મા સભામાં જઈને તેઓએ સાંનાહિકી ભેરી વગાડી. સાંનાહિકી ભેરીનો અવાજ સાંભળીને સમુદ્રવિજય વગેરે દશ દશાર્હો યાવત્ ૫૬ હજાર પ્રમિત બળવીર પુરૂષો કવચો વગેરેથી સુસજ્જ થઈને યાવત્ આયુધ પ્રહરણોને લઈને તૈયાર થઈ ગયા. અહીં યાવત્ શબ્દથી "उत्पीडितशरासनपट्टका', पिनद्ध ग्रैवेयकबद्धाविद्धविमलवरचिह्नपट्टाः" આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે. આ શબ્દોની વ્યાખ્યા આ અધ્યયનમાં જ પહેલાં કરવામાં આવી છે. આમાં કેટલાક ઘોડાઓ ઉપર, કેટલાક હાથીઓ ઉપર બેસીને તેમજ કેટલાક માણસોના સમૂહોથી પરિવૃત થઈને જ્યા તે સુધર્મા, સભા અને જ્યાં કૃષ્ણ-વાસુદેવ હતા ત્યાં આવ્યા.

रण्टमाल्यदाम्ना छत्रेण धार्यमाणेन श्वेतवरचामरैरुद्धूयमानैः, हयगजरथपदाति संपरिवृतो महाभटचटकरप्रकरेण द्वारवत्या नगर्या मध्यमध्येन निर्गच्छति, यत्रैव पौरस्त्यवेला तत्रैवोपागच्छति उपागत्य पञ्चभिः पाण्डवैः सह 'एगयओ'

वद्धावेंति, तएणं कण्हे वासुदेवे हत्थिखंधवरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेण० सेयवर०हयगय०महया भडचडगरपहकरेणं वारवईए णयरीए मज्झं मज्झेण णिगच्छइ, जेणेव पुरत्थिमवेयाली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंचहिं पंडवेंहि सद्धिं एगयओ मिलइ, मिलित्ता खंधावारणिवेसं करेइ, करित्ता पोसहसालं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता सुट्ठियं देवं मणसि करेमाणे २ चिट्ठइ, तएणं कण्हस्स वासुदेवस्स अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि सुट्ठिओ आगओ भण देवाणुप्पिया! जं मए कायव्वं) वहां आकर उन सबने कृष्णवासुदेव को दोनों हाथ जोड़कर बड़े विनय के साथ नमस्कार करते हुए जय विजय शब्दों द्वारा वधाई दी। इसके बाद वे कृष्णवासुदेव हाथी पर सवार हुए। सवार होते ही छत्र धारियों ने उन पर कोरंट पुष्पों की माला से विराजित छत्र ताना, चामर ढोरने वालों ने उनपर श्वेत चामर ढोरना प्रारंभ करदिया। इस प्रकार हय, गज, रथ, एवं पैदलसेना से घिरे हुए वे कृष्णवासुदेव महाभटों के समूह के साथ २ द्वारावती नगरी के बीच से होकर निकले, निकलकर जहां वह लवणसमुद्र की पूर्व दिग्भागवर्तिनी वेला थी वहां पहुँचे।

(उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेंति, तएणं कण्हे वासुदेवे हत्थि खंधवरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं० सेयवर० हयगय महया भडचडगरपहकरेणं वारवईए णयरीए मज्झं मज्झेणं णिगच्छइ जेणेव पुरत्थिमवेयाली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंचहिं पंडवेंहि सद्धिं एगयओ मिलइ, मिलित्ता खंधावारणिवेसं करेइ, करित्ता पोसहसालं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता, सुट्ठियं देवं मणसि करेमाणे २ चिट्ठइ, तएणं कण्हस्स वासुदेवस्स अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि सुट्ठिओ आगओ भणदेवाणुप्पिया! जं मए कायव्वं)

ત્યાં પહોંચીને તે બધાએ બંને હાથ જોડીને બહુ જ વિનમ્રતાથી નમસ્કાર કરતાં જયવિજય શબ્દોથી તેમને વધામણી આપી. ત્યારપછી તે કૃષ્ણ વાસુદેવ હાથી ઉપર સવાર થયા સવાર થતાં જ છત્રધારીઓએ તેમની ઉપર કોરંટ પુષ્પોની માળાથી શોભતું છત્ર તાણ્યું તેમજ ચામર ઢોળનારાઓએ ચામર ઢોળવાની શરૂઆત કરી આ પ્રમાણે ઘોડા, હાથી, રથ અને પાયદળથી પરિવૃત્ત થયેલા તે કૃષ્ણ-વાસુદેવ મહાભટોના સમૂહની સાથે સાથે દ્વારાવતી નગરીની વચ્ચે થઈને પસાર થયા અને જ્યાં તે લવણ સમુદ્રનો પૂર્વી કિનારો

एकतः एकस्मिन् स्थाने मिलति, मिलित्वा स्कन्धावारनिवेशं=सैनिकानामावासं करोति कृत्वा पौषधशालामनुप्रविशति, अनुप्रविश्य " सुट्ठिय देवं " सुस्थितं-सुस्थितनामानं देवं लवणसमुद्राधिष्ठितं मनसि कुर्वन्=स्मरन् तिष्ठति, ततः खलु कृष्णस्य वासुदेवस्याष्टमभक्ते परिणममाणे सुस्थितो देव आगतः, आगत्य वदति-हे देवानुप्रियाः! भणन्तु कथयन्तु यन्मया कर्तव्यमिति ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः सुस्थितदेवमेवमवादीत्-एवं खलु हे देवानुप्रिय! द्रौपदी देवी यावत् पद्मनाभस्य भवने संहृता, तत्=तस्मात् खलु त्वं हे देवानुप्रिय! मम पञ्चभिः पाण्डवैः सार्धं ' अप्पछट्ठस्स ' आत्मषष्ठस्य-आत्मा-अह षष्ठो यत्र तस्य समुदायस्य-अस्माकं षण्णामित्यर्थः, षण्णां रथानां लवणसमुद्रे मार्गं विवरं=देहि, येनाहममरकङ्कां राजधानीं द्रौपद्या देव्याः ' कूवं ' प्रत्यानयनकर्तुं गच्छामि।

वहां पहुँचकर वे पांच पांडवों के साथ एक स्थान पर संमिलित हुए। संमिलित होकर उन्होंने अपनी सेना को ठहर ने का स्थान नियत किया-स्थान नियतकर के फिर वे पौषधशाला में प्रविष्ट हो गये वहां प्रविष्ट होकर उन्हों ने लवण समुद्र के अधिपति सुस्थित देव का स्मरण किया-। इसके बाद जब कृष्णवासुदेव का अष्टमभक्त समाप्त हो रहा था-तब वह सुस्थित देव उनके पास आया-और कहने लगा-हे देवानुप्रिय! कहिये-मेरे लायक क्या काम है? (तएणं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया! दोवई देवी, जाव पउमनाभस्स भवणंसि साहरिया, तएणं तुमं देवाणुप्पिया मम पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वियरेहि, जण्णं अहं अमरकंकारायहाणी दोवईए कूवं गच्छामि, तएणं से सुट्ठिए देवे कण्हं

હતા ત્યાં પહોંચ્યા. ત્યાં પહોંચીને તેઓ પાંચે પાંડવોની સાથે એક સ્થાને એકત્ર થયા. એકત્ર થઈને તેમણે પોતાના સૈન્યના પડાવનું સ્થાન નક્કી કર્યું. સ્થાન નક્કી કરીને તેઓ પૌષધશાળામાં પ્રવિષ્ટ થયા. ત્યાં જઈને તેઓએ લવણ સમુદ્રના અધિપતિ સુસ્થિત દેવનું સ્મરણ કર્યું. ત્યારબાદ જ્યારે કૃષ્ણવાસુદેવનો અષ્ટમ ભક્ત પૂરો થઈ રહ્યો હતો, ત્યારે તે સુસ્થિત દેવ તેમની પાસે આવ્યો અને કહેવા લાગ્યો કે હે દેવાનુપ્રિય! બોલો, મારા લાયક શું કામ છે?

(तएणं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया! दोवईदेवी, जाव पउमनाभस्स भवणंसि साहरिया, तएणं तुमं देवाणुप्पिया मम पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वियरेहि, जण्णं अहं अमरकंका रायहाणीं दोवईए कूवं गच्छामि, तएणं से सुट्ठिए देवे कण्हं

ततः खलु स सुस्थितो देवः कृष्णं वासुदेवमेवमवादीत्—हे देवानुप्रिय ! किं खलु यथैव पद्मनाभस्य राज्ञः पूर्वसंगतिकेन देवेन द्रौपदी यावत् संहृता, तथैव द्रौपदीं देवीं धातकीषण्डाद् द्वीपाद् भारताद् यावद् हस्तिनापुरं संहरामि। 'उदाहु' उताहो ! =अथवा, कथय, पद्मनाभं राजानं सपुरबलवाहनं=नगरसैनिकवाहन-सहितं लवणसमुद्रे प्रक्षिपामि ? ततः खलु कृष्णो वासुदेवः सुस्थितं देवम् एव-

वासुदेवं एवं वयासी किण्हं देवाणुप्पिया ! जहा चेव पउमणाभस्स रन्नो पुव्वसंगइएणं देवेणं दोवई जाव संहरिया, तहा चेव दोवईदेविं धायईसंडाओ दीवाओ भारहाओ जाव हत्थिणापुरं साहरामि, उदाहु पउमणाभं रायंसपुरबलवाहणं लवणसमुद्दे पक्खिवामि ?) तब कृष्णवासुदेव ने उस सुस्थित देव से इस प्रकार कहा—हे देवानुप्रिय ! सुनो—द्रौपदी देवी यावत् पद्मनाभ के भवन में हरण कर रखी गई है इसलिये हे देवानु-प्रिय ! तुम आत्मषष्ठ मेरे पांच पांडवो के साथ छहों रथों को लवण समुद्र में मार्ग प्रदान करो। अर्थात् पांच पांडवों के और छटे मेरे इस प्रकार हमारे छह रथों को जाने के लिये रास्ता दो—कि जिससे मैं अम-रकंका राजधानी में द्रौपदीदेवी को वापिस ले आने के लिये जा सकूं। तब सुस्थित देव ने उन कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा—हे देवानु-प्रिय ! जिस प्रकार पद्मनाभ राजा के पूर्व संगतिक देवने द्रौपदीदेवी का यावत् हरण किया है, उसी तरह मैं भी द्रौपदी देवी को धातकी खंड द्वीप के भरत क्षेत्र से यावत् हस्तिनापुर में हरणकर ला सकता हूँ—

वासुदेवं एवं वयासी किण्हं देवाणुप्पिया ! जहा चेव पउमणाभस्स रन्नो पुव्व-संगइएणं देवेणं दोवई जाव संहरिया, तहा चेव दोवई देविं धायईसंडाओ दीवाओ भारहाओ जाव हत्थिणापुरं साहरामि, उदाहु पउमणाभं रायं सपुरबल-वाहणं लवणसमुद्दे पक्खिवामि ?)

ત્યારે કૃષ્ણ-વાસુદેવે તે સુસ્થિત દેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુ-પ્રિય ! સાભળો, દ્રૌપદી દેવી યાવત્ પદ્મનાભના ભવનમાં હરણ કરાઈને રાખ-વામાં આવી છે એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે 'આત્મષષ્ઠ' મારા તેમજ પાંચે પાંડવોના છ રથોને લવણ સમુદ્રમાં થઈને પસાર થવા માટે માર્ગ આપો. એટલે કે પાંચે પાંડવોના અને છઠ્ઠા મારા આમ છએ રથોને પસાર થવા માટે રસ્તો આપો. જેથી હુ દ્રૌપદી દેવીને પાછા લાવવા માટે અમરકંકા રાજધાનીમા જઈ શકું. ત્યારે સુસ્થિત દેવે તે કૃષ્ણ-વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! પદ્મનાભ રાજાના પૂર્વસંગતિક દેવે જેમ દ્રૌપદી દેવીનું યાવત્ હરણ કર્યું છે, તેમજ હું પણ દ્રૌપદી દેવીને ધાતકી ખંડદ્વીપના ભરત ક્ષેત્રમાથી યાવત્ હસ્તિનાપુરમાં હરણ કરીને લાવી શકું તેમ છું અને જો

मवादीत्-मा खलु त्वं हे देवानुप्रिय ! यावत् संहर, त्वं खलु हे देवानुप्रिय ! लवणसमुद्रे आत्मषष्ठस्य षण्णां रथानां मार्गं 'वियराहि' वितर=देहि, स्वयमेव खल्वहं द्रौपद्या देव्याः 'कूवं' प्रत्यानयनकर्तुं गच्छामि, ततः खलु स सुस्थितो

अथवा-आपकी आज्ञा हो तो नगर, सैनिक, और वाहन सहित पद्मनाभ राजा को लवण समुद्र में डुबा दे सकता हूँ (तएणं कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं देवं एवं वयासी) जब कृष्णवासुदेव ने उस स्वस्तिक देव से इस प्रकार कहा-(माणं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव साहराहि तुमं णं देवाणुप्पिया ! लवणसमुद्दे अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वियराहि सयमेव णं अहं दोवईए कूवं गच्छामि, तएणं से सुट्ठिए देवे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी, एवं होउ, पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वियरइ तएणं से कण्हे वासुदेवे चाउरंगिणीसेणं पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जित्ता पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं वीइवयइ, वीइवइत्ता जेणेव अमरकंका रायहाणी, जेणेव अमरकंकाए अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ) हे देवानुप्रिय ! तुम ऐसा मत करो-अर्थात् पद्मनाभ के भवन से द्रौपदी देवी को हरण मत करो, और न पद्मनाभ राजा को नगर, सैनिक एवं वाहन सहित लवणसमुद्र में प्रक्षिप्त करो, तुम तो केवल हे देवानुप्रिय ! हमारे छहों रथों को लवणसमुद्र में मार्ग दे दो। मैं

તમારી આજ્ઞા હોય તો નગર, સૈનિક અને વાહન સહિત પદ્મનાભ રાજાને લવણસમુદ્રમાં ડુબાડી શકું તેમ છું. (तएणं कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं देवं एवं वयासी) ત્યારે કૃષ્ણ-વાસુદેવે તે સ્વસ્તિક દેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(माणं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव साहराहि तुमं णं देवाणुप्पिया ! लवणसमुद्दे अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वियराहि सयमेव णं अहं दोवईए कूवं गच्छामि, तएणं से सुट्ठिए देवे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी, एवं होउ, पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वियरइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे चाउरंगिणी सेणं पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जित्ता पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं वीइवयइ, वीइवइत्ता जेणेव अमरकंका रायहाणी, जेणेव अमरकंकाए अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ)

હે દેવાનુપ્રિય ! તમે આ પ્રમાણે કરવાની તસ્દી લો નહિ એટલે કે પદ્મનાભના ભવનમાંથી દ્રૌપદી દેવીનું હરણ કરો નહિ તેમજ પદ્મનાભ રાજાને નગર, સૈનિક અને વાહન સહિત લવણ સમુદ્રમાં ફેંકો પણ નહિ. તમે તો હે દેવાનુપ્રિય ! ફક્ત અમારા છએ રથો માટે લવણ સમુદ્રમાં માર્ગ આપો.

देवः कृष्णं वासुदेवमेवमवादीत्-एवं भवतु इति, ततोऽसौ पञ्चभिः पाण्डवैः सार्धम् आत्मषष्ठस्य षण्णां रथानां लवणसमुद्रे मार्गं वितरति ततः खलु स कृष्णो वासुदेवश्चतुरङ्गिणीं सेनां प्रतिविसर्जयति, प्रतिविसर्ज्य पञ्चभिः पाण्डवैः सार्धमात्मषष्ठः षड्भीरथैर्लवणसमुद्रं मध्यमध्येन 'वीइवयइ' व्यतिव्रजति-गच्छति, व्यतिव्रज्य यत्रैवामरकङ्का राजधानी, यत्रैवामरकङ्काया अग्रोद्यानं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य रथं स्थापयति, स्थापयित्वा दारुकं सारथिं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिय! अमरकङ्काराजधानीमनुप्रविश, अनु-

---

स्वयं ही द्रौपदी देवी को वहां से वापिस ले आऊँगा। अथवा मैं स्वयं ही द्रौपदी देवी को लेने के लिये जाऊँगा। तब उस सुस्थित देव ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा-अच्छा ऐसा ही हो-इस प्रकार कह कर उसने आत्म षष्ठ के छहों रथों को लवणसमुद्र में मार्ग वितरित कर दिया। तब कृष्णवासुदेव ने अपनी चतुरंगिणी सेना को वहां से वापिस करदिया वापिस कर फिर वे पांच पांडवों के साथ छहों रथों को-१ एक अपने रथको और पांच पांडवोंके रथोंको-लेकर लवणसमुद्रके भीतरसे होकर चलने लगे। चलते २ वे जहां अमरकंका राजधानी थी-और उसमें भी जहां वह अग्रोद्यान था वहां पहुँचे। (उवागच्छित्ता रहं ठवेइ) वहां पहुँच कर उन्होंने अपने रथ को रोक दिया-(ठवित्ता दारुयं सारहिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! अमरकंकारायहाणी अणुपविसाहि२, पउमणाभस्स रण्णो वामेणं पाएणं

ત્યાં જઈને હું જાતે જ દ્રૌપદી દેવીને ત્યાંથી પાછી લઈ આવીશ એટલે કે હું જાતે જ દ્રૌપદી દેવીને લેવા માટે જઈશ. ત્યારે તે સુસ્થિત દેવે કૃષ્ણ-વાસુદેવને કહ્યું કે સારૂં, આમ જ કરો. આ પ્રમાણે કહીને તેણે આત્મષષ્ઠના છએ રથોને લવણ સમુદ્રમાં રસ્તો આપ્યો. ત્યારપછી કૃષ્ણ-વાસુદેવે પોતાની ચતુરંગિણી સેનાને ત્યાંથી પાછી વળાવી દીધી અને પાછી વળાવીને તેઓ પાંચે પાંડવોની સાથે છએ રથોને-એક પોતાના રથને અને પાંચ પાંડવોના રથોને-લઈને લવણ સમુદ્રની વચ્ચે થઈને પસાર થવા લાગ્યા. આમ પસાર થતાં તેઓ જ્યાં અમરકંકા રાજધાની અને તેમાં પણ જ્યાં તે અગ્રોદ્યાન હતું ત્યાં પહોંચ્યા. (उवागच्छित्ता रहं ठवेइ) ત્યાં પહોંચીને તેમણે પોતાના રથને ઊભો રાખ્યો.

(ठवित्ता दारुयं सारहिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी, गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! अमरकंका रायहाणीं अणुपविसाहि २ पउमणाभस्स रण्णो वामेणं

प्रविश्य पद्मनाभस्य राज्ञो वामेन पादेन 'पायपीढ' पादपीठम् सिंहासनसंलग्न-सोपानम् आक्रम्य कुन्ताग्रेण लेखं प्रत्रिकां 'पणामेहि' अर्पय=देहि अर्पयित्वा 'तिवलियं' त्रिवलिकां रेखात्रययुक्तां 'भिउडिं' भ्रूकुटिं-'णिडाले' ललाटे 'साहट्टु' संहृत्य-उन्नीय 'आसुरुत्ते' आशुरुप्तः=शीघ्रं क्रोधाविष्टः 'रुट्ठे' रुष्टः 'कुद्धे' क्रुद्धः 'कुविए' कुपितः चंडिक्किए' चाण्डिक्यितः-रोषयुक्तः, एवमवादीत्-हं भो! पद्मनाभ! 'अपत्थियपत्थिया' अप्रार्थितप्रार्थित!-मरणवाञ्छक! 'दुरंतपंतलक्खण!' दुरन्तप्रान्तलक्षण! पूर्वं व्याख्यातमेतत्,

---

पायपीढं अक्कमित्ता कुंतग्गेणं लेहं पणामेहि, तिवलियं भिउडिं णिडाले साहट्टु आसुरुत्ते रुट्ठे कुद्धे कुविए चंडिक्किए एवं वयासी हंभो पउमणाहा अपत्थियपत्थिया! दुरंतपंतलक्खणा! हीणपुण्णचाउद्दसा! सिरिहिरि धी परिवज्जिया! अज्ज ण भवसि किन्नं तुमं ण याणासि, कण्हस्स वासुदेवस्स अहवणं जुद्धसज्जे णिगच्छाहि) रथ को रोककर वहां स्थापित कर-दारुक सारथि को बुलाया बुलाकर के उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय तुम जाओ-अमरकंका राजधानी में जाओ वहां जाकर पद्मनाभ राजाके पादपीठको वाम पादसे आक्रमित कर, कुन्त (भाला) के अग्रभाग से उसे पत्रिका दो देकर के अपनी भ्रुकुटी को भालपर चढाकर, इकदम गुस्से में आकर, रुष्ट, कुपित एवं क्रुद्ध होकर क्रोध के आवेश से तम तमाते हुए तुम उससे ऐसा कहो-अरे ओ पद्मनाभ! अप्रार्थित प्रार्थित! मरणवाञ्छक-! दुरंतप्रान्त लक्षण! मालुम होता है

पाएणं पायपीढं अक्कमित्ता कुंतग्गेणं लेहं पणामेहि, तिवलियं भिउडिं णिडाले साहट्टु आसुरुत्ते रुट्ठे कुद्धे कुविए चंडिक्किए एवं वयासी हं भो पउमणाहा! अपत्थियपत्थिया! दुरंतपंतलक्खणा! हीणपुण्णचाउद्दसा! सिरि हिरिधी परिवज्जिया! अज्ज ण भवसि किन्नं तुमं ण याणासि, कण्हस्स वासुदेवस्स अहवणं जुद्धसज्जे णिगच्छाहि)

રથને ઊભો રાખીને, ત્યાં જ રથને મૂકીને દારૂક સારથિને બોલાવ્યો. અને બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય! તમે અમરકંકા રાજધાનીમાં જાઓ અને ત્યાં જઈને પદ્મનાભ રાજાના પાદપીઠને ડાબા પગથી આક્રમિત કરીને કુંતના અગ્ર ભાગથી તેને પત્રિકા આપો. પત્રિકા આપીને તમે પોતાની ભમ્મરો ચઢાવીને, એકદમ લાલચોળ થઈને રૂષ્ટ, કુપિત અને ક્રુદ્ધ થઈને ક્રોધના આવેશમાં આવીને તેને આ પ્રમાણે કહો કે અરે ઓ પદ્મનાભ! અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત! મરણ વાંછક! દુરંત પ્રાંત લક્ષણ! (નીચ

'हीणपुन्नचाउद्दसा !' हीनपुण्यचातुर्दशिकः – अलब्धपुण्यचातुर्दशिकजन्मा, चतुर्दशीजातो हि भाग्यवान् भवति। तथा–'सिरी हिरि धी परिवज्जिया !' श्री ह्री धी परिवर्जित! लक्ष्मी लज्जा बुद्धि रहित !, अद्य न भवसि, किं खलु त्वं न जानासि, कृष्णस्य वासुदेवस्य भगिनीं द्रौपदीं देवीमिह 'हव्वं आणमाणे' हव्यमानयत्, 'तं' तत्–तस्मात् 'एयमवि' एतामपि=आनीतामपि आङ् पूर्वकाद् इण्गतौ' इत्यस्मात् क्त प्रत्ययः, 'अहव' अथवा खलु 'जुद्ध सज्जे' युद्धसज्जः–युद्धाय सज्जः=सन्नद्धः सन् 'णिग्गच्छाहि' निर्गच्छ–बहिर्निःसर एष खलु कृष्णो वासुदेवः पञ्चभिः पाण्डवैः सह 'अप्पछट्ठे' आत्मषष्ठः=आत्मा षष्ठो यत्र स समूहे, द्रौपदी देव्याः 'कूवं' प्रत्यानयनं कर्तुं हव्यमागतः।

तू अलब्ध पुण्य चातुर्दशिक जन्म वाला है–तू–चतुर्दशी में उत्पन्न हुआ नहीं हैं–क्यों कि चतुर्दशी के दिन उत्पन्न हुआ व्यक्ति भाग्यशाली होता है किन्तु तू ऐसा नहीं है अर्थात् अभागा है तू श्री ह्री, बुद्धि से रहित है। याद रख–या तो आज तू नही है या मैं नहीं हूं तुझे यह ख्याल नहीं है–कि यह द्रौपदी देवी कृष्ण वासुदेव की बहिन है जिसे तूंने यहां हरण करवा कर मंगवाई है। अतः यदि अपनी कुशल चाहता है, तो तू इस हरण करवा कर अपने यहां मंगवाई गई द्रौपदी देवी को कृष्ण वासुदेव के पास जाकर पीछे वापिस पहुँचा दे। नहीं तो युद्ध के लिये सज्जित होकर घर से बाहिर निकल आ। (एसणं कण्हे वासुदेवे) ये कृष्ण वासुदेव (पंचहिं पंडवेहिं अप्पछट्ठे दोवई देवीए कूवं हव्वमागए, तएणं से दारुए सारही कण्हे णं वासुदेवे णं एवं वुत्ते

વિચારો તેમજ નીચ લક્ષણો યુક્ત) અમને એમ લાગે છે કે તું અલબ્ધ પુણ્ય ચાતુર્દશિક જન્મવાળો છે, એટલે કે તું ચૌદશને દિવસે જન્મ્યો નથી કેમકે ચૌદશને દિવસે ઉત્પન્ન થનારી વ્યક્તિ ભાગ્યશાળી હોય છે. તું શ્રી, હ્રી અને બુદ્ધિ વગરનો છે. બરોબર સાંભળી લે કે આજે કાં તો તું નહિ કે કાં હું નહિ. તને એટલી પણ ખબર નથી કે આ દ્રૌપદી દેવી કૃષ્ણ–વાસુદેવની બહેન છે–કે જેને તેં હરણ કરાવીને અહીં મંગાવી છે. હવે જો તું પોતાનું ભલુ ઇચ્છતો હોય તો તું આ હરણ કરાવીને પોતાને ત્યાં રોકી રાખેલી દ્રૌપદી દેવીને કૃષ્ણ–વાસુદેવની પાસે જઈને પાછી સોંપી દે. નહિતર યુદ્ધના માટે તૈયાર થઈને બહાર મેદાનમાં આવી જા.(एस णं कण्हे वासुदेवे) આ કૃષ્ણવાસુદેવ (पंचहिं पंडवेहिं अप्पछट्ठे दोवई देवीए कूवं हव्व मागए, तएणं से दारुए

ततः खलु स दारुकः सारथिः कृष्णेन वासुदेवेनैवमुक्तः सन् हृष्टतुष्टो यावत् प्रतिशृणोति 'तथाऽस्तु' इति कृत्वाऽऽज्ञां स्वीकरोति प्रतिश्रुत्य=अमरकङ्काराजधानीमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य यत्रैव पद्मनाभस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतलपरिगृहीतदशनखं शिरआवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा यावद् वर्धयति-जयेन विजयेन चाभिनन्दयति। वर्धयित्वा-अभिनन्द्य एवमवादीत्-एषा खलु हे स्वामिन्! मम विनयप्रतिपत्तिः इयमन्या मम स्वामिनो विनयप्रतिपत्तिः, "समु-

समाणे हट्ठतुट्ठे जाव पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता, अमरकंका रायहाणिं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव पउमनाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, करयल जाव वद्धावेत्ता एवं वयासी-एसणं सामी मम विणयपडिवित्ती, इमा अन्ना मम सामिस्स समुहाणत्ति त्ति कट्टु असुरुत्ते नाम पाएणं पायपीढं अणुक्कमइ) पांच पांडवों के साथ आत्म षष्ठ होकर द्रौपदी देवी को लेने के लिये अभी अभी आये हुए हैं। इस प्रकार कृष्णवासुदेव के द्वारा कहे गये उस दारुक सारथि ने हृष्ट तुष्ट होकर कृष्णवासुदेव की आज्ञा स्वीकार करली। स्वीकार कर के फिर वह अमरकंका राजधानी में प्रवेश किया वहां प्रवेश कर वह वहां पहुँचा जहां पद्मनाभ राजा थे। उनके समीप जाकर उस ने पहिले उन्हें दोनों हाथों की अंजलि बना कर और उसे मस्तक पर रखकर नमस्कार किया-जय विजय शब्दों से उन्हें बँधाया-बाद में उसने इस प्रकार कहना प्रारंभ किया-हे स्वामिन्! यह तो मेरी विनय प्रतिपत्ति है-दूत

सारही कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे जाव पडिसुणेइ पडिसुणित्ता, अमरकंका रायहाणिं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव पउमनाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता,करयल जाव वद्धावेत्ता एवं वयासी-एस णं सामी मम विणयपडिवित्ती, इमा अन्ना मम सामिस्स समुहाणत्ति त्ति कट्टु आसुरुत्ते वामपाएणं पायपीढं अणुक्कमइ)

પાંચે પાંડવોની સાથે આત્મષષ્ઠ થઈને દ્રૌપદી દેવીને લેવા માટે અત્યારે આવી ગયા છે. આ પ્રમાણે કૃષ્ણ-વાસુદેવ વડે કહેવાસાં આવેલાં વચનો સાંભળીને હૃષ્ટ-તુષ્ટ થઈને તે દારુક સારથીએ તેમની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી. સ્વીકારીને તે અમરકંકા રાજધાનીમાં પ્રવિષ્ટ થયો. પ્રવિષ્ટ થઈને તે જ્યાં પદ્મનાભ રાજા હતા તેમની પાસે જઈને સૌ પહેલાં તેણે બંને હાથોની અંજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કર્યો અને જય વિજય શબ્દોથી રાજાને વધામણી આપી. ત્યારપછી તેણે આ પ્રમાણે કહેવાની શરૂઆત કરી કે હે સ્વામી! આ તો મારી વિનય પ્રતિપત્તિ છે. દૂતની ફરજ બજાવતાં મેં

हाणत्ति " स्वमुखाज्ञप्तिः-स्वमुखेन कथिता आज्ञप्तिः-आज्ञा ' इति कृत्वा 'आसु-रुत्ते ' आशुरुप्तः शीघ्रं क्रोधाविष्टः, वामपादेन पादपीठं ' अणुक्कमइ ' अनुक्रामति, अनुक्रम्य कुन्ताग्रेण लेखं-पत्रिकां ' पणामइ ' अर्पयति । अर्पयित्वा यावत् ' कूवं ' प्रत्यानयनं कर्तुं हव्यमागतः । ततः खलु स पद्मनाभो दारुकेण सारथिना एवमुक्तः सन् अशुरुप्तः=शीघ्रं क्रोधाक्रान्तं, त्रिवलिकां रेखात्रययुक्तां भ्रुकुटिं-' निडाले ' ललाटे-भालप्रदेशे 'साहट्टु' संहृत्य-उन्नीय, एवमवादीत्-नो अर्पयामि खलु अहं हे देवानुप्रिय कृष्णस्य वासुदेवस्य द्रौपदीम् , एष खलु अहं स्वयमेव युद्धसज्जो निर्गच्छामि=अधुनैव युद्धार्थं बहिर्निःसरामि इतिकृत्वा

के कर्तव्य अनुसार मैंने यह आपको नमस्कार किया है जय विजय आदि शब्दों द्वारा वधाई दी है-परन्तु मेरे स्वामीकी उनके मुखसे आपके लिये जो आज्ञा दी गई है वह दूसरी है-और वह इस प्रकार है-इस प्रकार अपने मुख से कहकर वह शीघ्र क्रोध से भर गया, और वामपाद से उसके पादपीठ पर चढ गया। (अवक्कमित्ता) चढकर फिर (कौंतग्गेणं लेहं पणामइ) फिर उसने उसके लिये कुन्त के अग्रभाग से पत्रिका अर्पित की। (पणामित्ता जाव कूवं हव्वमागए) पत्रिका अर्पित करके यावत् कृष्णवासुदेव पांचो पांडवों के साथ यहां द्रौपदी देवी को वापिस लेने के लिये हव्व-अभी अभी-आये हैं यह सब समाचार उसे सुना-दिया। (तएणं से पउमणाभे दारुएणं सारहिणा एवंवुत्ते समाणे आसुरुत्ते त्तिवलिं भिउडिं निडाले साहट्टु एवं वयासी णो अप्पिणामि, णं अहं देवाणुप्पिया ! कण्हस्स वासुदेवस्स दोवइं, एस णं अहं सयमेव

विनयोपचार माटे नमस्कार कर्यो छे तेमज जय विजय विजय शब्दो द्वारा तमने वधामणी आपी छे. परंतु मारा स्वामीए तेमना मुखथी तमारे माटे जे कंई आज्ञा आपी छे ते कंईक बीजी ज छे अने ते आ प्रमाणे छे दूत आम कहीने एकदम क्रोधमां लालचोळ थई गयो अने डाबा पगथी तेना पादासन उपर चढी गयो (अवक्कमित्ता) चढीने (कौंतग्गेणं लेहं पणामइ) तेणे राजाने कुंत (भाला) ना अग्रभागथी पत्रिका आपी. (पणामित्ता जाव कूवं हव्वमागए) पत्रिका आपीने यावत कृष्ण-वासुदेव पांचे पांडवोनी साथे अहीं द्रौपदी देवीने लेवा माटे अत्यारे आव्या छे. आ जातना बधा समाचारो तेने कही संभळाव्या.

(तएणं से पउमणाभे दारुयेणं सारहिणा एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते त्तिवलिं भिउडिं निडाले साहट्टु एवं वयासी-णो अप्पिणामि,णं अहं देवाणुप्पिया !

दारुकं सारथिमेवमवादीत्—
केवलं भोः ! 'रायसत्थेसु' राजशास्त्रेषु–राजनीतिषु दूतः 'अवज्झे' अवध्यः=न हन्तव्यः, इत्युक्तमस्ति तस्मात् त्वां मुञ्चामि इति कृत्वा=इत्युक्त्वा तं दूतम् असत्कार्य, असम्मान्य अपद्वारेण 'णिच्छुभावेइ' निक्षोभयति–निष्कासयति, ततः खलु स दारुकः सारथिः पद्मनाभेनासत्कार्य यावत्–'णिच्छूढे' निक्षोभितः–निःसारितः 'समाणे' सन्, यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतलपरिगृहीतदशनखं शिरआवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा कृष्णं यावद् एवमवादीत्—

जुद्धसज्जो णिगच्छामि,त्ति कट्टु दारुयं सारयं एवं वयासी–केवलं भो रायसत्थेसु दूये अवज्झे त्ति कट्टु असक्कारिय असम्माणिय अवद्दारेणं णिच्छुभावेइ) तब वह पद्मनाभ जब दारुक सारथि ने इस प्रकार कहा तो इकदम क्रोधित होकर त्रिवलि युक्त भ्रूकुटि को माथे पर चढा कर इस प्रकार कहने लगा हे देवानुप्रिय ! मैं द्रौपदी को कृष्णवासुदेव के लिये अर्पित नहीं करता हूं–पीछी नहीं देता हूं—। इसके लिये मैं अभी स्वयं ही युद्ध करने को तैयार हूँ–। इस प्रकार कहकर फिर उसने उस दारुक सारथि से ऐसा कहा अरे ! राजनीति के शास्त्रों में दूत अवध्य कहा गया है–इस लिये तुझे छोड़ देता हूँ। इस तरह कहकर उसने दूत को असत्कृत और असंमानित कर पीछे के दरवाजे से बाहिर निकलवा दिया। (तएणं दारुए सारही पउमणाभेणं असक्कारिय जाव णिच्छूढे समाणे जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवा

कण्हस्स वासुदेवस्स दोवई, एसणं अहं सयमेव जुद्धसज्जो णिगच्छामि त्ति कट्टु दारुयं सारहिं एवं वयासी–केवलं भो ! रायसत्थेसु दूये अवज्झे त्ति कट्टु असक्कारिय असम्माणिय अवद्दारेणं णिच्छुभावेइ)

દારુક સારથિના આ પ્રમાણે વચનો સાંભળીને પદ્મનાભ એકદમ ક્રોધમાં લાલચોળ થઈ ગયો. અને ભમ્મરો ચઢાવીને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો કે હે દેવાનુપ્રિય ! હું કૃષ્ણ-વાસુદેવને દ્રૌપદી કોઇપણ સ્થિતિમાં સોંપવા તૈયાર નથી. એના માટે હું અત્યારે પણ યુદ્ધ કરવા તૈયાર છું. આ પ્રમાણે કહીને તેણે દારુક સારથીને કહ્યું કે અરે ! રાજનીતિના શાસ્ત્રોમાં દૂત અવધ્ય કહેવામાં આવ્યો છે એથી તને જતો કરું છું. આ પ્રમાણે કહીને તેણે દૂતને અસત્કૃત અને અસંમાનિત કરીને પાછલા બારણેથી બહાર કઢાવી મૂક્યો.

(तएणं दारुए सारही पउमणाभेणं असक्कारिय जाव णिच्छूढे समाणे जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल० कण्हं जाव एवं

एवं खलु अहं हे स्वामिन् ! युष्माकं वचनेन यावत् 'णिच्छुभावेइ' निक्षोभयति= पद्मनाभः क्रोधाविष्टः सन् द्रौपदीं न दास्यामीत्युक्त्वा दूतो न हन्तव्य इति कृत्वा मामसत्कार्य, असंमान्यापद्वारेण निःसारयति स्म ' इत्यर्थः ॥ २८ ॥

मूलम्—तएणं से पउमणाभे बलवाउयं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी--खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह, तयाणंतरं च णं से बलवाउए छेयायरियउवदेसमइविकप्पणा विगप्पेहिं निउणेहिं जाव उवणेइ, तएणं से पउमनाहे सन्नद्ध० अभिसेयं दूरुहइ दूरुहित्ता हयगय जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएणं से कण्हे वासुदेवे पउमणाभं रायाणं एज्जमाणं पासइ पासित्ता तं पंच पंडवे

गच्छइ, उवागच्छित्ता करयल० कण्हं जाव एवं वयासी—एवं खलु अहं सामी ? तुब्भं वयणेणं जाव णिच्छुभावेइ) इस प्रकार जब वह दारुक सारथि पद्मनाभ के द्वारा असत्कृत यावत् होकर बाहिर निलवा दिया, तब वह वहां से चलकर जहां कृष्णवासुदेव थे वहां आया । वहां आकर उसने दोनों हाथों की अंजलि बनाकर और उसे मस्तक पर रखकर कृष्णवासुदेव से इस प्रकार कहा—हे स्वामिन् ? मैंने पद्मनाभ राजा से आपके वचन जैसे ही कहे वैसे ही उसने "क्रोध में आकर" मैं नहीं दूंगा, दूतमारने योग्य नहीं होता है—इत्यादि कहकर मुझे असत्कृत एवं असम्मानित कर अपने यहां से पीछे के दरवाजे से बाहिर निकलवा दिया है ॥ सूत्र २८ ॥

वयासी—एवं खलु अहं सामी ! तुब्भं वयणेणं जाव णिच्छुभावेइ)

આ પ્રમાણે જ્યારે તે દારુક સારથિ પદ્મનાભ રાજા વડે અસત્કૃત યાવત અસંમાનિત થઈને બહાર કઢાવી મૂકાયો ત્યારે તે ત્યાંથી બહાર આવીને જ્યાં કૃષ્ણ—વાસુદેવ હતા ત્યાં આવ્યો. ત્યાં આવીને તેણે બંને હાથોથી અંજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને કૃષ્ણ—વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સ્વામી ! પદ્મનાભ રાજાને મેં જ્યારે તમારો સંદેશ કહી સંભળાવ્યો. ત્યારે સાંભળતાંની સાથે જ તે ક્રોધમાં ભરાઈને "હું દ્રૌપદી દેવી પછી આપીશ નહિ, યાવત દૂત અવધ્ય હોય છે" વગેરે વચનોથી અસત્કૃત તેમજ અસંમાનિત કરીને મને તેણે પોતાના ભવનના પાછલા બારણેથી બહાર કઢાવી મૂક્યો છે. ॥ સૂ. ૨૮ ॥

एवं वयासी--हं भो दारगा! किन्नं तुब्भे पउमनाभेणं सद्धिं जुज्झिहिह उयाहु पेच्छिहिह?, तएणं ते पंच पंडवा कण्हं वासुदेवं एवं वयासी--अम्हे णं सामी! जुज्झामो तुब्भे पेच्छह तएणं पंच पंडवे सण्णद्ध जाव पहरणा रहे दुरूहंति दुरुहित्ता जेणेव पउमनाभे राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता एवं वयासी--अम्हे वा पउमणाभे वा रायत्तिकट्टु पउमनाभेणं सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था, तएणं से पउमनाभे राया तं पंच पंडवे खिप्पामेव हयमहिय पवर निवडिय चिन्धद्धयपडागा जाव दिसोदिसिं पडिसेहेइत्ति, तएणं ते पंच पंडवा पउमनाभेणं रन्ना हयमहियपवरनिवडिय जाव पडिसेहिया समाणा अत्थामा जाव आधारणिज्जात्तिकट्टु जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवा०, तएणं से कण्हे वासुदेवे ते पंच पंडवे एवं वयासी--कहण्णं तुब्भे देवाणुप्पिया! पउमणाभेणं रन्ना सद्धिं संपलग्गा?, तएणं ते पंच पंडवा कण्हं वासुदेवं एवं वयासी--एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हे तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा सन्नद्ध० रहे दुरुहामो२ जेणेव पउमनाभे जाव पडिसेहेइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे तं पंच पंडवे एवं वयासी--जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया! एवं वयंता अम्हे णो पउमणाभे रायत्तिकट्टु पउमनाभेणं सद्धिं संपलग्गंताओ णं तुब्भे णो पउमणाहे हयमहियपवर जाव पडिसेहंते, तं पेच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! अहं नो पउमणाभे रायत्तिकट्टु पउनाभेणं रन्ना सद्धिं जुज्झामि रहं

दुरुहइ दुरुहित्ता जेणेव पउमनाभे राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सेयं गोक्खीरहारधवलं तणसोल्लियसिंदुवारकुंदेंदुसन्निगासं नियथबलस्स हरिसजणणं रिउसेण्णविणासकरं पंचजण्णं संखं परामुसइ परामुसित्ता मुहवायपुरियं करेइ, तएणं तस्स पउमणाहस्स तेणं संखसद्देणं बलइभाए हयजाव पडिसेहिए, तएणं से कण्हे वासुदेवे धणुं परामुसइ वेढो धणुं पूरेइ पूरित्ता धणुसद्दं करेइ, तएणं तस्स पउमनाभस्स दोच्चे बलइभाए तेणं धणुसद्देणं हयमहिय जाव पडिसेहिए, तएणं से पउमणाभे राया तिभागबलावसेसे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जत्तिक_ सिग्धं तुरियं जेणेव अमरकंका तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अमरकंकं रायहाणिं अणुपविसइ अणुपविसित्ता दाराइं पिहेइ पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे जेणेव अमरकंका तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता रहं ठवेइ ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ, एगं महं णरसीहरूवं विउव्वइ विउव्वित्ता महया महया सद्देणं पाददद्दरयं करेइ, तएणं से कण्हेणं वासुदेवेणं महया महया सद्देणं पाददद्दरएणं कएणं समाणेणं अमरकंका रायहाणी संभग्गपागारगोपुराट्टालयचरियतोरणपल्हात्थियपवरभवणसिरिघरा सरस्सरस्स धरणियले सन्निवइया, तएणं से पउमणाभे राया अमरकंकं रायहाणिं संभग्ग जाव पासित्ता भीए दोवईए देवीए सरणं उवेइ तएणं सा

दोवईदेवी पउमनाभं रायं एवं वयासी — किण्णं तुमं देवाणुप्पिया ! न जाणासि कण्हस्स वासुदेवस्स उत्तमपुरिसस्स विप्पियं करेमाणे ममं इहं हव्वमाणेसि, तं एवमवि गए गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! ण्हाए उल्लपडसाडए अवचूलगवत्थणियत्थे अंतेउरपरियालसंपरिवुडे अग्गाइं वराइं रयणाइं गहाय ममं पुरओ काउं कण्हं वासुदेवं करयलपायपडिए सरणं उवेहि, पणिवइयवच्छला णं देवाणुप्पिया ! उत्तमपुरिसा, तएणं से पउमनाभे, दोवइए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेइ पडिसुणित्ता ण्हाए जाव सरणं उवेइ उवित्ता करयल० एवं वयासी—दिट्ठाणं देवाणुप्पियाणं इड्ढी जाव परक्कमे तं खामेमि णं देवाणुप्पिया! जाव खमंतु णं जाव णाहं भुज्जो२ एवं करणयाएत्तिकट्टु पंजलिवुडे पायवडिए कण्हस्स वासुदेवस्स दोवइं देविं साहत्थि उवणेइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे पउमणाभं एवं वयासी-हं भो पउमणाभा ! अप्पत्थियपत्थिया४ किण्णं तुमं ण जाणासि मम भगिणिं दोवइंदेवीं इह हव्वमाणमाणे तं एवमवि गए णत्थि ते ममाहिंतो इयाणिं भयमत्थि त्तिकट्टु पउमणाभं पडिविसज्जेइ पडिविसज्जित्ता दोवइं देविं गिण्हइ गिण्हित्ता रहं दुरूहेइ दुरूहित्ता जेणेव पंच पंडवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पंचण्हं पंडवाणं दोवइं देविं साहत्थिं उवणेइ, तएणं से कण्हे पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं जेणेव जंबूद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० २९ ॥

टीका—' तएणं से ' इत्यादि । ततः खलु स पद्मनाभः ' बलवाउयं ' बलव्यापृतं-सैन्यनायकं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—क्षिप्रमेव-शीघ्रमेव भो देवानुप्रिय ! ' आभिसेक्कं ' आभिषेक्यं प्रधानं हस्तिरत्नं ' पडिकप्पेह ' प्रतिकल्पय सुसज्जितं कुरु, तदनन्तरं च स बलव्यापृतः खलु " छेयायरियउवदेसमइविकप्पणाविगप्पेहिं " छेकाचार्योपदेशमतिविकल्पनाविकल्पैः-तत्र छेकः-निपुणः, आचार्यः-कलाशिक्षकः, तस्योपदेशाद् या मतिर्बुद्धिस्तस्या विकल्पना-विचारणा, तज्जनितो विकल्पः-विशिष्ट रचनाशक्तिर्येषां तैः, ' जाव उवणेइ ' यावद् उपत-

--ःतएणं से पउमणाभे इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से पउमणाभे) उन पद्मनाभ राजा ने (बलवाउयं सद्दावेइ) अपने सैन्य नायक को बुलाया (सद्दावित्ता) और बुलाकर फिर उससे (एवं वयासी) इस प्रकार कहा-(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह) हे देवानुप्रिय ! तुम शीघ्र ही प्रधान हस्तिरत्न को सुसज्जित करो। (तयाणंतरं च णं से बलवाउए छेयायरिय उवदेसमइ विकप्पणा विगप्पेहिं निउणेहिं जाव उवणेइ) इसके बाद उस सैन्य नायक ने निपुणकला शिक्षक के उपदेश से प्राप्त बुद्धि की कल्पना से उत्पन्न हुई है विशिष्ट रचना की शक्ति जिन्हों को ऐसे मनुष्य से कि जो शोभा करने में अत्यन्त निपुण थे उस हस्तिरत्न को सुसज्जित करवाया। जब उन्हों ने उस हस्तिरत्न को चमकीले निर्मल वेष से शीघ्र परिवस्त्रित-करदिया। वस्त्राच्छादन द्वारा

तएणं से पउमणाभे इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तएणं) ત્યારપછી (से पउमणाभे) તે પદ્મનાભ રાજાએ (बलवाउयं सद्दावेइ) પોતાના સૈન્ય નાયકને બોલાવ્યો. (सद्दावित्ता) અને બોલાવીને તેને (एव वयासी) આ પ્રમાણે કહ્યું કે (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह) હે દેવાનુપ્રિય ! તમે સત્વરે પ્રધાન હસ્તિરત્નને સુસજ્જ કરો. (तयाणंतर च णं से बलवाउए छेयायरियउवदेसमइविकप्पणा विगप्पेहि निउणेहिं जाव उवणेइ) ત્યારપછી તે સૈન્ય નાયકે નિપુણ કલાશિક્ષકના ઉપદેશથી જેમણે વિશિષ્ટ રચના માટે બુદ્ધિ તેમજ કલ્પના શક્તિ મેળવી છે, તેમજ શ્રૃંગાર કલામા જેઓ અતીવ ચતુર છે તેવા માણુસો વડે હસ્તિરત્નને સુસજ્જિત કરાવ્યો. જ્યારે સત્વરે તેમણે તે હસ્તિરત્નને ચમકતા નિર્મળ વેષથી પરિવસ્ત્રિત કરી દીધો-વસ્ત્રાચ્છાદન વડે આચ્છાદિત કરીને સુશો-

यति–अत्र यावच्छब्देनैवं बोध्यम्–सुनिउणेहिं नरेहिं हत्थिरयणं परिकप्पेइ, उज्ज-लनेवत्थ हव्वपरिवत्थियं सुसज्ज इत्यादि परिकप्पित्ता' इति सुनिपुणैः=शोभा-करणचतुरैः, नरैर्हस्तिरत्नं परिकल्पयति–शोभयति किं भूतं हस्तिरत्नं–उज्ज्वल–नेपथ्यहव्यपरिवस्त्रितं उज्ज्वलनेपथ्येन-द्युतिमन्निर्मलवेषेण शीघ्रं परिवस्त्रितः वस्त्राच्छादनसुशोभितः, तथा–सुसज्जं–घण्टाभरणादिभिः समलङ्कृतं, एवं परि-कल्प्य सवलव्यापृतः पद्मनाभनृपस्यान्तिके तं हस्तिरत्नमुपनयति, आनयति। ततः खलु स पद्मनाभः सन्नद्धबद्धवर्मितकवचः – आभिषेक्यं हस्तिरत्नं दूरोहति–आरोहति दूरुह्य हयगजरथपदातिपरिवृतः यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तत्रैव माधारयद् गमनाय।

ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः पद्मनाभं राजानम् एजमानम्=आगच्छन्तं पश्यति। दृष्ट्वा च तान् पञ्च पाण्डवान् एवमवदत–हं भो ! दारकाः भो वत्साः !

आच्छादित कर सुशोभित करदिया–अर्थात्–झूल वगैरह डालकर उसे बहुत अच्छी तरह सजा दिया, तथा घंटा आभरण आदि से उसे अलं-कृत करदिया, तब वह सैन्य नायक उस हस्ति रत्न को लेकर पद्मनाभ राजा के पास पहुँचा (तएणं से पउमणाभे सन्नद्ध० अभिसेय० दूरुहइ, दूरुहित्ता हयगय जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएणं से कण्हे वासुदेवे पउमणाभरायाणं एज्जमाणं पासइ पासित्ता ते पंच पंडवे एवं वयासी) इसके बाद वह पद्मनाभ राजा सन्नद्ध, बद्ध, वर्मित कवच वाला होकर उस प्रधान हस्तिरत्न पर आरूढ हो गया और आरूढ होकर हय, गज, रथ, एवं पैदल सैन्य को साथ लेकर जहां कृष्णवासुदेव थे उस ओर चल दिया। जब कृष्णवासुदेव ने पद्मनाभ राजा को आता हुआ देखा तो देखकर उन्हों ने पांच पांडवो से ऐसा कहा–(हं भो

भित करी दीधो એટલે કે ઝૂલ વગેરે નાખીને બહુ જ સરસ રીતે સુસજ્જિત કરી દીધો તેમજ ઘંટ, આભરણો વગેરેથી તેને અલંકૃત કરી દીધો. ત્યારે તે સૈન્ય નાયક તે હસ્તિરત્નને લઈને પદ્મનાભ રાજાની પાસે ગયો.

(तएणं से पउमणाभे सन्नद्ध० अभिसेय० दूरुहइ दूरुहित्ता हयगय जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएणं से कण्हे वासुदेवे पउमणाभरायाणं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता ते पंच पंडवे एवं वयासी)

ત્યારપછી તે પદ્મનાભ રાજા કવચ તેમજ બીજા શસ્ત્રોથી સજ્જ થઈને તે પ્રધાન હસ્તિરત્ન ઉપર સવાર થઈ ગયો અને સવાર થઈને ઘોડા, હાથી, રથ અને પાયદળ સેનાને સાથે લઈને કૃષ્ણ-વાસુદેવ હતા તે તરફ રવાના થયો. કૃષ્ણ-વાસુદેવે જ્યારે પદ્મનાભ રાજાને આવતો જોયો ત્યારે તેને જોઈને પાંચ

किं खलु यूयं पद्मनाभेन सार्धं 'जुज्झिहिह' युध्यथ ! 'उयाहु' उताहो-अथवा 'पेच्छिहिह' प्रेक्षध्वे, ? ततः खलु ते पञ्च पाण्डवा कृष्णं वासुदेवमेवमवादीत्-वयं खलु हे स्वामिन् ! युध्यामः, यूयं प्रेक्षध्वम् । ततः खलु पञ्च पाण्डवाः सन्नद्धबद्धवर्मितकवचा यावद् गृहीतायुधप्रहरणाः रथान्=स्व स्व रथोपरि दूरोहन्ति=आरोहन्ति दूरोह्य यत्रैव पद्मनाभो राजा तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य एवमवदन्-'अम्हे वा पउमणाभे वा राया' वयं वा स्वामः पद्मनाभो वा राजा, इति

दारगा ! किन्नं तुब्भे पउमनाभेणं सद्धिं जुज्झिहिह उयाह पेच्छिहिह ? तएणं ते पंडवा कण्णं वासुदेवं एवं वयासी) हे वत्सो ! क्या तुमलोग पद्मनाभ के साथ युद्ध करोगे-या युद्ध को देखोगे ? तब उन पांडवो ने कृष्णवासुदेव से इस प्रकार कहा-(अम्हेणं सामी ! जुज्झामो, तुब्भे पेच्छह, तएणं पंच पंडवे सन्नद्ध जाव पहरणा रहे दुरुहंति, दुरुहित्ता जेणेव पउमणाभे राया तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता एवं वयासी, अम्हे वा पउमणाभे वा रायत्ति कट्टु पउमणाभेणं सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था) हे स्वामिन् ! हम तो युद्ध करेंगे-आप उस का निरीक्षण करें । इसके बाद वे पांचो पांडव सन्नद्धबद्धवर्मित कवचवाले होकर यावत् आयुध प्रहरणों को ले २ कर अपने २ रथों पर सवार हो गये । सवार होकर फिर वे जहां पद्मनाभ राजा थे-उस और गये-वहां जाकर उन्हों ने पद्मनाभ राजा से इस प्रकार कहा-या तो आज हम नहीं या पद्म-

પાંડવોને આ પ્રમાણે કહ્યુ-(हं भो दारगा ! किन्नं तुब्भे पउमनाभेणं सद्धिं जुज्झिहिह उयाहु पेच्छिहिह ? तएणं ते पंच पंडवा कण्हं वासुदेवं एवं वयासी) હે વત્સ ! શું તમે પદ્મનાભ રાજાની સાથે મેદાને ઉતરશો ? કે ફક્ત યુદ્ધને જોશો ' ત્યારે તે પાંડવોએ કૃષ્ણ-વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યુ કેઃ—

(अम्हेणं सामी ! जुज्झामो, तुब्भे पेच्छह, तएणं पंच पंडवे सन्नद्ध जाव पहरणा रहे दुरूहंति, दुरूहित्ता जेणेव पउमणाभे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एवं वयासी, अम्हे वा पउमणाभे वा रायत्ति कट्टु पउमणाभेणं सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था)

હે સ્વામી ! અમે તો યુદ્ધ ખેડીશું, તમે અમારા યુદ્ધને જુઓ. ત્યારપછી તે પાંચે પાંડવો કવચથી સુસજ્જ થઈને આયુધ પ્રહરણોને લઈને પોતપોતાના રથો ઉપર સવાર થઈ ગયા. સવાર થઈને તેઓ પદ્મનાભ રાજા તરફ રવાના થયા. પદ્મનાભ રાજાની પાસે પહોંચીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યુ કે— " આજે કાં તો અમે નહિં અને કાં પદ્મનાભ નહિં. " આમ કહીને તેઓ પદ્મનાભ રાજાની સાથે યુદ્ધ કરવા લાગ્યા

कृत्वा=इत्युक्त्वा-पद्मनाभेन सार्धं योद्धुं संप्रलग्नाश्चाप्यभवन् , ततः खलु स पद्मनाभो राजा तान् पञ्च पाण्डवान् क्षिप्रमेव 'हयमहियपवरनिवडियचिन्धद्धयपडागा' हयमथितप्रवरनिपतितचिह्नध्वजपताकान्-तत्र हयाः-अश्वा मथिता-पीडिताः, प्रवराः-प्रशस्ताः, चिह्नध्वजपताका निपातिता येषां तान्, शस्त्रास्त्रप्रहारजनित प्राप्तान् इत्यर्थः, यावद् दिशो दिशं=सर्वतः 'पडिसेहेइ' प्रतिषेधयति=प्रतिनिवर्तयति स्मेत्यर्थः। ततः खलु ते पञ्च पाण्डवाः पद्मनाभेन राज्ञा हयमथितप्रवरनिपतित यावत् प्रतिषेधिताः सन्तः 'अत्थामा' अस्थामानः-बलरहिताः, 'जाव अधारणिज्जा' अत्र यावच्छब्देन-'अबला अवीर्या' इत्यनयोः संग्रहः। अबलाः-

---

नाभ राजा ही नहीं" ऐसा कहकर वे पद्मनाभ राजा के साथ युद्ध करने में संलग्न हो गये। (तएणं से पउमनाभे राया ते पंच पंडवे खिप्पामेव हयमहियपवर निवडिय जाव पडिसेहिया, समाणा, अत्थामा जाव अधारणिज्ज त्ति कट्टु जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवा०, तएणं से वासुदेवे ते पंच पंडवे एवं वयासी कहण्णं तुब्भे देवाणुप्पिया! पउमनाभेणं रन्ना सद्धिं संपलग्गा? तएणं ते पंच पंडवा कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हे तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा सन्नद्ध० रहे दुरूहामो २ जेणेव पउमणाभे जाव पडिसेहेइ) तब पद्मनाभ राजा ने उन पांचो पांडवो को बहुत जल्दी पीडित घोडों वाला एवं निपातित प्रशस्त चिह्नध्वज पताका वाला कर दिया। यावत् एक दिशा से दूसरी दिशा में जाने से भी उन्हें रोक दिया अथवा-एक दिशा से दूसरी दिशा में खदेड दिया। इस तरह वे पांचो पांडव पद्मनाभ राजा के द्वारा पीडित घोडोवाले, एवं निपातित प्रशस्त चिह्न ध्वज पताका वाले जब बन गये और एक दिशा से दूसरी दिशा में जाने से रोक दिये गये-अथवा खदेड़ दिये गये तब बलरहित बनकर यावत्

(तएणं से पउमनाभे राया ते पंच पंडवे खिप्पामेव हयमहियपवरं निवडिय जाव पडिसेहिया समाणा, अत्थामा जाव अधारणिज्ज त्ति कट्टु जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवा०, तएणं से कण्हे वासुदेवे ते पंच पंडवे एवं वयासी कहण्णं तुब्भे देवाणुप्पिया! पउमनाभेणं रन्ना सद्धिं संपलग्गा? तएणं ते पंच-पंडवा कण्हं वासुदेवं एव वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हे तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा सन्नद्ध० रहे दुरूहामो २ जेणेव पउमणाभे जाव पडिसेहेइ)

ત્યારપછી પદ્મનાભ રાજાએ તે પાંચે પાંડવોને થોડા વખતમાં જ પીડિત ઘોડાઓવાળા તેમજ નિપાતિત પ્રશસ્ત ચિહ્નધ્વજ પતાકાવાળા બનાવી દીધા યાવત એક દિશામાંથી બીજી દિશા તરફ જઈ શકે નહિ તેમ તેઓએ રસ્તો રોકી લીધો. અથવા તો એક દિશામાંથી બીજી દિશા તરફ ભગાડી મૂકયા. આવી

सत्त्वहीनाः अवीर्याः-आन्तरिकशक्तिरहिताः, उत्साहहीनाइत्यर्थः, तथा-अधारणीयाः=आत्मानं रणभूमौ धारयितुमशक्ताः, इति कृत्वा-इति विचार्य, यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तत्रैवोपागच्छन्ति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवस्तान् पञ्च पाण्डवान् एवं वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-'कहण्णं' कथं खलु यूयं हे देवानुप्रियाः ! पद्मनाभेन राज्ञा सार्धं योद्धुं संप्रलग्नाः ?, ततः खलु ते पञ्च पाण्डवाः कृष्णं वासुदेवमेवमवादीत्-एवं खलु हे देवानुप्रियाः ! वयं युष्माभिरभ्यनुज्ञाताः सन्तः सन्नद्धबद्धवर्मितकवचाः रथान् 'दुरुहामो' दूरोहामः-आरोहामः आरूढाः, आरुह्य यत्रैव पद्मनाभस्तत्रैव गत्वा युद्धाय संप्रलग्नाः ततः पराजयं प्राप्ता यावत् प्रतिषेधिता' इति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवस्तान् पञ्च पाण्डवान् एवमवा-

रणभूमि में अपने आपको टीका ने में भी असमर्थ जानकर जहां कृष्ण-वासुदेव थे वहां आये । वहां पहुँच तेही कृष्णवासुदेवने उनसे-उन पांचो पांडवों से-इस प्रकार कहा- जब आपलोग पराजित हो गये तो पद्मनाभ राजा के साथ युद्धरत हुए-लड़े-तब उन पांचो पांडवो ने कृष्ण-वासुदेव से इस प्रकार कहा, हे देवानुप्रिय ! हमलोगो ने आप से अभ्यनुज्ञात होकर ही कवच आदि से सुसज्जित हो रथों पर आरोहण किया, और आरोहण कर जहां पद्मनाभ राजा था वहां हमलोग पहुँचे । वहां पहुँचकर हमलोग उनके साथ युद्धरत हो गये। बाद में पराजित हो गये। और पराजित होकर फिर ऐसे बन गये जो उसने हमें एक दिशा से दूसरी दिशा में खदेड दिया या जाने से रोक दिया। (तएणं से कण्हे वासुदेवे ते पं पं.) तब कृष्णवासुदेव ने उन पांचो पांडवो से

પરિસ્થિતિમાં લાચાર થઈને યાવત્ યુદ્ધભૂમિમાં પોતાની જાતને ટકાવી શકવામાં પણ અસમર્થ જાણીને પાંચે પાંડવો જ્યાં કૃષ્ણ-વાસુદેવ હતા ત્યાં આવ્યા ત્યાં પહોંચતાં જ કૃષ્ણ-વાસુદેવે પાંચે પાંડવોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે તમે લોકો પદ્મનાભ રાજાની સાથે યુદ્ધરત થઈને પરાજીત થઈ ગયા છો ? ત્યારે તે પાંચે પાંડવોએ કૃષ્ણ-વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! અમે બધા આપની આજ્ઞા મેળવીને કવચ વગેરેથી સુસજ્જિત થઈને રથો ઉપર સવાર થયા સવાર થઈને અમે જ્યાં પદ્મનાભ રાજા હતો ત્યાં ગયો ત્યાં પહોંચીને અમે બધા તેની સાથે યુદ્ધ કરવા લાગ્યા અને તેને પરિણામે અમે હારી ગયા છીએ હાર પામીને અમે એવી ભયંકર પરિસ્થિતિમાં સપડાઈ ગયા હતા કે જેથી એક દિશા તરફથી બીજી દિશા તરફ જવામાં પણ અસર્થ થઈ ગયા અથવા તો તેણે અમને એક દિશામાંથી બીજી દિશા તરફ ભગાડી મૂકયા છે. (तएणं से कण्हे वासुदेवे ते पं. पं.) ત્યારે કૃષ્ણ-વાસુદેવે તે પાંચ પાંડવોને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

दीत्-यदि खलु यूयं हे देवानुप्रियाः! पूर्वमेवं वक्तारो भवत, 'अम्हे,' णो पउनाभे राया' इति 'वयं भवामः, नो पद्मनाभो राजा' इति "वयमेवजेष्यामो न तु पद्मनाभो राजा' इत्यर्थः. तथा-यदि पूर्वम्-इति कृत्वा=इत्येव निश्चयं मनसि निधाय, पद्मनाभेन सार्धं 'संपलग्गंता' युद्धाय संमलग्ना भवत, 'तो णं' तर्हि खलु 'तुब्भे, णो पउमणाहे' यूयं नो पद्मनाभः=यूयमेव जेतारो भवेत, न तु पद्मनाभः, तथा यूयं तं हयमथितप्रवरनिपतित चिह्नध्वजपताकं यावत्-पद्मनाभं 'पडिसेहंते' प्रतिषेधयेत=प्रतिनिवर्तयेत। तत्=तस्मात् 'पेच्छह' प्रेक्षध्वं, खलु

इस प्रकार कहा-(जइणं तुब्भे देवाणुप्पिया! एवं वयंता अम्हे णो पउमणाभे राय त्ति कट्टु पउमनाभेणं सद्धिं संपलग्गंताओ णं तुब्भे णो पउमणाहे, हय-महिय-पवर-जाव पडिसेहंते, तं पेच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! अहं णो पउमणाभे राय त्ति कट्टु पउमनाभेणं रन्ना सद्धिं जुज्झामि, रहं दुरुहइ, दुरुहित्ता जेणेव पउमणाभे राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सेयं गोखीरहारधवलंतणसोल्लियसिंदुवारकुंदेंदु सन्निगासं नियगबलस्स हरिसजणणं रिउसेण्णविणासकरं पंचजण्णं संखं परामुसइ) हे देवानुप्रिय! तुम तो पहिले ऐसा कहते थे कि हम जीतेंगे, पद्मनाभ राजा नहीं जीतेगा-और ऐसा ही मन में विचार कर-निश्चय कर-तुमलोगों ने पद्मनाभ राजा के साथ युद्ध करना प्रारंभ किया-तो तुमलोगों को ही जीतना चाहिये था। पद्मनाभ राजा को नहीं-और तुम्हीं लोग उसे पीडित घोडों वाला एवं निपातितप्रश-

---

(जइणं तुब्भे देवाणुप्पिया! एवं वयंता अम्हे णो पउमणाभे राय त्ति कट्टु पउमनाभेणं सद्धिं संपलग्गंताओ णं तुब्भे णो पउमणाहे, हयमहियपवर जाव पडिसेहंते, तं पेच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! अहं णो पउमणाभे रायत्ति कट्टु पउमनाभेणं रन्ना सद्धिं जुज्झामि, रहं दुरूहइ, दुरुहित्ता जेणेव पउमणाभे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेयं गोखीरहारधवलंतणसोल्लियसिंदुवार कुंदेंदु सन्निगासं नियगबलस्स हरिसजणणं रिउसेण्णविणासकरं पंचजण्णं संखं परामुसइ)

હે દેવાનુપ્રિય! તમે તો પહેલેથી જ આ પ્રમાણે કહેતા હતા કે અમેજ જીતીશું, પદ્મનાભ રાજા જીતશે નહિ. અને આ પ્રમાણે વિચાર કરીને જ તમે લોકોએ પદ્મનાભ રાજાની સાથે યુદ્ધની શરૂઆત કરી હતી, આવી પરિસ્થિમાં તો તમારે જીત મેળવવી જોઇએ. પદ્મનાભ રાજાની જીત નહિ થવી જોઇએ તમે લોકો તેને પીડિત ઘોડાઓવાળો બનાવત, તમને તે નહિ પણ આ બધી તમારી મનની ઇચ્છા સફળ થઇ શકી નહિ. એથી હે દેવાનુપિયો! હવે જુઓ,

यूयं हे देवानुप्रियाः । 'अह नो पउमणाभे राया' 'अहं नो पद्मनाभो राजा'= अहमेव जेता भवामि, न तु पद्मनाभो राजा, इति कृत्वा पद्मनाभेन राज्ञा सार्धं युध्यामि, इत्युक्त्वा रथं 'दुरूहइ' दूरोहति–आरोहति–स कृष्ण वासुदेवः पद्मनाभेन सह योद्धुं रथमारूढवान् इत्यर्थः । आरुह्य यत्रैव पद्मनाभो राजा तत्रैवो पागच्छति, उपागत्य 'सेयं' श्वेतं–गोक्षीरहारधवलं=गोदुग्धवत्–हारवच्च धवलं शुक्लं 'तणसोल्लियसिंदुवारकुंदेंदुसन्निगासं' 'तणसोल्लिया' मल्लिका अयं देशीयः शब्दः सिन्दुवारो=निर्गुण्डी, कुन्दं–कुन्दनाम्ना प्रसिद्धः श्वेतपुष्पविशेषः, इन्दुश्चन्द्रस्तद्वत् संनिकाशः–प्रभा यस्य स तं, नियबलस्स' निजकबलस्य स्वकीयसेनायाः 'हरिसजणणं' हर्षजननं-हर्षोत्पादकं, 'रिउसेण्ण विणासकरं' रिपुसैन्य विनाशकरं=शत्रुसैन्यबलहारकं पाञ्चजन्यं शङ्खं पाञ्चजन्यनामकं शङ्ख 'परामुसइ'परामृशति हस्ते गृह्णाति, परामृश्य 'मुहवायपूरियं करेइ' मुखवातपूरितं मुखवातेन ध्मातं करोति–वादयतीत्यर्थः । ततः खलु तस्य पद्मनाभस्य तेन शङ्खशब्देन 'बल-

स्त चिह्नध्वज पताका वाला बनाते–वह तुम्हें ऐसा नहीं बनाना–परन्तु ऐसा तुम लोगों का मन में धारा विचार सफली भूत नहीं हुआ अतः देवानुप्रियो ! अब देखो–मैं उसके साथ युद्धरत होता हूँ इसमें मैं ही जीतूंगा पद्मनाभ राजा नहीं । ऐसा कहकर वे कृष्णवासुदेव रथपर सवार हो गये । और सवार होकर वे वहां पहुँचे जहां पद्मनाभ राजा था । वहां पहुँच कर उन्हों ने अपने पांचजन्य श्वेतशंख को जो अपनी सेनाको हर्ष का जनक एवं शत्रु सेना का संहारक था एवं गोक्षीर तथा हार के जैसा धवल वर्णवाला था उठाया । इसकी प्रभा मल्लिका निर्गुंठी कुंदपुष्प एवं चन्द्रमाके जैसी उज्ज्वल थी ।(परामुसित्ता मुहवायपूरियं करेइ) उसे उठाकर उन्हों ने मुँह से बजाया–(तएणं तस्स पउमणाहस्स तेणं संखसद्देणं बलइभाए हय जाव पडिसेहिए) तब उस पद्मनाभ की सेना

તેની સાથે હુ હવે મેદાને પડું છું આમાં વિજય મને જ પ્રાપ્ત થશે, પદ્મનાભ રાજાને નહિ. આમ કહીને કૃષ્ણ-વાસુદેવ રથ ઉપર સવાર થઇ ગયા અને સવાર થઇને જ્યાં પદ્મનાભ રાજા હતો ત્યાં પહોંચ્યા ત્યાં પહોંચીને તેમણે પોતાના પાંચજન્ય સફેદ શંખને–કે જે તેમની સેના માટે હર્ષોત્પાદક તેમજ શત્રુઓની સેના માટે સંહાર રૂપ હતો તથા ગાયના દૂધ અને હારના જેવો સફેદ હતો–હાથમાં લીધો. તે શંખની કાંતિ મલ્લિકા નિર્ગુંઠી કુંદ પુષ્પ અને ચન્દ્ર જેવી હતી. (परामुसित्ता मुहवायपूरियं करेइ) લઈને તેમણે મુખથી વગાડયો. (तएणं तस्स पउमणाहस्स तेणं संखसद्देणं बलइभाए हय जाव पडिसेहिए) તે વખતે તે પદ્મનાભ રાજાની સેનાનો ત્રિભાગ શંખના

तिभाए हते ' बलत्रिभागो हतः-सैन्यस्य तृतीयांशो हतमथित यावत् दिशोदिशं प्रतिषेधित -प्रतिनिवृत्तः पलायित इत्यर्थः। ततस्तदनन्तरं खलु स कृष्णो वासुदेवो धनुः परामृशति गृह्णाति, परामृश्य ' वेढो ' वेष्टः वर्णकः धनुर्विषयकं वर्णनं जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तितो विज्ञेयमित्यर्थः, ' धणुं पूरेइ ' धनुः पूरयति धनुषि गुणमारोपयति पूरयित्वा धनुः शब्दं करोति ततः खलु तस्य पद्मनाभस्य द्वितीयवारं ' बलतिभाए ' बलत्रिभाग बलस्य सैन्यस्य तृतीयोभागस्तेन धनुः शब्देन ' हयमहिय पवरनिवडिय चिन्धद्धयपडागे ' हयमथितप्रवरनिपतितचिह्नध्वजपताको यावद्

का त्रिभाग उस शंख के शब्द से हत हो गया मथित हो गया यावत् एक दिशा से दूसरी दिशा की तरफ भाग गया। तएणं से कण्हे वासुदेवे धणुं परामुसइ, वेढोधणुं पूरेइ, पूरित्ता धणुसद्दं करेइ) इसके बाद कृष्ण वासुदेवने धनुष को उठाया। इस धनुष का वर्णन जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति में किया गया है। सो वहां से जानना चाहिये उठाकर उन्होंने उस पर ज्या का आरोपण किया फिर उसे चढाया-सो उससे शब्द हुआ (तएणं तस्स पउमनाभस्स दोच्चे बलइभाए तेणं धणुसद्देणं हयमहिय जाव पडिसेहिए, तएणं से पउमणाभे राया तिभागबलावसेसे अत्थामे अबले, अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जत्ति कट्टु सिग्घं तुरियं जेणेव अमरकंका तेणेव उवागच्छइ) तब उस पद्मनाभ राजा की सैन्य का तृतीयभाग उस धनुष के शब्द से हत हो गया, मथित हो गया, उस की प्रवर चिन्ह स्वरूप ध्वजापताकाएँ सब गिर गई यावत्

શબ્દથી જ હત થઈ ગયો, મથિત થઈ ગયો યાવત્ એક દિશા તરફથી બીજી દિશા તરફ નાશી ગયો. (तएणं से कण्हे वासुदेवे धणुं परामुसइ, वेढो धणुं पूरेइ, पूरित्ता धणुसद्दं करेइ) ત્યારપછી કૃષ્ણ-વાસુદેવે ધનુષ ઉઠાવ્યું આ ધનુષનું વર્ણન જંબૂદ્વીપ પ્રજ્ઞપ્તિમાં કરવામાં આવ્યું છે. જિજ્ઞાસુઓએ ત્યાંથી જાણી લેવું જોઈએ. ઉઠાવીને તેઓએ તેની ઉપર પ્રત્યંચા ચઢાવી. ત્યારપછી ધનુષને ચઢાવ્યુ અને તેનાથી શબ્દ થયો—

(तएणं तस्स पउमनाभस्स दोच्चे बलइभाए तेणं धणुसद्देणं हयमहिय जाव पडिसेहिए, तएणं से पउमणाभे राया तिभागबलावसेसे अत्थामे अबले, अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जत्ति कट्टु सिग्घं तुरियं जेणेव अमरकंका तेणेव उवागच्छइ)

તે પદ્મનાભ રાજાની સેનાનો ત્રીજો ભાગ તે ધનુષના શબ્દથી જ હત થઈ ગયો, મથિત થઈ ગયો, તેની પ્રવર ચિહ્ન-સ્વરૂપ ધ્વજા પતાકાઓ બધી પડી

दिशो दिशं प्रतिषेधितः, ततः खलु स पद्मनाभो राजा 'तिभागबलावसेसे' त्रिभागबलावशेषः तृतीयांशावशिष्टसैन्यवान् सन् अस्थामा, अबलः, अवीर्यः, अस्थामेत्यादि प्राग्व्याख्यातम् अपुरुषकारपराक्रमः-पौरुषपराक्रमरहितः, अधारणीयः-प्राणान् धारायितुमशक्तः, इति कृत्वा=इति विचार्य शीघ्रं त्वरितं यत्रैवा मरकंका तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य अमरकंकां राजधानीमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य द्वाराणि 'पिहेइ' पिधत्ते, रोधसज्जः=दुर्गं निरुध्य तिष्ठति, ततः खलु स कृष्णो

वह एकदिशा से दूसरी दिशा में भाग गया अथवा भागने में असमर्थ बन गया। इस के बाद तृतीयांशावशिष्ट सेना वाला होकर वह पद्मनाभराजा बल रहित हो गया, पर्याप्त सैन्य रहित हो गया एवं अन्तरिक शक्ति-उत्साह हीन हो गया। अतः वह पौरुष पराक्रम से रहित होने के कारण रणभूमि में ठहरने के योग्य नहीं रहा। अथवा प्राणों को धारण करने में भी असमर्थ बन गया। इसलिये वह वहां से शीघ्र बड़ी उतावली से जहां अमरकंको नगरी थी वहां आ गया। (उवागच्छित्ता अमरकंकं रायहाणिं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता दाराइं पिहेइ पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे, जेणेव अमरकंका तेणेव उवागच्छइ) वहां आकर वह अमरकंका राजधानी में गया। जाकर उसने दरवाजोंको बंद करवा दिया। बंद करवाकर फिर वह अपने दुर्ग (किल्ला) की रक्षा करता हुआ वहां ठहरा। इसके बादकृष्णवासुदेव

ગઈ યાવત્ તે સેનાનો ભાગ એક દિશા તરફથી બીજીદિશા તરફ નાશી ગયો. અથવા તો તે નાશી જવામાં પણ અસમર્થ થઇ ગયો. ત્યારપછી ત્રીજા ભાગ જેટલી સેના જ જેની પાસે રહી છે એવો તે પદ્મનાભ રાજા સાવ નિર્બળ થઈ ગયો, પર્યાપ્ત સૈન્ય રહિત થઈ ગયો અને આંતરિક શક્તિ-ઉત્સાહ રહિત થઇ ગયો. તે પૌરૂષ પરાક્રમ વગરનો થઈ તે રણભૂમિમાં ટકી શકે તેમ પણ રહ્યો નહિ અથવા તો તે પ્રાણોને ધારણ કરવામાં પણ અસમર્થ થઇ ગયો. એથી તે સત્વરે જ્યાં અમરકંકા નગરી હતી ત્યાં આવી ગયો.

(उवागच्छित्ता अमरकंकं रायहाणिं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता-दाराइं पिहेइ, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे, जेणेव अमरकंका तेणेव उवागच्छइ)

ત્યાં આવીને તે અમરકંકા રાજધાનીમાં ગયો, ત્યાં જઇને તેણે દરવાજાઓને બંધ કરાવી દીધા. બંધ કરાવીને તે પોતાના દુર્ગની રક્ષા કરતાં ત્યાંજ રોકાયો. ત્યારપછી કૃષ્ણ-વાસુદેવ જ્યાં તે અમરકંકા નામે નગરી હતી ત્યાં

वासुदेवो यत्रैवामरकङ्का तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य रथं स्थापयति, रथात् प्रत्यवरोहति प्रत्यवरुह्य, 'वेउव्वियसमुग्घाएणं' वैक्रियसमुद्घातेन वैक्रियशरीरं निर्मातुमात्मप्रदेशानां बहिर्निःसारणेन खलु 'समोहणइ' समुद्घातं करोति समुद्धन्ति एकं महत् 'णरसीहरूवं' नरसिंहरूपं 'विउव्वइ' विकुर्वते दिव्यसामर्थ्येन करोति विकुर्व्य महता २ शब्देन 'पाददद्दरयं' पाददर्दरकं=भूमौ चरणाघातं करोति, ततः खलु स कृष्णेन वासुदेवेन महता २ शब्देन पाददर्दरकेण=भूमौ चरणाघातेन कृतेन सता अमरकङ्काराजधानी 'संभग्गपागारगोपुराट्टालयचरियतोरणपल्हत्थियपवरभवणसिरिघरा' सम्भग्नप्राकारगोपुराट्टालकचरिकातोरणपर्यस्तितप्रवरभवनश्रीगृहा=तत्र संभग्नानि-प्राकारश्च गोपुराणि च अट्टालकाश्च चरिका

जहां वह अमरकंका थी वहां गये (उवा०) वहां जाकर के (रहं ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ) उन्होंने अपने रथको खड़ा किया-खड़ा करके फिर वे उससे नीचे उतरे। नीचे उतर कर वैक्रिय समुद्घात किया। वैक्रियशरीरको निर्माण करने के लिये जो आत्मप्रदेशों का बाहिर निकालना होता है-उसका नम वैक्रिय समुद्घात है। (एगं महं णरसिहरूवं विउव्वइ विउव्वित्ता महया २ सद्देणं पाददद्दरएणं कएणं समाणेणं अमरकंका रायहाणी संभग्ग पागारगोपुराट्टालचरियतोरणं पल्हत्थियपवरभवणसिरिघरा सरस्सरस्स धरणियले संन्निवइया) इस समुद्घातके द्वरा उन्होंने एक विशाल काय नरसिंहरूप की विकुर्वणा की नरसिंहरूप की विकुर्वणा करके अपनी भयंकर गर्जना से भूमि पर चरणों द्वारा आघात किया। इस तरह गर्जना पूर्वक किये गये चरणाघात से अमरकंका राजधानी की

ગયા. (उवा०) त्यां જઈને (रहं ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ) તેમણે પોતાના રથને ઊભો રાખ્યો, ઊભો રાખીને તેઓ તેમાંથી નીચે ઉતર્યા. નીચે ઉતરીને તેમણે વૈક્રિય સમુદ્ઘાત કર્યો. વૈક્રિય શરીરને બનાવવા માટે જે આત્મપ્રદેશોને બહાર કાઢવામાં આવે છે તે વૈક્રિય સમુદ્ઘાત કહેવાય છે.

(एगं महं णरसिहरूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता महया २ सद्देणं पाददद्दरएणं कएणं समाणेणं अमरकंका रायहाणी संभग्गपागारगोपुराट्टालयचरियतोरणं पल्हत्थियपवरभवणसिरिधरा सरस्सरस्स धरणियले संन्निवइया)

આ સમુદ્ઘાત વડે તેમણે એક વિશાળ કાય નરસિંહ રૂપની વિકુર્વણા કરી. નરસિંહ રૂપની વિકુર્વણા કરીને પોતાની ભયંકર ગર્જનાથી ભૂમિ ઉપર ચરણોનો આઘાત કર્યો. આ રીતે ગર્જનાપૂર્વક કરાયેલા ચરણાઘાતથી અમર-

च तोरणानि च यस्यां सा तथा, तत्र गोपुराणि-प्रतोल्यः अट्टालकाः-प्राकारोपरिस्थान् विशेषाः, चरिका-नगरप्राकारान्तरेऽष्टहस्तोमार्गः। तथा-पर्यस्तितानि-सर्वतः क्षिप्तानि प्रवरभवनानि श्रीगृहाणि-भण्डागाराणि कोशागाराणि च यस्यां सा तथा, ततो द्विपदः कर्मधारयः। कृष्णवासुदेवेन भूमौ चरणाघातशब्देन अमरकंकाराजधान्याः प्राकारगोपुरादिकं विध्वंसितमित्यर्थः, तथा-'सरस्सरस्स' अनुकरणशब्दोऽयम् निपतनक्रियाविशेषणं धरणितले संनिपतिता=अमरकंका राजधानी सरस्सरस्सेति शब्दं कुर्वाणा भूमौ पतितेत्यर्थः। ततः खलु स पद्मनाभो राजा अमरकंकां राजधानीं संभग्नप्राकारादिकां यावत्-धरणितले संनिपतितां दृष्ट्वा भीतः त्रस्तः, उद्विग्नः, संजातभयः, द्रौपद्या देव्या शरणमुपैति प्राप्नोति, ततः खलु सा द्रौपदी देवी पद्मनाभं राजानमेवमवादीत्-किं खलु त्वं हे देवानुप्रिय! न जानासि कृष्णस्य वासुदेवस्योत्तमपुरुषस्य विप्रियं कुर्वन् मामिह अत्र

गलियों को अटारियों को, चरिकाओं को, श्री गृहों को कोशागारों को श्री कृष्ण ने ध्वंस करदिया। तथा वह अमरकंका राजधानी भी सरसर शब्द करती हुई उस गर्जना पूर्वक किये गये चरणाघात से जमीन पर गिर पड़ी। (तएणं से पउमणाभे राया, अमरकंका रायहाणिं संभग्ग-जाव पासित्ता, भीए दोवईए देवीए सरणं उवेइ) तब पद्मनाभ राजा अमरकंका राजधानी को प्राकार गोपुर आदि की ध्वस्त अवस्थावाली देखकर अत्यंत भीत हुआ त्रस्त हुआ, उद्विग्न हुआ। और संजात-भय संपन्न होकर द्रौपदी देवी की शरण में पहुँचा। (तएणं सा दोवई देवी, पउमनाभं रायं एवं वयासी) तब उस द्रौपदी देवी ने पद्मनाभ राजा से इस प्रकार कहा-(किण्णं तुमं देवाणुप्पिया! न जाणासि कण्ह-

---

કંકા રાજધાનીની શેરીઓને, અટારીઓને, ચરિકાઓને, શ્રીગૃહોને, કોશા-ગારોને શ્રીકૃષ્ણે નષ્ટ કરી નાખ્યા તેમજ તે અમરકંકા રાજધાની પણ સરસર શબ્દ કરતી ગર્જનાપૂર્વક કરવામાં આવેલા ચરણાઘાતથી જમીનદોસ્ત થઈ ગઈ.

(तएणं से पउमणाभे राया, अमरकंका रायहाणिं संभग्ग जाव पासित्ता, भीए दोवईए देवीए सरणं उवेइ)

પદ્મનાભ રાજા અમરકંકા રાજધાનીના પ્રાકાર, ગોપુર વગેરેનો વિનાશ જોઈને ખૂબ જ ભયભીત થઈ ગયો, ત્રસ્ત થઈ ગયો તેમજ ઉદ્વિગ્ન થઈ ગયો અને સંજાતભય સંપન્ન થઈને દ્રૌપદી દેવીની શરણે પહોંચ્યો. (तएणं सा दोवई देवी पउमनाभं रायं एवं वयासी) ત્યારે તે દ્રૌપદી દેવીએ પદ્મનાભ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

हव्वं-शीघ्रम् आनयसि-आनीतवानसि तत्-तस्मात्-' एवमवि गए ' एवमपि गते-इत्थंममापहरणे कृतेऽपि, गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिय ! स्नातः ' उल्लपडसाडए ' आर्द्रपट्टसाटकः स्नानेनाऽऽर्द्रीकृतोत्तरीयपरिधानवस्त्रधारी ' अवचूलगवत्थणियत्थे ' अवचूलकवस्त्रणियत्थः=अवचूलकम्-अधोमुखं नीचैर्लम्बमानं चूलं-वस्त्राञ्चलं-वस्त्रप्रान्तं यथा भवति तथा ' णियत्थं' परिहितं वस्त्रं येन स तथा-स्त्रीणां परिधानमिव चरणपर्यन्तलम्बितवस्त्रान्तं यथास्यात्तथा परिहितवस्त्र इत्यर्थः । ' अंतेउरपरियालसंपरिवुडे ' अन्तःपुरपरिवारसंपरिवृतः=स्त्री परिवारेण सहितः, ' अग्गाइं ' अग्र्याणि वराणि रत्नानि गृहीत्वा मां पुरतः ' काउं ' कृत्वा कृष्णं

स्स वा सुदेवस्स उत्तमपुरिसस्स विप्पियं करेमाणे ममं इह हव्वमाणेसि) हे देवानुप्रिय ! क्या तुम उत्तम पुरुष कृष्णवासुदेव को नहीं जानते हो जो उनको अनिष्ट कर तुम मुझे यहां ले आये हो । (तं एवमविगए गच्छहणं तुमं देवाणुप्पिया ! ण्हाए उल्लपडसाडए अवचूलगवत्थणियत्थे अंतेउरपरियालसंपरिवुडे, अग्गाइं वराइं रयणाइं गहाय, ममं पुरओ, काउं कण्हं वासुदेवं करयलपायपडिए सरणं उवेहि) खैर अब इस बात को जाने दो-हे देवानुप्रिय ! तुम स्नान करो, और गीले वस्त्र पहिने हुए ही श्री कृष्णवासुदेव की शरण में जाओ । जाते समय तुम स्त्रीयों के परिधान के समान चरण पर्यन्त लटकते हुए वस्त्र पहिनकर जाना । अकेले मत जाना किन्तु अपने अंतःपुर की समस्त स्त्रियों को साथ में ले जाना । रीते हाथ भी मत जाना किन्तु भेट निमित्त बेश कीमती रत्नों को लेकर और मुझे आगे करके चलना ।

(किण्णं तुमं देवाणुप्पिया ! न जाणासि कण्हस्स वासुदेवस्स उत्तमपुरिसस्स विप्पियं करेमाणे ममं इह हव्वमाणेसि)

હે દેવાનુપ્રિય ! શું તમે ઉત્તમ પુરૂષ કૃષ્ણ-વાસુદેવને ઓળખતા નથી. મને અહીં લાવીને તમે તેમનું જ અનિષ્ટ કર્યું છે.

(तं एवमविगए गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! ण्हाए उल्लपडसाडए अवचूलगवत्थणियत्थे अंतेउरपरियालसंपरिवुडे, अग्गाइं वराइं रयणाइं गहाय, ममं पुरतो, काउं कण्हं वासुदेवं करयलपायपडिए सरणं उवेहि)

ખેર, છોડો એ વાતને. હે દેવાનુપ્રિય ! તમે હવે સ્નાન કરો અને ભીના વસ્ત્રોથી જ શ્રીકૃષ્ણ વાસુદેવની શરણમાં જાઓ. જતી વખતે તમે સ્ત્રીઓના પરિધાન (ચણિયા) ની જેમજ પગ સુધી લટકતા વસ્ત્રો પહેરજો. તમે એકલા જતા નહિ પરંતુ રણવાસની બધી સ્ત્રીઓને સાથે લઈને જજો. તમે ખાલી હાથે તેમની પાસે જતા નહિ પણ કંઈક ભેટ સ્વરૂપ કિંમતી વસ્ત્રોને લઈને

वासुदेवं 'करयलपायपडिए' करतलपादपतितः–संयोजितकरतलद्वयः, पादयोः पतितः सन् शरणं उपैहि–त्रायस्वमामितिवदन् उपगतो भवेरित्यर्थः। हे देवानुप्रिय! 'पणिवइयवच्छला' प्रणिपतितवत्सला–चरणोपरिनिपतितानां वत्सलाः स्नेहवन्तः खलु उत्तमपुरुषाः भवन्ति प्रणाममात्रेण महापुरुषाः प्रसीदन्तीत्यर्थः। ततस्तदनन्तरं स पद्मनाभो राजा द्रौपद्या देव्या एतमर्थं=उक्तकथनरूपमर्थं प्रतिशृणोति–स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य स्नातो यावत् शरणमुपैति द्रौपदीवचनमनुसृत्य पद्मनाभो राजा कृष्णवासुदेवस्य शरणमुपगत इत्यर्थः। उपेत्य करतलपरिगृहीत-दशनखं शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीद्=दृष्टा

वहां पहुँच कर तुम दोनों हाथ जोड़ कर उनके चरणों में गिर जाना (पणिवइयवच्छला णं देवाणुप्पिया उत्तमपुरिसा तएणं से पउमनाभे दोवईए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता ण्हाए जाव सरण उवेइ, उवित्ता, करयल०एवं वयासी दिट्ठाणं देवाणुप्पियाणं इड्ढी, जाव परक्कमे तं खामेमि णं देवाणुप्पिया।) हे देवाणुप्रिय! उत्तम पुरुष जो हुआ करते हैं वे प्रणिपतितवत्सल हुआ करते हैं–प्रणाममात्रसे महापुरुष प्रसन्न हो जाया करते हैं–अर्थात् नमन करनेवालेको वे नहीं मारते तब पद्मनाभ राजाने द्रौपदी देवीके इस शिक्षाप्रद कथनरूप अर्थको स्वीकार कर लिया। स्वीकार कर बादमें उसने स्नान किया, यावत् वह द्रौपदीके कहे अनुसार कृष्णवासुदेव की शरणमें पहुंच गया। शरण में पहुँच कर उसने अपने दोनों हाथों को जोडकर अंजलि बनाई और आदक्षिण प्रदक्षिण करके उसे शिरपर रक्खा। फिर इस प्रकार बोला–आप देवानुप्रियकी मैंने ऋद्धि

તેમજ મને આગળ રાખીને ચાલજો. ત્યાં પહોંચીને તમે બંને હાથ જોડીને તેમના પગે પડજો.

(पणिवइय वच्छलाणं देवाणुप्पियो उत्तमपुरिसा, तएणं से पउमनाभे दोवइए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता ण्हाए जाव सरणं उवेइ, उवित्ता करयल० एव वयासी, दिट्ठा णं देवाणुप्पियाणं इड्ढी जाव परक्कमे तं खामेमि णं देवाणुप्पिया!)

હે દેવાનુપ્રિય! ઉત્તમ પુરુષો તેમની સામે વિનમ્ર થયેલા માણુસો પ્રત્યે એકદમ વત્સલ થઈ જાય છે. ફક્ત નમસ્કાર કરવાથીજ તેઓ પ્રસન્ન થઈ જાય છે. આ બધું સાંભળીને પદ્મનાભ રાજાએ દ્રૌપદીના આ શિક્ષાપ્રદ કથન રૂપ અર્થને સ્વીકારી લીધો. સ્વીકાર કરીને તેણે સ્નાન કર્યું યાવત્ તે દ્રૌપદીના કહ્યા મુજબ જ કૃષ્ણ–વાસુદેવની શરણુમાં ગયો. શરણુમાં જઇને તેણે પોતાના બંને હાથ જોડીને અંજલિ બનાવી અને આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણા કરીને તેના માથા ઉપર મૂકી અને ત્યારબાદ તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો. કે–હેવાનુપ્રિય! તમારી

खलु देवानुप्रियाणाम् ऋद्धिर्यावत् पराक्रमः-तत्=तस्मात् क्षमयामि खलु हे देवानुप्रियाः ! यावत् क्षमन्तु खलु यावत् नाहं भूयो भूयः एवं करणतया=पुनरेवं न करिष्यामि, इति कृत्वा-इत्युक्त्वा-'पंजलिवुडे' प्राञ्जलिपुटः-संयोजित-करतलद्वयः पादपतितः कृष्णस्य वासुदेवस्य द्रौपदीं 'साहत्थि' स्वहस्तेन, उपनयति। ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः पद्मनाभमेवमवादीत्-हं भोः ! पद्मनाभ ! अप्रार्थितप्रार्थित !=हे मरणवाञ्छक ! ४ किं खलु त्वं न जानासि मम भगिनीं द्रौपदीं देवीमिहहव्यमानयन्, 'त' तत्-तस्मात् 'एवमवि गए' एवमपिगते अनेनप्रकारेण शरणं प्राप्ते सति, नास्ति ते तव मद्भयमिदानीमिति कृत्वा प्रतिविसर्जयति। प्रतिविसृज्य द्रौपदीं देवीं गृह्णाति, गृहीत्वा रथं दूरोहति=आरोहयति

देखली, यावत् पराक्रम देख लिया। हे देवानुप्रिय ! मैं अपने अपराध की क्षमा मांगता हूँ। (जाव खमंतु) यावत् आप मुझे क्षमा दें। (णं जाव णा हं भुज्जो २ एवं करणाए) अब मैं पुनः ऐसा नहीं करूंगा। (त्ति कट्टु पंजलिवुडे पायवडिए कण्हस्स वासुदेवस्स दोवइं देविं साहत्थि उवणेइ) इस प्रकार कहकर वह दोनों हाथ जोड उन कृष्णवासुदेव के पैरों पर गिर पड़ा और अपने हाथ से ही उसने फिर उनके लिये द्रौपदी सौंपदी। (तएणं से कण्हे वासुदेवे पउमणाभं एवं वयासी-हं भो ! पउमणाभा ! अपत्थियपत्थिया ४ किण्णं तुमं ण जाणासि मम भगिणि दोवइं देविं इह हव्व माणमाणे तं एवमविगए, णत्थि ते ममाहिंतो इयाणिं भयमत्थि त्ति कट्टु पउमणाभं पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जित्ता दोवइं देविं गिण्हइ, गिण्हित्ता रहं दुरूहेइ, दुरूहित्ता जेणेव

મેં ઋદ્ધિ જોઇ લીધી છે, યાવત્ તમારૂ પરાક્રમ પણ મેં જોઈ લીધું છે. હે દેવાનુપ્રિય ! હું મારા અપરાધ બદલ ક્ષમા માંગુ છું (जाव खमंतु) યાવત્ તમે મને ક્ષમા કરો. (णं जाव णाहं भुज्जो २ एवं करणाए) હવે ફરી હું આવું કદાપિ નહિ કરૂ (त्ति कट्टु पंजलिवुडे पायवडिए कण्हस्स वासुदेवस्स दोवइं देविं साहत्थिं उवणेइ) આ પ્રમાણે કહીને તે બંને હાથ જોડીને કૃષ્ણ-વાસુદેવના પગોમાં આળોટી ગયો અને ત્યારપછી તેણે પોતાના હાથથીજ દ્રૌપદી તેમને સોંપી દીધી.

(तएणं से कण्हे वासुदेवे पउमणाभं एवं वयासी-हं भो ! पउमणाभा ! अपत्थियपत्थिया ४ किण्णं तुमं ण जाणासि मम भगिणिं दोवइं देविं इह, हव्वमाणमाणे त एवमपि गए, णत्थि ते ममाहिंतो इयाणिं भयमत्थि त्तिकट्टु पउमणाभं पडिविसज्जेइ पडिविसज्जित्ता दोवइं देविं गिण्हइ, गिण्हित्ता रहं दुरुहेइ,

आरोह्य यत्रैव पञ्च पाण्डवास्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पञ्चानां पाण्डवानां द्रौपदीं देवीं 'साहत्थि' स्वहस्तेन, उपनयति=ददाति । ततः खलु स कृष्णः पञ्चभिः पाण्डवैः सार्धमात्मषष्ठः षड्भीरथैर्लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन यत्रैव जम्बूद्वीपो द्वीपः, यत्रैव भारतं वर्षं तत्रैव माधारयद् गमनाय=गन्तुं प्रवृत्तः ॥ सू० २९॥

पंच पंडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंचण्हं पंडवाणं दोवइं देविं साहत्थिं उवणेइ) तब कृष्णवासुदेव ने पद्मनाभ से इस प्रकार कहा अरे ओ पद्मनाभ ! तुम इस तरह से अकाल में ही मरण के अभिलाषी क्यों बने ४क्यातुझे यह पता नहीं था कि द्रौपदी मेरी बहिन है । क्यों तू इस को यहां ले आया ! खैर-जब तू इस रूप में मेरी शरण में आचुका है-तो अब तुझे किसी भी प्रकार का मेरी तरफ से भय नहीं रहा-ऐसा कहकर कृष्णवासुदेव ने उसे विसर्जित कर दिया-अपने स्थान पर उसे जाने की आज्ञा देदी-। बाद में द्रौपदी को साथ में लिया और लेकर वे रथ पर आरूढ हुए। आरूढ होकर फिर वे, वहां आये-जहां पांचों पांडव थे वहां आकर उन्हों ने द्रौपदी को अपने हाथों से पांचो पांडवों के सुपुर्द कर दिया। (तएणं कण्हे पंचेहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं जेणेव जंबूदीवे दीवे जेणेव भारहे वासे तेणेव पहारेत्थ गमणाए) इसके बाद वे कृष्णवासुदेव पांचों पांडवों के साथ आत्मषष्ठ होकर छहों रथों को ले लवण समुद्र से बीचों

दुरुहित्ता जेणेव पंच पंडवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पंचण्हं पंडवाणं दोवइं देविं साहत्थिं उवणेइ)

ત્યારે કૃષ્ણુ-વાસુદેવે પદ્મનાભને આ પ્રમાણે કહ્યું કે અરે ઓ ! પદ્મનાભ ! તમે આ પ્રમાણે અસમયમાં જ મરણના અભિલાષી કેમ બની ગયા છો४, શું તમને ખબર નહોતી કે દ્રૌપદી મારી બહેન છે તું એને અહીં શા માટે લઈ આવ્યો ? ખેર, તું જ્યારે આ સ્થિતિમાં મારી પાસે આવ્યો છે તો હવે તારે મારા તરફથી કોઈ પણ જાતનો ભય રાખવો જોઈએ નહિ. આમ કહીને કૃષ્ણ વાસુદેવે તેને વિદાય કર્યો ત્યારપછી દ્રૌપદીને સાથે લઈને તેઓ રથ ઉપર સવાર થયા. સવાર થઈને તેઓ જ્યાં પાંચે પાંડવો હતા ત્યાં આવ્યા. ત્યાં આવીને તેમણે પોતાના હાથથી દ્રૌપદીને પાંચે પાંડવોને સોંપી દીધી.

(तएणं से कण्हे पंचेहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्प छट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं जेणेव जंबूदीवे दीवे जेणेव भारहेवासे तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

ત્યારબાદ તે કૃષ્ણુ-વાસુદેવ પાંચે પાંડવોની સાથે આત્મષષ્ઠ થઈને છએ

मूलम्-तेणं कालेणं तेणं समएणं धायइसंडे दीवे पुरत्थिमिद्धे भारहे वासे चंपा णामं णयरी होत्था, पुण्णभद्दे चेइए, तत्थ णं चंपाए नयरीए कविले णामं वासुदेवे राया होत्था, महिया हिमवंत० वण्णओ, तेणं कालेणं तेणं समएणं मुणिसुव्वए अरहा चंपाए पुण्णभद्दे समोसढे, कपिले वासुदेवे धम्मं सुणेइ तएणं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयस्स अरहओ धम्मं सुणेमाणे कण्हस्स वासुदेवस्स संखसद्दं सुणेइ, तएणं तस्स कविलस्स वासुदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था - किं मण्णे धायइसंडे दीवे भारहे वासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पण्णे ? जस्स णं अयं संखसद्दे ममंपिव मुहवायपूरिए वीयं भवइ, तएणं मुणिसुव्वए अरहा कविलं वासुदेवं एवं वयासी-से णूणं ते कविला वासुदेवा ! मम अंतिए धम्मं णिसामेमाणस्स संखसद्दं आकण्णित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए किं मन्ने जाव वीयं भवइ, से णूणं कविला वासुदेवा ! अयमट्ठे समट्ठे ? हंता ! अत्थि, नो कविला ! एवं भूयं वा३ जन्नं एगे खेत्ते एगे जुगे समए दुवे अरहंता वा चक्कवट्टी वा बलदेवा वा वासुदेवा वा उप्पज्जिंसु उप्पज्जिंति उप्पज्जिस्संति वा, एवं खलु वासुदेवा ! जंबूद्दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउरणयराओ पंडुस्स रण्णो पुव्व-

---

बीच हो जहां जंबूद्वीप नाम का द्वीप, जहां भरतक्षेत्र नाम का क्षेत्र था उस ओर चल दिये ॥ सू०२९ ॥

રથોને લઈને લવણ સમુદ્રની વચ્ચે થઈને જ્યાં જંબૂદ્વીપ નામે દ્વીપ, અને તેમાં પણ જ્યાં ભારતવર્ષ નામે ક્ષેત્ર હતું તે તરફ રવાના થયા. ॥ સૂત્ર ૨૯ ॥

संगइएणं देवेणं अमरकंकाणयरिं साहरिया, तएणं से कण्हे वासुदेवे पंचहि पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहि अमरकंकं रायहाणिं दोवईए देवीए कूवं हव्वमागए, तएणं तस्स कण्हस्स वासुदेवस्स पउमणाभेणं रण्णा सद्धिं संगामे संगामेमाणस्स अयं संखसद्दे तव मुहवाया० इव वीइं भवइ, तएणं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयं वंदइ२ एवं वयासी–गच्छामि णं अहं भंते ! कण्हे वासुदेवे उत्तमपुरिसं सरिसपुरिसं पासामि, तएणं मुणिसुव्वए अरहा कविले वासुदेवे एवं वयासी – नो खलु देवाणुप्पिया ! एवं भूयं वा३ जण्णं अरहंतो वा अरहंतं पासइ चक्कवट्टी वा चक्कवट्टिं पासइ बलदेवा वा बलदेवं पासइ वासुदेवो वा वासुदेवं पासइ, तहविय णं तुमं कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुदं मज्झंमज्झेणं वीइवयमाणस्स सेयापीयाइं धयग्गाइं पासिहिसि, तएणं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता हत्थिखंधं दुरूहइ दुरुहित्ता सिग्घं२ जेणेव वेलाउले तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीइवयमाणस्स सेयापीयाइं धयग्गाइं पासइ पासित्ता एवं वयइ-एसणं मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं वीइवयइत्तिकट्टु पंचजन्नं संखं परामुसइ परामुसित्ता मुहवायपूरियं करेइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे कविलस्स वासुदेवस्स संखसद्दं आयन्नेइ आयन्नित्ता पंचजन्नं जाव पूरियं करेइ, तएणं दोवि वासुदेवा संखसद्दसा-

मायारिं करेइ, तएणं से कविले वासुदेवे जेणेव अमरकंका तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अमरकंकं रायहाणिं संभग्गतोरणं जाव पासइ पासित्ता पउमणाभं एवं वयासी-किन्नं देवाणुप्पिया! एसा अमरकंका संभग्ग जाव सन्निवइया ?, तएणं से पउमणाहे कविलं वासुदेवं एवं वयासी-एवं खलु सामी! जंबूदीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इहं हव्वमागम्म कण्हेणं वासुदेवेणं तुब्भे परिभूए अमरकंका जाव सन्निवाडिया, तएणं से कविले वासुदेवे पउमणाहस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा पउमणाहं एवं वयासी हं भो! पउमणाभा! अपत्थियपत्थिया किन्नं तुमं न जाणसि मम सरिसपुरिसस्स कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणे ?, आसुरुत्ते जाव पउमणाहं णिव्विसयं आणवेइ, पउमणाहस्स पुत्ते अमरकंका रायहाणीए महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचइ जाव पडिगए ॥ सू० ३० ॥

टीका—'तेणं कालेणं' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये धातकीषण्डे द्वीपे पौरस्त्यार्धे भारते वर्षे चम्पा नाम नगरी आसीत्। तस्या बहिर्भागे पूर्णभद्रं नाम चैत्यम्=उद्यानम्, आसीत्। तत्र=तस्यां खलु चम्पानगर्यां

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस कालमें और उस समयमें (धायइसंडे दीवे, पुरत्थिमद्धे भारहेवासे चंपा णामं णयरी होत्था, पुण्णभद्दे चेइए) धातकी षड द्वीप मे पूर्व दिग्भागवर्ती भरत क्षेत्र में चंपा

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાળે અને તે સમયે (धायइ संडे दीवे, पुरत्थिमद्धे भारहेवासे चंपा णामं णयरी होत्था, पुण्णभद्दे चेइए) ધાતકી ષંડદ્વીપમાં પૂર્વ દિગ્ભાગવર્તી ભરતક્ષેત્રમાં ચંપા નગરી હતી, તેમાં પૂર્ણભદ્ર નામે ઉદ્યાન હતું.

'कविले णामं' कपिलो नाम वासुदेवो राजाऽऽसीत् 'महया हिमवंत०' वण्णओ' महाहिमवानित्यादि वर्णकः=वर्णनं पूर्वोक्तवद् बोध्यम्।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये मुनिसुव्रतोऽर्हन् चम्पायां नगर्यां पूर्णभद्रे नाम्नि चैत्ये समवसृतः। तस्य समीपे कपिलो नाम वासुदेवो धर्मं शृणोति। ततः खलु स कपिलो वासुदेवः मुनिसुव्रतस्यार्हतोऽन्तिके धर्मं शृण्वन् कृष्णस्य वासुदेवस्य शङ्खशब्दं शृणोति ततः खलु तस्य कपिलस्य वासुदेवस्य अयमेतद्रूपः= वक्ष्यमाणस्वरूपः, 'अज्झत्थिए' आध्यात्मिकः=आत्मगतः संकल्पो=विचारः, यावद् समुदपद्यत-किम्-अन्यो धातकीषण्डे द्वीपे भारते वर्षे द्वितीयो वासुदेवः

नामकी नगरी थी। उसमें पूर्णभद्र नाम का उद्यान था। (तत्थणं चंपाए नयरीए कपिले नाम वासुदेवे राया होत्था, महया हिमवंत वण्णओ तेणं कालेणं तेणं समएणं मुणिसुव्वए अरहा, चंपाए पुण्णभद्दे समोसढे) उस चंपानगरीमें कपिल नाम के वासुदेव राज्य करते थे। ये महा हिमवान् पर्वत जैसे गुणोंसे पूर्ण थे। पहिले जैसा वर्णन राजाओंका भिन्न २ जगह किया गया है वैसा ही वर्णन इसका भी जानना चाहिये। उस काल और उस समय में मुनि सुव्रत तीर्थंकर चंपा नगरी में इस पूर्णभद्र उद्यान में आये हुए थे (कविले वासुदेवे धम्मं सुणेइ, तएणं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयस्स अरहाओ धम्मं सुणेमाणे कण्हस्स वासुदेवस्स संखसद्दं सुणेइ, तएणं तस्स कविलस्स वासुदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था-किं मण्णे धायइसंडे दीवे भारहे वासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पण्णे? जस्स णं अयं संखसद्दे ममंपिव मुहवायपूरिए वीयं

(तत्थ णं चंपाए नयरीए कपिले नाम वासुदेवे राया होत्था, महया हिमवंत वण्णओ, तेणं कालेणं तेणं समएणं मुणिसुव्वए अरहा, चंपाए पुण्णभद्दे समोसढे)

તે ચંપા નગરીમાં કપિલ નામે વાસુદેવ રાજ કરતા હતા. તેઓ મહા હિમવાન વગેરે જેવા બળવાન હતા. પહેલા જુદા જુદા રાજાઓનું જે પ્રમાણે વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે તે પ્રમાણે આ રાજાનુ પણ વર્ણન જાણી લેવું જોઈએ તે કાળે અને તે સમયે મુનિસુવ્રત તીર્થંકર ચંપા નગરીમાં તે પૂર્ણ-ભદ્ર ઉદ્યાનમા પધાર્યા હતા.

(कविले वासुदेवे धम्मं सुणेइ, तएणं से कविले वासुदेवे मुणि सुव्वयस्स अरहाओ धम्मं सुणमाणे, कण्हस्स वासुदेवस्स संखसद्दं सुणेइ, तए णं तस्स कविलस्स वासुदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था-किं मण्णे धायइसंडे दीवे भारहेवासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पण्णे? जस्स णं अय संखसद्दे ममं पिव मुहवायपूरिए वीयं भवइ)

समुत्पन्नः ? यस्य वासुदेवस्य खलु अयं शङ्खशब्दो ममेव मुखवातपूरितः–मद्वादितशङ्खध्वनिरिवेत्यर्थः, ' वीयं भवइ ' द्वितीयो भवति । ततः खलु मुनिसुव्रतोऽर्हन् कपिलं वासुदेवम् एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्–' से णूणं इत्यादि—' से ' नूनं ते तव हे कपिल वासुदेव ! ममान्तिके धर्मं 'णिसामेमाणस्स' निशामयतः=शृण्वतः, शङ्खशब्दम् ' आकण्णित्ता ' आकर्ण्य=श्रुत्वा ' इमेयारूवे ' अयमेतद्रूपः आध्यात्मिकः संकल्पो विचारः समुदपद्यत–किमन्यो वासुदेवः समुत्पन्नः, यस्यायं शङ्खशब्दो यावद् द्वितीयो भवति ' से ' अथ नूनं हे कपिलवासुदेव ! अयमर्थः समर्थः=किं सत्यः ?, कपिल वासुदेवः प्राह–हंता ! अत्थि इति हन्त ! हे प्रभो ! अयमर्थः सत्योऽस्ति । मुनिसुव्रतो भगवानाह–हे कपिल वासुदेव ! नो खलु एवम्=ईदृशं, ' भूयं वा ' भूतं वा=अतीतं वा, भवद् वा=वर्तमानं वा भविष्यद् वा अनागतं वा कालत्रयेऽप्येवं न भवतीत्यर्थः, ' जन्नं ' यत् खलु एकस्मिन् क्षेत्रे, एक-

---

भवइ) उनके पास वे कपिल वासुदेव धर्मका उपदेश सुन रहे थे । सो उस कपिल वासुदेवने मुनि सुव्रतप्रभुके पास धर्मका उपदेश सुनते हुए कृष्ण वासुदेवकी शंखध्वनि सुनि । तब उस कपिल वासुदेवको इस प्रकार आध्यात्मिक यावत् मनोगत विचार उत्पन्न हुआ–क्या धातकीषंड नामके द्वीपमें वर्तमान भरतक्षेत्र में कोई और दूसरा वासुदेव उत्पन्न हुआ है ? कि जिसके शंखका यह शब्द मेरे द्वारा बजाये गये शंखके शब्द जैसा हुआ है ? (तएणं मुणि सुव्वए अरहा कविलं वासुदेवं एवं वयासी–से णूणं ते कविला वासुदेवा ! मम अंतिए धम्मं णिसामेमाणस्स संखसद्दं आकण्णित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए किं मण्णे जाव वीयं भवइ से णूणं कविला वासुदेव ! अयमट्ठे समट्ठे ? हंता अत्थि, नो खलु कविला एयं भूयं वा३ जन्नं

તેમની પાસે તે કપિલ વાસુદેવ ધર્મોપદેશ સાંભળી રહ્યા હતા. તે કપિલ વાસુદેવે મુનિસુવ્રત પ્રભુની પાસે ધર્મોપદેશ સંભળતાં જ કૃષ્ણવાસુદેવના શંખનો ધ્વનિ સાંભળ્યો. ત્યારે તે કપિલ વાસુદેવને આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સંકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે શું ધાતકી ષંડ નામના દ્વીપમાં વિદ્યમાન ભરતક્ષેત્રમાં કોઇ બીજો વાસુદેવ ઉત્પન્ન થયો છે ? કેમકે તેના શંખનો આ ધ્વનિ મારા વડે વગાડવામાં આવેલા શંખના ધ્વનિ જેવો જ છે.

(तएणं मुणि सुव्वए अरहा कविलं वासुदेवं एवं वयासी–से णूणं ते कविलावासुदेवा ! मम अंतिए धम्मं णिसामेमाणस्स संखसद्दं आकण्णित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए किं मण्णे जाव वीयं भवइ, से णूणं कविला वासुदेवा ! अयमट्ठे समट्ठे ? हंता, अत्थि, नो खलु कविला एयं भूयं वा ३ जन्नं एगखेत्ते एगे जुगे

स्मिन् युगे, एकस्मिन् समये द्वावर्हन्तौ वा चक्रवर्तिनौ वा बलदेवौ वा वासुदेवौ वा 'उप्पज्जिसु' उदपत्स्येताम्, 'उप्पज्जिंति' उत्पद्येते 'उप्पज्जिस्संति' उत्पत्स्येते वा, एवं खलु हे वासुदेव! जम्बूद्वीपाद् भारताद् वर्षाद् हस्तिनापुरनगरात् पाण्डो राज्ञः 'सुण्हा' स्नुषा=पुत्रवधूः, पञ्चानां पाण्डवानां भार्या द्रौपदी देवी तव पद्म

एगे खेत्ते एगे जुगे एगे समए दुवे अरहंता वा, चक्कवट्टी वा, बलदेवा वा, वासुदेवा वा उप्पज्जिसु, उप्पज्जिंति, उप्पज्जिस्संति वा,) तब मुनिसुव्रत तीर्थंकर प्रभुने उन कपिल वासुदेव से इस प्रकार कहा हे कपिल वासुदेव! मेरे पास धर्म को सुनते समय तुम्हें शंख शब्द श्रवण कर इस प्रकार का यह आध्यात्मिक संकल्प-विचार उत्पन्न हुआ है, कि क्या कोई दूसरा वासुदेव उत्पन्न हो गया है-जिसके शंख का शब्द मुझे सुनाई दिया है। कहो कपिल वासुदेव! यही बात है न? तब कपिल वासुदेवने कहा-हां प्रभो! यही बात है-ऐसा ही विचार उत्पन्न हुआ है-तब मुनिसुव्रत भगवान्‌ने कपिल वासुदेवसे कहा-हे कपिल वासुदेव ऐसी बात न भूतकाल में हुई है और न भविष्यकाल में होगी-न वर्तमान् में होती है कि जो एक ही क्षेत्रमें एक ही युगमें एक ही समय में दो अर्हंत प्रभु, दो चक्रवर्ती, दो बलदेव, दो वासुदेव, उत्पन्न हो रहे हों, उत्पन्न हुए हों और आगे उत्पन्न हों। (एवं खलु वासुदेवा! जंबूदीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउरणयराओ, पंडुस्सरण्णो सुण्हा

एगे समए दुवे अरहंता वा चक्कवट्टी वा, वासुदेवा वा उप्पज्जिसु, उप्पज्जिंति, उप्पज्जिस्संति वा)

ત્યારે મુનિસુવ્રત તીર્થંકર પ્રભુએ તે કપિલ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે કપિલવાસુદેવ મારી પાસે ધર્મને સાંભળતાં શંખ-શબ્દ સાંભળીને તમને આ જાતનો આધ્યાત્મિક સંકલ્પ-વિચાર ઉત્પન્ન થયો છે કે, શું કોઈ બીજો વાસુદેવ ઉત્પન્ન થયો છે-જેના શંખનો ધ્વનિ મને સંભળાઈ રહ્યો છે. બોલો, કપિલ વાસુદેવે કહ્યુ કે હા, પ્રભુ! એ જ વાત છે. મારા મનમાં એ જ જાતનો વિચાર ઉદ્‌ભવ્યો છે. ત્યારે મુનિસુવ્રત ભગવાને કપિલ વાસુદેવને કહ્યું કે હે કપિલ વાસુદેવ! આવી વાત ભૂતકાળમાં થઈ નથી અને ભવિષ્યકાળમાં થશે નહિ અને વર્તમાનકાળમાં સંભવી શકે તેમ પણ નથી કે જે એક જ ક્ષેત્રમાં, એક જ યુગમાં, એક જ સમયમાં બે અર્હંત પ્રભુ, બે ચક્રવર્તી, બે બળદેવ, બે વાસુદેવ ઉત્પન્ન થયા હોય, ઉત્પન્ન થઈ રહ્યા હોય અને આગળ ઉત્પન્ન થવાના હોય.

(एवं खलु वासुदेवा! जंबूदीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउरणयराओ, पंडुस्स रण्णो, सुण्हा पंचण्हं पंडवाणं भारिया दोवई देवी तव पउमनाभस्स

नाभस्य राज्ञः पूर्वसंगतिकेन देवेनामरकङ्कानगरीं 'साहरिया' संहृता=आनीता, ततः खलु सः कृष्णो वासुदेवः पञ्चभिः पाण्डवैः सार्धं आत्मषष्ठः षड्भीरथैरमरकंकां राजधानीं द्रौपद्या देव्याः 'कूवं' देशी शब्दोयं प्रत्यानयनार्थकः प्रत्यानयनं कर्तुं हव्यमागतः, ततः खलु तस्य कृष्णस्य वासुदेवस्य पद्मनाभेन राज्ञा सार्धं 'संगामं' संग्रामं=युद्धं 'संगामेमाणस्स' युध्यत, अयं शङ्खशब्दस्तवमुखवातपूरित इव द्वितीयो भवति। ततः खलु स कपिलो वासुदेवो मुनिसुव्रतं वन्दते, नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्-गच्छामि खलु अहं हे

पंचण्हं पंडवाणं भारिया दोवईदेवी तव पउमनाभस्स रण्णो पुव्वसंगईएणं देवेणं अमरकंका नयरिं साहरिया, तएणं से कण्हे वासुदेवे पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं अमरकंकं रायहाणिं दोवईए देवीए कूवं हव्वमागए, तएणं तस्स कण्णस्स वासुदेवस्स पउमणाभेणं रण्णा सद्धिं संगामं, संगामेमाणस्स अयं संखसद्दे तव मुहवाया० इव- बीयं भवइ) सुनो बात इस प्रकार है जंबूद्वीप के भरत क्षेत्र में वर्तमान हस्तिनापुर नगर से पांडुराजा की पुत्रवधू पांच पांडवों की पत्नी द्रौपदी देवी को तुम्हारे पद्मनाभ राजा का पूर्व भवीय मित्र कोई देव हरण कर अमरकंका नगरी में ले आया। तब भरत क्षेत्र के वासुदेव कृष्ण पांच पांडवों के साथ आत्मषष्ठ होकर छह रथों से उस अमरकंका नगरी में द्रौपदी देवी को वापिस ले जाने के लिये बहुत जल्दी आये। तब उन कृष्ण वासुदेव के, पद्मनाभ राजा के साथ युद्ध करते समय शंख का यह शब्द तुम्हारे शंख के शब्द जैसा हुआ है। (तएणं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयं वंदंति, २ एवं वयासी गच्छामि णं

रण्णो पुव्वसंगइएणं देवेणं अमरकंका नयरिं साहरिया तएणं से कण्हे वासुदेवे पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं अमरकंकं रायहाणिं दोवईए देवीए कूवं हव्वमागए, तएणं तस्स कण्णस्स वासुदेवस्स पउमणाभेणं रण्णा सद्धिं संगामं, संगामे माणस्स अयं संखसद्दे तव मुहवाया० इव बीयं भवइ)

સાંભળો, વિગત એવી છે કે જંબૂદ્વીપના ભરતક્ષેત્રમાં વિદ્યમાન હસ્તિનાપુર નગરથી પાંડુરાજાની પુત્રવધૂ પાંચે પાંડવોની પત્ની દ્રૌપદી દેવીને તમારા પદ્મનાભ રાજાના પૂર્વભવનો મિત્ર કોઈ દેવ હરીને અમરકંકા નગરીમાં લઈ આવ્યો હતો. ત્યારપછી ભરતક્ષેત્રના વાસુદેવ કૃષ્ણ પાંચે પાંડવોની સાથે આત્મષષ્ઠ થઈને છ રથો ઉપર સવાર થયા અને સત્વરે દ્રૌપદી દેવીને પાછાં મેળવવા માટે ત્યાં પહોંચી ગયા પદ્મનાભ રાજાની સાથે યુદ્ધ કરતાં કૃષ્ણવાસુદેવે જે શંખધ્વનિ કર્યો છે તે તમારા શંખના ધ્વનિ જેવો છે.

(तएणं से कविले वासुदेवे मुणि सुव्वयं वंदंति, २ एवं वयासी, गच्छामि

भदन्त ! कृष्णं वासुदेवमुत्तमपुरुषं पश्यामि ततः खलु मुनिसुव्रतोऽर्हन् कपिलं वासुदेवम् एवमवादीत्—नो खलु हे देवानुप्रिय ! एवं भूतं वा, भवति वा भविष्यति वा यत् खलु अर्हन् अर्हन्तं पश्यति, चक्रवर्ती वा चक्रवर्तिनं पश्यति बलदेवो वा बलदेवं पश्यति वासुदेवो वा वासुदेवं पश्यति, तथा ऽपि च खलु त्वं

अह भंते ! कण्हं वासुदेवं उत्तमपुरिसं सरिसपुरिसं पासामि) इस प्रकार सुनकर उस कपिल वासुदेव ने मुनि सुव्रत प्रभु को वंदना की-नमस्कार किया वंदना नमस्कार करके फिर उनसे इस प्रकार कहा -हे भदंत ! मैं जाता हूँ और उत्तम पुरुष उन कृष्णवासुदेव से कि जो मेरे जैसे पुरुष हैं-वासुदेव पद के धारक हैं-जाकर मिलता हूँ। (तएणं मुणि सुव्वए अरहा कविलं वासुदेवं एवं वयासी) तब मुनि सुव्रत प्रभु ने उस कपिल वासुदेव से इस प्रकार कहा-(नो खलु देवाणुप्पिया ! एवं भूयं वा ६ जण्णं अरहंतो, वा अरहंतं पासइ, चक्कवट्टी वा चक्कवट्टिं पासइ, बलदेवो वा, बलदेवं पासइ, वासुदेवो वा वासुदेवं पासइ) हे देवानुप्रिय ! ऐसी बात न हुई है, वर्तमानमें न होती है और न भविष्यत्काल में होनेवाली है कि जो एक तीर्थंकर दूसरे तीर्थंकर से मिलें, एक चक्रवर्ती दूसरे चक्रवर्ती से मिले, एक बलदेव दूसरे बलदेव से मिलें, एक वासुदेव दूसरे वासुदेव से मिलें। ऐसा सिद्धान्त का नियम है कि एक तीर्थंकर का दूसरे तीर्थंकर से कभी भी मिलाप नहीं होता है।

णं अहभंते ! कण्हं वासुदेवं उत्तमपुरिसं सरिसपुरिसं पासामि)

આ પ્રમાણે સાંભળીને તે કપિલવાસુદેવે મુનિસુવ્રત પ્રભુને વંદન તેમજ નમન કર્યાં. વંદન અને નમન કરીને તેમની સામે આ પ્રમાણે વિનંતી કરતાં કહ્યુ કે હે ભદંત ! હુ જાઉ છુ અને જઇને મારા જેવા તે ઉત્તમ પુરૂષ કૃષ્ણ વાસુદેવ કે જેઓ વાસુદેવ પદને શોભાવે છે-તેમને મળુ છું. (तएणं मुणि सुव्वए अरहा कविलं वासुदेवं एवं वयासी) ત્યારે મુનિસુવ્રત પ્રભુએ તે કપિલ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(नो खलु देवाणुप्पिया ! एवं भूयं वा ३ जण्णं अरहंतो वा अरहंतं पासइ, चक्कवट्टी वा चक्कवट्टिं पासइ, बलदेवो वा, बलदेवं पासइ, वासुदेवो वा वासुदेवं पासइ)

હે દેવાનુપ્રિય ! એવી વાત કોઈ પણ દિવસે સંભવી નથી, વર્તમાનમાં પણ સંભવી શકે તેમ નથી અને ભવિષ્યકાળમાં પણ સંભવી શકશે નહિ કે એક તીર્થંકર બીજા તીર્થંકરને મળે, એક ચક્રવર્તી બીજા ચક્રવર્તીને મળે, એક બળદેવ બીજા બળદેવને મળે. આ જાતનો સિદ્ધાન્તનો નિયમ છે કે એક

कृष्णस्य वासुदेवस्य लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन व्यतिव्रजतः श्वेतपीतानि-ध्वजाग्राणि 'पासिहिसि' द्रक्ष्यसि। ततः खलु स कपिलो वासुदेवो मुनि सुव्रतं वन्दते, नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा हस्तिस्कन्धं दूरोहति=आरोहति आरुह्य शीघ्रं २ यत्रैव 'वेलाउले' वेलाकूलं=समुद्रवेला तटं वर्तते, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य कृष्णस्य वसुदेवस्य लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन 'वीइवयमाणस्स' व्यतिव्रजतः= गच्छतः, श्वेतपीतानि ध्वजाग्राणि पश्यति, दृष्ट्वा एवं वदति एसणं मम सदृशपुरुषः उत्तमपुरुषः कृष्णो वासुदेवो लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन 'वीइवयइ' व्यतिव्रजति= गच्छति, इति कृत्वा पाञ्चजन्यं शङ्खं परामृशति=गृह्णाति, गृहीत्वा मुखवातपूरितं करोति=कपिलवासुदेवः स्वशङ्खं वादयति। ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कपि-

---

चक्रवर्ती का दूसरे और चक्रवर्ती से बलदेव का दूसरे और किसी बलदेव से, वासुदेव का दूसरे और वासुदेव से कभी भी मिलाप नहीं होता है। (तह वि य णं तुमं कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं वीइवयमाणस्स सेया पीयाइं धयग्गाइं पासिहिसि) हां, इतना हो सकता हैं कि जब वे कृष्णवासुदेव लवणसमुद्रके बीचसे होकर जा रहे होवें तब तुम उनकी श्वेत पीत ध्वजाओंके अग्र भाग को देख सकते हो। (तएणं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता, हत्थिखंधं दुरूहइ, दुरुहित्ता सिग्धं २ जेणेव वेलाउले, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं वीइवयमाणस्स सेयापीयाहिंधयग्गाइं पासइ, पासित्ता एवं वयइ-एसणं मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं वीइवयइत्ति कट्टु

તીર્થંકરની સાથે બીજા તીર્થંકરનો મેળાપ કોઇ પણ સંજોગોમાં થતો નથી. એક ચક્રવર્તીનો બીજા ચક્રવર્તીની સાથે, એક બળદેવનો બીજા બળદેવની સાથે તેમજ એક વાસુદેવનો બીજા કોઈ પણ વાસુદેવની સાથે કદાપિ મેળાપ થતો નથી. (तह वि य णं तुमं कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्दं मज्झ मज्झेणं वीइ वयमाणस्स सेयापीयाइं धयग्गाइं पासिहिसिं) હા, એમ થઇ શકે છે કે જ્યારે તે કૃષ્ણવાસુદેવ લવણ સમુદ્રની વચ્ચે થઇને પસાર થતા હોય ત્યારે તમે તેમની સફેદ, પીળી ધ્વજાઓના અગ્રભાગને જોઇ શકો છો. (तएणं से) कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता हत्थिखंधं दुरूहइ, दुरूहित्ता सिग्धं२ जेणेव वेलाउले, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं वीइवयमाणस्स सेयापीयाहिं धयग्गाइं पासइ, पासित्ता एवं वयइ, एसणं मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कण्हे वासुदेवे

लस्य वासुदेवस्य शङ्खशब्दम् 'आयन्नेइ' आकर्णयति=शृणोति, आकर्ण्य पाञ्च-जन्यं यावत् मुखवातपूरितं करोति=कृष्णो वासुदेवः स्वकीयं शङ्खं वादयति, ततः खलु द्वावपि वासुदेवौ 'संखसद्दसामायारिं' शङ्खशब्दसामाचारिं=शङ्खशब्देन परस्परमिलनं कुरुतः।

पंचयन्नं संखं परामुसइ, परामुसित्ता मुहवायपूरियं करेइ) इस प्रकार प्रभु का आदेश सुनकर उन कपिलवासुदेव ने उन प्रभु मुनिसुव्रत भगवंत को वंदना की, नमस्कार किया। वंदना नमस्कार करके फिर वे अपने प्रधान हस्ती पर आरूढ हुए। और आरूढ होकर शीघ्र जहां लवणसमुद्र का वेलातट था—वहां पहुँचे। वहां पहुँचकर उन्होंने लवण-समुद्र के बीच से होकर जाते हुए कृष्णवासुदेव की श्वेत पीत ध्वजाओं के अग्रभाग को देखा देखकर तब मनमें विचार-किया ये ही मेरे जैसे उत्तम पुरुष कृष्णवासुदेव लवणसमुद्र के बीच से होकर जारहे हैं-ऐसा विचार कर उन्हों ने अपने पांचजन्य शंख को उठाया और उठा-कर उसे अपने मुख की वायु से पूरित किया (तएणं से कण्हे वासुदेवे कविलस्स वासुदेवस्स संखसद्दं आयन्नेइ, आयन्नित्ता, पंचजन्ने, जाव पूरियं करेइ, तएणं दो वि वासुदेवा संखसद्दसामायारिं करेइ, तएणं

लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं वीइवयइत्ति कट्टु पंचजन्नं संखं परामुसइ परामुसित्ता मुहवायपूरियं करेइ)

આ રીતે પ્રભુની આજ્ઞા સાંભળીને તે કપિલ વાસુદેવે તે પ્રભુ મુનિસુવ્રત ભગવંતને વંદન અને નમસ્કાર કર્યાં. વંદન અને નમસ્કાર કરીને તેઓ પોતાના પ્રધાન હાથી ઉપર સવાર થયા અને સવાર થઈને જલ્દી જ્યાં લવણ સમુ-દ્રનો કિનારો હતો ત્યાં પહોંચ્યા. ત્યાં પહોંચીને તેમણે લવણસમુદ્રની વચ્ચે થઈને પસાર થતા કૃષ્ણવાસુદેવની સફેદ-પીળી ધ્વજાઓના અગ્રભાગને જોયો અને જોઈને મનમાં વિચાર કર્યો કે મારા જેવા ઉત્તમ પુરુષ કૃષ્ણવાસુદેવ એ જ છે કે જેઓ લવણ-સમુદ્રની વચ્ચે થઈને પસાર થઈ રહ્યા છે. આમ વિચાર કરીને તેમણે પાંચ જન્ય શંખને ઉઠાવ્યો અને ઉઠાવીને પોતાના મુખના પવનથી તેને પૂરિત કર્યો.

(तएणं से कण्हे वासुदेवे कविलस्स वासुदेवस्स संखसद्दं आयन्नेइ, आय-न्नित्ता, पंचजन्नं जाव पूरियं करेइ तएणं दो वि वासुदेवा संखसद्दं सामायारिं करेइ, तएणं से कविले वासुदेवे जेणेव अमरकंका तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता

ततस्तदनन्तरं स कपिलो वासुदेवो यत्रैवामरकङ्काराजधानी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्यामरकङ्कां राजधानीं संभग्नतोरणां यावत् पश्यति, दृष्ट्वा पद्मनाभमेवमवादीत्–किं–कस्मात् खलु हे देवानुप्रिय ! एषा अमरकंका संभग्नतोरणा यावत्–सन्निपतिता ? ततः खलु स पद्मनाभः कपिलं वासुदेवमेवमवादीत्–एवं खलु हे स्वामिन् ! जम्बूद्वीपाद् द्वीपाद् भारताद् वर्षाद् इह हव्यमागत्य कृष्णेन वासुदेवेन 'तुब्भे परिभूए' युष्मान् परिभूय=अनादृत्य कपिलवासुदेवेन मम काऽपि हानिर्न शक्यते कर्तुमिति मनसि निधायेत्यर्थः, अमरकङ्का यावत् संनिपतिता ।

से कविले वासुदेवे जेणेव अमरकंका तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अमरकंकं रायहाणिं संभग्गतोरणं जाव पासइ, पासित्ता पउमणाभं एवं वयासी) तब कृष्ण वासुदेव ने कपिल वासुदेव के शंख शब्द को सुना सुनकर उन्हों ने भी पांचजन्य शंख को अपने मुख की वायु से पूरित किया–बजाया–इस तरह वे दोनों वासुदेव साक्षात् रूप में न मिलकर शंख के शब्द से परस्पर में मिले। अब वे कपिल वासुदेव जहां वह अमरकंका नगरी थी वहां आये । वहां आकर उन्होंने अमरकंका राजधानी को संभग्न तोरण आदि वाला देखा । देखकर तब पद्मनाभ राजा से इस प्रकार कहा–(किण्णं देवाणुप्पिया ! एसा अमरकंका संभग्ग जाव सन्निवइया ? तएणं से पउमणाहे कविलं वासुदेवं एवं वयासी–एवं खलु सामी ? जंबूदीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इहं हव्वमागम्म कण्हेणं वासुदेवेणं तुब्भे परिभूए अमरकंका जाव सन्निवाडिया) हे देवानुप्रिय ! यह अमरकंका नगरी क्या कारण है–जो

अमरकंकारायहाणिं संभग्गतोरणं जाव पासइ, पासित्ता पउमणाभं एवं वयासी)

જ્યારે કૃષ્ણવાસુદેવે કપિલ વાસુદેવના શંખનો ધ્વનિ સાંભળ્યો ત્યારે તેમણે પણ પોતાના પાંચજન્ય શંખને મુખના પવનથી પૂરિત કર્યો અને વગાડયો. આ રીતે તેઓ બંને વાસુદેવ પ્રત્યક્ષ રીતે નહિ પણ શંખના ધ્વનિથી પરસ્પર મળ્યા. ત્યારપછી તે કપિલ વાસુદેવ જ્યાં તે અમરકંકા નગરી હતી ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને તેમણે અમરકંકા રાજધાનીને ધજાઓ વગેરેથી નષ્ટ થયેલી જોઇ, જોઇને તેમણે પદ્મનાભ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(किण्णं देवाणुप्पिया ऐसा अमरकंका संभग्ग जाव सन्निवइया ? तएणं से पउमणाहे कविलं वासुदेवं एवं वयासी–एवं खलु सामी ! जंबूदीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इहं हव्वमागम्म कण्हेणं वासुदेवेणं तुब्भे परिभूए अमरकंका जाव सन्निवाडिया)

ततः खलु स कपिलो वासुदेवः पद्मनाभस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा पद्मनाभम् एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हं भो ! पद्मनाभ ! अप्रार्थित प्रार्थित ! =मरण वाञ्छक !, किं खलु त्वं न जानासि मम सदृशपुरुषस्य वासुदेवस्य विप्रियं=विरुद्धं कुर्वन्', इत्युक्त्वा आशुरुप्तः=शीघ्रं क्रोधाऽऽक्रान्तः, यावत् पद्मनाभं 'णिव्विसयं' निर्विषयं=विषयात् स्वराज्याद् निर्गतं-निष्कासितं कर्तुम् 'आणवेइ' आज्ञापयति पद्मनाभस्य पुत्रममरकङ्काराजधान्यां महता महता राज्याभिषेकेण अभिषिञ्चति,

संभग्न तोरण आदि वाली होकर भूमिसात् हो गई है। तब पद्मनाभ राजा ने उस कपिल वासुदेव से इस प्रकार कहा-हे स्वामिन् ! इसका कारण इस प्रकार है-जंबूद्वीप नाम के प्रथम द्वीप से भरतक्षेत्र से यहाँ बहुत ही शीघ्र आकर कृष्ण वासुदेव ने आपकी कुछ भी परवाह न करके-कपिल वासुदेव हमारी कुछ भी हानि नहीं कर सकते हैं-ऐसा अपने मन में समझ करके-अमरकंका में आकर-उसे पहिले संभग्न तोरण वाली किया-और बाद में विध्वस्तकर दिया। (तएणं से कविले वासुदेवे पउमणाहस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा पउमणाहं एवं वयासी) तब पद्मनाभ राजा के मुख से इस समाचार को सुनकर के उस कपिल वासुदेव ने उस पद्मनाभ राजा से इस प्रकार कहा-(हं भो ! पउमणाभा ! अपत्थियपत्थिया ! किन्नं तुमं न जाणासि मम सरिसपुरिसस्स कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणे ? असुरुत्ते जाव पउमणाहं णिव्विसयं आणवेइ, पउमणाहस्स पुत्तं अमरकंका रायहाणीए महया

હે દેવાનુપ્રિય ! શા કારણથી આ અમરકંકા નગરીની ધજાઓ વગેરે પણ તૂટી ગઇ છે અને સંપૂર્ણ નગરી વિનષ્ટ થઈ ગઈ છે ! ત્યારે પદ્મનાભ રાજાએ તે કપિલ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સ્વામી ! વાત એવી છે કે જંબૂદ્વીપ નામના પ્રથમ દ્વીપના ભરતક્ષેત્રથી અહીં બહુ જ જલ્દી આવીને કૃષ્ણવાસુદેવે તમારી જરાએ દરકાર કર્યા વગર "કપિલ વાસુદેવ અમારૂં કંઇજ કરી શકશે નહિ" આ જાતનો પોતાના મનમાં વિચાર કરીને પહેલાં તો અમરકંકાના તોરણો નષ્ટ કર્યાં અને ત્યારપછી આ નગરીને પણ જમીનદોસ્ત કરી નાખી છે (तएणं से कविले वासुदेवे पउमणाहस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा पउमणाहं एवं वयासी) ત્યારે પદ્મનાભ રાજાના મુખથી આ બધી વિગત સાંભળીને તે કપિલવાસુદેવે તે પદ્મનાભ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(हं भो ! पउमणाभा ! अपत्थियपत्थिया ! किन्नं तुमं न जाणासि मम सरिसपुरिसस्स कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणे ? आसुरुत्ते जाव पउमणाहं णिव्वि-

यावत् प्रतिगत =पद्मनाभस्य पुत्रं राज्येऽभिषिच्य कपिलवासुदेवो यस्यादिशः प्रादुर्भूतस्तां दिशं प्रतिगत इति भावः ॥ सू०३० ॥

मूलम्–तए णं से कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं वीइवयइ, तं पंच पंडवे एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! गंगामहानइं उत्तरह जाव ताव अहं सुट्ठियं लवणाहिवइं पासामि, तए णं तं पंच पंडवा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा जेणेव गंगामहानई तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता एगट्ठियाए णावाए मग्गणगवेसणं करेंति करित्ता एगट्ठियाए नावाए गंगामहानइं उत्तरंति उत्तरित्ता अण्णमण्णं एवं वयंति–पहू णं देवाणुप्पिया ! कण्हे वासुदेवे गंगामहाणइं बाहाहिं उत्तरित्तए उदाहु णो पभू उत्तरित्तएत्ति कट्टु एगट्ठियाओ नावाओ

महया रायाभिसेएणं अभिसिंचइ जाव पडिगए) अरेओ मरणवाञ्छक पद्मनाभ ! मेरे जैसे पुरुष कृष्ण वासुदेव का विप्रिय–अनिष्ट–करते हुए तुमने मेरा कुछभी ख्याल नहीं किया ? इस प्रकार कह कर वे उस पर बहुत अधिक कुपित हो गये। यावत् उस पद्मनाभ राजा को उन्हों ने अपने देश से बाहिर भी निकालदिया। तथा–उसका जो पुत्र सुनाभ था। उस को बड़े भारी उत्सवके साथ राज्य में अभिषिक्त किया। इस प्रकार पद्मनाभ के पुत्र को राज्य में अभिषिक्त करके वे कपिल वासुदेव जिस दिशासे आये थे उस दिशाकी ओर वापिस चले गये॥सू३०॥

सयं आणवेइ, पउमणाहस्स पुत्तं अमरकंका रायहाणीए महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचइ, जाव पडिगए)

અરે, ઓ મૃત્યુને ઇચ્છનાર પદ્મનાભ ! મારા જેવા પુરુષ કૃષ્ણવાસુદેવનું બુરૂં કરતાં તેં મારી પણ દરકાર કરી નહિ ? આ પ્રમાણે કહીને તેઓ ખૂબજ ક્રોધિત થઇ ગયા. યાવત્ તે પદ્મનાભ રાજાને પોતાના દેશથી બહાર પણ નસાડી મૂકયો. ત્યારપછી તેના પુત્ર સુનાભનો ભારે ઉત્સવની સાથે રાજ્યાભિષેક કર્યો. આ રીતે પદ્મનાભના પુત્રને રાજ્યાસને અભિષિક્ત કરીને કપિલ વાસુદેવ જે દિશા તરફથી આવ્યા હતા તે દિશા તરફ પાછા જતા રહ્યા. ॥ સૂત્ર ૩૦ ॥

णूमेंति णूमित्ता कण्हं वासुदेवं पडिवालेमाणा२ चिट्ठति, तएणं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं पासइ पासित्ता जेणेव गंगामहाणई तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता एगट्ठियाए सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेइ करित्ता एगट्ठियं अपासमाणे एगाए बाहाए रहं सतुरगं ससारहिं गेण्हइ एगाए बाहाए गंगं महाणइं वासट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च विच्छिन्नं उत्तरिउं पयत्ते यावि होत्था, तएणं से कण्हे वासुदेवे गंगामहाणईए बहुमज्झदेसभागं संपत्ते समाणे संते तंते परितंते बद्धसेए जाए यावि होत्था तएणं कण्हस्स वासुदेवस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था अहो णं पंच पंडवा महाबलवगा जेहिं गंगामहाणई वासट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च विच्छिण्णा बाहाहिं उत्तिण्णा, इत्थंभूएहिं णं पंचहिं पंडवेहिं पउमणाभे राया जाव णो पडिसेहिए, तएणं गंगादेवी कण्हस्स वासुदेवस्स इमं एयारूवं अज्झत्थियं जाव जाणित्ता थाहं वितरइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे मुहुत्तंतरं समासासइ समासासित्ता गंगामहाणइं बावट्ठिं जाव उत्तरइ उत्तरित्ता जेणेव पंच पंडवा तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पंच पंडवे एवं वयासी–अहो णं तुब्भे देवाणुप्पिया! महाबलवगा जेणं तुब्भेहिं गंगामहाणई बासट्ठिं जाव उत्तिण्णा, इत्थं भूएहिं तुब्भेहिं पउमं जाव णो पडिसेहिए, तएणं ते पंच पंडवा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हे तुब्भेहिं विसज्जिया समाणा

जेणेव महाणई तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता एगट्ठियाए मग्गणगवेसणं तं चेव जाव णूमेमो तुब्भे पडिवालेमाणा चिट्ठामो तएणं से कण्हे वासुदेवे तेसिं पंचण्हं पांडवाणं एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते जाव तिवालियं एवं वयासी-अहो णं जया मए लवणसमुद्दं दुवे जोयणसयसहस्सा विच्छिण्णं वीइवइत्ता पउमणाभं हयमहिय जाव पडिसेहित्ता अमरकंका संभग्ग० दोवई साहत्थिं उवणीया तया णं तुब्भेहिं मम महप्पं ण विण्णायं इयाणि जाणिस्सहत्तिकट्टु लोहदंडं परामुसइ, पंचण्हं पंडवाणं रहे चूरेइ चूरित्ता णिव्विसए आणवेइ आणवित्ता तत्थ णं रह मद्दणे णामं कोड्डे णिविट्ठे, तएणं से कण्हे वासुदेवे जेणेव सए खंधावारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सएणं खंधावारेणं सद्धिं अभिसमन्नागए यावि होत्था, तएणं से कण्हे वासुदेवे जेणेव बारवई णयरी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अणुपविसइ ॥सू० ३१॥

टीका—'तएणं से इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु स कृष्णो वासुदेवो लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन व्यतिव्रजति=गच्छति व्यतिव्रज्य तान् पञ्च पाण्डवान् एवमवादीत्-गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः! गङ्गामहानदीमुत्तरत=उत्तीर्णा भवत,

---

तएणं से कण्हे वासुदेवे इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे) उन कृष्णवासुदेवने (लवणसमुद्दं) जब लवण समुद्र में (मज्झं मज्झेणं वीइवयइ) बीच से होकर वे चले जा रहे थे। (ते पंच पंडवे एवं वयासी) तब पांच पांडवों से ऐसा कहा-(गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! गंगामहानइं उत्तरह जाव

तएणं से कण्णे वासुदेवे इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तएणं) ત્યારપછી (से कण्हे वासुदेवे) તે કૃષ્ણવાસુદેવે (लवणसमुद्दं) કે જ્યારે તેઓ લવણ સમુદ્રની (मज्झं मज्झेणं वीइवयइ) વચ્ચે થઈને પસાર થતા હતા ત્યારે (ते पंच पंडवे एवं वयासी) પાંચે પાંડવોને આ પ્રમાણે કહ્યું (गच्छहणं तुब्भे देवाणुप्पिया! गंगा महानदिं उत्तरह जाव ताव अहं सुट्ठियं

यावत् तावदहं सुस्थितं देवं लवणाधिपतिं पश्यामि, सुस्थितेन देवेन सह मिलित्वा तमापृच्छ्याऽऽगच्छामि, ततः खलु ते पञ्चपाण्डवा कृष्णेन वासुदेवेन एवमुक्ताः सन्तो यत्रैव गङ्गामहानदी तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य 'एगट्ठियाए' एकार्थिकायाः=महानौकासमानकार्यकारिण्याः 'णावाए' नावः=नौकाया मार्गणगवेषणं कुर्वन्ति। कृत्वा=मार्गणगवेषणं कृत्वा नौकायामारुह्य ते पञ्च पाण्डवा एकार्थिकया नावा गङ्गामहानदी मुत्तरन्ति, उत्तीर्य अन्योन्यम्=परस्परमेवं वदन्ति-'पहू' प्रभुः=समर्थः, खलु हे देवानुप्रियाः! कृष्णो वासुदेवो गङ्गामहानदीं 'बाहाहिं' बाहुभ्यां=भुजाभ्याम् 'उत्तरित्तए' उत्तरीतुम् 'उदाहु' उताहो-अथवा नो

ताव अहं सुट्ठियं लवणाहिवइं पासामि) हे देवानुप्रियों! तुमलोग जाओ-और गंगानदी को पार करो तबतक मैं लवणसमुद्राधिपति सुस्थित देव से मिलकर और उनकी आज्ञा लेकर आता हूँ। (तएणं ते पंच पंडवा कण्हेणं वसुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा जेणेव गंगा महानई तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता एगट्ठियाए णावाए मग्गणगवेसणं करेंति, करित्ता एगट्ठियाए गंगामहानइं उत्तरंति) इस तरह कृष्ण वासुदेव द्वारा कहे गये वे पांचों पांडव जहां गंगा महानदी थी-वहां आये। वहां आकर के उन्होंने एकार्थिक-महानौकासे जैसी कार्य साधक-नौका मार्गणा एवं गवेषणा की, मार्गणा गवेषणा कर के वे पांचों पांडव नौका पर चढ गंगा महानदीसे पार हो गये। (उत्तरित्ता अण्णमण्णं एवं वयंति पहूणं देवाणुप्पिया! कण्हे वासुदेवे गंगा महानई बाहाहिं उत्तरि-

---

लवणाहिवइं पासामि) હે દેવાનુપ્રિયો! તમે લોકો હવે જાઓ અને ગંગા નદીને ઓળંગો ત્યાંસુધી હુ લવણ સમુદ્રના અધિપતિ સુસ્થિત દેવને મળીને અને તેમની આજ્ઞા પ્રાપ્ત કરીને આવું છું.

(तएणं ते पंच पंडवा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा, जेणेव गंगा महानई तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता एगट्ठियाए णावाए मग्गणगवेसणं करेंति, करित्ता एगट्ठियाए नावाए गंगा महानइं उत्तरंति)

આ રીતે કૃષ્ણવાસુદેવ વડે આજ્ઞાપિત થયેલા તે પાંચે પાંડવો જ્યાં ગંગા મહા નદી હતી ત્યાં આવ્યા. ત્યાં આવીને તેમણે એકાર્થિક મહાનૌકા જેવી કામમાં આવી શકે તેવી નૌકાની માગણી તેમજ ગવેષણા કરી. માગણી તેમજ ગવેષણા કરીને તે પાંચે પાંડવો નૌકા ઉપર સવાર થઈને ગંગા મહા નદીને પાર ઉતરી ગયા.

(उत्तरित्ता अण्णमण्णं एवं वयंति पहूणं देवाणुप्पिया! कण्हे वासुदेवे गंगा-

प्रभुः=समर्थ उत्तरीतुम् , इति कृत्वा गङ्गामहानद्या बाहुभ्यामुत्तरणे कृष्णवासुवदेस्य सामर्थ्यमस्ति, नास्ति वा तद् विजानामीति विचार्य एकार्थिकां नावं=नौकां ' णूमेंति ' गोपयन्ति । गोपयित्वा कृष्णं वासुदेवं ' पडिवालेमाणा ' प्रतिपालयन्तः=प्रतीक्षमाणाः तिष्ठन्ति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः सुस्थितं देवं लवणाधिपतिं पश्यति=सुस्थितेन सार्कं मिलति दृष्ट्वा तमापृच्छ्य यत्रैव गङ्गामहानदी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य एकार्थिकाया नावः=नौकाया मार्गणगवेषणं करोति, कृत्वा, एकार्थिकां नावमपश्यन् एकेन बाहुना रथं सतुरगं=सहाश्वं,

त्तए उदाहुणो पभू उत्तरित्तए त्तिकट्टु एगट्ठियाओ णावाओ णूमेंति, णूमित्ता कण्हं वासुदेवं पडिवाले माणा २ चिट्ठंति, तएणं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं, पासइ, पासित्ता जेणेव गंगा महाणई तेणेव उवागच्छइ) जब पार होकर वे तट पर पहुँच चुके-तब परस्पर में उन्हों ने ऐसा विचार किया-हे देवानुप्रियों ! देखो कृष्ण वासुदेव गंगा महानदी को हाथों से तैरकर पार करने में समर्थ हो सकते हैं या नहीं हो सकते हैं ? इस प्रकार विचार करके उन्हों ने उस एकार्थि नौका को कृष्ण वासुदेव के आने के लिये वापिस उस पार भेजा नहीं वहीं पर छिपा दिया। और छिपाकर कृष्ण वासुदेव की प्रतीक्षा करते वे वहीं ठहरे रहे। उधर-कृष्ण वासुदेव लवणसमुद्राधिपति सुस्थित देव से जाकर मिले और उसकी आज्ञा लेकर जहां गंगा नदी थी वहां आये। (उवागच्छित्ता एगट्ठियाए सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेई, करित्ता एगट्ठियं अपासमाणे एगाए बाहाए रहं सतुरगं ससारहिं गेण्हइ

महानई बाहाहिं उत्तरित्तए, उदाहु णो पभू उत्तरित्तए त्तिकट्टु एगट्ठियाओ णावाओ णूमेंति, णूमित्ता कण्हं वासुदेवं पडिवालेमाणा२ चिट्ठंति, तए णं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं, पासइ, पासित्ता जेणेव गंगा महाणई तेणेव उवागच्छइ)

પાર ઉતરીને જ્યારે તેઓ કિનારે પહોંચી ગયા, ત્યારે તેમણે પરસ્પર વિચાર કર્યો કે હે દેવાનુપ્રિયો ! કૃષ્ણવાસુદેવ ગંગા મહાનદીને હાથો વડે તરીને પાર કરી શકે કે નહિ ? આમ વિચાર કરીને તેમણે તે 'એકાર્થિ' નૌકાને કૃષ્ણવાસુદેવને લાવવા માટે પાછી મોકલી નહિ પણ ત્યાંજ છુપાવી દીધી. અને છુપાવીને તેઓ ત્યાંજ કૃષ્ણવાસુદેવની પ્રતીક્ષા કરતા રોકાઈ ગયા. કૃષ્ણવાસુદેવ લવણ સમુદ્રાધિપતિ સુસ્થિતદેવને મળ્યા અને તેની આજ્ઞા પ્રાપ્ત કરીને જ્યાં ગંગા નદી હતી ત્યાં આવ્યા.

(उवागच्छित्ता एगट्ठियाए सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेइ, करित्ता एगट्ठियं अपासमाणे एगाए बाहाए रहं सतुरग ससारहिं गेण्हइ, एगाए बाहाए

ससारथिं गृह्णाति एकेन बाहुना गङ्गां महानदीं 'बासट्ठि' द्वाषष्टिं योजनानि अर्धयोजनं च 'वित्थिन्नं' विस्तीर्णाम्, उत्तरितुं प्रवृत्तश्चाप्यभवत्, ततः खलु स कृष्णो वासुदेवो गङ्गामहानद्या बहुमध्यदेशभागं संप्राप्तः सन् 'संते' श्रान्तः= श्रमंप्राप्तः, 'तंते' तान्तः=खिन्नः 'परितंते' परितान्तः=सर्वथा खिन्नः 'बद्ध-सेए' संप्राप्तस्वेदः, जातश्चाप्यभवत्।

ततः खलु कृष्णस्य वासुदेवस्यायमेतद्रूप आध्यात्मिको यावत् मनोगत संकल्पः समुदपद्यत–अहो खलु पञ्च पाण्डवा महाबलवन्तः, यैर्गङ्गामहानदी द्वाषष्टिं योजनानि अर्धयोजनं च वित्थिना–विस्तीर्णा बाहुभ्यामुत्तीर्णा, 'इत्थंभूएहिं' इत्थंभूतैः–ईदृशपराक्रमशालिभिः खलु पञ्चभिः पाण्डवैः पद्मनाभो राजा यावत् नो

एगाए बाहाए गंगं महाणइं बासट्ठि जोयणाइं अद्धजोयणं च विच्छिन्नं उत्त-रिपयत्ते यावि होत्था) वहां आकर के उन्हों ने एकार्थिक नौका की सब तरफ सब प्रकारसे मार्गणा गवेषणा की 'मार्गणागवेषण करके जब उनके देखने में एकार्थिक नौका नहीं आई, तब सारथि और घोडों से युक्त रथ को उन्हों ने एक हाथ से पकड़ा और एक हाथ से ६२॥, साढे बासठ, योजन विस्तीर्ण उस गंगा महानदी को तैरकर पार करना प्रारंभ किया। (तएणं से कण्हे वासुदेवे गंगा महाणईए बहुमज्झदेस-भागं संपत्ते समाणे संते, तंते, परितंते, बद्धसेए जाए यावि होत्था, तएणं कण्हस्स वासुदेवस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था –अहोणं पंच पंडवा महाबलवगा, जेहिं गंगामहाणई बासट्ठि जोयणाइं अद्धजोयणं च विच्छिण्णा बाहाहिं उत्तिण्णा इत्थंभूएहिं णं पंचहिं पंड

गंगं महाणइं बासट्ठि जोयणाइं अद्धजोयणं च विच्छिन्नं उत्तरिपयत्ते यावि होत्था)

त्यां आवीने तेमणे 'એકાર્થિક' નૌકાની ચોમેર બધી રીતે માર્ગણા ગવેષણા કરી. માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરીને જ્યારે 'એકાર્થિક' નૌકા તેમના જોવામાં આવી નહિ ત્યારે સારથિ અને ઘોડાથી યુક્ત રથને તેમણે એક હાથમાં ઉપાડયો અને એક હાથ વડે ૬૨" યોજન વિસ્તીર્ણ તે ગંગા મહા નદીને તરીને પાર કરવા લાગ્યા.

(तएणं से कण्हे वासुदेवे गंगा महाणईए बहुमज्झदेस भागं संपत्ते समाणे संते, तंते, परितंते, बद्धसेए जाए यावि होत्था, तएणं कण्हस्स वासुदेवस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–अहोणं पंच पंडवा महाबलवगा जेहिं गंगा महाणई बासट्ठि जोयणाइं अद्धजोयणं च विच्छिण्णा बाहाहिं उत्तिण्णा इत्थं

प्रतिषेधितः=नो पराजितः, इदमाश्चर्यम् , ततः खलु गङ्गादेवी कृष्णस्य वासुदेवस्य इममेतद्रूपमाध्यात्मिकं यावत् मनोगतं संकल्पं ज्ञात्वा 'थाहं' स्ताघं-गाधं वितरति,=ददाति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवो मुहूर्तान्तरे 'समासासइ' समाश्वसिति-विश्रामं प्राप्नोति समाश्वस्य गङ्गामहानदीं द्वाषष्ठि यावद् उत्तरति, उत्तीर्य

वेहिं पउमणाभे राया जाव णो पडिसेहिए-तएणं गंगादेवी कण्हस्स वासुदेवस्स इमं एयारूवं अज्झत्थिए जाव जाणित्ता थाहं वितरइ) तैरते २ जब वे कृष्णवासुदेव गंगा महानदी के ठीक मज्झ-मध्य भाग में आये-तब वहां तक आते २ वे श्रम प्राप्त हो गये, खेदखिन्न बन गये, और सर्वथा थक गये। यहां तक कि उनके शरीर भर में थकावट की वजह से पसीना २ हो गया। तब उन कृष्णवासुदेव को इस प्रकार का यह आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ। देखो-ये पांचो पांडव बड़े बलिष्ठ है-जिन्हों ने ६२॥, योजन विस्तीर्ण इस गंगा महानदी को हाथों से तैरकर पार कर दिया परन्तु यह बड़े आश्चर्य की बात हैं-कि ऐसे पराक्रम से युक्त होते हुए भी इन पांडवों से वह पद्मनाभ राजा प्रतिषेधित नहीं हो सका-जीता नहीं जा सका। इस प्रकार के उन कृष्णवासुदेव के इस रूप इस आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प को गंगादेवी ने जानकर उन्हें थाह दे दी (अधार दिया)। (तएणं से कण्हे वासुदेवे मुहुत्तंत्तरं समासासइ) थाह प्राप्त कर कृष्णवासुदेव ने वहां

भूएहिं णं पंचहिं पंडवेहिं पउमणाभे राया जाव णो पडिसेहिए-तएणं गंगादेवी कण्हस्स वासुदेवस्स इमं एयारूवं अज्झत्थिए जाव जाणित्ता थाहं वितरइ)

તરતાં તરતાં જ્યારે કૃષ્ણવાસુદેવ ગંગા મહાનદીના એકદમ મધ્યમાં આવ્યા-ત્યાંસુધી આવતાં આવતાં તો તેઓ થાકી ગયા, ખેદખિન્ન થઈ ગયા, અને એકદમ થાકી ગયા. થાકને લીધે તેમનું સંપૂર્ણ શરીર પરસેવાથી તરબોળ થઈ ગયુ. ત્યારે તે કૃષ્ણવાસુદેવને આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સંકલ્પ ઉદ્ભવ્યો કે જુઓ આ પાંચે પાંડવો કેટલા બધા બલિષ્ઠ છે કે જેમણે ૬૨" યોજન વિસ્તીર્ણ આ ગંગા મહાનદીને હાથો વડે તરીને પાર કરી છે પણ એની સાથે આ પણ એક નવાઈ જેવી વાત છે કે એવા પરાક્રમી હોવા છતાંએ આ પાંડવોથી તે પદ્મનાભ રાજા યાવત્ પરાજીત કરી શકાયો નહિ. કૃષ્ણવાસુદેવના ગંગા મહાનદીએ આ જાતના આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સંકલ્પ જાણીને તેમના માટે થાહ આપી (तएणं से कण्हे वासुदेवे मुहुत्तंत्तरं समासासइ) થાહ મેળવીને કૃષ્ણવાસુદેવે થોડીવાર ત્યાં વિશ્રામ કર્યો (समासा०) વિશ્રામ કર્યા બાદ તેમણે

यत्रैव पञ्च पाण्डवास्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पञ्च पाण्डवान् एवमवादीत्— अहो खलु यूयं हे देवानुप्रियाः! महाबलवन्तः येन युष्माभिर्गङ्गा महानदी द्वाषष्टि योजनानि अर्धयोजनं च विस्तीर्णा यावद् उत्तीर्णा, इत्थंभूतैर्युष्माभिः पद्म-नाभो यावत् नो प्रतिषेधितः=पराजयं न प्रापितः, ततः खलु ते पञ्च पाण्डवाः

थोड़ी देर तक विश्राम किया (समासा०) विश्राम करके फिर उन्होंने (गंगा महाणइं बावट्ठिं जाव उत्तरइ, उत्तरित्ता जेणेव पंचपंडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंच पंडवे एवं वयासी-अहोणं तुब्भे देवाणुप्पिया! महा-बलवगा जेणं तुब्भेहिं गंगा महाणई बासट्ठिं जाव उत्तिण्णा, इत्थंभूएहिं तुब्भेहिं पउम जाव णो पडिसेहिए, तएणं ते पंचपंडवा कण्हे णं वासु देवेणं एवं वुत्ता समाणा कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-एवं खलु देवाणु-प्पिया! अम्हे तुब्भेहिं विसज्जिया समाणा जेणेव गंगा महाणई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए मग्गणगवेसणं तं चेव जाव णूमेमो तुब्भे पडिवाले माणा चिट्ठामो) साढे बासठ योजन विस्तीर्ण उस गंगा महानदी को तैरकर पार कर दिया। पार करके फिर वे वहां आये-जहां ये पांचो पांडव थे। वहां आकर उन्हों ने उन पांचो पांडवों से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियों! तुमलोग बहुत ही अधिक बलशाली हो जो तुमलोगों ने ६२॥ योजन विस्तीर्ण इस गंगा महानदी को बाहुओं से तैरकर पार कर दिया। परन्तु यह आश्चर्य की बात हैं कि इतने बल-शाली होकर भी जो तुम से पद्मनाभ राजा पराजित नहीं हो सका।

(गंगा महाणइं बावट्ठिं जाव उत्तरइ, उत्तरित्ता जेणेव पंच पंडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंच पंडवे एवं वयासी-अहोणं तुब्भे देवाणुप्पिया! महाबलवगा जेणं तुब्भेहिं गंगा महाणई बासट्ठिं जाव उत्तिण्णा इत्थं भूएहिं तुब्भेहिं पउमं जाव णो पडिसेहिए, तएणं ते पंच पंडवा कण्हे णं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हे तुब्भेहिं विस-ज्जिया समाणा जेणेव गंगा महाणई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए मग्गण गवेसणं तं चेव जाव णूमेमो तुब्भे पडिवाले माणा चिट्ठामो)

६२" યોજન વિસ્તીર્ણ તે ગંગા મહાનદીને તરીને પાર પહોંચી ગયા પાર પહોચીને તેઓ જ્યાં પાંચે પાંડવો હતા ત્યા આવ્યા. ત્યાં આવીને તેમણે પાંચે પાંડવોને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે બહુ જ બળવાન છો કેમકે તમે લોકોએ ૬૨" યોજન વિસ્તીર્ણ આ ગંગા મહાનદીને હાથો વડે તરીને પાર કરી છે. પણ એની સાથે આ એક નવાઇ જેવી વાત છે કે તમે આટલા બધા બળવાન હોવા છતાં પણ પદ્મનાભ રાજાને હરાવી શકયા નહિ.

कृष्णेन वासुदेवेनैवमुक्ताः सन्तः कृष्णं वासुदेवमेवमवादीत्-एवं खलु हे देवानुप्रियाः! वयं युष्माभिर्विसर्जिताः सन्तो यत्रैव गङ्गा महानदी तत्रैवोपागच्छामः, उपागत्य 'एगट्ठियाए' एकार्थिकाया नावो मार्गणगवेषणं कृत्वा 'तं चेव जाव णूमेमो' तदेव=यदुक्तं पूर्वं तदेवात्र वोध्यमित्यर्थः-तां नावमधिरुह्य वयं गङ्गामहानदीमुत्तीर्णाः, ततः खलु हे देवानुप्रियाः! गङ्गां महानदीं बाहुभ्यामुत्तरितुं भवन्तः शक्नुवन्ति नवा, इति ज्ञातुं वयमेकार्थिकां नौकां यावद् 'णूमेमो' गोपयामः, युष्मान् 'पडिवालेमाणा' प्रतिपालयन्तः-प्रतीक्षमाणा वयं तिष्ठामः।

ततः खलु स कृष्णो वासुदेवस्तेषां पञ्चानां पाण्डवानाम् एतमर्थं श्रुत्वा आकर्ण्य निशम्य हृद्यवधार्य आशुरुप्तः-शीघ्रं संजातकोपः, यावत् त्रिवलिकां=रेखा-

---

इस प्रकार जब कृष्णवासुदेवने उन पांचो पांडवों से कहा तब उन्हों ने कृष्णवासुदेव से ऐसा कहा हे देवानुप्रिय! सुनिये-बात इस प्रकार है जब हमलोगों को आपने वहां से विसर्जित कर दिया-तब हमलोग जहां गंगा महानदी थी-वहां आये-वहां आकर हमलोगों ने एकार्थिक नौका की मार्गणा गवेषणा की-नाव के मिलते ही हमलोग उसपर चढ-कर यहां गंगा नदी को पार कर आये हैं। हमलोगों ने यहां आकर फिर हे देवानुप्रिय! ऐसा विचार किया - कि - कृष्णवासुदेव गंगा महानदी को हाथों से पार कर सकते है या नहीं-इसी बात को जानने के लिये हमलोगों ने उस एकार्थिक नौका को यहीं छिपा कर रख दिया है। और आपकी प्रतीक्षा में यहां ठहरे हुए हैं। (तएणं से कण्हे वासुदेवे तेसिं पंचण्हं पांडवाणं एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते जाव तिव-

---

આ રીતે જ્યારે કૃષ્ણુવાસુદેવે તે પાંચે પાંડવોને કહ્યું ત્યારે તેમણે કૃષ્ણુવાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય! સાંભળો, વાત એવી છે કે અમને બધાને તમે જ્યારે વિદાય કર્યા ત્યારે અમે લોકો જ્યાં ગંગા મહાનદી હતી ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને બધાએ એકાર્થક નૌકાની માર્ગણા ગવેષણા કરી. નૌકા પ્રાપ્ત થતાં જ અમે બધા તેમાં બેસીને ગંગા મહાનદીને પાર કરીને આ તરફ આવી ગયા. આ તરફ આવીને હે દેવાનુપ્રિય! અમે લોકોએ આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો કે-કૃષ્ણુવાસુદેવ ગંગા મહાનદીને હાથો વડે તરીને પાર કરી શકશે કે કેમ? આ વાત જાણુવા માટે જ અમે લોકોએ તે એકાર્થિક નૌકાને છુપાવીને તમારી પ્રતીક્ષા કરતાં અમે અહીં જ બેસી રહ્યાં હતા.

(तए णं से कण्हे वासुदेवे तेसिं पंचण्हं पांडवाणं एयमट्ठं सोचा णिसम्म आसुरुत्ते जाव तिवलियं एवं वयासी-अहोणं जया मए लवणसमुद्दं दुवे जोयण

त्रयुक्तां भृकुटिं ललाटे उन्नीय प्रदर्श्य, एवमवादीत्-अहो-आश्चर्यं खलु 'जया' यदा-यस्मिन् समये, मया लवणसमुद्रं 'दुवे जोयणसयसहस्सा विच्छिण्णं' द्वियोजनशतसहस्रविस्तीर्णं द्विलक्षयोजनपरिमितं विस्तीर्णं 'वीइवइत्ता' व्यतिव्रज्य-समुल्लङ्घ्य, पद्मनाभं राजानं 'हयमहिय-जाव पडिसेहित्ता' हतमथित-यावत्

लियं एवं वयासी-अहोणं जया मए लवणसमुद्दं दुवे जोयणसयसहस्सा विच्छिन्नं वीइवइत्ता पउमणाभं हयमहिय जाव पडिसेहित्ता अमरकंका संभग्ग० दोवई साहत्थिं उवणीया तया णं तुब्भेहिं मम माहप्पं ण विण्णायं इयाणिं जाणिस्सह, त्ति कट्टु लोहदंडं परामुसइ, पंचण्हं पंडवाणं रहे चूरेइ, चूरित्ता णिव्विसए आणवेइ आणवित्ता तत्थ णं रहमद्दणे णामं कोट्टे णिविट्ठे,तएणं से कण्हे वासुदेवे जेणेव सए खंधावारे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सएणं खंधावारेणं सद्धिं अभिसमन्नागए यावि होत्था, से कण्हे वासुदेवे जेणेव बारवईए णयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अणुपविसइ) उन पांचो पांडवों के मुख से इस कथन रूप अर्थ को सुनकर और उसे अपने हृदय में अवधारित कर उन कृष्णवासुदेव को इकदम क्रोध आ गया। त्रिवलियुक्त उनकी दोनों भृकुटियां ललाटतट पर चढ गई। उसी समय उन्हों ने उन पांडवों से कहा यह बड़े आश्चर्य की बात है-जिस समय मैंने २ दो लाख योजन विस्तारवाले लवणसमुद्र को उल्लंघन कर पद्मनाभ राजा को संग्राम मे जीता-उस की सेना को हत मथित किया-राजचिन्हस्वरूप उसकी

सयसहस्सा विछिन्नं वीइवइत्ता पउमणाभं हय महिय जाव पडिसेहित्ता अमरकंका संभग्ग० दोवई साहत्थिं उवणीया तयाणं तुब्भेहिं मम माहप्पं ण विण्णायं इयाणि जाणिस्सह, त्तिकट्टु लोहदंडं परामुसइ, पंचण्हं पंडवाणं रहे चूरेइ, चूरित्ता णिव्विसए आणवेइ आणवित्ता तत्थणं रहमद्दणे णामं कोट्टे णिविट्ठे, तएणं से कण्हे वासुदेवे जेणेव सए खंधावारे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सएणं खंधावारेणं सद्धिं अभिसमन्नागए यावि होत्था तएणं से कण्हे वासुदेवे जेणेव बारवइ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अणुपविसइ)

તે પાંચે પાંડવોના મુખથી આ કથનરૂપ અર્થને સાંભળીને અને તેને પોતાના હૃદયમાં અવધારિત કરીને તે કૃષ્ણવાસુદેવ એકદમ ક્રોધાવિષ્ટ થઇ ગયા ત્રિવલિયુક્ત તેમના બંને ભમ્મરો વક્ર થઈ ગયા. તેમણે તે જ સમયે પાંડવોને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે આ ખરેખર નવાઇ જેવી વાત છે કે જ્યારે મેં ૨ લાખ યોજન વિસ્તીર્ણ લવણ સમુદ્રને ઓળંગીને પદ્મનાભ રાજાને યુદ્ધમાં જીત્યો, તેની સેનાને મથી નાખી, રાજચિહ્ન સ્વરૂપ તેની પ્રશસ્ત ધ્વજા પતાકાઓને

प्रतिषेध्य–हतमथितप्रवरवीरघातितनिपतितचिह्नध्वजपताकं यावत् प्रतिषेध्य = संग्रामात् प्रतिनिवर्त्य–पद्मनाभं विजित्येत्यर्थः, अमरकंकां राजधानीं संभग्नतोरणा यावद् विनिपातिता–विध्वंसिता, तथा–द्रौपदी स्वहस्तेनोपनीता=मवद्भ्यः प्रदत्ताः, 'तयाणं' तदा=तस्मिन् समये खलु युष्माभिर्मम 'माहप्पं' माहात्म्यं=महत्त्वं बलं, 'ण विण्णायं' न विज्ञातम् 'इयाणिं' इदानीम्–अस्मिन् समये 'जाणिस्सह' ज्ञास्यथ, इति कृत्वा=इत्युक्त्वा, लोहदण्डं 'परामुसइ' परामृशति–गृह्णाति पञ्चानां पाण्डवानां रथान् चूर्णयति, चूर्णयित्वा 'णिव्विसए आणवेइ' निर्विषयान् आज्ञापयति–विषयात् स्वदेशतो निर्गताः बहिर्याता इति निर्विषयास्तान्, यूयं मम देशात् निर्विगच्छत, इत्याज्ञापयति स्म' इत्यर्थः। आज्ञाप्य तत्र खलु 'रहमद्दणे णामं कोट्टे णिविट्ठे' रथमर्दननामा कोष्ठो निविष्टः–रथमर्दनपुरं नाम नगरं स्थापितम्।

ततस्तदनन्तरं स कृष्णो वासुदेवो यत्रैव स्वकः=निजः, 'खंधावारे' स्कन्धावारः–सेनानिवेशस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्वकेन स्कन्धावारेण–सोपकरण–सैनिकेन सार्धम् अभिसमन्वागतः=मिलितश्चाप्यभवत्। ततः खलु स कृष्णो वासुदेवो यत्रैव द्वारवती नगरी, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य, अनुप्रविशति ॥सू० ३१॥

प्रशस्त ध्वजा पताकाओं को जमीन में मिलादिया–उस की राजधानी अमरकंका नगरी को ध्वस्त कर दिया, तथा उससे द्रौपदी को अपने हाथ से लाकर तुमलोगों को दिया उस समय तुमलोगों ने मेरे बल को नहीं जाना ? जो अब जानोगे–ऐसा कहकर उन वासुदेव कृष्ण ने लोह दंडे को उठाया–और उससे पांचों पांडवों के रथों को चूर २ कर दिया। चूर २ कर के फिर उन्हें देश से बाहिर हो जाने की आज्ञा देदी। आज्ञा देकर उन कृष्ण वासुदेव ने वहीं पर एक रथमर्दन नाम का नगर बसा दिया। इस के बाद वे कृष्ण वासुदेव जहां अपना स्कंधावार था वहां

જમીનદોસ્ત કરી નાખી તેની રાજધાની અમરકંકા નગરીને નષ્ટ કરી નાખી અને તેની પાસેથી દ્રૌપદીને લાવીને તમને સોંપી દીધી તે વખતે તમે લોકો મારા બળને જાણી શકયા નહિ તો હવે મારા બળને તમે જુઓ–આમ કહીને તે કૃષ્ણવાસુદેવે લોહદંડને હાથમાં લીધો અને તેનાથી તેમણે પાંચે પાંડવોના રથોના ભૂકેભૂકા ઉડાવી દીધા. રથોને નષ્ટ કરીને તેમણે પાંચે પાંડવોને દેશથી બહાર જતા રહેવાની આજ્ઞા આપી. આજ્ઞા આપીને તે કૃષ્ણવાસુદેવે તે સ્થળેજ એક રથમર્દન નામે નગર વસાવ્યું. ત્યારપછી તે કૃષ્ણવાસુદેવ જ્યાં પોતાના સૈન્યની છાવણી હતી ત્યાં આવ્યા. ત્યા આવીને તેઓ પોતાના સૈનિકોને

मूलम्--तएणं ते पंच पंडवा जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता जेणेव पंडू तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता करयल एवं वयासी--एवं खलु ताओ! अम्हे कण्हेणं णिव्विसया आणत्ता, तएणं पंडुराया ते पंच पंडवे एवं वयासी--कहण्णं पुत्ता! तुब्भे कण्हेणं वासुदेवेणं णिव्विसया आणत्ता?, तएणं ते पंच पंडवा पंडुरायं एवं वयासी--एवं खलु ताओ! अम्हे अमरकंकाओ पडिणियत्ता लवणसमुद्दं दोन्नि जोयणसयसहस्साइं वीइवइत्ता तएणं से कण्हं अम्हे एवं वयासी--गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! गंगामहाणइं उत्तरह जाव चिट्ठह ताव अहं एवं तहेव जाव चिट्ठामो, तएणं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं दट्ठूण तं चेव सव्वं नवरं कण्हस्स चिंता ण जुज्जइ जाव अम्हे णिव्विसए आणवेइ, तएणं से पंडुराया ते पंच पंडवे एवं वयासी--दुट्ठु णं पुत्ता! कयं कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणेहिं, तएणं से पंडुराया कोंतिं देविं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी--गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! बारवइं कण्हस्स वासुदेवस्स णिवेदेहि--एवं खलु देवाणुप्पिया! तुम्हे पंच पंडवा णिव्विसया आणत्ता तुमं च णं देवाणुप्पिया! दाहिणड्ढभरहस्स सामी तं संदिसंतु णं देवाणुप्पिया पंच पंडवा कयरं दिसिं वा विदिसं

आये। वहां आकर वे अपने सैनिकों के साथ मिले। बाद में जहां द्वारावती नगरी थी उस ओर चल दिये वहां पहुँच कर वे द्वारावती नगरी में प्रविष्ट हुए॥ सू० ३१॥

મળ્યા, ત્યારબાદ તેઓ જે તરફ દ્વારાવતી નગરી હતી તે તરફ રવાના થયા. ત્યાં પહોંચીને તેઓ દ્વારાવતી નગરીમાં પ્રવિષ્ટ થયા. ॥ સૂત્ર ૩૧ ॥

वा गच्छंतु ?, तएणं सा कोंती पंडुणा एवं वुत्ता समाणी हत्थिखंधं दुरूहइ दुरूहित्ता जहा हेट्ठा जाव संदिसंतु णं पिउत्था! किमागमणपओयणं ?, तएणं सा कोंती कण्हं वासुदेवं एवं वयासी--एवं खलु पुत्ता ! तुमं पंच पंडवा णिव्विसया आणत्ता तुमं च णं दाहिणड्ढभरह जाव विदिसं वा० गच्छंतु ?, तएणं से कण्हे वासुदेवे कोंतिं देविं एवं वयासी--अपूईवयणाणं पिउत्था ! उत्तमपुरिसा वासुदेवा बलदेवा चक्कवट्टी तं गच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! पंच पंडवा दाहिणिल्लं वेलाऊलं तत्थ पंडुमहुरं णिवेसंतु ममं अदिट्ठसेवगा भवंतु त्तिकट्टु कोंतिं देविं सक्कारेइ सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ, तएणं सा कोंती देवी जाव पंडुस्स एयमट्ठं णिवेदेइ, तएणं पंडू पंच पंडवे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी--गच्छह णं तुब्भे पुत्ता ! दाहिणिल्लं वेलाऊलं तत्थ णं तुब्भे पंडुमहुरं णिवेसेह, तएणं पंच पंडवा पंडुस्स रण्णो जाव तहत्ति पडिसुणेंति सबलवाहणा हयगय० हत्थिणाउराओ पडिणिक्खमंति पडिणिक्खमित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वेयाली तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पंडुमहुरं नगरिं निवेसेंति निवेसित्ता तत्थ णं ते विपुलभोगसमिति समण्णागया यावि होत्था ॥ सू० ३२ ॥

टीका—'तएणं ते इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु ते पञ्च पाण्डवा यत्रैव हस्तिनापुरं नगरं तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य यत्रैव पाण्डू राजा तत्रैवोपागच्छन्ति,

---

-: तएणं ते पंच पंडवा इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (ते पंच पंडवा) वे पांचों पांडव (जेणेव हत्थिणा उरे) जहां हस्तिनापुर नगर था (तेणेव उवागच्छंति) वहां

तएणं ते पंच पंडवा इत्यादि—

टीकार्थ-(तएणं) त्यारपछी (ते पंच पंडवा) ते पांचे पांडवो (जेणेव हत्थिणा उरे) ज्यां हस्तिनापुर नगर हतुं (तेणेव उवागच्छंति) त्यां आव्या (उवा-

उपागत्य करतलपरिगृहीतदशनखं शिरआवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादिषुः-एवं खलु हे तात! वयं कृष्णेन निर्विषयाः=विषयाद् मम देशाद् बहिर्निर्गताः आज्ञप्ताः=कृष्णोऽस्मान् देशाद् बहिः निर्गन्तुमाज्ञप्तवानित्यर्थः। ततः खलु पाण्डू राजा तान् पञ्च पाण्डवान् एवमवादीत्-' कहण्णं ' कथं-केन कारणेन खलु हे पुत्र! यूयं कृष्णेन निर्विषया आज्ञप्ताः? ततः खलु ते पञ्च पाण्डवाः पाण्डुं राजानम् एवमवदन्-एवं खलु हे तात! वयममरकङ्कातः प्रतिनिवृत्ता लवणसमुद्रं ' दोन्निजोयणसय सहस्साइं ' द्वियोजनशतसहस्राणि द्विलक्षयोजनपरिमितं ' वीइवइत्ता ' व्यतिव्रजिताः-उल्लङ्घिताः। ततः खलु स कृष्णो-

आगए (उवागच्छित्ता) वहां आकर के (जेणेव पंडू) वे जहां पांडु राजा थे (तेणेव उवागच्छंति) वहां गये (उवागच्छित्ता) वहां जाकर (करयल०एवं वयासी) उन्हों ने अपने २ दोनों हाथों को जोड़कर उनसे इस प्रकार कहा-(एवं खलु ताओ!) हे पिताजी! सुनो-(अम्हे कण्हेणं णिव्विसया आणत्ता) हमलोगों को कृष्ण वासुदेव ने देश से निकल जने को कहा है (तएणं पंडुराया पंच पंडवे एवं वयासी) तब पांडु राजा ने उन पांचों पांडवों से इस प्रकार कहा-(कहण्णं पुत्ता तुब्भे कण्हेणं वासुदेवेणं णिव्विसया आणत्ता) हे पुत्रो! किस कारण को लेकर कृष्ण वासुदेव ने तुमलोगों को देश से बाहिर निकल जाने को कहा है (तएणं ते पंच पंडवा पंडुराया एवं वयासी) तब उन पांचों पांडवों ने पांडु राजा से इस प्रकार कहा-(एवं खलु ताओ! अम्हे अमरकंकाओ पडिणियत्ता लवणसमुद्दं दोन्नि जोयणसयसहस्साइं वीइवइत्ता) हे तात!

गच्छित्ता) त्यां आवीने (जेणेव पंडू) तेओ ज्यां पांडु राजा हता (तेणेव उवागच्छंति) त्यां गया (उवागच्छित्ता) त्यां जईने (करयल० एवं वयासी) तेमणे पोतपोताना बन्ने हाथो जोडीने तेमने आ प्रमाणे विनंती करी के (एवं खलु ताओ) हे पिता! सांभळो, (अम्हे कण्हेणं णिव्विसया आणत्ता) कृष्णवासुदेवे अमने देशथी बहार जता रहेवानी आज्ञा आपी छे. (तएणं पंडुराया पंच पंडवे एवं वयासी) त्यारे पांडु राजाए पांचे पांडवोने आ प्रमाणे कह्यु के-(कहण्ण पुत्ता तुब्भे कण्हेणं वासुदेवेणं णिव्विसया आणत्ता) हे पुत्रो! कृष्णवासुदेवे शा कारणथी तमने देशमाथी बहार जता रहेवानी आज्ञा आपी छे? (तएणं ते पंच पंडवा पंडुराया एवं वयासी) त्यारे ते पांचे पांडवोए पांडु राजाने आ प्रमाणे कह्यु के-(एवं खलु ताओ! अम्हे अमरकंकाओ पडिणियत्ता लवण-समुद्दं दोन्नि जोयणसयसहस्साइं वीइवइत्ता) हे पिता! सांभळो,

ऽस्मान् एवमवादीत्–गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः! गङ्गामहानदीमुत्तरत, यावत् तिष्ठत। ताव अहं एवं तहेव 'जाव चिट्ठामो' एवं यथा कृष्णवासुदेवस्य वाक्यं पूर्वमुक्तं तथैवात्र बोध्यम्–तावदहं सुस्थितं लवणाधिपतिं पश्यामीति। 'जाव चिट्ठामो' यावत्तिष्ठामः–अत्र यावच्छब्देनैवं योजनीयम्–ततः खलु वयं कृष्णवासुदेवेनैवमुक्ताः सन्तो नौकया गङ्गामहानदीमुत्तीर्य, कृष्णो बाहुभ्यां गङ्गा-महानदीमुत्तरितुं समर्थो न वेति विज्ञातुं तां नौकां संगोपितवन्तः, ततः कृष्णं प्रतीक्षमाणास्तिष्ठाम इति। ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः सुस्थितं लवणाधिपतिं दृष्ट्वा, 'तं चेव सव्वं' तदेव सर्वं–गङ्गामहानद्यास्तटे समागत्य, एकार्थिकां नाव-

---

सुनो–बात इस प्रकार है–जब हमलोग अमरकंका नगरी से पीछे आकर २, दो लाख योजन विस्तार वाले लवणसमुद्र को पार कर चुके (तएणं) तब (से कण्हे अम्हं एवं वयासी) उन कृष्ण वासुदेव ने हमलोगों से इस प्रकार कहा–(गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! गंगा महाणइं उत्तरह जाव चिट्ठह–ताव–अहं एवं तहेव जाव चिट्ठामो) हे देवानुप्रियो! तुम लोग चलो और गंगा महानदी को पारकरो–तब तक मैं सुस्थित देव से मिलकर और आज्ञा प्राप्तकर आता हूँ। कृष्ण वासुदेव द्वारा इस प्रकार आज्ञप्त हुए हमलोगों ने नौका से गंगा महानदी को पार करके वहीं पर उस नौका को छुपा दिया–इस अभिप्रायसे कि देखें कृष्ण वासुदेव अपने हाथों से तैर कर इस गंगा महानदी को पार कर ने में समर्थ हो सकते हैं या नहीं। नौका को छिपाकर हमलोग वहीं पर उनकी प्रतीक्षा करते हुए ठहरे। (तएणं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं

વાત આ પ્રમાણે છે કે જ્યારે અમે અમરકંકા નગરીથી પાછા વળતાં ૨ લાખ યોજન જેટલા વિસ્તારવાળા લવણ સમુદ્રને પાર કરી ચૂકયા (तएणं) ત્યારે (से कण्हे अम्हं एवं वयासी) તે કૃષ્ણવાસુદેવે અમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે–(गच्छहणं तुब्भे देवाणुप्पिया! गंगा महाणइ उत्तरह जाव चिट्ठह–ताव अहं एवं तहेव जाव चिट्ठामो) હે દેવાનુપ્રિયો! તમે જાઓ અને ગંગા-મહાનદીને પાર કરો તેટલામાં હું સુસ્થિત દેવને મળીને અને તેમની પાસેથી આજ્ઞા મેળવીને આવું છું. આ પ્રમાણે કૃષ્ણવાસુદેવ વડે આજ્ઞાપિત થયેલા અમે નૌકા વડે ગંગા મહાનદીને પાર કરીને ત્યાં જ તે નૌકાને છુપાવી દીધી. નૌકાને છુપાવવા પાછળ અમારો એ જાતનો આશય હતો કે કૃષ્ણવાસુદેવ પોતાના હાથોથી તરીને ગંગા મહાનદીને પાર કરી શકે છે કે નહિ? નૌકાને છુપાવીને અમે ત્યાં જ તેમની પ્રતીક્ષા કરતા રોકાઈ ગયા. (तएणं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं

महष्ट्वा एकेन बाहुना रथं सतुरगंससारथिं गृहीत्वा, एकेन बाहुना गङ्गामहानदी मुत्तीर्य, समागतः। 'नवरं कण्हस्स चिंता न बुज्झइ' नवरं कृष्णस्य चिन्ता न बुध्यते नवरं=विशेषस्तु हे तात ! नौकायां संगोपितायां सत्यां कृष्णः केनोपायेन गङ्गामहानदीं तरिष्यति इति चिन्ताऽस्माभिर्न बुध्यते=न क्रियतेस्म, अनेनापराधेन 'जाव अम्हे णिव्विसए आणवेइ' यावत्-रथांश्चूर्णीकृत्याऽस्मान् निर्विषयान् आज्ञापयति। ततस्तदनन्तरं स पाण्डू राजा तान् पञ्चपाण्डवानेवमवादीत्- 'दुट्ठुणं' दुष्ठु=अशोभनं खलु हे पुत्राः! तं युष्माभिः कृष्णस्य वासुदेवस्य विप्पियं' विप्रियम्-अनिष्टम् कुर्वद्भिः, ततः खलु स पाण्डू राजा कुन्तीं देवीं शब्दयति, शब्दयित्वा, एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिये ! द्वारवतीं

दट्ठुण तंचेव सव्वं-नवरं कण्हस्स चिंत्ता न जुज्जति जाव अम्हे णिव्विसये आणवेइ) बाद में कृष्ण वासुदेव लवणसमुद्राधिपति सुस्थित देव से मिलकर ज्यों ही गंगा महानदी के तट पर आये-तो उन्हें वह नौका नहीं मिली-इस कारण वे १ एक हाथ से तुरग एवं सारथि युक्त रथ को ले दूसरे हाथ से गंगा महानदी को तैर कर जहां हमलोग थे-वहां आ गये। "कृष्णजी किस तरह गंगा महानदी को पार करेंगे" यह विचार हमलोगों ने नौका को छिपाते समय नहीं किया। इसी अपराध से उन्हों ने हमारे रथों को चकना चूर कर देश से बाहिर निकल जाने के लिये आज्ञा दी है। (तएणं से पंडुराया ते पंच पंडवा एवं वयासी-दुट्ठुणं पुत्ता ! कयं कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणेहिं-तएणं से पंडुराया कोंतिं देविं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुमं

लवणाहिवइं दट्ठुण तं चेव सव्वं-नवरं कण्हस्स चित्ता न जुज्जति जाव अम्हे णिव्विसये आणवेइ) ત્યારપછી કૃષ્ણવાસુદેવ લવણ સમુદ્રના અધિપતિ સુસ્થિત-દેવને મળીને જ્યારે ગંગા મહાનદીના કિનારા ઉપર આવ્યા ત્યારે તેમને નૌકા જડી નહિ. ત્યારે તેઓ એક હાથમાં ઘોડા અને સારથિ સહિત રથને ઉચકીને બીજા હાથથી ગંગા મહાનદીને તરીને જ્યાં અમે હતા ત્યાં આવી ગયા. ' કૃષ્ણવાસુદેવ કેવી રીતે ગંગા મહાનદીને પાર કરશે " નૌકાને છુપાવતાં અમે આ વિષે વિચાર જ કર્યો નહોતો. આ અપરાધથી તેમણે અમારા રથોને નષ્ટ કરી નાખ્યા અને અમને દેશની બહાર જતા રહેવાની આજ્ઞા કરી છે.

(तएणं से पंडुराया ते पंच पंडवे एवं वयासी-दुट्ठणं पुत्ता ! कयं कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणेहिं-तएणं से पंडुराया कोंतिं देविं सद्दावेइ, सद्दा-

नगरीं, कृष्णस्य वासुदेवस्य निवेदय, एवं खलु हे देवानुप्रियाः! युष्माभिः पञ्च पाण्डवा निर्विषयाः देशनिष्कासिताः आज्ञप्ताः, यूयं च खलु हे देवानुप्रियाः! दक्षिणार्धभरतस्य स्वामिनः। 'तं' तत्=तस्मात् संदिशन्तु=कथयन्तु हे देवानुप्रियाः! ते पञ्च पाण्डवाः कतरां दिशं विदिशं वा गच्छन्तु? भवतामेव सर्वे देशाः, तर्हि इमे कुत्र गमिष्यन्तीति कथयन्तु भवन्तः। ततः खलु सा कुन्ती पाण्डुना राज्ञैवमुक्ता सती हस्तिस्कन्धं दूरोहति-आरोहयति-दूरुह्य 'जहाहेट्ठा'

देवाणुप्पिया! बारवइं कण्हस्स वासुदेवस्स निवेदेहिं एवं खलु देवाणुप्पिया! तुम्हे पंच पंडवा णिव्विसया आणत्ता, तुमं च णं देवाणुप्पिया! दाहिणड्ढभरहस्स सामी, तं संदिसंतु णं देवाणुप्पिया! ते पंच पंडवा कयरं दिसिं वा विदिसं वा गच्छंतु?) तब पांडु राजा ने उन पांचों पांडवों से इस प्रकार कहा तुम लोगों ने यह सुन्दर काम नहीं किया जो इस प्रकार से कृष्ण वासुदेव का अनिष्ट किया-उन्हें नहीं रुचने वाला काम किया इस प्रकार कहकर पांडु राजा ने उसी समय कुंती देवी को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिये! तुम द्वारावती नगरी में कृष्ण वासुदेव के पास जाओ और उनसे निवेदन करो -कि आपने पांच पांडवों को देश से बाहिर निकल जानेके लिये आज्ञा दी है-सो हेदेवानुप्रिय! आप दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र के अधिपति हैं-अतः कहें कि वे कौनसी दिशा अथवा विदिशा की ओर जावें। जब आपके ही सर्व देश हैं-तो ये कहां जावें आप कहें। (तएणं सा कोंती

वित्ता एव वयासी-गच्छहइं णं तुमं देवाणुप्पिया! बारव कण्हस्स वासुदेवस्स निवेदेहिं एवं खलु देवाणुप्पिया! तुम्हे पंच पंडवा णिव्विसया आणत्ता, तुमं च णं देवाणुप्पिया! दाहिणड्ढभरहस्स सामी, तं संदिसंतु णं देवाणुप्पिया! ते पंच पंडवा कयरं दिसिं वा विदिसं वा गच्छंतु?)

ત્યારે પાંડુ રાજાએ તે પાંચે પાંડવોને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે તમે લોકોએ કૃષ્ણવાસુદેવનું બુરૂં કરીને સારૂં કર્યું નથી તેમને અણગમતું કામ તમે કર્યું છે. આ પ્રમાણે કહીને પાંડુ રાજાએ તે જ વખતે કુંતી દેવીને બોલાવી બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયે! તમે દ્વારાવતી નગરીમાં કૃષ્ણવાસુદેવની પાંસે જાઓ અને તેમને વિનંતી કરો કે તમે પાંચે પાંડવોને દેશથી બહાર નીકળી જવાની આજ્ઞા આપી છે. હે દેવાનુપ્રિય! તમે દક્ષિણાર્ધ ભરતક્ષેત્રના અધિપતિ છો તો બતાવો કે તેઓ કઈ દિશા કે વિદિશા તરફ જાય. જ્યારે બધા દેશો તમારા જ છે ત્યારે બતાવો કે આ લોકો ક્યાં જાય?

यथा अधः, यथापूर्वं द्वारवतीमागता तथाऽत्रापि बोध्यम् यावत् संदिशन्तु-अत्र यावदित्यनेनैवं बोध्यम्-द्वारवतीं नगरीमागत्य कृष्णेन सत्कृता स्नाता कृतभोजना-सुखासनवरगताऽभवत् इति, ततस्तां कृष्णः पृच्छति संदिशन्तु=कथयन्तु खलु हे

पंडुणा एव वुत्ता समाणी, हत्थिखंधं दुरूहइ, दुरूहित्ता जहा हेट्ठा जाव संदिसंतु णं पिउत्था! किमागमणपओयणं? तएणं सा कोंती कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-एवं खलु पुत्ता! तुमे पंच पंडवा णिव्विसया आणत्ता, तुमं च णं दाहिणड्ढभरह जाव विदिसं वा गच्छंतु? तएणं से कण्हे वासुदेवे कोंतीदेविं एवं वयासी अपूईवयणा णं पिउत्था! उत्तम पुरिसा वासुदेवा, बलदेवा, चक्कवट्टी तं गच्छंतु णं देवाणुप्पिया! पंच पंडवा दाहिणिल्लं वेलाउलं तत्थ पंडुमहुरं णिवेसंतु ममं अदिट्ठसेवगा भवंतु त्ति कट्टु कोंतीदेविं सक्कारेइ, सम्माणेइ, जाव पडिविसज्जेइ)
पांडु के द्वारा इस प्रकार कही गई वह देवी हाथी पर चढी और चढ कर जिस प्रकार पहिले यह द्वारवती आई थी उसी तरह अब भी यह वहां पहुँची। यहां यावत् शब्द से इस प्रकार पाठका संबन्ध लगा लेना चाहिये-जब कुंती द्वारावती नगरी में आई-तब कृष्ण वासुदेवने उनका खूब मनमाना सत्कार किया। बडे ठाट बाट से उनका प्रवेशोत्सव मनाया-। कुंतीने स्नान आदि दैनिक कार्यों से निबट कर आनंद के साथ चतुर्विध आहार किया बाद में विश्राम के निमित्त सुखासन पर

(तएणं सा कोंती पडुणा एवं वुत्ता समाणि, हत्थिखंधं दुरुहइ, दुरूहित्ता जहा हेट्ठा जाव संदिसंतु णं पिउत्था। किमागमणपओयणं? तएणं सा कोंती कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-एव खलु पुत्ता! तुमे पच पंडवा णिव्विसया आणत्ता, तुमं च णं दाहिणड्ढ भरह जाव विदिसं वा गच्छंतु? तएणं से कण्हे वासुदेवे कोंती देविं एवं वयासी-अपूई वयणा णं पिउत्था उत्तमपुरिसा देवा, बलदेवा, चक्कवट्टी तं गच्छंतु ण देवाणुप्पिया! पंच पंडवा दाहिणिल्लं वेलाउलं तत्थ पडुमहुरं णिवेसंतु ममं अदिट्ठसेवगा भवंतु त्ति कट्टु कोंती देविं सक्कारेइ, सम्माणेइ, जाव पडिविसज्जेइ)

આ પ્રમાણે પાંડુ વડે આજ્ઞાપિત થયેલી કુંતી દેવી હાથી ઉપર સવાર થઈ અને સવાર થઈને પહેલાં જેમ તે દ્વારાવતી નગરી ગઈ હતી તેમજ અત્યારે પણ પહોંચી. અહીં યાવત્ શબ્દથી આ જાતનો પાઠ સમજવો જોઈએ કે જ્યારે કુંતી દ્વારાવતી નગરીમાં આવી ત્યારે કૃષ્ણવાસુદેવે તેમનો ખૂબ જ સત્કાર કર્યો ખાસુ જ ઠાઠથી તેમનો પ્રવેશોત્સવ ઉજવ્યો. કુંતીએ પણ સ્નાન વગેરે નિત્યકર્મોથી પરવારીને સુખેથી ચતુર્વિધ આહાર કર્યો. ત્યારપછી વિશ્રામ

पितृष्वसः ! किमागमनप्रयोजनम् ?, ततः खलु सा कुन्ती कृष्णं वासुदेवमेवमवादीत्—एवं खलु हे पुत्र ! त्वया पञ्च पाण्डवा निर्विषया आज्ञप्ताः त्वं च खलु दक्षिणार्धभरतस्य यावत् स्वामी, तत् कथय ते पञ्च पाण्डवाः कतरां दिशं विदिशं वा गच्छन्तु ?। ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कुन्तीं देवीमेवमवादीत्–' अपूइवयणा णं ' अपूतिवचनाः=सकृद्वचनाः खलु हे पितृष्वसः ! उत्तमपुरुषाः वासुदेवा बलदेवाश्चक्रवर्तिनः, ' त ' तत्–तस्मात् गच्छन्तु खलु हे देवानुप्रिये ! पञ्च पाण्डवाः ' दाहिणिल्लं ' वेलाऊलं ' दाक्षिणात्यं वेलाकूलं–दक्षिणसमुद्रतटम् , तत्र ' पंडुमहुरं ' पाण्डुमथुरां नगरीं ' णिवेसंतु ' निवेशयन्तु, ममादृष्टसेवका भवन्तु,

---

उन्होंने आराम किया। इतने में कृष्ण वासुदेव ने जब वे विश्राम कर चुकीं उन से पूछा–कहिये भुआ जी ! किस प्रयोजन को लेकर यहां आपका आगमन हुआ है तब कुंती ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा हे पुत्र ! आनेका प्रयोजन इस प्रकार है–तुमने जो पांचों पांडवों को अपने देश से बाहिर निकल जाने की आज्ञा दी है–सो इस विषय में यह पूछना है कि तुम तो दक्षिणार्ध भरत के अधिपति हो अतः हमें समझाइये कौनसी दिशा या विदिशा में जावें ? इस प्रकार कुंतीदेवींके मुखसे सुनकर कृष्ण वासुदेव ने उससे ऐसा कहा–हे भुआ जी–उत्तम पुरुष, वासुदेव, बलदेव, एवं चक्रवर्ती ये सब अपूतिवचन वाले होते हैं–जो कुछ कहते हैं वह एक ही बार कहते हैं–उसमें परिवर्तन नहीं होता है–इसलिये हे देवानुप्रिय ! पांचों पांडव दक्षिणसमुद्र पर जावें और वहां पांडु मथुरा नगरी को बसावें–स्थापित करें–और मेरे अदृष्ट सेवक

માટે તેમણે સુખાસન ઉપર આરામ કર્યો જ્યારે તેઓ સારી રીતે વિશ્રામ કરી ચૂકયા ત્યારે તેમને કૃષ્ણવાસુદેવે પૂછયું કે–બોલો, ફોઈબા, શા કારણથી તમે અહીં પધાર્યા છો ! ત્યારે કુંતીએ કૃષ્ણવાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે પુત્ર ! હું એટલા માટે આવી છું કે તમે પાંચે પાંડવોને પોતાના દેશમાંથી બહાર નીકળી જવાની આજ્ઞા કરી છે તો આ વિષે મારે આ વાતનું સ્પષ્ટીકરણ કરવું છે કે તમે તો દક્ષિણાર્ધ ભરતના અધિપતિ છો, તો આવી પરિસ્થિતિમાં તમે જ અમને બતાવો કે તેઓ કઈ દિશા કે વિદિશા તરફ જાય ? આ પ્રમાણે કુંતી દેવીના મુખથી બધી વાત સાંભળીને કૃષ્ણવાસુદેવે તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે ફોઈબા ! વાસુદેવ, બળદેવ અને ચક્રવર્તી આ બધા ઉત્તમ પુરૂષો અપૂતિ વચનવાળા હોય છે–તેઓ જે કંઈપણ કહે છે તે એકજ વાર કહે છે તેમાં કોઈ પણ જાતનો ફેરફાર થઈ શકતો નથી. એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયે ! પાચે પાંડવો દક્ષિણ સમુદ્ર તરફ જાય અને ત્યાં પાંડુ મથુરા

इति कृत्वा कुन्तीं देवीं सत्कारयति संमानयति, सत्कार्य, संमान्य यावद् विसर्जयति। ततः खलु सा कुन्ती देवी हस्तिनं समारुह्य हस्तिनापुरमागता यावत् पाण्डो राज्ञ एतमर्थं निवेदयति। ततः खलु पाण्डू राजा पञ्च पाण्डवान् शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूयं हे पुत्राः! 'दाहिणिल्लं वेलाऊलं' दाक्षिणात्यवेलाकूलं-दक्षिणसमुद्रतटं, तत्र खलु यूयं पाण्डुमथुरां नगरीं निवेशयत।

होकर रहे। इस प्रकार कहकर उन्हों ने कुंतीदेवी का सत्कार किया सन्मान किया। सत्कार सन्मान करके फिर उन्हें अपने यहां से विदा दिया। (तएणं सा कोंती देवी जाव पंडुस्स एयमट्ठं निवेदेइ, तएणं पंडू पंच पंडवे सद्दावेइ, सद्दाविता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे पुत्ता! दाहिणिल्लं वेलाउलं तत्थणं तुब्भे पंडुमहुरं णिवेसेह तएणं पंच पंडवा पंडुस्स रण्णो जाव तहत्ति पडिसुणेंति, सबलवाहणा हय गज० हत्थिणाउराओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वेयाली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंडुमहुरं नगरिं णिवेसेंति, निवेसित्ता तत्थ णं ते विउलभोगसमितिसमण्णागया यावि होत्था) वहां से हाथी के ऊपर बैठ कर कुंतीदेवी हस्तिनापुरसें आगई, यावत् पांडुराजासे कृष्णवासुदेव के कथितआदेश को उन्हों ने सुना दिया। इसके बाद पांडु राजा ने पांचों पांडवों को बुलाया-और बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा-हे पुत्रों-तुम यहां से दक्षिण दिग्वर्ती समुद्र तट पर जाओ और वहां पांडु मथुरा

નગરીને વસાવે અને મારા અદૃષ્ટ સેવકો થઈને ત્યાં નિવાસ કરે. આ પ્રમાણે કહીને તેમણે કુંતી દેવીનો સત્કાર કર્યો અને સન્માન કર્યું. સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તેમણે કુંતીદેવીને ત્યાંથી વિદાય કર્યાં.

(તएणं सा कोंती देवी जाव पंडुस्स एयमट्ठं निवेदेइ, तएणं पंडू पंच पंडवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह ण तुब्भे पुत्ता! दाहिणिल्लं वेलाऊल तत्थणं तुब्भे पडुमहुरं णिवेसेह तएणं पंच पंडवा पडुस्स रण्णो जाव तहत्ति पडिसुणेंति, सबलवाहणा हय गय० हत्थिणाउराओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वेयाली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंडुमहुरं नगरिं णिवेसेंति निवेसित्ता, तत्थणं ते विउलभोगसमितिसमण्णागया यावि होत्था)

ત્યાંથી હાથી ઉપર સવાર થઈને કુંતીદેવી હસ્તિનાપુર આવી ગયાં. યાવત્ કૃષ્ણવાસુદેવની જે કંઈ આજ્ઞા હતી તે પાંડુ રાજાને કહી સંભળાવી. ત્યારપછી પાંડુ રાજાએ પાંચે પાંડવોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે પુત્રો! તમે અહીંથી દક્ષિણ દિશા તરફના સમુદ્રના કિનારા ઉપર જાઓ અને ત્યાં પાંડુ-મથુરા નગરીને વસાઓ. પિતા પાંડુ રાજાની આ પ્રમાણે

ततः खलु पञ्च पाण्डवाः पाण्डो राज्ञो वचनं यावत्-'तहत्ति' तथाऽस्तु' इति कृत्वा प्रतिशृण्वन्ति = स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य सबलवाहनाः-सैन्ययानसहिताः, हयगजरथपदातिसंपरिवृताः, हस्तिनापुरात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव 'दाहिणिल्लं वेलाऊलं' दाक्षिणात्यं वेलाकूल तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य पाण्डुमथुरां नगरीं निवेशयन्ति निवेश्य तत्र खलु ते विपुलभोगसमिति समत्वागताश्चाप्यभवन् ॥ सू०३२ ॥

मूलम्-तएणं सा दोवई देवी अन्नया कयाइं आवण्णसत्ता जाया यावि होत्था, तएणं सा दोवई देवी णवण्हं मासाणं जाव सुरूवं दारगं पयाया सूमालणिव्वत्तबारसाहस्स इमं एयारूवं गुणनिप्फन्नं नामधिज्जं करेंति जम्हाणं अम्हं एस दारए पंचण्हं पंडवाणं पुत्ते दोवईए अत्तए तं होउ अम्हं इमस्स दारगस्स णामधेज्जं पंडुसेणे, तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो णामधेज्जं करेंति पंडुसेणत्ति, बावत्तरिं कलाओ जाव भोगसमत्थे जाए जुवराया जाव विहरइ, थेरा समोसढा परिसा निग्गया पंडवा निग्गया धम्मं सोच्चा एवं जं णवरं देवाणुप्पिया ! दोवइं देविं आपुच्छामो पंडुसेणं च

नगरी को बसाओ। पिता पांडु राजा की इस आज्ञा को उन पांचों पांडवों ने "तहत्ति" कहकर स्वीकार कर लिया। स्वीकार करके फिर वे हय, गज, रथ, एवं पदातिरूप चतुरंगिणी सेना से परिवृत होकर हस्तिनापुर नगर से निकले और निकलकर जहां दाक्षिणात्य वेलाकूल था वहां आये-वहां आकर उन्हों ने पांडु मथुरा नगरी को बसाया। बसाकर वहां के विपुल भोगों को भोगते हुए रहने लगे ॥ सू०३२ ॥

આજ્ઞાને તે પાંચે પાંડવોએ "તહત્તિ" કહીને સ્વીકારી લીધી. સ્વીકાર કરીને તેઓ ઘોડા, હાથી, રથ અને પાયદળવાળી ચતુરંગિણી સેનાની સાથે હસ્તિનાપુર નગરથી બહાર નીકળ્યા-અને નીકળીને જ્યાં દક્ષિણ દિશાનો સમુદ્રનો કિનારો હતો ત્યાં પહોંચ્યા, ત્યાં પહોંચીને તેમણે પાંડુ-મથુરા નગરી વસાવી. વસાવીને તેઓ ત્યાં પુષ્કળ કામભોગો ભોગવતાં રહેવા લાગ્યા. ॥ સૂત્ર ૩૨ ॥

कुमारं रज्जे ठावेमो तओ पच्छा देवाणुप्पिया! अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वयामो, अहासुहं देवाणुप्पिया!, तएणं ते पंच पंडवा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता दोवइं देविं सद्दावेंति सद्दावित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हेहिं थेराणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव पव्वयामो तुमं देवाणुप्पिए! किं करेसि?, तएणं सा दोवई देवी ते पंच पंडवे एवं वयासी-जइणं तुब्भे देवाणुप्पिया! संसारभउव्विग्गा पव्वयह ममं के अण्णे आलंबे वा जाव भविस्सइ?, अहंपि य णं संसारभउव्विग्गा देवाणुप्पिएहिं सद्धिं पव्वइस्सामि, तएणं ते पंच पंडवा पंडुसेणस्स अभिसेओ राया जाए जाव रज्जे पसाहेमाणे विहरइ, तएणं ते पंच पंडवा दोवई य देवी अन्नया कयाइं पंडुसेणं रायाणं आपुच्छंति, तएणं से पंडुसेणं राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो! देवाणुप्पिया! निक्खमणाभिसेयं जाव उवट्ठवेह पुरिससहस्सवाहिणीओ सिवियाओ जाव पच्चोरुहंति पच्चोरुहित्ता जेणेव थेरा तेणेव० आलित्ते णं जाव समणा जाया चोद्दस्स पुव्वाइं अहिज्जंति अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥सू०२२॥

टीका—'तएणं सा' इत्यादि। ततः खलु सा द्रौपदीदेवी अन्यदा कदाचित् 'आवण्णसत्ता' आपन्नसत्त्वा=गर्भवती जाता चाप्यभवत्। ततः खलु सा द्रौपदीदेवी नवसु मासेषु संपूर्णेषु सार्धाष्टमदिवसेषु व्यतिक्रान्तेषु सत्सु यावत् सुरूपं सुन्दरं दारकं=बालकं 'पयाया' प्रजाता=प्रजनितवती, किं भूतं दारकं-सूमाल=सुकुमारपाणिपादं, 'णिव्वत्तबारसाहस्स' निर्वृत्तद्वादशाहस्स-संप्राप्त द्वादशदिवसस्य दारकस्य इदमेतद्रूपं गुणनिष्पन्नं नामधेयं कुर्वन्ति यस्मात् खलु अस्माकमेष दारकः पञ्चानां पाण्डवानां पुत्रो द्रौपद्या आत्मजः, 'तं' तत्-तस्माद्

-:तएणं सा दोवई देवी इत्यादि।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (सा दोवई देवी) वह द्रौपदी देवी (अन्नया कयाइं) किसी एक समय (आवण्णसत्ता जाया यावि होत्था) गर्भावस्थासे संपन्न हुई। (तएणं सा दोवई देवी णवण्हं मासाणं जाव सुरूवं दारगं पयाया) जब गर्भ ९ नौमास ७॥ दिन का हो गया तब उस द्रौपदी देवी ने पुत्र को जन्म दिया। यह बालक बहुत ही अधिक सुन्दर था। (सूमालणिव्वत्तबारसाहस्सइमं एयारूवं गुणनिप्फन्नं नामधिज्जं करेंति जम्हाणं अम्हं एस दारए पंचण्हं पंडवाणं पुत्ते दोवईए अत्तए तं होउ अम्हं इमस्स दारगस्स णामधेज्जं पंडुसेणे) इसके करचरण आदि अवयव सब ही अधिक सुकुमार थे। जब बारहवां दिन लगा -तब माता पिताओं ने इस पुत्र का गुणनिष्पन्न होने से यह नाम रक्खा यस्मात्-यह पुत्र हम पांचो पांडवों का है तथा द्रौपदी की कुक्षि से

तएणं सा दोवई देवी इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तएणं) ત્યારપછી (सा दोवई देवी) તે દ્રૌપદી દેવી (अन्नया कयाइं) કોઈ એક વખતે (आवण्णसत्ता जाया यावि होत्था) સગર્ભા થઈ. (तएणं सा दोवई देवी णवण्हं मासाणं जाव सुरूवं दारगं पयाया) જ્યારે ગર્ભ નવ માસ ૭॥ દિવસનો થઈ ગયો ત્યારે તે દ્રૌપદી દેવીએ પુત્રને જન્મ આપ્યો, તે બાળક ખૂબ જ સુન્દર હતુ.

(सूमालणिव्वत्तबारसाहस्स इमं एयारूवं गुणनिप्फन्नं नामधिज्जं करेंति, जम्हाणं अम्हं एसदारए पंचण्हं पंडवाणं पुत्ते दोवईए अत्तए तं होउ अम्हं इमस्स दारगस्स णामधेज्जे पंडुसेणे)

તેના હાથ પગ વગેરે બધા અવયવો ખૂબ જ સુકોમળ હતા. જ્યારે બારમો દિવસ આવ્યો ત્યારે માતા-પિતાએ તે પુત્રનું નામ તેના ગુણો વિષે વિચાર કરતાં આ પ્રમાણે રાખ્યું કે આ પુત્ર અમારા પાંચે પાંડવોનો છે,

भवतु अस्माकमस्य दारकस्य नामधेयं ' पाण्डुसेन ' इति । ततः खलु तस्य दारकस्याम्बापितरौ नामधेयं कुर्वन्ति-'पाण्डुसेन ' इति । ' बावत्तरिं कलाओ ' द्वासप्तति कलाः शिक्षिताः, यावद् भोगसमर्थो जातः, राजकन्यां परिणीय युवराजो यावत् मानुष्यकान् भोगान् भुञ्जानो विहरति-आस्ते ।

उत्पन्न हुआ है-अतः हमारे इस पुत्र का नाम पांडुसेन होना चाहिये (तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति पंडुसेणत्ति) इस ख्याल से उन्हों ने उस नवजात पुत्र का नाम पांडुसेन रख दिया। (बावत्तरिं कलाओ जाव भोगसमत्थे जाए जुवराया जाव विहरइ थेरा समोसढा, परिसा निग्गया, पंडवा निग्गया, धम्म सोच्चा एवं वयासी जं णवरं देवानुप्पिया! दोवइं देविं आपुच्छामो पंडुसेणं च कुमारं रज्जे ठावेमो तओ पच्छा देवानुप्पिया! अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वयामो) पांडुसेन कुमार को ७२ कलाओं में निपुण बनाने के लिये माता पिताने उसे कलाचार्य के पास भेज दिया। धीरे २ वह ७२, कलाओं में निष्णात बन गया। यावत् भोग भोगने के लायक अवस्था संपन्न भी हो गया। राजकन्याओं के साथ इसका वैवाहिक संबन्ध कर के पिताओं ने इसे युवराज पद प्रदान भी कर दिया-यावत् यह मनुष्यभव संबन्धी काम सुखों को अनुभव करता हुआ अपने समय को आनन्द के साथ

તેમજ દ્રૌપદી દેવીના ગર્ભથી તેનો જન્મ થયો છે, એટલા માટે અમારા આ પુત્રનું નામ પાંડુસેન હોવું જોઈએ.

(तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति पंडुसेणत्ति) આ વિચારથી તેમણે તે નવજાત પુત્રનું નામ પાંડુસેન રાખ્યું.

(बावत्तरिं कलाओ जाव भोगसमत्थे जाए जुवराया जाव विहरइ, थेरा समोसढा, परिसा निग्गया, पंडवा निग्गया, धम्मं सोच्चा एवं वयासी जं णवरं देवानुप्पिया! दोवइं देविं आपुच्छामो पंडुसेणं च कुमारं रज्जे ठावेमो तओपच्छा देवाणुप्पिया! अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वयामो)

પાંડુસેન કુમારને ૭૨ કળાઓમાં નિપુણ બનાવવા માટે માતાપિતાઓએ કલાચાર્યની પાસે મોકલ્યો. આમ ધીમે ધીમે તે ૭૨ કળાઓમાં નિષ્ણાત બની ગયો. યાવત્ તે સંસારના ભોગો ભોગવવા યોગ્ય અવસ્થાવાળો પણ થઈ ગયો. રાજકન્યાઓની સાથે લગ્નો કરાવીને પિતાઓએ તેને યુવરાજ પદ પણ સોંપી દીધું. યાવત્ તે મનુષ્ય-ભવ સંબંધી કામસુખોને અનુભવતો પોતાના વખતને સુખેથી પસાર કરવા લાગ્યો. એક વખતની વાત છે કે પાંડુ-મથુરા નગરીમાં

अथ कदाचित् तत्र-' थेरा समोसढा ' स्थविराः समवसृताः, परिषन्निर्गता, पाण्डवा अपि स्थविराणां वन्दनार्थं निर्गताः, धर्मं श्रुत्वा ते पाण्डवाः प्रतिबुद्धाः सन्त एवमवदन्-यत् नवरं हे देवानुप्रियाः द्रौपदीं देवीमापृच्छामः, पाण्डुसेनं च कुमारं राज्ये स्थापयामः, ततः पश्चात् देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डाभूत्वा यावत् प्रव्रजामः प्रव्रज्यां गृह्णीमः, तदा स्थविरा ऊचुः-' अहासुहं देवाणुप्पिया ! ' हे देवानुप्रियाः यथासुखं=सुखं यथा भवति तथा कुरुत, अलं विलम्बेन, इति भावः । ततः खलु ते पञ्च पाण्डवा यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य द्रौपदीं देवीं शब्दयन्ति, शब्दयित्वा, एवमवदन्-एवं खलु हे देवानुप्रिये ! वयं स्थविरा-

---

व्यतीत करने लगा। एक समय की बात है कि पांडु मथुरा नगरी में स्थविरों का आगमन हुआ। स्थविरों का आगमन सुनकर नगरी का समस्त जन उनकी वंदना एवं धर्मोपदेश सुनने के निमित्त अपने २ घर से निकले पांचों पांडव भी निकले- परिषद् को आयी हुई देखकर स्थविरों ने उसे धर्म का उपदेश दिया। उपदेश श्रवण कर परिषद् पीछे चली गई। पांडव लोग उस धर्म के उपदेश का पानकर प्रतिबोध को प्राप्त हो गये-उसी समय उन्हों ने उन स्थविरों से कहा-हे देवानुप्रियों ! हमलोग द्रौपदी देवी को पूछकर और पांडुसेन कुमार को राज्य में स्थापित कर आप देवानुप्रियों के समीपमुंडित होकर यावत् प्रव्रज्या अंगीकार करना चाहते हैं। पांडवों की इस प्रकार हार्दिक भावना देखकर उन स्थविरों ने पांडवों से इस प्रकार कहा-(अहासुहं देवाणुप्पिया ! तएणं ते पंच पंडवा जेणेव सएगिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोवइं देविं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया !

સ્થવિરો પધાર્યા સ્થવિરોના આગમનની જાણ થતા નગરીના બધા લોકો તેમની વંદના તેમજ તેમની પાસેથી ધર્મોપદેશ સાંભળવા માટે પોતપોતાના ઘેરથી નિકળ્યા, પાંચે પાંડવો પણ ત્યાં પહોંચ્યા પરિષદને આવેલી જોઈને સ્થવિરોએ ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો. ઉપદેશ સાંભળીને પરિષદ જતી રહી પાંડવો તે ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળીને પ્રતિબોધિત થઈ ગયા. તેમણે તેજ સમયે સ્થવિરોને વિનંતી કરતાં કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! અમે દ્રૌપદી દેવીને પૂછી તેમજ પાંડુસેન કુમારને રાજ્યાસને અભિષિક્ત કરીને તમારી પાસે મુંડિત થઈને યાવત્ પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરવાની અભિલાષા રાખીએ છીએ. પાંડવોની આ જાતની હાર્દિક ઈચ્છા જાણીને તે સ્થવિરોએ તે પાંચે પાંડવોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-

(अहासुहं देवाणुप्पिया ! तएणं ते पंच पंडवा जेणेव सए गिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोवइं देविं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी, एवं

णामन्तिके धर्मं श्रुतवन्तो यावत् प्रव्रजामः, त्वं हे देवानुप्रिये! किं करोषि किं करिष्यसि ?। ततः खलु सा द्रौपदी तान् पञ्च पाण्डवान् एवमवादीत्-यदि खलु यूयं हे देवानुप्रियाः! संसारभयोद्विग्नाः=जन्ममरणादि दुःखाद् भीताः सन्तो यावत् प्रव्रजथ, मम कोऽन्य आलम्बो वा यावद् भविष्यति ?, अहमपि च खलु संसारभयोद्विग्ना देवानुप्रियैः सार्धं प्रव्रजिष्यामि, ततः खलु ते पञ्च पाण्डवाः पाण्डुसेनस्य अभिषेकं=राज्याभिषेकं कृत्वा स्वराज्ये स्थापितवन्तः, यावद् राजा जातः, यावद् राज्यं प्रसाधयन्=पालयन् विहरति=आस्तेस्म।

अम्हेहिं थेराणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव पव्वयामो-तुमं देवाणुप्पिए! किं करेसि) हे देवानुप्रियों! जिस प्रकार तुम्हें सुख मिले वैसा तुम करो! अच्छे काम में विलम्ब मत करो। इसके बाद-वे पांचों पांडव जहां अपना घर था वहां आये-वहां आकर के उन्हों ने द्रौपदी देवी को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिये! सुनो बात इस प्रकार है-हमलोगों ने स्थविरोंके पास धर्मका श्रवण किया है। अतः हमलोगों की भावना मुंडित होकर उनके पास प्रव्रजित होने की है। अब-तुम्हारी भावना क्या है-हे देवानुप्रिये कहो तुम हमारे बाद क्या करोगी-(तएणं सा दोवई देवी ते पंच पंडवे एवं वयासी-जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया! संसारभउव्विग्गा पव्वयह ममं के अण्णे आलंबे वा जाव भविस्सइ ? अहं पि य णं संसारभउव्विग्गा देवाणुप्पिएहिं सद्धिं पव्वइस्सामि, तएणं ते पंच पंडवा पंडुसेणस्स अभिसेओ जाव राया जाए, जाव रज्जं पसाहे

खलु देवाणुप्पिया। अम्हेहिं थेराणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव पव्वयामो तुमं देवाणुप्पिए। किं करेसि)

હે દેવાનુપ્રિયો! જેમ તમને સુખ મળે તેમ કરો, સારા કામમાં મોડું કરો નહિ ત્યારપછી તેઓ પાંચે પાંડવો જ્યાં પોતાનું ઘર હતું ત્યાં આવ્યા. ત્યાં આવીને તેમણે દ્રૌપદી દેવીને બોલાવી. બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયે! સાંભળો, વાત એવી છે કે અમોએ સ્થવિરોની પાસેથી ધર્મનું શ્રવણ કર્યું છે, એટલા માટે અમારી ઇચ્છા મુંડિત થઇને તેમની પાસેથી પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરવાની છે હવે તમારી શી ઇચ્છા છે? હે દેવાનુપ્રિયે! અમને કહો. અમે પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરી લઇશું ત્યારબાદ તમે શું કરશો?

(तएणं सा दोवई देवी ते पंच पंडवे एवं वयासी-जइणं तुब्भे देवाणुप्पिया! संसारभउव्विग्गा पव्वयह, ममं के अण्णे आलंबे वा जाव भविस्सइ? अहं पि य ण संसारभउव्विग्गा, देवाणुप्पिएहिं सद्धिं पव्वइस्सामि, तएणं ते पंच पंडवा पंडुसेणस्स अभिसेओ जाव राया जाए, जाव रज्ज पसाहेमाणे विहरइ)

ततः खलु ते पञ्च पाण्डवा द्रौपदी च देवी अन्यदा कदाचित् पाण्डुसेन राजानमापृच्छन्ति, ततः खलु स पाण्डुसेनो राजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा, एवमवादीत्–क्षिप्रमेव भो ! देवानुप्रियाः! निष्क्रमणाभिषेकं=दीक्षोपयोगवस्तूनि यावद् उपस्थापयत, पुरुषसहस्रवाहिनीः शिबिका उपस्थापयत, 'यावत् प्रत्यवरोहन्ति=अत्र यावच्छब्देनेदं बोध्यम्, ततः पाण्डुसेनस्य राज्ञोवचनमाकर्ण्य ते

माणे विहरइ) इस प्रकार पांडवो का कहना सुनकर द्रौपदी देवी ने उन पांचो पांडवों से इस प्रकार कहा–हे देवानुप्रियों! तुमलोग यदि संसार भय से उद्विग्न होकर प्रव्रजित होना चाहते हो, तो फिर मेरे लिये आप के सिवाय और कौन दूसरा आलंबन अथवा आधार होगा। अतः मैंभी आप देवानुप्रियों के साथ संसार भय से उद्विग्न होकर दीक्षित होऊँगी। इस प्रकार द्रौपदी देवी का कथन सुनकर उन पांचो पांडवों ने पांडुसेन कुमार का राज्याभिषेक करके उसे राज्यपद में स्थापित किया। इस तरह पांडुकुमार राजा हो गया। यावत् राज्य का वह अच्छी तरह पालन करने लगा। (तएणं ते पंच पंडवा दोवईय देवी अन्नया कयाइं पंडुसेणरायाणं आपुच्छंति, तएणं से पंडुसेणे राया कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता, एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! निक्खमणाभिसेयं जाव उवट्ठवेह, पुरिससहस्सवाहणीओ सिवियाओ उवट्ठवेह, जाव पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता जेणेव थेरा उवा-

---

આ પ્રમાણે પાંડવોનું કથન સાંભળીને દ્રૌપદી દેવીએ તે પાંચે પાંડવોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે જ્યારે સંસારભયથી ઉદ્વિગ્ન થઈને પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરવા ઇચ્છો છો ત્યારે તમારા વગર મારા માટે આ સંસારમાં બીજું કયુ આલંબન અથવા તો બીજો કયો આધાર થશે? એટલા માટે હું પણ તમારી સાથે સંસારભયથી ઉદ્વિગ્ન થઈને દીક્ષા ગ્રહણ કરવા ઈચ્છું છું. આ પ્રમાણે દ્રૌપદી દેવીનું કથન સાંભળીને તે પાંચે પાંડવોએ પાંડુસેન કુમારનો રાજ્યાભિષેક કરીને તેને રાજ્યાસને બેસાડી દીધો. આ પ્રમાણે પાંડુસેન કુમાર રાજા થઈ ગયો યાવત તે રાજ્યનું સારી રીતે રક્ષણ કરવા લાગ્યો..

(तएणं ते पंच पंडवा दोवईय देवी अन्नया कयाइं पंडुसेणरायाणं आपुच्छंति, तएणं से पंडुसेणे राया कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी, खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! निक्खमणाभिसेयं जाव उवट्ठवेह, पुरिससहस्सवाहणीओ सिवियाओ उवट्ठवेह, जाव पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता जेणेव थेरा तेणेव उवाग० आलित्तेणं जाव समणा जाया, चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जंति, अहिज्जित्ता बहूणि

कौटुम्बिकपुरुषास्तथास्तु' इत्युक्त्वा तथैव यावदुपस्थापयन्ति, तदा ते पञ्च पाण्डवाः पुरुषसहस्रवाहिनीः शिबिका आरुह्य, पाण्डुमथुराया नगर्या मध्यमध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य शिविकाभ्यः प्रत्यवरोहन्ति=प्रत्यवतरन्ति। प्रत्यवरुह्य, 'जेणेव' यत्रैव स्थविरास्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य एवमवादिषुः-' आलित्ते णं जाव समणा

गच्छइ आलित्तेणं जाव समणा जाया, चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जंति, अहिज्जित्ता, बहूणि वासाइं छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति) इसके बाद पांचो पांडवों ने और द्रौपदी देवी ने किसी एक समय पांडुसेन राजा से दीक्षित होने के लिये पूछा। तब पांडुसेन राजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया बुलाकर उनसे ऐसा कहा-भो देवानुप्रियो! तुमलोग शीघ्र ही दीक्षा में उपयोग आनेवाली वस्तुओं को लाकर उपस्थित करो-तथा पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं को भी उपस्थित करो-इस प्रकार पांडुसेन राजा के बचन सुनकर उन कौटुम्बिक पुरुषों ने "तथास्तु" कहकर उनकी आज्ञा को स्वीकार कर लिया-और दीक्षा में उपयोगी समस्त सामग्री को एवं पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं को लाकर उपस्थित कर दिया। तब वे पांचो पांडव उन पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं पर आरूढ होकर पांडु मथुरा नगरी के बीच से होकर निकले। वहां से निकलकर वे जहां स्थविर ठहरे हुए थे-वहां-आये-वहां आकर सबके सब शिबिकाओं से

वासाइं छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति)

ત્યારપછી પાંચે પાંડવોએ અને દ્રૌપદી દેવીએ કોઈ એક વખતે પાંડુસેન રાજાને દીક્ષા ગ્રહણ કરવા માટે પૂછ્યું. ત્યારે પાંડુસેન રાજાએ કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે લોકો દીક્ષા વખતે ઉપયોગમાં આવનારી બધી વસ્તુઓ જલ્દી લઇ આવો તેમજ પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખી પણ લઇ આવો. આ પ્રમાણે પાંડુસેન રાજાના વચન સાંભળીને તે કૌટુંબિક પુરુષોએ 'તથાસ્તુ' કહીને તેમની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી અને દીક્ષા માટે ઉપયોગી એવી બધી વસ્તુઓ તેમજ પુરુષ-સહસ્રવાહિની પાલખી લઈ આવ્યા. ત્યારપછી તે પાંચે પાંડવો તે પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખીઓ ઉપર સવાર થઇને પાંડુ-મથુરા નગરીની વચ્ચે થઇને નીકળ્યા. ત્યાંથી નીકળીને તેઓ જ્યાં સ્થવિર હતા ત્યાં પહોંચ્યા, ત્યાં પહોંચીને તેઓ બધા પાલખીઓમાંથી નીચે ઉતર્યા, નીચે ઉતરીને સ્થવિરોની

जाया ' आदीप्तोऽयं लोकः खलु इत्यादि । यावद् श्रमणाः जाताः, चतुर्दशपूर्वाणि अधीयते स्म,अधीत्य बहूनि वर्षाणि षष्ठाष्टमदशम द्वादशैर्मासार्धमासक्षपणैस्तपोभिरात्मानं भावयन्तो विहरन्ति ॥ सू९ ३३ ॥

मूलम्—तएणं सा दोवई देवी सीयाओ पच्चोरुहइ जाव पव्वइया सुव्वयाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए दलयइ, इक्कारस अंगाइं अहिज्जइ बहूणि वासाणि छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं जाव विहरइ ॥ सू० ३४ ॥

टीका—' तएणं सा ' इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु सा द्रौपदी देवी शिबिकातः प्रत्यवरोहति प्रत्यवतरति, प्रत्यवतीर्य यावत् प्रव्रजिता—दीक्षां गृहीतवती । ' सुव्वयाए ' सुव्रतायै—सुव्रतानामधेयायै ' अज्जाए ' आर्यायै 'सिस्सिणीयत्ताए'

नीचे उतरे। नीचे उतरकर स्थविरों के पास पहुँचे। वहां पहुँचकर उन्हों ने स्थविरों से इस प्रकार कहा—हे भदंत! यह समस्त लोक आदीप्त—हो रहा है इत्यादिरूप से अपनी भावना प्रदर्शित कर यावत् वे श्रमण हो गये। चौदह पूर्वों का उन्हों ने अध्ययन किया। अध्ययन करके अनेक वर्षों तक षष्ठ, अष्टम, दशम, द्वादश, मास अर्धमास की तपस्याओं को वे करते हुए विचरने लगे ॥ सू० ३३ ॥

' तएणं सा दोवई ' इत्यादि।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (दोवई देवी) द्रौपदीदेवी (सीयाओ पच्चोरुहइ) अपनी शिबिका से नीचे उतरी—(जा पव्वइया, सुव्वयाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए दलयइ, इक्कारसअंगाइं अहिज्जइ, बहूणि वासाइं

પાસે પહોંચ્યા. ત્યાં પહોંચીને તેમણે સ્થવિરોને વિનંતી કરતાં આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ભદન્ત! આ સંપૂર્ણ જગત સળગી રહ્યું છે વગેરે રૂપથી પોતાની ભાવના પ્રકટ કરીને યાવત્ તેઓ શ્રમણ થઈ ગયા. ચૌદ પૂર્વોનું તેમણે અધ્યયન કર્યું, અધ્યયન કરીને ઘણાં વર્ષો સુધી તેઓ ષષ્ઠ, અષ્ટમ, દશમ, દ્વાદશ, માસ અર્ધમાસની તપસ્યાઓ કરતા રહ્યા. ॥ સૂત્ર ૩૩ ॥

तएणं सा दोवई इत्यादि—

ટીકાર્થ—(तएणं) ત્યારપછી (दोवई देवी) દ્રૌપદી દેવી (सीयाओ पच्चोरुहइ) પોતાની પાલખીમાં નીચે ઉતરી.

(जा पव्वइया, सुव्वयाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए दलयइ, इक्कारसअंगाइं

शिष्यातया ददाति पाण्डुसेनो राजा द्रौपदीं सुव्रतायै शिष्यारूपेण दत्तवानिति-भावः। एकादशाङ्गानि अधीते, बहूनि वर्षाणि षष्ठाऽष्टमदशमद्वादशैस्तपोभिर्यावदात्मानं भावयन्ती विहरति ॥सू०३४॥

मूलम्-तएणं थेरा भगवंतो अन्नया कयाई पंडुमहुराओ णयरीओ सहसंबवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमंति पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरंति, तेणं कालेणं तेणं समएणं अरिहा अरिट्ठनेमी जेणेव सुरट्ठाजणवए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सुरट्ठाजणवयंसि संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तएणं बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ०-एवं खलु देवाणुप्पिया! अरिहा अरिट्ठनेमी सुरट्ठाजणवए जाव वि०, तएणं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा अन्नमन्नं सद्दावेंति सद्दावित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! अरहा अरिट्ठनेमी पुव्वाणु० जाव विहरइ, तं सेयं खलु अम्हं थेरा आपुच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं वंदणाए गमित्तए

छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं जाव विहरइ) नीचे उतरकर यावत् वह भी प्रव्रजित हो गई। पांडुसेन राजा ने उसे-द्रौपदी को सुव्रता नाम की साध्वी के शिष्यारूप से प्रदान किया। द्रौपदी आर्या ने ग्यारह अंगों का अध्ययन किया। बाद में अनेक वर्षों तक छट्ठ अष्टम, दशम, द्वादश तपस्याओं से अपने आपको उसने भावित किया॥ सू०३४॥

अहिज्जइ, बहूणि वासाइं छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं जाव विहरइ)

નીચે ઉતરીને યાવત્ તે પણ પ્રવ્રજિત થઈ ગઈ પાંડુસેન રાજાએ દ્રૌપદીને સુવ્રતા નામની સાધ્વીને શિષ્યાના રૂપમાં અર્પિત કરી. દ્રૌપદી આર્યાએ અગિયાર અંગોનું અધ્યયન કર્યું. ત્યારપછી ઘણાં વર્ષો સુધી છઠ્ઠ, અષ્ટમ, દશમ, દ્વાદશ તપસ્યાઓથી પોતાના આત્માને તેણે ભાવિત કર્યો. ॥ સૂ ૩૪॥

अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति पडिसुणित्ता जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता थेरं भगवंतं वंदंति णमंसंति वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामो णं तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा अरहं अरिट्ठनेमिं जाव गमित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया ! तएणं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा थेरेहिं भगवंतेहिं अब्भणुन्नाया समाणा। थेरे भगवंते वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता थेराणं अंतियाओ पडिणिक्खमंति मासंमासेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं गामाणुगामं दूईज्जमाणा जाव जेणेव हत्थिकप्पे नयरे तेणेव उवा० हत्थिकप्पस्स बहिया सहसंबवणे उज्जाणे जाव विहरंति, तएणं ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा मासखमणपारणए पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेंति बीयाए एवं जहा गोयमसामी णवरं जुहिट्ठिल्लं आपुच्छंति जाव अडमाणा बहुजणसद्दं णिसामेंति, एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरहा अरिट्ठनेमी उज्जिंतसेलसिहरे मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं पंचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं कालगए जाव पहीणे, तएणं ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हत्थिकप्पाओ पडिणिक्खमंति पडिणिक्खमित्ता जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे जेणेव जुहिट्ठिल्ले अणगारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता भत्तपाणं पच्चक्खंति पच्चक्खित्ता गमणागमणस्स पडिक्कमंति पडि-

क्कमित्ता एसणमणेसणं आलोएंति आलोइत्ता भत्तपाणं पडिदंसेंति पडिदंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! जाव कालगए तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! इमं पुव्वगहियं भत्तपाणं परिट्ठवेत्ता सेत्तुंजं पव्वयं सणियं सणियं दुरूहित्तए 'संलेहणा झूसणा झूसियाणं' कालं अणवकंखमाणाणं विहरित्तएत्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति पडिसुणित्ता तं पुव्वगाहियं भत्तपाणं एगंते परिट्ठवेंति परिट्ठवित्ता जेणेव सेत्तुंजे पव्वए तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता सेत्तुजं पव्वयं दुरूहंति दुरूहित्ता जाव कालं अणवकंखमाणा विहरंति। तएणं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा सामाइयमाइयाइं चोद्दसपुव्वाइं० बहूणि वासाणि० दोमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसित्ता जस्सट्ठाए कीरइणग्गभावे जाव तमट्ठमाराहेंति तमट्ठमाराहित्ता अणंते जाव केवलवरणाणदंसणे समुप्पन्ने जाव सिद्धा॥ सू० ३३॥

टीका—'तएणं थेरा' इत्यादि। ततस्तदनन्तरं खलु स्थविरा भगवन्तोऽन्यदाकदाचित् पाण्डुमथुरातो नगरीतो सहस्राम्रवणादुद्यानात् प्रतिनिष्क्रामन्ति=निर्गच्छन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य निर्गत्य, बहिर्जनपदविहारं विहरन्ति।

—:तएणं थेरा भगवंता इत्यादि।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (थेरा भगवंतो) उन स्थविर भगवंतोने (अन्नया कयाइं) किसी एक समय (पंडुमहुराओ) पांडु मथुरा (णयरीओ) नगरी से (सहसंबवणाओ) सहस्राम्रवन नाम के (उज्जा-

---

तएणं थेरा भगवंता इत्यादि—

ટીકાર્થ—(तएणं) ત્યારબાદ (थेरा भगवंतो) તે સ્થવિર ભગવંતોએ (अन्नया कयाइं) કોઈ એક વખતે (पंडु महुराओ) પાંડુ મથુરા (णयरीओ) નગરીથી (सहसंबवणाओ) સહસ્રામ્રવન નામના (उज्जाणाओ) ઉદ્યાનમાં (पडि-

तस्मिन् काले तस्मिन् समयेऽर्हन् अरिष्टनेमिर्यत्रैव सौराष्ट्रजनपदस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सौराष्ट्रजनपदे संयमेन तपसाऽऽत्मानं भावयन् विहरति। ततः खलु बहुजनोऽन्योन्यमेवमाख्याति=वक्ति, एवं भाषते, एवं प्ररूपयति एवं प्रज्ञापयति–एवं खलु हे देवानुप्रिय! अर्हन् अरिष्टनेमिः सौराष्ट्रजनपदे यावद् विहरति। ततः खलु ते युधिष्ठिरप्रमुखाः पञ्चानगारा बहुजनस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वाऽन्योन्यं शब्दयन्ति, शब्दयित्वा. एवमवदन् ,एवं खलु हे देवानुप्रिय! अर्हन् अरिष्टनेमिः पूर्वा-

---

णाओ) उद्यान से (पडिणिक्खमंति) विहार किया (पडिणिक्खमित्ता) विहार करके (बहिया जणवयविहारं विहरंति) बाहिर के जनपदों में विचरने लगे (तेणं कालेणं तेणं समएणं अरिहा अरिट्ठनेमी जेणेव सुरट्ठा जणवए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरट्ठा जणवयंसि संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तएणं बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ) उस काल में और उस समय में अर्हंत अरिष्टनेमि प्रभु विहार करते हुए जहां सौराष्ट्र जनपद था–वहां आये वहां आकर के वे उस सौराष्ट्र जनपद में संयम और तप से अपने आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगे। जब वहां के अनेक लोगों को इसकी खबर हुई तब वे परस्पर में इस प्रकार कहने लगे (एवं खलु देवाणुप्पिया! अरिहा। अरिट्ठनेमी सुरट्ठा जणवए जाव वि० तएणं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोचा अन्न-

---

णिक्खमंति) વિહાર કર્યો. (पडिणिक्खमित्ता) વિહાર કરીને તેઓ. (बहिया जणवयविहारं विहरंति) બહારના જનપદોમાં વિહાર કરવા લાગ્યા.

(तेणं कालेणं तेणं समएणं अरिहा अरिट्ठनेमी जेणेव सुरट्ठा जणवए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरट्ठा जणवयंसि संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे एवमाइक्खइ)

તે કાળે અને તે સમયે અર્હંત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુ વિહાર કરતાં કરતાં જ્યાં સૌરાષ્ટ્ર જનપદ હતો ત્યાં આવ્યા. ત્યાં આવીને તેઓ તે સૌરાષ્ટ્ર જનપદમાં સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતાં વિચરણ કરવા લાગ્યા. જ્યારે ત્યાંના ઘણા લોકોને આ વાતની જાણ થઈ ત્યારે તેઓ પરસ્પર આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે—

(एवं खलु देवाणुप्पिया! अरिहा अरिट्ठनेमी सुरट्ठाजणवए जाव वि० तएणं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा अन्नमन्नं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया! अरिहा अरिट्ठनेमी

नुपूर्व्या=तीर्थकराणां मर्यादया यावद् विहरति, 'तं' तत्-तस्माद् 'सेयं' श्रेयः खलु अस्माकं यत् स्थविरान् आपृच्छ्याऽर्हन्तमरिष्टनेमिं वन्दनायै गन्तुम् । अन्योन्यस्य =परस्परस्यैतमर्थं सर्वे पञ्चानगाराः प्रतिशृण्वन्ति, स्वीकुर्वन्ति प्रतिश्रुत्य यत्रैव स्थविरा भगवन्तस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तान् स्थविरान् भगवतो वन्दन्ते नमस्यन्ति च वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादिषु:-इच्छामः खलु युष्माभिरभ्यनुज्ञाताः सन्तोऽर्हन्तमरिष्टनेमिं यावद् गन्तुम् । स्थविरा ऊचुः यथासुखं हे देवानुप्रिया !

मन्नं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरिहा अरिट्ठनेमी पुव्वाणु जाव विहरइ, तं सेयं खलु अम्हं थेरा आपुच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं वंदणाए गमित्तए) हे देवानुप्रियों ! सुनो-अर्हंत अरिष्टनेमि प्रभु तीर्थंकर परम्परानुसार विहार करते हुए यावत् सौराष्ट्र जनपद में आये हुए हैं। लोगों के मुख से इस बात को उन पांच युधिष्ठिर आदि अनगारो ने सुना-तब आपस में एक दूसरे को-बुलाया-और बुलाकर इस प्रकार कहा-देवानुप्रियो ! सौराष्ट्र जनपद में तीर्थंकर परम्परा के अनुसार भगवान् अरिष्टनेमि विहार कर रहे हैं-अतः हमलोगों को स्थविरों की आज्ञा लेकर अर्हंत अरिष्टनेमि को वंदना करने के लिये चलना बहुत अच्छा है-उचित है-(अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव थेरा भगवंतो, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-इच्छामो णं

पुव्वाणु० जाव विहरइ, तं सेयं खलु अम्हं थेरा आपुच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं वंदणाए गमित्तए)

હે દેવાનુપ્રિયો ! સાંભળો, અર્હંત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુ તિર્થંકર પરંપરા મુજબ વિહાર કરતાં યાવત્ સૌરાષ્ટ્ર જનપદમાં પધારેલા છે. લોકોના મુખથી આ વાતને તે પાંચે યુધિષ્ઠિર વગેરે અનગારોએ સાંભળી. ત્યારે તેઓએ પરસ્પર એક બીજાઓને બોલાવ્યા અને બોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! સૌરાષ્ટ્ર જનપદમાં તીર્થંકર પરંપરા મુજબ ભગવાન અરિષ્ટનેમિ વિહાર કરી રહ્યા છે એથી સ્થવિરોની આજ્ઞા મેળવીને અરિષ્ટનેમિને વંદન કરવા માટે અમારે જવું જોઈએ.

(अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव थेरा भगवंतो, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-इच्छामो णं तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा अरहं अरिट्ठनेमिं जाव गमित्तए

ततः खलु ते युधिष्ठिरप्रमुखाः पञ्चानगाराः स्थविरैर्भगवद्भिरभ्यनुज्ञाताः सन्तः स्थविरान् भगवतो वन्दन्ते नमस्यन्ति, वन्दित्वा, नमस्यित्वा स्थविराणामन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, मास-मासेन 'अणिक्खित्तेणं' अनिक्षिप्तेन=अन्तररहितेन तपः

तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा अरहं अरिट्ठनेमिं जाव गमित्तए अहासुहं देवाणुप्पिया! तएणं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा थेरेहिं भगवंतेहिं अब्भणुन्नाया समाणा थेरे भगवंते वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता थेराणं अंतियाओ पडिणिक्खमंति, मासं मासेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं गामाणुगामं दूईज्जमाणा जाव जेणेव हत्थिकप्पे नयरे तेणेव उवा० हत्थिकप्पस्स बहिया सहसंबवणे उज्जाणे जाव विहरंति-तएणं ते जुहिट्ठिल्लवज्जा चत्तारि अणगारा मासखमणपारणए पढमाए पोरसीए सज्झायं करेंति, बीयाए जहा गोयमसामी, णवरं जुहिट्ठिलं आपुच्छंति जाव अडमाणा बहुजणसद्दं णिसामेंति) इस प्रकार का परस्पर का यह विचार उन्हों ने स्वीकार कर लिया-स्वीकार करके फिर वे जहां स्थविर भगवंत थे-वहां गये-वहां जाकर उन्हों ने उन स्थविर भगवंतों को वंदना की नमस्कार किया। वंदना नमस्कार कर फिर उनसे इस प्रकार कहा हमलोग आप भगवंतों से आज्ञा प्राप्त कर अर्हंत नेमिनाथ प्रभु को वंदना करने के लिये सौराष्ट्र जनपद जाना चाहते हैं। तब उन स्थविर भगवंनों ने उनसे कहा हे देवानुप्रियों! यथासुखम्-तुम्हें जैसे सुख हो-वैसा करो इस प्रकार उनस्थविर भग

अहासुहं देवाणुप्पिया! तएणं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा, थेरेहिं भगवंतेहिं अब्भणुन्नाया समाणा थेरे भगवंते वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता थेराणं अंतियाओ पडिणिक्खमंति, मासंमासेणं अणिक्खेत्तेणं तवोकम्मेणं गामाणुगामं दूइज्जमाणा जाव जेणेव हत्थिकप्पे नयरे तेणेव उवा० हत्थिकप्पस्स बहिया सहसंबवणे उज्जाणे जाव विहरंति तएणं ते जुहिट्ठिल्लवज्जा चत्तारि अणगारा मासखमणपारणए पढमाए पोरसीए सज्झायं करेंति, बीयाए एवं जहा गोयमसामी, णवरं जुहिट्ठिलं आपुच्छंति जाव अडमाणा बहुजणसद्दं णिसामेंति)

આ રીતે તેઓએ એકબીજાના વિચારોને સ્વીકારી લીધા, સ્વીકારીને તેઓ જ્યાં સ્થવિર ભગવંત હતા ત્યાં ગયા. ત્યાં જઈને તેમણે તે સ્થવિર ભગવંતોને વંદન અને નમસ્કાર કર્યાં વંદન અને નમસ્કાર કરીને તેમને આ પ્રમાણે વિનંતી કરી કે અમે આપ ભગવંતની આજ્ઞા મેળવીને અર્હંત નેમિનાથ પ્રભુના વંદન માટે સૌરાષ્ટ્ર જનપદમાં જવા ઇચ્છીએ છીએ ત્યારે તે સ્થવિર ભગવંતોએ તેમને આ પ્રમાણે આજ્ઞા કરી કે હે દેવાનુપ્રિયો! 'યથા સુખમ્' તમને જે કામમાં આનંદ પ્રાપ્ત થાય તે કરો. આ પ્રમાણે તે સ્થવિર

कर्मणा ग्रामानुग्रामं 'दूइज्जमाणा' द्रवन्तः=गच्छन्तः, यावत् यत्रैव 'हत्थिकप्पे नयरे' हस्तिकल्पं नगरं तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य हस्तिकल्पस्य बहिः सहस्राम्रवणे उद्याने यावद् विहरन्ति। ततः खलु ते युधिष्ठिरवर्ज्जाश्चत्वारोऽनगारा मास क्षपणपारणके प्रथमायां पौरुष्यां स्वाध्यायं कुर्वन्ति, 'बीयाए' द्वितीयायां पौरुष्यां ध्यानं ध्यायन्ति तृतीयायां पौरुष्यामत्वरितमचपलमसंभ्रान्तसदोरकमुखवस्त्रिकां प्रतिलेखयन्ति, भाजनवस्त्राणि प्रतिलेखयन्ति, भाजनानि च-पात्राणि प्रमार्जयन्ति, भाजनान्यवगृह्णन्ति, गृहीत्वा एवं यथा गौतमस्वामी श्रमणं महावीरमापृच्छति नवरं-अयमत्र विशेषः अत्र चत्वारोऽनगाराः युधिष्ठिरमापृच्छन्ति यावत्

वंतों से आज्ञा प्राप्त कर वे युधिष्ठिर प्रमुख पांच अनगार उन स्थविर भगवंत को वंदना नमस्कार करके उनके पास से चले आये और निरन्तर मास मास खमण करते हुए एक ग्राम से दूसरे ग्राम में विहार करने लगे। इस तरह ग्रामानुग्राम विहार करते हुए वे पांचों अनगार जहां हस्तिकल्पनाम का नगर था वहां आये। वहां आकर वे हस्तिकल्प नगर के बाहिर सहस्राम्रवन उद्यान में जाकर ठहर गये। इसके बाद वे युधिष्ठिर के सिवाय चारों अनगार मासक्षपण के दिन प्रथम पौरुषी में स्वाध्याय करते, द्वितीय पौरुषी में ध्यान करते, और तृतीय पौरुषी में अत्वरित, अचपल एवं असंभ्रान्त होकर सदोरक मुखवस्त्रिकाकी प्रतिलेखना करते, भाजन और वस्त्रोंकी प्रतिलेखना करते-फिर उन्हें उठाते-और लेकर जिस प्रकार गौतम स्वामी श्रमण महावीर स्वामी से पूछकर गोचरी के लिये निकलते उसी प्रकार ये भी युधिष्ठिर से पूछ कर हस्ति

ભગવંતોની આજ્ઞા મેળવીને તે યુધિષ્ઠિર પ્રમુખ પાંચે અનગારો તે સ્થવિર ભગવંતોને વંદન તેમજ નમસ્કાર કરીને તેમની પાસેથી આવતા રહ્યા અને સતત માસ ખમણુ કરતાં એક ગામથી બીજે ગામ વિહાર કરવા લાગ્યા. આ રીતે ગ્રામાનુગ્રામ વિહાર કરતાં તે પાંચે અનગારો જ્યાં હસ્તિકલ્પ નામે નગર હતું ત્યાં આવ્યા. ત્યાં આવીને તેઓ હસ્તિકલ્પ નગરની બહાર સહસ્રામ્રવન ઉદ્યાનમાં જઇને મુકામ કર્યો. ત્યારબાદ તે યુધિષ્ઠિર સિવાયના ચારે અનગારો માસક્ષપણુ પારણાના દિવસે પ્રથમ પૌરૂષીમાં સ્વાધ્યાય કરતા, દ્વિતીય પૌરૂષીમાં ધ્યાન કરતા અને તૃતીય પૌરૂષીમાં ગોચરી માટે નીકળતી વખતે પણુ અચપળ અસંભ્રાત થઇને સદોરકમુખવસ્ત્રિકાની પ્રતિલેખના કરતા, ભાજન અને વસ્ત્રોની પ્રતિલેખના કરતા, ત્યારબાદ તેમને ઉપાડતા અને ઉપાડીને જેમ ગૌતમ સ્વામી શ્રમણુ ભગવાન મહાવીર સ્વામીની આજ્ઞા મેળવીને ગોચરી માટે નીકળતા તેમજ તેઓ પણુ યુધિષ્ઠિરની આજ્ઞા મેળવીને હસ્તિકલ્પ નગરમાં ઉચ્ચ, નીચ,

हस्तिकल्पे नगरे उच्चनीचमध्यमकुलानि ' अडमाणा ' अटन्तः बहुजनशब्दं निशामयन्ति-शृण्वन्ति=किं शृण्वन्तीत्याह-' एवं खलु हे देवानुप्रियाः ! अर्हन् अरिष्टनेमिः ' उज्जिंतसेलसिहरे ' उज्जयन्तशैलशिखरे-गिरनारपर्वतोपरिभागे मासिकेन भक्तेन भक्तप्रत्याख्यानेन पानकेन-पानीयरहितेन चतुर्विधाहारपरित्यागेनेत्यर्थः ' पञ्चहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं ' पञ्चभिः षट्त्रिंशताऽनगारशतैः=षट्त्रिंशदधिकपञ्चशतसंख्यकैरनगारैः सार्धं कालगतो यावत्-सिद्धोबुद्धः परिनिर्वृतः सर्वदुःखप्रहीणो जातः ' ।

' तएणं ' ति ' ततः खलु ते युधिष्ठिरवर्जाश्चत्वारोऽनगारा बहुजनस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा हस्तिकल्पाद् नगरात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव सहस्रा-

---

कल्प नगर में उच्च, नीच एवं मध्यम कुलों में गोचरी के लिये आये। उस समय इन्हों ने अनेक मनुष्यों के मुख से इस प्रकार समाचार सुने (एवं देवाणुप्पिया ! अरहा अरिट्ठनेमी उज्जितसेलसिहरे मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं पंचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं कालगए जाव पहीणे, तएणं ते जुहिट्ठिल्लवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हत्थिकप्पाओ पडिणिक्खमंति) देवानुप्रियों ! अर्हत अरिष्टनेमि ऊर्जयंतशैल शिखर पर-गिरनार पर्वत के ऊपर एक मास के चतुर्विध आहार के परित्यागरूप भक्तप्रत्याख्यान से ५३६ अनगारों के साथ कालगत यावत् सिद्ध, बुद्ध, परिनिर्वृत हो कर सर्व दुःखों से रहित हो गये हैं। इस प्रकार अनेक मनुष्यों के मुख से इस समाचार को सुनकर वे युधिष्ठिर वर्ज चारों अनगार उस हस्तिकल्पनगर से निकले (पडिनिक्खमित्ता जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे जेणेव

અને મધ્યમ કુલોમાં ગોચરી માટે આવ્યા. તે સમયે તેમણે ઘણા માણસોના મુખથી એ જાતના સમાચારો સાંભળ્યા કે—

(एवं देवाणुप्पिया ! अरहा अरिट्ठनेमी उज्जितसेलसिहरे मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं पंचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं कालगए जाव पहीणे, तएणं ते जुहिट्ठिल्लवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हत्थिकप्पाओ पडिणिक्खमंति)

હે દેવાનુપ્રિયો ! અર્હંત અરિષ્ટનેમિઊર્જયંત શૈલશિખર ઉપર-ગિરનાર પર્વત ઉપર-એક માસના ચારે જાતના આહારના પરિત્યાગ રૂપ ભક્ત પ્રત્યાખ્યાનથી ૫૩૬ અનગારોની સાથે કાળગત યાવત્ સિદ્ધ, બુદ્ધ, પરિનિવૃત થઇને સર્વ દુઃખોથી મુક્ત થઇ ગયા છે. આ પ્રમાણે ઘણા માણસોના મુખથી આ જાતના સમાચારો સાંભળીને તે યુધિષ્ઠિર વગરના ચારે અનગારો તે હસ્તિકલ્પ નગરથી નીકળ્યા.

म्रवणमुद्यानं यत्रैव युधिष्ठिरोऽनगारस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य भक्तपानं 'पच्च-क्खंति' प्रत्याख्यान्ति=प्रत्याख्याय 'गमनागमनस्स' गमनागमनं प्रतिक्रामन्ति ईर्यापथिकीं कुर्वन्ति प्रतिक्रम्य 'एसणमणेसणं' एषणामनेषणाम् आलोचयन्ति, आलोच्य भक्तपानं-प्रतिदर्शयन्ति-युधिष्ठिरस्य पुरोऽवस्थाप्य प्रतिदर्शयन्ति, प्रति-दर्श्य एवमवादिषुः-एवं खलु हे देवानुप्रिय! यावत् कालगतः=अर्हन् अरिष्टनेमि र्मोक्षंमाप्तः, 'तं' तस्मात् श्रेयः खलु अस्माकं हे देवानुप्रियाः! इमं पूर्वगृहीतं

जुहिट्ठिल्ले अणगारे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भत्तपाणं पच्च-क्खंति, पच्चक्खित्ता गमणागमणस्स पडिक्कमंति पडिक्कमित्ता एसणम-णेसणं आलोएंति, आलोइत्ता भत्तपाणं पडिदंसेंति पडिदंसित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! जाव कालगए तं सेयं खलु अम्हं देवा-णुप्पिया! इमं पुव्वगहियं भत्तपाणं परिट्ठवेत्ता सेत्तुंजं पव्वयं सणियं सणियं दुरुहित्तए) निकलकर वे जहां सहस्राम्रवन नाम का उद्यान था और उस में भी जहां युधिष्ठिर अनगार विराजमान थे, वहां आये। वहां आकर उन्हों ने उनकी साक्षी से भक्त प्रत्याख्यान करदिया और भक्त प्रत्याख्यान करके फिर उन्हों ने ईर्यापथ शुद्धि की। शुद्धि करके एषणा अनेषणा की आलोचना करके फिर उन्होंने लाये हुए उस आहार को युधिष्ठिर अनगार के समक्ष रख कर दिखलाया। दिखलाकर फिर वे इस प्रकार कहने लगे। हे देवानुप्रिय! अर्हन् अरिष्टनेमि मुक्ति को प्राप्त हो चुके हैं-इसलिये हे देवानुप्रिय! हमको अब यही उचित

(पडिनिक्खमित्ता जेणेव सहसंववणे उज्जाणे जेणेव जुहिट्ठिल्ले अणगारे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता भत्तपाणं पच्चक्खंति पचक्खित्ता गमणागमणस्स पडिक्कमंति, पडिक्कमित्ता एसणमनेसणं आलोएंति, आलोइत्ता भत्तपाणं पडिदंसेंति पडिदंसित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! जाव कालगए तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! इमं पुव्वगहियंभत्तपाणं परिट्ठवेत्ता सेत्तुंज पव्वयं सणियं सणियं दुरुहित्तए)

નીકળીને તેઓ જ્યાં સહસ્રામ્રવન નામે ઉદ્યાન હતું અને તેમાં પણ જ્યાં યુધિષ્ઠિર અનગાર હતા ત્યાં આવ્યા. ત્યાં આવીને તેમણે તેમની સામે ભક્ત પાનનું પ્રત્યાખ્યાન કરી દીધું પ્રત્યાખ્યાન કરીને તેમણે ઇર્યાપથની શુદ્ધિ કરી. શુદ્ધિ કરીને એષણા અને અનેષણા કરી, આલોચના કરી. આલોચના કરીને તેમણે લઇ આવેલા તે આહારને યુધિષ્ઠિર અનગારની સામે મૂકીને બતાવ્યો. બતાવ્યા બાદ તેઓ આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિય! અર્હંત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુએ મુક્તિ મેળવી છે એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિય!

भक्तपानं परिष्ठाप्य 'सेत्तुंजं' शत्रुंजयं-शत्रुंजयनामकं पर्वतं शनैः शनैर्दूरोहितुम्=आरोहितुम्, तथा-'संलेहणाझूसणाझूसियाणं' संलेखना जोषणाजुष्टानां=सलेखनायां कषायशरीरकृषीकरणे या जोषणा-प्रीतिः सेवा वा तया जुष्टाः-सेवितास्तेषां=संलेखनातपःकारिणामित्यर्थः-कालम्-अनवकाङ्क्षमाणानाम् - अनिच्छताम् विहर्त्तुम्, इति कृत्वाऽन्योन्यस्यैतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य तद् पूर्वगृहीतं भक्तपानम् एकान्ते=प्रासुके स्थाने परिष्ठापयन्ति, परिष्ठाप्य यत्रैव शत्रुंजयः पर्वतस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य शत्रुंजयं पर्वतं शनैः शनैर्दूरोहन्ति आरोहन्ति, दूरूह्य यावत्-कालमनवकाङ्क्षमाणा विहरन्ति।

है कि हम इस पूर्व गृहीत भक्त पान का परिष्ठापन कर शत्रुंजय नामके पर्वत पर धीरे धीरे चढे (संलेहणा झूसणा झूसियाणं कालं अणवकंखमाणाणं विहरित्तए त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता तं पुव्वगहियं भत्तपाणं एगंते परिट्ठवेंति, परिट्ठवित्ता जेणेव सेत्तुंजं पव्वए तेणेव उवागच्छंति) और वहां काय और कषाय को कृश करनेवाली संलेखना मरणाशंसा से रहित होकर प्रीति पूर्वक धारण करें इस प्रकार विचार करकेउन्हों ने परस्पर के इस विचार रूप अर्थ को स्वीकार कर लिया। स्वीकार करके फिर उस पूर्व गृहीत भक्त पान को उन्होंने एकान्त स्थान में परिष्ठापित कर दिया और परिष्ठापित करके वे सब जहां शत्रुंजय पर्वत था वहां चले गये (उवागच्छित्ता) वहां जाकर के (सेत्तुंजं पव्वयं दुरूहंति, दुरूहित्ता जाव कालं अणव-

હવે અમને એ જ વાત યોગ્ય લાગે છે કે અમે આ પૂર્વગૃહિત ભકતપાનનું પરિષ્ઠાપન કરીને શત્રુંજય નામના પર્વત ઉપર ધીમે ધીમે ચઢીએ.

(संलेहणा झूसणा झूसियाणं कालं अणवकंखमाणाणं विहरित्तए त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता तं पुव्वगहियं भत्तपाणं एगंते परिट्ठवेंति, परिट्ठवित्ता जेणेव सेत्तुंजं पव्वए तेणेव उवागच्छंति)

અને ત્યાં કાય અને કષાયને કૃશ કરનારી સંલેખનાને મરણાશંસાથી રહિત થઇને પ્રેમપૂર્વક ધારણ કરીએ. આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેમણે એક બીજાના આ વિચાર રૂપ અર્થને સ્વીકારી લીધો. સ્વીકાર કરીને તેમણે તે પૂર્વગૃહીત ભક્તપાનને એકાંત સ્થાને પરિષ્ઠાપિત કરી દીધું. અને પરિષ્ઠાપિત કરીને તેઓ સર્વે જ્યાં શત્રુંજય પર્વત હતો ત્યાં ચાલ્યા ગયા. (उवागच्छित्ता) ત્યાં જઇને—

(सेत्तुंजं पव्वयं दुरूहंति, दुरूहित्ता जाव कालं अणवकंखमाणा विहरंति,

ततः खलु ते युधिष्ठिरप्रमुखाः पञ्चानगाराः 'सामाइयमाइयाइं' सामायिकादीनि चतुर्दशपूर्वाणि अधीत्य बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयित्वा षष्ठाष्ठमादितपः कृत्वा द्विमासिकया संलेखनयाऽऽत्मानं 'झोसित्ता' जुष्ट्वा सेवित्वा यस्यार्थाय क्रियते नग्नभावो=निर्ग्रन्थभावः यावत् तमर्थमाराधयन्ति, आराध्य अनन्तम् अनन्तार्थविषयकं यावत् 'केवलवरणाणदंसणे' केवलवरज्ञानदर्शनं समुत्पन्नं यावत् सिद्धाः=सिद्धिगतिं प्राप्ता इत्यर्थः ॥ सू० ३५ ॥

कंखमाणा विहरंति, तएणं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा सामाइयमाइयाइं चोद्दसपुव्वाइं बहूणि वासाणि० दो मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसित्ता जस्सट्ठाए कीरइ, णग्गभावे जाव तमट्ठमारोहंति, तमट्ठमाराहित्ता अणंते जाव केवलवरणाणदंसणे समुप्पन्ने जाव सिद्धा) वे शत्रुंजय पर्वत पर चढे चढकर के उन्होंने मरणाशंसा से रहित होकर संलेखना धारण करली। इस तरह उन युधिष्ठिर प्रमुख पंच अनगारोंने सामायिक आदि चतुर्दश पूर्वोंका अध्ययन करके अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन करके तथा षष्ठ, अष्टम, आदि तपस्याओं को करके अन्त में दो मास की संलेखना से अपने आप की प्रीति पूर्वक सेवित किया और जिस निमित्त नग्न भाव-निर्ग्रंथ अवस्था धारण की थी उस अर्थ को उन्हों ने सिद्ध कर लिया। सिद्ध करके-आराधित कर के अनत अर्थ को विषय करने वाले केवलवरज्ञानदर्शन को उत्पन्नकर यावत् वे सिद्धि गति को प्राप्त हो गये॥ सूत्र ३५ ॥

तएणं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पच अणगारा सामाइयमाइयाइं चोद्दसपुव्वाइं० बहूणि वासाणि० दोमासियाए संलेहणाए अत्ताणे झोसित्ता जस्सट्ठाए कीरइ, णग्गभावे जाव तमट्ठमारोहंति, तमट्ठमाराहित्ता अणंते जाव केवलवरणाण दंसणे समुप्पन्ने जाव सिद्धा)

તેઓ શત્રુંજય પર્વત ઉપર ચઢયા અને ચઢીને તેમણે મરણાશંસાથી રહિત થઈને સંલેખના ધારણ કરી લીધી આ પ્રમાણે તે યુધિષ્ઠિર પ્રમુખ પાંચે અનગારોએ સામાયિક વગેરે ચતુર્દશ પૂર્વોનું અધ્યયન કરીને ઘણાં વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય-પર્યાયનું પાલન કરીને તેમજ ષષ્ઠ, અષ્ટમ વગેરે તપસ્યાઓને કરીને છેવટે બે માસની સંલેખનાથી પ્રેમપૂર્વક પોતાની જાતને સેવિત કરી અને જે નિમિત્તને લઈને નગ્નભાવ-નિર્ગ્રંથ અવસ્થા ધારણ કરી હતી તે અર્થને તેમણે સિદ્ધ કરી લીધો. સિદ્ધ કરીને આરાધિત કરીને અનંત અર્થને વિષયરૂપ બનાવનાર કેવળજ્ઞાન દર્શનને ઉત્પન્ન કરીને યાવત્ તેઓએ સિદ્ધગતિ મેળવી લીધી. ॥ સૂત્ર ૩૫ ॥

मूलम्—तएणं सा दोवई अज्जा सुव्वयाणं अज्जियाणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि० मासियाए संलेहणाए० आलोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा बंभलोए उववन्ना, तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता तत्थ णं दुवयस्स देवस्स दस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, से णं भंते ! दुवए देवे ताओ जाव महाविदेहे वासे सिज्झइ जाव काहिइ । एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं सोलमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥ सू० ३४ ॥ सोलसमं नायज्झयणं समत्तं ॥ १६ ॥

टीका—'तएणं सा' इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु सा द्रौपदी आर्या साध्वी सुव्रतानामार्यिकाणामन्तिके सामायिकादिकानि एकादशाङ्गानि अधीते, अधीत्य बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयित्वा मासिक्या संलेखनया आलोचित प्रतिक्रान्ता कालमासे कालं कृत्वा 'बंभलोए' पंचमे ब्रह्मलोके देवत्वेन 'उववन्ना'

'तएणं सा दोवई' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (सा दोवई अज्जा) उस द्रौपदी आर्याने (सुव्वयाणं अज्जियाणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ) सुव्रता आर्या के पास सामायिक आदि ११ अंगों का अध्ययन किया (अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि० मासियाए संलेहणाए० आलोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा बंभलोए उववन्ना) अध्ययन करके अनेक वर्ष तक श्रामण्य पर्याय का पालन कर एक मास की संलेखना

तएणं सा दोवई इत्यादि—

टीकार्थ-(तएणं) त्यारपछी (सा दोवई अज्जा) ते द्रौपदी आर्याએ (सुव्वयाणं अज्जियाणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एकारसअंगाइं अहिज्जइ) सुव्रता આર્યાની પાસે સામાયિક વગેરે ૧૧ અંગોનું અધ્યયન કર્યું.

(अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि० मासियाए संलेहणाए० आलोईय पडिक्कतां कालमासे कालंकिच्चा बंभलोए उववन्ना)

અધ્યયન કરીને ઘણાં વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનું પાલન કર્યું. ત્યાર-

उत्पन्ना, तत्र तस्मिन् देवलोके–खलु अस्त्येकेषां=केषांचिद्देवानाम् दशसागरोपमानि स्थितिः प्रज्ञप्ता, तत्र खलु द्रौपदेवस्यस्य दशसागरोपमानि स्थितिः प्रज्ञप्ता तत्र खलु गौतमः पृच्छति–हे भदन्त ! स खलु द्रौपदो देव आयुर्भवस्थितिक्षयेण 'ताओ' तस्माद् देवलोकाच्च्युत्वा कुत्रगमिष्यति कुत्रोत्पत्स्यते ? भगवान् माह–' जाव ' इति यावन्महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति, यावत् सर्वदुःखानामन्तं करिष्यति ।

से आलोचित प्रतिक्रान्त बन वे काल अवसर काल कर के पांचवें ब्रह्मलोक में देव की पर्याय से उत्पन्न हुई । (तत्थ णं अत्थे गइयाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थ णं दुवयस्स देवस्स दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, सेणं भंते ! दुवए देवे ताओ जाव महाविदेहे वासे सिज्झइ, जाव काहिइ । एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं सोलसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि) उस देवलोक में कितनेक देवों की दश सागर की स्थिति प्रज्ञप्त हुई है। सो वहां द्रौपदी देव की दश सागर की स्थिति हुई। अब गौतम पूछते हैं हे भदंत ! वह द्रौपदी देव आयु एवं भवस्थिति के क्षय होने पर वहां से चव कर कहां जावेगा–कहां उत्पन्न होगा? उत्तर में भगवान कहते हैं–हे गौतम ! वह द्रौपदी देव वहां से चव कर महाविदेह क्षेत्र में उत्पन्न होगा और वहीं से सिद्ध बनेगा यावत् समस्त दुःखों का अंत करेगा।

પછી એક માસની સંલેખનાથી આલોચિત પ્રતિક્રાંત બનીને તેઓ કાળ અવસરે કાળ કરીને પાંચમા બ્રહ્મલોકમાં દેવના પર્યાયથી જન્મ પામી.

(तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थ णं दुवयस्स देवस्स दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता, सेणं भंते ! दुवए देवे ताओ जाव महाविदेहे वासे सिज्झइ, जाव काहिइ । एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं सोलमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि)

તે દેવલોકમાં કેટલાક દેવોની દશ સાગરની સ્થિતિ પ્રજ્ઞપ્ત થઈ છે. આ પ્રમાણે દ્રૌપદી દેવીની ત્યાં દશ સાગરની સ્થિતિ પ્રજ્ઞપ્ત થઈ.

હવે ગૌતમ સ્વામી પ્રશ્ન કરે છે કે હે ભદન્ત ! તે દ્રૌપદી દેવીની આયુ અને ભવસ્થિતિ પૂરી થયા બાદ ચવીને ક્યાં જશે ? ક્યાં ઉત્પન્ન થશે ?

તેના ઉત્તરમાં ભગવાન કહેવા લાગ્યા કે હે ગૌતમ ! તે દ્રૌપદી દેવ ત્યાંથી ચવીને મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં ઉત્પન્ન થશે અને ત્યાંથી જ સિદ્ધ બનશે યાવત્ તેઓ પોતાના સમસ્ત દુઃખોનો અંત કરશે.

सुधर्मास्वामी कथयति-' एवं खलु ' इत्यादि। एवं खलु हे जम्बू! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं संप्राप्तेन षोडशस्य ज्ञाताध्ययनस्यायं=पूर्वकथितः अर्थः=द्रौपदीदृष्टान्तरूपो भावः प्रज्ञप्तः, प्ररूपितः, इति ब्रवीमि व्याख्यापूर्ववत् ॥ ३४ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित-कोल्हापुरराजगुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलाल-व्रतिविरचितायां-ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रस्या, नगारधर्मामृतवर्षि-ण्याख्यायां व्याख्यायां षोडशमध्ययनं समाप्तं ॥ १६ ॥

सुधर्मा स्वामी कहते हैं हे जंबू! श्रमण भगवान महावीर ने जो सिद्धि गतिनामक स्थान को प्राप्त हो चुके हैं इस षोडश ज्ञानाध्ययन का यह पूर्वोक्त द्रौपदी दृष्टान्त रूप भाव अर्थ प्ररूपित किया है। ऐसा मैं उन्हीं श्रमण भगवान महावीर के द्वारा कहे श्रुत उपदेश के अनुसार कहता हूँ ॥ सूत्र ३६ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर पूज्य श्री घासीलालजी महाराज कृत " ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र " की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्याका सोलहवां अध्ययन समाप्त ॥ १६ ॥

સુધર્મા સ્વામી કહે છે કે હે જંબૂ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેઓ સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને મેળવી ચૂકયા છે આ સોળમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વે વર્ણવેલો દ્રૌપદી દૃષ્ટાંત રૂપ ભાવ અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે. તે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર વડે કહેવાએલા શ્રુત ઉપદેશ મુજબ જ તમને હું કહી રહ્યો છું. ॥સૂ૦૩૬॥

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનું સોળમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૬ ॥

॥ अथ सप्तदशाध्ययनम् ॥

व्याख्यातं षोडशाध्ययनम्, साम्प्रतं सप्तदशं व्याख्यायते । पूर्वस्मिन्नध्ययने द्रौपद्या नागश्रीभवे कुत्सितदानेन तस्या एव सुकुमारिकाभवे निदानेन चानर्थः प्रोक्तः, साम्प्रतमवशेन्द्रियत्वेनानर्थो भवतीत्युच्यते, इति सम्बन्धेन सम्बद्धस्यास्याध्ययनस्येदमादिमं सूत्रम्-' जइणं भंते ! ' इत्यादि ।

मूलम्-जइणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सोलसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सत्तरसमस्स णं भंते ! णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं

सत्रहवां अध्ययन का प्रारंभ

-:आकीर्ण-जातिमान् घोड़े का सत्रहवां अध्ययन प्रारंभः-

सोलहवां अध्ययन संपूर्ण हुआ-अब सत्रहवां अध्ययन कहा जाता है । पूर्व अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि द्रौपदी ने नागश्री के भव में कुत्सित दान दिया था-कडवे तुंबेका आहार मुनिराज को दिया था-तथा जब वह सुकुमारिका के भव में उत्पन्न हुई थी तो उसने निदानबंध किया था इससे उसे महान् अनर्थ की प्राप्ति हुई । अब इस अध्ययन में यह विषय स्पष्ट किया जावेगा-कि जो अपनी इन्द्रियों को वश में नहीं रखते हैं-वे अनर्थ के भागी होते हैं । इसी संबंध से सम्बन्धित हुए इस अध्ययन का यह आदिम सूत्र है-

---

સત્તરમા અધ્યયનનો પ્રારંભ

—: આકીર્ણ જાતિમાન ઘોડાનું સત્તરમું અધ્યયન પ્રારંભ :—

સોળમું અધ્યયન પૂરૂ થઇ ગયું છે, હવે સત્તરમા અધ્યયનની શરૂઆત થાય છે. સોળમા અધ્યયનમાં એ વાતનું સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવ્યું છે કે દ્રૌપદીએ નાગશ્રીના ભવમાં કુત્સિત (ખોટું) દાન કર્યું હતું. કડવા તુંબાનો આહાર મુનિરાજને આપ્યો હતો. તેમજ જ્યારે તે સુકુમારિકાના ભવમાં ઉત્પન્ન થઇ હતી ત્યારે તેણે નિદાન બંધ કર્યો હતો. તેથી તેને મહાન અનર્થની પ્રાપ્તિ થઇ હતી હવે આ સત્તરમા અધ્યયનમાં એ વાત સ્પષ્ટ કરવામાં આવશે કે જેઓ પોતાની ઇન્દ્રિયોને વશમાં રાખતા નથી-તેઓ અનર્થ ભોગવે છે. એ જ વાતને સ્પષ્ટ કરતું સત્તરમા અધ્યયનનું આ પહેલું સૂત્ર છે.

समएणं हत्थिसीसे नयरे होत्था, वण्णओ, तत्थ णं कणगकेऊ णामं राया होत्था, वण्णओ, तत्थणं हत्थिसीसे णयरे बहवे संजत्ता णावावाणियगा परिवसंति अड्ढा जाव बहुजणस्स अपरिभूया यावि होत्था, तएणं तेसिं संजत्ता णावा वाणियगाणं अन्नया एगयओ जहा अरहण्णओ जाव लवणसमुद्दं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढा यावि होत्था तएणं तेसिं जाव बहूणि उप्पाइयसयाइं जहा मागंदियदारगाणं जाव कालियवाए य तत्थ समुत्थिए, तएणं सा णावा तेणं कालियवाएणं आघोलिज्जमाणी२, संचालिज्जमाणी२, संखोहिज्जमाणी२, तत्थेव परिभमइ, तएणं से णिज्जामए णट्ठमइए णट्ठसुइए णट्ठसण्णे मूढदिसाभाए जाए यावि होत्था, ण जाणइ कयरं देसं वा दिसं वा विदिसं वा पोयवहणे अवहिए त्तिकट्टु ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ, तएणं ते बहवे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भिल्लगा य संजत्ताणावावाणियगा य जेणेव से णिज्जामए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता एवं वयासी-किन्नं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह ?, तएणं से णिज्जामए ते बहवे कुच्छिधारा य ४ एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! णट्ठमइए जाव अवहिए त्ति कट्टु तओ ओहयमणसंकप्पे जाव झियामि, तएणं ते कुच्छिधाराय ४ तस्स णिज्जामयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म भीया ४ ण्हाया कयबलिकम्मा करयल बहूणं इंदाण य खंधाण य जहा मल्लि-

नाए जाव उवायमाणा२ चिट्ठंति, तएणं से णिज्जामए तओ मुहुत्तंतरस्स लद्धमइए३ अमूढदिसाभाए जाए यावि होत्था, तएणं से णिज्जामए ते वहवे कुच्छिधारा य ४ एवं वयासी- एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! लद्धमइए जाव अमूढदिसाभाए जाए, अम्हे णं देवाणुप्पिया ! कालियदीवे तेणं संवूढा एसणं कालियदीवे आलोक्कइ, तएणं ते कुच्छिधारा य४ तस्स णिज्जामगस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हट्ठतुट्ठा पयाक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता पोयवहणं लवेंति लवित्ता एगट्ठियाहिं कालियदीवं उत्तरंति, तत्थ णं ते वहवे हिरण्णागरे य सुवण्णागरे य रयणागरे य वइरागरे य वहवे तत्थ आसे पासंति, किं ते ?, हरिरेणुसोणिसुत्तगा आइण्णवेढा, तएणं ते आसा ते वाणियए पासंति पासित्ता तेसिं गंधं अग्घायंति अग्घायित्ता भीया तत्था उव्विग्गमणा तओ अणेगाइं उव्समंति, तेणं तत्थ पउरतणपाणिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहं सुहेणं विहरंति ॥ सू० १ ॥

टीका—जम्बूस्वामी पृच्छति-यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं सम्प्राप्तेन पोडशस्य ज्ञाताध्ययनस्यायमर्थः=

-ःजइणं भंते ! इत्यादि ।

टीकार्थ-(भंते ! हे भदंत ! (जइणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं) यदि श्रमण भगवान् महावीरने कि जो सिद्धिगति नामकस्थान को प्रासकर चुके हैं (सोलसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सत्तर-

---

જઇણ ભંતે ! ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ-(ભંતે !) હે ભદન્ત ! (જઇણં સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણં જાવ સંપત્તેણં) જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે-જેઓ સિદ્ધગતિ નામના સ્થાનને મેળવી ચૂક્યા છે.

पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मास्वामीप्राह-एवं खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये हस्तिशीर्षं नाम नगरमासीत्। 'वण्णओ' वर्णकः='ऋद्धे' त्यादि-नगरवर्णनम् पूर्ववद् विज्ञेयम्। तत्र खलु कनककेतुर्नाम राजाऽऽसीत् 'वण्णओ' वर्णकः-'महयाहिमवंते' त्यादि राजवर्णनं पूर्ववद् बोध्यम्। तत्र खलु हस्तिशीर्षे

मस्स णं भंते ! णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते) सोलहवें ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्तरूप से अर्थ प्ररूपित किया है-तो सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हुए उन्हीं श्रमण भगवान् महावीर ने सत्रहवें ज्ञाताध्ययन का क्या अर्थ प्ररूपित किया है (एवं खलु जंबू!) इस प्रकार जंबू स्वामी के पूछने पर सुधर्मा स्वामी अब उन्हें समझाते हैं-वे कहते हैं हे जंबू! तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है:-

(तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिसीसे नयरे होत्था, वण्णओ, तत्थ, णं कणगकेऊणामं राया होत्था, वण्णओ, तत्थ, णं हत्थिसीसे णयरे बहवे संजत्ता णावा वाणियगा परिवसंति, अड्ढा जाव बहुजणस्स अपरिभूया यावि होत्था) उस काल और उस समय में हस्तिशीर्ष नाम का नगर था। "ऋद्ध" इत्यादि रूपसे पूर्व अध्ययनों में वर्णित पाठ की तरह इस नगर का वर्णन जानना चाहिये। उस नगर में कनक केतु नामका राजा रहता था। इसका भी वर्णन "महया हिमवंत" इत्यादिरूप से पहिले के अध्ययनोंमें वर्णित राजाओंके वर्णन जैसा ही जानना चाहिये। उस

(सोलसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सत्तरमस्स णं भंते ! णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते)

સોળમા જ્ઞાતાધ્યયનનો પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે ત્યારે સિદ્ધગતિ સ્થાનને મેળવી ચૂકેલા તેજ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે સત્તરમાં જ્ઞાતાધ્યયનનો શો અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે.

(एवं खलु जंबू) આ રીતે જંબૂના પ્રશ્નને સાંભળીને તેમને સમજાવતાં સુધર્મા સ્વામી કહેવા લાગ્યા કે હે જંબૂ! તમારા પ્રશ્નનો જવાબ આ પ્રમાણે છે કેઃ—

(तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिसीसे नयरे होत्था, वण्णओ, तत्थणं कणगकेऊणामं राया होत्था, वण्णओ, तत्थणं हत्थिसीसे णयरे बहवे संजत्ता णावा वाणियगा परिवसंति, अड्ढा जाव बहुजणस्स अपरिभूया यावि होत्था)

તે કાળે અને તે સમયે હસ્તિશીર્ષ નામે નગર હતું. "ऋद्ध" વગેરે રૂપમાં પહેલાના અધ્યયનોમાં વર્ણન કરવામાં આવેલા પાઠની જેમ આ નગરનું વર્ણન પણ જાણી લેવું જોઈએ. તે નગરમાં કનકકેતુ નામે રાજા રહેતો હતો.

नगरे बहवः 'संजत्ताणावावाणियगा' संयात्रानौकावाणिजकाः=सं=सङ्गता यात्रा=देशान्तरगमनं संयात्रा, तत्प्रधाना नौकावाणिजकाः=पोतवणिजः-संयात्रा-नौका वाणिजकाः परिवसन्ति कीदृशाः? इत्याह-आढ्या यावत् 'बहुजणस्स' बहुजनस्य सम्बन्धसामान्ये षष्ठीजनसमुदायेनेत्यर्थः 'अपरिभूया' अपरिभूताः= पराभवरहिता चाप्यासन्। ततः खलु तेषां संयात्रानौका वाणिजकानाम् अन्यदा= अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित्समये 'एगयओ' एकतः एकत्रमिलित्वा 'जहा अरहण्णओ' यथा अर्हन्नकः=अत्रैवाष्टमाध्ययनोक्तार्हन्नकवत् यावत् लवणसमुद्रमनेकानि योजन-शतानि 'ओगाढा' अवगाढाः=उत्तीर्णाश्चाप्यासन्। ततः=तत्र खलु तेषां यावत् बहूनि 'उप्पाइयसयाइं' औत्पातिकशतानि=आकस्मिकोत्पातशतानि यथा माक-न्दिकदारकयोः-जिनरक्षितजिनपालितयोः संजातानि तथैवात्रास्यापि यावत् 'कालि-यवाए' कालिकवातः मलयकालिकवत्प्रचण्डवातश्च तत्र समुत्थितः। ततः=तदन-न्तरं खलु सा नौका तेन कालिकवातेन 'आघोलिज्जमाणी २' आघूर्ण्यमाना २ पुनः पुनर्भ्राम्यन्ती 'संचालिज्जमाणी २' संचाल्यमाना २ पुनः पुनश्चाल्य-

---

हस्तिशीर्ष नगरमें अनेक पोत वणिक् (नावसे व्यापार करने वाले) रहते थे। ये एक साथ मिलकर ही परदेश में जाकर व्यापार किया करते थे। इनकी उस नगर में अच्छी प्रतिष्ठा थी-कारण ये सब के सब लक्ष्मीदेवी के विशेष रूप से कृपापात्र थे। (तएणं तेसिं संजत्ता णावा वाणियगाणं अन्नया एगयाओ जहा अरहण्णओ जाव लवणसमुद्दं अणेगाइं जोयण-सयाइं ओगाढा यावि होत्था, तएणं तेसिं जाव बहूणि उप्पाइयसयाइं जहा मागंदियदारगाणं जाव कालियवाए य तत्थ समुत्थिए, तएणं सा तेणं कालियवाएणं आघोलिज्जमाणी २ संचालिज्जमाणी २ संखोहिज्जमाणी

આ રાજાનું વર્ણન પણ "महया हिमवंत" વગેરે રૂપમાં પહેલાંના અધ્ય-યનોમાં વર્ણિત રાજાઓના વર્ણન જેવું જ જાણી લેવું જોઈએ. તે હસ્તિશીર્ષ નગરમા ઘણા પોતવણિકો (વહાણુ વડે વેપાર કરનારા) રહેતા હતા તેઓ સર્વે એકી સાથે મળીને પરદેશમાં જતા અને ત્યાં વેપાર કરતા હતા. તે નગરમાં તેમની સારી એવી પ્રતિષ્ઠા હતી. કેમકે ખાસ કરીને તેઓ સર્વે લક્ષ્મીના કૃપાપાત્ર હતા.

(तएणं तेसिं संजत्ता णावा वाणियगाणं अन्नया एगयाओ जहा अरहण्णओ जाव लवणसमुद्दं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढा यावि होत्था, तएणं तेसिं जाव बहूणि उप्पाइयसयाइं जहा मागंदियदारगाणं जाव कालियवाए य तत्थ समु-त्थिए तएणं सा णावा तेणं कलियवाएणं आघोलिज्जमाणी २ संचालिज्जमाणी

माना ' संखोहिज्जमाणी २ ' संक्षोभ्यमाणा २ पुनः पुनः क्षोभं प्राप्यमाणा सती तत्रैव=एकस्थान एवेतस्ततः परिभ्रास्यति किन्तु ततः परं गन्तुं न प्रसरतीति भावः। ततः खलु स निर्यामकः=नाविकः ' णट्ठमइए ' नष्टमतिकः-मतिज्ञानरहितः ' णट्ठसुइए ' नष्टश्रुतिकः-विस्मृतनिर्यामकशास्त्रः दिग्निर्णयं कर्तुमशक्तत्वात् णट्ठसण्णे ' नष्टसञ्ज्ञः=मार्गज्ञानरहितः ' मूढदिसाभाए ' मूढदिग्भागः=पूर्वादि-दिग्विभागज्ञानरहितः जातश्चाप्यासीत्, पुनश्च स न जानाति यत् कतरं=कं देशं

---

२ तत्थेव परिभमइ, तएणं से णिज्जामए णट्ठमइए णट्ठसुइए णट्ठसण्णे मूढदिसभाए जाए यावि होत्था) एक दिनकी बात है कि जब ये सांयात्रिक पोत वणिक एक जगह मिलकर बैठे हुए थे तब अष्टम अध्ययन में वर्णित अरहन्नक सेठ की तरह इनका लवण समुद्रसे होकर परदेश में व्यापर निमित्त जाने का विचार हुआ। विचार स्थिर होते ही ये जब नौका द्वारा लवण समुद्र में सैकडों योजन तक निकल चुके तब इनके लिये जिन रक्षित और जिनपालितकी तरह आकस्मिक अनेक उत्पातशत (सैंकडों)हुए। उस समय प्रलय कालकी तरह प्रचण्ड वायु उठी। उससे उनकी नौका बार २ डगमगा ने लगी इधर से उधर फिर ने लगी। बार २ चञ्चल होकर बार २ क्षुभित होकर एक ही स्थान पर नीची ऊँची होने लगी-उससे आगे वह नहीं बढी। इससे निर्यामिक-नाविक-मतिज्ञान से रहित हो गया। दिशाओं का निर्णय करने का ज्ञान उसका जाता रहा। वह मार्ग ज्ञान रहित होकर दिग्मूढ बन गया। (ण जाणइ

---

२ संखोहिज्जमाणी १ तत्थे वपरिभमइ, तएणं से णिज्जामए णट्ठमइए णट्ठसुइए णट्ठसण्णे मूढ दिसाभाए जाए यावि होत्था) -

એક દિવસની વાત છે કે જ્યારે તેઓ સર્વે સાંયાત્રિક પોતવણિકો એક સ્થાને એકત્ર થઇને બેઠા હતા ત્યારે આઠમા અધ્યયનમાં વર્ણિત અરહન્નક શેઠની જેમ તેમનો પણ લવણ સમુદ્રમાં થઇને પરદેશમાં વેપાર માટે જવાનો વિચાર થયો. વિચાર સ્થિર થતાં જ તેઓ જ્યારે નૌકા વડે લવણ સમુદ્રમાં સેંકડો યોજન સુધી પહોંચી ગયા ત્યારે જીનપાલિત અને જીનરક્ષિતની જેમજ તેમના માટે પણ સેંકડો ઓચિંતા ઉપદ્રવો ઉત્પન્ન થયા. તે વખતે પ્રલય કાળના જેવો પ્રચંડ વાયુ ફુંકાવા લાગ્યો. તેથી તેમની નૌકા વારંવાર ડગમગવા લાગી, આમથી તેમ ફરવા લાગી વારંઘડીએ ચંચળ થઇને, વાર વાર ક્ષુભિત થઇને એક જ સ્થાન ઉપર નીચે ઉપર થવા લાગી, તેનાથી આગળ વધી નહિ. તેથી નિર્યામિક-નાવિક મતિજ્ઞાનથી રહિત થઈ ગયો દિશાઓને જાણવાનું તેનું જ્ઞાન જતું રહ્યું. માર્ગજ્ઞાનથી રહિત થઇને દિગ્મૂઢ બની

वा दिशं वा विदिशं वा प्रति मे पोतवहनम् नौकायानं 'अवहिए' अपहृतम् महावातेन नीतम्, इति। इति कृत्वा=इतिमनसि निधाय अपहृतमनः संकल्पो यावद् ध्यायति=आर्त्तध्यानं करोति। ततः खलु ते बहवः कुक्षिधाराश्च=पार्श्वतो नौकाचालकाः कर्णधाराश्च=नाविकाः। 'गब्भिल्लगाय' गार्भेयकाश्च नौमध्ये यथावसर कर्मकराः, संयात्रानौका वाणिजकाः=भाण्डपतयश्च यत्रैव स निर्यामकः=नौकाधिपतिस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य एवमवादिषुः-किं खलु यूयं हे देवानुप्रियाः! अपहृतमनःसंकल्पाः निरुत्साहमनस्काः यावत् 'झियायह' ध्यायथ आर्त्तध्यानं कुरुथ, आदरार्थे बहुवचनम्। तत खलु स निर्यामकस्तान् बहून् कुक्षिधारांश्च ४

कयरं देसं वा दिसं वा विदिसं वा पोयवहणे अवहिए त्ति कट्टु) अतः जब उसे इस बात का भी ज्ञान नहीं रहा कि यह महावात मेरी नौका को किस दिशा अथवा विदिशा की ओर ले गया है-तब इस प्रकार मन में विचार कर के वह (ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ) अपहत मनः संकल्पवाला बनकर यावत् आर्तध्यान करने लगा। (तएणं ते बहवे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भिल्लगा य संजत्ता णावा वाणियगा य जेणेव से णिज्जामए तेणेव उवागच्छइ) इतने में अनेक कुक्षिधर-पार्श्व में बैठकर नौका चलाने वाले कर्णधार-नाविक, गार्भेयक-नौका के भीतर यथावसर काम करने वाले और सांयात्रिक पोत वणिक जहां वह निर्यामिक था-वहां आये। (उवागच्छित्ता एवं वयासी-किन्नं तुमं देवाणुप्पिया ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह-तएणं से णिज्जामए

ગયો. (ण जाणाइ कयरं देसं वा दिसं वा विदिसं वा पोयवहणे अवहिएत्ति कट्टु) એથી જ્યારે તેને આ વાતની પણ ખબર રહી નહિ કે આ મહાવાત અમારી નૌકાને કઈ દિશા અથવા તો વિદિશા તરફ લઈ ગયો છે. ત્યારે મનમાં આ જાતનો વિચાર કરીને તે (ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ) અપહતમનઃ સંકલ્પવાળો થઈને યાવત્ આર્તધ્યાન કરવા લાગ્યો.

(तएणं ते बहवे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भिल्लगा य संजत्ता णावा वाणियगा य जेणेव से णिज्जामए तेणेव उवागच्छइ)

એટલામાં ઘણા કુક્ષિધર-પાર્શ્વમાં બેસીને નૌકા ચલાવનારા, કર્ણધાર નાવિક, ગાર્ભેયક-નૌકામાં યથા સમય કામ કરનારા અને સાંયાત્રિકો-પોત-વણિકો જ્યાં તે નિર્યામક હતો ત્યાં ગયા.

(उवागच्छित्ता एवं वयासी-किन्नं तुमं देवाणुप्पिया ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह-तएण से णिज्जामए ते बहवे कुच्छिधारा य ४ एवं वयासी-

एवमवादीत् एवं खलु हे देवानुप्रियाः ! अहं नष्टमतिकः यावत् न ज्ञायते कं देशं वा दिशं वा विदिशं वा प्रतिपोतवहनम् 'अवहिए' अपहृतं=महावातेन नीतम् ? इति कृत्वा=इति विचार्य ततः=तस्मात्कारणात् अपहतमनःसङ्कल्पो यावत् ध्यायामि=आर्त्तध्यानं करोति । ततः खलु ते कुक्षिधाराश्च४ सर्वे तस्य निर्यामक स्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य भीताः, त्रस्ताः, त्रसिताः, उद्विग्नाः, सञ्जातभयाः सन्तः स्नाताः कृतबलिकर्माणः 'करयल०' करतलपरिगृहीतं शिर आवर्त्तं दशनखं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा बहूनां इन्द्राणां च स्कन्दानां च यथा मल्लिज्ञाते तथैव यावत्-बहूनां रुद्रादीनां देवानां देवीनां च=उपयाचितशतानि अनेकविध-

---

ते बहवे कुच्छिधारा य ४ एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! णट्ठमइए जाव अवहिए त्ति कट्टु तओ ओहयमणसंकप्पे जाव झियामि) वहां आकर के उन्हों ने उस से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ! क्या कारण है जो तुम अपहतमनः संकल्प यावत् होकर आर्तध्यान कर रहे हो। उन सब की ऐसी बात सुनकर उस निर्यामक ने उन अनेक कुक्षिधार ४ आदिकों से इस प्रकार कहा-सुनो बात इस प्रकार है-मैं इस समय नष्ट मतिज्ञान आदि वाला हो रहाहूँ-मुझे यह पता नहीं पड रहा है कि मेरी यह नौका महावातके द्वारा किस देशमें और किस दिशाअथवा विदिशा में ले आई गई है-इस कारण मैं इस समय निरुत्साह मनवाला आदि बन रहा हूँ। (तएणं ते कुच्छिधारा य ४ तस्स णिज्जामयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म भीया ५ ण्हाया कयबलिकम्मा करयल बहूणं इंदाण य खंधाण य जहा मल्लिनाए जाव उवायमाणा २

एवं खलु देवाणुप्पिया णट्ठमइए जाव अवहिए त्ति कट्टु तओ ओहयमणसंकप्पे जाव झियामि)

ત્યાં જઈને તેમણે તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! શા કારણથી તમે અપહતમન: સંકલ્પવાળા થઈને આર્તધ્યાન કરી રહ્યા છો. તેઓ સર્વેની આ વાત સાંભળીને નિયામકે તે ઘણા કુક્ષિધાર ૪ વગેરે બધને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે સાંભળો, વાત એવી છે કે અત્યારે હુ નષ્ટ મતિજ્ઞાનવાળો થઇ ગયો છું મને એ જાતની પણ સમજ પડતી નથી કે આ મારી નૌકા મહાવાત વડે પ્રેરાઇને ક્યા દેશમાં અને કઈ દિશા અથવા તો વિદિશામાં તણાઈ આવી છે. એટલા માટે હું અત્યારે નિરાશ મનવાળો થઈ ગયો છું.

(तएणं ते कुच्छिधारा य ४ तस्स णिज्जामयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म भीया ५ ण्हाया कयबलिकम्मा करयलबहूणं इंदाण य खंधाण य जहा मल्लिनाए जाव उवायमाणा २ चिट्ठंति, तएणं से णिज्जामए तओ मुहुत्तंतरस्स

मान्यतागतानि 'उव्वीयमाणा २' उपयाचमानाः २ पुनः पुनः कुर्वाणाः–तत्त्प्रसादनार्थमनेकविधां प्रतिज्ञां कुर्वन्तस्तिष्ठन्ति, ततः खलु स निर्यामकः ततोमुहूर्तान्तरात्=मुहूर्त्तानन्तरं लब्धमतिकः लब्धश्रुतिकः, लब्धसञ्ज्ञः, अमूढदिग्भागः सर्वथा समुपलब्धसंज्ञ इत्यर्थः जातश्चाप्यासीत् । ततः खलु स निर्यामकस्तान् बहून्

चिट्ठंति तएणं से णिज्जामए तओ मुहुत्तंतरस्स लद्धमइए ३ अमूढदिसाभाए जाए यावि होत्था) इस तरह वे कुक्षिधार वगैरह उस निर्यामक के मुख से इस प्रकार के वचन सुनकर और उन्हें हृदय में अवधारण कर भीत, त्रस्त, त्रसित उद्विग्न एवं उत्पन्न भयवाले हो गये। उन्हों ने उसी समय स्नान एवं वायसादि पक्षियों को अन्नादि देने रूप बलिकर्म करके अपने २ हाथों की अंजलि बनाई और उसे मस्तक पर रखकर अनेक इन्द्रों की स्कन्दों की, अनेक रुद्रादिक देवताओं की अनेक देवियों की जैसा कि मल्लिनामक अध्ययन में कहा है–सैंकडों तरह की बार २ मनौती की, उनके प्रसाद के लिये अनेक प्रकार की प्रतिज्ञाएँ की। इस के बाद उस निर्यामक की मति ठिकाने आ गई। वह दिशाओं के ज्ञान करने में समर्थ बन गया। मार्ग का ज्ञान उसे हो गया। तथा यह पूर्व दिशा है यह पश्चिम दिशा है इत्यादि रूप से उसे दिशाओं के विभाग का भी ज्ञान हो गया। (तएणं से णिज्जामए ते बहवे कुच्छिधारा य ४ एवं वयासी एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! लद्धमइए

लद्धमइए ३ अमूढदिसाभाए जाए यावि होत्था)

તે કુક્ષિધાર વગેરે લોકોએ નિર્યામકના મુખથી આ પ્રમાણે વચનો સાંભળીને અને તેમને હૃદયમાં ધારણ કરીને ભીત, ત્રસ્ત, ઉદ્વિગ્ન અને ઉત્પન્ન ભયવાળા થઈ ગયા. તેઓએ તત્કાળ સ્નાન તેમજ કાગડા વગેરે પક્ષીઓને અન્નભાગ વગેરે આપીને બલિકર્મ કર્યું અને ત્યારપછી તેઓએ પોતાના હાથોની અંજલિ બનાવી અને તેને મસ્તકે મૂકીને ઘણા ઇન્દ્રોની, ઘણા રૂદ્ર વગેરે દેવતાઓની ઘણી દેવીઓની–મલ્લી નામક અધ્યયનમાં જે પ્રમાણે વર્ણન કરવામાં આવેલુ છે તે પ્રમાણે સેંકડો જાતની વારંવાર માનતાઓ માની, તેમને પ્રસાદ ચઢાવવાની અનેક જાતની પ્રતિજ્ઞાઓ કરી. ત્યારપછી તે નિર્યામકની વિવેક શક્તિ જાગ્રત થઈ ગઇ. તેને દિશાઓનું જ્ઞાન થવા લાગ્યુ. માર્ગનું જ્ઞાન તેને થઇ ગયું તેમજ આ પૂર્વ દિશા છે, આ પશ્ચિમ દિશા છે, વગેરે રૂપથી પણ તેને દિશાઓના વિભાગોનું જ્ઞાન થઈ ગયું.

(तएणं से णिज्जामए ते बहवे कुच्छिधारा य ४ एवं वयासी एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! लद्धमइए जाव अमूढदिसाभाए जाए–अम्हेणं देवाणुप्पिया !

कुक्षिधारांश्च ४ एवमवादीत्-एवं खलु अहं हे देवानुप्रियाः! अधुना लब्धमतिको यावद् अमूढदिग्भागो जातोऽस्मि-वयं खलु हे देवानुप्रियाः! 'कालियदीवं-तेणं' कालिकद्वीपान्ते=कालिकद्वीपसमीपे खलु 'संवूढा' संव्यूढाः=संप्राप्ताः, एषः=अग्रे वर्त्तमानोऽयं खलु कालिकद्वीपः 'आलोक्कइ' आलोक्यते=दृश्यते। ततः खलु ते कुक्षिधाराश्च ५ सर्वे तस्य निर्यामकस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा हृष्टतुष्टाः प्रदक्षिणानुकूलेन=पृष्टप्रदेशागमनशीलत्वात्सानुकूलेन वातेन यत्रैव कालिकद्वीपस्त-त्रैवोपागच्छन्ति,उपागत्य पोतवहनं लंबेंति=लम्बयन्ति=शृङ्खलाभिर्बध्नन्ति स्थिरी कुर्वन्ति-इत्यर्थः, लम्बयित्वा 'एगट्ठियाहिं' एकार्थिकाभिः-एकः=समानः प्रव-

---

जाव अमूढदिसाभाए जाए-अम्हेणं देवाणुप्पिया! कालियदीवंतेणं संवूढा, एसणं कालियदीवे आलोक्कइ, तएणं ते कुच्छिधारा ४ य तस्स णिज्जामगस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हट्ठतुट्ठा पायक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छंति) इस के बाद उस निर्यामक ने उन अनेक कुक्षिधार आदिकों से ऐसा कहा हे देवानुप्रियों! मैं लब्धम-तिवाला हो गया हूँ मेरी बुद्धि ठिकाने आ गई है। यावत् अब मैं पूर्वादि दिशाओं का विभाग कर सकता हूँ। इस समय हमलोग कालिक द्वीप के पास आ गये हैं। देखो यह सामने कालिक द्वीप ही दिखलाई दे रहा है। इस तरह उस निर्यामक के मुख से सुनकर वे सब कुच्छिधार आदि बड़े प्रसन्न हुए, उन्हें बड़ा अधिक संतोष हुआ। इसी समय अनुकूल वायु ने उन सब को जहां वह कालिक द्वीप था वहां पहुँचा दिया। (उवागच्छित्ता पोयवहणं लंबेंति, लंबित्ता एगट्ठियाहिं कालिय-

---

कालियदीवं तेणं संवूढा, एसणं कालियदीवे आलोक्कइ, तएणं ते कुच्छिधारा ४ य तस्स णिज्जामगस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हट्ठ तुट्ठा पायक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छंति)

ત્યારબાદ તે નિર્યામકે તે ઘણા કુક્ષિધાર વગેરે લોકોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો! મારી બુદ્ધિ શક્તિ ફરી જાગ્રત થઈ ગઈ છે. મારી બુદ્ધિ વ્યવસ્થિત થઈ ગઈ છે. યાવત્ હવે હું પૂર્વ વગેરે દિશાઓનું વિભાજન પણ સમજી શકું છું. અત્યારે અમે કાલિક દ્વીપની પાસે આવી ગયા છીએ. જુઓ આ સામે કાલિક દ્વીપજ દેખાઈ રહ્યો છે. આ પ્રમાણે તે નિર્યામકના મુખથી સાંભળીને તે બધા કુક્ષિધાર વગેરે લોકો ખૂબ જ પ્રસન્ન થયા, તેઓને ખૂબજ સંતોષ થયો. એ જ વખતે અનુકૂળ પવને તેઓને જ્યાં કાલિકદ્વીપ હતો ત્યાં પહોંચાડી દીધા.

(उवागच्छित्ता पोयवहणं लंबेंति,, लंबित्ता एगट्ठियाहिं कालियदीवं उत्त-

हणतुल्यः अर्थः=प्रयोजनं यासां तास्तथा, ताभिः=सहायिकाभिर्लघुनौकाभिः कालिकद्वीपम् उत्तरन्ति स्म। तत्र खलु ते बहून् हिरण्याकरान्=रजताकरान् सुवर्णाकरांश्च, रत्नाकरांश्च, वज्राकरान्=वज्राख्यरत्नखनीरित्यर्थः, तथा बहून् तत्राश्वांश्च पश्यन्ति, किं ते=किम्भूतास्ते ? इत्याह-' हरिरेणुसोणिसुत्तगा ' हरिद्रेणुशोणिसूत्रकाः=हरिद्वर्णधूलिकृतकटिसूत्राः ' आइण्णवेढा ' आकीर्णवेष्टः-वर्णनग्रन्थो-अत्र वाच्यः-' हरिरेणुसोणिसुत्तगा ' इत्यादिरूपं वर्णनं सर्वमत्र कथनीयमित्यर्थः। ततः खलु तेऽश्वास्तान् पश्यन्ति, दृष्ट्वा तेषां गन्धम् ' अग्घायंति ' आजिघ्रन्ति, आघ्राय भीताः=भयं प्राप्ताः, त्रस्ताः=त्रासं प्राप्ताः त्रसिताः=विशेष-

---

दीवं उत्तरंति, तत्थणं ते बहवे हिरण्णागरे य सुवण्णागरे य रयणागरे य वइरागरे य बहवे तत्थ आसे पासंति, किं ते ? हरिरेणुसोणिसुत्तगा-आइण्णवेढा, तएणं ते आसा ते वाणियए पासंति पासित्ता तेसिं गंधं अग्घायंति, अग्घायित्ता भीया तत्था उव्विग्गा उव्विग्गमणा तओ अणेगाइं जोयणाइं उब्भमंति) वहां पहुँच कर उन्होंने लंगर डालदिया। अर्थात् जहाज को सांकलों से बांधकर वहां स्थिर कर दिया। बाद में वे एकार्थिक-समान प्रयोजन साधक-छोटी २ नौकाओं से उस कालिक द्वीप में उतरे। वहां पर उन्होंने अनेक हिरण्य की खानों को सुवर्ण की खानों को, रत्न की खानों को, हीरे की खानोंको तथा अनेक घोड़ों को देखा। उन पर कटिसूत्र हरिद्वर्ण वाली धूलि से रचा गया था। ये सब जात्यश्व थे। उन जात्यश्वों ने उन पोतवणिकों को देखा। उनकी गंध को उन्होंने सूंघा। सूंघ कर वे सब के सब भयभीत हो गये। त्रस्त हो

रंति, तत्थणं ते बहवे हिरण्णागरे य सुवण्णागरे य रयणागरे य वइरागरे य बहवे तत्थ आसे पासंति, किं ते ? हरिरेणुसोणिसुत्तगा आइण्णवेढा, तएणं ते आसा ते वाणियए पासंति, पासित्ता तेसिं गंधं अग्घायंति, अग्घायित्ता भीया तत्था उव्विग्गा उव्विग्गमणा तओ अणेगाइं जोयणाइं उब्भमंति)

ત્યાં પહોંચીને તેમણે લંગર નાખ્યું. એટલે કે વહાણુને સાંકળો વડે બાંધીને ત્યાં ઊભું રાખ્યું. ત્યારપછી તેઓ એકાર્થિક નાની નાની નૌકાઓ વડે તે કાલિક દ્વીપમાં ઉતર્યા ત્યાં તેમણે ઘણી હિરણ્યની ખાણો, સુવર્ણની ખાણો તેમજ ઘણા ઘોડાઓને જોયા. ઘોડાઓ ઉપર કટિસૂત્ર લીલા રંગની માટી વડે બનાવવામાં આવ્યું હતું. આ બધા જાત્યશ્વો હતા તે જાત્યાશ્વોએ તે પોતવણિકોને જોયા. તેમણે તેમની ગંધને સૂંઘી સૂંઘીને તેઓ બધા ભયભીત થઈ ગયા. ત્રસ્ત થઇ ગયા. વિશેષરૂપથી તેમના ચિત્તમાં ભયનું સંચરણ

तत्रासं प्राप्ताः,उद्विग्नाः=उद्वेगं प्राप्ताः उद्विग्नमनसः=व्याकुलमानसः सन्तः ततः= तस्मात्स्थानात् अनेकानि योजनानि=अनेकयोजनदूरम् , 'उब्भमंति' उद्भ्रा-म्यन्ति=पलायन्ते स्म ।-ते=अश्वाः खलु तत्र वने 'पउरगोयरा' प्रचुरगोचराः-प्रचुरः=बहुलः गोचरः=संचरणभूमिभागो येषां ते तथा, स तु तृणजलरहितोऽपि भवतीत्याह-'पउरतणपाणिया' प्रचुरतृणपानीयाः-प्रचुराणि=प्रभूतानि तृणानि पानीयानि च येषु ते तथा, निर्भयाः=श्वापदादिभयरहिताः, अतएव 'णिरुव्विग्गा' निरुद्विग्नाः=मनः क्षोभरहिताः सन्तः सुखं सुखेन विहरन्ति ॥ सू० १ ॥

मूलम्-तएणं ते संजत्तानावावाणियगा अण्णमण्णं एवं वयासी-किण्णं अम्हं देवाणुप्पिया ! आसेहिं ?, इमे णं बहवे हिरण्णागरा य सुवण्णागरा य रयणागरा य वइरागरा य तं सेयं खलु अम्हं हिरण्णस्स य सुवण्णस्स य रयणस्स य वइरस्स य पोयवहणं भरित्तए त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति पडिसुणित्ता हिरण्णस्स य सुवण्णस्स य रयणस्स य वइरस्स य तणस्स य अण्णस्स य कट्ठस्स य पाणियस्स य पोयवहणं भरेंति

गये। विशेषरूप से उनके चित्त में भय का संचार हो गया। उनका मन उद्विग्न हो गया। इस तरह होकर वे सब वहां से अनेक योजन दूरतक वन में भाग गये। (तणं तत्थ पउरगोयरा पउरतणपाणिया निब्भया, निरुव्विग्गा सुहं सुहेणं विहरंति) वहां वन में उनको विचरण करने के लिये बहुत अधिक विस्तृत भूमिभाग था तृण जल की वहां सर्व प्रकार से प्रचुरता थी। अतः वे उस वन में श्वापद आदि के भय से निर्मुक्त होकर विना किसी मनः क्षोभ के आनन्द के साथ विचरण करने लगे॥ सूत्र १ ॥

થઈ ગયું તેમનું મન ઉદ્વિગ્ન થઈ ગયું. આ પ્રમાણે તેઓ બધા ત્યાંથી ઘણા યોજનો દૂર સુધી વનમાં નાસી ગયા. (તેણં તત્થ પઉરગોયરા પઉરતણ-પાણિયા નિબ્ભયા, નિરુવ્વિગ્ગા સુહં સુહેણં વિહરંતિ) ત્યાં વનમાં વિચરણ કરવા માટે બહુ જ વિસ્તૃત ભૂમિભાગ હતો. ઘાસ, પાણીની ત્યાં બધી રીતે સરસ સગવડ હતી. એટલા માટે તેઓ વનમાં હિંસક પ્રાણીઓના ભયથી મુક્ત થઈને ક્ષોભરહિત થઈને સુખેથી વિચરણ કરવા લાગ્યા. ॥ સૂત્ર ૧ ॥

सरित्ता पयक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव गंभीरपोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता पोयवहणं लंबेंति लम्बित्ता सगडीसागडं सज्जेंति सज्जित्ता तं हिरण्णं जाव वइरं च एगट्ठियाहिं पोयवणाओ संचारेंति संचारित्ता सगडीसागडं भरेंति भरित्ता संजोइंति संजोइत्ता जेणेव हत्थिसीसए नयरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता हत्थिसीसयस्स नयरस्स बहिया अग्गुज्जाणे सत्थणिवेसं करेंति करित्ता सगडीसागडं मोएंति मोइत्ता महत्थं जाव पाहुडं गेण्हंति गेण्हित्ता हत्थि सीसं नगरं अणुपविसंति अणुपविसित्ता जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता जाव उववेंति ॥ सू० २ ॥

टीका—'तएणं ते संजत्ता' इत्यादि । ततः खलु ते संयात्रानौकावाणिजका अन्योन्यमेवमवादिषुः—किं खलु अस्माकं हे देवानुप्रियाः! अर्थैः—इमे खलु बहवो हिरण्याकराश्च, सुवर्णाकराश्च, रत्नाकराश्च वज्राकराश्च सन्ति, तत् श्रेयः खलु अस्माकं हिरण्यस्य च सुवर्णस्य च रत्नस्य च वज्रस्य च पोतवहनं भर्तुम् इति

'तएणं ते संजत्ता नावा वाणियगा' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (ते संजत्ता नावावाणियगा) उन सांयात्रिक नौका वणिक जनों ने (अण्णमण्णं एवं वयासी) परस्पर में इस प्रकार से विचार किया—(किण्णं अम्हं देवाणुप्पिया! आसेहिं? इमे णं बहवे हिरण्णागरा य सुवण्णागरा य रयणागरा य वइरागरा य तं सेयं खलु अम्हं हिरण्णस्स य सुवण्णस्स य रयणस्स य वइरस्स य पोयवहणं

तएण ते संजत्ता नावा वाणियगा, इत्यादि—

ટીકાર્થ—(तएणं) ત્યારપછી (ते संजत्ता नावा वाणियगा) તે સાંયાત્રિક નૌકા વણિકજનોએ (अण्णमण्णं एवं वयासी) એક બીજાની સાથે આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો કે—

(किण्णं अम्हं देवाणुप्पिया! आसेहिं? इमेणं बहवे हिरण्णागरा य सुवण्णागरा य रयणागरा य वइरागरा य तं सेयं खलु अम्हं हिरण्णस्स य सुवण्णस्स

कृत्वा=इति विचार्य अन्योन्यस्य एतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य हिरण्यस्य च सुवर्णस्य च रत्नस्य च वज्रस्य च तृणस्य च अन्नस्य च काष्ठस्य च पानीयस्य च पोतवहनं भरन्ति, भृत्वा प्रदक्षिणानुकूलेन=पृष्ठतः समागच्छताऽनुकूलेन वातेन यत्रैव 'गंभीरपोयपट्टणे' गम्भीरपोतपत्तनं=पोतावतरणस्थानं वर्त्तते तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य पोतवहनं 'लंबेंति' लम्बयन्ति=श्रृङ्खलापातादिना स्थापयन्ति, लम्बयित्वा=स्थापयित्वा शकटीशाकटं सज्जयन्ति, सज्जयित्वा 'तं' तद् हिरण्यं यावद् वज्रं च 'एगट्ठियाहिं' एकार्थिकाभिः=लघुनौकाभिः पोतवहनात् 'संचारेंति' संचारयन्ति=हिरण्यादिकमवतारयन्ति, संचार्य,=अवतार्य तैः शकटी-

---

भरित्तए त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति पडिसु० हिरण्णस्स रयणस्स य वइरस्स य तणस्स य अण्णस्स य कट्ठस्स य पाणियस्स पोयवहणं भरेंति) हे देवानुप्रियों ! हमें इन अश्वों से क्या तात्पर्य है। ये जो हिरण्य की खानें हैं, सुवर्ण की खानें हैं, रत्न की खानें हैं वज्र की खानें हैं उनमें से हिरण्य, सुवर्ण, रत्न एवं वज्रों को लेकर पोत भर लेने में आनंद है इस प्रकार विचार कर उन्होंने एक दूसरेकी इस बात को मान लिया। मान करके फिर उन्होंने हिरण्य को सुवर्ण को रत्न को वज्र को तृण को अनाज को काष्ठ लकड़ी—और पानीको जहाज में भर लिया। (भरित्ता पयक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव गंभिर पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयवहणं लंबेंति, लंबित्ता, सगडीसागडं सज्जेंति सज्जित्ता तं हिरण्णं जाव वइरं च एगट्ठियाहिं

य रयणस्स य वइरस्स य पोयवहणं भरित्तए त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति पडिसु० हीरण्णस्स रयणस्स य वइरस्स य तणस्स य अण्णस्स य कट्ठस्स य पाणियस्स पोयवहणं भरेंति)

હે દેવાનુપ્રિયો ! આ ઘોડાઓથી અમારે શી નિસ્બત છે ? આ જે હિરણ્યની ખાણો છે, સુવર્ણની ખાણો છે, રત્નની ખાણો છે, વજ્રની ખાણો છે, તે એમાંથી હિરણ્ય, સુવર્ણ, રત્નો, અને વજ્રોને લઈને વહાણને ભરી લેવામાં જ આનંદ છે. આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેમણે એક બીજાની વાતને સ્વીકારી લીધી. સ્વીકારીને તેમણે હિરણ્ય, સુવર્ણ, રત્નો, વજ્રો, તૃણ, અનાજ, કાષ્ઠ—લાકડાંઓ, અને પાણીને વહાણમાં ભરી લીધાં.

(ભરિત્તા પયક્ખિણાણુકૂલેણં વાએણં જેણેવ ગંભીર પોયપટ્ટણે તેણેવ ઉવાગચ્છંતિ, ઉવાગચ્છિત્તા પોયવહણં લંબેંતિ, લંબિત્તા, સગડીસાગડં સજ્જેંતિ સજ્જિત્તા તં હિરણ્ણં જાવ વઇરં ચ એગટ્ઠિયાહિં પોયવહણાઓ સંચારેંતિ, સંચારિત્તા સગડી

शाकटं भरन्ति, भृत्वा शकटीशाकट संयोजयन्ति संयोज्य यत्रैव हस्तिशीर्षकं नगरं तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य हस्तिशीर्षकस्य नगरस्य बहिः 'अग्गुज्जाणे' अग्र्योद्याने=आगन्तुकनिवासोद्याने सार्थनिवेशं कुर्वन्ति, कृत्वा शकटीशाकटं मोचयन्ति, मोचयित्वा, महार्थं यावत् प्राभृतं गृह्णन्ति, गृहीत्वा हस्तिशीर्षं नगरमनु-

---

पोयवहणाओ संचारेंति, संचारित्ता सगडीसागडं भरेंति, भरित्ता संजोइंति, संजोइत्ता जेणेव हत्थिसीसए णयरे तेणेव उवागच्छंति) भरकर के फिर वे लोग अपने पृष्ठ भाग से होकर आनेवाली अनुकूल वायु की सहायता से जहां पोत के ठहरने का स्थान बंदरगाह-था वहां आये। वहां आकर के उन्होंने अपने पोत को लंगर डालकर ठहरा दिया। पोत ठहरा करके फिर उन्होंने शकटी-गाड़ी और शकटों-गाडों को सज्जित किया-रस्सी आदि बांध कर उन्हें तैयार किया। जब वे अच्छी तरह सुसज्जित हो चुके-तब बाद में उन लोगों ने छोटी २ नौकाओं से उस पोत-नाव पर रक्खे हुए हिरण्य आदि वज्र पर्यंत के समस्त सामान को उतार लिया और उतार कर उन शकटी-गाड़ी शाकटों-गाडों में उसे भर दिया। भरने के बाद फिर उन्होंने उन शकटी शाकटों को जोत दिया-जोतकर फिर वे जहां हस्तिशीर्ष नगर था वहां आये (उवागच्छित्ता हत्थिसीसयस्स नयरस्स बहिया अग्गुज्जाणे सत्थणिवेसं करेंति, करित्ता सगडी सागडं मोएंति, मोइत्ता महत्थं जाव पाहुडं गेण्हंति, गेण्हित्ता हत्थिसीसं नगरं अणुपविसंति, अणुपविसित्ता जेणेव

सागडं, भरेंति, भरित्ता संजोइंति, संजोइत्ता जेणेव हत्थिसीसए णयरे तेणेव उवागच्छइ)

लईने तेओ बधा पोतानी पीठ तरफथी वहेता अनुकूळ पवननी सहायताथी ज्यां वहाणु ऊभुं राखवानु स्थान-बंदर हतुं त्यां आव्या. त्यां आवीने तेमणे पोताना वहाणुने लंगर नाखीने लांगर्युं वहाणुने लांगरी तेमणे शकटी-गाडी, अने शकटो-गाडांओने सुसज्ज कर्यां. दोरी वगेरेथी बांधीने तेमने तैयार कर्यां ज्यारे ते सारी रीते सुसज्ज थई गयां त्यारे ते लोकोए नानी नानी नौकाओथी ते वहाणुमां मूकेला हिरण्यथी मांडीने वज्र सुधीना बधा सामानने उतारी लीधो, अने उतारीने ते शकटी-गाडी अने शकटो-गाडांओमां भरी दीधो भर्या पछी तेमणे ते शकटी-गाडी अने शकटो-गाडांओने जोतर्यां अने जोतरीने तेओ ज्यां हस्तिशीर्ष नगर हतुं त्यां गया.

(उवागच्छित्ता हत्थिसीसयस्स नयरस्स बहिया अग्गुज्जाणे सत्थणिवेसं करेंति, करित्ता सगडीसागडं मोएंति, मोइत्ता महत्थं जाव पाहुडं गेण्हंति गेण्हित्ता

प्रविशन्ति, अनुप्रविश्य यत्रैव कनककेतू राजा तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य यावत् तत्प्राभृतम् ' उवणेंति ' उपनयन्ति भूपसमीपे स्थापयन्ति॥ सू० २ ॥

मूलम्—तएणं से कणगकेऊ राया तेसिं संजत्ताणावावाणियगाणं तं महत्थं जाव पडिच्छइ पडिच्छित्ता तं संजत्ताणावावाणियगा एवं वयासी तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! गामागार जाव अहिंडह लवणसमुदं च अभिक्खणं२ पोयवहणेणं ओगाहह तं अत्थि आइं केइ भे कहिंचि अच्छेरए दिट्ठपुव्वे ?, तएणं ते संजत्ताणावावाणियगा कणगकेऊं एवं वयासी—एवं खलु अम्हे देवाणुप्पिया ! इहेव हत्थिसीसे नयरे परिवसामो तं चेव जाव कालियदीवं तेणं संवूढा, तत्थ णं बहवे हिरण्णागरा य जाव

कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव उववेंति) वहां आकर के वे लोग उस हस्तिशीर्ष नगर के बाहर के प्रधान उद्यान में ठहर गये वहां ठहर उन्हों ने वहीं पर शकटी—गाड़ी शाकटो—गाड़ों को ढील—ठहरा दिया। ढीलकर के बाद में महार्थ—महाप्रयोजन साधक भूत —यावत् प्राभृत भेंट को उन्हों ने अपने २ हाथों में लिया—और लेकर के वे हस्तिशीर्ष नगर में प्रविष्ट हुए नगर में प्रविष्ट होकर वे जहां कनक केतु राजा थे वहां पहुँचे। वहां पहुँचक उन्हों ने उस महाप्रयोजन साधक भूत प्राभृत को राजा के पास रख दिया॥ सू० २ ॥

हत्थिसीसं नगरं अणुपविसंति, अणुपविसित्ता, जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव उववेंति)

ત્યાં આવીને તેઓ બધા તે હસ્તિશીર્ષ નગરની બહારના મુખ્ય ઉદ્યાનમાં રોકાઈ ગયા, ત્યાં રોકાઈને તેમણે ત્યાં જ શકટી—ગાડી અને શાકટો—ગાડાંઓને છોડી મૂકયાં. ત્યારબાદ તેમણે મહાર્થ—મહાપ્રયોજન સાધક ભૂત યાવત્ ભેટને પોતપોતાના હાથોમાં લીધી અને લઈને તેઓ હસ્તિશીર્ષ નગરમાં પ્રવિષ્ટ થયા. નગરમાં પ્રવિષ્ટ થઈને તેઓ જ્યાં કનકકેતુ રાજા હતો ત્યાં પહોંચ્યા. ત્યાં પહોંચીને તેમણે તે મહાપ્રયોજન સાધક રૂપ ભેટને રાજાની સામે મૂકી દીધી. ॥ સૂત્ર ૨ ॥

बहवे तत्थ आसा किं ते ?, हरिरेणु जाव अणेगाइं जोयणाइं उब्भमंति, तएणं सामी अम्हेहिं कालियदीवे ते आसा अच्छेरए दिट्ठपुव्वे, तएणं से कणगकेऊ राया तेसिं संजत्तगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा ते संजत्तए एवं वयासी—गच्छहणं तुब्भे देवाणुप्पिया मम कोडुंबियपुरिसेहिं सद्धिं कालियदीवाओ ते आसे आणेह, तएणं ते संजत्ताणावावाणियगा कणगकेउं रायं एवं वयासी—एवं सामि त्तिकट्टु आणाए पडिसुणेंति, तएणं कणगकेऊ राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संजत्तिएहिं सद्धिं कालियदीवाओ मम आसे आणेह, ते वि पडिसुणेंति, तएणं ते कोडुंबिय० सगडीसागडं सज्जेंति सज्जित्ता तत्थ णं बहूणं वीणाण य वल्लकीण य भामरीण य कच्छभीण य भंभाण य छब्भामरीण य वित्तवीणाण य अन्नेसिं च बहूणं सोतिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति भरित्ता बहूणं किण्हाण य जाव सुक्किलाणं य कट्ठकम्माण य ४ गंथिमाण य ४ जाव संघाइमाण य अन्नेसिं च बहूणं चक्खिदियपाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति बहूणं कोट्ठपुडाण य केयईपुडाण य जाव अन्नेसिं च बहूणं घाणिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति बहुस्स खंडस्स य गुलस्स य सक्कराए य मच्छंडियाए य पुप्फुत्तर पउमुत्तराण य अन्नेसिं च जिब्भिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति । बहूणं कोयवियाण य कंबलाण

य पावरणाण य नवतयाण य मलयाण य मसूराण य सिला-
वट्टाण य जाव हंसगब्भाण य अन्नेसिं च फासिंदिय पाउग्गाणं
दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति भरित्ता सगडीसागडं जोएंति
जोइत्ता जेणेव गंभीरए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति उवाग-
च्छित्ता सगडीसागडं मोएंति मोइत्ता पोयवहणं सज्जेंति सज्जित्ता
तेसिं उक्किट्ठाणं सद्दफरिसरसरूवगंधाणं कट्ठस्स य तणस्स य
पाणियस्स य तंदुलाण य समियस्स य गोरसस्स य जाव अन्नेसिं
च बहूणं पोयवहणपाउग्गाणं पोयवहणं भरेंति भरित्ता दक्खि-
णाणुकूलेणं वाएणं जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छइ उवा-
गच्छित्ता पोयवहणं लंबेंति लंबित्ता ताइं उक्किट्ठाइं सद्दफरिसरस-
रूवगंधाइं एगट्ठियाहिं कालियदीवे उत्तारेंति। जहिं २ च णं
ते आसा आसायंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा
तहिं २ च णं ते कोडुंबियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव वित्त-
वीणाओ य अन्नाणि य बहूणि सोइंदियपाउग्गाणि य दव्वाणि
समुदीरेमाणा चिट्ठंति तेसिं परिपरंतेणं पासए ठवेंति ठवित्ता
णिच्चला णिप्फंदा तुसिणीया चिट्ठंति, जत्थ २ ते आसा आसयंति
वा जाव तुयट्टंति वा तत्थ तत्थ णं ते कोडुंबियपुरिसा बहूणि
किण्हाणि य ५ कट्ठकम्माणि य जाव संघाइमाणि य अन्नाणि
य बहूणि चक्खिंदियपाउग्गाणि य दव्वाणि ठवेंति तेसिं परि-
पेरंतेणं पासए ठवेंति ठवित्ता णिच्चला णिप्फंदा तुसिणीया
चिट्ठंति जत्थ २ ते आसा आसयंति ४ तत्थ २ णं तेसिं बहूणं

कोट्टपुडाण य जाव अन्नेसिं च बहूणं घाणिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं पुंजे य णियरे य करेंति करित्ता तेसिं परिपेरंतेणं जाव चिट्ठंति जत्थ २ णं ते आसा आसयंति ४ तत्थ २ णं गुलस्स जाव अन्नेसिं च बहूणं जिब्भिंदियपाउग्गायं दव्वाणं पुंजे य निकरे य करेंति करित्ता वियरए खणंति खणित्ता गुलपाणगस्स खंडपाणगस्स जाव अन्नेसिं च बहूणं पाणगाणं वियरे भरेंति भरित्ता तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेंति जाव चिट्ठंति, जहिं २ च णं ते आसा आस० तहिं २ च णं ते बहवे कोयविया य जाव हंसगब्भा य अण्णाणि य बहूणि फासिंदिय पाउग्गाइं अत्थुयपच्चत्थुयाइं ठवेंति ठवित्ता तेसिं परिपेरंतेणं जाव चिट्ठंति, तएणं ते आसा जेणेव एते उक्किट्ठा सद्दफरिसरसरूवगंधा तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता तत्थणं अत्थेगइया आसा अपुव्वा णं इमे सद्दफरिसरसरूवगंधा इतिकट्टु तेसु उक्किट्ठेसु सद्दफरिस-रसरूवगंधेसु अमुच्छिया ४ तेसिं उक्किट्ठाणं सद्द जाव गंधाणं दूरंदूरेणं अवक्कमंति, तेणं तत्थ पउरगोयरा पउरतणपाणिया णिब्भया णिरुव्विग्गा सुहंसुहेणं विहरंति, एवामेव समणाउसो! जो अम्हं णिग्गंथो वा णिग्गंथी वा जाव सद्दफरिसरसरूवगंधेसु णो सज्जइ णो रज्जइ णो गिज्झइ, णो मुज्झइ णो अज्झोववज्जेइ से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं ४ अच्चणिज्जे जाव वीइ-वइस्सइ ॥ सू० ३ ॥

टीका—'तएणं से' इत्यादि । ततः खलु स कनककेतू राजा तेषां संयात्र-नौकावाणिजकानां तन्महार्थं यावत् प्राभृतं 'पडिच्छइ' प्रतीच्छति=स्वीकरोति प्रतीष्य तान् संयात्रनौकावाणिजकान् एवमवादीत्-यूयं खलु हे देवानुप्रियाः! 'गामागर जाव अहिंडह' ग्रामाकर यावत् - ग्रामाकरनगरादिषु आहिण्डथ= गच्छत, लवणसमुद्रं च अभीक्ष्णं २ पोतवहनेन अवगाहध्वे 'तं' तत्=तर्हि अस्ति 'आइं' इतिवाक्यालङ्कारे किमपि 'भे' युष्माभिः 'कहिंचि' कुत्रचिद् 'अच्छेरए' आश्चर्यकर्म=आश्चर्यजनकवस्तु 'दिट्ठपुव्वे' दृष्टपूर्वम्? यदि दृष्टमस्ति तर्हि कथयतेतिभावः। ततः खलु ते संयात्रनौकावाणिजकाः कनककेतुमेवमव-

---

–ःतएणं से कणगकेऊ राया इत्यादि।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से कणगकेऊ राया) उस कनककेतु राजा ने (तेसिं संजत्ता णावा वाणियगाणं तं महत्थं जाव पडिच्छइ, पडि-च्छित्ता-ते संजत्ता णावा वाणियगा एवं वयासी-तुब्भे णं देवाणुप्पिया! गामगर जाव आहिंडह लवणसमुद्दं च अभिक्खणं २ पोयवहणेणं ओगाहह तं अत्थिआइं केइं भे कहिंचि अच्छेरए दिट्ठपुव्वे?) उन सांयात्रिक पोतवणिक जनों की उस महार्थसाधक भेंट को स्वीकार कर लिया और स्वीकार करके फिर उन सांयात्रिक पोतवणिक जनों से इस प्रकार कहा हे देवानुप्रियों तुमलोग अनेक ग्राम आकर नगर आदि स्थानों में जाते रहते हो और बार २ पोतवहन द्वारा लवणसमुद्र में अवगाहन करते रहते हो तो कहो कहीं पर तुम ने यदि कोई आश्चर्य कारी वस्तु देखी हो तो कहो-(तएणं ते संजत्ता णावा वाणियगा कण-

---

तएणं से कणगकेऊ राया इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्यारपछी (से कणगकेऊ राया) ते કનકકેતુ રાજાએ (तेसिं संजत्ता णावा वाणियगाणं तं महत्थं जाव पडिच्छइ, पडिच्छित्ता-ते संजात्ता णावा वाणियगा एवं वयासी-तुब्भेणं देवाणुप्पिया! गामागर जाव आहिंडह लवणसमुद्दं च अभिक्खणं २ पोयवहणेणं ओगाहह तं अत्थि आइं केइं भे कहिंचि अच्छेरए दिट्ठपुव्वे?)

તે સાંયાત્રિક પોતવણિકજનોની તે મહાર્થ સાધક ભેટને સ્વીકારી લીધી. અને સ્વીકારીને તે સાંયાત્રિક પોતવણિકજનોને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુ પ્રિયો! તમે લોકો ઘણાં ગામ, આકર, નગર વગેરે સ્થાનોમા આવજા કરતા રહો છો અને વહાણુ વડે લવણુ સમુદ્રની વારંવાર યાત્રા કરતા રહો છો તો અમને કહો કે તમે કોઈ નવાઈ પમાડે તેવી અદ્ભુત વસ્તુ જોઈ છે?

दन्-एवं खलु वयं हे देवानुप्रियाः ! इहैव हस्तिशीर्षे नगरे परिवसामः, 'तंचेव' तदेव पूर्वोक्तवर्णनं सर्वमत्र वाच्यम् 'जाव' यावत् कालिकद्वीपान्ते=कालिक-द्वीपसमीपे खलु 'संवूढा' संव्यूढाः-प्राप्ताः, तत्र खलु बहवो हिरण्याकराश्च यावद् बहवस्तत्राश्वाः सन्ति, किंते' किम्भूतास्ते ? इत्याह-'हरिरेणु जाव' हरिद्रेणु शोणिसूत्रकाः यावद्-तेऽस्मद्गन्धमाघ्राय भीताः सन्तः अनेकानि योजनानि दूरम् 'उब्भमंति' उद्भ्रमन्ति पलायन्ते स्म, ततः खलु हे स्वामिन् ! अस्माभिः "कालिकद्वीपे तेऽश्वाः सन्ति" तदेव 'अच्छेरए' आश्चर्यकं दृष्टपूर्वमिति । ततः खलु स

गकेऊं एवं वयासी एवं खलु अम्हे देवाणुप्पिया ! इहेव हत्थिसीसे नयरे वसामो तं चेव जाव कालियदीवं तेणं संवूढा तत्थ णं बहवे हिरण्णागरा य जाव बहवे तत्थ आसा किंते ? हरिरेणु जाव अणेगाइं जोयणाइं उब्भमंति-तएणं सामी अम्हे हि कालियदीवे ते आसा अच्छेरए दिट्ठपुव्वे) इस प्रकार राजा की बात सुनकर उन सांयात्रिक पोतवणिग्जनों ने उन कनककेतु राजा से कहा हे देवानुप्रिय ! हमलोग इसी हस्तिशीर्ष नगर में रहते हैं। हमलोग यहां से लवणसमुद्र में होकर व्यापार के निमित्त बाहर परदेश गये हुए थे-। मार्ग में हमलोगों को अनेक प्रकार के सैंकडों उपद्रव हुए-उनसे जिस किसी तरह सुरक्षित हो हमलोग कालिकद्वीप के समीप पहुँच गये । वहां हमने अनेक हिरण्य आदि की खानों को एवं अनेक अश्वों को कि जिनका कटिभाग हरिद्वर्णवाली धूलि से रचित कटिसूत्रसे चिन्हित था देखा, वे हमलोगों की गंध को सूंघ-

(तएणं ते संजत्ता णावा वाणियगा कणगकेऊं एवं वयासी-एवं खलु अम्हे देवाणुप्पिया ! इहेव हत्थिसीसे नयरे वसामो तं चेव जाव, कालिअ दीवं तेणं संवूढा, तत्थ णं बहवे हिरण्णागरा य जाव बहवे तत्थ आसा किं ते ? हरिरेणु जाव अणेगाइं जोयणाइं उब्भमंति-तएणं सामी अम्हेहि कालियदीवे ते आसा अच्छेरए दिट्ठपुव्वे)

આ પ્રમાણે રાજાની વાત સાંભળીને તે સાંયાત્રિક પોતવણિકજનોએ તે કનકકેતુ રાજાને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! અમે બધા આ હસ્તિશીર્ષ નગર માં જ રહીએ છીએ. અમે બધા વ્યાપાર ખેડવા માટે અહીંથી લવણ સમુદ્રમાં થઈને બહાર પરદેશમાં ગયા હતા. રસ્તામાં ઘણી જાતના સેંકડો ઉપદ્રવો થયા. છેવટે ગમે તેમ કરીને સુરક્ષિત રૂપમાં અમે બધા કાલિકદ્વીપની પાસે ગયા. ત્યાં અમોએ ઘણી હિરણ્ય વગેરેની ખાણોને અને ઘણા અશ્વોને-કે જેમના કટિભાગો લીલા રંગની માટીથી બનાવેલા કટિસૂત્રથી ચિહ્નિત હતા-જોયા. અમારી ગંધને સૂંઘીને તે અશ્વો ત્યાથી કેટલાક યોજનો દૂર સુધી

कनककेतू राजा तेषां 'संजत्तिगाणं' सांयात्रिकाणामन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा तान् सांयात्रिकान् एवमवदत्-गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः! मम कौटुम्बिक-पुरुषैः सार्द्धं कालिकद्वीपात्तानश्वानानयत। ततः खलु ते संयात्रानौकावाणिजका कनककेतुं राजानमेवमवादिषुः हे स्वामिन्! एवमस्तु 'त्ति कट्टु' इति कृत्वा=इत्युक्त्वा 'आणाए' आज्ञायाः=आज्ञामित्यर्थ,—'पडिसुणेंति' प्रतिशृण्वन्ति=

कर वहांसे कई योजन दूरतक जंगलमें भाग गये। अतः हे देवानुप्रिय "कालिकद्वीप में हमलोगों ने उन घोडों रूपी आश्चर्य को देखा है। (तएणं से कणगकेऊ राया तेसिं संजत्तगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा ते संजत्तए एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! मम कोडुंबिय पुरिसेहिं सद्धिं कालियदीवाओ ते आसे आणेह तएणं ते संजत्ता णावा वाणिगया कणगकेऊं रायं एवं वयासी एवं सामित्ति कट्टु आणाए पडिसुणेंति, तएणं कणगकेऊ राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया। संजत्तिएहिं सद्धिं कालियदीवाओ मम आसे आणेह, ते वि पडिसुणेंति) इसके बाद कनक केतु राजा ने उन सांयात्रिक पोतवणिक्जनों के मुख से इस अर्थ को सुनकर उन सांयात्रिकों से इस प्रकार कहा हे देवानुप्रियो! तुमलोग जाओ और मेरे कौटुम्बिक पुरुषों के साथ कालिकद्वीप से उन अश्वों को लाओ। इस प्रकार सुनकर पोतवणिक् जनों ने कनक केतु राजा से ऐसा कहा

વનમાં નાસી ગયા. હે દેવાનુપ્રિય! અમોએ કાલિક દ્વીપમાં તે અશ્વ રૂપી અદ્ભુત વસ્તુને જોઈ છે.

(तएणं से कणगकेऊ राया तेसिं संजत्तिगाणं अंतिए एयमट्ठं सोचा ते संजत्तए एवं वयासी-गच्छहणं तुब्भे देवाणुप्पिया! मम कोडुंबियपुरिसेहिं सद्धिं कालियदीवाओ ते आसे आणेह, तएणं ते संजत्ता णावा वाणियगा कणग-केऊं रायं एवं वयासी एवं सामी त्ति कट्टु आणाए पडिसुणेंति, तएणं कणगकेऊ राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छहणं तुब्भे देवाणु-प्पिया! संजत्तिएहिं सद्धिं कालियदीवाओ मम आसे आणेह. ते वि पडिसुणेंति)

ત્યારબાદ કનકકેતુ રાજાએ તે સાંયાત્રિક પોતવણિકજનોના મુખથી આ વાતને સાંભળીને તે સાયાત્રિકોને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે લોકો મારા કૌટુંબિક પુરુષોની સાથે કાલિક દ્વીપમાં જાઓ અને ત્યાંથી તે અશ્વોને લાવો. આ પ્રમાણે કનકકેતુની આજ્ઞા સાંભળીને તે પોતવણિકજનોએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સ્વામી! તમારી આજ્ઞા અમારા માટે પ્રમાણ સ્વરૂપ છે. આમ કહીને તેમણે કનકકેતુ રાજાની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી. ત્યાર

स्वीकुर्वन्ति। ततः खलु कनककेतु राजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः! सांयात्रिकैः सार्द्धं कालिकद्वीपात् मह्यम् अश्वानानयत। तेऽपि=कौटुम्बिकपुरुषाः 'पडिसुणेंति' प्रतिशृण्वन्ति 'तथास्तु' इत्युक्त्वा राजाज्ञां स्वीकुर्वन्ति। ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः शकटीशाकटं 'सज्जेंति' सज्जयन्ति=कालिकद्वीपे गमनार्थं सज्जीकुर्वन्ति, सज्जयित्वा तत्र खलु शकटीशाकटे बहूनां च वल्लकीनां च, भ्रामरीणां च 'कच्छभीण य' कच्छभीनां च-'कच्छभी' इति कच्छपाकारवीणाविशेषः, भंभानां=भेरीणां च, षड्भ्रामरीणां च,

---

हे-स्वामिन्! हमें आपकी आज्ञा प्रमाण है-ऐसा कहकर उन्हों ने कनक केतु राजा की आज्ञा को स्वीकार कर लिया। इसके बाद कनक केतु राजा ने अपने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया-और बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियों! तुम सांयात्रिक पोतवणिक् जनों के साथ जाओ -और कालिकद्वीप से मेरे लिये घोड़ों को ले आओ। राजा की इस आज्ञा को उन लोगों ने भी स्वीकार कर लिया। (तएणं ते कोडुंबियपुरिसा सगडीसागडं सज्जेंति, सज्जित्ता तत्थणं बहूणं वीणाण य वल्लकीण य भामरीण य कच्छभीण य भंभाण य छब्भामरीण य चित्तवीणाण य अन्नेसिं च बहूणं सोइंदिय पाउग्गाणं दव्वाणं सगडी सागडं भरेंति, भरित्ता बहूणं किण्हाणं य जाव संघाइमाण य अन्नेसिं च बहूणं चक्खिंदियपाउग्गाण दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति) इसके बाद उन कौटुम्बिक पुरुषों ने गाड़ी और गाड़ों को सज्जित किया-सज्जित करके उनमें उन्हों ने अनेक वीणाओं को, वल्लकियों को, भ्रामरियों को, कच्छप

બાદ કનકકેતુ રાજાએ પોતાના કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે સાંયાત્રિક પોતવણિકજનોની સાથે જાઓ અને કાલિક દ્વીપમાંથી મારા માટે ઘોડાઓને લાવો. રાજાની આ આજ્ઞાને તે લોકોએ પણ સ્વીકારી લીધી.

(तएणं ते कोडुंबियपुरिसा सगडीसागडं सज्जेंति, सज्जित्ता तत्थणं बहूण वीणाण य वल्लकीण य भामरीणय कच्छभीणय भंभाण य छब्भामरीण य चित्तवीणाण य अन्नेसिं च बहूणं सोइंदियपउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति, भरित्ता बहूणं किण्हाणं य जाव संघाइमाण य अन्नेसिं च बहूणं चक्खिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति)

ત્યારપછી તે કૌટુંબિક પુરુષોએ ગાડી અને ગાડાંઓને જોતર્યાં. જોતરીને તેમાં તેમણે ઘણી વીણાઓ, વલ્લકીઓ ભ્રામરીઓ, કાચબાના આકાર

'वित्तवीणाणय' वृत्तवीणानां=गोलाकार वीणानां च-अन्येषां च बहूनां नानाविधानां 'सोइंदियपाउग्गाणं' श्रोत्रेन्द्रिय प्रायोग्याणां=कर्णेन्द्रियसुखजनकानां द्रव्याणां= तन्त्र्यादिरूपाणां शकटीशाकटं भरन्ति तैर्वीणादिभिरित्यर्थः, भृत्वा बहूनां 'किण्हाणय जाव सुक्काणय' कृष्णानां यावत्-नीलानां पीतानां रक्तानां शुक्लानां च कृष्णादिपञ्चवर्णयुक्तानां 'कट्ठकम्माण य' काष्ठकर्मणां=काष्ठनिर्मितपुत्तलिकादीनाम्, 'पोत्थकम्माणय' पुस्तषु कर्मणां-पुस्तेषु=वस्त्रताडपत्रकर्गलादिषु कर्माणि= लेखनकर्माणि, तेषाम्, 'चित्तकम्माण य' चित्रकर्मणां=पट्टकादिषु चित्ररूपाणाम्, 'लेप्पकम्माणय' लेप्यकर्मणां=मृत्तिकासेटिकादिना वल्ल्याद्याकाररचनाविशेषरूपाणाम्, तथा-'गंथिमाण य' ग्रन्थिमानां=कौशलातिशयेन ग्रन्थिसमुदायनिष्पादितानाम्-यावत्-'वेढिमाण य' वेष्टिमानां=लतादि वेष्टनतो निष्पादितानाम्, 'पूरिमाण य' पूरिमाणां=कनकादिषु पुत्तलिकावत् छिद्रादिपूरणेन

के आकार जैसी वीणाओं को, भभाओं भेरियों-को, षड् भ्रामरियों को -गोलाकार वीणाओं को, तथा और भी अनेक विधश्रोत्रेन्द्रिय सुखजनक तंत्री आदिरूप द्रव्यों को, भरा-भर करके फिर नीले, पीले, रक्त, शुक्ल और कृष्ण रंग से रंगे हुए काठ के बने हुए खिलौनों को, पुस्तकर्मों को-वस्त्र, ताडपत्र एवं कागज आदि पर लिखे विविध प्रकार के लेखों को. निबन्धों को उपदेश पूर्ण-दोहे चौपाइ आदि में लिखी हुई कविता आदि कों को-चित्रकर्मों को-पटिया आदि पर उकेरे गये विविध चित्रों को-लेप्यकर्मों को-मृत्तिका सेटिका आदि से बल्ली आदि रूप में बनाये गये चित्रों को, ग्रंथिमों को विशेष चतुराई के साथ गांठों से बनाये गये खिलौनों को, लताओं आदि द्वारा वेष्टित करके २ रचीं गईं चीजों को,-टोपियों को, हाथों की पैरों की अंगुलियों में पहिरने योग्य

જેવી વીણાઓ, ભંભાઓ-ભેરીઓ (નગારાઓ) ષટ્-ભ્રામરીઓ, ગોળ આકારવાળી વીણાઓ તેમજ બીજા પણ ઘણા કર્ણેન્દ્રિયને સુખ આપે તેવા તંત્રી વગેરે સાધનોને ભર્યાં. ભરીને લીલા, પીળા, રાતા, સફેદ અને કાળા રંગોથી રંગાએલાં લાકડાંના બનેલાં રમકડાંને, પુસ્તકર્મોને-વસ્ત્ર તાડપત્ર અને કાગળ વગેરે ઉપર લખાએલા જાતજાતના લેખોને, નિબંધોને, દૂહા, ચોપાઇ વગેરેમાં લખાએલી ઉપદેશક કવિતાઓ વગેરેને, ચિત્ર કર્મોને-ફલક વગેરે ઉપર ચિત્રિત કરેલાં ઘણાં ચિત્રોને લેપ્ય કર્મોને, માટી સેટિકા વગેરેથી લતા વગેરે રૂપમાં બનાવવામાં આવેલા ચિત્રોને, ગ્રંથિમોને-વિશેષ ચાતુર્યથી ગાંઠોથી બનાવવામાં આવેલાં રમકડાંને, લતાઓ વગેરે વડે વેષ્ટિત કરીને બનાવવામાં આવેલી વસ્તુ-

निष्पादितानाम्, 'संघाइमाण य' सङ्घातिमानां=लोहकाष्ठादिभी रथादिवद् वस्तु-समूहैर्निष्पादितानाम्, तथा-अन्येषां च बहूनां 'चक्खिंदियपाउग्गाणं' चक्षुरिन्द्रियप्रायोग्याणां=नयनानन्दजनकानां द्रव्याणां शकटीशाकटं भरन्ति। तथा बहूनां 'कोट्ठपुडाण य' कोष्टपुटानां = सुगन्धिद्रव्यविशेषाणां च केतकीपुटानां च यावत्-एलापुटानां च, कुङ्कुमपुटानां च, उशीरपुटानां='खस' इतिभाषा प्रसिद्धसुगन्धिद्रव्याणां च, लवङ्गपुटानां चेत्यादि। अन्येषां च बहूनां घ्राणेन्द्रिय-प्रायोग्याणां द्रव्याणां शकटीशाकटं भरन्ति। तथा बहोः खण्डस्य च गुडस्य च शर्करायाश्च 'मिसरी' इति भाषा प्रसिद्धायाः 'मच्छंडियाए य' मत्स्यण्डिकायाः='कालपीमिसरी' इति भाषा प्रसिद्धायाः, पुष्पोत्तर-पद्मोत्तराणां=गुलकन्द' इति प्रसिद्धानां च, अन्येषां च जिह्वेन्द्रियप्रायोग्याणां द्रव्याणां शकटीशाकटं भरन्ति। तथा बहूनां 'कोयवियाण य' कोयविकानां = रूतपूरितप्रावरणविशेषाणां 'रजाई' इति प्रसिद्धानाम्, कम्बलानां=रत्नकम्बलानाम्, प्रावरणानां=शाटिकानां 'चद्दर' इति प्रसिद्धानाम्, 'नवतयाण य' नवतकानाम्=ऊर्णामयपर्याणानां

आभूषण आदि कों को-पुत्तलिका की तरह जो सुवर्ण आदि के पतरों पर कुन छिद्रादिकों के पूरने से चित्र बनाये जाते हैं वे पूरिम हैं इन पूरिमों को और संघातिमों को-लोहकाष्ठ आदि की तरह अनेक वस्तुओं के समुदाय से निष्पादित चित्रों को तथा और भी नेत्र इन्द्रिय को सुहावने लगने वाले द्रव्यों को भरा। (बहूणं कोट्ठपुडाण य, केयई पुडाण य जाव अन्नेसिं च बहूणं घाणिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति, बहुस्स खंडस्स य गुलस्स सक्कराए य मच्छंडियाए य पुप्फुत्तर पउमुत्तराणय अन्नेसिं च जिब्भिंदिय पाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति बहूणं कोयवियाण य केवलाणय पावरणाण य नवतयाण य

ઓને-ટોપીઓને, હાથો, પગો અને આંગળીઓમાં પહેરવાનાં આભૂષણ વગેરેને પૂતળીની જેમ જે સુવર્ણ વગેરેના પતરાં ઉપર કાણાં પાડીને તેમને પૂરીને બનાવવામાં આવેલા ચિત્રો એટલે કે પૂરિમોને અને સંઘાતિમોને લોખંડ, કાષ્ઠ વગેરેથી બનાવવામાં આવેલા રથ વગેરેની જેમ ઘણી વસ્તુઓને એકત્રિત કરીને તેમના વડે બનાવવામાં આવેલાં ચિત્રોને તેમજ બીજાં પણ ઘણાં નેત્ર ઇન્દ્રિયને ગમે તેવા દ્રવ્યોને ભર્યાં.

(बहूणं कोट्ठपुडाण य, केयई पुडाण य जाव अन्नेसिं च बहूणं घाणिंदिय पाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति, बहुस्स खंडस्स य गुलस्स सक्कराए य मच्छंडियाए य पुप्फुत्तरपउमुत्तराण य अन्नेसिं च जिब्भिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति बहूणं कोयवियाण य केवलाण य पावरणाण य नवतयाण

'जीन' इति प्रसिद्धानाम्, मलयानां च=मलयदेशोत्पन्नवस्त्रविशेषाणाम्, 'मसूराण य' मसूरकाणां=वस्त्रादिनिर्मित वृत्ताकारासनविशेषाणाम्, 'सिलावट्टाण य' शिलापट्टानां=पट्टाकारचिक्कणशिलानां यावत् हंसगर्भाणां=हंसः=चतुरिन्द्रियकृमिविशेषः, गर्भः=तन्निर्वर्तित कोसिकारोरूतरूपः, तन्मयवस्त्राण्यपि हंसगर्भाणीत्यु-

---

मलयाण य मसूराण य सिलावट्टाण य जाव हंसगब्भाण य अन्नेसिं च फासिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं सगड़ीसागडं भरेंति) इसी तरह अनेक कोष्टपुटों को-सुगंधित द्रव्य विशेषों को केतकीपुटों को-सुगंधित पुष्पों यावत् एलापुटों को-इलायचियों को, उसीरपुटों को, खश के समुदाय को-कुंकुमपुटों को तथा और भी अनेक, घ्राणेन्द्रिय को तृप्ति कारक द्रव्यों को उन लोगों ने गाडी और गाडों में भरा। बहुत सी खांड, बहुत से गुड़ बहुत सी शर्करा- मिसरी-बहुत सी मत्स्यण्डी-कालपी मिसरी बहुत से गुलकंद, बहुतसे पद्मपाक को तथा और भी जिह्वाइन्द्रिय को तृप्ति करने वाले द्रव्यों को उन लोगों ने गाड़ी और गाडों में भरा। इसी तरह स्पर्शन इन्द्रिय को आनंददेने वाले कोयविकों को-रूई कपास-से भरे हुए प्रावरण विशेषों को-रजाइयों को-कम्बलों को-रत्न कम्बलों को-प्रावरणों को-चद्दरों को-नवलकों को-ऊन के बने हुए पलेंचों को-जीनों को-मलयदेश के बने हुए वस्त्रों को, मसूरकों को-वस्त्रों से बनाये हुए गोलाकार आसनों को-शिलापट्टों को-पट्टाकार चिकनी

य मलयाणय मसूराण य सिलावट्टाण य जाव हंसगब्भाण य अन्नेसिं च फासिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति)

આ પ્રમાણે ઘણા કોષ્ટ પુટકોને-સુગંધિત દ્રવ્ય-વિશેષોને, કેતકી પુટોને કેવડાનાં પુષ્પોને યાવત્ એલાપુટોને, એલચીઓને, ઉશીર પુટોને-ખશના સમુદાયોને, કુંકુમ પુટોને તેમજ બીજા પણ ઘણા ઘ્રાણેન્દ્રિય (નાક) ને તૃપ્તિ પમાડનારા દ્રવ્યોને તેઓએ ગાડી અને ગાડાઓમાં ભર્યાં. બહુ જ પુષ્કળ પ્રમાણમાં ખાંડ, ગોળ, સાકર-મિશ્રી, મત્સ્યંડી-કાલપી મિશ્રી, (ઉંચી જાતની સાકર) ગુલકંદ, પદ્મપાકો તેમજ બીજા પણ ઘણા જીહ્વાઈન્દ્રિય (જીભ) ને તૃપ્તિ આપનાર દ્રવ્યોને તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાંઓમાં ભર્યાં. આ પ્રમાણે સ્પર્શેન્દ્રિયને સુખ આપનારી કોયવિકોને રૂથી ભરેલા પ્રાવરણ વિશેષોને-રજાઈઓને, કામળોને, રત્ન કામળોને, પ્રાવરણોને, ચાદરોને, નવલકોને, ઊનથી બનાવવામાં આવેલાં પલેચાઓને-જીનોને-મલય દેશના વસ્ત્રોને, મસૂરકોને-વસ્ત્રો વડે બનાવવામાં આવેલા ગોળ આકાર આસનોને, શિલાપટ્ટકોને-પટ્ટના આકારની

च्यन्ते, तेषां कौशेयवस्त्राणां 'रेशमीवस्त्र' इति भाषा प्रसिद्धानां च, तथा-अन्येषां च स्पर्शेन्द्रियप्रायोग्याणां द्रव्याणां शकटीशाकटं भरन्ति, भृत्वा शकटीशाकटं योजयन्ति, योजयित्वा यत्रैव गम्भीरकं=गम्भीरनामकं पोतस्थानं तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य शकटीशाकटं मोचयन्ति, मोचयित्वा 'पोयवहणं' पोतवहनं=नौकां सज्जयन्ति, सज्जयित्वा तेषाम् 'उक्किट्ठाणं' उत्कृष्टानां=श्रेष्ठानां शब्दस्पर्शरसरूप-गन्धानां काष्ठस्य च पानीयस्य च तन्दुलानां च 'सामियस्स य' समीतस्य=

शिलाओं को, हंस गर्भों को-रेशमी वस्त्रों को, तथा और भी स्पर्शन इन्द्रिय को आनन्द देने वाली वस्तुओं को उन लोगों ने गाडी और गाडों में भरा। (भरित्ता सगडीसागडं जोएंति, जोइत्ता जेणेव गंभी-रए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सगडीसागडं मोएंति, मोइत्ता पोयवहणे सज्जेंति, सज्जित्ता तेसिं उक्किट्ठाणं सद्दफरिसरस-रूवगंधाणं कट्ठस्स य तणस्स य पाणियस्स य तंदुलाणय समियस्स य गोरसस्स य जाव अन्नेसिं च बहूणं पोयवहणपाउग्गा णं पोयवहणं भरेंति) भरकर के फिर उन लोगों ने गाडी और गाडों को जोत दिया। जोतकर के फिर वे वहां आये-जहां गंभीर नाम का पोतस्थान था-बंद-रगाह था। वहां आकर के उन लोगों ने गाड़ी और गाड़ों को ढील-रोक दिया। और फिर नौकाओंको सजाया-तैयार किया। और तैयार करके बादमें उन्होंने उन श्रेष्ठ शब्द, स्पर्श, रस, रूप, एवं गंधोंको काष्ठको तृण को पानीय द्रव्य को तंदूलों को, गेहुं के आटे को, गोरस घृतादिक-को

લીસી શિલાઓને, હંસ ગર્ભોને-રેશમી વસ્ત્રોને તેમજ બીજી પણ ઘણી સ્પર્શે-ન્દ્રિયને સુખ પમાડે તેવી ઘણી વસ્તુઓને તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાઓમાં ભરી.

(भरित्ता सगडीसागडं जोएंति, जोइत्ता जेणेव गंभीरए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सगडीसागडं मोएंति मोइत्ता पोयवहणं सज्जेंति, सज्जित्ता तेसिं उक्किट्ठाणं सद्दफरिसरसरूवगंधाणं कट्ठस्स य तणस्स य पाणि-यस्स य तंदुलाण य समियस्स य गोरसस्स य जाव अन्नेसिं च बहूणं पोयवहण पाउग्गाणं पोयवहणं भरेंति)

ભરીને તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાંઓને જોતર્યા. જોતરીને તેઓ ત્યાંથી જ્યાં ગંભીર નામે પોતસ્થાન (બંદર) હતું ત્યાં આવ્યા. ત્યાં આવીને તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાંઓને છોડી મૂક્યા. અને ત્યારપછી નૌકાઓને સુસજ્જિત કરી. સુસજ્જિત કર્યા બાદ તેમણે તે ઉત્તમ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગંધોને, કાષ્ઠને, ઘાસને, પાણીવાળા દ્રવ્યોને, તંદુલો (ચોખા) ને,

गोधूमादीनामट्टकस्य 'आटा' इति प्रसिद्धस्य, 'गोरसस्स य' गोरसस्य=घृतादिकस्य च यावत् अन्येषां च बहूनां पोतवहनप्रायोग्याणां द्रव्याणां पोतवहनं भरन्ति, भृत्वा 'दक्खिणाणुकूलेणं' दक्षिणानुकूलेन=सानुकूलेन वातेन यत्रैव कालिकद्वीपस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तत्र पोतवहनं 'लंबेंति' लम्बयन्ति=तीरस्थापितशङ्कुषु बध्नन्ति, बद्ध्वा तान्=नौकास्थितान् उत्कृष्टान्=उत्तमोत्तमान् शब्दस्पर्शरसरूपगन्धान् 'एगट्ठियाहिं' एकार्थिकाभिः=लघुनौकाभिः 'कालियदीवे' कालिकद्वीपे 'उत्तारेंति' उत्तारयन्ति=नौकातो निस्सार्य भूमौ स्थापयन्ति।

यावत् और अनेक पोतवहन प्रायोग्य द्रव्यों को उस नौका में भरदिया। (भरित्ता दक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पोयवहणं लंबेति, लंबित्ता ताइं उक्किट्ठाइं सद्दफरिसरसरूप गंधाइं एगट्ठियाहिं कालियदीवे उत्तारेंति। जहिं २ च णं ते आसा आसायंति वा सयति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा तहिं २ च णं ते कोडुंबियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव वित्तवीणाओ य अन्नाणि य बहूणि सोइंदिय पाउग्गाणि समुदीरेमाणा चिट्ठंति) भर करके फिर ये लोग जब पीछे से आनेवाला अनुकूल वायु वहा तब वहां से चलकर जहां कालिक द्वीप था वहां आये-वहां आकर के इन लोगों ने लंगर डाल दिया-लंगर डालकर पोत में से शब्द के साधन भूत वीणा आदिकों को, अच्छे स्पर्श के साधनभूत रूई से भरे हुए रजाई आदि वस्त्रों को रसनाइन्द्रिय को सुहावने लगनेवाले खांड आदि पदार्थों को

ઘઉના લોટને, ગોરસ ઘી વગેરેને યાવત્ બીજા પણ ઘણા વહાણ યાત્રામા કામ લાગે તેવાં દ્રવ્યોને તે નૌકામાં ભર્યાં.

(भरित्ता दक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोयवहणं लबेंति, लंबित्ता ताइं उक्किट्ठाइं सद्दफरिसरसरूपगंधाइं एगट्ठियाहिं कालियदीवे उत्तारेंति। जहिं २ च णं ते आसा आसायंति वा सयति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा तहिं २ च णं ते कोडुंबियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव वित्तविणाओ य अन्नाणि य बहूणि सोइंदिय पाउग्गाणि य दव्वाणि समुदीरेमाणा चिट्ठति)

ભરીને તેઓ બધા જ્યારે પાછળથી વહેતો અનુકૂળ પવન વહેવા લાગ્યો ત્યારે ત્યાંથી રવાના થઈને જ્યાં કાલિક દ્વીપ હતો ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને તે લોકોએ લંગર નાખ્યું. લંગર નાખીને વહાણમાંથી શબ્દના સાધન રૂપ વીણા વગેરેને, કોમળ સ્પર્શના સાધનભૂત રૂથી ભરેલા રજાઈ વગેરે વસ્ત્રોને, રસના (જીભ) ઇન્દ્રિયને ગમતા ખાંડ વગેરે પદાર્થોને, નેત્ર ઇન્દ્રિયને આનંદ

'जहिं २ च णं' यत्र यत्र च वने खलु ते 'आसा' अश्वाः=जात्या अश्वाः 'आसयंति वा' आसते=उपविशन्ति 'सयंति वा' शेरतेऽस्वपन्ति वा' चिट्ठंति वा' तिष्ठन्ति वा, 'तुयट्टंति वा' त्वग्वर्त्तयन्ति=शरीरं प्रसार्य स्वपन्ति वा 'तहिं २ तत्र तत्र च खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः 'ताओ' ताः=हस्तिशीर्षनगरादानीता वीणाश्च यावत्-वृत्तवीणाश्च, तथा अन्यानि च बहूनि श्रोत्रेन्द्रियप्रायोग्याणि च द्रव्याणि 'समुदीरेमाणा' समुदीरयन्तः=मधुरध्वनिना वादयन्तः तिष्ठन्ति, तेषामश्वानां 'परिपेरंतेणं' परिपर्यन्तेन=सर्वतः समन्तात् चतुर्दिक्षु इत्यर्थः 'पासए' पार्श्वे समीपे वीणादीनि स्थापयन्ति, स्थापयित्वा ते पुरुषाः 'निच्चला' निश्चलाः=चलनक्रियारहिताः 'णिप्फंदा' निःस्पन्दाः=हस्ताद्यवयवसंचाररहिताः 'तुसिणीया' वचनव्यापाररहिताः 'चिट्ठंति' तिष्ठन्ति ।

तथा-यत्र यत्र तेऽश्वाः आसते वा यावत् त्वग्वर्त्तयन्ति=लुठन्ति तत्र तत्र खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः बहूनि कृष्णानि च ५=कृष्णनीलपीतरक्तशुक्लवर्णानि काष्ठ-

---

नेत्र इन्द्रिय को आनंद देनेवाले नीले पीले आदि रंगवाले चित्रों को एवं घ्राणइन्द्रियों को सुखकारक काष्ठपुट आदि सुगंधित द्रव्यों को छोटी २ नौकाओं द्वारा पोत में से उतार कर कालिक द्वीप में रख दिया। बाद में जहां २ वे जाति अश्व बैठते थे सोते थे, ठहरते थे, लेटते थे, वहां २ वे कौटुम्बिक पुरुष उन हस्तिशीर्ष नगर से लाये हुए वीणा से लेकर वृत्तवीणा पर्यन्त के साधनो को तथा और भी श्रोत्र इन्द्रिय को सुहावनी लगनेवाली साधन सामग्री को मधुर ध्वनि से बजाते हुए ठहर गये। और (तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेंति, ठवित्ता णिच्चला, णिप्फंदा, तुसिणीया चिट्ठंति, जत्थ २ ते आसा आसयंति वा जाव तुयट्टंति वा तत्थ २ णं ते कोडुंबिय पुरिसा बहूणि किण्हाणि य ५ कट्ठकम्माणि य

પમાડનાર નીલા, પીળા વગેરે રંગના ચિત્રોને અને ઘ્રાણ (નાક) ઇન્દ્રિયને સુખ આપે તેવા કાષ્ઠપુટ વગેરે સુગંધિત દ્રવ્યોને વહાણુમાંથી નાની નાની હોડીઓમા મૂકીને કાલિક દ્વીપ ઉપર મૂકી દીધી. ત્યારપછી જ્યાં તે જાતિ અશ્વો બેસતા હતા, સૂતા હતા, રહેતા હતા, આરામ કરતા હતા ત્યાં તે કૌટુંબિક પુરુષો તે હસ્તિશીર્ષ નગરથી લઈ આવેલી વીણાથી માંડીને વૃત્તવીણા સુધીના સાધનોને તેમજ બીજા પણ શ્રોત્ર (કાન) ઇન્દ્રિયને ગમે તેવી સાધન સામગ્રીને મધુર ધ્વનિથી વગાડતાં ત્યાં રોકાઈ ગયા અને—

(तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेंति, ठवित्ता णिच्चला, णिप्फंदा, तुसिणीया चिट्ठंति, जत्थ २ ते आसा आसयंति वा जाव तुयट्टंति वा तत्थ २ णं ते कोडुं-

कर्माणि यावत् संघातिमानि च अन्यानि च बहूनि चक्षुरिन्द्रियप्रायोग्याणि च द्रव्याणि स्थापयन्ति=एकत्री कुर्वन्ति, तेषामश्वानां परिपर्यन्तेन=सर्वतः समन्तात् पार्श्वे स्थापयन्ति च, स्थापयित्वा ते निश्चलाः, निस्पन्दाः, तूष्णीकास्तिष्ठन्ति२ ।

तथा—यत्र यत्र तेऽश्वा आसते स्वपन्ति तिष्ठन्ति त्वग्वर्त्तयन्ति च तत्र तत्र खलु तेषां बहूनां कोष्ठपुटानां च यावद् अन्येषां च बहूनां घ्राणेन्द्रियप्रायोग्याणां

जाव संघाइमाणि य अन्नाणि य बहूणि चक्खिदिय पाउग्गाणि य दव्वाणि ठवेंति, ठवित्ता तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेंति, ठवित्ता णिच्चल्ला णिप्फंदा तुसिणीया चिट्ठंति) उस के चारों तरफ चारों दिशाओं में-वीणा आदिकों को स्थापित करते रहे। स्थापित करके फिर वे वहीं पर निश्चल-चलन क्रिया से रहित होकर हस्तादि अवयव को कंपित किये विना ही चुपचाप बैठ गये।

इस तरह-जिस२ वनमें वे अश्व बैठते थे, सोते थे, ठहरते थे, लेटते थे, वहां २ उन कौटुम्बिक पुरुषों ने उस आनीत बहुतसी कृष्ण, नील, पीत, रक्त, शुक्ल वर्णवाली काष्ठकर्म आदि संघातिम पर्यंत की सामग्री को जो चक्षुइन्द्रिय को आनन्दप्रद थी, तथा और भी चक्षुइन्द्रि को सुहा-वनी लगनेवाली जो वस्तुएँ थीं उन को एकत्रित किया और उन्हें उन अश्वो की चारों दिशाओं में रख दिया। रखकर के फिर वे निश्चल, निस्पन्द होकर चुपचाप बैठ गये। (जत्थ २ ते आसा आसयंति ४ तत्थ

विय पुरिसा बहूणि किण्हाणि य ५ कट्ठकम्माणिय जाव संघाइमाणि य अन्नाणि य बहूणि चक्खिदिय पाउग्गाणि य दव्वाणि ठवेंति, ठवित्ता तेसिं परिपेरतेणं पासए ठवेंति ठवित्ता णिच्चला, णिप्फंदा तुसिणीया चिट्ठंति)

તેમની ચોમેર, ચારે ચાર દિશાઓમા વીણાઓ વગેરે મૂકી. મૂકીને તેઓ ત્યાં જ નિશ્ચલ-હલન ચલનની ક્રિયાથી રહિત થઇને અંગોને હલાવ્યા વગર ચુપચાપ ત્યાં બેસી ગયા આ પ્રમાણે જે જે વનમાં અશ્વો (ઘોડાઓ) બેસતા હતા, સૂતા હતા, રહેતા હતા, આરામ કરતા હતા તે તે વનમા તે કૌટુંબિક પુરુષોએ સાથે લાવેલી ઘણી કાળી, નીલી, પીળી રાતી, સફેદ રંગની કાષ્ઠકર્મ વગેરે સંઘાતિમ સુધીની બધી વસ્તુઓને કે જેઓ ચક્ષુ (આખ) ઇન્દ્રિયને સુખ આપનારી હતી તેમજ બીજી પણ ચક્ષુ ઇન્દ્રિયને સુખ આપ-નારી જેટલી સારી વસ્તુઓ હતી તેમને ભેગી કરી અને અશ્વોની ચોમેર તેમને ગોઠવી દીધી ગોઠવીને તેઓ ત્યાં જ નિશ્ચલ, નિસ્પંદ થઇને ચુપચાપ ત્યાં જ બેસી ગયા.

(जत्थ २ ते आसा आसयंति ४ तत्थ २ णं तेसिं बहूणं कोट्ठपुडाणं य जाव अन्नेसिं च बहूणं घाणिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं पुंजेय णियरे य करेंति,

द्रव्याणां पुञ्जांश्च एकवस्तुसमूहरूपान् निकरांश्च नानाविधवस्तुराशिरूपान् कुर्वन्ति, कृत्वा तेषामश्वानां परिपर्यन्तेन=सर्वादिक्षु यावत् तूष्णीकास्तिष्ठन्ति ३।

यत्र यत्र च खलु तेऽश्वा आसते ४ तत्र तत्र खलु गुडस्य यावद् अन्येषां च बहूनां जिह्वेन्द्रियप्रायोग्याणां द्रव्यणां पुञ्जांश्च निकरांश्च कुर्वन्ति कृत्वा 'विय-

---

२ णं तेसिं बहूण कोट्ठपुडाणं य जाव अन्नेसिं च बहूणं घाणिंदिय पाउग्गाणं दव्वाणं पुंजेय णियरे य करेंति करित्ता तेसिं परिपेरंतेणं जाव चिट्ठंते, जत्थ जत्थ णं ते आसा आसयंति ४ तत्थ २ णं गुलस्स जाव अन्नेसिं च बहूणं जिब्भिंदिय पाउग्गाणं दव्वाणं पुंजे य णियरे य करेंति, करित्ता वियरए खणंति, खणित्ता गुलपाणगस्स खंडपाणगस्स जाव अन्नेसिं च बहूणं पाणगाणं वियरे भरेंति-भरित्ता तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेंति जाव चिट्ठंति जहिं २ च णं ते आसा आस० तहिं २ णं ते बहवे कोयविया य जाव गब्भाय अण्णाणि य बहूणि फासिंदियपाउग्गाइं अत्थुय पच्चत्थुयाइं ठवेंति, ठवित्ता तेसिं परिपेरंतेणं जाव चिट्ठंति) जहां जहां वे घोडे बैठते थे, सोते थे, ठहरते थे, लेटते थे, वहां २ उन कौटुम्बिक पुरुषों ने उन अनेक कोष्ठ पुटों के यावत् अन्य और घ्राणेन्द्रिय प्रायोग्य द्रव्यों, के पुञ्जों को निकरो को एकत्रित कर दिया और करके फिर वे उन अश्वों की चारों दिशाओं में यावत् चुपचाप बैठ गये। जहां २ वे घोडे बैठते थे, सोते थे, ठहरते थे, लेटते थे, वहां २ उन कौटुम्बिक पुरुषों ने गुड़ के यावत् दूसरे और रसनेन्द्रिय आल्हादक

करित्ता तेसिं परिपेरंतेणं जाव चिट्ठंति, जत्थ जत्थ णं ते आसा आसयंति ४ तत्थ २ णं गुलस्स जाव अन्नेसिं च बहूणं जिब्भिंदिय पाउग्गाणं दव्वाणं पुंजे य णियरे य करेंति, करित्ता वियरए खणंति, खणित्ता गुलपाणगस्स खंडपाणगस्स जाव अन्नेसिं च बहूणं पाणगाणं वियरे भरेंति-भरित्ता तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेंति जाव चिट्ठंति जहिं २ च णं ते आसा आस० तहिं २ च णं ते बहवे कोयविया य जाव गब्भाय अण्णाणि य बहूणि फासिंदिय पउग्गाइं अत्थुयपच्चत्थुयाइ ठवेंति, ठवित्ता तेसिं परिपेरंतेणं जाव चिट्ठंति)

જ્યાં જ્યાં તે ઘોડાઓ બેસતા હતા, સૂતા હતા. રહેતા હતા, આરામ કરતા હતા ત્યાં ત્યાં તે કૌટુંબિક પુરુષોએ તે ઘણા કોષ્ઠ પુટકોને યાવત્ બીજી પણ ઘણી ઘ્રાણેન્દ્રિય (નાક) ને સુખ પમાડે તેવી વસ્તુઓને પુષ્કળ પ્રમાણમાં ત્યાં ગોઠવી દીધી, એકઠી કરી દીધી અને એકઠી કરીને તેઓ તે ઘોડાઓને ચારે તરફ યાવત્ ચુપચાપ થઈને બેસી ગયા તે ઘોડાઓ જ્યાં જ્યાં બેસતા હતા, સૂતા હતા, રહેતા હતા, આરામ કરતા હતા ત્યાં ત્યાં તે કૌટું-

रए ' विवराणि=गर्त्तानि खनन्ति, खनित्वा गुडपानकस्य खण्डपानकस्य यावद् अन्येषां च बहूनां पानकानां विवराणि भरन्ति, भृत्वा तेषां परिपर्यन्तेन पार्श्वे स्थापयन्ति यावत् तूष्णीकास्तिष्ठन्ति ४ ।

यत्र यत्र च खलु तेऽश्वा आसते ४ तत्र तत्र च खलु ते=कौटुम्बिकपुरुषाः बहून् कोयविकान्=रूतपूरितप्रावरणविशेषान् यावत् हंसगर्भान्=कौशेयवस्त्रविशेषान् अन्यानि च बहूनि स्पर्शेन्द्रियप्रायोग्याणि वस्त्रादीनि ' अत्थुय पच्चत्थुयाइं ' आस्तृतप्रत्यवस्तृतानि=श्लक्ष्णप्रावरणप्रावृतानि कृत्वा स्थापयन्ति, स्थापयित्वा तेषां परिपर्यन्तेन यावत् तूष्णीकास्तिष्ठन्ति ५ ।

ततः खलु तेऽश्वा यत्रैव एते उत्कृष्टाः शब्दस्पर्शरसरूपगन्धास्तत्रैवोपागच्छन्ति,

---

द्रव्योंके पुंज एवं निकर लगाकर खडे कर दिये। एक ही वस्तुओंकी जो राशि होती है उसका नाम पुंज तथा भिन्न वस्तुओं की राशि का नाम निकर है। बाद में वहीं पर उन्हों ने अनेक गर्त खड्डे किये। गर्त करके उनमें गुडपानक खंडपानक यावत् और भी अनेक पानक भर दिये। बाद में वहां पर उनकी चारो दिशाओं में निश्चल-निस्पन्द होकर चुपचाप बैठ गये। इसी तरह जिन २ वनो में वे घोडे बैठते थे, सोते थे, ठहरते थे, एवं लेटते थे, वहां २ उन कौटुम्बिक पुरुषों ने अनेक रूई के भरे हुए प्रावरणों को यावत् हंसगर्भों को-रेशमी वस्त्रों को तथा-और भी अनेक स्पर्शनइन्द्रिय को सुखदायक वस्त्रों को चिकने प्रावरणों से ढककर रख दिया। बाद में वे उनके चारों ओर यावत् चुपचाप बैठ गये (तएणं ते आसा जेणेव एए उक्किट्ठा सद्दफरिसरसरूवगंधा तेणेव उवा-

---

બિક પુરુષોએ ગોળના યાવત્ બીજા ઘણાં રસનેન્દ્રિય (જીભ) ને સુખ પમાડે તેવાં દ્રવ્યોના પુંજો અને નિકરો લગાવીને ખડકી દીધાં. એક જ વસ્તુના ઢગલાને પુંજ તેમજ જુદી જુદી વસ્તુઓના ઢગલાઓને નિકર કહે છે. ત્યારપછી તે લોકોએ ત્યાં જ ઘણા ખાડાઓ તૈયાર કર્યા. તે ખાડાઓમાં તેઓએ ગોળ પાનક, ખાંડપાનક, યાવત્ બીજા પણ ઘણી જાતના પાનકો ભરી દીધાં ત્યાર બાદ તેઓ ત્યાં જ તેમની ચારે તરફ નિશ્ચલ-નિસ્પંદ થઈને ચુપચાપ બેસી ગયા. આ પ્રમાણે જે જે વનોમાં તે ઘોડાઓ બેસતા હતા, સૂતા હતા, રહેતા હતા અને આરામ કરતા હતા ત્યાં ત્યાં તે કૌટુંબિક પુરુષોએ ઘણાં રૂના પ્રાવરણોને યાવત્ હંસગર્ભોને, રેશમી વસ્ત્રોને તેમજ બીજા પણ ઘણાં સ્પર્શેન્દ્રિયને સુખ આપે તેવાં વસ્ત્રોને લીસાં પ્રાવરણોથી આચ્છાદિત કરી દીધાં. ત્યારપછી તેઓ બધા ચુપચાપ તેની ચારે તરફ બેસી ગયા

(तएणं ते आसा जेणेव एए उक्किट्ठा सद्दफरिसरसरूवगंधा तेणेव उवाग-

उपागत्य तत्र खलु-'अत्थेगइया' अस्त्येके=केचिद् अश्वाः-' अपूर्वाः=अदृष्टपूर्वाः खलु इमे शब्दस्पर्शरसरूपगन्धाः सन्ति' इति कृत्वा=इति विचिन्त्य तेषु उत्कृष्टेषु= आकर्षकेषु शब्दस्पर्शरसरूपगन्धेषु 'अमुच्छिया' अमूर्च्छिताः=मूर्छारहिताः, प्राप्तहेयोपादेयविवेकाः अगृद्धा=आसक्तिरहिताः, अग्रथिताः=लोभतन्तुभिरबद्धाः, अनध्युपपन्नाः=तदेकाग्रतारहिताः किञ्चिन्मात्रमपि तेष्वासक्तिमकुर्वाणाः सन्तः तेषामुत्कृष्टानां 'सद्द जाव गंधाणं' शब्दस्पर्शरसरूपगन्धानां दूरंदूरेण=अतिदूरत एव 'अवक्कमंति' अपक्रामन्ति=पलायन्ते स्म। ते च खलु तत्र प्रचुरगोचराः= प्रचुरचरणभूमयः प्रचुरतृणपानीयाः, निर्भयाः, निरुद्विग्नाः 'सुहं सुहेणं' सुखं-सुखेन=सुखपूर्वकं विहरन्ति।

गच्छंति, उवागच्छित्ता तत्थ णं अत्थे गइया आसा अपुव्वा णं इमे सद्द-फरिसरसरूवगंधाइं त्ति कट्टु तेसु उक्किट्ठेसु सद्दफरिसरसरूवगंधेसु अमुच्छिया४ तेसिं उक्किट्ठाणं सद्द जाव गंधाणं दूरं दूरेणं अवक्कमंति) बादमें वे अश्व जहां ये पूर्वोक्त उत्कृष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप गंध और स्पर्शवाले पदार्थ थे वहां पर आये वहां आकर के इनमें कितनेक अश्व "ये शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गंध अदृष्टपूर्व है" ऐसा विचार कर उन आकर्षक शब्द रूप, रस, स्पर्श एवं गंधो में-उन पदार्थों में-मूर्च्छित नहीं बने। हेय उपादेय के विवेक से युक्त बने हुए वे कितनेक अश्व उन में आसक्ति से रहित ही रहे लोभरूपतन्तु से बन्धे नहीं। तथा किञ्चि-न्मात्र भी उनमें आसक्ति नहीं करते हुए वे उन शब्द, स्पर्श रूप, और गंधों को बहुत ही दूर से छोड़कर चल दिये। (तेणं तत्थ पउरगोयरा

च्छंति, उवागच्छित्ता तत्थणं अत्थेगइया आसा अपुव्वा णं इमे सद्दफरिसरसरूव- त्ति कट्टु तेसु उक्किट्ठेसु सद्दफरिसरसरूवगंधेसु अमुच्छिया ४ तेसिं उक्किट्ठाणं सद्द जाव गंधाणं दूरं दूरेणं अवक्कमंति)

ત્યારપછી તે ઘોડાઓ આ બધા પૂર્વે મૂકેલા ઉત્કૃષ્ટ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ રૂપ અને ગંધવાળા પદાર્થો હતા ત્યાં આવ્યા. ત્યાં આવીને તેઓમાંથી કેટ-લાક ઘોડાઓ ' આ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગંધ અદૃષ્ટપૂર્વ છે. " આમ વિચાર કરીને તે આકર્ષક શબ્દ, રૂપ, રસ, સ્પર્શ અને ગંધોવાળા તે પદા-ર્થોમાં મૂર્છિત (મોહાંધ-લોલુપ) થયા નહિ. હેય અને ઉપાદેયના વિવેકથી સાવધ બનેલા કેટલાક ઘોડાઓ તે પદાર્થોમાં નિરાસક્ત જ રહ્યા. તેઓ લોભ રૂપી દોરીથી બંધાયા નહિ થોડી પણ આસક્તિ બતાવ્યા વગર તેઓ તે શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગંધવાળા પદાર્થોને ખૂબ દૂરથી જ છોડીને જતા રહ્યા (તેણં તત્થ પઉરગોયરા પઉરત્તણપાણિયા ણિબ્ભયા ણિરુવ્વિગ્ગા સુહં

अथोपनयं प्रदर्शयति,—'एवामेव' एवमेव=शब्दाद्यमूर्च्छिताकीर्णाश्ववत् 'समणाउसो' हे आयुष्मन्तः श्रमणाः! योऽस्माकं निर्ग्रन्थी वा यावत्-आचार्योपाध्यायानामन्तिके प्रव्रजितः सन् शब्दस्पर्शरसरूपगन्धेषु 'नो सज्जइ' नो सज्जते=आसक्तिमान् न भवति 'नो रज्जइ' नो रज्यते अनुरक्तो न भवति, नो गृध्यति, न वाञ्छति, नो मुह्यति=न मूर्छति, नो अभ्युपपद्यते=न तल्लीनो भवति, स खलु इह लोक एव बहूनां श्रमणादीनां चतुर्विधसङ्घस्य अर्च्चनीयः=संमाननीयः यावत् चातुरन्तसंसारकान्तारं 'वीइवइस्सइ' व्यतिव्रजिष्यति=उल्लङ्घयिष्यति-पारं गमिष्यतीत्यर्थः ॥ सू० ३ ॥

पउरत्तणपाणिया णिब्भया णिरुव्विग्गा सुहं सुहेणं विहरंति) और जंगल में ही जो प्रचुरचरने की जमीन थी-जिसमें अधिक से अधिक मात्रा में तृण और पानी भरा हुआ रहता था उसमें ही निर्भय, निरुद्विग्न होकर सुखपूर्वक रहे। अब इस दृष्टान्त का उपनय प्रदर्शित करने के लिये सूत्रकार कहते है-। (एवामेवसमणाउसो! जो अम्हं णिग्गंथो वा णिग्गंथी वा जाव सद्द फरिसरसरूवगंधेसु णो सज्जइ णो णो रज्जइ, जो गिज्झइ, णो मुज्झइ, णो अज्झोववज्जेइ, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं ४ अच्चणिज्जे जाव वीइवइस्सइ) हे आयुष्मंत श्रमणो! इसी तरह जो हमारा निर्ग्रन्थ साधुजन एवं निर्ग्रन्थी साध्वी जन अचार्य उपाध्यय के पास प्रव्रजित होकर शब्द स्पर्श, रस, रूप, और गंध इन पांचों इन्द्रियों के विषयो में आसक्ति युक्त नहीं होता है, अनुरक्त नहीं बनता है, उन्हें चाहता नहीं है, उनमें मूर्छित नहीं होता है, उनमें तल्लीन नहीं होता है, वह इस लोक में ही अनेक

सुहेणं विहरंति) અને વનમાં જ પ્રચુર ચરવાની જમીન હતી, જ્યાં વધારેમાં વધારે ઘાસ અને પાણી હતાં ત્યાં જ નિર્ભય, નિરૂદ્વિગ્ન થઈને સુખથી રહેવા લાગ્યા. હવે આ દૃષ્ટાન્તનો ઉપનય સ્પષ્ટ કરવા માટે સૂત્રકાર કહે છે કેઃ—

(एवामेव समणाउसो जो अम्हं णिग्गंथो वा णिग्गंथी वा जाव सद्दफरिसरसरूवगंधेसु णो सज्जइ णो रज्जइ, जो गिज्झइ, णो मुज्झइ, णो अज्झोववज्जेइ, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं ४ अच्चणिज्जे जाव वीइवइस्सइ)

હે આયુષ્મંત શ્રમણો! આ પ્રમાણે જ જે અમારા નિર્ગ્રંથ સાધુઓ કે નિર્ગ્રંથ સાધ્વીઓ આચાર્ય કે ઉપાધ્યાયની પાસે પ્રવ્રજિત થઈને શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગંધ આ પાંચે ઈન્દ્રિયોના વિષયોમાં આસક્ત થતા નથી, અનુરક્ત થતા નથી, તેમને ઈચ્છતા નથી, તેઓમાં મૂર્છિત થતા નથી

मूलम्—तत्थ णं अत्थेगइया आसा जेणेव उक्किट्ठा सद्दफरिस-रसरूवगंधा तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तेसु उक्किट्ठेसु सद्दफरिसे ५ मुच्छिया जाव अज्झोववण्णा आसेविउं पयत्ता यावि होत्था, तएणं ते आसा ते उक्किट्ठे सद्द ५ आसेवमाणा तेहिं बहूहिं कूडेहि य पासेहि य गलएसु य पाएसु य बज्झंति, तएणं ते कोडुंबियपुरिसा ते आसे गिण्हंति गिण्हित्ता एगट्ठियाहिं पोयवहणे संचारेंति संचारित्ता तणस्स कट्ठस्स जाव भरेंति, तएणं ते संजत्तानावावाणियगा दक्खिणाणु-कूलेणं वाएणं जेणेव गंभीरपोयट्टणे तेणेव उवागच्छइ उवा-गच्छित्ता पोयवहणं लंबेंति लंबित्ता ते आसे उत्तारेंति उत्ता-रित्ता जेणेव हत्थिसीसे णयरे जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेंति वद्धावित्ता ते आसे उवणेंति, तएणं से कणगकेऊ तेसिं संजत्ताणावा-वाणियगाणं उस्सुक्कं वियरइ वियरित्ता सक्कारेंति सम्माणेंति सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ, तएणं से कणगकेऊ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता सक्कारेंति० पडिविस-ज्जेइ, तएणं से कणगकेऊ राया आसमद्दए सद्दावेइ सद्दा-वित्ता एवं वयासी—तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! मम आसे विण-

श्रमण आदि जनोंका तथा चतुर्विध संघका संमाननीय होता है। यावत् वह इस चतुर्गति संसार कान्तारको पार कर देने वाला होता है ॥सू०३॥

તે આ લોકમાં જ ઘણા શ્રમણ વગેરેથી તેમજ ચતુર્વિધ સંઘથી સન્માન પ્રાપ્ત કરે છે. યાવત્ તે આ ચતુર્ગતિ રૂપ સંસાર કાંતારને પાર કરનાર થઈ જાય છે. ॥ સૂત્ર ૩ ॥

एह, तएणं ते आसमद्दगा तहत्ति पडिसुणंति पडिसुणित्ता ते आसे बहूहिं मुहबंधेहिं य कण्णबंधेहि य णासाबंधेहि य खुरबंधेहि य खलिणबंधेहि य अहिलाणेहि य पडियाणेहि य अंकणाहि य वित्तप्पहारेहि य लयप्पहारेहि य कसप्पहारेहि य छिवप्पहारेहि य विणयंति विणयित्ता कणगकेउस्स रन्नो उवणेंति। तएणं से कणगकेऊ राया ते आसमद्दए सक्कारेइ सक्कारित्ता पडिविसज्जेइ, तएणं ते आसा बहूहिं मुहबंधेहि य जाव छिवप्पहारेहि य बहूणि सारीरमाणसाणि दुक्खाइं पावेंति, एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वइए समाणे इट्ठेसु सद्दफरिसरसरूवगंधेसु य सज्जइ रज्जइ गिज्झइ मुज्झइ अज्झोववज्जइ से णं इहलोए चेव बहूणं समणाण य जाव सावियाण य हीलणिज्जे जाव अणुपरियट्टिस्सइ ॥ सू० ४ ॥

टीका- 'तत्थ णं' इत्यादि। तत्र खलु 'अत्थेगइया' अस्त्येके=केचित् अश्वा यत्रैव उत्कृष्टाः शब्दस्पर्शरसरूपगन्धास्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तेषु उत्कृष्टेषु=शब्दस्पर्शरसरूपगन्धेषु मूर्च्छिताः यावत्-अध्युपपन्नाः=तत्तद्विषयेषु एकाग्रतां प्राप्ताः सन्तस्तान् आसेवितुं प्रवृत्ताश्चाप्यभवन्। ततः खलु तेऽश्वा एतान् उत्कृष्टान्

'तत्थणं अत्थे गइया' इत्यादि।

टीकार्थ-(तत्थणं अत्थेगइया आसा जेणेव उक्किट्ठा सद्दफरिसरसरूवगंधा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेसु उक्किट्ठेसु सद्दफरिसे५ मुच्छिया जाव अज्झोववण्णा आसेविउं पयत्ता यावि होत्था) उस जंगल में उन

तत्थणं अत्थेगइया इत्यादि—

टीकार्थ-(तत्थ णं अत्थेगइया आसा जेणेव उक्किट्ठासद्दफरिसरसरूवगंधा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेसु उक्किट्ठेसु सद्दफारिसे ५ मुच्छिया जाव अज्झोववण्णा आसेविउं पयत्ता यावि होत्था)

તે વનમાં તે ઘોડાઓમાં કેટલાક ઘોડાઓ એવા પણ હતા કે જેઓ

शब्दस्पर्शरसरूपगन्धान् 'आसेवमाणा' आसेवमानाः तत्सुखानुभवं कुर्वाणाः तैर्बहुभिः कूटैश्च बन्धनविशेषैः, पाशैश्च रज्ज्वादिरूपैः गलएसु=गलेषु=कण्ठेषु पादेषु च 'बज्झंति' बध्यन्ते-ते कौटुम्बिकपुरुषास्तानश्वान् बध्नन्ति स्मेत्यर्थः। ततः

घोड़ों मे से कितनेक घोड़े ऐसे भी थे जो जहां वे उत्कृष्ट शब्द स्पर्श रस, रूप एवं गंध ये पांचों इन्द्रियों के आकर्षक विषय थे वहां आकर उन उत्कृष्ट शब्द स्पर्श आदि विषयों में मूर्छित यावत् तल्लीन बनगये। और उन्हें सेवन करने में प्रवृत्त भी हो गये। (तएणं ते आसा ते उक्किट्ठे सद्द ५ आसेवमाणा तेसिं बहूहिं कूडेहि य पासेहि य गलएसु य पाएसु य बज्झंति, तएणं ते कोडुंबियपुरिसा ते आसे गिण्हंति गिण्हित्ता एगट्ठियाहिं य पोयवहणे संचारेंति, संचारित्ता तणस्स कट्ठस्स जाव भरेंति, तएणं ते संजत्ता णावा वाणियगा दक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव गंभीरपोयपट्टणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोयवहणं लंबेंति-लंबित्ता ते आसे उत्तारेंति) इसके बाद वे घोड़े उन उत्कृष्ट शब्द स्पर्श रस, रूप, एवं गंध इन पांचों इन्द्रियों के विषयों को सेवन करते हुए रज्ज्वादिरूपबन्धन विशेषों द्वारा कंठों और पैरोंमें बांध लिये गये। अर्थात् उन कौटुम्बिक पुरुषों ने इन घोड़ों को उस समय रस्सियों द्वारा बांध-लिया। बांध करके फिर उन कौटुम्बिक पुरुषोंने उन्हें पकड लिया पकड

જ્યાં તે ઉત્કૃષ્ટ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગંધ આ પાંચે ઇન્દ્રિયોના આકર્ષક વિષયો હતા ત્યાં આવીને તે ઉત્કૃષ્ટ શબ્દ, સ્પર્શ વગેરે વિષયોમાં મૂર્છિત (આસક્ત) યાવત્ તલ્લીન થઈ ગયા અને તેમના સેવનમાં પ્રવૃત્ત પણ થઈ ગયા.

(तएणं ते आसा ते उक्किट्ठे सद्द ५ आसेवमाणा तेसिं बहूहिं कूडेहिं य पासेहिय गलएसु य पाएसु य बज्झंति, तएणं ते कोडुंबियपुरिसा ते आसे गिण्हंति गिण्हित्ता एगट्ठियाहिं य पोयवहणे संचारेंति, संचारित्ता तणस्स कट्ठस्स जाव भरेंति, तएणं ते संजत्ता णावा वाणियगा दक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव गंभीरपोयपट्टणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोयवहणं लंबेंति-लंबित्ता ते आसे उत्तारेंति)

ત્યારપછી તે ઘોડાઓ ઉત્કૃષ્ટ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગંધ આ પાંચે ઇન્દ્રિયોના વિષયોનું સેવન કરતાં દોરડાઓ વગેરે રૂપ બંધન વિશેષથી ડોકો અને પગોમાં બંધાઈ ગયા. એટલે કે તે કૌટુંબિક પુરુષોએ તે ઘોડાઓને દોરડાઓથી બાંધી લીધા. બાંધીને તે કૌટુંબિક પુરુષોએ તે ઘોડાઓને

खलु ते कौटुम्बिकपुरुषास्तानश्वान् गृह्णन्ति, गृहीत्वा 'एगट्ठियाहिं' एकार्थिकाभिः= लघुनौकाभिः पोतवहने=बृहन्नौकायां 'संचारेंति' सञ्चारयन्ति=आरोहयन्ति सञ्चार्य तृणस्य काष्ठस्य च यावत् पोतवहन भरन्ति तृणकाष्ठादिभिरितिभावः। ततः खलु ते संयात्रनौकावाणिजकाः दक्षिणानुकूलेन=स्वानुकूलेन वातेन यत्रैव गम्भीरपोतपत्तनं=पोतलम्बनस्थानं तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य पोतवहनं 'लंबेंति' लम्बयन्ति=शंकुषु बद्ध्वा स्थापयन्ति, लम्बयित्वा तान्=अश्वान् 'उत्तारेंति' उत्तारयन्ति, उत्तार्य यत्रैव हस्तिशीर्षं नगरं यत्रैव कनककेतू राजा तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य 'करयल जाव' करतलपरिगृहीतं शिरआवर्त्तं दशनखं मस्तके-

---

कर फिर उन्हें छोटी २ नौकाओं द्वारा लाकर बडी नौका में चढाया- चढा करके फिर उसमें तृण और काष्ट आदि को भरा। इसके बाद वे सांयात्रिक पोतवणिक् दक्षिणानुकूल वायु के चलने पर जहां गंभीर नामका पोतपट्टण (बन्दरगाह) था वहां आये। वहां आकर के उन्हों ने अपने पोत को लंगर डालकर ठहरा दिया। ठहरा कर उन अश्वों को उस पोत से फिर उन्हों ने नीचे उतार लिया। (उत्तारित्ता जेणेव हत्थिसीसे णयरे जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता करयल जाव बद्धावेंति, बद्धावित्ता ते आसे उवणेंति, तएणं से कणकेऊ तेसिं संजत्ता णावावाणियगाणं उस्सुक्कं वियरइ, वियरित्ता सक्कारेइ संमाणेइ सक्कारित्ता संमाणित्ता पडिविसज्जेइ) उतार कर फिर वे वहां उन्हें ले गये जहां हस्तिशीर्ष नगर और उसमें भी

પકડી લીધા. પકડીને તેમણે નાની નાની હોડીઓ વડે મોટા વહાણમાં ચઢાવ્યા. ચઢાવ્યા બાદ તેઓએ તેમાં ઘાસ અને કાષ્ઠ ભર્યાં. ત્યારપછી તે સાંયાત્રિક પોતવણિકો દક્ષિણનો અનુકૂળ પવન વહેવા લાગ્યો ત્યારે ત્યાંથી રવાના થઈને જ્યાં ગંભીર નામે પોતપટ્ટણ (બંદર) હતું ત્યાં આવ્યા. ત્યાં આવીને તેમણે પોતાના વહાણને લંગર નાખીને રોકયું. ત્યારબાદ તેમણે ઘોડાઓને વહાણુ-માંથી નીચે ઉતાર્યા.

(उत्तारित्ता जेणेव हत्थिसीसे णयरे जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेंति, वद्धावित्ता ते आसे उवणेंति, तएणं से कणगकेऊ तेसिं संजत्ता णावा वाणियगाणं उस्सुक्कं वियरइ, वियरित्ता सक्कारेइ, संमाणेइ, सक्कारित्ता, संमाणित्ता पडिविसज्जेइ)

નીચે ઉતારીને તેઓ તે ઘોડાઓને હસ્તિશીર્ષ નગરમાં જ્યાં કનકકેતુ રાજા હતો ત્યાં લઈ ગયા. ત્યાં જઈને પહેલાં તેમણે બંને હાથ જોડીને રાજા

'लयप्पहारेहि य' लताप्रहारैश्च, 'कसप्पहारेहि य' कशाप्रहारैश्च 'कशा'–चाबुक' इति भाषायाम्, 'छिवप्पहारेहि य' छिवाप्रहारैः=चर्ममयचिक्कणकशाप्रहारैश्च 'विणयंति' विनयन्ति=शिक्षयन्ति, विनीय=शिक्षयित्वा कनककेतो राज्ञ उपनयन्ति। ततः खलु सः कनककेतू राजा तान् अश्वमर्दकान् सत्करोति सम्मानयति, सत्कृत्य सम्मान्य प्रतिविसर्जयति। ततः खलु तेऽश्वाः बहुभिर्मुखबन्धैश्च यावत्–छिवाप्रहारैश्च बहूनि शारीरमानसानि दुःखानि प्राप्नुवन्ति।

'एवामेव' एवमेव=शब्दादिविषयमूर्छिताकीर्णाश्ववत् 'समणाउसो' हे आयुष्मन्तः श्रमणाः! योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा आचार्योपाध्यायानामन्तिके प्रव्रजितः सन् इष्टेषु शब्दस्पर्शरसरूपगन्धेषु 'सज्जइ' सज्जते=आसक्तो

प्रहारों से, छिपा–चर्म की बनी हुई चिकनी कशाओं के प्रहारों से उन घोडों को शिक्षित बना दिया। (विणयित्ता कणगकेऊस्स रण्णो उवणेंति तएणं से कणगकेऊराया ते आसमदए सक्कारेइ सक्कारित्ता पडिविसज्जेइ, तएणं ते आसा बहूहि मुहबंधेहिं जाव छिवप्पहारेहि य बहूणि सारीरमानसाणी दुक्खाइं पावेंति) शिक्षित बनाकर फिर वे उन घोडों को कनककेतु राजा के पास ले गये। बादमें राजा कनककेतु ने उन अश्वमर्दकों का सत्कार सन्मान किया। सत्कार सन्मान करके फिर उन्हें विसर्जित कर दिया। वे घोडे लेकर अनेक विध उन मुख बंधनों से यावत् चर्ममय चिक्कणकशाओं के प्रहारों से नाना प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक दुःखों को पाने लगे। (एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वइए समाणे इट्ठेसु सद्दफरिसरस

ઓના પ્રહારોથી, ચાબુકના પ્રહારોની, છિપા ચામડાના બનેલા લીસા ચાબુકોના પ્રહારોથી તે ઘોડાઓને કેળવ્યા

(विणयित्ता कणगकेऊ राया ते आसमद्दए सक्कारेइ, सक्कारित्ता पडिविसज्जेइ तएणं ते आसा बहूहिं मुह बंधेहिं जाव छिवप्पहारेहिं य बहूणि सारीरमानसाणि दुक्खाइं पावेंति)

કેળવીને-શિક્ષિત બનાવીને તે ઘોડાઓને તેઓ કનકકેતુ રાજા પાસે લઇ ગયા. ત્યારપછી કનકકેતુએ તે અશ્વમર્દકોનો સત્કાર તેમજ સન્માન કર્યું. સત્કાર અને સન્માન કરીને તેમને વિસર્જિત કર્યા. તે ઘોડાઓ ઘણા મુખ બંધનોથી યાવત્ ચામડાના લીસા ચાબુકોના પ્રહારોથી અનેક જાતના શારીરિક અને માનસિક દુઃખો ભોગવવા લાગ્યા

(एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वइए समाणे इट्ठेसु सद्दफरिसरसरूवगंधेसु य सज्जइ, रज्जइ, गिज्झइ, मुज्झइ, अज्झोववज्जइ,

भवति, 'रज्जइ' रज्यते=अनुरक्तो भवति, 'गिज्झइ' गृध्यति=तद्वाञ्छासक्तो भवति, 'मुज्झइ' मुह्यति=मूर्छितो भवति, 'अज्झोववज्जइ' अध्युपपद्यते=सर्वथा तल्लीनो भवति, स खलु इह लोक एव बहूनां श्रमणानां च यावत्-श्रमणीनां श्रावकाणां श्राविकाणां च 'हीलणिज्जे' हीलनीयः यावत् चातुरन्तसंसारकान्तारम् 'अणुपरियट्टिस्सइ' अनुपर्यटिष्यति=भ्रमिष्यतीति भावः ॥सू०४॥

मूलम्-कलरिभियमहुर तंतीतलतालवंसकउहाभिरामेसु ।
सद्देसु रज्जमाणा रमंति सोइंदियवसट्टा ॥ १ ॥
सोइंदियदुद्दन्तत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।
दीविगरुयमसहंतो वहबंधं तित्तिरो पत्तो ॥ २ ॥

टीका-अथेन्द्रियासंवरणदोषान् गाथाभिः प्रदर्शयति-'कलरिभिय०' इत्यादि कलरिभितमधुरतन्त्री तल तालवंसककुदाभिरामेषु ।

रूवगंधेसु य सज्जइ, रज्जइ, गिज्झइ, मुज्झइ, अज्झोववज्जइ, सेणं इहलाहे चेव बहूणं समणाण य जाव साविंयाण य हीलणिज्जे जाव अणुपरियट्टिस्सइ) इसी प्रकार हे आयुष्मंत श्रमणों! जो हमारा निर्ग्रन्थ साधुजन अथवा साध्वीजन आचार्य उपाध्याय के पास प्रव्रजित होता हुआ इष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गंध इन पांचों इन्द्रियों के विषयों में आसक्त होता है, अनुरक्त होता है, उनकी चाह से बंधता है, उनमें मूर्च्छित बनता है, सर्व प्रकार से उनमें तल्लीन होता है वह इस लोक में ही अनेक श्रमणजनों द्वारा श्रमणी, श्रावक और श्राविकाओं द्वारा हीलनीय-निन्दा का पात्र-होता है यावत् वह चतुर्गतिरूप इस संसार कान्तार में भटकता है ॥ सू०४ ॥

सेणं इहलोए चेव बहूणं समाणाण य जाव साविंयाण य हीलणिज्जे जाव अणु परियट्टिस्सइ)

આ પ્રમાણે હે આયુષ્મંત શ્રમણો! જે અમારા નિર્ગ્રંથ સાધુજનો કે સાધ્વીજનો આચાર્ય અથવા ઉપાધ્યાયની પાસે પ્રવ્રજિત થઈને ઈષ્ટ, શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગંધ આ પાંચે ઈન્દ્રિયોના વિષયોમાં આસક્ત હોય છે, અનુરકત હોય છે, તેમની ઈચ્છા કરીને તેઓમાં બંધાઈ જાય છે, તેઓમાં મૂર્છિત બની જાય છે, બધી રીતે તેઓમાં તલ્લીન બની જાય છે. તે આ લોકમાં જ ઘણા શ્રમણો વડે તેમજ ઘણી શ્રમણી, શ્રાવક અને શ્રાવિકાઓ વડે હીલનીય-નિન્દનીય-હોય છે યાવત્ તે ચતુર્ગતિ રૂપ આ સંસાર-કાંતારમાં ભટકતો રહે છે. ॥ સૂત્ર ૪ ॥

शब्देषु रज्यमाना, रमन्ते श्रोत्रेन्द्रियवशार्त्ताः ॥ १ ॥
श्रोत्रेन्द्रियदुर्दान्तत्वस्य अथ एतावान् भवति दोषः ।
द्वीपिकारुतमसहमानो,-वधबन्धं तित्तिरः प्राप्तः ॥ २ ॥

श्रोत्रेन्द्रियवशार्त्ताः=कर्णेन्द्रियवशवर्त्तिनः कलाः श्रवणसुखदाः रिभिताः स्वर-घोलनाविशेषयुक्ताः मधुराः-प्रियाः कलरिभितमधुरध्वनिजनकत्वात् तद्रूपा ये तन्त्री-तलतालवंशाः-वीणा-करताल वेणवस्तैः समुद्भावितत्वात्-ककुदः-प्रधानाः, अभि-रामाः-मनोहरास्तेषु-शब्देषु रज्यमानाः=अनुरक्ताः सन्तः रमन्ते=मोदन्ते ॥ १ ॥ 'सोइंदिये' त्यादि । 'सोइंदियदुद्दंतत्तणस्स' श्रोत्रेन्द्रियदुर्दान्तत्वस्य श्रोत्रेन्द्रियं दुर्दान्तं यस्य स श्रोत्रेन्द्रियदुर्दान्तः=श्रोत्रेन्द्रियस्य जेतुमशक्यतया तद्वशवर्त्तीत्यर्थः, तस्य भावस्तत्त्वं, तस्य, श्रोत्रेन्द्रियाधीनतायाः, 'एत्तिओ' एतावान्=वक्ष्यमाण-प्रकारकः दोषो भवति । तं सदृष्टान्तं प्रदर्शयति-'दीविगरुयमसहंतो' द्वीपिकारु तमसहमानः-द्वीपिका=व्याध पञ्जरस्थतित्तिरः, तस्याः रुतं शब्दम् असहमानः=

'कलरिभिय' इत्यादि ।

अब सूत्रकार, इन्द्रियों के असंवरण से जो दोष उत्पन्न होते हैं उन्हें इन गाथाओं द्वारा प्रदर्शित करते हैं-कर्णेन्द्रिय के वशावर्ती बने हुए प्राणी कल-श्रवण सुखद, रिभित-स्वरों के घोलना विशेष से युक्त ऐसे मधुरप्रिय, तंत्री-वीणा, तलताल-करताल, वंशबासुरी इन से उत्पन्न होने की वजह से ककुद-अत्यन्त, अभिराम-मनोहर ऐसे शब्दो में अनुरक्त होते हुए यद्यपि मुदितमन होते हैं परन्तु श्रोत्रेन्द्रिय उनकी दुर्दमन होनेके कारण-श्रोत्रेन्द्रिय उनकी जितनेमें अशक्य होनेके कारण तद्वशवर्ती बने हुए वे प्राणी जिस तरह व्याध के पंजर में रही हुई तित्तिरी के शब्द को सुनकर तीतरपक्षी-कामराग के वश से आकृष्ट

'कलरिभिय' इत्यादि—

સૂત્રકાર હવે ઇન્દ્રિયોના અસંવરણથી જે દોષો ઉત્પન્ન થાય છે તેમને આ ગાથાઓ વડે પ્રદર્શિત કરે છે. કર્ણેન્દ્રિયના વશમાં થયેલા પ્રાણીઓ કલ-શ્રવણ સુખદ, રિભિત સ્વરોને વિશેષ રૂપમાં મેળવવાથી ઉત્પન્ન થયેલો ધ્વનિ, મધુર-પ્રિય, તંત્રી-વીણા, તલતાલ-કરતાળ, વંશ-વાંસળી એમનાથી ઉત્પન્ન હોવા બદલ કકુદ-અત્યંત, અભિરામ-મનોહર એવા શબ્દોમાં અનુરક્ત થતાં જો કે તેઓ મુદિતમન-પ્રસન્ન થાય છે. પરંતુ તેમની શ્રોત્રેન્દ્રિય (કાન) દુર્દમનીય હોવા બદલ એટલે કે મશ્રોત્રેન્દ્રિય ઉપર કાબુ મેળવવાનું કામ તેમના માટે અશક્ય હોવા બદલ તેને વશ થયેલા પ્રાણીઓ જેમ વ્યાધા-શિકારીના પીંજરામા સપડાઇ ગયેલી તિત્તિરીના શબ્દને સાંભળીને તીતર પક્ષી કામરાગના

तित्तिरः वधं=मरणं बन्धं=पञ्जरादि बन्धनं प्रामः-प्राप्नोतीत्यर्थः 'अथ' वाक्यालङ्कारे ॥ २ ॥

मूलम्-थणजहणवयणकरचरणणयणगव्वियविलासियगईसु ।
रूवेसु रज्जमाणा रमंति चक्खिंदियवसट्टा ॥ ३ ॥
चक्खिंदियदुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ भवइ दोसो ।
जं जलणंमि जलंते पडइ पयंगो अबुद्धीओ ॥ ४ ॥

टीका-स्तनजघनवदनकरचरणनयगर्वितविलासितगतिषु ।
रूपेषु रज्यमाना,-रमन्ते चक्षुरिन्द्रियवशार्त्ताः ॥ ३ ॥
चक्षुरिन्द्रियदुर्दान्तत्वस्य अथ एतावान् भवति दोषः ।
यद्ज्वलने ज्वलति, पतति पतङ्गः अबुद्धिकः ॥ ४ ॥

'थणे' त्यादि । चक्षुरिन्द्रियवशार्त्ताः स्त्रीणां स्तनजघनादि रूपेषु रज्यमानाः =अनुरक्ता रमन्ते ॥ ३ ॥

ज्वलने=अग्नौ । शेषं सुगमम् ॥ ४ ॥

होकर वध और बंधन को पाता है उसी तरह नाना प्रकार के वध बंधनों को पाया करते हैं ॥ गा० १-२ ॥

'थणजहण, चक्खिदिय' इत्यादि ।

यद्यपि चक्षुन्द्रिय के विषय की प्राप्ति करने में व्याकुल हुए प्राणी उस विषय की प्राप्ति होने पर आनन्दमग्न बन जाया करते हैं-वे स्त्रियों के स्तन, जघन, वदन, कर, चरण, नयन, गर्वित विलासयुक्त गमनादिरूप चक्षुइन्द्रिय के विषय को बार बार देखकर आसक्त होते हैं-परन्तु यह इन्द्रिय जब दुर्दान्त बन जाया करती है-तब ऐसे प्राणी जिस

આવેશમાં આવીને મૃત્યુ તેમજ બંધનને પ્રાપ્ત કરે છે, તેમ જ અનેક જાતના વધબંધનો મેળવે છે. "ગા. ૧-૨"

थण जहण चक्खिदिय इत्यादि—

જો કે ચક્ષુન્દ્રિયોના વિષયોને મેળવવા માટે અત્યંત ઉત્સુક બનેલા પ્રાણીઓ તે વિષયોની પ્રાપ્તિ થઇ જવા બાદ આનંદમગ્ન થઇ જાય છે-તેઓ સ્ત્રીઓના સ્તન, જઘન, મુખ, હાથ, ચરણ, નયન, ગર્વિત વિલાસ-યુક્ત ગમન વગેરે રૂપ ચક્ષુ-ઇન્દ્રિયોના વિષયોને વારંવાર જોઇને આસક્ત થઇ જાય છે, પરંતુ આ ઇન્દ્રિય જ્યારે દુર્દાંત બની જાય છે ત્યારે એવા પ્રાણીઓ અજ્ઞાની પતંગની

मूलम्—अगुरुवरपवरधूवण उउय मल्लाणुलेवणविहीसु ।
गंधेसु रज्जमाणा रमंति घाणिंदियवसट्टा ॥ ५ ॥
घाणिंदियदुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।
जं ओसहिगंधेणं विलाओ निद्धावइ उरगो ॥ ६ ॥

टीका—अगुरुवरप्रवरधूपन ऋतुजमाल्यानुलेपनविधिषु ।
गन्धेषु रज्यमाना,—रमन्ते घ्राणेन्द्रियवशार्त्ताः ॥ ५ ॥
घ्राणेन्द्रियदुर्दान्तत्वस्य अथ एतावान् भवति दोषः ।
यद् औषधिगन्धेन बिलाद् निर्धावति उरगः ॥ ६ ॥

घ्राणेन्द्रियवशार्त्ताः अगुरुवरः=कृष्णागुरुः, प्रवरधूपनं=दशाङ्गादिरूपो धूपः, 'उउयमल्ल' ऋतुजमाल्यानि=तत्तदृतुजातपुष्पाणि, अनुलेपनानि=चन्दनकुङ्कुमादिरूपाणि, तेषां विधयः=प्रकारा येषु गन्धेषु तत्र रज्यमानाः=अनुरक्ताः सन्तो रमन्ते ॥ ५ ॥

'ओसहिगंधेणं' ओषधिगन्धेन=केतक्यादिवनस्पतिसुगन्धानुरागवशेन

प्रकार अज्ञानी पतंग अपने प्राणों को अग्नि में डाल देता है उसी प्रकार उसी विषय में अपने प्राणों का नाश करते हैं ॥ गा० ॥ ३–४ ॥

अगुरुवर, घाणिंय इत्यादि ।

घ्राणइन्द्रिय के वशवर्ती बने हुए प्राणी अगुरुवर–कृष्णागुरु, प्रवर, धूपन,–दशाङ्गादिरूप धूप, ऋतुजमाल्य–तत्तदृतु के पुष्प, अनुलेपन–चन्दन कुङ्कुम आदि के विविध लेप रूप गंध में अनुरक्त होते हुए हर्षित मन होते हैं, परन्तु वे इस इन्द्रिय की दुर्दमनता का कुछ भी विचार नहीं करते हैं। जब यह इन्द्रिय दुर्दमन बन जाती है–तब ऐसे प्राणी

જેમ પોતાના પ્રાણોને અગ્નિમાં હોમી દે છે, તેમજ તે પણ તે વિષયમાં જ પોતાના પ્રાણોને નષ્ટ કરી નાખે છે. " ગા. ૩–૪ "

अगुरुवर, घाणिंदिय इत्यादि ।

ઘ્રાણઇન્દ્રિયના વશમાં પડેલા પ્રાણીઓ અગુરૂવર–કૃષ્ણાગુરૂ, પ્રવર, ધૂપન દશાંગાદિ રૂપ ધૂપ ઋતુજ માલ્ય–તત્તદૃ ઋતુના પુષ્પો, અનુલેપન-ચંદન–કુંકુમ વગેરેના જાતજાતના લેપના ગંધમાં અનુરક્ત થઈને હર્ષિત થઈ જાય છે, પરંતુ હકીકતમાં તો તેઓ તે ઇન્દ્રિયની દુર્દમતા વિષેનો કોઈ પણ જાતનો વિચાર કરતા જ નથી. જ્યારે તે ઈન્દ્રિય દુર્દમ બની જાય છે ત્યારે એવા પ્રાણીઓ

उरगः=सर्पः विलात् 'निधावई' निर्धावति=निस्सरति, ततो वधं बन्धनं च प्राप्नोतीति भावः। शेषं स्पष्टम् ॥ ६ ॥

मूलम्–तित्तकडुय कसायंबमहुखज्जपेज्जलेज्झेसु ।
आसाएसु य गिद्धा रमंति जिब्भिंदियवसट्टा ॥ ७ ॥
जिब्भिंदिय दुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।
जं गललग्गुक्खित्तो फुरइ थरविरल्लिओ मच्छो ॥ ८ ॥

छाया—तिक्तकटुककषायाम्लमधुरबहुखाद्यपेयलेह्येषु ।
आस्वादेषु च गृद्धा, रमन्ते जिह्वेन्द्रियवशार्त्ताः ॥ ७ ॥
जिह्वेन्द्रियदुर्दान्तत्वस्य, अथ एतावान् भवति दोषः ।
यद् गललग्नोत्क्षिप्तः, स्फुरति स्थलविरल्लितो मत्स्यः ॥ ८ ॥

टीका–जिह्वेन्द्रियवशार्त्ताः–तिक्तं=मरीचादिकं, कटुकं=कारवेल्लादिकं, कषायः=आमलकादिकम्, अम्लं=करम्बादिकं, मधुरं=मोदकादिकं, बहु=अनेकविधं 'खज्ज' खाद्यं=कदलीफलादिकं, 'पेज्जं' पेयं=दुग्धादिकं, 'लेज्झं' लेह्यं=दधिशर्करादि-

केतकी आदि की गंध से आकृष्ट बनकर जिस प्रकार बिल से निकला सर्प वधबंधन आदि कष्टों को पाता है वैसे कष्ट पाते है ॥ गा० ५–६ ॥

'तित्तकडुय जिब्भिय' इत्यादि ।

जो प्राणी जिह्वाइन्द्रिय के वशवर्ती बना रहता है वह मरीच आदि के जैसे तिक्त स्वाद में करेला के जैसे कटुक स्वाद में, आमल आदि के जैसे कषायरस में करम्बादि के जैसे अम्ल–खट्ट रस में, मोदकादि के जैसे मधुर स्वाद में तथा विविध प्रकार के कदली फलादिक खाद्य पदार्थों में, दुग्धादि पेयपदार्थों में, एवं दधि और शक्कर आदि से निष्पन्न हुए

કેતકી વગેરેની ગંધથી આકૃષ્ટ થઈને જેમ દરમાંથી નીકળેલો સાપ વધબંધન વગેરે કષ્ટોને પ્રાપ્ત કરે છે તેમજ કષ્ટ પ્રાપ્ત કરે છે. ॥ ગા. ૫–૬ ॥

तित्तकडुय जिब्भिंदिय इत्यादि ।

જે પ્રાણી જીહ્વા ઇન્દ્રિય (જીભ) ને વશ થયેલો હોય છે, તે મરચું વગેરેના જેવા તીખા સ્વાદમાં, કારેલા જેવા કડવા સ્વાદમાં, આમલી વગેરેના જેવા કષાય રસમાં, કરંબાદિના જેવા અમ્લ–ખાટા રસમાં, લાડવા વગેરેના જેવા મધુર સ્વાદમાં તેમજ જાતજાતનાં કેળા વગેરેના ખાદ્ય પદાર્થોમાં, દૂધ વગેરે જેવા પેય પદાર્થોમાં, અને દહીં તેમજ ખાંડ વગેરેથી તૈયાર થયેલા

निष्पन्नं श्रीखण्डादिकम्, एतेषां द्वन्द्वः, तेषु आस्वादेषु=आस्वाद्यन्ते इति आस्वादाः रसास्तेषु गृद्धाः=आसक्ताः सन्तः रमन्ते ॥ ७ ॥

'जिब्भिंदिये' त्यादि । पूर्वं गले=मत्स्यवेधने लग्नः, मत्स्यवेधनेन मुखे विद्ध इत्यर्थः, पश्चाद् उत्क्षिप्तः=जलादुद्धृतः इति कर्मधारयः, एवंभूतो मत्स्यः स्थलविरल्लितः=स्थले निपातितः सन् स्फुरति व्याकुलो भूत्वा भूमौ लुठति । शेषं स्पष्टम् ॥ ८ ॥

मूलम्-उउभयमाणा सुहेसु य सविभवहिययमणनिव्वुइकरेसु ।
फासेसु रज्जमाणा रमंति फासिंदियवसट्टा ॥ ९ ॥
फासिंदिय दुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।
जं खणइ मत्थयं कुंजरस्स लोहंकुसो तिक्खो ॥ १० ॥

छाया-ऋतुभज्यमानसुखेषु च, सविभवहृदयमनोनिर्वृतिकरेषु ।
स्पर्शेषु रज्यमाना, रमन्ते स्पर्शेन्द्रियवशार्त्ताः ॥ ९ ॥
स्पर्शेन्द्रिय दुर्दान्तत्वस्य, अथ एतावान् भवति दोषः ।
यत् खनति मस्तकं कुञ्जरस्य लोहाङ्कुशस्तीक्ष्णः ॥ १० ॥

टीका-'उउभये' त्यादि । स्पर्शेन्द्रियवशार्त्ताः-'उउभयमाणसुहेसु य' ऋतुभज्यमानसुखेषु ऋतुषु=हेमन्तादिषु भज्यमानानि=सेव्यमानानि सुखानि, येषु ते,

---

श्री खंड आदि लेह्य पदार्थों में आसक्तमति होकर बड़ा हर्ष मनाया करते हैं। परन्तु जब इनकी यह इन्द्रिय दुर्दान्त बन जाती है तब ऐसे प्राणी जैसे मत्स्यवेधन से-मछली पकड़ने के कांटे-वंशी-से मुख में विद्ध हुआ मत्स्य जल में से खींचकर बाहर भूमिपर डाल दिया जाता है और वह भूमिपर तड़प् २ कर मर जाता है उस इन्द्रिय के विषय में फँसकर तड़प् २ कर मर जाया करते हैं ॥ गा० ७-८ ॥

શ્રીખંડ વગેરે લેહ્ય (ચાટીને ખાઈ શકાય તેવા) પદાર્થોમાં આસક્ત થઈને ખૂબ જ હર્ષિત થતા રહે છે. પરંતુ જ્યારે તેમની આ ઇન્દ્રિય દુર્દાંત બની જાય છે, ત્યારે એવા પ્રાણી જેમ મત્સ્યવેધનથી-માછલી પકડવાના કાંટાથી મુખમાં વિદ્ધ થયેલું માછલું પાણીમાંથી બહાર ખેંચીને બહાર જમીન ઉપર નાખવામાં આવે છે અને તે જમીન ઉપર તડપી તડપીને મૃત્યુવશ થાય છે, તેમજ તે ઇન્દ્રિયના વિષયમાં ફસાઈને તડપી તડપીને મૃત્યુવશ થાય છે. ॥ ગા. ૭-૮ ॥

तेषु तथोक्तेषु तथा सविभवानां—संपत्तिशालिनां हृदयस्य मनसश्च निर्वृत्तिकरेषु सुखकरेषु। एवं भूतेषु स्पर्शेषु रज्यमानाः=अनुरक्ताः रमन्ते ॥ ९ ॥

'फासिंदिये' त्यादि। कुञ्जरस्य=करिणीस्पर्शलुब्धस्य हस्तिनो मस्तकं तीक्ष्णो-लोहाङ्कुशः खनति=विदारयति। शेषं सुगमम् ॥ १० ॥ ५ ॥ सू० ॥

मूलम्—कलरिभिय महुरतंतीतलतालवंसकउहाभिरामेसु।
सद्देसु जं न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ ११ ॥
थणजहणवयणकरचरणनयणगव्वियविलासियगईसु।
रूवेसु न रत्ता वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १२ ॥
अगुरुवरपवरधूवण उउयमल्लाणुलेवणविहीसु।
गंधेसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १३ ॥
तित्तकडुयकसायंबमहुरबहुखज्जपेज्जलेज्झेसु।
आसाएसु न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १४ ॥

(उउभयमाणं, फासिंदियदुदंत इत्यादि,

टीकार्थ—जो प्राणी स्पर्शन इन्द्रियके वशवर्ती होते हैं वे अपनी स्पर्श-नेन्द्रियकी लोलुपतासे हेमन्त आदि प्रत्येक ऋतु संबन्धी सुख भोगते हैं। तथा संपत्तिशालियों के हृदय में और मन सुखकर स्पर्शों में अनुरक्त बने रहते हैं। इस तरह करते २ जब इनकी यह स्पर्शन इन्द्रिय दुर्दान्त बन जाती है तब वे प्राणी जिस प्रकार तीक्ष्ण लोहे का अंकुश करिणी (हस्तिनी) के स्पर्श करने में लुब्धक बने हुए मत्त गजराज के मस्तक को विदार देता है उसी तरह इस स्पर्शन इन्द्रिय के द्वारा विनष्ट कर दिये जाते हैं ॥ गा० ९–१० ॥

उउ भयमाण, फासिंदियदुद्दंत इत्यादि।

જે પ્રાણીઓ સ્પર્શેન્દ્રિયને વશ થાય છે, તેઓ પોતાની સ્પર્શેન્દ્રિયની લોલુપતાથી હેમંત વગેરે દરેકે દરેક ઋતુઓના સુખો ભોગવે છે. તેમજ સંપત્તિવાળાઓના હૃદય અને મનસુખદ સ્પર્શોમાં આસક્ત બનીને રહે છે. આમ કરતાં કરતા જ્યારે તેમની આ સ્પર્શેન્દ્રિય દુર્દાંત બની જાય છે ત્યારે તે પ્રાણીઓ (હાથિણી) ને સ્પર્શવામાં લુબ્ધ બનેલા મત્ત ગજરાજના મસ્તકને વિદીર્ણ કરી નાખે છે તેમજ આ સ્પર્શેન્દ્રિય વડે વિનષ્ટ કરી નાખવામાં આવે છે. ॥ ગા. ૯–૧૦ ॥

उउभयमाणसुहेसु य सविभवहिययमणनिव्वुइकरेसु ।
फासेसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १५ ॥

टीका—शब्दादिविषयेष्वनासक्तानां वशार्त्तमरणं न भवतीति पञ्चभिर्गाथाभिः प्राह-'कलरिभिय' इत्यादि ।

कलरिभितमधुरतन्त्रीतलतालवंशककुदाभिरामेषु ।
शब्देषु ये न गृद्धा,-वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ ११ ॥
स्तनजघनवदनकरचरणनयनगर्वितविलासितगतिषु ।
रूपेषु ये न रक्ता,-वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १२ ॥
अगुरुवरप्रवरधूपन,-ऋतुजमाल्यानुलेपनविधिषु ।
गन्धेषु ये न गृद्धा,-वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १३ ॥
तिक्तकटुककषायाम्ल, मधुरबहुखाद्यपेय लेह्येषु ।
आस्वादेषु न गृद्धा,-वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १४ ॥
ऋतुभज्यमानसुखेषु च, सविभव हृदयमनोनिर्वृतिकरेषु ।
स्पर्शेषु ये न गृद्धा-वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १५ ॥
आसाम् व्याख्या सुगमा ॥ १५ ॥ सू० ६ ॥

(कलरिभिय, थणजहण, अगुरुवरपवर, तित्तकडुय, उउभयमाण, इत्यादि ।

इन गाथाओं द्वारा सूत्रकार यह प्रदर्शित करते हैं कि जो शब्दादि पांच इन्द्रियों के विषयों में आसक्त नहीं बनते हैं उनका वशार्तमरण नहीं होता है। इन गाथाओं की व्याख्या सुगम है।

जो प्राणी कर्णइन्द्रिय के विषयभूत शब्द में, चक्षुइन्द्रिय के विषयभूत रूप में नासिका इन्द्रियके विषयभूत गंध में जिह्वाइन्द्रिय के विषयभूत रस में, तथा स्पर्शन इन्द्रिय के विषयभूत स्पर्श में आसक्त-गृद्ध-नहीं होते हैं ॥ गा० ११-१५ ॥

कलरिभिय, थणजहण, अगुरुवरपवर, तित्त कडुय उउभयमाण, इत्यादि ।

આ ગાથાઓ વડે સૂત્રકાર આ વાત સ્પષ્ટ કરવા માગે છે કે જે શબ્દ વગેરે પાંચે ઇન્દ્રિયોના વિષયોમાં આસક્ત થતાં નથી, તેમનું વશાર્તમરણ થતું નથી, આ ગાથાઓની વ્યાખ્યા સરળ છે.

જે પ્રાણી કર્ણઇન્દ્રિયના વિષયભૂત રૂપમાં, નાસિકા ઇન્દ્રિયના, વિષયભૂત ગંધમાં, જીહ્વા ઇન્દ્રિયના વિષયભૂત રસમાં તેમજ સ્પર્શન ઇન્દ્રિયના વિષય ભૂત સ્પર્શમા અત્યંત આસક્ત-ગૃદ્ધ થતા નથી, તેઓ વશાર્તમરણને પ્રાપ્ત કરતા નથી. ॥ ગા. ૧૧-૧૫ ॥

मूलम्—सद्देसु य भद्दयपावएसु सोयविसयं उवागएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १६ ॥
रूवेसु य भद्दपावएसु चक्खुविसय उवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १७ ॥
गंधेसु य भद्दपावएसु घाणविसयं उवागएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १८ ॥
रसेसु य भद्दयपावएसु जिब्भाविसय उवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १९ ॥
फासेसु य भद्दयपावएसु कायविसयं उवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ २० ॥

एवं खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सत्तरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि ।

॥ सत्तरसमं नायज्झयणं समत्तं ॥ १७ ॥

टीका—अनुकूल प्रतिकूलशब्दादिषु रागद्वेषवर्जनं पञ्चभिर्गाथाभिः प्रतिबोधयति—' सद्देसु य' इत्यादि ।

शब्देषु च भद्रकपापकेषु श्रोत्रविषयमुपगतेषु ।
तुष्टेन वा रुष्टेन वा, श्रमणेन सदा न भवितव्यम् ॥ १६ ॥

सद्देसुय; फासेसुय इत्यादि ।

एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते तिबेमि ॥

अब सूत्रकार इन पांच गाथाओं द्वारा अनुकूल प्रतिकूल-शब्दादि विषयों में श्रमणजन को कभी भी रागद्वेष नहीं करना चाहिये–इस

सद्देसुय, फासेसुय इत्यादि

एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि ॥

સૂત્રકાર હવે આ પાંચ ગાથાઓ વડે એ વાત સ્પષ્ટ કરવા ઈચ્છે છે કે અનુકૂળ-પ્રતિકૂળ શબ્દાદિ વિષયોમાં શ્રમણજનોને કદાપિ રાગ-દ્વેષ નહિ

रूपेषु च भद्रकपापकेषु, चक्षुर्विषयमुपगतेषु ।
तुष्टेन वा रुष्टेन वा, श्रमणेन सदा न भवितव्यम् ॥ १७ ॥
१—भद्रकपापकेषु=अनुकूल-प्रतिकूलेषु ।
गन्धेषु च भद्रकपापकेषु, घ्राणविषयमुपगतेषु ।
तुष्टेन वा रुष्टेन वा, श्रमणेन सदा न भवितव्यम् ॥ १८ ॥
रसेषु च भद्रकपापकेषु, जिह्वाविषयमुपगतेषु ।
तुष्टेन वा रुष्टेन वा, श्रमणेन सदा न भवितव्यम् ॥ १९ ॥
स्पर्शेषु च भद्रकपापकेषु, कायविषयमुपगतेषु ।
तुष्टेन वा रुष्टेन वा, श्रमणेन सदा न भवितव्यम् ॥ २० ॥

विषय को समझाते हैं यहाँ भद्रक शब्द का अर्थ अनुकूल और पापक शब्द का अर्थ प्रतिकूल है। जब शब्द रूप विषय श्रोत्रेन्द्रिय का हो तो उस समय चाहे वह मनोज्ञ हो या अमनोज्ञ हो कैसा ही क्यों न हो उसमें श्रमण-साधु-को कभी भी तुष्ट अथवा रुष्ट नहीं होना चाहिये ॥ गा० ॥ १६ ॥

चक्षुइन्द्रिय का विषयभूतरूप जब उस इन्द्रिय द्वारा ग्रहण करने में आवे-तब वह चाहे मनोज्ञ हो या अमनोज्ञ हो उसमें श्रमण जन को कभी भी हर्ष विषाद-तुष्ट रुष्ट-नहीं होना चाहिये ॥ गा० १७ ॥

मनोज्ञ एवं अमनोज्ञ गंध जब घ्राणइन्द्रिय का विषय हो तब साधु को उस विषय में कभी भी तुष्ट रुष्ट नहीं होना चाहिये ॥ गा० १८ ॥

मनोज्ञ अथवा अमनोज्ञ रस जिह्वाइन्द्रिय का विषय हो-तब उसमें श्रमण जन को कभी भी तुष्ट और रुष्ट नहीं होना चाहिये ॥ गा० १९ ॥

કરવો જોઈએ અહીં ભદ્રક શબ્દનો અર્થ અનુકૂળ અને પાપક શબ્દનો અર્થ પ્રતિકૂળ છે. જ્યારે શબ્દરૂપ વિષય શ્રોત્ર ઈન્દ્રિયનો હોય તો ભલે તે મનોજ્ઞ હોય કે અમનોજ્ઞ હોય, ગમે તેવો કેમ ન હોય, તેમાં શ્રમણ-સાધુ-ને કદાપિ તુષ્ટ કે રૂષ્ટ થવું જોઈએ નહિ. ॥ ગા ૧૬ ॥

ચક્ષુ ઈન્દ્રિયના વિષયભૂત રૂપ જ્યારે તે ઈન્દ્રિય વડે ગ્રહણ કરવામાં આવે ત્યારે તે મનોજ્ઞ હોય કે અમનોજ્ઞ હોય, શ્રમણને કદાપિ તેમાં હર્ષ-વિષાદ-તુષ્ટ-રૂષ્ટ નહિ થવું જોઈએ ॥ ગા. ૧૭ ॥

મનોજ્ઞ અને અમનોજ્ઞ ગંધ જ્યારે ઘ્રાણ ઈન્દ્રિયનો વિષય હોય ત્યારે સાધુને તે વિષયમાં કદાપિ તુષ્ટ કે રૂષ્ટ નહિ થવું જોઈએ. ॥ ૧૮ ॥

મનોજ્ઞ અથવા તો અમનોજ્ઞ રસ જ્યારે જીહ્વા ઈન્દ્રિયનો વિષય હોય ત્યારે તેમાં શ્રમણ-જનને કદાપિ તુષ્ટ અને રૂષ્ટ થવું જોઈએ નહિ. ॥ ગા. ૧૯ ॥

'सद्देसु य' इत्यादि गाथा पञ्चकं सुगमम् ॥

सुधर्मास्वामी प्राह-"एवं खलु हे जम्बूः! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्संप्राप्तेन सप्तदशस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः=पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः=प्ररूपितः। इति ब्रवीमि-व्याख्या पूर्ववत् ॥ सू० ७ ॥

इति श्री विश्वविख्यात - जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलित-ललितकलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक श्रीशाहू छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त 'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित-कोल्हापुरराजगुरु-बालब्रह्मचारि जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री घासीलालव्रतिविरचितायां श्री ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायां सप्तदशमध्ययनं समाप्तं ॥ १७ ॥

---

८ आठ प्रकार का स्पर्श चाहे वह अनुकूल हो चाहे प्रतिकूल हो-जब २ स्पर्शन इन्द्रिय का विषय हो उसमें साधु को किसी भी तरह से कभी भी तुष्ट एवं रुष्ट नहीं होना चाहिये ॥ २० ॥

इस प्रकार हे जंबू! श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त कर चुके हैं इस सत्रहवें ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्ररूपित किया है। ऐसा मैं उन्हीं के कहे अनुसार कह रहा हूँ।

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराज कृत "ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र" की अनगार धर्मामृतवर्षिणी व्याख्या का सत्रहवां अध्ययन समाप्त ॥ १७ ॥

---

૮ જાતના સ્પર્શ—ભલે તે અનુકૂળ કે પ્રતિકૂળ ગમે તેવા કેમ ન હોય જ્યારે જ્યારે તે સ્પર્શન ઇન્દ્રિયના વિષય હોય તેમાં સાધુને કોઈ પણ રીતે કદાપિ તુષ્ટ અને રૂષ્ટ થવું જોઈએ નહિ ॥ ગા. ૨૦ ॥

આ પ્રમાણે હે જંબૂ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે-જેમણે સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને મેળવ્યું છે-આ સત્તરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમાં અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે. આવું હું તેમના કહ્યા મુજબ જ તમને કહી રહ્યો છું.

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત 'જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનું સત્તરમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૭ ॥

॥ अथाष्टादशमध्ययनम् ॥

अथाष्टादशमारभ्यते, अस्य च पूर्वेण सहायमभिसम्बन्धः-पूर्वस्मिन् अध्ययने इन्द्रियवशवर्त्तिनाम् वशीकृतेन्द्रियाणां च अनर्थार्थौ प्रोक्तौ, इह तु लोभाविष्टानां लोभरहितनां च तावेवोच्येते, इत्येवं पूर्वेण सह संवद्धमिदमध्ययनम्, तस्येदमादिमं सूत्रम्-' जइणं भंते' इत्यादि—

मूलम्-जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठारमस्स णं भंते! णायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहं णामं णयरे होत्था। वण्णओ०। तत्थ णं धण्णे णामं सत्थवाहे। भद्दाभारिया तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए अत्तया पंचसत्थवाह-

---

अठारहवां अध्ययन प्रारंभ
सुंसमादारिका का वर्णन

सत्रहवां अध्ययन समाप्त हो चुका हैं। अब १८ वां अध्ययन प्रारंभ होता है। इस अध्ययन का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार से संवध है-कि पूर्व अध्ययन में इन्द्रियवशवर्ती तथा वशकृत इन्द्रियवाले जीवों को अर्थ की प्राप्ति होना कहा गया है। अब इस अध्ययन में सूत्रकार यह कहेंगे कि जो लोभ कषायसे युक्त तथा लोभ कषाय से रहित जीव होते हैं वे अनर्थ और अर्थ प्राप्ति से योग्य होते हैं। इस अध्ययन का सर्व प्रथम सूत्र यह है-' जइणं भंते ' इत्यादि।

અઢારમા અધ્યયનનો પ્રારંભ
સુંસમાદારિકાનું વર્ણન

સત્તરમું અધ્યયન પુરૂં થયુ છે. હવે અઢારમા અધ્યયનની શરૂઆત થાય છે. આ અધ્યયનનો પહેલા અધ્યયનની સાથે આ જાતનો સંબંધ છે કે પહેલા અધ્યયનમાં ઇન્દ્રિય વશવર્તી તેમજ વશીકૃત ઇન્દ્રિયોવાળા જીવોને અર્થની પ્રાપ્તિ થાય છે, તે વિષે કહેવામાં આવ્યું છે. સૂત્રકાર હવે આ અધ્યયનમાં આ વાતનું સ્પષ્ટીકરણ કરશે કે જે જીવો લોભકષાયથી તેમજ લોભકષાયથી રહિત હોય છે. તેઓ અનર્થ અને અર્થ પ્રાપ્તિને લાયક ઠરે છે. આ અધ્યયનનું પહેલુ સૂત્ર આ છે—जइणं भंते समणेणं महावीरेणं इत्यादि—

दारगा होत्था, तं जहा—धण्णे धणपाले, धणदेवे, धणगोवे, धणरक्खिए। तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्सधूया भद्दाए अत्तया पंचण्हं पुत्ताणं अणुमग्गजातीया सुंसुमाणामं दारिया होत्था, सूमालपाणिपाया, तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स चिलाए नामं दासचेडे होत्था, अहीणपंचिंदियसरीरे मंसोवचिए बालकीलावणकुसले यावि होत्था। तएणं से चिलाए दासचेडे सुंसुमाए दारियाए बालग्गाहे जाए यावि होत्था। सुंसुमं दारियं कडीए गिण्हइ, गिण्हित्ता, बहूहिं दारएहि य दारियाहि य बालेहिं बालियाहि य डिंभएहिं य डिंभियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धिं अभिरममाणे२ विहरइ। तएणं से चिलाए दासचेडे तेसिं बहूणं दारियाण य जाव अप्पेगइयाणं खुल्लए अवहरइ, एवं वट्टइ आगेलियाओ, तेंदुसए, पोतुल्लए, साडोल्लए, अप्पेगइयाणं आभरणमल्लालंकारं अवहरइ अप्पेगइए आउस्सइ, एवं अवहसइ निच्छोडेइ, निब्भच्छेइ तज्जेइ, अप्पेगइए तालेइ। तएणं ते बहवे दारगा य ६ जाव रोयमाणा य कंदमाणा य साणं २ अम्मापिऊणं णिवेदेंति। तएणं तेसिं बहूणं दारगाणय ६ जाव अम्मापियरो जेणेव धन्ने सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता धन्ने सत्थवाहे बहूहिं खिज्जणाहि य रुंटणाहि य उवलंभणाहि य खिज्जमाणाहिय रुंटमाणाहि य उवलंभमाणा य धण्णस्स एयमट्ठं णिवेदेंति॥ सू० १॥

टीका-'जइणं भन्ते!' इत्यादि। जम्बूस्वामीपृच्छति-यदि खलु भदन्त! श्रमणेन यावन्मोक्षं संप्राप्तेन सप्तदशस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः जितेन्द्रियाऽजितेन्द्रियाणामर्थानर्थप्राप्तिरूपो भावः प्रज्ञप्तः=प्ररूपितः, अष्टादशस्य तु ज्ञाताध्ययनस्य श्रमणेन यावन्मोक्षं सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः? सुधर्मास्वामी माह-एवं खलु, हे जम्बूः! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नाम नगरमासीत्, 'वण्णओ' वर्णकः=नगरवर्णनं पूर्ववद् विज्ञेयम्। तत्र खलु धन्यो नाम सार्थवाहः परिवसति। तस्य भद्रा नाम भार्याऽऽसीत्। तस्य खलु धन्यस्य सार्थवाहस्य पुत्राः, भद्राया आत्मजाः पञ्च सार्थवाहदारका आसन। तेषां नामान्याह-'तं जहा' तद्यथा-

टीकार्थ-जंबू स्वामी श्री सुधर्मास्वामीसे पूछते हैं कि-(जइणं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते अट्ठारसमस्स णं भंते णायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते?) हे भदन्त! श्रमण भगवान महावीर ने जो कि सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त कर चुके हैं सत्रहवें ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्रज्ञप्त किया है-तो उन्हीं सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान महावीर ने १८ वें ज्ञाताध्ययन का क्या अर्थ-प्ररूपित किया है? (एवं खलु जंबू!) इस प्रकार जंबू स्वामी के पूछने पर सुधर्मास्वामी उनसे कहते हैं कि जंबू! सुनो-तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है-(तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णामं णयरे होत्था। वण्णओ० तत्थणं धण्णे णामं सत्थवाहे-भद्दा भारिया-तस्सणं धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए अत्तया पंच सत्थवाहदारगा होत्था, तं जहा-

ટીકાર્થ—જંબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે—

(जइणं भंते! समणेण जाव संपत्तेणं सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते अट्ठारसमस्स णं भंते णायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते?)

હે ભદન્ત! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે-જેઓ સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને મેળવી ચુકયા છે-સત્તરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો તે જ સિદ્ધગતિ નામના સ્થાનને મેળવી ચુકેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ૧૮ મા જ્ઞાતાધ્યયનનો શો અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે?

(एवं खलु जंबू!) આ પ્રમાણે જંબૂ સ્વામીએ પ્રશ્ન પૂછ્યો ત્યારબાદ શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જંબૂ! સાંભળો, તમારા પ્રશ્નનો જવાબ આ પ્રમાણે છે—

(तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णामं णयरे होत्था। वण्णओ० तत्थणं धण्णे णामं सत्थवाहे-भद्दा भारिया-तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए

धनः १ धनपालः २ धनदेवः ३ धनगोपः ४ धनरक्षितः ५ इति। तस्या खलु धन्यस्य सार्थवाहस्य दुहिता भद्रायाः सार्थवाह्या आत्मजा धनादीनां पञ्चानां पुत्राणाम् 'अणुमग्गजाइया' अनुमार्गजातिका=जाता एव जातिका, अनुमार्गं जातिका=अनुमार्गजातिका=पश्चाज्जाता सुंसुमा नाम दारिका आसीत्। कीदृशी सा ?-'सूमालपाणिपाया' सुकुमार पाणिपादा=कोमलकरचरणा। तस्य खलु धन्यस्य सार्थवाहस्य चिलातो नाम दासचेटः=दासपुत्र आसीत्। योहि 'अहिण-

---

धण्णे २- धणपाले-२ धणदेवे ३, धणगोवे-४ धणरक्खिए-५) उस काल और उस समयमें राजगृह नाम का नगर था। इसका वर्णन पहले जैसा ही जानना चाहिये। उस नगर में धन्य नामका सार्थवाह रहता था। इसकी पत्नी का नाम भद्रा था। इस भद्रा भार्या से उत्पन्न हुए धन्य सार्थवाह के ये पांच पुत्र थे-धन-१ धनपाल-२ धनदेव-३ धनगोप-४ और धनरक्षित-५।

(तस्सणं धण्णस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया पंचण्हं पुत्ताणं अणुमग्गजातीया सुंसुमा णामं दारिया, होत्था, सूमालपाणिपाया, तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स चिलाएणामं दासचेडे होत्था, अहं णं पंचेंदिय सरीरे मंसोवचिए, बालकीलावणकुसले यावि होत्था) इस धन्य सार्थवाह के भद्रा भार्या की कुक्षि से उत्पन्न एक सुंसुमा नामकी पुत्री थी-जो धनादिक पांच पुत्रों के पीछे उत्पन्न हुई थी। इसके कर, चरण बड़े कोमल थे। इस धन्य सार्थवाह का एक दासचेट-दास पुत्र-था-जिस

अत्तया पंच सत्थवाहदारगा होत्था, तं जहा-धण्णे १, धणपाले २, धणदेवे ३, धणगोवे-४, धणरक्खिए-५)

તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું. તેનું વર્ણન પહેલાંની જેમ સમજી લેવું જોઈએ. તે નગરમાં ધન્ય નામે સાર્થવાહ રહેતો હતો. તેની પત્નીનું નામ ભદ્રા હતું. તે ભદ્રા ભાર્યાના ગર્ભથી જન્મ પામેલા પાંચ પુત્રો હતા, તેમના નામ આ પ્રમાણે છે-ધન-૧, ધનપાલ-૨, ધનદેવ-૩, ધનગોળ-૪, અને ધનરક્ષિત-૫.

(तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया पंचण्हं पुत्ताणं अणुमग्गजातीया सुंसुमा णामं दारिया, होत्था, सूमालपाणिपाया, तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स चिलाए णामं दासचेडे होत्था, अहं णं पंचेंदिय सरीरे मंसोवचिए, बालकीलावणकुसले यावि होत्था)

તે ધન્ય સાર્થવાહની ભદ્રા-ભાર્યાના ગર્ભથી જન્મ પામેલી સુંસુમા નામે એક પુત્રી હતી. તે ધન વગેરે પોતાના ભાઈઓ બાદ ઉત્પન્ન થઈ હતી. તેના હાથ-પગ બહુ જ કોમળ હતા. તે ધન્યસાર્થવાહનો એક દાસીપુત્ર હતો તેનું

पंचिंदियसरीरे ' अहीनपञ्चेन्द्रियशरीरः=प्रतिपूर्णसर्वेन्द्रिशरीरः, ' मंसोवचिए ' मांसोपचितः=मांसैरुपचितः, पुष्टशरीर इत्यर्थः, पुनः ' बालकीलावणकुसले ' बालक्रीडनकुशलश्चापि आसीत्। ततः खलु स दासचेटः सुंसुमाया दारिकायाः ' बालग्गाहे ' बालग्राहः यो हि बालंक्रीडयितुं नियुक्तो भृत्यः स ' बालग्राहः ' इत्युच्यते जातश्चाप्यभवत्। सहि चिलातः सुंसुमां दारिकां कट्यां गृह्णाति, गृहीत्वा, बहुभिर्दारकैश्च दारिकाभिश्च बालकैश्च बालिकाभिश्च, डिम्भकैश्च डिम्भिकाभिश्च कुमारैश्च कुमारिकाभिश्च सार्द्धम्=दारकडिंभकबालककुमाराणां अल्प, बहु, बहुतर कालकृतभेदो विज्ञेयः, अभिरममाणः २ = पुनः पुनः क्रीडन् विहरति। ततः खलु स चिलातो दासचेटः तेषां बहूनां ' दाराण जाव ' दारकाणां यावत्=दारकाणां दारिकाणां डिम्भकानां डिम्भिकानां कुमाराणां कुमारिकाणां

का नाम चिलात था। जो प्रमाणोपेत पांचों इन्द्रियों से परिपूर्ण शरीर वाला था। मांसोपचित था पुष्ट देहवाला था। यह बालकों को खिलाने में विशेष कुशल था। (तएणं से चिलाए दासचेडे सुंसुमाए दारियाए बालग्गाहे जाए यावि होत्था सुंसुमदारियं कडीए गिण्हइ, गिण्हित्ता बहूहिं, दारएहिं य दारियाहि य . विहरइ-तेसिं बहूणं दारियाण य जाव अप्पेगइयाणं खुल्लए अवहरइ, एवं वट्टए आडोलियाओ तेंदुरुए पोतुल्लए साडोल्लए, अप्पेगइयाणं आभरणमल्लालंकारं अवहरइ, अप्पेगइयाए आउस्सइ, एवं अवहरइ, निच्छोडेइ, निब्भच्छेइ तज्जेइ अप्पेगइए तालेइ) इसलिये वह दासचेट सुंसमा दारिकाके खिलाने के लिये नियुक्त हो गया। अतः वह चिलात दास चेटक सुंसमादारिका को गोदी में लेकर अनेक दारक दारिकाओं के साथ बालक बालिकाओं के साथ डिंभक डिंभिकों के साथ और कुमार कुमारिकों

नाम चिलात हतुं ते सप्रमाणु पांचे इन्द्रियोथी परिपूर्ण शरीरवाळो हतो. ते मांसल तेमज पुष्ट शरीरवाळो हतो ते बाळकोने रमाडवामां सविशेषचतुर हतो.

(तएणं से चिलाए दासचेडे सुंसुमाए दारियाए बालग्गाहे जाए यावि होत्था सुंसुम दारियं कडीए गिण्हइ, गिण्हित्ता बहूहिं, दारएहि य दारियाहि य विहरइ तेसिं बहूणं दारियाण य जाव अप्पेगइयाणं खुल्लए अवहरइ, एवं वट्टए आडोलियाओ तेंदुरुए पोत्तुल्लए, साडोल्लए, अप्पेगइयाणं आभरणं मल्लालंकारं अवहरइ, अप्पेगइए, आउस्सइ, एवं अवहरइ, निच्छोडेइ, निब्भच्छेइ, तज्जेइ, अप्पेगइए तालेइ)

तेथी ते दासचेर सुसमा दारिकाने रमाडवा माटे नियुक्त करवामां आव्यो आ प्रमाणे ते चिलात दास चेटक सुसमा दारिकाने खोळामां बेसा-डीने घणा दारक दारिकाओनी साथे बाळक तेमज बाळाओनी साथे डिंभक

च मध्ये 'अप्पेगइयाणं' अप्येकेषाम् 'खुल्लए' क्षुल्लकान्=कपर्दकविशेषान् 'कोडी' इति भाषा प्रसिद्धान् अपहरति=चोरयति। एवं 'वट्टए' वर्तकान्=जत्वादिमयगोलकान् 'आडोलियाओ' आडोलिका इति नाम्नाप्रसिद्धान् बाल क्रीडनवस्तुविशेषान् 'तेंदूसए' देशीशब्दोऽयम्—गेन्दुकान् 'पोत्तुल्लए' वस्त्रमयपुत्तलिकाः, 'साडोल्लए' उत्तरीयवस्त्राणि चोरयति। तथा अप्येकेषाम् आभरणमाल्यालङ्कारान् अपहरति। अनन्तरम् 'अप्पेगइए' अप्येककान् 'आउस्सइ' आक्रुश्यति=निष्ठुरवचनेन 'एवं' अवहसइ' अपहसति=अपशब्दमुच्चार्य हास्यं करोति, 'निच्छोडेइ' निश्छोटयति= 'यदि त्वं किमपि वदिष्यसि तदा त्वां बहिर्निष्काशयिष्यामीत्यादि शब्दैस्तान् भीपयति, तथा 'णिब्भच्छेइ' निर्भर्त्सयति=तेषां निर्भर्त्सनां करोति, एव 'तज्जेइ' तर्जयति 'मया कृतं किमपिकार्यं यदि स्व मातापितृभ्यो यूयं वदिष्यथ

के साथ बार २ खेलने में लगा रहता। खेलते २ वह चिलात दासचेटक उन अनेक दारक दारिकाः, डिम्भका, डिम्भिका, कुमार कुमारिकाओं में से कितनेक बच्चों के खेलने के साधन भूत कपर्दक विशेषों को कौडियों को चुरा लेता कितनेक के जतुके बने हुए चपेटों को, कितनेक के अडोलिक नाम से प्रसिद्ध खिलोनों को, कितनेक बच्चों की गेंदों को कितनेक बच्चों की वस्त्र के बनी हुई गुडियों को, तथा कितनेक बच्चों के उत्तरीयवस्त्रों-को फरियों को चुरालेता था। कितनेक बच्चों के आभरणों को मालाओं को और अलंकारों को भी चुरालिया करता था कितनेक बच्चों को गाली देता कितनेक बच्चों की वह निष्ठुर बचनों को उच्चारण कर हँसी मजाक करने लग जाता था। यदि तू कुछ कहेगातो मैं तुझे यहाँ से बाहिर निकाल दूंगा इत्यादि शब्दों से कितनेक बच्चों को वह डरा दिया करता था। कितनेक बच्चों को

અને ડિંભિકઓ સાથે અને કુમાર કુમારિકાઓની સાથે વારંવાર રમવામાં જ ચોંટી રહેતો હતો. તે ચિલાત દાસચેર રમતાં રમતાં ઘણાં દારક-દારિક, ડિંભક-ડિંભિક, કુમાર-કુમારિકાઓમાંથી કેટલાક બાળકોનાં રમવાનાં સાધન કપર્દક વિશેષોને-કોડીઓને ચોરી લેતો, કેટલાકનાં લાખના બનેલા ચપેટાઓને, કેટલાકનાં અડોલિક નામથી પ્રસિદ્ધ એવા રમકડાંઓને, કેટલાક બાળકોની દડીઓને, કેટલાંક બાળકોની વસ્ત્રથી બનેલી ઢીંગલીઓને તેમજ કેટલાક બાળકોના ઉત્તરીય વસ્ત્રોને ચોરી જતો હતો. તે કેટલાંક બાળકોના આભરણોને, માળાઓને અને ઘરેણાંઓને પણ ચોરી જતો હતો. તે કેટલાંક બાળકોને ગાળો દેતો અને કેટલાંક બાળકોની નિષ્ઠુર વચનો બોલીને ઠઠ્ઠા-મશ્કરી કરવા લાગતો હતો. "જો તું કંઈ પણ બોલશે તો હું તને અહીંથી બહાર કાઢી

तदायुष्माकं प्राणान् अपहरिष्यामीत्येवंरूपैर्वाक्यैरङ्गुलिनिर्देशपूर्वकं तेषु भीतिमुत्पादयति। तथा अप्येककान् बालकान् 'तालेइ' ताडयति चपेटादिभिः। ततः खलु ते बहवो दारकाश्च यावत्-कुमारिकाश्च सर्वे बाला 'रोयमाणा य' रुदन्तश्च 'कंदमाणा य' क्रन्दन्तश्च=उच्चैः स्वरेण चीत्कारं कुर्वन्तः 'साणं २' स्वेषाम् २ 'अम्मापिऊण' अम्बापितृभ्यऽदमर्थं निवेदयन्ति। ततः खलु तेषां बहूनां=दार-

---

वह निर्भर्त्सित कर देता "मेरा किया हुआ कुछ भी काम यदि तुम लोग अपने माता पिता से कहोगे-तो याद रखना मैं तुम्हारे प्राणों को ले लूंगा-तुम्हें जान से मार डालूंगा" इस तरह कितनेक बालकों को वह अंगुलि दिखा २ कर भयभीत कर दिया करता। कितनेक बालकों को वह थप्पड़ आदि भी मार देता। (तएणं ते बहवे दारगा-य जाव रोयमाणा य कंदमाणा य ४ सायं २ अम्मापिऊणं णिवेदेंति, तएणं तेसिं बहूणं दारगाण य ६ जाव अम्मापिउरो जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता धण्णं सत्थवाहं बहूहिं खिज्जणाहि य रुंटणाहि य उवलंभणाहि य खिज्जमाणाय रुंटमाणाय उवलंभेमाणा य धण्णस्स एयमट्ठं णिवेदेति) इस तरह वे अनेक दारक यावत् कुमारिकाएँ सब ही रो रो कर के आक्रंदन करके-उच्चस्वर से चीत्कार करके-अपने २ माता पिताओं से उस दासचेटक की इस वर्ताव

ભ્રૂકીશ વગેરે વચનોથી કેટલાંક બાળકોને તે બીવડાવી દેતો હતો. કેટલાંક બાળકોની તે ભર્ત્સના પણ કરતો હતો-મારી કોઈ પણ વાત તમે તમારા માતાપિતાને કહેશો તો યાદ રાખજો હું તમને જીવતા નહિ છોડું. તમને હું જાનથી મારી નાખીશ." આ પ્રમાણે કેટલાંક બાળકોની સામે તે આંગળીઓ ચીંધી ચીંધીને બીવડાવી દેતો હતો. કેટલાંક બાળકોને તે તમાચો વગેરે પણ લગાવી દેતો હતો.

(तएणं ते बहवे दारगा य ६ जाव रोयमाणा य कंदमाणा य ४ सायं २ अम्मापिऊणं णिवेदेंति, तएणं तेसिं बहूणं दारगाण य ६ जाव अम्मापिउरो जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता धण्णं सत्थवाहं बहूहिं खिज्जणाहिं य रुंटणाहि य उवलंभणाहि य खिज्जमाणा य रुंटमाणा य उवलंभेमाणा य धण्णस्स एयमट्ठं णिवेदेंति)

આ પ્રમાણે તે ઘણા દારક યાવત્ કુમારિકાઓ રડતાં રડતાં, આક્રંદન કરતાં કરતા, મોટા સાદે ચીત્કાર કરીને પોતપોતાનાં માતાપિતાને તે દાસચેટકની ખરાબ વર્તણુક વિષે ફરિયાદો કરવા લાગ્યાં. પોતાનાં બાળકોને

कादीनां अम्बापितरः यत्रैव धन्यः सार्थवाहस्तत्रैव उपागच्छन्ति, उपागत्य धन्यं सार्थवाहं बहुभिः 'खिज्जणाहि य' खेदनाभिश्च=खेदजनकवाग्भिः 'रुंटणाहि य' रोदनाभिः साश्रुरुदितवाग्भिः, 'उवलंभणाहि' उपालम्भनाभिः=किमेतदुचितम्? भवादृशाम्? इत्यादि वाग्भिश्च 'खेज्जमाणा' खेदयन्तः स्वखेदं प्रकाशयन्तः 'रुंटमाणा य' रुदन्त उवलंभमाणा य' उपालम्भयन्तश्च धन्याय सार्थवाहाय एतमर्थं=चिलातकृताऽपराधरूपमर्थं निवेदयन्ति ॥ सू०१ ॥

मूलम्—तएणं से धण्णे सत्थवाहे चिलायं दासचेडं एयमट्ठं भुज्जो भुज्जो णिवारेइ, णो चेव णं चिलाए दासचेडे उवरमइ। तएणं से चिलाए दासचेडे तेसिं बहूणं दारगाण य ६ अप्पेगइयाणं खुल्लए अवहरइ जाव तालेइ। तएणं ते बहवे दारगा य जाव रोयमाणा य जाव अम्मापिऊणं जाव णिवेदेंति। तएणं ते आसुरुत्ता जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव

की शिकायत करने लगें। अपने २ बालकों के मुख से इस प्रकार की दासचेटक थी हरकत सुनकर उन दारक आदि को के माता पिता जहां धन्य सार्थवाह होता था वहां आते और आकर के धन्य सार्थवाह को अनेक खेदजनक वचनों द्वारा रोते २ उपालंभ=उलहना दिया करते—क्या आप जैसे व्यक्तियों को यह उचित—है—इस तरह से उससे कहा करते। इस तरह वे खेदजनक तथा अश्रु भरकर कही गई वाणियों द्वारा अपना खेदप्रकाशित करते हुए रोते हुए एवं उलहना देते हुए धन्यसार्थवाह के लिये चिलातकृत अपराध रूप अर्थ की निवेदना करते ॥सू०१॥

મુખેથી આ પ્રમાણે દાસ ચેટકની ખરાબ વર્તણુક વિષેની વિગત સાંભળીને તે દારક વગેરેનાં માતાપિતા જ્યાં ધન્યસાર્થવાહ હતા ત્યાં આવતા અને આવીને ધન્યસાર્થવાહને ઘણાં કઠોર વચનોથી રડતાં રડતાં ઠપકો આપતાં રહેતાં હતાં. "શું તમારી જેવી વ્યક્તિને આ વાત શોભે છે?" આ પ્રમાણે તે કહ્યાં કરતાં હતાં આ પ્રમાણે તેઓ ખેદજનક તેમજ અશ્રુભીની હાલતમાં કહેલી વાણીઓ વડે પોતાનું દુઃખ પ્રકટ કરતાં, રડતાં તેમજ ઠપકો આપતાં ધન્ય સાર્થવાહને ચિલાતે જે કંઈ ખરાબ વર્તણુક કરી હોય તે બદલ ફરિયાદો કરતાં રહેતાં હતાં. ॥ સૂત્ર ૧ ॥

उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बहूहिं खेज्जणाहिं जाव एयमट्ठं णिवेदेंति । तएणं से धण्णे सत्थवाहे बहूणं दारगाणं ६ अम्मापिऊणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते चिलायं दासचेडं उच्चावयाहिं आउसणाहिं आउसइ, उद्धंसइ, णिब्भच्छेइ निच्छोडेइ, तज्जेइ उच्चावयाहिं तालणाहिं तालेइ, साओ गिहाओ णिच्छुभइ । तएणं से चिलाए दासचेडे साओ गिहाओ निच्छूढे समाणे रायगिहे णयरे सिंघाडग जाव पहेसु देवकुलेसु य सभासु य पवासु य जूयखलएसु य वेसाघरेसु य पाणघरेसु य सुहं सुहेणं परिवड्ढइ ॥सू० २॥

टीका—'तएणं से' इत्यादि । ततः खलु धन्यः सार्थवाहः चिलातं दासचेटम् 'एयमट्ठं' एतमर्थम्=एतस्मादर्थात् दारकादीनां कपर्दकापहरणादिरूपादर्थात् भूयोभूयो निवारयति । नो चैव खलु दासचेट एतस्माद्दुष्कृत्यादुपरमते । ततः खलु स चिलातो दासचेटः तेषां बहूनां 'दारगाण य' दारकाणां च=दार-

---

तएणं से धण्णे सत्थवाहे इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं से धण्णे सत्थवाहे) इसके बाद उस धन्यसार्थवाहने (चिलायं दासचेडं) चिलात दास पुत्र को (एयमट्ठं भुज्जो २ णिवारेइ) बालकों के कपर्दक आदि चुराने रूप अर्थ से बार २ मना किया, परन्तु (णो चेव णं चिलाए दासचेडे उवरमइ) वह चिलात दारक उस काम से विरक्त नहीं हुआ। (तएणं से दासचेडे तेसिं बहूणं दारगाण य ६

तएणं से धण्णे सत्थवाहे इत्यादि—

टीકાર્થ-(तएणं से धण्णे सत्थवाहे) ત્યારબાદ તે ધન્ય સાર્થવાહે (चिलायं दासचेडं) ચિલાત દાસપુત્રને (एयमट्ठं भुज्जो २ णिवारेइ) બાળકોની કોડીઓ વગેરેને ચોરી જવા બદલ વારંવાર મનાઈ કરી, પરંતુ (णो चेव णं चिलाए दासचेडे उवरमइ) તે ચિલાત દારક પોતાની ખરાબ વર્તણુક છોડીને સુધર્યો નહિ.

(तएणं से चिलाए दासचेडे तेसिं बहूणं दारगाण य ६ अप्पेगइयाणं

कादीनां मध्ये अप्येकेषां 'खुल्लए' क्षुल्लकान्=कपर्दकविशेषान् अपहरति 'जाव तालेइ' यावत्ताड़यति=पूर्वोक्तक्रमेण एव कपर्दकाद्यपहरणं यावत्तर्जनं ताडनं च करोति। ततः खलु बहवो दारकाश्च दारकादयो रुदन्तश्च यावत् स्वेषां २ अम्बापितृभ्यो निवेदयन्ति। ततः खलु ते आशुरुप्ताः=स्व पुत्रवचनं श्रुत्वा झटिति क्रोधाविष्टमानसा यत्रैव धन्यः सार्थवाहः तत्रैव उपागच्छन्ति उपागत्य बहूभिः 'खेज्जणाहि जाव एयमट्ठं' खेदनाभिर्यावत् एतमर्थम्=खेदसंसूचनाभिर्यावत् उपालम्भनयुक्ताभिर्वाग्भिः चिलातदासचेटक कृताऽपराधलक्षणम् अर्थम् निवेदयन्ति। ततः खलु धन्यः सार्थवाहो बहूनां 'दारगाणं' दारकाणां ६=दारकादीनाम् अम्बापितॄणामन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य आशुरुप्तः चिलातः दासचेटम् 'उच्चावचाभिः=अनेकविधाभिः 'आउसणाहिं' आक्रोशनाभिः=कोपजनकैर्वचनैः 'आउसइ' आक्रुश्यति=आक्षिपति 'उद्धंसइ' उद्धर्षयति=नामगोत्रादिनाऽधः पातयति-निन्दतीत्यर्थः। नेत्रमुखादि वक्रीकमणेन 'णिब्भच्छेइ' निर्भर्त्सयति=

अप्पेगइयाणं खुल्लए अवहरइ जाव तालेइ, तएणं ते बहवे दारगा य जाव रोयमाणा य जाव अम्मापिऊणं जाव णिवेदेंति) इस तरह समझाने पर भी वह चिलात दासचेट उन अनेक दारकों आदि में से कितनेक दारक आदिकों के कपर्दक (कौड़ी) विशेषों को चुराता रहा यावत् उन्हें ताडित करता रहा-मारता पीटता रहा। और वे बालक आदि भी रोते हुए अपने २ माता पिताओं से उस के अपराध को जा २ कर कह देते रहे। (तएणं ते आसुरुत्ता जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, बहूहिं खेज्जणाहिं जाव एयमट्ठं णिवेदेंति, तएणं से धण्णे सत्थवाहे बहूणं दारगाणं अम्मापिऊणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते चिलायदासचेडं उच्चावयाहिं आउसणाहिं आउसइ उद्धंसइ णिब्भच्छेइ,) इस प्रकार अपने २ बालकों के मुख से बार २

खुल्लए अवहरइ जाव तालेइ, तएणं ते बहवे दारगा य जाव रोयमाणा य जाव अम्मापिऊणं जाव णिवेदेंति)

આ પ્રમાણે સમજાવવા છતાંએ તે ચિલાત દાસચેટક ઘણા દારકો વગેરેમાં કેટલાક દારકો વગેરેની કોડીઓને ચોરતો જ રહ્યો યાવત્ તે બાળકોને તાડિત કરતો રહ્યો, તેમજ મારતો પીટતો રહ્યો અને તે બાળકો વગેરે પણ રડતાં રડતાં પોતપોતાનાં માતાપિતાને આની ફરિયાદો કરતાં જ રહ્યાં.

(तएणं ते आसुरुत्ता जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बहूहिं खेज्जणाहिं जाव एयमट्ठं णिवेदेंति, तएण से धण्णे सत्थवाहे बहूणं दारगाणं अम्मापिऊणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते चिलाय दासचेडं उच्चावयाहिं आउसणाहिं आउसइ उद्धंसइ, णिब्भच्छेइ)

तिरस्करोति, 'निच्छोडेइ' निश्छोटयति=त्यजति, 'तज्जेइ' तर्जयति= 'निस्सर मम गृहात् नोचेत्त्वां ताडयिष्यामि' इत्यादि वचनेन भर्त्सयति 'उच्चावयाहिं तालणाहिं' उच्चावचाभिर्यष्टिमुष्ट्याद्यनेकविधाभिस्ताडनाभिः 'तालेइ' ताडयति 'साओ गिहाओ' स्वस्माद् गृहात् 'णिच्छुभइ' निक्षिपति=निः सारयति। ततः खलु स चिलातो दासचेटः तेन सार्थवाहेन स्वस्माद् गृहात् 'णिच्छूढे' निक्षिप्तः=निः सारितः सन् राजगृहे नगरे सिंघाडग जाव पहेसु शृङ्गाटक यावन्महापथपथेषु चतुष्पथादिषु सर्वत्र स्थलेषु, देवकुलेषु च, सभासु च

चिलात दासचेटक की पूर्वोक्त अपराधों को जब २ वे सुना करते तब वे गुस्से में भर २ कर जहां धन्यसार्थवाह होता वहां चले जाते रहे। और वहां जाकर बडे खेद के साथ रोते हुए अपने २ दुःखों को प्रकट करते रहे इस तरह वार २ उन दारक आदि के माता पिताओं के मुख से इस दासचेटक के दुष्कृत्य को सुनकर वह धन्य सार्थवाह क्रोध में आकर उस दासचेटक चिलात को अनेक विधकोप जनक ऊँचे नीचे शब्दों से धिक्कार ने लगते थे उसका नाम गोत्र आदि की निंदा करने लग जाते थे। नेत्र, मुख, आदि को टेडा करके उसका तिरस्कार भी करते थे। (णिच्छोडेइ, तज्जेइ, उच्चावयाहिं तालणाहिं तालेइ, साओ गिहाओ णिच्छुभइ, तएणं से चिलाए दासचेडे साओ गिहाओ निच्छूढे समाणे रायगिहे णयरे सिंघाडग जाव पहेसु देवकुलेसु जाव सभासु

આ પ્રમાણે પોતપોતાનાં બાળકોને મુખેથી વારંવાર ચિલાત દાસચેટકની ફરિયાદો જ્યારે જ્યારે તેઓ સાંભળતાં ત્યારે ત્યારે તેઓ ગુસ્સે થઈને જ્યાં ધન્યસાર્થવાહ હતા ત્યાં જતા હતા. અને ત્યાં જઈને તેઓ બહુ જ દુઃખની સાથે રડતાં રડતાં પોતપોતાના દુઃખોને પ્રકટ કરતા રહેતા હતા. આ પ્રમાણે વારવાર તે દારક વગેરેના માતાપિતાના મુખથી તે દાસચેટકની ખરાબ વર્તણુક વિષેની વિગત સાંભળીને તે ધન્યસાર્થવાહ ક્રોધમાં ભરાઈને તે દાસચેટક ચિલાતને ઘણા ક્રોધ ઉત્પન્ન કરે તેવા ખરાબ વચનોથી ધિક્કારવા લાગતો હતો તેમજ તેનાં નામ ગોત્ર વગેરેની નિંદા કરવા લાગતો હતો. આંખો મુખ વગેરે બગાડીને તેનો તિરસ્કાર પણ કરતા રહેતા હતા.

(णिच्छोडेइ, तज्जेइ, उच्चावयाहिं तालणाहिं तालेइ, साओ गिहाओ णिच्छुभइ, तएण से चिलाए दासचेडे साओ गिहाओ निच्छूढे समाणे रायगिहे णयरे सिंघाडग जाव पहेसु देवकुलेसु जाव सभासु य पवासु य जूय खलएसु य वेसा घरेसु य पाणघरेसु य सुहं सुहेणं परिवड्ढइ)

प्रपासु=पानीयशालासु च 'जूय खलएसु' द्यूतखलकेषु=द्यूतक्रीडनस्थानेषु च 'वेसाघरेसु' वेश्यागृहेषु च पाणघरेसु' पानगृहेषु=मद्यपानगृहेषु च सुखं सुखेन परिवड्ढइ' परिवर्द्धते=वृद्धिं प्राप्नोति ॥ सू० २ ॥

मूलम्—तएणं से चिलाए दासचेडे अणोहट्टिए अणिवारिए सच्छंदमई सइरप्पयारी मज्जप्पसंगी चोज्जप्पसंगी मंसपसंगी जुयप्पसंगी वेसापसंगी परदारप्पसंगी जाए यावि

य पवासु य जूयखलएसु य वेसाघरेसु य पाणघरेसु य सुहंसुहेणं परिवड्ढइ) और यहां तक हुआ कि कभी २ वह उसे छोड भी देता रहा और कभी २ तू मेरे घर में से निकल जा नहीं तो मैं तुझे मारूँगा इस तरह के वचनों से उस को तिरस्कार भी कर देते थे। परन्तु जब इस की शिक्षाओं का या भय प्रदर्शक वाक्यों का उस चिलात दासचेटक पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा तब अन्त में धन्य सार्थवाह ने हताश होकर उसे अनेक विध यष्टि मुष्टि आदिकी ताडनाओं से ताडित कर अपने घर से बाहिर निकाल दिया। इस तरह जब धन्य सार्थवाह ने इसे अपने घर से बाहिर निकाल दिया—तब यह राजगृह नगरमें शृंगाटक आदि मार्गोमें अवारा (स्वच्छन्दगामी) फिरने लगा और देवकुलों में सभास्थानों में, पानीय शालाओं में—प्याऊ घरो में, जुआ खेलने के स्थानों में वेश्याओं के घरोंमें, और शराब पीने की जगहो में घूम फिर कर जिस किसी भी तरह से अपना पालन पोषण करने लगा ॥सू०२॥

અને છેવટે આ વાત ત્યાં સુધી પહોંચી કે કોઈ કોઈ વખતે તે તેને બહાર પણ કાઢી મૂકતો હતો. અને કોઈ કોઈ વખતે તેને આ જાતનાં વચનોથી ઠપકો પણ આપતો રહેતો હતો કે તું મારા ઘરમાંથી નીકળી જા નહિંતર તને હું મારી નાખીશ. પરંતુ જ્યારે આ જાતની શિક્ષાઓની કે ભય પ્રદર્શનની તે દાસ ચેટક ઉપર કશી અસર થઈ નહિ ત્યારે છેવટે ધન્યસાર્થવાહે હતાશ થઈને તેને લાકડી, મુક્કીઓ વગેરેથી તાડિત કરીને પોતાના ઘરથી બહાર કાઢી મૂકયો. આ પ્રમાણે જ્યારે ધન્ય સાર્થવાહે તેને પોતાના ઘરથી બહાર કાઢી મૂકયો ત્યારે તે રાજગૃહ નગરનાં શ્રૃંગાટક વગેરે રસ્તાઓમાં રખડેલની જેમ ભટકવા લાગ્યો અને દેવકુળોમાં, સભાસ્થાનોમાં, પરબોમાં, જુગારના અડ્ડાઓમાં, વેશ્યાઓનાં ઘરોમાં અને શરાબખાનાઓમાં ભટકીને જેમ તેમ કરીને પોતાનું પાલન-પોષણ કરવા લાગ્યો. ॥ સૂત્ર ૨ ॥

होत्था। तएणं रायगिहस्स नयरस्स अदूरसामंते दाहिण-पुरत्थिमे दिसीभाए सीहगुहा नामं चोरपल्ली होत्था, विसम-गिरिकडगकोडंबसंनिविट्ठा, वंसी कलंकपागारपरिक्खित्ता छिण्णसेलविसमप्पवायफलिहोवगूढा एगदुवारा अणेग-खंडी विदियजणणिग्गमपवेसा अब्भिंतरपाणिया सुदुल्ल-भजलपेरंता सुबहुस्स वि कुवियबलस्स आयगस्स दुप्पहंसा यावि होत्था। तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए विजए णामं चोरसेणावई परिवसइ अहम्मिए जाव अधम्मकेऊ समुट्ठिए बहुणगरणिग्गयजसे सूरे दढप्पहारी साहसिए सद्दवेही। से णं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसयाणं आहेव-च्चं जाव विहरइ। तएणं से विजए तक्करे चोरसेणावई बहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य संधि-च्छेयगाण य खत्तखणगाण य रायावगारीण य अणधारगाण य बालघायगाण य विसंभघायगाण य जूयकाराण य खंडरक्खाण य अन्नेसिं च बहूणं छिन्नभिन्नबहिराययाणं कुडंगे यावि होत्था। तएणं से विजए तक्करे चोर-सेणावई रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमे जणवयं बहूहिं गामघाएहि य नगरघाएहि य गोग्गहणेहि य बंदिग्गहणेहि य खत्तखणणेहि य पंथकुट्टणेहि य उवीलेमाणे २ विद्धंसे-माणे २ णित्थाणं णिद्धणं करेमाणे विहरइ। तएणं से चिलाए दासचेडे रायगिहे बहुहिं अत्थाभि संकीहि य चोज्जाभि

संकीहिय दाराभिसंकीहि य धणिएहि य जूइकरेहि य परभवमाणे२ रायगिहाओ नगराओ णिग्गच्छइ, णिगच्छित्ता, जेणेव सीहगुहा चोरपल्ली तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता विजयं चोरसेणावइं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥ सू०३ ॥

टीका—' तएणं से इत्यादि । ततः खलु स चिलातो दासचेटः ' अणोहट्टिए ' अनपघट्टितः, यो हि दुष्कृतौ प्रवर्तमानं कमपि हस्तौ धृत्वा निवारयति, सोऽपघट्टकः, निवार्यमाणस्तु अपघट्टितः, अयं हि निवारयितुरभावात् अनपघट्टितः= निरङ्कुशः ' अणिवारिए ' अनिवारितः, हितोपदेशकस्याभावात् अनिवारितः,

---

' तएणं से चिलाए दासचेडे' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से चिलाए दासचेडे) वह चिलात दासचेटक (अणोहट्टिए अणिवारिए सच्छंदमई सइरप्पयारी मज्जप्पसंगी चोज्जप्पसंगी मंसप्पसंगी, जूयप्पसंगी, वेसापसंगी, परदारप्पसंगी जाए यावि होत्था) अनपघट्टित-निरङ्कुश बन गया-जो दुष्कर्म में प्रवर्तमान किसी को भी हाथ पकडकर उससे निवारित कर देता है उसका नाम अपघट्टक और जो दूर किया जाता है वह अपघट्टित कहलाता है । निवारण करनेवाले का अभाव होने से यह चिलात दासचेटक अनपघट्टित इसी कारण से बन गया । हितोपदेशक कोई उसका रहा नहीं अतः यह कुत्सित काम करने से पीछे नहीं हटता-इसलिये यह अनिवारित होकर जो मन में आता उसे कर डालता-अतः उद्दण्ड बन गया । स्वच्छन्द

तएणं से चिलाए दासचेडे इत्यादि—

टीकार्थ–(तएणं) त्यारपछी (से चिलाए दासचेडे) ते चिलात दास चेटक (अणोहट्टिए अणिवारिए सच्छंदमई, सइरप्पयारी मज्जप्पसंगी, चोज्जप्पसंगी मंसप्पसंगी, जूयप्पसगी, वेसापसंगी, परदारप्पसंगी, जाए यावि होत्था)

अनपघट्टित-स्वच्छंद बनी गयो, दुष्कर्मभां पडेला गमे तेने जे हाथ पकडीने तेमांथी तेने दूर करे छे तेनुं नाम अपघट्टक अने जे दूर करवामां आवे छे ते अपघट्टित कहेवाय छे. चिलात दासचेटकने खोटा कामोथी दूर लई जनार-तेने निवारण करनार कोई हतुं नहि एथी ते अनपट्टित थई गयो हतो. तेने कोई हितोपदेशक हतो नहि तेथी ते कुत्सित काम करवामां पण पीछेहठ करतो न हतो, खराब कामोथी तेने रोकनार नहि होवाने कारणे ते मनमां फावे तेम करतो हतो एथी ते उद्दंड बनी गयो हतो. ते

'सच्छंदमई' स्वच्छन्दमतिः=स्वाभिप्रायवर्ती–उद्दण्डइत्यर्थः, अतएव 'सइरप्पयारी' स्वैरप्रचारी=स्वच्छन्दविहारी 'मज्जप्पसंगी' मद्यप्रसङ्गी मद्यपायी, 'चोज्जप्पसंगी' चौर्यप्रसङ्गी=चौर्यकर्मणि परायणः, 'मंसप्पसंगी' मांसप्रसङ्गी= मांसभक्षणशीलः, 'जूयप्पसंगी' द्यूतप्रसङ्गी-द्यूतक्रीडाप्रसक्तः, 'वेसापसंगी' वेश्यालम्पटः, एवं 'परदारप्पसंगी' परदारप्रसङ्गी=परदाररतो जातश्चापि आसीत्। ततः खलु राजगृहस्य नगरस्य अदूरसामन्ते दक्षिणपौरस्त्ये दिग्भागे अग्निकोणे सिंहगुहानाम चोरपल्ली आसीत्, या हि पल्ली 'विसमगिरिकडगकोडंबसंनिविट्ठा' विषमगिरिकटककोडम्बसन्निविष्टा=विषमो निम्नोन्नतो यो गिरिकटकः= पर्वत मध्यभागः, तस्य यः कोडम्बः प्रान्तभाग', तत्र संनिविष्टा=स्थिता आसीत्। पुनः 'वंसीकलंकपागारपरिक्खित्ता' वंशीकलंकप्राकारपरिक्षिप्ता=वंशीकलङ्का वंशजालमयी वृतिः, सैव प्राकारः, तेन परिक्षिप्ता=परिवेष्टिता=वंशनिर्मितजाल-मयप्राकारैः समन्तात्-परिवेष्टिता, 'छिण्णसेलविसमप्पवायफलिहोवगूढा'= छिन्नशैलविषमप्रपातपरिखोपगूढा=छिन्नोऽवयवान्तरापेक्षया विभक्तो यः शैलः= पर्वतः, तत्सम्बन्धिनो ये विषमाः प्रपाता गर्ताः, त एव परिखाः तया उपगूढा= आश्लिष्टा परिवेष्टिता-विभक्तशैलावयवनिर्गतविषमप्रपातरूपपरिखापरिवेष्टितेत्यर्थः 'एगदुवारा' एकद्वारा=एकं द्वारं=प्रवेशनिर्गमरूपं यस्याः सा=एकप्रवेशनिर्गमा, 'अणेगखंडी' अनेकखण्डा=अनेकानि खण्डानि=विभागा रक्षाहेतोर्यस्यां सा अनेकखण्डा, यत्र=स्वरक्षार्थं अनेकानि स्थानानि सन्ति, 'विदियजणणिग्गमपवेसा'

विहारी हो गया–मद्यप्रसंगी हो गया–मदिरा पीने लग गया। मांस खाने लग गया, चोरी करने लगा, जूआ खेलने लगा, वेश्यासेवन करने लगा, और परदार सेवन करने में भी लंपट हो गया। (तएणं रायगिहस्स नयरस्स अदूरसामंते दाहिणपुरत्थिमे दिसीभाए सीहगुहा नामं चोरपल्ली होत्था–विसमगिरिकडगकोडंबसन्निविट्ठा वंसीकलंकपागारपरिक्खित्ता छिण्णसेलविसमप्पवायफलिहोवगूढा एगदुवारा, अणेगखंडी, विदियजणणिग्गमपवेसा अब्भिंतरपाणिया सुदुल्लभजल

સ્વચ્છંદ વિહારી થઈ ગયો હતો, દારૂ પિનારો થઈ ગયો હતો. તે માંસ ખાવા લાગ્યો, ચોરી કરવા લાગ્યો, જુગાર રમવા લાગ્યો, વેશ્યા–સેવન કરવા લાગ્યો અને પરસ્ત્રી સેવનમાં પણ લંપટ થઈ ગયો હતો.

(तएणं रायगिहस्स नयरस्स अदूरसामंते दाहिणपुरत्थिमे दिसीभाए सीहगुहा नामं चोरपल्ली होत्था–विसमगिरिकडगकोडंबसन्निविट्ठा वंसीकलंकपगारपरिक्खित्ता, छिण्णसेल विसमप्पवायफालिहोवगूढा एगदुवारा, अणेगखंडी, विदियजणणिग्गमपवेसा

विदितजननिर्गप्रवेशा=विदितजनानामेव=विश्वासवतामेव निर्गमप्रवेशौ यस्यां सा= विश्वस्तजननिर्गमप्रवेशवती 'अभिंतरपाणिया' अभ्यन्तरपानीया=मध्यस्थित-

पेरंता, सुबहुस्स विकूवियबलस्स आगयस्स दुप्पहंसा, यावि होत्था तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए विजए णामं चोरसेणावई परिवसई, अहम्मिय जाव अहम्मकेऊसमुट्ठिए बहुणगरणिग्गयजसे, सूरे दढप्पहारी साहसिए सद्दवेही-सेणं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पंचण्हं चोर सयाणं आहेवच्चं जाव विहरइ) उसी राजगृह नगर के न अधिक दूर पर और न अधिक पास में दक्षिण पौरस्त्य दिग्विभाग में-अग्निकोण में-सिंहगुहा नाम की एक चोर पल्ली थी-यह चोरपल्ली विषम गिरि-कंटक के प्रान्त भाग में-निम्नोन्नतपर्वत के मध्यभाग के अन्त भाग में स्थित थी। इसके चारों ओर वांसों की बाड़ थी-यह बाड़ ही इसका प्राकार (किला) था-उससे यह घिरी हुई थी। अवयवान्तरों की अपेक्षा से विभक्त जो पर्वत तत्संबन्धी जो विषम प्रपात खड्डा उन विषम खड्डेरूप परिखा से यह परिवेष्टित थी। निकलने का और आने का इस में एक ही द्वार था। इसमें रक्षा के निमित्त चोरोंने अनेक स्थान बना रखे थे। परिचित-विश्वासवाले-व्यक्ति ही इसमें आ जा सकते थे।

अभिंतरपाणिया, सुदुल्लभजलपेरंता, सुबहुस्स वि कूवियबलस्स आगयस्स दुप्पहंसा, यावि होत्था तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए विजए णामं चोरसेणावई परिवसई, अहम्मिय जाव अहम्मकेउ समुट्ठिए बहुणगरणिग्गयजसे, सूरे दढप्पहारी, साहसिए सद्दवेही सेणं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसयाणं अहिवच्चं जाव विहरइ)

તે રાજગૃહ નગરથી ઘણે દૂર પણ નહિ અને ઘણી નજીક પણ નહિ એવી, દક્ષિણ પૌરસ્ત્ય દિગ્વિભાગમાં અગ્નિકોણમાં-સિંહગુહા નામે એક ચોરપલ્લી હતી તે ચોરપલ્લી ઊંચી નીચી ગિરિમાળાઓના પ્રાંત ભાગમાં નિમ્નોન્નત પર્વતના મધ્યભાગના અંતભાગમાં આવેલી હતી તેની ચોમેર વાંસોની વાડ હતી. તે વાડ જ તેનો કોટ (કિલ્લો) હતો તેનાથી તે ઘેરા-એલી હતી અવયવાંતરોની અપેક્ષાએ વિભક્ત જે પર્વત અને તત્સંબંધી જે વિષમ પ્રપાત-ખાડો-તે વિષમ ખાડારૂપી પરિખાથી તે પરિવેષ્ટિત હતી. આવવા અને જવા માટે તેમાં એક જ દરવાજો હતો. ચોરોએ પોતાની રક્ષા માટે ઘણાં સ્થાનો બનાવેલાં હતાં. પરિચિત વિશ્વાસુ માણસો જ તેમાં આવજા કરી શકતા હતા. પાણી માટે તેની વચ્ચે એક જળાશય હતું, તેની બહાર

जलाशया 'सुदुल्लभजलपेरंता' सुदुर्लभजलपर्यन्ता=सुदुर्लभं जलं पर्यन्ते=प्रान्त-भागे=बहिर्भागे यस्याः सा=जलरहितबहिर्भागा 'सुबहुस्स वि' सुबहोरपि कूवियबलस्स 'कूपिकबलस्य=चोरगवेषकसैन्यस्य 'आगयस्स' आगतस्य 'दुप्प-हंसा' दुष्प्रध्वंसा दुर्धर्षणीया चापि आसीत्। तत्र खलु सिंहगुहायां चोरपल्ल्यां विजयो नाम चोरसेनापति=चोरनायकः परिवसति यो हि 'अहम्मिए जाव' अधार्मिको यावत्=अधर्मेण चरति अधार्मिकः अधर्माचरणशीलः-अत्र यावत्पदेन-इतआरभ्य 'घायाए वहाए अच्छायणाए' इत्यन्तः पाठो ग्राह्यः, तथाहि-'अध-म्मिट्ठे' अधर्मिष्ठः=सर्वथा धर्मरहितः, 'अधम्मक्खाई' अधर्माख्यायी-अधर्मक-थकः, 'अधम्माणुगे' अधर्मानुगः=अधर्मानुगामी 'अधम्मपलोई' अधर्मप्रलोकी=अधर्मदर्शी 'अधम्मपलज्जणे' अधर्मप्ररञ्जनः=अधर्मानुरक्तः, 'अधम्मसीलसमु-दायारे' अधर्मशीलसमुदाचारः=अधर्म एव शीलं स्वभावः समुदाचारश्च यस्य सः,

---

पानी के लिये इसमें बीच में एक जलाशय था-इसके बाहिरी भाग में जल नहीं था। अनेक भी चोर गवेषक सेनाजन यहां आजावें तो भी वे इस पल्ली का नाश नहीं कर सकते थे। इस सिंहगुहा नामकी चोर पल्ली में विजय नाम का एक चोर सेनापति रहता था। यह अधार्मिक यावत् अधर्म केतुग्रह जैसा उदित हुआ था। यहां यावत् शब्द से "घायाए वहाए अच्छायणाए" यहां तक का पाठ ग्रहण किया गया है-इस का खुलाशा भाव इस प्रकार है-अधार्मिक शब्द का अर्थ होता है अधर्माचरणशील-यह विजय नामका चोर अधर्माचरणशील था। अध-र्मिष्ठ था-सर्वथा धर्मसे रहित था, अधर्माख्यायी था-अधर्मका कथन कर-नेवाला था, अधर्मानुग था-अधर्म का अनुगामी था, अधर्मप्रलोकी था-अधर्म का ही देखने वाला था-अधर्मप्ररञ्जन था अधर्म में अनुरक्त था

પાણી હતું નહિ ઘણા ચોરોની શોધ કરતા સૈનિકો ત્યાં આવે છતાંએ તે પલ્લીનો નાશ કરી શકતા ન હતા. તે સિંહગુફા નામની ચોરપલ્લીમાં વિજય નામે એક ચોર સેનાપતિ રહેતો હતો. તે અધાર્મિક યાવત્ અધર્મ કેતુગ્રહની જેમ ઉદય પામ્યો હતો. અહીં યાવત્ શબ્દથી "घायाए वहाए अच्छायणाए" અહીં સુધીનો પાઠ ગ્રહણ કરવામાં આવ્યો છે તેનું સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે:-અધાર્મિક શબ્દનો અધર્મા-ચરણશીલ હોય છે. તે વિજય નામે ચોર અધર્માચરણશીલ હતો, અધર્મિષ્ઠ હતો, સાવ ધર્મરહિત હતો, અધર્માખ્યાયી હતો, અધર્મની વાત કહેનાર હતો, અધર્માનુરાગી હતો, અધર્મનો અનુગામી એટલે કે અધર્મને અનુસરનાર હતો, અધર્મપ્રલોકી હતો, અધર્મને જ જોનાર હતો, અધર્મપ્રરંજન હતો, અધર્મમાં આસક્ત હતો, અધર્મશીલ સમુદાચારી

अधर्मशीलोऽधर्माचरणश्चेत्यर्थः, 'अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पे माणे विहरइ' अधर्मेणैव वृत्तिं कल्पयन् विहरति=अधर्मेणैव सावद्यानुष्ठानेनैव, वृत्तिं कल्पयन्=जीविकामुपार्जयन् 'विहरइ' विहरति=आस्ते। पुनः 'हणछिंदभिंदवियत्तए' जहिछिन्धि भिन्धि विकर्तकः='हण' जहि=मारय यष्टयादिना 'छिंद' छिन्धि=छेदय-खड्गादिना, 'भिंद' भिन्धि=भेदय भल्लादिना, इतिशब्दैः स्वानुयायिनः प्रेरयन् प्राणिनो विकृन्तति यः सः, जहि छिन्धिभिन्धि विकर्तकः, इति, 'लोहियपाणी' लोहितपाणिः=लोहितौ पाणी यस्य सः, रक्तरञ्जितकरयुगलः 'चंडे' चण्डः उत्कटरोषः 'रुद्दे' रौद्रः=भयानकः 'खुल्ले' क्षुद्रः=क्षुद्रकर्मचारी 'उक्कंचणवंचणमायानियडिकवडकूडसाइसंपयोगबहुले' उत्कञ्चनवञ्चनमायानिकृतिकपटकूटसाइसंप्रयोग-

---

अधर्मशील समुदाचारवाला था-अर्थात् इसका स्वभाव और आचरण दोनों अधर्ममय थे-अधर्म ही इस का स्वभाव था और अधर्म ही इस का आचरण था। अतः अपनी जीविका का निर्वाह सावद्य अनुष्ठानों (अधर्म) द्वारा ही किया करता था। यष्टयादि द्वारा इसे मारो, खड्गादि द्वारा इसे छेदो भल्लादि द्वारा इसे भेदो इस प्रकार के शब्दों से यह अपने अनुयायियों को सदा प्रेरित करता हुआ स्वयं जीवों का छेदन भेद न किया करता था। इसके दोनों हाथ रक्त से रंजित रहते थे। इस का क्रोध बहुत प्रचंड था देखने में यह बडा भयानक दिखता था। क्षुद्र कर्मकारी था। "उक्कंचणवंचणमायानियडिकूवडडसाइसंपओग बहुले" उत्कंचन, वंचन, माया, निकृति, कपट, कूट, साइ, इनका व्यव-

---

હતો-એટલે કે તેનો સ્વભાવ અને આચરણ બન્ને અધર્મમય હતાં. અધર્મ જ તેનો સ્વભાવ હતો અને અધર્મ જ તેનું આચરણ હતું. એથી તે પોતાનું જીવન સાવદ્ય અનુષ્ઠાનો વડે એટલે કે અધર્મનું આચરણ કરીને પુરૂ કરતો હતો. લાકડી વગેરેથી એને મારો, તરવાર વગેરેથી એને કાપી નાખો, ભાલાઓ વગેરેથી એને ભેદી નાખો આ જાતના શબ્દોથી તે પોતાના અનુયયીઓને હમેશાં હુકમ કરતો રહેતો હતો. તે પોતે પણ જીવોનું છેદન-ભેદન કરતો રહેતો હતો. તેના બન્ને હાથો લોહીથી ખરડાએલા રહેતા હતા. તેનો ક્રોધ અત્યંત પ્રચંડ હતો. દેખાવમાં તે ખૂબ જ ભયાનક લાગતો હતો, તે ક્ષુદ્ર કર્મ કરનાર હતો.

(उक्कंचणवंचणमायानियडिकवडकूडसाइसंपओगबहुले) ઉત્કંચન, વંચન, માયા, નિકૃતિ, કપટ, કૂટ, સાઈ આ બધાનો વહેવાર તેના જીવનમાં

राजद्रोहिणां ' अणधारगाणय ' ऋणधारकाणाम् बालघातकानां ' वीसंभघायगाण य ' विश्रम्भघातकानां=विश्वासघातिनां द्यूतकारकाणां ' खंडरक्खाण य ' खण्डरक्षाणां=राजविरोधेन भूमिखण्डधारिणाम् एवम् अन्येषां च बहूनां ' छिन्नभिन्नबहिराहयाणं ' छिन्नभिन्नबहिराहतानाम्-छिन्ना=छिन्नहस्तादिकाः, भिन्नाः=भिन्नकर्णनासिकादिकाः, बहिराहता=राजापराधेन देशनिष्काशिताः, एतेषां द्वन्द्वः, तेषां च ' कुडंगे ' कुटङ्कः=कुटङ्कः इव कुटङ्कः - वंशवनं रक्षार्थमाश्रयणीयत्वसाम्यात्

' निव[illegible]गाण य वीसंभघायगाण य जूयकाराण य खंडरक्खाण य अ-
घालघा[illegible] वहिरायपाणं कुडंगे याविहोत्था) वह विजय
न्नेसिं बहूणं छिन्न[illegible] चोरों का अनेक परस्त्री लंपटों का ग्रन्थि
तस्कर चोर सेनापति अनेक[illegible] फोडकर धनका अपह-
भेद को का, संधिच्छेदकों का-मकान का [illegible]
रण करनेवालों का, क्षात्रखनकों का संधि रहित भीत को फोडकर चोरी करनेवालों का, राजा का अपकार करने वालों का-राजद्रोहियों का, ऋण करने वालों का बाल हत्या करने वालों का विश्वासघात करने वालों का जुआ खेलनेवालों का, राजा की आज्ञा लिये बिना ही कुछ जमीन को अपने अधिकार में करनेवालों का, तथा और भी अनेक छिन्न, भिन्न बहिराहत व्यक्तियों का यह कुटंक जैसा था। जिन के हाथ आदि काटदिये गये है ऐसे प्राणी, छिन्न शब्द से जिनकी नाक आदि काट दी गई है ऐसे प्राणी भिन्न शब्द से एवं राजापराध के कारण जो देश से बाहिर निकाल दिये गये हैं ऐसे मनुष्य यहां बहि आहत शब्द

धारगाण य बालघायगाण य वीसंभघायगाण य जूयकाराण य खंडरक्खाण य अन्नेसिं बहूणं छिन्नभिन्नबहिरायपाणं कुडंगे यावि होत्था)

તે વિજય તસ્કર ચોર સેનાપતિ ઘણા ચોરો, ઘણા પરસ્ત્રી લંપટો, ગ્રંથિભેદકો, સંધિચ્છેદકો-બાકોરૂ પાડીને ધનનું અપહરણ કરનારાઓ, ક્ષાત્રખનકો-સંધિભાગ વગરની ભીંતમાં બાકોરૂ પાડીને ચોરી કરનારાઓ, રાજાના અપકારકો-રાજદ્રોહીઓ, ઋણ કરનારાઓ (દેવાદારો) બાળહત્યા કરનારાઓ, બાળહત્યા કરનારાઓ, વિશ્વાસઘાત કરનારાઓ, જુગાર રમનારાઓ, રાજાની આજ્ઞા લીધા વગર જ થોડી જમીનને પોતાના અધિકારમાં લેનારાઓ તેમજ બીજા પણ ઘણા છિન્ન, ભિન્ન બહિરાહત લોકોના માટે તે કુટંક જેવો હતો. જેમના હાથ પગ વગેરે કાપી નાખવામાં આવ્યા છે એવાં પ્રાણીઓ, છિન્ન શબ્દ વડે જેમનાં નાક વગેરે કાપવામાં આવ્યાં છે એવાં પ્રાણીઓ, ભિન્ન શબ્દ વડે અને રાજાપરાધ બદલ જે દેશમાંથી બહાર કાઢી મૂકવામાં આવ્યા છે એવા માણસો અહીં " બહિઃ આહત " શબ્દ વડે સંબોધિત કરવામાં આવ્યા

चापि अभूत् । ततः खलु स विजयस्तस्करः चोरसेनापतिः राजगृहस्य 'दाहिण पुरत्थिमं' दक्षिणपौरस्त्यं अग्निकोणस्थितं जनपदं बहुभिः 'गामघाएहिं' ग्रामघातैः=ग्रामविनाशैश्च, नगरघातैश्च, 'गोग्गहणेहिय' गो ग्रहणैः=गवां लुण्ठनैः, 'बंदिग्गहणेहिय' वन्दिग्रहणैः=लुण्ठने ये जना गृहीतास्ते वन्दिनउच्यन्ते, तेषां ग्रहणैः=स्वकारायां स्थापनैः, 'खत्तखणणेहिय' क्षात्रखननैश्च एवं विधैर्दुष्कृत्यैः

से प्रतिबोधित किये गये हैं। रक्षणार्थ आश्रयणीय होने की समानता से इसे कुटंक-वंशवन-जैसा कहा गया है। (तएणं से विजए तक्करे चोरसेणावई रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमं जणवयं बहूहिं गामघाएहिं य नगरघाएहिं य गोग्गहणेहि य बंदिग्गहणेहि य खत्तखणणेहिय, पंथकुट्टणेहि य उवीले माणे २ विद्धंसणे माणे २ णित्थाणं, णिद्धण करेमाणे विहरइ, तएणं से चिलाए दासचेडे रायगिहे बहूहिं अत्थाभिसंकीहि य चोज्जाभिसंकीहि य दाराभिसंकीहि य धणिएहि य जूयकरेहि य परब्भवमाणे २ रायगिहाओ नगराओ णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव सीहगुहा चोरपल्ली तेणेव उवागच्छइ, उवाच्छित्ता विजयं चोरसेणावइं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ) चोरों का सेनापति वह विजय तस्कर राजगृह नगर के अग्निकोण में स्थित जनपदों को, अनेक ग्रामों के विनाश से नगरों के घात से, गायों के लूटने से, लूटते समय पकड़े गये मनुष्य को अपने कारागार में बंद करने से, क्षत्रखनन से-मकानों में खातदेने

છે. રક્ષણુ માટે આશ્રયણીય હોવાના સામ્યથી તેને કુટંક-વાંસનાવન'ની જેમ બતાવવામાં આવ્યો છે.

(तएणं से विजए तक्करे चोरसेणावई रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमं जणवयं बहूहिं गामघाएहि य नगरघाएहि य गोग्गहणेहि य बंदिग्गहणेहि य खत्तखणणेहि य पंथकुट्टणेहि य उवीलेमाणे२ विद्धंसणे माणे२ णित्थाणं, णिद्धणं करेमाणे विहरइ, तएणं से चिलाए दास चेडे रायगिहे बहूहिं अत्थाभिसंकीहि य चोज्जाभिसंकीहि य घणियेहि य जूयकरेहि य परब्भवमाणे २ रायगिहाओ नगराओ णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव सीहगुहा चोरपल्ली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता विजयं चोरसेणावइं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ)

ચોરોનો સેનાપતિ તે વિજય તસ્કર રાજગૃહ નગરના અગ્નિકોણના જનપદોને, ઘણાં ગ્રામોનો વિનાશ કરીને નગરોનો ઘાત કરીને ગાયોને લૂંટીને લૂંટતી વખતે પકડી પાડેલા માણસોને પોતાના કારાગારમાં પૂરી દઈને, ક્ષત્ર ખનન કરીને, મકાનોમાં ખાતર પાડીને અને મુસાફરોને મારીને નિરંતર

'पयकुट्टणेहिय' पान्थकुट्टनैः=पथिकजनमारणैश्च 'उवीलेमाणे २' उत्पीडयन् २=सन्ततमुत्पीडनं कुर्वन्, 'विद्धंसेमाणे २' विध्वंसयन् २-सर्वदा विध्वंसं कुर्वन्, 'णित्थाणं' निः स्थानं=गृहरहितं, 'णिद्धणं' निर्धनम्=धनरहितं कुर्वन् विहरति। ततः खलु स चिलातो दासचेटः राजगृहे बहुभिः 'अत्थाभिसंकीहिय' अर्थाभिशङ्किभि=अयं चिलातो मदीयमर्थं गृहीतवान्, ग्रहीष्यति वा इत्यभिशङ्कनशीलैः 'चोज्जाभिसंकीहिय' चौर्याभिशङ्किभिः=अयं मम गृहे चौर्यं कृतवान् करिष्यति वेत्यभिशङ्कन शीलैश्च 'दाराभिसंकीहि' दाराभिशङ्किभिः='अयं मम दारान् दूषितवान् दूषयिष्यति वेत्यभिशङ्कनशीलैः तथा धनिकैश्च द्यूतकरैश्च पराभूयमाणः २= पुनः पुनः पराभवं प्राप्यमाणो राजगृहात् नगराद् बहिः निर्गच्छति, निर्गत्य, यत्रैव सिंहगुहा चोरपल्ली तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य विजयं चोरसेनापतिम् उपसंपद्य=प्राप्य विहरति ॥ सू० ३ ॥

से, एवं पथिकजनों के मारने से, निरन्तर पीडित करता विध्वंस करता करता और गृह विहिन करता रहता था। इस के पश्चात् वह दासचेटक चिलात राजगृह नगर में अनेक अर्थाभिशंक-इस चिलात ने हमलोगों के द्रव्य को हरण किया है तथा इसी तरह से यह आगे भी करेगा-प्रकार की शंका करने वाले, चौर्याभिशंकी इसने हमलोगों के घर में घुमकर पहिले चोरी की है-तथा इसी तरह यह आगे भी करेगा-इस प्रकार की आशंका करने वाले, दाराभिशंकी-इसने पहिले हमारी स्त्रियों के साथ बलात्कार किया है-इसी तरह से यह आगे भी करेगा इस तरह की अपनी स्त्रियों के साथ बलात्कार करने की आशंकावाले पुरुषों के द्वारा तथा धनिक व्यक्तियों के द्वारा, जुआ खेलने वाले ज्वारियों के द्वारा पुनः पुनः पराभूत होता हुआ राजगृह नगर से बाहर निकला

પીડિત કરતો, વિધ્વંસ કરતો અને ગૃહવિહીન બનાવી મૂકતો હતો. ત્યારપછી તે દાસચેટક ચિલાતે રાજગૃહ નગરમાં ઘણા અર્થાભિશંક-આ ચિલાતે અમારા દ્રવ્યનું હરણ કર્યું છે તેમજ આ પ્રમાણે ભવિષ્યમાં પણ હરણ કરશે, આ જાતની શંકા કરનારાઓ વડે, ચૌર્યાભિશંકી-એણે અમારા ઘરોમાં પેસીને પહેલા ચોરી કરી હતી તેમજ ભવિષ્યમાં પણ તે ચોરી કરશે જ-આ જાતની ચોરીની આશંકા કરનારાઓ વડે, દારાભિશંકી-એણે પહેલાં અમારી સ્ત્રીઓ ઉપર બળાત્કાર કર્યો છે, આ પ્રમાણે ભવિષ્યમાં પણ તે ચોક્કસ આવું કરશે જ, આ રીતે પોતાની સ્ત્રીઓ ઉપર બળાત્કારની આશંકાવાળા પુરુષો વડે તેમજ ધનવાનો વડે, જુગાર રમનારા જુગારીઓ વડે, વારંવાર પરાભૂત થતો

मूलम्–तएणं से चिलाए दासचेडे विजयस्स चोरसेणावइस्स अग्गे असिलट्ठिग्गाहे जाए यावि होत्था, जाहे वि य णं से विजए चोरसेणावई गामघायं वा जाव पंथकोट्टिं वा काउं वच्चइ ताहे वि य णं से चिलाए दासचेडे सुबहुंपि हु कुवियबलं हयविमहिय जाव पडिसेहेइ। पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणह समग्गे सीहगुहं चोरपल्लिं हव्वमागच्छइ। तएणं से विजए चोरसेणावई चिलायं तक्करं बहुईओ चोरविज्जाओ य चोरमंते य चोरमायाओ चोरनिगडीओ य सिक्खावेइ। तएणं से विजए चोरसेणावई अन्नया कयाइं कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था। तएणं ताइं पंचचोरसयाइं विजयस्स चोरसेणावइस्स महया२ इड्ढीसक्कारसमुदएणं णीहरणं करेंति, करित्ता बहुइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेंति, करित्ता जाव विगयसोया जाया यावि होत्था। तएणं ताइं पंच चोरसयाइं अन्नमन्नं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी–एवं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! विजए चोरसेणावई कालधम्मुणा संजुत्ते, अयं च णं चिलाए तक्करे विजएणं चोरसेणावइणा बहूईओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविए, तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! चिलायं तक्करं सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तए त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता चिलायं तीए सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचंति। तएणं से चिलाए

और निकल कर जहां वह सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली थी वहां आया वहां आकर वह चोर सेनपति के साथ रहने लगा॥ सूत्र–२॥

રાજગૃહ નગરથી બહાર નીકળ્યો અને નીકળીને જ્યાં તે સિંહગુહા નામે ચોરપલ્લી હતી ત્યાં આવ્યો, ત્યાં આવીને ચોર સેનાપતિની સાથે રહેવા લાગ્યો. ॥સૂ૦૩॥

चोरसेणावई जाए अहम्मिए जाव विहरइ। तएणं से चिलाए चोरसेणावई चोराणय जाव कुडंगे यावि होत्था। से णं तत्थ सोहगुहाए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसयाण य एवं जहा विजओ तहेव सव्वं जाव रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमिल्लं जणवयं जाव निरथाणं निद्धणं करेमाणे विहरइ ॥ सू० ४॥

टीका—'तएणं' इत्यादि। ततः खलु स चिलातो दासचेटो विजयस्य चोरसेनापतेरग्र्यः=प्रधानः 'असिलट्ठिगाहे' असियष्टिग्राहः=असिः=करवालः, यष्टि=वंशदण्डः, तौ गृह्णातीति, असियष्टिग्राहः=असियष्ट्यादिप्रचालनचतुरो जातश्चापि अभूत्। 'जाहे वि यणं' यदाऽपि च खलु स विजयश्चोर सेनापतिः

तएणं से चिलाए दासचेडे इत्यादि।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से चिलाए दासचेडे) वह दासचेटक चिलात (विजयस्स चोरसेणावइस्स) चोर सेनापति उस विजय तस्कर का (अग्गे यावि हो०) सब से प्रधान असि, यष्टि, ग्रह-तलवार और लाठी के चलाने मे चतुर-बन गया। (जाहे वि य णं से विजए चोरसेणावईगामघायं वा जाव पंथकोट्टिं वा काउं वच्चइ, ताहे वि य णं से चिलाए दासचेडे सुबहुं पि हु कूवियबलं हयविमहिय जाव पडिसेहेइ, पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुहं चोरपल्लिं हव्वमागच्छइ) जब वह चोर सेनापति विजय, ग्रामों का घात करने के लिये,

---

(तएणं से चिलाए दासचेडे इत्यादि—

टीकार्थ-(तएणं) त्यारपछी (से चिलाए दासचेडे) ते दास चेटक चिलात (विजयस्स चोरसेणावइस्स) चोर सेनापति ते विजय तस्करनो (अग्गे.... यावि हो०) सौथी प्रधान असि, यष्टि (लाकडी) ग्राह, तरवार अने लाठी चलाववामां चतुर बनी गयो.

(जाहे वि य णं से विजए चोरसेणावई गामघायं वा जाव पंथकोट्टिं वा काउं वयइ, ताहे वि य णं से चिलाए दासचेडे सुबहुं पि हू कूवियबलं हयविमहिय जाव पडिसेहेइ, पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुहं चोरपल्लिं हव्वमागच्छइ)

ज्यारे ते चोर सेनापति विजय ग्रामोना घात माटे यावत् पथिकोने लूंटवा माटे नीकळतो हतो त्यारे ते दास चेटक चिलात चोरोने पकडवा माटे

ग्रामघातं वा यावत् 'पंथकोर्टि' पान्थकुट्टिम्=पथिकजनलुण्टनं वा 'काउं' कर्तुं 'वच्चइ' व्रजति=गच्छति 'ताहेवि य' तदाऽपि च खलु स चिलातो दासचेटः सुबहु अपि 'हुं' इति वाक्यालङ्कारे कूवियबलं' कूपिकबलं=चोरगवेषकसैन्यं 'हयविमहिय जाव' हतविमथित यावत्-सर्वथा विध्वस्त कृत्वा 'पडिसेहेइ' प्रतिषेधयति=निवारयति। पुनरपि 'लद्धट्ठे' लब्धार्थः=लब्धः प्राप्तः, अर्थः= स्वाभिलषितं येन सः=प्राप्तस्वाभिलषितः, अत एव 'कयकज्जे' कृतकार्यः=कृतं कार्यं येन सः, कृतनिजकृत्यः 'अणहसमग्गे' अनघसमग्रः=अनघम्=अक्षतम्-अन्तराले केनाप्यनपहृतं समग्रं=समस्तं चौर्याद्यपहृतवस्तुजातं यस्य सः=अलुण्टित सर्वस्वः सिंहगुहां चोरपल्लिं 'हव्वं' शीघ्रमागच्छति। ततः खलु स विजयश्चोर-सेनापतिः चिलातं तस्करं बह्वीः चोरविद्याश्च चोरमन्त्रांश्च चोरमायाश्चोरनिकृतीश्च मायायाः प्रच्छादनार्थं या माया सा 'निकृतिः' उच्यते ताः 'सिक्खावेइ'

यावत् पथिक जनो को लूटने के लिये चलता था-तब वह दास चेटक चिलात भी चोर गवेषक सैन्य को हत, विमथित यावत् सर्वथा विध्वस्त करके पीछे भगा देता था-और स्वाभिलषित अर्थ को प्राप्तकर अपने कार्य में सफलता प्राप्त कर लिया करता था। इस तरह वह चोरी में मिले हुए द्रव्य को सुरक्षित रखता हुआ-बीच में किसी के भी द्वारा द्रव्य की छीना झपटी से रहित होता हुआ उस सिंहगुहा नाम के चोरपल्ली में बहुत जल्दी लौट आता था! (तएणं से विजए चोर सेनावई चिलायं तक्करं बहूईओ चोरविज्जाओ य चोरमंते य चोर मायाओ चोर निगडीओं य सिक्खावेइ) उस चोर सेनापति विजय तस्कर ने चिलात चोर के अनेक चोर विद्याओं को, अनेक चोरमंत्रों को अनेक विध चोर सम्बन्धी मायाचारी को और माया को छिपाने के

આવેલા સૈન્યને હત, વિમથિત યાવત્ સંપૂર્ણ રીતે વિધ્વસ્ત કરીને ભગાડી મૂકતો હતો અને પોતાના ઇચ્છિત અર્થને પ્રાપ્ત કરીને પોતાના કાર્યમાં સફ-ળતા મેળવતો હતો. આ પ્રમાણે તે ચોરીમાં મેળવેલા દ્રવ્યને સુરક્ષિત રાખતો વચ્ચે કોઈ પણ બીજા વડે દ્રવ્યની લૂટ-પાટ ન થાય-તેમ પોતાની જાતને સુરક્ષિત રાખતો તે શીઘ્ર સિંહગુહા નામે ચોરપલ્લીમાં પાછો આવતો રહેતો હતો.

(तएणं से विजए चोरसेनावई चिलाय तक्करं बहूईओ चोरविज्जाओ य चोरमंते य चोरमायाओ चोरनिगडीओ य सिक्खावेइ)

તે ચોર સેનાપતિ વિજય તસ્કરે ચિલાત ચોરને ઘણી ચોર વિદ્યાઓને, ઘણા ચોરમંત્રોને, ઘણી ચોર સંબંધી માયાચારીઓને અને માયાને છુપાવવા માટે બીજી માયાચારીઓ શીખવાડી.

निक्षयति। ततः खलु स विजयो चोरसेनापतिः अन्यदा कदाचित् 'कालधम्मुणा' कालधर्मेण=मृत्युना संयुक्तश्चापि अभवत् मृतइत्यर्थः। ततः खलु तानि पञ्चचोरशतानि=पञ्चशतसंख्यकाश्चौराः, विजयस्य चोरसेनापतेः महता २ इड्ढिसक्कारसमुदएणं' ऋद्धिसत्कारसमुदयेन 'णीहरणं' निर्हरणं=श्मशानभूमिनयनं 'करेंति' कुर्वन्ति, कृत्वा बहूनि लौकिकानि मृतककृत्यानि कुर्वन्ति, कृत्वा यावत् विगतशोका जाताश्चापि अभवन्। ततः खलु तानि पञ्चचोरशतानि अन्योऽन्यं शब्दयन्ति शब्दयित्वा एवमवादिषुः-सर्वे मिलित्वा परस्परमेवं विचारितवन्तइत्यर्थः एवं

लिये दूसरी और माया चारी को सिखला दिया। (तएणं से विजए चोरसेणावई अन्नया कयाइं कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था, तएणं ताइं पंचचोरसयाइं विजयस्स चोरसेणावइस्स महया २ इड्ढी सक्कार समुदएणं णीहरणं करेंति करित्ता बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेंति, करित्ता जाव विगयसोया जाया यावि होत्था। तएणं ताइं पंच चोर सयाइं अन्नमन्नं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी) इस के बाद वह चोर सेनापति विजय किसी एक दिन कालधर्मगत हो गया। तब उन पांच सौ चोरों ने चोर सेनापति विजय तस्कर की बड़े ठाट बाट के साथ अर्थी-श्मशान यात्रा निकाली बादमें उन्हों ने मृतसंबन्धी जितने भी लौकिक कृत्य होते हैं वे सब किये। लौकिक कृत्य करके सबके सब धीरे २ शोक रहित जब बन चुके-तब उन पांच सौ चोरों ने परस्पर में एक दूसरे को बुलाया-और बुलाकर उन से इस प्रकार कहा-विचार

(तएणं से विजए चोरसेणावई अन्नया कयाइं कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था, तएणं ताइं पंच चोरसयाइं विजयस्स चोरसेणावइस्स महया २ इड्ढी सक्कारसमुदएण णीहरणं करेंति करित्ता बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेंति, करित्ता जाव विगयसोया जाया यावि होत्था। तएणं ताइं पंच चोर सयाइं अन्नमन्नं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी)

त्यारपछी ते चोर सेनापति विजय कोई एक दिवसे मृत्यु पाम्यो. त्यारे ते पांचसो चोरोए चोर सेनापति विजय तस्करनी भारे ठाठथी श्मशानयात्रा काढी. त्यारपछी तेमणे तेना मृत्यु संबंधी लौकिक कृत्यो कर्यां. लौकिक कृत्यो पूरां करीने धीमे धीमे ज्यारे बधा शोक रहित थया त्यारे ते पांचसो चोरोए परस्पर एकबीजाने बोलाव्या अने एक स्थाने एकत्र थईने तेमणे आ प्रमाणे विचार कर्यो के—

खलु अस्माकं हे देवानुप्रियाः ! विजयश्चोरसेनापतिः कालधर्मेण संयुक्तः=मृत इत्यर्थः। अयं च खलु चिलातः तस्करो विजयेन चोरसेनापतिना 'बहूईओ चोरविज्जाओ जाव' बह्व्यः चोरविद्या यावत्-चोरविद्यादि चोरनिकृतिपर्यन्तासु सकलचोरशिक्षासु 'सिक्खिए' शिक्षितः=पारङ्गमितः, 'तं' तस्मात् कारणात् 'सेयं' श्रेयः खलु अस्माकं हे देवानुप्रियाः ! चिलातं तस्करं सिंहगुहायाश्चोरपल्ल्याश्चोरसेनापतितयाऽभिषिञ्चितुम्, अर्थात् अयं चिलातः तस्करोऽस्माभिः चोर सेनापतिपदे नियोज्यः, 'त्तिकट्टु' इति कृत्वा=इति मनसि विधाय 'अन्नमन्नस्स' अन्योऽन्यस्य 'एयमट्ठं' एतमर्थम्=चिलातस्य चोरसेनापतिपदे नियोजनरूपमर्थम्

किया-(एवं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! विजए चोरसेणावई कालधम्मुणा संजुत्ते, अयं च णं चिलाए तक्करे विजएणं चोरसेणावइणा बहूईओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविए, तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! चिलायं तक्करं सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तए त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता चिलायं तीसे सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचंति) देवानुप्रियो! देखो-हमारे नायक चोर सेनापति विजय तो अब मर चुके हैं। उन्होंने इस चिलात चोर को अनेक चोर विद्याएँ आदि सब कुछ सिखलाही दिया है। अतः हमलोगों को अब यही उचित है कि हमलोग चिलात चोर को सिंह गुहा नामकी इस चोर पल्ली का चोर सेनापति के रूप में नियुक्त करलें अर्थात् चोरसेनापति के पद पर इस चिलात चोर को नियुक्त करलें इस प्रकार विचार करके उन्होंने एक दूसरे के विचार रूप अर्थ को

(एवं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! विजए चोरसेणावई कालधम्मुणा संजुत्ते, अयं च णं चिलाए तक्करे विजएणं चोरसेणावइणा बहूईओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविए, तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! चिलायं तक्करं सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तए त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता, चिलायं तीसे सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचंति)

હે દેવાનુપ્રિયો! જુઓ, અમારા નાયક ચોર સેનાપતિ વિજય તો હવે મરણ પામ્યા છે. તેમણે આ ચિલાત ચોરને ઘણી ચોર વિદ્યાઓ વગેરે બધું શીખવ્યું જ છે. એટલા માટે હવે અમને એ જ યોગ્ય લાગે છે કે અમે લોકો ચિલાત ચોરને આ સિંહગુહા નામની ચોરપલ્લીનો ચોર સેનાપતિ બનાવી લઈએ. એટલે કે ચોર સેનાપતિના સ્થાને આ ચિલાત ચોરની નીમણુંક કરી લઈએ. આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેમણે એક બીજાના વિચાર રૂપ

'पडिसुणेंति' प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य, चिलातं तस्करं चोरसेनापतितया अर्थात् चोरसेनापतिपदे अभिषिञ्चति। ततः खलु स चिलातः चोरसेनापतिर्जातः, कीदृशः ? इत्याह-'अहम्मिए जाव' अधार्मिको यावत्-विजयचोरसेनापतिवदधार्मिको यावदधर्मकेतुर्भवन् विहरति। ततः खलु स चिलातः चोरसेनापतिः 'चोराण य जाव' चोराणां च यावत्=चोरपारदारिकादीनां च 'कुडंगे' कुडङ्गः आश्रयस्थानं चाऽपि आसीत्। स खलु तत्र सिंहगुहायां चोरपल्ल्यां पञ्चानां चोरशतानां च एवं यथा विजयस्तथैव सर्वं यावत्=विजयवत् पञ्चशतानां चोराणामुपरि आधिपत्यं कुर्वन्, राजगृहस्य दक्षिणपौरस्त्यम्=अग्निकोणस्थं

स्वीकार कर लिया। और स्वीकार करके उस चिलात चोर को अन्त में उस सिंहगुहा नामकी चोर पल्ली का उन्हों ने चोर सेनापति के रूप में अभिषेक कर दिया। (तएणं से चिलाए चोरसेणावई जाए अहम्मिए जाव विहरइ तएणं से चोर से० चोराण य जाव कुडंगे यावि होत्था, से णं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसयाणं य एवं जहा विजओ तहेव सव्वं जाव रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमिल्लं जणवयं जाव णित्थाण निद्धणं करेमाणे विहरइ) इस तरह वह चिलात चोर सेनापति बन गया। चोरसेनापति बनकर वह विजय चोर सेनापति की तरह अधार्मिक यावत् अधर्मकेतु जैसा हो गया। अतः वह चिलात चोर सेनापति चोरों का यावत् पारदारिक आदिकों का कुडंग की तरह वासों के वन के समान-आश्रयस्थान बन गया और उस सिंहगुहा नामकी पल्ली में पांचसौ चोरों का आधिपत्य करता हुआ विजय तस्कर

અર્થને સ્વીકારી લીધો અને સ્વીકારીને છેવટે તે ચિલાત ચોરનો તે સિંહગુહા નામની ચોરપલ્લીનો તેમણે ચોર સેનાપતિના રૂપમાં અભિષેક કરી દીધો.

(तएणं से चिलाए चोरसेणावई जाए अहम्मिए जाव विहरइ तएणं से चोर से० चोराण य जाव कुडंगे यावि होत्था, सेणं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसयाण य एवं जहा विजओ तहेव सव्वं जाव रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमिल्लं जणवयं जाव णित्थाणं निद्धणं करेमाणे विहरइ)

આ પ્રમાણે તે ચિલાત ચોર ચોર સેનાપતિ થઇ ગયો. ચોર સેનાપતિ બનીને તે વિજય ચોર સેનાપતિની જેમ અધાર્મિક યાવત્ અધર્મકેતુ જેવો થઇ ગયો. તેથી તે ચિલાત ચોર સેનાપતિ ચોરોનો યાવત્ પારદારિક વગેરેનો કુડંગની જેમ-વાંસોના વનની જેમ-આશ્રયસ્થાન બની ગયો અને તે સિંહગુહા

जनपदं 'नित्थाणं निद्धणं' निस्थानं निर्धनं गृहरहितं धनरहितं च कुर्वन् विहरति ॥ सू० ४ ॥

मूलम्—तएणं से चिलाए चोरसेणावई अन्नया कयाइं विउलं असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडावेत्ता पंच चोरसए आमंतेइ। तओ पच्छा ण्हाए कयबलिकम्मे भोयणमंडवंसि तेहिं पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च जाव पसण्णं च आसाएमाणे४ विहरइ, जिमिय भुत्तुत्तरागए ते पंच चोरसए विउलेणं धूवपुप्फगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! रायगिहे णयरे धण्णे णामं सत्थवाहे अड्ढे०, तस्स णं धूया, भद्दाए अत्तया पंचण्हं पुत्ताणं अणुमग्गजाइया सुंसुमा णामं दारिया यावि होत्था, अहीण जाव सुरूवा, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहं विलुंपामो, तुब्भं विउले धणकणग जाव सिलप्पवाले ममं सुंसुमा दारिया। तएणं ते पंच चोरसया चिलायस्स चोरसेणावइस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति। तएणं से चिलाए चोरसेणावई तेहिं पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं अल्लचम्मं दुरूहइ, दुरूहित्ता पुव्वावरण्हकालसमयंसि पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणे माइयगोमुहिएहिं फलएहिं णिकट्ठाहिं असिलट्ठीहिं अंसगएहिं तोणेहिं

की तरह राजगृह नगर के बाहिर के अग्निकोणस्थ जनपदों को गृह रहित और धन रहित करने लग गया।' सूत्र ४ ॥

નામની ચોરપલ્લીમાં પાંચસો ચોરોનો અધિપતિ થઇને વિજય તસ્કરની જેમ રાજગૃહ નગરની બહારના અગ્નિકોણ તરફના જનપદોને ગૃહરહિત અને ધન-રહિત એટલે કે બરબાદ કરવા લાગ્યા. ॥ સૂત્ર ૪ ॥

'पडिसुर्णेति' प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य, चिलातं तस्करं चोरसेनापतितया अर्थात् चोरसेनापतिपदे अभिषिञ्चति। ततः खलु स चिलातः चोरसेनापतिर्जातः, कीदृशः ? इत्याह-'अहम्मिए जाव' अधार्मिको यावत्-विजयचोरसेनापतिवदधार्मिको यावदधर्मकेतुर्भवन् विहरति। ततः खलु स चिलातः चोरसेनापतिः 'चोराण य जाव' चोराणां च यावत्=चोरपारदारिकादीनां च 'कुडंगे' कुडङ्गः आश्रयस्थानं चाऽपि आसीत्। स खलु तत्र सिंहगुहायां चोरपल्ल्यां पञ्चानां चोरशतानां च एवं यथा विजयस्तथैव सर्वं यावत्=विजयवत् पञ्चशतानां चोराणामुपरि आधिपत्यं कुर्वन्, राजगृहस्य दक्षिणपौरस्त्यम्=अग्निकोणस्थं

स्वीकार कर लिया। और स्वीकार करके उस चिलात चोर को अन्त में उस सिंहगुहा नामकी चोर पल्ली का उन्हों ने चोर सेनापति के रूप में अभिषेक कर दिया। (तएणं से चिलाए चोरसेणावई जाए अहम्मिए जाव विहरइ तएणं से चोर से० चोराण य जाव कुडंगे यावि होत्था, से णं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसयाणं य एवं जहा विजओ तहेव सव्वं जाव रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमिल्लं जणवयं जाव णित्थाण निद्धणं करेमाणे विहरइ) इस तरह वह चिलात चोर सेनापति बन गया। चोरसेनापति बनकर वह विजय चोर सेनापति की तरह अधार्मिक यावत् अधर्मकेतु जैसा हो गया। अतः वह चिलात चोर सेनापति चोरों का यावत् पारदारिक आदिकों का कुडंग की तरह वासों के वन के समान-आश्रयस्थान बन गया और उस सिंहगुहा नामकी पल्ली में पांचसौ चोरों का आधिपत्य करता हुआ विजय तस्कर

અર્થને સ્વીકારી લીધો અને સ્વીકારીને છેવટે તે ચિલાત ચોરનો તે સિંહગુહા નામની ચોરપલ્લીનો તેમણે ચોર સેનાપતિના રૂપમાં અભિષેક કરી દીધો.

(तएणं से चिलाए चोरसेणावई जाए अहम्मिए जाव विहरइ तएणं से चोर से० चोराण य जाव कुडंगे यावि होत्था, सेणं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसयाणं य एवं जहा विजओ तहेव सव्वं जाव रायगिहस्स दाहिण-पुरत्थिमिल्लं जणवयं जाव णित्थाणं निद्धणं करेमाणे विहरइ)

આ પ્રમાણે તે ચિલાત ચોર ચોર સેનાપતિ થઈ ગયો. ચોર સેનાપતિ બનીને તે વિજય ચોર સેનાપતિની જેમ અધાર્મિક યાવત્ અધર્મકેતુ જેવો થઈ ગયો. તેથી તે ચિલાત ચોર સેનાપતિ ચોરોનો યાવત્ પારદારિક વગેરેનો કુડંગની જેમ-વાંસોના વનની જેમ-આશ્રયસ્થાન બની ગયો અને તે સિંહગુહા

जनपदं 'नित्थाणं निद्धणं' निस्थानं निर्धनं गृहरहितं धनरहितं च कुर्वन् विहरति ॥ सू०४ ॥

मूलम्—तएणं से चिलाए चोरसेणावई अन्नया कयाइं विउलं असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडावेत्ता पंच चोरसए आमंतेइ। तओ पच्छा ण्हाए कयबलिकम्मे भोयणमंडवंसि तेहिं पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च जाव पसण्णं च आसाएमाणे४ विहरइ, जिमिय भुत्तुत्तरागए ते पंच चोरसए विउलेणं धूवपुप्फगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! रायगिहे णयरे धण्णे णामं सत्थवाहे अड्ढे०, तस्स णं धूया, भद्दाए अत्तया पंचण्हं पुत्ताणं अणुमग्गजाइया सुंसुमा णामं दारिया यावि होत्था, अहीण जाव सुरूवा, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहं विलुंपामो, तुब्भं विउले धणकणग जाव सिलप्पवाले ममं सुंसुमा दारिया। तएणं ते पंच चोरसया चिलायस्स चोरसेणावइस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति। तएणं से चिलाए चोरसेणावई तेहिं पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं अल्लचम्मं दुरूहइ, दुरूहित्ता पुव्वावरण्हकालसमयंसि पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणे माइयगोमुहिएहिं फलएहिं णिकट्ठाहिं असिलट्ठीहिं अंसगएहिं तोणेहिं

की तरह राजगृह नगर के बाहिर के अग्निकोणस्थ जनपदों को गृह रहित और धन रहित करने लग गया।' सूत्र ४ ॥

નામની ચોરપલ્લીમાં પાંચસો ચોરોનો અધિપતિ થઈને વિજય તસ્કરની જેમ રાજગૃહ નગરની બહારના અગ્નિકોણ તરફના જનપદોને ગૃહરહિત અને ધનરહિત એટલે કે બરબાદ કરવા લાગ્યા. ॥ સૂત્ર ૪ ॥

सजीवेहिं धणूहिं समुक्खित्तेहिं सरेहिं समुल्लालियाहिं दीहाहिं ओसारियाहिं उरुघंटयाहिं छिप्पतूरेहिं वज्जमाणेहिं महया महया उक्किट्टसीहणायचोरकलकलरवं समुद्दरवभूयं करेमाणे सीहगुहाओ चोरपल्लीओ पडिणिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव रायगिहे नयरं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रायगिहस्स नयरस्स अदूरसामंते एगं महं गहणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता, दिवसं खवेमाणे चिट्ठइ ॥ सू० ५ ॥

टीका—'तएणं से' इत्यादि । ततः खलु स चिलातश्चोरसेनापतिः अन्यदा कदाचित् विपुलम् अशनपानखादिमस्वादिमम् 'उवक्खडेत्ता' उपस्कार्य=निष्पाद्य पञ्च चोरशतानि आमन्त्रयति । ततः पश्चात् स्नातः 'कयबलि कम्मे' कृतबलिकर्मा=कृतं बलिकर्म येन सः, काकादीनां कृतेदत्त भोजनोपहारो भोजनमण्डपे तैः पञ्चभिः चोरशतैः सार्धं 'विउलं' विपुलम्=अत्यर्थम्, अशनं पानं खाद्यस्वाद्यं सुरां च यावत् प्रसन्नां च 'आसाएमाणे' आस्वादयन् विहरति । पुनश्च 'जिमिय

'तएणं से चिलाए चोरसेणावई' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (चोर सेणावई चिलाए) चोर सेनापति चिलात चोर ने (अण्णया कयाइ) किसी एक समय (विउलं असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडावेत्ता पंचचोरसए आमंतेइ – तओ पच्छा ण्हाए कयबलिकम्मे, भोयणमंडवंसि तेहिं पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च जाव पसण्णं च आसाए माणे ४ विहरइ. जिमियभुत्तुत्तरागए ते पंच चोरसए विउलेणं धूवपुप्फगंधम-

---

तएणं से चिलाए चोरसेणावई इत्यादि—

ટીકાર્થ—(तएणं) ત્યારપછી (चोरसेणावई चिलाए) ચોર સેનાપતિ ચિલાત ચોરે (अण्णया कयाइ) કોઈ એક વખતે (विउल असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडावेत्ता पंच चोरसए आमंतेइ–तओ पच्छा ण्हाए कयबलिकम्मे, भोयणमंडवंसि तेहिं पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च जाव पसण्णं च आसाए माणे४ विहरइ, जिमिय भुत्तुत्तरागए ते पंच चोरसए विउलेणं धूवपुप्फगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता एवं वयासी)

भुत्तुत्तरागए ' जिमितभुक्तोत्तरागतः=जिमितः=कृतभोजनः भुक्तोत्तरकालमागतः यावत् परमशुचिभूतः सुखासनवरगतः सन् तानि पञ्च चोरशतानि विपुलेन=अत्यर्थेन ' धूवपुप्फगंधमल्लालंकारेणं '=धूप पुष्पगन्धमाल्यालंकारेण=धूपः=सुगन्धित द्रव्येण उत्पन्नो धूमः, पुष्पं=कुसुमम् , गन्धः=चन्दनादि माल्यम्-माला, अलङ्काराणि=आभरणानि, एतेषां च समाहारद्वन्द्वः, तेन सत्करोति, सम्मानयति, सत्कृत्य सम्मान्य एवम्-अवदत्-एवं खलु हे देवानुप्रियाः ! राजगृहे नगरे धन्यो

ल्लालंकारेणं सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता एवं वयासी) विपुल मात्रा में, अशन पान, खादिम एवं स्वादिमरूप चारों प्रकार का आहार बनवा कर उन पांचसौ चोरो को आमंत्रित किया। जब वे सब आचुके-तब उस चिलात चोर ने स्नान से निवट कर और वायसादि को अन्नादिका भाग देनेरूपबलिकर्म आदि कर भोजन मंडपमें बैठकर उन पांच सौ चोरों के साथ उस विपुलमात्रा में निष्पन्न हुए अशन, पान, खादिम, एवं स्वादिमरूप चारों प्रकार के आहार को तथा सुरा, यावत् प्रसन्न मदिरा को खूब मनमाने रूप में पिया खाया जब वे सब के सब अच्छी तरह भोजन कर उत्तर काल में परमशुचिभूत होकर आनंद के साथ एक स्थान पर आकर बैठचुके तब उस चिलात चोर सेनापति ने उनका धूप से-सुगंधित द्रव्य से निष्पन्न हुए धूप से, पुष्पों से, चंदन आदि से, मालाओं से, और आभरणों से सत्कार किया सन्मान किया। सत्कार सन्मान करके फिर उनसे उसने इस प्रकार

પુષ્કળ પ્રમાણુમાં અશન, પાન, ખાદિમ અને સ્વાદિમ ચારે જાતના આહાર બનાવડાવીને તે પાંચસા ચોરાને આમંત્રિત કર્યા. જ્યારે તેઓ બધા આવી ગયા ત્યારે તે ચિલાત ચોરે સ્નાન કર્યું અને ત્યારપછી તેણે કાગડા વગેરે પક્ષીઓને અન્ન વગેરેનો ભાગ અર્પીને બલિકર્મ વગેરે કર્યું. ત્યારબાદ તેણે ભોજન મંડપમાં બેસીને તે પાંચસા ચોરાની સાથે તે પુષ્કળ પ્રમાણુમાં બનાવડાવેલા, અશન, પાન, ખાદિમ અને સ્વાદિમ રૂપ ચારે પ્રકારના આહારને તેમજ સુરા યાવત્ પ્રસન્ન મદિરાને ખૂબ ધરાઇ ધરાઇને ખાધા-પીધાં. જ્યારે તેઓ બધા સારી રીતે જમીને પરમશુચીભૂત થઇને આનંદપૂર્વક એક સ્થાન ઉપર આવીને એકઠા થયા-બેસી ગયા, ત્યારે તે ચિલાત ચોર સેનાપતિએ તેમના ધૂપથી, પુષ્પોથી, ચંદન વગેરેથી, માળાઓથી અને આભરણોથી સત્કાર કર્યો અને સન્માન કર્યું. સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તેણે તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

नाम सार्थवाह आढ्योऽस्ति। तस्य खलु दुहिता भद्राया आत्मजा पञ्चानां पुत्राणामनुमार्गजातिका=पञ्चानां पुत्राणां जननान्तरं समुत्पन्ना सुसुमा नाम दारिका चापि अस्ति, कीदृशी सा? 'अहीण जाव सुरूवा' अहीन यावत् सुरूपा=अहीन पञ्चेन्द्रियशरीरा यावद् सुरूपवती, 'तं' तत्=तस्माद् गच्छामः खलु हे देवानुप्रियाः! धन्यस्य सार्थवाहस्य गृहं विलुम्पामः=लुण्ठामः, युष्माकं धनकनक

कहा-(एवं खलु देवाणुप्पिया! रायगिहे णयरे धण्णे णामं सत्थवाहे अड्ढे० तस्स णं धूया भद्दाए अत्तया पंचण्हं पुत्ताणं अणुमग्गजाइया सुंसमा णामं दारिया यावि होत्था, अहीण जाव सुरूवा तं गच्छामोणं देवाणुप्पिया! धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहं विलुंयामो तुब्भं विउले धणकणग जाव सिलप्पवाले, ममं सुंसुमा दारिया! तएणं ते पंच चोरसया चिलायस्स चोरसेणवईस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति। तएणं से-चिलाए चोरसेणावई तेहिं पंचहिं चोरसहिं सद्धिं अल्लचम्मं दुरूहइ, दुरूहित्ता पुव्वावरण्हकालसमयंसि पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं) हे देवानुप्रियो! सुनो-एक बात कहना है-वह इस प्रकार है-राजगृह नगर में धन्य नाम का एक धनिक एवं सर्वजन मान्य सार्थवाह रहता है। इस की एक लड़की है। जिसका नाम सुंसमा है। यह उसकी पत्नी भद्रा भार्या से पांच पुत्रों के बाद उत्पन्न हुई है। यह अहीन पांचों इन्द्रियों से युक्त शरीरवाली है तथा बहुत अधिक सुकुमार एवं सुन्दर है। इसलिये -चलो हे देवानुप्रियो! हम सब चलें और धन्य सार्थवाह के घर को

(एवं खलु देवाणुप्पिया! रायगिहे णयरे धण्णे णामं सत्थवाहे अड्ढे० तस्स णं धूया भद्दाए अत्तया पंचण्हं पुत्ताणं अणुमग्गजाइया सुंसमा णाम दारिया यावि होत्था अहीण जाव सुरूवा तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया! धणस्स सत्थवाहस्स गिहं विलुंपामो, तुब्भं विउले धणकणग जाव सिलप्पवाले, ममं सुसमा दारिया! तएणं ते पंच चोरसया चिलायस्स चोरसेणावइस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति। तएणं से चिलाए चोरसेणवई तेहिं पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं अल्लचम्मं दुरूहइ दुरूहित्ता पुव्वावरण्हकालसमयंसि पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं)

હે દેવાનુપ્રિયો! સાંભળો, તમને મારે એક વાત કહેવી છે તે આ પ્રમાણે છે કે રાજગૃહ નગરમાં ધન્ય નામે એક ધનિક અને સર્વજનમાન્ય સાર્થવાહ રહે છે તેને એક પુત્રી છે, તેનું નામ સુંસમા છે. ધન્યની પત્ની ભદ્રાભાર્યાના ગર્ભથી તે પુત્રી પાંચ ભાઈઓ બાદ જન્મ પામી છે. તે અહીન પાંચે ઇન્દ્રિયોથી યુક્ત શરીરવાળી છે તેમજ ખૂબ જ સુકુમાર અને સુંદર છે.

यावत् शिलप्रवालः, मम सुंसुमा दारिका-लुण्ठितेषु वस्तुषु मध्ये धनकनकमणि-मौक्तिकशिलाप्रवालादि वस्तुजातानि युष्माकं भवन्तु, मम तु एका सुंसुमा दारिका भविष्यति । ततः खलु तानि पञ्च चोरशतानि चिलातस्य चोरसेनापतेः एतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति । ततः खलु स चिलातश्चोरसेनापतिः तैः पञ्चभिः चोरशतैः सार्द्धं 'अल्लचम्मं' आर्द्रचर्म दूरोहति, लुण्ठकाहि लुण्ठनप्रस्थानात् पूर्वं माङ्गल्यार्थमार्द्रचर्मण्यारोहन्तीति तेषां व्यवहारः, दूरुह्य, 'पुव्वावरण्हकालसमयंसि' पूर्वापराह्णकालसमये '=दिनस्य चतुर्थप्रहरे पञ्चभिश्चोरशतैः सार्द्धं 'सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणे' सन्नद्ध यावत् गृहीतायुधप्रहरणः=सन्नद्धबद्ध-वर्मितकवचः=संनद्धः=सज्जीकृतः, बद्धः=कशाबन्धनेन संबद्धः, वर्मितः=अङ्गे परि-हितः कवचो येन स तथोक्तः, 'गृहीतायुधप्रहरणः' गृहीतानि आयुधप्रहरणानि

लूटें-जो वस्तु हम तुम लूटेंगे उनमें से तुम्हारी तो धन, कनक, मणि, मौक्तिक शिलाप्रवाल आदि चीजें होगी-और मेरी केवल एवं वह सुंस-मादारिका होगी-। इस तरह उन पांचसौ चोरों ने अपने सेनापति चिलात चोर की इस बात को मान लिया। इसके बाद यह चोर सेना-पति चिलात, उन पांचसौ चोरों के साथ गीले चमडे पर बैठ गया। लुटेरे लूटने के लिये जब प्रस्थान करते है तब वे पहिले गीले चमडे पर शुभ शकुन मानने के निमित्त बैठते है ऐसा उनमें व्यवहार है बैठकर फिर वह दिन के चतुर्थप्रहर में पांचसौ चोरों के साथ (सीहगुहाओ चोरपल्लीओ पडिनिक्खमइ) उस सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली से निकला। (सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणे माइयगोमुहिएहिं फलएहिं

એટલા માટે ચાલો તૈયાર થાઓ, હે દેવાનુપ્રિયો ! આપણે બધા ત્યાં જઈએ અને ધન્ય સાર્થવાહના ઘરને લુટી લઈએ, જે વસ્તુઓ આપણે બધા લુટીશું તેમાંથી ધન, કણક, મણિ, મૌક્તિક, શિલાપ્રવાલ વગેરે વસ્તુઓ તમારી થશે અને ફક્ત તે સુંસમા દારિકા મારી થશે આ પ્રમાણે તે પાંચસો ચોરોએ પોતાના સેનાપતિ ચિલાત ચોરની આ વાત સ્વીકારી લીધી. ત્યારપછી તે ચોર સેનાપતિ ચિલાત, તે પાંચસો ચોરોની સાથે સાથે ભીના ચામડા ઉપર બેસી ગયો. લુંટારાઓ લુંટવા માટે જ્યારે ઘેરથી નીકળે છે ત્યારે તેઓ પહેલાં શુભ શકુન માટે ભીના ચામડા ઉપર બેસે છે, આ જાતનો તેઓમાં રિવાજ છે ભીના ચામડા ઉપર બેસીને તે દિવસના ચોથા પહોરમાં પાંચસો ચોરોની સાથે (सीहगुहाओ चोरपल्लीओ पडिनिक्खमइ) તે સિંહગુહા નામની ચોરપલ્લીમાંથી નીકળ્યો.

येन स', गृहीतायुधप्रहरणः 'माइयगोमुहियेहिं' माडकगोमुखितैः = माडकानि= पक्ष्मवन्ति, गोमुखितानि=गोमुखाकाराणि=माडकानि च तानि गोमुखितानि तैः=उदरस्रार्य भल्लूकरोमाद्यैर्गोमुखाकारैः 'फलएहिं' फलकैः=पट्टिकेति प्रसिद्धः 'णिक्कट्ठाहिं असिलट्ठीहिं' निकृष्टाभिः असियष्टिभिः, कोशवहिष्कृतैः खड्गैः, 'अंसगएहिं तोणेहिं' अंसगतैस्तूणैः=स्कन्धस्थितैस्तूणीरैः, 'सजीवेहिं धणूहिं' सजीवैर्धनुभिः=कोटयारोपितप्रत्यञ्चैर्धनुभिः, 'समुक्खित्तेहिं सरेहिं' समुत्क्षिप्तैः शरैः=तूणीरस्थानान्निष्काशितैर्बाणैः, 'समुल्लालियाहिं दीहाहिं' समुल्लालिताभिः दीर्घाभिः=समुच्छालितैः शस्त्रविशेषैः 'ओसारियाहिं' अवस्वरिताभिः= नादिताभिः 'उरुघंटियाहिं' उरुघण्टिकाभिः=विशालघण्टाभिः 'छिप्पतूरेहिं

णिक्कट्ठाहिं असिलट्ठीहिं अंसगएहिं तोणेहिं सजीवेहिं धणूहिं, समुक्खित्तेहिं सरेहिं समुल्लालियाहिं दीहाहिं, ओसारियाहिं उरुघंटियाहिं छिप्पतूरेहिं वज्जमाणेहिं महया२ उक्किट्ठी सीहणाये चोरकलकल रवं समुद्दरवं भूयं करेमाणे, चोरपल्ली से वह किस तरह की स्थिति में निकला–यही बात सूत्रकार इन पंक्तियों में कह रहे हैं–वे कहते हैं कि जब वह अपनी चोरपल्ली में से निकला तो उस समय उसने अपने शरीर पर कवच को सज्जित करके कशाबंधन से अच्छी तरह बांध रखा था "गृहीतायुधप्रहरण" आयुध और प्रहरण उसके दोनों हाथों में थे। रीछ के रोम से युक्त गोमुखाकार पट्टिका से, म्यान से बाहिर खेंची हुई तलवारों से, कंधों पर लटकते हुए भाथों-तूणीरों–से ज्यापर चढे हुए धनुषों से, तूणीर से निकाले गये बाणों से ऊपर उछालेगये शस्त्र विशेषों से,

(रुणगह जाव गहियाउहपहरणे माइयगोमुहिएहिं फलएहिं णिकट्ठाहिं असिलट्ठीहिं अंसगएहिं तोणेहिं सजीवेहिं धणूहिं समुक्खित्तेहिं सरेहिं समुल्लालियाहिं दिहाहिं ओसारियाहिं उरुघरियाहिं छिप्पतूरेहिं वज्जमाणेहिं महया २ उक्किट्ठसीहणाये चोरकलकलरवं समुद्दरवं भूयं करेमाणे)

ચોરપલ્લીમાંથી તેઓ કેવી રીતે બહાર નીકળ્યા એ જ વાત સૂત્રકાર આ પંક્તિઓમાં સ્પષ્ટ કરી રહ્યા છે તેઓ કહે છે કે જ્યારે તે પોતાની ચોરપલ્લીમાંથી નીકળ્યો ત્યારે તેણે પોતાના શરીર ઉપર કવચ ધારણ કરીને તેને કશાબંધનથી સારી રીતે બાંધી રાખ્યું હતું "गृहितायुधप्रहरणः" આયુધ અને પ્રહરણ તેના બંને હાથોમાં હતા. રીંછના રોમથી યુક્ત ગોમુખાકાર પટ્ટિકાથી, મ્યાનમાંથી બહાર કાઢેલી તલવારોથી, ખંભાઓ ઉપર લટકતા તૂણીરોથી, જ્યા ઉપર ચઢેલા ધનુષોથી, તૂણીરમાંથી કાઢવામાં આવેલાં બાણોથી, ઉપર ફેંકવામાં આવેલાં શસ્ત્ર વિશેષોથી, શબ્દ કરતા–મોટા ઘંટોથી

वज्जमाणेहिं ' क्षिप्रतूर्यैः वाद्यमानैः=द्रुतं वाद्यमानैः तूर्यैः उपलक्षितः सन् ' महया-महया उक्किट्ठसीहणाये चोरकलकलरवं ' महामहोत्कृष्टसिंहनादचोरकलकलरवं- अत्यन्तोत्कृष्टसिंहनादचोरकलकलशब्दं समुद्ररवभूतं=समुद्रवेलावृद्धिसमये ध्वनिमिवकुर्वन्, यद्वा महता महता उत्कृष्टसिंहनादेन-' लुप्ततृतीयान्तं पदम् ' स्वकृतोत्कृष्टसिंहनादेनेत्यर्थः, शेषं पूर्ववत् । सिंहगुहातश्चोरपल्लीतः प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव राजगृहं नगरं तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य राजगृहस्य नगरस्य अदूरसामन्ते एकं महद् ' गहणं ' गहनम्=वनम् अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य, दिवसम्=शेषदिवसभागं क्षपयन्=व्यतियन् तिष्ठति ॥ सू० ५ ॥

शब्दायमान-बड़े २ घंटों से जल्दी २ बजते हुए बाजोंसे वह उपलक्षित -युक्त था। तथा उसके निकलने पर जो चोरों का कलकल रव हुआ-वह सिंह की गर्जना के जैसा महान उच्चस्वर था-। तथा जिस समय समुद्र बढता है उस समय जैसा उसका शब्द होता है-वैसा ही वह कल २ रव गंभीर था। (पडिनिक्खमित्ता जेणेव रायगिहे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रायगिहस्स नयरस्स अदूर सामंते एगं महं गहणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता दिवसं खवेमाणे चिट्ठइ) चोरपल्ली से निकलकर वह जहां राजगृह नगर था वहां आया-वहां आकर के वह राजगृह नगर के अदूरसामंत-न अति दूर न अति समीप रहे हुए एक महान जंगल में छिप रहे वहां छिपकर उसने अपना वह दिवस वहीं पर ठहर कर समाप्त कर दिया ॥ सू० ५ ॥

જલ્દી જલ્દી વાગતાં વાજાંઓથી તે યુક્ત હતો. તેમજ જ્યારે તે નીકળ્યો ત્યારે ચોરોને જે ઘોંઘાટ થયો તે સિંહની ગર્જના જેવો મહા ધ્વનિ હતો. તેમજ જ્યારે સમુદ્રમાં ભરતી આવે છે અને ત્યારે જેવો તેનો ધ્વનિ હોય છે, તે માણસોનો ધ્વનિ પણ તેવો જ ગંભીર હતો. (पडिनिक्खमित्ता जेणेव रायगिहे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रायगिहस्स नयरस्स अदूरसामंते एगं महं गहणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता दिवसं खवेमाणे चिट्ठइ) ચોરપલ્લીમાંથી નીકળીને જ્યાં રાજગૃહ નગર હતું ત્યાં તે આવ્યો. ત્યાં આવીને તે રાજગૃહ નગરથી ઘણે દૂર પણ નહિ અને ઘણા નજીક પણ નહિ એવા એક મોટા વનમાં છુપાઈને રહ્યા ત્યાં છુપાઇને તેણે પોતાનો તે દિવસ ત્યાં જ પસાર કરી દીધો.ાસૂ૦૫ા

मूलम्—तएणं से चिलाए चोरसेणावई अद्धरत्तकालसमयंसि निसंत पडिनिसंतंसि पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं माइयगोमुहिएहिं फलएहिं जाव मूइआहिं उरुघंटियाहिं जेणेव रायगिहस्स नयरस्स पुरत्थिमिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उदगवत्थिं परामुसइ, आयंते चोक्खे सुइभूए तालुग्घाडणिविज्जं आवाहेइ, आवाहित्ता, रायगिहस्स दुवारकवाडे उदएण अच्छोडेइ, कवाडं विहाडेइ विहाडित्ता रायगिहं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता, महया२ सद्देणं उग्घोसेमाणे२ एवं वयासी —एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! चिलाए णामं चोरसेणावई पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमागए धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहं घाउकामे, तं जो णं णवियाए माउयाए दुद्धं पाउकामे से णं णिगच्छउ त्तिकट्टु जेणेव धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धण्णस्स गिहं विहाडेइ। तएणं से धण्णे चिलाएणं चोरसेणावइणा पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं गिहं घाइज्जमाणं पासइ, पासित्ता भीए तत्थे४ पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं एगंतं अवक्कमइ। तएणं से चिलाए चोरसेणावई धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहं घाएइ घाइत्ता, सुबहु धणकणग जाव सावएज्जं सुंसुमं च दारियं गेण्हइ, गेण्हित्ता, रायगिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता, जेणेव सीहगुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ६ ॥

टीका—' तएणं से ' इत्यादि। ततः खलु स चिलातश्चोरसेनापतिः ' अद्ध-रत्तकालसमयंसि' अर्धरात्रकालसमये=मध्यरात्रे, कीदृशे 'निसंतपडिनिसंते' निशान्त-प्रतिनिशान्ते=निशान्तं=जनध्वनिरहितं प्रतिनिशान्तं=प्रत्येकंगृहं यस्मिन् तस्मिन्, जने प्रसुप्ते सतीत्यर्थः, पञ्चभिश्चोरशतैः सार्द्धम् ' माइयगोमुहिएहिं ' माइकगोमु-खितैः, उदररक्षार्थं भल्लूकरोमावृतैर्गोमुखाकारैः 'फलएहिं' फलकैः=पट्टकैः उदरब-द्धकाष्ठफलकैरित्यर्थः, यावत् 'मूइआहिं उरुघंटियाहिं' मूकिताभिरुरुघण्टिकाभिः= निः शब्दी कृताभिः विशालघण्टाभिर्युक्तः यत्रैव राजगृहस्य नगरस्य पौरस्त्यं द्वारं तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य, 'उदगवत्थिं' उदकवस्तिं=चर्ममयजलपात्रम्, 'मसक' इति प्रसिद्धम् ' परामुसइ ' परामृशति=गृह्णाति, अनन्तरम् ' आयंते ' आचान्तः= कृतमुखादि प्रक्षालनः ' चोक्खे ' चोक्षः=स्वच्छः अतएव ' तालुग्घाडणिं विज्जं '

' तएणं से चिलाए चोरसेणावई ' इत्यादि।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (चोरसेणावई से चिलाए) चोरसेनापति वह चिलात चोर (निसंतपडिनिसंते अद्धरत्तकालसमयंसि) जब जन ध्वनिरहित प्रत्येक घर हो गया ऐसे मध्यरात्रिके समयमें (पंचहिं चोर-सएहिं सद्धिं) उन पांचसौ चोरों के साथ (माइय गोमुहिएहिं फलएहिं जाव मूइआहिं उरुघंटियाहिं जेणेव रायगिहस्स नयरस्स पुरत्थिमिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छइ) अपने उदर की रक्षा के निमित्त बद्धभल्लूक के रोमों से आवृत हुए गोमुखाकार काष्ठफलकों से यावत् निःशब्दीभूत विशाल घंटिकाओं से युक्त होकर जहां राजगृह नगर का पूर्वदिशा का द्वार था वहां आया। (उवागच्छित्ता उदगवत्थिं परामुसइ, आयंते, चोक्खे, सुइभूए, तालुग्घाडणिविज्जं आवाहेइ, आवाहित्ता रायगिहस्स

' तएणं से चिलाए चोरसेणावई' इत्यादि--

टीकार्थ-(तएणं) त्यारबाद (चोरसेणावई से चिलाए) चोर सेनापति ते चिलात चोर (निसंतपडिनिसंते अद्धरत्तकालसमयंसि) ज्यारे दरेके दरेक घरमां माणुसोनो अवाज एकदम बंध थई गयो, एवा ते मध्यरात्रिना समये (पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं) ते पांचसो चोरोनी साथे

(माइय गोमुहिएहिं फलएहिं जाव मूइआहिं उरुघंटियाहिं जेणेव राय गिहस्स नयरस्स पुरत्थिमिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छइ)

पोताना पेटनी रक्षा माटे रींछना रोमोथी आवृत्त थयेला गोमुखाकार काष्ठ फलकोथी यावत् शांत थई गयेली मोटी घंटिकाओथी युक्त थईने ज्यां राजगृह नगरनुं पूर्व दिशानुं द्वार हतुं त्यां आव्या. (उवागच्छित्ता उदगवत्थिं परामुसइ आयंते चोक्खे सुइभूए, तालुग्घाडणिं विज्जं आवाहेइ, आवाहित्ता

तालोद्घाटिनीं विद्याम् 'आवाहेइ' आवाहयति=स्मरति 'आवाहित्ता' आवाह्य=स्मृत्वा राजगृहस्य द्वारकपाटानि उदकेन 'आच्छोडेइ' आच्छोटयति=अभिषिञ्चति, 'आच्छोडित्ता' आच्छोटय=अभिषिच्य, कपाटं 'विहाडेइ' विघाटयति=उद्घाटयति, विघाटय सकलचौरैः सहितः राजगृहमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य महता महता=अतिमहता शब्देन 'उग्घोसमाणे २' उद्घोषयन् २=मुहुर्मुहुर्घोषणां कुर्वन् एवमवदत्, घोषणाप्रकारमाह-एवं खलु अहं हे देवानुप्रियाः ! चिलातो नाम चोरसेनापतिः पञ्चभिः चोरशतैः सार्द्धम् सिंहगुहातश्चोरपल्लीत इह 'हव्वं' हव्यं=

दुवारे कवाडे उदएणं अच्छोडेइ कवाडं विहाडेइ, विहाडित्ता रायगिहं अणुपविसइ अणुपविसित्ता महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणे २ एवं वयासी -एवं खलु अहं देवाणुप्पिया चिलाए नामं चोरसेणावेई पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं सिंहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमागए धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहं घाउंकामे) वहां आकर के उसने चर्ममय जलपात्र को-मसक को-अपने हाथ में लिया-और उसके जल से आचमन किया-आचमन करके जब वह शुद्ध परमशुचीभूत हो चुका-तब उसने तालोद्घाटिनी विद्या का आवाहन किया-स्मरण किया-और स्मरण करके राजगृह के द्वार कपाटों को उदक के छींटों से सिञ्चित किया। सिञ्चित करके फिर उसने उन किवाडों को खोला और खोल करके फिर वह समस्त चोरों के साथ राजगृह नगर के भीतर प्रविष्ट हो गया। प्रविष्ट होकर के उसने वहां बड़े२ आवाजसे बारंबार घोषणा करते हुए इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियो ! सुनो-मैं चोरसेनापति चिलात नाम का चोर हूँ-अभी २

रायगिहस्स दुवारकवाडे उदएणं अच्छोडेइ कवाडं विहाडेइ, विहाडित्ता रायगिहं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणे २ एवं वयासी-एवं खलु अहं देवाणुप्पिया चिलाए नामं चोरसेणावई पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं सिंहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमागए धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहं घाउंकामे)

ત્યાં આવીને તેણે ચામડાની થેલી-મશક-ને પોતાના હાથમાં લીધી અને તેના પાણીથી આચમન કર્યું આચમન કરીને જ્યારે તે શુદ્ધ પરમ શુચીભૂત થઈ ચૂક્યો ત્યારે તેણે તાલોદ્ઘાટિની વિદ્યાનું આવાહન કર્યું-સ્મરણ કર્યું, અને સ્મરણ કરીને રાજગૃહના દરવાજાનાં કમાડોને પાણીથી સિંચિત કરીને તેણે તે કમાડોને ઉઘાડ્યાં. ઉઘાડીને તે બધા ચોરોની સાથે રાજગૃહ નગરની અંદર પ્રવિષ્ટ થઈ ગયો. પ્રવિષ્ટ થઈને તેણે ત્યાં મોટા સાદે વારંવાર ઘોષણા કરતાં આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! સાંભળો, હું ચોર સેનાપતિ

शीघ्रम् आगतः धन्यस्य सार्थवाहस्य गृहं 'घाउकामे' घातयितुकामः=लुण्ठयितुकामः हे देवानुप्रियाः! यूयं शृणुत, पञ्चशतचौरैः सहाहं चिलातश्चोरसेनापतिरत्रधन्यस्य सार्थवाहस्य गृहं लुण्ठयितुमागतोऽस्मीति भावः, 'तं' तत्=तस्मात् कारणात् 'जो णं' यः खलु 'णवियाए माउआए' नव्यायाः मातृकायाः 'दुद्धं पाउकामे' दुग्धं पातुकामः=यः खलु मदीयहस्तान्मृत्युं प्राप्य पुनर्भाविभवभाविन्या नूतनाया मातुर्दुग्धाभिलाषीभवेत् 'सेणं' स खलु 'णिग्गच्छउ' निर्गच्छतु मम संमुख मागच्छतु 'त्ति कट्टु' इतिकृत्वा=इत्थमुक्त्वा यत्रैव धन्यस्य सार्थवाहस्य गृहं तत्रैव

पांचसौ चोरों के साथ यहां सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली से आया हुआ हूँ। मेरी इच्छा धन्यसार्थवाह के घर को लूटने की है-(तं) इसलिये -(जो णं णवियाए, माउयाए, दुद्धं पाउकामे सेणं णिग्गच्छउ, त्तिकट्टु जेणेव धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गिहं विहाडेइ। तएणं से धण्णे चिलाएणं चोरसेणावइणा पंचहिं चोर-सएहिं सद्धिं गिहं घाइज्जमाणं पासइ, पासित्ता भीए तत्थे ४ पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं एगंतं अवक्कमइ,। तएणं से चिलाए चोरसेणावई धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहं घाएइ, घाइत्ता सुबहुधणकणग जाव सावएज्जं सुंसमं च दारियं गेण्हइ, गेण्हित्ता रायगिहाओ पडिणिक्खमइ,पडिणिक्खमित्ता जेणेव सीहगुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए) जो नवीन माता का दूध पीना चाहता हो-मेरे हाथ से मृत्यु को प्राप्त कर पुनः भाविभव में होनेवाली जननी का दुग्ध पान करने का जो अभिलाषी बन रहा हो

ચિલાત નામે ચોર છું હમણાં જ હું પાંચસો ચોરોની સાથે અહીં સિંહગુહા નામની ચોરપલ્લીથી આવ્યો છું. ધન્ય સાર્થવાહના ઘરને લૂટવાની મારી ઈચ્છા છે. (तं) માટે

(जोणं णवियाए, माउयाए, दुद्धं पाउकामे सेणं णिग्गच्छउ, त्ति कट्टु जेणेव धणस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धण्णस्स गिहं विहाडेइ, तएणं से धण्णे चिलाएणं चोरसेणावइणा पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं गिहं घाइज्जमाणं पासइ, पासित्ता भीए तत्थे४ पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं एगंतं अवक्कमइ। तएणं से चिलाए चोरसेणावई धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहं घाएइ, घाइत्ता सुबहु धणकणग जाव सावएज्जं सुंसमं च दारियं गेण्हइ, गेण्हित्ता रायगिहाओ पडि-णिक्खमइ, पडिक्खमित्ता जेणेव सीह गुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

જે નવી માતાનું દૂધ પીવા ઈચ્છે છે એટલે કે મારા હાથથી મૃત્યુ પામીને ફરી બીજા ભવમાં થનારી માતાનું દૂધ પીવા જે ઈચ્છતો હોય તે

उपागच्छति, उपागत्य धन्यस्य गृहं 'विहाडेइ' विघाटयति=उद्घाटयति। ततः खलु स धन्यः सार्थवाहः चिलातेन चोरसेनापतिना पञ्चभिः चोरशतैः सार्द्धं गृहं 'घाइज्जमाणं' घात्यमानं=लुण्ठ्यमानं पश्यति, दृष्ट्वा, भीतः=भयं प्राप्तः, त्रस्तः=त्रासंगतः, त्रसितः=विशेषतस्त्रासं प्राप्तः 'उव्विग्गे' उद्विग्नः=अयमस्माकं सर्वस्वमपहरति अहमस्य किमपि कर्तुं न शक्नोमीति हेतोः परमचिन्तामापन्नः, पञ्चभिः पुत्रैः सार्धम् 'एगंतं' एकान्तम्=भयरहितं स्थानम् 'अवक्कमइ' अपक्राम्यति=अपगच्छति। ततः खलु स चिलातः चोरसेनापतिः धन्यस्य सार्थवाहस्य गृहं घातयति=लुण्ठयति घातयित्वा लुण्ठयित्वा सुबहुं 'धणकणग जाव सावएज्जं' धनकनक यावत् स्वापतेयम्=धनकनक मणिमौक्तिकादिकं द्रव्यं सुंसुमां च दारिकां गृह्णाति, गृहीत्वा राजगृहात् प्रतिनिष्क्राम्यति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव सिंहगुहा तत्रैव प्राधारयद् गमनाय=गन्तुमुद्यतोऽभूत् ॥ सू० ६ ॥

-वही मेरे सम्मुख आवे-इस प्रकार कहकर वह जहां धन्यसार्थवाह का घर था वहां गया-वहां जाकर उसने धन्यसार्थवाह के घर को खोला जब धन्यसार्थवाह ने पांचसौ चोर के साथ चोरों सेनापति चिलात के द्वारा अपने घर को लुटता हुआ देखा-तो देखकर वह भय को प्राप्त हो गया-और त्रस्त एवं त्रसित-विशेष त्रास को प्राप्त होकर अन्त में वह उद्विग्न बन गया यह हमारा सर्वस्व हरण कर रहा है और मैं इसका कुछ भी नहीं कर सकता हूँ-इस ध्यान से वह चिन्ताकुल हो गया-और चिन्ताकुल होकर अपने पांचों पुत्रों के साथ वहां से निर्भय स्थान में चला गया। चोर सेनापति चिलात ने धन्य सार्थवाह को खूब मनमाना लूटा और लूट करके उसमें से बहुत सा धन कनक, मणि, मौक्तिक आदि द्रव्यों को एवं सुंसमादारिका को ले लिया-। लेकर वह राजगृह नगर से

मारी सामे आवे आ प्रमाणे कहीने ते ज्यां धन्य सार्थवाहनुं घर हतुं त्यां गयो. त्यां जईने तेणे धन्य सार्थवाहना घरने उघाडयुं ज्यारे धन्य सार्थवाहे पांचसो चोरोनी साथे चोर सेनापति चिलात वडे पोताना घरने लुटातुं जोयुं त्यारे जोईने ते भयभीत थई गयो. अने त्रस्त तेमज त्रासित (विशेष त्रास) प्राप्त करीने छेवटे उद्विग्न थई गयो. आ अमारूं सर्वस्व हरण करी रह्यो छे अने हुं एनुं कंई ज बगाडी शकतो नथी आ जातनो विचार करीने ते चिंताकुळ थई गयो अने चिंताकुळ थईने ते पोताना पांचे पुत्रोनी साथे त्यांथी निर्भय स्थानमां जतो रह्यो चोर सेनापति चिलाते धन्य सार्थवाहना घरने खूब इच्छा मुजब लूंटयुं अने लूंटीने तेमांथी घणुं धन, कनक, मणि, मोती वगेरे द्रव्यो तेमज सुसमा दारिकाने लई लीधी. लईने ते राजगृह

मूलम्–तएणं से धन्ने सत्थवाहे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुबहुं धणकणगं सुंसुमं च दारियं अवहरियं जाणित्ता, महत्थं महग्घं महरिहं पाहुडं गहाय जेणेव णगरगुत्तिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, तं महत्थं महग्घं महरिहं पाहुडं जाव उवणेंति, उवणित्ता, एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! चिलाए चोरसेणावई सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इहं हव्वमागम्म पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं ममगिहं घाएत्ता धणकणगं सुंसुमं च दारियं गहाय जाव पडिगए। तं इच्छामो णं देवाणुप्पिया ! सुंसुमा दारियाए कूवं गमित्तए, तुब्भं णं देवाणुप्पिया! से विउले धणकणगे, ममं सुंसुमा दारिया। तएणं ते णगरगुत्तिया धण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता संनद्ध जाव गहियाउहपहरणा महया२ उक्किट्ठ० जाव समुद्दरवभूयं पिव करेमाणा रायगिहाओ णिग्गच्छंति, णिग्गच्छित्ता, जेणेव चिलाए चोरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता, चिलाएणं चोरसेणावइणा सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था। तएणं ते णगरगुत्तिया चिलायं चोरसेणावइं हयमहिय जाव पडिसेहेंति। तएणं ते पंच चोरसया णयरगोत्तिएहिं हयमहिय जाव पडिसेहिया समाणा तं विउलं धणकणगं विच्छड्डेमाणा य विप्पकिरेमाणा य सव्वओ

वापिस निकला–और निकल करके जहां सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली थी–उस ओर चलने के लिये उद्यत हो गया॥ सू०६॥

નગરમાંથી પાછો બહાર આવ્યો અને આવીને જ્યાં સિંહગુહા નામે ચોરપલ્લી હતી તે તરફ રવાના થવા તૈયાર થઈ ગયો. ॥ સૂત્ર ૬ ॥

समंता विप्पलाइत्था । तएणं ते णगरगुत्तिया ते विउलं धणकणगं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव रायगिहे तेणेव उवागच्छंति । तएणं से चिलाए तं चोरसेणं तेहिं णयरगुत्तिएहिं हयमहिय जाव भीए तत्थे सुंसुमं दारियं गहाय एगं महं अग्गामियं दीहमद्धं अडविं अणुप्पविट्ठे । तएणं धण्णे सत्थवाहे सुंसुमं दारियं चिलाएणं अडवीमुहं अवहीरमाणिं पासित्ताणं पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे सन्नद्धबद्ध० चिलायस्स पदमग्गवीहिं अणुगच्छमाणे अभिगज्जंते हक्कारेमाणे पुक्कारेमाणे अभितज्जेमाणे अभितासेमाणे पिट्ठओ अणुगच्छइ । तएणं से चिलाए तं धण्णं सत्थवाहं पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठं सन्नद्धबद्ध० समणुगच्छमाणं पासइ, पासित्ता अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे जाहे णो संचाएइ सुंसुमं दारियं णिव्वाहित्तए, ताहे संते तंते परितंते नीलुप्पल० असिं परामुसइ, परामुसित्ता सुंसुमाए दारियाए उत्तमंगं छिंदइ, छिंदित्ता, तं गहाय तं अग्गामियं अडविं अणुप्पविट्ठे। तएणं से चिलाए तीसे अगामियाए अडवीए तण्हाए अभिभूए समाणे पम्हुट्ठ दिसाभाए, सीहगुहं चोरपल्लिं असंपत्ते अंतरा चेव कालगए ।

एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स जाव विद्धंसणधम्मस्स वण्णहेउं जाव आहारं आहारेइ, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं४ हिलणिज्जे ३ जाव अणुपरियट्टिस्सइ, जहा व से चिलाए तक्करे ॥ सू० ७ ॥

टीका—' तएणं से ' इत्यादि । ततः खलु स धन्यः सार्थवाहो यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य सुबहुं धनकनकं सुंसुमां च दारिकाम् अपहृतां ज्ञात्वा ' महत्थं महग्घं महरिहं ' महार्थं महार्घं महार्हम्=महानर्थः प्रयोजनं यस्मिन् तत्=महार्थं=महाप्रयोजनकम् , बहुमूल्यं पुनः महतां योग्यम् ' पाहुडं ' प्राभृतं= उपायनं गृहीत्वा यत्रैव ' णगरगुत्तिया ' नगरगोप्तृकाः=नगररक्षकाः कोट्टपाला-दयः तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य तत् महार्थं यावत्=महार्घं महार्हं प्राभृतम् ' उवणेइ ' उपनयति=समर्पयति, उपनीय=समर्प्य एवमवदत्-एवं खलु हे देवानु-

---

' तएणं से धन्ने सत्थवाहे' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से धन्ने सत्थवाहे) वह धन्य सार्थवाह (जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छइ) जहां अपना घर था वहां आया (उवागच्छित्ता सुबहुं धणकणगं सुंसमं च दारियं अवहरियं जाणित्ता महत्थं महग्घं महरियं पाहुडं गहाय जेणेव नगर गुत्तिया तेणेव उवागच्छइ) वहां आकरके उसने अपने घरमें से बहुत सा धन कनक एवं सुंसमा दारिका को हरण किया हुआ जब जाना तब वह महार्थ बहुमूल्य एवं महापुरुषों के योग्य भेंट लेकर जहां नगर रक्षक –कोट्टपाल–आदि थे वहां गया–(उवागच्छित्ता तं महत्थं महग्घं महरिहं पाहुडं जाव उवणेंति, उवणित्ता एवं वयासी) वहां जाकर उसने उस महाप्रयोजन साधक भूत बहुमूल्य तथा महापुरुषों के योग्य भेंट को उनके समक्ष रखदिया–और रखकर उनसे उसने इस प्रकार कहा–(एवं

' तएणं से धन्ने सत्थवाहे ' इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्यारपछी (से धन्ने सत्थवाहे) ते धन्य सार्थवाह (जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छइ) ज्यां पोतानुं घर हतुं त्यां आव्यो. (उवागच्छित्ता सुबहु धणकणगं सुंसमं च दारियं अवहरियं जाणित्ता महत्थं महग्घं महरियं पाहुडं गहाय जेणेव नगर गुत्तिया तेणेव उवागच्छइ)

त्यां आवीने तेणे पोताना घरमांथी पुष्कळ प्रमाणमां धन, कनक अने सुंसमा दारिकानु हरण करवामां आवेलु जाणीने ते महार्थ, बहु किंमती अने महापुरुषोने योग्य भेट लईने ज्यां नगर–रक्षक–कोट्टपाळ–वगेरे हता त्यां गयो. (उवागच्छित्ता तं महत्थं महग्घं महरिहं पाहुडं जाव उवणेंति, उवणित्ता एवं वयासी) त्यां जईने तेणे ते महाप्रयोजन साधकभूत बहु किंमती तेमज महा पुरुषोने योग्य भेटने तेमनी सामे मूकी दीधी अने मूकीने तेमने तेणे आ प्रमाणे विनंती करतां कह्यु के—

प्रियाः ' चिलातचोरसेनापतिः सिंहगुहायाश्चोरपल्ल्याः इह हव्यमागत्य पञ्चभिश्चोर-शतैः सार्धम् मम गृहं ' घाएत्ता ' घातयित्वा=लुण्ठयित्वा सुबहु धनकनकं सुंसुमां च दारिकां गृहीत्वा ' जाव पडिगए ' यावत् प्रतिगतः=पञ्चभिश्चोरशतैः सार्धं सिंहगुहां चोरपल्लीं प्रतिनिवृत्त इत्यर्थः, ' तं ' तत्=तस्मात् कारणात् इच्छामः खलु हे देवानुप्रियाः ! ' सुंसुमा दारियाए सुंसुमा दारिकाया ' कूवं ' प्रत्यान-यनं ' गमित्तए ' गन्तुम् । ' तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! ' युष्माकं खलु हे देवानु-प्रिया ! तत्=अपहृतं विपुलं धनकनकम्=हे देवानुप्रियाः ! चोराऽपहृतं धनकना-दिकं सर्वं युष्माकं भवतु, मम सुंसुमा दारिका भवतु । ततः खलु ते नगरगोप्तृकाः

खलु देवाणुप्पिया ! चिलाए चोरसेणावई सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इहं हव्वमागम्म पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं मम गिहं घाएत्ता, सुबहुं धण-कणगं सुंसमं च दारियं गहाय जाव पडिगए-तं इच्छामो णं देवाणु-प्पिया ! सुंसमा दारियाए कूवं गमित्तए-तुब्भं णं देवाणुप्पिया ! से विउले धणकणगे ममं सुंसमा दारिया) हे देवानुप्रियों सुनो चोर सेनापति चिलात चोर ने सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली से यहां शीघ्र आकर पांचसौ चोरों के साथ मेरे घर पर डांका डाला है। उसमें उसने बहुत सा धन, कनक एवं सुंसमा दारिका को लूटा है और-लूटकर वह वहां वापिस अपने स्थान पर चला गया है। अतः हे देवानुप्रियों ! मैं चाहता हूँ कि आप लोग उस सुंसमा दारिका को लेने के लिये जावें, मिलने पर वह सब धनकनक आदि सब आपका रहे-और सुंसमा दारिका मेरी

(एवं खलु देवाणुप्पिया ! चिलाए चोरसेणावई सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इहं हव्वमागम्म पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं मम गिहं घाएत्ता, सुबहुं धणकणगं सुंसमं च दारियं गहाय जाव पडिगए तं इच्छामो णं देवाणुप्पिया ! सुंसमा दारियाए कूवं गमित्तए-तुब्भं णं देवाणुप्पिया ! से विउले धणकणगे ममं सुंसमा दारिया)

હે દેવાનુપ્રિયો ! સાંભળો, ચોર સેનાપતિ ચિલાત ચોરે સિંહગુહા નામની ચોરપલ્લીથી એકદમ અહીં આવીને પાંચસો ચોરોની સાથે મારા ઘરમાં ધાડ પાડી છે તેમાં તેણે ઘણું ધન, કનક અને સુંસમા દારિકાની લૂંટ કરી છે. લૂંટ કરીને તે પાછો પોતાના સ્થાને જતો રહ્યો છે એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! મારી ઇચ્છા છે કે તમે સુસમા દારિકાને પાછી લેવા માટે જાઓ અને તેને મેળવી લીધા બાદ તે આપહૃત કરાયેલું ધન કનક વગેરે બધું તમે ગણજો અને સુસમા દારિકાને મને સોંપી દેજો

पुरुषाः धन्यस्य एतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य ' सन्नद्ध जाव गहियाउहपहरणा ' सन्नद्ध यावत् गृहीतायुधप्रहणाः=सन्नद्धबद्धवर्मितकवचा यावद् गृहीतायुधप्रहरणा इत्यस्य व्याख्या पूर्ववद् बोध्या, ' महया २ उक्किट्ठ जाव समुद्दरवभूयंपिव ' महा महोत्कृष्ट यावत् समुद्ररवभूतमिव, वेलावृद्धिसमये समुद्रध्वनिमिव महाध्वनिं ' करेमाणा ' कुर्वन्तो राजगृहात् निर्गच्छन्ति, निर्गत्य

रहे। (तएणं ते णगरगुत्तिया धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता सन्नद्ध जाव गहियाउहपहरणा महया २ उक्किट्ठ० जाव समुद्दरवभूयं पिवकरेमाणा रायगिहाओ णिग्गच्छंति णिगच्छित्ता जेणेव चिलाए चोरे-तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता चिलाएण चोरसेणाव-इणा सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था तएणं ते णगरगुत्तिया चिलायं चोरसे-णावइं हयमहिय जाव पडिसेहेंति, तएणं ते पंच चोरसया णयरगोत्ति-एहिं हयमहिय जाव पडिसेहिया समाणा तं विउलं धणकणगं विच्छ-ड्डेमाणा य विप्पकिरेमाणा य सव्वओ समंता विप्पलाइत्था) धन्य सार्थवाह की इस बात को सुनकर उन नगर रक्षकों ने स्वीकार कर लिया। और स्वीकार करके उसी समय उन्हों ने अपने २ शरीरपर कवच को सज्जित करके कशाबंधन से बांध लिया यावत् आयुध और प्रहरणों को ले लिया-। वेलावृद्धि के समय में जिस प्रकार समुद्र की ध्वनि होती है-उसी प्रकार की महाध्वनि करते हुए फिर वे राजगृह नगर

(तएणं ते णगरगुत्तिया धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडि-सुणित्ता सन्नद्ध जाव गहियाउहपरणा महया २ उक्किट्ठ० जाव समुद्दरवभूयं पिवकरेमाणा रायगिहाओ णिग्गच्छंति, णिगच्छित्ता जेणेव चिलाए चोरे-तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता चिलाएणं चोरसेणावइणा सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था-तएणं ते णगरगुत्तिया चिलायं चोरसेणावइं हयमहिय जाव पडिसेहेंति, तएणं ते पंच चोरसया णयरगोत्तिएहिं हयमहिय जाव पडिसेहिया समाणा तं विउलं धणकणगं विच्छड्डेमाणा य विप्पकिरेमाणा य सव्वओ समंता विप्पलाइत्था)

ધન્ય સાર્થવાહની તે વાતને સાંભળીને નગર રક્ષકોએ તેને સ્વીકારી લીધી અને સ્વીકારીને તેમણે તરત જ પોતપોતાના શરીરો ઉપર કવચો પહે-રીને કશા બંધનોથી બાંધ્યાં યાવત્ આયુધ અને પ્રહરણોને સાથે લઇ લીધાં. ભરતીના સમયે જેવો સમુદ્રનો ધ્વનિ હોય છે તેવો જ મહાધ્વનિ કરતાં તેઓ રાજગૃહ નગરમાંથી બહાર નીકળ્યા અને નીકળીને જ્યાં ચોર સેનાપતિ તે

यत्रैव चिलातश्चोरः, तत्रैव उपागच्छन्ति, उपागत्य चिलातेन चोरसेनापतिना सार्धं 'संपलग्गा' संप्रलग्नाः=युद्धं कर्तुं प्रवृत्ताश्चापि अभवन्। ततः खलु नगरगोप्तृकाः चिलातं चोरसेनापतिं 'हयमहिय० जाव' हतमथित यावत्=हतमथित प्रवरवीरघातितनिपतितचिह्नध्वजपताकं=हता=मारिताः, मथिताः=निश्शेषतां प्रापिताः, प्रवरवीरा=श्रेष्ठवीरा यस्यासौ हतमथितप्रवरवीरः, घातितः=घातः शस्त्रादिप्रहारेण क्षतिः, स संजातोऽस्य घातितः क्षत इत्यर्थः, निपतिता=भूमौ पतिता चिह्नध्वज पताकाः यस्याऽसौ, निपतितचिह्नध्वजपताकः, एतेषां कर्मधारयः, तम्, यावत् प्रतिषेधयन्ति=निवारयन्ति। ततः खलु ते 'पंचचोरसया' पञ्चशतचौरा 'णगरगोत्तिएहिं' नगरगोप्तृकैः=नगररक्षकैः पुरुषैः 'हयमहिय जाव पडिसेहिया' हतमथितयावत्प्रतिषेधिताः=प्रतिषेधिताः सन्तः तत् विपुलं धनकनक=धनकनकमणिमौक्तिकादिकं 'विच्छड्डेमाणा' विच्छर्दयन्त=प्रक्षिपन्तः 'विप्पकिरेमाणा य' विप्रकिरन्तश्च=इतस्ततो विकिरणं कुर्वन्तः 'सव्वओ समंता' सर्वतः समन्तात्=चतुर्दिक्षु 'विप्पलाइत्था' विप्लायन्तः=पलायिताः ततः खलु ते

से बाहर निकले-और निकलकर जहां चोर सेनापति वह चिलात चोर था वहां गये-वहां पहुँचते ही उनका चोर सेनापति उस चिलात चोर के साथ युद्ध होना प्रारंभ हो गया-उस युद्ध में उन्हों ने उस चिलात के सैन्य को पहिले खूब मारा-पीटा-बाद में उन्हें बिलकुल नष्ट भ्रष्ट कर दिया। कितनेक चोरों को उन्हों ने क्षत किया। उसकी चिह्न ध्वजपताकाओं को जमीन पर डाल दिया। इस प्रकार उसे हरतरह परास्त कर दिया। जब वे पांचसौ चोर नगररक्षक पुरुषों द्वारा हर प्रकार से हतमथित यावत् प्रतिषेधित हो चुके तब वे उस विपुल धनकनक मणिमौक्तिक आदिको छोड़कर तथा इधर उधर डालकर सर्व प्रकारसे चारों दिशाओंमें इधर उधर भाग गये। (तएणं ते णयरगुत्तिया तं विउलं धणकणगं

ચિલાત ચોર હતો ત્યાં ગયા ત્યાં જતાની સાથે જ ચોર સેનાપતિ ચિલાતની સાથે તેમનું યુદ્ધ શરૂ થઈ ગયું. યુદ્ધમા તેમણે પહેલાં તો ચિલાતની સેના સાથે ખૂબ માર-પીટ કરી અને ત્યારપછી તેને નષ્ટ-ભ્રષ્ટ કરી નાખી. કેટલાક ચોરોને તો તેમણે ક્ષત (ઘવાયેલા) કર્યા. તેમની ચિહ્નભૂત ધ્વજા પતાકાઓને જમીનદોસ્ત કરી નાખી આ પ્રમાણે તેને બધી રીતે હરાવી દીધો જ્યારે તે પાંચસો ચોરો નગર રક્ષક પુરુષો વડે સર્વ રીતે હત, મથિત યાવત્ પ્રતિષેધિત થઈ ગયા ત્યારે તેઓ તે પુષ્કળ ધન, કનક, મણી, મોતી વગેરેને ત્યાં જ મૂકીને આમતેમ નાખીને ચારે દિશાઓમાં આમતેમ પલાયન થઈ ગયા.

नगरगोप्तृकाः=नगररक्षकाः=तं विपुलं धनकनक०=धनकनकादिकं गृह्णन्ति, गृहीत्वा, यत्रैव राजगृहं नगरं तत्रैव उपागच्छन्ति। ततः खलु स चिलातः तां चोरसेनां 'हयमहिय जाव' हतमथित यावत्=हतमथितप्रवरवीरघातितनिपतित चिह्नध्वजपताकाम् यावद् दृष्ट्वा भीतस्त्रस्तः सुंसुमां दारिकां गृहीत्वा एकां महतीम् 'अग्गामियं' अग्रामिकाम्=ग्रामरहिताम् 'दीहमद्ध' दीर्घाध्वां=दीर्घमार्गाम् 'अडविं' अटवीम्-अनुप्रविष्टः। ततः खलु धन्यः सार्थवाहः सुंसुमां दारिकां चिलातेन 'अडवीमुहं' अटवीमुखम्=अरण्यसम्मुखम् 'अवहीरमाणिं' अपह्रियमाणाम्-नीयमानां 'पासित्ता' दृष्ट्वा पञ्चभिः पुत्रैः सार्द्धम् 'अप्पछट्ठे' आत्मषष्ठः 'संनद्धबद्ध०' सन्नद्धबद्धवर्मितकवचः चिलातस्य 'पदमग्गवीहिं' पद-

---

गेण्हंति, गेण्हित्ता, जेणेव रायगिहे तेणेव उवागच्छंति। तएणं से चिलाए तं चोरसेणं तेहिं णयरगुत्तिएहिं हयमहिय जाव भीए तत्थे सुंसमं दारियं गहाय एगं महं अग्गामियं दीहमद्धं अडविं अणुप्पविट्ठे) उन नगर रक्षकों ने उस विपुल धन कनक आदिको ले लिया और लेकर राजगृह नगर में वापिस आ गये। इस के बाद वह चिलात चोर अपनी उस सेना को नगर रक्षकों द्वारा हत मथित प्रबल वीरघाती एवं घातित तथा निपतित चिन्ह ध्वज पताका वाली देखकर त्रस्त हो गया और सुंसमादारिका को लेकर एक बड़ी भारी ग्रामरहित अटवी में घुस गया (तएणं धण्णे सत्थवाहे सुंसमं दारियं चिलाएणं अडवीमुहं अवहिरमाणिं पासित्ता णं पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे सन्नद्धबद्ध चिलायस्स पदमग्गवीहिं अणुगच्छमाणे अभिगज्जंते हक्कारेमाणे अभितज्जेमाणे

(तएणं ते णयर गुत्तिया तं विउलं धणकणगं गेण्हंति, गेण्हित्ता, जेणेव रायगिहे तेणेव उवागच्छंति। तएणं से चिलाए तं चोरसेणं तेहिं णयरगुत्तिएहिं हयमहिय जाव भीए तत्थे सुंसमं दारियं गहाय एगं महं अग्गामियं दीहमद्धं अडविं अणुप्पविट्ठे)

તે નગર રક્ષકોએ તે પુષ્કળ પ્રમાણમાં પડેલાં ધન, કનક વગેરેને લઇ લીધુ અને લઈને રાજગૃહ નગરમાં પાછા આવી ગયા. ત્યારપછી તે ચિલાત ચોરે પોતાની તે ચોર સેનાને નગર રક્ષકો વડે હત, મથિત તેમજ ઘાતિત અને નિપતિત ચિહ્નધ્વજ પતાકાઓવાળી જોઇને ત્રસ્ત થઈ ગયો અને સુંસમા દારિકાને લઇને એક ભારે મોટી ગ્રામરહિત અટવીમાં પેસી ગયો.

(તएणं धण्णे सत्थवाहे सुंसमं दारियं चिलाएणं अडवीमुहं अवहीरमाणिं पासित्ता णं पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे सन्नद्धबद्धचिलायस्स पदमग्गवीहिं अणुगच्छमाणे अभिगज्जंते हक्कारेमाणे पुक्कारेमाणे अभितज्जेमाणे अभिहासे-

मार्गविधिं=पदमार्गप्रचारम्=चरणचिह्नम् 'अणुगच्छमाणे' अनुगच्छन्=पृष्ठतो धावन् 'अणुगज्जेमाणे' अनुगर्जन्=मेघवद्गर्जनां कुर्वन् 'हक्कारेमाणे' 'हंभो' दुष्ट ! तिष्ठ-तिष्ठ' इत्यादि, वाक्यैः हक्कारयन्=आकारयन् 'पुक्कारेमाणे' पूत्कारयन् 'तिष्ठ २, नोचेत्त्वां हनिष्यामीत्यादिवाक्यैः तमाह्वयन् 'अभितज्जेमाणे' अभितर्जन्='रे निर्लज्ज' इत्यादि वाक्यैस्तर्जनां कुर्वन्, 'अभितासेमाणे' अभित्रासयन्=अस्त्रशस्त्रादिदर्शनेन त्रासमुत्पादयन् 'पिट्ठओ' पृष्ठतः=चिलातचोरस्य पृष्ठदेशतः अनुगच्छति=पश्चाद्धावति। ततः खलु स चिलातः तं धन्यं सार्थवाहं पञ्चभिः पुत्रैः सार्द्धम् 'अप्पछट्ठं' आत्मषष्ठं 'सन्नद्धबद्धवर्मितकवचं यावत् समनुगच्छन्तं=पश्चाद्धावन्तं पश्यति, दृष्ट्वा 'अत्थामे ४' अस्थामा=आत्मबलरहितः, अबलः=सैन्यरहितः, अवीर्यः = उत्साहरहितः, अपुरुषकारपराक्रमः सन्

अभितासेमाणे पिट्ठओ अणुगच्छइ) धन्यसार्थवाह ने जब सुंसमा दारिका को चिलात चोर द्वारा अटवी के मध्य में हरणकर ले जाई गई जब जाना-तब वह अपने पांचों पुत्रों के साथ आत्मषष्ठ होकर कवच बांध उस चिलात के पीछे २ पद चिह्नों का अनुसरण करता हुआ, मेघ के जैसी गर्जना करता हुआ, अरे ओ दुष्ट! ठहर ठहर इस प्रकार से कहता हुआ, पुकार करता हुआ ठहर जा ठहर जा-नहीं तो मैं तुझे मार डालूंगा इस प्रकार के वाक्यों से उसे बुलाता हुआ रे निर्लज्ज! इस प्रकार से उसे तर्जित करता हुआ, तथा अस्त्र शस्त्र आदि के दिखाने से उसे त्रास उत्पन्न करता हुआ चला।

(तएणं से चिलाए तं धण्णं सत्थवाहं पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठं अन्नद्धबद्ध० समणुगच्छमाणं पासइ, पासित्ता अत्थामे अबले

माणे पिट्ठओ अणुगच्छइ)

ત્યારે ધન્ય સાર્થવાહે સુંસમા દારિકાને ચિલાત ચોર વડે અટવીમાં હરણ કરીને લઈ જવાયેલી જાણી, ત્યારે તે પોતાના પાંચે પુત્રોની સાથે આત્મષષ્ઠ થઈને કવચ બાંધીને તે ચિલાત ચોરની પાછળ તેના પદ ચિહ્નોનું અનુસરણ કરતો મેઘના જેવી ધ્વનિ કરતો "અરે ઓ દુષ્ટ! ઊભોરે, ઊભોરે," આ પ્રમાણે કહેતો "ઊભોરે, ઊભોરે, નહિતર મરી ગયેલો જાણજે" આ પ્રમાણે હાકલ કરતો, તેને બોલાવતો 'અરે નિર્લજ્જ!' આમ તર્જિત કરતો તેમજ શસ્ત્ર અસ્ત્ર વગેરેને બતાવીને તેને ત્રાસિત કરતો ચાલ્યો.

(तएणं से चिलाए तं धण्णं सत्थवाहं पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठं सन्नद्ध बद्ध० समणुगच्छमाणं पासइ, पासित्ता अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कार

पुरुषकारः=पौरुषम् , पराक्रमः=सामर्थ्यं, तद्रहितः सन् ' जाहे ' यदा नो शक्नोति सुंसुमां दारिकां ' णिव्वाहित्तए ' निर्वाहयितुं=वोढुम् , ' ताहे ' तदा ' संते ' श्रान्तः=परिश्रमं गतः, ' तंते ' तान्तः=ग्लानिं प्राप्तः, ' परितंते ' परितान्तः= सर्वतोभावेन खिन्नतामुपगतः, ' नीलुप्पल० ' नीलोत्पल०=नीलोत्पलगवलगुलि- कादि विशेषणविशिष्टमतितीक्ष्णम् ' असिं ' करवालं ' परामुसइ ' परामृशति= कोशान्निःसारयति, परामृश्य, सुंसुमाया दारिकायाः ' उत्तमंगं ' उत्तमाङ्गं=शिरः

अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे जाहे णो संचाएइ सुंसमं दारियं णिव्वा हित्तए, ताहे संते तंते परितंते निलुप्पल० असिं परामुसइ, परामुसित्ता सुसमाए दारियाए उत्तमंगं छिंदइ, छिंदित्ता, तं गहाय तं अग्गामियं अडविं अणुपविट्ठे, तएणं से, चिलाए तीसे आग्गामियाए अडवीए तण्हाए अभिभूए समाणे पम्हुट्ठदिसाभाए सीहं गुहं चोरपल्लिं असं- पत्ते अंतराचेव कालगए) जब चिलात चोर ने उस धन्यसार्थवाह को पांचो पुत्रों के साथ आत्मषष्ठ होकर एवं कवच आदि से सुसज्जित होकर अपने पीछे २ आता हुआ देखा-तब वह देख कर आत्मबल रहित हो गया। इस तरह सैन्य रहित, उत्साह रहित तथा पौरुष और पराक्रम रहित बना हुआ वह जब सुंसमा दारिका को अपने पास रखने के लिये शक्तिशाली नहीं हो सका तब उसने श्रान्त, तान्त-ग्लानि युक्त और परितांत सर्वतोभावेन खिन्नता को प्राप्त होकर नीलोत्पल, गवलगुलिका, आदि विशेषणों वाली अपनी तलवार को उठाया-म्यान

परक्कमे जाहे णो संचाएइ सुंसमं दारियं णिव्वाहित्तए, ताहे संते तंते परितंते नीलुप्पल० असिं परामुसइ, परामुसित्ता सुंसमाए दारियाए उत्तमंगं छिंदइ, छिंदित्ता, तं गहाय तं अग्गामियं अडविं अणुपविट्ठे, तएणं से, चिलाए तीसे आग्गामियाए अडवीए तण्हाए अभिभूए समाणे पम्हुट्ठदिसाभाए सीहगुहं चोरपल्लिं असंपत्ते अंतरा चेव कालगए)

જ્યારે ચિલાત ચોરે તે ધન્ય સાર્થવાહને પાંચે પુત્રોની સાથે આત્મષષ્ઠ થઈને તેમજ કવચ વગેરેથી સુસજ્જિત થઈને પોતાની પાછળ પાછળ આવતો જોયો ત્યારે તે જોઈને આત્મબળ વગરનો થઈ ગયો. આ પ્રમાણે સેના રહિત ઉત્સાહ રહિત તેમજ પૌરુષ અને પરાક્રમ રહિત થઈ ગયેલો તે જ્યારે સુસમા દારિકાને પોતાની પાસે રાખવામાં પણ અસમર્થ થઈ ગયો ત્યારે તેણે શ્રાંત, તાંત, ગ્લાનિ યુક્ત અને પરિતાંત તેમજ બધી રીતે ખિન્નતા પ્રાપ્ત કરીને નીલોત્પલ, ગવલ ગુલિકા વગેરે વિશેષણોવાળી પોતાની તરવારને ઉપાડી અને મ્યાનમાંથી બહાર કાઢી અને બહાર કાઢીને સુસમા દારિકાનું માથું કાપી

छिनत्ति, छित्त्वा, 'तं' तत्=उत्तमाङ्गं गृहीत्वा ताम् अग्रामिकाम्=जनावासरहिताम् अटवीमनुप्रविष्टः=प्रवेशं कृतवान्। ततः खलु चिलातः तस्यामग्रामिकायामटव्यां 'तण्हाए' तृष्णया=पिपासया अभिभूतः सन् 'विम्हुदिसाभाए' विस्मृतदिग्भागः=पूर्वादिदिग्विवेकविकलः सन् सिंहगुहां चोरपल्लीम् 'असंपत्ते' असम्प्राप्तः 'अंतरा चेव' अन्तरा एव=मध्य एव 'कालंगए' कालंगतः=असौ चोरो मृत्युं प्राप्तवान्। अस्य शेषचरितं ग्रन्थान्तरादवसेयम्, शास्त्रेतु-उपयोगि चरितं तावन्मात्रं भगवतोपदिष्टम्।

अथ चिलातदृष्टान्तेन भगवान् निर्ग्रन्थादीन् संबोध्य प्रतिबोधयति —'एवामेव' एवमेव=अनेन प्रकारेणैव 'समणाउसो' आयुष्मन्तः श्रमणाः! 'जाव पव्वइए समाणे' यावत् प्रव्रजितः सन्=योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा आचार्योपाध्यायानां समीपे प्रव्रजितः सन् 'इमस्स' अस्य 'ओरालियसरीरस्स' औदारिकशरीरस्य वान्तास्रवस्य यावद् विध्वंसनधर्मस्य 'वण्णहेउं' वर्णहेतुं = कान्तिविशेषप्राप्त्यर्थम्, यावत्-'रूवहेउं' रूपहेतुं=सौन्दर्याद्यर्थम्, 'बलहेउं'

से बाहर किया और उठाकर सुंसमा दारिका के मस्तक को काट डाला। उस कटे हुए मस्तक को लेकर फिर निर्जन अटवी में प्रवेश कर गया। उस अटवी में पिपासा से व्याकुल होकर वह पूर्वादि दिशाओं के विवेक से रहित हो गया-इस तरह वह पुनः वहां से पीछे वापिस अपनी सिंहगुहा नामकी चोर पल्ली में नहीं आ सका-और बीच ही में काल कवलित बन गया। इसका अवशिष्ट चरित्र ग्रंथान्तर से जान लेना चाहिये। यहां तो भगवान् ने जितना चरित्र इसका उपयोगी जाना उतनाही उपदिष्ट किया है!-(एवामेव समणाउसो! जाव पव्वइए समाणे इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स जाव विद्धंसणधम्मस्स वण्णहेउ जाव आहार आहारेइ, से णं इहलोए चेव बहूणं सम-

નાખ્યું. તે કપાએલા માથાને લઈને તે નિર્જન-ભયંકર અટવીમાં પેસી ગયો. અટવીમાં તે તરસથી વ્યાકુળ થઈને પૂર્વ વગેરે દિશાઓના વિવેકથી રહિત થઈ ગયો અને આ પ્રમાણે તે ફરી ત્યાંથી તે પોતાની સિંહગુફા નામની ચોરપલ્લીમાં કોઈ પણ રીતે પાછો આવી શક્યો નહિ અને વચ્ચે જ મૃત્યુ પામ્યો. તેનું બાકીનું ચરિત્ર બીજા ગ્રંથમાંથી જાણી લેવું જોઈએ, અહીં તો ભગવાને જેટલું ચરિત્ર તેનું ઉપયુક્ત જાણ્યું તેટલું કહ્યું છે.

(एवामेव समणाउसो! जाव पव्वइए समाणे इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स जाव विद्धंसणधम्मस्स वण्णहेउ जाव आहारं आहारेइ सेणं इहलोए

बलहेतुं=शरीरबलवर्धनार्थम्, 'वीरियहेउं' वीर्यहेतुम्=आन्तरिकशक्तिसम्पादनार्थम्, आहारम् आहारयति, स खलु इह लोके एव बहूनां श्रमणानां श्रमणीनां श्रावकाणां श्राविकाणां च 'हीलणिज्जे जाव' हीलनीयो यावत्, यावत्पदेन, निन्दनीयः, खिंसनीयः गर्हणीयो भवेत्, परलोकेऽपि दुःखं प्राप्नोति, यावत्-चातुरन्तसंसारकान्तारम् 'अणुपरियट्टिस्सइ' अनुपर्यटिष्यति=भ्रमिष्यति, यथा स चिलातस्तस्करः-चिलाततस्करवदिति भावः ॥सू०७॥

मूलम्-तएणं से धण्णे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे चिलायं परिधाडेमाणे२ तण्हाए छुहाए य संते तंते परितंते

णाणं ४ हीलणिज्जे ३ जाव अणुपरियट्टिस्सइ जहाव से चिलाए तक्करे) अब प्रभु इस चिलात के दृष्टान्त से निर्ग्रन्थ आदिकों को संबोधित कर प्रतिबोधित करते हैं-हे आयुष्मंत श्रमणों! इसी तरह जो हमारा निर्ग्रन्थ श्रमण अथवा श्रमणीजन आचार्य उपाध्याय के पास प्रव्रजित होकर वान्तास्रववाले यावत् विध्वंसन धर्मवाले इस औदारिक शरीर में कान्ति विशेष प्राप्ति के लिये सौन्दर्य आदिरूप विशेष के लिये, बलवर्धन के लिये तथा आन्तरिक शक्ति वृद्धिके लिये आहार को लेना है-करता है - वह इस लोक में अनेक श्रमण श्रमणी, श्रावक तथा श्राविका जनों द्वारा हीलनीय यावत् निंदनीय, खिंसनीय गर्हणीय तो होता ही है-परन्तु पर भवमें भी वह दुःखों कोही पाता है। यावत् ऐसा जीव इस चतुर्गतिरूप संसार कान्तार में चिलात चोर की तरह परिभ्रमण ही करता रहता है॥ सूत्र ७॥

चेव बहूणं समणाणं४ हीलणिज्जे २ जाव अणुपरियट्टिस्सइ, जहाव से चिलाए तक्करे)

હવે પ્રભુ તે ચિલાતના દૃષ્ટાન્તને સામે રાખીને નિર્ગ્રંથ વગેરેને સંબોધિત કરીને આજ્ઞા કરે છે કે હે આયુષ્મંત શ્રમણો! આ પ્રમાણે જે અમારા નિર્ગ્રંથ શ્રમણ અથવા શ્રમણીજન આચાર્ય કે ઉપાધ્યાયની પાસે પ્રવ્રજિત થઈને વાન્તાસ્રવવાળા યાવત વિધ્વંસન ધર્મવાળા આ ઔદારિક શરીરમા કાંતિ વિશેષની પ્રાપ્તિ માટે, સૌંદર્ય વગેરે રૂપ વિશેષના માટે, બળવર્ધન માટે તેમજ આંતરિક શક્તિને વધારવા માટે આહાર ગ્રહણ કરે છે. તે આ લોકમાં ઘણા શ્રમણ, શ્રમણી, શ્રાવક તેમજ શ્રાવિકાઓ વડે હીલનીય યાવત્ નિંદનીય, ખિંસનીય અને ગર્હણીય તો હોય જ છે પણ સાથે સાથે તે પરભવમાં પણ દુઃખ જ મેળવે છે .યાવત એવો જીવ આ ચતુર્ગતિ રૂપ સંસાર કાંતારમાં ચિલાત ચોરની જેમ ભટકતો જ રહે છે. ॥ સૂત્ર ७ ॥

नो संचाएइ चिलायं चोरसेणावइं साहत्थि गिण्हित्तए। से णं तओ पडिनियत्तइ, पडिनियत्तित्ता जेणेव सा सुंसुमा दारिया चिलाएणं जीवियाओ ववरोविया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, सुंसुमं दारियं चिलाएणं जीवियाओ ववरोवियं पासइ, पासित्ता परसुनियत्तेव चंपगवरपायवे धसत्ति धरणियलंसि निवडइ। तएणं से धण्णे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे आसत्थे कूयमाणे कंदमाणे विलवमाणे महया२ सद्देणं कुहू२ सुपरुन्ने सुचिरं कालं वाहमोक्खं करेइ। तएणं से धण्णे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे चिलायं तीसे अग्गामियाए अडवीए सव्वओ समंता परिधाडेमाणे तण्हाए छुहाए य परिभूए समाणे तीसे अग्गामियाए अडवीए सव्वओ समंता उदगस्स मग्गणगवेसणं करेइ, करित्ता संते तंते परितंते, णिव्विन्ने, तीसे अग्गामियाए अडवीए उदगस्स मग्गणगवेसणं करेमाणे नो चेव णं उदगं आसादेइ। तएणं से धण्णे सत्थवाहे अप्पछट्ठे उदगं अणासाएमाणे जेणेव सुंसुमा जीवियाओ ववरोविया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जेट्ठं पुत्तं धणदत्तं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–एवं खलु पुत्ता! अम्हे सुंसुमाए दारियाए अट्ठाए चिलायं तक्करं सव्वओ समंता परिधाडेमाणा तण्हाए छुहाए य अभिभूया समाणा इमीसे अग्गामियाए अडवीए उदगस्स मग्गणगवेसणं करेमाणा णो चेव णं उदगं आसादेमो, तएणं उदगं, अणासाएमाणा णो संचाएमो रायगिहं संपावित्तए, तएणं

तुम्हे ममं देवाणुप्पिया! जीवियाओ ववरोवेह, मंसं च सोणियं च आहारेइ, आहारित्ता, तेणं आहारेणं अविद्धत्था समाणा तओ पच्छा इमं अग्गामियं अडविं णित्थरिहिह, रायगिहं च संपावेहिह, मित्तणाइ० य अभिसमागच्छिहिह, अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह। तएणं से जेट्ठपुत्ते धण्णेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे धण्णं सत्थवाहं वयासी–तुब्भे णं ताओ! अम्हे पिया गुरुजण य देवभूया ठावगा पइ-ट्ठावगा संरक्खगा संगोवगा तं कहण्णं अम्हे ताओ! तुब्भे जीवि-याओ ववरोवेमो, तुब्भे णं मंसं च सोणियं च आहारेमो? तं तुब्भे णं तातो! ममं जीवियाओ ववरोवेह, मंसं च सोणियं च आहारेह, अग्गामियं अडविं णित्थरह, तं चेव सव्वं भणइ जाव अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भविस्सह। तएणं धण्णं सत्थ-वाहं दोच्चे पुत्ते एवं वयासी–मा णं ताओ! अम्हे जेट्ठं भायरं गुरुदेवयं जीवियाओ ववरोवेमो, तुब्भे णं ताओ! ममं जीवि-याओ ववरोवेह जाव आभागी भविस्सह। एवं पंचमे पुत्ते तएणं से धण्णे सत्थवाहे पंचण्हं पुत्ताणं हियइच्छियं जाणित्ता, तं पच पुत्ते एवं वयासी–मा णं अम्हे पुत्ता! एगमवि जीवियाओ वव-रोवेमो, एसणं सुंसुमाए दारियाए णिप्पाणे णिच्चेट्ठे जाव विप्प-जढे, तं सेयं खलु पुत्ता! अम्हे सुंसुमाए दारियाए मंसं च सोणियं च आहारित्तए। तएणं अम्हे तेणं आहारेणं अविद्ध-त्थासमाणा रायगिहं संपाउणिस्सामो। तएणं तं पंच पुत्ता

धण्णेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा एयमट्ठं पडिसुणेंति। तएणं धण्णे सत्थवाहे पंचहिंपुत्तेहिं सद्धिं अरणिं करेइ, करित्ता, सरगं च करेइ, करित्ता, सरएणं अरणिं महेइ, महित्ता अग्गिं पाडेइ, पाडित्ता, अग्गिं संधुक्खेइ, संधुक्खित्ता दारुयाइं परिक्खेवेइ, परिक्खेवित्ता, अग्गिंपज्जालेइ, पज्जालित्ता, सुंसुमाए दारियाए मंसं च सोणियं च आहारेंति। ते णं आहारेण अविद्धत्था समाणा रायगिहं नयरं संपत्ता मित्तणाइ० अभिसमणागया तस्स य विउलस्स धणकणगरयण जाव आभागी जाया यावि होत्था। तएणं से धण्णे सत्थवाहे सुंसुमाए दारियाए बहूइं लोइयाइं जाव विगयसोए जाए यावि होत्था ॥ सू०८ ॥

टीका—'तएणं से' इत्यादि। ततः खलु स धन्यः सार्थवाहः पञ्चभिः पुत्रैः सह आत्मषष्ठः चिलातं 'परिधाडेमाणे २' परिधावन् २=चिलातं ग्रहीतुकामस्तस्पृष्ठतोऽनुधावन् 'तण्हाए छुहाए य' तृष्णया क्षुधया च 'संते' श्रान्तः,=मनसा खिन्नः, 'तंते' तान्तः=शरीरेण क्लांतः, 'परितंते' परितान्तः=मनसा शरीरेण च

–:तएणं से धण्णे सत्थवाहे। इत्यादि।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे से धण्णे सत्थवाहे) पांचों पुत्रों के साथ छठा बना हुआ वह धन्यसार्थवाह (चिलायं परिधाडेमाणे २) चिलातचोर को पकड़ने की इच्छा से उस के पीछे २ बार बार दौडता हुआ, (तण्हाए छुहाए य संते तंते परितंते नो संचाएइ चिलायं चोरसेणावई साहत्थिं गिण्हित्तए) पिपासा और

'तएण से धण्णे सत्थवाहे' इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्यारपछी (पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे से धण्णे सत्थवाहे) पांचे पुत्रोनी साथे छठ्ठो ते धन्य सार्थवाह (चिलायं परिधाडेमाणे २) चिलात चोरनी पाछळ पाछळ तेने पकडी पाडवा माटे वारंवार दोडतां दोडतां (तण्हाए छुहाए य संते तंते परितंते नो संचाएइ चिलायं चोरसेणावइं साहत्थिं गिण्हित्तए) तरस अने भूखथी श्रांत थई गयो, खिन्न बनी गयो, तांत थई

खिन्नः, ' नो संचाएइ ' नो शक्नोति चिलातं चोरसेनापतिं ' साहत्थि ' स्वहस्तेन ग्रहीतुम् । तदा स खलु ' तओ ' ततः=चिलातग्रहणव्यापारात् , ' पडिनियत्तइ ' प्रति निवर्तते, प्रतिनिवृत्य, यत्रैव सा सुंसुमा दारिका चिलातेन जीविताद् ' ववरोविया ' व्यपरोपिता=पृथक्कृता=मारिता सती पतिता आसीत् तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य सुंसुमां दारिकां चिलातेन जीविताद् व्यपरोपितां पश्यति, दृष्ट्वा ' परसुनियत्तेव ' परशुनिकृत्त इव=परशुच्छिन्नो यथा चम्पकवरपादपस्तद्वत्

क्षुधा से श्रान्त हो गया–खिन्न बन गया, तान्त हो गया–शरीर से मुरझा गया–परितान्त हो गया–इकदम उत्साह रहित बन गया–सो वह उसे अपने हाथ से पकड़ने के लिये शक्तिशाली नहीं हो सका–(सेणं तओ पडिनियत्तइ, पडिनियत्तित्ता जेणेव सा सुंसमा दारिया चिलाएणं जीवियाओ ववरोविया–तेणेव उवागच्छइ) अतः–वह वहां से लौट आया–और लौटकर वहां गया जहां वह अपनी पुत्री सुंसमा चिलातचोर के द्वारा–जीवन से रहित की गई पड़ी थी। (उवागच्छित्ता सुंसमा दारियं चिलाएणं जीवियाओ ववरोवियं पासइ, पासित्ता परसुनियत्तेव चंपगवरपायवे धसत्ति धरणियलंसि निवडइ–तएणं से धण्णे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे आसत्थे कूयमाणे कंदमाणे विलवमाणे महया २ सद्देणं कुहू २ सुपरुन्ने सुचिरं कालंबाहमोक्खं करेइ) वहां जाकर उसने सुंसमा दारिका को चिलातचोर के द्वारा जीवन से रहित की गई देखा। देखते ही वह पुत्रों सहित परशु से काटे गये उत्तम

ગયો–શરીર તેનું ચિમડાઈ ગયું પરિતાંત થઈ ગયો–સાવ નિરૂત્સાહી બની ગયો. એવી હાલતમાં તે પોતાના હાથથી તેને પકડી પાડવામાં સમર્થ થઈ શક્યો નહિ (से णं तओ पडिनियत्तइ, पडिनियत्तित्ता जेणेव सा सुंसमा दारिया चिलाएणं जिवियाओ ववरोविया तेणेव उवागच्छइ) તેથી તે ત્યાંથી પાછો ફરી ગયો. અને પાછો ફરીને તે જ્યાં ચિલાત ચોર વડે હણાયેલી પોતાની પુત્રી સુંસમા દારિકા પડી હતી ત્યાં ગયો.

(उवागच्छित्ता सुंसुमा दारियं चिलाएणं जीवियाओ ववरोवियं पासइ पासित्ता परसुनियत्तेव चंपगवरपायवे धसत्ति धरणियलंसि निवडइ,–तएणं से धण्णे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे आसत्थे कूयमाणे कंदमाणे विलवमाणे महया २ सद्देणं कुहू २ सुपरुन्ने सुचिरं कालं वाहमोक्खं करेइ)

ત્યાં જઈને તેણે સુસમા દારિકાને ચિલાત ચોર વડે હણાયેલી જોઈ. જોતાની સાથે જ તે પુત્રોની સાથે પરશુ વડે કપાએલા ઉત્તમ ચંપક વૃક્ષની

नपुत्रो धन्यः सार्थवाहः ' धसत्ति ' धस ' इति शब्दपूर्वकं धरणीतले निपतति। ततः खलु स धन्यः सार्थवाहः आत्मषष्ठः ' आसत्थे ' आश्वस्त=उच्छ्वासं मुञ्चन् सचेष्टः सन् ' कूवमाणे ' कूजन् = अव्यक्तशब्दं कुर्वं ' कंदमाणे ' क्रन्दन् उच्चस्वरेण, पुनः ' विलवमाणे ' विलपन्=विलापं कुर्वन् ' महया महया सद्देणं ' महतामहता शब्देन=अत्युच्चैः शब्देन ' कुहू २ सुपरुन्ने ' कुहू २ सुपरुदन्-कुहू कुहू इति शब्दमुच्चार्यात्यर्थं रुदितः सन् सुचिरं कालं=बहुकालपर्यन्तं ' बाहमोक्खं ' बाष्पमोक्षम्=अश्रुमोचनं करोति। ततः खलु स धन्यः सार्थवाहः पञ्चभिः पुत्रैः सह आत्मषष्ठः चिलातं तस्यामग्रामिकायाम् अटव्यां सर्वतः समन्तात् ' परिधाडे

चंपक वृक्ष के समान " धस " इस शब्द पूर्वक भूमिपर गिर पड़ा। बाद में पांच अपने पुत्रों के साथ आत्मषष्ट बना हुआ वह धन्यसार्थवाह आश्वस्त, उच्छ्वास छोड़ता हुआ सचेष्ट-हो गया सो अव्यक्त शब्द करता हुआ खूब जोर २ से रोने लगा, विलाप करने लगा। एवं बहुत ऊँचे २ शब्दों से कुहू कुहू करता हुआ-हाय सांसे लेता हुआ-बहुत देरतक रोता रहा-अश्रुमोचन पूर्वक आक्रंदन करता रहा-(तएणं से धण्णे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे चिलायं तीसे अग्गामियाए अडवीए सव्वओ समंता परिधाडेमाणे तण्हाए छुहाए य परिभूए स[illegible] तीसे अग्गामियाए अडवीए सव्वओ समंता उदगस्स मग्गणगवे[illegible] करेइ) इसके बाद पांचो पुत्रों के साथ आत्मषष्ठ बना हुआ वह धन्य[illegible] र्थवाह उस अग्रामवाली अटवी में चिलातचोर के पीछे पीछे बा[illegible] दौड़ता हुआ तृषा और क्षुधा से पीडित होकर उस अग्रामवाली अ[illegible]

જેમ " ધસ " શબ્દની સાથે જમીન ઉપર પડી ગયો. ત્યારપછી પાંચે પુ[illegible] તેમજ છઠ્ઠો તે ધન્યસાર્થવાહ આશ્વસ્ત-ઉચ્છ્વાસ છોડતો-નિસાસા નાખતો સચેષ્ટ થઈ ગયો અને અવ્યકત શબ્દ કરતો ધ્રૂસકે ધ્રૂસકે ખૂબ જોરથી રડવા લાગ્યો, વિલાપ કરવા લાગ્યો અને બહુ મોટા સાદે ' કુહૂ કુહૂ ' કરતો હાય હાય કરીને શ્વાસો લેતો ઘણીવાર સુધી રડતો રહ્યો તેમજ આંસૂ પાડતો આક્રંદ કરતો રહ્યો.

(तएणं से धण्णे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे चिलायं तीसे अग्गामियाए अडवीए सव्वओ समंता परिधाडेमाणे तण्हाए छुहाए य परिभूए समाणे तीसे अग्गामियाए अडवीए सव्वओ समंता उदगस्स मग्गणगवेसणं करेइ)

ત્યારબાદ પાંચે પુત્રોની સાથે છઠ્ઠો તે ધન્યસાર્થવાહ તે ગામ વગરની નિર્જન અટવીમાં ચિલાત ચોરની પાછળ પાછળ વારંવાર દોડતો દોડતો તૃષા

माणे ' परिधावन् तृष्णया क्षुधया च ' परिभूए ' परिभूतः सन् तस्यामग्रामिकायामटव्यां सर्वतः समन्तात्=चतुर्दिक्षु ' उदगस्स ' उदकस्य=जलस्य ' मग्गणगवेसणं ' मार्गणगवेषणम्=अन्वेषणं करोति, कृत्वा श्रान्तः, तान्तः, परितान्तः ' णिव्विन्ने ' निर्विण्णः=औदासीन्यं प्राप्तः । तस्यामग्रामिकायामटव्यामुदकस्य मार्गणगवेषणं कुर्वन् नो चैव खलु उदकम् ' आसादेइ ' आसादयति=प्राप्नोति । ततः खलु स धन्यः सार्थवाह आत्मषष्ठः उदकमनासादयन् पानीयमप्राप्नुवन् यत्रैव सुंसुमा जीविताद् व्यपरोपिता मारिता सती पतिताऽऽसीत् तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य ज्येष्ठं पुत्रं धनदत्तं शब्दयति, शब्दयित्वा, एवमवदत्–एवं खलु

से चारों दिशाओं में जल की मार्गणा और गवेषणा करने लगा (करित्ता संते तंते परितंते णिव्विन्ने तीसे अग्गामियाए अडवीए उदगस्स मग्गणगवेसणं करेमाणे णो चेव णं उदगं आसाएइ) मार्गणा गवेषणा करके वह श्रान्त, मन से खिन्न, तान्तशरीर से खिन्न और परितान्त–बन गया शरीर एवं मन इन दोनों से खिन्न हो गया इस तरह उस अग्रामवाली अटवी में उदकपानी की मार्गणा और गवेषणा करते हुए भी उसे जल नहीं मिला (तएणं से धण्णे सत्थवाहे अप्पछट्ठे उदगं अणासाएमाणे जेणेव सुंसुमा दारिया जीवियाओ ववरोविया–तेणेव उवागच्छइ) तब आत्मषष्ठ बना हुआ वह धन्यसार्थवाह उदक प्राप्त नहीं करता हुआ जहां सुंसुमादारिका का शव पड़ा हुआ–था वहां आया –(उवागच्छित्ता जेट्ठं पुत्तं धणदत्तं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी)

અને ક્ષુધા (તરસ અને ભૂખ) થી પીડાઇને તે ગામ વગરની અટવીમાં ચોમેર પાણીની માર્ગણા અને ગવેષણા કરવા લાગ્યો.

(करित्ता संते तंते परितंते णिव्विन्ने तीसे अग्गामियाए अडवीए उदगस्स मग्गणगवेसणं करेमाणे णो चेव णं उदगं आसाएइ)

માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરીને તે શ્રાંત, મનથી ખિન્ન, તાંત શરીરથી ખિન્ન અને પરિતાંત બની ગયો. શરીર તેમજ મન આ બનેથી તે ખિન્ન થઈ ગયો. આ પ્રમાણે તે ગામ વગરની અટવીમાં ઉદક–પાણી–ની માર્ગણા ગવેષણા કરતાં તેને પાણી મળ્યું નહિ.

(तएणं से धण्णे सत्थवाहे अप्पछट्ठे उदगं अणासाएमाणे जेणेव सुंसुमा दारिया जीवियाओ ववरोविया तेणेव उवागच्छइ)

ત્યારે આત્મષષ્ઠ બનેલો તે ધન્ય સાર્થવાહ પાણી ન મેળવતાં જ્યાં સુસમા દારિકાનું મડદું પડયું હતું ત્યાં આવ્યો. (उवागच्छित्ता जेट्ठं पुत्तं धणदत्तं सद्दावेई सद्दावित्ता एवं वयासी) ત્યાં આવીને તેણે પોતાના મોટા પુત્ર ધનદત્તને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

हे पुत्राः ! एवं सुंसुमाया दारिकायाः 'अट्ठाए' अर्थाय=निमित्तं चिलातं तस्करं प्रति 'सव्वओ समंता' सर्वतः समन्तात्=अटव्यां चतुर्दिक्षु 'परिधाडेमाणा' परिधावन्तः 'तण्हाए' तृष्णया=पिपासया, 'छुहाए' क्षुधया च अभिभूताः सन्तः अस्यामग्रामिकायामटव्यामुदकस्य मार्गणगवेषणं कुर्वन्तो नो चैव खलु उदकमासादयामः, ततः खलु उदकम् अनासादयन्तः=अलभमानाः नो शक्नुमो राजगृहं संप्राप्तुम्, 'तण्णं' तत्खलु=तस्मात् कारणात् खलु यूयं मां हे देवानुप्रियाः ! जीविताद् व्यपरोपयत, मांसं च शोणितं च 'आहारेह' आहारयत, आहार्य=भुक्त्वा 'तेणं आहारेणं' तेन आहारेण 'अविद्धत्था' अविध्वस्ताः=शरीरनाशमप्राप्ताः सन्तः तृप्ताः सन्तः 'तओपच्छा' ततः पश्चात् इमामग्रामिका-

वहां आकर के उसने अपने ज्येष्ठ पुत्र धनदत्त को बुलाया-और बुलाकर उससे इस प्रकार कहा-(एवं खलु पुत्ता! अम्हे सुंसमाए दारियाए अट्ठाए चिलायं तक्करं सव्वओ समंता परिधाडेमाणा तण्हाए छुहाए य अभिभूया समाणा इमी से अग्गामियाए अडवीए उदगस्स मग्गण-गवेसणं करेमाणा णो चेव णं उदगं आसाएमो-तएणं उदगं अणासा-एमाणा णो सचाएमो रायगिहं संपावित्तए) हे पुत्र सुनो अपने लोग सुंसमा दारिका के निमित्त चिलातचोर के पीछे २ सब तरफ सब प्रकार से दौडते २ प्यास और भूख से दुःखी हो गये हैं हमने इस अग्राम-वाली अटवी में पानी की मार्गणा और गवेषणा भी की-परन्तु वह मिला नहीं अतः पानी की प्राप्ति के अभाव में अब राजगृह नगर में पहुँचने के लिये हम असमर्थ बन चुके हैं। (तएणं तुम्हे ममं देवाणुप्पिया! जीवियाओ ववरोवेह मंसं च सोणियं च आहारेह, आहारित्ता तेणं आहारेणं अविद्धत्था समाणा तओ पच्छा इमं अग्गामियं अडविं णित्थ-

(एवं खलु पुत्ता! अम्हे सुंसुमाए दारियाए अट्ठाए चिलायं तक्करं सव्वओ समंता परिधाडेमाणा तण्हाए छुहाए य अभिभूया समाणा इमीसे अग्गामियाए अडवीए उदगस्स मग्गणगवेसणं करेमाणा णो चेव णं उदगं आसाए मो-तएणं उदगं अणासाएमाणा णो संचाएमो रायगिहं संपावित्तए)

હે પુત્ર! સાંભળ, અમે સુંસમા દારિકાને મેળવવા માટે ચિલાત ચોરની પાછળ પાછળ આમતેમ ચારે તરફ ભટકતાં ભટકતાં તરસ અને ભૂખથી દુઃખી થઈ ગયા છીએ. અમોએ આ ગામ વગરની અટવીમાં પાણીની માર્ગણા અને ગવેષણા પણ કરી છે, પણ અમે હજી મેળવી શક્યા નથી. એથી હવે પાણીના અભાવમાં અમે રાજગૃહ નગરમાં પહોંચી શકીશું તેમ લાગતું નથી.

(तएणं तुम्हे ममं देवाणुप्पिया! जीवियाओ ववरोवेह, मंसं च सोणियं च आहारेह, आहारित्ता तेणं आहारेणं अविद्धत्था समाणा तओ पच्छा इमं अग्गामियं

मटवीं 'णित्थरिहिह' निस्तरिष्यथ=पारङ्गमिष्यथ, राजगृहं च 'संपाविहिह' संप्राप्स्यथ 'मित्तणाई० य' मित्रज्ञातिश्च=मित्रज्ञातिस्वजनसम्बन्धिपरिजनान् 'अभिसमागच्छिहिह' अभिसमागमिष्यथ=मित्रज्ञातिप्रभृतिभिः सह संगता भविष्यथ, तथा च 'अत्थस्स' अर्थस्य=धनस्य च धर्मस्य च पुण्यस्य च 'आभागी' अभागिनो = भोक्तारो भविष्यथ। ततः खलु स ज्येष्ठपुत्रो धन्येन सार्थवाहेन एव मुक्तः = अनेन प्रकारेण कथितः सन् धन्यं सार्थवाहमेव मवदत्-हे तात! यूयं खलु अस्माकं पिता 'गुरुजणदेवयभूया' गुरुजनदैवतभूताः=देवगुरुजनसदृशाः 'ठावका' स्थापकाः नीतिधर्मादौ 'पइट्ठावका' प्रतिष्ठापकाः=राजादिसमक्षं स्वपदस्थापनेन प्रतिष्ठाकारकाः तथा 'संरक्खगा'

रिहिय रायगिहं च संपावेहिह) इसलिये हे देवानुप्रियों! तुम मुझे मारडालो और मेरे मांस और रक्त से तुम अपने प्राणोंकी रक्षाकर शरीर के विनाश होने से बचाकर इस अग्रामिक अटवी से पार हो जाओगे-एवं राजगृह नगर पहुँच जाओगे। (मित्ताणाइ० य अभिसमागच्छिहिह अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह, तएणं से जेट्ठे पुत्ते) वहां पहुँचकर तुम अपने मित्र, ज्ञाति, स्वजन, संबन्धी परिजनों के साथ मिलोगे तथा धन, धर्म और पुण्य के भोक्ता भी बनोगे-इसके बाद उस ज्येष्ठ पुत्र धनदत्त ने (धण्णेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे धण्णं सत्थवाहं एवं वयासी) धन्यसार्थवाह के द्वारा इस प्रकार कहे जाने पर उन अपने पिता धन्यसार्थवाह से इस प्रकार कहा (तुब्भे णं ताओ! अम्हं पिया गुरुजणयदेवभूया ठावगा

अडविं णित्थरिहिह रायगिहं च संपावेहिह)

એથી હે દેવાનુપ્રિય! તમે મને મારી નાખો અને મારા માંસ અને રક્તને ખાવો, પીવો ખાધાં-પીધાં પછી તમે શરીરના વિનાશથી ઊગરી જશો અને તૃપ્તિ મેળવીને આ ગામવગરની અટવીને પાર કરી જશો અને છેવટે રાજગૃહ નગરમાં પહોંચી જશો.

(मित्ताणाइ य अभिसमागच्छिहिह अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह, तएणं से जेट्ठे पुत्ते)

ત્યાં પહોંચીને તમે પોતાના મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન, સંબંધી પરિજનોની સાથે મળશો તેમજ ધન, ધર્મ અને પુણ્યોનો ઉપભોગ કરશો. ત્યારપછી મોટા પુત્ર ધનદત્તે

(धण्णेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे धण्णं सत्थवाहं एवं वयासी

ધન્ય સાર્થવાહ વડે આ પ્રમાણે કહેવાયા બાદ પોતાના પિતા ધન્ય સાર્થવાહને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

संरक्षकाः यदृच्छाप्रवृत्तेः ' संगोवगा ' संगोपकाः दुश्चरितप्रवृत्तेः, 'तं' तत्=तस्मात् कारणात् ' कहण्णं ' कथं खलु=केन प्रकारेण खलु हे तात ! वयं युष्मान् जीवितात् व्यपरोपयामः=मारयामः, युष्माकं खलु मांसं च शोणितं च कथम् आहारयामः ? ' तं ' तत्=तस्मात् यूयं खलु हे तात! मां धनदत्तनामानं जीविताद् व्यपरोपयत=मारयत मम मांसं च शोणितं च आहारयत, अग्रामिकामटवीं ' णित्थ-

पट्ठावगा संरक्खगा संगोवगा तं कहण्णं अम्हे ताओ ! तुब्भे जीवियाओ ववरोवेमो तुब्भं णं मंसं च सोणियं च आहारेमो अग्गामियं अडविं णित्थरह तं चेव सव्वं भणइ जाव अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भविस्सह) हे तात ! आप हमारे पिता हैं इसलिये आप मेरे लिये देव, गुरुजन के स्थान भूत हैं। नीति धर्म आदि में मुझे स्थापित करते रहते हैं। राज आदि समक्ष आप अपने पद पर मुझे बैठाते हैं इसलिये आप मेरे लिये स्थापक एवं प्रतिष्ठापक हैं यथेच्छा प्रवृत्ति से आप हमारी सदा रक्षा करते रहते हैं इसलिये आप मेरे संरक्षक हैं, दुश्चरित–प्रवृत्ति से आप हमें रोकते रहते हैं इसलिये आप मेरे संगोपक हैं, तो कैसे मैं हे तात ! आप को जीवन से रहित कर सकता हूँ। और कैसे आप के शोणित और मांस को खा सकता हूँ। इसलिये हे तात ! आप ही मुझे जीवन से रहित कर दीजिये और मेरे खून और मांस को आप खाइये ताकि आप इस अग्रामिक अटवी को पार कर सकें और राजगृह नगर

(तुब्भेणं ताओ ! अम्हं पिया गुरुजणयदेवभूया ठावगा पट्ठावगा संरक्खगा संगोवगा तं कहण्णं अम्हे ताओ ! तुब्भे जीवियाओ ववरोवेमो तुब्भं णं मंसं च सोणियं च आहारेमो अग्गामियं अडविं णित्थरह तं चेव सव्वं भणइ जाव अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भविस्सह)

હે તાત ! તમે અમારા પિતા છો. એથી તમે અમારા દેવ અને ગુરુના સમાન છો. તમે મને નીતિ ધર્મ વગેરેમાં પ્રવૃત્ત પણ કરતા રહો છો. રાજા વગેરેની સામે તમે પોતાના સ્થાને મને બેસાડો છો એથી તમે મારા સ્થાપક અને પ્રતિષ્ઠાપક છો. યથેચ્છ પ્રવૃત્તિથી તમે મારી રક્ષા કરતા રહો છો એથી તમે મારા સંરક્ષક છો. દુશ્ચરિત પ્રવૃત્તિથી તમે મને રોકતા રહો છો, એથી તમે મારા સંગોપક છો. તો આવી પરિસ્થિતિમાં હે તાત ! હું તમને કેવી રીતે જીવન રહિત કરી શકું અને કેવી રીતે તમારા શોણિત અને માંસનું આહાર કરી શકું ? એથી હે તાત ! તમે જ મને ધનદત્તને જ જીવન રહિત કરો અને મારા ખૂન અને માંસનું તમે આહાર કરો. જેથી તમે આ ગ્રામ વગરની અટવીને પાર કરી શકો. અને રાજગૃહ નગરમાં પહોંચીને ત્યાં

रह ' निस्तरत=पारंगच्छत, ' तंचेव सव्वं भणइ ' तदेवसर्वं भणति=यथा धन्य सार्थवाहो ज्येष्ठं पुत्रमवदत् , तथैवायमपि तदेव सर्वं कथयति, यावत् अर्थस्य धर्मस्य पुण्यस्य च आभागिनो भविष्यथ । ततः खलु धन्यं सार्थवाहं ' दोच्चे ' द्वितीयः पुत्रधनपालनामा एवमवदत्-मा खलु हे तात ! अस्माकं ज्येष्ठं भ्रातरं 'गुरुदेवयं ' गुरुदैवतं=देव-गुरुसदृशम् , जीविताद् व्यपरोपयामः=मारयामः, यूयं खलु हे तात ! ' ममं ' मां=धनपालनामानं जीविताद् व्यपरोपयत यावत् अर्थादिफलभाजो भविष्यथ । ' एवं '=अनेन प्रकारेण ' जाव पंचमेपुत्ते ' यावत्

पहुंच कर वहां अपने मित्रादि परिजनों के साथ मिल सके। तथा धन धर्म एवं पुण्य के भोक्ता बन सके। " तं चेव सव्वं भणइ " इसका तात्पर्य यही है कि जिस प्रकार धन्यसार्थवाह ने अपने ज्येष्ठ पुत्र, धनदत्त से कहा-उसी प्रकार धनदत्त ने भी अपने पिता से वैसाही कहा-(तएणं धण्णं सत्थवाहं दोच्चे पुत्ते एवं वयासी-माणं ताओ ! अम्हे जेट्ठं भायरं गुरुदेवयं जीवियाओ ववरोवेमो-तुब्भेणं ताओ ! ममं जीवियाओ ववरोवेह, मंसं च सोणियं च आहारेह, अग्गामियं अडविं णित्थरह तं चेव सव्वं भणइ जाव अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भविस्सह) इसके बाद धन्यसार्थवाह से उसके द्वितीय पुत्र ने इस प्रकार कहा-हे तात ! आप हमारे गुरु देवतातुल्य ज्येष्ठ भाई को जीवन से रहित मत कीजिये किन्तु आप तो हे तात ! मुझे ही जीवितसे रहितकर दीजिये-और मेरे ही रक्त एवं मांस को आप खाईये पीईये-ताकि इस अग्रामिक अटवी से पार हो सके इत्यादि पहिले जैसा ही इसने

પોતાના મિત્રો વગેરે પરિજનોની સાથે મળી શકો. તેમજ ધન ધર્મ અને પુણ્યના ભોક્તા બની શકો. " तं चेव सव्वं भणइ " આનો અર્થ આમ થાય છે કે જેમ ધન્ય સાર્થવાહે પોતાના મોટા પુત્ર ધનદત્તને કહ્યું તેમજ ધનદત્તે પણ પોતાના પિતાને કહ્યું.

(तएणं धण्णं सत्थवाहं दोच्चे पुत्ते एवं वयासी-माणं ताओ ! अम्हे जेट्ठं भायरं गुरुदेवयं जीवियाओ ववरोवेमो, तुब्भेणं ताओ ! ममं जीवियाओ ववरोवेह, मंसं च सोणियं च आहारेह, अग्गामियं अडविं णित्थरह तं चेव सव्वं भणइ जाव अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भविस्सह)

ત્યારપછી ધન્ય સાર્થવાહને તેના બીજા પુત્રે આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે તાત ! તમે અમારા ગુરુદેવતા જેવા મોટા ભાઈને જીવન રહિત ન કરો પણ હે તાત ! તમે મને જ મારી નાખો અને મારા જ લોહી અને માંસને તમે ખાઓ પીઓ. જેથી તમે આ ગામ વગરની અટવીને પાર કરી શકો, આમ

पञ्चमः पुत्रः=तृतीयो धनदेवश्चतुर्थो धनगोपः, पञ्चमो धनरक्षितश्चाऽप्यवदत् । ततः इत्थं तेषां वचनश्रवणानन्तरं, खलु स धन्यः सार्थवाहः पञ्चपुत्राणां 'हियइच्छियं' हृदयेष्टम्=हृदयेप्सितं ज्ञात्वा तान् पुत्रान् एवमवादीत्–मा खलु वयं हे पुत्राः ! एकमपि अस्माकं मध्येएकमपि जीविताद् व्यपरोपयामः एतत् खलु सुंसुमाया दारिकायाः शरीरं 'णिप्पाणं' निष्प्राणं=प्राणरहितम्, 'णिच्चेट्ठं' निश्चेष्टं=चेष्टारहितम् 'जीवविप्पजढे' जीवविप्रत्यक्तम्=जीवहीनम्, सर्वथा मृतमस्तीत्यर्थः, तच्छ्रेय=उचितं खलु हे पुत्राः 'अम्हं' अस्माकम् सुंसुमाया दारिकाया मांसं च शोणितं च आहर्तुम्, ततः=तदनन्तरं च खलु वयं तेन आहारेण 'अ-

सब कहा (एवं पंचमे पुत्ते) इसी तरह उससे तृतीय धनदेवने चतुर्थ धनगोपने एवं पांचवे धनरक्षित ने भी कहा–(तएणं से धण्णे सत्थवाहे पंचण्हं पुत्ताणं हियइच्छियं जाणित्ता तं पंचपुत्ते एवं वयासी) इस के बाद उस धन्यसार्थवाह ने पांचों पुत्रों के अभिप्राय को जानकर उन अपने पांचों ही पुत्रों से इस प्रकार कहा–(माणं अम्हे पुत्ता ! एगमवि जीवियाओ ववरोवेमो एसणं सुंसमाए दारियाए सरीरए णिप्पाए णिच्चेट्ठे जीवविप्पजढे–तं सेयं खलु पुत्ता ! अम्हं सुंसमाए दारियाए मंसं च सोणियं च अहारित्तए) हे मेरे पुत्रों ! मैं एक को भी जीवन से रहित नहीं करना चाहता हूँ किन्तु यह सुंसमादारिका का शरीर जो कि निष्प्राण, निश्चेष्ट, और जीवन से रहित बन गया है–इसलिये हमे उचित है कि हे पुत्रों ! हम इस सुंसमदारिका का मांस एवं शोणित

तेणे पहेलानी जेम ज बधुं कह्यु. (एवं पचमे पुत्ते) आ प्रमाणे ज तेने त्रीजा धनदेवे, चोथा धनगोपे अने पांचमा धनरक्षिते पण कह्यु.

(तएणं से धण्णे सत्थवाहे पंचण्हं पुत्ताणं हियइच्छियं जाणित्ता तं पंच पुत्ते एवं वयासी)

त्यारपछी ते धन्य सार्थवाहे पांचे पुत्रोनी हृदयनी अभिलाषा जाणीने पोताना ते पांचे पुत्रोने आ प्रमाणे कह्यु के—

(माणं अम्हे पुत्ता ! एगमवि जीवियाओ ववरोवेमो एसणं सुंसमाए दारियाए सरीरए णिप्पाणे णिच्चेट्ठे जीवविप्पजढे–तं सेयं खलु पुत्ता ! अम्हं सुंसमाए दारियाए मंसं च सोणियं च आहारेत्तए)

हे मारा पुत्रो ! तमारामांथी एकने पण हुं मारवा मागतो नथी. परंतु आ सुंसमा दारिकानुं शरीर के जे निष्प्राण, निश्चेष्ट अने निर्जीव बनी गयुं छे–एटला माटे अमारा माटे हे पुत्रो ! ए ज योग्य छे के आपणे आ सुंसमा दारिकानां मांस अने शोणितने खाइए.

विद्धत्था समाणा ' अविध्वस्ताः=शरीरनाशमप्राप्ताः सन्तः राजगृहं ' संपाउणिस्सामो ' संप्राप्स्यामः । ततः खलु ते पञ्चपुत्राः धन्येन सार्थवाहेन एवमुक्ताः सन्तः ' एयमट्ठं ' एतमर्थम् पूर्वोक्तरूपम् ' पडिसुणेंति ' प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति । ततः खलु स धन्यः सार्थवाहः पञ्चभिः पुत्रैः सार्द्धम् ' अरणिं ' अरणिं यस्मिन् मथ्यमानेऽग्निरुत्पद्यते तत्काष्ठम् 'करेइ' करोति=संगृह्णाति, कृत्वा 'सरगं' सरकम्=निर्मन्थनकाष्ठं करोति=आनयति कृत्वा, सरकेण अरणिं मथ्नाति=घर्षयति मथित्वा, ' अग्गिं पाडेइ ' पातयति=मन्थनवशादग्निमुत्पादयति ' पाडित्ता ' पात-

खावें। (तएण अम्हे तेणं आहारेणं अविद्धत्था समाणा रायगिहं संपाउणिस्सामो–तएणं ते पंच पुत्ता धण्णेणं सत्थवाहेणं एवंवुत्ता समाणा एयमट्ठं पडिसुणेंति) इस से हमलोग उस आहार से शरीर नाश को अप्राप्त होकर राजगृह नगर में पहुँच जावेंगे। इस प्रकार धन्यसार्थवाह के द्वारा कहे गये उन पांचों पुत्रों ने धन्यसार्थवाह के इस कथन को स्वीकार कर लिया। (तएणं धण्णे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अरणिं करेइ, करित्ता सरगंच करेइ, करित्ता सरएणं अरणिं महेइ, महित्ता अग्गिं पाडेइ, पाडित्ता अग्गिं संधुक्खेइ, संधुक्खित्ता दारुयाइं परिक्खवेइ परिक्खवित्ता अग्गिं पज्जालेइ पज्जालित्ता सुंसमाए मंसं च सोणियं च आहारेंति) इस के बाद धन्यसार्थवाह ने पांचों पुत्रों के साथ मिलकर अरणिकाष्ठ को एकत्रित किया। एकत्रित कर के फिर वह सरक काष्ठ को निर्मथनकाष्ठ को ले आया–उसे लेकर के उसने उससे अरणि का घर्षण किया। इस तरह घर्षण से अग्नि उत्पन्न हो गई। अग्नि के

(तएणं अम्हे तेणं आहारेण अविद्धत्था समाणा रायगिहं संपाउणिस्सामो तएणं ते पंच पुत्ता धण्णेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्तासमाणा एयमट्ठं पणिसुणेंति)

એથી આપણે બધા આ આહારથી શરીર નાશથી ઊગરી જઈને રાજગૃહ નગરમાં પહોંચી જઈશું. આ પ્રમાણે ધન્ય સાર્થવાહ વડે કહેવાયેલા પાંચે પુત્રોએ ધન્ય સાર્થવાહની તે વાતને સ્વીકારી લીધી.

(तएणं धण्णे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अरणिं करेइ, करित्ता, सरगं च करेइ, करित्ता सरएणं अरणिं महेइ, महित्ता अग्गिं पाडेइ, पाडित्ता अग्गिं संधुक्खेइ, संधुक्खित्ता दारुयाइं परिक्खवेइ, परिक्खवित्ता अग्गिं पज्जालेइ, पज्जालित्ता सुंसमाए दारियाए मंसं च सोणियं च आहारेंति)

ત્યારપછી ધન્ય સાર્થવાહે પાંચે પુત્રોની સાથે મળીને અરણિ કાષ્ઠને એકઠું કર્યું. એકઠું કરીને તેઓ સરક કાષ્ઠને–નિર્મંથન કાષ્ઠને લઈ આવ્યા. તેને લઈને તેણે તેથી અરણિકા કાષ્ઠનું ઘર્ષણ કર્યું. આ પ્રમાણે ઘર્ષણથી અગ્નિ

यित्वा=उत्पाद्य अग्नि 'संधुक्खेइ' संधुक्षयति=उद्दीपयति, संधुक्ष्य=उद्दीप्य 'दारुयाइं' दारुकाणि=इन्धनानि तत्र 'परिक्खिवइ' परिक्षिपति, परिक्षिप्य, अग्नि प्रज्वालयति, प्रज्वाल्य, सुंसुमाया दारिकाया भर्जितं मांसं च शोणितं च 'आहारेइ' आहारयति। अनन्तर तेन आहारेण 'अविद्धत्था' अविध्वस्ताः=शरीरनाशमप्राप्ताः सन्तो राजगृहं नगरं संप्राप्ताः 'मित्तणाई० अभिसमण्णागया' मित्रज्ञाति=मित्रज्ञातिस्वजनसम्बन्धिपरिजनैः सह 'अभिसमण्णागया' अभिसमन्वागताः=संमिलिताः सन्तः तस्य च विपुलस्य 'धणकणगरयण जाव' धनकनक रत्न यावत्=धनकनकरत्नादिकस्य 'आभागी जाया यावि होत्था' आभागिनो जाताश्चाप्यभवन। ततः खलु स धन्यः सार्थवाह. सुंसुमाया दारिकाया बहूनि लौकिकानि

उत्पन्न होने पर उसने फिर उसे धौंका-उद्दीपित किया-जब वह उद्दीपित हो चुकी-तब उसने उसमें लकडियों को लगाया-। इस तरह की क्रिया से जब अग्नि अच्छी तरह प्रज्वलित हो चुकी-तब उसमें सुंसमा दारिका के मांस को और खून को भूंजा-भूंजकर उसे सबने खाया पीया-(तेणं आहारेणं अविद्धत्था समाणा रायगिहं नयरं संपत्ता मित्तणाइ० अभिसमणागया तस्स य विउलस्स धणकणगरयण जाव आभागी-जाया यावि होत्था तएणं से धण्णे सत्थवाहे सुंसमाए दारियाए बहूइं लोइयाइं जाव विगयसोए यावि होत्था) इस प्रकार उस आहार की सहायता से अविध्वस्त शरीर होकर वे वहां से चल कर राजगृह नगर में आ गये। वहाँ आकर वे अपने मित्रज्ञाति आदि परिजनों से खूब हिले मिले। एवं धनकनक आदि द्रव्य के भोक्ता भी बन गये।

ઉત્પન્ન થઈ ગયો. અગ્નિ ઉત્પન્ન થયા બાદ તેણે તેને ઉદ્દીપિત કર્યો. જ્યારે તે ઉદ્દીપિત થઈ ગયો ત્યારે તેણે તેમા લાકડીઓ મૂકી. આ રીતે જ્યારે સારી રીતે અગ્નિ પ્રજ્વલિત થઈ ગયો ત્યારે તેમા સુંસમા દારિકાના માંસને અને લોહીને શેક્યા, શેક્યા બાદ તેને બધાએ ખાધાં-પીધાં

(तेणं आहारेण अविद्धत्था समाणा रायगिहं नयरं संपत्ता, मित्तणाइ० अभिसमणा गया, तस्स य विउलस्स धणकणगरयण जाव आभागीजाया यावि होत्था तएणं से धण्णे सत्थवाहे सुंसमाए दारियाए बहूइं लोइयाइं जाव विगयसोए यावि होत्था)

આ પ્રમાણે તે આહારની સહાયતાથી અવિનષ્ટ શરીરવાળા થઈને તેઓ ત્યાંથી રવાના થઈને રાજગૃહ નગરમાં આવી ગયા. ત્યાં આવીને તેઓ પોતાના મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનોની સાથે ખૂબ આનંદ-પૂર્વક મળ્યા, અને ધન, કનક વગેરે દ્રવ્યોને ભોગવવા લાગ્યા. સુંસમા દારિકાના મરણ પછીના જેટલાં

मृतकृत्यानि कृत्वा कालान्तरे ' विगयसोगे ' विगतशोकः=सुंसुमामरणजनितशोक-रहितो जातश्चास्यभूत् ॥ सू० ८ ॥

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे गुणसिलए चेइए समोसढे। से णं धण्णे सत्थवाहे सपुत्ते धम्मं सोच्चा पव्वइए, एक्कारसंगवी। मासियाए संलेहणाए सोहम्मे उववण्णो, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ। जहा वि य णं जम्बू! धण्णेणं सत्थवाहेणं णो वण्णहेउं वा नो रूवहेउं वा नो बलहेउं वा नो विसयहेउं वा सुंसुमाए मंससोणिए आहारिए, नन्नत्थ एगाए रायगिहं संपावणट्ठयाए। एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा इमस्स ओरालियसरीरस्स वंता-सवस्स पित्तासवस्स सुक्कासवस्स सोणियासवस्स जाव अवस्सं विप्पजहियव्वस्स वा नो वण्णहेउं वा नो रूवहेउं वा नो बल-हेउं वा नो विसयहेउं वा आहारं आहारेइ, नन्नत्थ एगाए सिद्धिगमणसंपावणट्ठयाए, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं अच्चणिज्जे जाव वीइवइस्सइ।

एवं खलु जम्बू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं अट्ठारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥सू०९॥

॥ अट्ठारसमं अज्झयणं समत्तं ॥

टीका—' तणं कालेणं ' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणो भगवान् महावीरो गुणशिलके चैत्ये ' समोसढे ' समवसृतः=तीर्थंकरपरम्परया

सुंसमा दारिका के मरणोत्तर काल में जो भी लौकिक कृत्य कियेजाते -वे सब भी उन्होंने किये और धीरे २ विगत शोक भी हो गए। सू०८।

લૌકિક કૃત્યો કરવાં જોઈએ તે સર્વે તેમણે પતાવ્યા અને ધીમે ધીમે તેઓ શોકરહિત પણ બની ગયા. ॥ સૂત્ર ૮ ॥

समागतः। अनन्तरं स धन्यः सार्थवाहः सपुत्रो धर्मं श्रुत्वा प्रव्रजितः, प्रव्रज्यानन्तरम् 'एगारसंगवी' एकादशाङ्गविन्=एकादशाङ्गाभिज्ञो जातः 'मासियाए' मासिक्या संलेखनया कालं कृत्वा 'सोहम्मे' सौधर्मे कल्पे 'उववन्नः'। पुनः ततश्च्युतः महाविदेहे वर्षे 'सिज्झिहिइ' सेत्स्यति=मुक्तिं प्राप्स्यति। सम्प्रति धन्यसार्थवाहदृष्टान्तेन जम्बूस्वामिनं सम्बोध्य श्रीसुधर्मास्वामीप्राह 'जहा वि इत्यादिना—

'तेणं कालेणं तेणं समएणं इत्यादि।

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय में (समणे भगवं महावीरे) श्रमण भगवान् महावीर (गुणसिलए चेइए समोसढे, से णं धण्णे सत्थवाहे सपुत्ते धम्मं सोचा पव्वइए-एक्कारसंगवी-मासियाए संलेहणाए सोहम्मे उववण्णे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ) गुणशिलक उद्यान में आये। उनसे धर्म का उपदेश सुनकर वह धन्यसार्थवाह अपने पांचों पुत्रों सहित उनके पास प्रव्रजित हो गया। प्रव्रजित होकर धीरे २ वह एकादशांगों का ज्ञाता भी हो गया। अन्त समय में उसने एक मास की संलेखना धारणकर काल अवसर काल किया—तो उसके प्रभाव से वह सौधर्म कल्प में उत्पन्न हो गया—। वहां से चव कर अब वह महाविदेह क्षेत्र में मुक्ति को प्राप्त करेगा। इस धन्यसार्थवाह के दृष्टान्त से जंबू स्वामीको संबोधितकर के श्री

'तेण कालेण तेण समएण' इत्यादि—

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएणं) ते काळे अने ते समये (समणे भगवं महावीरे) श्रमण भगवान महावीर

(गुणसिलए चेइए समोसढे। सेणं धण्णे सत्थवाहे सुपुत्ते धम्मं सोच्चा पव्वइए-एक्कारसंगवी-मासियाए संलेहणाए सोहम्मे उववण्णे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ)

ગુણશિલક ઉદ્યાનમાં આવ્યા. તેમની પાસેથી ધર્મોપદેશ સાંભળીને તે ધન્ય સાર્થવાહ પોતાના પાંચે પુત્રોની સાથે તેમની પાસે પ્રવ્રજિત થઈ ગયો. પ્રવ્રજિત થઈને તે ધીમે ધીમે એકાદશ (અગિયાર) અંગોનો જ્ઞાતા પણ થઈ ગયો. છેવટે મૃત્યુ સમયે એક માસની સંલેખના ધારણ કરીને કાળ અવસરે નિધન પામ્યો. તે તેના પ્રભાવથી સૌધર્મ કલ્પમાં ઉત્પન્ન થઈ ગયો. ત્યાંથી ચવીને હવે તે મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં મુક્તિ પ્રાપ્ત કરશે. આ ધન્ય સાર્થવાહના દૃષ્ટાન્તને સામે રાખીને શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ જંબૂ સ્વામીને સંબોધિત

जहावि य णं' यथाऽपि च खलु=येन प्रकारेण खलु हे जम्बूः! धन्येन सार्थवाहेन नो वर्णहेतोः = नो रूपहेतोः बलहेतोः=नो विषयहेतो. सुंसुमाया दारिकाया मांस-शोणितमाहारितम्, एगाए रायगिहसंपावणट्ठयाए' एकस्य राजगृह संप्रापणार्थतायाअन्यत्र न, किन्तु-अहं राजगृहं संप्राप्नुयाम् इति हेतोरेव तेन पुत्रैः सह तद् आहारितमिति भावः।

भगवानाह—'एवामेव' एवमेव=अनेन प्रकारेणैव 'समणाउसो' हे आयुष्मन्तः श्रमणाः योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा अस्य वान्तास्रवस्य पित्ता-

सुधर्मा स्वामी ने उनसे कहा-(जहा वि य णं जंबू! धण्णेणं सत्थवाहेणं णो वण्णहेउं वा नो रूवहेउं वा नो बलहेउं वा नो विसयहेउं वा सुंसुमाए मंससोणिए आहारिए नन्नत्थ एगाए रायगिहं संपावणट्ठयाए-एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथीवा इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कासवस्स सोणियासवस्स जाव अवस्सं विप्पजहियव्वस्स नो वण्णहेउं वा नो रूवहेउं वा नो बलहेउं वा नो विसयहेउं आहारं अहारेइ, नन्नत्थएगाए सिद्धिगमणसंपावणट्ठयाए) हे जंबू! जिस तरह धन्यसार्थवाह ने अपने शरीर में कान्ति विशेष बढाने के लिये, बल बढाने के लिये, अथवा विषय सेवन की शक्ति बढाने के लिये सुंसुमा दारिका का मांस एवं शोणित नहीं खाया। किन्तु मैं पुत्रों के सहित राजगृह नगर में पहुँच जाऊँ इसी एक अभिप्राय से सुंसुमा दारिका का अपने पुत्रों सहित मांस शोणित सेवन किया-इसी तरह हे आयुष्मंत श्रमणो! जो हमरा निर्ग्रन्थ श्रमण जन अथवा श्रमणी जन है-वह इस वान्तास्रववाले, पित्तास्रववाले, शुक्रास्र-

કરીને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(जहा वि य णं जंबू! धण्णेणं सत्थवाहेणं णो वण्णहेउं वा नो रूवहेउं वा नो बलहेउं वा नो विसयहेउं वा सुंसुमाए मंससोणिए आहारिए नन्नत्थ एगाए रायगिहं, संपावणट्ठयाए एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कासवस्स सोणियासवस्स जाव अवस्से विप्पजहियव्वस्स नो वण्णहेउं वा नो रूवहेउं वा नो बलहेउं वा नो विसयहेउं वा आहारं आहारेइ, नन्नत्थ एगाए सिद्धिगमणसंपावणट्ठयाए)

હે જંબૂ! જેમ ધન્ય સાર્થવાહે પોતાના શરીરમાં કાંતિ વિશેષની વૃદ્ધિ કરવા માટે બળની વૃદ્ધિ માટે અથવા વિષય સેવનની શક્તિના વર્ધન માટે સુંસુમા દારિકાનાં માંસ અને શોણિત નહિ ખાધાં, પણ પુત્રો સહિત હું રાજગૃહ નગરમાં પહોંચી જાઉં આ એક જ મતલબથી પોતાના પુત્રોની સાથે સુસુમા દારિકાના માંસ-શોણિત સેવન કર્યાં. આ પ્રમાણે હે આયુષ્મંત શ્રમણો! જે અમારા નિર્ગ્રંથ શ્રમણજન અથવા શ્રમણીજનો છે તેઓ આ વાંતા-

स्रवस्य शुक्रास्रवस्य 'जाव अवस्सं विप्पजहियव्वस्स' यावद् अवश्यं विप्रहेयस्य औदारिकशरीरस्य नो वर्णहेतोर्वा, नो रूपहेतोर्वा नो वलहेतोर्वा, नो विषयहेतोर्वा, आहारमाहरति=आहारं करोति, 'एगाए सिद्धिगमणसंपावणट्ठयाए' एकस्याः सिद्धिगमनसंप्रापणार्थतायाः 'नन्नत्थ' अन्यत्र न, मोक्षप्राप्तिरूपं प्रयोजनं विहाय वर्णादिप्रयोजनेन आहारं नाहरतीति भावः। स =निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा खलु 'इहभवे चेव' इहभवे एव=अस्मिन् जन्मन्येव बहूनां श्रमणानां बहूनां श्रमणीनां बहूनां श्रावकाणां बहूनां श्राविकाणाम् 'अच्चणिज्जे' अर्चनीयः= आदरणीयः 'जाव वीइवइस्सइ यावद् व्यतिव्रजिष्यति=चातुरन्तसंसारकान्तार-मुल्लङ्घयिष्यति-संसारपार गमिष्यतीत्यर्थः।

वाले, यावत् अवश्य परित्याग होने की योग्यतावाले इस औदारिक शरीर में कान्ति विशेष बढाने के लिये बल बढाने के लिये, अथवा विषय की प्रवृत्ति चालू रखने के लिये आहार नहीं लेता है किन्तु-एक-केवल सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त करने के लिये ही आहार लेता हैं। मोक्ष प्राप्तिरूप प्रयोजन को छोड़कर और किसी कान्ति आदि बढाने के अभिप्रायरूप प्रयोजन से निर्ग्रन्थ श्रमण श्रमणी जन अहार नहीं लिया करते हैं-(सेणं) ऐसे निर्ग्रन्थ श्रमण श्रमणी जन (इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं अच्चणिज्जे जाव वीइवइस्सइ) इस भव में ही अनेक श्रमण, श्रमणी, जनों द्वारा तथा श्रावक श्राविकाओं द्वारा अर्चनीय-आदरणीय यावत् इस चतुर्गतिरूप संसार कान्तार को पारकरने वाले होते हैं। (एवं खलु

स्रववाળા, પિત્તાસ્રવવાળા, શુક્રાસ્રવવાળા યાવત્ ચોક્કસ નષ્ટ થનારા આ ઔદારિક શરીરમાં કાંતિ વિશેષની વૃદ્ધિ માટે, બળની વૃદ્ધિ માટે અથવા તો વિષયની પ્રવૃત્તિ ચાલુ રાખવા માટે આહાર લેતો નથી પણ ફક્ત એક જ સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને મેળવવા માટે જ આહાર ગ્રહણ કરે છે મોક્ષપ્રાપ્તિ રૂપ પ્રયોજન વગર બીજી કોઈ કાંતિ વગેરેની વૃદ્ધિની અભિલાષા રાખીને નિર્ગ્રંથ-શ્રમણીજન આહાર ગ્રહણ કરતા નથી. (સેણં) એવા નિર્ગ્રંથ શ્રમણ શ્રમણીજનો—

(इहभवे चेव बहूणं समणाणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं अच्चणिज्जे जाव वीइवइस्सइ)

આ ભવમાં જ ઘણા શ્રમણ શ્રમણીજનો વડે તેમજ શ્રાવક-શ્રાવિકાઓ વડે અર્ચનીય, આદરણીય યાવત્ આ ચતુર્ગતિ રૂપ સંસાર કાંતારને પાર કરી જનારા હોય છે.

सुधर्मास्वामीप्राह—' एवं ' अनेन पूर्वोक्तप्रकारेण खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन भगवता महावीरेण 'जाव संपत्तेणं ' यावत् संप्राप्तेन=मोक्षंगतेन अष्टादशस्य ज्ञाताध्ययनस्य ' अयमट्ठे ' अयमर्थः=पूर्वोक्तरूपोऽर्थः प्रज्ञप्तः=प्ररूपितः, ' त्ति बेमि ' इति ब्रवीमि=अस्य व्याख्या पूर्ववत् ॥ सू० ९ ॥

इति श्री–विश्वविख्यात–जगद्वल्लभ–प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक–प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक–वादिमानमर्दक–श्रीशाहूच्छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त–' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित–कोल्हापुरराजगुरु–बालब्रह्मचारि–जैनाचार्य–जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री–घासीलाल–व्रतिविरचितायां–ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायामष्टादशमध्ययनं समाप्तं ॥ १८ ॥

जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं अट्ठारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णतेत्तिबेमि) इस प्रकार से हे जंबू ! श्रमण भगवान् महावीरने जो सिद्धि गति नमक स्थान को प्राप्त हो चुके हैं इस अठारहवें ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्तरूप से अर्थ प्ररूपित किया है। ऐसा जो मैंने कहा है वह उन्हीं के श्री मुख निर्गतवाणी को सुनकर ही कहा है–अपनी ओर से इसमें कुछ भी मिलाकर नहीं कहा है ॥ सू० ९ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर पूज्य श्री घासीलालजी महाराज कृत " ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र " की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्याका अठारहवां अध्ययन समाप्त ॥ १८ ॥

एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं अट्ठारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णणेत्तिबेमि)

આ પ્રમાણે હે જંબૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે–કે જેઓ સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને મેળવી ચુકયા છે–આ અઢારમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપથી અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે. આવું જે મેં કહ્યું છે, તે તેમના જ શ્રીમુખથી નીકળેલી વાણીને સાંભળીને જ કહ્યું છે. પોતાના તરફથી ઉમેરીને મેં કહ્યું નથી. ॥ સૂત્ર ૯ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત " જ્ઞાતાધર્મકથાઙ્ગસૂત્ર " ની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનું અઢારમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૮ ॥

अथ एकोनविंशतितममध्ययनम्—

गतमष्टादशमध्ययनम् , साम्पतमेकोनविंशतितमं व्याख्यायते, अस्य च पूर्वेण सह अयमभिसम्बन्धः-पूर्वस्मिन्नध्ययने असंवृतास्रवस्य तदितरस्य च अनर्थार्थौ उक्तौ, इहतु चिरं संवृतास्रवोऽपि यः पश्चादन्यथा स्यात्तस्य अल्पकालं संवृतास्रवस्य च अनर्थार्थौ प्रोच्येते, इत्येवं सम्बन्धेनायातस्यास्येदमादिसूत्रम्-' जइणं भंते ' इत्यादि ।

॥ पुण्डरीक-कण्डरीक नाम का उन्नीसवां अध्ययन प्रारंभ ॥

अठारहवां अध्ययन समाप्त हो चुका-अब १९ वां अध्ययन प्रारंभ होता है-इस अध्ययन का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार का संबन्ध है पूर्व अध्ययन में असंवृतास्रव अथवा संवृतास्रव वाले प्राणी को अर्थ एवं अनर्थ की प्राप्ति होना समर्थित किया गया है-अर्थात् असंवर वालेको अनर्थ की प्राप्ति होती है और संवरवाले को इष्ट अर्थ की प्राप्ति होती है ।। अब इस अध्ययन में सूत्रकार यह प्रदर्शित कर रहे हैं कि जिस प्राणी ने चिरकाल से आस्रवको संवृत कर दिया है-परन्तु यदि वह पीछे से असंवृतास्रव वाला बन जाता है तो उसके अनर्थ की प्राप्ति तथा अल्प काल भी जिसने आस्रव को संवृतकर दिया है उसके अर्थ की प्राप्ति होती है। इस संबंध को लेकर प्रारंभ किये गये इस अध्ययन का यह सर्व प्रथम सूत्र है।

પુણ્ડરીક-કણ્ડરીક નામે ઓગણીસમું અધ્યયન પ્રારંભ

અઢારમુ અધ્યયન પુરૂ થઈ ગયું છે હવે ઓગણીસમું અધ્યયન શરૂ થાય છે આ અધ્યયનનો એના પૂર્વના અધ્યયનની સાથે આ જાતનો સંબંધ છે કે પૂર્વ અધ્યયનમાં અસંવૃતાસ્રવ અથવા સંવૃત.સ્રવવાળા પ્રાણીને અર્થ અને અનર્થની પ્રાપ્તિ થાય છે, તે વાતનું સમર્થન કરવામાં આવ્યુ છે. એટલે કે અસંવરવાળાઓને અનર્થની પ્રાપ્તિ હોય છે અને સંવરવાળાઓને ઇષ્ટ-અર્થની પ્રાપ્તિ હોય છે હવે આ અધ્યયનમાં સૂત્રકાર આ વાતનું સ્પષ્ટીકરણ કરી રહ્યા છે કે જે પ્રાણીએ ચિરકાળથી એટલે કે બહુ લાંબા વખતથી આસ્રવને સંવૃત કરી દીધો છે, પરંતુ જો તે પાછળથી એટલે કે ભવિષ્યમાં અસંવૃત્તાસ્રવવાળો બની જાય છે તો તેને અનર્થની પ્રાપ્તિ તેમજ થોડા વખત સુધી પણ જેણે આસ્રવને સવૃત કરી દીધો છે તેને અર્થની પ્રાપ્તિ થાય છે. આ વાતને લઇને આરંભાએલા આ અધ્યયનનું આ પહેલુ સૂત્ર છે:—

मूलम्—जइणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं अट्ठारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, एगूण-वीसइमस्स णायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबूदीवे दीवे पुव्वविदेहेवासे सीयाए महाणईए उत्तरिल्ले कूले नीलवंतस्स दाहिणेणं उत्तरि-ल्लस्स सीयामुहवणसंडस्स पच्चत्थिमेणं एगसेलगस्स वक्खारपव्व-यस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं पुक्खलावई णामं विजए पन्नत्ते। तत्थ णं पुंडरिगिणी णामं रायहाणी पन्नत्ता णवजोयणवित्थि-ण्णा दुवालसजोयणायामा जाव पच्चक्खं देवलोगभूया पासाईया दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा। तीसेणं पुंडरिगिणीए णयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए णलिणिवणे णामं उज्जाणे। तत्थ णं पुंडरिगिणीए रायहाणीए महापउमे णामं राया होत्था, तस्स णं पउमावई णामं देवी होत्था। तस्स णं महापउमस्स रन्नो पुत्ता पउमावईए देवीए अत्तया दुवे कुमारा होत्था, तं जहा—पुंडरीए य कंडरीए य, सुकुमालपाणिपाया०। पुंडरीए जुव-राया। तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं, महापउमे राया णिग्गए धम्मं सोच्चा, पोंडरीयं रज्जे ठवेत्ता पव्वइए पोंडरीए राया जाए, कंडरीए जुवराया, महापउमे अणगारे चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ, तएणं थेरा बहिया जणवयविहारं विहरंति, तएणं से महापउमे बहूणि वासाइं जाव सिद्धे ॥ सू० १ ॥

टीका—' जइणं भंते ' इत्यादि। यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्संप्राप्तेन अष्टादशस्य ज्ञाताऽध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः, पुनः खलु हे भदन्त! एकोनविंशतितमस्य ज्ञाताऽध्ययनस्य कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ?। इति जम्बूस्वामी-प्रश्नानन्तरं सुधर्मास्वामी कथयति-एवं खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये इहैव ' जंबूदीवे दीवे ' जम्बूद्वीपे द्वीपे=मध्यजम्बूद्वीपे ' पुव्वविदेहेवासे ' पूर्वविदेहे वर्षे शीताया महानद्याः ' उत्तरीये=उत्तरदिक् स्थिते कूले=तीरे ' नील-वंतस्स दाहिणेणं ' नीलवतो दक्षिणे=नीलवतः पर्वतस्य दक्षिणेभागे ' उत्तरिल्लस्स ' उत्तरीयस्य=उत्तरदिक् स्थितस्य ' सीयामुहवणसण्डस्स ' सीतामुखवनषण्डस्य= शीताया नद्या यन्मुखमुद्गमस्थान, तत्र यद् वनषण्डम् तस्य, ' पच्चत्थिमेणं '

' जइणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेण ' इत्यादि !

टीकार्थः—जंबू स्वामी श्री सुधर्मा स्वामी से पूछते हैं कि (जइणं भंते समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं अट्ठारसमस्स णायज्झ-यणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते एगूणवीसइमस्स णायज्झयणस्स के अट्ठे पण्ण-त्ते ?) हे भदन्त ! यदि श्रमण भगवान् महावीरने कि जो सिद्धि गति नामक मुक्तिस्थान को प्राप्त कर चुके हैं अठारहवें ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्तरूप से अर्थ निरूपित किया है-तो उन्हीं श्रमण भगवान् महावी-रने १९ वें ज्ञाताध्ययन का क्या भाव-अर्थ निरूपित किया है ? (एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबूदीवे दीवे पुव्वविदेह वासे सीयाए महाणईए उत्तरिल्ले कूले नीलवंतस्स दाहिणेणं उत्तरिल्लस्स सीयामुहवणसंडस्स पच्चत्थिमेणं एगसेलगस्स वक्खारपव्वयस्स

' जइणं भंते ! समणेण भगवया महावीरेणं'—

टीकार्थ—જંબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે :

(जइणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं अट्ठारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते एगूणवीसइमस्स णायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?)

હે ભદન્ત ! જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેમણે સિદ્ધિગતિ નામક મુક્તિસ્થાનને મેળવી લીધું છે-અઢારમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમાં અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ત્યારે તેજ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ઓગણીસમા જ્ઞાતાધ્યયનનો શો ભાવ-અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ?

(एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबू दीवे दीवे पुव्व-विदेहवासे सीयाए महाणईए उत्तरिल्ले कूले नीलवंतस्स दाहिणेणं उत्तरिल्लस्स

पाश्चात्ये=पश्चिमेभागे 'एगसेलगस्स' एकशैलकस्य=मध्यजम्बूद्वीपमेरुपर्वतसमीपस्थस्य एक शैलकनामकस्य 'वक्खारपव्वयस्स' वक्षस्कारपर्वतस्य 'पुरत्थिमेणं' पौरस्त्ये=पूर्वस्यां दिशि 'एत्थणं' अत्र खलु पुष्कलावती नाम विजयः प्रज्ञप्तः। तत्र खलु पुण्डरीकिणी नाम राजधानी प्रज्ञप्ता, सा 'णवजोयणवित्थिण्णा' नवयोजनविस्तीर्णा = नवयोजनविस्तारवती 'दुवालसजोयणायामा' द्वादशयोजनायामा=द्वादशयोजनानि आयामो दैर्घ्यं यस्याः सा=द्वादशयोजनदीर्घेत्यर्थः, पुनः 'जाव पच्चक्खं देवलोयभूया यावत् प्रत्यक्षदेवलोकभूता=साक्षात् स्वर्गसदृशा- पुनः प्रासादीया, दर्शनीया, अभिरूपा, प्रतिरूपा। तस्याः खलु पुण्डरीकिण्याः

पुरत्थिमेणं एत्थणं पुक्खलाइणामं विजए पण्णत्ते) इस प्रकार जंबूस्वामी के पूछने पर सुधर्मा स्वामी उनसे कहते हैं-सुनो-तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है उस काल और उस समय में इस जंबूद्वीप नाम के द्वीप में पूर्व विदेह क्षेत्रमें, शीत महानदी के उत्तरदिग्वर्ती तीर पर स्थित नील पर्वत के दक्षिण दिग्भाग में, तथा उत्तर दिग्वर्ती शीतामुखवनषंड के पश्चिम भाग में, तथा एक शैलक नाम वाले वक्षस्कार पर्वत की पूर्व दिशा में पुष्कलावती इस नाम का विजय है। शीतामुखवनषंड का तात्पर्य यह है-कि जहां से शीतानदी नीकली है उस उद्गमस्थान पर एक वनषंड है। मध्य जंबूद्वीप और मेरूपर्वत के समीप में रहा हुआ एक शैलक नाम का वक्षस्कार पर्वत है।-(तएणं पुंडरिगिणीणामं रायहाणी पन्नत्ता, णवजोयणवित्थिण्णा दुवालसजोयणायामा, जाव पच्चक्खं देवलोयभूया पासाईया, दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा) उस

सीयामुहवणसंडस्स पच्चत्थिमेणं एगसेलगस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं एत्थणं पुक्खलावइ णामं विजए पण्णत्ते)

આ પ્રમાણે જંબૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાંભળીને શ્રી સુધર્મા તેમને કહેવા લાગ્યા કે હે જંબૂ! સાંભળો, તમારા સવાલનો જવાબ આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે આ જંબૂદ્વીપ નામક દ્વીપમાં પૂર્વ વિદેહ ક્ષેત્રમાં, શીતા મહા નદીના ઉત્તર દિશા તરફના કિનારા ઉપર આવેલા નીલ પર્વતના દક્ષિણ દિગ્ભાગમાં તેમજ ઉત્તર દિશામાં આવેલા સીતા મુખવનષંડના પશ્ચિમ ભાગમાં, તેમજ એક શૈલક નામવાળા વક્ષસ્કાર પર્વતની પૂર્વ દિશામાં પુષ્કલાવતી નામે એક વિજય છે. સીતા મુખવન-ષંડનો અર્થ આમ સમજવો જોઈએ કે જ્યાંથી શીતા નદી નીકળી છે, તે ઉદ્ગમ સ્થાન ઉપર એક વનષંડ છે. મધ્ય જંબૂદ્વીપ અને મેરૂપર્વતની પાંસે આવેલો એકશૈલક નામે વક્ષસ્કાર પર્વત છે.

(તત્થણં પુંડરિગિણીણામં રાયહાણી પન્નત્તા, ણવ જોયણવિત્થિણ્ણા દુવાલસજોયણાયામા, જાવ પચ્ચક્ખં દેવલોયભૂયા પાસાઈયા, દરસણિજ્જા અભિરૂવા પડિરૂવા)

नगर्याः उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे नलिनीवनं नाम उद्यानम् । तत्र खलु पुण्डरीकिण्यां राजधान्यां महापद्मो नाम राजाऽऽसीत् । तस्य खलु पद्मावती नाम देवी आसीत् । तस्य खलु महापद्मस्य राज्ञः पुत्रो पद्मावत्या देव्या आत्मजौ द्वौ कुमारौ आस्ताम् । 'तं जहा' तद्यथा तयोर्नामरूपे, तदाह–' पुंडरीए य कंडरीए य सुकुमालपाणिपाया ' पुण्डरीकश्च कण्डरीकश्च सुकुमारपाणिपादौ कोमलकरचरणौ । तयोर्मध्ये पुण्डरीको युवराजाऽऽसीत् । तस्मिन् काले तस्मिन् समये ' थेरागमणं '

पुष्कलावती विजय में पुंडरी किनी नाम राजधानी थी । यह नव योजन विस्तारवाली तथा १२ योजन की लंबी है यह साक्षात स्वर्ग जैसी प्रतीत होती है । प्रासादीयचित्त एवं अन्तःकरण को यह प्रसन्न करने वाली है, दर्शनीय–नेत्रों को तृप्ति करने वाली है, अभिरूप–असाधारण रचना से युक्त है एवं प्रतिरूप है–इसके जैसी और दूसरी कोई नगरी नहीं है ऐसी । (तीसेणं पुंडरिगीणीए णयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए णलिणिवणे णामं उज्जोणे-तत्थ णं पुंडरिगिणीए रायहाणीए महापउमे णामं राया होत्था–तस्सणं पउमावईणामं देवी होत्था, तस्स णं महापउमस्स रण्णो पुत्ता पउमावईए देवीए अत्तया दुवे कुमारा होत्था) उस पुंडरीकिणी नगरी के उत्तर पौरस्त्य दिग्भाग में नलिनीवन नाम का एक उद्यान था । उस पुंडरीकिणी राजधानी में महापद्मनाम का एक राजा रहता था । उसकी देवी का नाम पद्मावती था । उस महापद्म राजा के यहां पद्मावती की कुक्षि से उत्पन्न हुए दो कुमार थे (तं जहा पुंडरीए य, कंडरीए य–सुकुमालपाणि पाया० । पुंडरीए जुवराया तेणं कालेणं

તે પુષ્કલાવતી વિજયમાં પુંડરીકિની નામે રાજધાની હતી તે નવ યોજન જેટલા વિસ્તારવાળી તેમજ બાર યોજન જેટલી લાંબી છે તે પ્રત્યક્ષ સ્વર્ગ જેવી જ લાગે છે. તે પ્રાસાદીયચિત્ત અને અન્તઃકરણને તે પ્રસન્ન કરનારી છે, દર્શનીય–આંખોને તે તૃપ્ત કરનારી છે, અભિરૂપ તે અસાધારણ (અપૂર્વ) રચનાવાળી છે, અને પ્રતિરૂપ–એના જેવી બીજી કોઈ નગરી નથી એવી છે.

(तीसेणं पुंडरिगिणीए णयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए णलिणिवणे णामं उज्जाणे–तत्थण पुंडरिगिणीए रायहाणीए महापउमे णामं राया होत्था–तस्सणं पउमावईणामं देवी होत्था, तस्सणं महापउमस्स रण्णो पुत्ता पउमावईए देवीए अत्तया दुवे कुमारा होत्था)

તે પુંડરીકિણી નગરીના ઉત્તર પૌરસ્ત્ય દિગ્વિભાગમાં નલિનીવન નામે એક ઉદ્યાન હતો તે પુંડરીકિણી રાજધાનીમાં મહાપદ્મ નામે એક રાજા રહેતો હતો તેની રાણીનું નામ પદ્માવતી હતું તે મહાપદ્મ રાજાને ત્યાં પદ્માવતી દેવીના ગર્ભથી ઉત્પન્ન થયેલા બે રાજકુમાર હતા.

स्थविरागमन=तस्या राजधान्या नलिनीवने उद्याने स्थविराणामागमनमभूत् । महापद्मो राजा धर्मं श्रोतुं निर्गतः, धर्मं श्रुत्वा संजातवैराग्यः पुण्डरीकं राज्ये स्थापयित्वा प्रव्रजितः । अनन्तरं पुण्डरीको राजा जातः, कण्डरीको युवराजः । महापद्मऽनगारः चतुर्दशपूर्वाणि अधीते । ततः खलु स्थविरा बहिर्जनपदविहारं विहरन्ति । ततः खलु स महापद्मो बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयित्वा यावद् सिद्धः॥सू० १॥

तेणं समएणं थेरागमणं, महापउमे राया णिग्गए, धम्मं सोच्चा पोंडरीयं रज्जे ठवेत्ता पव्वइए। पोंडरीए राया जाए, कंडरीए जुवराया। महापउमे अणगारे चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ, तएणं थेरा बहिया जणवयविहारं विहरंति, तएणं से महापउमे बहूणि वासाइं जाव सिद्धे) उनके नाम इस प्रकार है–१ पुंडरीक और दूसरा कंडरीक–ये दोनों पुत्र सुकुमार करचणवाले थे। पुंडरीक को पिता ने युवराज पदप्रदान किया था। उस काल में और उस समय में वहां स्थविरों का आगमन हुआ। महापद्मराजा धर्म का व्याख्यान सुनने के लिये अपने महल से निकलकर नलिनीवन उद्यान में आये। वहां धर्म का उपदेश सुनकर उन्हे वैराग्य भाव उत्पन्न हो गया–सो वे पुंडरीक को राज्य में स्थापितकर दीक्षित हो गये। पुंडरीक राजा बन गया–और कंडरीक युवराज हो गया। महापद्मराजर्षि ने चौदह पूर्वो का अध्ययन कर लिया। इसके बाद वहां से स्थविरों ने

(तं जहा–पुंडरीए य, कंडरीए य–सुकुमालपाणिपाया० । पुंडरीए जुवराया तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं, महापउमे राया णिग्गए, धम्मं सोच्चा पोंडरीयं रज्जे ठवेत्ता पव्वइए । पोंडरीए राया जाए, कंडरीए जुवराया । महापउमे अणगारे चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ, तएणं थेरा बहिया, जणवयविहारं विहरंति, तएणं से महापउमे बहूणि वासाइं जाव सिद्धे)

તેમનાં નામો આ પ્રમાણે છે-૧ પુંડરીક, અને ૨ કંડરીક આ બંને પુત્રો સુકોમળ હાથ-પગવાળા હતા. રાજાએ પુંડરીકને યુવરાજપદ પ્રદાન કર્યું હતું. તે કાળે અને તે સમયે ત્યાં સ્થવિરોનું આગમન થયું. મહાપદ્મ રાજા ધર્મનું વ્યાખ્યાન સાંભળવા માટે પોતાના મહેલથી નીકળીને નલિનીવન ઉદ્યાનમાં આવ્યો. ત્યાં ધર્મોપદેશ સાંભળીને તેને વૈરાગ્યભાવ ઉત્પન્ન થઇ ગયો. છેવટે પુંડરીકને રાજ્યાસને સ્થાપિત કરીને તેઓ દીક્ષિત થઇ ગયા પુંડરીક રાજા થઈ ગયો અને કંડરીક યુવરાજ થઇ ગયો. મહાપદ્મ રાજર્ષિએ ચૌદ પૂર્વોનું અધ્યયન કરી લીધું. ત્યારપછી સ્થવિરો ત્યાંથી બહાર જનપદોમાં વિહાર

मूलम्-तएणं थेरा अन्नया कयाइं पुणरवि पुंडरिगिणीए रायहाणीए णलिणिवणे उज्जाणे समोसढा, पोंडरीए राया णिग्गए। कंडरीए महाजणसद्दं सोच्चा जहा महाबलो जाव पज्जुवासइ। थेरा धम्मं परिकहेंति पुंडरीए समणोवासए जाए जाव पडिगए। तएणं से कंडरीए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठाए उट्ठित्ता जाव से जहेयं तुब्भे वदह जं णवरं पुण्डरीयं रायं आपुच्छामि, जाव पव्वयामि। अहासुहं देवाणुप्पिया! तएणं से कंडरीए जाव थेरे वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता तमेव चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ जाव पच्चोरुहइ, जेणेव पुण्डरीए राया तेणेव उवागच्छइ करयल जाव पुंडरीयं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! मए थेराणं अंतिए जाव धम्मे निसंते से धम्मे जाव अभिरुइए, तएणं देवाणुप्पिया! जाव पव्वइत्तए। तएणं से पुंडरीए कंडरीए एवं वयासी-माणं तुमं देवाणुप्पिया! इयाणिं मुंडे जाव पव्वयाहि, अहं णं तुमं महया२ रायाभिसेएणं अभिसिंचामि। तएणं से कंडरीए पुंडरीयस्स रण्णो एयमट्ठं णो आढाइ णोपरिजाणइ तुसिणीए संचिट्ठइ। तएणं पुण्डरीए राया कंडरीयं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी-जाव तुसिणीए संचिट्ठइ। तएणं पुण्डरीए कंडरीयं कुमारं जाहे नो संचाएइ, बहूहिं आघवणाहि

बाहिर जनपदों में विहार कर दिया। महापद्म अनगार ने अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालनकर यावत् सिद्धपद को प्राप्त कर लिया ॥ सू० १ ॥

બહાર નીકળી પડ્યા. મહાપદ્મ અનગારે ઘણાં વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનું પાલન કરીને યાવત્ સિદ્ધપદને પ્રાપ્ત કરી લીધુ ॥ સૂત્ર ૧ ॥

य पण्णवणाहि य४ ताहे अकामए चेव एयमट्ठं अणुमन्नित्था जाव णिक्खमणाभिसेएणं अभिसिंचइ जाव थेराणं सीसभिक्खं दलयइ। पव्वइए अणगारे जाए एगारसंगविऊ। तएणं थेरा भगवंतो अन्नया कयाइं पुंडरिगिणीओ नयरीओ णलिणीवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमंति पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवय-विहारं विहरंति ॥ सू० २ ॥

टीका—'तएणं ते' इत्यादि। ततः खलु ते स्थविरा अन्यदा कदाचित् पुण्डरीकिण्या राजधान्या नलिनीवने उद्याने समवसृताः=समगताः। तेषां समागमनं श्रुत्वा पुण्डरीको राजा तान् वन्दितुं निर्गतः। अनन्तरम्—कण्डरीको 'महाजणसद्दं' महाजनशब्दं=स्थविरान् वन्दितुं कामानां गच्छतां बहूनां जनानां कोलाहलं श्रुत्वा 'जहा महाबलो जाव पज्जुवासइ' यथामहाबलो यावत्पर्युपास्ते। महाबल इव स्थविराणां समीपे गत्वा तान् वन्दित्वा नमस्यित्वा सेवते। स्थविरा धर्मं 'परिकहेंति' परिकथयन्ति=उपदिशन्तीत्यर्थः। तैरुपदिष्टं धर्मं श्रुत्वा पुण्डरीकः श्रमणोपासको जातः 'जाव पडिगए' यावत्प्रतिगतः=स्थविरान् वन्दित्वा

'तएणं ते थेरा अन्नया कयाइं' इत्यादि।

टीकार्थः—(तएणं) इसके बाद (ते थेरा) वे स्थविर (अन्नया कयाइं किसी एक समय (पुणरवि) फिर से (पुंडरिगीणीए रायहाणीए णलिणिवणे उज्जाणे समोसढा, पोंडरीए राया णिग्गए) पुंडरीकिणी राजधानी में आये। वहां वे नलिनीवन उद्यान में ठहरे। पुंडरीक राजा उनका आगमन सुनकर धर्म सुनने की इच्छा से वहां जाने के लिये अपने महल से निकले। (कंडरीए महाजणसद्दं सोच्चा जहा महब्बलो जाव पज्जुवासइ, थेरा धम्मं परिकहेंति, पुंडरीए समणोवासए जाए जाव

'तएणं ते थेरा अन्नया कयाइं' इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्यारपछी (ते थेरा) ते स्थविरो (अन्नया कयाइं) कोई એક વખતે (पुणरवि) ફરી (पुंडरिगीणीए रायहाणीए णलिणिवणे उज्जाणे समोसढा, पोंडरीए रायाणिग्गए) પુંડરીકિણી રાજધાનીમાં આવ્યા. ત્યાં તેઓ નલિનીવન ઉદ્યાનમાં રોકાયા. પુંડરીક રાજા તેમનું આગમન સાંભળીને ધર્મનું વ્યાખ્યાન સાંભળવાની ઈચ્છાથી ત્યાં જવા માટે પોતાના મહેલથી નીકળ્યા. (कंडरीए महाजणसद्दं सोच्चा जहा महाब्बलो जाव पज्जुवासइ, थेरा धम्मं परि-

नमस्यित्वा प्रतिनिवृत्तः। ततः खलु कण्डरीकः 'उट्ठाए' उत्थया=उत्थानशक्त्या उत्तिष्ठति, उत्थया उत्थाय 'जाव' यावत् स्थविरान् वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवदत्-'से जहेयं तुब्भे वदह' तद्यथेदं यूयं वदथ=हे देवानुप्रियाः! यूयं यथा यद् वदथ, तत्तथैव, 'जं णवरं' यन्नवर=यो विशेष सचैवम्-यदहं पूर्वं पुण्डरीकं राजानम् आपृच्छामि। ततः खलु 'जाव पव्वयामि' यावत् प्रव्रजामि।

पडिगए) इसके बाद कंडरीक युवराज स्थविरों को वंदना करने के लिये जानेवाले अनेक मनुष्यों का कोलाहल सुनकर महाबल राजा की तरह स्थविरों के पास गया-वहां जाकर उसने उनकी वंदना की-नमस्कार किया। वंदना नमस्कार कर फिर उसने उनकी पर्युपासना की। स्थविरों ने धर्म का उपदेश दिया। उस उपदेश को सुनकर पुंडरीक श्रमणोपासक बन गया। बाद में वह स्थविरों को वंदना और नमस्कार कर अपने स्थान पर वापिस वहां से लौट आया। (तएणं से कंडरीए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठाए उट्ठित्ता जाव से जहेयं तुब्भे वदह, जं णवरं पुंडरीयं रायं आपुच्छामि, तएणं जाव पव्वयामि-अहासुहं देवाणुप्पिया। तएणं से कंडरीए जाव थेरे वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ) इसके बाद कंडरीक उत्थानशक्ति से उठा-उत्थानशक्ति -उठने की शक्ति से उठकर उसने स्थविरों को वंदना की-नमस्कार किया। वंदना नमस्कार करके फिर उसने उनसे इस प्रकार कहा-हे

कहेति, पुंडरीए समणोवासए जाए जाव पडिगए) त्यारपछी कंडरीक युवराज स्थविरोनी वंदना करवा माटे उपडेला अनेक माणुसोनो घोघाट सांभळीने महाबल राजानी जेम स्थविरोनी पासे गयो. त्यां जईने तेणे तेमने वंदन अने नमस्कार कर्या वंदना अने नमस्कार करीने तेणे तेमनी पर्युपासना करी. स्थविरोए धर्मोपदेश आप्यो, ते उपदेशने सांभळीने पुंडरीक श्रमणोपासक बनी गयो त्यारपछी ते स्थविरोने वंदन तेमज नमन करीते पोताना निवास-स्थाने पाछो आवतो रह्यो.

(तएणं से कंडरीए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठाए उट्ठित्ता जाव से जहेयं तुब्भे वदह जं णवरं पुंडरीयं रायं आपुच्छामि, तएण जाव पव्वयामि-अहासुहं देवाणुप्पिया। तएणं से कंडरीए जाव थेरे वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ)

त्यारपछी कंडरीक उत्थान शक्ति वडे ऊभो थयो, उत्थान शक्ति-ऊभा थवानी शक्ति वडे ऊभो थईने तेणे स्थविरोने वंदन तेमज नमस्कार कर्या. वंदना अने नमस्कार करीने तेणे तेमने आ प्रमाणे विनंती करतां कह्युं के

इति तद् वचनं श्रुत्वा ते स्थविराः प्रोचुः ' अहासुहं देवाणुप्पिया ' यथासुखं हे देवानुप्रिया ! हे देवानुप्रिय ! यथा तव सुखकरं भवेत् तथा कुरु। ततः खलु स कण्डरीको यावत् स्थविरान् वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा स्थविराणामन्तिकात्=समीपात् प्रतिनिष्क्राम्यति, प्रतिनिष्क्रम्य, तमेव ' चाउग्घंटं ' चतुर्घण्टं=चतस्रो घण्टा यस्मिन् स तम्=घण्टा चतुष्टयोपेतम् अश्वरथं दूरोहति, यावत् प्रत्यवरोहति=रथादवतरति। अवतरणानन्तरं यत्रैव पुण्डरीको राजा तत्रैव उपागच्छति, ' करयल जाव ' करतल यावत्=करतलपरिगृहीतं शिर आवर्त्तं दशनखं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा पुण्डरीकमेवमवादीत्-एवं खलु हे देवानुप्रिय ! मया स्थविराणामन्तिके यावद्धर्मो निशान्तः=श्रुतः, स धर्मः=स्थविरप्रोक्तो धर्मः यावत् अभिरुचितः। तत् खलु हे देवानुप्रिय ! ' जाव पव्वइत्तए ' यावत् प्रव्रजितुम्=हे देवानुप्रियाः ! भवद्भिरभ्यनुज्ञातो स्थविराणामन्तिके प्रव्रजितुमिच्छामीतिभावः।

देवानुप्रियो ! आप जैसा कहते है-वह वैसा ही है-मेरी भावना उसे सुनकर संयम लेने की हो गई है-अतः संयम धारण करने के पहिले मैं पुंडरीक राजा से इस विषय में पूछ आता हूँ उसके बाद संयम धारण करना चाहता हूँ। इस प्रकार उसके वचन सुनकर उन स्थविरों ने उससे कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम्हे जैसे सुख हो-तुम वैसा करो-इसके बाद कंडरीक ने स्थविरों को वंदना की-नमस्कार किया और वंदना नमस्कारकर वह उनके पास से चला आया (पडिनिक्खमित्ता) आकर के (तमेवचाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ, जाव पच्चोरुहइ, जेणेव पुंडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, करयल जाव पुंडरीयं एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए थेराणं अंतिए जाव धम्मे निसंते से धम्मे जाव अभिरूइए

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે જેમ કહો છો તે ખરેખર તેમ છે આ બધું સાંભળીને સંયમ ગ્રહણ કરવાની મારી ઈચ્છા થઈ ગઇ છે એટલા માટે સંયમ ધારણ કરતાં પહેલાં હુ પુંડરીક રાજાને આ વિષે પૂછી આવું છું ત્યારપછી હુ સંયમ ધારણ કરવા ચાહુ છું. આ પ્રમાણે તેનાં વચનો સાંભળીને તે સ્થવિરોએ તેને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમને જેમાં સુખ મળે તેમ કરો ત્યારપછી કંડરીકે સ્થવિરોને વંદન તેમજ નમસ્કાર કરીને તે તેમની પાસેથી આવતો રહ્યો. (पडिनिक्खमित्ता) આવીને,

(तमेव चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, जाव पच्चोरूहइ, जेणेव पुंडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, करयल पुंडरीयं एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए थेराणं अंतिए जाव धम्मे निसंते से धम्मे जाव अभिरूइए-तण्णं देवाणुप्पिया !

ततः पुण्डरीकः कण्डरीकमेवमवादीत्–मा खलु त्वं हे देवानुप्रिय ! भ्रातः इदानीं मुण्डो यावत् प्रव्रज अहं खलु त्वां महता २ 'रायाभिसेएणं' राजाभिषेकेण 'अभिसिंचामि=अभिषेचयामि। ततः खलु स कण्डरीको युवराजः पुण्डरीकस्य राज्ञ एतमर्थं नो आद्रियते=स्वस्य राज्याभिषेकरूपमर्थं नो मनुते, 'नो परिजाणइ' नो प्रतिजानाति=न स्वीकरोति 'तुसिणीए संचिट्ठइ' तूष्णीकः

–तएणं देवाणुप्पिया ! पव्वइत्तए। तएणं से पुंडरीए कंडरीए एवं वयासी –माणं तुमं देवाणुप्पिया! इयाणिं मुंडे जाव पव्वयाहि–अहं णं तुमं महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचामि) वह वहां आया–जहां चतुर्घंटोपेत अपना अश्वरथ रखा हुआ था। वहां आकर वह उसपर चढ गया –चढकर वह जहां पुंडरीक राजा थे वहां आया–वहां आते ही वह रथ से नीचे उतरा। नीचे उतरकर पुंडरीक राजा के पास गया– वहां जाकर उसने पुंडरीक राजा को दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार किया–बाद में इस प्रकार कहने लगा–हे देवानुप्रिय मैंने स्थविरों के पास धर्म का उपदेश सुना है–वह मुझे बहुत रूचा है इसलिये हे देवानुप्रिय! मैं आपसे आज्ञापित होकर उन स्थविरों के पास संयम लेना चाहता हूँ–इस प्रकार कंडरीक की बात सुनकर पुंडरीकने उससे इस प्रकार कहा–हे देवानुप्रिय। तुम इस समय मुंडित होकर स्थविरों के पास संयम धारण मतकरो। मैं बड़े जोर शोर के उत्सव के साथ तुम्हारा राज्याभिषेक करना चाहता हूँ। (तएणं से कंडरीए पुंडरीयस्स

जाव पव्वइत्तए। तएणं से पुंडरीए कंडरीए एवं वयासी–माणं तुमं देवाणुप्पिया। इयाणिमुंडे जाव पव्वयाहि अहं णं तुमं महया२ रायाभिसेएणं अभिसिंचामि)

તે ત્યાં આવ્યો જ્યાં ચતુર્ઘંટવાળો પોતાનો અશ્વરથ હતો ત્યાં આવીને તે તેમાં બેસી ગયો, અને બેસીને તે જ્યાં પુંડરીક રાજા હતો ત્યાં ગયો ત્યાં પહોંચતાં જ તે રથ ઉપરથી નીચે ઉતર્યો, નીચે ઉતરીને પુંડરીક રાજાની પાસે ગયો. ત્યાં જઇને તેણે બંને હાથ જોડીને પુંડરીક રાજાને નમસ્કાર કર્યા અને ત્યારપછી તેણે તેમને વિનંતી કરતાં આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! મેં સ્થવિરોની પાસેથી ધર્મોપદેશ સાંભળ્યો છે તે મને ખૂબ જ ગમી ગયો છે. એથી હે દેવાનુપ્રિય ! હું તમારી આજ્ઞા મેળવીને સ્થવિરોની પાસેથી સંયમ ગ્રહણ કરવા ઇચ્છું છું. આ પ્રમાણે કંડરીકની વાત સાંભળીને પુંડરીકે તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે હમણાં મુંડિત થઇને સ્થવિરોની પાસેથી સંયમ ધારણ કરો નહિ. હું મોટા ઉત્સવ સાથે તમારો રાજ્યાભિષેક કરવા ચાહું છું.

सतिष्ठते=तमर्थं न स्वीकृतवान् केवल मौनमवलम्ब्य स्थितः। ततः खलु पुण्डरीको राजा कण्डरीकं भ्रातरं द्वितीयमपि तृतीयमपि वारम् ' एवं 'पूर्वोक्तरूपेण अवादीत्-' जाव तुसिणीए संचिट्ठइ ' यावत्-तुष्णीकः संतिष्ठते। ततः खलु पुण्डरीकः कण्डरीकं यदा ' नो संचाएइ ' नो शक्नोति = न समर्थो भवति बहुभिः ' आघवणाहि य ' आख्यापनाभिश्च-आख्यापनाभिः-प्रव्रज्याविरोधिभिराख्यानैः ' पण्णवणाहि य ' प्रज्ञापनाभिश्च ' अहं तव ज्येष्ठभ्राताऽस्मि, तव हितं येन भवति, तदेव कथयामि, इत्यादि रूपैः प्रज्ञापनवाक्यैः एवं ' विण्णवणाहि य ' विज्ञापनाभिः विनितमृदुवचनावलिरूपैर्वाक्यप्रबन्धैः, तथा ' सण्णवणाहि य ' संज्ञापनाभिः ' प्रव्रज्यायां महान् कष्टो भवति ' इत्यादि स्वाभीप्सितसंज्ञापकैर्वाक्यैश्च

रण्णो एयमट्ठं णो आढाइ, णो परिजाणइ, तुसिणीए संचिट्ठइ, तएणं पुंडरीए राया कंडरीयं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी जाव तुसिणीए संचिट्ठइ, तएणं पुंडरीए कंडरीयं कुमारं जाहे नो संचाएई, बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य ४ ताहे अकामए चेव एयमट्ठं अणुमन्नित्था जाव णिक्खमणाभिसेएणं अभिसिंचइ जाव थेराणं सीसभिक्खं दलयइ)
कंडरीक कुमारने पुंडरीक राजा की इस बात को आदर की दृष्टि से नहीं देखा-नहीं माना-और न उसे स्वीकार ही किया-केवल चुपचाप ही रहा। पुंडरीक राजा ने जब कंडरीक कुमार को चुपचाप देखा-तब उसने दुबारा और तिबारा भी उससे ऐसा ही कहा-परन्तु उसने इस बात पर बिलकुल ही ध्यान नहीं दिया केवल चुपचाप ही रहा-। अतः जब पुंडरीक राजा कंडरीक कुमार को उसके ध्येय से विचलित करने

(तएणं से कडरीए पुंडरीयस्स रण्णो एयमट्ठं णो आढाइ, णो परिजाणइ, तुसिणीए संचिट्ठइ, तएणं पुंडरीए राया कंडरीयं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी जाव तुसिणीए संचिट्ठइ, तएणं पुंडरीए कंडरीयं कुमारं जाहे नो संचाएई, बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य ४ ताहे अकामए चेव एयमट्ठं अणुमन्नित्था जाव णिक्खमणाभिसेएणं अभिसिंचइ जाव थेराणं सीसभिक्खं दलयइ)

કંડરીક કુમારે પુંડરીક રાજાની આ વાતનું સન્માન કર્યું નહિ-માની નહિ અને તેનો સ્વીકાર પણ કર્યો નહિ, ફક્ત તે મૂંગો થઈને બેસી જ રહ્યો. પુંડરીક રાજાએ જ્યારે કંડરીક કુમારને મૂંગો મૂંગો બેસી રહેલો જોયો ત્યારે તેમણે બીજી વાર અને ત્રીજી વાર પણ તેને આ પ્રમાણે જ કહ્યુ પરંતુ તેણે આ વાતની સહેજ પણ દરકાર કરી નહી, ફક્ત મૂંગો થઈને બેસી જ રહ્યો. છેવટે જ્યારે પુંડરીક રાજા કંડરીક કુમારને તેના ધ્યેયથી મક્કમ વિચારથી

'आघवित्तए' आख्यापयितुं ४=सर्वथाप्रतिरोधयितुं न शक्नोतीति पूर्वेण सम्बन्धः, 'ताहे' तदा 'अकामए चेव' अकामक एव=अनिच्छ एव 'एयमट्ठं' एतमर्थम्-कण्डरीकाभिलपितं प्रव्रज्यारूपम्, 'अणुमन्नित्था' अन्वमन्यत=स्वीकृतवान्, 'जाव णिक्खमणाभिसेएणं' यावत् निष्क्रमणाभिषेकेण' स्वीकरणानन्तरं निष्क्रमणोपयोगि वस्तुजातमुपनीय सविधि दीक्षाभिषेकेण अभिषिञ्चति, 'जाव थेराणं सीसभिक्खं दलयइ' यावत्-स्थविरेभ्यः शिष्यभिक्षाम्=अभिषेकानन्तरं स पुण्डरीको राजा कण्डरीकं शिबिकायां समुपवेश्य महता समारोहेण सह नलिनीवने उद्याने समायाति, तत्र स्थितेभ्यः स्थविरेभ्यः स्वलघुभ्रातरं शिष्यभिक्षां ददाति। अनन्तरं स कण्डरीकः प्रव्रजित सन् अनगारो जातः। तथा 'एकारसंगविऊ' एकादशाङ्गवित्=एकादशाङ्गज्ञानवान् जातः। ततः खलु स्थविरा भग

के लिये आख्यापनाओं द्वारा, प्रज्ञापनाओं द्वारा विज्ञापनाओं द्वारा संज्ञापनाओं द्वारा, समर्थ नहीं हो सके-तब उन्होंने विना इच्छा के ही कंडरीक कुमार को दीक्षा ग्रहण करने रूप अर्थ की स्वीकृति देने के बाद निष्क्रमणोपयोगी समस्त वस्तुओं को उन्होंने मंगवाया-जब वे आ चुकी-तब उन्होंने उसका सविधि दीक्षाभिषेक से अभिसिंचन किया। अभिषेक के बाद पुंडरीक राजा कंडरीक को शिबिका में बैठाकर बडे समारोह के साथ नलिनीवन में आये। वहां आकर उन्होंने स्थविरों के लिये अपने लघुभाई को शिष्य की भिक्षा रूप से प्रदान किया। इसके बाद कंडरीक (पव्वइए अणगारेजाए) प्रव्रजित होकर अनगारावस्था संपन्न हो गये। (एगारसंगविऊ,-तएणं थेरा भगवंतो अन्नया कयाइं पुंडरिगिणीओ नयरीओ णलिणीवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमंति,

વિચલિત કરવા માટે આખ્યાપનાઓ, પ્રજ્ઞાપનાઓ, વિજ્ઞાપનાઓ, સંજ્ઞાપનાઓ વડે પણ સમર્થ થઈ શકયા નહિ ત્યારે તેમણે ઇચ્છા ન હોવા છતાંએ કંડરીક કુમારને દિક્ષાગ્રહણ કરવાની સ્વીકૃતિ આપી દીધી સ્વીકૃતિ આપ્યા બાદ તેમણે નિષ્ક્રમણને લગતી બધી વસ્તુઓ મંગાવી. જ્યારે વસ્તુઓ આવી ગઈ ત્યારે તેમણે તેનું વિધિસર દીક્ષાભિષેક વડે અભિસિંચન કર્યું અભિષેક કર્યા બાદ પુંડરીક રાજા કંડરીકને પાલખીમાં બેસાડીને ભારે સમારોહની સાથે નલિની વનમાં આવ્યા ત્યાં આવીને તેમણે સ્થવિરોને પોતાના નાના ભાઈને શિષ્યના રૂપમાં આપી દીધો. ત્યારપછી કંડરીક (પવ્વઇએ અણગારે જાએ) પ્રવ્રજિત થઇને અનગારાવસ્થા સંપન્ન થઇ ગયો.

(एगारसंगविऊ-तएणं थेरा भगवंतो अन्नया कयाइं पुंडरिगिणीओ नय-

वन्तो ऽन्यदा कदाचित् पुण्डरीकिण्या नगर्या नलिनीवनात् उद्यानात् प्रतिनिष्क्रा-म्यन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य बहिर्जनपदविहारं विहरन्ति ॥ सू० २ ॥

मूलम्-तएणं तस्स कंडरीयस्स अणगारस्स तेहिं अंतेहिं य पंतेहिं य जहा सेलगस्स जाव दाहवक्कंतिए यावि विहरइ। तएणं थेरा अन्नया कयाइं जेणेव पोंडरिगिणी तेणेव उवाग-च्छइ, उवागच्छित्ता, णलिणिवणे समोसढा, पोंडरीए णिग्गए धम्मं सुणेइ। तएणं पोंडरीए राया धम्मं सोच्चा जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कंडरीयं अणगारं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता कंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगं सव्वाबाहं सरोयं पासइ, पासित्ता, जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, थेरे भगवंते वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-अहण्णं भंते! कंडरीयस्स अणगारस्स अहा पवत्तेहिं ओसहभेसज्जेहिं जाव तेइच्छं आउट्टामि, तं तुब्भे णं भंते! मम जाणसालासु समोसरह। तएणं थेरा भग-वंतो पुंडरीयस्स पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता, जाव उवसंपज्जित्ताणं

पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरंति) धीरे २ वे ग्यारह अंगोंके पाठी भी बनगये इसके बाद उन स्थविर भगवंतों ने किसी एक दिन पुंडरीकिणी नगरी के उस नलिनीवन नामकेउद्यान से विहार किया सो विहार कर वे बाहिर के जनपदों में विचरने लगे॥ सू० २॥

रीओ णलिणीवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरंति)

ધીમે ધીમે તેમણે અગિયાર અંગોનું અધ્યયન કરી લીધું. ત્યારબાદ તે સ્થવિર ભગવંતોએ કોઇ એક દિવસે પુંડરીકિણી નગરીના તે નલિનીવન નામના ઉદ્યાનથી વિહાર કર્યો, વિહાર કરીને તેઓ બહારના જનપદોમાં વિચરણ કરવા લાગ્યા. ॥ સૂત્ર ૨ ॥

विहरंति। तएणं पुंडरीए राया जहा मंडुए सेलागस्स जाव वलियसरीरे जाए। तएणं थेरा भगवंतो पोंडरीयं रायं पुच्छंति, पुच्छित्ता वहिया जणवयविहारं विहरंति। तएणं से कंडरीए ताओ रोयायंकाओ विप्पमुक्के समाणे तंसि मणुण्णंसि असणपाणखाइमसाइमंसि मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे णो संचाएइ पोंडरीयं रायं आपुच्छित्ता वहिया अब्भुज्जएणं जणवयविहारं विहरित्तए। तत्थेव ओसण्णे जाए। तएणं से पोंडरीए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए अंतेउरपरियालसंपरिवुडे राया जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, कंडरीयं अणगारं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ करित्ता वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता, एवं वयासी— धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया! तव माणुस्सए जम्मजीवियफले जे णं तुमं रज्जं च जाव अंतेउरं चावि छड्डयित्ता जाव विगोवइत्ता जाव पव्वइए। अहण्णं अहण्णे अकयपुन्ने रज्जे जाव अन्तेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने नो संचाएमि जाव पव्वइत्तए। तं धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया! जाव जीवियफले। तएणं से कंडरीए अणगारे पुंडरीयस्स एयमट्ठं णो आढाइ जाव संचिट्ठइ। तएणं कंडरीए पोंडरीएणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे अकामए अवस्सवसे लज्जाए गारवेण य पोंडरीयं रायं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता थेरेहिं सद्धिं वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ सू०३ ॥

टीका—'तएणं तस्स' इत्यादि। ततः खलु तस्य कण्डरीकस्य अनगारस्य तैः 'अंतेहि य' अन्तैश्च=वल्लचणकादिभिः, 'पंतेहि य' प्रान्तैश्च=पर्युषितैः, नीरसैः स्वादवर्जितैर्वा अशनादिभिः यथा शैलकस्य राजर्षेस्तथा ऽस्याऽपितथाविधमाहारं कुर्वतो यावत्प्रकृतिसुकुमारकस्य सुखोपचितस्य शरीरे वेदना प्रादुर्भूता, कीदृशीत्याह – उज्ज्वला- यावद् दुरधिसह्या = सोढुमशक्या पुनः सुखलेशरहिता कण्डरीकः 'दाहवक्कंतिए' दाहव्युत्क्रान्तिकः=दाहस्य शरीरसन्तापरूपरोगस्य व्युत्क्रान्तिः=उत्पत्तिर्यस्यासौ दाहव्युत्क्रान्तिकः=करचरणादिज्वलनवान् चापि विहरति। ततः खलु स्थविरा अन्यदा कदाचित् यत्रैव पुण्डरीकिणी नगरी तत्रैव उपागच्छन्ति, उपागत्य, नलिनीवने समवसृताः। पुण्डरीकस्तद्दर्शनार्थं स्वभवना-

---

'तएणं तस्स कंडरीयस्स' इत्यादि।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (तस्स कंडरीयस्स अणगारस्स तेहिं अंतेहिं पंतेहिं य जहासेलगस्स जाव दाहवक्कंतिए यावि विहरइ) उस कंडरीक अनगारके वल्लचणक आदि रूप अन्ताहार करनेसे तथा पर्युषित अथवा नीरस आहाररूप प्रान्ताहार करनेसे शैलक राजर्षिकी तरह प्रकृतिसे सुकुमार सुखोपचित होने के कारण शरीरमें वेदना उत्पन्न हो गई। जो उज्ज्वला एवं सोढुमशक्या थी। इस तरह शरीर सन्तापरूप रोग की उत्पति से वे कंडरीक अनगार कर चरण आदि में जलन होने के कारण सुख के लेश से भी वर्जित हो गये। (तएणं थेरा अन्नया कयाइं जेणेव पोंडरिगिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता णलिणिवणे समोसढा पोंडरीए

तएणं तस्स कंडरीयस्स इत्यादि—

ટીકાર્થ—(तएणं) ત્યારપછી,

(तस्स कंडरीयस्स अगगारस्स तेहिं अंतेहिं पंतेहिं य जहा सेलगस्स जाव दाहवक्कंतिए यावि विहरइ)

તે કંડરીક અનગારના શરીરમાં બલ્લચણક વગેરે રૂપ અંતાહાર કરવાથી તેમજ પર્યુષિત અથવા નીરસ આહાર રૂપ પ્રાન્તાહાર કરવાથી શૈલક રાજર્ષિની જેમ પ્રકૃતિથી સુકુમાર અને સુખોપચિત હોવા બદલ વેદના ઉત્પન્ન થઈ ગઈ. તે વેદના અત્યંત ઉગ્ર અને અસહ્ય હતી. આ પ્રમાણે શરીર સંતાપ રૂપ રોગની ઉત્પત્તિથી તે કંડરીક અનગાર હાથ પગમાં બળતરાને લીધે થોડી સુખશાંતિ પણ મેળવી શક્યા નહિ.

(तएणं थेरा अन्नया कयाइं जेणेव पोंडरिगिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता णलिणिवणे समोसढा पोंडरीए निग्गए धम्मं सुणेइ, तएणं पोंडरीए राया

न्निर्गत तत्र गत्वा धर्म शृणोति। ततः खलु पुण्डरीको राजा धर्मं श्रुत्वा यत्रैव कण्डरीकोऽनगारस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य, कण्डरीकं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा कण्डरीकस्य अनगारस्य शरीरं 'सव्वाबाहं' सव्याबाधं=पीडासहितं 'सरोयं' सरोगं=रोगसहितं 'पासइ' पश्यति, दृष्ट्वा यत्रैव स्थविरा भगवन्तस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य स्थविरान् भगवतो वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्-'अहण्णं भंते!' अहं खलु हे भदन्त! कण्डरीकस्य

निग्गए धम्मं सुणेइ, तएणं पोंडरीए राया धम्मं सोच्चा जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कंडरीयं अणगारं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता कंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगं सव्वाबाहं सरोयं पासइ) किसी एक समय वे स्थविर पुंडरीकिणी नगरी में विहार करते हुए आये। वहां आकर वे नलिनीवन नाम के उद्यान में ठहर गये। आगमन सुनकर पुंडरीक राजा उन को वंदना एवं उनसे धर्मश्रवण करने की भावना से अपने राजमहल से निकलकर उस नलिनीवन उद्यान में आये-स्थविरों ने उन्हें धर्म का उपदेश दिया। धर्म का उपदेश श्रवण कर फिर वे जहां कंडरीक अनगार थे उनके पास आये। वहां आकर उन्होंने उनको वंदना की नमस्कार किया-। वंदना नमस्कार करके उन्होंने कंडरीक अनगारके शरीर को पीडासहित एवं रोगसहित देखा-(पासित्ता जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-अहण्णं भंते!

धम्मं सोच्चा जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कंडरीयं अणगारं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता कंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगं सव्वाबाहं सरोयं पासइ)

કોઈ એક વખતે તે સ્થવિર પુંડરીકિણી નગરીમ વિહાર કરતા કરતા આવ્યાં. ત્યા આવીને તેઓ નલિનીવન નામના ઉદ્યાનમાં રોકાયા. તેમનું આગમન સાંભળીને પુંડરીક રાજા તેમને વંદન કરવા માટે તેમ તેમની પાસેથી ધર્મોપદેશ સાંભળવા માટે પોતાના રાજમહેલથી નીકળીને તે નલિનીવન ઉદ્યાનમાં આવ્યો સ્થવિરોએ તેમને ધર્મોપદેશ આપ્યો, ધર્મોપદેશ સાંભળીને તેઓ જ્યાં કંડરીક અનગાર હતા તેમની પાસે ગયા ત્યા જઈને તેમણે તેમને વંદન અને નમસ્કાર કર્યાં. વંદન અને નમસ્કાર કરીને તેમણે કંડરીક અનગારના શરીરને પીડા સહિત અને રોગયુક્ત જોયું

(पासित्ता जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-अहण्णं भंते! कंडरीयस्स अण-

अनगारस्य 'अहापवत्तेहिं' यथा प्रवृत्तैः=प्रासुकैरित्यर्थः 'ओसहभेसज्जेहिं' औषधभैषज्यैः 'जावतेइच्छं' यावत् चिकित्साम् 'आउट्टामि' आवर्तयामि=कारयामि, 'तं' तत्=तस्मात् कारणात् यूयं खलु हे भदन्त! मम यानशालासु समवसरत=आगच्छत। ततः खलु स्थविरा भगवन्तः पुण्डरीकस्य एतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति=एतद्वचनं स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य यावत्-उपसंपद्य=यानशालां समाश्रित्य विहरन्ति। ततः खलु पुण्डरीको राजा 'जहा मंडुए सेलगस्स जाव बलियसरीरे जाए' यथा मण्डूकः शैलकस्य यावद् बलिकशरीरो जातः=

कंडरीयस्स अणगारस्स अहापवत्तेहिं ओसहभेसज्जेहिं जाव तेइच्छं आउट्टामि-तं तुब्भे णं भंते! मम जाणसालासु समोसरह-तएणं थेरा भगवंतो पुंडरीयस्स पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरंति) देखकर जहां स्थविर भगवंत विराजमान थे-वहां पर वे आये वहां आकर उन्हों ने स्थविर भगवंतों को वंदना एवं नमस्कार किया-। वंदना नमस्कार करके फिर उन्हों ने उनसे इस प्रकार कहा हे भदंत! मैं कंडरीक अनगार की यथा प्रवृत्त-प्रासुक-औषध, भैषज्यों द्वारा यावत् चिकित्सा करवाऊंगा-अतः हे भदंत! आपलोग मेरी यानशाला में यहां से विहार कर पधारें-वहीं ठहरें-। इस प्रकार पुंडरीक राजा की प्रार्थना को उन स्थविर भगवंतों ने स्वीकार कर लिया-और वहां से विहार कर वे पुंडरीक राजा की यानशाला में आकर ठहर गये। (तएणं पुंडरीए राया जहामंडुए सेलगस्स जाव बलियसरीरे जाए तएणं थेरा

गारस्स अहापवत्तेहिं ओसहभेसज्जेहिं जाव तेइच्छं आउट्टामि तं तुब्भेणं भंते मम जाणसालासु समोसरह-तएणं थेरा भगवंतो पुंडरीयस्स पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरंति)

જોઇને તેઓ જ્યાં સ્થવિર ભગવંત વિરાજમાન હતા ત્યાં આવ્યા. ત્યાં આવીને તેમણે સ્થવિર ભગવંતોને વંદન અને નમસ્કાર કર્યા. વંદન અને નમસ્કાર કરીને તેમણે તેમને આ પ્રમાણે વિનંતી કરી કે હે ભદન્ત! હું કંડરીક અનગારની યથાપ્રવૃત્ત-પ્રાસુક-ઔષધ-ભૈષજ્યો (દવાઓ) વડે યાવત્ ચિકિત્સા (ઈલાજ) કરવા માગું છું. એટલા માટે હે ભદન્ત! તમે સૌ અહીંથી વિહાર કરીને મારી યાનશાળામાં આવો અને ત્યાંજ રોકાઓ આ પ્રમાણે પુંડરીક રાજાની વિનંતીને તે સ્થવિર ભગવંતોએ સ્વીકાર કરી લીધો અને ત્યાંથી વિહાર કરીને તેઓ પુંડરીક રાજાની યાનશાળામાં આવીને રોકાઇ ગયા.

(तएणं पुंडरीए राया जहा मंडुए सेलगस्स जाव बलियसरीरे जाए तएणं थेरा

यथा मण्डूको राजा शैलकस्य राजर्षेः प्रासुकैरौषधभैषज्यैश्चिकित्सामकारयत्, तथैव पुण्डरीकोऽपि कण्डरीकस्यानगारस्य यथा योग्यैरौषधभैषज्यैश्चिकित्सां कारयतिस्म यावत् कतिपयैर्दिनैः कण्डरीको बलितशरीरः=निरामयो जातः। ततः खलु स्थविरा भगवन्तः पुण्डरीकं राजानं आपृच्छन्ति, आपृच्छ्य बहिर्जनपदविहारं विहरन्ति। तत खलु स कण्डरीकः तस्मात् 'रोगायंकाओ' रोगातङ्काद् विप्रमुक्तः सन् तस्मिन् 'मनुण्णंसि' मनोज्ञे=रमणीये अशनपानखाद्यस्वाद्ये चतुर्विधे आहारे 'मुच्छिए' मूर्च्छितः=मूर्च्छां प्राप्तः=आसक्त इत्यर्थः, 'गिद्धे' गृद्धः=आकाङ्क्षावान, 'गढिए' ग्रन्थितः=रसास्वादे निबद्धमानसः, 'अज्झोववण्णे'

भगवंतो पोंडरीयं रायं पुच्छंति, पुच्छित्ता बहिया जणवयविहारं विहरंति, तएणं से कंडरीए ताओ रोयायंकाओ विप्पमुक्के समाणे तंसि मणुण्णंसि असणपाणखाइमसाइमंसि मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे णो संचाइए पोंडरीयं रायं आपुच्छित्ता बहियो अब्भुज्जएणं जणवयविहारं विहरित्तए) इसके बाद मंडूक ने जिस प्रकार शैलकराजर्षि की प्रासुक औषध, भैषज्यों द्वारा चिकित्सा करवाई थी उसी प्रकार पुंडरीक राजा ने भी कंडरीक अनगार की यथायोग्य औषध भैषज्यों द्वारा चिकित्सा करवाई–इस से वे बलितशरीर निरोग हो गये। इसके अनन्तर उन स्थविर भगवंतो ने वहां से विहार करने के लिये पुंडरीक राजा से पूछा–। बाद में वे वहां से बाहिर जनपदों में विहार कर गये। कंडरीक अनगार कि जो रोगातंकसे निर्मुक्त हो चुके थे मनोज्ञ अशन, पान, खाद्य, एवं स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार में इतने अधिक आसक्त हो गये

भगवंतो पोंडरीयं रायं पुच्छति, पुच्छित्ता बहिया जणवयविहारं विहरंति, तएणं से कंडरीए ताओ रोयायंकाओ विप्पमुक्के समाणे तंसि मणुण्णंसि–असणपाणखाइमसाइमंसि मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे णो संचाएइ पोंडरीयं रायं आपुच्छित्ता बहिया अब्भुज्जएणं जणवयविहारं विहरित्तए)

ત્યારપછી મંડૂકે જેમ શૈલક રાજર્ષિની પ્રાસુક, ઔષધ, અને ભૈષજ્યો વડે ચિકિત્સા કરાવડાવી હતી તેમજ પુંડરીક રાજાએ પણ કંડરીક અનગારની ઉચિત ઔષધ–ભૈષજ્યો (દવાઓ) વડે ચિકિત્સા કરાવડાવી. તેથી તેઓ નિરોગ–સબળ બની ગયા. ત્યારપછી તે સ્થવિર ભગવંતોએ ત્યાંથી વિહાર કરવા માટે પુંડરીક રાજાને પૂછ્યું. ત્યારબાદ તેઓ બહારના જનપદોમાં વિહાર કરી ગયા રોગાતંકોથી નિર્મુક્ત થઇ ગયેલા કંડરીક અનગાર તે મનોજ્ઞ, અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્યરૂપ ચાર જાતના આહારમાં એટલા બધા આસક્ત થઇ ગયા–ગૃદ્ધ બની ગયા, ગ્રથિત–રસના આસ્વાદનમાં નિબદ્ધ માન-

अध्युपपन्नः=सर्वथा आसक्तः सन् नो शक्नोति पुण्डरीकं राजानमापृच्छय 'बहिया' बहिः 'अब्भुज्जएणं' अभ्युद्यतेन=उग्रविहारेण खलु विहर्तुम्, किन्तु 'तत्थेव' तत्रैव=यानशालायामेव 'ओसण्णे' अवसन्नः,=शिथिलसाधुसमाचारीवान् जातः। तत खलु स पुण्डरीको राजा 'इमीसे कहाए' अस्या, कथायाः=कण्डरीकोऽनगारोऽवसन्नो जातः' इति वृत्तान्तस्य लब्धार्थः सन् स्नातः 'अंतेउरपरियालसंपरिवुडे' अन्तःपुरपरिवारसंपरिवृतः, यत्रैव कण्डरीकोऽनगारस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य, कण्डरीकं त्रिः कृत्व आदक्षिण प्रदक्षिणं करोति, कृत्वा, वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्-धन्योऽसि खलु त्वं हे देवानुप्रिय! यतस्त्वम् 'कयट्ठे' कृतार्थः=विहितजीवनकृत्यः 'कयपुन्ने' कृतपुण्यः=विहितप्रव्रजितवेषः। पुनः सुलद्धे' सुलब्धं=सुष्ठुतया प्राप्तं खलु हे देवानुप्रिय! 'तव' त्वया 'माणुस्सए' मानुष्यकं=मनुष्यसम्बन्धि, 'जम्मजीवियफले' जन्मजीवितफलम्-जन्म-

---

-गृद्ध बन गये ग्रथित-रसास्वाद में निबद्धमानसवाले हो गये, और अध्युपपन्न बन गये-अर्थात् सर्वथा आसक्त बन गये कि वहां से बाहिर उग्र विहार करने के लिये उनका मन ही नहीं हुआ-अतः उन्हों ने पुंडरीक नरेश से विहार करने की कोई बात ही नहीं पूछी किन्तु (तत्थेव-ओसन्ने जाए) वहीं पर वे रहते २ शिथिल साधुसमाचारीवाले बन गये। (तएणं से पोंडरीए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए अंतेउरपरियालसंपरिवुडे राया जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कंडरीयं अणगारं त्तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-धन्नेसिणं तुमं देवाणुप्पिया! कयत्थे कयपुन्ने कयलक्खणे सुलद्धेणं देवाणुप्पिया! तव माणुस्सजन्मजीवियफले जेणं तुमं रज्जं च जाव अंतेउरं चावि छड्डइत्ता

સવાળા થઇ ગયા અને અધ્યુપપન્ન બની ગયા એટલે કે તેઓ એકદમ આસક્ત થઇ ગયા કે ત્યાંથી બહાર ઉગ્ર વિહાર કરવા માટે પણ તેઓ તૈયાર થયા નહિ એથી તેમણે પુંડરીક રાજાને વિહાર કરવાની બાબતમાં કંઇજ પૂછ્યું નહિ પણ (तत्थेव ओसन्ने जाए) ત્યાં જ રહેતાં રહેતાં તેઓ શિથિલ સાધુ સમાચારી થઇ ગયા એટલે કે સાધુઓના આચારમાં તેઓ શિથિલ થઇ ગયા

(तएणं से पोंडरीए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए अंतेउरपरियालसंपरिवुडे राया जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कंडरीयं अणगारं त्तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-धन्नेसि णं तुमं देवणुप्पिया! कयत्थे कयपुन्ने कयलक्खणे

मानवयोनौ उत्पत्तिः, जवितम्=जीवनम्=प्राणधारणम्, तयोः फलम्=जन्मजीवितफलम्=प्रव्रज्याग्रहणमेव मनुष्यजन्मसारः, तदेव स्पष्टयति-यः खलु त्वं राज्यं च यावदन्तः पुरं च छड्डइत्ता ' छर्दयित्वा=त्यक्त्वा ' विगोवइत्ता ' विगोप्य=तिरस्कृत्य यावत् प्रव्रजितः अहं खलु अधन्यः अकृतपुण्यो राज्ये यावत् अन्तः पुरे च मानुष्यकेषु च कामभोगेषु मूर्च्छितो यावत् अध्युपपन्नो नो शक्नोमि यावत् प्रव्रजितुम् = राज्येऽन्तः = पुरे मानुष्यकेषु च कामभोगेषु निमग्नमानसोऽहं न शक्नोमि प्रव्रज्यां ग्रहीतुम् इति भावः । ' तं ' तत् = तस्मात्

विगोवइत्ता जाव पव्वइए) जब पुंडरीक राजा को " कंडरीक अनगार अवसन्न हो गये है " यह समाचार ज्ञात हुआ-तो वे स्नान कर अपने अन्त पुर परिवार को साथ, लेकर जहां कंडरीक अनगार थे वहां आये वहां आकर उन्हों ने कंडरीक अनगार को तीन बार आदक्षिण प्रदक्षिण करके वंदना की नमस्कार किया। वंदना नमस्कार करके फिर उनसे वे इस प्रकार कहने लगे-हे देवानुप्रिय ! तुम धन्य हो, तुम कृतार्थ हो, तुम कृतलक्षण हो। हे देवानुप्रिय ! तुमने मनुष्यभव संबंधी जन्म और जीवन का फल अच्छी तरह पालिया है। जो तुम राज्य यावत् अन्तःपुर का परित्याग एवं तिरस्कार कर प्रव्रजित हो गये हो। (अहण्ण अहण्णे अकयपुन्ने रज्जे जाव अंतेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने नो संचाएमि जाव पव्वइत्तए। तं धन्नेसि णं तुमं

सुलद्धेणं देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्म जीवियफले जेणं तुमं रज्जं च जाव अंतेउरं चावि छड्डइत्ता विगोवइत्ता जाव पव्वइए)

ત્યારે પુંડરીક રાજાને કંડરીક અનગારના અવસન્ન થઈ જવાના સમાચારો મળ્યા ત્યારે તેઓ સ્નાન કરીને પોતાના રણુવાસના પરિવારને સાથે લઈને જ્યાં કંડરીક અનગાર હતા ત્યાં આવ્યા. ત્યાં આવીને તેમણે કંડરીક અનગારને ત્રણ વખત આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણા કરીને વંદન તેમજ નમસ્કાર કર્યા. વંદન અને નમસ્કાર કરીને તેઓ તેમને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે ધન્ય છો, કૃતાર્થ છો, કૃત-લક્ષણ છો. હે દેવાનુપ્રિય ! મનુષ્ય ભવના જન્મ અને જીવનના ફળને સારી પેઠે મેળવી લીધુ છે કેમકે તમે ખરેખર રાજ્યને યાવત્ રણુવાસને ત્યજીને તેને તિરસ્કૃત કરીને પ્રવજિત થઈ ગયા છો.

(अहण्णं अहण्णे अकयपुन्ने रज्जे जाव अंतेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने नो संचाएमि जाव पव्वइत्तए ! तं धन्नेसि णं

कारणात् खलु ब्रवीमि यत् धन्योऽसि त्वं हे देवानुप्रिय ! 'जाव सुलब्धं जन्म-जीवितफलम्, ततः खलु स कण्डरीकोऽनगारः पुण्डरीकस्य एतमर्थं=विहाराभिप्रायकमर्थं, नो आद्रियते यावत् तूष्णीकः संतिष्ठते मौनमवलम्ब्य तिष्ठति। ततः खलु कण्डरीकः पुण्डरीकेण द्वितीयमपि तृतीयमपि=द्वित्रिवारम्, एवं=पूर्वोक्तप्रकारेण, उक्तः सन् 'अकामए' अकामकः=कामनारहितः 'अवस्सवसे' अप-

---

देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले तएणं से कंडरीए अणगारे पुंडरीयस्स एयमट्ठं णो आढाइ जाव संचिट्ठइ, तएणं कंडरीए पोंडरीएणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे अकामए अवस्सवसे लज्जाए गारवेण य पोंडरीयं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता थेरेहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरइ)
मैं अधन्य हूँ अकृतपुण्य हूँ। जो राज्य में यावत् अन्तःपुर में तथा मनुष्य संबंधी कामभोगों में मूर्छित यावत् अध्युपपन्न बना हुआ हूँ। इसीलिये प्रव्रज्या ग्रहण करने में असमर्थ हो रहा हूँ। इसी कारण से मैं यह कह रहा हूँ कि तुम धन्य हो, हे देवानुप्रिय ! तुमने ही जन्म और जीवन का फल जो प्रव्रज्या का ग्रहण करना है-वह अच्छी तरह पा लिया है। पुंडरीक राजा की विहार करने के अभिप्रायवाली इस बात को सुनकर कंडरीक अनगार ने उस पर कुछ ध्यान नहीं दिया-उसे आदर की दृष्टि से नहीं देखा-किन्तु वे उसे सुनकर भी चुपचाप बैठ रहे। कंडरीक अनगार की इस स्थिति को देखकर पुंडरीक ने दूसरी बार और तीसरी

तुमं देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले तएणं से कंडरीए अणगारे पुंडरीयस्स एयमट्ठं णो आढाइ, जाव संचिट्ठइ, तएणं कंडरीए पोंडरीएणं दोच्चंपि तच्चंपि एवंवुत्ते समाणे अकामए अवस्सवसे लज्जाए गारवेण य पोंडरीयं रायं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता थेरेहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरइ)

હું તો અધન્ય અને અકૃતપુણ્ય છું કેમકે હું તો રાજ્યમાં યાવત્ રણુવાસમાં તેમજ મનુષ્યભવના કામભોગોમાં મૂર્છિત યાવત્ અધ્યુપપન્ન બની રહ્યો છું, એટલા માટેજ પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરવામાં અસમર્થ થઇ રહ્યો છું. એથી જ હું આ કહી રહ્યો છું-કે તમે ખરેખર ધન્ય છો. હે દેવાનુપ્રિય ! તમે જ જન્મ અને જીવનનું ફળ કે જે પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરવા રૂપ છે-તે સારી રીતે મેળવી લીધું છે. તેઓ ત્યાંથી વિહાર કરી જાય તે આશયથી કહેલા તે પુંડરીકના વચનો સાંભળીને કંડરીક અનગારે તેની કશી જ દરકાર કરી નહિ તે વાતને તેમણે સન્માનની દૃષ્ટિએ સ્વીકારી નહિ. આ બધુ સાંભળીને પણ તેઓ ત્યાંજ મૂંગા થઇને બેસી જ રહ્યા. કંડરીક અનગારની આ સ્થિતિ જોઇને

स्ववशः=अपगतस्वातन्त्र्यः सन् 'लज्जाए' लज्जया, 'गारवेण' गौरवेण=साधुत्वगौरवेण च पुण्डरीकं राजानमापृच्छति, आपृच्छय स्थविरैः सार्द्धं बहिर्जनपदविहारं विहरति ॥ सू० ३ ॥

मूलम्--तएणं से कंडरीए थेरेहिं सद्धिं किंचिकालं उग्गं उग्गेणं विहरइ। तओ पच्छा समणत्तणपरितंते समणत्तणणिव्विण्णे समणत्तणणिब्भच्छिए समणगुणमुक्कजोगी, थेराणं अंतियाओ सणियं२ पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता, जेणेव पुंडरिगिणी णयरी जेणेव पुंडरीयस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि णिसीयइ णिसीइत्ता, ओहयमणसंकप्पे जाव झियायमाणे संचिट्ठइ। तएणं तस्स पोंडरीयस्स अम्मधाई जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कंडरीयं अणगारं असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टयंसि ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणं पासइ, पासित्ता जेणेव पोंडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोंडरीयं रायं एवं-वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! तव पिउभाउए कंडरीए अणगारे असोगवणियाए असोगवर-

वार जब उनसे पूर्वोक्त प्रकारसे कहा-तब उन्हों ने नहीं इच्छा होने पर भी स्ववशताका अभाव होनेके कारण लज्जावश होकर साधुत्वके गौरवके ख्याल से-पुंडरीक राजा से विहार करनेकी बात पूछी-पूछकर फिर वे वहां से स्थविरोंके साथ बाहिरके जनपदों में विहार कर गये ॥सू० ३॥

પુંડરીકે બીજી અને ત્રીજી વાર પણ જ્યારે પહેલાં મુજબ જ વાત કહી ત્યારે તેમણે પોતાની ઈચ્છા નહિ હોવા છતાંએ લાચાર થઈને, લજ્જિત થઈને, સાધુત્વના ગૌરવને લક્ષ્યમાં રાખીને પુંડરીક રાજાને વિહાર કરવાની વાત પૂછી. પૂછીને તેઓ ત્યાંથી સ્થવિરોની સાથે બહારના જનપદોમાં વિહાર કરી ગયા. સૂ. ૩

पायवस्स अहे पुढविसिलावट्टे ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ। तएणं पोंडरीए अम्मधाईए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म तहेव संभंते समाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता, अंतेउरपरियालसंपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जाव कंडरीयं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ करित्ता, एवं वयासी—धण्णेसि णं तुमं देवाणुप्पिया! जाव पव्वइए। अहण्णं अधण्णे३ जाव नो पव्वइत्तए। तं धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया! जाव जीवियफले। तएणं कंडरीए पुंडरीएणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठइ, दोच्चंपि तच्चंपि जाव संचिट्ठइ। तएणं पोंडरीए कंडरीयं एवं वयासी--अट्ठो भंते! भोगेहिं? हंता अट्ठो तएणं से पोण्डरीए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता, एवं वयासी--खिप्पामेव भो देवानुप्पिया! कंडरीयस्स महत्थं जाव रायाभिसेअं उवट्ठवेह जाव रायाभिसेएणं अभिसिंचइ ॥ सू० ४ ॥

टीका—'तएणं से' इत्यादि। ततः खलु स कण्डरीकः स्थविरैः सार्धं किंचित् कालम् 'उग्गं उग्गेणं' उग्रोग्रेण—अत्युग्रेण विहारेण विहरति। ततः पश्चात् 'समणत्तणपरितंते' श्रमणत्वपरितान्तः=श्रमणधर्मपरिपालने खिन्नः पुनः

'तएणं से कंडरीए थेरेहिं सद्धिं' इत्यादि।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से कंडरीए) वे कंडरीक (थेरेहिं सद्धिं) स्थविरों के साथ (किंचिकालं) कुछ काल पर्यन्त (उग्गं उग्गेणं) अत्युग्रविहार करने में (विहरइ) लग गये (तओपच्छा समणत्तण

'तएणं से कंडरीए थेरेहिं सद्धिं' इत्यादि।

टीकार्थ—(तएणं) त्यारपछी (से कंडरीए) ते कंडरीक (थेरेहिं सद्धिं) स्थविरोनी साथे (किंचिकालं) थोडा वखत सुधी तो (उग्गंउग्गेणं) अतीव उग्र विहार करवामां (विहरइ) प्रवृत्त थया (तओ पच्छा समणत्तण परितंते)

'समणत्तणनिव्विण्णे' श्रमणत्वनिर्विण्णः=साधुभावे औदासीन्यं प्राप्तः 'समणत्तणणिब्भच्छिए' श्रमणत्वनिर्भर्त्सितः=श्रमणत्वं निर्भर्त्सितं येन सः=साधुभावानादरपरायणः, अतएव 'समणगुणमुक्कजोगी' श्रमणगुणमुक्तयोगी=श्रमणगुणेभ्यो-मुक्तः=रहितो योगः योगः=मनोवाक्कायरूपः, सोऽस्यास्तीतित्यक्तश्रमणगुणइत्यर्थः, स्थविराणामन्तिकात् शनैः शनैः प्रत्यवष्वस्कते=पश्चादागच्छति, प्रत्यवष्वस्क्य, यत्रैव पुण्डरीकिणी नगरी यत्रैव पुण्डरीकस्य भवनं तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य अशोकवनिकायाः=अशोकवाटिकायाः अशोकवरपादपस्य अधः पृथ्वीशिलापट्टके निषीदति=उपविशति, निषद्य, 'ओहयमणसंकप्पे' अवहतमनः संकल्पः=अवहतो-मनः संकल्प =मनोव्यापारो यस्य सः=अपगतमानसिकव्यापारः, 'जाव झियाय--

---

परितंते) बाद में वे श्रमणधर्म के परिपालन करने में खिन्न चित्त बन गये (समणत्तणणिव्विण्णे समणत्तणणिब्भच्छिए समणगुणमुक्कजोगी थेराणं अंतियाओ सणिय २ पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता जेणेव पुंडरिगिणी णयरी जेणेव पुंडरीयस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ) साधुभाव के निर्वाह करने में उदासीनता को प्राप्त हो गये-साधुभाव के प्रति उनमें अनादर भाव आ गया अत एव वे श्रमण गुणों से मुक्त योगवाले बन गये-श्रमण के गुणों का उन्हों ने परित्याग कर दिया। इस तरह वे धीरे २ स्थविरों के पास से खिसककर एक दिन जहां पुंडरीकिणी नगरी थी और उसमें भी जहां पुडरीक राजा का भवन था वहां पर आ गये-। (उवागच्छित्ता असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिला पट्टयंसि णिसीयइ, णिसीइत्ता ओहयमणसंकप्पे जाव झियायमाणे

त्यारपछी तेओ श्रमण धर्मना पालनमां खिन्नचित्त-उदास बनी गया.

(समणत्तणणिव्विण्णे समणत्तणणिब्भच्छिए समणगुणमुक्कजोगी थेराणं अंतियाओ सणियं २ पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता जेणेव पुंडरागिणी णयरी जेणेव पुंडरीयस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ)

तेओ साधुभावने नभाववामां उदास बनी गया. साधुभाव प्रत्ये तेमनामां अनादर भाव उत्पन्न थई गयो, एथी तेओ श्रमण-गुणोथी मुक्त योगवाळा बनी गया एटले के श्रमणना गुणोने तेमणे त्यजी दीधा. आ प्रमाणे तेओ धीमे धीमे स्थविरोनी पासेथी चुपचाप नीकळीने एक दिवस ज्यां पुंडरिकिणी नगरी हती अने तेमा पण ज्यां पुंडरीक राजानुं भवन हतुं, त्यां आवी गया.

(उवागच्छित्ता असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि, णिसीयइ, णिसीइत्ता ओहयमणसंकप्पे जाव झियायमाणे संचिट्ठइ, तएणं

माणे ' यावद्ध्यायन्=आर्त्तध्यानं कुर्वन् संतिष्ठते । ततः खलु तस्य पुण्डरीकस्य राज्ञोऽम्बधात्री यत्रैव अशोकवनिका तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य कण्डरीकमनगारम् अशोकवरपादपस्य अधः पृथिवीशिलापट्टकेऽपहतमनःसंकल्पं यावद् ध्यायन्तं पश्यति, दृष्ट्वा, यत्रैव पुण्डरीको राजा तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य पुण्डरीकं राजानमेवमवादीत्-एवं खलु देवानुप्रिय ! तव ' पिउभाउए ' प्रियभ्राता कण्डरीकोऽनगारोऽशोकवनिकाया अशोकवरपादपस्य अधः पृथ्वीशिलापट्टके अवहतमनः संकल्पो यावद्ध्यायति । ततः खलु पुण्डरीकः अम्बधात्र्या एतमर्थं=कण्डरीकस्य

संचिट्ठइ, तएणं तस्स पोंडरीयस्स अम्मधाई जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कंडरीयं अणगारं असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टयंसि ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणं पासइ, पासित्ता जेणेव पोंडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोंडरीयं रायं एवं वयासी) वहां आकर वे अशोक वाटिका में अशोक वृक्ष के नीचे पृथिवीशिला पट्टक पर बैठ गये। बैठकर अपहत मानसिक व्यापारवाले होकर वे वहां आर्त्तध्यान करने लगे। इतने में पुंडरीक राजा की अम्बधात्री-धायमाता उस अशोक वाटिका में आई-वहां आकर उसने कंडरीक अनगार को अशोक पादप के नीचे पृथिवीशिला पट्टक पर चिन्तामग्न देखा-देखकर वह जहां पुंडरीक राजा थे वहां आई-वहां आकर उसने पुंडरीक राजा से इस प्रकार कहा-(एवं खलु देवाणुप्पिया ! तव पिउभाउए कंडरीए अणगारे असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टे ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ) हे देवानुप्रिय !

तस्स पोंडरीयस्स अम्मधाई जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कडरीय `अणगार' असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टयसि ओहयमणसंक प्पं जाव झियायमाण पासइ, पासित्ता जेणेव पोंडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोंडरीय रायं एवं वयासी)

ત્યાં આવીને તેઓ અશોક વાટિકામાં અશોક વૃક્ષની નીચે પૃથ્વિશિલા પટ્ટક ઉપર બેસી ગયા. ત્યાં બેસીને તેઓ અપહત માનસિક વ્યાપારવાળા (ઉદાસ) થઈને આર્ત્તધ્યાન કરવા લાગ્યા એટલામાં પુંડરીક રાજાની અંબધાત્રી-ધાયમાતા-અશોક વાટિકામાં આવી. ત્યાં આવીને તેણે કંડરીક અનગારને અશોક વૃક્ષની નીચે પૃથ્વિશિલા ઉપર આર્તધ્યાન કરતા જોયા. જોઈને તે જ્યાં પુંડરીક રાજા હતા ત્યાં આવીને તેણે પુંડરીક રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે

(एवं खलु देवाणुप्पिया ! तव पिउभाउए कंडरीए अणगारे असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टे ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ)

अशोकवनिकामध्यगताशोकवृक्षाधः स्थितस्यार्तध्यानरूपमर्थं श्रुत्वा निशम्य=हृद्य-वधार्य 'तहेव' तथैव=यथास्थितस्तथैव 'संभंते समाणे' सम्भ्रान्तः सन्-'कथं पुनरसौ समागत' इति शङ्कितः सन् उत्थाय उत्तिष्ठति=झटिति उत्तिष्ठती-त्यर्थः, उत्थाय. अन्तः पुरपरिवारसंपरिवृतः यत्रैव अशोकवनिका यत्रैव कण्डरीको-ऽनगारस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य 'तिक्खुत्तो' त्रि कृत्वः=वारत्रयम् आद-क्षिणप्रदक्षिणं करोति, कृत्वा एवमवादीत्-'धण्णेसि णं तुमं देवाणुप्पिया! जाव पव्वइए' धन्योऽसि खलु त्वं हे देवानुप्रिय! यावत् प्रव्रजितः। अहं खलु 'अधण्णे' ३ अधन्यः ३ यावत् नो शक्नोमि प्रव्रजितुम्। 'तं' तस्मात्कारणात् 'धन्नेसि' धन्योऽसि खलु त्वं हे देवानुप्रिय! 'जाव जीवियफले' यावत् जीवितफलम्=त्वया जन्मजीवितफलं सुलब्धम् इति भावः। ततः खलु कण्डरीकेण एवं=प्रशंसापरवचनैरुक्तः सन् तूष्णीकः संतिष्ठते, 'दोच्चंपि तच्चंति' द्वितीय-मपि तृतीयमपि वारं पूर्वप्रकारेण उक्तः सन् 'जाव संचिट्ठइ' यावत् संतिष्ठते=मौनमवलम्ब्य स्थित इतिभावः। ततः खलु पुण्डरीकः कण्डरीकमेवमवादीत्-अट्ठो-

---

सुनिये-तुम्हारे प्रिय भाई कंडरीक अनगार अशोक वाटिका में अशोक वृक्षके नीचे पृथिवीशिलापट्टक पर अपहतमनःसंकल्प होकर यावत् चिन्ता मग्न बैठे हुए हैं (तएणं पोंडरीए अम्मधाईए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म तहेव संभंते समाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता अंतेउरपरियालसंपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जाव कंडरीयं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता एवं वयासी धण्णेसि णं तुमं देवाणुप्पिया! जाव पव्वइए अहण्णं अधण्णे ३ जाव नो पव्वइत्तए तं धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया! जाव जीवियफले-तएणं कंडरीए पुंडरीएणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठइ, दोच्चंपि तच्चंपि जाव संचिट्ठइ, तएणं पोंडरीए कंडरीयं एवं वयासी अट्ठो भंते! भोगेहिं! हंता अट्ठो! तएणं से पोंडरीए राया कोडुं-

---

હે દેવાનુપ્રિય! સાંભળો, તમારા પ્રિય ભાઈ કંડરીક અનગાર અશોક વાટિકામાં અશોક વૃક્ષની નીચે પૃથ્વિશિલા પટ્ટક ઉપર અપહતમન સંકલ્પ થઈને યાવત્ ચિંતામગ્ન થઈને બેસી રહ્યા છે

(तएणं पोंडरीए अम्मधाईए एयमट्ठं सोचा णिसम्म तहेव संभंते समाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता अंतेउरपरिपालसपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जाव कंड-रीयं तिक्खुचो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता एवं वयासी धण्णेसि णं तुमं देवाणुप्पिया! जाव पव्वइए अहण्णं अधण्णे २ जाव नो पव्वइत्तए तं धन्नेसिणं तुमं देवाणुप्पिया! जाव जीवियफले तएणं कंडरीए पुंडरीएणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठइ, दोच्चंवि, तच्चंवि जाव संचिट्ठइ, तएणं पोंडरीए कंडरीयं एवं वयासी, अट्ठो भंते! भोगेहिं? हंता अट्ठो! तएणं से पोंडरीए राया कोडुंबिय

षियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दाविता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! कंडरीयस्स महत्थं जाव रायाभिसेअं उवट्ठवेह, जाव रायाभिसेएणं अभिसिंचइ) इस प्रकार अम्बाधाय के मुख से इस बात को सुनकर और उसे चित्त में जमाकर जैसे बैठे हुए थे उसी तरह संभ्रान्त होते हुए-ये क्यों आये हैं-इस प्रकार शंकित चित्त होते हुए-उत्थानशक्ति से उठे बहुत जल्दी सुनते ही प्रमाण-उठे और उठकर अन्तःपुर के परिवार को साथ लेकर जहां अशोक वनिका थी-वहां पर आये-वहां आकर कंडरीक अनगार के पास पहूँचे- वहां पहूँच कर उन्हों ने उन्हें तीन वार आदक्षिण प्रदक्षिण किया बाद में वे कहने लगे-हे देवानुप्रिय! तुम्हें धन्यवाद है-जो तुम राज्य एवं अन्तःपुर का परित्याग कर प्रव्रजित हो गये हो इत्यादि जिस प्रकार पहिले उनसे कहा था इसी प्रकार अब भी कहा मै अधन्य हूँ-३-जो यावत् दीक्षित होने के लिये शक्तिशाली नहीं हो रहा हूँ। इसलिये हे देवानुप्रिय! आपके लिये धन्यवाद है-आपने जन्म और जीवन का फल अच्छी तरह प्राप्त कर लिया है। इस तरह प्रशंसा परक वचनों से पुंडरीक राजा द्वारा कहे गये वे कंडरीक अनगार कुछ भी नहीं बोले-किन्तु चुपचाप ही बैठे रहे-। जब पुंडरीक राजा ने उनकी इस प्रकार की स्थिति देखी-तब दुबारा तिबारा भी उन्हों ने

पुरिसे सद्दावेइ, सद्दाविता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! कंडरीयस्स महत्थं जाव रायाभिसेअं उवट्ठवेह, जाव रायाभिसेएणं अभिसिंचइ)

આ પ્રમાણે અંબાધાયના મુખથી આ વાત સાંભળીને અને તેને મનમાં ધારણ કરીને જેવી સ્થિતિમાં તેઓ બેઠા હતા તેવી જ સ્થિતિમાં સ્તબ્ધ થઈને "તેઓ કેમ આવ્યા છે" આ પ્રમાણે શંકાયુક્ત થતાં-ઉત્થાન શક્તિ વડે તેઓ ઊભા થયા અને ઊભા થઈને જલ્દી રણવાસના પરિવારને સાથે લઈને જ્યાં અશોક વાટિકા હતી ત્યાં આવ્યા. ત્યાં આવીને કંડરીક અનગારની પાસે પહોંચ્યા. ત્યાં પહોંચીને તેમણે તેમને ત્રણવાર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણા કર્યા બાદ કહેવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિય! તમને ખરેખર ધન્યવાદ ઘટે છે કે જો તમે રાજ્ય અને રણવાસનો ત્યાગ કરીને પ્રવ્રજીત થઈ ગયા છો, વગેરે જેમ પહેલાં કહ્યું હતું તેમજ તે વખતે પણ કહ્યું. હુ તો અધન્ય છું-૩-જે યાવત્ દીક્ષા ગ્રહણ કરવાનું પણ સામર્થ્ય ધરાવતો નથી. એથી હે દેવાનુપ્રિય! તમને ધન્ય છે, તમોએ ખરેખર પોતાનાં જન્મ અને જીવનનું ફળ સારી રીતે પ્રાપ્ત કરી લીધું છે. આ પ્રમાણે પ્રશંસાજનક વચનોથી પુંડરીક રાજા વડે સંબોધિત કરાયેલા તે કંડરીક અનગાર કંઈપણ બોલ્યા નહિ, તેઓ મૂંગા થઈને બેસીજ

भंते ! भोगेहिं ' अर्थो हे भदन्त ! भोगैः ?=किं भोगैः प्रयोजनमस्ति ? इति, कण्डरीकः प्राह–' हंता ! अट्ठो '=हन्त ! अर्थः=भोगमुपभोक्तुमानन्दोऽस्मीति-भावः । ततः खलु=कण्डरीकाभिप्रायज्ञानानन्तरमित्यर्थः, स पुण्डरीको राजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा, एवमवदत् – क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः ! कण्डरीकस्य महार्थम्=अत्यर्थम् ' जाव रायाभिसेयं ' यावत् राजाभिषेकम् ' उवट्ठवेइ ' उपस्थापयत=परिकल्पयत, ' जाव रायाभिसेएण अभिसिंचइ ' यावत् राज्याभिषेकेण अभिषिञ्चति स पुण्डरीको राजा कण्डरीकं राजपदे स्थापयति ॥ सू० ४ ॥

मूलम्–तएणं पुंडरीए सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ,

उनसे ऐसा ही कहा परन्तु फिर भी उन्हों ने कुछ नहीं ध्यान दिया केवल मौन धारण कर ही बैठे रहे–तब पुनः पुंडरीकने उन कंडरीक अनगार से इस प्रकार कहा–हे भदन्त ! क्या आप को भोगों से तात्पर्य है ? तब कंडरीक ने कहा-हां–मेरा मन भोगों को उपभोग करने के लिये हो रहा है । इस तरह कंडरीक का अभिप्राय जानने के बाद पुंडरीक राजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और बुलाकर उनसे ऐसा कहा–भो देवानुप्रियो तुम लोग कंडरीक के लिये राज्याभिषेक योग्य सामग्री एकत्रित कर लेआओ पुंडरीक राजा की इस आज्ञा के अनुसार, उनलोगों ने वैसा ही किया–जब राज्याभिषेक सामग्री उपस्थित हो चुकी–तब पुंडरीकने कंडरीक का राज्याभिषेककर दिया–कंडरीक को राजपद में स्थापित कर दिया ॥ सूत्र ४ ॥

રહ્યા. પુંડરીક રાજાએ તેમની આવી સ્થિતિ જોઇને બીજી અને ત્રીજી વખત પણ આ પ્રમાણે જ કહ્યું. પણ તેમણે તેની કંઈ દરકાર કરી નહિ તેઓ ફક્ત મૂંગા થઇને બેસી જ રહ્યા ત્યારે ફરી પુંડરીકે તે કંડરીક અનગારને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ભગવન્ ! તમને શું હજી ભોગ ઉપભોગોની ઇચ્છા છે ? ત્યારે કંડરીકે કહ્યું કે હા, ખરેખર મારૂ મન ભોગ ઉપભોગમાં પ્રવૃત્ત થવા ઇચ્છે છે. આ પ્રમાણે કંડરીકની ઇચ્છા જાણીને પુંડરીક રાજાએ કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો કંડરીક માટે–રાજ્યાભિષેક યોગ્ય સામગ્રી ભેગી કરો. પુંડરીક રાજાની આ પ્રમાણે આજ્ઞા સાંભળીને તે લોકોએ તેમજ કર્યું. જ્યારે રાજ્યાભિષેકની બધી વસ્તુઓ એકત્રિત થઇ ગઈ ત્યારે પુંડરીકે કંડરીકનો રાજ્યાભિષેક કરી દીધો. એટલે કે કંડરીકને રાજ્યાસને બેસાડી દીધો. ॥ સૂત્ર ૪ ॥

करित्ता, सयमेव चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता कंडरीयस्स संतियं आयारभंडयं गेण्हइ, गेण्हित्ता, इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ-कप्पइ मे थेरे वंदित्ता णमंसित्ता थेराणं अंतिए चाउज्जामं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं तओ पच्छा आहारं आहरित्तए त्तिकट्टु, इमं च एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हेत्ता णं पोंडरिगिणीए पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता, पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव पहारेत्थ गमणाए॥सू०५॥

टीका—'तएणं पुंडरीए' इत्यादि। ततः खलु पुण्डरीकः स्वयमेव पञ्चमुष्टिकं लोचं करोति, तथा स्वयमेव 'चाउज्जामं' चातुर्यामं=चतुर्महाव्रतलक्षणं धर्मं प्रतिपद्यते, प्रतिपद्य, 'कंडरीयस्स संतियं' कण्डरीकस्य सत्कम्=कण्डरीकसम्बन्धि इत्यर्थः, 'आयारभंडयं' आचारभाण्डकं आचाराय=साधोः पञ्चविधाचारपरिपालनाय यद्भाण्डकं=वस्त्रपात्रसदोरकमुखवस्त्रिकारजोहरणादिरूपम् तद्

'तएणं पुंडरीए सयमेव पंचमुट्ठियं' इत्यादि।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (पुंडरीए) पुंडरीक ने (सयमेव) अपने आप (पंचमुट्ठियं लोयं करेइ) अपना पंचमुष्टिक लोंच किया-(करित्ता सयमेव चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जइ पडिवज्जित्ता कंडरीयस्स संतियं आयारभंडयं गेण्हइ) और लोंच करके स्वयं ही उन्होंने-चातुर्याम-चतुर्महाव्रत रूप धर्म को धारण कर लिया। एवं कंडरीक के अनगार अवस्था संबन्धी आचार भाण्डक को-वस्त्र, पात्र, सदोरक मुखवस्त्रिका, रजोहरण आदिरूप साधु चिह्नों को-ले लिया। (गेण्हित्ता इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ, कप्पइ मे थेरे वंदित्ता णमंसित्ता

'तएण पुंडरीए सयमेव पंचमुट्ठियं' इत्यादि।

टीकार्थ—(तएणं) त्यारपछी (पुंडरीए) पुंडरीके (सयमेव) पोतानी जाते ज (पंचमुट्ठियं लोयं करेइ) पोतानुं पंचमुष्टिक लुंचन कर्युं.

(करित्ता सयमेव चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता कंडरीयस्स संतियं आयारभंडयं गेण्हइ)

अने लुंचन करीने जाते ज तेमणे चातुर्याम-चतुर्महाव्रत रूपधर्मने धारण करी लीधो. अने कंडरीकनी अनगार अवस्था संबंधी आचार भांडको-वस्त्र, पात्र, सदोरक मुखवस्त्रिका, रजोहरण वगेरे साधु चिह्नोने लई लीधां

गृह्णाति, गृहीत्वा, इममेतद्रूपं=वक्ष्यमाणमभिग्रहं=प्रतिज्ञाविशेषम् अभिगृह्णाति=करोति अभिग्रहस्वरूपमाह—कल्पते मे स्थविरान् वन्दित्वा नमस्यित्वा स्थविराणामन्तिके चातुर्यामं धर्मम् 'उवसंपज्जित्ताणं' उपसंपद्य=स्वीकृत्य, ततः पश्चात्—आहारमाहर्तुम् इति कृत्वा निश्चित्य, इमं च एतद्रूपम् अभिग्रहम्, अभिगृह्य खलु पुण्डरीकिण्याः प्रतिनिष्क्राम्यति निस्सरति, प्रतिनिष्क्रम्य 'पुव्वाणुपुव्विं' पूर्वानुपूर्व्या चरन्, ग्रामानुग्रामं द्रवन् यत्र स्थविरा भगवन्तस्तत्रैव प्राधारयद्=गमनाय गन्तुं प्रस्थितः ॥ सू०५ ॥

थेराणं अंतिए चाउज्जामं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं, तओ पच्छा आहारं आहरित्तए) बाद में उन्होंने इस प्रकार अभिग्रह धारण किया कि जबतक मैं स्थविर भगवंतो को वंदना नमस्कार कर उनके पाससे चातुर्याम धर्मको धारण नहीं कर लूंगा, तबतक मैं आहार पानी ग्रहण नहीं करूँगा उनके पास चातुर्याम धर्म धारण करके ही आहार ग्रहण करूँगा (त्ति कट्टु इमंच एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हित्ता णं पोंडरिगिणीए पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव पहारेत्थ गमणाए) इस प्रकार का यह अभिग्रहण कर वे उस पुंडरीकिणी नगरी से निकले—और निकल कर तीर्थंकर परम्परानुसार विहार करते हुए एवं एक ग्राम से दूसरे ग्राम में विचरण करते हुए वे उस ओर प्रस्थित हुए कि जहां स्थविर भगवंत विराजमान थे ॥ सूत्र ५ ॥

(गेण्हित्ता इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ, कप्पइ, मे थेरे वंदित्ता णमंसित्ता थेराण अंतिए चाउज्जामं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं, तओपच्छा आहारं आहरित्तए)

त्यारमाद तेमणे आ जातनो अभिग्रह धारण कर्यो के ज्यां सुधी हुं स्थविर भगवंतोने वंदना तेमज नमस्कार करीने तेमनी पासेथी चातुर्याम धर्मने धारण नहि करुं त्यां सुधी हुं आहार पाणी ग्रहण करीश नहि. तेमनी पासेथी चातुर्याम धर्मने धारण करीने ज हुं आहार ग्रहण करीश.

(त्ति कट्टु इमं च एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हित्ताणं पोंडरिगिणीए पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

आ प्रमाणे ते अभिग्रहने मनमां धारण करीने तेओ ते पुंडरीकिणी नगरीनी बहार नीकळ्या अने नीकळीने तीर्थंकर परंपरा मुजब विहार करतां करतां अने आ प्रमाणे एक गामथी बीजे गाम विचरण करतां करतां तेओ ज्यां स्थविर भगवंतो विराजमान हता ते तरफ प्रस्थान कर्युं. ॥सू०५॥

मूलम्--तएणं तस्स कंडरीयस्स रण्णो तं पणीयं पाण-भोयणं आहारियस्स समाणस्स अतिजागरिएण य अइ-भोयणप्पसंगेण य से आहारे णो सम्मं परिणमइ। तएणं तस्स कंडरीयस्स रण्णो तंसि आहारंसि अपरिणममाणंसि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि सरीरंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला विउला पगाढा जाव दुरहियासा पित्तज्जरपरिगय-सरीरे दाहवक्कंतीए यावि विहरइ। तएणं से कंडरीए राया रज्जे य रट्ठे य अंतेउरे य जाव अज्झोववन्ने अट्टदुहट्टवसट्टे अकामए अवस्सवसे कालमासे कालं किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरयंसि नेरइयत्ताए उववण्णे। एवामेव समणाउसो! जाव पव्वइए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसाए जाव अणुपरियट्टि-स्सइ, जहा व से कंडरीए राया ॥ सू० ६ ॥

टीका—'तएणं तस्स' इत्यादि। ततः खलु तस्य कण्डरीकस्य राज्ञस्तं 'पणीयं' प्रणीतम् = सरसं गरिष्ठं च पानभोजनम् 'आहारियस्स समाणस्स' आहारितस्य सतः=आहारं कुर्वतः सतः 'अइजागरियेण य' अतिजागरितेन च=

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (तस्स कंडरीयस्स रण्णो) उस कंड रीक राजा के (तं पणीयं पाणभोयणं आहारीयस्स समाणस्स अतिजा-गरिएणय अइभोयणप्पसंगेणय से आहारे णो सम्मं परिणमइ) इस प्रणीत-सरस-गरिष्ठ पान भोजन के खाने से तथा विषयों की अधिक आसक्ति के कारण अतिजागरण करने से एवं प्रमाणाधिक भोजन के

'तएणं तस्स कंडरीयस्स रण्णो' इत्यादि।

टीकार्थ—(तएणं) त्यारपछी (तस्स कंडरीयस्स रण्णो) ते कंडरीक राजाने (तं पणीयं पाणभोयणं आहारियस्स समाणस्स अतिजागरिएण य अईभो-यणप्पसंगेण य से आहारे णो सम्मं परिणमइ)

ते प्रणीत-सरस-गरिष्ठ पान भोजनना आहारथी तेमज विषयोमां वधारे पडती आसक्तिना लीधे, वधारे जागरण करवाथी, अने प्रमाण करतां

विषयासक्तेरतिजागरणया 'अइभोयणप्पसंगेण' अतिभोजनप्रसङ्गेन=प्रमाणाधिक-भोजनेन स आहारो नो सम्यक् परिणमति=यथावदाहारस्य परिपाको न भवति। ततः खलु तस्य कण्डरीकस्य राज्ञः 'तंसि' आहारंसि' तस्मिन् आहारे 'अपरिणममाणंसि' अपरिणमति=परिपाकमगच्छति सति 'पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि' पूर्वरात्रापररात्रकालसमये=रात्रेर्मध्यभागे 'सरीरंसि' शरीरे वेदना प्रादुर्भूता, कीदृशीवेदना? उज्ज्वला=सुखलेशरहिता, विपुला=विशाला-सर्वशरीरव्याप्ता 'पगाढा' प्रगाढा 'जाव दुरहियासा' यावद् दुरधिसह्या=सोढुमशक्या, पुनः स कण्डरीको राजा 'पित्तज्जरपरिगयसरीरे' पित्तज्वर परिगतशरीरः=पित्तज्वरेण परिगतं=व्याप्तं शरीरं यस्य सः=पित्तज्वरपरिव्याप्तशरीरः 'दाहवक्कंतीए' दाहव्युत्क्रान्तिकः=दाहज्वरज्वालासमाक्रान्तः चापि विहरति=आस्ते। ततः खलु स कण्डरीको राजा राज्ये च राष्ट्रे च अन्तःपुरे च 'जाव अज्झोववन्ने' यावत्

प्रसंग से कृत आहार का परिपाक ठीक २ नहीं होता रहा-(तएणं तस्स कंडरीयस्स रण्णो तंसि आहारंसि अपरिणममाणंसि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि सरीरंसि वेयणा पाउब्भुया उज्जला विउला पगाढा जाव दुरहियासा पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए यावि विहरइ) इसलिये एक दिन की बात है कि उन कंडरीक राजा के जब वह कृत सरस गरिष्ठ आहार अच्छी तरह नहीं पचा तब उनके शरीर मे रात्रि के मध्यभागमें वेदना प्रादुर्भूत हुई। जिस वजह से वह वेदना सुख के लेश से वर्जित थी उनके समस्त शरीर भर में व्याप्त हो रही थी बहुत अधिक थी-यावत् वह उन्हें दुरधिसह्य हो रही थी। पित्तज्वर से व्याप्त है शरीर जिन का ऐसे वे कंडरीक राजा दाहज्वर की ज्वाला

પણ વધારે ભોજન પ્રસંગોમાં કરેલા આહારનું પાચન બરાબર થતું નહોતું.

(तएणं तस्स कंडरीयस्स रण्णो तंसि आहारंसि अपरिणममाणंसि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि सरीरंसि वेयणा पाउब्भुया उज्जला विउला पगाढा जाव दुरहियासा पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए यावि विहरइ)

એથી એક દિવસની વાત છે કે તે કંડરીક રાજાને જ્યારે ભોજન રૂપમા લીધેલા તે સરસ અને ગરિષ્ઠ આહારનું સારી રીતે પાચન થયુ નહિ ત્યારે રાત્રિના મધ્ય ભાગમાં તેમના શરીરમાં વેદના થવા માંડી, તેથી તેઓ ખૂબ જ દુઃખી થયા. આ વેદનામા માત્ર દુઃખ જ થતું હતું, તે વેદના તેમના સંપૂર્ણ શરીરમાં વ્યાપ્ત થઈ રહી હતી. પ્રમાણમાં તે બહુ જ વધારે હતી. યાવત્ તે તેમના માટે દુરધિસહ્ય (અસહ્ય) થઈ પડી હતી પિત્તજ્વરથી વ્યાપ્ત થયેલા શરીરવાળા તે કંડરીક રાજા દાહજ્વરની જ્વાળાઓથી સળગી ઉઠયા.

अध्युपपन्नः-मूर्च्छितो गृद्धः ग्रथितः अध्युपपन्नः राज्यादिषु सर्वथासक्त इत्यर्थः, 'अट्टदुहट्टवसट्टे' आर्तदुःखार्तवशार्तः=तत्र=आर्त्तः=मनसा दुःखितः, दुःखार्तः= देहदुःखयुक्तः, वशार्तः=राज्यराष्ट्रान्तः पुराद्यासक्तेन्द्रियवशेन विषयसुखवियोग-सम्भावनया पीडितः=आर्त्तध्यानोपगत इत्यर्थः। 'अकामए' अकामकः=अनिच्छकः-मरणवाञ्छारहितः, 'अवसवसे' अपस्ववशः=अपगतस्वातन्त्र्यः पराधीनः सन् कालमासे कालं कृत्वा 'अहे सत्तमाए' अधः सप्तम्यां पृथिव्याम् तमस्तमः प्रभाख्ये सप्तमे नरके 'उक्कोसकालट्ठिइयंसि' उत्कृष्टकालस्थितिके नरके

से भी युक्त हो गये। (तएणं से कंडरीए राया रज्जे य रट्ठे य अंतेउरे य जाव अज्झोववन्ने अट्टदुहट्टवसट्टे अकामए अवसवसे कालमासे कालं किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयसि नरयंसी नेरइयत्ताए उववण्णे) इस तरह दुःखित बने हुए वे कंडरीक राजा राज्य राष्ट्र, एवं अन्तपुर में अध्युपपन्न हो गये इस प्रकार राज्यादिकों में सर्वथा आसक्तिभाव से बंधे हुए वे राजा मन से दुःखित होकर, देह के दुःख से एकक्षण अर्तध्यान में पड़ गये। अन्त में वे, ये नहीं चाहते थे कि मेरी मृत्यु हो जावे-तो भी सांसारिक स्थिति से बन्धे हुए होने के कारण या वेदनाओं से पीडित होने के कारण वे स्ववश नहीं थे परतंत्र थे, इसलिये काल अवसरकाल करके मर कर नीचे तमस्तम प्रभा नाम के सातवें नरक में कि जो उत्कृष्ट काल स्थिति प्रमाण है-अर्थात् ३३ सा-

(तएणं से कंडरीए राया रज्जे य रट्ठे य अंतेउरे य जाव अज्झोववन्ने अट्टदुहट्टवसट्टे अकामए अवसवसे कालमासे कालं किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए, अक्कोसकालट्ठिइयंसि नरयंसि नेरइयत्ताए उववण्णे)

આ પ્રમાણે દુખિત થયેલા તે કંડરીક રાજા રાજ્ય, રાષ્ટ્ર અને રણવાસમાં અધ્યુપપન્ન થઈ ગયા. એટલે કે વધારે પડતા આસક્ત થઈ ગયા. આ પ્રમાણે રાજ્ય વગેરેમાં સંપૂર્ણપણે આસક્ત ભાવથી બંધાયેલા તે રાજા મનથી દુઃખિત થઈને, શારીરિક કષ્ટથી એક ક્ષણ માટે પણ મુક્તિ નહિ થવાને કારણે વિષય સુખોના વિયોગની સંભાવના બદલ, તેમજ રાજ્ય, રાષ્ટ્ર, રણવાસ વગેરેમાં આસક્ત ઇન્દ્રિયોના વશમાં હોવાને કારણે આર્તધ્યાનમાં મગ્ન થઈ ગયા છેવટે તેઓ મૃત્યુને ઇચ્છતા નહોતા છતાંએ સાંસારિક વાતાવરણમાં બંધાયેલા હોવાને કારણે અથવા વેદનાઓથી પીડિત હોવાને કારણે તેઓ સ્વવશ હતા નહિ, પરવશ-પરતંત્ર હતા, એથી કાળ અવસરે કાળ કરીને,-મૃત્યુ પામીને-નીચે તમસ્તમપ્રભા નામના સાતમા નરકમાં કે જે ઉત્કૃષ્ટ કાલ-

नैरयिकतया उपपन्नः। एतद् दृष्टान्तेन भगवान् महावीरः साधूनुपदिशति–एवमेव =अनेनैवमकारेण हे आयुष्मन्तः! श्रमणाः यः कश्चिदस्माकं श्रमणो वा श्रमणी वा आचार्योपाध्यायानामन्तिके यावत्प्रव्रजितः सन् पुनरपि मानुष्यकान् कामभोगान् 'आसाएइ' आस्वादयति। स 'जाव अणुपरियट्टिस्सइ' यावदनुपर्यटिष्यति–यावत्–चातुरन्तसंसारकान्तार परिभ्रमिष्यति। 'जहेव से कंडरीए राया' यथैव स कण्डरीको राजा॥ सू० ६॥

मूलम्–तएणं से पोंडरीए अणगारे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता थेराणं अंतिए दोच्चंपि चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जइ, छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, करित्ता जाव अडमाणे सीयलुक्खं पाणभोयणं पडिगाहेइ, पडिगाहित्ता, अहापज्जत्तमिति कट्टु पडिणियत्तइ,

---

गर की जहां उत्कृष्ट स्थिति है–नारकी की पर्याय से उत्पन्न हो गये। इसी बात को दृष्टान्त से श्री भगवान् महावीर प्रभु साधुओं को समझाते है–(एवामेव समणाउसो! जाव पव्वइए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसाए जाव अणुपरियट्टिस्सइ, जहा व से कंडरीए राया) इसी तरह हे आयुष्मंत श्रमणों! जो कोई हमारा श्रमण अथवा श्रमणीजन आचार्य उपाध्याय के पास में दीक्षित होकर के पुनः मनुष्य भव संबन्धी कामभोगों को भोगता है वह कंडरीक राजा की तरह यावत् इस चतुर्गति रूप संसार कान्तार में परिभ्रमण करेगा ॥सूत्र ६॥

સ્થિતિ પ્રમાણુ છે–એટલે કે ૩૩ સાગરની જ્યાં ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ છે–નારકીની પર્યાયથી જન્મ પામ્યા. એ જ વાતને શ્રી ભગવાન મહાવીર પ્રભુ દૃષ્ટાંત રૂપમાં સાધુઓને સમજાવે છે કે—

एवामेव समणाउसो! जाव पव्वइए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसाए जाव अणुपरियट्टिस्सइ, जहा व से कंडरीए राया)

આ પ્રમાણે હે આયુષ્મંત શ્રમણો! જે કોઇ અમારા શ્રમણ અથવા શ્રમણીજન આચાર્ય કે ઉપાધ્યાયની પાસે દીક્ષિત થઇને ફરી જો તે મનુષ્ય ભવના કામભોગોને ભોગવે છે, તે કંડરીક રાજાની જેમ યાવત્ આ ચતુર્ગતિ રૂપ સંસાર કાંતારમા પરિભ્રમણુ કરશે. ॥ સૂત્ર ૬ ॥

जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, भत्तपाणं पडिदंसेइ, पडिदंसित्ता, थेरेहिं भगवंतेहिं अब्भणुन्नाए समाणे अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झुववण्णे बिलमिव पण्णगभूएणं अप्पाणेणं तं फासुएसणिज्जं असणपाणखाइमसाइमं सरीरकोट्ठगंसि पक्खिवइ। तएणं तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स तं कालाइक्कंतं अरसं विरसं सीयलुक्खं पाणभोयणं आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स से आहारे णो सम्मं परिणमइ। तएणं तस्स पुंडरीस्स अणगारस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा, पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतिए विहरइ। तएणं से पुंडरीए अणगारे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे करयल जाव एवं वयासी—णमोऽत्थुणं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं णमोत्थुणं थेराणं भगवंताणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसयाणं पुव्विं पि य णं मए थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जाव मिच्छादंसणसल्ले णं पच्चक्खाए जाव आलोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा सव्वट्ठसिद्धे उववन्ने। तओ अणतरं उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ। एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे माणुस्सएहिं कामभोगेहिं णो सज्जइ णो रज्जइ, जाव विप्पडिघायमावज्जइ, से णं इहभवे चेव बहूणं सावगाणं०

अच्चणिज्जे वंदणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिज्जेत्तिकट्टु परलोए वि य णं णो आगच्छइ बहूणि दंडणाणि य मुंडणाणि य तज्जणाणि य ताडणाणि य जाव चाउरंतं संसारकंतारं जाव वीइवइस्सइ जहाविसे पोंडरीए अणगारे । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं जाव सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं एगूणवीसइमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स पढमस्स सुयक्खंधस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥ सू० ७ ॥

टीका—'तएणं से' इत्यादि । ततः खलु स पुण्डरीकोऽनगारो यत्रैव स्थविराभगवन्तस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य स्थविरान् भगवतो वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा स्थविराणामन्तिके 'दोच्चंपि' द्वितीयमपिवारम् चातुर्यामं= चतुर्महाव्रतरूपं धर्मं प्रतिपद्यते । तथा षष्ठक्षपणपारणायां संप्राप्तायां प्रथमायां

'तएणं से पोंडरीए अणगारे' इत्यादि ।

टीकार्थः—(तएणं) इसके बाद (से पोंडरीए अणगारे) वे पुंडरीक अनगार (जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ) जहां स्थविर भगवंत विराजमान थे वहां आ गये । (उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता थेराणं अंतिए दोच्चंपि चाउज्जामं धम्मं

(तएणं से पोंडरीए अणगारे) इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) त्यारબાદ (से पोंडरीए अणगारे) ते पुंडरीક અન-ગાર (जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ) જ્યાં સ્થવિર ભગવંત બિરા-જમાન હતા ત્યાં ગયા.

(उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता थेराणं अंतिए दोच्चंपि चाउज्जामं, धम्मं पडिवज्जइ, छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए

पौरुष्यां=प्रथमे प्रहरे स्वाध्यायं करोति, कृत्वा 'अडमाणे' यावत् अटन् उच्चनीच-मध्यमकुलेषु भिक्षार्थं परिभ्राम्यन् 'सीयलुक्खं' शीतरूक्षं-शीतं=पर्युषित, रूक्षं घृतादिरहितं पानं भोजनं प्रतिगृह्णाति, प्रतिगृह्य 'अहापज्जत्तमितिकट्टु' यथापर्याप्तमिति कृत्वा=उदरभरणपर्याप्तमिदमन्नमितिमनसि कृत्य 'पडिणियत्तइ' प्रति-

---

पडिवज्जइ, छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ करित्ता जाव अडमाणे सीयलुक्खं पाणभोयणं पडिगाहेइ, पडिगाहित्ता अहापज्जत्तमि त्ति कट्टु पडिनियत्तइ-जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भत्तपाणं पडिदंसेइ, पडिदंसित्ता थेरेहिं भगवंतेहिं अब्भणुन्नाए समाणे अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झुववण्णे बिल-मिव पण्णगभूएणं अप्पाणेणं तं फासुएसणिज्जं असणपाणखाइम साइमं सरीरकोट्ठगंसि पक्खिवइ) वहां आकर के उन्हों ने स्थविर भगवंतों को वंदना नमस्कार किया। वंदना नमस्कार करके बाद में उन्हों ने उनसे दुबाराचातुर्याम-चतुर्महाव्रतरूप धर्म को धारण किया। जब षष्ठक्षपण की पारणा का समय आया उस समय वे प्रथम पौरुषी में स्वाध्याय करते-और स्वाध्याय करके फिर वे उच्च नीच मध्यम कुलों में भिक्षा के लिये परिभ्रमण करते उस समय जो उन्हें शीत-पर्युषित, रूक्ष-घृतादिरहित पान भोजन मिलता-वह वे ले लेते-और यह अन्न-सामग्री उदरभरण के लिये पर्याप्त है ऐसा मन में विचार कर वहां से

पोरिसीए सज्जायं करेइ करित्ता जाव अडमाणे सीयलुक्खं पाणभोयणं पडिगाहेइ पडिगाहित्ता अहापज्जत्तमि त्ति कट्टु पडिनियत्तई-जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भत्तपाणं पडिदंसेइ, पडिदंसित्ता थेरेहिं भगवंतेहिं, अब्भणुन्नाए समाणे अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झुववण्णे बिलमिव पण्णगभूएणं अप्पाणेणं तं फासुएसणिज्जं असणपाणखाइमसाइमं सरीरकोट्ठगंसि पक्खिवइ)

ત્યાં આવીને તેમણે સ્થવિર ભગવંતોને વંદના અને નમસ્કાર કર્યા વંદના અને નમસ્કાર કરીને તેમણે તેમની પાસેથી બીજીવાર ચાતુર્યામ-ચતુર્મહાવ્રત રૂપ ધર્મને ધારણ કર્યો જ્યારે ષષ્ઠ ક્ષપણની પારણાનો વખત આવ્યો ત્યારે તેઓ પ્રથમ પૌરૂષીમાં સ્વાધ્યાય કરતા અને સ્વાધ્યાય કરીને તેઓ ઉચ્ચ, નીચ અને મધ્યમ કુળોમાં ભિક્ષા માટે પરિભ્રમણ કરતા તે સમયે તેમને શીત-પર્યુષિત, રૂક્ષ-ઘી વગરનો, પાન આહાર મળતો તો તેને તેઓ સ્વીકારી લેતા અને 'આટલો આહાર ઉદર-પોષણ માટે પૂરતો છે' આવો મનમાં વિચાર કરીને ત્યાંથી પાછા ફરી જતા પાછા આવીને ભિક્ષામાં

निवर्तते=प्रत्यागच्छति, प्रतिनिवृत्य यत्रैव स्थविराभगवन्तस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य, भक्तपानं प्रतिदर्शयति, प्रतिदर्श्य, स्थविरैर्भगवद्भिरभ्यनुज्ञातः सन् अमूर्च्छितः अगृद्धः अग्रथितः अनध्युपपन्नः=आसक्तिपरिवर्जित इतिभावः, 'बिल-मिव पन्नगभूएणं अप्पाणेणं' बिलमिव पन्नगभूतेन आत्मना इव=यथा पन्नग-भूतेन=पन्नगभवमागतेन आत्मना=जीवेन बिलं प्रविष्यते, तथा तं 'फासुएस-णिज्जं' प्रासुकैषणीयं=द्वाचत्वारिंशद्दोषवर्जितम् अशनं पानं खाद्यं स्वाद्यं 'सरीर-कोट्ठगंसि' शरीरकोष्ठके=उदरे प्रक्षिपति, यथा भुजङ्गो बिलस्य पार्श्वभागद्वयमसंस्पृ-शन् मध्यभागत एवात्मानं बिले प्रवेशयति तथा स मुखस्य पार्श्वद्वयस्पर्शरहित-माहारं कण्ठनालाभिमुखं प्रवेश्य आहारयतीति भावः। ततः खलु तस्य पुण्डरी-कस्य अनगारस्य 'कालाइक्कंतं' कालातिक्रान्तं=कालमतिक्रम्य प्राप्तम्-बुभुक्षा-

वापिस आ जाते-वापिस आकर फिर प्राप्त भिक्षान्न को दिखाने के लिये वे जहां स्थविर भगवंत विराजमान होते वहां आते-वहां आकर प्राप्त भिक्षान्न को उन स्थविर भगवंतों को दिखलाते-दिखालकर जब वे उस आहार को खाने की आज्ञा देते-तब वे अमूर्च्छित भाव से अगृद्धचि-त्तवृत्ति से, एवं आसक्ति रहित परिणति से उस प्राशुक एषणीय-४२ दोषों से रहित अशन, पान, खाद्य, एवं स्वाद्यरूप-आहार को जिस तरह सर्प-बिल में प्रविष्ट होता है उसी तरह से शरीर कोष्ठक में-उदर में डाल देते थे। कारण इसका इस प्रकार है-जैसे भुजंग बिल के पार्श्वद्वय नहीं छूता हुआ सीधे मध्यभाग से अपने को बिल में प्रविष्ट कराता है उसी तरह वे मुनिराज मुख के पार्श्वद्वय के स्पर्श से रहित आहार को सीधे कण्ठनाल में धर कर आहार करते थे (तएणं तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स तं कालाइक्कंतं अरसविरसं सियलुक्खं पाण-

પ્રાપ્ત આહારને બતાવવા માટે જ્યાં તે સ્થવિર ભગવંત વિરાજમાન હતા ત્યાં આવતા. ત્યાં આવીને મેળવેલા આહારને તે સ્થવિર ભગવંતોને બતાવતા અને બતાવીને જ્યારે તેઓ તે આહારને ગ્રહણ કરવાની આજ્ઞા કરતા ત્યારે તેઓ અમૂર્છિત-ભાવથી, અગૃદ્ધ-ચિત્તવૃત્તિથી અને આસક્તિ રહિત પરિણતિથી તે પ્રાસુક એષણીય-૪૨ દોષોથી રહિત અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્યરૂપ આહા-રને જેમ સાપ દરમાં પ્રવેશે છે તેમજ શરીર કોષ્ઠકમાં-પેટમાં નાખી દેતા હતા. જેમ સાપ દરના બંને પાર્શ્વને સ્પર્શ ન કરતાં સીધો વચ્ચે થઈને પોતાની જાતને દરમાં પ્રવિષ્ટ કરાવી લે છે તેમજ તે મુનિરાજ પણ મુખના બંને પાર્શ્વના સ્પર્શથી રહિત આહારને સીધો કંઠનાળમાં મૂકીને ઉદરસ્થ કરતા હતા.

(तएणं तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स तं कालाइक्कंतं अरसं विरसं सिय

समयमुल्लङ्घ्य प्राप्तम्, अरसं विरसं शीतरूक्षं पान भोजनम् 'आहारियस्स' आहारितस्य सतः पूर्वरात्रापररात्रकालसमये 'धम्मजागरियं जागरमाणस्स' धर्मजागरिकां जाग्रतः=धर्मचिन्तनार्थं जागरणां कुर्वतः स आहारो नो सम्यक् परिणमति=नो परिपाकं गच्छति। ततः खलु तस्य पुण्डरीकस्य अनगारस्य शरीरे वेदना प्रादुर्भूता 'उज्जला जाव दुरहियासा' उज्ज्वला यावत् दुरधिसह्या, एषां व्याख्यापूर्ववत्, तथा स पुण्डरीकोऽनगारः पित्तज्वरपरिगतशरीरो दाहव्युत्क्रान्तिकः=दाहज्वरसमाकुलश्चापि विहरति। ततः खलु स पुण्डरीकोऽनगारः 'अस्थामे' अस्थामा=शक्तिरहितः, अबलः=शारीरिकबलरहितः, 'अवीरिए' अवीर्यः=उत्साहरहितः, अपुरुषकारपराक्रमः=पुरुषार्थपराक्रमरहितः 'करयल जाव' करतल यावत्=करतलपरिगृहीतं दशनखं मस्तके अञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्-नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यो यावत्संप्राप्तेभ्यः=मोक्षं गतेभ्यः, नमोस्तु खलु स्थविरेभ्यो भगवद्भ्यो मम धर्माचार्येभ्यो धर्मोपदेशकेभ्यः, पूर्वमपि च खलु मया स्थविराणा-

---

भोयणं आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स से आहारे णो सम्मं परिणमइ) इस तरह उन पुंडरीक अनगार का कालातिक्रम से खाया हुआ वह अरस, विरस, शीत, रूक्ष, पानभोजन रात्रि के मध्यभाग में धर्मचिन्तन निमित्त जागरण करने के कारण अच्छी तरह से नहीं पचता था (तएणं तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा, पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतिए विहरइ, तएणं से पुंडरीए अणगारे अत्थामे, अबले, अवीरिए अपुरिसक्कारपरिक्कमे करयल जाव, एवं वयासी-णमोत्थुणं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं णमोत्थुणं थेराणं भगवंताणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसयाणं पुव्विं पि य णं मए

लुक्खं पाणभोयणं आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स से आहारे णो सम्मं परिणमइ)

આ પ્રમાણે તે પુંડરીક અનગારનો કાળાતિક્રમથી કરેલો તે અરસ, વિરસ, શીત, રૂક્ષ પાન આહારનું રાત્રિના મધ્ય ભાગમાં ધર્મચિંતન માટે કરેલા જાગરણને લીધે સારી રીતે પાચન થતું ન હતું.

(तएणं तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा, पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतिए विहरइ, तएणं से पुंडरीए अणगारे अत्थामे, अबले, अवीरिए अपुरिसक्कारपरिक्कमे करयल जाव, एवं वयासी-णमोत्थुणं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं थेराणं भगवंताणं मम धम्मायरियाणं

मन्तिके सर्वः प्राणातिपातः प्रत्याख्यातः यावत् मिथ्यादर्शनशल्यं खलु प्रत्याख्यातम्=अष्टादशपापस्थानानि प्रत्याख्यातानि इति भावः, इदानीमपि तेषामेव

थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जाव मिच्छादंसणसल्ले णं पच्चक्खाए जाव आलोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा सव्वट्ठसिद्धे उववन्ने) इस कारण पुंडरीक अनगार के शरीर में वेदना प्रकट हो गइ। जिसके कारण उन्हें क्षणभर भी शाता नही मिलती। धीरे २ यह समस्त शरीर में भी व्याप्त हो गई। यावत् यह उनके लिये सहन हो सके ऐसी नहीं रही–वे उसे बड़ी कठिनता से सहते। दाहज्वर ने भी इनके शरीर पर अपना प्रभाव जमा लिया। इस तरह ये दाहज्वर की ज्वाला से भी आकुल व्याकुल रहने लगे। धीरे २ इनका शरीर शक्ति रहित हो गया। शारीरिक बल भी इनका जाता रहा। उत्साह रहित एवं पुरुषार्थ पराक्रम से विहीन जब ये हो गये तब करतल परिगृहीत दशनखोंवाली अंजलि को इन्होंने अपने मस्तक पर रखकर इस प्रकार का पाठ बोलना प्रारंभ किया यावत् मुक्ति प्राप्त अर्हंत भगवंतों के लिये मेरा नमस्कार हो, मेरे धर्माचार्य, धर्मोपदेशक स्थविर भगवंतों के लिये मेरा नमस्कार हो। मैंने पहिले भी स्थविर भगवंतों के निकट समस्त प्राणातिपात प्रत्योख्यान कर दिया है–यावत् मिथ्यादर्शन शल्य

धम्मोवएसयाणं पुव्विं पि य ण मए थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जाव मिच्छादंसणसल्लेण पच्चक्खाए जाव आलोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा सव्वट्ठ सिद्धे उववन्ने)

એથી તે પુંડરીક અનગારના શરીરમાં વેદના પ્રકટ થઈ ગઇ તેથી તેમને એક ક્ષણ માટે પણ શાતા મળતી નહોતી ધીમે ધીમે આ વેદના સંપૂર્ણ શરીરમાં પ્રસરી ગઈ યાવત્ તે તેમના માટે અસહ્ય થઈ ગઇ, ભારે મુશ્કેલીથી તેઓ તેને ખમતા હતા. દાહજ્વરે પણ તેમના શરીર ઉપર પોતાનો પ્રભાવ જમાવી લીધો હતો, એથી તેઓ દાહજવરની જ્વાળાઓથી પણ આકુળ–વ્યાકુળ રહેવા લાગ્યા. ધીમે ધીમે તેમનું શરીર અશક્ત થઇ ગયું, શારીરિક બળ પણ તેમનું નષ્ટ થઇ ગયું હતું આ પ્રમાણે જ્યારે તેઓ ઉત્સાહ રહિત અને પુરૂષાર્થ પરાક્રમ વિહીન થઇ ગયા ત્યારે કરતલ–પરિગૃહીત દશ નખોવાળી અંજલિને તેમણે પોતાના મસ્તકે મૂકીને આ પ્રમાણેનો પાઠ બોલવા લાગ્યા કે યાવત્ મુક્તિ પ્રાપ્ત અર્હંત ભગવંતોને મારા નમસ્કાર છે, મારા ધર્માચાર્ય, ધર્મોપદેશક સ્થવિર ભગવંતોને મારા નમસ્કાર છે. મેં પહેલાં પણ ભગવંતોની પાસે સમસ્ત પ્રાણાતિપાત કરી દીધું છે યાવત્ મિથ્યાદર્શન શલ્યનું અઢાર

अन्तिके प्राणातिपातं यावत् मिथ्यादर्शनशल्यं प्रत्याख्यामि, एवं 'जाव आलोइय पडिक्कंते' यावदालोचितप्रतिक्रान्तः कालमासे कालं कृत्वा सर्वार्थसिद्धे उपपन्नः। ततोऽनन्तरम्=तत्पश्चात् सर्वार्थसिद्धात् 'उव्वट्टित्ता' उद्वृत्य=सर्वार्थसिद्धेर्निर्गत्य महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति यावत् सर्वदुःखानामन्तं करिष्यति। पुण्डरीकानगारचरितं दृष्टान्तेनोपदर्श्य श्रमणानुपदिशति भगवान् महावीरः-'एवामेव' अनेनैवप्रकारेण हे आयुष्मन्तः श्रमणाः 'जाव पव्वइए' यावत्प्रव्रजितः=योऽस्माकं श्रमणो वा श्रमणी वा आचार्योपाध्यायानामन्तिके प्रव्रजितः सन् मानुष्यकेषु कामभोगेषु नो सज्जते नो असक्तिमाश्रयते 'नो रज्जते' नो रज्यते=नो अनुरागवान् भवति, 'जाव नो विप्पडिघायमावज्जइ' यावत् नो विप्रतिघातमापद्यते=संयमनाशं न प्राप्नोति, स खलु इह भवे एव बहूनां श्रमणानां बहूनां श्रमणीनां बहूनां श्रावकाणां बहूनां श्राविकाणाम् अर्चनीयो वन्दनीयः पूजनीयः सत्कारणीयः सम्माननीयो भवति, तथा च-स सर्वेषां 'कल्लाणं' कल्याणं=कल्याणरूपम् 'मंगलं' मङ्गलम्=मङ्गलरूपम्, 'देवयं' दैवतं=धर्मदेवरूपः, 'चेइयं' चैत्यम्=ज्ञानरूपः पर्युपासनीयश्च भवति 'त्तिकट्टु' इति कृत्वा इति

का अष्टादश पापस्थानों का, मैंने प्रत्याख्यान कर दिया है। और अब भी उन्हीं के साक्षी से प्राणातिपात यावत् मिथ्यादर्शन शल्य का प्रत्याख्यान करता हूँ। इस तरह आलोचित प्रतिक्रान्त होकर वे कालअवसर कालकर सर्वार्थ सिद्ध नामके अनुत्तर विमान में उत्पन्न हो गये। (तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, जाव सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ, एवामेव समणाउसो! जाव पव्वइए समाणे माणुस्सएहिं कामभोगेहिं णो सज्जइ, णो रज्जइ, जाव नो विप्पडिघायमावज्जइ सेणं इह भवे चेव बहूणं सावियाणं अच्चणिज्जे, वंदणिज्जे, पूयणिज्जे, सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे, कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवास-

---

પાપસ્થાનોનું મેં પ્રત્યાખ્યાન કરી દીધું છે અને હવે તેમની જ સાક્ષીમાં પ્રાણાતિપાત યાવત્ મિથ્યાદર્શન શલ્યનુ પ્રત્યાખ્યાન કરૂં છું. આ પ્રમાણે આલોચિત પ્રતિક્રાંત થઈને તેઓ કાળ અવસરે કાળ કરીને સર્વાર્થસિદ્ધ નામના અનુત્તર વિમાનમાં ઉત્પન્ન થઈ ગયા અને ત્યાં તેમની ૩૩ સાગરોપમની સ્થિતિ છે.

(तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, जाव सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ, एवामेव समणाउसो! जाव पव्वइए समाणे माणुस्सएहिं कामभोगेहिं णो सज्जइ, णो रज्जइ, जाव नो विप्पडिघायमावज्जइ से णं इह भवे चेव बहूणं सावियाणं अच्चणिज्जे, वदणिज्जे, पूयणिज्जे, सक्कारणिज्जे, सम्माणणिज्जे, कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिज्जे त्ति कट्टु परलोए वि य णं णो

हेतोः परलोकेऽपि च खलु मा नो आगच्छति= न प्राप्नोति बहूनि=बहुविधानि दण्डनानि च मुण्डनानि च तर्जनानि च ताडनानि च यावत् चतुरन्तं संसार-कान्तरं 'वीइवइस्सइ' व्यति व्रजिष्यति=उल्लङ्घयिष्यति, यथा स पुण्डरीकोऽनगारः

णिज्जे त्ति कट्टु परलोए वि य णं णो आगच्छइ, बहूणि दंडणाणि य मुंडणाणि य तज्जणाणि य ताडणाणि य जाव चाउरंतसंसारकंतारं जाव वीइवइस्सइ) इसके बाद वे उस सर्वार्थ सिद्ध विमान से चव कर महाविदेहक्षेत्र में जन्म धारण कर वहीं से सिद्धपद के भोक्ता बनेंगे- यावत् समस्त दुःखों का अन्त करेंगे। इस तरह पुंडरीक अनगार के चरित्र को दृष्टान्त रूप से कहकर भगवान् महावीर प्रभु श्रमणजनों को उपदेश करते हैं कि इसी प्रकार से हे आयुष्मंत श्रमणो! जो हमारा श्रमण या श्रमणीजन आचार्य उपाध्याय के पास प्रव्रजित होकर मनुष्यभव संबंधी कामभोगों में आसक्त नहीं बनता है, रञ्जित-अनुराग भाव संपन्न-नहीं होता है, यावत् अपने संयम को नष्ट नहीं करता है, वह इस भव में ही अनेक श्रमण श्रमणी, श्रावक एवं श्राविकाओं द्वारा अर्चनीय वंदनीय पूजनीय सत्करणीय एवं सन्माननीय होता है। तथा जगत के लिये कल्याणरूप, मंगलरूप, धर्म देवरूप, और ज्ञानरूप बन जाता है। लोग उसकी उपासना करते हैं। वह परलोक में भी अनेक प्रकार के दंडनरूप, दुःखों को, मुंडनों को तर्जनों को, ताडनाओं

आगच्छइ, बहूणि दंडणाणि य मुंडणाणि य तज्जणाणि य ताडणाणि य जाव चाउरंतसंसारकंतारं जाव वीइवइस्सइ)

ત્યારપછી તેઓ તે સર્વાર્થસિદ્ધ વિમાનમાંથી ચવીને મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં જન્મ ધારણ કરીને ત્યાંથી જ સિદ્ધપદ મેળવશે. યાવત્ સમસ્ત દુઃખોનો અંત કરશે. આ રીતે પુંડરીક અનગારના ચરિત્રને દૃષ્ટાંત રૂપે કહીને મહાવીર પ્રભુ શ્રમણજનોને ઉપદેશ કરતાં કહે છે કે આ પ્રમાણે જ હે આયુષ્મંત શ્રમણો! જે અમારા શ્રમણ કે શ્રમણીજનો આચાર્ય ઉપાધ્યાયની પાસે પ્રવ્રજિત થઈને મનુષ્ય ભવના કામભોગોમાં આસક્ત થતા નથી. રંજિત-અનુરક્ત થતા નથી, યાવત્ પોતાના સંયમને નષ્ટ કરતા નથી તે આ ભવમાં જ ઘણા શ્રમણ-શ્રમણી અને શ્રાવક-શ્રાવિકાઓ વડે અર્ચનીય, વંદનીય, પૂજનીય, સત્કરણીય અને સન્માનનીય હોય છે તેમજ જગતના માટે કલ્યાણરૂપ, મંગળરૂપ, ધર્મ-દેવરૂપ અને જ્ઞાનરૂપ બની જાય છે. લોકો તેની ઉપાસના કરે છે, તે પરલોકમાં પણ ઘણી જાતના દંડન રૂપ, દુઃખોને, મુંડનોને, તર્જનોને, તાડનાઓને

सुधर्मास्वामी कथयति-एवं खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन भगवता महावीरेण आदिकरेण तीर्थंकरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं संप्राप्तेन एकोनविंशतितमस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः मज्ञप्तः । ज्ञातश्रुतस्कन्धं समापयन् सुधर्मा पुनः कथययि-एवं खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन भगवतां महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं संप्राप्तेन षष्ठस्य अङ्गस्य=षष्ठाङ्गसम्बन्धिनः प्रथमस्य श्रुतस्कन्धस्य अयमर्थः=पूर्वोक्तरूपो भावः मज्ञप्तः=भगवता कथितः । 'त्ति बेमि' इति ब्रवीमि, व्याख्या पूर्ववत् ॥ सू०७ ॥

को नहीं पाता है और चतुर्गतिवाले इस संसार कान्तार को पुंडरीक अनगार की तरह पार करनेवाला हो जाता है। (एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरे णं आइगरेणं तित्थगरेणं जाव सिद्ध गई नामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं एगूणवीसइमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरे णं जाव सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपत्ते णं छट्ठस्स अंगस्स पढमस्स सुयक्खंधस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि) अब श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं कि हे जंबू! आदिकर तीर्थंकर यावत् सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान महावीर ने १९ वे ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्ररूपित किया है। इस तरह हे जंबू! श्रमण भगवान महावीर ने कि जो सिद्धिगति नामक स्थान को अच्छी तरह प्राप्त कर चुके हैं, छठे अंग के प्रथम श्रुतस्कंध का यह पूर्वोक्त रूप से भाव प्रतिपादित किया है। ऐसा मैंने प्रभु के कहे अनुसार ही यह हे जंबू! तुमसे निवेदित किया है।

પ્રાપ્ત કરતો નથી અને ચતુર્ગતિવાળા આ સંસાર કાંતારને પુંડરીક અનગારની જેમ પાર કરનાર થઈ જાય છે.

(एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं जाव सिद्धगई नामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं एगूणवीस इमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स पढमस्स सुयक्खंधस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि)

હવે શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહે છે કે હે જંબૂ! આદિકર તીર્થંકર યાવત સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને મેળવી ચુકેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ઓગણીસમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રીતે અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે આ પ્રમાણે હે જંબૂ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને સારી રીતે પ્રાપ્ત કરી લીધું છે-છઠ્ઠા અંગના પ્રથમ શ્રુત-સ્કંધનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમાં ભાવ પ્રતિપાદિત કર્યો છે. હે જંબૂ! આવું મેં પ્રભુના કહ્યા મુજબ જ તમને કહ્યું છે.

'तस्से' त्यादि, तस्य खलु प्रथमस्य श्रुतस्कन्धस्य एकोनविंशतिरध्ययनानि 'एगसरगाणि' एकस्वरकानि=समानोच्चारणानि=अन्तराले उद्देशरहितानि एकोनविंशति दिवसेषु समाप्यते ॥ सू० ७ ॥

मंगलं भगवान् वीरः मंगलं गौतमः प्रभुः ।
सुधर्मा मंगलं, जंबूर्जैनधर्मश्च मंगलम् ॥ १ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित-कोल्हापुरराजगुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां 'ज्ञाताधर्मकथाङ्ग' सूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायां प्रथमश्रुतस्कंधः समाप्तः ॥

इस कथन में मैंने अपनी तरफ से कोई भी कल्पना मिश्रित नहीं की है किन्तु प्रभु के मुख से जैसा मैंने इसे सुना है वैसा ही यह तुम से मैंने कहा है। "तस्से" त्यादि इस प्रथम श्रुतस्कंध के अन्तराल में उद्देश रहित १९ अध्ययन हैं। ये अध्ययन १९ दिनोंमें समाप्त होते हैं।

टीकार्थः— सांसरिक समस्त जीवों के लिये यदि मंगलकारी पदार्थ है-तो ये हैं भगवान् महावीर प्रभु गौतमगणधर, सुधर्मास्वामी, जंबूस्वामी और जैनधर्म।

इस तरह ज्ञाताधर्मकथाङ्ग सूत्रके प्रथम श्रुतस्कंध संपूर्ण ।

આ કથનમાં મે મારા તરફથી કોઇપણ જાતની કલ્પના મિશ્રિત કરી નથી, પણ પ્રભુના મુખથી જેવું મેં સાંભળ્યું છે તેવું જ મેં કહ્યું છે. "तस्से" त्य दि આ પ્રથમ શ્રુત-સ્કંધના અંતરાલમાં ઉદ્દેશ રહિત ઓગણીસ અધ્યયનો છે. આ અધ્યયનો ઓગણીસ દિવસોમાં સમાપ્ત હોય છે.

ટીકાર્થ—બધા સાંસારિક જીવોના માટે જે મંગળકારી પદાર્થો છે તો તે એજ છે-ભગવાન મહાવીર પ્રભુ, ગૌતમ ગણધર, સુધર્મા સ્વામી, જંબૂ સ્વામી અને જૈન ધર્મ.

"આ પ્રમાણે જ્ઞાતાધર્મ કથાંગનો જ્ઞાતા—નામે પ્રથમ શ્રુતસ્કંધ સમાપ્ત થયો."

॥ अथ ज्ञातासूत्रे द्वितीयश्रुतस्कन्धविवरणम् ॥

मङ्गलाचरणम्- -

(वसन्ततिलकावृत्तम्)

आद्ये श्रुते भगवता रुचिरैरनेकै,-
ज्ञतैरदायि सकलार्त्तिहरः सुबोधः ।
स्कन्धे द्वितीयइह धर्मकथा च साक्षाद् ,
विज्ञापिता तमनिश वरदं स्मरामि ॥ १ ॥

(मालिनीछन्दः)

गणधरगुणधारं, प्राप्तसंसारपारम् ,
भविजनहितकारं, दत्तसम्यक्त्वसारम् , ।
हतसकलविकारं, भव्यचित्तैकहारं ,
शिवसुखपदधारं, नौमि चारित्रसारम् , ॥ २ ॥

-ःद्वितीयश्रुतस्कंधप्रारंभः-

आद्येश्रुते इत्यादिः—प्रथम श्रुतस्कंधमें भगवान् सूत्रकार ने अनेक सुन्दर दृष्टान्तों द्वारा सकल आर्ति (दुःख) हारक सुबोध प्रदान किया है अब वे इस द्वितीय श्रुतस्कंध में साक्षात् धर्मकथाएँ प्रकट करेंगे-अतः ऐसे भगवान को मैं कि जो भव्यजीवों को कल्याण, करनेवाले होते हैं उनको निरन्तर नमस्कार करता हूँ ॥ १ ॥

गणधरइत्यादि—जो गणधरों के गुणों को धारण करनेवाले हैं संसार को पार करनेवाले हैं, जो भव्यजनों को हितकारक है, सम्यक्त्वरूपी गुणके बोधक हैं-सकल विकारों से रहित है, इसलिये जो भव्यजीवों

દ્વિતીય શ્રુતસ્કંધ પ્રારંભ

આદ્યે શ્રુતેત્યાદિ— પ્રથમ શ્રુતસ્કંધમાં ભગવાન સૂત્રકારે ઘણા સુંદર દૃષ્ટાંતો વડે સમસ્ત આર્તિ (દુઃખ) હારક સુબોધ પ્રદાન કર્યો છે હવે તેઓ આ બીજા શ્રુતસ્કંધમાં સાક્ષાત્ ધર્મકથાઓ પ્રકટ કરશે એટલા માટે એવા ભગવાનને-કે જેઓ ભવ્ય જીવોનું કલ્યાણ કરનારા છે-હુ નિરંતર નમસ્કાર કરૂં છું. ૧

ગણધર ઈત્યાદિ—જેઓ ગણધરોના ગુણોને ધારણ કરનારા છે, સંસારને પાર કરનારા છે જેઓ ભવ્યજનોના હિતકારક છે, સમ્યકત્વ રૂપી ગુણના બોધક છે, આ બધા વિકારોથી રહિત છે, એટલા માટે જ જેઓ ભવ્ય જીવોના

व्याख्यातः प्रथमो ज्ञाताख्यः श्रुतस्कन्धः, अथ धर्मकथाख्यो द्वितीयः प्रारभ्यते, अस्य पूर्वेण सहायं सम्बन्धः—पूर्वस्मिन् श्रुतस्कन्धे उदाहरणप्रदर्शनपूर्वकमाप्तोपालम्भादिना धर्मरूपोऽर्थः प्रतिपादितः. इह तु स एव साक्षाद् धर्मकथाभिः प्रतिपाद्यते, इत्येवं सम्बन्धेन समायातस्यास्येदमादिसूत्रम्—'तेणं कालेणं' इत्यादि।

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था, वण्णओ, तस्स णं रायगिहस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए तत्थ णं गुणसिलए णामं चेइए होत्था वण्णओ, तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मा णामं थेरा भगवंतो जाइसंपन्ना कुलसंपन्ना जाव चउद्दसपुव्वी चउणाणोवगया पंचहिं अणगा-

---

के चित्त को हरण करनेवाले हैं ऐसे उस सम्यक् चारित्ररूपी सार को धारण करनेवाले मोक्षपद के धारी हैं उसको मैं नमस्कार करता हूँ।

प्रथम ज्ञाता नाम का श्रुतस्कंध व्याख्यात हो चुका अब धर्मकथा नाम का द्वितीय श्रुतस्कंध प्रारंभ किया जाता है। इस श्रुतस्कंध का पूर्व श्रुतस्कंध के साथ इस प्रकार से संबंध है कि पूर्व श्रुतस्कंध में उदाहरण प्रदर्शन पूर्वक आप्त तीर्थंकर के उपालंभ आदि द्वारा धर्म रूप अर्थ प्रतिपादित किया गया है। अब इस द्वितीय श्रुतस्कंध में धर्म रूप अर्थ साक्षात् धर्मकथाओं द्वारा निरूपित किया जावेगा। इस द्वितीय श्रुतस्कंध का यह आदि सूत्र है। तेणं कालेणं तेण समएणं इत्यादि।

ચિત્તને આકર્ષનારા છે, એવા તે સમ્યક્-ચારિત્ર રૂપી સારને ધારણ કરનારા મોક્ષપદના ધારી છે, તેને હું નમસ્કાર કરું છું

પ્રથમ જ્ઞાતા નામનો શ્રુતસ્કંધ વ્યાખ્યાત થઈ ચુકયો છે હવે ધર્મકથા નામનો બીજો શ્રુતસ્કંધ શરૂ કરવામાં આવે છે. આ શ્રુતસ્કંધનો પહેલા શ્રુત સ્કંધની સાથે આ પ્રમાણે સબંધ છે કે પૂર્વ શ્રુતસ્કંધમાં ઉદાહરણોની સાથે આપ્ત તીર્થંકરના ઉપાલંભ વગેરે દ્વારા ધર્મરૂપ અર્થનું પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે હવે આ બીજા શ્રુતસ્કંધમાં તે જ ધર્મરૂપ અર્થ સાક્ષાત્ ધર્મકથાઓ વડે નિરૂપવામાં આવશે. આ બીજા શ્રુતસ્કંધનું આ પ્રથમ સૂત્ર છે—

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि—

रसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दूइज्जमाणा सुहंसुहेणं विहरमाणा जेणेव रायगिहे णयरे जेणेव गुणसिलए चेइए जाव संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया, तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स अंतेवासी अज्जजंबू णामं अणगारे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी-जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स पढमस्स सुयक्खंधस्स णायाणं अयमट्ठे पन्नत्ते दोच्चस्स णं भंते ! सुयक्खंधस्स धम्मकहाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जम्बू ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दसवग्गा पण्णत्ता, तं जहा – चमरस्स अग्गमहिसीणं पढमे वग्गे१ बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो अग्गमहिसीणं बीओ वग्गो२ असुरिंदवज्जियाणं दाहिणिल्लाणं भवणवासीणं इंदाणं अग्गमहिसीणं तइओ वग्गो ३ उत्तरिल्लाणं असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं इंदाणं अग्गमहिसीणं चउत्थो वग्गो ४ दाहिणिल्लाणं वाणमंतराणं इंदाणं अग्गमहिसीणं पंचमो वग्गो५ उत्तरिल्लाणं वाणमंतराणं इंदाणं अग्गमहिसीणं छट्ठो वग्गो६ चंदस्स अग्गमहिसीणं सत्तमो वग्गो ७ सूरस्स अग्गमहिसीणं अट्ठमो वग्गो८ सक्कस्स अग्गमहिसीणं णवमो वग्गो९ ईसाणस्स अग्गमहिसीणं दसमो वग्गो१० ॥सू०१॥

टीका—तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नाम नगरमासीत्, 'वण्णओ' वर्णकः-नगरवर्णनं सर्वमत्र विज्ञेयम्। तस्य खलु राजगृहस्य नगरस्य बहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे तत्र खलु गुणशिलकं नाम चैत्यमासीत्, 'वण्णओ' वर्णकः=चैत्यवर्णन-प्रकारः सर्वोऽत्र वाच्यः। तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य भगवतो महावीर-स्यान्तेवासिन आर्यसुधर्माणो नाम स्थविरा भगवन्तः 'जाइसंपन्ना' जातिस-म्पन्नाः=सुविशुद्धमातृवंशाः, कुलसंपन्नाः=विशुद्धपितृवंशाः, 'जाव' यावत्-बल-रूप-विनय-ज्ञान-दर्शन-चारित्र-लाघव-सम्पन्नाः, इत्यादि यावत्-चतुर्दशपूर्विणः 'चउणाणोवगया' चतुर्ज्ञानोपगताः=मतिश्रुतावधिमनः पर्यवज्ञानयुक्ताः पञ्चभिर-

---

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय में (रायगिहे नामं नयरे होत्था) राजगृह नाम का नगर था। (वण्णओ) नगर का वर्णन औपपातिक सूत्र में वर्णित चंपा नगरी के समान जानना चाहिये। (तस्स णं रायगिहस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए तत्थणं गुणसिलए णामं चेइए होत्था, वण्णओ) उस राज-गृह नगर के बाहिर उत्तर पौरस्त्यदिग्भाग की ओर (ईशानकोण में) एक गुणशिलक नाम का चैत्य-उद्यान-था। यहां पर भी सब चैत्यवर्णन औपपातिक सूत्र की तरह जानना चाहिये-(तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्ज सुहम्माणामं थेरा भग-वंतो जाइ संपन्ना कुल संपन्ना जाव चउद्दसपुव्वी चउणाणोवगया पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दूइ-

---

ટીકાર્થ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાળે અને તે સમયે (रायगिहे नाम नयरे होत्था) રાજગૃહ નામે નગર હતું. (वण्णओ) આ નગરનું વર્ણન ઔપપાતિક સૂત્રમા વર્ણવવામાં આવેલા ચંપા નગરીના વર્ણનની જેમ જ જાણી લેવું જોઈએ

(तस्स णं रायगिहस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए तत्थणं गुणसिलए णामं चेइए होत्था, वण्णओ)

તે રાજગૃહ નગરની બહાર ઉત્તર પૌરસ્ત્ય દિગ્-ભાગની તરફ એટલે કે ઇશાન કોણમા એક ગુણશિલક નામે ચૈત્ય-ઉદ્યાન-હતો. અહીં ચૈત્ય વિષેનું બધું વર્ણન ઔપપાતિક સૂત્રની જેમ જાણવું જોઈએ.

(तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्ज सुहम्माणामं थेरा भगवंतो जाइसंपन्ना कुलसंपन्ना जाव चउद्दस पुव्वी चउणाणो-वगया पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दूइ-

नगारशतैः सार्द्धं संपरिवृताः 'पुव्वाणुपुव्विं' पूर्वानुपूर्व्या=तीर्थङ्करपरम्परया 'चरमाणा' चरन्तः=विहरन्तः ग्रामानुग्रामं एकग्रामादव्यवधानेनान्यं ग्रामम् 'दूइज्जमाणा' द्रवन्तः=स्पृशन्तः 'सुहं सुहेणं' सुखं सुखेन=सुखपूर्वकं यथावसरमित्यर्थः विहरन्तो यत्रैव राजगृहं नगरं यत्रैव गुणशिलकं चैत्यं यावत्-संयमेन तपसा आत्मानं भावयन्तो विहरन्ति। अत्र आदरार्थं बहुवचनम्। परिषन्निर्गता। धर्मः कथितः। परिषद् यस्या एव दिशः प्रादुर्भूता तामेव दिशं प्रतिगता। तस्मिन् काले तस्मिन् समये आर्यसुधर्मणोऽनगारस्यान्तेवासी आर्य जम्बूर्नामान-

---

ज्जमाणा सुहंसुहेणं विहरमाणा जेणेव रायगिहे णयरे जेणेव गुणसिलए चेइए जाव संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति) उस काल और उस समय में श्रमण भगवान महावीर के अंतेवासी आर्य सुधर्मा नाम के स्थविर भगवंत कि जो विशुद्ध मातृवंशवाले थे विशुद्ध पितृवंशवाले थे, यावत् बल, रूप, विनय, ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं लाघव संपन्न थे, चौदहपूर्व के पाठी थे-मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान एवं मनःपर्यव ज्ञान इन चारों ज्ञानों के धारक थे-पांचसौ अनगारों के साथ तीर्थंकर परंपरा के अनुसार विहार करते २ एक ग्राम से दूसरे ग्राम में विना किसी व्यवधानके विचरण करते हुए सुख पूर्वक समय पर-जहां राजगृह नगर और उस में भी जहां वह गुणशिलक चैत्य था आये। वहां वे संयम एवं तप से आत्मा को भावित करते हुए उतरे (परिसा निग्गया धम्मो कहिओ परिसा जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया, तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स अंते-

---

ज्जमाणा सुहं सुहेणं विहरमाणा जेणेव रायगिहे णयरे जेणेव गुणसिलए चेइए जाव संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति)

તે કાળે અને તે સમયે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરના અંતેવાસી આર્ય સુધર્મા નામના સ્થવિર ભગવંત કે જેઓ વિશુદ્ધ માતૃવંશવાળા હતા-વિશુદ્ધ પિતૃવંશવાળા હતા, યાવત્ બળ, રૂપ, વિનય, જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર અને લાઘવ-સંપન્ન હતા. ચૌદ પૂર્વના પાઠી હતા, મતિજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન, અવધિજ્ઞાન અને મનઃપર્યવજ્ઞાન એ ચારે જ્ઞાનોના ધારક હતા. પાંચસો અનગારોની સાથે તીર્થંકર પરંપરા મુજબ વિહાર કરતાં કરતાં એક ગામથી બીજે ગામ કોઈપણ જાતના વ્યવધાન વગર સુખેથી યથા સમય જ્યાં રાજગૃહ નગર અને તેમાં પણ જ્યા તે ગુણશિલક ચૈત્ય હતું ત્યાં આવ્યા ત્યાં તેઓ સંયમ અને તપ દ્વારા પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા રોકાયા.

(परिसा निग्गया धम्मो कहिओ परिसा जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया, तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स अंतेवासी

गारः यावत्–'पज्जुवासमाणे' पर्युपासीनः=सेवमानः एवमवदत्–यदि खलु 'भंते' भदन्त=हे भगवन्! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्–मोक्षं सम्प्राप्तेन षष्ठस्याङ्गस्य प्रथमस्य श्रुतस्कन्धस्य 'णायाणं' ज्ञातानाम्=उदाहरणानाम् अयमर्थः प्रज्ञप्तः द्वितीयस्य खलु हे भदन्त! श्रुतस्कन्धस्य धर्मकथानां श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन=मोक्षं गतेन भगवता कोऽर्थः प्रज्ञप्तः?। सुधर्मास्वामीमाह–एवं खलु हे जम्बूः!

वासी अज्ज जबूणामं अणगारे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी–जइणं भंते समणेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स पढमस्स सुयक्खंधस्स णायाणं अयमट्ठे पन्नत्ते दोच्चस्स णं भंते! सुयक्खंधस्स धम्मकहाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दसवग्गा पण्णत्ता) राजगृह नगर से परिषद वंदन करने के लिये आई। सुधर्मास्वामी धर्म का उपदेश दिया। उपदेश सुनकर परिषद अपने २ स्थान पर पीछे वहां से चली गई। उस काल में और उस समय में आर्य सुधर्मास्वामी के अंतेवासी आर्य जंबू नामके अनगार ने यावत् उनकी पर्युपासना करते हुए उनसे इस प्रकार पूछा हे भदंत! यावत् मुक्तिको प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीरने छठे अंगके ज्ञातासूत्र प्रथम श्रुतस्कंध के उदाहरणोंका यह पूर्वोक्तरूप से अर्थ निरूपित किया है–तो हे भदंत! द्वितीय श्रुतस्कन्धकी धर्मकथाओं का उन्हीं श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मुक्तिस्थान को प्राप्त हो चुके हैं क्या अर्थ निरूपित किया है? इस प्रकार जंबू के प्रश्न को सुनकर श्री सुधर्मा

अज्जजंबू णामं अणगारे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी–जइणं भंते समणेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स पढमस्स सुयक्खंधस्स णायाणं अयमट्ठे पन्नत्ते दोच्चस्स णं भंते! सुयक्खधस्स धम्मकहाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? एव खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दसवग्गा पण्णत्ता)

રાજગૃહ નગરથી પરિષદ વંદન કરવા માટે ત્યાં આવી. સુધર્મા સ્વામીએ ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો. ઉપદેશ સાંભળીને પરિષદ પોતાના સ્થાને પાછી જતી રહી તે કાળે અને તે સમયે આર્ય સુધર્મા સ્વામીના અંતેવાસી (શિષ્ય) આર્ય જંબૂ નામના અનગારે યાવત્ તેમની પર્યુપાસના કરતાં તેમને આ પ્રમાણે પૂછયું કે હે ભદન્ત! યાવત્ મુક્તિ પ્રાપ્ત કરેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે છઠ્ઠા અંગના પ્રથમ શ્રુતસ્કંધના ઉદાહરણોને આ પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો હે ભદન્ત! તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે–કે જેમણે મુક્તિસ્થાનને મેળવી લીધું છે–દ્વિતીય શ્રુતસ્કંધની ધર્મકથાઓનો શો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે. આ પ્રમાણે જંબૂના પ્રશ્નને સાંભળીને શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ

श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन धर्मकथानां दशवर्गाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा तानेव दर्शयति– 'चमरस्स' चमरस्य=चमरेन्द्रस्य दाक्षिणात्यासुरकुमारेन्द्रस्य अग्रमहिषीणां प्रथमो-वर्गः १। 'बलिस्स' बलिनाम्नः 'वइरोयणिंदस्स' वैरोचनेन्द्रस्य=वि=विविध-प्रकारैः रोचन्ते=दीप्यन्ते दाक्षिणात्यासुरकुमारेभ्यो विशिष्टदीप्तिमत्त्वात् इति विरो-चनाः, त एव वैरोचनाः=औदीच्यासुरकुमारास्तेषामिन्द्रः वैरोचनेन्द्रस्तस्य 'वइरो-यणरन्नो' वैरोचनराजस्य=वैरोचनाधिपतेः अग्रमहिषीणां द्वितीयो वर्गः २। असु-रेन्द्रवर्जितानां 'दाहिणिल्लाणं' दाक्षिणात्यानां=दक्षिणदिक्सम्बन्धिनां भवन-वासिनामिन्द्राणामग्रमहिषीणां तृतीयो वर्गः ३। 'उत्तरिल्लाणं' उत्तरीयाणामसु-रेन्द्रवर्जितानां भवनवासिनामिन्द्राणामग्रमहिषीणां चतर्थो वर्गः ४। दाक्षिणात्यानां वानव्यन्तराणामिन्द्राणामग्रमहिषीणां पञ्चमो वर्गः ५। उत्तरीयाणां वानव्यन्तरा-णामिन्द्राणामग्रमहिषीणां षष्ठो वर्गः ६। चन्द्रस्याग्रमहिषीणां सप्तमो वर्गः ७।

स्वामी ने उनसे कहा–हे जंबू! सुनो–यावत् मुक्तिस्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर ने धर्मकथाओं के दश वर्ग प्रज्ञप्त किये हैं–(तं जहा) वे इस प्रकार हैं–(चमरस्स अग्गमहिसीणं पढमेवग्गे १ बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो अग्गमहिसीणं बीओ वग्गो २ असुरिंद-वज्जियाणं दाहिणिल्लाणं भवणवासीणं इंदाणं अग्गमहिसीणं तइओ वग्गो ३ उत्तरिल्लाणं असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं इदाणं अग्गम-हिसीणं चउत्थो वग्गो ४ दाहिणिल्लाणं वाणमंतराणं–इदाणं अग्गमहि-सीणं पंचमो वग्गो, उत्तरिल्लाणं वाणमंतराणं इंदाणं अग्गमहिसीणं छट्ठो वग्गो ६, चंदस्स अग्गमहिसीणं सत्तमो वग्गो, सूरस्स अग्गमहिसीणं अट्ठमो वग्गो, सक्कस्स अग्गमहिसीणं णवमो वग्गो, ईसाणस्स अग्गम-हिसीणं दसमो वग्गो) चमरेन्द्र की–दाक्षिणात्य असुरकुमारेन्द्र की–

તેમને કહ્યું કે હે જંબૂ! સાંભળો, યાવત્ મુક્તિસ્થાનને પ્રાપ્ત કરી ચુકેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ધર્મકથાઓના દશ વર્ગો પ્રજ્ઞપ્ત કર્યા છે (तंजहा) તેઓ આ પ્રમાણે છે—

(चमरस्स अग्गमहिसीणं पढमेवग्गे बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो अग्गमहिसीणं बीओ वग्गो २ असुरिंदवज्जियाणं दाहिणिल्लाणं भवणवासीणं इंदाणं अग्गमहिसीणं तइओ वग्गो ३, उत्तरिल्लाणं असुरिंदवज्जियाणं भवण-वासीणं इंदाणं अग्गमहिसीणं चउत्थो वग्गो ४ दाहिणिल्लाणं वाणमंतराणं–इंदाणं अग्गमहिसीणं पंचमो वग्गो, उत्तरिल्लाणं वाणमंतराणं इंदाणं अग्गमहि-सीणं छट्ठो वग्गो ६, चंदस्स अग्गमहिसीणं सत्तमो वग्गो, सूरस्स अग्गमहिसीणं अट्ठमो वग्गो, सक्कस्स अग्गमहिसीणं णवमो वग्गो, ईसाणस्स अग्गमहिसीणं दसमो वग्गो)

सूरस्स=सूर्यस्याग्रमहिषीणामष्टमो वर्गः ८। शक्रस्याग्रमहिषीणां नवमो वर्गः ९। ईशानस्याग्रमहिषीणां दशमो वर्गः १० ॥ सू० १ ॥

मूलम्—जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता तं जहा—काली

अग्रमहिषियों का—पट्टदेवियों का—प्रथम वर्ग, बलि नामक वैरोचनेन्द्र की अग्रमहिषियोंका द्वितीय वर्ग, असुरेन्द्रको छोडकर दक्षिण दिशा संबंधी भवनवासियों के इन्द्रों की अग्रमहिषियों का तृतीय वर्ग, उत्तर दिशा संबंधी भवनवासियों के इन्द्रों की कि जिन में असुरेन्द्र छोड दिये गये हैं अग्रमहिषों का ४ चतुर्थ वर्ग, दक्षिण दिशा संबंधी वानव्यन्तरों के इन्द्रों की अग्रमहिषियोंका पंचम वर्ग, उत्तर दिशा संबंधी व्वानव्यंतरोंके इन्द्रों की अग्रमहिषियों का छट्ठा वर्ग, चन्द्र की अग्रमहिषियों का ७ वां वर्ग, सूर्यकी अग्रमहिषियोंका आठवां वर्ग, शक्र की अग्रमहिषियों का नवमां वर्ग, और ईशानकी अग्रमहिषियों का दशमां वर्ग। वैरोचन उत्तर-दिशाके असुरकुमार हैं। ये दक्षिण दिशासंबंधी असुरकुमारोंकी अपेक्षा विशिष्ट दीप्तिसंपन्न होते हैं इसलिये इन्हें वैरोचन कहा गया है॥सू०१॥

ચમરેન્દ્રની—દક્ષિણના અસુરકુમારેન્દ્રની—અગ્રમહિષીઓનો—પટ્ટદેવીઓનો પહેલો વર્ગ, બલિ નામે વૈરોચનેન્દ્રની અગ્રમહિષીઓનો બીજો વર્ગ, અસુરેન્દ્રને બાદ કરતાં દક્ષિણ દિશાના ભવનવાસીઓના ઇન્દ્રોની અગ્રમહિષીઓનો ત્રીજો વર્ગ, ઉત્તર દિશા સંબંધી ભવનવાસીઓના ઇન્દ્રોની કે જેઓમાંથી અસુરેન્દ્રોને બાદ કરી દીધા છે. અગ્રમહિષીઓનો ચોથો વર્ગ, દક્ષિણ દિશા સંબંધી વાન-વ્યંતરોના ઇન્દ્રોની અગ્રમહિષીઓનો પાંચમો વર્ગ, ઉત્તર દિશા સંબંધી વાન-વ્યંતરોના ઇન્દ્રોની અગ્રમહિષીઓનો સાતમો વર્ગ, સૂર્યની અગ્રમહિષીઓનો આઠમો વર્ગ, શક્રની અગ્રમહીષીઓનો નવમો વર્ગ અને ઇશાનની અગ્રમહિ-ષીઓનો દશમો વર્ગ. વૈરોચન ઉત્તર દિશાના અસુરકુમાર છે. એ દક્ષિણ દિશા સંબંધી અસુરકુમારો કરતાં વિશિષ્ટ દીપ્તિ—સંપન્ન હોય છે એથી જ એ વૈરોચન કહેવામાં આવ્યા છે. ॥ સૂત્ર ૧ ॥

राईरयणी विज्जू मेहा, जइणं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणा देवी सामी समोसरिए परिसा णिग्गया जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं काली नामं देवी चमरचंचाए रायहाणीए कालवडिंसगभवणे कालंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महत्तरियाहिं सपरिवाराहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहिं बहुएहि य कालवडिंसयभवणवासीहिं असुरकुमारेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडा महया हय जाव विहरइ, इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी२ पासइ, तत्थ समणं भगवं महावीरं जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणं पासइ पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया पीइमणा जाव हियया सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ ओमुइत्ता तित्थगराभिमुहा सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचइ अंचित्ता दाहिणं जाणुं धरणियलंसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलंसि निवेसेइ निवेसित्ता ईसिं

पच्चुण्णमइ पच्चुण्णमित्ता कडयतुडियथंभियाओ भुयाओ साहरइ साहरित्ता करयल जाव कट्टु एवं वयासी–णमोऽत्थुणं अरहंताणं जाव संपत्ताणं नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इह गया पासउ मं भगवं तत्थ गए इह गयत्तिकट्टु वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहा निसण्णा, तएणं तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था –सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्ता जाव पज्जुवासित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता आभिओगिए देवे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी--एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे एवं जहा सूरियाभो तहेव आणत्तियं देइ जाव दिव्वं सुरवराभिगमणजोग्गं जाणविमाणं करेह करित्ता जाव पच्चप्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवरं जोयणसहस्सवित्थिण्णं जाणविमाणं सेसं तहेव, तहेव णामगोयं साहेइ तहेव नट्टविहिं उवदंसेइ जाव पडिगया ॥ सू० २ ॥

टीका—'जइणं भंते' इत्यादि। जम्बूस्वामीपृच्छति–यदि खलु 'भंते' भदन्त!=हे भगवन्! श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन धर्मकथानां दशवर्गाः प्रज्ञप्ताः,

---

–:जइणं भंते! इत्यादि।

टीकार्थः—(जइणं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते! वग्गस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स) जंबूस्वामी श्री

जइणं भंते! इत्यादि—

(जइणं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते! वग्गस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स०)

प्रथमस्य खलु हे भदन्त ! वर्गस्य श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मास्वामीमाह-एवं खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-काली १, रात्रिः २, रजनी ३, विद्युत् ४, मेधा ५ । जम्बूस्वामी पृच्छति-यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तत्र प्रथमस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मा स्वामी कथयति—

एवं खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नगरं गुणशिलकं चैत्यम्, श्रेणिको राजा, चेल्लना देवी आसीत् । सामी=स्वामी श्रीमहावीरस्वामी

सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि (भंते) हे भदंत ! (जइणं) यदि (समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दसवग्गा पण्णत्ता) श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि मुक्तिस्थान को प्राप्त हो चुके हैं धर्मकथा के दश वर्ग प्ररूपित किये हैं तो (णं भंते) हे भदंत ! (समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते) उन्हीं श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मोक्ष में विराजमान हो चुके हैं प्रथम वर्ग का क्या अर्थ प्रज्ञप्त किया है ? (एवं खलु जंबू समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा-काली राई रयणी विज्जू मेहा जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणादेवी) इस प्रकार जंबू स्वामी के प्रश्न को सुनकर सुधर्मास्वामी ने

જંબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે (भंते) હે ભદન્ત ! (जइणं) જો (समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दसवग्गा पण्णत्ता) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધું છે. ધર્મકથાઓના દશ વર્ગો પ્રરૂપિત કર્યા છે તો (ण भंते) હે ભદન્ત ! (समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते) તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેઓ મોક્ષમાં વિરાજમાન થઈ ચૂકયા છે-પહેલા વર્ગનો શો અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે ?

(एवं खलु जंबू समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा-काली राई रयणी विज्जू मेहा जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पंचअज्झयणा पणत्ता । पढमस्स णं भंते, अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ! एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणा देवी)

'समोसरिए' समवसृतः समागतवान् । 'परिसा'-परिषत्=राजगृहनगर-वास्तव्यो जनसमूहः 'णिग्गया' निर्गता=भगवद्वन्दनार्थं स्व स्वस्थानान्निस्सृता, भगवता धर्मकथा कथिता यावद् परिषद् भगवन्तं 'पज्जुवासइ' पर्युपास्ते=सेवते, तस्मिन् काले तस्मिन समये काली नाम देवी चमरचञ्चायां राजधान्यां

उन्हें उत्तर देने के अभिप्राय से कहा कि (एवं खलु जंबू!) हे जंबू! तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है सुनो यावत् संप्राप्त श्रमण भगवान् महावीर ने प्रथम वर्ग के पांच अध्ययन प्रज्ञप्त किये हैं वे ये हैं-काली १, रात्रि २, रजनी ३, विद्युत् ४, और मेघा ५। अब पुनः जंबू स्वामी प्रश्न करते हैं कि हे भदंत! यावत् मुक्तिस्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर ने प्रथम वर्ग के पांच अध्ययन निरूपित किये हैं तो मैं आपसे पूछता हूं कि भदंत यावत् मोक्ष को संप्राप्त उन्हीं श्रमण भगवान् महावीरने प्रथम अध्ययनका क्या अर्थ निरूपित किया है? इसका उत्तर उन्हें सुधर्मास्वामी इस प्रकार देते हैं-हे जंबू! उस काल और उस समय में राजगृह नामकी नगरी थी-उस में गुणशिलक नाम का उद्यान था-नगरी के राजा का नाम श्रेणिक था। उसकी रानी का नाम चेल्लना था। (सामी समोसरिए परिसा णिग्गया जाव परिसा पज्जुवासइ-तेणं कालेणं तेणं समएणं काली नामं देवी, चमरचंचाए रायहाणीए

આ પ્રમાણે જંબૂ સ્વામી । પ્રશ્નને સાંભળીને તેમને ઉત્તર આપવાના ઉદ્દેશથી શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ કહ્યું કે (एवं खलु जंबू!) હે જંબૂ! તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે. સાંભળો, યાવત્ સંપ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પહેલા વર્ગના પાચ અધ્યયનો પ્રજ્ઞપ્ત કર્યા છે તેઓ આ પ્રમાણે છે— ૧ કાલી, ૨ રાત્રિ, ૩ રજની, ૪ વિદ્યુત, અને ૫ મેઘા

હવે ફરી જંબૂ સ્વામી પ્રશ્ન કરે છે કે હે ભદન્ત! યાવત્ મુક્તિસ્થાનને પ્રાપ્ત કરી ચુકેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પહેલા વર્ગના પાંચ અધ્યયનો નિરૂપિત કર્યાં છે તો હું તમને ફરી પૂછવા માગુ છું કે હે ભદન્ત! યાવત્ મોક્ષને પ્રાપ્ત કરી ચુકેલા તેજ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પહેલા અધ્યયનનો શો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે? શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેને ઉત્તર આપતાં કહેવા લાગ્યા કે જંબૂ! તે કાળે અને તે વખતે રાજગૃહ નામે એક નગરી હતી. તેમાં ગુણશિલક નામે ઉદ્યાન હતું નગરીના રાજાનું નામ શ્રેણિક હતું. તેની રાણીનું નામ ચેલ્લના હતું.

(सामी समोसरिए परिसा णिग्गया जाव परिसा पज्जुवासइ-तेणं कालेणं तेणं समएणं काली नामं देवी, चमर चंचाए रायहाणीए कालवडिंसगभवणे

'कालवडिंसगभवणे' कालावतंसकभवने काले=कालाख्ये सिंहासने चतसृभिः सामानिकसाहस्त्रीभिः, चतसृभिर्महत्तरिकाभिः, सपरिवाराभिस्तिसृभिः=बाह्याभ्यन्तरमध्यरूपाभिः 'परिसाहिं' परिषद्भिः पारिवारिकदेवीरूपाभिः, सप्तभिः 'अणिएहिं' अनीकैः=हयगजरथपदातिवृषभगन्धर्वनाटचरूपैः, अत्रायं विवेकः-

कालवडिंसगभवणे कालंसि, सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महरियाहिं, सपरिवाराहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहिं बहुएहिंकालवडिंसगभवणवासिहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिं य सद्धिं संपरिवुडा महयाहय जाव विहरइ) वहां पर श्री महावीर स्वामी का आगमन हुआ। लोगों को जब इनके आगमन की खबर लगी-तब समस्त राजगृह निवासी जन इन का वंदना करने के अभिप्राय से गुणशिलक उद्यान में आये। भगवान् ने धर्मकथा कही-यावत् परिषदने भगवान् की पर्युपासना की। उस काल में और उस समय में काली नाम की देवी चमरचंपा नाम की राजधानी में रहती थी। इसके भवन का नाम कालावतंसक था। जिस सिंहासन पर यह बैठती थी उसका नाम काल था। यह उस भवन में चार हजार सामानिकों की परिषदा के साथ, चार हजार महत्तरिकाओं के साथ, अपने २ परिवारवाली तीन हजार पारिवारिक देवियों के साथ, सात अनीकोंके-हय, गज, रथ, पदाति, वृषभ, गंधर्व एवं नाटयरूप सैन्य के-

कालंसि, सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महरियाहिं, सपरिवाराहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहिं बहूएहिं कालवडिंसयभवणवासीहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिं य सद्धिं सपरिवुडा महयाहय जाव विहरइ)

ત્યાં શ્રી મહાવીર સ્વામીનું આગમન થયું. જ્યારે લોકોને તેમના આગમનની જાણુ થઈ ત્યારે રાજગૃહના બધા લોકો તેમને વંદન કરવાના અભિપ્રાયથી ગુણુશિલક ઉદ્યાનમાં આવ્યા ભગવાને ધર્મકથા કહી સંભળાવી. યાવત્ પરિષદે ભગવાનની પર્યુપાસના કરી તે કાળે અને તે સમયે કાળી નામની દેવી ચમરચંચા નામની રાજધાનીમાં રહેતી હતી. તેના ભવનનું નામ કાલાવતંસક હતું. જે સિંહાસન ઉપર તે બેસતી હતી તેનું નામ કાળ હતું. તે ભવનમાં તે ચાર હજાર સામાનિકોની પરિષદાની સાથે, ચાર હજાર મહત્તરિકાઓની સાથે, પોતપોતાના પરિવારવાળી ત્રણુ હજાર પારિવારિક દેવીઓની સાથે સાત અનીકો-ઘોડા, હાથી, રથ, પાયદળ, વૃષભ, ગંધર્વ અને નાટ્ય

आद्यपञ्चकानि सङ्ग्रामाय, गन्धर्वनाट्ये पुनरुपभोगायेति, सप्तभिरनीकाधिपतिभिः, षोडशभिः आत्मरक्षकदेवसाहस्रीभिः, अन्यैर्बहुभिश्च कालावतंसकभवनवासिभिरसुरकुमारैर्देवैर्देवीभिश्च सार्द्धं संपरिवृता 'महयाहय जाव विहरइ' महताऽहत यावद् विहरति-'महयाऽऽहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं' महताऽऽहतनाट्यगीतवादित तन्त्रीतल ताल त्रुडित घनमृदङ्गपटुप्रवादित रवेण, तत्र-'महता' रवेणेतिसम्बन्ध, आहतानि=अव्याहतानि यानि नाट्यगीतानि, तथा-वादितानि-तन्त्री=वीणा, तलाः=हस्ततालाः, तालाः=कांस्यतालाः, त्रुडितानि=शेषाणि तूर्यादिवाद्यानि, तथा घन इव मृदङ्गः=घनध्वनिसादृश्याद् घनमृदङ्गः=स चासौ पटु प्रवादितश्चेति घनमृदङ्गपटुप्रवादितः, ततस्त्रिपदो द्वन्द्वः, तेषां यो रवस्तेन-उपलक्षितान् दिव्यान् भोगभोगान् शब्दादीन् भुञ्जाना विहरति। 'इमं च णं' अस्मिन्नवसरे खलु केवलकल्पं=संपूर्णम् जम्बूद्वीपं नाम द्वीपं=मध्यजम्बूद्वीपं विपुलेन 'ओहिणा' अवधिना=अवधिज्ञानेन 'अभोएमाणी २' अभोगयमाना २ पश्यन्ति पुनः पुनरुपयोगं ददती सती पश्यति। किं पश्यति ? इत्याह-'तत्थ' तत्र=अवधिज्ञानोपयोगे श्रमणं भगवन्तं महावीरं जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे राजगृहे-

साथ अनीकाधिपतियों के साथ, सोलह हजार आत्मरक्षक देवों के साथ, तथा और भी बहुत से कालावतंसक भवन में निवास करनेवाले असुरकुमार देवों के एवं देवियों के साथ परिवृत होकर रहा करती थी। अव्याहत (सतत) नाट्यगीतों के एवं वादित तन्त्री, हस्त, ताल, कांस्य ताल, त्रुडित आदि तूर्यादिवाद्यों के एवं मेघ की ध्वनि जैसे अच्छी तरह बजाये गये मृदंगों के सुन्दर २ शब्दों से उपलक्षित दिव्य भोगों को भोगती हुई अपने समय को आनन्द के साथ व्यतीत किया करती थी। (इमं च णं केवलकप्पं जंबुदीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी २ पासइ, तत्थ समणं भगवं महावीरं जंबू दीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे

રૂપ સૈન્યની સાથે અનીકાધિપતિઓની સાથે, સોળ હજાર આત્મરક્ષક દેવોની સાથે તેમજ બીજા પણ ઘણા કાલાવતંસક ભવનોમાં નિવાસ કરનારા અસુરકુમારદેવો અને દેવીઓની સાથે પરિવૃત થઈને રહેતી હતી. તે અવ્યાહત (સતત) નાટ્ય ગીતો, વાદિત તંત્રી, હસ્તતાલ, કાંસ્યતાલ, ત્રુડિત વગેરે તૂર્ય વગેરે વાદ્યો, મેઘના ધ્વનિની જેમ સારી પેઠે વગાડવામાં આવેલા મૃદંગોના સુંદર શબ્દોથી ઉપલક્ષિત દિવ્ય ભોગોનો ઉપભોગ કરતી પોતાના સમયને સુખેથી પસાર કરતી રહેતી હતી.

(इमं च णं केवलकप्पं जंबुदीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी २ पासइ, तत्थ समणंभगवं महावीर जंबुदीवे दीवे भारहेवासे रायगिहे णयरे

नगरे गुणशिलके चैत्ये यथाप्रतिरूपं=यथाकल्पम् 'उग्गहं' अवग्रहं=वसतेराज्ञाम् 'उग्गिण्हित्ता' अवगृह्य संयमेन तपसा आत्मानं भावयन्तं पश्यति, दृष्ट्वा हृष्ट-तुष्टचित्तानन्दिता 'पीइमणा' प्रीतिमनाः=प्रसन्नमनस्काः 'जावहियया' यावत्-हर्षवशविसर्पद्हृदया=हर्षवशादुल्लसितहृदया सिंहासनाद् अभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय

णयरे गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणं पासइ, पासित्ता हट्टतुट्ठचित्तमाणंदिया पीइमणा जाव हियया सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता तित्थगराभि-मुही सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ, अंचित्ता दाहिणं जाणुं धरणियलंसि निहट्टु त्तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलंसि निवे-सेइ, निवेसित्ता...... कट्टु एवं वयासी) इस अवसर में उसने केवल कल्प-सम्पूर्ण-जंबूद्वीप नामके द्वीपको-मध्यजंबूद्वीप को-विपुल अवधिज्ञान के द्वारा वार २ उपयोग देकर देखा-। उस समय उसने श्रमण भगवान् महावीर को जंबूद्वीपान्तर्गत भरत क्षेत्र में राजगृह नगर में गुणशिलक चैत्य में यथाकल्प वसति की आज्ञा लेकर संयम एवं तप से आत्मा को भावित करते हुए स्थित देखा। देखकर वह बहुत अधिक हृष्ट एवं तुष्ट हुई। उसका मन प्रीति से भर आया। हर्ष के वश से हृदय उल्लसित हो उठा। वह उसी समय अपने सिंहासन

गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावे-माणं पासइ, पासित्ता हट्ट-तुट्ठ चित्तमाणंदिया पीइमणा जाव हियया सीहा-सणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता तित्थगराभिमुही सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता, वामं-जाणुं अंचेइ, अंचित्ता दाहिणं जाणुं धरणियलंसि निहट्टु त्तिक्खुत्तोमुद्धाणं धरणिय-लंसि निवेसेइ निवेसित्ता.. .कट्टु एवं वयासी)

તે સમયે તેણે કેવલકલ્પ-સંપૂર્ણ-જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપને મધ્ય જંબૂ દ્વીપને વિપુલ અવધિજ્ઞાનના ઉપયોગથી વારંવાર જોયો તે સમયે તેણે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને જંબૂદ્વીપમાં આવેલા ભરતક્ષેત્રના રાજગૃહ નગરના ગુણ-શિલક ચૈત્યમાં યથાકલ્પ વસતીની આજ્ઞા લઈને સંયમ અને તપ દ્વારા પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા રહેતા જોયા જોઈને તે ખૂબ જ હૃષ્ટ અને તુષ્ટ થઈ ગઈ. તેનું મન પ્રેમથી તરબોળ થઈ ગયું હર્ષાતિરેકથી હૃદય ઉલ્લાસિત થઈ ગયું. તે તેજ વખતે પોતાના સિંહાસન ઉપરથી ઉઠી અને ઉઠીને તે પાદપીઠ

पादपीठात् 'पच्चोरुहइ' प्रत्यवरोहति=अवतरति, प्रत्यवरुह्य=अवतीर्य 'पाउयाओ' पादुके 'ओमुयइ' अवमुञ्चति=त्यजति, मुक्त्वा तीर्थंकराभिमुखी सतीसप्ताष्टपदानि 'अणुगच्छइ' अनुगच्छति=सम्मुखं गच्छति, अनुगम्य वामं जानुं 'अंचेइ' अञ्चति=उर्ध्वीकरोति, अञ्चित्वा=उर्ध्वीकृत्य दक्षिणं जानुं धरणितले 'निहट्टु' निहत्य=स्थापयित्वा 'तिक्खुत्तो' त्रिः कृत्वः=त्रिवारम् 'मुद्धाणं' मूर्धानं=मस्तकं धरणितले निवेशयति=लगयति, निवेश्य 'ईसिं पच्चुण्णमइ' ईषत्प्रत्यवनमति=स्तोकं शिरोनामयति, प्रत्यवनम्य 'कडयतुडियथंभियाओ' कटकत्रुटितस्तम्भिते कटके=करभूषणे त्रुटिते=बाहुभूषणे तैः स्तम्भिते=अवष्टब्धे 'भुयाओ' भुजे 'साहरइ' संहरति=एकत्रीकरोति, संहृत्य 'करयल जाव कट्टु' करतलपरिगृहीतं शिर आवर्त्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्-'नमोत्थुणं' इत्यादि-नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यः यावद् सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं सम्प्राप्तेभ्यः, नमोऽस्तु

से उठी-और उठकर वह पादपीठ से होकर नीचे आई-नीचे आकर उसने दोनों पादुकाओं को पैरों में से उतार दिया। उतार कर फिर वह तीर्थंकराधिष्ठित दिशा की ओर सात आठ पद आगे गई। वहां आकर उसने अपने वाम जानु को ऊँचा किया-ऊँचा कर के फिर दक्षिण जानु को नीचे धरणीतल में रखा-रखकर फिर तीन बार अपने मस्तक को नीचे भूमिपर लगाया-लगाकर फिर वह कुछ झुकी-शिर को नीचे-नवाया। बाद में कटक और त्रुटित से भूषित भुजाओं को एकत्रित किया-एकत्रित करके फिर उसने उन दोनों हाथोंकी अंजलि बनाई-और उसे मस्तक पर आदक्षिण प्रदक्षिण कर इस प्रकार कहा (नमोत्थुणं अरहंताणं जाव संपत्ताणं नमोत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स

ઉપર થઈને નીચે આવી. નીચે આવીને તેણે બન્ને પાદુકાઓને પગોમાંથી ઉતારી દીધી. ઉતારીને તે તીર્થંકર જે દિશા તરફ વિરાજમાન હતા તે દિશા તરફ સાત-આઠ ડગલાં આગળ ગઈ ત્યાં જઈને તેણે પોતાના ડાબા ઢીંચણને ઊંચો કર્યો ઊંચો કરીને પછી તેણે જમણા ઢીંચણને નીચે પૃથ્વી ઉપર ટેકવ્યો ટેકવીને તેણે ત્રણ વખત પોતાના મસ્તકને નીચે પૃથ્વી ઉપર ટેકવ્યું, ટેકવીને તે થોડી નમી-મસ્તકને નીચે નમાવ્યું. ત્યારપછી તેણે કટક અને ત્રુટિતથી વિભૂષિત ભુજાઓને ભેગી કરી, ભેગી કરીને તેણે તેઓ બન્નેની અંજલિ બનાવી અને તેને મસ્તક ઉપર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ-પૂર્વક ફેરવીને આ પ્રમાણે કહ્યું

(नमोत्थुणं अरहंताणं जाव संपत्ताणं नमोत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स वंदामि णं भगवंतं तत्थगय इह गया पासउ मे भगव

खलु श्रमणाय भगवते महावीराय यावत् सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं संप्राप्तुकामाय, वन्दे खलु भगवन्तं 'तत्थगयं' तत्रगतं=जम्बूद्वीपे राजगृहनगरस्य गुणशिलकोद्याने समवसृतम् 'इहगया' इहगता=चमरचञ्चाराजधानी स्थिताऽहम्, पश्यतु मां भगवान् तत्रगत इहगतम्, 'त्ति कट्टु' इति कृत्वा=इत्युक्त्वा वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा सिंहासनवरे 'पुरत्थाभिमुही' पौरस्त्याभिमुखी पूर्वदिशाभिमुखी 'निसण्णा' निषण्णा=उपविष्टा। ततः खलु तस्याः काल्या देव्या अयमेत-

जाव संपाविउकामस्स वंदामि णं भगवंतं तत्थ गयं इह गया पासउ मं भगवं तत्थ गए इह गयं त्तिकट्टु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुही निसण्णा तएणं तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था) यावत् सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हुए अर्हंत भगवंतों के लिये मेरा नमस्कार हो। सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त करने की कामनावाले श्रमण भगवान महावीर को मैं नमस्कार करती हूँ। जंबूद्वीप में राजगृह नगर के गुणशिलक उद्यान में इस समय विराजमान उन भगवान को मैं इस चमर चंपा नाम की राजधानी में रही हुई नमस्कार कर रही हूँ। वहां पर रहे हुए वे प्रभु मुझे यहां पर रही हुई देखे। इस प्रकार कहकर उसने उनको वंदना की -नमस्कार किया-वंदना नमस्कार करके फिर वह अपने उत्तम सिंहासन पर आकर पूर्व दिशाकी ओर मुँह करके बैठ गई। इसके बाद उस काली देवी के यह इस प्रकार का यावत् मनः संकल्प उत्पन्न हुआ- (सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्ता जाव पज्जुवासित्तए त्ति

तत्थ गए इह गयं त्ति कट्टु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुही निसण्णा-तएणं तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था)

યાવત્ સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને પ્રાપ્ત થયેલા અર્હંત ભગવંતોને મારા નમસ્કાર છે. સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને મેળવવાની કામનાવાળા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને હું નમસ્કાર કરૂં છું. જંબૂ દ્વીપના રાજગૃહ નગરના ગુણશિલક ઉદ્યાનમાં અત્યારે વિરાજમાન તે ભગવાનને હું આ ચમરચંચા નામની રાજધાનીમાં રહેતી નમસ્કાર કરી રહી છું. ત્યાં વિરાજમાન તે પ્રભુ અહીં રહેતી મને જુએ. આ પ્રમાણે કહીને તેણે તેમને વંદન કર્યાં અને નમસ્કાર કર્યા. વંદન અને નમસ્કાર કરીને તે પોતાના ઉત્તમ સિંહાસન ઉપર આવીને પૂર્વ દિશા તરફ મુખ કરીને બેસી ગઈ. ત્યારપછી તે કાળી દેવીને આ જાતનો યાવત્ મનઃ સંકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે—

द्भुवः यावत् मनः-सङ्कल्पः समुदपद्यत-श्रेयः खलु मम श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दित्वा यावत् 'पज्जुवासित्तए' पर्युपासितुम्=सेवितुम्, इति कृत्वा=इतिमनसि-निधाय एवम्=उक्तरीत्या 'संपेहेइ' सम्प्रेक्षते=विचारयति सम्प्रेक्ष्य=विचार्य 'आभिओगिएदेवे' आभियोगिकान् देवान्=भृत्यदेवान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय एवमवदत्-एवं खलु हे देवानुप्रियाः! श्रमणो भगवान् महावीरः एवं यथा सूर्याभस्तथैव आज्ञाप्तिकां ददाति यावत् दिव्यं सुरवराभिगमन-योग्यं 'जाणविमाणं' यानविमानं=यानाय गमनार्थंविमानं कुरुत, कृत्वा यावत्-ममाज्ञां 'पच्चप्पिणह' प्रत्यर्पयत=मह्य निवेदयत। तेऽपिदेवाः तथैव कृत्वा यावत्

कट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता आभिओगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे एवं जहा सूरियाभो तहेव आणत्तियं देइ जाव दिव्वं सुरवराभिगमणजोग्गं जाणविमाणं करेह, करित्ता जाव पच्चप्पिणह) मुझे अब यही उचित-श्रेयस्कर है-कि मैं श्रमण भगवान महावीर को वंदना करके यावत् उनकी पर्युपासना करूँ इस प्रकार उसने पूर्वोक्तरूप से विचार किया। विचार करके उसने उसी समय आभियोगिक देवों को बुलाया-और बुलाकर उससे इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियों! श्रमण भगवान् महावीर राजगृह नगर के गुणशिलक उद्यान में पधारे हुए हैं-मैं उनको वंदना करने के लिये जाना चाहती हूँ-अतः तुमलोग मेरे लिये दिव्य सुरवराभिगमन योग्य एकयान-विमान तैयार करो इस प्रकार की उसने उन्हें सूर्याभ देव की तरह आज्ञा दी। और साथ में उनसे यह भी कह दिया

(सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्ता जाव पज्जुवासित्तए त्तिकट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता आभिओगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे एवं जहा सूरियाभो तहेव आणत्तियं देइ जाव दिव्वं सुरवराभिगमणजोग्गं जाणविमाणं करेह, करित्ता जाव पच्चप्पिणह)

મારા માટે હવે એ જ વાત યોગ્ય છે કે હું શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને વંદના કરીને યાવત્ તેમની પર્યુપાસના કરૂં, આ પ્રમાણે તેણે વિચાર કર્યો. વિચાર કરીને તેણે તરત જ આભિયોગિક દેવોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો! શ્રમણ ભગવાન મહાવીર રાજગૃહ નગરના ગુણશિલક ઉદ્યાનમાં પધારેલા છે તેમને વંદન કરવા માટે હું ત્યાં જવા ઈચ્છું છું. એથી તમે બધા મારા માટે દિવ્ય સુરવરાભિગમન યોગ્ય એક યાન-વિમાન તૈયાર કરો. આ પ્રમાણે તે લોકોને તેણે સૂર્યાભદેવની જેમ આજ્ઞા કરી, અને સાથે સાથે તેઓને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું કે જ્યારે

प्रत्यर्पयन्ति=तदाज्ञानुसारेण कार्यं कृत्वा निवेदयन्ति । 'णवरं' नवरं=विशेषस्त्वयम्-यत्-सूर्याभस्य यानविमानं योजनशतसहस्रविस्तीर्णमस्ति, अस्यास्तु-योजनसहस्रविस्तीर्णं यानविमानमस्ति, शेषं तथैव विज्ञेयम् । तथैव-सूर्याभदेववदेव काली देवी स्वस्य नामगोत्रं साधयति=कथयति। तथैव=सूर्याभदेववदेव च नाट्यविधिम् उपदर्शयति, उपदर्श्य यावत् प्रतिगता=यत आगता तत्रैव प्रतिनिवृत्ता॥सू०२॥

सूलम्-भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-कालिए णं भंते! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी३ कहिं गया० कूडागारसालादिट्ठंतो,

---

कि जब वह विमान बनकर तैयार हो जावे-तब उसकी पीछे हमें खबर कर देना। सो उन आभियोगिक देवों ने वैसा ही किया-और पीछे इसकी खबर उसे कर दी। इसमें (जोयणसहस्सवित्थिण्णं जाणविमाणं सेसं तहेव) विशेषता इतनी रही कि सूर्याभदेव का यान विमान एक लाख योजन का विस्तारवाला था। तब कि इसका यह यान विमान १ हजार योजन का विस्तारवाला था। बाकी सब रचना इसकी उसी सूर्याभ विमान की तरह जानना चाहिये। (तहेव णामगोयं साहेइ, तहेव नाटयविहिं उवदंसेइ जाव पडिगया) सूर्याभ देव की तरह काली देवी ने अपने नाम गोत्र का कथन किया और सूर्याभ देव की तरह ही नाटयविधि को दिखलाया दिखालाकर फिर वह जहां से आई थी वहीं पर पीछे गई सूत्र २ ॥

વિમાન તૈયાર થઈ જાય ત્યારે તેની મને જાણ કરવામાં આવે. ત્યારપછી તે આભિયોગિક દેવોએ તેમજ કર્યું. અને વિમાન તૈયાર થઈ જવાની ખબર દેવીની પાસે મોકલાવી દીધી આ વિમાનમાં (जोयणसहस्सवित्थिण्णं जाण० विमाणं सेसं तहेव) વિશેષતા આટલી જ હતી કે જ્યારે સૂર્યાભદેવનું યાન-વિમાન એક લાખ યોજન જેટલું વિસ્તારવાળું હતું ત્યારે તેનું આ યાન-વિમાન એક હજાર યોજન જેટલુ વિસ્તારવાળુ હતું બાકી રચના સંબંધી તેની બધી વિગત સૂર્યાભ-વિમાનની જેમ જ જાણવી જોઈએ (तहेव णामगोय साहेइ, तहेव नाटयविहिं उवदसेइ जाव पडिगया) સૂર્યાભદેવની જેમ કાળી દેવીએ પોતાના નામ-ગોત્રનું કથન કર્યું અને સૂર્યાભદેવની જેમ જ નાટ્યવિધિ બતાવી અને બતાવીને તે જ્યાંથી આવી હતી ત્યાં જ પાછી જતી રહી. ॥ સૂત્ર ૨ ॥

अहो णं भंते ! काली देवी महिड्ढिया२ कालिए णं भंते ! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी३ किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता किण्णा अभिसमण्णागया ?, एवं जहा सूरियाभस्स जाव एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबूदीवे दीवे भारहे वासे आमलकप्पा णाम णयरी होत्था वण्णओ अंबसालवणे चेइए जियसत्तू राया तत्थ णं आमलकप्पाए नयरीए काले नामं गाहावइ होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए, तस्स णं कालस्स गाहावइस्स कालसिरी णामं भारिया होत्था, सुकुमाल जाव सुरूवा, तस्स णं कालस्स गाहावइस्स धूया कालसिरीए भारियाए अत्तया काली णामं दारिया होत्था, वुड्ढा वुड्ढकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पडियपुयत्थणी णिव्विन्नवरा वरपरिवज्जिया यावि होत्था, तेणं कालेणं तेणं समएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जहा वद्धमाणसामी णवरं णवहत्थुस्सेहे सोलसहिं समणसाहस्सीहिं अट्ठत्तीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे जाव अंबसालवणे समोसढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ, तएणं सा काली दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठ जाव हियया जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वयासी--एवं खलु अम्मयाओ ! पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जाव विहरइ, तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवंदिया गमित्तए ? अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि,

तएणं सा कालिया दारिया अम्मापिईहिं अब्भणुन्नाया समाणी हट्ठ जाव हियया ण्हाया कयबलिकम्मा कायकोउय मंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पवेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता धम्मियं जाणपवरं दूरूढा, तएणं सा काली दारिया धम्मियं जाणपवरं एवं जहा दोवइ जाव पज्जुवासइ, तएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइमहालयाए परिसाए धम्मं कहेइ, तएणं सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणियस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियया पासं अरहं पुरिसादाणीयं तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! णिग्गंथं पावयणं जाव से जहेयं तुब्भे वयह, जं णवरं देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तएणं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वयामि, अहासुहं देवाणुप्पिए !, तएणं सा काली दारिया पासेणं अरहया पुरिसादाणीएणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठ जाव हियया पासं अरहं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणपवरं दूरुहइ दूरुहित्ता पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतियाओ अंबसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव आमलकप्पा नयरी तेणेव

उवागच्छइ उवागच्छित्ता आमलकप्पं णयरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता ध॰ म्मियं जाणपवरं ठवेइ ठवित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल॰ एवं वयासी-एवं खलु अम्मयाओ! मए पासस्स अरहओ अंतिए धम्मं णिसंते सेऽवि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए, तएणं अहं अम्मयाओ! संसार भउव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणं इच्छामि णं तुब्भेहिं अब्भ- णुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ अंतिए मुंडा भवित्ता अगा- राओ अणगारियं पव्वइत्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडि- बंध करेह, तएणं से काले गाहावई विपुलं असणं४ उवक्खड- डावेइ उवक्खडावित्ता मित्तणाइ णियगसयणसंबंधिपरियणं आमंतेइ आमंतित्ता तओ पच्छा ण्हाए जाव विपुलेणं पुप्फव- त्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइणि- यगसयणसंबंधिपरियणस्स पुरओ कालियं दारियं सेयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेइ ण्हावित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेइ करित्ता पुरिससहस्सवाहिणियं सीयं दुरोहेइ दुरोहित्ता मित्तणाइणियग- सयणसंबंधिपरियणेणं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं आमलकप्पं नयरिं मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव अंबसालवणे चेइए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता छत्ताइए तित्थगराइसए पासइ पासित्ता सीयं ठावेइ ठावित्ता

कालियं दारियं सीयाओ पच्चोरुहइ तएणं तं कालियं दारियं अम्मा-
पियरो पुरओ काउं जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवागच्छइ
उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—
एवं खलु देवाणुप्पिया ! काली दारिया अम्हं धूया इट्ठा कंता
जाव किमंग पुण पासणयाए ?, एसणं देवाणुप्पिया ! संसार-
भउव्विग्गा इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा भवित्ता जाव
पव्वइत्तए, तं एयं णं देवाणुप्पियाणं सिस्सिणिभिक्खं, दल-
यामो पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्खं, अहासुहं
देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह तएणं काली कुमारी पासं
अरहं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसिभागं
अवक्कमइ अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ
ओमुइत्ता सयमेव लोयं करेइ करित्ता जेणेव पासे अरहा पुरि-
सादाणीए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पासं अरहं तिक्खुत्तो
वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—आलित्ते णं
भंते ! लोए एवं जाव सयमेव पव्वाविया, तएणं पासे
अरहा पुरिसादाणीए कालिं सयमेव पुप्फचूलाए अज्जाए
सिस्सिणियत्ताए दलयइ, तएणं सा पुप्फचूला अज्जा कालिं
दारियं सयमेव पव्वावेइ, जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, तएणं
सा काली अज्जा जाया ईरियासमिया जाव गुत्तबंभयारिणी,
तएणं सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अंतिए सामाइय-
माइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ बहूहिं चउत्थ जाव विहरइ॥सू०३॥

टीका—कालीदेवीगमनानन्तरं गौतमः पृच्छति–' भंतेति ' इत्यादि। ' भंतेति ' हे भदन्त! इति सम्बोध्य भगवान् गौतमः श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्–काल्या खलु हे भदन्त! देव्या सा=या साम्प्रतं दर्शिता सा दिव्या ' देविड्ढी ' देवर्द्धिः=विमानपरिवारादिरूपा, ' देवज्जुई ' देवद्युतिः=शरीराभरणादीनां दीप्तिरूपा ' देवाणुभावे ' देवानुभावः= शक्तिप्रभावादिरूपः, कुत्रगता ? कुत्र प्रविष्टा ? भगवानाह–शरीरं गता, शरीरमनु-

' भंते त्ति भगवं गोयमे ' इत्यादि।

टीकार्थः—कालीदेवी के चले जाने के बाद (भगवं गोयमे) भगवान गौतम ने (भंते त्ति) हे भदंत! इस प्रकार संबोधित कर (समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ) श्रमण भगवान् को वंदना की–नमस्कार किया (वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी) वंदना नमस्कार करके फिर उन्हों ने उनसे इस प्रकार पूछा–(कालिएणं भंते! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी ३ कहिं गया० कूडागारसालादिट्ठंतो, अहोणं भंते! कालीदेवी महड्ढिया ३, कालिएणं भंते! देवीए सा दिव्वा देविड्ढि ३ किण्णा लद्धा, किण्णा पत्ता, किण्णा अभिसमण्णा गया? एवं जहा सूरियाभस्स जाव) हे भदंत! कालीदेवी ने जो इस समय दिव्य विमान–परिवार आदिरूप ऋद्धि दिखलाई, शरीर, आभरण आदि की दीप्तिरूप जो देवद्युति एवं शक्ति प्रभाव आदिरूप जो देवानुभाव दिखलाया–वह सब कहां चला

'भंतेत्ति भगवं गोयमे' इत्यादि—

टीकार्थ—काळी देवीना જતા રહ્યા બાદ (भगवं गोयमे) ભગવાન ગૌતમે (भंतेत्ति) હે ભદન્ત! આ પ્રમાણે સંબોધન કરીને (समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને વંદન અને નમસ્કાર કર્યા. (वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी) વંદના અને નમસ્કાર કરીને તેમણે તેઓશ્રીને પૂછ્યું કે

(कालिएणं भंते! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी ३ कहिं गया० कूडागारसालादिट्ठंतो, अहोणं भंते! काली देवी महड्ढिया ३, कालिएणं भंते! देवीए सा दिव्वा देविड्ढि ३ किण्णा लद्धा, किण्णा पत्ता, किण्णा अभिसमण्णा गया? एवं जहा सूरियाभस्स जाव)

હે ભદન્ત! કાળી દેવીએ અત્યારે જે દિવ્યવિમાન, પરિવાર વગેરેની ઋદ્ધિ બતાવી, શરીર, આભરણ વગેરેની દીપ્તિની જે દેવદ્યુતિ. તેમજ શક્તિ, પ્રભાવ વગેરેનો જે દેવાનુભાવ બતાવ્યો તે બધો ક્યાં અદૃશ્ય થઈ ગયો? ક્યાં પ્રવિષ્ટ થઈ ગયો?

प्रविष्टा, 'कूडागारसालादिट्ठंतो' अत्र कूटाकारशाला दृष्टान्तो बोद्धव्यः। 'अहो' आश्चर्ये खलु हे भदन्त! कालीदेवी महर्द्धिका महाद्युतिका महानुभावा वर्त्तते काल्या खलु हे भदन्त! देव्या सा दिव्या देवर्द्धिः ३ 'किण्णा' कथं=केन प्रकारेण 'लद्धा' लब्धा=अर्जिता, 'किण्णा' कथं=केन प्रकारेण 'पत्ता' प्राप्ता=स्वाधीनीकृता 'किण्णा' कथं=केन प्रकारेण 'अभिसमन्नागया' अभिसमन्वागता=उपभोगविषयतया समागता? एवं 'जहासूरियाभस्स जाव' यथा-सूर्याभस्य यावत्=यथा सूर्याभदेवविषये गौतमस्वामिना प्रश्नः कृतस्तथैवात्रापि विज्ञेयः। अथ भगवान् कालीदेवीपूर्वभववृत्तान्तं वर्णयति-'एवं खलु' इत्यादि। एवं खलु हे गौतम! तस्मिन् काले तस्मिन् समये इहेव=अस्मिन्नेव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे आमलकल्पा नाम नगरी आसीत्। 'वण्णओ' वर्णकः=नगरी-वर्णनग्रन्थऔपपातिमूत्रादवसेयः। तत्र आम्रशालवनं चैत्यं, जितशत्रू राजा

गया-? कहां प्रविष्ट हो गया? इस प्रकार गौतम का प्रश्न सुनकर भगवान् ने उनसे कहा-शरीर में चला गया-शरीर में प्रविष्ट हो गया। इस विषय में कूटाकारशाला का दृष्टान्त जानना चाहिये। हे भदन्त! कालीदेवी महर्द्धिक, महाद्युतिक एवं महानुभाववाली है। इस कालीदेवी ने वह देवर्द्धि ३ किस प्रकार प्राप्त की अर्जित की किस प्रकार उसे अपने आधीन किया? और किस प्रकार से उसने उसे अपने भोग की विषयभूत बनाई? इस तरह गौतमस्वामी ने सूर्याभदेव के विषय में जिस तरह से प्रश्न किया उसी तरह से यहां पर भी जानना चाहिये-। अब भगवान् कालीदेवी के पूर्वभव के वृत्तान्त का वर्णन करते हैं-(एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं-इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आमलकप्पा णाम णयरी होत्था-वण्णओ-अंबसालवणे चेइए जियसत्तू

આ પ્રમાણે ગૌતમનો પ્રશ્ન સાંભળીને ભગવાને તેમને કહ્યું કે શરીરમાં પ્રવિષ્ટ થઇ ગયો-શરીરમાં જતો રહ્યો. આ વિષે કૂટાકાર શાળાનું દૃષ્ટાન્ત જાણવું જોઇએ. હે ભદન્ત! કાળી દેવી મહર્દ્ધિક, મહાદ્યુતિક અને મહાનુભાવવાળી છે. આ કાળી દેવીએ તે દેવર્દ્ધિ ૩ કેવી રીતે પ્રાપ્ત કરી છે, અર્જિત કરી છે, કેવી રીતે સ્વાધીન બનાવી છે, અને તેણે તેને કેવી રીતે પોતાના ઉપભોગની વિષયભૂતા બનાવી છે? આ પ્રમાણે ગૌતમ સ્વામીએ સૂર્યાભદેવના વિષે જેમ પ્રશ્ન કર્યો હતો તેમજ અહીં પણ જાણવો જોઇએ ભગવાન હવે કાળી દેવીના પૂર્વભવના વૃત્તાન્તનું વર્ણન કરે છે—

(एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे अमलकप्पा णाम णयरी होत्था-वण्णओ-अंबसालवणे चेइए जियसत्तू राया

घासीत्। तत्र खलु आमलकल्पायां कालो नाम गाथापतिरासीत् कीदृशः? इत्याह- 'अड्ढे' आढ्यः=धनधान्यादि समृद्धि-समृद्धः, 'जाव' यावत् 'अपरिभूए' अपरिभूतः=बहुजनैरपि पराभवितुमशक्यः। तस्य खलु कालस्य गाथापतेः कालश्रीर्नाम भार्याऽऽसीत्, कीदृशीत्याह-सुकुमारपाणिपादा यावत् सुरूपा। तस्य खलु कालस्य गाथापतेर्दुहिता कालश्रियः भार्याया आत्मजा काली नाम दारिका=पुत्री आसीत्। सा कीदृशी? त्याह-'वुड्ढा' वृद्धा=बहुवयस्कत्वात्, वृद्धकुमारी=अपरिणीतत्वात्, 'जुण्णा' जीर्णा=जीर्णशरीरत्वात्, 'जुण्णकुमारी' जीर्णकुमारी-अपरिणीतावस्थायामेव संजातजीर्णशरीरत्वात्, 'पडियपूयत्थणी'

राया तत्थ णं आमलकप्पाए नयरीए काले नामं गाहावई होत्था, अड्ढे जाव अपरिभूए) वे कहते हैं-गौतम सुनो-तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर इस प्रकार है-उस काल और उस समय में इसी जंबूद्वीप नामके द्वीप में भारतवर्षमें आमलकल्पा नामकी नगरी थी। नगरीका वर्णन करनेवाला पाठ यहां पर औपपातिक सूत्र से योजित करलेना चाहिये। उस नगरी में उद्यान था जिसका नाम आम्रशालावन था। इस नगरी के राजा का नाम जितशत्रु था। इस आमलकल्पा नगरी में काल नाम का गाथापति रहता था। यह धन धान्यादिसे विशेष समृद्ध था और लोगोंमें भी इस की अच्छी प्रतिष्ठा थी। (तस्स णं कालस्स गाहावइस्स कालसिरी णामं भारिया होत्था, सुकुमाल जाव सुरूवा, तस्स णं कालस्स गाहावइस्स धूया कालसिरीए भारियाए अत्तया काली णामं दारिया होत्था वुड्ढा वुड्ढकुमारी, जुण्णा जुण्णकुमारी, पडियपूयत्थणी णिव्विन्नवरा वरपरिव-

---

तत्थणं आमलकप्पाए नयरीए काले नामं गाहावई होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए)

તેઓ કહે છે કે હે ગૌતમ! સાંભળો, તમારા પ્રશ્નોનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે-કે તે કાળે અને તે સમયે આ જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમાં ભારત વર્ષમાં આમલકલ્પા નામની નગરી હતી. નગરીના વર્ણન વિષેનો પાઠ અહીં ઔપપાતિક સૂત્ર વડે જાણી લેવો જોઈએ તે નગરીમાં એક ઉદ્યાન હતું. તેનું નામ આમ્રશાલ વન હતું. તે નગરીના રાજાનું નામ જીતશત્રુ હતું. તે આમલકલ્પા નગરીમાં કાલા નામે ગાથાપતિ રહેતો હતો. તે ધનધાન્ય વગેરેથી સવિશેષ સમૃદ્ધ હતો અને સમાજમાં તેની સારી એવી પ્રતિષ્ઠા હતી.

(तस्स णं कालस्स गाहावइस्स कालसिरीणामं भारिया होत्था, सुकुमाल जाव सुरूवा, तस्स णं कालस्स गाहावइस्स धूया कालसिरीए भारियाए अत्तया काली णामं दारिया होत्था वुड्ढा वुड्ढकुमारी, जुण्णा जुण्णकुमारी, पडियपूयत्थणी

पतितपूतस्तनी-अवनतनितम्बस्तनी, 'णिव्विन्नवरा' निर्विण्णवरा=वरवरणे विरक्ता, अतएव 'वरपरिवज्जिया' वरपरिवर्जिता=पतिरहिता चाप्यासीत्। तस्मिन् काले तस्मिन् समये पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयः=पुरुषश्रेष्ठः आदिकरः यथा वर्द्धमानस्वामी तथैव पार्श्वप्रभुरपि 'णवरं' नवरम्-अयं विशेषः-श्रीवर्द्धमानस्वामी सप्तहस्तोच्छ्रयः, पार्श्वप्रभुः 'णवहत्थुस्सेहे' नवहस्तोत्सेधः=नवहस्तपरिमितशरीरावगाहनः, स षोडशभिः श्रमणसाहस्रीभिः, अष्टत्रिंशता आर्यिका-

---

ज्जिया यावि होत्था) इस काल गाथापति की कालश्री नाम भार्या थी। इसके हाथ पैर आदि समस्त अंग उपांग विशेष सुकुमार थे। देखने में यह बड़ी सुन्दर थी काल गाथापति के इस काल श्री की कुक्षि से उत्पन्न हुई एक काली नाम की दारिका भी थी। जो बहुत वयस्का हो चुकी थी-इसका विवाह भी नहीं हुआ था। इसलिये कुमारी अवस्था में ही यह वृद्धा जैसी बहु उमरवाली हो गई थी। शरीर भी बहु अवस्था संपन्न होने के कारण इसका जीर्ण हो चुका था। अतः अपरिणीतावस्था में ही यह जीर्ण कुमारी बन गई थी। इसके नितम्ब और स्तन दोनों ही बिलकुल ढीले हो गये थे नीचे झुक आये थे। वरके वरण करने रूप कार्य से यह विरक्त बन चुकी थी अतः यह वरपरिवर्जित थी-पति से सर्वथा रहित थी। (तेणं कालेणं तेणं समएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जहा वद्धमाणसामी णवरं णवहत्थुस्सेहे सोलसहिं समणसाहस्सीहिं अट्ठत्तीसाए अज्जिया साहस्सीहिं

णिविन्नवरा, वरपरिवज्जिया यावि होत्था)

તે કાલ ગાથાપતિની કાલશ્રી નામે ભાર્યા હતી. તેના હાથ-પગ વગેરે અને બધા અંગો તેમજ ઉપાંગો સવિશેષ સુકોમળ હતાં. દેખાવમાં તે બહુ જ સુંદર હતી. કાલ ગાથાપતિની આ કાલશ્રીના ગર્ભથી જન્મ પામેલી એક કાલી નામે દારિકા (પુત્રી) પણ હતી તે મોટી ઉંમરની થઈ ચૂકી હતી. તેનુ લગ્ન પણ થયું નહોતું. એથી કુમારિકાની અવસ્થામાં જ તે ડોશી જેવી બહુ ઉંમરે પહોંચેલી થઈ ગઈ હતી. બહુ ઉંમરે પહોંચેલી હોવા બદલ તેનું શરીર પણ જીર્ણ થઈ ચૂકયું હતું. એથી કુમારિકાની અવસ્થામાં જ તે જીર્ણ કુમારિકા બની ગઈ હતી તેના નિતંબ અને સ્તનો બંને સાવ ઢીલા થઈ ગયા હતા, નીચે લટકવા લાગ્યા હતા વરને વરણ કરવા રૂપ કાર્યથી તે વિરક્ત બની ગઈ હતી એથી તે વર પરિવર્જિત હતી. તે એકદમ પતિ વગરની હતી.

(तेणं कालेणं तेणं समएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जहा वद्धमाणसामी णवरं णवहत्थुस्सेहे सोलसहिं समणसाहस्सीहिं अट्ठत्तीसाए अज्जिया

साहस्रीभिः सार्द्धं संपरिवृतः यावत् आम्रशालवने समवसृतः। परिषन्निर्गता यावत् पर्युपास्ते। ततः खलु सा काली दारिका अस्याः भगवत्पार्श्वप्रभुसमागमनरूपायाः कथायाः=वार्त्तायाः 'लद्धट्ठा' लब्धार्था भगवानत्रसमवसृतः, इत्येवंरूपार्थप्राप्ता 'हट्ठ जाव हियया' हृष्ट यावद्हृदया-हृष्टतुष्टचित्तानन्दिता प्रीतमनस्का हर्षवशविसर्पद्हृदया सती यत्रैव अम्बापितरौ तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'करयल जाव' करतलपरिगृहीतं शिर आवर्तं दशनखं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्-एवं खलु हे अम्ब तातौ! पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयः आदिकरो यावत्-आम्रशालवने चैत्ये यथा-प्रतिरूपमवग्रहमवगृह्य संयमेन तपसाऽऽत्मानं भावयन् विहरति=आस्ते, तद्गच्छामि खलु हे अम्बतातौ! युष्माभिरभ्यनुज्ञाता सती पार्श्वस्या-

---

सद्धिं संपरिवुडे जाव अंबलसालवणे समोसढे) उस काल में और उस समय में पुरुषादानीय पुरुषश्रेष्ठ-आदिकर पार्श्वनाथ अर्हंत प्रभु जो श्री वर्द्धमान स्वामी जैसे थे-सोलह हजार श्रमणों के तथा ३८, हजार आर्यिकाओं के साथ तीर्थंकर परंपरानुसार विहार करते हुए उस आम्रशालवन में आये। भगवान् महावीर और पार्श्वनाथ प्रभु की शरीरावगाहना में विशेषता केवल इतनी ही थी कि उनका शरीर सात हाथ ऊँचा था और पार्श्व प्रभु का शरीर ९ हाथ ऊँचा था। (परिसा णिग्गया, जाव पज्जुवासइ, तएणं सा दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठ जाव हियया जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वयासी-एवं खलु अम्मयाओ पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जाव विहरइ, तं इच्छामि णं अम्मयाओ! तुब्भेहिं

साहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे जाव अंबसालवणे समोसढे)

ते काळे अने ते समये पुरुषादानीय-पुरुष श्रेष्ठ-आदिकर पार्श्वनाथ-अर्हंत प्रभु-जेओ श्री वर्द्धमान स्वामी जेवा हता-सोळ हजार श्रमणो तेमज ३८ हजार आर्यिकाओनी साथे तीर्थंकर परंपरा मुजब विहार करतां ते आम्रशाल वनमां आव्या. भगवान महावीर अने पार्श्वनाथ प्रभुनी शरीरावगाहनामां विशेषता फक्त आटली ज छे के तेमनुं शरीर सात हाथ जेटलुं ऊंचुं हतुं अने पार्श्व प्रभुनुं शरीर नव हाथ ऊंचु हतुं

(परिसा णिग्गया, जाव पज्जुवासइ, तएणं सा काली दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठ जाव हियया जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वयासी-एवं खलु अम्मयाओ! पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जाव विहरइ, तं इच्छामि णं अम्मयाओ! तुब्भेहिं अब्भ-

हृतः पुरुषादानीयस्य पादवन्दिका=पादवन्दनाशया गन्तुम् । अम्बापितरौ कथयतः–हे देवानुप्रिये ! पुत्रि यथा सुखं तथा कुरु किन्तु अस्मिन् शुभकार्ये प्रतिबन्धं=प्रमादं मा कुरु । ततः खलु सा कालिका दारिका अम्बापितृभ्यामभ्यनुज्ञाता सती हृष्टयावद्हृदया स्नाता कृतबलिकर्मा कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ता शुद्ध-

---

अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवंदिया-गमित्तए ?) लोगों को ज्योंही पार्श्व प्रभु के आम्रशालवन में आने की खबर लगी–त्योंहीं सब जनता प्रभु को वंदना के लिये अपने २ स्थान से निकलकर उस आम्रशालवन में आने लगी। वहां आकर प्रभु का धार्मिक उपदेश सुन वह प्रभु की पर्युपासना करने लगी। इसके अनन्तर जब यह समाचार काली दारिका को मिला तो वह बहुत अधिक हर्षित एवं संतुष्ट चित्त हुई। बाद में वह जहां अपने माता पिता थे वहां पहुँची वहां जाकर उसने माता पिता को दोनों हाथ जोड़कर चरण वंदना की–और इस प्रकार कहा–हे माततात ! पुरुषश्रेष्ठ, आदिकर, ऐसे पार्श्वनाथ अर्हंत प्रभु आम्रशालवन में पधारे हुए हैं–इसलिये मैं आपसे आज्ञापित होकर उन पुरुषश्रेष्ठ अर्हंत प्रभु पार्श्वनाथ को वंदना करने के लिये जाना चाहती हूँ। (अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि, तएणं सा कालिया दारिया अम्मापिईहिं अब्भणुन्नाया समाणी हट्ठतुट्ठ जाव हियया ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता

णुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवंदिया गमित्तए ?)

પાર્શ્વ પ્રભુના આમ્રશાલવનમાં પધારવાની જાણુ થતાં જ બધા લોકો પ્રભુને વંદન કરવા માટે પોતપોતાના સ્થાનેથી નીકળીને તે આમ્રશાલ વનમાં આવવા લાગ્યા. ત્યાં આવીને પ્રભુનો ધાર્મિક ઉપદેશ સાંભળીને તેઓ પ્રભુની પર્યુપાસના કરવા લાગ્યા. ત્યારબાદ કાલી દારિકાને આ સમાચારો મળ્યા ત્યારે તે ખૂબ જ હર્ષિત તેમજ સંતુષ્ટ ચિત્તવાળી થઈ ગઈ. ત્યારપછી તે જ્યાં તેના માતા–પિતા હતા ત્યાં પહોંચી. ત્યાં જઈને તેણુ માતા–પિતાને બંને હાથ જોડીને ચરણુ વંદના કરી અને ત્યારપછી આ પ્રમાણે વિનંતી કરી કે-હે માતા પિતા ! પુરુષ શ્રેષ્ઠ, આદિકર એવા પાર્શ્વનાથ અર્હંત પ્રભુ આમ્રશાલ વનમા પધાર્યા છે. એટલા માટે હું તમારી આજ્ઞા મેળવીને તે પુરુષ શ્રેષ્ઠ અર્હંત પ્રભુ પાર્શ્વનાથને વંદન કરવા માટે જવા ઇચ્છુ છુ.

(अहा सुहं, देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि, तएणं सा कालिया दारिया अम्मापिईहिं अब्भणुन्नाया समाणी हट्ठतुट्ठ जाव हियया ण्हाया कयबलिकम्मा कय

प्रवेश्यानि माङ्गल्यानि वस्त्राणि प्रवरपरिहिता अल्पमहार्घाभरणालङ्कृतशरीरा चेटिका-चक्रवालपरिकीर्णा स्वकाद् गृहाद् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव बाह्या-उपस्थानशाला यत्रैव धार्मिको यानप्रवरस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य धार्मिकं यान-प्रवरं दुरूढा=आरूढा । ततः खलु सा काली दारिका धार्मिकं यानप्रवरम्, एवं

सुद्धप्पवेसाइं मंगलाइं वत्थाइं पवरपरिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकिय सरीरा चेडिया चक्कवालपरिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाण-प्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा, तएणं सा काली दारिया धम्मियं जाण पवरं जहा दोवई जाव पज्जुवासइ) तब माता पिता ने उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिये ! तुझें जिस प्रकार सुख मिले उस प्रकार तू कर-इस शुभकार्य में प्रतिबंध-प्रमाद मत कर । इस प्रकार माता पितासे अभ्यनुज्ञात हुई उस दारिका ने हृष्ट तुष्ट चित्त होकर स्नान किया वायसादि के लिये अन्नका भागरूप-बलिकर्म किया कौतुक, मंगल एवं प्रायश्चित्त करके शुद्ध प्रवेश योग्य, मंगलकारी वस्त्रों को अच्छी तरह पहिरा, और अल्पभार बहुमूल्य आभरणों से अलंकृत शरीर होकर वह चेटिका चक्रवाल से युक्त हो अपने घर से निकली। निकलकर वह वहां गई-जहां बाह्य उपस्थान शाला थी-उसमें जाकर वह जहां धार्मिक यानप्रवर रक्खा था-वहां पहुँची-वहां जाकर

कोउयमंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पवेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिया अप्पमहग्घा-भरणालंकियसरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा तएणं सा काली दारिया धम्मियं जाणप्पवरं एवं जहा दोवई जाव पज्जुवासइ)

ત્યારે માતાપિતાએ તેને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયે ! તને જેમ સુખ મળે તેમ તું કર. આ શુભ કાર્યમાં પ્રતિબંધ-પ્રમાદ કર નહિ આ પ્રમાણે માતાપિતા વડે આજ્ઞાપિત થયેલી તે દારિકાએ હૃષ્ટ-તુષ્ટ ચિત્ત થઇને સ્નાન કર્યું કાગડા વગેરેને અન્નભાગ આપીને બલિકર્મ કર્યું. કૌતુક, મંગળ અને પ્રાયશ્ચિત્ત કરીને શુદ્ધ પ્રવેશ યોગ્ય, મંગળકારી વસ્ત્રોને સારી રીતે પહેર્યા અને વજનમાં હલકા પણ કિંમતમાં બહુ ભારે એવા આભરણોથી શરીરને અલંકૃત કરીને દાસીઓના સમૂહથી પરિવેષ્ટિત થઇને પોતાના ઘેરથી નીકળી નીકળીને તે ત્યાં પહોંચી જ્યા બાહ્ય ઉપસ્થાન શાળા હતી. તેમાં જઇને તે જ્યાં ધાર્મિક યાનપ્રવર ઊભું હતું તેમાં આરૂઢ થઈ ગઈ. આરૂઢ થઇને તે

'जहा दोवई जाव' यथा द्रौपदी यावत्-द्रौपदीवत् छत्रादीन् तीर्थङ्करातिशयान् दृष्ट्वा धार्मिकाद् यानप्रवरादवतरति, पञ्चाभिगमपूर्वकं भगवत्समीपे गत्वा वन्दित्वा नमस्यित्वा च भगवन्तं 'पज्जुवासइ' पर्युपास्ते। ततः खलु पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयः काल्यै दारिकायै तस्यां च महातिमहालयायां पर्षदि धर्मं कथयति ततः खलु सा काली दारिका पार्श्वस्यार्हतः पुरुषादानीयस्यान्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य हृष्ट यावद् हृदया पार्श्वमर्हन्तं पुरुषादानीयं त्रिकृत्वो वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा

वह उस पर आरूढ हो गई। आरूढ होकर वह वहाँ से चली। ज्योंही उसने द्रौपदी की तरह तीर्थंकरातिशयरूप छत्रादि विभूति को देखा तो वह देखकर उस धार्मिक यानप्रवर से नीचे उतरी। और पञ्च अभिगमन पूर्वक भगवान् के पास जाकर उसने उनको वंदना की, उन्हें नमस्कार किया-वंदना नमस्कार करके फिर उसने उनकी पर्युपासना की। (तएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइमहालयाए परिसाए धम्मो कहिओ) पुरुषादानीय अर्हत प्रभु पार्श्वनाथने उस काली दारिकाको उस विशाल परिषदाके बीचमें धर्मकथा सुनाई। (तएणं सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियया पासं अरहं पुरिसादाणीयं तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ) पुरुषादानीय उन अर्हत पार्श्वनाथ प्रभु से धर्म को सुनकर और हृदय में अवधारण कर वह काली दारिका बहुत अधिक हर्षित

त्यांथी रवाना थई. द्रौपदीनी जेम तेणे ज्यारे तीर्थंकरातिशय रूप छत्र वगेरे विभूतिने जोई के जोतांनी साथे ज ते धार्मिक यान-प्रवरमांथी नीचे उतरी पडी. अने पंच अभिगमनपूर्वक भगवाननी पासे जईने तेमने वंदना करी, तेमने नमस्कार कर्या. वंदना अने नमस्कार करीने तेणे तेमनी पर्युपासना करी. त्यारपछी

(तएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइमहालयाए परिसाए धम्मो कहिओ)

पुरुषादानीय अर्हंत प्रभु पार्श्वनाथे ते काली दारिकाने ते विशाल परिषदानी सामे धर्मकथा संभळावी.

(तएणं सा काली-दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियया पासं अरहं पुरिसादाणीयं तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ)

पुरुषादानीय ते अर्हंत पार्श्वनाथ प्रभुनी पासेथी धर्मने सांभळीने अने तेने हृदयमां अवधारित करीने ते काली दारिका बहु ज वधारे हर्षित

नमस्यित्वा एवमवादीत्-श्रद्दधामि खलु हे भदन्त ! नैर्ग्रन्थ्यं प्रवचनं यावत् तद् तथैतद् यूयं वदथ नवरं=विशेषोऽयम्-यत्-अहम् अम्बापितरौ आपृच्छामि, ततः= मातापितरौ पृष्ट्वा खलु अह देवानुप्रियाणामन्तिके यावत् प्रव्रजामि । भगवानाह- यथासुखं हे देवानुप्रिये ! । ततः खलु सा काली दारिका पार्श्वेन अर्हता पुरुषा-

हृदय हुई। उसने उन पुरुषादानीय पार्श्वनाथ अर्हत प्रभु को तीन वार वंदना नमस्कार किया। वाद में (वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी सद्दहामि णं भंते ! णिग्गंथं पावयणं जाव से जहेयं तुब्भे वयह, जं णवरं देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तएणं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वयामि, अहासुहं देवाणुप्पिए ! तएणं सा काली दारिया पासेणं अरहया पुरिसादाणीएणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठ जाव हियया पासं अरहं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणपवरं दुरुहइ, दुरूहित्ता पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतियाओ अंबसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव आमलकप्पा नयरी, तेणेव उवागच्छइ) वंदना नमस्कार करके उसने उन प्रभु से ऐसा कहा-हे भदंत ! मैं आपके द्वारा प्रतिपादित निर्ग्रन्थ प्रवचन को विशेष श्रद्धा की दृष्टि से देखती हूँ आपने जैसा यह प्रतिपादित किया है वह वस्तुतः वैसा ही है। यह मुझे बहुत रुचा है। अतः मैं माता पिता से पूछती हूँ। उनसे पूछकर फिर आप देवानुप्रिय के पास आकर

હૃદય થઈ. તેણે તે પુરુષાદાનીય પાર્શ્વનાથ અર્હંત પ્રભુને ત્રણ વાર વંદના અને નમસ્કાર કર્યાં ત્યારબાદ

(वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी सद्दहामिणं भंते ! णिग्गंथं पावयणं जाव से जहेयं तुब्भे वयह, जं णवरं देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तएणं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वयामि, अहा सुहं देवाणुप्पिए ! तएणं सा काली दारिया पासे णं अरहया पुरिसादाणीएणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठ जाव हियया पासं अरहं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणपवरं दुरुहइ दुरूहित्ता पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतियाओ अंबसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव आमलकप्पा नयरी तेणेव उवागच्छइ)

વંદના નમસ્કાર કરીને તેણે તે પ્રભુને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ભદન્ત ! તમારા વડે પ્રતિપાદિત નિર્ગ્રંથ પ્રવચનને હું વિશેષ શ્રદ્ધાની દૃષ્ટિએ જોઉં છું. તમે જેવું આ પ્રતિપાદિત કર્યું છે ખરેખર તે તેવું જ છે. મને આ ખૂબ જ ગમી ગયું છે. એથી હું માતાપિતાને પૂછી લઉં છું તેમને પૂછીને

दानीयेन एवमुक्ता सती हृष्ट यावद् हृदया पार्श्वमर्हन्तं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा तदेव धार्मिकं यानप्रवरं दूरोहति, दूरुह्य पार्श्वस्यार्हतः पुरुषादानीयस्यान्तिकाद् आम्रशालवनात् चैत्यात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव आमलकल्पा नगरी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य आमलकल्पाया नगर्या मध्य-मध्येन यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य धार्मिकं यानप्रवरं स्थापयति, स्थापयित्वा धार्मिकाद् यानप्रवरात् प्रत्यवरोहति, प्रत्यवरुह्य यत्रैव अम्बापितरौ तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'करतल०' करतलपरिगृहीतं मस्तकेऽञ्जलि-

---

दीक्षित होना चाहती हूँ। काली दारिका के इस अभिप्राय को सुनकर प्रभुने उससे कहा देवानुप्रिये! यथासुखम्। इस प्रकार वह काली दारिका पुरुषादानीय उन अर्हत प्रभु पार्श्वनाथ से अनुमोदित होकर चित्त में बहुत अधिक प्रसन्न हुई। उसने अर्हन्त पार्श्वनाथ प्रभु को वंदना नमस्कार किया-और वंदना नमस्कार करके वहां से आकर वह उसी अपने धार्मिक यान पर चढ गई चढकर वह फिर पुरुषादानीय, अर्हत प्रभु पार्श्वनाथ के पास से और उस आम्रशालवन नामके उद्यान से बाहिर चली आई। बाहिर आकर वह जहां आमलकल्पा नगरी थी -वहां पर आ गई। (उवागच्छित्ता आमलकप्पं णयरिं मज्झं मज्झेणं जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं जाणपवरं ठवेइ, ठवित्ता धम्मियाओ जाणपवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कर-

---

આપ દેવાનુપ્રિયની પાસે આવીને દીક્ષિત થવા ચાહું છું. કાલી દારિકાના આ અભિપ્રાયને સાંભળીને પ્રભુએ તેને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયે! 'યથાસુખમ્' આ પ્રમાણે તે કાલી દારિકા પુરુષાદાનીય તે અર્હંત પ્રભુ પાર્શ્વનાથ વડે અનુમોદિત થઈને ચિત્તમાં ખૂબ જ પ્રસન્ન થઈ. તેણે અર્હંત પાર્શ્વનાથ પ્રભુને વંદના નમસ્કાર કર્યાં અને વંદના નમસ્કાર કરીને ત્યાંથી આવીને તે તેજ પોતાના ધાર્મિક યાનમાં બેસી ગઈ અને બેસીને તે પુરુષાદાનીય અર્હંત પ્રભુ પાર્શ્વનાથની પાસેથી અને તે આમ્રશાલ વન નામના ઉદ્યાનથી બહાર આવી ગઈ. બહાર આવીને તે જ્યાં આમલકલ્પા નગરી હતી ત્યાં આવી ગઈ

(उवागच्छित्ता आमलकप्पं णयरिं मज्झं मज्झेणं जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं जाणपवरं ठवेइ, ठवित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता, जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल० एवं वयासी-एवं खलु अम्मयाओ! मंए पासस्स

कृत्वा एवमवादीत्-एवं खलु हे अम्बतातौ ! मया पार्श्वस्यार्हतोऽन्तिके धर्मः 'णिसंते' निशान्तः=श्रुतः, सोऽपि च धर्मः 'मे' मम 'इच्छिए' इष्टः= इच्छाविषयीभूतः, 'पडिच्छिए' प्रतीष्टः=पुनः पुनरभिलषितः 'अभिरुइए' अभिरुचितः=आस्वाद्यवस्तुवत्सर्वथाप्रियः, ततः=तस्मात् कारणात् खलु अहं हे अम्बतातौ ! संसारभयोद्विग्ना भीता जन्ममरणेभ्योऽतः इच्छामि खलु युष्माभ्याम-

यल० एवं वयासी-एवं खलु अम्मयाओ ! मए पासस्स अरहओ अंतिए धम्मे णिसंते से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए-तएणं अहं अम्मयाओ! संसारभउव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणं-इच्छामि णं तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ अंतिए मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए) वहां आकर के वह आमलकल्प नगरी के बीचों बीच से होकर जहां वह बाह्य उपस्थान शाला थी-वहां आई-वहां आकर वह उस धार्मिक यानप्रवर से नीचे उतरी-नीचे उतर कर फिर बाद में वह जहां अपने माता पिता थे-वहां गई-वहां जाकर उसने अपने दोनों हाथों की अंजलि बनाकर और उसे मस्तक पर रखकर उनसे इस प्रकार कहा-हे मात तात ! सुनो मैंने अर्हंत प्रभु पार्श्वनाथ के मुख से धर्म सुना है-वह धर्म मुझे बहुत अच्छा लगा है, बार बार उस धर्म को सुनने की अभिलाषा हो रही है। जिस प्रकार आस्वाद्य वस्तु प्रिय लगती है उसी प्रकार वह धर्म मेरे लिये सब प्रकार से प्रिय लगा है। उसके सुनने से मैं हे मात तात ! इस संसार

अरहओ अंतिए धम्मे णिसंते से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए-तएणं अहं अम्मयाओ ! संसारभउव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणी-इच्छामि णं तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ अंतिए मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए)

ત્યાં આવીને તે આમલકલ્પા નગરીની વચ્ચે થઈને જ્યાં તે બાહ્ય ઉપસ્થાન શાળા હતી ત્યાં આવી ત્યાં આવીને તે તે ધાર્મિક યાન પ્રવરમાંથી નીચે ઉતરી, નીચે ઉતરીને તે જ્યાં તેના માતાપિતા હતાં ત્યાં ગઈ. ત્યાં જઈને પોતાના બંને હાથોની અંજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે માતાપિતા ! સાંભળો, અર્હંત પ્રભુ પાર્શ્વનાથના મુખથી મેં ધર્મનું શ્રવણ કર્યું છે, તે મને બહુ જ ગમી ગયું છે. તે ધર્મને વારંવાર સાંભળવાની ઈચ્છા થઈ રહી છે જેમ આસ્વાદ્ય વસ્તુ પ્રિય લાગે છે તેમજ તે ધર્મ મારા માટે બધી રીતે પ્રિય થઈ પડયો છે હે માતાપિતા ! તેના

भ्यनुज्ञाता सती पार्श्वस्याहतोऽन्तिके मुण्डाभूत्वा आगारादू अनगारितां प्रव्रजितुम्=स्वीकर्त्तुम् । मातापितरौ कथयतः-यथासुखं हे देवानुप्रिये !=यथा रोचते तथा-कुरु किन्तु अस्मिन् कार्ये प्रतिबन्धं=प्रमादं मा कुरु । ततः=स्वपुत्र्या दीक्षानिश्चयानन्तरं खलु स कालो गाथापतिर्विपुलम् अशनम् ४ अशनादि चतुर्विधमाहारम् उपस्कारयति, उपस्कार्य मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनम् आमन्त्रयति, आमन्त्र्य ततः पश्चात् स्नातः यावत् विपुलेन पुष्पवस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण सत्कृत्य सम्मान्य तस्यैव मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनस्य पुरतः=अग्रे कालिकां दारिकां श्वेतपीतैः=रजतसुवर्णमयैः कलशैः स्नपयति, स्नपयित्वा सर्वालङ्कारविभूषितां करोति, कृत्वा पुरुषसहस्रवाहिनिकां शिबिकां दूरोहयति=आरोहयति, दूरोह्य मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनेन सार्द्धं संपरिवृतः सर्वद्धर्या यावत्-वाद्य-

---

के भय से उद्विग्न होकर जन्ममरण से भयभीत हो चुकी हूँ-अतः मैं चाहती हूँ कि मैं आप से आज्ञा प्राप्त कर उन अर्हत पार्श्वनाथ प्रभु के समीप मुंडित होकर अगारावस्था से अनगारावस्था स्वीकार कर लूं । इस प्रकार अपनी काली दारिका की बात सुनकर माता पिता ने उससे कहा-(अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह, तएणं से काले गाहावई विपुलं असणं ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइ णियग सयणसंबंधिपरियणं आमंतेइ आमंतित्ता तओ पच्छा ण्हाए जाव विउलेणं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणस्स पुरओ कालियं दारियं सेया पीएहिं कलसेहिं ण्हावेइ ण्हावित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेइ, करित्ता पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं दुरोहेइ, दुरोहित्ता मित्तणाइणियगसयण

શ્રવણથી હું આ સંસારના ભયથી ઉદ્વિગ્ન થઈને જન્મ-મરણથી ભયભીત થઈ ગઈ છું. એથી મારી ઇચ્છા છે કે હું તમારી આજ્ઞા મેળવીને તે અર્હંત પાર્શ્વનાથ પ્રભુની પાસે મુંડિત થઈને અગારાવસ્થા ત્યજીને અનગારાવસ્થા સ્વીકારી લઉં. આ પ્રમાણે પોતાની કાલી દારિકાની વાત સાંભળીને માતાપિતાએ તેને કહ્યું:—

(अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह, तएणं से काले गाहावई विपुलं असणं ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरियणं आमंतेइ आमंतित्ता तओ पच्छा ण्हाए जाव विपुलेणं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणस्स पुरओ कालियं दारियं सेयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेइ ण्हावित्ता सव्वालंकारविभूसिय करेइ, करित्ता

मानानेकविधवादित्ररवेण सह आमलकल्पाया नगर्या मध्यमध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैवाम्रशालवनं चैत्यं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य छत्रादिकान् तीर्थकराति-

---

संबधिपरियणेणं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं आमलकप्पं नयरिं मज्झं मज्झेणं णिगच्छइ) हे देवानुप्रिये! तुझे जिस तरह अच्छा लगे वैसा तू कर-इस कार्य में प्रमाद न कर। इस तरह उस काल गाथापति ने अपनी पुत्री को दीक्षा ग्रहण करने मे दृढ निश्चयवाली जानकर विपुल मात्रा में अशनादि रूप चतुर्विध आहार निष्पन्न कर-वाया-बाद में मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन, संबन्धी परिजनों को आमंत्रित किया. आमंत्रित करके बाद में उसने स्नात होकर विपुल पुष्प, वस्त्र, गंध माल्य, एवं अलंकारों से सत्कार सन्मान करके उन मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन, संबन्धी, परिजनों के साथ काली दारिका का श्वेत पीत कलशों द्वारा अभिषेक किया-बाद में उसे समस्त अलंकारों से विभूषित किया-फिर पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिका पर उसे चढवाया। चढवाकर फिर उन मित्र, ज्ञाति निजक, स्वजन संबन्धी परिजनों से घिरा हुआ होकर वह अपनी समस्त ऋद्धि के अनुसार, वाद्यमान अनेक विध बाजो की ध्वनि के साथ २ आमलकल्पा नगरी के ठीक बीचों बीच से होकर निकला। (णिग्गच्छित्ता जेणेव अंबसालवणे चेइए

पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं दुरोहेइ, दुरोहित्ता मित्तणाइ, णियगसयणसंबंधि परियणेणं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं आमलकप्पं नयरिं मज्झं मज्झेणं णिगच्छइ)

હે દેવાનુપ્રિયે! તને જેમ સારૂં લાગે તેમ કર આ કામમાં પ્રમાદ કરીશ નહિ આ પ્રમાણે તે કાલગાથાપતિએ પોતાની પુત્રીનો દીક્ષા ગ્રહણ કરવાનો મક્કમ વિચાર જાણીને પુષ્કળ પ્રમાણમાં અશન વગેરે ચાર જાતના આહારો તૈયાર કરાવડાવ્યા. ત્યારબાદ મિત્ર, જ્ઞાતિ, નિજક, સ્વજન, સંબંધી પરિજનોને આમંત્રિત કર્યા. આમંત્રિત કરીને તેણે સ્નાન કરીને પુષ્કળ પુષ્પ, વસ્ત્ર, ગંધ, માલ્ય અને અલંકારો વડે સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તે મિત્ર, જ્ઞાતિ, નિજક, સ્વજન, સંબંધી, પરિજનોની સાથે કાલી દારિકાનો સફેદ, અને પીળા કળશો વડે અભિષેક કર્યો ત્યારબાદ તેને સમસ્ત અલંકારો વડે વિભૂ-ષિત કરી અને ત્યારપછી પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખી ઉપર તેને ચઢાવી. ચઢાવીને તેણે મિત્ર. જ્ઞાતિ, નિજક, સ્વજન સંબંધી, પરિજનોની સાથે પરિ-વેષ્ટિત થઇને પોતાની સમસ્ત ઋદ્ધિની સાથે, ઘણાં વાજાંઓના ધ્વનિની સાથે સાથે આમલકલ્પા નગરીની બરાબર વચ્ચે થઇને નીકળ્યો.

शयान् पश्यति, दृष्ट्वा शिबिकां स्थापयति, स्थापयित्वा कालिकां दारिकां शिबिकातः प्रत्यवरोहयति। ततः खलु तां कालिकां दारिकाम् अम्बापितरौ पुरतः कृत्वा यत्रैव पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य वन्देते नमस्यतः, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादिष्टाम्-एवं खलु हे देवानुप्रियाः! काली दारिका आवयोर्दुहिता इष्टा कान्ता यावत् उदुम्बरपुष्पमिव श्रवणायापि दुर्लभा किमङ्ग! पुनः

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्ताइए तित्थगराइसए पासइ) निकलकर वह वहां गया कि जहां वह आम्रशालवन नाम का उद्यान था। वहां जाकर उसने तीर्थंकर प्रकृति के उदय से होनेवाले छत्रादिक अतिशयों को देखा। (पासित्ता सीयं ठावेइ, ठावित्ता कालियदारियं सीयाओ पच्चोरुहइ, तएणं तं कालीयं दारियं अम्मापियरो पुरओ काउं जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी) देखकर उसने उस पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिका को खडी कर दिया। खड़ी करके उसमें से काली दारिका को नीचे उतारा बाद में वे माता पिता उस कालिक दारिका को आगे करके जहां पुरुषादानीय अर्हंत प्रभु पार्श्वनाथ विराजमान थे वहां गये। वहां जाकर उन्हों ने उनको वंदना की-नमस्कार किया। वंदना नमस्कार करके बाद में उन्हों ने इस प्रकार प्रभु से कहा-(एवं खलु देवाणुप्पिया! काली दारिया अम्हं धूया इट्ठा कंता, जाव किमंगपुणपासणयाए! एस

(णिग्गच्छित्ता जेणेव अंबसालवणे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्ताइए तित्थगराइसए पासइ)

નીકળીને તે ત્યાં ગયો કે જ્યાં તે આમ્રશાલ વન નામે ઉદ્યાન હતું ત્યાં જઈને તેણે તીર્થંકર પ્રકૃતિના ઉદયથી અસ્તિત્વમાં આવતા છત્ર વગેરે અતિશયોને જોયા.

(पासित्ता सीयं ठावेइ, ठावित्ता कालियदारियं सीयाओ पच्चोरुहइ, तएणं तं कालियं दारियं अम्मापियरो पुरओ काउं जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी)

જોઈને તેણે તે પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખીને રોકી. રોકીને તેમાંથી કાલી દારિકાને નીચે ઉતારી. ત્યારપછી તે માતાપિતા તે કાલીક દારિકાને આગળ કરીને જ્યાં પુરુષદાનીય અર્હંત પ્રભુ પાર્શ્વનાથ વિરાજમાન હતા ત્યાં ગયા. ત્યાં જઈને તેમણે તેમને વંદના કરી, નમસ્કાર કર્યા વંદના તેમજ નમસ્કાર કરીને તેમણે પ્રભુને વિનંતી કરતાં આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

(एवं खलु देवाणुप्पिया! कालीदारिया अम्हं धूया इट्ठा कंता, जाव किमंग॰

'पासणयाए' दर्शनाय ?, एषा खलु हे देवानुप्रियाः। संसारभयोद्विग्ना इच्छति देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डाभूत्वा यावत्प्रव्रजितुं, तद् एतां खलु देवानुप्रियाणां शिष्याभिक्षां दद्मः, 'पडिच्छंतु' प्रतीच्छन्तु=स्वीकुर्वन्तु खलु हे देवानुप्रियाः! शिष्याभिक्षाम्। भगवानाह—यथासुखं हे देवानुप्रियौ! मा प्रतिबन्धं कुरुतम्। ततः खलु काली कुमारी पार्श्वमर्हन्तं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा उत्तरपौरस्त्यं

णं देवाणुप्पिया! संसारभउव्विग्गा, इच्छइ, देवाणुप्पियाणं! अंतिए मुंडा भवित्ता जाव पव्वइत्तए, तं एयं णं देवाणुप्पियाणं सिस्सिणिभिक्खं दलयामो पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया! सिस्सिणिभिक्खं) हे देवानुप्रिय! यह हमारी काली दारिका नामकी पुत्री है। यह हमें बहुत अधिक इष्टा, कान्ता यावत् उदम्बर पुष्प के समान सुनने के लिये भी दुर्लभा है—तो फिर हे अंग! इसके दर्शन की तो बात ही क्या कहना है। हे देवानु-प्रिय! यह संसारभय से उद्विग्न हो रही है अतः आप देवानुप्रिय के पास मुंडित होकर यावत् संयम लेना चाहती है। इस लिये हम दोनों आपके लिये शिष्या की भिक्षा दे रहे है—आप देवानुप्रिय! हमारी इस शिष्यारूप भिक्षा को स्वीकार करें (अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह) इस प्रकार उन दोनों का कथन सुनकर प्रभु ने उनसे कहा हे देवानुप्रियो! आप को जैसा सुख हो—वैसा आप करो—इसमें विलम्ब करने से लाभ नहीं हैं। (तएणं) इसके बाद (काली कुमारी पासं

पुण पासणयाए ? एसणं देवाणुप्पिया! संसारभउव्विग्गा, इच्छइ, देवाणुप्पियाणं! अंतिए मुंडा भवित्ता जाव पव्वइत्तए, तं एयं णं देवाणुप्पियाणं सिस्सिणि भिक्खं दलयामो पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया! सिस्सिणिभिक्खं)

હે દેવાનુપ્રિય! આ અમારી કાલી દારિકા નામે પુત્રી છે. અમારા માટે આ બહુ જ વધારે ઈષ્ટા, કાંતા યાવત્ ઉદુમ્બર પુષ્પની જેમ નામ શ્રવણમાં પણ દુર્લભા છે. તો પછી એના દર્શનની તો વાત જ શી કરવી ? હે દેવાનુપ્રિય! આ સંસાર ભયથી ઉદ્વિગ્ન થઇ રહી છે. એથી આપ દેવાનુપ્રિય પાસેથી મુંડિત થઇને યાવત્ સંયમ ગ્રહણ કરવા ઇચ્છે છે. એથી અમે બંને આપના માટે આશિષ્યાની ભીક્ષા અર્પણ કરીએ છીએ. આપ દેવાનુપ્રિય અમારી આ શિષ્યારૂપી ભિક્ષાનો સ્વીકાર કરો. (અહાસુહં દેવાણુપ્પિયા! મા પડિબંધં કરેહ) આ પ્રમાણે તેઓ બંનેનું કથન સાંભળીને પ્રભુએ તેમને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમને જેમ સુખ પ્રાપ્ત થાય તેમ કરો. આમાં વિલંબ કરવાથી લાભ નથી. (તએણં) ત્યારપછી

दिग्भागम् अवक्रामति, अवक्राम्य स्वयमेव=स्वहस्तेनैव आभरणमाल्यालङ्कारम् अवमुञ्चति=अवतारयति, अवमुच्य स्वयमेव=स्वहस्तेनैव लोचं=केशलुञ्चनं करोति, कृत्वा यत्रैव पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पार्श्वमर्हन्तं त्रिः कृत्वो वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्—आदीप्तः खलु हे भदन्त ! लोकः एवम्=अनेन प्रकारेण यावत्—एषाऽपि स्वयं देव पार्श्वप्रभुणा प्रव्राजिता ।

अरहं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता, उत्तरपुरत्थिमं दिसिभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता, सयमेव लोयं करेइ, करित्ता जेणेव पासे अरिहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासं अरहं तिक्खुत्तो वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी) काली कुमारी ने पार्श्वनाथ अरिहन्त प्रभु को वंदना एवं नमस्कार किया—। वंदना नमस्कार करके फिर वह उत्तर पौरस्त्य दिग्भाग ईशान कोण की ओर गई। वहां जाकर उसने अपने आप आभरण माल्य एवं अलंकारों को उतार दिया। उतार कर अपने हाथों से उसने बालों का लुंचन किया—लुंचन करके फिर वह जहां पुरुषादानीय पार्श्वनाथ प्रभु विराजमान थे वहां आई—वहां आकर उसने पार्श्वनाथ अर्हत को तीनबार वंदन एवं नमस्कार किया और वंदना नमस्कार कर फिर वह उनसे इस प्रकार कहने लगी —(आलित्तेणं भंते ! लोए एवं जहा देवाणंदा जाव सयमेव पव्वाविया—

(काली कुमारी पासं अरहं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता, उत्तरपुरत्थिमं दिसिभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता, सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव लोयं करेइ, करित्ता जेणेव पासे अरिहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासं अरहं तिक्खुत्तो वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी)

કાલી કુમારીએ પાર્શ્વનાથ અરિહંત પ્રભુને વંદના અને નમસ્કાર કર્યાં. વંદના અને નમસ્કાર કરીને તે ઉત્તર પૌરસ્ત્ય દિગ્ભાગ ઈશાન કોણની તરફ ગઈ. ત્યાં જઈને તેણે પોતાની મેળે જ આભરણ, માલ્ય અને અલંકારોને ઉતાર્યાં. ઉતારીને પોતાના હાથો વડે જ તેણે વાળોનું લુંચન કર્યું. લુંચન કરીને તે જ્યાં પુરુષાદાનીય પાર્શ્વનાથ પ્રભુ વિરાજમાન હતા ત્યાં આવી. ત્યાં આવીને તેણે પાર્શ્વનાથ અર્હંતને ત્રણ વાર વંદન અને નમસ્કાર કર્યાં વંદના અને નમસ્કાર કરીને તે તેમને આ પ્રમાણે વિનંતી કરવા લાગી કે—

(आलित्तेणं भंते ! लोए एवं जहा देवाणंदा जाव सयमेव पव्वाविया—तएणं

ततः खलु पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयः कालीं स्वयमेव पुष्पचूलायै आर्यायै शिष्यात्वेन ददाति। ततः खलु सा पुष्पचूला आर्या कालीं दारिकां स्वयमेव प्रव्राजयति यावत्-सा काली तदाज्ञाम् उपसम्पद्य खलु विहरति। ततः सा काली-आर्या जाता, कीदृशी ? त्याह-ईर्यासमिता यावत्-गुप्तब्रह्मचारिणी। ततः खलु सा काली आर्या पुष्पचूलाया आर्याया अन्तिके सामायिकादीनि एकादशाङ्गानि अधीते,

---

तएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालिं सयमेव पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए दलयइ, तएणं सा पुप्फचूला अज्जा कालिं दारियं सयमेव पव्वावेइ-जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरइ) हे भदंत ! यह लोक आदीप्त हो रहा है-इस प्रकार से पार्श्वनाथ प्रभु के द्वारा स्वयं ही दीक्षित की गई। इसके बाद उन पुरुषादानीय पार्श्व प्रभु ने काली को दीक्षित करके पुप्पचूला आर्या को शिष्याणीरूप से प्रदान कर दिया। पुप्पचूला आर्या ने उसे काली को इस प्रकार दीक्षित करवा कर अपनी शिष्याणीरूप में उसे स्वीकार कर लिया-यावत् वह काली उस आर्या की आज्ञानुसार अपनी प्रवृत्ति करने लग गई। (तएणं सा काली अज्जा जाव) इस तरह वह काली अब आर्या हो गई। (ईरिया समिया जाव गुत्तबंभयारिणी तएणं सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अंतिए

पासे अरहा पुरिसादाणीए कालिं सयमेव पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए दलयइ, तएणं सा पुप्फचूला अज्जा कालिं दारियं सयमेव पव्वावेइ-जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरइ)

હે ભદન્ત ! આ લોક આદીપ્ત થઈ રહ્યો છે. આ પ્રમાણે આ પણ પાર્શ્વનાથ પ્રભુ વડે જાતે જ દીક્ષિત કરવામાં આવી. ત્યારપછી તે પુરુષાદાનીય પાર્શ્વ પ્રભુએ કાલીને દીક્ષિત કરીને પુષ્પચૂલા આર્યાને શિષ્યાના રૂપમાં આપી દીધી. પુષ્પચૂલા આર્યાએ તે કાલીને આ પ્રમાણે દીક્ષિત કરાવીને પોતાની શિષ્યાના રૂપમાં તેનો સ્વીકાર કરી લીધો. યાવત્ તે કાલી તે આર્યાની આજ્ઞા મુજબ પોતાની પ્રવૃત્તિ કરવા લાગી (तएणं सा काली अज्जा जाव) આ રીતે તે કાલી હવે આર્યા થઈ ગઈ

(ईरिया समिया जाव गुत्तबंभयारिणी, तएणं सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अंतिए समाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ, बहूहिं चउत्थ जाव विहरइ)

बहुभिः चतुर्थ यावत्-षष्ठाष्टमदशमद्वादशभिस्तपःकर्मभिरात्मानं भावयन्ती विहरति ॥ सू०३ ॥

मूलम्-तएणं सा काली अज्जा अन्नया कयाइं सरीरबाउसिया जाया यावि होत्था, अभिक्खणं२ हत्थे धोवइ पाए धोवइ सीसं धोवइ मुहं धोवइ थणंतराइं धोवइ कक्खं तराणि धोवइ गुज्झंतराइं धोवइ जत्थ२ वि य णं ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेइए तं पुव्वामेव अब्भुक्खेत्ता तओ पच्छा आसयइ वा सयइ वा, णिसीहइ वा, तएणं सा पुप्फचूला अज्ज कालिं अज्जं एवं वयासी-नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया! समणीणं णिग्गंथीणं सरीरबाउसियाणं होत्तए तुमं च णं देवाणुप्पिया! सरीरबाउसिया जाया अभिक्खणं२ हत्थे धोवसि जाव आसयाहि वा सयाहि वा णिसीहियाहि वा तं तुमं देवाणुप्पिए! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पायच्छित्तं पडिवज्जाहि, तएणं सा काली

सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ, बहूहिं चउत्थ जाव विहरइ) उसका रहन शयन आदि सब व्यवहार नियमित एवं सीमित हो गया। चलती तो वह ईर्या समिति से मार्ग का संशोधन कर चलती। यावत् वह गुप्त ब्रह्मचारिणी बन गई। ९ नौ कोटी से ब्रह्मचर्यव्रत की संरक्षिका हो गई। इसके बाद उस काली आर्या ने पुष्पचूला आर्या के पास सामायिक आदि ग्यारह अंगों का अध्ययन किया-और अनेक चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम दशम, द्वादश, तपस्याओं की आराधना से अपने आपको भावित किया ॥ सूत्र ३ ॥

તેનું રહેવું, સૂવું વગેરે બધું કામ નિયમિત અને સીમિત થઇ ગયું. ચાલતી ત્યારે તે ઇર્યા-સમિતિથી માર્ગનું સંશોધન કરીને ચાલતી. યાવત્ તે ગુપ્ત બ્રહ્મચારિણી બની ગઈ ૯ કોટિથી બ્રહ્મચર્ય વ્રતની તે સંરક્ષિકા થઇ ગઇ. ત્યારપછી તે કાલી આર્યાએ પુષ્પચૂલા આર્યાની પાસે સામાયિક વગેરે અગિયાર અંગોનું અધ્યયન કર્યું અને ઘણા ચતુર્થ, ષષ્ઠ, અષ્ટમ, દશમ, દ્વાદશ તપસ્યાઓની આરાધનાથી પોતાની જાતને ભાવિત કરી. ॥ સૂત્ર ૩ ॥

अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए एयमट्ठं नो आढाइ जाव तुसिणीया संचिट्ठइ, तएणं ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ कालिं अज्जं अभिक्खणं२ हीलेंति णिंदंति खिंसंति गरिहंति अवमण्णंति अभिक्खणं२ एयमट्ठं निवारेंति, तएणं तीसे कालीए अज्जाए समणीहिं णिग्गंथीहिं अभिक्खणं२ हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्ज माणिए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था जया णं अहं अगारवासमज्झे वसित्था तया णं अहं सयवसा जप्पिभिइं च णं अहं मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया तप्पभिइं च णं अहं परवसा जाया, तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलंते पाडिक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता कल्लं जाव जलंते पाडिएक्कं उवस्सयं गिण्हइ, तत्थ णं सा अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छंदमई अभिक्खणं२ हत्थे धोवइ जाव आसयइ वा सयइ वा, णीसेहेइ वा, तएणं सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीला कुसीलविहारी अहाछंदा अहाछंदविहारी संसत्ता संसत्तविहारी बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणइ पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेइ झूसित्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेएइ छेइत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइय अपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा चमरचंचाए रायहाणीए कालवडिंसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिए अंगुलस्स असंखेज्जइ भागमेत्ताए ओगाहणाए कालीदेवित्ताए उववण्णा,

तएणं सा कालीदेवी आहुणोववण्णा समाणी पंचविहाए पज्जत्तीए जहा सूरियाभो जाव भासामण पज्जत्तीए०। तएणं सा काली-देवी चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं जाव अण्णेसिं च बहूणं काल-वडेंसगभवणवासीणं असुरकुमाराणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं जाव विहरइ, एवं खलु गोयमा! कालीए देवीए सा दिव्वा देविड्ढी२ लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया, कालीए णं भंते! देवीए केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ?, गोयमा! अड्ढाइज्जाइं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता, काली णं भंते! देवी ताओ देवलोगाओ अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिइ कहिं उववज्जिहिइ ?, गोयमा! महा-विदेहे वासे सिज्झिहिइ, एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि। धम्मकहाणं पढमज्झयणं समत्तं ॥ सू० ४ ॥

टीका—'तएणं सा' इत्यादि–ततः खलु सा काली आर्या अन्यदा कदा-चित् 'सरीरवाउसिया' शरीरा वाकुशिका=शरीरसंस्करणशीला जाता चाप्या-सीत्। अथ सा किं करोती? त्याह–अभीक्ष्णं२ वारंवारं हस्तौ धावति, पादौ धावति,

---

'तएणं सा काली अज्जा अन्नया कयाइं,' इत्यादि।

टीकार्थः—(तएणं) इसके बाद (सा काली अज्जा) वह काली आर्या (अन्नया कयाइ) किसी एक समय (सरीरवाउसिया) शरीर को संस्कारित करने के स्वभाववाली बन गई इसलिये वह (अभिक्खणं २

'तएणं सा काली अज्जा अन्नया कयाइं' इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्यारपछी (सा काली अज्जा) ते काली आर्या (अन्नया कयाइं) कोई એક વખતે (सरीरवाउसिया) शरीरने संस्कारित કરવાના સ્વભાવવાળી બની ગઈ, એટલા માટે તે—

(अभिक्खणं२ हत्थे धोवइ, पाए धोवेइ सीसं धोवइ, मुहं धोवइ, थणंतराइं धोवइ,

शीर्षं धावति, मुखं धावति स्तनान्तराणि धावति, कक्षान्तराणि धावति, गुह्यान्तराणि धावति, यत्र यत्रापि च खलु 'ठाणं वा' स्थानम्=उपवेशनस्थलम् 'सेज्जं वा' शय्यां=शयनभूमिम्, 'णिसीहियं वा' नैषेधिकीं=स्वाध्यायभूमिम् 'चेएइ' चेतयते=करोति 'तं' तत्=स्थानादिकं 'पुव्वामेव' पूर्वमेव=उपवेशनादि क्रियायाः पूर्वं 'आसयइ वा' आस्ते=उपविशति, 'सयइ वा' शेते=शयनं करोति, 'णिसीहइ वा' निषेधयति=स्वाध्यायं करोति वा। ततः खलु सा पुष्पचूलाऽऽर्या कालीमार्यामेवमवादीत्-नो खलु कल्पते हे देवाणुप्रिये! श्रमणीनां

हत्थे धोवइ पाए धोवइ, सीसं धोवइ मुहं धोवइ थणंतराइं धोवइ, कक्खतराणि धोवइ, गुज्झंतराइं धोवइ, जत्थ२ वि य णं ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेइए-तं पुव्वामेव अब्भुक्खेत्ता तओपच्छा आसयइ, वा सयइ वा णिसीहइवा) बार २ हाथों को धोने लग गई, पैरों को धोने लग गई, शिर को धोने लग गई, मुँह को धोने लग गई, स्तनान्तरों को-स्तनों के मध्यभाग को-धोने लग गई, कक्षान्तरों को-कांखो के मध्यभाग को-धोने लग गई, गुह्यभागों को-गुह्यांगों को धोने लग गई। जहां २ वह बैठने का स्थान, शयन, स्थान, स्वाध्याय करने का स्थान नियत करती उसे पहिले से ही वह पानी से सिंचित कर देती-बाद में वह वहां बैठती शयन करती, स्वाध्याय करती, (तएणं सा पुप्फचूला अज्जा कालिं अज्जं एवं वयासी) उस काली आर्या की इस स्थिति को देखकर पुष्फचूला आर्या ने उसे इस प्रकार कहा-(नो खलु कप्पइ,

---

कक्खंतराणी धोवइ, गुज्झंतराइं धोवइ, जत्थ२ वि य णं ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेएई तं पुव्वामेव अब्भुक्खेत्ता तओपच्छा आसयइ, वा सयइ वा णिसीहइ वा)

વારંવાર હાથોને ધોવા લાગી, પગોને ધોવા લાગી, માથાને ધોવા લાગી, મુખને ધોવા લાગી, સ્તનાન્તરને-સ્તનના વચ્ચેના સ્થાનને ધોવા લાગી, કક્ષાંતરોને-બગલોના મધ્ય ભાગને ધોવા લાગી, ગુહ્ય ભાગોને-ગુહ્યાંગોને ધોવા લાગી. જ્યાં જ્યાં તેને બેસવાનું સ્થાન, શયનસ્થાન, સ્વાધ્યાય કરવાનું સ્થાન નક્કી કરતી તો તેને પહેલેથી જ તે પાણીથી સિંચિત કરી દેતી, ત્યારપછી તે ત્યાં બેસતી, શયન કરતી, સ્વાધ્યાય કરતી (तएणं सा पुप्फचूला अज्जा कालिं अज्जं एवं वयासी) તે કાલી આર્યાની આવી સ્થિતિ જોઈને પુષ્પચૂલા આર્યાએ તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

निर्ग्रन्थीनां शरीरवाकुशिका जाताऽसि, यतस्त्वम्-अभीक्ष्णं २ हस्तौ धावसि यावत् 'आसयाहि वा' आस्से=उपविशसि, 'सयाहि वा' शेषे=शयनं करोषि 'णीसीहियाहि वा' निषेधयसि=स्वाध्यायं करोषि, 'तं' तत्=तस्मात् कारणात् त्वं हे देवानुप्रिये! एतत् स्थानम्-'आलोएहि' आलोचय यावत् प्रायश्चित्तं प्रतिपद्यस्व। मूले-सम्बन्धसामान्ये षष्ठी। ततः खलु सा काली आर्या

देवाणुप्पिया! समणी णं णिग्गंथीणं सरीरबाउसियाणं होत्तए-तुमं च णं देवाणुप्पिया! सरीरबाउसिया जाया-अभिक्खणं २ हत्थे धोवसि, जाव आसयाहि वा सयाहि वा णिसीहियाहि वा तं तुमं देवाणुप्पियाए! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पायच्छित्तं पडिवज्जाहि) हे देवानुप्रिये! निर्ग्रन्थ श्रमणियों को शरीरवकुश होना कल्पित नहीं हैं। परन्तु तुम तो हे देवानुप्रिये! शरीरवकुश बन रही हो। बार २ हाथों को धोती हो यावत् जहां तुम्हें उठना बैठना होता है, शयन करना होता है, स्वाध्याय करना होता है उस स्थान को पहिले से ही सिंचित कर लेती हो तब जाकर वहां उठती बैठती हो, शयन करती हो, स्वाध्याय करती हो। इसलिये हे देवानुप्रिये! तुम इस स्थान की आलोचना करो यावत् प्रायश्चित्त ग्रहण करो। (तएणं सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए एयमट्ठं नो आढाइ, जाव तुसिणीया संचिट्ठइ, तएणं ताओ पुप्फचूलाओ

(नो खलु कप्पइ, देवाणुप्पिया! समणीणं णिगंथीणं सरीरबाउसियाणं होत्तए-तुमं च णं देवाणुप्पिया! सरीर बाउसिया जाया अभिक्खणं २ हत्थे धोवसि, जाव आसयाहि वा सयाहि वा, णिसीहियाहि वा तं तुमं देवाणुप्पिए! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पायच्छित्तं पडिवज्जाहि)

હે દેવાનુપ્રિયે! નિર્ગ્રંથ શ્રમણીઓને શરીરવકુશ થવું કલ્પિત નથી, પરંતુ તમે તો હે દેવાનુપ્રિયે! શરીરવકુશ થઈ રહી છો. વારંવાર હાથોને ધૂઓ છો યાવત્ જ્યાં તમારે ઉઠવા બેસવાનું હોય છે, સૂવાનું હોય છે, સ્વાધ્યાય કરવો હોય છે તે સ્થાનને પહેલાં તમે પાણીથી સિંચિત કરી લો છો, અને ત્યારપછી તમે ત્યાં ઉઠો-બેસો છો, સૂવો છો અને સ્વાધ્યાય કરો છો. એથી હે દેવાનુપ્રિયે! તમે આ સ્થાનની આલોચના કરો યાવત્ પ્રાયશ્ચિત્ત ગ્રહણ કરો.

(तएणं सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए एयमट्ठं नो आढाइ जाव तुसिणीया संचिट्ठइ, तएणं ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ कालिं अज्जं अभि-

पुष्पचूडया आर्यया एतमर्थं 'नो आढाइ' नो आद्रियते=न मन्यते यावत् 'तुसिणीया' तूष्णीका=समौना संतिष्ठते। ततः खलु ताः पुष्पचूला आर्याः कालीमार्याम् 'अभिक्खणं२' अभीक्ष्णं२=वारं वारं 'हीलेति' हिलन्ति=जन्मकर्मोद्घाटनपूर्वकं निर्भर्त्सयन्ति 'णिंदंति' निन्दन्ति=कुत्सितशब्दपूर्वकं दोषोद्घाटनेन अनाद्रियन्ते, 'खिसंति' खिसन्ति=हस्तमुखादिविकारपूर्वकमवमन्यन्ते, अपमानं कुर्वन्तीत्यर्थः 'गरिहंति' गर्हन्ते=गुर्वादिसमक्षं दोषाविष्करणपूर्वकं तिरस्कुर्वन्ति, 'अवमण्णंति' अवमन्यन्ते=रूक्षवचनादिभिरपमानं कुर्वन्ति, तथा-अभीक्ष्णमभीक्ष्णम् वारंवारं, एतमर्थं=शरीरसंस्करणरूप निवारयन्ति। ततः खलु तस्याः काल्या आर्यायाः श्रम-

---

अज्जाओ कालिं अज्जं अभिक्खणं २ हीलेंति, णिंदंति, खिंसंति, गरिहंति अवमण्णंति, अभिक्खणं २ एयमट्ठं निवारेंति, तएणं तीसे कालीए अज्जाए समणीहिं णिग्गंथीहिं अभिक्खणं २ हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) उस काली आर्याने पुष्फचूला आर्याके इस कथन रूप अर्थको नहीं माना। केवल वह यावत् चुपचाप ही रही। उत्तरमें जब उसने उनसे कुछ नहीं कहा-तब उस पुष्पचूला आर्या 'हीलंति' काली आर्याकी वार२ जन्मकर्म उद्घाटन पूर्वक भर्त्सना (तिरस्कार) करना प्रारभ करदिया। 'निंदंति' कुत्सित शब्दोच्चारण पूर्वक दोषोद्घाटन करते हुए वे उसकी वार २ निंदा करने लगीं। 'खिंसंति' हस्त, मुख, आदि के विकार प्रदर्शन पूर्वक वे उसका अपमान करने लग गईं। 'गरिहंति' गुरु आदिजनों के समक्ष दोषों को प्रकट करके वे उसका तिरस्कार करने लगीं। तथा "अवमण्णंति" रूक्षवचन आदि बोल २ कर उसका अपमान भी करने लग गई।

क्खणं २ हीलेंति णिंदंति, खिंसंति, गरिहंति अवमण्णंति, अभिक्खणं २ एयमट्ठं निवारेंति, तएणं तीसे कालीए अज्जाए समणीहिं णिग्गंथीहिं अभिक्खणं २ हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था)

તે કાલી આર્યાએ પુષ્પચૂલા આર્યાના આ કથન રૂપ અર્થને સ્વીકાર કર્યો નહિ ફક્ત તે મૂંગી થઈને જ બેસી રહી. જવાબમાં જ્યારે તેણે તેમને કંઈ જ-કહ્યુ નહિ ત્યારે પુષ્પચૂલા આર્યાએ કાલી આર્યાની વારંવાર જન્મ, કર્મ, ઉદ્‌ઘાટનપૂર્વક ભર્ત્સના કરવા માંડી. કુત્સિત શબ્દોચ્ચારણથી દોષોદ્‌ઘાટન કરતી તે તેની વારંવાર નિંદા કરવા લાગી. હાથ, મુખ વગેરેને વિકૃત કરીને તે તેમનું અપમાન કરવા લાગી. ગુરૂ વગેરેની સામે દોષોને પ્રકટ કરીને તે તેમનો તિરસ્કાર કરવા લાગી. તેમજ રૂક્ષ વચનો વગેરે બોલીને તેનું અપમાન પણ કરવા લાગી અને સાથે સાથે તે આર્યા તેને વારંવાર શરીર-સંસ્કાર કરવાની મનાઈ પણ કરતી રહી. આ પ્રમાણે નિર્ગ્રંથ શ્રમણીઓ વડે વારંવાર

नीभिः निर्ग्रन्थीभिः अभीक्ष्णमभीक्ष्णं हिल्यमानायाः यावत्-वार्यमाणाया अयमेतद्रूपः 'अज्झत्थिए' आध्यात्मिकः=आत्मगतविचारः यावत्-मनोगतः सङ्कल्पः समुदपद्यत यदा खलु अहम् अगारवासमध्ये 'वसित्था' उषिता=न्यवसं तदा खलु अहं 'सयंवसा' स्वयंवशा=स्वतन्त्रा आसम्, यत्प्रभृति च खलु अहं मुण्डाभूत्वा अगारात् अनगारितां प्रव्रजिताऽभवं तत्प्रभृति च खलु अहं परवशा जाताऽस्मि 'तं' तत्=तस्मात् श्रेयः खलु मम कल्ये प्रादुष्प्रभातायां रजन्यां यावत् सूर्ये ज्वलति=सूर्योदये सति 'पाडिक्कं' प्रत्येकम्=एकमात्रं भिन्नमित्यर्थः, उपाश्रयमुपसंपद्य खलु विहर्तुम्, 'तिकट्टु' इति कृत्वा=इति मनसि निधाय एवं सम्प्रेक्षते,

साथ २ में वे आर्या उसे बार २ शरीर संस्कार करने से मना भी करती रही। इस प्रकार उस काली आर्या के निर्ग्रन्थ श्रमणियों द्वारा बार २ भर्त्सित आदि होने पर तथा शरीर संस्कार करने से निषिद्ध होने पर, उसे यह इस प्रकार का आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ। (जया णं अहं अगारवासमज्झे वसित्था तया णं अहं सयवसा, जप्पिभिइं च णं अहं मुंडा भवित्ता अगाराओ, अणगारियं पव्वइया तप्पभिइं च णं अहं परवसा जाया, तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलंते पाडिक्काउवस्सयं उवसंपज्जित्ता ण विहरित्तए त्तिकट्टु एवं संपहेइ संपेहित्ता कल्लं जाव जलंते पाडिएक्कं उवस्सयं गिण्हइ) जब मैं अपने घर के बीच में रहती थी-उस समय मैं स्वतंत्र थी। परन्तु जिस दिन से मुंडित होकर अगार अवस्था से इस अनगार अवस्था में आई हूँ उस दिन से मैं परवश-पराधीन बन चुकी हूँ। अतः मुझे यही श्रेयस्कर है कि मैं दूसरे दिन प्रातः काल होते ही जब सूर्यो-

ભર્સિત વગેરે થવાથી તેમજ શરીર સંસ્કારની મનાઇ હોવા બદલ તે કાલી આર્યાને આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સંકલ્પ ઉદ્ભવ્યો કે—

(जयाणं अहं अगारवासमज्झे वसित्था तयाणं अहं सयवसा जप्पभिइं च णं अहं मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया तप्पभिइं च णं अहं परवसा जाया तं सेयं खलु मम कल्लं पउप्पभायाए रयणीए जाव जलंते पाडिक्का उवस्सयं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए त्तिकट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं जाव जलंते पाडिएक्कं उवस्सयं गिण्हइ)

જ્યારે હું ઘરમાં રહેતી હતી ત્યારે હું સ્વતંત્ર હતી. પરંતુ જ્યારથી મેં મુંડિત થઇને અગાર અવસ્થાને ત્યજીને અનગાર અવસ્થા સ્વીકારી છે ત્યારથી હું પરવશ-પરાધીન થઇ ગઇ છું. એથી મારા માટે હવે એ જ શ્રેયસ્કર જણાય છે કે હું બીજે દિવસે સવાર થતાં જ જ્યારે સૂર્ય ઉદય પામશે ત્યારે

सम्प्रेक्ष्य कल्ये यावत् सूर्ये ज्वलति 'पाडिएक्कं' प्रत्येकम्-उपाश्रयं गृह्णाति। तत्र खलु सा 'अणिवारिया' अनिवारिता-निवारकाभावात्, 'अणोहट्टिया' अनपघट्टिका यदृच्छा प्रवृत्तिप्रतिरोधकाभावात्, अतएव 'सच्छंदमई' स्वच्छन्दमतिः अभीक्ष्णमभीक्ष्णं हस्तौ धावति यावत्-आस्ते वा शेते वा निषेधयति वा। ततः खलु सा काली आर्या 'पासत्था' पार्श्वस्था-गाढकारणंविना नित्यपिण्डभोक्त्री, अतएव पार्श्वस्थविहारिणि, 'ओसण्णा' अवसन्ना समाचारीपालनेऽवसी-

---

दय हो जावेगा-दूसरे उपाश्रय में चली जाऊँ। इस प्रकार का उसने अपने मन में विचार किया। विचार करके फिर वह दूसरे दिन प्रातः काल होते ही सूर्योदय होने पर दूसरे उपाश्रय में चली गई। (तत्थणं सा अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छंदमई अभिक्खणं २ हत्थे धोवेइ, जाव आसयइ वा सयइ वा णीसेहेइ वा-तएणं सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी, कुसीला कुसीलविहारी, अहाछंदा अहाछंदविहारी, संसत्ता संसत्तविहारी बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ) वहां वह विना रोक टोक, यदृच्छा प्रवृत्ति करने लग गई। इच्छानुसार बार २ हाथ पैर आदि धोने लग गई। उठने बैठने एवं सोने के स्थान को तथा स्वाध्याय भूमि को पहिले से ही पानी से सिञ्चित कर वहां उठने बैठने एवं स्वाध्याय करने लगी। इस तरह की स्वच्छन्द प्रवृत्ति से वह काली आर्या पासत्था-गाढकारण के विना नित्य पिण्ड भोक्त्री-बन गई, पार्श्वस्थ विहारिणी हो गई। समाचारी

બીજા ઉપાશ્રયમા જતી રહું'. આ પ્રમાણે તેણે મનમાં વિચાર કર્યો. વિચાર કરીને તે બીજે દિવસે સવાર થતાં જ સૂર્યોદય થયા બાદ બીજા ઉપાશ્રયમાં જતી રહી

(तत्थणं सा अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छंदमई अभिक्खणं २ हत्थे धोवेइ, जाव आसयइ वा सयइ वा णीसेहेइ वा तएणं सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीला कुसीलविहारी अहाछंदा अहाछंदविहारी संसत्ता संसत्तविहारी बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ)

ત્યાં તે રોક-ટોક વિના સ્વચ્છંદ થઈને પ્રવૃત્તિ કરવા લાગી. ઇચ્છા મુજબ વારવાર હાથ-પગ ધોવા લાગી, ઉઠવા-બેસવા અને સૂવાના સ્થાનને તેમજ સ્વાધ્યાય ભૂમિને પહેલેથી જ પાણી વડે સિંચિત કરીને ત્યાં ઉઠવા બેસવા તેમજ સ્વાધ્યાય કરવા લાગી. આ જાતની સ્વચ્છન્દ પ્રવૃત્તિથી તે કાલી આર્યા પાસત્થા-ગાઢ કારણ વગર નિત્ય પિંડ ભોક્ત્રી-બની ગઈ, પાર્શ્વસ્થ

दन्ती, अतएव अवसन्नविहारिणी, 'कुसीला' कुशीला=उत्तरगुणसेवया संज्वलन-कषायोदये प्रवृत्ता, अतएव कुशीलविहारिणी, 'अहाच्छंदा' यथाच्छन्दा=स्वाभिप्रायपूर्वकस्वमति कल्पितमार्गे प्रवृत्ता, अतएव यथा छन्दविहारिणी, 'संसत्ता' संसक्ता गृहस्थादिप्रेमबन्धनेन शिथिलसामाचारीप्रवृत्ता सती बहूनि वर्षाणि श्रामण्य-पर्यायं पालयति, पालयित्वा अर्द्धमासिक्या संलेखनयाऽऽत्मानं 'झूसेइ' जोषयति=सेवते, झूसित्ता=जोषयित्वा त्रिंशद् भक्तानि 'अणसणाए' अनशनया 'छेएइ' छिनत्ति, छित्वा तस्य स्थानस्य अनालोचिताऽ प्रतिक्रान्ता कालमासे कालं कृत्वा चमरचञ्चायां राजधान्यां कालावतंसके भवने उपपातसभायां देवशयनीये देवदूष्यान्तरिते = देवदूष्यवस्त्राच्छादिते अङ्गुलस्याऽसंख्येयभाग-मात्रायामवगाहनायां कालीदेवीतया उपपन्ना। ततः खलु सा कालीदेवी अधुनो-

---

पालन करने में शिथिलता दिखलाने लगी-अवसन्न विहारिणी हो गई। कुशीला बन गई-संज्वलन कषाय के उदय होने से उत्तरगुणों की विराधना करने लगी-कुशील विहारिणी हो गई और अपनी इच्छानुसार मार्ग की कल्पना कर उसमें प्रवृत्त रहने लग गई-इसलिये वह यथाच्छन्द विहारिणी भी बन गई। गृहस्थ आदि जनों के अधिक परिचयजन्य प्रेमबंधन से अपने आचार पालन में शिथिल बनी हुई उसने इस तरह होकर अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन किया-और (पाउणित्ता) पालनकर (अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेइ, झूसित्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेएइ, छेइत्ता, तस्स ठाणस्स अणालोइय अपडिक्कंत्ता कालमासे कालं किच्चा चमरचंचाए रायहाणीए कालवडिंएस भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिए अंगुल-

---

વિહારિણી થઈ ગઇ સમાચારી પાલન કરવામાં શિથિલતાવાળી બતાવવા લાગી-અવસન્ન વિહારિણી થઈ ગઇ કુશીલા થઇ ગઇ, સંજવલન કષાયનો ઉદય હોવાથી ઉત્તર ગુણોની વિરાધના કરવા લાગી, કુશિલ વિહારિણી થઇ ગઈ અને પોતાની ઇચ્છા મુજબ માર્ગની કલ્પના કરીને તેમાં પ્રવૃત્ત થવા લાગી એથી તે યથાચ્છન્દ વિહારિણી પણ બની ગઇ. ગૃહસ્થ વગેરે લોકોના વધારે પડતા પરિચયજન્ય પ્રેમબંધનથી પોતાના આચાર પાલનમા શિથિલ થઇ ગઇ. તેણે આ પ્રમાણે ઘણાં વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય-પર્યાયનું પાલન કર્યું અને (પાઉણિત્તા) પાલન કરીને

(अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेइ, झूसित्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेएइ, छेइत्ता, तस्स ठाणस्स अणालोइयअपडिक्कंता कालमासे काल किच्चा चमर-

दपन्ना=तत्कालसमुत्पन्नामती पञ्चविधयापर्याप्त्या यथासूर्याभः=सूर्याभदेववत् , 'जाव भासामणपज्जत्तीए' भाषामन.पर्याप्त्या–यावत्–आहारपर्याप्त्या १, शरीरपर्याप्त्या २, इन्द्रियपर्याप्त्या ३, आनप्राणपर्याप्त्या ४, भाषामनः पर्याप्त्या ५, पर्याप्तिभावं गच्छति। पर्याप्तिवन्धकाले देवानामाहारशरीरादिपर्याप्तिसमाप्तिकालान्तरापेक्षया भाषामनः पर्याप्त्योः स्तोककालान्तरतया तयोरेकत्वेन विवक्षणात् पर्याप्तीनां पञ्चविधत्वम्। ततः खलु सा काली देवी चतसृणां सामानिकसाहस्रीणां यावत्–अन्येषां च बहूनां कालावतंसकभवनवासिनामसुरकुमाराणां

स्स असंखेज्जइ, भागमेत्ताए ओगाहणाए कालीदेवीत्तए उववण्णा) अर्द्धमास की संलेखना से उसने अपनी आत्मा को युक्त किया। इस प्रकार उसने अनशनों द्वारा ३० भक्तोंका छेदन करने पर भी उस स्थानकी आलोचना नहीं की और न वह उन अतिचारों से पीछे ही हटी–अतः अनालोचित अप्रतिक्रान्त बनकर वह जब उस काल अवसर–काल कर चमरचंपा नाम की राजधानी में, कालावतंसक भवनमें, उपातातसभामें देवदूष्यवस्त्रसे आच्छादितदेवशयनीय'शय्या' ऊपर अंगुलके असंख्यातवे मात्र की अवगाहना से काली देवी के रूप में उत्पन्न हो गई (तएणं सा कालीदेवी अहुणोववण्णा समाणी पंचविहाए पज्जत्तीए जहा सूरियाभो जाव भासामणपज्जत्तीए०। तएणं सा कालीदेवी चउण्हं समाणि य साहस्सी णं अण्णेसिं च बहूणं कालवडेंसकभवणवासीणं असुरकुमाराणं

संचाए सयहाणीए कालवडिंसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसी देवदूसंतरिए अंगुलास असंखेज्जइ, भागमेत्ताए ओगाहणाए कालीदेवीत्तए उववण्णा)

तेणे अर्द्धमासनी संलेखनाथी पोताना आत्माने युक्त कर्यो. आ प्रमाणे तेणे अनशनो वडे ३० भक्तोनुं छेदन करीने पण ते स्थाननी आलोचना करी नहि अने ते अतिचारोना आचरणथी पण अटकी नहि. एथी अनालोचित अप्रतिक्रान्त थईने ते ज्यारे काळ अवसरे काळ करीने चमरचंचा नामनी राजधानीमां कालावतंसक भवनमां, उपपात सभामां देवदूष्य वस्त्रथी आच्छादित देवशयनीय उपर आंगळीओना असंख्यातमा मात्रनी अवगाहनाथी काली देवीना रूपमां उत्पन्न थई गई.

(तएणं सा काली देवी अहुणोववण्णा समाणी पंचविहाए पज्जत्तीए जहा सूरियाभो जाव भासमणपज्जत्तीए०। तएणं सा काली देवी चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं जाव अण्णेसिं च बहूणं कालवडेंसकभवणवासी णं असुरकुमाराणं देवाण य देवीणय आहेवच्चं जाव विहरइ)

देवानां च देवीनां च 'आहेवच्चं' आधिपत्यं=स्वामित्वं कुर्वन्तीपालयन्ती यावद् विहरति।

एवम्=उक्तप्रकारेण खलु हे गौतम ! काल्या देव्या सा दिव्या देवर्द्धिः ३, लब्धा, प्राप्ता, अभिसमन्वागता।

गौतमः पृच्छति-काल्या खलु हे भदन्त ! देव्यास्तत्र 'केवइयं' कियन्तं

देवाण य देवीण य आहेवच्चं जाव विहरइ) इस प्रकार वह काली देवी अभी अभी उत्पन्न होकर पांच प्रकार की पर्याप्तियों से पर्याप्त बनी है। पर्याप्तियां ६ होती हैं परन्तु यहां पर जो वे पांच की संख्या में निर्दिष्ट हुई हैं-उसका कारण यह है कि पर्याप्ति के बंधकाल में देवों के आहार, शरीर आदि पर्याप्तियों के समाप्तिकाल की अपेक्षा भाषा और मनः पर्याय का साथ साथ बंध होता है, इसलिये इन दोनों को एक रूप से यहां विवक्षित किया गया है। वे पर्याप्तियां इस प्रकार है-। (१) आहारपर्याप्ति (२) शरीर पर्याप्ति (३) इन्द्रियपर्याप्ति (४) श्वासोच्छ्वासपर्याप्ति (५) भाषा एवं मनः पर्याप्ति। वह काली देवी चार हजार सामानिक देवोंका यावत् और दूसरे अनेक कालावतंसक भवनवासी असुरकुमार देवों का देवियों का आधिपत्य कर रही है। (एवं खलु गोयमा ! कालीए देवीए सा दिव्वा देवड्ढी ३ लद्धापत्ता अभिसमण्णा गया,

---

આ પ્રમાણે તે કાલી દેવી હમણાં જ ઉત્પન્ન થઇને પાંચ પ્રકારની પર્યાપ્તિઓથી પર્યાપ્ત બની છે. પર્યાપ્તિઓ છ હોય છે. પણ અહીં જે પાંચની સંખ્યામાં જ બતાવવામાં આવી છે. તેનું કારણ આ પ્રમાણે છે કે પર્યાપ્તિના બંધકાલમાં દેવોના આહાર, શરીર વગેરે પર્યાપ્તિઓના સમાપ્તિકાળની અપેક્ષા ભાષા અને મનઃ પર્યાપ્તિનું એકી સાથે બંધ હોય છે એથી આ બંનેને અહીં એક રૂપમાં જ બતાવવામાં આવી છે. તે પર્યાપ્તિઓ આ પ્રમાણે છે—(૧) આહાર પર્યાપ્તિ, (૨) શરીર પર્યાપ્તિ, (૩) ઇન્દ્રિય પર્યાપ્તિ, (૪) શ્વાસોચ્છ્વાસ પર્યાપ્તિ, (૫) ભાષા અને મનઃ પર્યાપ્તિ તે કાલી દેવી ચાર હજાર સામાનિક દેવો ઉપર યાવત્ બીજા પણ ઘણા કાલાવતંસક ભવનવાસી અસુર કુમાર દેવો, દેવીઓ ઉપર શાસન કરી રહી છે.

(एवं खलु गोयमा ! कालीए देवीए सा दिव्वा देविड्ढी ३ लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया, कालीए णं भंते ! देवीए केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा अड्ढा इज्जाइं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता)

कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? भगवानाह-हे गौतम ! 'अड्ढाइज्जाइं' अर्द्धतृतीये=सार्द्धे द्वे पल्योपमे स्थितिः प्रज्ञप्ता ।

गौतमः पृच्छति-काली हे भदन्त ! देवी तस्माद्देवलोकाद् अनन्तरम्=आयुर्भवस्थितिक्षयानन्तरं 'उव्वट्टित्ता' उद्वृत्य=निस्सृत्य कुत्र गमिष्यति कुत्र-उत्पत्स्यते ? ।

भगवानाह-हे गौतम ! सा काली देवी देवलोकाच्च्युत्वा महाविदेहे वर्षे उत्पद्य सेत्स्यति, ।

कालीए णं भंते ! देवीए केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा अड्ढाइज्जाइं पलिओवमाई ठिईपण्णत्ता) इस तरह से हे गौतम ! काली देवी ने वह दिव्य देवर्द्धि ३, अर्जित की है स्वाधीन की है और उसे अपने उपभोग के योग्य बनाया है । अब गौतम पुनः प्रभु से पूछते हैं-कि हे भदंत ! कालीदेवी की कितनी स्थिति है ? उत्तर में प्रभु ने उनसे कहा-हे गौतम ! कालीदेवी की स्थिति अढाई पल्य की (प्रज्ञप्त हुई) है (काली णं भंते ! देवी ताओ देवलोगाओ अणंतरं उवट्टित्ता कहिं गच्छहिइ, कहिं उववज्जिहिइ, ? गोयमा ! महाविदेहेवासे सिज्झिहिइ एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि, धम्मकहाणं पढमज्झयणं समत्तं) हे भदंत ! कालीदेवी उस देवलोक से आयु एवं भवस्थिति के क्षय के अनन्तर निकलकर कहां जावेगी, कहां उत्पन्न होगी ? इस गौतम के प्रश्न का उत्तर प्रभु ने उन्हें इस प्रकार दिया-गौतम ! वह काली देवी देवलोक से चव कर महा-

---

આ પ્રમાણે હે ગૌતમ ! કાલી દેવીએ તે દિવ્ય દેવર્દ્ધિ ૩ પ્રાપ્ત કરી છે સ્વાધીન બનાવી છે અને તેને પોતાને માટે ઉપભોગ યોગ્ય બનાવી છે. હવે ગૌતમ ફરી પ્રભુને પૂછે છે કે હે ભદન્ત ! કાલી દેવીની સ્થિતિ કેટલી જવાબમાં પ્રભુએ તેમને કહ્યું કે હે ગૌતમ ! કાલી દેવીની સ્થિતિ અઢી પલ્યની (પ્રજ્ઞપ્ત થઈ) છે.

(कालीणं भंते ! देवी ताओ देवलोगाओ अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिइ, कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि, धम्मकहाणं पढमज्झयणं समत्तं)

હે ભદન્ત ! કાલી દેવી તે દેવલોકથી આયુ અને ભવસ્થિતિને પૂરી કરીને ક્યાં જશે ? ક્યાં ઉત્પન્ન થશે ? આ પ્રમાણે ગૌતમના પ્રશ્નને સાંભળીને પ્રભુએ ઉત્તરમાં તેને કહ્યું કે હે ગૌતમ ! તે કાલી દેવી દેવલોકથી ચ્યવીને

श्रीसुधर्मास्वामी प्राह-एवं खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन यावत्-मोक्षं सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य प्रथमाध्ययनस्य अयमर्थः=पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः । त्तिबेमि ' इति ब्रवीमि, व्याख्या पूर्ववत् ॥ सू०४ ॥

॥ धर्मकथानां प्रथमवर्गस्य प्रथमाध्ययनं समाप्तम् ॥

विदेह क्षेत्र में उत्पन्न होगी और वहीं से सिद्ध होगी। अब सुधर्मा स्वामी श्री जंबू! स्वामी से कहते हैं कि हे जंबू! मुक्ति को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर ने प्रथम वर्ग के प्रथम अध्ययन का यह पूर्वोक्त अर्थ प्रज्ञप्त किया है। ऐसा मैंने उन्हीं के मुख से सुनकर यह तुमसे कहा है ॥ सूत्र ४ ॥

-:प्रथम वर्ग का प्रथम अध्ययन समाप्तः-

મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં ઉત્પન્ન થશે અને ત્યાંથી જ સિદ્ધ થશે. હવે સુધર્મા સ્વામી શ્રી જંબૂ! સ્વામીને કહે છે કે હે જંબૂ! મુક્તિપ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પ્રથમ વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે. આવું હું તેમના શ્રી મુખથી સાંભળીને તમને કહી ગયો છું. ॥ સૂત્ર ૪ ॥

" પ્રથમ વર્ગનું પ્રથમ અધ્યયન સમાપ્ત. "

अथ द्वितीयमध्ययनं प्रारभ्यते—

मूलम्—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते बिइयस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के० अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणासिलए चेइए सामी समोसढे परिसा निग्गया जाव पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं राई देवी चमरचंचाए रायहाणीए एवं जहा काली तहेव आगया णट्टविहिं उवदंसेत्ता पडिगया भंतेत्ति भगवं गोयमा! पुव्वभवपुच्छा, एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं आमलकप्पा णयरी अंबसालवणे चेइए जियसत्तू राया राई गाहावई राईसिरी भारिया राई दारिया पासस्स समोसरणं राई दारिया जहेव काली तहेव निक्खंता तहेव सरीरबाउसिया तं चेव सव्वं जाव अंतं काहिति । एवं खलु जंबू ! विइयज्झयणस्स निक्खेवओ ॥

॥ पढमवग्गस्स बीयज्झयणं समत्तं ॥ सू० ५ ॥

टीका—' जइणं भंते ' इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति-यदि खलु हे भदन्त ।

—:द्वितीय अध्ययन प्रारंभः—

—:जइणं भंते ! समणेणं इत्यादि ।

टीकार्थः—जंबू स्वामी श्री सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि (भंते) हे भदंत ! (जइणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं

બીજું અધ્યયન પ્રારંભઃ—

जइणं भंते ! समणेणं इत्यादि—

ટીકાર્થ—જંબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે (भंते) હે ભદન્ત !
(जइणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स

श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं सम्प्राप्तेन धर्मकथानां प्रथमस्य वर्गस्य प्रथमाध्ययनस्यायमर्थः=पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः, द्वितीयस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् मोक्षं सम्प्राप्तेन कोऽर्थः=को भावः प्रज्ञप्तः ?

सुधर्मास्वामीमाह—एवं खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नगरम् । गुणशिल्कं चैत्यम् । स्वामी भगवान महावीरः समवसृतः । परिष-

---

पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते विइयस्स ण भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सामी समोसढे) यदि श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि मुक्ति स्थान को प्राप्त हो चुके हैं धर्मकथाके प्रथम वर्ग के प्रथम अध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्ररूपित किया है-तो हे भदंत ! द्वितीय अध्ययन का उन्हीं श्रमण भगवान महावीर ने जो कि मुक्ति को प्राप्त कर चुके हैं क्या भाव अर्थ प्रतिपादित किया है ? इस प्रकार जंबू स्वामी के पूछने पर सुधर्मा स्वामी उनसे कहते हैं कि हे जंबू ! सुनो -तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है-उस काल और उस समय में राजगृह नाम का नगर था। उसमें गुणशिलक नाम का उद्यान था। उसमें महावीर स्वामी समवसरे।-(परिसा निग्गया-जाव पज्जुवासइ,

---

वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते विइयस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के० अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सामी समोसढे)

જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધું છે. ધર્મકથાના પ્રથમ વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમાં અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે તો હે ભદન્ત ! તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેમણે મુક્તિ-સ્થાન મેળવી લીધું છે. બીજા અધ્યયનનો શો ભાવ-અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે. આ પ્રમાણે જંબૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાંભળીને શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જંબૂ ! સાંભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું તેમાં ગુણશિલક નામે ઉદ્યાન હતું તેમાં મહાવીર સ્વામી પધાર્યા.

(परिसा निग्गया-जाव पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं राई देवी

निर्गता यावत् भगवन्तं पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये ' राई ' रात्रिः-रात्रिनाम्नी देवी चमरचञ्चायां राजधान्याम्, एवं यथा काली तथैव-आगता, नाट्यविधिमुपदर्श्य प्रतिगता । ' भंते त्ति ' हे भदन्त ! इति सम्बोध्य भगवान् गौतमः ' पुव्वभवपुच्छा ' पूर्वभवपृच्छा रात्रि देव्याः पूर्वभवं पृच्छति । भगवान् प्राह-एवं खलु हे गौतम ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये आमलकल्पा नगरी, आम्रशालवनं चैत्यम्, जितशत्रू राजा, रात्रिर्गाथापतिः, रात्रिश्रीभार्या, तयोः

तेणं कालेणं तेणं समएणं राई देवी चमरचंचाए रायहाणीए एवं जहा काली-तहेव आ गया नट्टविहिं उवदंसेत्ता पडिगया) प्रभु का आगमन सुनकर नगर निवासिनी समस्त जनता उन प्रभु के दर्शन करने और उनसे धर्मोपदेश सुनने के लिये उस गुणशिलक उद्यान में आई । प्रभु ने सब को धर्म का उपदेश दिया । सबने प्रभु की पर्युपासना की । उस काल में और उस समय में रात्रिनाम की देवी चमर-चंचाराजधानी में रहती थी-जैसे वहां काली देवी रहती थी । सो वह भी प्रभु का आगमन सुनकर वहां आई । वहां आकर उसने नाट्य विधि दिखलाई-और दिखलाकर फिर वह वहां से वापिस अपने स्थान पर चली गई । (भंते त्ति भगवं गोयमा ! पुव्वभवपुच्छा-एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं आमलकप्पा णयरी अंबसाल-वणे चेइए-जियसत्तू राया-राई गाहावई, रायसिरी भारिया, राई

चमरचंचाए रायहाणीए एवं जहा काली-तहेव आगया नट्टविहिं उवंदसेत्ता पडिगया)

પ્રભુનું આગમન સાંભળીને નગરના બધા નાગરિકજનો તે પ્રભુનાં દર્શન કરવા માટે તેમજ તેમની પાસેથી ધર્મોપદેશ સાંભળવા માટે તે ગુણશિલક ઉદ્યાનમાં આવ્યા. પ્રભુએ બધાને ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો. બધાએ પ્રભુની પર્યુંપાસના કરી તે કાળે અને તે સમયે રાત્રિ નામે દેવી ચમરચંચા રાજ-ધાનીમા કાલી દેવીની જેમ રહેતી હતી તે પ્રભુનુ આગમન સાંભળીને ત્યાં આવી. ત્યાં આવીને તેણે નાટ્યવિધિ બતાવી અને બતાવીને તે ત્યાંથી પાછી જતી રહી

(भंते त्ति भगवं गोयमा ! पुव्वभवपृच्छा-एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं आमलकप्पा णयरी अंबसालवणे चेइए-जियसत्तू राया-राई गाहावई, रायसिरी भारिया, राई दारिया, पासस्स समोसरणं-राई दारिया

रात्रिर्दारिकाऽऽसीत् । पार्श्वस्य = पार्श्वप्रभोः समवसरणम् । रात्रिर्दारिका यथैव काली तथैव निष्क्रान्ता-तथैव शरीरबाकुशिका, तदेव सर्वं यावत्-सर्वदुःखाना-मन्तं करिष्यति ।

दारिया पासस्स समोसरणं राई दारिया जहेव काली- तहेव निक्खंता, तहेवसरीर बाउसिया तं चेव सव्वं जाव अंतं काहिइ एवं खलु जंबू। विइयज्झयणस्स निक्खेवओ) उसके चले जाने के बाद श्रमण भगवान् महावीर से गौतम ने रात्रिदेवी का पूर्वभव पूछा-प्रभु ने उनसे इस प्रकार कहा-हे गौतम ! उसकाल और उस समयमें आमलकल्पा नामकी नगरी थी। उसमें आम्रशालवन नामका उद्यान था। नगरीके राजा का नाम जितशत्रु था। वहां रत्रि नामका एक गाथापति रहता था। उस की भार्या का नाम रात्रिश्री था। इन दोनों के रात्रि नाम की एक पुत्री थी जिस प्रकार काली प्रभु का उपदेश सुनकर प्रतिबोध को प्राप्त हो गई थी।-उसी प्रकार पार्श्वनाथ के वहां उद्यान में आने पर भी उनसे धर्मोपदेश सुनकर प्रतिबोध को प्राप्त हो गई। अतः वह माता पिता से आज्ञा लेकर काली की तरह बड़े ठाठ बाट के साथ शिबिका में बैठाकर प्रभु के समीप माता पिता ले गये। वहां वह दीक्षित हो गइ। धीरे २ वह शरीर बाकुशिका बनगई। जिस प्रकार

जहेव काली-तहेव निक्खंता, तहेव सरीरबाउसिया तं चेव सव्वं जाव अंतं काहिइ एवं खलु जंबू ! विइयज्झयणस्स निक्खेवओ)

તેના ગયા બાદ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને ગૌતમે રાત્રિ દેવીના પૂર્વ-ભવની વિગત પૂછી. પ્રભુએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ગૌતમ ! તે કાળે અને તે સમયે આમલકલ્પા નામે નગરી હતી તેમાં આમ્રશાલવન નામે ઉદ્યાન હતું. નગરીના રાજાનું નામ જિતશત્રુ હતું. ત્યાં રાત્રિ નામે એક ગાથાપતિ રહેતો હતો તેની પત્નીનું નામ રાત્રિશ્રી હતું. તેઓ બંનેને રાત્રિ નામે એક પુત્રી હતી. જેમ કાલી પ્રભુનો ઉપદેશ શ્રવણ કરીને પ્રતિબોધને પ્રાપ્ત થઇ તેમજ ત્યાં ઉદ્યાનમાં પધારેલા પાર્શ્વનાથની પાસેથી ધર્મોપદેશ સાંભળીને તે પણ પ્રતિબોધિત થઇ ગઈ. એથી કાલીની જેમજ તેને પણ પોતાના માતાપિતાની પાસેથી આજ્ઞા મેળવી અને ત્યારપછી તેના માતાપિતાએ તેને પાલખીમાં બેસાડીને પ્રભુની પાસે લઈ ગયા, ત્યાં તે દીક્ષિત થઇ ગઇ ધીમે ધીમે તે પણ શરીર બાકુશિકા બની ગઇ. જેમ કાલી દારિકા પણ આર્યા થઇને શરીર વાકુશિકા બની ગઈ હતી ત્યારપછી જેવી સ્થિતિ કાલી આર્યાની

'एवं खलु जम्बूः !' इत्यादि द्वितीयाध्ययनस्य निक्षेपकः=उपसंहारः=समाप्तिवाक्यप्रबन्धोऽत्र बोध्यः ॥ सू०५ ॥

इति प्रथमवर्गस्य द्वितीयाध्ययनं समाप्तम् ॥-१-२ ॥

काली दारिका आर्या होकर शरीर वाकुशिका बनगई थी। इसके बाद जैसी स्थिति काली आर्या की हुई-वही सब स्थिति इस रात्रि दारिका की भी हुई-इस प्रकार सब संबन्ध यहां पर इसके विषय में लगालेना चाहिये और वह सबन्ध "महाविदेह में उत्पन्न होकर यह समस्त दुःखों का अन्त करेगी" यहां तक जानना चाहिये। इस प्रकार हे जंबू! यह प्रथमवर्ग के द्वितीय अध्ययन का उपसंहार है ॥ सू० ५ ॥

प्रथमवर्ग का द्वितीय अध्ययन समाप्त ॥

થઈ તેવીજ સ્થિતિ તે રાત્રિદારિકાની પણ થઇ. અહીં આ પ્રમાણે કાલિદારિકાનો બધો સંબંધ આના વિષે સમજી લેવો જોઇએ અને તે સંબંધ "મહાવિદેહમાં ઉત્પન્ન થઇને તે બધા દુઃખોનો અંત કરશે" અહીં સુધી સમજવો જોઇએ. આ પ્રમાણે હે જંબૂ! પ્રથમ વર્ગના બીજા અધ્યયનનો આ ઉપસંહાર છે. સૂ. ૫

"પ્રથમ વર્ગનું બીજું અધ્યયન સમાપ્ત"

अथ तृतीयमध्ययनम्

मूलम्—जइ णं भंते ! तइयज्झयणस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए एवं जहेव राई तहेव रयणी वि, णवरं आमलकप्पा नयरी रयणी गाहावई रयणी-सिरी भारिया रयणी दारिया सेसं तहेव जाव अंतं काहिइ ३ । एवं विज्जू वि आमलकप्पा नयरी विज्जुगाहावई विज्जु-सिरीभारिया विज्जुदारिया सेसं तहेव । ४ एवं मेहा वि आम-लकप्पाए नयरीए मेहे गाहावई मेहासिरी भारिया मेहा दारिया सेसं तहेव ५ । एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्म-कहाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ सू० ६ ॥

टीका—'जइणं भंते' इत्यादि । यदि खलु भदन्त ! इत्यादि तृतीयाध्ययनस्य उत्क्षेपकः=जम्बूप्रश्नादिरूपः प्रारम्भवाक्यप्रबन्धोऽत्रवाच्यः । सुधर्मास्वामी कथ-

---

॥ तृतीय अध्ययन प्रारंभ ॥

(जइणं भंते ! तइयज्झयणस्स उक्खेवओ) इत्यादि ॥

टीकार्थः—(जइणं भंते ! तइयज्झयणस्स उक्खेवओ) अब जंबू स्वामी पुनः पूछते हैं कि हे भदन्त ! यदि श्रमण भगवान् महावीर ने द्वितीय अध्ययन का यह पूर्वोक्तरूप से अर्थ निरूपित किया है-तो तृतीय अध्ययन का उन्होंने क्या अर्थ प्रतिपादित किया है ? इस तरह से इस तृतीय अध्ययन का जंबू स्वामी का यह प्रश्न आदिरूप वाक्य प्रबन्ध उत्क्षेपक है-प्रारंभक है-इस प्रश्न का उत्तर श्री सुधर्मा स्वामी

ત્રીજું અધ્યયન પ્રારંભઃ—

'जइणं भंते ! तइयज्झयणस्स उक्खेवओ' इत्यादि—

ટીકાર્થ—(जइणं भंते ! तइयज्झयणस्स उक्खेवओ) હવે જંબૂ સ્વામી ફરી પૂછે છે કે હે ભદન્ત ! જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે બીજા અધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો ત્રીજા અધ્યયનનો તેમણે શો અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે ? આ પ્રમાણે આ ત્રીજા અધ્યયનનો જંબૂ સ્વામીનો આ પ્રશ્ન વગેરે રૂપ વાક્ય પ્રબંધ ઉત્ક્ષેપક છે-પ્રારંભ છે આ પ્રશ્નનો ઉત્તર શ્રી સુધર્માસ્વામી આ પ્રમાણે આપે છે કેઃ—

यति-एवं खलु हे जम्बूः! राजगृहं नगरं, गुणशिलकं चैत्यम्। एवं यथैव रात्रि-स्तथैवरजनी अपि, नवरम् आमलकल्पा नगरी, रजनीगाथापतिः, रजनीश्रीर्भार्या, रजनी दारिका। शेषं तथैव। यावत्-सर्वदुःखानामन्तं करिष्यति॥

॥ इति प्रथमवर्गस्य तृतीयाध्ययनम्॥ १-३॥

इस प्रकार से देते हैं-(एवं खलु जंबू! रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए एवं जहेव राई तहेव रयणी वि, णवरं आमलकप्पा नयरी, रयणी गाहावई रयणीसिरी भारिया रयणी दारिया सेसं तहेव जाव अंतं काहिइ ३) जंबू! सुनो-उस काल में और उस समय में राजगृह नाम का नगर था। उसमें गुणशिलक नामका उद्यान था। जिस प्रकार रात्रि प्रभु का आगमन सुनकर गुणशिलक उद्यान में गई थी उसी तरह रजनी भी वहां गई उसने प्रभु के मुख से धर्म का उपदेश सुना। सुन-कर संसार शरीर और भोगों से वह विरक्त हो गई। दीक्षा लेने का अपना भाव उसने प्रभु से निवेदित किया। प्रभुने यथासुखं देवानुप्रिये कहकर उसके भाव की सराहना करतेहुए 'शुभस्य शीघ्रं' करने की अपनी अनुमति प्रकट की-तब यह घर आई और मातासे अपना दीक्षा लेने का विचार प्रकट किया-इत्यादि सब संबन्ध काली दारिका के कथानक अनुसार रजनी के साथ लगालेना चाहिये। जब रजनी देवी प्रभु को वंदना करनेके लिये गुणशिलक उद्यान में आई और वहां

(एवं खलु जंबू! रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए एवं जहेव राई तहेव रयणी वि णवरं आमलकप्पा नयरी, रयणी-गाहावई रयणीसिरी भारिया रयणी दारिया सेसं तहेव जाव अंतं काहिइ ३)

હે જંબૂ! સાંભળો, તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું. તેમાં ગુણશિલક નામે ઉદ્યાન હતું. જેમ રાત્રિ પ્રભુનું આગમન સાંભળીને ગુણશિલક ઉદ્યાનમા ગઇ હતી તેમજ રજની પણ ત્યાં ગઈ. તેણે પ્રભુના મુખથી ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળ્યો. સાંભળીને તે સંસાર, શરીર અને ભોગોથી વિરકત થઈ ગઈ. તેણે પોતાનો દીક્ષા ગ્રહણ કરવાનો ભાવ પ્રભુની સામે પ્રકટ કર્યો. પ્રભુએ 'યથાસુખમ્' દેવાનુપ્રિયે! કહીને તેના ભાવની સરાહના કરી અને શુભ કાર્યમા વિલંબ કરો નહિ એવી પોતાની અનુમતી દર્શાવી. ત્યારે તે પોતાને ઘેર આવી અને માતાપિતાની સામે દીક્ષા ગ્રહણ કરવાનો વિચાર પ્રકટ કર્યો-વગેરે બધી વિગત કાલી દારિકાની જેમજ રજનિની સાથે પણ સમજી લેવી જોઇએ જ્યારે રજનીદેવી પ્રભુને વદના કરવા માટે ગુણ-શિલક ઉદ્યાનમાં આવી અને ત્યાં તેણે નાટ્યવિધિનુ પ્રદર્શન કર્યું. ત્યારબાદ

'एवं विज्जूवि' इत्यादि। एवं विद्युदपि। आमलकल्पा नगरी, विद्युद् गाथापतिः, विद्युत् श्रीर्भार्या, विद्युद्दारिका। शेषं तथैव।

इति प्रथमवर्गस्य चतुर्थाध्ययनम् ॥ १-४ ॥

उसने नाटयविधिका प्रदर्शन किया बाद में वह जब वहां से प्रभु की पर्युपासना कर वापिस अपने स्थान पर चली गई-तब प्रभु से गौतम गणधर ने उसके पूर्वभव पूछे तब प्रभु ने उनसे इस प्रकार कहा-उस काल और उस समय में आमलक कल्पा नामकी नगरी थी-उसमें रजनी नामका गाथापति रहता था। रजनी श्री उसकी भार्या का नाम था। इन दोनों के एक पुत्री जिसका नाम रजनी था। इसके विषय का अवशिष्ट कथानक " समस्त दुःखो का यह अन्त करेगी " यहां तक का काली दारिका के जैसा ही जानना चाहिये ॥ सू० ६ ॥

॥ प्रथम वर्ग का तीसरा अध्ययन समाप्त ॥

एवं विज्जूवि आमलकप्पा नयरी विज्जू गाहावई ॥
विज्जुसिरीभार्या विज्जुदारिया, सेसं तहेव ॥ ४ ॥
एवं मेहावि आमलकप्पाए नयरीए मेहे गाहावई ॥
मेहासिरी भारिया मेहा दारिया सेसं तहेव ॥ ५ ॥
(एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्ग-

પ્રભુની પર્યુપાસના કરીને પાછી પોતાના સ્થાને જતી રહી ત્યારે ગૌતમ ગણધરે પ્રભુને તેના પૂર્વભવો પૂછ્યા. ત્યારે પ્રભુએ તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે તે કાળે અને તે સમયે આમલકલ્પા નામે નગરી હતી, તેમાં રજની નામે ગાથાપતિ રહેતો હતો, રજની શ્રી તેની પત્નીનું નામ હતું. તેઓ બંનેને એક પુત્રી હતી-જેનું નામ રજની હતું. એના વિષેની બાકીની બધી વિગત " સમસ્ત દુઃખોનો તે અન્ત કરશે " અહીં સુધીની કાલી દારિકાની જેમજ સમજી લેવી જોઈએ. ॥ સૂત્ર ૬ ॥

" પ્રથમ વર્ગનું ત્રીજું અધ્યયન સમાપ્ત ॥

(एवं विज्जूवि आमलकप्पा नयरी विज्जु गाहावई।
विज्जुसिरीभार्या विज्जुदारिया, सेसं तहेव ॥ ४ ॥
एवं मेहा वि आमलकप्पाए नयरीए मेहे गाहावई।
मेहासिरी भारिया मेहा दारिया सेसं तहेव ॥ ५ ॥
(एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ६)

'एवं मेहावि' इत्यादि। एवं मेघाऽपि। आमलकल्पायां नगर्यां मेघो गाथापतिः, मेघश्रीर्भार्या, मेघा दारिका। शेषं तथैव।

श्रीसुधर्मास्वामीमाह-एवं खलु हे जम्बूः! श्रमणेन यावत् मोक्षं सम्प्राप्तेन धर्मकथानां प्रथमस्य वर्गस्यायमर्थः प्रज्ञप्तः॥ सू०६॥

॥ इति प्रथमवर्गस्य पञ्चमाध्ययनम्॥ १-५॥

अथ द्वितीयो वर्गः प्रारभ्यते-' जइणं भंते ' इत्यादि।

मूलम्-जइणं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं दोच्चस्स

स्स अयमट्ठे पण्णत्ते ६) इसी तरह का कथानक विद्युतके विषय में भी जानना चाहिये। आमलकल्पा नगरी विद्युत गाथापति विद्युत् श्री भार्या इन दोनों के यहां विद्युत् दारिका। इस तरह नाम आदि में ही परिवर्तन हुआ है। अभिधेय विषय में कुछ अन्तर नहीं है। मेघ के विषय में भी यही बात जाननी चाहिये। आमलकल्प- नगरी, मेघ गाथापति, मेघ श्री भार्या, मेघा दारिका-इस प्रकार इस कथानक में इन नामों में परिवर्तन हुआ है-अभिधेय वक्तव्य-विषय में नहीं। इस प्रकार यहां तक प्रथम वर्ग के ५, अध्ययन समाप्त हो जाते हैं। विद्युद्दारिका का अध्ययन ४ चौथा, एवं मेघा दारिका का अध्ययन ५ पंचम है। इस तरह हे जंबू! श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मुक्ति स्थान के अधिपति बन चुके हैं धर्मकथा के प्रथमवर्ग का यह अर्थ प्ररूपित किया है?

આ પ્રમાણેનું જ કથાનક વિદ્યુતના વિષે પણ સમજી લેવું જોઈએ. આમલકલ્પા નગરી, વિદ્યુત ગાથાપતિ અને વિદ્યુત શ્રી ભાર્યા. આ બંનેને ત્યાં વિદ્યુત દારિકા. આ પ્રમાણે ફક્ત નામ વગેરેમાં પરિવર્તન થયુ છે અભિધેય વિષયમા કોઈ પણ જાતનો તફાવત નથી. મેઘના વિષે પણ એ જ વાત સમજી લેવી જોઈએ. આમલકલ્પા નગરી, મેઘ ગાથાપતિ, મેઘ શ્રી ભાર્યા, મેઘ દારિકા. આ પ્રમાણે આ કથાનકમાં પણ નામોમાં જ પરિવર્તન થયુ છે-અભિધેય વક્તવ્ય વિષયમા નહિ. આ પ્રમાણે અહીં સુધી પ્રથમ વર્ગના પાંચ અધ્યયનો પૂરા થઈ જાય છે. વિદ્યુદારિકાનું અધ્યયન ચોથું, અને મેઘ દારિકાનુ અધ્યયન પાચમું છે. આ પ્રમાણે હે જંબૂ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેઓ મુક્તિ સ્થાનના અધિપતિ થઈ ચૂક્યા છે-ધર્મકથાના પ્રથમ વર્ગનો આ અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે. ॥ ૯ ॥

वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा-सुंभा निसुंभा रंभा निरंभा मयणा, जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दोच्चस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, दोच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे गुणासिलए चेइए सामी समोसढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं सुंभादेवी बलिचंचाए रायहाणीए सुंभवडेंसए भवणे सुभंसि सीहासणंसि कालीगमएणं जाव णट्टविहिं उवदंसेत्ता जाव पडिगया, पुव्वभवपुच्छा, सावत्थी णयरी कोट्ठए चेइए जियसत्तू राया सुंभेगाहावई सुंभसिरी भारिया सुंभा दारिया सेसं जहा कालीए णवरं अद्धुट्ठाइं पलिओवमाइं ठिई एवं खलु जंबू ! निक्खेवओ अज्झयणस्स एवं सेसावि चत्तारि अज्झयणा सावत्थीए नवरं माया पिया सरिसनामया, एवं खलु जंबू ! निक्खेवओ बिईयवग्गस्स२ ॥ सू० ७ ॥

॥ बीओ वग्गो समत्तो ॥

टीका—जम्बूस्वामीपृच्छति-यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन द्वितीयस्य वर्गस्य उत्क्षेपकः। सुधर्मास्वामीमाह-एवं खलु हे जम्बूः श्रमणेन यावत्

-ःद्वितीयवर्गप्रारंभः-

'जइणं भंते ! समणेणं' इत्यादि ।

टीकार्थः—जंबू स्वामी श्री सुधर्मा स्वामी से पूछते हैं कि (भंते ! जइणं समणेणं जाव संपत्तेणं दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ-एवं खलु

બીજો વર્ગ પ્રારંભ—

'जइणं भंते ! समणेणं' इत्यादि—

ટીકાર્થ—જંબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે—

(भंते ! जइणं समणेणं जाव संपत्तेणं दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ-एवं खलु

मोक्षं सम्प्राप्तेन द्वितीयस्य वर्गस्य पञ्चाध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-शुम्भा १, निशुम्भा २, रम्भा ३, निरम्भा ४, मदना ५, । यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन द्वितीयस्य वर्गस्य पञ्च-अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, द्वितीयस्य खलु हे भदन्त ! वर्गस्य प्रथमाध्ययनस्य कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मास्वामी प्राह-एवं

जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं दोचस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता) हे भदंत ! मुक्ति स्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर ने द्वितीय वर्ग का उत्क्षेपक प्रारंभ किस रूप से प्ररूपित किया है-तब सुधर्मा स्वामी ने उनसे कहा-हे जंबू ! सुनो यावत् मुक्तिस्थान को प्राप्त हुए उन श्रमण भगवान् महावीर ने इस द्वितीय वर्ग के पांच अध्ययन प्ररूपित किये हैं-(तं जहा) वे इस प्रकार हैं-(सुंभा, निसुंभा, रंभा, निरंभा मयणा, जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दोचस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, दोचस्सणं भंते वग्गस्स पढमज्झयणस्स-के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे, गुणसीलए चेइए-सामी समोसढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ) (१) शुम्भा, (२) निशुंभा (३) रम्भा, (४) निरंभा (५) मदना, । अथ जंबू स्वामी पुनः सुधर्मा स्वामी से पूछते हैं कि हे भदंत ! यदि यावत् मुक्ति स्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान महावीरने द्वितीयवर्ग

जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं दोचस्स वग्गस्स पंचअज्झयणा पण्णत्ता)

હે ભદન્ત ! મુક્તિસ્થાનને પ્રાપ્ત કરેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે બીજા વર્ગનો ઉત્ક્ષેપક-પ્રારંભ-કયા રૂપથી પ્રરૂપિત કર્યો છે ? ત્યારે સુધર્મા સ્વામીએ તેમને કહ્યું કે હે જંબૂ ! સાંભળો, યાવત્ મુક્તિસ્થાનને વરેલા તે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ બીજા વર્ગના પાંચ અધ્યયનો પ્રરૂપિત કર્યાં છે. (તંજહા) તે આ પ્રમાણે છે—

(सुंभा, निसुंभा, रंभा, निरंभा, मयणा, जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दोचस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, दोचस्स णं भंते वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ! एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे, गुणसीलए चेइए-सामी समोसढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ)

(૧) શુંભા, (૨) નિશુંભા, (૩) રંભા, (૪) નિરંભા, (૫) મદના. હવે જંબૂ સ્વામી ફરી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે હે ભદન્ત ! જો યાવત્ મુક્તિ

खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नगरम् । गुणशिलकं चैत्यम् । स्वामी=वर्द्धमानस्वामी समवसृत । परिषन्निर्गता यावत्पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये शुम्भा देवी बलिचञ्चायां राजधान्यां शुम्भावतंसके भवने शुम्भे सिंहासने 'कालीगमएणं' कालीगमेन=काली देवी सदृशपाठेन यावत्-नाट्यविधिमुपदर्श्य यावत्-प्रतिगता । 'पुव्वभवपुच्छा' पूर्वभवपृच्छा=गौतमस्वामी शुम्भा देव्याः पूर्वभवं पृच्छति । भगवान् कथयति-श्रावस्ती नगरी । कोष्ठकं चैत्यम् । जितशत्रू राजा । शुम्भो गाथापतिः । शुम्भश्रीर्भार्या । शुम्भा दारिका । शेषं यथा काल्याः=काली दारिकाया वर्णनं तथात्रापि विज्ञेयम् , नवरं=विशेस्त्व-

---

के पांच अध्ययन प्ररूपित किये हैं-तो हे भदंत ! द्वितीयवर्ग के प्रथम अध्ययन का उन्होंने क्या अर्थ प्रतिपादित किया हैं ? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये सुधर्मा स्वामी उनसे इस प्रकार कहते हैं कि-हे जंबू !-उस काल और उस समय में राजगृह नाम का नगर था-उसमें गुणशिलक नाम का उद्यान था-। उसमें वर्द्धमान स्वामी आये। प्रभु का आगमन सुनकर वहां की समस्त जनता उन्हें वंदन के लिये अपने २ स्थान से चल कर उस गुणशिलक उद्यान में आई। प्रभु ने सबको धर्म का उपदेश दिया परिषद् उपदेश सुनकर प्रभु की यावत् पर्युपासना की। (तेणं कालेणं तेणं समएणं) उसी काल और उसी समय में (सुंभादेवी बलिचंचाए रायहाणीए सुंभवडेंसए भवणे सुभंसि सीहासणंसि कालीगमएणं जाव नट्टविहिं उवदंसेत्ता जाव पडिगया पुव्वभव पुच्छा, सावत्थी णयरी, कोट्ठए चेइए जियसत्तू राया, सुंभे गाहावई सुंभ-

---

સ્થાનને પ્રાપ્ત કરેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે બીજા વર્ગના પાંચ અધ્યયનો પ્રરૂપિત કર્યાં છે, તો હે ભદન્ત ! બીજા વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો તેમણે શો અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે ?

-આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને આ પ્રમાણે કહે છે કે હે જંબૂ ! તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું તેમાં ગુણશિલક નામે ઉદ્યાન હતું. તેમાં વર્દ્ધમાન સ્વામી પધાર્યા પ્રભુનું આગમન સાંભળીને ત્યાંના બધા નાગરિકો તેમને વંદના કરવા માટે પોતપોતાને સ્થાનેથી નીકળીને તે ગુણશિલક ઉદ્યાનમાં આવ્યા. પ્રભુએ બધાને ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો. પરિષદે ધર્મોપદેશ સાંભળીને પ્રભુની યાવત્ પર્યુપાસના કરી. (તેણં કાલેણં તેણં સમએણં) તે કાળે અને તે સમયે

(सुंभा देवी बलिचंचाए रायहाणीए सुंभवडेंसए भवणे सुभंसि सीहासणंसि काली गमएणं जाव नट्ट विहिं उवदंसेत्ता जाव पडिगया, पुव्वभवपुच्छा सावत्थी णयरी, कोट्ठए चेइए जियसत्तू राया, सुंभे गाहावई, सुंभसिरी भारिया, सुंभा-

यम्-अस्याः शुम्भादेव्याः 'अद्धुट्ठाइं' अर्द्ध चतुर्थानि=सार्द्धत्रयाणि पल्योपमानि स्थितिरस्ति। सुधर्मास्वामीप्राह-हे जम्बूः! निक्षेपकः=उपहारोऽध्ययनस्य वाच्यः॥
॥ इति द्वितीयवर्गस्य प्रथमाध्ययनम्॥

सिरी भारिया सुंभा दारिया, सेसं जहा कालीए णवरं अद्धुट्ठाइ पलिओवमाई ठिई, एवं खलु जंबू! निक्खेवओ अज्झयणस्स एवं सेसा वि चत्तारिअज्झयणा सावत्थीए नवरं माया पिया सरिस नामया एवं खलु जंबू। निक्खेवओ बिईयवग्गस्स बीओ वग्गो समत्तो) शुंभादेवी जो बलिचंचा नामकी राजधानी में शुभावतंसक नामके भवन में रहती थी-और शुंभनाम के सिंहासन पर बैठती थी-वह काली देवी के प्रकरण में वर्णित पाठ के अनुसार प्रभु के समीप उनको वंदना करने के लिये आई। वहां उसने नाट्यविधिका प्रदर्शन किया बादमें फिर वह वहां से पीछे अपने स्थान पर चली गई। उसके चले जाने के बाद गौतमस्वामी ने प्रभु से उस शुंभादेवी के पूर्वभव की पृच्छा की-तब भगवान् ने उन से इस प्रकार कहा-श्रावस्ती नामकी नगरी थी। उसमें कोष्ठक नामका उद्यान था,। नगरी के राजा का नाम जितशत्रु था उसमें गाथा पति रहता था। जिसका नाम शुंभ था। इसकी शुंभ श्री नाम की भार्या थी। दारिका का नाम शुंभा था। इसके बाद का इसका वर्णन

दारिया, सेसं जहा कालीए णवरं अद्धुट्ठाइं, पलिओवमाइं ठिई। एवं खलु जंबू! निक्खेवओ अज्झयणस्स एवं सेसा वि चत्तारि अज्झयणस्स सावत्थीए नवरं माया-पिया सरिसनामया, एवं खलु जंबू! निक्खेवओ-बिईयवग्गस्स पंच अज्झयणा समत्ता बीओ वग्गो समत्तो)

શુંભા દેવી-કે જે બલિચંચા નામે રાજધાનીમાં શુભાવતંસક નામના ભવનમાં રહેતી હતી અને શુભ નામે સિંહાસન ઉપર બેસતી હતી-કાલી દેવીના પ્રકરણમાં વર્ણવેલા પાઠ મુજબ પ્રભુની પાસે તેમને વંદના કરવા માટે આવી. ત્યાં તેણે નાટ્યવિધિનું પ્રદર્શન કર્યું. ત્યારબાદ તે ત્યાંથી પાછી પોતાના સ્થાને જતી રહી. તેમના જતા રહ્યા બાદ ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુની શુંભા દેવીના પૂર્વ ભવની પૃચ્છા કરી. ત્યારે ભગવાને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે— શ્રાવસ્તી નામે નગરી હતી, તેમાં કોષ્ઠક નામે ઉદ્યાન હતું. નગરીના રાજાનું નામ જિતશત્રુ હતું. તેમાં શુંભ નામે ગાથાપતિ રહેતો હતો. શુંભશ્રી નામે તેની પત્ની હતી, તેની પુત્રીનું નામ શુંભા હતું ત્યારપછીનું તેનું શેષ વર્ણન કાલી દેવીની જેમજ સમજી લેવું જોઈએ. તેમાં અને આમાં તફાવત એટ-

'एवं सेसावि' इत्यादि–एवं शेषाण्यपि=निशुम्भा १–रम्भा २–निरम्भा ३–मदना ४ नामकानि चत्वारि अध्ययनानि श्रावस्त्या नगर्या विज्ञेयानि, नवरम्–एतावान् विशेषः–मातरः पितरः सदृशनामानः दारिकासदृशनामानः, तथाहि–निशुम्भाया माता निशुम्भश्रीः, पिता निशुम्भः। रम्भाया माता रम्भश्रीः, पिता रम्भः। निरम्भाया माता निरम्भश्रीः, पिता निरम्भः। मदनाया माता मदनश्रीः पिता मदनः। एते सर्वे गाथापतयः आसन्।

एवं खलु हे जम्बूः! निक्षेपको द्वितीयवर्गस्य ॥ ७ ॥

॥ इति धर्मकथानां द्वितीयो वर्गः समाप्तः ॥ २ ॥

कालीदेवी का है वैसा ही जानना चाहिये। उसमें और इसमें केवल अन्तर इतना ही है कि कालीदेवी की स्थिति २॥ पल्य की थी और इस शुंभादेवी की ३॥, पल्य की थी। इस प्रकार हे जंबू! इस द्वितीयवर्ग के प्रथम अध्ययन का यह निक्षेपक है। इसी तरह निशुंभा, रंभा निरम्भा और मदना नाम के चार अध्ययन भी जानना चाहिये। इनमें विशेषता केवल इतनी ही है कि यहां जो माता पिता हैं वे दारिका सदृश नामवाले हैं–जैसे निशुंभा के पिता का नाम निशुंभ, माता का नाम निशुंभ श्री, रंभाके पिता का नाम रम्भ, माताका नाम रम्भश्री, निरंभा के पिता नाम निरंभ माता का नाम निरंभश्री, मदना के पिता का नाम मदन, और माताका नाम मदनश्री। ये सब ही गाथापति हैं। इस तरह यह द्वितीयवर्ग का निक्षेपक–उपसंहार–हैं।

॥ द्वितीयवर्ग समाप्त ॥

લો જ છે કે કાલી દેવીની સ્થિતિ ૨ાા પલ્યની હતી અને આ શુંભા દેવીની સ્થિતિ ૩ાા પલ્યની હતી. આ પ્રમાણે હે જંબૂ! આ બીજા વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનને આ નિક્ષેપક છે આ પ્રમાણે જ નિશુંભા, રંભા, નિરંભા અને મદના નામના ચાર અધ્યયને પણ જાણી લેવાં જોઈએ. એમનામાં વિશેષતા ફક્ત એટલી જ છે કે અહીં જે માતાપિતા છે તે પુત્રીના જેવા જ નામવાળા છે. જેમકે નિશુંભાના પિતાનું નામ નિશુંભ, માતાનું નામ નિશુંભશ્રી, રંભાના પિતાનું નામ રંભ, માતાનું નામ રંભશ્રી નિરંભાના પિતાનું નામ નિરંભ, માતાનું નામ નિરંભશ્રી, મદનાના પિતાનું નામ મદન અને માતાનું નામ મદનશ્રી, આ બધા ગાથાપતિઓ છે આ પ્રમાણે બીજા વર્ગને નિક્ષેપક ઉપસંહાર છે.

॥ બીજો વર્ગ સમાપ્ત ॥

अथ तृतीयो वर्गः प्रारभ्यते-' उक्खेवओ तइयवग्गस्स ' इत्यादि

मूलम्-उक्खेवओ तइयवग्गस्स एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं तइयस्स वग्गस्स चउपण्णं अज्झयणा पन्नत्ता, तं जहा-पढमे अज्झयणे जाव चउपण्णइमे अज्झयणे, जइणं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं तइयस्स वग्गस्स चउप्पन्नज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते?, एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे गुणासिलए चेइए सामी समोसढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं अलादेवी धरणाए रायहाणीए अलावडंसए भवणे अलंसि सीहासणंसि एवं कालीगमएणं जाव णट्टविहिं उवदंसेत्ता पडिगया, पुव्वभवपुच्छा, वाणारसी णयरी काममहावणे चेइए अले गाहावई अलसिरी भारिया अला दारिया सेसं जहा कालीए णवरं धरणस्स अग्गमहिसित्ताए उववाओ साइरेगं अद्धपलिओवमं ठिई सेसं तहेव, एवं खलु णिक्खेवओ पढमज्झयणस्स, एवं कमा सक्का सतेरा सोयामणी इंदा घणविज्जुयावि, सव्वाओ एयाओ धरणस्स अग्गमहिसीओ एवं, एते छ अज्झयणा वेणुदेवस्सवि अविसेसिया भाणियव्वा एवं जाव घोसस्सवि एए चेव छ अज्झयणा, एवमेते दाहिणिल्लाणं इंदाणं चउपण्णं अज्झयणा भवंति, सव्वाओवि वाणारसीए काममहावणे चेइए तइयवग्गस्स णिक्खेवओ॥सू०८॥

तइओ वग्गो समत्तो ॥३॥

टीका—'उक्खेवओ' उत्क्षेपकः=जम्बूप्रश्नादिरूपः प्रारम्भवाक्यप्रबन्धः तृतीयवर्गस्यात्रबोध्यः। श्रीसुधर्मास्वामी प्राह–एवं खलु हे जम्बूः! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् मोक्षं सम्प्राप्तेन तृतीयस्य वर्गस्य 'चउप्पण्णं' चतुष्पञ्चाशत् अलादीनि अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा–तानि यथा–प्रथममध्ययनम् अलेति यावत्–चतुष्पञ्चाशत्तममध्ययनम्। जम्बूस्वामी पृच्छति–यदि खलु हे

–ःतृतीय वर्ग प्रारंभः–

'उक्खेवओ तइयवग्गस्स' इत्यादि।

टीकार्थ—तृतीयवर्ग का प्रारंभवाक्य प्रबन्ध इस प्रकार है–अर्थात् सुधर्मास्वामी से जंबू स्वामी ने प्रश्न किया कि भदंत। श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मुक्ति को प्राप्त कर चुके हैं इस तृतीयवर्ग के कितने अध्ययन प्रज्ञप्त किये हैं–तब सुधर्मा स्वामी ने उनसे इस प्रकार कहा–(एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं तइयस्स वग्गस्स चउपण्णं अज्झयणा पन्नत्ता तं जहा पढमे अज्झयणे जाव चउपण्णइमे अज्झयणे जइणं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं तइयस्स वग्गस्स चउप्पन्नज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्सणं भंते! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्ते णं के अट्ठे पण्णत्ते?) हे जंबू! सुनो–उन मुक्ति प्राप्त हुए श्रमण भगवान महावीर ने तृतीयवर्ग के अलादिक चौपन ५४ अध्ययन प्रज्ञप्त किये हैं। जंबू स्वामी पुनः पूछते हैं–भदंत।

ત્રીજો વર્ગ પ્રારંભ—

'उक्खेवओ तइयवग्गस्स' इत्यादि—

ટીકાર્થ—ત્રીજા વર્ગનું આરંભ વાકય પ્રબંધ આ પ્રમાણે છે–એટલે કે સુધર્મા સ્વામીને જંબૂ સ્વામીએ પ્રશ્ન કર્યો કે હે ભદન્ત! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે–કે જેમણે મુક્તિ મેળવી લીધી છે. આ ત્રીજા વર્ગના કેટલાં અધ્યયનો પ્રજ્ઞપ્ત કર્યાં છે? ત્યારે સુધર્મા સ્વામીએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું—

(एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं तइयस्स वग्गस्स चउपण्णं अज्झयणा पन्नत्ता–तं जहा पढमे अज्झयणे जाव चउपण्णइ मे अज्झयणे जइणं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं तइयस्स वग्गस्स चउपन्नज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते?)

હે જંબૂ! સાંભળો, મુક્તિ પ્રાપ્ત કરેલા તે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ત્રીજા વર્ગના અલાદિક ૫૪ અધ્યયનો પ્રજ્ઞપ્ત કર્યાં છે. જંબૂ સ્વામી ફરી પ્રશ્ન કરે

भदन्त ! श्रमणेन यावत् मोक्षं सम्प्राप्तेन धर्मकथानां तृतीयस्य वर्गस्य चतुष्पञ्चाशद् अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तेषु प्रथमस्य खलु हे भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन यावत् मोक्षं सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मस्वामी कथयति—

एवं खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नगरम्, गुणशिलकं चैत्यम्, स्वामी समवसृत, परिषन्निर्गता यावत्-भगवन्तं पर्युपास्ते। तस्मिन् काले तस्मिन् समये अलादेवी=धरणेन्द्रस्याग्रमहिषी धरणायां राजधान्याम् आलावतंसके भवणे अले सिंहासणे, एवं 'कालीगमएणं' कालीगमेन=कालीसदृशपाठेन यावत् नाट्यविधिमुपदर्श्य प्रतिगता। 'पुव्वभवपुच्छा' पूर्वभवपृच्छा-गौतमस्वामी अलादेव्याः पूर्वभवं पृच्छति, भगवान् कथयति-वाणारसी नगरी। काममहावनं चैत्यम्। 'अले' अलनामा गाथापतिः। अलश्रीर्भार्या। अला दारिका। शेषं 'जहाकालीए' यथा काल्याः=कालीदेव्या वर्णनं तथैव अलादेव्या वर्णनं विज्ञेयम्, नवरम्-धरणस्याग्रमहिषीतयाऽस्या उपपातः, सातिरेकं=

यावत् मुक्ति को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर ने धर्मकथा के तृतीयवर्ग के ५४ अध्ययन प्रज्ञप्त किये हैं तो उनमें से हे भदंत ! उन्हीं यावत् मुक्ति प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने प्रथम अध्ययन का क्या अर्थ प्ररूपित किया है ? इस प्रश्न के समाधान निमित्त सुधर्मा स्वामी उनसे कहते हैं कि-(एवं खलु जंबू !) हे जंबू ! तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है(तेणं कालेणं तेणं समएणं अलादेवी धरणाए रायहाणीए अलावडंसए भवणे अलंसि सीहासणंसि एवं कालीगमएणं जाव णट्टविहिं उवदंसेत्ता पडिगया, पुव्वभवपुच्छा, वाणारसी णयरी, काममहावणे चेइए अलं गाहावई, अलासिरी भारिया, अलादारियासेसं जहा कालीए णवर धरणस्स अग्गमहिसित्ताए उववाओ, साइरेगं

છે કે હે ભદન્ત ! યાવત્ મુક્તિ પ્રાપ્ત કરેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ધર્મકથાના ત્રીજા વર્ગના ૫૪ ચોપનઅધ્યયનો પ્રજ્ઞપ્ત કર્યાં છે, તો તેઓમાંથી હે ભદંત ! તેજ યાવત્ મુક્તિ પ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પહેલા અધ્યયનનો શો અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે ? આ પ્રશ્નના સમાધાનમાં શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે (एवं खलु जंबू !) હે જંબૂ ! તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે

(तेणं कालेणं तेणं समएणं अलादेवी धरणाए रायहाणीए अलावडंसए भवणे अलंसि सीहासणंसि एवं काली गमएणं जाव णट्टविहिं उवदंसेत्ता पडिगया, पुव्वभवपुच्छा, वाणारसी णयरी, काममहावणे चेइए, अलं गाहावई, अलासिरी भारिया, अलादारिया सेसं जहा कालीए णवरं धरणस्स अग्गमहिसित्ताए उव-

अद्धपलिओवमं ठिई सेसं तहेव, एवं खलु णिक्खेवओ पढमज्झयणस्स)
उस काल और उस समय में राजगृह नाम का नगर था। वहां गुण-शिलक नाम का उद्यान था। उसमें तीर्थंकर परंपरानुसार विहार करते हुए श्रमण भगवान् महावीर आकर ठहरे हुए थे। नगर की परिषदा प्रभु को वंदना के लिये अपने २ घर से निकलकर उस उद्यान में आई प्रभु ने सबको धर्म का उपदेश दिया। सुनकर लोगों ने यावत् प्रभु की पर्युपासना की। उसी समय वहां पर धरणेन्द्र की अग्रमहिषी अलादेवी जो धरणा राजधानी में अलावतंसक इस नाम के भवन में रहती थी– और जिसके बैठने के सिंहासन का नाम अला था प्रभु को वंदना आदि करने के निमित्त आई। वहाँ आकर उस ने नाटयविधि दिखलाई। दिखलाकर वह फिर वहां से पीछे अपने स्थान पर गई। उसके जाते ही गौतम स्वामी ने श्रमण भगवान् महावीर से उसका पूर्वभव पूछा तब भगवान् ने उनसे इस प्रकार कहा वाणारसी नामकी नगरी थी–उसमें काम महावन नाम का उद्यान था। उसमें अलनाम का गाथापति रहता था। उसकी भार्या " अल श्री " इस नामकी थी। इस की एक पुत्री थी जिसका नाम अला था। इसका–अला का शेष कथानक, कालीदेवी का

वाओ, साउरेगं अद्धपलिओवमं ठिई सेसं तहेव, एवं खलु णिक्खेवओ पढमज्झयणस्स)

તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું. તેમાં ગુણશિલક નામે ઉદ્યાન હતું. તેમાં તીર્થંકર પરંપરા મુજબ વિહાર કરતાં પધારીને શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે મુકામ કર્યો હતો. નગરની પરિષદ પ્રભુને વંદન કરવા માટે પોતપોતાને ઘેરથી નીકળીને તે ઉદ્યાનમાં આવી. પ્રભુએ સૌને ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો. ઉપદેશ સાંભળીને લોકોએ યાવત્ પ્રભુની પર્યુપાસના કરી, તે વખતે ત્યાં ધરણેન્દ્રની અગ્રમહિષી (પટરાણી) અલાદેવી કે જે ધરણા રાજધાનીમાં અલાવતંસક આ નામના ભવનમાં રહેતી હતી, અને જેને બેસવાના સિંહાસનનું નામ અલા હતું–પ્રભુને વંદના કરવા માટે આવી. ત્યાં આવીને તેણે નાટયવિધિનું પ્રદર્શન કર્યું, પ્રદર્શન કરીને તે ત્યાંથી પાછી પોતાના સ્થાને જતી રહી. તેના ગયા પછી તરત જ ગૌતમ સ્વામીએ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને તેનો પૂર્વભવ પૂછયો ત્યારે ભગવાને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે વાણારસી નામે નગરી હતી, તેમાં કામમહાવન નામે ઉદ્યાન હતું, તેમાં અલ નામે ગાથાપતિ રહેતો હતો. તેની ભાર્યાનું નામ અલશ્રી હતું. તેને એક પુત્રી હતી તેનું નામ અલા હતું. અલા વિષેનું શેષ કથાનક પહેલાં

साधिकम् अर्द्धपल्योपमं स्थितिः। शेषं तथैव। एवं खलु निक्षेपकः प्रथमाध्ययनस्य। एवं क्रमात् शक्रा २, सतेरा ३, सौदामनी ४, इन्द्रा ५, घनविद्युदपि ६। सर्वा एता धरणस्य=धरणेन्द्रस्य अग्रमहिष्य एव। एतानि षड् अध्ययनानि वेणुदेवस्यापि। 'अविसेसिया' अविशेषितानि=निर्विशेषानि सदृशानि भणितव्यानि।

जैसा कथानक पीछे वर्णित किया जा चुका है वैसा ही जानना चाहिये। उसके वर्णन में और इसके वर्णन में केवल अन्तर इतना ही है कि यह धरणेन्द्र की अग्रमहिषी के रूप में उत्पन्न हुई और इसकी स्थिति १॥ पल्य से कुछ अधिक है। बाकी का इसका वृत्तान्त कालीदेवी के जैसा ही है। इस तरह यह द्वितीयवर्ग के प्रथम अध्ययन का निक्षेपक–उपसंहार–है।–(एवं कमा सक्का, सतेरा, सोयामणी, इंदा, घणविज्जुया वि, सव्वओ एयाओ धरणस्स अग्गमहिसीओ, एवं, एते ६ अज्झयणा वेणुदेवस्स वि अविसेसिया भाणियव्वा, एवं जाव घोसस्स वि एए चेव ६ अज्झयणा, एवमेते दाहिणिल्लाणं इंदाणं–चउप्पण्णं अज्झयणा भवंति, सव्वओ वि वाणारसीए काममहावणे चेइए तइयवग्गस्स णिक्खेवओ ८॥

(तइओ वग्गो समत्तो) इसी क्रम से शक्रा २, सतेरा ३, सौदामनी ४, इन्द्रा ५, घनविद्युत् ६, ये सब देवियां धरणेन्द्र की ही अग्रमहिषियां थीं। इस तरह के ६ अध्ययन वेणुदेव के भी हैं। और इनका

વર્ણવેલા કાલી દેવીના કથાનકની જેમજ સમજી લેવું જોઈએ. તેના અને આના વર્ણનમાં તફાવત ફક્ત એટલો જ છે કે આ ધરણેન્દ્રની અગ્રમહિષીના રૂપમાં ઉત્પન્ન થઈ અને આની સ્થિતિ ૧॥ પલ્ય કરતાં કંઈક વધારે છે. આનું બાકીનું વર્ણન કાલી દેવી જેવું જ છે. આ પ્રમાણે આ બીજા વર્ગના પહેલા અધ્યયનનો નિક્ષેપક ઉપસંહાર છે.

(एवं कमा सक्का सतेरा, सोयामणी, इंदा, घणविज्जुया वि, सव्वओ एयाओ धरणस्स, अग्गमहिसीओ एवं एते ६ अज्झयणा वेणुदेवस्स वि अविसेसिया भाणियव्वा, एवं जाव घोसस्स वि एए चेव६ अज्झयणा, एवमेते दाहिणिल्लाणं इंदाणं–चउप्पण्णं अज्झयणा भवंति, सव्वाओ वि वाणारसीए काम महावणे चेइए तइयवग्गस्स णिक्खेवओ॥ ८॥ तइओ वग्गो समत्तो)

આ અનુક્રમ પ્રમાણે જ શક્રા ૨, સતેરા ૩, સૌદામની ૪, ઇન્દ્રા ૫, ઘનવિદ્યુત ૬, આ બધી દેવીઓ ધરણેન્દ્રની જ અગ્રમહિષીઓ હતી આ પ્રમાણે જ ૬ અધ્યયનો વેણુ દેવીના પણ છે અને એમનું વર્ણન ધરણેન્દ્રના

एवं यावत् घोषस्यापि=घोषेन्द्रस्यापि, एतान्येव षड् अध्ययनानि सन्ति। एवमेतानि दाक्षिणात्यानामिन्द्राणां चतुष्पञ्चाशद् अध्ययनानि भवन्ति। सर्वा अपि पूर्वोक्तादेव्यः पूर्वभवे वाणारस्यां जाताः काममहावने चैत्ये भगवतः पार्श्वस्यार्हतः समीपे प्रव्रजिताः, तृतीयवर्गस्य निक्षेपकः=समाप्तिवाक्यप्रबन्धो विज्ञेयः॥ सू०८।

॥ इति धर्मकथानां तृतीयो वर्गः समाप्तः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः प्रारभ्यते–'चउत्थस्स' इत्यादि।

मूलम्–चउत्थस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं चउत्थवग्गस्स चउप्पण्णं अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–पढमे अज्झयणे जाव चउपण्णइमे अज्झयणे पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं रूया देवी रूयाणंदा रायहाणी रूयगवडिंसए भवणे रूयगंसि सीहासणंसि जहा कालीए तहा नवरं पुव्वभवे चंपाए पुण्णभद्दे चेइए रूयगे गाहावई रूयगसिरी भारिया रूया दारिया सेसं तहेव, णवरं भूयाणंदअग्गमहिसि-

---

वर्णन भी धरणेन्द्र के वर्णन जैसा ही है। घोषेन्द्र के भी ये ही ६ अध्ययन इसी तरह के हैं। इस तरह दक्षिण दिशा संबन्धी इन्द्रों के० ५४ अध्ययन हो जाते हैं। ये सब देवियां पूर्वभवमें वाणारसी में उत्पन्न हुई और काममहावन उद्यानमें भगवान् प्रार्श्वनाथ अर्हत प्रभुके समीप दीक्षित हुई। इस तरहसे धर्मकथाका यह "तृतीय वर्ग समाप्त हुआ है।"

वर्णुन જેવું જ છે. ઘોષેન્દ્રના પણ આ જાતનાં જ ૬ અધ્યયનો છે. આ પ્રમાણે દક્ષિણ દિશા સંબંધી ઇન્દ્રોના ૫૪ અધ્યયનો થઈ જાય છે. આ બધી દેવીઓ પૂર્વભવમાં વાણારસીમાં ઉત્પન્ન થઈ હતી અને કામમહાવન ઉદ્યાનમાં ભગવાન પાર્શ્વનાથ અર્હંત પ્રભુની પાસે દીક્ષિત થઈ. આ પ્રમાણે ધર્મકથાનો આ ત્રીજો વર્ગ પૂરો થયો છે.

त्ताए उववाओ देसूणं पलिओवमं ठिई णिक्खेवओ एवं सुरूयावि रूयंसावि रूयगावईवि रूयकंतावि रूयप्पभावि, एयाओ चेव उत्तरिल्लाणं इंदाणं भाणियव्वाओ जाव महाघोसस्स, णिक्खेवओ चउत्थवग्गस्स ॥ सू० १ ॥

॥ चउत्थो वग्गो समत्तो ॥ ४ ॥

टीका—'चउत्थस्स-चतुर्थवर्गस्य 'उक्खेवओ' उत्क्षेपकः=प्रारम्भवाक्यपाठोऽत्रवाच्यः। सुधर्मस्वामी प्राह-एवं खलु जम्बूः! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन धर्मकथानां चतुर्थवर्गस्य चतुष्पञ्चाशत् अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा प्रथममध्ययनं यावत्-चतुष्पञ्चाशत्तममध्ययनम्। तेषु प्रथमस्याध्ययनस्य उत्क्षेपकः। सुधर्मस्वामीप्राह-एवं खलु हे जम्बूः! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे सम-

---

-ः चतुर्थ वर्ग प्रारंभः-

'चउत्थस्स उक्खेवओ' इत्यादि।

टीकार्थः—(चउत्थस्स उक्खेवओ) चतुर्थ वर्ग का प्रारंभ किस तरह से हुआ है-इस प्रकार-जंबूस्वामी के पूछने पर श्री सुधर्मास्वामी उनसे कहते हैं कि (एवं खलु जंबू) हे जंबू! सुनो-(समणेणं जाव संपत्तणं धम्मकहाणं चउत्थवग्गस्स चउप्पण्णं अज्झयणा पण्णत्ता तं जहा पढमे अज्झयणे जाव चउपण्णइमे अज्झयणे) यावत् मुक्तिस्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर ने धर्मकथा के चतुर्थ वर्ग के ५४ अध्ययन प्रज्ञप्त किये हैं-वे प्रथम अध्ययन से लेकर ५४ वें अध्ययन तक हैं-(पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं

ચોથો વર્ગ પ્રારંભ.

'चउत्थस्स उक्खेवओ' इत्यादि—

ટીકાર્થ—(चउत्थस्स उक्खेवओ) ચોથા વર્ગની શરૂઆત કેવી રીતે થઈ છે? આ જાતનો જંબૂ સ્વામીએ પ્રશ્ન કર્યા બાદ શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે (एवं खलु जंबू) હે જંબૂ! સાંભળો,

(समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं चउत्थवग्गस्स चउप्पण्णं अज्झयणा पण्णत्ता तं जहा पढमे अज्झयणे जाव चउपण्णइमे अज्झयणे)

યાવત્ મુક્તિસ્થાનને પામેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ધર્મકથાના ચોથા વર્ગના ૫૪ અધ્યયનો પ્રજ્ઞપ્ત કર્યાં છે. તેઓ પહેલા અધ્યયનથી માંડીને ૫૪ મા અધ્યયન સુધી છે.

वसरणं=भगवतः श्री महावीरस्वामिनः समागमनं संजातं, यावत् परिषद् भगवन्तं पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये रूपादेवी=भूतानन्देन्द्रस्याग्रमहिषी रूपकावतंसके भवने रूपके सिंहासने यथा कालयाः=कालीदेव्या वर्णनं तथा=तद्वत्

समणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं रूया देवी, रूयाणंदा रायहाणी रूयगवडिसए भवणे रूयगंसि सीहासणंसि जहा कालीए तहा नवरं पुव्वभवे चंपाए पुण्णभद्दे चेइए रूयगे गाहावई रूयगसिरी भारिया, रूया दारिया, सेसं तहेव, णवरं भूयाणंद अग्गमहिसित्ताए उववाओ देसूणं पलिओवमं ठिई निक्खेवओ, एवं सुरूवया वि, रूयंसावि, रूयगाहावई वि रूयकंता वि रूयप्पभावि, एयाओ चेव उत्तरिल्लाणं इंदाणं भाणियव्वाओ, जाव महाघोसस्स णिक्खेवओ चउत्थवग्गस्स चउत्थो वग्गो समत्तो)

प्रथम अध्ययन का हे जंबू! उत्क्षेपक इस प्रकार है-उसकाल में और उस समय में राजगृह नगर में महावीर स्वामी का आगमन हुआ। परिषद प्रभु को वंदना करने के लिये अपने २ स्थान से निकलकर जहां प्रभु विराजमान थे वहां आई। प्रभु ने धर्म का उपदेश दिया। यावत् सबने प्रभु की पर्युपासना की। उस काल और उस समय में भूतानंद इन्द्र की अग्रदेवी जिसका नाम रूपादेवी था वह प्रभु को वंदना के लिये

(पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ-एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं रूयादेवी, रूयाणंदा, रायहाणी रूयगवडिसए भवणे रूयगंसि सीहासणंसि जहा कालीए तहा नवरं पुव्वभवे चंपाए पुण्णभद्दे चेइए रूयगे गाहावई रूयगसिरी भारिया, रूया दारिया, सेसं तहेव, णवरं भूयाणंद अग्गमहिसित्ताए उववाओ देसूणं पलिओवमं ठिई निक्खेवओ, एवं सुरूवया वि, रूयंसावि, रूयगाहावई, वि रूयकंता वि रूयप्पभावि, एयाओ चेव उत्तरिल्लाणं इंदाणं भाणियव्वाओ, जाव महाघोसस्स णिक्खेवओ चउत्थवग्गस्स ॥ १ ॥ चउत्थो वग्गो समत्तो)

હે જંબૂ! પહેલા અધ્યયનનો ઉત્ક્ષેપક આ પ્રમાણે છે-તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નગરમાં મહાવીર સ્વામીનું આગમન થયું. પ્રભુને વંદના કરવા માટે પરિષદ પોતપોતાને સ્થાનેથી નીકળીને જ્યાં પ્રભુ વિરાજમાન હતા ત્યાં આવી, પ્રભુએ ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો યાવત્ સૌએ પ્રભુની પર્યુપાસના કરી. તે કાળે અને તે સમયે ભૂતાનંદ ઇન્દ્રની અગ્રદેવી (પટરાણી) જેનું નામ રૂપા દેવી હતું-પ્રભુને વંદના કરવા માટે આવી. તેના રહેવાના ભવનનું

रूपादेव्या अपि विज्ञेयम्, नवरं=विशेषोऽत्रायम्–पूर्वभवे चम्पायां नगर्यां पूर्णभद्रं चैत्यम्, रूपको गाथापतिः, रूपश्रीर्भार्या, रूपादारिका, शेषं तथैव नवरं भूतानन्दाग्रमहिषीतया तस्या उपपातः जन्म। देशोनं पल्योपमं स्थितिः। निक्षेपकः=समाप्तिवाक्यरूपः प्रबन्धोऽत्र विज्ञेयः। एवं सुरूपाऽपि २, रूपांशाऽपि ३, रूपकावत्यपि ४, रूपकान्तापि ५, रूपप्रभापि ६। एताश्चैव उत्तरीयाणामिन्द्राणां

आई। इसके रहने के भवन का नाम रूपकावतंसक था। और जिस सिंहासन पर यह बैठती थी उसका नाम रूपक था। पीछे जिस प्रकार का वर्णन कालीदेवी का किया गया है–उसी प्रकार का इनका भी वर्णन जानना चाहिये। उसके पूर्वभव का वर्णन इस प्रकार है–यह पूर्वभव में चंपा नामकी नगरी में कि जिसमें पूर्णभद्र नाम का उद्यान था और रूपक गाथापति जिस में रहता था उस गाथापति की यह रूपश्री भार्या से "रूपा दारिका" इस नाम से पुत्री उत्पन्न हुई थी। बाद में प्रभु का उपदेश सुनकर यह प्रतिबोध को प्राप्त हो गई और कालीदेवी की तरह यह आर्या बन गई इसके आगे जिस तरह का काली देवी का वृत्तान्त बना इसी तरह से इसका भी जानना चाहिये। जब यह काल अवसर काल कर गई तब यह भूतानंद इन्द्र की अग्रमहिषीरूप से उत्पन्न हुई। वहाँ इसकी कुछकम १, पल्य की स्थिति है। इस प्रकार रूपा देवी के कथानक का यह निक्षेपक है। इसी तरह से (२) सुरूपा (३) रूपांशा (४) रूपकावती (५) रूपकान्ता और ६ रूपप्रभा का भी वर्णन जानना

નામ રૂપકાવતંસક હતું અને જે સિંહાસન ઉપર તે બેસતી હતી તેનું નામ રૂપક હતું. જેમ પહેલાં કાલી દેવીનું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે તેમજ આનું વર્ણન પણ સમજી લેવું જોઈએ તેના પૂર્વભવનું વર્ણન આ પ્રમાણે છે—આ પૂર્વભવમાં ચંપા નામની નગરીમા-કે જેમાં પૂર્ણભદ્રા નામે ઉદ્યાન હતું અને રૂપક ગાથાપતિ જેમાં રહેતો હતો. તે ગાથાપતિની આ રૂપશ્રી ભાર્યાથી 'રૂપાદારિકા' આ નામથી પુત્રી રૂપે ઉત્પન્ન થઈ હતી. ત્યારપછી પ્રભુનો ઉપદેશ સાંભળીને એ બોધને પ્રાપ્ત થઈ અને કાલી દેવીની જેમ આર્યા થઈ ગઈ. એના પછીની વિગત કાલી દેવીની હતી તેવી જ એની પણ સમજી લેવી જોઈએ. જ્યારે તેણે કાળ અવસરે કાળ કર્યો ત્યારે આ ભૂતાનંદ ઇન્દ્રની અગ્રમહિષી (પટરાણી) ના રૂપમાં ઉત્પન્ન થઈ ત્યાં તેની થોડી ઓછી એક પલ્યની સ્થિતિ છે. આ પ્રમાણે રૂપાદેવીના કથાનકનો આ નિક્ષેપક છે. આ પ્રમાણે જ (૨) સુરૂપા, (૩) રૂપાંશા, (૪) રૂપકાવતી, (૫) રૂપકાંતા અને

भणितव्याः=अग्रमहिष्यो वक्तव्याः यावत् महाघोषस्य । महाघोषेन्द्रस्य । निक्षेपकश्चतुर्थवर्गस्य ॥ सू०१ ॥

॥ इति धर्मकथानां चतुर्थो वर्गः समाप्तः ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमो वर्गः प्रारभ्यते—पंचमवग्गस्स ' इत्यादि ।

मूलम्—पंचमवग्गस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! जाव बत्तीसं अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—कमला१ कमलप्पभा२ चेव, उप्पला३ य सुदंसणा४। रूववई५ बहुरूवा६, सुरूवा७ सुभगाविय८ ॥ १ ॥ पुण्णा९ बहुपुत्तिया१० चेव, उत्तमा११ तारयाविय१२। पउमा१३ वसुमती१४ चेव, कणगा१५ कणगप्पभा१६ ॥२॥ वडेंसा१७ केउमई१८ चेव, वइरसेणा१९ रइप्पिया२० । रोहिणी२१ नवमिया२२ चेव, हिरी२३ पुप्फवईइय २४ ॥३॥ भुयगा२५ भुयगवई२६ चेव, महाकच्छा२७ऽपराइया२८। सुघोसा२९ विमला३० चेव, सुस्सरा३१ य सरस्सवई३२ ॥४॥ उक्खेवओ पढमज्झयणस्स, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं कमलादेवी कमलाए रायहाणीए कमलवडेंसए भवणे कमलंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए तहेव णवरं पुव्वभवे नागपुरे नयरे सहसंब-

---

चाहिये। ये देवियां भूतानंद इन्द्र की तरह उत्तरीय इन्द्रों की भी अग्रमहिषियां हैं। और ये ही महाघोषेन्द्र की भी हैं। इस प्रकार यह चतुर्थ वर्ग का निक्षेपक (स्वरूप) है।

॥ चतुर्थवर्ग समाप्त ॥

---

(९) રૂપપ્રભાનું વર્ણન પણ સમજી લેવું જોઈએ. આ બધી દેવીઓ ભૂતાનંદ ઈન્દ્રની જેમ ઉત્તરીય ઈન્દ્રોની પણ અગ્રમહિષીઓ (પટરાણીઓ) છે. અને મહાઘોષેન્દ્રની પણ તેઓજ પટરાણીઓ છે. આ પ્રમાણે આ ચોથા વર્ગનો નિક્ષેપક છે.

ચોથો વર્ગ સમાપ્ત.

वणे उज्जाणे कमलस्स गाहावइस्स कमलसिरीए भारियाए कमला दारिया पासस्स० अंतिए निक्खंता कालस्स पिसायकुमारिंदस्स अग्गमहिसी अद्धपलिओवमं ठिई, एवं सेसा वि अज्झयणा दाहिणिल्लाणं वाणमंतररिंदाणं भाणियव्वाओ सव्वाओ णागपुरे सहस्संबवणे उज्जाणे माया पिया धूया सरिसनामया, ठिई अद्धपलिओवमं ॥ सू० १० ॥

॥ पंचमो वग्गो समत्तो ॥ ५ ॥

टीका—'पंचमवग्गस्स' पञ्चमवर्गस्य उत्क्षेपकः। सुधर्मस्वामी प्राह—एवं खलु जम्बूः! इत्यादि, यावत् द्वात्रिंशद् अध्ययनानि कमलादि नामकानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—तेषां नामानि गाथा चतुष्टयेन प्राह—

" कमला १ कमलप्रभा २ चैव, उत्पला ३ च सुदर्शना ४।
रूपवती ५ बहुरूपा ६, सुरूपा ७ सुभगा ८ ऽपि च ॥ १ ॥

—ःपंचम वर्ग प्रारंभः—

'पंचम वग्गस्स उक्खेवओ' इत्यादि।

टीकार्थ—(पंचमवग्गस्स उवक्खेवओ) हे भदंत! पांचवें वर्ग का उत्क्षेपक प्रारंभ का स्वरूप श्रमण भगवान् महावीर ने किस प्रकार से प्ररूपित किया है? इस प्रकार जंबूस्वामी के पूछने पर सुधर्मास्वामी ने उनसे इस प्रकार कहा—(एवं खलु जंबू!) हे जंबू! सुनो—वह इस तरह से है—(जाव बत्तीसं अज्झयणा पण्णत्ता—तं जहा (१) कमला (२) कमलप्पभा चेव, (३) उप्पला य (४) सुदंसणा। (५) रूववई (६) बहुरूवा (७) सुरूवा (८) सुभगाविय,। (९) पुण्णा (१०) बहुपुत्तिया चेव (११) उत्तमा (१२) तारयाविय। (१३) पउमा (१४) वसुमती चेव (१५) कणगा (१६) कणगप्पभा (१७) वडेंसा (१८) केउमई चेव (१९) वइरसेणा (२०) रइ-

પાંચમો વર્ગ પ્રારંભ.

'पंचम वग्गस्स उक्खेवओ' इत्यादि—

ટીકાર્થ—(पंचम वग्गस्स उक्खेवओ) હે ભદન્ત! પાંચમા વર્ગના ઉત્ક્ષેપક-પ્રારંભ-નું સ્વરૂપ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કેવી રીતે પ્રરૂપિત કર્યું છે? એ પ્રમાણે જંબૂ સ્વામીના પ્રશ્ન કર્યા બાદ સુધર્મા સ્વામીએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—(एव खलु जंबू!) હે જંબૂ! સાંભળો, તે આ પ્રમાણે છે—

(जाव बत्तीसं अज्झयणा पणत्ता—तं जहा (१) कमला (२) कमलप्पभा चेव, (३) उप्पला य, (४) सुदंसणा (५) रूववई (६) बहुरूवा (७) सुरूवा (८)

पूर्णा ९ बहुपुत्रिका १० चैव, उत्तमा ११ तारका १२ ऽपि च ।
पद्मा १३ वसुमती १४ चैव, कनका १५ कनप्रभा १६ ॥ २ ॥
अवतंसा १७ केतुमती . १८ चैव, वज्रसेना १९ रतिप्रिया २० ।
रोहिणी २१ नवमिका २२ चैव, ह्रीः २३ पुष्पवती २४ ति च ॥ ३ ॥
भुजगा २५ भुजगवती २६ चैव, महाकच्छा २७ ऽपराजिता २८ ॥
सुघोषा २९ विमला ३० चैव, सुस्वरा ३१ च सरस्वती ३२ ॥ ४ ॥

प्पिया । (२१) रोहिणी (२२) नवमिया चेव (२३) हिरी (२४) पुप्फवईइय । (२५) भुयगा (२६) भुयगवई चेव (२७) महाकच्छा (२८) पराइया (२९) सुघोसा (३०) विमला चेव (३१) सुस्सरा (३२) सरसवई) इस पंचम वर्ग के श्रमण भगवान् महावीर ने कमलादि नामवाले ३२ अध्ययन प्रज्ञप्त किये हैं। इनके नाम सूत्रकार चार गाथाओं द्वारा इस तरह से प्रकट करते हैं। कमला १, कमलप्रभा २, उत्पला ३, सुदर्शना ४, रूपवती ५, बहुरूपा, ६, सुरूपा ७, सुभगा ८, पूर्णा ९, बहुपुत्रिक १०, उत्तमा ११ तारका १२, पद्मा १३, वसुमती १४, कनका १५ कनकप्रभा १६, अवतंसा १७, केतुमती, १८, वज्रसेना १९, रतिप्रिया २०, रोहिणी २१, नवमिका २२, ह्री २३, पुष्पवती, २४, भुजगा,२५, भुजगवती २६, महाकच्छा २७, अपराजिता २८, सुघोषा २९, विमला ३०, । सुस्वरा

सुभगाविय, (९) पुण्णा (१०) बहुपुत्तिया चेव (११) उत्तमा (१२) तारयाविय, (१३) पउमा, (१४) वसुमती चेव (१५) कणगा, (१६) कणगप्पभा, (१७) वडेंसा, (१८) केउमइ चेव, (१९) वइरसेणा, (२०) रइप्पिया, (२१) रोहिणी, (२२) नवमिया चेव (२३) हिरी (२४) पुप्फवईइय, (२५) भुयगा (२६) भुयगवई चेव, (२७) महाकच्छा (२८) पराइया, (२९) सुघोसा (३०) विमला चेव (३१) सुस्सरा, (३२) य सरसवई)

શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ પંચમા વર્ગના કમલા વગેરે નામોવાળા ૩૨ અધ્યયનો પ્રજ્ઞપ્ત કર્યાં છે એમનાં નામો સૂત્રકાર ચાર ગાથાઓ વડે એ પ્રમાણે પ્રકટ કરે છે—કમલા (૧), કમલપ્રભા (૨), ઉત્પલા (૩), સુદર્શના (૪), રૂપવતી (૫), બહુરૂપા (૬), સુરૂપા (૭), સુભગા (૮), પૂર્ણા (૯), બહુપુત્રિકા (૧૦), ઉત્તમા-(૧૧), તારકા (૧૨), પદ્મા (૧૩), વસુમતી (૧૪), કનકા (૧૫), કનકપ્રભા (૧૬), અવતંસા (૧૭), કેતુમતી (૧૮), વજ્રસેના (૧૯), રતિપ્રિયા, (૨૦), રોહિણી (૨૧), નવમિકા (૨૨), હ્રી (૧૩), પુષ્પવતી (૨૪) ભુજગા (૨૫), ભુજગવતી (૨૬), મહાકચ્છા (૨૭), અપરાજીતા (૨૮), સુઘોષા (૨૯), વિમલા (૩૦), સુસ્વરા (૩૧), સરસ્વતી (૩૨).

उत्क्षेपकः प्रथमाध्ययनस्य । जम्बूस्वामिना पृष्टे सुधर्मास्वामीप्राह-एवं खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे 'समोसरणं' समवसरणं=भग·

३१, सरस्वती ३२, । (उक्खेवओ पढमज्झयणस्स एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं कमला देवी, कमलाए रायहाणीए कमलवडेंसए भवणे कमलंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए तहेव णवरं पुव्वभवे नागपुरे नयरे सहसंबवणे उज्जाणे कमलस्स गाहावइस्स कमलसिरीए भारियाए कमला दारिया पासस्स० अंतिए निक्खंता कालस्स पिसायकुमारिंदस्स अग्गमहिसी अद्धपलिओवमं ठिई, एवं सेसा वि अज्झयणा दाहिणिल्लाणं वाणमंतरिंदाणं भाणियव्वाओ, सव्वओ णागपुरे सहसंबवणे उज्जाणे माया पिया धूया सरिसनामया, ठिई अद्धपलिओवमं)
इसके बाद जंबूस्वामी ने श्री सुधर्मास्वामी से पूछा कि इनमें से कमला नामका जो प्रथम अध्ययन है उसका उत्क्षेपक किस तरह से है-इस प्रकार जंबूस्वामी के पूछने पर उनसे सुधर्मास्वामी ने कहा-कि हे जंबू ! सुनो-तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है-उस काल में और उस समय में राजगृह नामका नगर था। उसमें भगवान् महावीर का आगमन हुआ। यावत् वहां की परिषद प्रभु को वंदना करने के लिये आई।

(उक्खेवओ पढमज्झयणस्स, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरण जाव परिसापज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं कमलादेवी कमलाए रायहाणीए कमलवडेंसए भवणे कमलंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए तहेव णवरं पुव्वभवे नागपुरे नयरे सहसंबवणे उज्जाणे कमलस्स गाहावइस्स कमलसिरीए भरियाए कमला दारिया पासस्स० अंतिए निक्खंता कालस्स पिसाय कुमारिंदस्स अग्गमहिसी अद्धपलिओवमठिई, एवं सेसा वि अज्झयणा दाहिणिल्लाणं वाणमंतरिंदाणं भाणियव्वाओ, सव्वाओ णागपुरे सहसंबवणे उज्जाणे मायापिया धूया सरिसनामया, ठिई अद्धपलिओवमं)

ત્યારપછી જંબૂ સ્વામીએ શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછ્યુ કે આ બધામાં કમલા નામે જે પહેલુ અધ્યયન છે તેનો ઉત્ક્ષેપક કેવી રીતે છે ?

આ પ્રમાણે જંબૂ સ્વામીએ પ્રશ્ન કર્યા બાદ તેમને શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ કહ્યું કે હે જંબૂ ! સાંભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતુ. તેમાં ભગવાન મહાવીરનું આગમન થયું. યાવત્ નગરની પરિષદ તેમને વંદના કરવા માટે આવી. પ્રભુએ સૌને

वन् महावीरस्वामी समागमनं संजातं, यावत् परिषद् भगवन्तं पर्युपास्ते। तस्मिन् काले तस्मिन् समये कमला देवी कमलायां राजधान्यां, कमलावतंसके भवने कमले सिंहासने, शेषं यथा—काल्याः=कालीदेव्या वर्णनं तथैवाऽस्या अपि, नवरं=विशेषोऽयम्—पूर्वभवे नागपुरं नगरं, सहस्राम्रवनमुद्यानम् , कमलस्य गाथापतेः कमलश्रियो भार्यायाः कमला दारिका पार्श्वस्यार्हतः पुरुषादानीयस्य अन्तिके 'निक्खंता' निष्क्रान्ता=प्रव्रजिता, कालस्य पिशाचकुमारेन्द्रस्य अग्रमहिषी। अर्द्धपल्योपमं स्थितिः। एवं शेषाण्यपि कमलप्रभादिनामकान्यपि एकत्रिंशद् अध्य-

---

प्रभु ने सबको धर्म का उपदेश दिया। परिषद ने प्रभु की पर्युपासना की। उस काल में और उस समय में कमला नाम की देवी, कमला राजधानी में कमलावतंसक भवन में रहती थी। उस के सिंहासन का नाम कमला था। इसके आगे का समस्त वर्णन कालीदेवी के वर्णन जैसा ही जानना चाहिये। परन्तु इसमें जो विशेषता है वह इस प्रकार है—जब गौतमस्वामी ने उसके—अर्थात् देवी के चले जाने के बाद उसके पूर्वभव का वृत्तान्त पूछा—तब प्रभु ने उनसे इस प्रकार कहा—पूर्वभव के इसके नगर का नाम नागपुर था—उसमें सहस्राम्रवन नाम का उद्यान था। उस नगर में कमल नामका गाथापति रहता था।—उसकी भार्या का नाम कमला श्री था। इनके एक पुत्री थी जिस का नाम कमला था। वह काललब्धि के आनेपर पुरुषदानीय—पुरुष श्रेष्ठ—पार्श्वनाथ अर्हंत प्रभु के समीप प्रव्रजित हो गई। बाद में मरने पर वह काल नाम के पिशाच कुमारेन्द्र की अग्रमहिषी बनी। वहां इसकी स्थिति अर्धपल्य की है।

ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો. પરિષદે પ્રભુની પર્યુપાસના કરી. તે કાળે અને તે સમયે કમલા નામની દેવી, કમલા રાજધાનીમાં કમલાવતંસક ભવનમાં રહેતી હતી. તેના સિંહાસનનું નામ કમલા હતું. એના પછીનું બધું વર્ણન કાલી દેવીના વર્ણનની જેમ જ સમજી લેવું જોઈએ. પરંતુ આમાં જે કંઈ વિશેષતા છે તે એ પ્રમાણે છે—કે જ્યારે ગૌતમ સ્વામીએ દેવીના ગયા પછી તેના પૂર્વ ભવ વિષેની વિગત પૂછી ત્યારે પ્રભુએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું—કે આના પૂર્વ ભવના નગરનું નામ નાગપુર હતું. તેમાં સહસ્રામ્રવન નામે ઉદ્યાન હતું. તે નગરમાં કમલ નામે ગાથાપતિ રહેતો હતો. તેની પત્નીનું નામ કમલાશ્રી હતું. એમને એક દિકરી હતી તેનું નામ કમલા હતું, તે યોગ્ય કાળલબ્ધિના અવ સરે પુરુષાદાનીય—પુરુષ શ્રેષ્ઠ—પાર્શ્વનાથ અર્હંત પ્રભુની પાસે પ્રવ્રજિત થઈ ગઈ. ત્યારપછી મૃત્યુ થયા બાદ તે કાલ નામના પિશાચ કુમારેન્દ્રની અગ્ર-

यनानि दाक्षिणात्यानां वानव्यन्तरेन्द्राणामग्रमहिषीणां भणितव्यानि । सर्वाश्चैताः पूर्वभवे नागपुरे नगरे संजाताः, सहस्राम्रवने उद्याने भगवत्पार्श्वप्रभोः समीपे प्रव्रजिताः । मातापिता दुहिता सदृशनामकः । आसां स्थितिरर्द्धपल्योपमम् ॥सू० १०॥

॥ इति धर्मकथानां पञ्चमो वर्गः समाप्तः ॥ ५ ॥

मूलम्—छट्टोवि वग्गो पंचमवग्गसरिसो, णवरं महाकाला-दीणं उत्तरिल्लाणं इंदाणं अग्गमहिसीओ पुव्वभवे सागेय-नयरे उत्तरकुरु उज्जाणे माया पिया धूया सरिसणामया सेसं तं चेव ॥ सू० ११ ॥

॥ छट्ठो वग्गो समत्तो ॥ ६ ॥

बाकी जो ३१, कमलप्रभा नामके अध्ययन हैं वे दक्षिण दिशा संबन्धी वानव्यंतरेन्द्रों की अग्रमहिषियों के हैं ऐसा जानना चाहिये। ये सब ही पूर्वभव में नागपुर नगर में उत्पन्न हुई-और सहस्राम्रवन नामके उद्यान में भगवान् पार्श्वनाथ के समीप प्रव्रजित हुई। इन अध्ययनों में माता पिता तथा पुत्री ये सब एक सरीखे नामवाली है। जैसे कमलप्रभा नामक अध्ययन में माता का नाम कमलप्रभा श्री, पिता का नाम कमलप्रभ एवं पुत्री का नाम कमलप्रभा है-इसी तरह से और अध्ययनों में भी जानना चाहिये। इन सब देवियों की स्थिति अर्धपल्य की है ॥सू०१०।

—ःपंचमवर्ग समाप्तः—

મહિષી (પટરાણી) બની. ત્યાં તેની સ્થિતિ અર્ધ પલ્યની છે. શેષ જે ૩૧ કમલપ્રભા નામના અધ્યયનો છે તે દક્ષિણ દિશા સબંધી વાનવ્યંતરેન્દ્રોની અગ્રમહીષીઓ (પટરાણીઓ) નાં સમજવા જોઈએ. આ બધી પૂર્વભવમાં નાગપુર નગરમાં ઉત્પન્ન થઈ અને સહસ્રામ્રવન નામના ઉદ્યાનમાં ભગવાન પાર્શ્વનાથની પાસે પ્રવ્રજિત થઇ ગઇ. આ બધાં અધ્યયનોમાં માતાપિતા તેમજ પુત્રી આ સર્વે એક સરખાં નામવાળાં છે. જેમકે કમલપ્રભા નામના અધ્યયનમાં માતાનું નામ કમલપ્રભાશ્રી, પિતાનું નામ કમલપ્રભ અને પુત્રીનું નામ કમલપ્રભા છે એ પ્રમાણે બીજા અધ્યયનો વિષે પણ જાણી લેવું જોઈએ. આ બધી દેવીઓની સ્થિતિ અર્ધ પલ્યની છે. ॥ સૂ૦ ૧૦ ॥

પાંચમો વર્ગ સમાપ્ત.

टीका—' छट्ठोवि ' इत्यादि षष्ठोऽपि वर्गः पञ्चमवर्गसदृशः । नवरम्-एतावान् विशेषः-अत्र महाकालादीनाम् उत्तरीयाणामिन्द्राणामग्रमहिष्यः । एताः सर्वाः पूर्वभवे साकेतनगरे उत्तरकुरूद्याने पार्श्वप्रभुसमीपे प्रव्रजिताः मातरः पितरो दुहितरः सदृशनामकाः । शेषं तदेव सर्वं वाच्यम् ॥ सू० ११ ॥

इति धर्मकथानां षष्ठो वर्गः समाप्तः ॥ ६ ॥

-:षष्ठवर्ग प्रारंभः-

' छट्ठो वि वग्गो पंचमवग्गसरिसो ' इत्यादि ।

टीकार्थः—(छट्ठो वि वग्गो पंचमवग्गसरिसो, णवरं महाकालादीणं उत्तरिल्लाणं इंदाणं अग्गमहिसीओ पुव्वभवे सागेयनयरे उत्तरकुरुउज्जाणे माया पिया धूया सरिसणामया सेसं तं चेव ११) छठा वर्ग भी पंचमवर्ग के जैसे ही है। परन्तु इसमें जो उसकी अपेक्षा विशेषता है -वह इस प्रकार है-इस अध्ययन में उत्तर दिशा के इन्द्र महाकाल आदिकों की अग्रमहिषियों का वर्णन है। ये सब अग्रमहिषियां पूर्वभव में साकेत नगर (अयोध्या) में उत्तर कुरु नामके उद्यान में पार्श्वप्रभु के समीप प्रव्रजित हुई हैं। माता पिता एवं पुत्रियां ये सब एक जैसा नामवाले हैं। बाकी का इनके विषय का समस्त कथन कालीदेवी के वर्णन जैसा जानना चाहिये।

-:षष्ठवर्ग समाप्तः-

છઠ્ઠો વર્ગ પ્રારંભઃ—

' छट्ठो वि वग्गो पंचम वग्गसरिसा ' इत्यादि—

(छट्ठो विवग्गो पंचमवग्गसरिसो, णवरं महाकालादीणं उत्तरिल्लाणं इंदाणं अग्गमहिसीओ पुव्वभवे सागेय नयरे उत्तरकुरु उज्जाणे मायापिया धूया सरिसणामया सेसं तं चेव ११)

છઠ્ઠો વર્ગ પણ પાંચમા વર્ગના જેવો જ છે. પરંતુ આમાં જે તેના કરતાં વિશેષતા છે, તે એ પ્રમાણે છે કે આ અધ્યયનમાં ઉત્તર દિશાના ઈન્દ્ર મહાકાલ વગેરેની અગ્રમહિષીઓ (પટરાણીઓ) નું વર્ણન છે. આ બધી અગ્રમહિષીઓ પૂર્વભવમાં સાકેત નગરમાં ઉત્તરકુરૂ નામના ઉદ્યાનમાં પાર્શ્વ પ્રભુની પાસે પ્રવ્રજિત થઈ છે. માતાપિતા અને પુત્રીઓ બધાં એક સરખાં નામવાળાં છે. એમના વિષેનું બાકીનું બધું કથન કાલી દેવીના વર્ણન જેવું જાણવું જોઈએ.

છઠ્ઠો વર્ગ સમાપ્ત.

अथ सप्तमो वर्गः प्रारभ्यते—'सत्तमस्से' त्यादि ।

मूलम्—सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—सूरप्पभा आयवा अच्चिमाली पभंकरा, पढमज्झयणस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं सूरप्पभा देवी सूरंसि विमाणंसि सूरप्पभंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए तहाणवरं पुव्वभवे अरक्खुरीए नयरीए सूरप्पभस्स गाहावइस्स सूरसिरीए भारियाए सुरप्पभा दारिया सूरस्स अग्गमहिसी ठिई अद्धपलिओवमं पंचहिं वाससएहिं अब्भहियं सेसं जहा कालीए, एवं सेसाओवि सव्वाओ अरक्खुरीए णयरीए ॥ सू० १२ ॥ ॥ सत्तमो वग्गो समत्तो ॥ ७ ॥

टीका—'सत्तमस्से' ति–सप्तमस्य वर्गस्य उत्क्षेपकः । सुधर्मस्वामीकथयति–एवं खलु हे जम्बूः ! यावत् चत्वारि अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा=तानि

—:सप्तमवर्ग प्रारंभः—

'सत्तमस्सवग्गस्स उक्खेवओ' इत्यादि ।

टीकार्थः—(सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ एवं खलु जंबू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता) हे भदंत ! सातवें वर्ग का उत्क्षेपक किस प्रकार है ? इस जंबूस्वामी के प्रश्न करने पर गौतमस्वामी उनसे कहते हैं–कि हे जंबू ! सुनो, तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है–श्रमण

સાતમો વર્ગ પ્રારંભ—

'सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ' इत्यादि—

ટીકાર્થ–(सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ एवं खलु जंबू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता) હે ભદન્ત ! સાતમા વર્ગનો ઉત્ક્ષેપક કેવી રીતે છે ?

જંબૂ સ્વામીના આ પ્રશ્નને સાંભળીને ગૌતમ સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જંબૂ ! સાંભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ સાતમા વર્ગના ચાર અધ્યયનો પ્રરૂપિત કર્યાં છે.

यथासूरप्रभा १, आतपा २, अर्चिर्मालिः ३, प्रभङ्करा ४। प्रथमाध्ययनस्योत्क्षेपकः। सुधर्मस्वामीप्राह–एवं खलु हे जम्बूः! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे समवसरणम्=भगवद्वर्धमानस्वामिसमागमनम् यावत् परिषत् पर्युपास्ते। तस्मिन् काले तस्मिन् समये सूरप्रभादेवी, सूरविमाने, सूरप्रभे सिंहासने, शेषं

भगवान महावीर ने इस सातवें वर्ग के चार अध्ययन प्ररूपित किये हैं –(तं जहा–सूरप्पभा, आयवा, अच्चिमाली, पभंकरा, पढमज्झयणस्स, उक्खेवओ एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं सूरप्पभा देवी, सूरंसि विमाणंसि सूरप्पभंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए तहा) वे चार अध्ययन इस प्रकार है सूरप्रभा १, आतपा २, अर्चिमाली ३, प्रभङ्करा ४, इनमें प्रथम अध्ययन का उत्क्षेपक हे जंबू! इस प्रकार है– उस काल और उस समय में राजगृह नाम के नगर में भगवान् वर्धमानस्वामी का आगमन हुआ था–प्रभु का आगमन सुनकर वहां की परिषद् उनको वंदना करने के लिये उनके समीप गई–प्रभु ने सबको धर्म का उपदेश दिया। उपदेश सुनकर सबने प्रभु की पर्युपासना की। उस काल और उस समय में सूरप्रभा नाम की एक देवी जो सूरविमान में रहती थी–और सूरप्रभ सिंहासन पर बैठती थी प्रभु को वंदना करने के लिये आई। इसके बाद का इसका वृत्तान्त जैसा पहिले कालीदेवी

(तं जहा–सूरप्पभा, आयवा, अच्चिमाली, पभंकरा, पढमज्झयणस्स, उक्खेवओ एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं सूरप्पभादेवी, सूरंसि विमाणंसि सूरप्पभंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए तहा)

તે ચાર અધ્યયનો આ પ્રમાણે છેઃ–સૂરપ્રભા ૧, આતપા ૨, અર્ચિમાલી ૩, પ્રભંકરા ૪, હે જંબૂ! આ બધામાં પહેલા અધ્યયનનો ઉત્ક્ષેપક આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામના નગરમાં ભગવાન વર્ધમાન સ્વામીનું આગમન થયુ પ્રભુનું આગમન સાંભળીને ત્યાંની પરિષદ તેમને વંદના કરવા માટે તેમની પાસે ગઈ. પ્રભુએ સૌને ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો. ઉપદેશ સાંભળીને સૌએ પ્રભુની પર્યુપાસના કરી. તે કાળે અને તે સમયે સૂરપ્રભા નામની એક દેવી–જે સૂર વિમાનમાં રહેતી હતી અને સૂરપ્રભ સિંહાસન ઉપર બેસતી હતી–પ્રભુની વંદના કરવા માટે આવી. એના પછીનું

यथा काल्याः=काली देव्या वर्णनं तथा विज्ञेयम् , नवरम्=अयं विशेषः=पूर्वभवे अरक्षुर्यां नगर्यां सूरप्रभस्य गाथापतेः, सूरश्रियो भार्यायाः सूरप्रभा दारिका, सूरस्य अग्रमहिषी स्थितिरर्द्धपल्योपमं पञ्चभिर्वर्षशतैरभ्यधिकम् । शेषं यथा काल्याः । एवं शेषा अपि=आतपादिकाः देव्यो वाच्याः । सर्वाः पूर्वभवे अरक्षुर्यां नगर्यामासन् ॥ सू० १२ ॥

॥ इति धर्मकथानां सप्तमो वर्गः समाप्तः ॥ ७ ॥

का वृत्तान्त लिखा जा चुका है–वैसा ही हैं। उसमें कुछ अन्तर नहीं है (णवरं) परन्तु जिन बातों में अन्तर है–वह इस प्रकार है–(पुव्वभवे) यह पूर्वभव में (अरक्खुरीए नयरीए सूरप्पभस्स गाहावइस्स सूरसिरीए भारियाए सूरप्पभा दारिया सूरस्स अग्गमहिसी ठिई अद्धपलिओवमं पंचहिं वाससएहिं अब्भहियं सेसं जहा कालीए एवं सेसाओ वि सव्वाओ अरक्खुरीए णयरीए १२) अरक्षुर नामकी नगरी में:निवास करनेवाले सूरप्रभा गाथापति की सूर श्री भार्या की कुक्षि से अवतरी थी। इसका नाम सूरप्रभा था। यह सूर की अग्रमहिषी हुई। इसकी वहां पांचसौ वर्ष से अधिक अर्धपल्य की स्थिति है। और इसका इस अवस्था का समस्त वर्णन काली समान ही है। इसी तरह का आतपाआदिक ३ देवियों का भी जीवन वृत्तान्त है। ये ३ तीनों ही देवियां अपने २पूर्व-भव में अरक्षुर नगरी में जन्मी थीं ॥ सू० १२ ॥

–:सप्तमवर्ग समाप्तः–

આનું વર્ણન કાલી દેવીના વર્ણન જેવુ જ સમજી લેવુ જોઇએ, તેમાં કોઇ પણ જાતનો તફાવત નથી. (णवरं) પરંતુ જે વાતમાં તફાવત છે, તે આ પ્રમાણે છે. (पुव्वभवे) આ પૂર્વભવમાં

(अरक्खुरीए नयरीए सूरप्पभस्स गाहावइस्स सूरसिरीए भारियाए सूरप्पभा दारिया सूरस्स अग्गमहिसी ठिई अद्धपलिओवमं पंचहिं वाससएहिं अब्भहियं सेसं जहा कालीए, एवं सेसाओ वि सव्वाओ अरक्खुरीए णयरीए १२)

અરક્ષુરી નામની નગરીમાં રહેનારી સૂરપ્રભા ગાથાપતિની સૂરશ્રીભાર્યાના ગર્ભથી જન્મ પામી હતી, તેનું નામ સૂરજપ્રભા હતું તે સૂરની અગ્રમહિષી (પટરાણી) થઇ. તેની ત્યાં પાંચસો વર્ષ કરતાં વધારે અર્ધપલ્યની સ્થિતિ છે. તેનું આ અવસ્થા વિષેનું બધું વર્ણન કાલીના જેવું જ છે. એ પ્રમાણે જ આતપા વગેરે ૩ દેવીઓનું પણ જીવનવૃત્તાંત છે. આ ત્રણે દેવીઓ પોત-પોતાના પૂર્વભવમાં અરક્ષુર નગરમાં જન્મ પામી હતી. ॥સૂ૦૧૨॥

સાતમો વર્ગ સમાપ્ત.

अथाष्टमो वर्गः प्रारभ्यते-' अट्ठमस्से ' त्यादि ।

मूलम्-अट्ठमस्स उक्खेवओ, एवं खलु जम्बू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा-चंदप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभंकरा, पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं चंदप्पभा देवी चंदप्पभंसि विमाणंसि चंदप्पभंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए, णवरं पुव्वभवे महुराए णयरीए भंडीरवडेंसए उज्जाणे चंदप्पभे गाहावई चंदसिरी भारिया चंदप्पभा दारिया चंदस्स अग्गमहिसी ठिई अद्धपलिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं सेसं जहा कालीए, एवं सेसाओवि महुराए णयरीए मायापियरोवि धूयासरिसणामा ॥ सू० १३ ॥ अट्ठमो वग्गो समत्तो ॥ ८ ॥

टीका—' अट्ठमस्से ति-अष्टमस्य उत्क्षेपकः । सुधर्मास्वामी प्राह-एवं खलु हे जम्बूः ! यावत् चत्वारि अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा=तानि यथा-चन्द्रप्रभा १, ज्योत्स्नाभा २, अर्चिर्मालिः ३, प्रभङ्करा ४ । प्रथमस्याध्ययनस्योत्क्षेपकः । एवं

-:अष्टमवर्ग प्रारम्भ-:

' अट्ठमस्स उक्खेवओ ' इत्यादि ।

टीकार्थ—:(अट्ठमस्स उक्खेवओ-एवं खलु जंबू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता तं-जहा-चंदप्पभा,दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभंकरा,

---

આઠમો વર્ગ આરંભ

' अट्ठमस्स उक्खेवओ , इत्यादि—

(अट्ठमस्स उक्खेवओ-एवं खलु जंबू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता-तं जहा-चंदप्पभा, दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभंकरा, पढमस्स अज्झयणस्स उक्खे-

खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे श्रीमहावीरस्वामिनः समवसरणं, यावत्-परिषद् पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये चन्द्रप्रभा देवी चन्द्रप्रभे विमाने चन्द्रप्रभे सिंहासने शेषं यथा काल्याः=कालीदेव्या वर्णनं तद्वद्

पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ-एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं-जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं चंदप्पभादेवी चंदप्पभंसि विमाणंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए, णवरं पुव्वभवे महुराए णयरीए भंडीरवडेंसए उज्जाणे चंदप्पभे गाहावई चंदसिरी भारिया चंदप्पभा दारिया) हे भदंत! आठवें वर्ग का उत्क्षेपक कैसा है? इस प्रकार जंबूस्वामी के पूछने पर सुधर्मास्वामी ने उनसे कहा-हे जंबू! सुनो तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है-श्रमण भगवान् महावीर ने इस वर्ग के चार अध्ययन प्रज्ञप्त किये है -वे इस प्रकार से हैं-चंद्रप्रभा १, ज्योत्स्नाभा २, अर्चिर्माली ३, प्रभंकरा ४,। इनमे हे जंबू! प्रथम चन्द्रप्रभा अध्ययन का उत्क्षेपक इस प्रकार से है-उस काल में और उस समय में राजगृह नामके नगर में श्री महावीर स्वामी का आगमन हुआ था-। उनसे धर्म का उपदेश प्राप्त करने के लिये वहां की समस्त धार्मिक जनता उनके पास आई थी प्रभु ने सब के लिये धर्म का उपदेश सुनाया-सुनाकर सबों ने उनकी यावत् पर्युपासना की। उस काल और उस समय में चन्द्रप्रभा देवी जो कि

वओ-एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं-जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं चंदप्पभादेवी चंदप्पभंसि विमाणंसि चंदप्पभंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए, णवरं पुव्वभवे महुराए णयरीए भंडीरवडंसए उज्जाणे चंदप्पभे गाहावई चंदसिरी भारिया चंदप्पभा दारिया)

હે ભદન્ત! આઠમા વર્ગનો ઉત્ક્ષેપક કેવો છે?

આ પ્રમાણે જંબૂ સ્વામીના પ્રશ્ન કર્યા બાદ સુધર્મા સ્વામીએ તેમને કહ્યું કે હે જંબૂ! સાંભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ વર્ગનાં ચાર અધ્યયનો પ્રજ્ઞપ્ત કર્યાં છે, તે આ પ્રમાણે છે-ચંદ્રપ્રભા ૧, જ્યોત્સ્નાભા ૨, અર્ચિમાલી ૩, પ્રભંકરા ૪ હે જંબૂ! આ ચારેમાં પહેલા ચન્દ્રપ્રભા નામે અધ્યયનનો ઉત્ક્ષેપક આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને સમયે રાજગૃહ નામના નગરમાં શ્રી મહાવીર સ્વામીનું આગમન થયું તેમની પાસેથી ધર્મકથા સાંભળવા માટે ત્યાંની બધી ધાર્મિક જનતા ત્યાં આવી. પ્રભુએ ધર્મનો ઉપદેશ સંભળાવ્યો સાંભળીને બધાએ તેમની યાવત્ પર્યુપાસના કરી તે કાળે અને તે સમયે ચંદ્રપ્રભા દેવી-કે જે ચંદ્રપ્રભ

विशेषम् , नवरं=विशेषस्त्वयम्-पूर्वभवे मथुरायां नगर्यां भण्डीरावतंसकमुद्यानम् , चन्द्रप्रभो गाथापतिः, चन्द्रश्रीर्भार्या, चन्द्रप्रभा दारिका, चन्द्रस्याग्रमहिषी, स्थितिरर्द्धपल्योपमं पञ्चाशद्भिर्वर्षसहस्रैरभ्यधिकम् । शेषं यथा काल्याः । एवं

चंद्रप्रभ विमान में रहती थी और चंद्रप्रभ सिंहासन पर बैठती थी- श्रमण भगवान् महावीर को वंदना करने एवं उनसे धर्म का उपदेश सुनने के लिये उनके निकट आई-। इसके बाद का इसका वृत्तान्त कालीदेवी के वृत्तान्त जैसा ही है। उसमें कोई अन्तर नही है। जहां अन्तर है-उसका खुलासा इस प्रकार है-पूर्वभव में यह मथुरा नगरी में जन्मी थी। वहां भंडीरावतंसक उद्यान था। उस नगरी में चंद्रप्रभ नाम का गाथापति रहता था। उसकी भार्या थी जिसका नाम चंद्रश्री था। उनके यहां यह चंद्रप्रभा नामकी पुत्री थी। यह चन्द्र की अग्रम-हिषी बनी। (ठिई अद्धपलिओवमं, पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं सेसं जहा कालीए एवं सेसाओवि चंदस्स अग्गमहिसी) पचास हजार वर्ष से अधिक इसकी स्थिति आधेपल्य की है। इसके बाद का इसका जीवन वृत्तान्त काली दारिका के जीवन वृत्तान्त जैसा ही जानना चाहिये। इसी तरह ज्योत्स्नाभा आदिशेष ३ देवियों के संबन्ध को लेकर जो अध्ययन कहे गये हैं-वे जानना चाहिये ये सब ज्योत्स्नाभा

વિમાનમાં રહેતી હતી અને ચંદ્રપ્રભ વિમાનમાં બેસતી હતી-શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની વંદના કરવા માટે અને તેમની પાસેથી ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળવા માટે તેમની પાસે આવી. તેના પછીનું તેનું વૃત્તાંત કાલી દેવીના વૃત્તાંત જેવું જ છે તેમાં કોઇ પણ જાતનો તફાવત નથી. જ્યાં તફાવત છે-તેનું સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે કે પૂર્વભવમાં તે મથુરા નગરીમાં જન્મી હતી, ત્યાં ભંડીરાવતંસક ઉદ્યાન હતું. તે નગરીમાં ચંદ્રપ્રભનામે ગાથાપતિ રહેતો હતો. ચંદ્રશ્રી તેની ભાર્યાનું નામ હતું. તેને ચન્દ્રપ્રભા નામે પુત્રી હતી. આ ચન્દ્રની અગ્રમહિષી (પટરાણી) થઈ.

(ठिई अद्धपलिओवमं, पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं सेसं जहा कालीए एवं सेसाओवि चंदस्स अग्गमहिसी)

પચાસ હજાર વર્ષ કરતાં આની સ્થિતિ અડધા પલ્યની છે. એના પછીનું આનું જીવન વિષેનું વર્ણન કાલી દારિકાના જીવન જેવું જ સમજી લેવું જોઇએ. આ પ્રમાણે જ્યોત્સ્નાભા વગેરે બાકી ત્રણ દેવીઓના સંબંધને લઇને જે અધ્યયનો કહેવામાં આવ્યાં છે તેમને પણ સમજી લેવાં જોઇએ.

शेषाः=ज्योत्स्नाभादि देव्योऽपि विज्ञेयाः । सर्वाः पूर्वभवे मथुरायां नगर्यां जाताः,पार्श्वप्रभुसमीपे च प्रव्रजिता । मातापितरोऽपि दुहितृसदृशनामानः ॥सू० १३॥

इति धर्मकथानामाष्टमो वर्गः समाप्तः ॥ ८ ॥

अथ नवमो वर्गः प्रारभ्यते-' णवमस्स ' इत्यादि ।

मूलम्-णवमस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! जाव अट्ठ-अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा-पउमा सिवा सई अंजू रोहिणी णवमिया, अचला अच्छरा, पढमज्झयणस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं पउमावई देवी सोहम्मे कप्पे पउमवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए पउमंसि सीहासणंसि जहा कालीए एवं अट्ठवि अज्झयणा कालीगमएणं नायव्वा, णवरं सावत्थीए दो जणीओ हत्थिणा-उरे दोजणीओ कंपिल्लपुरे दोजणीओ सागेयनयरे दोजणीओ पउमे पियरो विजया मायराओ सव्वाओऽवि पासस्स अंतिए पव्वइयाओ सक्कस्स अग्गमहिसीओ ठिई सत्त पलिओवमाइं महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति जाव अंतं काहिंति ॥ सू०१४ ॥

॥ णवमो वग्गो समत्तो ॥ ९ ॥

आदि देवियां पूर्वभव में (महुराए णयरीए) मथुरा नगरी में उत्पन्न हुई और पार्श्वनाथ प्रभु के समीप दीक्षित हुई। (माया पियरो वि० धूया सरिसणामा) इन पुत्रियों का नाम जैसा ही नाम इनके माता पिता का है।

-: अष्टमवर्ग समाप्त :-

આ બધી જ્યોત્સ્નાભા વગેરે દેવીઓ પૂર્વભવમાં (महुराए णयरीए) મથુરા નગરીમાં ઉત્પન્ન થઈ અને પાર્શ્વનાથ પ્રભુની પાસેથી દીક્ષિત થઈ. (मायापियरो वि० धूया सरिसणामा) આ પુત્રીઓનાં નામો જેવાં જ તેમનાં માતાપિતાઓનાં નામો પણ છે.

આઠમો વર્ગ સમાપ્ત.

टीका—'णवमस्से' ति-नवमस्य वर्गस्योत्क्षेपकः । एवं खलु हे जम्बूः ! यावत्-अष्ट-अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-पद्मा १, शिवा २, शची ३ अञ्जूः ४, रोहिणी ५, नवमिका ६, अचला ७, अप्सराः ८ । एष प्रथमाध्ययनस्योत्क्षे-

---

-:नवमवर्ग प्रारंभः-

णवमस्स उक्खेवओ इत्यादि ।

टीकार्थः—(णवमस्स उक्खेवओ-एवं खलु जंबू ! जाव अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता-तं जहा-पउमा, सिवा, सई, अंजू, रोहणी, णवमिया, अचला, अच्छरा,-पढमज्झयणस्स उक्खेवओ-एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं पउमावई, देवी सोहम्मे कप्पे पउमवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए पउमंसि-सीहासणंसि जहा कालीए एवं अट्ठवि अज्झयणा कालीगमएणं नायव्वा) हे भदंत ! नौवें वर्ग का उत्क्षेपक किस प्रकार से है ? इस प्रकार जंबू स्वामी के प्रश्न करने पर सुधर्मा स्वामी उनसे कहते हैं कि हे जंबू ! सुनो-तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस तरह से है-श्रमण भगवान् महावीर ने इस वर्ग के यावत् आठ अध्ययन प्ररूपित किये-वे इस प्रकार से हैं-पद्मा १, शिवा, २, शची ३, अंजू ४, रोहिणी ५, नवमिका ६, अचला ७, और अप्सरा । इनमें हे जंबू ! प्रथम

નવમો વર્ગ પ્રારંભ.

(णवमस्स उक्खेवओ-एवं खलु जंबू ! जाव अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता-तं जहा पउमा, सिवा, सई, अंजू, रोहिणी, णवमिया, अचला, अच्छरा, पढमज्झयणस्स उक्खेवओ-एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासेइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं पउमावई देवी सोहम्मे कप्पे पउमवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए पउमंसि-सीहासणंसि जहा कालिए एवं अट्ठ वि अज्झयणा काली गमएणं नायव्वा)

હે ભદન્ત ! નવમા વર્ગનો ઉત્ક્ષેપક કેવી રીતે છે ?

આ પ્રમાણે જંબૂ સ્વામીના પ્રશ્ન કર્યા બાદ સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જંબૂ ! સાંભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે—શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ વર્ગનાં યાવત્ આઠ અધ્યયનો પ્રરૂપિત કર્યાં છે, તે આ પ્રમાણે છે:—પદ્મા ૧, શિવા ૨, શચી ૩, અંજૂ ૪, રોહિણી ૫, નવમિકા ૬, અચલા ૭ અને અપ્સરા ૮.

पकः। एवं खलु हे जम्बूः! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे समवसरणम्=भगवतो महावीरस्य समागमनमभूत्, यावत्-परिषत् पर्युपास्ते। तस्मिन् काले तस्मिन् समये पद्मावती देवी, सौधर्मे कल्पे पद्मावतंसके विमाने सभायां सुधर्मायां पद्मे सिंहासने, यथा काल्याः। एवम् अष्टापि अध्ययनानि कालीगमकेन=कालीदेवीसदृशपाठेन ज्ञातव्यानि, नवरं=विशेषस्त्वयम्-पूर्वभवे श्रावस्त्यां नगर्यां 'दोज-

---

अध्ययन का उत्क्षेपक इस प्रकार से है-उस काल में और उस समय में राजगृह नगर में भगवान् महावीर का आगमन हुआ था। लोगों को जब इनके शुभागमन की खबर पड़ी तो वे सब के सब उनको वंदना करने के लिये और उनसे धर्मोपदेश का लाभ लेने के लिये उनके समीप पहुंचे। प्रभु ने आये हुए परिषद् को श्रुतचारित्ररूप धर्म का उपदेश दिया। उपदेश सुनने के बाद उसने प्रभु की यावत् पर्युपासना की। उस काल में और उस समय में पद्मावती देवी जो कि सौधर्मकल्प में पद्मावतंसक विमान में, सुधर्मा सभामें रहती थी और जिसके सिंहासन का नाम पद्म था श्रमण भगवान् महावीर को वंदना करने और उनसे धर्म का उपदेश सुनने के लिये वहां आई। इसके बाद का सम्बन्ध कालीदेवी का जैसा वर्णन पहिले किया गया है वैसा ही जानना चाहिये। इसी तरह से अवशिष्ट सात अध्ययन भी जानना चाहिये। इन आठों ही अध्ययनों का पाठ जैसा कालीदेवी का पाठ है वैसा ही है। कोई अन्तर नहीं हैं (णवरं) परन्तु जहां अन्तर है वह-

---

હે જંબૂ! આમાં પહેલા અધ્યયનનો ઉત્ક્ષેપક આ પ્રમાણે છે-તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નગરમા ભગવાન મહાવીરનું આગમન થયું. લોકોને તેમના શુભાગમનની જ્યારે જાણ થઈ ત્યારે તેઓ સર્વે તેમને વંદન કરવા માટે અને તેમની પાસેથી ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળવા માટે તેમની પાસે ગયા. પ્રભુએ આવેલા સર્વ લોકોને શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મનો ઉપદેશ સંભળાવ્યો. ઉપદેશ સાંભળીને લોકોએ પ્રભુની યાવત્ પર્યુપાસના કરી. તે કાળે અને તે સમયે પદ્માવતી દેવી-કે જે સૌધર્મ કલ્પમાં, પદ્માવતંસક વિમાનમાં સુધર્મા સભામાં રહેતી હતી અને જેના સિંહાસનનું નામ પદ્મ હતું-શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને વંદન કરવા અને તેમની પાસેથી ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળવા ત્યાં આવી. એના પછીનું વર્ણન પહેલા કરવામાં આવેલા કાલી દેવીના વર્ણનની જેમ સમજી લેવું જોઈએ આ પ્રમાણે જ બાકીનાં સાત અધ્યયનો વિષે પણ જાણી લેવું જોઈએ એ આઠે આઠ અધ્યયનોના પાઠ કાલી દેવીના જેવા જ

णीओ ' द्वे जन्यौ=पद्मा-शिवाभिधे द्वे दारिके संजाते । एवं हस्तिनापुरे द्वे जन्यौ श्रुतिः-अञ्जूः चेति, काम्पिल्यपुरे द्वे जन्यौ रोहिणीनवमिकानाम्न्यौ, साकेतनगरे द्वे जन्यौ अचला-अप्सरा इति संजाते । सर्वेषाम् ' पउमे ' पद्मः पद्मेति नामानः पितरः, विजया=विजयानाम्नो मातर आसन् । सर्वा अपि पार्श्वस्य=पार्श्वप्रभोरन्तिके प्रव्रजिताः, शक्रस्याग्रमहिष्यो जाताः । तासां स्थितिः सप्तपल्योपमानि । एताः सर्वा महाविदेहे वर्षे सेत्स्यन्ति यावत्सर्वदुःखानामन्तं करिष्यन्ति ॥सू० १४॥

॥ इति धर्मकथानां नवमो वर्गः समाप्तः ॥ ९ ॥

इस प्रकार से है-(सावत्थीए दोजणीओ) पद्मा और शिवा ये दो कन्याएँ पूर्व भवमें श्रावस्ती नगरी में उत्पन्न हुईं (हत्थिणाउरे दोजणीओ, कम्पिल्लपुरे दो जणीओ सागेयनयरे दो जणीओ पउमे पियरो विजयामायराओ सव्वओवि पासस्स अंतिए पव्वइयाओ सक्कस्स अग्गमहिसीओ ठिई सत्तपलिओवमाइं महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति जाव अंतं काहिंति '१४') श्रुति और अंजू ये दो हस्तिनापुरमें, रोहिणी, नवमिका ये दो काम्पिल्यपुरमें, अचला एवं अप्सरा ये दो साकेत नगर में, उत्पन्न हुईं । इन सब कन्याओंके पिता का नाम पद्म और माता का नाम विजया था । ये सब कन्याएँ पार्श्वनाथ प्रभु के पास प्रव्रजित हुईं हैं । शक्र की अग्रमहिषियां बनी हैं । इन की स्थिति सातपल्य थी । ये

છે તેમ સમજી લેવુ જોઈએ. તેમાં કોઈ પણ જાતનો તફાવત નથી. (णवरं) પરંતુ જ્યાં તફાવત છે-તે આ પ્રમાણે છે (सावत्थीए दोजणीओ) પદ્માવતી અને શિવા આ બંને કન્યાઓ પૂર્વભવમાં શ્રાવસ્તી નગરીમાં ઉત્પન્ન થઈ.

(हत्थिणाउरे दो जणीओ, कंपिल्लपुरे दो जणीओ सागेय नयरे दो जणीओ पउमे पियरो विजया मायराओ सव्वाओवि पासस्स अंतिए पव्वइयाओ सक्कस्स अग्गमहिसीओ ठिई, सत्त पलिओवमाइं महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति जाव अंतं काहिंति " १४ " ।)

શ્રુતિ અને અંજૂ આ બને હસ્તિનાપુરમાં, રોહિણી અને નવમિકા આ બંને કાંપિલ્યપુરમાં, અચલા અને અપ્સરા આ બંને સાકેત નગરમાં ઉત્પન્ન થઈ. આ બધી કન્યાઓના પિતાનું નામ પદ્મ અને માતાનું નામ વિજયા હતું. આ બધી કન્યાઓ પાર્શ્વનાથ પ્રભુની પાસે પ્રવજિત થઈ છે અને શક્રની અગ્રમહિષીઓ (પટરાણીઓ) બની છે. એમની સ્થિતિ સાત પલ્ય જેટલી

अथ दशमो वर्ग आरभ्यते-'दसमस्स' इत्यादि।

मूलम्-दसमस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू! जाव अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा-कण्हा य कण्हराई रामा तहरामरक्खिया वसू य। वसुगुत्ता वसुमित्ता वसुंधरा चेव ईसाणे॥१॥ पढमज्झयणस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं कण्हादेवी ईसाणे कप्पे कण्हवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए कण्हंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए एवं अट्ठवि अज्झयणा कालीगमएणं णेयव्वा, णवरं पुव्वभवे वाणारसीए नयरीए दो जणीओ रायगिहे नयरे दो जणीओ सावत्थीए नयरीए दो जणीओ कोसंबीए नयरीए दो जणीओ, रामे पिया धम्मा माया सव्वओऽवि पासस्स अरहओ अंतिए पव्वइयाओ पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए ईसाणस्स अग्गमहिसीओ ठिई णव पलिओवमाइं महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति बुज्झिहिंति मुच्चिहिंति सव्वदुक्खाणं अंतं काहिंति। एवं खलु जंबू! णिक्खेवओ दसमवग्गस्स॥ सू० १५॥

॥ दसमो वग्गो समत्तो॥ १०॥

टीका—'दसमस्से'ति दशमस्य उत्क्षेपकः। एवं खलु हे जम्बूः! यावत् अष्ट-अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा-तानि गाथया प्रदर्श्यन्ते 'कण्हे' इत्यादि।

सब महाविदेह क्षेत्र से सिद्ध अवस्था प्राप्त करेंगी-यावत् सर्व दुःखों का अन्त करेंगी॥ सू०१४॥

॥ नवावर्ग समाप्त॥

છે આ બધી મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાંથી સિદ્ધ અવસ્થા પ્રાપ્ત કરશે યાવત સર્વ દુઃખોનો અંત કરશે. ॥ સૂ૦૧૪॥

નવમો વર્ગ સમાપ્ત.

"कृष्णा १ च कृष्णराजिः २, रामा ३ तथा रामरक्षिका ४ वसूश्च ५ वसुगुप्ता ६, वसुमित्रा ७, वसुन्धरा ८ चैव ईशाने ॥ १ ॥"

तत्तन्नामभिरध्ययनानि प्रसिद्धानि । तत्र प्रथमाध्ययनस्योत्क्षेपकः । एवं खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे नगरे भगवतः श्रीमहावीर-

---

॥ दशमवर्ग प्रारंभ ॥

'दसमस्स उक्खेवओ' इत्यादि० "१५"

टीकार्थ—(दसमस्स उक्खेवओ-एवं खलु जंबू ! जाव अट्ठअज्झयणा पण्णत्ता-तं जहा-कण्हाय कण्हराई, रामा, तह रामरक्खिया वसू य। वसुगुत्ता वसुमित्ता वसुंधरा चेव ईसाणे "१"-पढमज्झयणस्स उक्खेवओ-एवं खलु जंबू !) हे भदन्त श्रमण भगवान महावीर ने दशवें वर्गका उत्क्षेपक किस प्रकार से कहा है? इस तरह का जंबू! स्वामी के प्रश्न का समाधान करने के निमित्त सुधर्मा स्वामी उनसे कहते हैं कि हे जंबू! सुनो तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है-श्रमण भगवान् महावीरने इस दशवें वर्ग के आठ अध्ययन प्रज्ञप्त किये हैं-वे ये हैं-कृष्णा १, कृष्णराजि २, रामा ३, रामरक्षिका ४, वसू ५, वसुगुप्ता ६, वसुमित्रा ७, और वसुंधरा। इन २ नामों द्वारा इन २ नाम वाले अध्ययन प्रसिद्ध हुए हैं। इनमें प्रथम अध्ययन का हे जंबू! उत्क्षेपक

દશમો વર્ગ પ્રારંભ—

'दसमस्स उक्खेवओ' इत्यादि—

(दसमस्स उक्खेवओ-एवं खलु जंबू ! जाव अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता-तं जहा-कण्हा य कण्हराई, रामा तह रामरक्खिया वसू य । वसुगुत्ता वसुमित्ता वसुंधरा चेव ईसाणे ॥ १ ॥ पढमज्झयणस्स उक्खेवओ-एवं खलु जंबू !)

હે ભદન્ત ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે દશમા વર્ગનો ઉત્ક્ષેપક કેવી રીતે કહ્યો છે?

આ પ્રમાણેના જંબૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાંભળીને તેના સમાધાન માટે શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જંબૂ! સાંભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે. શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ દશમા વર્ગના આઠ અધ્યયનો પ્રજ્ઞપ્ત કર્યાં છે, તે આ પ્રમાણે છે-કૃષ્ણા ૧, કૃષ્ણરાજિ ૨, રામા ૩, રામરક્ષિકા ૪, વસૂ ૫, વસુગુપ્તા ૬, વસુમિત્રા ૭ અને વસુંધરા ૮.

આ ઉક્ત જુદા જુદા નામો વડે એજ નામનાં જુદાં જુદાં અધ્યયનો પ્રસિદ્ધ થયાં છે. હે જંબૂ! આ બધામાંથી પહેલા અધ્યયનનો ઉત્ક્ષેપક

स्वामिनः समवसरणं यावत् परिषत् पर्युपास्ते, तस्मिन् काले तस्मिन् समये कृष्णा-देवीईशाने कल्पे कृष्णावतंसके विमाने सभायां सुधर्मायां, कृष्ण सिंहासने, शेषं

इस तरह से है-(तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ) उस काल एवं उस समयमें राजगृह नगरमें भगवान् महावीर का शुभागमन हुआ था। परिषद् उन को वंदना आदि करने के लिये उनके समीप पहुँची। प्रभुने सबके लिये धर्म का उपदेश सुनाया। लोगोंने उपदेश सुनकर प्रभु की पर्युपासना की (तेणं कालेणं तेणं समएणं कण्हा देवी ईसाणे कप्पे कण्हवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए कण्हंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालिए एवं अट्ठिअज्झयणा कालीगमएणं णेयव्वा, णवरं पुव्वभवे वाणारसीए नयरीए दो जणीओ रायगिहे नयरे दो जणीओ, सावत्थीए नयरीए दो जणीओ, कोसंबीए नयरीए दो जणीओ रामे पिया धम्मा माया सव्वाओऽवि पासस्स अरहओ अंतिए पव्वइयाओ पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए ईसाणस्स अग्गमहिसीओ ठिई, णवपलिओवमाइ, महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति, बुज्झिहिंति, मुच्चिहिंति, सव्वदुक्खाणं, अंतंकाहिंति, एवं खलु जंबू! णिक्खेवओ दसमवग्गस्स) उसी काल और उसी समय वहां कृष्णादेवी जो ईशान कल्प में कृष्णावतंसक विमान में रहती थीं-और

આ પ્રમાણે છે (तेण कालेणं तेण समएण रायगिहे समोसरण, जाव परिसा पज्जुवासइ) તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નગરમાં ભગવાન મહાવીરનું શુભાગમન થયું. તેમને વંદન કરવા માટે પરિષદ તેમની પાસે પહોંચી. સૌને પ્રભુએ ધર્મોપદેશ સંભળાવ્યો. ધર્મોપદેશ સાંભળીને પરિષદે પ્રભુની પર્યુપાસના કરી.

(तेणं कालेणं तेणं समएणं कण्हा देवी ईसाणे कप्पे कण्हवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए कण्हंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए एव अट्ठि अज्झयणा कालीगमएणं णेयव्वा, णवरं पुव्वभवे वाणारसीए नयरीए दो जणीओ रायगिहे नयरे दो जणीओ, सावत्थीए नयरीए दो जणीओ, कोसंबीए नयरीए दो जणीओ रामे पिया धम्मा माया सव्वाओऽवि पासस्स अरहओ अंतिए पव्वइयाओ पुप्फ चूलाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए ईसाणस्स अग्गमहिसीओ ठिई, णवपलि ओवमाई, महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति बुज्झिहिंति, मुच्चिहिंति, सव्वदुक्खाणं, अंतं काहिंति एवं खलु जंबू! णिक्खेवओ दसमवग्गस्स)

તે કાળે અને તે સમયે ત્યાં કૃષ્ણા દેવી-કે જે ઇશાન-કલ્પમાં કૃષ્ણાવતંસક વિમાનમાં રહેતી હતી અને જેની સભાનું નામ સુધર્મા તેમજ સિંહાસનનું નામ કૃષ્ણ હતું-આવી એના પછીના પાઠ કાલી દેવીના

यथा काल्याः। एवमष्टा कृष्णराजिप्रभृतीनि अध्ययनानि कालीगमकेन=कालीदेवीसदृशपाठेन ज्ञातव्यानि नवरं=विशेषः यत्-पूर्वभवे वाणारस्यां नगर्यां द्वे=कृष्ण-कृष्णराजिनाम्न्यौ जन्यौ=दारिके संजाते। एवं राजगृहे नगरे द्वे=वसू-वसुगुप्ता नाम्न्यौ जन्यौ, कौशाम्ब्यां नगर्यां द्वे=वसुमित्रा-वसुन्धरा नाम्न्यौ जन्यौ=दारिके समुत्पन्ने। सर्वासां रामः=रामाभिधः पिता, धर्मा=धर्माऽभिधा माता। सर्वा अपि पार्श्वस्यार्हतोऽन्तिके प्रव्रजिताः, पुष्पचूलाया आर्यायाः शिष्यात्वेन पार्श्वप्रभुणा स्वयं प्रदत्ताः। ईशानस्य=ईशानेन्द्रस्य अग्रमहिष्यो जाताः। तत्र तासां स्थितिर्नव पल्योपमानि वर्त्तते। ततश्च्युत्वा महाविदेहे वर्षे समुत्पद्य सेत्स्यन्ति,

---

जिसकी सभा का नाम सुधर्म तथा सिंहासन का नाम कृष्ण था आई। इस के आगे का पाठ कालीदेवी के वर्णन में जैसा पाठ कहा गया है वैसा ही है। इसी तरह से कृष्णराजि प्रभृति अध्ययन भी-कालीदेवी वर्णन में पठित पाठ के सदृश ही जानना चाहिये। कालीदेवी के पाठ में और इन आठ अध्ययनोक्त पाठों में जो अन्तर है वह इस प्रकार से है-पूर्वभव में वाणारसी नगरीमें कृष्णा और कृष्णराजि ये दो जनी-उत्पन्न हुईं, राजगृहनगर में रामा और रामरक्षिका श्रावस्ती नगरी में वसू, वसुगुप्ता और कौशांबी नगरी में वसुमित्रा एवं, वसुंधरा उत्पन्न हुईं। इन सब के पिता का नाम राम और माताओं का नाम धर्मा था। ये सबकी सब पार्श्वनाथ प्रभु के पास प्रव्रजित हुईं। प्रभुने इन सब को दीक्षित करके पुष्पचूला आर्या की शिष्यारूप से दिया। ये सब इस ईशानेन्द्रकी अग्रमहिषी हुईं। वहां इनकी स्थिति नौ पल्योपम की है। वहां से चवकर ये महाविदेह क्षेत्र मेंउत्पन्न होंगी और वहीं से

વર્ણનમાં જે પ્રમાણે પાઠ કહેવાયો છે તે પ્રમાણે જ સમજી લેવો જોઇએ. આ પ્રમાણે જ કૃષ્ણરાજિ વગેરે અધ્યયનો પણ કાલી દેવીના પાઠમાં અને આ ઉક્ત આઠ અધ્યયનોના પાઠોમાં જે કંઈ તફાવત છે તે આ પ્રમાણે છે-પૂર્વભવમાં વાણારસી નગરીમાં કૃષ્ણા અને કૃષ્ણરાજિ આ બંને ઉત્પન્ન થઈ, રાજગૃહ નગરમાં રામા અને રામરક્ષિકા શ્રાવસ્તી નગરીમાં વસૂ, વસુગુપ્તા અને કૌશાંબી નગરીમાં વસુમિત્રા અને વસુંધરા ઉત્પન્ન થઈ. એમના પિતાનું નામ રામ અને માતાનું નામ ધર્મા હતું. એ બધીએ પાર્શ્વનાથ પ્રભુની પાસે પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરી હતી. પ્રભુએ સર્વેને દીક્ષિત કરીને પુષ્પચૂલા આર્યાને શિષ્યાઓના રૂપમાં સોંપી હતી. એ બધી ઈશાનેન્દ્રની અગ્રમહિષીઓ થઈ. ત્યાં તેમની સ્થિતિ નવ પલ્યોપમની છે. ત્યાંથી ચવીને એ બધી મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં ઉત્પન્ન થશે અને ત્યાંથી જ સિદ્ધ-

मोक्ष्यन्ति, मोक्ष्यन्ति सर्व दुःखानामन्तं करिष्यन्ति । एवं खलु हे जम्बूः! निक्षेपको दशमवर्गस्य ॥ सू०१५ ॥

॥ इति धर्मकथानां दशमो वर्गः समाप्तः ॥ १० ॥

मूलम्--एवं खलु जंबू समणेणं भगवया महावीरेणं आदिगरेणं सयंसंबुद्धेणं पुरिसोत्तमेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

॥ धम्मकहासुयक्खंधो समत्तो दसहिं वग्गेहिं ॥

॥ णायाधम्मकहाओ समत्ताओ ॥

टीका—सुधर्मास्वामी कथयति–'एवं खलु' इत्यादि । एवं खलु हे जम्बूः! श्रमणेन भगवता महावीरेण आदिकरेण तीर्थकरेण स्वयं सम्बुद्धेन पुरुषोत्तमेन

सिद्ध पद की भोक्ता बनेंगी केवलज्ञानरूप आलोक से समस्त चराचर पदार्थों की ज्ञाता बनेंगी। द्रव्य एवं भावरूप समस्त कर्मों से छूटजावेंगी इस तरह ये वहीं से समस्त दुःखों का अन्त करने वाली होंगी। इस प्रकार हे जंबू! यह दशवें वर्ग का निक्षेपक है।

॥ दसमवर्ग समाप्त ॥

'एवं खलु जंबू!' इत्यादि।

टीकार्थ—(एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं आदिगरेणं तित्थगरेणं सयंसंबुद्धेणं पुरिसोत्तमेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं अयमट्ठे पण्णत्ते) अब जंबूस्वामी से श्री सुधर्मास्वामी कहते हैं कि हे

પદ મેળવશે એ બધી કેવળજ્ઞાન રૂપ આલોકથી સમસ્ત ચર અને અચર પદાર્થોનું જ્ઞાન મેળવશે. દ્રવ્ય અને ભાવરૂપ બધા કર્મોથી મુક્ત થઈ જશે. આ પ્રમાણે એ બધી ત્યાંથી જ બધા દુઃખોને અંત કરનારી થશે. આ પ્રમાણે હે જંબૂ! આ દશમા વર્ગનો નિક્ષેપક છે.

દશમો વર્ગ સમાપ્ત.

एवं खलु जंबू! इत्यादि—

(एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं आदिगरेणं तित्थगरेणं सयं संबुद्धेणं पुरिसोत्तमेणं जाव संपत्तेणं धम्म कहाणं अयमट्ठे पण्णत्ते)

यावत् सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं संप्राप्तेन धर्मकथानामयमर्थः प्रज्ञप्तः ॥

॥ धर्मकथानामको द्वितीयः श्रुतस्कन्धः समाप्तः ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित-कोल्हापुरराजगुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां-ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षिण्याख्या व्याख्या समाप्ता ॥

जंबू! आदिकर, तीर्थङ्कर, स्वयं संबुद्ध पुरुषोत्तम, यावत् सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हुए ऐसे श्रमण भगवान महावीर ने धर्मकथा नामक द्वितीय श्रुतस्कंध का पूर्वोक्तरूप से अर्थ प्रज्ञप्त किया है। (धम्मकहासुयक्खंधो समत्तो दसहिं वग्गेहिं) धर्मकथा नामका यह द्वितीय श्रुतस्कंध दशवर्गों में समाप्त हुआ है। इस तरह (णायाधम्मकहाओ समत्ताओ) यह ज्ञाताधर्मकथाङ्ग सूत्र समाप्त हुआ।

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर पूज्य श्री घासीलालजी महाराज कृत "ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र" की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्या समाप्त ॥

હવે જંબૂ સ્વામીને શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહે છે કે હે જંબૂ! આદિકર તીર્થંકર, સ્વયં સંબુદ્ધ, પુરૂષોત્તમ યાવત્ સિદ્ધગતિ નામના સ્થાનને પ્રાપ્ત કરી ચૂકેલા એવા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ધર્મકથા નામના બીજા શ્રુતસ્કંધનો પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે. (धम्मकहा सुयक्खंधो समत्तो दसहिं वग्गेहिं) ધર્મકથા નામનો આ બીજો શ્રુતસ્કંધ દશ વર્ગોમાં પૂરો થયો છે. આ પ્રમાણે (णायाधम्मकहाओ समत्ताओ) આ જ્ઞાતા ધર્મકથાંક સૂત્ર પૂરું થયું છે.

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત "જ્ઞાતાધર્મકથાઙ્ગસૂત્ર" ની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યા સમાપ્ત

—:शास्त्रप्रशस्तिः—

काठियावाडदेशेऽस्ति, राजकोटपुरे शुभे
कोठारीहरगोविन्द काकानाम प्रसिद्धिमान् ।
तस्यास्तिभार्यापरमा सुशीला, धर्मानुरक्तागृहकार्यदक्षा ।
शान्तिप्रिया दीनदयार्द्रभावा, नाम्ना प्रसिद्धा किलरुक्मिणीसा ॥ २ ॥
दिनेशचन्द्रस्तनयोऽस्ति यस्य, कुलस्य दीपः सरलस्वभावः ।
कन्या सुशीला सरला जितुश्च—सदा—प्रमोदाय चकास्तिपित्रोः ॥ ३ ॥
व्याख्यानभवने तस्य, ज्ञाताधर्मकथाङ्गके ।
घासीलालेन मुनिना कृता टीका सतां मुदे ॥ ४ ॥
द्विसहस्रचतुः संख्ये, विक्रमाब्दे रवौ दिने ।
माघे शुक्ले च पञ्चम्यां, सम्पूर्णा धर्मवर्षिणी ॥ ५ ॥

काठियावाडदेश में राजकोट नामका अच्छा नगर है। उस में कोठारी हरगोविन्दकाका रहते हैं। इनका सुशीलभार्याका नाम रुक्मिणी हैं। यह गृहकार्य में बहुत चतुर है। धर्मात्मा है, शान्ति प्रिया है एवं दीन दुःखियों के ऊपर सदा दया भाव रखती है। काका का कुल दीपक एक दिनेशचन्द्र नाम का पुत्र और जितु नाम की—कन्या है। ये दोनों माता पिता के प्रमोद के स्थान भून हैं।

मुझ घासीलाल मुनिराज ने उन्हीं के व्याख्यान भवन में ठहर कर विक्रम संवत् २००४ दिन रविवार माघशुक्ला पंचमी के दिन ज्ञाता धर्मकथाङ्ग, सूत्र की यह टीका रचकर समाप्त की है।

કાઠિયાવાડ પ્રાંતમાં રાજકોટ નામે એક સરસ રમ્ય નગર છે. તેમાં કોઠારી હરગોવિંદ કાકા રહે છે તેમની સુશીલ પત્નીનું નામ રૂકિમણી છે. તેઓ ગૃહકાર્યમાં બહુ જ ચતુર છે, ધર્માત્મા તેમજ શાંતિ પ્રિયાપણ છે. તેઓ ગરીબ દુઃખીઓના ઉપર હમેશાં દયાભાવ રાખે છે. કાકાનો કુળદીપક એક દિનેશચંદ્ર નામે પુત્ર અને જિતુ નામે એક કન્યા છે. આ બંને માતા-પિતાનાં પ્રમોદનાં આશ્રયસ્થાનો છે

મેં ઘાસીલાલ મુનિરાજે તેમના જ વ્યાખ્યાન ભવનમાં રહીને વિક્રમ સંવત્ ૨૦૦૪ રવિવાર માઘ શુક્લા પંચમીના દિવસે જ્ઞાતાધર્મકથાંગ સૂત્રની આ ટીકા રચીને પૂરી કરી છે.

बहुलः, तत्र–उत्कञ्चनम् मुग्धजनवञ्चनप्रवृत्तस्य समीपागतविचक्षणभयात् तत्क्षणे-वञ्चनाकरणम् वञ्चनं=प्रतारणम्, माया=परवञ्चनबुद्धिः, निकृतिः=मायाप्रच्छादनार्थं मायान्तरकरणम्, कपटम्=वेषादिविपर्ययकरणम्, कूटम्=तुलातोलनकादीनामन्यथाकरणम्, 'साइ' देशी शब्दोऽयम्, विश्वासाभावः, एषां संप्रयोगो व्यवहारः स एव बहुलः प्रचुरो यस्य सः, 'निस्सीले' निःशीलः=शीलरहितः, 'निव्वए' निर्व्रतः=अणुव्रतरहित, 'निग्गुणे' निर्गुण=गुणव्रतरहितः, 'निपच्चक्खाणपोसहोववासे' निष्प्रत्याख्यान पौषधोपवासः = प्रत्याख्यानपोषधोपवासरहितः 'बहूणं दुपयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाणं घायाए वहाए उच्छायणाए' बहूनां द्विपदचतुष्पदमृगपशुपक्षिसरीसृपाणां घाताय, वधाय=सामान्य

हार इसके पास प्रचुर था। भोलेजनों के वंचन करने में प्रवृत्त हुआ वंचक जन जब पास में आये हुए जनको भय से नहीं ठगता है इसका नाम उत्कंचन है। प्रतारण (ठगना) करना इसका नाम वंचन है। दूसरों का वंचन करने की बुद्धि का नाम माया है। अपनी मायाचारी को छिपा ने के लिये जो दूसरी मायाचाररूप क्रिया करनी होती है इस का नाम निकृति है। वेष आदि के परिवर्तन करने का नाम कपट है। तराजू एवं तोलने आदि के बांटों को कमती बढती रखना इसका नाम कूट है। "साइ" यह देशीय शब्द है। इसका अर्थ विश्वास का अभाव होना है। यह निःशील था–शीलरहित था–निर्व्रत था–व्रत रहित था, निर्गुण था–गुण रहित था, "प्रत्याख्यान और पौषधोपवास से वर्जित था" "बहूणं दुपयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाणं घायाए वहाए उच्छायणाए अधम्मकेऊ समुट्ठिए" अनेक द्विपद, चतुष्पद, मृग,

પુષ્કળ પ્રમાણમાં હતો. ભોળા માણસોના વંચનમાં પ્રવૃત્ત થયેલો વંચક જ્યારે પાસે આવેલા માણસને બીકથી ઠગતો નથી તેનું નામ ઉત્કંચન છે. પ્રતારણનું નામ વંચન છે. બીજા માણસને ઠગવાની બુદ્ધિનું નામ માયા છે. પોતાની માયાચારીને છુપાવવા માટે જે બીજી માયાચાર રૂપ ક્રિયા કરવામાં આવે છે તેનું નામ નિકૃતિ છે. વેશ વગેરે બદલવું તે કપટ કહેવાય છે. ત્રાજવાં તેમજ તોળવાના વજનોને હલકાં અને ભારે કરવાં તેનું નામ કૂટ છે. "સાઈ" આ દેશીય શબ્દ છે. તેનો અર્થ વિશ્વાસનો અભાવ હોય છે. તે નિઃશીલ હતો,–શીલ રહિત હતો, નિર્વ્રત વ્રત રહિત હતો. નિર્ગુણ હતો–ગુણ રહિત હતો. પ્રત્યાખ્યાન અને પૌષધોપવાસથી વર્જિત હતો. "બહૂણં દુપયચઉપ્પયમિયપસુપક્ખિસરીસિવાણં ઘાયાએ વહાએ–ઉચ્છાયણાએ અધમ્મકેઊ સમુટ્ઠિએ"

विशेषप्रकारेण नाशाय, उत्सादनाय=द्विपदादिसकलजीवानां सर्वथा नाशाय च, 'अधम्मकेऊ समुट्ठिए' अधर्मकेतुः समुत्थितः-अधर्मः पापप्रधानो यः केतुः= केतुग्रहः, अधर्मकेतुः=उत्पातरूपधूमकेतुमहाग्रहः तद्वत् समुत्थितः। 'बहुणगर-णिग्गयजसे' बहुनगरनिर्गतयशाः, बहुनगरेषु निर्गतं जनमुखान्निःसृतं यशः ख्याति र्यस्य सः, प्रसिद्ध इत्यर्थः, शूरः 'दढप्पहारी' दृढप्रहारी=दृढप्रहरण शीलः 'साहसिए' साहसिकः=अविमृश्यकारी 'सद्दवेही' शब्दवेधी=शब्दश्रव-णेन लक्ष्यवेधी च आसीत्। 'से' सः = विजयश्चौरः खलु तत्र सिंहगुहायां चोरपल्ल्यां पञ्चानाम् चोरशतानाम् 'आहेवच्चं जाव' आधिपत्यं यावत्= स्वामित्वं कुर्वन् विहरति। ततः खलु स विजयस्तस्करः चोरसेनापतिः बहूनां चोराणां च 'पारदारियाणय' पारदारिकाणां=परस्त्रीगामिनां च 'गंठिभेय गाणय' ग्रन्थिभेदकानां 'संधिच्छेयगाणयं' सन्धिच्छेदकानां=भित्तिसंधिं छित्त्वा ये धनमपहरन्ति ते संधिच्छेदका उच्यन्ते, तेषाम्, 'खत्तखणगाण य' क्षात्र-खनकानां=संधिरहितभित्ति खनकानाम्, 'रायावगारीणय' राजाऽपकारिणां=

पशु, पक्षी, सरीसृप आदि प्राणियोंके घातके लिये, वधके लिये, तथा उनके सर्वथा विनाशके लिये, यह अधर्मकेतुग्रह जैसा उदित हुआ था। अनेक नगरों में यह कुख्यात होचुका था। बडा शूरवीर था। इसका प्रहार बहुत गहरा होता था। बिना विचारे काम करना ही इसका स्वभाव था शब्द श्रवण कर यह अपने लक्ष्य के वेधने में बडा निपुण था। वह विजय चौर सिंहगुफा नाम की उस चोरपल्ली में पांचसौ चोरों का आधिपत्य यावत् स्वामित्व करता हुआ रहता था। (तएणं से विजय तक्करे चोरसेणावई बहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य संधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य, रायावगारीण य अणधारगाण य

घणा द्विपद, चतुष्पद, मृग, पशु, पक्षी, सरीसृप (साप) वगेरे प्राणीओना घात माटे, वध माटे तेमज तेमना सर्वनाश माटे ते अधर्म केतुग्रहनी जेमज उदय पाम्यो हतो. घणां नगरोमां ते कुख्यात थई चुक्यो हतो. ते भारे शूरवीर हतो, तेनो प्रहार खूब ज भारे थतो हतो. वगर विचार्यां काम करवामां ज तेनो स्वभाव हतो. शब्द श्रवण करीने ते पोताना लक्ष्यने वींधी नाखवामां खूब ज निपुण हतो. ते विजय चोर सिंह गुफा नामनी ते चोर-पल्लीमां पांचसो चोरोनो स्वामी-यावत् स्वामित्व भोगवतो रहेतो हतो.

(तएणं से विजयतक्करे चोरसेणावई बहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य संधिच्छेयगाण य खत्तखणगाणय, रायावगारीण य ऊण